रामकथा

(उत्पत्ति और विकास)

[प्रयाग विश्वविद्यालय द्वारा डी० फिल्० उपाधि के लिए स्वीकृत शोध-प्रबन्ध]

लेखक

फादर कामिल बुल्के, एस० जे०, एम० ए०, डी० फिल्०

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, सत ज़ेवियर कालेज, राँची

प्रकाशक

हिन्दी परिषद् प्रकाशन

प्रयाग विश्वविद्यालय

जिनकी प्रतिभा ने रामकथा को भारत तथा निकटवर्ती
देशो के साहित्य मे एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण
स्थान दिलाया और भारतीय सस्कृति
का एक उज्ज्वल प्रतीक बना
दिया, उन

आदिकवि वाल्मीकि

को रामकथा की दिग्विजय का प्रस्तुत विवरण सश्रद्धा समर्पित है ।

त्वदीय वस्तु वाल्मीके तुभ्यमेव समर्प्यते

परिचय

प्राचीन भारत के समान ही आधुनिक यूरोप ज्ञान सम्बधी खोज के क्षेत्र मे अग्रसर रहा है। यूरोपीय विद्वान ज्ञान तथा विज्ञान के रहस्यो के उद्घाटन मे निरतर यत्नशील रहे है। उनकी इस खोज का क्षेत्र यूरोप तक ही सीमित नही रहा बल्कि ससार के समस्त भागो पर उनकी दृष्टि पडी। इस महत्वपूर्ण ग्रथ के लेखक फादर बुल्के को हम इन्ही विद्याव्यसनी यूरोपीय अन्वेषको की श्रेणी मे रख सकते है। भारतीय विचार-धारा समझने के लिए इन्होने सस्कृत तथा हिन्दी भाषा और साहित्य का पूर्ण परिश्रम के साथ अध्ययन किया। प्रयाग विश्वविद्यालय से हिंदी मे एम०.ए० की परीक्षा पास करने के उपरान्त आप ने डी० फिल्० के लिए 'रामकथा का विकास' शीर्षक विषय चुना। प्रस्तुत ग्रथ उनका थीसिस ही है जिस पर उन्हे प्रयाग विश्वविद्यालय से डी० फिल्० की उपाधि मिली है।

सुयोग्य लेखक ने इस ग्रथ की तैयारी मे कितना परिश्रम किया है यह पुस्तक के अध्ययन से ही समझ मे आ सकता है। रामकथा से सम्बन्ध रखने वाली किसी भी सामग्री को आप ने छोडा नही है। ग्रथ चार भागो मे विभक्त है। प्रथम भाग मे 'प्राचीन रामकथा साहित्य' का विवेचन है। इसके अन्तर्गत पॉच अध्यायो मे वैदिक साहित्य और रामकथा, वाल्मीकिकृत रामायण, महाभारत की रामकथा, बौद्ध रामकथा तथा जैन रामकथा सबधी सामग्री की पूर्ण परीक्षा की गई है। द्वितीय भाग का सबध रामकथा की उत्पत्ति से है और इसके चार अध्यायो मे दशरथ जातक की समस्या, रामकथा के मूल स्रोत के सम्बन्ध मे विद्वानो के मत, प्रचलित वाल्मीकीय रामायण के मुख्य प्रक्षेपो तथा रामकथा के प्रारभिक विकास पर विचार किया गया है। ग्रथ के तृतीय भाग मे 'अर्वाचीन रामकथा साहित्य का सिहावलोकन' है। इसमे भी चार अध्याय है। पहले और दूसरे अध्याय मे सस्कृत के धार्मिक तथा ललित साहित्य मे पाई जाने वाली रामकथा सम्बन्धी सामग्री की परीक्षा है। तीसरे अध्याय मे आधुनिक भारतीय भाषाओ के रामकथा सम्बन्धी साहित्य का विवेचन है। इसमे हिंदी के अतिरिक्त तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड, बगाली, काश्मीरी, सिहली आदि समस्त भाषाओ के साहित्य की छान-बीन की गई है। चौथे अध्याय मे विदेश मे पाये जाने वाले रामकथा के रूप का सार दिया गया है और इस सम्बन्ध मे तिब्बत, खोतान, हिंदेशिया, हिंदचीन, श्याम, ब्रह्मदेश आदि मे उपलब्ध सामग्री का पूर्ण परिचय एक ही स्थान पर मिल जाता है। अतिम तथा चतुर्थ भाग मे रामकथा सम्बन्धी एक-एक

घटना को लेकर उसका पृथक्-पृथक् विकास दिखलाया गया है। घटनाएँ काड-क्रम से ली गई है अत यह भाग सात काडो के अनुसार सात अध्यायो मे विभक्त है। उपसहार मे रामकथा की व्यापकता, विभिन्न रामकथाओ की मौलिक एकता, प्रक्षिप्त सामग्री की सामान्य विशेषताएँ, विविध प्रभाव तथा विकास का सिहावलोकन है।

इस सक्षिप्त परिचय से ही स्पष्ट हो गया होगा कि यह ग्रथ वास्तव मे रामकथा सम्बधी समस्त सामग्री का विश्वकोष कहा जा सकता है। सामग्री की पूर्णता के अतिरिक्त विद्वान लेखक ने अन्य विद्वानो के मत की यथास्थान परीक्षा की है तथा कथा के विकास के सम्बन्ध मे अपना तर्कपूर्ण मत भी दिया है। वास्तव मे यह खोजपूर्ण रचना अपने ढग की पहली ही है और अनूठी भी है। हिन्दी क्या किसी भी यूरोपीय अथवा भारतीय भाषा मे इस प्रकार का कोई दूसरा अध्ययन उपलब्ध नही हैं। अत हिंदी मे इस लोकप्रिय विषय पर ऐसे वैज्ञानिक अन्वेषण के प्रस्तुत करने के लिए विद्वान लेखक बधाइ के पात्र है। आशा है कि भविष्य मे उनकी लेखनी से इस प्रकार के अन्य खोजपूर्ण ग्रथ प्रकाश मे आवेगे। प्रस्तुत अध्ययन का उत्तरार्ध 'राम-भक्ति का विकास' तो शीघ्र ही प्रकाशित होना चाहिए। प्रयाग विश्वविद्यालय हिंदी परिषद् को इस बहुमूल्य कृति के प्रकाशन पर गर्व होना स्वाभाविक है।

नवम्बर, १९५०

धीरेन्द्र वर्मा

निवेदन

(प्रथम सस्करण)

भारत तथा निकटवर्ती देशो के साहित्य मे रामकथा की अद्वितीय व्यापकता एशिया के सास्कृतिक इतिहास का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। इस रामकथा का अध्ययन अनेक दृष्टिकोणो से किया जा सकता है। प्रस्तुत निबन्ध मे इसकी उत्पत्ति तथा कथावस्तु के विकास की रूपरेखा अकित करने का प्रयत्न किया गया है। इस सीमित परिधि के दृष्टिकोण से प्राचीन तथा अर्वाचीन रामकथा-साहित्य का निरूपण और विश्लेषण क्रमश प्रथम तथा तृतीय भाग मे किया गया है।

रामकथा की उत्पत्ति तथा मूलस्रोत के सम्बन्ध मे अनेक भ्रामक धारणाएँ विद्वन्मडली मे प्रचलित हो गई है। इनका निरूपण तथा खडन द्वितीय भाग का विषय है। यद्यपि निबन्ध के इस भाग मे किसी सर्वथा नवीन निष्कर्ष का प्रतिपादन नही है, किन्तु विवेच्य विषय से सम्बन्ध रखने वाली समस्त प्रकाशित सामग्री का मौलिक रूप से वर्गीकरण तथा स्पष्टीकरण किया गया है।

चतुर्थ भाग मे वाल्मीकि रामायण की कथावस्तु के क्रमानुसार रामकथा के विभिन्न कथाग के विकास का अलग-अलग वर्णन किया गया है। इसके लिए प्रथम तथा तृतीय भागो मे निरूपित प्राचीन तथा अर्वाचीन रामकथा-साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक था। यह साहित्य अत्यन्त विस्तृत है और इस प्रकार का तुलनात्मक अध्ययन प्राय सर्वथा मौलिक है, अत इसमे त्रुटिया अवश्य रह गई होगी। इनके लिए मै विद्वानो से विनयपूर्वक क्षमाप्रार्थना करता हूँ।

राम-भक्ति के पल्लवित होने के साथ-साथ रामकथा का विकास अपनी अतिम परिणति पर पहुँच गया था। अत पन्द्रहवी शताब्दी के बाद के सस्कृत साहित्य का पूरा निरूपण अनावश्यक था। इसी प्रकार आधुनिक आर्य-भाषाओ का रामकथा साहित्य प्रस्तुत निबन्ध के दृष्टिकोण से अपेक्षाकृत कम महत्त्व रखता है। वास्तव मे यह साहित्य प्रधानतया रामकथा न होकर राम-भक्ति-साहित्य सिद्ध होता है। इसका (विशेषकर हिन्दी राम-साहित्य का) समुचित अध्ययन राम-भक्ति की उत्पत्ति और विकास के पूरे विश्लेषण के पश्चात् ही सभव हो सकेगा। आशा है कि एकाध वर्ष की खोज के बाद मै 'रामभक्ति' (उत्पत्ति और विकास) नामक ग्रथ प्रकाशित कर सकूगा। तत्पश्चात् हिन्दी साहित्य की राम-भक्ति-शाखा की रचनाओ का कथा तथा भक्ति दोनो दृष्टिकोणो से विस्तृत तुलनात्मक अध्ययन करने का मेरा विचार है।

प्रस्तुत निबन्ध प्रयाग विश्वविद्यालय द्वारा डी० फिल्० उपाधि के लिए स्वीकृत हुआ है। परीक्षकों के सुझाव के अनुसार मैंने कई स्थलो पर भावो का किंचित् स्पष्टीकरण किया है तथा निरीक्षक के इच्छानुसार 'सहार' नामक अतिम अध्याय पुन लिखकर अधिक विस्तार मे प्रस्तुत किया है।

निबन्ध के तृतीय भाग की सामग्री एकत्र करने मे बहुत से भारतीय तथा विदेशी विद्वानो से सहायता मिली है। इसके सम्बन्ध मे निम्नलिखित विद्वान् विशेष रूप से मेरे धन्यवाद के पात्र है—डॉ० राजेन्द्र हाजरा (पौराणिक साहित्य), श्री एस० तिरुमलैसामी आयगर (तमिल), रेवरेण्ड टी० रायण और सी० सत्यनारायण (तेलुगु), डॉ० पी० के० नारायण पिल्लै (मलयालम), श्री एच० लोबो (कन्नड), श्री प्रह्लाद प्रधान (उडिया), श्री एन० के० भागवत (मराठी), श्री मनसुखलाल झावेरी (गुजराती), श्री एफ० मारटिनी और सुश्री एस० कार्पेलज (हिंदचीन)।

मै पूज्य डॉ० धीरेन्द्र वर्मा के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करना चाहता हूँ, वे मुझे कई वर्षों से हिन्दी के अध्ययन मे प्रोत्साहन देते आ रहे है। उनकी प्रेरणा से मै रामकथा की खोज मे प्रवृत्त हुआ था और उनके विद्वत्तापूर्ण परामर्शों के फलस्वरूप निबन्ध को प्रस्तुत रूप दे सका हूँ। अपने निरीक्षक डॉ० माताप्रसाद गुप्त के प्रति अपना आभार प्रदर्शन करना मै अपना कर्त्तव्य समझता हूँ। उन्होने मुझे अपना बहुमूल्य समय देने मे कभी सकोच नही किया और निबन्ध के प्रत्येक अश को यथासभव परिपूर्ण बनाने के लिए समय-समय पर अनेक सुझाव दिये है।

डॉ० रघुवश का भी मै अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होने समस्त पाण्डुलिपि पढ़ने का कष्ट उठाया है। श्री रामसिह तोमर ने प्रूफ देखने का भार स्वत लेकर इस पुस्तक के शीघ्र प्रकाशित होने मे सहयोग दिया है उसके लिए मै उनका सदा आभारी रहूँगा।

राँची — कामिल बुल्के

३०-६-१९५०

(द्वितीय सस्करण)

'रामकथा' के प्रकाशन के बाद बहुत से पाठको ने पत्र लिखकर मुझे प्रोत्साहन दिया है और प्रश्न पूछ-पूछ कर द्वितीय सस्करण की तैयारी मे मेरा पथप्रदर्शन भी किया है। मैं उन सबो के प्रति आभार प्रकट करना अपना प्रथम कर्त्तव्य समझता हूँ।

• द्वितीय सस्करण मे निम्नलिखित परिवर्द्धन विशेष रूप से उल्लेखनीय है। आदिकवि **वाल्मीकि** विषयक समस्त सामग्री का निरूपण किया गया है। **रावण** तथा **हनुमान** सम्बन्धी सभी वृत्तान्तो का अनुशीलन करने के पश्चात् दोनो के चरित्र का विकास अपेक्षाकृत विस्तारपूर्वक प्रस्तुत किया गया है। परशुराम, शबरी, त्रिजटा, मदोदरी, विभीषण, इन्द्रजित्, शत्रुघ्न आदि पात्रो से सम्बन्ध रखनेवाली सामग्री का भी सकलन किया गया है। रामकथा साहित्य मे **अहल्या** तथा **सौदास** की पौराणिक कथाओ का रामायणीय आधिकारिक कथावस्तु से सम्बन्ध स्थापित किया गया है, अत मैंने इन दोनो कथाओ के विकास की रूपरेखा अंकित की है। प्रथम सस्करण मे जैन रामकथा का समुचित ध्यान रखा गया था, प्रस्तुत सस्करण मे **पउमचरिय** के कथानक के समस्त महत्त्वपूर्ण प्रसगो का निरूपण दिया गया है। डॉ० दलसुख मालवणिया ने प्रकाशन के पूर्व ही पउमचरिय की अपनी फाइल और डॉ० वी० एम० कुलकर्णी ने बम्बई विश्व-विद्यालय द्वारा स्वीकृत अपना अप्रकाशित शोध-प्रबन्ध (दि स्टोरी ऑव राम इन जैन लिटरेचर) मेरे पास भेजा है—इसके लिए मैं इन दोनो विद्वानो का आभारी हूँ। प्रथम सस्करण की अपेक्षा **सेरीराम** तथा **रामकेर्ति** के विभिन्न प्रसगो का अधिक ध्यान रखा गया है। डॉ० एफ० मारटिनी (पैरिस) विशेष रूप से मेरे धन्यवाद के पात्र है—उन्होने रामकेर्ति के अविकल फ्रेंच अनुवाद की अपनी पाण्डुलिपि मुझे निरीक्षणार्थ प्रदान की है।

द्वितीय सस्करण के लिए पर्याप्त मात्रा मे नितान्त **नयी सामग्री** भी मिल गई है। डॉ० वी० राघवन् (मद्रास) ने इस दिशा मे मेरी सब से अधिक सहायता की है—**तत्वसग्रह रामायण**, **उदात्तराघव** तथा अनेक अप्राप्य प्राचीन राम नाटको का परिचय उनके सौजन्य से प्राप्त हुआ है। इसके अतिरिक्त निम्नलिखित रचनाओ का प्रथम सस्करण मे परिचय नही दिया गया था—**धर्मखड**, **बृहन्कोशलखड**, **उल्लाघराघव**, **राघवोल्लास**, **गोविन्द रामायण**, **रामायण मसीही** और **ब्रह्मचक्र**।

वाल्मीकि रामायण से भिन्न विविध कथाओ की व्यापकता दिखलाने के उद्देश्य से क्षेत्रीय भाषाओ की सामग्री का अधिक ध्यान रखा गया है। बिहार राष्ट्रभाषा-परिषद् की अनुवाद-समिति के सदस्य की हैसियत से मैने **रगनाथ रामायण** तथा **कबरामायण**

के हिन्दी अनुवाद का प्रस्ताव रखा था। फलस्वरूप इन दोनो रचनाओ का हिन्दी रूपान्तर तैयार हो सका। मै डॉ० भुवनेश्वरनाथ मिश्र 'माधव' का आभारी हूँ जिन्होने प्रकाशन के पूर्व ही कम्बरामायण के हिन्दी अनुवाद के निरीक्षण की मुझे अनुमति दी है। **'विद्यासग्रहणेषु त्यक्तलज्ज सुखी भवेत्'** के अनुसार मैने क्षेत्रीय भाषाओ की सामग्री के सकलन की धुन मे बहुत से भद्र लोगो को कष्ट दिया है, इसके लिए मे यहा पर विनयपूर्वक क्षमा-याचना करता हूँ। मै विशेष रूप से निम्नलिखित विद्वानो के प्रति अपना आभार प्रकट करना चाहता हूँ—श्री एन० वी० राजगोपालन्, एम० ए० (तमिल), रेव०पी० डेटियेन एम० जे० (बगाली), श्री कृष्णचरण साहु, एम० ए० (उडिया), श्री गोपालकृष्ण भट्ट, एम० ए० (कन्नड), सुश्री दुर्गा भागवत (मराठी), डॉ० शेलजा करदीकर (मराठी)।

श्री राघवप्रसाद पाँडेय, एम० ए० ने पाण्डुलिपि पढी है तथा भाषा को सुबोध-गम्य बनाने मे अमूल्य योगदान दिया हे। श्री उमाशकर शुक्ल (हिन्दी विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय) के प्रति पूरा आभार प्रकट करने मे अपने को असमर्थ पा रहा हूँ। आपने मेरे लिए प्रूफ देखने की सुविधा का प्रबध किया और स्वय भी प्रूफ-रीडिंग का कार्य विशेष सतर्कता से सपन्न किया। प्रस्तुत द्वितीय सस्करण के परिष्कृत रूप का समस्त श्रेय उन्ही को है। पुस्तक की सुन्दर रूप-सज्जा के लिए श्री बाल कृष्ण दूबे, एम० ए०, श्री सतीश चद्र तथा टेकनिकल प्रेस के अन्य सभी कर्मचारी मेरे धन्यवाद के पात्र है।

कामिल बुल्के

रॉंची
१२-६-१९६२

(तृतीय संस्करण)

पिछले वर्षों मे रामकथा विषयक कई शोध-प्रबन्ध प्रकाशित हुए हैं। पत्रिकाओ मे भी इसके विषय मे लेख छपते रहे है। इस सामग्री के अनुशीलन के फलस्वरूप 'रामकथा' के प्रस्तुत सस्करण मे यत्र-तत्र परिवर्धन किया गया है। मैंने सहायक पुस्तको की सूची मे तथा पादटिप्पणियो मे उपयोगी सामग्री का निर्देश किया है।

• मैसूर विश्वविद्यालय द्वारा पीएच० डी० उपाधि के लिए स्वीकृत डॉ० टी० एस० कृष्णमूर्ति के शोध-प्रबन्ध—**ए डीटेल्ड स्टडी ऑव दि उत्तरकाण्ड आव दि वाल्मीकि रामायण**—मे मुझे कन्नड कवि कुवेपु के दो उल्लेखनीय प्रसग (दे० अनु० ६१० अ तथा ७४१) मिले। डॉ० मूर्ति ने अपना अप्रकाशित शोध-प्रबन्ध मुझे उपलब्ध किया इसके लिए मैं उनका आभारी हूँ।

रांची

१-६-७१ **कामिल बुल्के**

संकेन-चिन्ह

रा०	वाल्मीकि रामायण (दाक्षिणात्य पाठ)
गौ० रा०	वाल्मीकि रामायण का गौडीय पाठ
दा० रा०	वाल्मीकि रामायण का दाक्षिणात्य पाठ
प० रा०	वाल्मीकि रामायण का पश्चिमोत्तरीय पाठ
अ० रा०	अध्यात्म रामायण
आ० रा०	आनन्द रामायण
इं० एं०	इंडियन एन्टीक्वेरी
इं० हि० क्वा०	इंडियन हिस्टॉरिकल क्वार्टरली
इन० रि० ए०	इन्साइक्लोपीडिया ऑव रिलिजन एण्ड एथिक्स
ज० अ० ऑ० सो०	जर्नल अमेरिकन ऑरियेंटल सोसाइटी
ज० ए० सो० ब०	जर्नल एशिआटिक सोसाइटी ऑव बंगाल
ज० ऑ० इ०	जर्नल ऑव दि ऑरियेंटल इंस्टिट्यूट (बड़ौदा)
ज० ऑ० रि०	जर्नल ऑव ऑरियेंटल रिसर्च (मद्रास)
ज० रा० ए० सो०	जर्नल रायल एशिआटिक सोसाइटी
ना० प्र० प०	नागरी प्रचारिणी पत्रिका
बी० ई० एफ० ई० ओ०	बुलटिन एकोल फ्रासेस एक्सट्रेम ओरियन
हि० इं० लि०	हिस्ट्री ऑव इंडियन लिटरेचर (विंटरनित्स)
हि० सं० लि०	हिस्ट्री आव संस्कृत लिटरेचर (कीथ)

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२२१	५	निवर्चोत्तर	निर्वचनोत्तर
२३६	१३	रामकथा विषक रचनाएँ	रामकथा विषयक अन्य रचनाएँ
३६२	२०	घोरमुत्पातत भयम्	घोरमुत्पातज भयम्
	२६	इक्षमाना	ईक्षमाणा
४७१	१५	महावरि चरित	महावीरचरित
६०६	१७	भयिष्यति	भविष्यति
६५६	१३	प्ल्वने	प्लवने

विषय-सूची

प्रथम भाग

प्राचीन रामकथा-साहित्य

द्वितीय भाग

रामकथा की उत्पत्ति

तृतीय भाग
अर्वाचीन रामकथा-साहित्य का सिंहावलोकन

चतुर्थ भाग

रामकथा का विकास

परिशिष्ट

प्रथम भाग

प्राचीन रामकथा-साहित्य

अध्याय १

वैदिक साहित्य और रामकथा

क—वैदिक साहित्य मे रामकथा के पात्र

१ वैदिक साहित्य मे रामकथा के अनेक पात्रो के नाम मिलते है। इसके आधार पर वैदिक काल मे राम-कथा के प्रचलन का प्रश्न उठाया जा सकता है। इस समस्या का समाधान करने मे पहले उन स्थलो का विश्लेषण करना उचित होगा जहा उपर्युक्त पात्रो का उल्लेख मिलता है। सीता-सम्बन्धी सामग्री सब से महत्वपूर्ण होने के कारण दूसरे परिच्छेद मे अलग सकलित है। प्रस्तुत पहले परिच्छेद मे रामायण के अन्य पात्रो के उल्लेख दिये जाते है।[१]

इक्ष्वाकु

२ ऋग्वेद मे इक्ष्वाकु का एक बार उल्लेख हुआ है (१०, ६०, ४), लेकिन उस सूक्त मे इक्ष्वाकु का नाममात्र दिया गया है, इससे इतना ही प्रतीत होता है कि वह कोई राजा थे। यस्येक्ष्वाकुरुप व्रते रेवान् मराय्येधते (यस्य इक्ष्वाकुः उप व्रते रेवान् मरायी एधते)—जिसकी सेवा मे धनवान् और प्रतापवान् इक्ष्वाकु की वृद्धि होती है।

अथर्ववेद मे भी एक बार इक्ष्वाकु का नाम आया है। उस मत्र मे ज्वर से छुटकारा पाने के लिए कुष्ठ पौधे से प्रार्थना की जाती है। इसके अतर्गत यह वाक्य मिलता है त्वा वेद पूर्व इक्ष्वाको य (१६, ३६, ६)—तू, जिसको इक्ष्वाकु पूर्वकाल मे जानता था। इसमे इतना ही पता चलता है कि इस मत्र के रचनाकाल मे इक्ष्वाकु एक प्राचीन वीर माने जाते थे।

---

१ यहाँ रामायण की आधिकारिक कथावस्तु से सीधा सबध रखने वाले पात्रो का अभिप्राय है। विश्वामित्र, अगस्त्य, वसिष्ठ और भरद्वाज ऋग्वेद के ऋषि हैं। बालकाड और उत्तरकाड की विविध अतरकथाओ के पात्रो के नाम वैदिक साहित्य मे मिलते हैं। उनका यहा पर उल्लेख नही होगा।

दशरथ

३ वैदिक साहित्य मे दशरथ का एक बार उल्लेख हुआ है। ऋग्वेद (१, १२६, ४) की एक दानस्तुति मे अन्य राजाओ के साथ-साथ दशरथ की भी प्रशसा को गई है' चत्वारिंशद्दशरथस्य शोणा सहस्रस्याग्रे श्रेणि नयन्ति—अर्थात् 'दशरथ के चालीस भूरे रग के घोडे, एक हजार घोडो के दल का नेतृत्व ले रहे हैं।'

इक्ष्वाकु से सम्बन्ध रखने वाले स्थलो के समान उपर्युक्त उद्धरण से भी राजा दशरथ का कोई विशेष परिचय नही मिलता।

मध्यएशिया की एक आर्यजाति का नाम मितन्नि था। इनके एक राजा दशरथ का नाम सुरक्षित है, जिसका शासनकाल १४०० ई० पूर्व के लगभग माना जाता है।[१]

राम

४ राम दाशरथि, परशुराम और बलराम, इन तीनो का उल्लेख पहले पहल **रामायण** और **महाभारत** मे हुआ है। फिर भी वैदिक साहित्य से अनेक राम नामक व्यक्तियो का परिचय मिलता है। इनका उल्लेख करने से पहले **तैत्तिरीय आरण्यक** (५, ८, १३) के एक स्थल का उद्धरण देना है। यहा 'राम' शब्द का प्रयोग 'पुत्र' के अर्थ मे हुआ है। प्रवर्ग्य (सोमयज्ञ के पहले की एक विधि विशेष) का अनुष्ठान करने वाले के नियम यो दिए जाते हैं

सवत्सर न मासमश्नीयात्। न रामामुपेयात। न मृन्मयेन पिबेत्।
नास्य राम उच्छिष्ट पिबेत।
तेज एव तत्सश्यति ॥

'वह एक वर्ष तक मास का भक्षण न करे। स्त्री[२] का भोग न करे। मिट्टी के वर्त्तन से पानी न पिए। उसका पुत्र उच्छिष्ट न पिए। इसी तरह उसका (यजमान का) तेज पुजीभूत होता जाता है'। सायण के अनुसार 'राम' का अर्थ यहा 'रमणीय पुत्र' होता है, जो सर्वथा समीचीन प्रतीत होता है। कालक्रम के अनुसार वैदिक साहित्य के विभिन्न रामो का परिचय नीचे दिया जाता है।

---

१ दे० दिनेशचन्द्र सेन दि बगाली रामायण्स, पृ० ३६।

२ 'रामा' का अर्थ यहाँ पत्नी हो सकता है। अन्य स्थलो पर वह वेश्या के अर्थ मे प्रयुक्त हुआ है (तैत्ति० सहिता ५, ६, ८, ३, काठक० स० २२, ७, जैमिनि उपनिषद् ब्राह्मण ४, ११, ५, १०)। अथर्ववेद (१, २, ३, १), तैत्ति० ब्रा० (२, ४, ४, १) और कौशिक सूत्र (२६, २२-२४) मे 'रामा' एक पौधे का नाम भी है, जिस पर सायण की टीका यो है—'भङ्गराजाख्या ओषधि'।

(१) राम, ऋग्वेद का एक राजा

ऋग्वेद मे 'राम' का एक बार उल्लेख हुआ है। उसका नाम अय प्रतापी यजमानो के साथ प्रयुक्त होने के कारण प्रतीत होता है कि वह कोई राजा हुआ होगा :

प्र तद्दु शीमे पृथवाने वेने प्र रामे वोचमसुरे मघवत्सु।
ये युक्त्वाय पञ्च शतास्मयु पथा विश्राव्येषाम्॥ (१०, ९३, १४)

'मैंने दु शीम पृथवान, वैन और राम (असुर[१]) इन यजमानो के लिए यह (सूक्त) गाया है। इन्होने पाँच सौ (घोडे अथवा रथ) जुतवाए (जिससे) उनका मुझपर अनुग्रह चारो ओर फैल गया है।'

(२) राम मार्गवेय, श्यापर्णीय ब्राह्मण

ऐतरेय ब्राह्मण (७, २७—३४) मे राम मार्गवेय और जनमेजय के विषय मे एक कथा मिलती है, जिससे इतना ही परिचय मिलता है कि श्यापर्ण कुल के ब्राह्मण और जनमेजय के समकालीन थे। उनका रामायण की कथा से कोई सम्बन्ध नितात असभव है। सायण, 'मार्गवेय' की व्युत्पत्ति 'मृगु' से मानते हैं, वेबर इसका सबध मार्गव (मनु की एक जाति १०, १६) से जोडते है।

(३) राम औपतस्विनि

शतपथ ब्राह्मण मे 'असुग्रह' नामक यज्ञ के तत्व पर विचार-विनिमय होने पर अन्य आचार्यो के मतो के साथ-साथ राम औपतस्विनि के मत का भी उल्लेख होता है (४, ६, १, ७)। इससे यह पता चलता है कि वह उपतस्विन् के पुत्र और याज्ञवल्क्य के समकालीन थे।

(४) राम क्रातुजातेय

जैमिनीय उपनिषद् ब्राह्मण के दो स्थलो पर राम क्रातुजातेय वैयाघ्रपद्य का उल्लेख मिलता है। दोनो बार उसका नाम दार्शनिक शिक्षा देने वालो की एक नामावली मे दिया जाता है। दोनो स्थलो पर वह शग शात्यायनि आत्रेय का शिष्य है और शख वाभ्रव्य का शिक्षक (जै० उप० ब्रा० ३, ७, ३, २, ४, ६, १, १)।

इन विभिन्न रामो से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि प्राचीनतम वैदिक काल से ही राजाओ और ब्राह्मणो दोनो मे 'राम' नाम प्रचलित था।

१ 'असुर' यहाँ पर राम की उपाधि प्रतीत होता है। यह लुड्विग का मत है। अन्य विद्वानो के अनुसार असुर का अलग उल्लेख होना चाहिए।

अश्वपति

५ **शतपथ ब्राह्मण** (१०, ६, १, २) और **छान्दोग्य उपनिषद्** (५, ११, ४) मे अश्वपति कैकेय का उल्लेख मिलता है। दोनो ग्रन्थो मे प्रसग एक ही है—कई ब्राह्मण आत्मा और ब्रह्म के विषय मे दार्शनिक विवेचन कर रहे है। 'वैश्वानर' के तत्त्व के सबध मे वे किसी निश्चय पर नही पहुँचते। उनमे से एक यह प्रस्ताव करते है, 'अश्वपति कैकेय वैश्वानर तत्त्वत जानते है। उनके यहा चले।' प्रस्ताव स्वीकृत होने पर वे वहा जाते है और अश्वपति उनको वैश्वानर के तत्त्व के सम्बन्ध मे शिक्षा देते है।

अश्वपति केकय देश के राजा थे और इतने विद्वान् थे कि वह ब्राह्मणो को भी सिखलाते थे, इतना ही परिचय उपर्युक्त स्थलो से मिलता है। इस प्रसग मे **रामायण** के अन्य पात्रो से किसी सम्बन्ध की सूचना नही होती। फिर भी **शतपथ ब्राह्मण** और **छान्दोग्य उपनिषद्** मे जनक वैदेह का भी उल्लेख हुआ है, इससे सम्भवतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि वे दोनो समकालीन विद्वान् राजा थे।

जनक

६ कालक्रम के अनुसार जनक का पहला परिचय हमे कृष्णयजुर्वेदीय **तैत्तिरीय ब्राह्मण** मे प्राप्त होता है। सावित्राग्नि-यज्ञ का फल बतलाने के लिए एक आख्यान दिया जाता है जिसमे जनक वैदेह देवताओ से मिलते है। देवता उपर्युक्त यज्ञ के अनेक परिणामो का वर्णन करते है (३, १०, ६)।

इससे विस्तृत परिचय नही मिलता, लेकिन आगे चलकर **शतपथ ब्राह्मण** मे 'जनक वैदेह' का चार भिन्न प्रसगो मे उल्लेख हुआ है। जनक के साथ-साथ याज्ञवल्क्य का भी चारो स्थलो पर उल्लेख हुआ है। जनक इतने विद्वान् तत्वज्ञ के रूप मे सामने आते है कि वे याज्ञवल्क्य को भी शिक्षा देते हैं और स्वय ब्राह्मण बन जाते हैं। बाद के **बृहदारण्यक उपनिषद्** मे स्थिति बदल गई है। उसमे याज्ञवल्क्य ही जनक कोशिक्षा देते हैं।

शतपथ ब्राह्मण का पहला प्रसग (११, ३, १, २-४) **जैमिनि ब्राह्मण** मे भी मिलता है (१, १६)। इसमे जनक वैदेह अग्निहोत्र के विषय मे याज्ञवल्क्य से प्रश्न पूछते हैं और उचित उत्तर पाने पर उनको १०० गायो का पुरस्कार देते है।

दूसरे प्रसग मे (श० ब्रा० ११, ४, ३, २०) मित्रविंद यज्ञ का गोतम राहूगण के पास से जनक वैदेह के पास जाने का उल्लेख है। जनक अनेक वेदाग-विद् ब्राह्मणो मे यह यज्ञ न पाकर उसे याज्ञवल्क्य मे पाते हैं और उनको एक सहस्र गायो का पुरस्कार देते हैं।

तीसरे प्रसग मे जनक के ब्राह्मण बनने की कथा है (श० ब्रा० ११, ६, २, १-१०) । जनक तीन ब्राह्मणो से मिलते हैं, जिनमे से एक याज्ञवल्क्य हैं । जनक तीनो से अग्निहोत्र की विधि पूछते हैं । तीनो मे याज्ञवल्क्य का उत्तर सब से अच्छा होने पर भी पूरा नही है, इसलिए जनक विस्तारपूर्वक अग्निहोत्र रहस्य समझाते है । अत मे याज्ञवल्क्य से एक वर पाकर जनक याज्ञवल्क्य से यथारुचि प्रश्न पूछने का अधिकार चाहते हैं । 'इस समय से लेकर' यही परिच्छेद का अतिम वाक्य है, 'जनक ब्राह्मण ही थे ।'

चौथा प्रसग **शतपथ ब्राह्मण** को छोडकर अन्यत्र भी पाया जाता है (श० ब्रा० ११, ६, ३, १ आदि, **जैमिनि ब्राह्मण** २, ७६-७७, **बृहदारण्यक उप०** ३, १, १-२) । जनक याजको को बहुत दक्षिणा देकर एक यज्ञ का प्रबध करते हैं और सब से विद्वान् ब्राह्मण को १००० गायो का पुरस्कार देने की प्रतिज्ञा करते है । इसपर शाल्क्य याज्ञवल्क्य से प्रश्न पूछते है और अधिक जिज्ञासा प्रकट करने के कारण मर जाते हे । यह वृत्तान्त किंचित् परिवर्तन सहित **जैमिनि ब्राह्मण** और **बृहदारण्यक उपनिषद्** मे भी मिलता है ।

इस प्रसग को छोडकर **बृहदारण्यक** मे जनक और याज्ञवल्क्य के सबध मे एक और विस्तृत वृत्तान्त मिलता है (बृ० आ० उप० ४, १, १ से ४, ४,७ तक) जिसमे याज्ञवल्क्य ब्रह्म, परलोक और आत्माके विषय मे जनक को शिक्षा देते हैं । अत मे जनक याज्ञवल्क्य के प्रति अपने आपको तथा अपनी प्रजा को समर्पित करते हैं ।

बृहदारण्यक उपनिषद् मे दो अन्य स्थलो पर भी जनक का उल्लेख हुआ है । एक स्थल मे जनक गायत्री के विषय मे बुडिल आश्वतराश्वि से कुछ कहते हैं (५, १४, ८) । दूसरा स्थल अधिक महत्वपूर्ण है । इसमे गार्ग्य बालाकि और अजातशत्रु का वार्त्तालाप दिया जाता है जो **बृहदारण्यक उपनिषद्** (२, १, १) के अतिरिक्त किंचित् परिवर्त्तित रूप मे **कौषीतकी उपनिषद्** (४, १) और **शाखायन आरण्यक** (६, १) मे भी मिलता है । गार्ग्य बालाकि अजातशत्रु[१] काशी के राजा के यहाँ जाकर कहते हैं—'क्या मै ब्रह्म के विषय मे कथन करू ?' अजातशत्रु के उत्तर मे जनक से ईर्ष्या आभासित है : 'इस वचन के लिए मैं एक सहस्र दूँगा क्योकि सब के सब "जनक (वैदेह) जनक (पिता, सरक्षक) ही है" कह कर उनके यहा दौड कर जाते हैं ।'

उपर्युक्त उद्धरणो से स्पष्ट है कि रामायण के अन्य पात्रो की अपेक्षा जनक वैदेह का वैदिक साहित्य मे कही अधिक उल्लेख होता है । अर्वाचीन रामकथा-साहित्य

१ यह अजातशत्रु (काशी के राजा) मगध के राजा (४९१ ई० पू०)से भिन्न है ।

मे वैदिक जनक तथा **रामायण** के जनक अभिन्न माने जाते है। वास्तव मे दोनो की अभिन्नता सिद्ध करने के लिए प्रमाण नही दिए जा सकते हैं। स्वीकार करना पडता है कि वैदिक साहित्य मे कही भी इसका उल्लेख नही मिलता कि सीता जनक की पुत्री हैं अथवा राम उनके जामाता हैं।

प्रस्तुत प्रश्न एक अन्य कारण से और जटिल बन जाता है। **वाल्मीकि रामायण** मे दो भिन्न राजाओ का उल्लेख है जिनका नाम जनक है—एक मिथि का पुत्र है तथा दूसरा ह्रस्वरोमा का पुत्र और सीता का पिता (रा० १, ७१)। जातको मे भी अनेक जनक नामक राजाओ का उल्लेख है (दे० महाजनक जातक ५३९)। महाभारत मे सीता जनक की पुत्री तो मानी जाती है लेकिन जहा-जहा जनक का स्वतन्त्र उल्लेख होता है, वहा रामकथा से किसी सम्बन्ध का निर्देश मात्र भी नही मिलता। इसके अतिरिक्त इसमे कई भिन्न जनक नामक राजाओ का उल्लेख होता है—जनक, इद्रद्युम्न का पुत्र (३, १३३, ४), जनक देवराति (१२, २९८, ४), जनक धर्मध्वज (१२, ३०८, ४), जनक कराल (१२, २९१, ७)।

वाल्मीकि रामायण, महाभारत तथा पुराणो मे 'जनक' मिथिला देश के राजवश का नाम भी माना जाता है।

> जनकाना कुले जाता राघवाना कुले वधू (गौ० रा० ५, ३६, २०)
> सीतापि सत्कुले जाता जनकाना महात्मनाम् (रा० ७, ४५, ४)
> इद धनुर्वर ब्रह्मञ्जनकैरभिपूजितम् (रा० १, ६७, ८)
> तस्य पुत्रो मिथिर्नाम जनको मिथिपुत्रक ।
> प्रथमो जनको राजा जनकादप्युदावसु ॥ (रा० १, ७१, ४)
> भो भो राजन् जनकाना वरिष्ठ (महाभारत ३, १३३, १६)
> वशो जनकाना (वायु पुराण ८९, २२)

अतः निष्कर्ष यह है कि मिथिला का कोई भी राजा जनक के नाम से पुकारा जा सकता है। वैदिक साहित्य के जनक तथा सीता के पिता, इन दोनो की अभिन्नता असभव तो नही है, लेकिन उपर्युक्त विश्लेषण पर ध्यान देने से यह अत्यन्त सदिग्ध प्रतीत होती है। विष्णु पुराण (४, ५, ३०), वायुपुराण (८९, १५), ब्रह्माण्ड पुराण (३, ६४, १५), पद्म पुराण (पाताल खण्ड ५७, ५) आदि मे सीता के पिता, जनक, का नाम सीरध्वज भी बताया जाता है। जनक के भ्राता कुशध्वज का उल्लेख वाल्मीकि रामायण मे किया गया है (दे० १, ७१, १३)।

ख—वैदिक साहित्य मे सीता

७ वैदिक साहित्य से दो भिन्न सीताओ की सूचना मिलती है। पहली सीता

कृषि की एक अधिष्ठात्री देवी है, जिसका उल्लेख ऋग्वेद से लेकर सारे वैदिक साहित्य मे अनेक स्थलो पर होता रहा है। दूसरी सीता का परिचय हमे तैत्तिरीय ब्राह्मण से प्राप्त होता है, जहाँ सीता सावित्री, सूर्य की पुत्री, और सोम राजा का उपाख्यान किंचित् विस्तारपूवक दिया गया है। इस सीता का उल्लेख इस स्थान को छोडकर वैदिक साहित्य मे और कही नही मिलता। पहले इस उपाख्यान का थोडा विश्लेषण किया जायगा और बाद मे सीता, कृषि की अधिष्ठात्री देवी, से सम्बन्ध रखने वाली सामग्री पर विचार किया जायगा।

इसके अतिरिक्त 'सीता' शब्द (अर्थात् लागलपद्धति) का वैदिक साहित्य मे अनेक बार उल्लेख हुआ है। लेकिन उन स्थलो पर सीता मे व्यक्तित्व का आरोप नही किया गया है। अतः प्रस्तुत विषय के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण न होने के कारण उन स्थलो का विश्लेषण अनावश्यक है।[१]

सीता सावित्री

८ सीता सावित्री की कथा हमे **कृष्णयजुर्वेद के तैत्तिरीय ब्राह्मण** मे मिलती है (२, ३, १०)। किसी काम्य प्रयोग का प्रभाव दिखलाने के उद्देश्य से सीता सावित्री और सोम राजा का उपाख्यान उद्धृत किया गया है। इसमे सीता और श्रद्धा दोनो प्रजापति की पुत्रिया मानी जाती है। सायण के अनुसार प्रजापति यहाँ पर सविता अर्थात् सूर्य का पर्यायवाची शब्द माना जाना चाहिए। प्रस्तुत उपाख्यान मे सीता सोम राजा के प्रेम को स्थागर नामक अगराग के द्वारा प्राप्त करती है, यद्यपि सोम पहले सीता को बहुत श्रद्धा से प्रेम करते थे। इस कथा का मूल रूप ऋग्वेद के

१ कल्पसूत्रो को छोडकर निम्नलिखित स्थलो पर 'सीता' शब्द का उल्लेख हुआ है

(१) ऋग्वेद १, १४०, ४।

(२) अथर्ववेद ११, ३, १२।

(३) यजुर्वेदीय सहिताओ मे अश्वमेध के वर्णन के अतर्गत जहा क्षेत्र तैयार करने के लिए हल द्वारा सीताएँ खीची जाती है।

काठक स० २०, ३।

कपिष्ठल स० ३२, ५-६।

मैत्रायणी स० ३, २, ४-५।

तैत्तिरीय स० ५, २, ५, ५,।

(४) शतपथ ब्राह्मण १३, ८, २, ६-७ (श्राद्ध के वर्णन मे सीताएं खीचने का उल्लेख)।

सूर्यासूक्त मे विद्यमान है (१०, ८५), जहासूर्या, सूर्य की पुत्री, का सोम के साथ विवाह वर्णित है। इस सूक्त मे सोम से स्पष्टतया चद्रमा का अभिप्राय है और अनेक विद्वानो के अनुसार सूर्या से उषा निर्दिष्ट है । ऋग्वेद की इस कथा का उल्लेख दोनो ऋग्वेदीय ब्राह्मणो मे मिलता है—'प्रजापति ने सोम राजा को अपनी पुत्री सूर्य्या सावित्री को दे दिया' (ऐत० ब्रा० ४, ७, कौ० ब्रा० १८, १) । इसके अतिरिक्त तैत्तिरीय सहिता (२, ३, ५) तथा काठक (११, ३) और मैत्रायणी (२, २, ७) सहिताओ के समानान्तर स्थलो पर प्रजापति की तैतीस पुत्रियो का सोम राजा के साथ विवाह वर्णित है। इनमे से केवल रोहिणी का नाम दिया गया है। तैत्तिरीय ब्राह्मण मे इस कथा का परिवर्तित रूप इस प्रकार है

'प्रजापति ने सोम राजा की और इसके पश्चात् तीनो वेदो की सृष्टि की थी। सोम राजा ने इन (वेदो) को हस्तगत किया।

सीता सावित्री सोम राजा को (पतिस्वरूप) चाहती थी (लेकिन) वह (सोम राजा) श्रद्धा (सीता की बहन) को चाहते थे।

सीता ने अपने पिता प्रजापति के पास जाकर कहा, आपको नमस्कार, मै आपके पास आई हूँ और आपकी शरण लेती हूँ ।। १ ।। मैं सोम राजा की (पतिस्वरूप) कामना करती हूँ। वह श्रद्धा को चाहते है।

प्रजापति ने उसके लिए स्थागर (नामक सुगधित द्रव्य को पीसकर) अलकार (अर्थात् अगराग) तैयार किया। पूर्व दिशा की ओर दशहोतृ (मत्र ढपकर,) दक्षिण की ओर चतुर्होतृ, पश्चिम की ओर पचहोतृ, उत्तर की ओर षड्होतृ, और ऊपरी की ओर से सप्तहोतृ पढकर तथा सभार और (देव) पत्नीमन्त्रो से) उस अगराग को अभिमन्त्रित करके उन्होने उससे सीता का) मुख अलकृत किया ।। २ ।।

(इसके अनन्तर) वह सोम राजा के पास गई। सीता को देखकर (और प्रेम के वशीभूत होकर) उन्होने कहा मेरे पास आइए। सीता ने कहा, मेरे साथ भोग कीजिए (लेकिन पहले प्रतिज्ञा कीजिए कि) सदा मेरे ही साथ भोग करेगे और जो (वस्तु) आपके हाथ मे है (उसको मुझे दे दीजिए) । सोम राजा ने सीता को तीनो वेद दे दिए। इसी तरह स्त्रियाँ भोग के कारण (पुरुषो को) पराजित करती हैं।

यदि कोई (पुरुष) चाहता हो कि मैं प्रेमिका का प्रिय बन जाऊँ ।। ३ ।। अथवा यदि कोई (स्त्री) चाहती हो कि जिससे मैं प्रेम करती हूँ वह मुझसे प्रेम करे (तो वह निम्नलिखित प्रयोग करे)—इस स्थागर अलकार को तैयार करके पूर्व दिशा की ओर दशहोतृ (मत्र) पढकर, दक्षिण की ओर चतुर्होतृ, पश्चिम की ओर पचहोतृ,

उत्तर की ओर षड्ढोतृ, ऊपर को ओर से सप्तहोतृ पढकर, तथा सभार और, (देव) पत्नी मन्त्रो से (इस अगराग को अभिमन्त्रित करके और इसमे) अपने मुख को अलकृत करके वह प्रियतम के पास जाए। वह अवश्य प्रेम करने लगेगा ॥ ५ ॥'

६ सीता सावित्री की इस कथा का **वाल्मीकि रामायण** से कोई प्रत्यक्ष सम्ब ध नही प्रतीत होता है। फिर भी सम्भव है कि अनसूया के अगराग का वृत्तात इस उपाख्यान से प्रभावित हुआ हो। अत्रि की पत्नी सीता को माला, वस्त्र और आभूपणो के अतिरिक्त एक अनश्वर (असक्लिष्ट) अगराग भी प्रदान करती है, जिससे सीता का शरीर दिव्य सो दर्य को प्राप्त होता है। (रा० २, ११८)

इद दिव्य वर माल्य वस्त्रमाभरणानि च।
अगराग च वैदेहि महाह मनुलेपनम् ॥१८॥
मया दत्तमिद सीते तव गात्राणि शोभयेत्।
अनुरूपमसक्लिष्ट नित्यमेव भविष्यति ॥१९॥
अगरागेण दिव्येन लिप्तागी जनकात्मजे।
शोभयिष्यसि भर्तार यथा श्रीर्विष्णुमव्ययम ॥२०॥

अध्यात्म रामायण मे भी इस अगराग का उल्लेख है (२, ६)

अगराग च सीतायै ददौ दिव्य शुभानना।
न त्यक्ष्यतेऽङ्गरागेण शोभा त्वा कमलानने ॥८६॥

रामचरितमानस मे इसका उल्लेख नही है। गोस्वामी तुलसीदास सभवत **तैत्तिरीय ब्राह्मण** के उपाख्यान से परिचित थे और उसे सीता की मर्यादा के विरुद्ध समझकर उन्होने इस अगराग के विषय मे जानबूझकर कुछ नही कहा। वे लिखते है

दिव्य वसन भूषण पहिराए।
जे नित नूतन अमल सुहाए ॥ (३, ४, ३,)

१० सीता सावित्री की कथा के एक दूसरे प्रभाव की कल्पना की जा सकती है।[१] **महाभारत** और **वाल्मीकि रामायण** के समय से लेकर परशुराम और बलराम की कथाए भी प्रचलित थी। इसीलिए **रामायण** के नायक को निर्दिष्ट करने के लिए किसी विशेषण कीआवश्यकता का अनुभव होने लगा था। पहले **महाभारत** तथा **रामायण** मे 'राम दाशरथि' का प्रयोग हुआ। आगे चलकर रामभद्र के अतिरिक्त

१ दे० ए० वेबर आन दि रामायण (पृ० २०, २१)।
एम० मोनियेर विलियम्स इडियन विजडम (पृ० ३६०) और ब्राह्मनिज्म (पृ० ११० टिप्पणी)।
एच० याकोबी डस रामायण, (पृ० १३७)।

'रामचन्द्र' नाम चल पडा । भवभूति के महावीरचरित ('चन्दमुह रामचन्द' दे० अक २, २०) तथा उत्तररामचरित (७, १८) मे इस नाम का सबसे पहला उल्लेख मिलता है । बाद ने पद्मपुराण आदि रचनाओ मे रामचन्द्र सब से लोकप्रिय नाम बन गया है । राम दाशरथि को चन्द्र की यह उपाधि क्यो मिली है ? इस प्रश्न को सुलझाने के लिए डाक्टर वेबर ने सीता सावित्री के वृत्तान्त का सहारा लिया है । यद्यपि डाक्टर वेबर की कल्पना को निर्मूल सिद्ध करने का मै साहस नही कर सकता लेकिन 'रामचन्द्र' नाम का कारण वाल्मीकि रामायण मे ढूढना अधिक स्वाभाविक प्रतीत होता है ।

राम के सौन्दर्य तथा लोकप्रियता की अभिव्यजना के लिए वाल्मीकि ने बहुत से स्थलो पर चन्द्रमा से राम की तुलना की है :

(राम) **चन्द्रमिवोदितम्** (२, ४४, २२)
(राममुख) **पूर्णचन्द्रमिवोदितम्** (६, ३३, ३२)
(राम) **पूर्णचन्द्रानन** (२, १, ४४)
(राम) **सोमवत्प्रियदर्शन** (१, १, १८)
(राम) **लोककान्त शशी यथा** (५, ३४, २८)
(रामवदन) **उदितपूर्णचन्द्रकान्तम्** (६, ११४, ३५)

ये उद्धरण सुगमता मे बढाये जा सकते हैं । अत रामचन्द्र नाम का आधार **वाल्मीकि रामायण** को छोड कर किसी अन्य प्राचीन उपाख्यान मे ढूढना अनावश्यक है । आदि-काव्य मे राम के सौन्दर्य, लोकप्रियता और सौम्यता की अभिव्यजना के लिए, उनके कोमल और शान्त स्वभाव के अकन के लिए जो बार-बार चन्द्र की तुलना मिलती है वह 'रामचन्द्र' नाम की उत्पत्ति समझने के लिए पर्याप्त है । इसके अतिरिक्त 'रामचन्द्र' का वाल्मीकि रामायण मे एक ही बार प्रयोग हुआ है । राम-रावण-युद्ध के वर्णन मे कहा गया है, कि 'राम-चन्द्र को रावण-राहु से ग्रस्त देखकर' देवता, वानर आदि घबडाते हैं

रामचन्द्रमस दृष्ट्वा ग्रस्त रावणराहुणा (६, १०२, ३२)

यहाँ पर 'रामचन्द्र' तथा 'रावणराहु' स्पष्टतया रूपक मात्र है । आगे चलकर 'रामचन्द्र' रूपक न रहकर, साधारण व्यक्तिवाचक सज्ञा के रूप मे चल पडा और आज तक चला आ रहा है ।

यदि प्रारम्भ से ही राम के लिए 'रामचन्द्र' नाम का प्रयोग किया जाता तो हम सम्भवत और आगे बढ सकते और यह कह सकते कि राम के शील और शान्त स्वभाव का कारण यह है कि मूलत वह चन्द्रमा के देवता ही थे । तब सीता सावित्री और सोम राजा का उपाख्यान राम-कथा का बीज माना जा सकता तथा **रामायण**

का अगराग और तैत्तिरीय ब्राह्मण का स्थागर अलकार मूलत खेत की सीता अर्थात् लागलपद्धति मे पडी हुई ओस होता जिसमे चन्द्रमा प्रतिबिबित होता है। इसी तरह सीता सावित्र और सीता, कृषि की अधिष्ठात्री देवी, दोनो का उद्गम एक होता। लेकिन प्रोफेसर वेबर, जिन्होने यह कल्पना की है, स्वय स्वीकार करते है कि यह कल्पना के अतिरिक्त और कुछ नही है। यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि राम सोमवशी न होकर सूर्यवशी ही है, अत उनका सोम से कोई प्राचीन सम्बन्ध बहुत सम्भव नही है।

सीता, कृषि की अधिष्ठात्री देवी

११ प्रारभिक वैदिक काल मे जिन देवताओ का उल्लेख है वे अधिकतर प्रकृति के देवता है अर्थात् 'प्रभावशाली प्राकृतिक दृश्यो और शक्तियो मे देवताओ की कल्पना कर ली गई है।'[१] कार्यक्षेत्र के अनुसार वे तीन वर्गो मे विभक्त है—द्युलोक, अतरिक्ष और पृथ्वी के देवता। ऋग्वेद मे इन्द्र (२५० सूक्त), अग्नि (२०० सूक्त) और सोम अर्थात् सोम-लता के मादक रस का देवता (१०० से अधिक सूक्त) सर्वप्रधान है। फिर भी सूर्य, द्यौ, वायु, उषा, वरुण, मित्र, पर्जन्य आदि बहुत से देवताओ का उल्लेख हुआ है। इन सबका कार्यक्षेत्र विस्तृत था और आर्यो का कुशल-क्षेम इन्ही पर निर्भर माना जाता था।

इनके अतिरिक्त एक दूसरे प्रकार के देवताओ की कल्पना की गई जिनका कार्य-क्षेत्र बहुत सीमित माना जाता था। इनमे क्षेत्रपाल, वास्तोष्पति (घर का देवता), सीता और उर्वरा (उपजाऊ भूमि) प्रधान है। धार्मिक चेतना मे इनका स्थान गौण था, क्योकि आर्यों का कुशल-क्षेम पहले प्रकार के देवताओ पर निर्भर माना जाता था। सीता, क्षेत्रपति आदि कृषि-सबधी देवताओ के कम महत्व का एक और कारण यह है कि प्रारम्भ मे कृषि की अपेक्षा पशु-पालन प्रधान रहा होगा। ऋग्वेद के सबसे प्राचीन अश मे (२—७ मडल) केवल एक ही सूक्त मे कृषि सम्बन्धी शब्दो का प्रयोग है और यह सूक्त दसवे मडल के समय का माना जाता है।[२] वह ऋग्वेद का

१ दे० बेनीप्रसाद : हिन्दुस्तान की पुरानी सभ्यता, पृ० ४१। जिस समय भारत-यूरोपीय जातिया साथ थी, इन देवताओ का रूप कौन सा था, इस पर यहाँ पर विचार नही किया जा सकता है। इतना ही निर्विवाद है कि वैदिक साहित्य मे ये देवता अधिकतर प्रकृति के देवता हैं।

२ दे० ऋग्वेद ४, ५७। इसमे 'समा' शब्द प्रयुक्त हुआ है जो १० वे मडल को छोडकर ऋग्वेद मे और कही नही मिलता। दे० ज० अ० ऑ० सो० १७, पृ०

स्थल है जहाँ सीता मे व्यक्तित्व और देवत्व का आरोप किया गया है। इस कृषि की अधिष्ठात्री देवी, और सीता सावित्री का अन्तर यह है कि एक तो देवत्व का आरोप है और दूसरा इसका उल्लेख आगे चल कर बराबर होता । यद्यपि वैदिक साहित्य मे उनसे सम्बन्ध रखने वाली केवल दो भिन्न प्रार्थनाए ती हैं, फिर भी इनका प्रयोग कृषि-सम्बन्धी कार्यों के अतिरिक्त अग्निचयन और मेध के अवसरो पर भी होने लगा। गृह्यसूत्रो मे हमे सीता के प्रति दो नई प्रार्थनाए ती है। ऋग्वेद से लेकर गृह्यसूत्रो तक इन सब स्थलो का यहाँ पर उल्लेख होगा महत्व के अनुसार इन पर न्यूनाधिक विचार किया जायगा।

१) ऋग्वेद का सूक्त (४, ५७)

१२ ऋग्वेद के सूक्त प्राय एक ही देवता से सम्बन्ध रखते हैं। लेकिन जिस त मे सीता का उल्लेख है उसमे कृषि सम्बन्धी अनेक देवताओ से प्रार्थना की जाती बहुत सम्भव है कि ये प्रार्थनाएँ अनेक स्वतन्त्र मन्त्रो के अवशेष है जो एक ही सूक्त सकलित हो जाने पर बाद मे चौथे मडल के अन्तर्गत रखे गए। पहले तीन छदों देवता क्षेत्रपति है, चौथे छद का देवता शुन (एक देवता जिसके द्वारा कार्य सुखपूर्वक पन्न होता है और जो अगले छद के शुन से भिन्न है—**शुनाख्यो वाय्विन्द्रयोरन्यतम** **त्कद्देव** —सायण), पाचवे और आठवे छदो के देवता **शुनासीर** है (शौनक के सार ये इन्द्र और वायु हैं लेकिन यास्क के अनुसार वायु और आदित्य समझना हिये), छठे और सातवे छद की देवी सीता है। सारे सूक्त का भावानुवाद इस कार है —

हितकारी क्षेत्रपति के साथ हम गौ और अश्व के लिए पुष्टकारक (अन्न) प्राप्त रते हैं। वह (क्षेत्रपति) हम लोगो को उक्त प्रकार का (अन्न) प्रदान करे ॥१॥

हे क्षेत्रपति! जिस तरह से धेनु दूध देती है, इसी तरह तू प्रचुर मात्रा मे हम गो को मधुस्रावी और घृतसदृश जल प्रदान कर। ऋत के स्वामी (उक्त प्रकार दान से) हम पर कृपा करे ॥२॥

खेत की ओषधियाँ हमारे लिए मधुयुक्त हो। द्युलोक, जल-समूह और अतरिक्ष म लोगो के लिए मधुयुक्त हो। क्षेत्रपति हमारे लिए मधुयुक्त हो। हम लोग शत्रुओ से) भयरहित होकर (क्षेत्रपति की) शरण लेते रहे ॥३॥

८५--६। इसका अभिप्राय यह नही है कि सीता आदि देवताओ की कल्पना पुरानी नही है इससे केवल यह सिद्ध होता है कि उनका स्थान अपेक्षाकृत गौण था। आगे दिखलाया जायगा कि उनका और विशेष करके सीता का महत्व धीरे-धीरे उत्तरोत्तर बढता रहा।

(बैल आदि) वाहन सुख से रहे। कृषक सुख से रहे। हल सुख से जोते। (हल की) रस्सियाँ सुख से बाँधी जाए। अकुशको सुख से ऊपर उठा-उठा कर चलाओ ॥४॥

हे शुनासीर! तुम दोनो हमारी इस स्तुति से प्रसन्न हो जाओ। जो जल तुम दोनो ने आकाश मे बनाया है, उससे इसको (भूमि को) सीचते रहो ॥५॥

हे सौभाग्यवती! (कृपा दृष्टि से) हमारी ओर अभिमुख हो। हे सीते! तेरी हम वन्दना करते है जिससे तू हमारे लिए सुदर धन और फल देने वाली होवे ॥६॥

इन्द्र सीता को ग्रहण करे, पूषा (सूर्य) उसका सचालन करे। वह पानी से भरी (सीता) प्रत्येक वर्ष हमे (धान्य) प्रदान करती रहे ॥७॥[1]

सुदर हल सुखपूर्वक हमारे लिए भूमि को जोते, कृषक वाहनो के पीछे-पीछे सुख से चले। पर्जन्य मधुर जल द्वारा (पृथ्वी को सिक्त करे)। हे शुनासीर! हम लोगो को सुख प्रदान करो ॥८॥[2]

प्रस्तुत विषय के दृष्टिकोण से इस सूक्त का महत्व यह है कि इसमे सीता के प्रति सब से प्राचीन प्रार्थना सुरक्षित है। सीता के प्रति जो दूसरी प्रार्थना वैदिक साहित्य मे मिलती है उसकी अधिकाश सामग्री इस सूक्त से ली गई है। तीनो ऋग्वेदीय गृह्यसूत्रो मे भी 'कृषिकर्माणि' परिच्छेद के अतर्गत इस सूक्त का उल्लेख हुआ है।

(२) सीरा युजति

१३ सीता के नाम से जो दूसरी प्रार्थना वैदिक साहित्य मे मिलती है वह 'सीरा युजति' मन्त्र का एक अश है। यह मन्त्र यजुर्वेदीय सहिताओ मे भी मिलता है और अथववेद मे भी। यजुर्वेद मे इसका प्रयोग कृषि को छोडकर एक दूसरे प्रसग

---

१ अवार्ची सुभगे भव सीते वदामहे त्वा।
यथा न सुभगाससि यथा नः सुफलाससि ॥६॥
इद्रः सीता निगृह्णातु ता पूषानु यच्छतु।
सा नः पयस्वती दुहामुत्तरामुत्तरा समाम् ॥७॥

सायण के अनुसार 'इद्र सीता ' का अर्थ है—'इद्र सीता सीताधारकाष्ठा निगृह्णातु' और 'सा न ' का अर्थ, 'द्यौ पयस्वत्युदकवती', जो चिन्त्य प्रतीत होता है।

२ इस सूक्त के अनुवाद के लिए लूड्विग, ग्रासमैन, विलसन और सायण के अतिरिक्त प० रामगोविन्द द्विवेदी के हिन्दी भाष्य से सहायता मिली है। (वैदिक पुष्पमाला, १, भागलपुर)।

मे हुआ है जो मौलिक नही प्रतीत होता । अत पहले अथर्ववेद के प्रसग का विश्लेषण किया जाता है ।

अथववेद के मत्र जीवन की भिन्न-भिन्न आवश्यकताओ के लिए लिखे गए हैं । उद्देश्य के अनुसार वे अनेक वर्गों मे विभाजित किए जाते हैं, 'भैषज्यानि' रोग से छुटकारा पाने के लिए, 'आयुष्याणि' स्वास्थ्य और दीर्घ आयु के लिए, 'पौष्टिकानि' व्यापार-कृषि-पशुपालन आदि मे सफलता प्राप्त करने के लिए, 'अभिचारिकाणि' शत्रुओ और भूतो के नाश के लिए ।

प्रस्तुत 'सीरा युजति' मत्र 'पौष्टिकानि' मत्रो मे से एक है (अथर्ववेद, ३, १७) । इसमे कृषि के विभिन्न कार्यों की सफलता के लिए अनेक देवताओ से प्रार्थना की जाती है । ढाई छद को छोडकर इस मत्र की सारी सामग्री ऋग्वेद के दो सूक्तो से ली गई है ।[१]

सीरा यु जति कवियो युगा वि तन्वते पृथक । धीरा देवेषु सुम्नयौ ॥१॥

'देवताओ से अनुग्रह प्राप्त करने की आशा मे धीर चतुर (कृषक) हलो को जोडते हे और जुओ को अलग अलग करके दोनो ओर फैलाते हैं ।'

युनक्त सीरा वि युगा तनोत कृते योनौ वपतेह बीजम् ।
विराज श्नुष्टि सभरा असन्नो नेदीय इत्सृण्य पक्वमा यवन् ॥२॥

'हलो को जोडो, जुओ को फैलाओ और बने हुए खेत मे यहा पर बीज बोओ । अन्न की उपज हमारे लिए भरी पूरी होवे और धान्य हँसुए के लिए उत्तरोत्तर बढता जाय ।'

लागल पवीरवत्सुशीम सोमसत्सरु ।
उदिद्वपतु गामवि प्रस्थावद्रथवाहन पीबरीं च प्रफव्यम् ॥३॥

'अच्छा फाल वाला, बहुत सुख देने वाला, चिकना मूठवाला हल, गौ, भेड, शीघ्र-गामी रथ और हृष्टपुष्ट सुन्दरी उत्पन्न करे (अर्थात् कृषि के द्वारा हर प्रकार का सुख मिल जाय) ।'

इन्द्र सीता निगृह्णातु ता पूषाभि रक्षतु
सा न पयस्वती दुहामुत्तरामुत्तरा समाम् ॥४॥

---

१ छद ३, ६, ५ (उत्तरार्द्ध)—नई सामग्री ।
छन्द १ और २--ऋग्वेद १०, १०१ । सूक्त के रचयिता ऋत्विजो को यज्ञ के लिए प्रोत्साहित करते हुए यज्ञ की तुलना कृषि के विभिन्न कार्यों से करते हैं (हल जोतना, बीज बोना, फसल लुनना) ।
शेष छन्द—ऋग्वेद ४, ५७ ।

'इ द्र सीता को ग्रहण करे (दबावे), पूषा (सूर्य) उसकी रखवाली करे। वह पानी से भरी (सीता) प्रत्येक वर्ष हमे (धान्य) प्रदान करती रहे।'

शुन सुफाला वि तुदन्तु भूमि शुन कीनाशा अनु यन्तु वाहान्।
शुनासीरा हविषा तोशमाना सुपिप्पला ओषधा कतमस्मै ॥५॥

हे हवि से चूनेवाले शुनासीर ! (फाल और हल)[१] इस मनुष्य के लिए मुन्दर फलवाली (जौ आदि) ओषधिया उत्पन्न करो।'

शुन वाहा शुन नर शुन कृषतु लागलम्।
शुन वरत्रा बध्यता शुनमष्ट्रामुदिगय ॥६॥

'वाहन सुख से रहे। कृषक सुख से रहे। हल सुख से जोते। (हल की) रस्सियाँ सुख से बाधी जाएँ। अकुश को सुख से ऊपर उठा उठा कर चलाओ।'

शुनासीरेह स्म मे जुषेथाम्।
यद्दिवि चक्रथु पयस्तेनेमामुप सिचतम ॥७॥

हे शुनासीर ! (वायु और आदित्य) तुम दोनो यही पर मेरी विनय स्वीकार करो, जो जल तुम दोनो ने आकाश मे बनाया है, उससे इस भूमि को सीचते रहो।'

सीते वन्दामहे त्वार्वाची सुभगे भव।
यथा न सुमना असो यथा न सुफला भुव ॥८॥

'हे सीता ! तेरी हम वदना करते है, हे सौभाग्यवती ! (कृपादृष्टि से) हमारी ओर अभिमुख हो, जिससे तू हमारे लिए हिताकाक्षिणी होवे और जिससे तू हमारे लिए सुन्दर फल देने वाली होवे।'

घृतेन सीता मधुना समक्ता विश्वैर्देवैरनुमता मरुद्भि।
सा न सीते पयसाभ्याववृत्स्वोजस्वती घृतवत्पिन्वमाना ॥९॥

'घी और मधु से सानी हुई सीता विश्वदेवताओ और मरुतो से अनुमोदित (रक्षित) होवे। हे सीता ! ओजस्विनी और घी से सीची हुई, तू जल (दूध) के साथ हमारे पास विद्यमान रहे।'[२]

---

१ यास्क के अनुसार 'शुनासीरौ' से वायु और आदित्य का अभिप्राय है, जैसे आगे ७ वे छद मे। तब अनुवाद इस प्रकार होगा—'हे हवि से उत्तेजित शुना और सीर'।

२ प० जयदेव जी शर्मा (अजमेर, आर्य साहित्य मडल) का अनुवाद—'हे सीते ! (सा) वह तू (ऊर्जस्वती) पुष्टिकारक अन्न देनेहारी और घृतवत् दूध आदि पदार्थो से (पिन्वमाना) सब को तृप्त करती हुई (पयसा) पुष्टिकारक अन्न और जल सहित (नः अभि-आ-ववृत्स्व) हमारे पास विद्यमान रह'। सारे

मत्र के अतिम छदो से स्पष्ट है कि उच्चारण के साथ-साथ खेत की सीता मे घी और मधु का सिंचन किया जाता था। काठक गृह्यसूत्र मे जहाँ गोयज्ञ के अत मे इस 'सीरा युजति' मत्र का प्रयोग है, भाष्यकार इस सिचन का स्पष्ट उल्लेख करते है .

कर्मणि समाप्ते घृतेन सीतेति चतुर्गृहीतेनाज्यस्य प्रदानम्।

अर्थात् कार्य समाप्त होने पर 'घृतेन सीता' आदि कहकर चार बार घी डाला जाता है।

१४ **यजुर्वेद**। यजुर्वेद उन मत्रो का सग्रह है जिन्हे अध्वर्यु और उसके सहायक विविध यज्ञो मे पढते थे। **कृष्ण यजुर्वेद** की चारो सहिताओ मे मत्रो के साथ कुछ गद्य भी मिलाया गया है। **शुक्ल यजुर्वेद** की एकमात्र **वाजसनेयि सहिता** मे केवल मत्र दिये गये है और उनसे सम्बन्ध रखने वाला गद्य **शतपथ ब्राह्मण** मे सकलित है। इन सब रचनाओ मे 'अग्नि चयन' के वर्णन के अतर्गत उपर्युक्त 'सीरा युजति' मत्र किंचित् पाठभेद सहित उद्धृत है।

'अग्निचयन' मे हमे उन मत्रो और कर्मों का विस्तृत वर्णन मिलता है जो अग्नि की वेदी के निर्माण के लिए आवश्यक समझे जाते थे। यह प्रसग यजुर्वेद का सब से दार्शनिक अश है। इसमे यज्ञ के तत्त्व और महत्त्व के सम्बन्ध मे अनेक सिद्धान्तो का प्रतिपादन किया गया है। वेदी के क्षेत्र को तैयार करने के लिए हल द्वारा विशेष युक्ति के अनुसार सीताएँ खींचो जाती थी। उस समय 'सीता युजति' मत्र पढा जाता था, जिसमे सीता के प्रति निम्नलिखित प्रार्थना मिलती है

'हे कामधेनु सीता! मित्र, वरुण, इद्र, आश्विन, पूषण, प्रजा और ओषधियाँ, (इन सबो) का मनोरथ पूरा कर।

घी और मधु से सानी हुई सीता विश्वदेवताओ और मरुतो से अनुमोदित (रक्षित) होवे। हे सीता! ओजस्विनी और घी से सीची हुई, तू जल (दूध) के साथ हमारे पास विद्यमान रह।'[१]

आगे चलकर श्रौत सूत्रो मे 'अग्निचयन' का वर्णन तो मिलता है, लेकिन एकाध सूत्रो को छोडकर प्रस्तुत मन्त्र का उल्लेख नही मिलता।[२]

१५ **तैत्तिरीय आरण्यक**। **कृष्णयजुर्वेद** के तैत्तिरीय आरण्यक मे हमे पहले पहल

मत्र के अनुवाद के लिए ह्विटनी और वेबर के अतिरिक्त प० क्षेमकरणदास द्विवेदी (अथर्ववेदभाष्यम्, लूकरगज, प्रयाग) की सहायता ली गई है।

१ दे० तैत्तिरीय स० ४, २, ५, ५-६, काठक स० १६, १२, मैत्रायणि स० १, ७, १२, कपिष्ठल स० २५, ३, शतपथ ब्रा० ७, २, २।

२ दे० कात्यायन श्रौत सू० १७, २, १० और वैतान सूत्र २८, २९।

उपर्युक्त सामग्री का पितृमेध के अवसर पर प्रयोग मिलता है। अन्त्येष्टि के पश्चात् जलाई हुई हड्डियाँ एक घडे (अस्थिकुम्भ) मे रखी जाती थी और उपयुक्त समय पर गाडी भी जातो थी। इस क्रिया के अनन्तर हल द्वारा उस स्थान पर (जिसे श्मशान कहते थे) अनेक सीताएँ खीचो जाती थी।[1] साथ-साथ 'सीरा युजन्ति' के मन्त्र के छद पढे जाते थे। इस कार्य की समाप्ति पर सीताओ की ओर देखते हुए पुरोहित कहते थे

'हे सीता! तेरी हम वदना करते हैं, हे सौभाग्यवती! (कृपादृष्टि से) हमारी ओर अभिमुख हो, जिससे तू हमारे लिए सुन्दर धन और फल देने वाली होवे'।

ऐसा प्रतीत होता है कि आगे चल कर यह प्रयोग सीमित रहा, क्योकि केवल दो गृह्यसूत्रो मे पितृमेध के अतर्गत इस प्रार्थना का उल्लेख है।

प्रस्तुत विषय समाप्त करने के पहले हम गृह्यसूत्रो की सामग्री पर भी दृष्टि डालेगे।[2] ये सूत्र श्रुति के अग तो नही हैं, फिर भी इनका वैदिक साहित्य से घनिष्ठ सम्बन्ध है और इनका सूत्रपात वैदिक काल के अत मे हुआ था।

(३) गृह्य सूत्र

१६ वैदिक साहित्य की अपेक्षा गृह्यसूत्र मे सीता से सम्बन्ध रखने वाली सामग्री कही अधिक विस्तृत है।[3] इससे स्पष्ट है कि वैदिक काल के अन्त मे कृषि का महत्व बढने लगा था। यह सामग्री प्राय विविध कृषि-कर्मो के वर्णन मे मिलती है। इसका विश्लेषण करने के पहले उन स्थलो का उल्लेख करना है जहाँ कृषि को छोडकर किसी दूसरे प्रसग मे सीता से सम्बन्ध रखने वाली सामग्री मिलती है।

ऊपर कहा गया है कि तैत्तिरीय आरण्यक मे पितृमेध के अवसर पर सीता से प्रार्थना की जाती थी। कृष्णयजुर्वेद के आग्निवेश्य और बोधायन गृह्यसूत्रो मे भी इसी

---

१ दे० तैत्तिरीय आर० ६, ६। शतपथ ब्राह्मण मे भी इस क्रिया का वर्णन मिलता है (१३, ८) लेकिन वहाँ किसी मन्त्र का उल्लेख नही है।

२ धर्म और शुल्वसूत्रो मे सोता का उल्लेख नही मिलता।

३ निम्नलिखित गृह्यसूत्रो मे सीता, कृषि की अधिष्ठात्री देवी, का कोई उल्लेख नही है। सामवेद के खदिर और जैमिनि सूत्र और कृष्णयजुर्वेद के आपस्तम्ब, हिरण्यकेशिन्, भारद्वाज, वैखानस और वाराह गृह्यसूत्र। जहाँ 'सीता' अर्थात् लागलपद्धति का शब्द मात्र आया है उन स्थलो की यहा पर उल्लेख नही किया गया है।

प्रसग मे सीता से इस प्रार्थना का उल्लेख है।[1] इन दोनो सूत्रो मे इस स्थल को छोडकर सीता से सम्बन्ध रखने वाली अ य सामग्री नही मिलती ।

काठक गृह्यसूत्र मे 'सीरा युजति' मत्र का 'गोयज्ञ' के अवसर पर एक नया प्रयोग हुआ है। अन्य सूत्रो मे इस गोयज्ञ का और पशुपालन से सम्बन्ध रखनेवाले अनेक कार्यों का वर्णन अवश्य मिलता है। लेकिन अन्यत्र इसी प्रसग मे सीता का उल्लेख नही मिलता। गोयज्ञ नई ब्याई गायो के स्वास्थ्य आदि के लिए किया जाता है। इसमे काठक गृह्यसूत्र के अनुसार दो सीताएँ खीची जाती है, 'सीरा युजति' मत्र पढा जाता और अन्त मे सीता मे घी डाला जाता है।[2]

१७ उक्त स्थलो को छोडकर सीता का उल्लेख केवल कृषि कार्यो के वर्णन मे हुआ है। इन कृषि सम्बन्धी कार्यों मे सीता का स्थान समझने के लिए हमे स्मरण रखना चाहिए कि वह कृषि की एकमात्र अधिष्ठात्री देवी नही है। इन विविध यज्ञो और कार्यों मे सीता के साथ-साथ अन्य देवताओ का भी बराबर उल्लेख होता है। इसके अतिरिक्त 'आग्रयण' (अथवा नवयज्ञ) के अवसर पर केवल इन्द्र, अग्नि, विश्वदेवता और द्यौपृथिवी का उल्लेख हुआ है। फिर भी इसी एक यज्ञ को छोडकर कृषि के अ य यज्ञो मे सीता से अवश्य प्रार्थना की जाती थी। अत कृषि की एकमात्र अधिष्ठात्री देवी न होने पर भी सीता का स्थान प्रधान माना जाना उचित है। इन विविध कृषिकर्मों का परिचय नीचे दिया जाता है।

'लागलयोजनम्' का वर्णन चारो वेदो के गृह्यसूत्रो[3] मे मिलता है जिनमे से शुक्लयजुर्वेद का पारस्कर गृह्यसूत्र और अथर्ववेद का कौशिक सूत्र सब से अधिक

---

१ दे० अग्निवेश्य गृ० सू०, ३, ८ (लोष्टचिति) और बोधायन गृ० सू०, पितृमेध सूत्रम् १, १८ (श्मशानकरणम्) ।

२ दे० काठक गृह्यसूत्र ७१, १-६ (दयानन्द महाविद्यालय सस्कृत ग्रन्थमाला ६)

३ दे० ऋग्वेद के शाखायन गृ० सू० ४, १३ , कौषीतक , शाबव्यकृत . ३, १३
और आश्वलायन गृ० सू० २, १०, ३-४
सामवेद का गोभिल गृ० सू० ४, ४, २७ २६
शुक्लयजुर्वेद का पारस्कर गृ० सू० २, १३
कृष्णयजुर्वेद का मानव गृ० सू० २, १०, ७
अथर्ववेद का कौशिक गृ० सू० २०
मानव गृ० सू० मे इस कर्म के दो भिन्न भाग माने जाते हैं, आयोजन (कर्षणसामग्रीकरणम्) और पर्ययन (प्रथम क्षेत्रगमनम्) ।

विस्तार मे जाते है। लोग खेत ही पर अनेक देवताओ[1] को स्थालीपाक आदि चढ़ाया जाता है। हल द्वारा सीताए खीची जाती है और साथ साथ 'सीरा युजंति' मंत्र पढा जाता है और अंत मे ब्राह्मणो को भोजन दिया जाता है।

'सीतायज्ञ' का उल्लेख तीन सूत्रो[2] मे मिलता है। पारस्कर गृह्यसूत्र मे इसका विस्तृत वर्णन किया गया है। लोग खेत के उत्तर या पूर्व मे किसी जोते हुए शुद्ध स्थल पर (या गाव मे) आग जलाते है और स्थालीपाक तैयार करते है। घृत की आहुति करते समय इंद्र, सीता और उर्वरा से प्रार्थना की जाती है। इसके अनंतर सीता, यजा (यज्ञ की देवी), समा (भक्ति की देवी) और भूति (धन की देवी) को स्थालीपाक चढाया जाता है। अंत मे सीता की रक्षा करने वाले भूतो को (सीतागोप्तृ) भी दर्भ की बलि चढाई जाती है। स्त्रिया भी बलि चढाती है और कार्य समाप्त होने पर ब्राह्मणो को भोजन दिया जाता है।

आहुति करते समय सीता से जो प्रार्थना की जाती है, उसका अर्थ यह है

'इन्द्रपत्नी[3] सीता का मैं आह्वान करता हूँ, जिसके तत्व मे वैदिक और लौकिक (दोनो प्रकार के) कार्यों की विभूति निहित है। वह (सीता) सब कार्यों मे निरंतर मेरी सहायता किया करे। स्वाहा[4]।'

इसके पश्चात् उर्वरा के प्रति यह प्रार्थना पढते थे—'अति प्रशंसित उर्वरा (उपजाऊ भूमि) का मै इस यज्ञ मे आह्वान करता हूँ, जो अश्व, गाय (आदि संपत्ति प्रदान करने) वाली है, जो प्राणियो का नित्य पालन करती है, जिसके चारो ओर खलियानो की माला (सुशोभित) है। वह स्थिर रहने वाली (उर्वरा) निरंतर मेरी सहायता किया करे। स्वाहा।'

काठक गृह्यसूत्र के अनुसार इस यज्ञ मे केवल 'सीरा युजंति' मंत्र की यह प्रार्थना पढी जाती है—'घी और मधु से सनी हुई सीता, विश्वदेवताओ और मरुतो से रक्षित

---

१ पारस्कर गृ० सू० मे ८ देवता, गोभिल गृ० सू० मे ६ देवता और मानव गृ० सू० मे १२ देवता है। इनके नाम प्रत्येक सूत्र मे भिन्न हैं, लेकिन इंद्र और सीता सर्वत्र पाये जाते हैं।

२ दे० पारस्कर गृ० सू० (२, १७), काठक गृ० सू० (७१, ७) और गोभिल गृ० सू० (४, ४, ३०)।

३ कीथ अनुमान करते हैं कि 'इंद्रपत्नी' विशेषण का कारण यह है कि ऋग्वेद मे (८, २१, ३) इन्द्र को 'उर्वरापति' कहते हैं।

४ दे० पारस्कर गृ० सू० (२,१७,४—'यस्याभावे वैदिकलौकिकानां भूतिर्भवति कर्मणाम्। इन्द्रपत्नीमुपह्वये सीतां सा मे त्वनपायिनी भूयात्कर्मणि कर्मणि स्वाहा'।

होवे। सीता! ओजस्विनी और घी से सींची हुई तू जल के साथ हमारे पास रह।' भाष्यकार देवपाल लिखते हैं कि कार्तिक शुक्ल की द्वादशी मे यह सीतायज्ञ आर्यों मे प्रसिद्ध है, यत्र वीरणादिमयी सीता कुमारी देवता विरच्यते—'जब खस आदि (सुगन्धित घास) से सीता कुमारी देवी की मूर्ति बनाई जाती है।'

'लागलयोजनम्' और 'सीतायज्ञ' के अतिरिक्त निम्नलिखित कृषिकर्मों का उल्लेख मात्र मिलता है—बीजवपनीय यज्ञ, प्रलवन (धान्य के लुनने पर), खलयज्ञ, तन्त्रीयज्ञ (धान्य के साफ किए जाने पर), पर्य्ययण (धान्य के घर पहुँचने पर)[1]। इन सब अवसरो पर इन्द्र, सीता आदि अनेक देवताओ को बलि चढाई जाती थी। मानव गृह्यसूत्र के अनुसार अन्य सब त्योहारो पर भी (सावत्सरेषु पर्वसु) उन्ही देवताओ की पूजा होनी चाहिए[2]। इससे हम अनुमान कर सकते है कि इन कृषि के अधिष्ठाता देवताओ का महत्व बराबर बढता रहा और कृषको के धार्मिक जोवन मे इनका स्थान उत्तरोत्तर व्यापक होता जा रहा था। इनमे से सीता को प्रधान समझना चाहिए। यह प्रस्तुत विश्लेषण से सभवत: स्पष्ट हो जाता है।

१८ उपर्युक्त सामग्री के अतिरिक्त कौशिक सूत्र के तेरहवे अध्याय मे सीता से जो विस्तृत प्रार्थना की गई है उसका उद्धरण हमने अन्त तक छोड रखा है। कौशिक सूत्र के इस अध्याय की सामग्री सामवेद के अद्भुतब्राह्मण से मिलती जुलती है। अनेक विलक्षण घटनाओ पर अपशकुन के निवारण आदि के लिए जो कर्मकाड आवश्यक समझा जाता था उसका इस अद्भुताध्याय मे वर्णन है। सीता सम्बन्धी सामग्री 'लागलो ससर्गे' अर्थात् दो हलो के उलझ जाने के प्रसग मे आ गई है। ऐसे अवसर पर पुरोडाश तैयार करके पुरोहित को जगल मे पूर्व की ओर एक सीता खीचनी पडती थी और उसमे आग जलाकर आहुति करते समय उसे सोता से यह प्रार्थना करनी पडती थी:

> वित्तिरसि पुष्टिरसि प्राजापत्याना'[3] त्वाह मयि
> पुष्टिकामो जुहोमि स्वाहा ॥

---

१ बीजवपनीय के लिए दे० काठक गृ० सू० (७१, ८), गोभिल गृ० सू० (४, ४, ३०) और मानव गृ० सू० (२, १०, ७)। शेष यज्ञो का उल्लेख केवल गोभिल (वही) और मानव गृ० सू० (वही) मे मिलता है।

२ भाष्यकार देवपाल लिखते हैं कि यह पूजा कृषको के लिए है—'कृषि-वृत्तिजीवनैः'।

३ यह ए० वेबर का पाठ है। दे० अबहैंड्लूंगन बर्लिनर एकाडेमी, १८५८, पृ०

कुमुद्वती पुष्करिणी सीता सर्वांगशोभनी ।
कृषि सहस्रप्रकारा प्रत्यष्टा श्रीरिय मयि ॥
उर्वी त्वाहुर्मनुष्या श्रिय त्वा मनवो विदु ।
आशयेऽन्नस्य नो धेह्यनमीवस्य शुष्मिण ॥
पर्जन्यपत्नि[1] हरिण्यभिजितास्यभि नो वेद ।
कालनेत्रे हविषा नो जुषस्व तृप्ति नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ॥
याभिदे वा असुरानकल्पयन्यातून् ग धर्वान् राक्षसश्च ।
ताभिर्नो अद्य सुमना उपागहि सहस्रापोष सुभगे रराणा ॥
हिरण्यस्रक् पुष्करिणी श्यामा सर्वांगशोभिनी'।
कृषिर्हिरण्यप्रकारा प्रत्यष्टा श्रीरिय मयि ॥
अश्विभ्या देवि सह सविदाना इन्द्रेण राधेन
सह पुष्टया न आगहि ॥
विशस्त्वा रासान्ता प्रदिशोऽनु सर्वहोरात्रार्धमासमासा
आर्तवा ऋतुभि सह ॥
भर्त्रीदैवानामुत मर्त्याना भर्त्री प्रजानामुत मनुष्याणाम
हस्तभिरित्तरासै क्षेत्रसाराधिभि सह ॥
हिरण्यैरश्वैरा गोभि प्रत्यष्टा श्रीरिय मयि ॥

'(हे सीता) तू प्रजापति की सतति को धन और पुष्टि (देने वाली) है, मैं पुष्टि की कामना करके तुझको आहुति देता हूँ । स्वाहा ।

हे कुमुदो और पुष्करो[2] से सुसज्जित सर्वांगशोभिनी सीता, इस सहस्रप्रकारा कृषि की श्री निरन्तर मेरे साथ रहे ।

मनुष्य तुझको उर्वी कहते हैं, बुद्धिमान् तुझको श्री मानते हैं, हमको स्वास्थ्यकर और शक्तिप्रद अन्न प्रचुर मात्रा में दे ।

हे विजयिनी हिरण्यमयी पर्जन्यपत्नी ! हम पर कृपा कर । हे कालनेत्रे ! हवि से प्रसन्न हो जा और द्विपदो तथा चतुष्पदो के लिए हमको तृप्ति दे ।

जिन (शक्तियो) से देवतागण असुरो, यातुओ, गन्धर्वों और राक्षसो का नियन्त्रण

३७०-७३ । ब्लुमफील्ड के अनुसार प्राज्ञापत्याना' होना चाहिए । (दे० जर्नल अमेरिकन ओरियेन्टल सोसाइटी, भाग १४) ।

१ अथर्ववेद मे पृथिवी को पजन्यपत्नी कहा गया है (१२, १, ४२) ।

२ वेबर के अनुसार इसका अनुवाद है, 'बालियो से सुसज्जित' ।

करते हैं, उन (शक्तियों) के साथ आज प्रसन्न होकर हमारे पास आ और हमको सहस्रविध पुष्टि प्रदान कर।

हे श्यामा ! हिरण्यमयी माला धारण करने वाली, पुष्करों से सुसज्जित सर्वांगशोभिनी, इस हिरण्यमयी कृषि की श्री निरन्तर मेरे साथ रहे।

हे देवि ! तू अश्विनों, इन्द्र, और राध (नक्षत्र) के साथ संबद्ध है, पुष्टि (कारक अन्न) के साथ हमारे पास आ।

सब दिशाओं में विश्व तेरी देख रेख करते हैं। दिन, रात, अर्द्धमास, पूर्णमास और ऋतुएं (सब तेरी देख-रेख करती हैं)।

'मनुष्यों और देवताओं, दोनों का तू पालन करती है। त्रिविध आसन से युक्त हाथी, क्षेत्रसारथि, हिरण्य, अश्व, गोधन, यह (सारी) सम्पत्ति निरन्तर मेरे साथ रहे।'

इस प्रार्थना में सर्वाङ्गशोभिनी, हिरण्यमयी माला धारण करने वाली, कालनेत्रा, श्यामा, हिरण्यमयी पर्जन्यपत्नी सीता का मानवीकरण अत्यन्त स्पष्ट है।

१६ ऋग्वेद से लेकर गृह्यसूत्रों तक उपर्युक्त सीता सम्बन्धी सामग्री देख कर हम निस्संकोच कह सकते हैं कि इस सीता का व्यक्तित्व शताब्दियों तक कृषि करने वाले आर्यों की धार्मिक चेतना में जीता रहा। महाभारत आदि में भी इसके अनेक प्रमाण मिलते हैं। द्रोणपर्व के जयद्रथवध पर्व के अन्तर्गत ध्वजवर्णन नामक अध्याय में (७, ८०) कृषि की अधिष्ठात्री देवी, सब बीजों को उत्पन्न करने वाली सीता का उल्लेख हुआ है :

> मद्रराजस्य शल्यस्य ध्वजाग्रेऽग्निशिखामिव।
> सौवर्णीं प्रतिपश्याम सीतामप्रतिमां शुभाम् ॥ १८ ॥
> सा सीता[1] भ्राजते तस्य रथमास्थाय मारिष।
> सर्वबीजविरूढेव यथा सीता श्रिया वृता ॥ १९॥

हरिवंश के द्वितीय भाग में दुर्गा की एक लम्बी स्तुति के अंतर्गत कहा गया है, 'तू कृषकों के लिए सीता है तथा प्राणियों के लिए धरणी'

> कर्षकाणां च सीतेति भूतानां धरणीति च (२, ३, १४)।

बौद्ध अभिधर्म महाविभाषा के चीनी अनुवाद में यों लिखा है

'यदि कृषक बीज बोने के बाद शरत्काल में प्रचुर शस्य प्राप्त करता है, तब वह कहता है, यह (शस्य) श्री, सीता और समा इन देवियों का वरदान है।'[2]

---

१ सीता का अर्थ यहाँ पर 'लांगल का अग्रभाग' होता है। पद्मपुराण में भी 'सीता' इस अर्थ में प्रयुक्त है (दे० पातालखंड, अध्याय ५७)।

२ दे० ज० रा० ए० सो० १९०७, पृ० १०२। महाविभाषा का रचनाकाल

वाल्मीकि रामायण पर भी सीता, कृषि की अधिष्ठात्री देवी, का प्रभाव पडा है। यद्यपि इसका रामायण मे कोई स्पष्ट उल्लेख नही है फिर भी अयोनिजा सीता के जन्म और तिरोधान के जो वृत्तान्त मिलते हैं, वे सभवत इस वैदिक सीता के व्यक्तित्व से प्रभावित है। इसका विश्लेषण निबन्ध के चतुर्थ भाग मे किया जायगा।

ग—वैदिक साहित्य मे रामकथा का अभाव

२० विस्तृत वैदिक साहित्य की बहुसख्यक रचनाओ मे जहाँ कही रामकथा के पात्रो के नाम मिलते है, उन सब स्थलो का उल्लेख और महत्वानुसार उनके प्रसग का वर्णन प्रस्तुत अध्याय के पहले दो परिच्छेदो मे किया गया है। सारी सामग्री का सिंहावलोकन करने पर वैदिक साहित्य और राम-कथा के सम्बन्ध के विषय मे हम किस निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं इसका इस अन्तिम परिच्छेद मे निर्णय करना है।

ऋग्वेद मे इक्ष्वाकु, दशरथ और राम, इन तीनो का एक एक बार उल्लेख हुआ है। वे प्रभावशाली ऐतिहासिक राजा थे, इतना ही परिचय इन स्थलो से मिल सकता है। इनका पारस्परिक सम्बन्ध असम्भव नही है, लेकिन इसका कोई निर्देश नही मिलता। आगे चलकर इनका वैदिक साहित्य मे और कही उल्लेख नही हुआ है। **ऋग्वेद** मे सीता का भी एक बार उल्लेख हुआ है। लेकिन इस सीता का **रामायण** के उपर्युक्त अन्य ऐतिहासिक पात्रो से सम्बन्ध असम्भव ही है, क्योकि उसका व्यक्तित्व ऐतिहासिक न होकर सीता अर्थात् लागलपद्धति के मानवीकरण का परिणाम है।[१] इस सीता का उल्लेख वैदिक काल के प्रारम्भ से लेकर अन्त तक बराबर होता रहा है।

ब्राह्मणो से राम मार्गवेय, राम औपतस्विनी तथा राम क्रातुजातेय इन तीनो का परिचय मिलता है। इनके ऐतिहासिक होने मे सदेह नही किया जा सकता है, लेकिन उनका **रामायण** के राम से कोई भी सम्बन्ध सभव प्रतीत नही होता।

ब्राह्मणो तथा प्राचीन उपनिषदो मे अश्वपति और जनक का पहले पहल उल्लेख मिलता है। अश्वपति का **रामायण** के पात्रो से कोई सम्बन्ध निर्दिष्ट नही हुआ है। इतना ही प्रतीत होता है कि वे ऐतिहासिक राजा थे, जो सम्भवत जनक के समकालीन थे। ब्राह्मणो के जनक और रामायणीय जनक की अभिन्नता की समस्या का निर्णय करना असम्भव प्रतीत होता है। इसका उल्लेख ऊपर हो चुका है। **रामायण** का

तीसरी शताब्दी ई० पूर्वार्द्ध माना जाता है (दे० कर्न मेन्युअल ऑव बुद्धिज्म पृ० १२१)।

१ तैत्तिरीय ब्राह्मण की सीता सावित्री का भी रामायण की कथा-वस्तु से कोई सम्बन्ध नही है। इसका उल्लेख ऊपर हो चुका है।

रचयिता सीता के पिता जनक का प्रसिद्ध वैदिक जनक से सम्बन्ध जोडता है, यह स्पष्ट है और स्वाभाविक भी है। लेकिन इस अभिन्नता के लिए वैदिक साहित्य से कोई प्रमाण नही निकाला जा सकता। जनक के सारे वृत्तात मे रामकथा का कोई भी सकेत विद्यमान नही है।

इस तरह हम देखते है कि वैदिक रचनाओ मे रामायण के एकाध पात्रो के नाम अवश्य मिलते हैं, लेकिन न तो इसके पारस्परिक सम्बन्ध की कोई सूचना दी गई है और न इनके विषय मे रामायण की कथावस्तु का किंचित् भी निर्देश किया गया है। जनक और सीता का बार-बार उल्लेख होने पर भी दोनो का पिता पुत्री-सम्बन्ध कही भी निर्दिष्ट नही हुआ है।

अतः वैदिक काल मे रामायण की रचना हुई थी अथवा राम-कथा सम्बन्धी गाथाएँ प्रसिद्ध हो चुका थी, इसका निर्देश समस्त विस्तृत वैदिक साहित्य मे कही भी नही पाया जाता। अनेक ऐतिहासिक व्यक्तियो के नाम रामायण के पात्रो के नामो से मिलते हैं; इससे इतना ही निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि ये नाम प्राचीनकाल मे भी प्रचलित थे।

अध्याय २

वाल्मीकिकृत रामायण

२१ वाल्मोकिकृत **रामायण** के पूर्व राम कथा-सम्बन्धी आख्यान प्रचलित थे। इसका आभास **महाभारत** के द्रोणपर्व और शातिपर्व के सक्षिप्त राम चरित से तथा अन्य निर्देशो से भी मिलता है (दे० नीचे अनु० ४४, ४५, १३०)। ये आख्यान आजकल अप्राप्य है और इस प्रकार वाल्मीकिकृत **रामायण** राम-कथा की प्राचीनतम विस्तृत रचना सिद्ध हाती है। प्रबन्ध के द्वितीय भाग मे वाल्मीकि रामायण के मूल स्वरूप पर विचार किया जायगा तथा चौथे भाग मे प्रचलित **रामायण** की कथावस्तु के साथ-साथ प्रत्येक काड का विश्लेषण किया जायगा। प्रस्तुत अध्याय के प्रथम परिच्छेद मे **रामायण** के भिन्न-भिन्न पाठो की समस्या पर प्रकाश डाला गया है। इसके बाद **रामायण** के रचनाकाल पर विचार किया गया है। अतिम परिच्छेद मे आदि-कवि वाल्मीकि से सम्बन्ध रखने वाली सामग्री एकत्र की गई है।

क—वाल्मीकिकृत रामायण के तीन पाठ

२२ वाल्मीकिकृत **रामायण** का पाठ एकरूप नही है। आजकल इस रचना के तीन पाठ प्रचलित हैं :

(१) दाक्षिणात्य पाठ . गुजाराती प्रिंटिंग प्रेस (बम्बई), निर्णय सागर प्रेस (बम्बई) तथा दक्षिण के सस्करण। यह पाठ अपेक्षाकृत अधिक प्रचलित और व्यापक है।

(२) गौडीय पाठ : गोरेसियो (पैरिस) तथा कलकत्ता सस्कृत सिरीज के सस्करण।

(३) पश्चिमोत्तरीय पाठ दयानन्द महाविद्यालय (लाहौर) का सस्करण, जो आजकल साधु आश्रम, होशिआरपुर (पजाब) से प्राप्य है।

प्रत्येक पाठ में बहुत से श्लोक ऐसे मिलते हैं जो अन्य पाठो मे नही पाये जाते। दाक्षिणात्य तथा गौडीय पाठो की तुलना करने पर देखा जाता है कि प्रत्येक पाठ मे श्लोको की एक तिहाई सख्या केवल एक ही पाठ मे मिलती है। इसके अतिरिक्त जो श्लोक तीनो पाठो मे पाए जाते हैं उनका पाठ भी एक नही है और इनका क्रम भी

बहुत स्थलो पर भिन्न है।[१]

इन पाठान्तरो का कारण यह है कि वाल्मीकिकृत **रामायण** प्रारभ मे मौखिक रूप से प्रचलित था और बहुत काल के बाद भिन्न-भिन्न परम्पराओ के आधार पर स्थायी लिखित रूप धारण कर सका। फिर भी कथानक के दृष्टिकोण से तीनो पाठो की तुलना करने पर सिद्ध होता है कि कथावस्तु मे जो अतर पाए जाते है वे गौण हैं। मैने इस दृष्टिकोण से तीनो पाठो की विस्तृत तुलना की है।[२]

इस तुलना से स्पष्ट है कि उत्तरकाड की रचना बहुत बाद मे हुई थी। इस काड मे तीनो पाठो मे कोई महत्वपूर्ण अतर नही मिलता। केवल दाक्षिणात्य पाठ मे सीतात्याग का कारण यह बताया जाता है कि भृगु ने अपनी पत्नी की हत्या के कारण विष्णु को शाप दिया था। यदि उत्तरकाड प्रारभ से **रामायण** का एक अग होता तो अन्य काडो की तरह इस काड के तीन पाठो मे भी अतर पाये जाते।

उपर्युक्त तीन पाठो की प्राचीनतम हस्तलिखित प्रतियो के आधार पर बडौदा विश्वविद्यालय के ऑरियेटल इस्टिट्यूट द्वारा रामायण का एक वैज्ञानिक (क्रिटिकल) सस्करण सन् १९६० ई० से प्रकाशित हो रहा है। वह अब तक समाप्त नही है। अतः प्रस्तुत प्रबध मे रामायण के सदर्भ निम्नलिखित सकेताक्षरो द्वारा प्रचलित सस्करणो के अनुसार दिये गये है—रा० अथवा दा० रा० अथात् दाक्षिणात्य पाठ (गुजराती प्रिटिग प्रेस), गौ० रा० अर्थात् गौडीय पाठ (कलकत्ता सस्कृत सिरीज) तथा प० रा० अर्थात् पश्चिमोत्त-रीय पाठ (लाहौर सस्करण)।

उदाच्य पाठ

२३ पाठो की तुलना से एक परिणाम यह भी निकलता ह कि गौडीय तथा पश्मोत्तरीय पाठ अपेक्षाकृत बहुत निकट प्रतीत होते हैं। इन दोनो मे दाक्षिणात्य पाठ के बहुत से आर्ष प्रयोग एक ही तरह से सुधारे गये हैं और बहुत से अन्य स्थलो पर भी दोनो का पाठ दाक्षिणात्य सस्करण से भिन्न होते हुए भी एक है। अतः जो श्लोक तीनो मे पाए जाते हैं वहाँ दाक्षिणात्य पाठ अपेक्षाकृत प्राचीन और मौलिक माना जाना चाहिए। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रारभ मे आदि **रामायण** के दो पाठ धीरे-धीरे भिन्न होने लगे थे—उदीच्य तथा दाक्षिणात्य। जहा गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठ दाक्षिणात्य पाठ से भिन्न होते हुए भी आपस मे समान है वहाँ उदीच्य पाठ मानना

---

१ दे० एच० याकोबी डस रामायण, पृ० ३।

२ दे० सी० बुल्के दि जनेसिस ऑव दि वाल्मीकि रामायण रिसेन्शन्स। ज० ऑ० इ० भाग ५, पृ० ६६-६४।

अनुचित न होगा। आर्ष प्रयोगो की अपेक्षाकृत कमी के अतिरिक्त, निम्नलिखित विषय उदीच्य पाठ के अपने ही प्रतीत होते है (ये केवल गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठो मे पाये जाते है) :

१ एक तीसरी अनुक्रमणिका, जिसमे सात काडो की सामग्री का उल्लेख मिलता है (दे० गौ० रा० १,४ तथा प० रा० १, ३)। दाक्षिणात्य पाठ मे केवलदो अनुक्रमणिकाएँ दी गई हैं।

२ शान्ता दशरथ की पुत्री का स्पष्ट उल्लेख (दे० गौ० रा० १, १० तथा प०रा० १, ६)।

३ भरत तथा शत्रुघ्न की यात्रा तथा राजगृह मे निवास दो सर्गों मे वर्णित है। (दे० गौ० रा० १, ७६-८० तथा प० रा० २, १-२)। दाक्षिणात्य पाठ मे इसका उल्लेख मात्र किया गया है।

४ ब्राह्मण कैकेयी को शाप देता है। (दे० गौ० रा० २, ८, ३३ आदि तथा प० रा० २, ११, ३७ आदि)।

५ सीता जनक तथा मेनका की पुत्री हैं। (दे० गौ० रा० ३, ४ तथा प० रा० ३, २।

६ सम्पाति का अपने पुत्र सुपार्श्व का बुलाना (दे० गौ० रा० ४, ६२ तथा प० रा० ४, ५५)।

७ केशरी का दिग्गज धवल का वध करना और वरस्वरूप हनुमान को प्राप्त करना (दे० गौ० रा० ५, ३ तथा प० रा० ४, ५८)।

८ राम के प्रति तारा का शाप। (दे० गौ० रा० ४, २०, १५-१६ प० रा० ४, १६, ३६-४०)।

९ निकषा का विभीषण से अनुरोध करना कि वह रावण को समझावे (दे० गौ० रा० ५, ७६ तथा प० रा० ५, ७५)।

१० दशरथ तथा सागर की मैत्री (दे० गौ० रा० ५, ९४, २१-२२ तथा प० रा० ५, ९६, ४६-६८)।

११ कुम्भकर्ण रावण से कहता है—'नारद ने मुझसे कहा था कि देवताओ ने विष्णु के एक अवतार द्वारा रावण-वध की आयोजना की थी। (दे० गौ० रा० ६, ४०-४१, प० रा० ६, ४१-४२)।

१२ हनुमान-कालनेमि का वृत्तान्त तथा हनुमान का गन्धर्वों से युद्ध करना (दे० गौ० रा० ६, ८२-८३ तथा प० रा० ६, ८१)।

उदीच्य पाठ जो सम्भवत पहली शताब्दी ई० से दाक्षिणात्य पाठ से भिन्न होने लगा

था, बाद मे पुनः दो पाठो मे विभक्त होने लगा, अर्थात् गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय। डॉ० लेवि का अनुमान है कि कम से कम ५०० ई० से ये दोनो पाठ भिन्न होने लगे थे।[१]

गौडीय पाठ

२४ गौडीय पाठ के निम्नलिखित वृत्तान्त अन्य दो पाठो मे नही मिलते :

(१) विभीषण रावण से अलग होने के बाद पहले कैलास पर अपने भाई वैश्रवण से मिलता है और बाद मे राम की शरण लेता है। (दे० गौ० रा० ५, ८६)।

(२) ओषधि के लिए जाते समय भरत से हनुमान की भेट। (दे० गौ० रा० ६, ८२, ६० आदि)।

(३) सीताहरण के पूर्व जटायु राम से अपने सम्बन्धियो के यहाँ जाने की आज्ञा लेकर घर जाता है। (दे० गौ० रा० ३, २१, ३--१०)।

पश्चिमोत्तरीय पाठ

२५ पश्चिमोत्तरीय पाठ तथा गौडीय पाठ बहुत निकट हैं, यह उपर्युक्त उदीच्य पाठ के विश्लेषण से स्पष्ट है। फिर भी पर्याप्त सामग्री पश्चिमोत्तरीय तथा दाक्षिणात्य पाठ, दोनो मे मिलती है। इसका कारण यह होगा कि बाद मे पश्चिमोत्तरीय पाठ को परिपूर्ण बनाने के उद्देश्य से प्रचलित तथा व्यापक दाक्षिणात्य पाठ का सहारा लिया गया है। इस तरह वर्षा-ऋतु का एक विस्तृत वर्णन दाक्षिणात्य तथा पश्चिमोत्तरीय दोनो पाठो मे मिलता है। (दे० दा० रा० ४, २८, १४-५२, और प० रा० ४, २१), यह वर्णन त्रिष्टुभ मे है।

ब्रह्मास्त्र द्वारा द्रुमकुल्य का विनाश भी दाक्षिणात्य तथा पश्चिमोत्तरीय पाठ मे मिलता है (दे० दा० रा० ६, २२, तथा प० रा० ५, ६६)। अनेक वृत्तान्त केवल पश्चिमोत्तरीय पाठ मे ही पाए जाते है। उदाहरणार्थ :

(१) कैकेयी का एक ब्राह्मण से विद्याबल प्राप्त करना, जिसके द्वारा वह सग्राम मे अपने पति की रक्षा करने मे समर्थ हुई। (दे० प० रा० २, ११, ४२ आदि)।

(२) हनुमन्मगल : एक पूरा सर्ग जिसमे वानर हनुमान् की वीरता की प्रशसा करते हैं। (दे० प० रा० ४, ५६)।

---

१ जूर्नल ऐसिएटिक, पैरिस १६१८, पृ० १ आदि।

(३) समुद्र का राम और लक्ष्मण को एक कवच और अस्त्र प्रदान करना । (दे० प० रा० ५, ६६) ।

(४) नागपाश के अवसर पर नारद का आना और राम को उनके नारायणत्व का स्मरण दिलाना । (दे० प० रा० ६, २७) ।

(५) मन्दोदरी-केश ग्रहण विभीषण के द्वारा पता चलता है कि रावण होम कर रहा है । यदि यह यज्ञ पूर्ण हो सका तो रावण अजेय सिद्ध हो जायगा । वानर रावण के यज्ञस्थल पर पहुँच कर उसका ध्यान भग करने मे असमर्थ है । अन्त मे अंगद मन्दोदरी को केशो से खींच कर उसे रावण के पास ले आता है । इस पर रावण उत्तेजित हो जाता है और यज्ञ समाप्त नही हो पाता । (दे० प० रा० ६, ८२) ।

दाक्षिणात्य पाठ

२६ जो श्लोक तीनो पाठो मे मिलते हैं, उनके लिए दाक्षिणात्य पाठ साधारणतया अधिक प्राचीन माना जाना चाहिए । इसका उल्लेख ऊपर हो चुका है । फिर भी इस पाठ मे भी बहुत प्रक्षेप पाये जाते हैं । निम्नलिखित वृत्तान्त न तो गौडीय पाठ मे मिलते है और न पश्चिमोत्तरीय पाठ मे :

(१) रामादि की जन्मतिथि (**चैत्रे नावमिके तिथौ**) तथा उसी अवसर पर राशियो के सगम । (दे० दा० रा० १, १८, ८ आदि) ।

(२) बालकाड की अनेक पौराणिक कथाएँ : कश्यप की तपस्या जिसके फलस्वरूप वह हरि को वामनावतार मे पुत्र-स्वरूप प्राप्त कर सका (२६, १०-१७), जह्नु का गगा को पीना (४३, ३४-४१), विष्णु का मोहिनी रूप धारण कर अमृत ले जाना (४५, ४०-४३), विष्णु का कूर्मावतार वर्णन (४५, २७-३२), इन्द्र का ब्राह्मण के रूप मे विश्वामित्र से अन्न मांगना (६५, ३-१०), सगर के जन्म की कथा (७०, २८-३७) ।

(३) कैकेयी की माता के अपने पति द्वारा त्यक्त किये जाने की कथा (२, ३५) ।

(४) सीता की यमुना से प्रार्थना (२, ५५, १३-२१) ।

(५) वाल्मीकि से राम, लक्ष्मण और सीता की भेंट (२, ५६, १६-१७) ।

(६) अकपन का रावण को जनस्थान की घटनाओ का हाल देना और रावण का मारीच के पास जाना (३, ३१) ।

(७) राक्षसी अयोमुख का वृत्तान्त (३, ६६, ११-१८) ।

(८) सुग्रीव का लक्ष्मण को शान्त करने के लिए तारा को उनके पास भेजना (४, ३३, २५-६२) ।

(९) लका देवी से हनुमान का युद्ध (५, ३, २०-५१)।
(१०) सुग्रीव-रावण-युद्ध (६,४० तथा ६,४१, १-१०)।
(११) अगस्त्य का राम को सूर्यस्तव देना (६, १०५)।
(१२) तारा तथा अन्य वानर-पत्नियो को अयोध्या ले जाने की राम से सीता की प्रार्थना (६, १२३, २३-३८)।

ख—रामायण का रचनाकाल

२७ एक शताब्दी के पूर्व **रामायण** पहले पहल पश्चिम मे विख्यात होने लगा, उस समय अनेक विद्वानो का मत था कि इसकी रचना अत्यन्त प्राचीन काल मे हुई थी—ए० श्लेगेल के अनुसार ११ वी श० ई० पू० तथा जी० गोरेसियो के अनुसार लगभग १२ वी श० ई० पू०।[1] इस मत के प्रतिक्रियास्वरूप जी० टी० ह्वीलर तथा डॉ० वेबर ने **रामायण** पर यूनानी तथा बौद्ध प्रभाव मान कर उसकी रचना अपेक्षाकृत अर्वाचीन समझी है।[2] इन दोनो के मत का खडन निबन्ध के द्वितीय भाग मे किया जायगा।

आगे चलकर **रामायण** के रचनाकाल के विषय मे लिखते हुए विद्वान् प्राय. आदि **रामायण** (वाल्मीकि की प्रामाणिक रचना) तथा प्रचलित वाल्मीकि **रामायण** का अलग-अलग रचना-काल निर्धारित करते हैं।

रामायण के भिन्न-भिन्न पाठो की तुलना करने पर स्पष्ट है कि उत्तरकाण्ड बाद का लिखा हुआ है। वास्तव मे उत्तरकाण्ड तथा बालकाड दोनो वाल्मीकिकृत रचना मे विद्यमान नही थे, इसके लिए द्वितीय भाग मे प्रमाण दिये जायेगे (दे० ८ वाँ अध्याय)। वाल्मीकिकृत आदि **रामायण** (काड २-६) तथा प्रचलित **वाल्मीकि रामायण** मे जो अन्तर पाया जाता है, इसके लिए बहुत काल की आवश्यकता है। छोटे मोटे प्रक्षेपो को छोडकर प्रस्तुत प्रचलित **वाल्मीकि रामायण** का वर्तमान रूप (१-७ काड) कम से कम दूसरी शताब्दी ई० का है, यह बहुसख्यक विद्वानो का मत है।

एम० विंटरनित्ज इस प्रश्न का विस्तृत विश्लेषण करने के बाद एच० याकोबी के परिणाम पर पहुँचते है। एच० याकोबी पहली अथवा दूसरी शताब्दी ई० को प्रचलित रामायण का काल मानते है, एम० विंटरनित्स दूसरी शताब्दी ई० अधिक समीचीन

---

१ दे० ए० डब्लू० श्लेगेल ' जर्मन ओरियन्टल जर्नल, भाग ३, पृ० ३७९।
जी गोरेसियो रामायण भाग १० भूमिका।

२ जी० टी० ह्वीलर' हिस्ट्री ऑव इडिया, भाग २ (लन्दन १८६९)।
ए० वेबर : आन् दि रामायण (बम्बई (१८७३)।

समझते है[1] । सी० वी० वैद्य[2] इसका काल दूसरी श० ई० पू० तथा दूसरी शताब्दी ई० के बीच मे मानते है, यद्यपि वह पहली श० ई० पू० अधिक सभव समझते है । कालिदास के समय मे रामायण ने अपना प्रचलित रूप धारण कर लिया था तथा महाभारत के आरण्यक-पर्व के रचनाकाल मे बालकाण्ड तथा उत्तरकाण्ड कीकुछ सामग्री प्रचलित हो गई थी । अत अधिक सभव है कि प्रचलित रामायण का रूप दूसरी श० ई० के बाद का नही है[3] । आदि रामायण प्रचलित रामायण मे इतना भिन्न है कि इस महत्वपूर्ण विकास के लिए कई शताब्दियो की आवश्यकता प्रतीत होती है । अत वाल्मीकिकृत रचना कम से कम तीसरी श० ई० पू० की होगी । कई विद्वान् वाल्मीकि का काल और प्राचीन मानते है ।

प्रामाणिक वाल्मीकिकृत रामायण मे बौद्ध धर्म की ओर निर्देश नही मिलता । अत इसकी रचना बुद्ध के पूर्व ही अथवा पाचवी श० ई० पू० मे हुई होगी । यह एम० मोनियेर विलियम्स तथा सी० वी० वैद्य का प्रधान तर्क प्रतीत होता है[4] । लेकिन प्राचीन बौद्ध साहित्य तथा जातको की सामग्री के विश्लेषण से स्पष्ट है कि तिपिटक के रचना काल मे राम-कथा सम्बन्धी स्फुट आख्यान-काव्य प्रचलित हो चुका था लेकिन रामायण की रचना नही हो पाई थी (दे० नीचे अनु० ८२) ।

डॉ० याकोबी रामायण का रचनाकाल पॉचवी श० ई० से पूर्व, छठी और आठवी श० ई० पू० के बीच मे मानते है[5] । ए० ए० मैकडोनेल ने अपने सस्कृत साहित्य के इतिहास (लदन १९०५, पृ० ३०९) मे याकोबी के तर्क स्वीकार कर रामायण को बुद्ध के पूर्व का माना था । बाद मे उन्होने छन्द शास्त्र की दृष्टि से पाली गाथाओ तथा रामायण के श्लोको की तुलना के आधार पर माना है कि वाल्मीकि रामायण की रचना चौथी शताब्दी ई० पू० के मध्य मे हुई थी । उनके अनुसार रामायण दूसरी श० ई० के अत तक अपना वर्तमान रूप धारण कर चुकाथा (दे० इन० रि० ए०, भाग १०, पृ०

---

१ एच० याकोबी डस रामायण, पृ० १०० ।
एम० विटरनित्स हि० इ० लि० भाग १, पृ० ५००, ५१७ ।

२ सी० वी० वैद्य दि रिडिल ऑव दि रामायण, पृ० २० और ५१ ।

३ किन्तु इसके बाद भी पौराणिक कथाओ तथा अन्य प्रक्षेपो का सम्मिश्रण हुआ होगा । अत इन अर्वाचीन अशो के कारण समस्त बालकाण्ड का समय चौथी श० ई० निर्धारित करना तर्कसगत नही है । दे० डब्लू किर्फल रामायण बालकाण्ड उण्ड पुराण ।

४ एम० एम० विलियम्स इण्डियन एपिक पोइट्री (लन्दन १८६३) पृ० ३ ।

५७५)। ए० बी० कीथ डॉ० याकोबी के ग्रन्थ के बीस वर्ष बाद उनके तर्कों का विस्तृत विश्लेषण तथा खण्डन करके **आदि रामायण** की रचना चौथी शताब्दी ई० पूर्व मे रखते है[१]। एम विटरनित्स प्राय ए० बी० कीथ से सहमत हैं लेकिन वे वाल्मीकि को तीसरी शताब्दी ई० पू० का मानते है[२]। अत अधिक सभव प्रतीत होता है कि वाल्मीकि ने लगभग ३०० ई० पू० अपनी अमर रचना की सृष्टि की है। इस निर्णय की पुष्टि इससे भी होती है कि **पाणिनि** मे रामायण, वाल्मीकि अथवा रामायण के प्रमुख पात्रो दशरथ, राम, लक्ष्मण, भरत, हनुमान, सुग्रीव, विभीषण आदि का उल्लेख नही होता। लेकिन उनके समय मे राम-कथा प्रचलित हुई होगी क्योकि **सूत्रो** मे कैकेयी (७, ३, २), कौशल्या (४, १, १५५) तथा **शूर्पणखा** (६, २, १२२) की ओर सकेत मिलते है। **गणपाठ** मे परिवर्द्धन होता रहा, अत गणपाठ के उल्लेखो पर तर्क आधारित नही किया जा सकता है, इसमे रामकथा के मुख्य पात्रो के नाम (राम, लक्ष्मण, भरत, रावण आदि) आये है।

ग—आदिकवि वाल्मीकि

२८ युद्धकाण्ड की फलश्रुति (दे० रा० ६, १२८, १०५) को छोडकर प्रामाणिक वाल्मीकिकृत रामायण मे वाल्मीकि की ओर से कही भी सकेत नही मिलता। इस फलश्रुति मे तथा बालकाण्ड, उत्तरकाण्ड और महाभारत मे वाल्मीकि को रामायण का रचयिता माना गया है, इस प्राचीन परम्परा के विरोध मे कोई भी युक्तिसगत तर्क नही दिया जा सकता है। किन्तु यह अवश्य मानना पडेगा कि इस महान् कवि के जीवनवृत्त के सम्बन्ध मे प्रामाणिक सामग्री का नितान्त अभाव है।

(अ) आदिकवि से भिन्न तीन अन्य वाल्मीकि

२९ **तैत्तिरीय प्रातिशाख्य** मे एक वैयाकरण वाल्मीकि[३] का उल्लेख है जो निश्चित रूप से आदि कवि से भिन्न है। यह ए० वेबर[४] तथा एच० याकोबी[५] आदि विशेषज्ञो की राय है। इससे इस बात का पता चलता है कि 'वाल्मीकि' नाम प्राचीन

---

१ दे० ज० रा० ए० सो० १९१५ (पृ० ३१८-२८), दि एज ऑव् दि रामायण।

२ दे० हि० इ० लि० भाग १, पृ० ५१६।

३ मद्रास विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित तैत्तिरीय प्रातिशाख्य मे (सन् १९३०) तीन स्थलो पर वाल्मीकि का उल्लेख है—५, ३६, ९, ४, १८, ६।

४ दे० ऑन दि रामायण, पृ० १७ टिप्पणी।

५ दे० डॉस रामायण, पृ० ६६ टि०।

काल मे प्रचलित था। अत हमे कोई आश्चर्य नही होना चाहिए यदि अन्यत्र भी वाल्मीकि नामक व्यक्तियो का उल्लेख मिल जाए।

महाभारत के उद्योगपर्व मे गरुडवशी विष्णु-भक्त सुपर्ण पक्षियो की सूची मे वाल्मीकि का भी नाम आया है। सुपर्ण वश सभवत सप्तसिन्धु की एक यायावर आर्य जाति थी[1]। महाभारत मे इनके सम्बन्ध मे कहा गया है कि ये कर्म से क्षत्रिय थे—कर्मणा क्षत्रिया (दे० ५, ६६, ६)। सुपर्ण वाल्मीकि तथा आदिकवि वाल्मीकि की अभिन्नता के पक्ष मे कोई भी प्रमाण नही मिलता। अभिन्नता के विरोध मे यह तर्क दिया जा सकता है कि सुपर्ण वश महाभारत मे विष्णुभक्त माना गया है (दे० ५, ६६, ८) किन्तु कवि वाल्मीकि के विषय मे कहा गया है कि उन्होने शिव की शरण ली थी (दे० आगे अनु० ३३)। अत अधिक सभव यही प्रतीत होता है कि सुपर्ण वाल्मीकि तथा आदिकवि भिन्न ही है।

महाभारत मे केवल द्रोणपर्व (११८, ४८) तथा शातिपर्व (२००, ४) के अन्तर्गत वाल्मीकि को स्पष्ट शब्दो मे कवि माना गया है, इसके अतिरिक्त शातिपर्व (५७, ४०) मे भार्गव कवि का तथा अनुशासन पर्व (१८, ८-१०) मे एक वाल्मीकि का उल्लेख है जिसके विषय मे कहा है कि उनका यश श्रेष्ठ होगा। महाभारत के अन्य पर्वो मे बहुत से स्थलो पर महर्षि वाल्मीकि का उल्लेख है, उदाहरणार्थ—आदि पव ५०, १४, सभापर्व ७, १४, वनपर्व ८३, १०२, उद्योग पर्व ८१, २७। विशेषज्ञो (हॉप्किन्स, सुकठणकर) के अनुसार द्रोण पर्व का वर्त्तमान रूप बहुत ही परिवर्द्धित है और शाति पर्व तथा अनुशासन पर्व निश्चित रूप मे अर्वाचीन हैं। डॉ० एस० के० दे ने पूनासस्करण मे द्रोण पर्व की रामकथा को प्रक्षिप्त माना है। अत बहुत सभव है कि महाभारत के व्यासो ने अपेक्षाकृत अर्वाचीन काल मे कवि वाल्मीकि का परिचय प्राप्त किया है और ये बहुसख्यक स्थल आदि कवि वाल्मीकि से भिन्न किसी अन्य वाल्मीकि नामक ऋषि से सम्बन्ध रखते हो। जो कुछ भी हो इन स्थलो पर जीवन-वृत्त विषयक सामग्री नही मिलती। इस प्रकार हमे आदिकवि से भिन्न तीन अन्य वाल्मीकियो का पता मिल गया है—वैयाकरण वाल्मीकि, सुपर्ण वाल्मीकि तथा महर्षि वाल्मीकि।

(आ) बालकाण्ड और उत्तरकाण्ड

३० बालकाण्ड के रचनाकाल के समय तक आदिकवि वाल्मीकि तथा प्राचीन ऋषिवर वाल्मीकि की अभिन्नता सर्वमान्य होने लगी थी तथा वाल्मीकि को रामायण की घटनाओ का समकालीन माना गया था।

---

१ दे० ए० सी० दास, ऋग्वेदिक इण्डिया, पृ० ६५ और १४८।

बालकाण्ड के प्रारम्भ मे रामायण की उत्पत्ति की कथा मिलती है। तपस्वी (सर्ग १, १), मुनि (२, ४), महर्षि (४, ४) वाल्मीकि नारद से रामकथा का सार सुन लेते है , अनन्तर वह, श्लोक का आविष्कार करने के बाद, ब्रह्मा के आदेश से रामकथा को श्लोकबद्ध करते है और अपनी इस रचना को अपने दो कुशीलव शिष्यो को सिखलाते है। ये दोनो सर्वत्र रामायण गाते है और एक बार उसे अयोध्या के राजमहल मे भी राम और उनके भाइयो को सुनाते है। (दे० बालकाण्ड, सर्ग १-४)।

उत्तरकाण्ड के अनुसार लक्ष्मण परित्यक्ता सीता को वाल्मीकि के आश्रम के पास जगल मे छोडते समय उनको सान्त्वना देते हुए कहते है— वाल्मीकि के यहा आश्रय लेना, वे **ब्राह्मण** तथा **दशरथ के सखा** है

राज्ञो दशरथस्यैव पितुर्मे मुनिपु गव ॥१६॥
सखा परमको विप्रो वाल्मीकि सुमहायशा ॥ (सर्ग ४७)

बाद मे सीता वाल्मीकि के आश्रम मे लव और कुश को जन्म देती है (दे० सर्ग ६६) , वे वाल्मीकि से रामायण सीख लेते है और उनका आदेश पाकर उसे राम के यज्ञस्थल पर सुनाते है (दे० सर्ग ६३-६४)। रामायण सुन लेने के बाद राम सीता को बुला भेजते है और वाल्मीकि सीता को ले आकर सभा के सामने सीता के सतीत्व का साक्ष्य देते है । इस अवसर पर वाल्मीकि अपना परिचय देकर कहते है कि मै प्रचेता का दसवाँ पुत्र[1] हूँ। मैने हजारो वष तक तप किया है

प्रचेतसोऽह दशम पुत्रो राघवनन्दन ।
न स्मराम्यनृत वाक्यमिमौ तु तव पुत्रकौ ॥१८॥
बहुवर्षसहस्राणि तपश्चर्या मया कृता । (सर्ग ६६)

इसके अतिरिक्त वह इस बात पर बल देते है कि मैने कभी पाप नही किया है

मनसा कमणा वाचा भूतपूव न किल्विषम् । (वही, श्लोक २०)

इससे स्पष्ट है कि वाल्मीकि के दस्यु होने की जो कथा बाद मे प्रचलित हो गई है वह उत्तरकाण्ड के रचयिता को मान्य नही है।

३१ बालकाण्ड (२, ३) के अनुसार **वाल्मीकि का आश्रम** तमसा तथा गगा के समीप ही स्थित है। तमसा यहाँ पर अयोध्या काण्ड (सर्ग ४५-४६) की तमसा से भिन्नगगा की कोई उपनदी है। उत्तरकाड के प्रसगो से पता चलता है कि वह नदी गगा

---

१ दाक्षिणात्य रामायण (उत्तरकाण्ड १११, ११) मे वाल्मीकि को एक अन्य स्थल पर भी प्रचेता का पुत्र कहा गया है, किन्तु यह उल्लेख अन्य पाठो मे नही मिलता।

के दक्षिण मे ही थी, क्योकि लक्ष्मण और सीता अयोध्या से आकर गगा पार करने के बाद ही वाल्मीकि के आश्रम के निकट पहुँचते है (दे० सर्ग ४७)। शत्रुघ्न के विषय मे कहा जाता है कि वाल्मीकि-आश्रम से पश्चिम की ओर जाते हुए वह **'यमुनातीरम'** पर उतरते है (सर्ग ६६, १५)। बाद मे एक अन्य परम्परा प्रचलित होने लगी, जिसके अनुसार वाल्मीकि का आश्रम गगा के उत्तर मे माना जाता था, रामायण के टीकाकार कतक तथा गोविन्दराज उपर्युक्त 'यमुनातीरम्' के स्थान पर 'गगातीरम्' शुद्ध मानते है।

रामायण के दाक्षिणात्य पाठ[1] के एक प्रक्षेप के अनुसार जो अन्य दो पाठो मे नही मिलता, राम, लक्ष्मण और सीता चित्रकूट के निकट ही वाल्मीकि के आश्रम मे पहुँचते है

इति सीता च रामस्य च लक्ष्कणश्च कृताजलि ।
अभिगम्याश्रम सर्वे वाल्मीकिमभिवादयन् ।।१६।।

(अयोध्याकाड, सर्ग ५६)

इसके अनुसार **अध्यात्म रामायण** (२, ६), **आनन्द रामायण** (१, ६), **रामचरित-मानस** (२, १२४) आदि बहुसख्यक अर्वाचीन राम-कथाओ मे वाल्मीकि का आश्रम यमुना के पार चित्रकूट के पास ही स्थित है। आजकल भी यह बादा जिले मे माना जाता है।

(इ) भार्गव वाल्मीकि

३२ प्रचलित वाल्मीकि-रामायण मे भार्गव च्यवन का दो प्रमगो मे उल्लेख हुआ है—बालकाण्ड मे सगर की कथा के अतर्गत (सर्ग ७०, ३२) तथा उत्तरकाण्ड मे लवणवध के वृत्तान्त मे (सर्ग ६०-६४)। इन स्थलो पर भार्गव च्यवन तथा वाल्मीकि के किसी सम्बन्ध का सकेत नही मिलता, किन्तु फिर भी उत्तरकाण्ड के रचनाकाल के समय तक वाल्मीकि का सम्बन्ध भार्गवो से जोडा गया था क्योकि वाल्मीकि को प्रचेता का दसवॉ पुत्र माना गया है[2]। बाद मे वाल्मीकि को भार्गव की उपाधि मिल गई है।

---

१ केवल पश्चिमोत्तरीय पाठ (दे० २, १०५, १४) मे भरत के वाल्मीकि आश्रम होकर चित्रकूट पहुँचने का उल्लेख है।

२ प्रचेता तथा वरुण एक है (दे० कुमारसभव २, २१), ऋग्वेद (६, ६५ और १०, १६) मे भृगु का नाम वारुणि माना गया है तथा शतपथ ब्राह्मण मे इसका स्पष्ट उल्लेख है कि भृगु वरुण के पुत्र है (दे० ११, ६, १, १)। भागवत पुराण मे कहा गया है कि वरुण की पत्नी चर्षणी से दो पुत्र, भृगु तथा वाल्मीकि उत्पन्न हुए थे (दे० ६, १८, १)।

महाभारत मे रामचरित के रचयिता भार्गव का जो उल्लेख है वह वाल्मीकि ही प्रतीत होता है क्योकि जिस श्लोक का उल्लेख है वह प्रचलित रामायण के दाक्षिणात्य पाठ के एक श्लोक से मिलता जुलता है

श्लोकश्चाय पुरा गीतो भार्गवेण महात्मना ।
आख्याते रामचरिते नृपति प्रति भारत ॥४०॥
राजान प्रथम विन्देत ततो भार्या ततो धनम् ।
राजन्यसति लोकस्य कुतो भार्या कुतो धनम् ॥४१॥
(शातिपर्व ५७)

अराजके धन नास्ति नास्ति भार्याप्यराजके ।
इदमत्याहित चान्यत्कुत सत्यमराजके ॥११॥
(अयोध्याकाण्ड ६७)

परवर्ती रचनाओ मे वाल्मीकि को बहुधा भार्गव[1] माना गया है, उदाहरणार्थ **विष्णुपुराण** (३, ३, १८) और **मत्स्यपुराण** (१२, ५१) । ऐसा प्रतीत होता है कि भार्गव च्यवन तथा वाल्मीकि के वृत्तान्तो के सम्मिश्रण से वाल्मीकि को भार्गव की उपाधि मिल गई हो । 'वाल्मीकि' की व्युत्पत्ति प्राय 'वल्मीक' से मानी जाती है, अत यह कथा प्रचलित होने लगी कि वाल्मीकि वास्तव मे वल्मीक (दीमको की बॉबी) से निकला था । अब ध्यान देने योग्य है कि भार्गव च्यवन के विषय मे इस प्रकार की कथा व्यापक रूप से प्रचलित थी । महाभारत के आरण्यक पर्व के अनुसार भृगु के पुत्र च्यवन तपस्या करते हुए इतने समय तक निश्चल खडे रहे कि उनका शरीर वल्मीक से आच्छादित हो गया था । राजपुत्री सुकन्या ने उनको अधा बना दिया और बाद मे उससे विवाह भी कर लिया (अध्याय १२२) । यह वृत्तान्त **भागवत पुराण** (९, ३), **स्कद पुराण** (आवन्त्य खड, चतुरशीतिलिंग माहात्म्य, अध्याय २० और प्रभास खड, प्रभासक्षेत्र माहात्म्य, अध्याय २८१), **देवी भागवत पुराण** (६, २-३) और **पद्मपुराण** (पातालखड, अध्याय १५) मे भी मिलता है ।

वाल्मीकि तथा च्यवन दोनो के विषय मे माना गया कि वे वल्मीक से निकले थे , इसी कारण दोनो की कथाओ का सम्मिश्रण स्वाभाविक प्रतीत होता है । एक ओर से वाल्मीकि को भार्गव की उपाधि दी गई है तथा दूसरी ओर च्यवन का सबध रामकथा से जोडा गया । कृत्तिवास रामायण मे तो वाल्मीकि को च्यवन का पुत्र बना

---

१ रामायण के पश्चिमोत्तरीय पाठ के अतिम श्लोक मे वाल्मीकि को भार्गव की उपाधि दी गई है (दे० ७, १२२, ३१) ।

दिया गया है। अश्वघोष अपने बुद्धचरित मे कहते है कि जिस काव्य की रचना करने मे च्यवन समर्थ नही थे, उसकी वाल्मीकि ने सृष्टि की

वाल्मीकिरादौ च ससज पद्य
जग्रन्थ यन्न च्यवनो महर्षि [1] ॥१,४३॥

(इ) दस्यु वाल्मीकि

३३ एक परम्परा के अनुसार वाल्मीकि पहले डाकू थे और दीर्घकालीन तपस्या के पश्चात् ही रामायण की रचना करने मे समर्थ हुए, इस कथा की प्राचीनता के सम्बन्ध मे सन्देह है। **स्कद पुराण** मे इसका पहले पहल विकसित रूप मिलता है, इस पुराण की अधिकाश सामग्री आठवी शताब्दी ई० के बाद की है, और इसमे बहुत से प्रक्षेप जोडे गए है जिनका रचनाकाल अज्ञात है[2]। फिर भी महाभारत के अनुशासन पर्व मे प्रस्तुत कथा का एक प्रकार से प्रथम आभास विद्यमान है। वाल्मीकि युधिष्ठिर से कहते है कि किसी विवाद मे मुनियो ने मुझको ब्रह्मघ्न कहा था। इस कथन मात्र से मै पापी बन गया था। मैने शिव की शरण ली और उन्होंने मुझको पाप से मुक्त करके कहा—"तेरा यश श्रेष्ठ होगा"

वाल्मीकिश्चाह भगवान्युधिष्ठिरमिद वच ।
विवादे साग्निमुनिभिब्र ह्मघ्नो वै भगवानिति ॥८॥
उक्त क्षणेन चाविष्टस्तेनाधर्मेण भारत ।
सोऽहमीशानमनघममोघ शरण गत ॥९॥
मुक्तश्चास्मि तत पापैस्ततो दु खविनाशन ।
आह मा त्रिपुरघ्नो वै यशस्तेऽग्र्य भविष्यति ॥१०॥

(अध्याय १८)

इस उद्धरण मे एक वाल्मीकि की चर्चा है, जिसके बारे मे कहा जाता है कि उनका यश श्रेष्ठ होगा, अत उसे आदिकवि मानना युक्तियुक्त ही है। उनको अग्निहोतृ मुनियो के शाप से ब्रह्महत्या का दोष लगा था, आगे चलकर उनका वास्तव मे ब्रह्मघ्न तथा दस्यु माना जाना अनुशासन पर्व के इस प्रसग का स्वाभाविक विकास प्रतीत होता है।

३४ **स्कद पुराण** मे वाल्मीकि के विषय मे चार कथाएँ सुरक्षित है। **वैष्णव खड** के वैशाखमासमाहात्म्य मे एक व्याध का वृत्तान्त मिलता है, जिसका नाम नही दिया

१ ई० ए० जॉन्स्टन का सस्करण (कलकत्ता १९३५), ई० बी० कावेल के सस्करण मे पाठ इस प्रकार है—"वाल्मीकिनादश्च ससर्ज पद्यम्"।
२ दे० आर० सी० हाजरा, पुराणिक रेकार्ड्स, पृ० १९५।

गया है । वह रामनाम का जप करने के फलस्वरूप यह वरदान प्राप्त कर लेता है कि वह अपने अगले जन्म मे वल्मीक नामक ऋषि के कुल मे उत्पन्न होगा तथा वाल्मीकि का नाम धारण कर यशस्वी बन जाएगा । कृणु नामक तपस्वी के शरीर के चारो ओर वल्मीक बन गया था जिससे उसका नाम वल्मीक ही पडा था । व्याध उसी वल्मीक के पुत्र के रूप मे प्रकट हुआ, वाल्मीकि के नाम से विख्यात होने लगा और दिव्य रामकथा की रचना करने मे समर्थ हुआ (दे० अध्याय २१) ।

प्रस्तुत कथा मे वाल्मीकि अपने पूर्वजन्म मे ही व्याध थे तथा उनके पिता के शरीर मे वाल्मीक बन गया था । स्कद पुराण की अन्य कथाएँ लोकप्रसिद्ध वृत्तान्त के अधिक निकट है, किन्तु उनमे रामनाम-जप का उल्लेख नही है । **अवतीखड** के आवन्त्य क्षेत्रमाहात्म्य (अध्याय २४) मे अग्नि शर्मा की कथा वर्णित है । वह डाकू था, किसी दिन सात ऋषियो से उसकी भेट हुई । वह उनको मार डालना ही चाहता था कि ऋषियो ने उसे उसके परिवार से यह पूछने भेजा कि "क्या तुम लोग मेरे पाप-फल के भागी बनने के लिए तैयार हो ?" इस पर परिवार ने इनकार किया । अग्नि शर्मा ऋषियो के पास लौटा और उनका परामर्श हृदयगम कर ध्यान तथा मत्रजप करने लगा । १३ वर्ष के बाद सात ऋषि फिर उस स्थल पर पहुँचे और उन्होने उसके शरीर के चारो ओर वल्मीक बना हुआ देख लिया । तब उन्होने उसको निकालकर उसका नाम वाल्मीकि रखा और उसको रामायण लिखने का आदेश दिया ।

नागर खड मे लोहजघ नामक **द्विज** की कथा मिलती है (दे० अध्याय १२४) । वह पितृमातृपरायण होने के कारण अकाल के समय अपने परिवार का पालन करने के लिए दस्यु बन जाता है । सप्तर्षियो से भेट होती है तथा अन्य वृत्तान्तो की भाँति उसका परिवार उसके पाप का भागी बनने से इनकार करता है । वह ऋषियो के पास लौटता है और वे उसको "जाटघोट" मत्र पढाकर चले जाते है । बाद मे सप्तर्षि उस जगह होकर लौटते है , वे लोहजघ को कुमत्र द्वारा भी ससिद्धि-प्राप्त पाते है तथा उसका शरीर वल्मीक से समावृत्त देखकर उसे वाल्मीकि नाम देते है ।

प्रभासखड के प्रभासक्षेत्रमाहात्म्य (दे० अध्याय २६८) मे निम्नलिखित कथा है । शमीमुख नामक ब्राह्मण का पुत्र वैशाख चोरी द्वारा अपने परिवार का पालन पोषण करता था । सप्तर्षियो से भेट होने पर वह अपने परिवार से सुन लेता है कि वे उसके दोष के भागी नही बनना चाहते है । इस पर वह वैरागी बनकर हजारो वर्ष तक तपस्या और जप करता है तथा उसका शरीर वल्मीक से समावृत्त हो जाता है । सप्तर्षि लौटते हैं और उसका नाम वाल्मीकि रखकर भविष्यवाणी करते है कि वह रामायण की रचना करेगा ।

स्वच्छन्दा भारती देवी जिह्वाग्रे ते भविष्यति ।
कृत्वा रामायण काव्य ततो मोक्ष गमिष्यसि ॥

३५ उपर्युक्त कथाओ का सबसे प्रचलित रूप[1] **अध्यात्म रामायण** के अयोध्या काड (सर्ग ६, श्लोक ४२-८८) मे मिलता है। राम, लक्ष्मण और सीता निर्वासित होकर चित्रकूट के पास पहुँचे, उन्होने अपना निवास-स्थल निश्चित करने के लिए वाल्मीकि का परामर्श मागा वाल्मीकि ने राम की स्तुति करने के पश्चात् रामनाम-माहात्म्य दिखलाने के उद्देश्य से अपनी कथा सुनाई

अह पुरा किरातेषु किरातै सह वर्धित ।
जन्ममात्रद्विजत्व मे शूद्राचाररत सदा ॥६५॥

"मै पहले किरातो के साथ रहा करता था और निरन्तर शूद्रो के आचरण मे रत रहने के कारण मेरा ब्राह्मणत्व जन्म मात्र का था। शूद्रा के गभ मे मेरे बहुत से पुत्र उत्पन्न हुए। चोरो के कुसग से मै भी चोर बन गया था और सदा धनुष-बाण धारण किये रहता था। एक दिन मैने सात मुनियो को जाते देखा और उनके वस्त्र इत्यादि छीनने के उद्देश्य से उन्होने घोर वन मे रोक लिया मुनियो ने कहा कि जिन कुटुम्बियो के लिए तुम नित्य पाप सचय करते हो उनसे जाकर पूछ लो कि वे तुम्हारे अधर्म के भागी बनने के लिये तैयार है कि नही। मैंने जाकर पूछा और मुझे उत्तर मिला—"यह पाप तो तुम्ही को लगेगा, हम केवल धन के ही भोगने वाले है"। यह सुनकर मुझे वैराग्य उत्पन्न हुआ और मैने उन मुनियो की शरण ली। हे राम! मुनियो ने आपस मे परामर्श किया और आपके नामाक्षरोको उलटा कर मुझसे कहा—तुम इसी स्थान पर एकाग्रचित्त होकर निरन्तर 'मरा' का जप करो (**एकाग्रमनसात्रैव मरेति जप सर्वदा**)। मैने ऐसा ही किया। निश्चल खडा रहने के फलस्वरूप मेरे ऊपर वल्मीक बन गया। एक सहस्त्र युग बीतने पर वे ऋषि लौटे और उन्होने मुझको निकलने का आदेश देकर कहा—"हे मुनिवर! तुम वाल्मीकि हो। इस समय तुम वल्मीक से निकले हो, अत: तुम्हारा दूसरा जन्म हुआ।"

रामचरित मानस के कई स्थलो पर उपर्युक्त कथा की ओर सकेत मिलते है —

जान आदि कवि नाम प्रतापू ।
भयउ सुद्ध करि उलटा जापू ॥५॥
(बालकाण्ड, दोहा १९)

१ मद्रास कैटालॉग (आर ३८१४) मे जैमिनी रामायण की पुष्पिका इस प्रकार है—इति जैमिनीरामायणे रामनाममाहात्म्ये व्याधस्य सप्तर्षिदर्शनम् ।

उलटा नामु जपत जगु जाना।
बालमीकि भए ब्रह्म समाना ॥८॥
(अयोध्याकाण्ड, दोहा १६४)

गनिका अजामिल व्याध गीध गजादि खल तारे घना (छद)
(उत्तरकाण्ड, दोहा १३०)

३६ **तत्वसग्रह रामायण** मे जो दस्यु वाल्मीकि की कथा मिलती है इसमे कई अलौकिक घटनाओ का सन्निवेश किया गया है। जब व्याध अपने परिवार की ओर से निराश होकर सप्तर्षियो के पास पहुँचा, तो वे व्याध को राम की महिमा समझाने लगे। उस समय एक आकाशवाणी सुनाई दी और सप्तर्षियो को आदेश मिला कि वे व्याध को 'म-रा' मत्र सिखावे। इसके बाद व्याध तपस्या करने लगा और उसके शरीर के चारो ओर वल्मीक बनने लगा। यह देखकर इन्द्र घबराने लगे किन्तु बृहस्पति ने उनको समझाया कि वह तपस्वी महर्षि बनकर रामायण की रचना करने वाला है। बहुत समय बीत जाने पर जब सप्तर्षि लौटे तब देवता भी आ पहुँचे और विष्णु ने वाल्मीकि को आशीर्वाद दिया कि वह रामायण के रचयिता बन जायेंगे। इस पर वाल्मीकि ने नारायण की स्तुति की तथा वह जाकर तमसा नदी के तट पर रहने लगे। वही पर उन्होने नारद से राम-कथा सुनकर रामायण लिखने का निर्णय किया (दे० अयोध्या काण्ड, अध्याय २२-३०)[१]।

३७ **आनन्द रामायण** के राज्यकाण्ड (अध्याय १४) मे जो विस्तृत कथा मिलती है, उसमे वाल्मीकि के तीन पहले जन्मो का वर्णन किया गया है। पहले जन्म मे वह स्तभ नामक ब्राह्मण है, द्वितीय जन्म मे वह व्याध है, तीसरे जन्म मे वह कृणु का पुत्र है और तपस्या करने के पश्चात् वाल्मीकि बन जाता है। इस वृत्तान्त की अधिकाश सामग्री अध्यात्म रामायण तथा स्कद पुराण के वैष्णव खड की कथाओ से ली गई है। आनन्दरामायण के वृत्तात का साराश इस प्रकार है शाकल नगर का निवासी, श्रीवत्सगोत्र का स्तभ नामक ब्राह्मण महापापी था। एक वेश्या मे आसक्त होने के कारण वह नित्यक्रिया छोडकर शूद्रवत् आचार किया करता था। फिर भी किसी दिन उसके यहाँ एक ब्राह्मण का आतिथ्य-सत्कार हुआ और उसी पुण्य के फल-स्वरूप उसका उद्धार सभव हुआ। स्तभ अपनी मृत्यु-शय्या पर उस गणिका का स्मरण

---

१ **तत्वसग्रह रामायण** के उत्तरकाण्ड मे वाल्मीकि विषयक एक अन्य कथा मिलती है जो सीतात्याग के परोक्ष कारणो से सम्बन्ध रखती है। (दे० चतुर्थ भाग, अनु० ७२६)।

करते-करते चल बसा, इसी कारण से उसे व्याध का जन्म मिला और वह वेश्या भिल्लिनी के रूप मे प्रकट होकर उसकी पत्नी बन गई। किसी दिन इस व्याध ने पपातीर के पास शख नामक ब्राह्मण का सर्वस्व लूट लिया। बाद मे यह देखकर कि पथरीली जमीन पर चलने मे ब्राह्मण को बहुत कष्ट हो रहा है उसने उनको उनके जूते लौटाए। ब्राह्मण ने आशीर्वाद दिया और व्याध को यह भी बतलाया कि पूर्वजन्म मे ब्राह्मण के आतिथ्यसत्कार के पुण्य के फल-स्वरूप उसे आज जूते लोटाने की सद्बुद्धि उत्पन्न हो गई है। इसके बाद ब्राह्मण ने भविष्य का उद्घाटन किया —"कृणु नामक मुनि घोर तपस्या करेगे, उनके नत्रो से वीर्य बह जायगा, जिसे एक सर्पिन खाकर गर्भवती होगी। उस सर्पिणी से तुम्हारा जन्म होगा, किरात लोग तुम्हारा पालन करेगे और तुम भी किरात बन जाओगे। तुमने आज जो मेरे उपानह लौटाए इस पुण्य के प्रभाव मे सात मुनियो से तुम्हारी भेट होगी। उनके आशीर्वाद से तुम वाल्मीकि बनकर राम-कथा लिखोगे।" ऐसा ही हुआ, व्याध सर्पिणी के गभ से जन्म लेकर किरातो द्वारा पाला गया। यहाँ से लेकर अध्यात्म रामायणकी उपर्युक्त समस्त कथा प्राय एक ही शब्दावली मे दुहराई जाती है। अत मे रामायण की उत्पत्ति के विषय मे कहा गया है कि शभु ने ब्रह्मा को रामचरित सुनाया था, नारद ने उसे ब्रह्मा से सुन लिया और बाद मे उसे वाल्मीकि को सुनाया। तब क्रौचवध के अवसर पर श्लोक की उत्पत्ति के पश्चात् वाल्मीकि ने **'शतकोटिविस्तरम्'** रामायण की रचना की।

३८ **कृत्तिवासीय रामायण** मे अध्यात्म रामायणकी कथा का किंचित परि-वर्द्धित रूप पाया जाता है। व्याध का नाम **रत्नाकर** है और वह च्यवन का पुत्र माना जाता है—**च्यवन मुनिर पुत्र नाम रत्नाकर**। सात मुनियो के स्थान पर ब्रह्मा और नारद से भेट होने का वर्णन है। वैराग्य उत्पन्न होने के बाद रत्नाकर ब्रह्मा के कहने पर नदी मे नहाने जाता है। नदी पर उसकी दृष्टि पडते ही वह सूख जाती है। तब ब्रह्मा रत्नाकर को रामनाम का जप करने का परामर्श देते है किन्तु उसका पापी मुह इस पावन नाम का उच्चारण करने मे असमर्थ है। इस पर रत्नाकर को **'म-रा'** जपने का परामर्श दिया जाता है।

तोरवे रामायण (१,२) के अनुसार भरद्वाज ने क्रौंच नामक वन मे रहने वाले व्याध को आशीर्वाद दिया। बाद मे उस व्याध ने बहुत समय तक तपस्या की और ब्रह्मा ने उसे परमर्षित्व प्रदान किया। वह वल्मीक (बाँबी) से निकला, जिससे वह वाल्मीकि कहलाने लगा।

एक अन्य कथा के अनुसार शिव और नारद से व्याध की भेट होती है[1]। डे

१ दे० इ ए० भाग ३१, पृ० ३५।

पोलिये के अनुसार वाल्मीकि दो ऋषियो के कहने पर बारह वर्ष तक तपस्या करके **'भावी रामायण'** लिखने मे समर्थ हुए[१]। डब्लू० क्रूक[२] ने इस कथा का एक और रूप पाया था, इसके अनुसार परमेश्वर ने गुरु नानक को वाल्मीकि के पास भेजा था, गुरु नानक के अनुरोध पर वाल्मीकि ने अपनी पत्नी से पूछा—क्या तुम मेरे लिए प्राण देने को तैयार हो? नकारात्मक उत्तर सुनकर वाल्मीकि तपस्वी के रूप मे चडालगढ (चूनार, उ० प्र०) के गदा पहाड पर निवास करने लगे। वह स्थान बाद मे भगियो का तीर्थ-स्थान बन गया। बलरामदास के उत्तर काण्ड मे वाल्मीकि की पत्नी का नाम वमवती है।

३९ उपर्युक्त कथा मे वाल्मीकि तथा भगियो का जो सम्बन्ध सूचित किया गया है वह कई शताब्दियो से चला आ रहा है। भक्तमाल (कवित्त-७२) मे वाल्मीकि को श्वपच कहा गया है तथा गोस्वामी तुलसीदास भी अपनी विनय पत्रिका मे लिखते है— **स्वपच-खल भिल्ल-जमनादि हरि लोकगत नामबल** (दे०४६,९)। आजकल उत्तर भारत के हिन्दू भगी अपने को वाल्मीकि के भक्त मानकर उनकी पूजा करते है[३]। पजाब मे यह कथा प्रचलित है कि जब तक नागरिक भगियो की ओर देखने से इनकार करते थे तब तक वाल्मीकि की लाश प्रति-दिन बनारस मे दिखाई पडती थी[४]। मुसलमान भगी अपने को लालबेगी कहकर पुकारते है, उर्दू लिपि मे बाल्मीकि को आसानी से लालबेग पढा जा सकता है। डॉ० हरदेव बाहरी[५] ने कई कथाओ का सकलन किया है, जिनमे लालबेग की उत्पत्ति वाल्मीकि से जोडी जाती है। एक कथा के अनुसार ब्रह्मा ने वाल्मीकि को अपने सिंहासन के सामान झाडने का कार्य सौपा था। एक दिन ब्रह्मा ने वाल्मीकि को एक कपडा भेट दिया था जिसे वाल्मीकि ने घर जाकर एक कोने मे रख दिया। उसमे से एक बच्चा निकलते देखकर वाल्मीकि ब्रह्मा के पास दौडे। ब्रह्मा ने समाचार सुनकर कहा—"तुम बूढे हो चले हो, तुम्हारे मरने के बाद यह बालक भगियो का गुरु

---

१ दे० मिथॉलॉजी डेस इदू, भाग १, पृ० १७८। इस वृत्तान्त मे वाल्मीकि को ब्रह्मा का अवतार माना गया है। दे० आगे अनु० ३९।

२ दे० ट्राइब्स एड कास्ट्स, भाग १, पृ० २६२-३।

३ कलकत्ते मे अनुसूचित जातियो द्वारा हर साल आश्विन पूर्णिमा (कार्तिक-स्नानारभ) के दिन वाल्मीकि की जयन्ती धूमधाम से मनाई जाती है।

४ दे० आर० सी० टेपल, लेजड्स ऑव दि पजाब, भाग १, पृ० ४२९ और इ० एँ०, भाग २७, पृ० ११२।

५ दे० लाल बेग की उत्पत्ति, जनपद (बनारस) भाग १, अक ३, पृ० १९-२१।

बन जायगा" । वाल्मीकि ने उसका पालन किया और वह बाद मे लालबेग के नाम से विख्यात हुआ ।

ब्रह्मा और वाल्मीकि का सम्बन्ध अपेक्षाकृत प्राचीन है । सारलादास के उडिया महाभारत[1] के अनुसार वाल्मीकि का जन्म इस प्रकार हुआ था ब्रह्मा किसी समय गगातट के मनुमेखला नामक स्थान पर तपस्या करने गये थे । वहाँ आठ देवकन्याओ को स्नान के पश्चात् गगा से निकलते देखकर ब्रह्मा का वीर्यपात हुआ था । उन्होने वीर्य का एक अश मेरु पर्वत पर फेक दिया जिससे मेरुशूल ऋषि की उत्पत्ति हुई , शेष वीर्य नदी के बालू पर फेका गया और उससे वाल्मीकि उत्पन्न हुए । उडिया मे बालू को बालि कहते है , सभव है बालि और वाल्मीकि का सादृश्य इस कथा की कल्पना मे सहायक हुआ हो । इस कथा मे वाल्मीकि एक तपस्वी के तेज से उत्पन्न होता है । श्री रघुराज सिंह की **रामरसिकावली** मे भी ऐसा माना गया है । वाल्मीकि की कथा के अन्तर्गत कहा है कि एक मुनिराज की तपश्चर्या मे किसी अप्सरा के विघ्न डालने के फलस्वरूप उस मुनि का वीर्यपात हुआ था । उर्वशी ने वीर्य एक कुम्भ मे रख दिया और उससे अगस्त्य और वसिष्ठ का जन्म हुआ । किन्तु तेज का कुछ अश घास पर गिर गया और गया और उससे एक शिशु उत्पन्न हुआ, जिससे एक किरातिनी ने अपना लिया

रेत शेष रहिगो कुश माही ।
ताते एक शिशु भयो तहा हो ।।
ताहि किरातिनि लै घर आई ।
अपनी विद्या सकल पढाई ।।

भगियो द्वारा जो वाल्मीकि की पूजा होती है, इसकी प्राचीनता तो सदिग्ध है, फिर भी इसमे सन्देह नही है कि पाँचवी शताब्दी ई० तक राम की भाति वाल्मीकि को भी विष्णु का अवतार माना गया है । विष्णु धर्मोत्तर पुराण की रचना पाँचवी श० ई० मे हुई थी , इसके प्रथम खण्ड मे लिखा है कि त्रेता युग के अन्त मे विष्णु वाल्मीकि के रूप मे जन्म लेकर रामायण लिखने वाले थे (दे० अध्याय ७४, ३८) । इस रचना के तृतीय खण्ड मे कई स्थलो पर[2] वाल्मीकि की पूजा का उल्लेख हुआ तथा **प्रतिमा-लक्षणम्** के अतर्गत वाल्मीकि की मूर्ति के विषय मे लिखा है

गौरस्तु कार्यो वाल्मीकिर्जरामडलवुदश ।
तपस्यभिरत शान्तो न कृशो न च पीवर ।।६४।।
(खड ३, अध्याय ८५)

---

१ दे० सभा पर्व, पृ० २५० । प्रकाशक-राधारमण पुस्तकालय, कटक, १६५२ ।

२ दे० अध्याय ११८, ८ , ११६, ५ , १२०, ५ । ११८ वे अध्याय मे कहा गया है कि "विद्याकामोऽथ वाल्मीकि व्यास वाप्यथ पूजयेत् ।"

बृहद्धर्म पुराण (१३ वी शत०) के मध्य खण्ड (अध्याय ११) मे सती विष्णु को यह वरदान देती है कि वह वाल्मीकि के रूप मे महाकाव्य की रचना करे।

इस प्रकार हम देखते ह कि हिन्द चीन मे जो वाल्मीकि मदिर मे वाल्मीकि की मूर्ति तथा उनके विष्णु-अवतार होने का शिलालेख मिला है वह भारत मे प्रचलित विश्वास पर आधारित है (दे० आगे अनु० ३२३)।

(उ) सहार

४० प्रस्तुत विवेचन का निष्कष यह है कि वैयाकरण वाल्मीकि तथा सुपर्ण वाल्मीकि के अतिरिक्त महाभारत के प्राचीनतम पर्वो मे जिन महर्षि वाल्मीकि की चर्चा है वह आदि-कवि वाल्मीकि से भिन्न प्रतीत होते हे।

रामायण के बालकाण्ड से पता चलता है कि लगभग प्रथम शताब्दी ई० पू० से आदि-कवि वाल्मीकि तथा महर्षि वाल्मीकि की अभिन्नता सर्वमान्य होने लगी थी तथा वाल्मीकि को रामायण की घटनाओ का समकालीन बना दिया गया था। उत्तर-काण्ड के रचना काल मे वाल्मीकि का अयोध्या के राजवश से घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित किया गया था। वाल्मीकि दशरथ के सखा माने गए, उनके आश्रम मे सीता के पुत्र उत्पन्न हुए और उनके शिष्य बन गए तथा राम के अश्वमेध के अवसर पर वाल्मीकि ने सीता के सतीत्व का साक्ष्य दिया। उस समय तक उनको ब्राह्मण की उपाधि भी मिल गई थी और वह प्रचेता के दसवे पुत्र माने जाने लगे। बाद मे उनको विष्णु का अवतार भी माना गया है।

वाल्मीकि नाम की व्युत्पत्ति के आधार पर यह प्रसिद्ध होने लगा कि तपस्या करते समय उनका समस्त शरीर वाल्मीक से समावृत हो गया था। दूसरी ओर महा-भारत के अनुसार भार्गव च्यवन के विषय मे भी इस प्रकार की कथा प्राचीन काल से ही प्रचलित थी। इससे सभवत च्यवन और वाल्मीकि के वृतान्तो का सम्मिश्रण हुआ और वाल्मीकि को भार्गव की उपाधि मिल गई।

महाभारत के अनुशासन पर्व मे वाल्मीकि को किसी विवाद मे एक बार 'ब्रह्मघ्न' कहे जाने का उल्लेख है। क्या वाल्मीकि की इस निन्दा के वृत्तान्त मे उनकी नीच जाति प्रतिध्वनित है? क्या इसीलिए रामायण के उत्तरकाण्ड मे उनके हजारो वर्ष तक तपस्या करने पर इतना बल दिया गया है? यह कष्ट-कल्पना नही कही जा सकती है। बाल काण्ड मे इसका स्पष्ट उल्लेख है कि वाल्मीकि के शिष्य **कुशीलव** ही थे और कुशीलवो का समाज मे कोई विशेष आदर नही था, जैसे कि उसके नाम ही से (कु-शील) प्रतीत होता है[1]। जो कुछ भी हो अनुशासन पर्व के इस प्रसग से उन कथाओ का विकास हुआ

---

१ अर्थशास्त्र मे लिखा है कि शूद्रो का धर्म है—द्विजाति की सेवा, वार्त्ता,

होगा जिनमे तपस्या करने के पूर्व वाल्मीकि के दस्यु होने का वर्णन है। उन कथाओ के मूल रूप मे रामनाम का उल्लेख नही है, रामभक्ति के पल्लवित होने के पश्चात् ही वाल्मीकि का यह वृत्तान्त रामनाम के गुरागान मे परिरात कर दिया गया है।

शिल्प तथा कुशीलव-कम (**शूद्रास्य द्विजातिशुश्रुषा वार्त्ता कारु कुशीलवकर्म,** प्रकररा १, पद ३)। गरिाकाध्यक्ष नामक प्रकररा मे इसका उल्लेख है कि आठ वर्ष तक राजा के लिए कुशीलव-कर्म करने से वेश्या पुत्र अपने को मुक्त कर सकता है (प्रकररा ४३, २)। बाद मे कुशीलवो ने राम के पुत्रो के नाम **कुश** और **लव** रखकर अपने ही नाम की एक नयी व्युत्पत्ति की कल्पना की है।

अध्याय ३

महाभारत की रामकथा

क—महाभारत और रामायण

४१ रामायण मे महाभारत के वीरो का निर्देश भी नही मिलता। दूसरी ओर महाभारत मे न केवल राम-कथा का वरन् वाल्मीकिकृत रामायण का भी उल्लेख पाया जाता है। इससे स्पष्ट है कि रामायण की रचना के पश्चात् ही महाभारत को अपना वर्तमान रूप मिला है। फिर भी बहुत सभव है कि **भारत** (अर्थात् महाभारत का प्राचीनतम रूप) रामायण के पूर्व उत्पन्न हुआ था। **चतुर्विंशतिसाहस्री** भारतसहिता (दे० १, १, ६१) तथा **'शतसहस्रम्'** (दे० १, ५६, १३ ३२) महाभारतम्, इन दो सोपानो का महाभारत ही मे उल्लेख मिलता है। प्राय समस्त विद्वानो की सम्मत्ति से रामायण का रचनाकाल भारत तथा महाभारत के बीच मे माना जाता है[1]। शाखायन आदि सूत्रो तथा पाणिनि मे भारत के विषय मे निर्देश मिलते है, रामायण के विषय मे नही। अत ऐसा प्रतीत होता है कि भारत की रचना रामायण के पूर्व हो चुकी थी। यह निर्विवाद है कि भारत तथा रामायण स्वतन्त्र रूप से उत्पन्न हुए—भारत पश्चिम मे तथा रामायण पूर्व मे। दोनो के सपर्क के पश्चात् भारत ने महाभारत का रूप धारण कर लिया है[2]।

महाभारत मे रामकथा के जो विभिन्न रूप मिलते है, उनका निरूपण अगले परिच्छेद मे किया जायगा। यहाँ पर महाभारत मे रामायण तथा वाल्मीकि-सबन्धी उल्लेखो पर विचार किया जाता है।

आरण्यकपर्व मे भीम हनुमान के विषय मे कहते है कि वह रामायण मे प्रसिद्ध है :

> **भ्राता मम गुणश्लाध्यो बुद्धिसत्वबलान्वित ।**
> **रामायणेऽतिविख्यात शूरो वानरपु गव ॥११॥**
>
> **(अध्याय १४७)**

---

१ दे० पी० वी० काणे, ऐनल्स ऑव दि भण्डारकर ऑरियेटल रिसर्च इन्स्टिट्यूट। भाग ४७, पृ० २० और २९।

२ दे० ई० डब्लू० हॉप्किस—दि ग्रेट एपिक्, पृ० ५८ आदि, बी० एस० सुकठणकर एनल्स भडारकर इन्टीट्यूट, भाग १८, पृ० १-७६, एम० विंटरनित्स हि० इ० लि० भाग १, पृ० ५०० आदि।

स्वर्गारोहणपर्व मे भी रामायण का स्पष्ट उल्लेख मिलता है

वेदे रामायणे पुण्ये भारते भारतर्षभ।
आदौ चान्ते च मध्ये च हरि सर्वत्र गीयते ॥९३॥
(अध्याय ६)

यह श्लोक हरिवंश पुराण मे दुहराया गया है (दे०३, १३२, ९५) । महाभारत मे वाल्मीकि का अनेक स्थलो पर तपस्वी तथा महर्षि के रूप मे उल्लेख मिलता है (दे० ऊपर अनु० २६) । इसके अतिरिक्त वाल्मीकि को कवि भी माना गया है। रामचरित्र के रचयिता भार्गव कवि विषयक श्लोक ऊपर उद्धत हुआ है (दे० अनु० ३२), एक अन्य स्थल पर वाल्मीकि नामक कवि का भी स्पष्ट उल्लेख हुआ है

अपि चाय पुरा गीत श्लोको वाल्मीकिना भुवि।
पीडाकरममित्राणा यत्स्यात्कर्तव्यमेव तत् ॥४८॥
(द्रोणपर्व, अध्याय ११८)

इस श्लोक का उत्तरार्द्ध रामायण के उदीच्य पाठ[1] से उद्धत है (दे० गौ० रा० ६, ६०, २४ तथा प० रा० ६, ५६, २६) । शातिपर्व मे गोविन्द की महिमा गाने वालो का जो उल्लेख किया गया है इसमे असित, देवल तथा मार्कण्डेय के साथसाथ वाल्मीकि का भी नाम लिया गया है (दे० अध्याय २००, ४) । इससे स्पष्ट है कि महाभारत के रचयिता वाल्मीकिकृत रामायण से अभिज्ञ थे।इसके अतिरिक्त रामोपाख्यान वाल्मीकि रामायण पर निर्भर है (दे० आगे अनु० ४८) तथा नलोपाख्यान के अन्तर्गत भी सुदेव का स्वगत भाषण रामायण से उद्धृत किया गया है[2] । फिर भी महाभारत के प्राचीनतम पर्व न तो रामायण और न कवि वाल्मीकि का उल्लेख करते है । इन पर्वों मे केवल राम-कथा के पात्रो की ओर निर्देश किया गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि **भारत** के कवि राम-कथा और उसके प्रधान पात्रो से परिचित थे । बाद मे **महाभारत** के रचयिताओ ने वाल्मीकि की रचना से परिचय प्राप्त किया था ।

१ दा० रा० मे इसका रूप किंचित् भिन्न है (दे० ६, ८१, २८) । तीनो पाठो मे इसके पहले—'न हन्तव्या स्त्रिय " आता है , यह वाक्याश महाभारत की बहुत सी उदीच्य हस्तलिपियो मे भी पाया जाता है। पूना सस्करण ने उसे प्रक्षिप्त माना है ।

२ दे० वी० एस० सुकठणकर दि नल एपिसोड ऐंड दि रामायण । ए वाल्यूम ऑव ईस्टर्न ऐण्ड इडियन स्टडीज, पृ० २९४-३०३ ।

ख—महाभारत मे रामकथा

४२ महाभारत मे रामकथा का चार स्थलो पर वर्णन किया जाता है। रामोपाख्यान इनमे सब से विस्तृत और महत्वपूर्ण होने के कारण इसका तृतीय परिच्छेद मे अलग विश्लेषण किया जाएगा।

इन चार राम-कथाओ के अतिरिक्त रामकथा तथा रामकथा के पात्रो का उपमाओ आदि के लिए लगभग पचास स्थलो पर उल्लेख हुआ है।[1] युद्ध-सम्बन्धी पर्वों मे द्रोणपर्व सब से अर्वाचीन है। इसमे रामकथा के १४ उल्लेख मिलते है लेकिन अन्य युद्ध-सबधी पर्वो मे (भीष्म, कर्ण तथा शल्य पर्व मे) कुल मिलाकर केवल पॉच उल्लेख किए गए है। आरण्यक पर्व मे राम-कथा का दो बार वर्णन हुआ है और इसके अतिरिक्त रामकथा की ओर पद्रह सकेत मिलते है। यह पर्व अपेक्षाकृत अर्वाचीन है और कथाओ तथा उपाख्यानो का भडार है। नलोपाख्यान, रामोपाख्यान, सावित्री की कथा आदि—ये सब आरण्यक पर्व मे सम्मिलित किए गए है। इस पर्व मे राम के अवतार होने का भी उल्लेख मिलता है (दे० अनु० ८६)।

(१) आरण्यक पर्व की रामकथा (३, १४७, २८-३८)

४३ रामोपाख्यान के अतिरिक्त आरण्यक पर्व मे एक रामकथा और उद्धृत है। भीम-हनुमान् के सवाद के अतर्गत हनुमान् ग्यारह श्लोको मे वनवास और सीताहरण से लेकर अयोध्या के प्रत्यागमन तक सारी रामकथा सक्षेप मे कहते है। इसमे रामावतार तथा राम का ११००० वर्ष तक राज्य करने का उल्लेख है। बालकाड और उत्तरकाड की सामग्री, लकादहन तथा सीता की अग्निपरीक्षा का कोई उल्लेख नही है।

(२) द्रोणपर्व की रामकथा

४४ द्रोणपर्व तथा शातिपर्व की रामकथा षोडशराजोपाख्यान के अतर्गत मिलती है। पुत्र के मरण के कारण शोकातुर सृन्जय को सान्त्वना देने के उद्देश्य से नारद ने उनको सोलह राजाओ की कथा सुनाई थी। ये राजा महान् होते हुए भी अपने-अपने समय पर सबके सब मर गये थे (**स चेन्ममार सृजय**)। द्रोणपर्व मे अभिमन्युवध के कारण शोकसतप्त युधिष्ठिर को धैर्य देने के लिए व्यास उनको षोडशराजोपाख्यान सुनाते है। द्रोणपर्व का यह षोडशराजकीय वास्तव मे शातिपर्व पर निर्भर है। पूना के प्रामाणिक सस्करण मे उसे क्षेपक मानकर परिशिष्ट मे दिया गया है। (दे० परिशिष्ट १, न० ८, पृ० ४३७-४८२ और गोरखपुर सस्करण ७, अध्याय ५६)

---

१ डब्लू० हाप्किंस जर्नल अमेरिकन ओरियेण्टल सोसाइटी, भाग ५० (१६३०), पृ० ८५-१०३।

इन सोलह राजाओ मे से एक राम भी थे। नारद राम की महिमा का वर्णन करते हुए अयोध्याकाड से लेकर युद्धकाड के अन्त तक रामकथा की रूपरेखा खीचते है। प्रसग के अनुसार रामकथा की अपेक्षा रामराज्य की समृद्धि तथा राम की महिमा को अधिक महत्व दिया गया है। वनवास से लेकर अयोध्या के प्रत्यागमन तक सारी कथा का वर्णन १० श्लोको मे समाप्त किया जाता है। इसके अनन्तर राम का अभिषेक, राम के गुणो की उत्कृष्टता, रामराज्य मे दुष्टो का अभाव, राम का ११००० वर्ष का शासनकाल तथा उनकी मृत्यु (**स चेन्ममार सृजय**)—इन सब का वर्णन २१ श्लोको मे दिया जाता है। इस रामकथा मे भी न तो बालकाड तथा उत्तरकाड की सामग्री सम्मिलित है और न सीता की अग्निपरीक्षा का उल्लेख किया गया है। राम सब प्राणियो, ऋषियो, देवताओ तथा मनुष्यो से महान् कहे जाते है, फिर भी रामावतार का कही भी उल्लेख नही मिलता।

(३) शाति पर्व की रामकथा (१२, २९, ४६-५५)

४५ प्रसग द्रोणपर्व के समान है लेकिन यहाँ पर कृष्ण युधिष्ठिर को **षोडशराजो-**पाख्यान सुनाते है। द्रोणपर्व तथा शातिपर्व की रामकथाओ का अन्तर यह है कि शाति पर्व मे राम-कथा की सामग्री नही के बराबर है। केवल रामराज्य तथा राम की महिमा का वर्णन किया गया है। फिर भी चौदह वर्ष के वनवास का उल्लेख किया गया है जिससे स्पष्ट है कि लेखक रामकथा से अनभिज्ञ नही था। उसने प्रसग के अनुसार (महान् होते हुए भी मर जाना—**स चेन्ममार सृञ्जय**, दे० श्लोक ५५) केवल राम तथा उनकी महिमा पर ध्यान दिया है। यहाँ पर भी रामावतार का सकेत नही मिलता किन्तु राम के अश्वमेध तथा १०००० वर्ष तक राज्य करने का उल्लेख किया गया है

दशाश्वमेधाञ्जारूथ्यानाजहार निर्गलान् ॥५३॥
दश वर्षसहस्राणि रामो राज्यमकारयत् ॥५४॥

(४) महाभारत मे रामावतार

४६ आरण्यकपर्व मे तीन स्थलो पर रामावतार का स्पष्ट उल्लेख किया गया है। भीम-हनुमान-सवाद मे हनुमान यो कहते है

अथ दाशरथिर्वीरो रामोनाम महाबल ।
विष्णुर्मानुष्यरूपेण चचार वसुधामिमाम् ॥२८॥
(३, १४७)

रामोपाख्यान मे ब्रह्मा देवताओ से कहते है कि 'विष्णु मेरे आदेश के अनुसार अवतार लेकर रावण की हत्या करेगे'

तदर्थमवतीर्णोऽसौ मन्नियोगाच्चतुर्भुज ।
विष्णु प्रहरता श्रेष्ठ स कर्मैतत्करिष्यति ।।५।।

(३, २६०)

आरण्यक पर्व के अन्तिम अध्याय मे कहा गया है कि विष्णु ने दशरथ के गृह मे रह कर रावण का वध किया है

विष्णुना वसता चापि गृहे दशरथस्य वै ।
दशग्रीवो हतश्छन्न सयुगे भीमकर्मणा ।।१८।।

(३, २९९)

इसके अतिरिक्त दशरथ के विषय मे कहा जाता है कि वह **मयस्य जेता नमुचेश्च हन्ता** (३, २६, ९) है। इससे भी राम के अवतार होने का पता चलता है।

उपर्युक्त उद्धरण **महाभारत** के पूना सस्करण मे मिलते है। बम्बई के निर्णय-सागर प्रेस से प्रकाशित महाभारत मे इसी आरण्यकपर्व के अन्तर्गत रामावतार के दो और उल्लेख किए गए है (दे० ३, ९९, ३४ और ३, १५१, ७)।

आरण्यकपर्व के अतिरिक्त रामावतार का उल्लेख शातिपर्व मे दो बार मिलता है। वाल्मीकि के विषय मे कहा गया है कि उन्होने गोविन्द की महिमा का वर्णन किया है

असितो देवलस्तात वाल्मीकिश्च महातपा ।
मार्कण्डेयश्च गोविन्दे कथयत्यद्भुत महत् ।।४।।

(१२, २००)

हरि अपने अवतारो का वर्णन करते हुए कहते है

सधौ तु समनुप्राप्ते त्रेताया द्वापरस्य च ।
रामो दाशरथिर्भूत्वा भविष्यामि जगत्पति ।।७८।।

(१२, ३२६)

प्रचलित स्वर्गारोहण पर्व मे जो रामावतार का सकेत किया गया है, वह पूना सस्करण मे प्रक्षिप्त माना गया है—

वेदे रामायणे पुण्ये भारते भरतर्षभ ।
आदौ चान्ते च मध्ये च हरि सर्वत्र गीयते ।।२३।।

(१८, ६)

इस प्रकार हम देखते हैं कि **महाभारत** के रचयिता रामावतार से परिचित थे, यह आरण्यकपर्व तथा शातिपर्व के प्रामाणिक उद्धरणो से असदिग्ध है। साथसाथ उत्तरकाड का किञ्चित् परिचय भी मिला होगा क्योकि रामोपाख्यान मे रावण की कथा का वर्णन मिलता हैं तथा शातिपर्व मे शम्बूकवध का उल्लेख हुआ है

श्रूयते शम्बुके शूद्रे हते ब्राह्मणदारक ।
जीवितो धममासद्य रामात्सत्यपराक्रमात् ।।६२।।

(१२, १४६)

ग—रामोपाख्यान

४७ रामोपाख्यान का प्रसग इस प्रकार है द्रोपदी के हरण तथा उसको पुन प्राप्त करने के पश्चात् युधिष्ठिर अपने दुर्भाग्य पर शोक प्रकट कर इस प्रकार कहते हैं—**अस्ति नून मया कश्चिदल्पभाग्यतरो नर** , क्या मुझसे भी कोई अधिक अभागा है ? (३, २५७, १०) इस पर माकण्डेय राम का उदाहरण देकर युधिष्ठिर को धैर्य बँधाने का प्रयत्न करते है । युधिष्ठिर के रामचरित सुनने की इच्छा प्रकट करने पर मार्कण्डेय रामोपाख्यान सुनाते हैं । पूना के प्रामाणिक सस्करण मे इस रामचरित का विस्तार ७०४ श्लोको का है, जिसमे से पूरे २०० श्लोक युद्ध के वर्णन के लिए प्रयुक्त हुए है ।

रामोपाख्यान का आधार

४८ इस विस्तृत रामचरित तथा वाल्मीकिकृत **रामायण** का क्या सम्बन्ध है ? डॉ० वेबर इस समस्या के सम्बन्ध मे किसी निर्णय तक पहुँचने मे असमर्थ है[1] । इनके अनुसार निम्नलिखिन चार सभावनाएँ है

१ रामोपाख्यान रामायण का आधार है

२ रामोपाख्यान एक ऐसे रामायण पर निर्भर है जो प्रचलित रामायण का पूर्व रूप है ।

३ रामोपाख्यान वाल्मीकि रामायण का स्वतन्त्र सक्षिप्त रूप है ।

४ रामोपाख्यान तथा रामायण दोनो किसी एक सामान्य मूलस्रोत के स्वतत्र विकास माने जा सकते है ।

ई० हाप्किन्स तथा ए० लूड्विग का मत है कि रामोपाख्यान रामकथा का एक स्वतत्र रूप है, जो **रामायण** को छोडकर किसी अन्य प्राचीन राम-चरित पर निभर है ।[2] रामोपाख्यान तथा **रामायण** मे जो अन्तर पाये जाते है, वे यह सिद्ध करते है कि रामोपाख्यान **रामायण** का सक्षिप्त रूप नही हो सकता । यह इस मत का मुख्य तर्क है । डॉ० याकोबी का प्रत्युत्तर यह है कि रामोपाख्यान के रचयिता ने **रामायण** की किसी हस्तलिपि का सहारा नही लिया है, लेकिन अपने प्रदेश मे प्रचलित **रामायण** उसे

---

१ ए० वेबर आँन दि रामायण, पृष्ठ ६५ ।

२ इ० डब्लू हाप्किस दि ग्रेट एपिक, पृष्ठ ६३ आदि ।
ए० लुड्विग ऊबर डस रामायण, पृष्ठ ३० आदि ।

कठस्थ रहा होगा । इस कथा का सक्षिप्त वर्णन करने मे छोटे-मोटे अनर सहज ही आ गए होगे । अत डॉ० याकोबी का मत है कि रामोपाख्यान वाल्मीकिकृत **रामायण** के किसी प्राचीन रूप का स्वतत्र सक्षेप मात्र है । अधिकाश विशेषज्ञ डॉ० याकोबी का पक्ष लेते है ।[1] **महाभारत** के सम्पादक डॉ० सुकठणकर ८६ स्थल उद्धृत करते है जिनमे रामोपाख्यान तथा **रामायण** मे शाब्दिक साम्य मिलता है । दूसरी ओर रामोपाख्यान मे अनेक प्रसग (इद्राजित् का यज्ञ, काक का वृत्तान्त आदि) रामायण के बिना समझ मे नही आ सकते है, जिससे सिद्ध होता है कि रामोपाख्यान का वृत्तान्त मौलिक नही है । इसके अतिरिक्त महाभारत मे रामायण तथा कवि वाल्मीकि का उल्लेख हुआ है (दे० ऊपर अनु० ४१) । अत रामायण को रामोपाख्यान का आधार मानने मे कोई आपत्ति नही होनी चाहिए ।

रामोपाख्यान तथा रामायण की तुलना

४६ दोनो वृत्तान्तो की तुलना सुबोधगम्य रखने के लिए वाल्मीकिकृत **रामायण** के काण्डो के अनुसार सामग्री का विभाजन किया जाता है ।

बालकाड । रामोपाख्यान मे केवल निम्नलिखित प्रसगो का उल्लेख हुआ है (दे० अध्याय २५८, २६०, २६१)

राम तथा उनके भाइयो का जन्म (लेकिन पुत्रेष्टि यज्ञ तथा पायस का उल्लेख नही है) ।

सीता, जनक की पुत्री (कही भी आयोनिजा का उल्लेख नही है) ।

ब्रह्मर्षि, देवता आदि रावण से सत्रस्त होकर ब्रह्मा की शरण लेते है । ब्रह्मा रामावतार का रहस्य प्रकट करते है । ब्रह्मा के आदेश के अनुसार देवता विष्णु की सहायता के लिए ऋक्षो तथा वानरो की स्त्रियो से पुत्र उत्पन्न करते है ।

चारो भाइयो की शिक्षा तथा विवाह (३ श्लोक), सीता को छोडकर अन्य पत्नियो के नाम नही मिलते ।

अयोध्या काड । इस काड की सारी सामग्री ३४ श्लोको मे सक्षेप मे दी गई है (अध्याय २६१) । गुह तथा अत्रि का उल्लेख नही होता । कैकेयी को केवल एक वर

---

१ एच्० याकोबी डस रामायण, पृष्ठ ७२ ।
एम्० विंटरनित्स हिस्ट्री ऑव इडियन लिटरेचर, भाग १, पृष्ठ ३८४,
एच० ओल्डेनबेर्ग डस महाभारत, पृष्ठ ५४ आदि ।
बी० एस्० सुकठणकर रामोपाख्यान एड महाभारत, काणे कामेमोरेशन वाल्यूम, पृ० ४७२-८८ ।

मिला था। मन्थरा के विषय मे कहा जाता है कि वह एक गधर्वी दुन्दुभी का अवतार है।

अरण्य काड। रामोपाख्यान इस काड की सामग्री अपेक्षाकृत अधिक विस्तार से देता है (दे० अध्याय २६१-२६३)। इसमे कोई भी महत्वपूर्ण परिवर्तन नही हुआ है। विराध, सुतीक्ष, अगस्त्य, अयोमुखी तथा शबरी, इनसे सम्बन्ध रखने वाली सामग्री का अभाव है।

किष्किधा काड। राम-सुग्रीव की मैत्री, वालिबध तथा वानरो का प्रेषण और उनका पूर्व, पश्चिम तथा उत्तर की दिशा मे प्रत्यागमन—अर्थात् किष्किधाकाड के प्रथम ४७ सर्गों की सामग्री। इसमे निम्नलिखित परिवर्तन मिलते है (दे० अध्याय २६४)

सुग्रीव के साथ सख्य करने के लिए राम के बल की परीक्षा नही होनी।

वालि तथा सुग्रीव के केवल एक द्वन्द्वयुद्ध का उल्लेख हुआ है।

सुन्दर काड। किष्किधाकाड के अन्तिम भाग (सर्ग ४८—६७) तथा सुन्दरकाड के प्रथम ६० सर्ग, अर्थात् हनुमान् और उसके साथियो की यात्रा का समस्त वृत्तान्त रामोपारयान का रचयिता स्वय वर्णन नही करता। हनुमान् राम के पास लौटकर उसे सुनाते है। रामोपाख्यान (अध्याय २६५-२६६) तथा रामायण की इस सामग्री मे कोई महत्वपूर्ण अन्तर नही है। रामोपाख्यान की एक विशेषता यह है कि इसमे अविंध्य को अधिक महत्व दिया जाता है।

रामायण मे सीता हनुमान से अविंध्य का उल्लेख करती है और इसके बाद अविंध्य के विषय मे और कुछ नही कहा जाता है।

अविंध्यो नाम मेधावी विद्वान्राक्षसपुगव ।
धृतिमाञ्छीलवान्वृद्धो रावणस्य सुसमत ॥१२॥
रामक्षयमनुप्राप्त रक्षसा प्रत्यचोदयत् ।
न च तस्य स दुष्टात्मा शृणोति वचन हितम् ॥१३॥

(सुन्दरकाड, सर्ग ३७)

रामोपाख्यान मे त्रिजटा सीता को सान्त्वना देकर अविंध्य का सदेश सुनाती है—राम, सुग्रीव के साथ मैत्री करके शीघ्र आने वाले है, रावण नलकूबर के शाप के कारण सीता का सतीत्व नष्ट करने मे असमर्थ है।

अविंध्यो नाम मेधावी वृद्धो राक्षसपुगव ।
स रामस्य हितान्वेषी • ॥

(अध्याय २६४, ५५ आदि)

इसके अतिरिक्त सीता हनुमान से अविंध्य के इस सदेश का उल्लेख करती हैं (अध्याय २६६)। इन्द्रजीत के वध के बाद अविंध्य रावण को सीता की हत्या करने

सर्ग ९९-१११ अध्याय २७४,

रामोपाख्यान मे लक्ष्मण के शक्ति लगने का वृत्तान्त नही मिलता। इसमे रावण माया द्वारा राम और लक्ष्मण का रूप धारण किए हुए मायामय राक्षसो को उत्पन्न करता है। राम इनकी हत्या करते है और इसके बाद ब्रह्मास्त्र द्वारा रावण को इस तरह जलाते है कि राख भी शेष नही रहती (**न च भस्माप्यदृश्यत**, दे० श्लोक ३१)

सर्ग ११२-१२८ अध्याय २७५,

इस सामग्री मे अतर यह है कि रामोपाख्यान मे सीता की अग्निपरीक्षा नही होती।

उत्तरकाड। रामोपाख्यान राम के अयोध्या मे प्रत्यागमन तथा उनके अभिषेक पर समाप्त होता है, लेकिन उत्तरकाड की कुछ सामग्री रामोपाख्यान के प्रारभ मे दी गई है। रावणवश, रावण और उनके भाइयो की तपस्या तथा वरप्राप्ति, वैश्रावण की हार, रावण का पुष्पक पर अधिकार प्राप्त करना—इनका सक्षेप मे वर्णन किया गया है (अध्याय २५८-२५९)। रामोपाख्यान मे विश्रवा की तीन पत्नियो का उल्लेख है—

पुष्पोत्कटा – कुभकर्ण और रावण की माता।

मालिनी—विभीषण की माता।

राका—खर तथा शूर्पणखा की माता।

रामायण मे कैकसी (सुमाली की पुत्री) रावण, कुभकर्ण, शूर्पणखा तथा विभीषण की माता मानी जाती है।

अध्याय ४

बौद्ध रामकथा

५० प्राचीन काल से बौद्धो ने रामकथा अपनाई है और उसे जातक-साहित्य मे स्थान दिया है। जातक एक ऐसी कथा हे जिसमे महात्मा बुद्ध अपने असख्य पूर्वजन्मो मे मनुष्य अथवा पशु के रूप मे, भाग लेते है। इस उपाय के द्वारा बौद्ध धर्मोपदेशक प्रचलित कथाओ और लोकप्रिय आख्यानोको अपनाने मे समर्थ हुए है। प्राचीन बौद्ध साहित्य मे रामकथा-सम्बन्धी तीन जातक सुरक्षित है, जिनमे से **दशरथ-जातक** सबसे अधिक प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण हे, इस कारण इसका वर्णन यहाँ पहले किया गया है।

दशरथ-जातक

५१ दशरथ-जातक को लेकर बहुत वादविवाद हुआ है, क्योकि कई विद्वानो का मत यह है कि इसमे रामकथा का मूलरूप सुरक्षित है। निबन्ध के द्वितीय भाग मे इस विवादग्रस्त विषय का पूरा विश्लेषण किया जाएगा। यहाँ पर इतना ही कहना पर्याप्त है कि यह जातक जिस **जातकट्ठवण्णना** मे पाया जाता है। वह पाँचवी शताब्दी ई० की एक सिंहली पुस्तक का पाली अनुवाद है। इस सिंहली पुस्तक मे जो कथाएँ पाई जाती है, वे प्राचीन पाली गाथाओ की टीका के रूप मे लिखी गई है।

प्रत्येक जातक मे पहले 'वर्त्तमान कथा' (**पच्चुप्पन्न वत्थु**) दी जाती है जिसमे यह बतलाया जाता है कि किस अवसर पर महात्मा बुद्ध ने इस जातक को कहा है।

इसके बाद 'अतीत कथा' (**अतीतवत्थु**) उद्धृत है, जिसे वास्तविक जातक मानना चाहिए।

अन्त मे महात्मा बुद्ध 'जातक का सामजस्य' (**समोधान**) प्रस्तुत करते है जिसमे वह वर्त्तमान कथा और अतीत कथा के पात्रो की अभिन्नता प्रकट करते है।

गाथाएँ प्राय अतीत कथा ही मे मिलती है, लेकिन वे कभी वर्त्तमान कथा और कभी समोधान मे भी विद्यमान है। इनके लिए एक टीका जोडी गई है जिसमे गाथा के प्रत्येक शब्द का अर्थ दिया गया है।

पाली **जातकट्ठवण्णना**[1] के **दशरथ-जातक** की रामकथा का सक्षेप इस प्रकार है

[1] दे० फॉसबाल दि जातक, भाग ४, १२३, न० ४६१।

वर्त्तमान कथा महात्मा बुद्ध ने यह जातक जैतवन मे कहा। किसी गृहस्थ का पिता मर गया था। इस पर उसने शोक के वशीभूत होकर अपना सारा कर्त्तव्य छोड दिया। यह जान कर बुद्ध ने उससे कहा कि प्राचीन काल के पडित लोग (**पोराणक पडिता**) अपने पिता के मरण पर किंचित् भी शोक नही करते थे। इसके अनन्तर दशरथ के मरने पर राम के धैर्य का उदाहरण देने के लिए महात्मा बुद्ध ने **दशरथ-जातक** सुनाया।

अतीत कथा दशरथ महाराज वाराणसी मे धर्मपूवक राज्य करते थे। इनकी ज्येष्ठा महिषी के तीन सतान थी दो पुत्र (राम-पण्डित और लक्खण) और एक पुत्री (सीता देवी)। इस महिषी के मरने के पश्चात् राजा ने एक दूसरी को ज्येष्ठा के पद पर नियुक्त किया (**अग्गमहेसिट्ठाने ठपेसि**)। उसके भी एक पुत्र (भरत कुमार) उत्पन्न हुआ। राजा ने उसी अवसर पर उसको एक वर दिया। जब भरत की अवस्था सात वष की थी, रानी ने अपने पुत्र के लिए राज्य मागा। राजा ने स्पष्ट इनकार कर दिया। लेकिन जब रानी अन्य दिनो भी पुन -पुन इसके लिए अनुरोध करने लगी तब राजा ने उसके षड्यन्त्रो के भय से अपने दोनो पुत्रो को बुलाकर कहा—'यहा रहने से तुम्हारा अनर्थ होने की सभावना है। किसी अन्य राज्य या वन मे जाकर रहो और मेरे मरने के बाद लौटकर राज्य पर अधिकार प्राप्त करो'। तब राजा ने ज्योतिषियो को बुलाकर उनसे अपनी मृत्यु की अवधि पूछी। बारह वर्ष का उत्तर पाकर उन्होंने कहा—'हे पुत्रो, बारह वर्ष के बाद आकर (राज) छत्र को उठाना'। पिता की वदना करके दोनो भाई चले जाने वाले ही थे कि सीता देवी भी पिता से विदा लेकर उनके साथ हो ली। तीनो के साथ-साथ बहुत से अन्य लोग भी चल दिए। उनको लौटाकर तीनो हिमालय पहुँच गये और वहाँ आश्रम बनाकर रहने लगे।

नौ वर्ष के बाद दशरथ पुत्रशोक के कारण मर जाते है। रानी भरत को राजा बनाने मे असफल होती है, क्योकि अमात्य और भरत भी इसका विरोध करते हैं। तब भरत चतुरगिणी सेना लेकर राम को ले आने के उद्देश्य से वन को चले जाते है। आश्रम के पडोस मे सेना छोडकर भरत थोडे अमात्यो के साथ राम के पास जाते है। उस समय राम अकेले ही है। भरत उनसे पिता के देहान्त का सारा वृत्तान्त कह कर रोने लगते है। राम पडित न तो शोक करते और न रोते है (**रामपडितो नेव सोचि न रोदि**)।

सध्या समय लक्खण और सीता लौटते है। पिता का देहान्त सुनकर दोनो अत्यन्त शोक करते है। इस पर रामपडित उनको धैर्य देने के लिए अनित्यता का धर्मो-

पदेश सुनाते हैं[1]। उसे सुनकर सबो का शोक मिट जाता है (**निस्सोका अहोसि**) ।

बाद मे भरत के बहुत अनुरोध करने पर भी रामपडित यह कहकर वन मे रहने का निश्चय प्रकट करते है—'मेरे पिता ने मुझे बारह वष की अवधि के अन्त मे राज्य करने का आदेश दिया है। अब लौटकर मै उनकी आज्ञा का पालन नही कर सकूँगा। मै तीन वर्ष के बाद लौट आऊँगा' ।

जब भरत भी शासनाधिकार अस्वीकार करते है तब रामपडित अपनी तृण की पादुकाएँ (**तिणपादुका**) देकर कहते है, 'मेरे आने तक ये शासन करेगी' ।

खडाउओ को लेकर भरत, लक्ष्मण और सीता अन्य लोगो के साथ वाराणसी लौटते है। अमात्य इन पादुकाओ के सामने राजकाय करते है। अन्याय होतेही पादुकाएँ एक दूसरे पर आघात करती है (**परिहण्णन्ति**) और ठीक निर्णय होने पर वे शात रहती है ।

तीन वष व्यतीत होने पर रामपडित लौटकर अपनी बहन सीता से विवाह करते है । सोलह सहस्र वर्ष तक धर्मपूर्वक राज्य करने के बाद वे स्वर्ग चले जाते है।

समोधान इसमे पहले राम के १६००० वर्ष तक शासन करने के विषय मे एक गाथा उद्धृत है और इसके बाद मे महात्मा बुद्ध जातक का सामजस्य यो बैठाते है—उस समय महाराज सुद्धोदन महाराज दशरथ थे, महामया (बुद्ध की माता) राम की माता, यशोधरा (राहुल की माता) सीता, आनन्द भरत थे और मै रामपडित था ।

अनामक जातकम्

५२ तीसरी शताब्दी ई० मे **अनामक जातकम्** का काग-सेग-हुई द्वारा चीनी भाषा मे अनुवाद हुआ था । मूल भारतीय पाठ अप्राप्य है। चीनी अनुवाद **लियेऊ तू त्सी किंग** नामक पुस्तक मे सुरक्षित है (दे० चीनी तिपिटक का तैशो सस्करण न० १५२) । इस जातक मे किसी भी पात्र के नाम का उल्लेख नही हुआ है, लेकिन राम और सीता का वनवास, सीता-हरण, जटायु का वृत्तान्त, वालि ओर सुग्रीव का युद्ध, सेतुबन्ध, सीता की अग्निपरीक्षा, इन सबो के सकेत मिलते है । इसमे एक महत्वपूर्ण अन्तर यह है कि राम की विमाता के कारण पिता द्वारा वनवास नही दिया जाता । वे अपने मामा के आक्रमण की तैयारिया सुनकर स्वेच्छा से अपना राज्य छोड देते है । वालिवध का वृतान्त भी बदल गया है—राम के धनुषसधान को देखते ही वालि भयभीत होकर भागता है और उसका आगे चल कर कोई उल्लेख नही है । यह परिवर्तन स्वाभाविक है । राम

---

१ रामपडित का सारा उपदेश गाथाओ मे है । इसका विश्लेषण निबन्ध के द्वितीय भाग मे किया जायगा (दे० अनु० ६६ आदि) ।

ने अर्थात् बोधिसत्त्व ने वालि का वध किया है, इसकी कल्पना बौद्धो के लिये असह्य हुई होगी। **अनामक जातकम्** का वृत्तान्त इस प्रकार है[1]

किसी समय बोधिसत्त्व एक महान् राजा था। वह सदैव चार गुणो से (दान, प्रियवचन, न्याय, समदर्शिता) समस्त जीवो की रक्षा करता था। उसका मामा भी राजा हो गया था। वह निर्लज्ज, लोभी, निर्दयी तथा दुष्ट था। बोधिसत्त्व का राज्य छीनने के लिये उसने एक सेना तैयार की।

बोधिसत्व के राज्य-सचालको ने भी सेना एकत्र की। बोधिसत्व ने सेना का निरीक्षण करके कहा—'केवल अपने स्वार्थ के लिये मैं असख्य मनुष्यो का जीवन नष्ट करूँगा। यदि मै बाहर चला जाऊँ तो समस्त देश की रक्षा हो जायगी'।

मत्रियो को राज्यभार सौपकर वह अपनी रानी के साथ वन चला गया। उसके मामा ने राज्य मे प्रवेश कर देश पर अधिकार कर लिया। जनता को इससे बहुत कष्ट हुआ।

बोधिसत्व पहाडी वन मे निवास करता था। समुद्र में दुष्ट नाग रहता था। उसने ऋषि का छद्म-वेष धारण कर लिया। जिस समय राजा फल लेने गया था, नाग रानी का अपहरण कर भाग निकला। समुद्र की ओर उसका पथ दो घाटियो के तग रास्ते से था। पहाडी पर एक विशाल पक्षी रहता था। उसने अपने पख फैला कर रास्ता रोक लिया। नाग ने पक्षी को मारा और उसका दाहिना पख तोड डाला। अन्त मे वह समुद्र मे स्थित अपने द्वीप को लौट गया।

फल तोडकर राजा लौटा। अपनी रानी को न पाकर वह बहुत दुखी हुआ और धनुष-वाण लेकर रानी की खोज मे पर्वतो मे इधर-उधर घूमने लगा। एक नदी के स्रोत पर पहुँच कर राजा ने एक बडे बन्दर को देखा जो उदास और खिन्न था। पूछने पर बन्दर ने कहा 'मैं राजा था। मेरे चाचा ने मेरा राज्य छीन लिया है। अब मेरा कोई साथी नही रहा।' राजा ने भी अपना सब वृत्तान्त कहा। पारस्परिक सहायता के लिये वचनवद्ध होकर दोनो ने मैत्री कर ली। दूसरे दिन बन्दर ने अपने चाचा से युद्ध किया। राजा (बोधिसत्व) ने धनुष मे वाण सधाना जिसे देखते ही बन्दर का चाचा मारे डर के भाग निकला।

बन्दर ने अपने साथियो को बोधिसत्व की रानी की खोज लगाने की आज्ञा दी।

---

१ अँग्रेजी अनुवाद, दे० चीन रामायण सरस्वती विहार ग्रन्थमाला ८ (१९३८ ई०)। फ्रेंच अनुवाद, दे० बुलेटिन एकाल फासेस एक्सट्रेम ओरियन भाग ४ (१९०४), पृ० ६९८-७०१।

एक-एक कर वे सभी चल पडे। बन्दरो । एक आहत पक्षी देखा। पक्षी ने बताया कि एक नाग ने रानी को चुराया है ।

कपिराज ने अपनी सेना को समुद्र पार करने मे असमर्थ पाया। इन्द्र ने छोटे बन्दर का रूप धारण कर कहा—'प्रत्येक बन्दर को पर्वत का एक-एक टुकडा लाने की आज्ञा दो। समुद्र पर इस प्रकार एक मार्ग बन जायगा और आप द्वीप मे पहुँच जायेंगे।

बन्दरो ने ऐसा करके समुद्र पार किया। सब बन्दरो ने नाग-द्वीप को घेर लिया। नाग ने एक विषैला घना कुहरा उत्पन्न किया जिससे सभी पृथ्वी पर गिर पडे। छोटे बन्दर (इन्द्र) ने एक दैवी औषधि सबकी नाको मे लगाई और सब स्वस्थ हो कर जाग पडे।

अब नाग ने आँधी और बादल से सूर्य छिपा लिया। बिजली चमकने लगी। छोटे बन्दर (इन्द्र) ने बतलाया कि बिजली ही नाग है। इस पर राजा ने एक बाण से नाग को मार गिराया ।

छोटे बन्दर ने रानी को मुक्त किया। राजा अपने मामा का देहान्त सुनकर अपने देश चला गया। राजा ने रानी से कहा—'पति से अलग, दूसरे के घर निवास करने पर लोग स्त्री के आचरण पर सन्देह करते है। तुम्हे स्वीकार करने मे परम्परा के अनुसार कहाँ तक औचित्य है?' रानी ने उत्तर दिया—'मै एक नीच की गुफा मे रही, किन्तु फिर भी मैं इसमे पकज की तरह रही। यदि मुझमे सतीत्व है, तो पृथ्वी फट जाय'। पृथ्वी फटी और रानी ने कहा, 'मेरा सतीत्व प्रमाणित हुआ।' राजा और रानी के प्रभाव के कारण सब वर्ण अपने-अपने धर्म का पालन करने लगे। बुद्ध ने भिक्षुओ से कहा, 'तब मैं राजा था, गोपा रानी थी, देवदत्त मामा था और मैत्रेय इन्द्र था'। बोधिसत्व के आचरण मे शाति की पारमिता असीम है।

दशरथ कथानम्

५३ चीनी तिपिटक के अन्तर्गत **त्सा-पौ-त्सग-किंग** नामक १२१ अवदानो का सग्रह है[१]। यह सग्रह ४७२ ई० मे चीनी भाषा मे अनूदित हुआ था। अप्राप्य मूल भारतीय ग्रथ की रचना दूसरी शताब्दी ई० के बाद हुई थी, क्योकि इसमे राजा कनिष्क अनेक कथाओ के प्रधान पात्र माने गए हैं। इसमे एक **दशरथकथानम्** भी मिलता है,

---

१ दे० चीनी तिपिटक तैशो सस्करण, न ०२०३।
फ्रेंच अनुवाद दे० सिल्वान लेवी, एल्बम केर्न, पृ० २७९ आदि।
अंग्रेजी अनुवाद दे० चीन रामायण, सरस्वती बिहार ग्रन्थमाला ८।
हिन्दी अनुवाद दे० ना० प्र० प०, वर्ष ५४, पृ० २८६-८९।

जिसकी विशेषता यह है कि इसमे सीता या किसी भी राजकुमारी का कोई भी उल्लेख नही हुआ है। कथावस्तु यो है

प्राचीन काल मे जब कि मनुष्य की आयु दस सहस्र वर्ष होती थी, जम्बू द्वीप मे दशरथ नाम का एक राजा राज्य करता था । उसकी प्रधान महिषी के राम नामक एक पुत्र उत्पन्न हुआ। दूसरी रानी के भी एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम रामण (लोमन-लक्ष्मण) था। राम मे नारायणीय शक्ति थी। तीसरी रानी से भरत और चौथी से शत्रुघ्न उत्पन्न हुए ।

तीसरी रानी पर राजा का अत्यधिक प्रेम था। एक दिन राजा ने कहा—'तुम्हारी किसी भी इच्छा की पूर्ति के लिए मै अपना सपूर्ण धन और कोष देने मे सकोच नही करूँगा'। रानी ने उत्तर दिया—'मुझे इस समय कोई आवश्यकता नही है।' राजा बीमार पडे। उन्होने राम का राज्याभिषेक करवाया। राम को राजपद पर आसीन होते देखकर छोटी रानी ने ईर्ष्यावश राजा से कहा—'मै अब आपके दिए हुए वर की पूर्ति चाहती हूँ। राम गद्दी से उतार दिए जाएँ और मेरे पुत्र का राज्याभिषेक हो, यही मेरी इच्छा है।' यह सुनकर राजा दुखित हुआ। राजधर्म के अनुसार वह अपने वचन को नही तोड सकता था। इस समय रामण (लक्ष्मण) ने राम से अपनी शक्ति और साहस दिखलाने की प्रार्थना की। राम ने कहा— 'अपने पिता की आज्ञा भग कर कोई भी पुत्र पितृ-भक्त नही कहला सकता'।

तब दशरथ ने दोनो पुत्रो को वनवास दे दिया और १२ वष वाद लौटने की आज्ञा दी। भरत उस समय विदेश मे थे। दशरथ की मृत्यु के पश्चात भरत लौटे। उन्हे अपनी माता के कार्यो से घृणा हो गई। वह सेना के साथ उस पर्वत पर गए, जहाँ राम निवास करते थे। भरत ने राम से का—'मै आपसे राजधानी लौटने और शासन का भार ग्रहण करने की प्रार्थना करता हूँ।' राम ने कहा—'वनवास के लिए पिता की आज्ञा हो चुकी है। उसे तोडने पर मै आज्ञाकारी पुत्र नही कहलाया जाऊँगा।'

तब भरत ने राम की चमडे की खडाउएँ माँगी और अयोध्या लौट गए। खडाउओ को राजसिंहासन पर रखकर भरत शासन की देख-भाल करने लगे। प्रति दिन प्रात और सध्या वह पादुकाओ की पूजा करते थे और उनसे आज्ञा लेते थे।

धीरे-धीरे वनवास की अवधि समाप्त हुई। राम अपने देश को लौट आए। भरत ने राम से राज्य भार ग्रहण करने की प्रार्थना की। पहले राम ने अस्वीकार किया परन्तु भरत के वहुत आग्रह करने पर राम ने राज्यभार स्वीकार किया। सब लोग अपने-अपने धर्म का पालन करने लगे। सर्वत्र शान्ति और समृद्धि का राज्य था।

अन्य बौद्ध साहित्य

५४ ऐसा प्रतीत होता है कि आगे चलकर बौद्धो मे रामकथा की लोकप्रियता घटने लगी। **अवदान-शतक** (दूसरी श० ई०), **दिव्यावदान** (चीनी अनुवाद २६५ ई०), आर्यशूर की **जातकमाला, कल्पद्रुम-अवदान, रत्नावदानमाला, द्वाविंशति अवदान**, इन सबो मे रामकथा सम्बन्धी सामग्री नही मिलती। **लकावतार-सूत्र** के प्रथम अध्याय मे लकापति रावण और महात्मा बुद्ध का धर्म के विषय मे वार्त्तालाप दिया गया है, परन्तु इसमे रामकथा का निर्देश भी नही पाया जाता है। **खोतानी रामायण** तथा श्याम के **राम-जातक** और **ब्रह्मचक्र** मे बुद्ध अपने पूर्वजन्म मे राम थे, ऐसा कहा जाता है लेकिन वास्तव मे ये रचनाएँ बौद्ध साहित्य के अग नही है। इनका उल्लेख निबन्ध के तृतीय भाग मे किया जायगा (दे० अनु० ३१२, ३२७, ३२८)।

अध्याय ५

जैन रामकथा

क—जैन रामकथा की सामान्य विशेषताएँ

५५ बौद्धो की भाति जैनियो ने भी रामकथा अपनाई है। अन्तर यह है कि जैन कथा-ग्रन्थो मे हमे एक अत्यन्त विस्तृत रामकथा साहित्य मिलता है। बौद्ध महात्मा बुद्ध को राम का पुनरवतार मानते है। इसी तरह जैनियो ने रामकथा के पात्रो को अपने धर्म मे एक महत्वपूर्ण स्थान दिया है। राम (या पद्म), लक्ष्मण और रावण न केवल जैन-धर्मावलम्बी माने जाते है लेकिन तीनो को जैनियो के त्रिषष्टि महापुरुषो मे भी रखा गया है। इन त्रिषष्टि महापुरुषो का वर्णन इस प्रकार है २४ तीर्थकर (जैन धर्मोपदेशक) १२ चक्रवर्ती (भारत के ६ खडो के सम्राट्) तथा ९ बलदेव, ९ वासुदेव और ९ प्रति-वासुदेव। इनकी जीवनिया जैन धर्म मे महाभारत, रामायण तथा पुराणो का स्थान लेती है।

त्रिषष्टि महापुरुषो का विस्तृत वर्णन सभवत पहले-पहल **त्रिषष्टिलक्षण-महा पुराण** मे मिलता है। इस रचना के दो भाग है, जिनसेनकृत **आदिपुराण** (नवी श० ई०) तथा गुणभद्रकृत **उत्तरपुराण** (८९७ ई०), लेकिन नवी शताब्दी से बहुत पहले इन जीवनियो की सामग्री तैयार हो चुकी थी, विशेष करके **तिलोयपण्णत्ति**(पाँचवी श० ई०) मे। **पउमचरिय** (चौथी श० ई०) मे कहा गया है कि पद्मचरित अर्थात् राम-चरित विमल सूरि के पूर्व 'नामावलियनिबद्ध' (१ ८) था।

प्रत्येक कल्प के त्रिषष्टि महापुरुषो मे से नौ बलदेव, नौ वासुदेव और नौ प्रतिवासुदेव होते है। ये तीनो सदैव समकालीन रहते है। राम, लक्ष्मण और रावण क्रमश आठवे बलदेव, वासुदेव और प्रतिवासुदेव माने जाते है[1]। बलदेव (बलभद्र) और वासुदेव (नारायण) किसी राजा की भिन्न-भिन्न रानियो के पुत्र है। वासुदेव अपने बडे भाई बलदेव के साथ प्रतिवासुदेव (प्रतिनारायण) से युद्ध करते है और

---

१ दे० एम्० विटरनित्स हि० इ० लि०, भाग १, पृष्ठ ४९७। **एच वान् ग्लाज-नैप** डेर जैनिजमुस, बर्लिन, १९२५, पृष्ठ २४७। हरिसत्य भट्टाचार्य नारायण, प्रतिनारायण एड बलभद्र, दि जैन एन्टीक्वेरी, भाग ८, पृष्ठ ३६।

अन्त मे प्रतिवासुदेव का वध करते है। इसके बाद वह दिग्विजय करके भारत के तीन खण्डो पर अधिकार प्राप्त करते है और इस प्रकार अर्द्धचक्रवर्ती बन जाते है। मरने पर वासुदेव को प्रतिवासुदेव-वध के कारण नरक जाना पडता है। नौ वासुदेवो मे लक्ष्मण और कृष्ण विशेष रूप से उल्लेखनीय है। बलदेव अपने भाई की मृत्यु के कारण शोकाकुल होकर जैन दीक्षा लेकर मोक्ष प्राप्त करते है (जैसे राम और बलराम)। प्रतिवासुदेव सदैव वासुदेव का विरोध करते है तथा वासुदेव के चक्र से मारे जाते है (जैसे रावण और जरासंध)।

५६ जैन रामकथा की एक दूसरी विशेषता यह है कि इसमे वानर और राक्षस दोनो विद्याधर-वंश की भिन्न-भिन्न शाखाएँ माने जाते है[1]। प्राचीन बौद्ध-गाथाओ (दे० जातक ५१०, ४३६) तथा **महाभारत** के कई स्थलो पर विद्याधर का अर्थ है (आकाशगामी तथा कामरूपी) ऐंद्रजालिक। अलौकिक शक्ति से विभूषित माने जाने के कारण **कथासरित्सागर** (अत **वृहत्कथा** मे भी), **रामायण**[2] तथा **महाभारत** (दे० १, ५१, ६) मे विद्याधर देवयोनियो के अन्तगत रखे गए है। फिर भी **रामायण** तथा **महाभारत** मे वे किसी भी कथा मे कोई महत्वपूर्ण भाग नही लेते। **कथासरित्सागर** तथा जैन कथा-साहित्य मे इनका बहुत उल्लेख होता है। विद्याधरो की उत्पत्ति जैन-ग्रन्थो के अनुसार इस प्रकार है—श्री ऋषभ (जैन-धर्म-संस्थापक) ने तपस्या करने के उद्देश्य से अपने सौ पुत्रो मे से भरत को ही अपना राज्य सौपा था और दीक्षा ली थी। बाद मे नमि और विनमि उनके पास पहुँचे और राज्यलक्ष्मी मागने लगे। उनको विविध विद्याएँ मिल गई तथा वैताढ्य (रविषेण के अनुसार विजयार्ध) पर्वत पर, अर्थात् विन्ध्य प्रदेश मे अपना राज्य स्थापित करने का परामर्श दिया गया। ये दो राजकुमार विद्याधरो के पूर्वज है (दे० पउमचरिय, पर्व ३)। जैनियो के अनुसार विद्याधर मनुष्य ही माने जाते है। उन्हे कामरूपत्व, आकाशगामिनी आदि अनेक विद्याएँ सिद्ध होती है। इससे उनका नाम विद्याधर पडा। वानर-वंशी विद्याधरो की ध्वजाओ,

---

१ एच् लुडर्स जर्मन ओरियेण्टल सोसाइटी जर्नल, भाग ६३ (१६३६), पृष्ठ ८६ आदि।
एच० याकोबी इनसाइक्लोपीडिया ऑव रिलिजन एंड एथिक्स ब्राह्मनिज्म।
ए० चक्रवर्त्ती दि जैन गजेट, भाग २२ (१६२६), पृ० ११७।

२ निम्नलिखित स्थलो पर विद्याधरो का उल्लेख है—
१, १७, ५ २२ २४, २, ६४, १२, ४, ६७, ४५, ५, १, २२ २६ १६६, ५, १२, २०, ५, ५६, ४६ ४८, ६, ६६, ६८, ६, ७१, ६५, ७, २६, ८।

महलो तथा छतो के शिखर पर वानरो के चिह्न विद्यमान थे, अत वे वानर कहलाए (दे० पउमचरिय ६, ८६)।

५७ जैन राम-कथा की एक तीसरी विशेषता यह है कि उसमे प्रारभ से ही उन लौकिक ग्रन्थो का उल्लेख मिलता है, जिनमे राम का शिकार करना, रावण आदि का मासाहारी होना, कुम्भकर्ण की छ महीने की निद्रा, रावण के राक्षस तथा सुग्रीव के वानर होने आदि की असत्य कथाएँ पाई जाती है। इससे स्पष्ट है कि जैन रामकथा **वाल्मीकि रामायण** के बाद उत्पन्न हुई है। जैन रामकथा के दो भिन्न रूप प्रचलित है। श्वेताम्बर सम्प्रदाय मे तो केवल विमलसूरि की रामकथा का प्रचार है, लेकिन दिगम्बर सम्प्रदाय मे इसके दो रूप मिलते हैं, अर्थात् विमलसूरि तथा गुणभद्र दोनो की रामकथा प्रचलित है, यद्यपि विमलसूरि की परम्परा को अधिक महत्व मिला है। इन दो रूपो का अलग-अलग परिचय नीचे दिया जाता है।

ख—विमलसूरि की परम्परा

५८ विमलसूरि ने **पउमचरिय** लिखकर पहले-पहल लोकप्रिय रामकथा को जैन धर्म के साँचे मे ढालने का प्रयत्न किया है।[1] कवि का कहना है कि यह पद्मचरित आचार्यों की परम्परा से चला आ रहा था, नामावलीबद्ध था (१,८) और साधु-परम्परा (साहुपरम्पराएँ, ११८, १०२) द्वारा लोकप्रसिद्ध हो गया था। इसका अर्थ यह हो सकता है कि रामचरित केवल नामावली के रूप मे रहा होगा अर्थात् "उसमे कथा के प्रधान-प्रधान पात्रो, उनके माता-पिताओ, स्थानो और भवान्तरो आदि के नाम ही होंगे। वह पल्लवित कथा के रूप मे न होगा और उसी की विमलसूरि ने विस्तृत चरित के रूप मे रचना की होगी" (नाथूराम प्रेमी, जैन साहित्य और इतिहास, पृ० २८०)। फिर भी कवि का कहना है कि नारायण तथा बलदेव की कथा पूर्वगत (**पुव्वगए,** ११८, ११८) मे वर्णित थी और मैंने वही कथा अपने गुरु से सुनी थी। वह पूर्वगत आजकल अप्राप्य है।

विमलसूरि का काल असदिग्ध नही है। जैन परम्परा के अनुसार (पउमचरिय ११८, १०३) **पउमचरिय** ७२ ई० की है, लेकिन भाषा के आधार पर डॉ० याकोबी आदि विद्वान् **पउमचरिय** को तीसरी अथवा चौथी शताब्दी ई० की रचना मानते है[2]।

---

१ पउमचरिय, भवनगर १९१४। एच० याकोबी का सस्करण।

२ एच० याकोबी इन० रि० ए०, भाग ७ और माडर्न रिव्यू १९१४, दिसम्बर। ए० कीथ हिस्टरी स० लि०, पृष्ठ ३४। ए० सी० वूलनर - इन्ट्रोडक्शन टु प्राकृत।

यह ग्रन्थ शुद्ध जैन महाराष्ट्री मे लिखा है। इसका सस्कृत रूपान्तर रविषेणाचार्य ने ६६० ई० मे किया है, जो **पद्मचरित**[1] के नाम से प्रसिद्ध है। हिन्दी खडी बोली के इतिहास मे इस पद्मचरित का महत्वपूर्ण स्थान है, क्योकि स० १८१८ मे दौलतराम ने इसका भाषा मे अनुवाद किया था।

रविषेण ने मौलिकता का किंचित् भी प्रदर्शन नही किया है। उनकी समस्त रचना **पउमचरिय** का पल्लवित छायानुवाद मात्र प्रतीत होती है। दोनो रचनाओ का कथानक एक ही है। आगे चलकर जैन कवियो ने रविषेण का अनुकरण किया है, उनकी रचनाओ मे प्राय कथानक का कोई भी महत्वपूर्ण परिवर्तन दृष्टिगोचर नही है। विमलसूरि तथा रविषेण की राम-कथा-परपरा की मुख्य रचनाएँ निम्नलिखित तालिका मे दी जाती है। इस विस्तृत साहित्य से जैनियो मे राम-कथा की लोकप्रियता का अनुमान किया जा सकता है। सघदासकृत **वसुदेवहिण्डि** मे जो सक्षिप्त राम-कथा मिलती है, वह विमलसूरि की अपेक्षा वाल्मीकि के अधिक निकट है, अत इसका परिचय कथा-साहित्य के अतर्गत दिया जायगा (दे० आगे अनु० २५३)। हस्तिमल्लकृत **मैथिली-कल्याण** तथा **अजनापवनजय** नाटक का परिचय सस्कृत ललित साहित्य नामक अध्याय मे दिया जायगा (दे० अनु० २३६)।

५६ **(१) प्राकृत—**

(१) विमलसूरिकृत **पउमचरिय** (तीसरी-चौथी श० ई०)।

(२) शीलाचार्यकृत चउपन्नमहापुरिसचरिय के अतर्गत **रामलक्खणचरियम** (नवी श० ई०)। यह राम-कथा विमलसूरि की परम्परा के अनुसार होते हुए भी वाल्मीकीय कथा से प्रभावित है।

(३) भद्रेश्वरकृत कहावली (११ वी श० ई०) के अतगत **रामायणम्**।

(४) भुवनतुङ्ग सूरि कृत **सीयाचरिय** तथा **रामलक्खणचरिय**।

(२) संस्कृत—

(१) रविषेणकृत **पद्मचरित** (६७८ ई०)। प्राचीनतम जैन सस्कृत ग्रन्थ।

(२) हेमचन्द्रकृत त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित (१२ वी श० ई०) के अतर्गत **जैन रामायण**। कलकत्ता स० १६३०।

(३) हेमचन्द्रकृत योगशास्त्र की टीका के अतर्गत **सीतारावणकथानकम्**।

---

१ दे० मानिक चन्द्र जैन ग्रन्थमाला, न० २६-३१, पद्मचरितम्, बम्बई, वि० स० १६८५।

(४) जिनदासकृत **रामायण** अथवा **रामदेवपुराण** (१५ वी श०)। दे० एम्० विटरनित्स, हि० इ० लि०, भाग २, पृ० ४९६ ।

(५) पद्मदेवविजयगणिकृत **रामचरित** (१६ वी श० ई०)। दे० राजेन्द्र लाल मित्र नोटिसस सस्कृत मैन्युस्क्रिप्ट्स, भाग १०, पृ० १३४ और भडारकर, रिपोर्ट १८८२-८३, पृ० ८२ ।

(६) सोमसेनकृत **रामचरित** (१६ वी श० ई०), इसकी हस्तलिपि जैन सिद्धात भवन, आरा मे सुरक्षित है ।

(७) आचार्य सोमप्रभकृत **लघुत्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित** ।

(८) मेघविजयगणिवरकृत **लघुत्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र** (१७ वी श० ई०) ।

इन रचनाओ के अतिरिक्त जिनरत्नकोष मे धर्मकीर्त्ति, चद्रकीर्त्ति, चन्द्रसागर, श्रीचन्द्र, पद्मनाभ आदि द्वारा रचित विभिन्न **पद्मपुराण** अथवा **रामचरित्र** नामक ग्रन्थो का उल्लेख है । **सीताचरित्र** के तीन रचयिताओ के नाम मिलते है—ब्रह्मनेमिदत्त, शातिसूरि तथा अमरदास । अधिकाश सामग्री अप्रकाशित है ।

दसवी शताब्दी के हरिषेणकृत **कथाकोष** मे **रामायणकथानकम्** (न० ८४) तथा **सीताकथानकम्** (न० ८९) पाया जाता है । इस अतिम रचना मे विमलसूरि के अनुसार सीता की अग्निपरीक्षा वर्णित है, लेकिन **रामायणकथानकम्** (५७ श्लोक) अधिकाश मे वाल्मीकीय कथा पर निर्भर है । रामचन्द्र मुमुक्षुकृत **पुण्याश्रवकथाकोष** (१३३१ ई०, हिन्दी अनुवाद, निर्णयसागर प्रेस, १९०७ ई०) मे जो लव-कुश की कथा मिलती है, वह भी विमलसूरि की परम्परा पर निर्भर है । हरिभद्रकृत **धूर्त्ताख्यानम्** (८ वी श० ई०) तथा अमितगतिकृत **धर्मपरीक्षा** (११ वी० श० ई०) मे वाल्मीकि रामायण मे वर्णित हनुमान के समुद्रलघन जैसी घटनाओ को असभव और हास्यास्पद बताया गया है । धनेश्वरकृत **शत्रुजय माहात्म्य** के नवे सर्ग मे राम-कथा विमलसूरि के अनुसार है, किन्तु कैकेयी राम और लक्ष्मण दोनो के वनवास का वर माँग लेती है (१४ वी श० ई०) ।

(३) अपभ्रश—

(१) स्वयभूदेवकृत **पउमचरिउ** अथवा **रामायणपुराण** (८ वी श० ई०) । भारतीय विद्या भवन, बम्बई, स० २००९ ।

(२) रइधू अथवा रयधू **पद्मपुराण** अथवा **बलभद्रपुराण** (१५ वी श० ई०) । दे० हरिवश कोछड, अपभ्रश साहित्य, पृ० ११६ तथा रामसिह तोमर, प्राकृत और अपभ्रश साहित्य, पृ० १५४ ।

(४) कन्नड—

(१) नागचन्द्र (अभिनव पम्प) कृत **पम्परामायण** या **रामचन्द्र-चरित पुराण** (११ वी श० ई०)। यह रचना कन्नड भाषा के कई रामचरित-सम्बन्धी ग्रन्थो का आधार है (दे० इ० हि० क्वा०, भाग २५, पृ० ५७४-६४)।

(२) कुमदेन्दुकृत **रामायण** (१६ वी श० ई०)।

(३) देवप्पकृत **रामविजयचरित** (१६ वी श० ई०)।

(४) देवचन्द्रकृत **रामकथावतार** (१८ वी श० ई०)।

(५) चन्द्रसागर वर्णीकृत **जिनरामायण** (१६ वी श० ई०)।

६० विमलसूरि की कथा तथा वाल्मीकि रामायण की तुलना करने पर स्पष्ट हो जाता है कि मुख्य कथावस्तु की दृष्टि से दोनो मे कोई महत्वपूर्ण अन्तर नही है। राम-कथा के विभिन्न प्रसगो मे जो अतर विमलसूरि की रचना मे मिलते है, इनका विश्लेषण प्रबन्ध के चतुर्थ भाग मे किया जायगा। विमलसूरि ने राम को पउम (पद्म) कहा और तदनुसार अपनी रचना का नाम पउमचरिय (पद्मचरित) रखा है। जैन साहित्य मे कृष्ण के भाई बलराम को भी राम कहा जाता था। सभवत विमलसूरि ने इसलिए राम का नाम बदल दिया। यद्यपि वह उन्हे राम, राहव (राघव), रामदेव आदि भी कहते है। पद्म नाम का कारण यह है कि अपराजिता ने **"पउमसरिसमुह"** (२५,७) पुत्र को उत्पन्न किया और दशरथ ने **'पउमुप्पलदलच्छो'** (पद्मकमल दल नेत्र वाले, २५,८) पुत्र को देख कर उसका नाम 'पउम' रखा। समस्त कथानक को छह भागों मे विभक्त कर पउमचरिय का सार नीचे दिया गया है।

रावण-चरित (पर्व १-२०)

राजा सेणिय (श्रेणिक) किसी दिन महावीर के प्रधान शिष्य गोयम (गौतम) से राम-कथा का यथार्थ रूप जानने की इच्छा प्रकट करता है। इस पर गोयम पउम-चरिय सुनाता है। प्रारभ मे विद्याधर लोक, राक्षसवश तथा वानरवश का वर्णन दिया जाता है[1]।

रावणचरित वाल्मीकि के उत्तरकाण्ड से सम्बन्ध रखते हुए भी पर्याप्त मात्रा मे भिन्न है। राक्षस-राजा रत्नश्रवा तथा केकसी की चार सन्तान हैं—दशमुख (रावण), भानुकर्ण (कुम्भकर्ण), चन्द्रनखा (सूर्पणखा) और विभीषण। जब रत्नश्रवा ने

---

१ ऊपर इसका उल्लेख हो चुका है कि राक्षस तथा वानर, दोनो विद्याधर-वश की भिन्न-भिन्न शाखाएँ है (दे० ऊपर अनु० ५६)।

पहले-पहल अपने पुत्र को देखा था, तब शिशु माला पहने हुए था, इस माला मे पिता को बालक के दस सिर दिखाई पडे और इसीलिए शिशु का नाम दशमुख रखा गया (दे० ७, ६६) । अपने मौसरे भाई वैश्रमण (वैश्रवण) का विभव देखकर दशमुख अपने भाइयो के साथ तप करने जाता है तथा विभिन्न विद्याएँ प्राप्त कर लेता है। अनन्तर मन्दोदरी तथा अन्य ६००० विद्याधर-कन्याओ के साथ रावण के विवाह का वर्णन किया गया है । बाद मे रावण वैश्रमण तथा यम को परास्त करता है और पुष्पक प्राप्त कर लका मे प्रवेश करता है (पर्व ८) ।

रावण-वालि सघर्ष का वृत्तान्त इस प्रकार है । रावण वालि के पास दूत भेजकर उसकी बहन श्रीप्रभा को पत्नीस्वरूप माँगता है तथा वालि को आकर प्रणाम करने का आदेश देता है । वालि जिनवरेंद्र को छोडकर किसी को प्रणाम करने से इनकार करता है और अपने भाई सुग्रीव को राज्य देकर जैन दीक्षा लेने जाता है (पव ६) । सुग्रीव रावण को प्रणाम करता है तथा श्रीप्रभा का रावण के साथ विवाह सम्पन्न हो जाता है । बाद मे वालि द्वारा रावण की पराजय के वृत्तान्त को सर्वथा नवीन रूप दिया गया है, जिसमे वालि रामायणीय कथा के शिव का स्थान लेकर रावण द्वारा उठाए हुए पर्वत को अपने पैर के अगूठे से दबा देता है (दे० आगे अनु० ६५५) ।

रावण की बहुत सी विजय-यात्राओ का वर्णन किया गया ह, जिनमे वह सहस्र-किरण, नलकूबर, इन्द्र, वरुण आदि को परास्त करता है (दे० आगे ६५२) । ध्यान देने योग्य है कि यम, इन्द्र, वरुण आदि देवता न होकर साधारण राजा माने जाते है । खरदूषण किसी विधाधर वश का राजकुमार है, जो रावण की बहन चन्द्रनखा से विवाह करता है । आगे चलकर उनकी पुत्री अनगकुसुमा तथा उनके पुत्र शम्बूक का उल्लेख होगा ।

रावण का चरित्र-चित्रण वाल्मीकि रामायण से बहुत भिन्न है—वह एक धर्म-भीरु जैनी है, जो जिन-मन्दिरो का जीर्णोद्धार करता है तथा ऐसे यज्ञो पर रोक लगाता हे, जिनमे पशुओ को मारा जाता है (पर्व ११) । वह नलकूबर की पत्नी उपरभा का प्रेम प्रस्ताव अस्वीकार करता है (पर्व १२) तथा अनन्तवीर्य का धर्मोपदेश सुनकर व्रत लेता है कि वह विरक्त परनारी के साथ रमण नही करेगा (दे० आगे अनु० ५४२) ।

हनुमच्चरित का पर्याप्त विस्तार के साथ वर्णन किया गया है । वह पवजय तथा अजना सुन्दरी के पुत्र है (दे० आगे अनु० ६६६), वरुण के विरुद्ध रावण की सहायता करते हैं तथा चन्द्रनखा की पुत्री अनगकुसुमा को पत्नी के रूप मे प्राप्त कर लेते है, इसके अतिरिक्त वे और बहुत से विवाह करते है (दे० आगे अनु० ६६६) ।

रावण-चरित के अन्त मे जिनवरो, तीर्थंकरो, बलदेवो, वासुदेवो और प्रतिवासु-देवो की नामावलियाँ दी गई है (दे० पर्व २०) ।

राम और सीता का जन्म और विवाह (पर्व २१-३२)

रामायण की आधिकारिक कथावस्तु का वर्णन जनक तथा दशरथ की वशावली से प्रारभ होता है (पर्व २१-२२)। दशरथ के अपराजिता तथा सुमित्रा के साथ विवाह के उल्लेख के अनन्तर निम्नलिखित कथा मिलती है। किसी दिन नारद ने दशरथ के पास पहुँचकर समाचार दिया कि विभीषण उनको इसीलिए मारना चाहता है कि एक नैमित्तिक ने कहा है—"सागर के मार्ग से आकर दशरथ का पुत्र जनक की पुत्री सीता के कारण रावण को युद्ध मे मारेगा"। इसके बाद नारद ने जनक को भी सावधान किया। दोनो राजा अपना-अपना राज्य छोड कर पृथ्वी पर भ्रमण करने लगे। मत्रियो ने दशरथ तथा जनक के प्रतिरूप बनवाकर उन्हे उनके-उनके महल मे रखवा दिया। बाद मे विभीषण ने दशरथ की मूर्ति का सिर कटवाया (पर्व २३)[1]। परदेश मे दशरथ तथा जनक कैकेयी के स्वयवर मे पहुँचे, स्वयवरा ने दशरथ के गले मे माला डाल दी। इस पर अन्य राजाओ के साथ युद्ध हुआ, जिसमे कैकेयी ने बडे कौशल मे दशरथ का रथ हाँका। विवाह सम्पन्न होने के पश्चात् दोनो राजा अपनी-अपनी राजधानी लौटे। घर पहुँचकर दशरथ ने कैकेयी को एक वर दिया किन्तु कैकेयी ने कहा—अवसर आने पर माँग लूँगी। दशरथ की सन्तति इस प्रकार बताई जाती है—राम अथवा पद्म अपराजिता (कौशल्या) से जन्म लेते है, लक्ष्मण सुमित्रा से और भरत तथा शत्रुघ्न, दोनो ही कैकेयी से। [रविषेण के अनुसार शत्रुघ्न सुप्रभा नामक दशरथ की एक चतुर्थ महिषी के पुत्र है, जैन लेखक प्राय रविषेण का अनुसरण करते है]।

राजा जनक की विदेहा नामक महारानी के एक पुत्री सीता और एक पुत्र भामडल उत्पन्न हुआ। राम म्लेच्छो के विरुद्ध जनक की सहायता करते है, जिसके फलस्वरूप राम तथा सीता का वाग्दान हुआ, बाद मे सीता-स्वयवर के अवसर पर राम ने धनुष चढाया और राम-सीता का विवाह सम्पन्न हुआ। इसके बाद दशरथ को वैराग्य हुआ। उस समय कैकेयी ने अपने वर के बल पर भरत के लिए राज्य माग लिया। यह सुनकर राम, लक्ष्मण और सीता दक्षिण की ओर चले जाते हैं। पश्चात्तापिनी कैकेयी के अनुरोध पर भरत वन मे जाकर राम से राज्य को स्वीकार करने का अनुरोध करते है। राम के इनकार करने पर वह अयोध्या लौटकर स्वय राज्य-भार ग्रहण करते हैं, बाद मे भरत किसी मुनि के समक्ष यह प्रतिज्ञा करते है कि राम के प्रत्यागमन पर मैं दीक्षा ग्रहण करूँगा।

१ रविषेण के अनुसार विभीषण दशरथ तथा जनक, दोनो की मूर्तियो का सिर कटवाता है (दे० पर्व २३, ५६)।

वनभ्रमण (पर्व ३३-४२)

यद्यपि पर्व ३३ के प्रारभ मे चित्रकूट का उल्लेख है, फिर भी पउमचरिय का यह अश वाल्मीकीय वृत्तान्त से नितान्त भिन्न है। इसमे राम अथवा लक्ष्मण द्वारा निम्नलिखित राजाओ की पराजय का वर्णन मिलता है—वज्रकर्ण के विरोधी सिहोदर (पर्व ३३), म्लेच्छो का राजा, जिसने कल्याणमालिनी के पिता को कारावास मे रखा था (३४), भरत के विरोधी अतिवीर्य (३७)। कई अवसरो पर लक्ष्मण को कन्याएँ विवाह मे दी जाती हैं, वह सबो को स्वीकार कर कहते हैं कि लौटते समय उन्हे ले जाऊँगा। इस प्रकार वज्रकर्ण ८ कन्याओ को तथा सिंहोदर आदि राजा ३०० कन्याओ को प्रदान करते हैं। इनके अतिरिक्त लक्ष्मण वनमाला, रतिमाला तथा जितपद्मा को भी प्राप्त कर लेते है।

कपिल नामक ब्राह्मण (पर्व ३५) और देवभूषण तथा पद्मभूषण नामक मुनियो (पर्व ३६) से भी भेट का वर्णन किया गया है। राम की आज्ञा से राजा सुरप्रभ ने वश पर्वत पर बहुत से मन्दिर बनवाए, जिससे इसका नाम रामगिरि रखा गया (पर्व ४०)। **दण्डकारण्य** मे प्रवेश करने के पश्चात् एक मुनिवर ने सीता से निवेदन किया कि वह जटायु की रक्षा करे (दे० आगे अनु० ४७२)।

सीता-हरण और खोज (पर्व ४३-५३)

सीताहरण का कारण विमलसूरि के अनुसार इस प्रकार है—शम्बूक ने (चन्द्रनखा तथा खरदूषण का पुत्र) सूर्यहास खग की सिद्धि के लिए १२ वर्ष तक साधना की थी। उसकी साधना सफल हुई और खग प्रकट हुआ। लक्ष्मण सयोग से वहाँ पहुँचते है। खग को देखकर वह उसे उठाते है और पास के बाँस को काट कर शम्बूक का सिर भी काट लेते है। चन्द्रनखा अपने मृत पुत्र को देखकर विलाप करते-करते वन मे फिरने लगती है। राम और लक्ष्मण के पास पहुँचकर वह उनसे उनकी पत्नी बनने का प्रस्ताव करती है। असफल होकर वह पति के पास लौट कर अपने पुत्र के वध का समाचार सुनाती है। रावण को भी सूचना भेजी जाती है। इतने मे लक्ष्मण अकेले ही खरदूषण की सेना को रोक लेते है। रावण पहुँचकर और सीता को देखकर उनपर आसक्त हो जाता है। वह अवलोकनी विद्या से जानता है कि लक्ष्मण ने राम को बुलाने के लिए उन्हे सिहनाद का सकेत बताया है। अत वह सिहनाद करके और इस प्रकार राम को लक्ष्मण के पास भेज कर सीता का हरण करने मे सफल होता है।

सीता-हरण के बाद राम और सुग्रीव के सख्य का वर्णन किया जाता है। सुग्रीव की विपत्ति वाल्मीकीय रामायण के वृत्तान्त से भिन्न है। साहसगति ने सुग्रीव का

रूप धारण कर उसकी पत्नी और राज्य को छीन लिया था। राम साहसगति को मार-कर सुग्रीव को उसका राज्य लौटाते है। सुग्रीव राम के प्रति अपनी १३ कन्याओ को समर्पित करते है, किन्तु सीता के वियोग मे दुःखित राम को उनकी सगति मे सुख नही मिलता। सुग्रीव की आज्ञा से विद्याधर सीता की खोज करने जाते है। खोजते हुए सुग्रीव रत्नजटी से सुनता है कि रावण ने सीता का हरण किया है। यह सुनकर सब विद्याधर रावण से डर कर युद्ध करने से इनकार करते है। तब उनको अनन्तवीर्य का वह कथन स्मरण आता है, जिसमे उसने रावण से कहा था कि जो कोटि-शिला उठा सकेगा, उससे तेरी मृत्यु होगी। अत विमान पर चढकर सब वहाँ जाते है और लक्ष्मण कोटि-शिला उठाते है। लेकिन विद्याधर अब भी रावण से डरते है और हनुमान् को रावण के पास भेजने की सलाह देते है कि वह विभीषण की सहायता से रावण को सम-झाये। हनुमान् इस यात्रा मे अपने नाना महेन्द्र को परास्त करते है (क्योकि महेन्द्र ने उसकी माता अजना को अपने घर से निकाला था) और दधिमुख नगर के राजा की तीन कन्याओ से भेट करते है, जिनका विवाह साहसगति को मारने वाले से निश्चित हुआ। लका के पास पहुँचकर वह विभीषण द्वारा निर्मित प्राचीर पार कर पहले वज्रमुख का वध करते है और अनन्तर उसकी कन्या लकासुन्दरी को परास्त कर उसके साथ रात भर क्रीडा करते है। तब वह लका मे प्रवेशकर विभीषण तथा सीता से मिलते है। बाद मे वह लका मे उद्यानो तथा महलो का विध्वस करने लगते है और इन्द्रजित् द्वारा बाँधे जाकर रावण के सामने उपस्थित किए जाते है। वह रावण को धमकाकर अपने बन्धनो को तोडते है और रावण का महल ध्वस्त करके सीता का सन्देश राम के पास ले जाते हैं।

युद्ध (पर्व ५४-७७)

वाल्मीकीय वृत्तान्त को दृष्टि मे रखकर युद्धकाण्ड की घटनाओ के वर्णन में निम्नलिखित परिवर्तन उल्लेखनीय है—

(१) सेतुबन्ध के स्थान पर समुद्र नामक राजा की कथा दी गई है—वह वानरो की सेना रोक लेता है तथा नल द्वारा पराजित होकर लक्ष्मण को अपनी चार कन्याओ को समर्पित करता है (पर्व ५४)।

(२) विभीषण के अनुरोध करने पर कि सीता को लौटाया जाय, रावण ने उसे नगर से निकालने का आदेश दिया। इस पर विभीषण ने अपनी समस्त सेना के साथ हसद्वीप मे राम की शरण ली। उसी समय सीता के भाई भामडल भी युद्ध मे भाग लेने के लिए राम के पास आ पहुँचे (पर्व ५५)।

(३) राम और लक्ष्मण के स्थान पर सुग्रीव और भामण्डल इन्द्रजित् के नाग-पाश मे बाँधे गए तथा गरुडकेतु लक्ष्मण द्वारा मुक्त हुए (पर्व ६०) ।

(४) लक्ष्मण को रावण की शक्ति लगने पर द्रोणमेघ की कन्या विशल्या उनकी चिकित्सा करती है और अनन्तर लक्ष्मण तथा विशल्या का विवाह सम्पन्न हो जाता है । दोनो के पूर्वजन्म की कथा भी वर्णित है, जिसके अनुसार वे पहले पुनर्वसु तथा अनगशरा थे (पर्व ६१-६४) ।

(५) रावण सामन्त नामक दूत को भेजकर सन्धि का प्रस्ताव करता है । रावण राम को अपने राज्य का एक अश तथा ३००० कन्याओ को इस शर्त पर देने को तैयार है कि वह सीता को त्याग दे और कुम्भकर्ण, इन्द्रजित् तथा मेघवाहन को मुक्त कर दे (पर्व ६५) ।

(६) रावण बहुरूपा नामक विद्या को सिद्ध करने के लिए शातिनाथ के मन्दिर मे साधना करने जाता है । वानर सैनिको के द्वारा ध्यान भग किए जाने के निष्फल प्रयत्न के बाद रावण अपनी साधना मे सफलता प्राप्त करता है (पर्व ६६-६८) ।

(७) बहुरूपा विद्या सिद्ध करने के पश्चात् रावण फिर सीता से मिलने गया तथा उसने धमकी दी कि अब राम का वध करके मै तुम्हारे साथ अवश्य ही रमण करूँगा । सीता ने उत्तर दिया कि मेरा जीवन राम के जीवन पर अवलबित है और वह मूर्च्छा खाकर पृथ्वी पर गिर गई । राम के प्रति सीता का अटल प्रेम देखकर रावण पछताने लगा और उसने सग्राम मे राम तथा लक्ष्मण को हराकर उन्हे सीता को लौटाने का सकल्प किया (पर्व ६९) ।

(८) लक्ष्मण (नारायण) ही रावण (प्रतिनारायण) का वध करते है (पर्व ७३) ।

(९) कुम्भकर्ण तथा रावण के पुत्र इन्द्रजित् तथा मेघवाहन, जो युद्ध मे कैदी हो गए थे, रावण-वध के पश्चात् मुक्त किए जाते है । वे विरक्त होकर तपस्या करने जाते है । मन्दोदरी, चन्द्रनखा आदि ८००० युवतियाँ भी महल को छोडकर साधना का जीवन अपनाती है (पर्व ७५) ।

(१०) लका मे प्रवेशकर राम सर्वप्रथम सीता से मिलने जाते है । देवता दोनो का मिलन देखकर पुष्पवृष्टि करते है तथा सीता के निर्मल चरित्र का साक्ष्य देते है, राम के किसी सन्देह अथवा सीता की अग्निपरीक्षा की ओर सकेत मात्र भी नही मिलता (पर्व ७६) है ।

(११) राम-लक्ष्मण अब रावण के महल मे ठहरते है तथा उन कन्याओ को बुला भेजते है, जिनके साथ उनकी मँगनी हो चुकी है । लका मे ही उनके साथ विवाह सम्पन्न

हा जाता है । इसके बाद राम-लक्ष्मण के छ वर्ष तक लका मे निवास करने का उल्लेख किया गया है (पर्व ७७) ।

उत्तरचरित (पर्व ७८-११८)

नारद लका मे राम के पास पहुँचकर पुत्र-वियोग के कारण दु खित अपराजिता की दशा का वर्णन करते है, जिससे राम तथा लक्ष्मण साकेत लौटने का निश्चय करते हैं (पर्व ७८) । उनके आगमन के पश्चात् भरत को वैराग्य हुआ, वे दीक्षा लेकर निर्वाण प्राप्त करते है (पर्व ८०-८४) । अनन्तर लक्ष्मण के राज्याभिषेक तथा विद्याधर राजाओ पर विजय का वर्णन किया गया है । लक्ष्मण की १६००० पत्नियाँ (जिनमे से विशल्या आदि ८ पटरानियाँ है) तथा राम की ८००० पत्नियाँ बताई जाती है, जिनमे से सीता, प्रभावती, रतिनिभा तथा श्रीदामा प्रधान है (पर्व ८५-६१) । सीता-त्याग की कथा वाल्मीकि से बहुत भिन्न नही है (दे० आगे अनु० ७१८) । सीता के पुत्रो के नाम लवण (अथवा अनग-लवण) तथा अकुश (अथवा मदनाकुश) माने गए है (पर्व ६७) । वे नारद के भडकाने पर अयोध्या मे राम और लक्ष्मण से युद्ध करने आते है (दे० आगे अनु० ७४६) । इस युद्ध के बाद सुग्रीव, हनुमान्, विभीषण आदि के अनुरोध पर राम सीता को बुला भेजते है, किन्तु वह सीता से सतीत्व का प्रमाण चाहते है । सीता अग्नि-परीक्षा मे सफल होकर दीक्षा लेती है और स्वर्ग मे इन्द्र बन जाती है (दे० आगे अनु० ६०१ और ७५३) ।

राम-कथा का निर्वहण इस प्रकार है । किसी दिन दो देवता बलभद्र (राम) और नारायण (लक्ष्मण) का स्नेह परखने के लिए लक्ष्मण को विश्वास दिलाते है कि राम का देहान्त हुआ है । इस पर लक्ष्मण शोकातुर होकर मरते है और नरक जाते है । लक्ष्मण की अन्त्येष्टि के पश्चात् राम विरक्त होकर दीक्षा लेते है और १७००० वर्ष तक साधना करके निर्वाण प्राप्त करते है । अन्त मे लक्ष्मण, रावण तथा सीता के सम्बन्ध मे कहा जाता है कि उनको भी अनेक बार जन्म लेने के बाद मुक्ति मिल जायगी (पर्व ११०-११८) ।

६१ परवर्ती जैन राम-कथाओ का सब से महत्वपूर्ण परिवर्तन यह है कि हरिभद्र-कृत **उपदेशपद**, भद्रेश्वरकृत **कहावली**, हेमचन्द्रकृत **जैनरामायण** तथा देवविजय-गणिकृत **रामचरित** मे रावण का चित्र सीता के परित्याग का कारण माना गया है (दे० आगे अनु० ७२२) । हेमचन्द्रकृत **सीता-रावण कथानकम्** मे कैकेयी अपने एक दूसरे वर के बल पर राम-लक्ष्मण-सीता के लिए १४ वर्ष तक बनवास माँग लेती है । हेमचन्द्र की इस राम-कथा मे उत्तरचरित का अभाव है ।

ग—गुणभद्र की परम्परा

६२ जैन राम-कथा का दूसरा रूप हमे पहले-पहल गुणभद्रकृत **उत्तरपुराण** मे मिलता है। गुणभद्र जिनसेन के शिष्य तथा कर्नाटक प्रान्त के निवासी थे। इन्होंने अपने गुरु के **आदिपुराण** के अंतिम १६२० श्लोक रचकर उसे समाप्त कर दिया और इसके बाद **उत्तरपुराण** अर्थात् त्रिषष्टिलक्षणमहापुराण का द्वितीय भाग भी लिखा है। इस उत्तरपुराण के अन्तर्गत आठवे नलदेव, नारायण तथा प्रतिनारायण (अर्थात् राम-लक्ष्मण-रावण) का चरित्र ६७ वे तथा ६८ वे पर्व मे ११६७ श्लोको मे वर्णित है (दे० स्याद्वाद ग्रन्थमाला, न० ८, इन्दौर, स० १९७५)। यह राम-कथा विमलसूरि तथा वाल्मीकि के कथानक से बहुत भिन्न है, इसकी मुख्य विशेषता यह है कि इसमे सीता को रावण तथा मदोदरी की औरस पुत्री माना गया है। सीता-जन्म का यह रूप पहले-पहल सघदास के वसुदेवहिण्डि मे प्रस्तुत किया गया है (दे० आगे अनु० ४१२)।

गुणभद्र का आधार बहुत कुछ अज्ञात है। किन्तु वह विमलसूरि तथा सघदास की रचनाओ अथवा उनकी परम्परा से अवश्य परिचित थे। जिनसेन अपने आदिपुराण मे कवि परमेश्वर की गद्य-कथा का उल्लेख करते है और उसे अपनी रचना का आधार मानते है। गुणभद्र जिनसेन की रचना पूरी करते है। अत बहुत सभव है कि वह भी कवि परमेश्वर की कथा पर निर्भर रहे हो। कवि परमेश्वर की रचना अप्राप्य है लेकिन तिब्बती रामायण तथा अन्य ग्रन्थो मे भी सीता मन्दोदरी की पुत्री मानी जाती है। अत राम-कथा का यह रूप सभवत जनसाधारण मे प्रचलित हुआ होगा और कवि परमेश्वर या गुणभद्र ने उसे जैन-धर्म के ढाँचे मे ढालकर अपनी रचना मे स्थान दिया होगा। श्री नाथूराम प्रेमी[1] गुणभद्र की राम-कथा के आधार के विषय मे यह लिखते है—'हमारा अनुमान है कि गुणभद्र से बहुत पहले विमलसूरि ही के समान किसी अन्य आचार्य भी जैनधर्म के अनुकूल सोपपत्तिक और विश्वसनीय स्वतन्त्र रूप से राम-कथा लिखी होगी और गुणभद्राचार्य को गुरु-परम्परा द्वारा मिली होगी।' गुणभद्र की गुरु-परम्परा के दो और नाम कन्नड भाषा के कवि चामुण्ड राय की रचना मे मिलते है। चामुण्डराय **त्रिषष्टिलक्षणमहापुराण** के लेखको की निम्नलिखित सूची देते है—कूचि भट्टारक, नन्दिमुनीश्वर, कविपरमेश्वर, जिनसेन, गुणभद्र। गुणभद्र की राम-कथा अन्य जैन रचनाओ मे भी ज्यो की त्यो मिलती है।

१ दे० नाथूराम प्रेमी जैन साहित्य और इतिहास, पृष्ठ २८२।

६३ **संस्कृत**—गुणभद्रकृत **उत्तरपुराण** (नवी श० ई०)

कृष्णदास कविकृत **पुण्यचन्द्रोदय पुराण** (१६ वीं० श० ई०)

प्राकृत—पुष्पदन्तकृत **महापुराण, संधियाँ ६९-७९** (१० वी श० ई०)

कन्नड—चामुण्डरायकृत **त्रिषष्टिशलाकापुरुषपुराण** (१० वी श० ई०)

बंधुवर्मा का **जीवनसंबोधन** (१२०० ई०)

नागराजकृत **पुण्याश्रवकथासार** (१३३१ ई०)

पुण्यचन्द्रोदय पुराण छोडकर उपर्युक्त रचनाओ मे राम-कथा के अतिरिक्त अन्य ६३ महापुरुषो के चरित भी मिलते है। गुणभद्र की राम-कथा का संक्षिप्त कथानक इस प्रकार है

६४ दशरथ (वाराणसी के राजा) के चार पुत्र उत्पन्न होते है—राम सुबाला के गर्भ से, लक्ष्मण कैकेयी के गर्भ से और बाद मे जब दशरथ अपनी राजधानी को साकेतपुर स्थापित कर चुके है तब भरत और शत्रुघ्न, किसी अन्य रानी के गर्भ से, जिसका नाम नही दिया जाता है। दशानन विनमि विद्याधर वश के पुलस्त्य का पुत्र है। किसी दिन वह अमितवेग की पुत्री मणिमती को तपस्या करते देखता है और उस पर आसक्त होकर उसकी साधना मे विघ्न डालने का प्रयत्न करता है। मणिमती निदान करती है 'मैं उसकी पुत्री होकर उसे मारूँगी।' मृत्यु के बाद वह रावण की रानी मदोदरी के गर्भ मे आती है। उसके जन्म के बाद ज्योतिषी रावण से कहते है कि वह आप का नाश करेगी। अत रावण ने भयभीत होकर मारीचि को आज्ञा दी कि वह उसे कहीं छोड दे। कन्या को एक मजूषा मे रखकर मारीचि उसे मिथिला देश मे गाड आता है। हल की नोक से उलझ जाने के कारण वह मजूषा दिखलाई पडती है और लोगो द्वारा जनक के पास ले जाई जाती है। जनक मजूषा को खोल कर एक कन्या को देखते हैं और उसका नाम सीता रखकर उसे पुत्री की तरह पालते है। बहुत समय के बाद जनक अपने यज्ञ की रक्षा के लिए राम और लक्ष्मण को बुलाते है। इस यज्ञ के समाप्त होने पर राम और सीता का विवाह होता है। इसके बाद राम सात

---

१ भारतीय ज्ञानपीठ काशी का संस्करण (सन् १९५४)। मल्लिषेणकृत महापुराण (११ वी श० ई०) प्रकाशित नही है। १३०० ई० के आशाधर कृत 'त्रिषष्टिस्मृतिशास्त्रम्' (मानिकचन्द जैन ग्रन्थमाला न० ३६) मे जिनसेन तथा गुणभद्र का सार मिलता है। राम-कथा ८१ श्लोको मे समाप्त की जाती है।

अन्य कुमारियो से विवाह करते है और लक्ष्मरण पृथ्वी देवी आदि १६ राज-कन्याओ से। दोनो दशरथ से आज्ञा लेकर वाराणसी मे रहने लगते है।

नारद से सीता के सौदर्य का वर्णन सुनकर रावरण उसे हर लाने का सकल्प करता है। सीता का मन जॉचने के लिए शूर्पणखा भेजी जाती है लेकिन सीता का सतीत्व देख कर वह रावण से यह कह कर लौटती है कि सीता का मन चलायमान करना असभव है। जब राम और सीता वाराणसी के निकट चित्रकूट वाटिका मे विहार करते है तब मारीचि स्वर्ण मृग का रूप धारण कर राम को दूर ले जाता है। इतने मे रावरण राम का रूप धारण कर सीता से कहता है कि मैने मृग को महल भेजा है और उनको पालकी पर चढने की आज्ञा देता है। यह पालकी वास्तव मे पुष्पक है, जो सीता को लका ले जाता हे। रावण सीता का स्पर्श नही करता है क्योकि पतिव्रता के स्पर्श से उसकी आकाशगामिनी विद्या नष्ट हो जायेगी।

दशरथ को एक स्वप्न द्वारा मालूम हुआ कि रावण ने सीता का हरण किया है और वह राम के पास यह समाचार भेजते है। इतने मे सुग्रीव और अणुमान बालि के विरुद्ध सहायता मॉगने के लिए पहुँचते है। हनुमान् लका जाते है और सीता को सान्त्वना देकर लौटते है। इसके बाद लक्ष्मण द्वारा बालि का वध होता है और सुग्रीव अपने राज्य पर अधिकार प्राप्त करता हे। सेतु-बन्ध का प्रसग छोड दिया गया हे, वानरो और राम की सेना विमान से लका पहुँचाई जाती है। युद्ध के अपेक्षाकृत विस्तृत वर्णन के अन्त मे लक्ष्मण चक्र से रावण का सिर काटते है। राम परीक्षा लिए बिना सीता को स्वीकार करते हैं। इसके बाद लक्ष्मण राम के साथ ४२ वर्ष तक दिग्विजय-यात्रा करते हैं और अर्द्ध चक्रवर्ती बनकर अयोध्या लौटते है। अनन्तर दोनो का सम्मिलित अभिषेक सम्पन्न हो जाता है। लक्ष्मण की १६,००० और राम की ८,००० रानियाँ बताई जाती हैं। कुछ वर्ष बाद राम तथा लक्ष्मण, अपने भाइयो भरत तथा शत्रुघ्न को राज्य देकर वाराणसी चले आए। सीता के विजयराम आदि आठ पुत्र उत्पन्न होते हैं (सीता-त्याग का उल्लेख नही मिलता)। लक्ष्मण एक असाध्य रोग से मरकर रावण-वध के कारण नरक जाते है। राम लक्ष्मण के पुत्र पृथ्वीचन्द्र को राज्य-पद पर और सीता के कनिष्ठ पुत्र अजितजय को युवराज पद पर अभिषिक्त कर सुग्रीव, अणुमान, विभीषण आदि पॉच सौ राजाओ तथा १८० पुत्रो के साथ साधना करने जाते है, ३९५ वर्ष बीत जाने पर राम को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ। सीता भी अनेक रानियो के साथ दीक्षा लेती हैं। अन्त मे राम तथा अणुमान की मोक्ष प्राप्ति का उल्लेख किया गया है, सीता स्वर्ग मे पहुँचती है तथा लक्ष्मण के सम्बन्ध मे कहा जाता है कि नरक से निकल कर वह भी सयम धारण करेगे तथा मोक्ष प्राप्त कर सकेंगे।

द्वितीय भाग

रामकथा की उत्पत्ति

अध्याय ६

दशरथ-जातक की समस्या

६५ **दशरथ-जातक** मे राम-कथा का जो रूप विद्यमान है, उसे अनेक विद्वान् **रामायण** की कथा का मूलरूप समझते है। डॉ० वेबर ने पहले-पहल इस मत का प्रतिपादन किया था। यद्यपि डॉ० याकोबी ने इसका खडन किया था, फिर भी आधुनिकतम काल तक दिनेशचन्द्र सेन आदि डॉ० वेबर का मत मानते चले आ रहे हैं[1]। प्रस्तुत अध्याय मे इस विवादग्रस्त विषय से सबन्ध रखने वाली सामग्री का पूरा विश्लेषण करना अनुचित नही होगा।

दशरथ-जातक पाली **जातकट्ठवण्णना** मे सुरक्षित है। इस पुस्तक की प्रामाणिकता पर पहले परिच्छेद मे प्रकाश डाला गया है और इसके बाद के दो परिच्छेदो मे

---

१ दे०—ए० वेबर आन दि रामायण।
दिनेशचन्द्र सेन दि बगाली रामायन्स, पृ० ७ आदि।
ग्रियर्सन ज० रा० ए० सो०, १९२२, पृ० १३५-३६।
डब्लू स्टुटरहाइम राम लेगेन्डन उड राम-रेलिफ्स इन इडोनेशियन, पृ० १०५।
जे० चिलुस्की इडियन हिस्टारिकल क्वार्टर्ली, भाग १५, पृ० २८६।
डी० ए० नरसिहाचार का मत है कि इस प्रश्न का निर्णय करना असभव है (वही, पृ० ५८०)।
निम्नलिखित विद्वान् एच० याकोबी के अनुसार दशरथ जातक मे राम-कथा का विकृत रूप देखते है—
एम्० मोनियेर विलियम्स इडियन विजडम, पृ० ३१६ टि०।
सी० वी० वैद्य दि रिडिल आॅव दि रामायण, पृ० ७३।
एम० विटरनित्स हि० इ० लि०, भाग १, पृ० ५०८।
सी० लैस्सन ने पहले-पहल इस मत का प्रतिपादन किया था। दे० इडियन एन्टीक्वेरी, भाग ३ (१८७४), पृ० १०२-३।

दशरथ-जातक की गाथाओ और गद्य का अलग-अलग विश्लेषण किया गया है। अध्याय के अन्त मे **रामायण** और **बौद्ध-साहित्य** के पारस्परिक प्रभाव पर विचार किया जायगा।

क—पाली जातकट्ठवरणना की प्रामाणिकता

६६ बौद्ध तिपिटक (बौद्ध धर्म की श्रुति) तीसरी शताब्दी ई० पू० मगध देश मे पाली भाषा मे लिपिबद्ध किया गया था। इसके द्वितीय पिटक **(सुत्त पिटक)** के पाँचवे भाग का नाम **खुद्दक-निकाय** है। इसी **खुद्दक-निकाय** के अन्तर्गत जातको की गाथाएँ दी गई है और तीसरी शताब्दी ई० पू० से सुरक्षित है।[1] इन गाथाओ के साथ-साथ प्रारम्भ ही से गद्य की टीका भी प्रचलित हुई होगी, क्योकि इसके बिना बहुत-सी गाथाएँ अपूर्ण और अबोधगम्य है। वर्तमान पाली **जातकट्ठवण्णना** पाँचवी शताब्दी ई० की एक सिंहली पुस्तक का अनुवाद है। मूल सिंहली पुस्तक, जिसमे केवल गाथाएँ पाली मे दी गई थी, आजकल अप्राप्य है। इसके अज्ञात लेखक का कहना है कि मैंने अनुराधपुर की परम्परा के आधार पर अपनी रचना की है।[2]

उपर्युक्त परिचय से स्पष्ट है कि गाथाओ की अपेक्षा जातको का गद्य बहुत कम महत्वपूर्ण और प्रामाणिक है। ये कथाएँ पाँचवी ई० मे परम्परा के आधार पर लिपिवद्ध की गई है। शताब्दियो तक अस्थिर रहने के कारण इनमे परिवर्तन और परिवर्द्धन की सभावना रही है। इस गद्य को तीसरी श० ई० पू० की अखड परम्परा मानना और इसके आधार पर **रामायण** के मूलरूप के सम्बन्ध मे किसी सिद्धान्त का प्रतिपादन करना अवैज्ञानिक है। वास्तव मे **जातकट्ठवण्णना** मे अनेक स्थलो पर गाथाओ और गद्य मे विरोध और असगति दिखलाई पडती है। एक जातक (न० २५३) **विनयपिटक** और **जातकट्ठवण्णना,** दोनो मे मिलता है। गाथा तो एक ही है लेकिन गद्य दोनो ग्रन्थो मे भिन्न है, जिससे स्पष्ट है कि जातको के गद्य की प्रामाणिकता सदिग्ध है।[3]

---

१ दे० टी० डब्लू रिजडेविड्स बुद्धिस्ट इडिया, पृ० १८३।
एम० विटरनित्स हि० इ० लि० भाग २, पृ० ११५।
फिर भी इन गाथाओ मे कही-कही परिवर्द्धन हुआ है। दे० इडियन हिस्टॉरिकल क्वार्टरली, भाग ४, पृ० ११-१२।

२ अनुराधपुर की यह परम्परा आजकल एक अप्राप्य पाली जातकट्ठ-कथा पर निर्भर है, इसका अनुवाद सिंहली मे हुआ था।

३ हेर्टेल जर्मन ओरियन्टल जनरल, भाग ६०, पृ० ३६६ आदि। शार्पेटिये, वही, भाग ६२, पृ० ७२५ आदि। विटरनित्स हि० इ० लि०, भाग २, पृ० ११६ टि०।

ख—दशरथ जातक की गाथाएँ

६७ **दशरथ-जातक** मे जो राम-कथा मिलती है, वह रामायणीय कथा का विकृत रूप माना जाना चाहिए। इसके प्रमाण तीसरे परिच्छेद मे दिए जाएँगे। हमारे तर्कों का एक महत्वपूर्ण आधार यह है कि इस **जातक** की सारी कथाएँ गद्य मे दी गई है और पुरानी गाथाओ से कोई विशेष सम्बन्ध नही रखती। प्रस्तुत परिच्छेद मे इन गाथाओ का अलग विश्लेषण किया गया है।

ये गाथाएँ स्वाभाविक रूप से तीन भागो मे विभक्त की जा सकती है अर्थात् जलक्रिया, अनित्यता का उपदेश और राम का राज्य-काल[1]।

६८ **जलक्रिया** (गाथा १)

एथ लक्खण सीता च उभो ओतरथोदक।
एवाय भरतो आह राजा दशरथ मतो ॥१॥

'लक्ष्मण और सीता दोनो जल मे उतरे, क्योकि भरत कहते है—राजा दशरथ मर गए।'

यह पहली गाथा स्पष्टतया **रामायण** मे वर्णित जलक्रिया से सम्बन्ध रखती है। **रामायण** के निम्नलिखित श्लोक प्रस्तुत गाथा से मिलते-जुलते है। राम लक्ष्मण मे कहते है

भरतो दु खमाचष्टे स्वर्गति पृथिवीपते ॥१५॥
जलक्रियार्थं तातस्य गमिष्यामि महात्मन ॥२०॥
सीता पुरस्ताद् व्रजतु त्वमेनामभितो व्रज।
अह पश्चाद् गमिष्यामि गतिर्ह्येषा सुदारुणा ॥२१॥

(रा० २, १०३)

पाली **जातकट्ठवण्णना** मे इस गाथा को एक भिन्न अर्थ देने का प्रयत्न किया गया है। प्रसग निम्नलिखित है

लक्ष्मण और सीता की अनुपस्थिति मे भरत ने वनवासी राम के पास आकर उनको दशरथ के देहान्त का समाचार सुनाया है। शाम को लक्ष्मण और सीता वन से

---

१ दे० एन्० बी० उतगिकर ज० रा० ए० सो०, सेन्टीनरी सप्लीमेंट, पृ० २०३-२१। एच० लूडर्स जर्नल गटीगन लर्नेड सोसाइटी, १८९७, पृ० ४० और जर्मन ओरियेंटल जर्नल, भाग ५८, पृ० ६८७ आदि।
इस परिच्छेद मे इन दोनो विद्वानो से विशेष सहायता मिली है। पाठ के लिए, दे० फासबाल, दि जातक, भाग ४, न ४६१।

लौटते हैं। इसके बाद वृत्तान्त का अनुवाद इस प्रकार है—

'राम पडित ने सोचा, ये दोनो जवान है और मेरे समान बुद्धिमान नही है। सहसा पिता का मरण सुनने पर इस (समाचार) का शोक उनके लिए असह्य होगा और न जाने उनका हृदय विदीर्ण हो जाए। किसी उपाय से मैं दोनो को पानी मे उतरने के लिए कहूँगा और फिर समाचार सुनाऊँगा। तब सामने का जलाशय दिखलाकर राम ने कहा—तुम दोनो अधिक देर से आए हो। यह तुम्हारा दण्ड है, इस पानी मे उतर कर वहाँ खडे रहो। तब उन्होने अर्द्धगाथा सुनाई

'लक्ष्मण और सीता दोनों जल मे उतरें'।

राम के इसी शब्द को सुनकर दोनो पानी मे उतर कर खडे रहे। इसके अनन्तर गाथा का उत्तरार्द्ध सुनाकर राम ने उनको समाचार दिया।

'भरत कहते हैं राजा दशरथ मर गए'।

पिता के देहान्त का समाचार सुनकर दोनो मूर्छित होकर गिर पडे। राम ने उनसे फिर यही कहा और वे पुन मूर्छित हो कर गिर गए। जब दोनो तीसरी बार मूर्छित हो कर गिरे तब अमात्यो ने उनको उठाया और जल से निकाल स्थल पर बिठाया।'

इस उद्धरण से स्पष्ट है कि **जातक** का प्रसग मौलिक नही है। लेखक सभवत **रामायण** मे उल्लिखित जलक्रिया मे अपरिचित था और इसलिए उसने यह कष्ट कल्पना की होगी।

६६ अनित्यता का उपदेश (गाथा २-१२)

केन रामप्पभावेन सोचितब्ब न सोचसि।
पितर कालकत सुत्वा न त पसहते दुख ॥२॥

'हे राम! शोक का कारण होते हुए भी आप किस धैर्य के बल पर शोक नही करते। पिता का देहान्त सुनने पर भी आप दु ख के वशीभूत नही होते।'

य न सक्का पालेतु पोसेन लपत बहु।
स किस्स विञ्ञु मेधावी अत्तान उपतापये ॥३॥

'बहुत विलाप करने पर भी जो रखा नही जा सकता, उसके लिए बुद्धिमान् शोक नही करता।'

दहरा च हि वृद्धा च ये बाला ये च पडिता।
अड्ढा चेव दलिद्दा च सब्बे मच्चुपरायना ॥४॥

'बालक और वृद्ध, मूर्ख और पडित, धनी और दरिद्र सबो का मरण निश्चित है।'

फलानमिव पक्कान निच्च पपतना भय ।
एव जातान मच्चान निच्च मरणतो भय ।।५।।

'जिस तरह से पक्के फलो के गिरने का नित्य भय होता है, उसी तरह जन्म लिए हुए मनुष्यो को मरण का भय बना रहता है ।'

सायमेके न दिस्सति पातो दिट्ठा बहुज्जना ।
पातो एके न दिस्सति साय दिट्ठा बहुज्जना ।।६।।

'बहुत से लोग, जो प्रात काल दृष्टिगत होते है, इनमे कई सायकाल नही दिखलाई देत है और बहुत से लोग, जो सायकाल दृष्टिगत होते है, इनमे से कई प्रात काल नही दिखलाई देते है ।'

परिदेवयमानो चे कचिदत्थ उदब्बहे ।
सम्मूल्हो हिसमत्तान कयिर चेन विचक्खणो ।।७।।

'अपने आप को दु ख देन वाले मूर्ख को यदि विलाप करने से कुछ अर्थ प्राप्त होता, तो बुद्धिमान् भी यही करना ।'

किसो विवण्णो भवति हिसमत्तानमत्तनो ।
न तेन पेता पालेंति निरत्था परिवेदना ।।८।।

'अपने आप को दु ख देने से वह कृश और विवर्ण हो जाता है । इससे मृत पुनर्जीवित नही होते, (अत) विलाप निरर्थक है ।'

यथा सरणमादित्त वारिना परिनिब्बये ।
एवमपि धीरो सुतवा मेधवी पडितो नरो ।
खिप्पमुप्पतित सोक वातो तूल व धँसये ।।९।।

'जिस प्रकार जलता हुआ घर पानी के द्वारा बुझाया जाता है, उसी प्रकार धीर, श्रुतिमान्, बुद्धिमान् और पडित शीघ्र ही अपने शोक का उसी भाँति उन्मूलन करते है, जिस भाति पवन कपास को छितराता है ।'

एको व मच्चो अच्चेति एको व जायते कुले ।
सञ्ञोगपरमा त्वेव सभोगा सब्बपाणिन ।।१०।।

'मनुष्य अकेला मर जाता है और अकेला कुल मे जन्म लेता है । सब प्राणियो का सुख एक दूसरे के सम्बन्ध पर निर्भर रहता है (अथवा सब प्राणियो के सुख का उ`श्य है, उनका सयोग या मैत्री) ।'

तस्सा ही धीरस्स बहुस्सुतस्स
सम्पस्सतो लोकमिम पर च ।
अञ्ञाय धम्मं हृदय मन च
सोका महतापि न तापयति ।।११।।

अत जो इहलोक और परलोक (का यथार्थ रूप) देखने वाले और धर्म को जानने वाले[1] धीर और श्रुतिमान् मनुष्य होते है, इनका हृदय और मन महान् शोक से भी सतप्त नही होता।'

सोह दस्स च भोक्ख च भरिस्सामि च नातके।
सेस सपालयिस्सामि किच्चमेव विजानतो ॥१२॥

'सो मै (दान) दूगा और (स्वय भी धन का)उपभोग करूँगा तथा अपने सबधियो का भरण-पोषण करूँगा। दूमरो का भी (अथवा जो जीवित है, उनका) मै पालन करूँगा—यही बुद्धिमान् का कर्त्तव्य हे।'

७० इस उपदेश की प्रथम गाथा मे राम से यह प्रश्न किया जाता है कि पिता का मरण सुनकर आप किस धैर्य के बल पर शोक नही करते। इसके बाद की गाथाओ मे[2] शोक की व्यर्थता पर एक उपदेश उद्धृत किया गया है। जातक के गद्य के अनुसार ये राम के शब्द है लेकिन इस सारे उपदेश मे कही भी राम-कथा की ओर किंचित् भी निर्देश नही मिलता। डॉ० विंटरनित्स का कहना है कि **रामायण** मे राम अपने पिता के देहान्त का समाचार सुनकर अत्यन्त शोक करते है (रा० २, १०३, १ आदि) और केवल बाद मे भरत को सात्वना देते है (रा० २, १०५, १५-४२)। **जातक** मे राम किंचित् भी शोक नही करते। इसमे बौद्ध प्रभाव स्पष्ट है। डॉ० विंटरनित्स[3] अनुमान करते है कि पुरानी गाथाओ मे भी राम अत्यन्त शोकातुर दिखलाए गए थे और बौद्धो ने उन गाथाओ को नया रूप दिया है। राम के शोक से सम्बन्ध रखने वाली गाथाएँ छोड दी गई है, इतना ही हम स्वीकार कर सकते है। लेकिन गाथाओ का वर्त्तमान रूप बौद्धो द्वारा निर्मित है, यह मानने की कोई आवश्यकता नही होती। मृत सम्बन्धियो के कारण शोक करना व्यर्थ है, यह कोई विशेष बौद्ध धारणा नही है। **महाभारत** के अनेक स्थलो पर 'शोकापनोदनम्' के अतर्गत प्रस्तुत गाथाओ से मिलते-जुलते श्लोक पाए जाते है। भगवद्गीता मे लिखा है

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुव जन्म मृतस्य च।
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्व शोचितुमर्हसि ॥ (२, २७)

इस प्रकार के और बहुत से उदाहरण दिए जा सकते है। अत **जातक** की गाथाओ

---

१ अथवा—'और इसका (इहलोक और परलोक का) तत्व जानने वाले।'

२ गाथा ११ से उपदेश समाप्त प्रतीत होता है। गाथा १२ का न तो कोई पूर्वापर सम्बन्ध है और न इसमे रामकथा की ओर निर्देश मिलता है। जातक मे यह गाथा उपदेश का अश मानी जाती है।

३ दे० हि० इ० लि० भाग १, पृ० ५०८।

की शिक्षा बौद्धो की अपनी नही है। जलक्रिया सबधी गाथा की तरह ये गाथाएँ भी बौद्धो द्वारा ज्यो की त्यो अपना ली गई होगी। फिर भी उन गाथाओ मे से केवल एक ही रामायण मे मिलती है

यथा फलाना पक्वाना नान्यत्र पतनाद् भयम्।
एव नरस्य जातस्य नान्यत्र मरणाद् भयम्।

(रा० २, १०५, १७)

अत हमे मानना पडेगा कि **दशरथ-जातक** की गाथाएँ **वाल्मीकि-रामायण** पर निर्भर नही हो सकती। इनका मूलस्रोत कोई प्राचीन आख्यान रहा होगा।[1]

७१ **राम का राज्य-काल (गाथा १३)**

दस वस्ससहस्सानि सट्ठि वस्ससतानि च।
कबुगीव माहाबाहु रामो रज्जमकारयि ॥१३॥

'कबुग्रीव महाबाहु राम ने सोलह सहस्र वर्ष तक राज्य किया।'

वाल्मीकि रामायण, महाभारत और **हरिवश,** तीनो मे इस गाथा का सस्कृत रूप पाया जाता है। **रामायण मे**

दशवर्षसहस्राणि दश वर्षशतानि च।
भ्रातृभि सहित श्रीमान् रामो राज्यमकारयत् ॥

(६, १३१, १०६, दक्षिण सस्करण)

दशवर्षसहस्राणि दशवर्षशतानि च
रामो राज्यमुपासित्व ब्रह्मलोक प्रयास्यति ॥ (१, १, ९७)

महाभारत मे—

दशवर्षसहस्राणि दशवर्षशतानि च।
राज्य कारितवान्रामस्ततस्तु त्रिदिव गत ॥ (३, १४७, ३८)
श्यामो युवा लोहिताक्षो मत्तवारणविक्रम ॥
दश वर्षसहस्राणि रामो राज्यमकारयत् ॥ (१२, २९, ५४)

हरिवश मे—

दशवर्षसहस्राणि दशवर्षशतानि च
अयोध्याधिपतिर्भूत्वा रामो राज्यमकारयत् ॥ (१,४१,१५१)

---

१ डॉ० लूडर्स (दे० गैटिगन जर्नल, १८९७, पृष्ठ १३०) के अनुसार यह पाली मे था, डॉ० याकोबी मूल रूप को सस्कृत मे मानते है।

इन उद्धरणों से स्पष्ट है कि पाली गाथा और संस्कृत श्लोक का मूलस्रोत एक ही है। यह पाली गाथा **दशरथ-जातक** के समोधान मे दी जाती है। यह समोधान, इस एक गाथा को छोडकर, गद्य मे ही लिखा गया है—इससे डॉ० याकोबी अनुमान करते है कि यह गाथा कही से उद्धृत की गई है। इस जातक की वर्तमान कथा मे 'पोराणकपडिता' का उल्लेख है, अत प्रस्तुत गाथा का मूलस्रोत कोई प्राचीन काव्य रहा होगा और बहुत सभव है कि यह 'वाल्मीकिकृत' **रामायण** ही हो। डॉ० याकोबी का यह अनुमान चिंत्य अवश्य है। **जातक** की अधिकाश गाथाओ का मूलस्रोत वाल्मीकिकृत **रामायण** नही हो सकती, यह ऊपर दिखलाया गया है, अत इस गाथा के विषय मे भी हम निश्चयपूर्वक नही कह सकते है कि **रामायण** ही इसका मूलस्रोत है। फिर भी इसमे सन्देह नही है कि यह किसी प्राचीन राम-सम्बन्धी उपाख्यान या गीत से बौद्धो द्वारा अपनाई गई है[1]। जातक मे जो 'पोराणकपडिता' का उल्लेख मिलता है इससे इस निर्णय की पुष्टि होती है।

७२ **दशरथ-जातक** की गाथाओ का विश्लेषण ऊपर किया जा चुका है। इनमे कही भी बौद्धो द्वारा कल्पित सामग्री हो, यह मानने की कोई भी आवश्यकता नही है। इसके अतिरिक्त पहली गाथा के प्रसग-परिवर्तन से स्पष्ट है कि इनका मूलस्रोत बौद्ध साहित्य को छोडकर ब्राह्मण धर्म के वातावरण मे निर्मित पुराने आख्यान-साहित्य मे और राम सम्बन्धी प्राचीन गीतो मे ढूँढना चाहिए।

ग—दशरथ-जातक की राम-कथा

(अ) डॉ० वेबर का मत

७३ डॉक्टर वेबर[2] के अनुसार **दशरथ-जातक** मे राम-कथा का पूर्व-रूप रक्षित है। इसके अतिरिक्त वे पॉचवी शताब्दी ई० की दो अन्य बौद्ध रचनाओ मे इन कथा के प्राचीनतम तत्व पाते है।

धम्मपद की टीका[3] मे निम्नलिखित कहानी मिलती है। यह ज्यो की त्यो पाली **जातकट्ठवण्णना** मे भी उद्धृत है (दे० न० ६ देवधम्म जातक)।

---

१ डॉ० लूडर्स का मत है कि मूल पाली मे ही था "दशरथ-जातक की गाथा १३ रामायण आदि के संस्कृत श्लोक का अनुवाद है इसके लिए कोई प्रमाण नही दिया जा सकता है"।

२ दे० ए० वेबर आन दि रामायण।

३ दे० एच० सी० नार्मन कमेटरी ऑन धम्मपद, भाग ३, ७३, बर्लिनगेम, हार्वर्ड ओरियेटल सीरिज़, भाग २८, पृ० ३०८।

वाराणसी के राजा[1] के दो पुत्र थे—महिसास(क) और चन्द। उनकी माता के मरने पर राजा ने फिर विवाह किया। नई महिषी के सूर्य नामक एक पुत्र उत्पन्न हुआ। इसी अवसर पर राजा से उसको एक वर भी मिला। जब सूर्य युवावस्था को प्राप्त हुआ तब रानी ने वर के बल पर अपने पुत्र के लिए राजसिंहासन का अधिकार माँगा। राजा ने स्पष्ट अस्वीकार किया। लेकिन महिषी के षड्यन्त्रो से भयभीत होकर उन्होने अपने पुत्रो को यह कह कर वनवास दिया—'मेरे मरने के बाद लौट कर राज्य पर अधिकार प्राप्त करना।' सूर्य अपने दोनो भाइयो के साथ स्वेच्छा से चला गया।

राजा के मरने के पश्चात् तीनो बनारस लौटते है। महिसासक राजा बन जाते है, चद उपराजा और सूर्य सेनापति।

यही सक्षेप मे **धम्मपद टीका** की कथा है। डॉ० वेबर के अनुसार यह **दशरथ-जातक** का प्रथम रूप है। आगे चलकर वह बुद्धघोष की **सुत्तनिपात-टीका**[2] मे वर्णित शाक्य तथा कोलिय वशो की उत्पत्ति की कथा मे (२, १३) **दशरथ-जातक** का द्वितीय रूप देखते हैं। इस कथा के चार भाग है, जिनमे से पहले दो भाग हमारे विषय से सम्बन्ध रखते है।

७४ (१) **शाक्यों की उत्पत्ति** वाराणसी की पटरानी की नौ सताने थी—चार पुत्र और पाँच पुत्रियाँ। उसके मर जाने के बाद अबट्ठ राजा ने नया विवाह किया और अपनी युवती पत्नी को पटरानी बनाया (**अग्गमहेसि ट्ठाने ठपसि**)। नई पटरानी के पुत्र उत्पन्न होने पर राजा ने उसको एक वर दिया और उसने अपने पुत्र के लिए राजसिंहासन माँगा। राजा ने पहले अस्वीकार किया फिर भी उसने अपने नौ पुत्र-पत्रियो को यह कह कर वनवास दिया, 'मेरी मृत्यु के पश्चात् आओ और राज्य पर अधिकार प्राप्त करो।' बहुत से लोग उनके साथ चल दिए और सबो ने वन मे एक नगर बसाया। नगर को 'कपिलवत्थु' नाम दिया गया, क्योकि उसी स्थान पर कपिल नामक तपस्वी तपस्या करते थे। राजसन्तान से विवाह करने योग्य वन मे कोई नही था, इसलिए चारो राजकुमार अपनी बहनो से ही विवाह करने के लिये बाध्य हुए। ज्येष्ठा कन्या पिया अविवाहित रह कर सबो की माता मानी जाने लगी। यही शाक्यो की उत्पत्ति की कथा है।

(२) **कोलियों की उत्पत्ति** कुछ समय बाद अविवाहित पिया को कुष्ट रोग हो गया। इस पर वह वन के किसी एकात स्थान पर छोड दी गई। इसी वन मे राम

---

१ देवधम्म जातक मे इनका नाम 'ब्रह्मदत्त' भी दिया जाता है।

२ दे० इडिशा स्टुडियन भाग ५, पृ० ४१२ आदि। एच० स्मिथ सुत्त-निपात कामेंटरी (परमत्थजोतिका) पाली टेक्स्ट सोसाइटी, १६१६।

नामक एक राजा रहते थे। कुष्ट रोग के कारण राजा राम भी, अपने पुत्र को राज्य देकर, वन मे आए थे और औषधीय पौधो का सेवन कर स्वस्थ हो गए थे। इन्ही पौधो द्वारा पिया की चिकित्सा करके, राम ने इसमे विवाह किया और ३२ पुत्र उत्पन्न किए (१६ यमल)। इसके बाद उसने वन मे 'कोलनगर' बसाया और शाक्य राजकुमारियो से अपने पुत्रो का विवाह करवाया। यही कोलिय वश की उत्पत्ति की कथा है।

(३) **शाक्यों और कोलियो का युद्ध** कोलिय-वश मे उत्पन्न भगवत बुद्ध ने, शाक्यो और कोलियो मे जो युद्ध प्रारभ हुआ था, उसे शात कर दिया।

(४) शाक्य तथा कोलिय प्रत्येक वश के २५० राजकुमार भिक्षु बन गए थे। वे अपने वैराग्य मे दृढ न होकर लौटने की अभिलाषा करते है। तब महात्मा बुद्ध उनको **महा-कुणाल-जातक** सुनाकर, उनकी ससार मे आसक्ति को दूर करते है।[1]

७५ डॉ० वेबर के अनुसार राम-कथा का विकास इस प्रकार हुआ[2]—**धम्मपद** और **सुत्तनिपात** की टीकाओ मे विमाता की ईर्ष्या के कारण राजसतति को वनवास दिया जाता है, भाई-बहन का विवाह होता है और राम के नाम का भी उल्लेख होता है।

दशरथ-जातक मे विमाता के कारण वनवास और भाई-बहन के विवाह के साथ-साथ दशरथ, लक्ष्मण, भरत और सीता, ये नाम भी मिलते है और राम, पराए न होकर, राजकुमारो के ज्येष्ठ भाई बन जाते है।

रामायण मे राजकुमारो की राजधानी वाराणसी से अयोध्या बन जाती है, वनवास का स्थान हिमालय से दण्डकारण्य मे बदल जाता है और राम तथा सीता भाई-बहन न होकर प्रारभ ही मे विवाहित होते है। इन परिवर्त्तनो के अतिरिक्त सीता-हरण और रावणवध, ये नये वृत्तान्त भी जोडे गए है।

रामायण मे सीता के वनवास के अन्त तक कोई सतान नही होती, डॉ० वेबर के अनुसार यह **दशरथ-जातक** की कथा का प्रभाव है, जिसमे वनवास के बाद ही उनका विवाह होता है। वाराणसी का अयोध्या बनना भी बौद्ध कथाओ के कारण हुआ। शाक्य और कोलिय वशो की राजधानियाँ क्रमश कपिलवस्तु और कोलनगर

---

१ तीसरे और चौथे भाग के लिए दे० कुणाल जातक की वर्त्तमान कथा, जातक न० ५३६।

२ रचनाकाल के अनुसार तीनो रचनाओ का क्रम यो है—१ बुद्धघोषकृत सुत्त-निपात टीका (४१०-४३२ ई०), २ जातकट्ठवण्णना, ३ धम्मपद टीका (४५० ई०)। दे० हार्वर्ड ओरियेंटल सीरिज़, भाग २८, पृ० ५८।

थी, दोनो नगर अयोध्या के पडोस मे थे। वनवास का स्थान इसलिए बदल गया है कि सीता-हरण और रावणवध का वृत्तान्त जोडना था। (अंतिम विषय का आधार यूनानी कवि होमर की रचना है, दे० आगे अनु० ६२)।

७६ श्री दिनेशचन्द्र सेन भी **दशरथ-जातक** मे राम-कथा का आधार और पूर्व-रूप देखते है[1]। वह **दशरथ-जातक** को छठी शताब्दी ईसा पूर्व का मानते है, **रामायण** मे एकाध पाली गाथाओ का सस्कृत अनुवाद पाते है और अन्तरग प्रमाण भी देते है— '**रामायण** और बौद्ध कथा की तुलना करने पर स्पष्ट है कि विश्वकवि वाल्मीकि ने कितने कौशल से इस अपरिष्कृत बौद्ध-कथा को उत्कर्ष की सीमा तक पहुँचाया है।' इस तर्क का इस तरह प्रत्युत्तर दिया जा सकता है '**रामायण** तथा बौद्ध-कथा की तुलना करने पर स्पष्ट है कि बौद्धो ने **रामायण** के कारुणिक कथानक को शोक की व्यर्थता के एक उपदेश मात्र मे बदल दिया है।'

७७ डॉ० वेबर तथा श्री दिनेशचन्द्र सेन जातको की गाथाओ और गद्य, इन दोनो की प्रामाणिकता मे कोई भेद नही मानते यद्यपि दोनो के रचनाकाल मे शताब्दियो का अन्तर हे। यह तर्क **दशरथ-जातक** के विषय मे विशेष महत्वपूर्ण है क्योकि इसमे प्राय समस्त कथा गद्य मे ही दी गई है। पहली गाथा का जो प्रसग **दशरथ-जातक** मे दिया गया है, वह मौलिक नही है और अन्य गाथाओ का मूल स्रोत भी कोई पुराना **रामायण** से मिलता-जुलता उपाख्यान रहा होगा, यह सम्भवत गाथाओ के उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट हो गया है।

इसके अतिरिक्त डॉ० वेबर के मत का खडन करने के लिए निम्नलिखित तर्क दिए जा सकते है

(१) **दशरथ-जातक** की राम-कथा की अन्तरग समीक्षा करने पर वह **रामायण** की कथा का विकृत रूप मात्र सिद्ध होती है (दे० अगला परिच्छेद)।

(२) डॉ० वेबर का मत इस धारणा पर निर्भर प्रतीत होता है, 'जिस कथा मे अपेक्षाकृत कम पात्र, कम घटनाएँ, कम तत्व मिलते है, वह निस्सन्देह पूर्वकृत होगी'। ऐसी धारणा निर्मूल है। इसका प्रमाण **दशरथ-कथानम्** मे मिलता है। यह कथा एक सग्रह मे पाई जाती है, जिसकी रचना दूसरी श० ई० के बाद हुई थी। इस **दशरथ-कथानम्** मे सीता का या किसी राजकुमारी का कोई भी उल्लेख नही है।

रामकथा का यह रूप दूसरी श० ई० के बाद भी बौद्ध जगत् के किसी प्रदेश मे प्रचलित रहा होगा। अत डॉ० वेबर के अनुसार राम-कथा के विकास के विभिन्न सोपान निर्धारित करने की युक्ति अत्यन्त अनुपयोगी सिद्ध होती है। **दशरथ-कथानम्** के

---

१ दे० दि बगाली रामायन्स, पृ० ७ आदि।

रचनाकाल मे **वाल्मीकि रामायण** भारतवर्ष मे प्रसिद्ध हो चुका था। फिर भी डॉ० वेबर की युक्ति के अनुसार **दशरथ-कथानम्** के वृत्तान्त मे इन सब रचनाओ के पहले की राम-कथा का रूप विद्यमान है।

(३) राम-कथा का विकसित रूप, जो **वाल्मीकि रामायण** मे भी पाया जाता है, वह प्राचीन काल मे ही बौद्धो मे प्रचलित था। इसके सकेत पाली **जातकट्ठवण्णना** की अन्य गाथाओ से मिलते है (दे० नीचे, अनु० ८३)। **अनामक जातकम्** मे भी राम-कथा का विकसित रूप मिलता है (दे० अनु० ५२)। इस जातक का २५४ ई० मे चीनी भाषा मे अनुवाद हुआ था।

इसके अतिरिक्त अश्वघोष, **अभिधर्म महाविभाषा** आदि प्राचीन बौद्ध ग्रन्थो मे **वाल्मीकि रामायण** के निर्देश मिलते है।

७८ **अश्वघोष**। **बुद्धचरित** महाकाव्य से पता चलता है कि अश्वघोष (दूसरी शताब्दी ई० पूर्वार्द्ध) न केवल ब्राह्मण राम-कथा से लेकिन वाल्मीकिकृत **रामायण** के पाठ से भी परिचित थे और इससे अपनी सारी रचना मे प्रभावित हुए है[1]।

राम का आज्ञापालन (९, २५), उनका वन से लौटना[2] (९, ६७), दशरथ का पुत्रवियोग के कारण शोक (८, ७९ ८१)—इन सब मे राम-कथा के किसी निश्चित रूप की ओर निर्देश नही है। लेकिन वनवासी राम से वामदेव की भेट (९,९), वाल्मीकि (१, ४८) तथा सारथि सुमत्र (६, ३६, ८, ८) का उल्लेख—यह रामायणीय राम-कथा (विशेष करके अयोध्या काड) से सम्बन्ध रखता है[3]।

---

१ दे० सी० डब्लू गर्नर अश्वघोष एड दि रामायण। जर्नल एड प्रोसीडिंग्स एसियाटिक सोसाइटी, भाग २३, पृ० ३४७-६७।
ए० बी० कीथ सस्कृत लिटरेचर, पृ० ५९।
एम० विटरनित्स हि० इ० लि०, भाग १, ४९० और भाग २, २६२।
कावेल दि बुद्धचरित ऑव अश्वघोष, भूमिका, पृ० १२।
ई० एच० जान्स्टन बुद्धिचरित, भूमिका।

२ राम के वन से लौटने का एक अन्य उल्लेख भी मिलता है।
मही विप्रकृतामनार्यैस्तपोवनादेत्य ररक्ष राम। (९, ५९)
'पृथ्वी को अनार्यो से पीडित देखकर राम ने वन से लौट कर उसकी रक्षा की।' इसमे दशरथ-जातक तथा रामायण को छोडकर राम-कथा के किसी अन्य रूप की ओर निर्देश है। यह सभवत अनामक जातकम् हुआ होगा।

३ रामायण (५, ९-११) मे रावण की सोती हुई पत्नियो का जो चित्र अकित किया गया है, इससे अश्वघोष सिद्धार्थ के शयनागार के वर्णन मे प्रभावित प्रतीत होते है (५, ४८-६२)। (अगले पृष्ठ पर भी देखें)

इसके अतिरिक्त अश्वघोष के **सौन्दरनन्द** मे वाल्मीकि को सीता के दोनो पुत्रो का शिक्षक बताया गया है । इससे यह ध्वनि निकलती है कि अश्वघोष उत्तर- काड की कथावस्तु से अभिज्ञ थे ।

बुद्धचरित के अनेक स्थलो पर **रामायण** की कथावस्तु से बहुत कुछ समानता मिलती है । सिद्धार्थ के बिना छदक के कपिलवस्तु मे लौटने का सारा वर्णन सुमत्र के प्रत्यागमन से प्रभावित हुआ है । कवि स्वय दोनो वृत्तान्तो की तुलना करते है—

त्वामरण्ये परित्यज्य सुमत्र इव राघव । (६, २६)

और

मुमोक्ष वाष्प पथि नागरो जन पुरा रथे दाशरथेरिवागते (८, ८)

गौतमी के विलाप मे (८, ५१-५८), जो राजमहल और वनवास का विरोध चित्रित किया गया है, वह **रामायण** मे दशरथ (२, १२, ९७-१०१, २, ५८, ५-६) और कौशल्या के विलाप (२, ४३, १-२०) का स्मरण दिलाता है । दोनो मे वनवासी पुत्र के पैदल जाने, भूमि पर शयन करने आदि का उल्लेख हुआ है ।

प्रलबबाहुर्मृगराजविक्रमो महर्षभाक्ष कनकोज्ज्वलद्युति ।
विशालवक्षा घनदुन्दुभिस्वनस्तथाविधोऽप्याश्रमवासमर्हति ।।

(बुद्धचरित ८, ५३)

नागराजगतिर्वीरो महाबाहुर्धनुर्धर ।
वनमाविशते नून सभार्य सलक्ष्मण ।।

(रा० २, ४३, ६)

शुचौ शयित्वा शयने हिरण्मये प्रबोध्यमानो निशि तूर्यनिस्वनै ।
कथ बत स्वप्स्यति सोऽद्यमे व्रती पटैकदेशातरिते महीतले ।।

(बु० ८, ५८)

गजेन्द्रमृदिता फुल्ला लता इव महावने । (रा० ५, ९, ४७)
गजभग्ना इव कर्णिकारशाखा । (बु० ५, ५१)
इस प्रकार के अनेक उदाहरण मिलते है, जिनसे स्पष्ट है कि दोनो वर्णनो का मूल-स्रोत एक है । यह वर्णन बुद्धचरित का एक आवश्यक अश माना जाना चाहिए परन्तु रामायण मे यह अनावश्यक लगता है । अत इस वृतान्त का मूल-स्रोत बुद्धचरित ही है और यह रामायण मे प्रक्षिप्त है—यह कोवेल और विंटरनित्स का तर्क है । कीथ मानते है कि अश्वघोष इसमे रामायण का अनुकरण करते हैं । यह अन्तिम मत अधिक समीचीन प्रतीत होता है ।

दु खस्यानुचितो दु ख सुमत्र शयनोचित ।
भूमिपालात्मजो भूमौ शेते कथमनाथवत् ।।

(रा० २, ५८, ६)

७९ तीसरी श० ई० उत्तरार्द्ध की **अभिधर्ममहाविभाषा** मे **रामायण** का उल्लेख किया गया है। यह रचना चीनी अनुवाद मे सुरक्षित है।[1] इसमे लिखा है— '**रामायण** नामक ग्रन्थ मे १२००० श्लोक है। मे श्लोक केवल दो विषयो से सम्बन्ध रखते है, (१) रावण द्वारा सीता का हरण और (२) राम द्वारा सीता की पुन प्राप्ति तथा (अयोध्या मे) प्रत्यागमन। बौद्ध-ग्रन्थ इतने सरल नही होते। इनमे अपरिमित प्रकार की रचनाएँ मिलती है और इनके अर्थ असख्य होते है।'

इसके अतिरिक्त तीन बौद्ध रचनाएँ और मिलती है, जिनसे पता चलता है कि **रामायण** का बौद्धो मे पर्याप्त प्रचार था[2]। कुमारलातकृत **कल्पनामडितिका** मे (तीसरी श० ई० का अत) **महाभारत** और **रामायण** का उल्लेख हुआ है। वसुबन्धु (चौथी श० ई०) की जीवनी मे भी यह कहा गया है कि वसुबन्धु **रामायण** की कथा सुना करते थे। **सद्धमस्मृत्युपाख्यानसूत्र** मे **रामायण** का दिग्वर्णन उद्धृत है। यह रचना पहली शताब्दी ई० की मानी जाती है। इसका छठी शताब्दी मे चीनी भाषा मे अनुवाद हुआ था।

(आ) दशरथ-जातक की अन्तरग समीक्षा

८० राम-कथा का जो रूप पाली **दशरथ-जातक** के गद्य मे मिलता है, वह या तो **रामायण** ही पर अथवा **रामायण** से मिलती-जुलती किसी अन्य राम-कथा पर निर्भर है। यह **दशरथ-जातक** की अन्तरग परीक्षा से सिद्ध होता है।[3]

रामायण मे कैकेयी ने वर के बल पर राम के लिए चौदह वर्ष तक वनवास माँग लिया था, अत दशरथ के मरने के बाद राम का वन मे रहना स्वाभाविक और आवश्यक है। लेकिन **दशरथ-जातक** मे इसके लिए कोई समीचीन कारण नही मिलता।

---

१ दे० केर्न मेन्युल आॅव बुद्धिज्म, पृ० १२१, ज० रा० ए० सो०, १९०७, पृ० ९९-१०३।

२ तीनो रचनाएँ केवल चीनी अनुवाद मे सुरक्षित है।
दे० एम्० विंटरनित्स हि० इ० लि०, भाग २, पृ० २६९।
ए० बी० कीथ सस्कृत लिटरेचर, पृ० ८ (भूमिका), ५६।
के० वतानबे ज० रा० ए० सो०, १९०७, पृ० ९९-१०३।
एस्० लेवी जूर्नल अजियटिक, १९१८, पृ० १ आदि।

३ दे० एच० याकोबी वही पृ० ८५। सी० वी० वैद्य वही, पृ० ७३।

साराश यह है कि **दशरथ-जातक** मे जो आतरिक असगति मिलती है, वह वाल्मीकीय कथा का इस जातक का आधार होना सिद्ध करती है। दूसरी ओर जातक तथा रामायण मे जो अतर पाए जाते है, वे भी उपर्युक्त कारणो से स्वाभाविक प्रतीत होते है।

घ—पाली तिपिटक और रामायण

८२ ऊपर के विश्लेषण से सिद्ध होता है कि **दशरथ-जातक** के गद्य मे जो वृत्तान्त प्रस्तुत हुआ है, वह तो वाल्मीकीय राम-कथा का विकृत रूप है ही और इस जातक की गाथाओ का भी मूलस्रोत बौद्ध नही है। फिर भी इनका आधार प्रचलित वाल्मीकिकृत **रामायण** भी नही हो सकता। अत ये गाथाएँ पुराने आख्यानकाव्य पर निर्भर होगी (दे० अनु० ७२)।

अब प्रश्न यह उठता है कि पाली तिपिटक की गाथाओ मे जो थोडी सी राम-कथा सम्बन्धी सामग्री सुरक्षित है, क्या वह **रामायण** का आधार माने जाने के लिए पर्याप्त है ? इस प्रश्न को सुलझाने से पहले **दशरथ-जातक** को छोडकर अन्य राम-कथा से सम्बन्ध रखने वाली सामग्री का निरूपण करना है, जो पाली तिपिटक मे मिलती है।

८३ **राम-कथा-सबधी गाथाएँ। दशरथ-जातक** की गाथाओ को छोड कर पाली **जातकट्ठवण्णना** मे दो गाथाएँ और मिलती है, जिनमे राम और सीता का उल्लेख हुआ है। इनसे पता चलता है कि गाथाओ के कवि वाल्मीकीय राम-कथा से परिचित थे।

जयद्दिस-जातक (न० ५१३) की गाथा १७ के अनुसार राम का वनवास हिमालय प्रदेश मे न होकर दण्डकारण्य मे है। एक माता अपने पुत्र से कहती है

य दण्डकारण्णगतस्स माता
रामस्सका सोत्थान सुगत्ता
त ते अह सोत्थान करोमि ॥

"जिस तरह से दण्डकारण्यवासी राम की सुन्दर माता ने (अपने पुण्य द्वारा पुत्र का) कल्याण किया है, इस तरह मैं तेरा कल्याण (सोत्थान स्वस्त्ययन) करती हूँ।" लेकिन दशरथ जातक के अनुसार राम के निर्वासन के समय उनकी माता का देहान्त हुआ था। **वेस्सतर जातक** (न० ५४७) मे मद्दी, वेस्सतर की पत्नी कहती है

अवरुद्धस्सह भरिया राजपुतस्स सिरीमतो।
त चाह नातिमण्णमि रामनि सीता वनुब्बता ॥ (गाथा ५४१)

'मैं एक प्रतापवान् निर्वासित राजकुमार की भार्या हूँ। अनुगामिनी सीता जिस तरह से राम का आदर करती थी, इस तरह मैं इनका आदर करती हूँ।' इससे यह ध्वनि

निकलती है कि वनवास के समय राम और सीता का सम्बन्ध भाई-बहन का न होकर पति-पत्नी का था।

८४ **सामजातक।** **सामजातक** (न० ५४०) का वृत्तान्त[1] **रामायण** की अंध-मुनि-पुत्रवध सम्बन्धी कथा (द० २, ६३-४) का एक अन्य रूप मात्र है। बौद्ध जगत मे इस **जातक** की लोकप्रियता का प्रमाण यह है कि साची और अमरावती के स्तूपो पर तत्सम्बन्धी चित्र अंकित किए गए है। पाली **जातकट्ठवण्णना** के अतिरिक्त यह जातक **महावस्तु** (२, २०९) मे **श्यामक जातकम्** के नाम पर और **चरियापिटक** (३, १३) मे **सुवण्णसामचरियम** के नाम पर पाया जाता है। लेकिन इन दोनो का वृत्तान्त बहुत संक्षिप्त है और इसका आधार स्पष्टतया **सामजातक** ही है।

दूसरी ओर **रामायण** के अतिरिक्त अंध-मुनि-पुत्र के वध की कथा **रघुवंश** (नवॉ सर्ग) आदि मे भी मिलती है। परन्तु ये वृत्तान्त **रामायण** की तत्सम्बन्धी कथा पर निर्भर है और **सामजातक** से कोई सीधा सम्बन्ध नही रखते। अत यहॉ पर पाली **जातक** और **रामायण** की कथा की तुलना पर्याप्त है। **सामजातक** का संक्षिप्त वृत्तान्त इस प्रकार है—निषादो के कुल मे उत्पन्न दुकूलक और पारिका हिमालय प्रदेश के किसी आश्रम मे तपोमय जीवन बिताते है। विवाहित होकर भी वे ब्रह्मचारी ही रहते है। बोधिसत्व अलौकिक रीति से पारिका के गर्भ से जन्म लेते है और साम कहलाते है। साम के १६वे वर्ष मे दुकूलक और पारिका दोनो को एक सर्प अन्धा कर देता है। उसी समय से साम अपने माता-पिता की सेवा-शुश्रूषा करने लगते है।

एक दिन साम नदी से पानी लेने जाता है। उस स्थल पर वह काशी के राजा (पिलियक) के विषैले बाण से विद्ध होता है। राजा के पहुँचने पर उसे तनिक भी क्रोध नही आता किन्तु अपने अन्धे माता-पिता के भाग्य पर वह फूट-फूट कर रोने लगता है। राजा अन्धे माता-पिता के पास आकर उनके पुत्र के बध का समाचार देता है, जिसे सुनकर दुकूलक और पारिका रोने लगते है। उनके कहने से राजा दोनो को पुत्र के मृत शरीर के पास ले जाता है। माता-पिता मर्म-स्पर्शी विलाप करते हुए शपथ (सच्च-

---

१ दे० जे० शार्पेंटिये वियेना ओरियेन्टल जर्नल, भाग २७, पृ० ६४, भाग २४, पृ० ३९७।
एच० ओल्डेन्बेर्ग जातक स्टुडियन, जर्नल गेटिंगन सोसाइटी, १९१८, पृ० ४५६ आदि।
एम्० विंटरनित्स हि० इ० लि०, भाग १, पृष्ठ ५०६, भाग २, पृष्ठ १४७ आदि।
दिनेशचन्द्र सेन वही, पृष्ठ १५ आदि।

क्रिया) करते है। पारिका कहती है—यदि मेरा पुत्र माता-पिता का सच्चा भक्त था तो विष लुप्त हो जाय। दुकूलक भी अपने और अपनी पत्नी के नाम पर 'सच्चक्रिया' करता है। वनदेवी भी उसी तरह करती है। साम उठ बैठता है और राजा का स्वागत करता हुआ कहता है—'मै केवल मूर्छित हुआ था। जो माता-पिता की सेवा करते है, वे दोनो लोको मे सुख पाते है।' इसके बाद साम राजा पिलियक को राजधर्म का उपदेश देता है।

रामायण की कथा मे आहत मुनि-पुत्र अधिक उत्तेजित हो जाता है, उसके माता-पिता का विलाप अधिक हृदयस्पर्शी तथा करुणाजनक होता है और अन्त मे वह पुनर्जीवित नही होता है। फिर भी दोनो वृत्तान्तो का पारस्परिक सबध सदिग्ध नही कहा जा सकता।

कथा के अतिरिक्त शाब्दिक साम्य भी पाया जाता है

अय एकपदी राज (गाथा २६)
इयमेकपदी राजन् (रा० २, ६३, ४४)
अदूसक पितापुत्ता तयो एकूसुना हता (गा० ३६)
वृद्धौ च मातापितरावह चैकेषुणा हत । (रा० २, ६३, ३२)

वृद्ध पिता के विलाप मे एक पूरी गाथा भी **रामायण** के एक श्लोक से बहुत मिलती-जुलती है,

को दानि भुजयिस्ससि वनमूलफलानि च
सामो अय कालकतो अधान परिचारक ।।

(गा० ८५)

कदमूलफल हृत्वा यो मा प्रियमिवातिथिम्
भोजायिष्यत्यकम्मण्यमप्रग्रहमनायकम् ।।

(रा० २, ६४, ३४)

ऐसा प्रतीत होता है कि **सामजातक** के सरल वृत्तान्त मे इस कथा का प्राचीन रूप सुरक्षित है[1]। यह वृत्तान्त रामकथा से स्वतत्र रूप मे प्रचलित था। आगे चल कर **रामायण** की कथा मे उसे एक नया और काव्यात्मक रूप मिला है।

८५ वेस्सन्तर जातक। यह जातक बौद्ध जगत मे सबसे प्रसिद्ध और लोकप्रिय था। इसकी ७८६ गाथाओ मे राजकुमार वेस्सन्तर की दानवीरता का चित्रण हुआ है।

---

१ यही ओल्डेनबेर्ग और विंटरनित्स का मत है। शार्पेन्टिये रामायण की कथा पूर्वकृत मानते है।

कथावस्तु इस प्रकार है[1]—राजकुमार वेस्सन्तर ने प्रतिज्ञा की थी कि मैं कोई भी मागी हुई वस्तु देने से इनकार नही करूँगा। देश की भलाई का ध्यान न रखते हुए उसने एक अलौकिक हाथी दान मे दिया। दड-स्वरूप उसको वनवास दिया गया। उसकी पतिभक्त पत्नी मद्दी और दो पुत्र उसके साथ गए। वह चार घोडो के रथ मे चले। पथ मे एक ब्राह्मण भिखारी ने रथ माँगा। वेस्सन्तर ने उसे निस्सकोच दे दिया। अन्त मे चारो एक कुटी मे पहुँच कर वही निवास करने लगे। तब सक(शक्र) एक कुरूप ब्राह्मण के वेश मे दिखाई पडे और उन्होंने वेस्सन्तर के दोनो पुत्रो को दास के रूप मे माँगा और प्राप्त किया। तत्पश्चात् ब्राह्मण ने पत्नी को भी माँग लिया। इस पर ब्राह्मण अपना परिचय देता है और कथा आनन्दपूर्वक समाप्त होती है।

इस **जातक** मे अनेक स्थलो पर राम-कथा से मिलते-जुलते प्रसग मिलते है— राम के समान वेस्सन्तर का वनवास के पहले दान देना, कौशल्या का तथा वेस्सतर की माता का विलाप, वन और कुटी का वर्णन। मद्दी और सीता, दोनो अपने पति के साथ वन जाने के लिए अनुरोध करती है

अग्गि निज्जालयित्वान एकजालसमाहितम् ।
तत्थ मे मरण सेय्यो य चे जीवे तया विना ।।

(गाथा ७३)

यदि मा दु खितामेव वन नेतु न चेच्छसि ।
विषमग्नि जल वाहमास्थास्ये मृत्युकारणात् ।।

(रा० २, २६, २१)

लेकिन दोनो रचनाओ मे कही भी अक्षरश एकरूपता नही मिलती। जो समानता मिलती है, वह सभवत आधिकारिक वस्तु के सादृश्य के कारण उत्पन्न हुई है। इस **जातक** तथा **रामायण** के पारस्परिक प्रभाव के प्रमाण नही दिए जा सकते है। इतना ही असदिग्ध है कि **वेस्सतर जातक** का रचयिता रामकथा से परिचित था। (दे० ऊपर अनु० ८३ मे उद्धृत गाथा ४५१), लेकिन वह **रामायण** भी जानता था, इसके लिए **वेस्सतर जातक** मे कोई आधार नही मिलता।

८६ सबुला जातक। **सबुला जातक** (न० ५१६) मे पतिभक्त सबुला का वृत्तान्त दिया गया है। अपने कुष्टरोगी पति राजकुमार सोत्थिसेन के साथ वनवासी बन

---

१ दे० जातकट्ठवण्णना का अतिम जातक, न० ५४७। इसका उल्लेख मिलिंद पान्ह (४, १, ३५, ४, ८, १) और चरिय-पिटक (१,६) मे हुआ है। दे० विटरनित्स हि० इ० लि०, भाग २, पृष्ठ १५१-२।

कर वह उसकी सेवा मे अपना जीवन बिताती है। किसी दिन एक दानव सबुला को वन मे देखता है और उसे अपनी पत्नी बनाना चाहता है। सबुला अस्वीकार करती है और सक्क (शक्र) द्वारा बचाई जाती है। इस घटना का वृत्तान्त सुनकर सोत्थिसेन अपनी पत्नी के सतीत्व पर सदेह करता है। यह देखकर सबुला एक 'सच्चकिरियम्' (सच्च-क्रिया) द्वारा अपने पति को नीरोग कर देती है।

तथा म सच्च पालेतु पालयिस्सति चे मम
यथान नाभिजानामि अज्ज पियतर तया
एतेन सच्चवज्जेन व्याधि ते वूपसम्मति (उपशमति)।

(गाथा २७)

इसके बाद दोनो राजधानी लौट जाते है। कृतघ्न सोत्थिसेन अन्य स्त्रियो के साथ विलास करके अपनी पत्नी को दु ख देता है। अन्त मे अपने पिता के कहने पर वह सबुला से क्षमा माँगता है और दोनो का जीवन सुखमय बन जाता है।

सबुला और सीता, दोनो वनवासी पति की सेवा करती हैं। सबुला की सच्च-क्रिया सीता की अग्निपरीक्षा के समय की शपथ का स्मरण दिलाती है। दानव और रावण, दोनो की धमकी मे भी शाब्दिक समानता मिलती है 'यदि तुम मेरी महिषी बनने के लिए सहमत नही हुई तो तुम मेरा प्रात का भोजन (पातरासाय—प्रातराश) बन जाओगी।'

नो चे तुव महेसेय्य सबुले कारयिस्ससि।
अल त्व पातरासाय मञ्ञे भक्खा भविस्ससि॥

(गाथा १०)

द्वाभ्यामूर्ध्वं तु मासाभ्या भर्तार मामनिच्छतीम्।
मम त्वा प्रातराशार्थे सूदाश्छेत्स्यति खडश॥

(रा० ५, २२, ६)

८७ महासुतसोम जातक। इस जातक (न० ५३७) मे एक गाथा पाई जाती है, जिसमे 'महासत्तो' (बोधिसत्व) एक 'पोरिसाद' (पुरुषाद) को भर्त्सना देकर कहते है—

पच पच नखा भक्खा खत्तियेन पजानता।
अभक्ख राजा भक्खेसि तस्मा अधम्मिको तुव॥

(गाथा ५८)

यह राम के प्रति बालि की उक्ति का स्मरण दिलाता है

पञ्च पचनखा भक्ष्या ब्रह्मक्षत्रेण राघव॥

(रा० ४, १७, ३६, मनु० ५, १७)

८८ आदिच्चुपट्ठान जातक[1]। इस जातक (न १७५) मे किसी वानर की कथा है। वह ब्राह्मणो को परोसा जाने वाला भोजन पाने के लिए उनके समान सूर्य की उपासना करता है। इस कथा मे एक ही गाथा उद्धृत है, जिसका रामायण अथवा महाभारत मे कही भी रूपान्तर नही मिलता। यह गाथा राम-कथा से कोई सम्बन्ध रखती हो, इसके लिए कोई भी प्रमाण नही दिया जा सकता है। पाली गाथा इस प्रकार है

सब्बेसु किर भूतेषु सन्ति सीलसमाहिता,
पस्स साखामिग जम्म आदिच्च उपतिट्ठत्ति।

"प्राणियो की प्रत्येक जाति मे कोई न कोई धार्मिक पाया ही जाता है इस नीच वानर को देख लो, जो सूर्य की उपासना कर रहा है।"

पतजलि के महाभाष्य मे इस गाथा का सस्कृत रूपान्तर विद्यमान है, इसमे 'वानर सेना' का भी उल्लेख है, जिससे प्रतीत होता है कि बाद मे इस गाथा का सम्बन्ध रामायण से जोडा गया है। वास्तव मे 'उपस्था' के परस्मैपद तथा आत्मनेपद प्रयोग दिखलाने के लिए इस गाथा को उद्धृत किया गया है

बहुनामप्यचित्तानामेको भवति चित्तवान्
पश्य वानरसैन्यऽस्मिन्यदर्कमुपतिष्ठते॥
मैव मस्था सचित्तोऽयमेषोऽपि हि यथा वयम्
एतदप्यस्य कापेय यदर्कमुपतिष्ठति॥

(उपान्मत्रकरणे १।३।२५)

८९ उपसहार। श्री दिनेशचन्द्र सेन[2] का अनुमान है कि जातको के साहित्य से वाल्मीकि ने अपनी सामग्री प्राप्त की है और इसे अपनी अमर रचना के नए साँचे मे ढाला है यह मत चिन्त्य है। तिपिटक की गाथाओ मे राम-कथा से सीधा सबध रखने वाली सामग्री इस प्रकार है

'शोकापनोदन' का एक छोटा सा भाषण,
जलक्रिया के विषय मे एक गाथा,
राम के राज्यकाल के विषय मे एक गाथा,
राम के दण्डकारण्य मे वनवास का उल्लेख, और
सीता के अपने पति के साथ वनगमन का उल्लेख।

इसके अतिरिक्त **वेस्सतर जातक** की कथा-वस्तु **रामायण** के वृत्तान्त से कुछ मिलती-जुलती है। **सबुला** तथा **महासुतसोम जातक** मे एक-एक गाथा पाई जाती है, जिसका

---

१ ज० रा० ए० सो०, बम्बई ब्रँच, १९२८, पृ० १२३।
२. दे० वही, पृ० २२ और एम० विटरनित्स, वही, भाग १, पृ० ५०८।

रूपान्तर **रामायण** मे भी मिलता है। **सामजातक** का वृत्तान्त सभवत दशरथ द्वारा अध-मुनि-पुत्र-वध की कथा का आधार माना जा सकता है।

इस सामग्री की अल्पता का ध्यान रखकर यह नि सकोच कहा जा सकता है कि समस्त **रामायण** का आधार पाली गाथाओ मे ढूँढना व्यर्थ है। **रामायण** राम-कथा-सम्बन्धी आख्यान-काव्य पर निर्भर है और इस आख्यान-काव्य की थोडी सी सामग्री पाली गाथाओ मे आ गई है। इसका अर्थ यह है कि जिस समय पाली तिपिटक बनता रहा (चौथी शताब्दी ई० पू०), उस समय रामकथा के विषय मे पर्याप्त मात्रा मे आख्यान-काव्य की रचना हो चुकी थी। क्या आगे बढकर यह भी कहा जा सकता है कि **रामायण** की भी रचना हो चुकी थी ?

उपर्युक्त सामग्री से ऐसा प्रतीत नही होता। **सामजातक** के अतिरिक्त पाली तिपिटक मे केवल पॉच गाथाओ मे **रामायण** के श्लोको से शाब्दिक समानता पाई जाती है। यदि **रामायण** जैसे महाकाव्य की रचना हुई होती तो गाथाओ के कवि इससे कही अधिक प्रभावित हुए होते। इसके अतिरिक्त **रामायण** की अपेक्षा पाली तिपिटक की सामग्री पुराने आख्यान-काव्य की शैली और छद से कही अधिक निकट है। **सामजातक** के वृत्तान्त मे भी सभवत अध-मुनि-पुत्र-वध की कथा का प्राचीन रूप सुरक्षित है।

तिपिटक के ५४७ जातको मे यक्ख, दानव, नाग, रक्खस, बन्दर और अन्य असख्य पशु आदि के विषय मे कितनी ही कहानियाँ मिलती है परन्तु कही भी राक्षस रावण अथवा हनुमान् आदि **रामायण** के अन्य कपियो का उल्लेख नही हुआ है।[1]

निष्कर्ष यह है कि तिपिटक के रचनाकाल मे राम-कथा सम्बन्धी स्फुट आख्यान-काव्य प्रचलित हो चुका था लेकिन **रामायण** की रचना उस समय नही हो पाई थी।

इ—रामायण पर बौद्ध प्रभाव

६० पिछले परिच्छेद के निर्णय के अनुसार पाली तिपिटक की रचना **रामायण** के पहले हुई थी। अत **रामायण** पर बौद्ध धर्म का प्रभाव पडना असम्भव नही कहा जा

---

१ कई जातको मे मिथिला के जनक नामक राजाओ का उल्लेख पाया जाता है (मखादेव जातक, न० ६, महाजनक जातक न० ५३६, निमिजातक न० ५४१)।

इनका सम्बन्ध वैदिक साहित्य की जनक सम्बन्धी सामग्री से सदिग्ध नही है लेकिन इन जातको मे राम-कथा का निर्देशमात्र भी नही पाया जाता।

सकता है। कई विद्वान् इस प्रभाव को आवश्यकता से अधिक महत्व देते है[1]।

दशरथ-जातक मे एक प्राचीन बौद्ध कथा सुरक्षित है, जिसमे बौद्ध आदर्श के अनुसार धैर्य्यवान् राम शोक पर विजय प्राप्त करते है। **रामायण** इस कथा पर निर्भर है और इसी तरह **रामायण** का मूलस्रोत बौद्ध ही है। डॉ० वेबर के इस मत का निरूपण तथा खडन प्रस्तुत अध्याय मे हो चुका है। यहाँ पर इसका उल्लेख मात्र पर्याप्त हे।

श्री दिनेशचन्द्र सेन का अनुमान है कि वाल्मीकि ने एक विशेष उद्देश्य से **दशरथ जातक** का सरल वृत्तान्त विकसित कर दिया है। बौद्ध तपस्या और भिक्षुपन की प्रतिक्रियास्वरूप आदिकवि ने **रामायण** मे हिन्दू गृहस्थ जीवन का आदर्श अपने पाठको के सामने रखा है।

ह्वीलर[2] भी **रामायण** का उद्देश्य बौद्धो से जोडते है। इनके अनुसार **रामायण** का समस्त काव्य ब्राह्मण और बौद्ध दोनो धर्मों के सघर्ष का प्रतीक है। राक्षसो से बौद्धो का अभिप्राय है। लका पर जो आक्रमण का वर्णन किया जाता है, उसमे सिहल द्वीप के बौद्धो के प्रति वाल्मीकि का विरोध और द्वेष प्रकट हुआ है।

इस मत के विरुद्ध कहना पडता है कि एक तो लका और सिहल द्वीप की अभिन्नता सदिग्ध है (दे० आगे अनु० ११३)। दूसरे, यदि वाल्मीकि ने राक्षसो के वर्णन मे बौद्धो का चित्रण करना चाहा तो स्वीकार करना पडेगा कि उन्हे अपने अभिप्राय को छिपाने मे पूर्णतया सफलता मिली है। राक्षस ब्राह्मणो के विरोधी अवश्य है, लेकिन वे स्वय भी यज्ञ करते है और नरभक्षी भी कहे जाते है। **रामायण** मे जो राक्षसो का चित्रण मिलता है, उसमे उनके बौद्ध होने का कोई भी निर्देश नही मिलता।

समस्त **रामायण** मे महात्मा बुद्ध का एक बार उल्लेख हुआ है। जाबालि वृत्तान्त के अन्तर्गत, राम बुद्ध को चोर और नास्तिक कहते हैं,

यथा हि चोर स तथा हि बुद्धस्तथागत नास्तिकमत्र विद्धि।

(रा० २, १०६, ३४)

ह्वीलर के अनुसार जाबालि बौद्ध धर्म के प्रतिनिधि हैं और राम उनके विरुद्ध ब्राह्मण धर्म का पक्ष लेते है। लेकिन जाबालि बौद्ध धर्म का पक्ष न लेकर लोकायत दर्शन

---

१ दे० एच याकोबी वही पृ० ८८।
एम० विटरनित्स वही, भाग १, पृ० ५०६।
दिनेशचन्द्र सेन वही, पृ० २३।

२ दे० जे० टी० ह्वीलर दि हिस्ट्री ऑव इडिया, भाग २, पृ० ७४ (भूमिका) और पृ० २२७ आदि।

का प्रतिपादन करते है और राम इसका खडन करते हुए नास्तिको के प्रसग मे बुद्ध का उल्लेख मात्र करते है। इसके अतिरिक्त जाबालि का सारा वृत्तान्त निश्चित रूप से क्षेपक है और जिस अश मे बुद्ध का उल्लेख हुआ, वह इस वृत्तान्त के अन्तर्गत एक नया क्षेपक प्रतीत होता है (दे० आगे अनु० ४३१)। बुद्ध सबन्धी श्लोक न तो गोडीय पाठ मे मिलता है और न पश्चिमोत्तरीय पाठ मे। अत **आदिरामायण** मे न तो बुद्ध का कोई उल्लेख हुआ था और न बौद्ध धर्म के प्रत्यक्ष प्रभाव का कही भी असदिग्ध निर्देश मिलता था।

रामायण पर बौद्ध धर्म के परोक्ष प्रभाव के प्रश्न के विषय मे इतना निश्चयात्मक उत्तर नही दिया जा सकता। **रामायण** की अपेक्षा **महाभारत** मे कही अधिक कटु भाव, उग्र रणोत्सुकता, घोर युद्ध, अदमनीय विद्वेष आदि दिखलाई देते है। इसका कारण यह हो सकता है कि **महाभारत** की रचना पश्चिम भारत मे हुई थी और **रामायण** की कौशल मे, जहाँ सभ्यता तथा सस्कृति का विकास आगे बढ चुका था। परन्तु इसके एक अन्य कारण की कल्पना की जा सकती है।

रामायण के रचनाकाल मे कोशल मे बौद्ध धर्म का पर्याप्त प्रचार हो चुका था, अत यह असभव नही है कि वाल्मीकि ब्राह्मण धर्म के वातावरण मे रहते हुए भी परोक्ष रूप से बौद्ध आदर्श से प्रभावित हुए थे। सीता का हिंसा के विरुद्ध भाषण (**रौद्रं परप्राणाभिहिंसनम्** आदि, दे० रा० ३, ६), जो बौद्ध अहिंसा का स्मरण दिलाता है, प्रक्षिप्त माना जा सकता है (दे० आगे अनु० ४५७)। लेकिन राम का अत्यन्त शात और कोमल स्वभाव, उनकी सौम्यता आदि ध्यान मे रखकर स्वीकार करना पडता है कि वे मुनि पहले है, क्षत्रिय बाद में। अत इनके चरित्र-चित्रण मे किंचित् परोक्ष बौद्ध प्रभाव देखना निर्मूल-कल्पना नही प्रतीत होती है।

अध्याय ७

रामकथा का मूल स्रोत

६१ आदिकवि वाल्मीकि के पूर्व राम-कथा सबधी आख्यान-काव्य प्रचलित हो चुका था और इसके आधार पर वाल्मीकि ने **रामायण** लिखा है, इसके सम्बन्ध मे आजकल बहुत मतभेद नही है। लेकिन अनेक विद्वानो की धारणा है कि वाल्मीकि ने पहले-पहल दो अथवा तीन नितान्त स्वतन्त्र आख्यान एक ही कथासूत्र मे ग्रथित करके राम-कथा की सृष्टि की है। प्रस्तुत अध्याय मे इन विद्वानो के मत का निरूपण तथा खडन किया गया है।

क—ए० वेबर का मत

६२ डॉ० वेबर के अनुसार राम-कथा का मूलरूप बौद्ध **दशरथ-जातक** मे सुरक्षित है। इस कथा मे सीताहरण तथा रावण से युद्ध का कोई उल्लेख नही मिलता। डॉ० वेबर का अनुमान है कि सीताहरण की कथा का मूल स्रोत सभवत होमर मे वर्णित पैरिस द्वारा हेलेन का हरण है और लका मे जो युद्ध हुआ, उसका आधार सम्भवत यूनानी सेना द्वारा ट्राय का अवरोध है।[1]

इस मत के अनुसार राम-कथा के दो प्रधान मूलस्रोत होते है। **दशरथ-जातक** तथा होमर का काव्य। पिछले अध्याय मे **दशरथ-जातक** की समस्या का पूरा विश्लेषण करके इस निर्णय पर पहुँचा गया है कि **दशरथ-जातक** की राम-कथा वाल्मीकीय राम-कथा का विकृत रूप मात्र है। अत यहाँ पर केवल डॉ० वेबर के दूसरे मूलस्रोत पर विचार करना पर्याप्त होगा।

दशरथ-जातक राम-कथा का एक आधार है, इससे अब तक कई विद्वान सहमत हैं किन्तु होमर के काव्य को **रामायण** अथवा राम-कथा का एक आधार मानने के लिए डॉ० वेबर को छोडकर कोई भी तैयार नही है[2]। प्रारम्भ से ही

---

१ ए० वेबर आँन दि रामायण, पृ० ११ आदि।

२ दे० के० टी तेलाग रामायण कॉपीड फ्रॉम होमर, बम्बई १८७३।
एम० मोनियर विलियम्स इडियन विजडम, पृ० ३१६ टि० १।
एच० याकोबी वही, पृ० ९४ आदि।
ए० ए० मैकडॉनल सस्कृत लिटरेचर, पृ० ३०८।

प्राय सब विद्वानो ने इसका विरोध किया है[1]। यवनो, पह्लवो तथा शको आदि का समस्त प्रामाणिक **रामायण** मे कही भी उल्लेख नही हुआ है। होमर के काव्य मे नावो को बहुत महत्व दिया गया है। यदि वाल्मीकि इससे परिचित होते तो उन्होने सेना को समुद्र के पार पहुँचाने के लिए सेतु के स्थान पर नावो का सहारा अवश्य लिया होता। होमर तथा वाल्मीकि की रचना मे जो साम्य मिलता है (स्त्री का हरण तथा धनुष-सधान), वह इतना सामान्य और साधारण है कि जब तक अन्य विशेषताओ मे कोई साम्य नही मिलता तब तक पारस्परिक प्रभाव मानने की आवश्यकता नही है। डॉ० वेबर ने बौद्ध साहित्य मे होमर के अन्य वृत्तान्त भी दिखलाए है लेकिन ये उद्धरण पहले-पहल **महावश** तथा बुद्धघोष की रचना मे विद्यमान है। ये दोनो ग्रन्थ पाँचवी श० ई० के है, अत इनकी रचना वाल्मीकि से आठ शताब्दियो के बाद हुई थी। इनसे वाल्मीकि के मूलस्रोत के लिए कोई प्रमाण नही मिल सकता।

ख—एच० याकोबी का मत

६३ डॉ० वेबर की भाति डॉ० याकोबी भी राम-कथा के दो प्रधान आधार मानते है। उनका कहना है कि **रामायण** की राम-कथा स्पष्टतया दो स्वतन्त्र भागो के सयोग से उत्पन्न हुई हे। प्रथम भाग अयोध्या की घटनाओ से सम्बन्ध रखता हे और इसमे दशरथ प्रधान नायक है। द्वितीय भाग मे दण्डकारण्य तथा रावणवध सम्बन्धी कथा मिलती है, इसका मूलस्रोत वेदो की देवतासम्बन्धी कथाएँ प्रतीत होती है। बहुत से विद्वान् डॉ० याकोबी के इस मत का आज-कल भी समर्थन करते है[2]।

डॉ० याकोबी **रामायण** का प्रथम भाग, अर्थात् अयोध्या की घटनाये, ऐतिहासिक मानते है। यह भाग किसी निर्वासित इक्ष्वाकुवशीय राजकुमार की कथा पर निर्भर है। मूलकथा सभवत इस प्रकार थी—कोई राजकुमार घर से निर्वासित होकर इक्षुमति के तट को छोडकर सरयू के तटवर्ती कोशलदेश पर अधिकार प्राप्त करता है। बाद मे जब इक्षुमति पर उसके निवास का स्मरण न रहा तब अयोध्या से ही निर्वासित माना गया।

रामायण के द्वितीय भाग का आधार निर्धारित करने के लिए डॉ० याकोबी वैदिक साहित्य का सहारा लेते हैं। वेदिक साहित्य मे जो राम-कथा सम्बन्धी सामग्री

---

१ दे० एच० याकोबी वही, पृ० ८६, १२७ टि०।
एु० ए० मैकडॉनल वही, पृ० ३११।
ए० बी० कीथ सस्कृत लिटरेचर, पृ० ४३।

२ चद्रभान वैदिक साहित्य मे राम-कथा का बीज। नागरीप्रचारिणी पत्रिका, वर्ष ५५, पृ० ३०१-३०५

मिलती है, उसका विस्तृत निरूपण तथा विश्लेषण निबन्ध के प्रथम अध्याय मे किया गया है। निष्कर्ष यह है कि वैदिक काल मे न तो **रामायण** था और न राम-कथा सम्बन्धी गाथाएँ प्रचलित थी। डॉ० याकोबी इस निर्णय से असहमत नही है। लेकिन यह स्वीकार करते हुए भी कि सीता, कृषि की अधिष्ठात्री देवी, का वैदिक साहित्य मे न तो कोई चरित्र-चित्रण मिलता है, न इनके विषय मे कोई कथावस्तु ही मिलती है और न इनकी ऐतिहासिकता का ही कोई प्रमाण है, फिर भी वैदिक सीता के व्यक्तित्व से **रामायण** की सीता विकसित हुई और वैदिक साहित्य मे राम-कथा के द्वितीय भाग का सूत्रपात मिलता है, यही डॉ० याकोबी तथा कुछ अन्य विद्वानो का मत है।[1]

६४ डॉ० याकोबी की धारणा यह है कि **रामायण** के प्रधान पात्रो का प्रतिबिंब वैदिक साहित्य के देवताओ मे देखा जा सकता है। उनके अनुसार **रामायण** की सीता तथा वैदिक सीता की अभिन्नता असदिग्ध है। इसके अतिरिक्त गृह्यसूत्रो मे सीता 'पर्जन्यपत्नी' तथा इन्द्रपत्नी कही गई है। इससे स्पष्ट है कि राम इन्द्र का एक अन्य रूप मात्र है। वैदिक काल के पशुपालन करने वाले आर्यो के देवता 'इन्द्र' बाद के कृषको के लिए परिवर्तित होकर 'राम' बन गए है। पूर्व भारत मे वह 'राम दशरथि' के रूप मे तथा पश्चिम मे 'बलराम' के रूप मे स्वीकृत किए गए थे। बलराम और इन्द्र दोनो मद्यप है। यह विशेषता उनकी मौलिक अभिन्नता की ओर निर्देश करती है। राम दाशरथि और इन्द्र की अभिन्नता को प्रमाणित करने के लिए डॉ० याकोबी इन्द्र के दो प्रसिद्ध कार्यों का प्रतिबिम्ब **रामायण** मे देखते है।

इन्द्र का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य वृत्रासुर का वध वैदिक साहित्य मे प्रसिद्ध है (ऋग्वेद १, ३२)। इन्द्र इस वृत्रासुर को (जो ऋग्वेद मे 'अहि' कहा गया है) मारते है और पर्वतो मे रोका हुआ पानी विमुक्त कर देते हैं। सायण के अनुसार वृत्र का अर्थ मेघ है, जिसमे पानी वृत्र ही के द्वारा रोका जाता है[2]। इन्द्र और वृत्र का यह वृत्तान्त राम और रावण के युद्ध के रूप मे प्रतिबिंबित होता है। अत रावण और वृत्र का मूलरूप एक है। इसके अन्य लक्षण भी मिलते है—रावण के पुत्र मेघनाद की उपाधि इन्द्रजित् है और उसका भाई कुम्भकर्ण एक गुफा मे रहकर वृत्र का स्मरण दिलाता है।

इन्द्र का दूसरा कार्य पणियो द्वारा चुराई हुई गायो की पुन प्राप्ति है (ऋग्वेद २, १२)। देवशुनी सरमा, रसा नदी को पार करके इन गायो का पता लगाती है (ऋग्वेद

---

१ दे० रमेशचन्द्र दत्त ए हिस्ट्री ऑव सिविलाइजेशन इन एन्शन्ट इंडिया, पृ० २११।

एस० के० बेलवलकर उत्तररामचरित्र, भूमिका, पृ० ५६।

२ एक अन्य मत के लिए दे० विंटरनित्स वही, भाग १, पृ० ८३।

१०, १०८) । वैदिक काल के पशुपालन करने वाले आर्यों के लिए गायो का जो स्थान था, वही कृषको के लिए खेतो की सीता का था । फलस्वरूप गायो का हरण सीताहरण मे बदल गया । जिस तरह से सरमा इन्द्र की सहायता करती है, उसी तरह हनुमान् राम के लिए सीता की खोज करते है ।

६५ आजकल हनुमान् विशेषकर गाँवो मे लोकप्रिय है । इनका **रामायण** में जो चरित्र-चित्रण हुआ है, वह इस लोकप्रियता का एक मात्र कारण नही हो सकता । अत डॉ० याकोबी अनुमान करते है कि हनुमान् कृषिसम्बन्धी कोई देवता थे, सभवत वर्षाकाल का अधिष्ठाता देवता । वह तो वायु का पुत्र है[1], बादलो के समान कामरूपी है और आकाश मे उडता है । वह दक्षिण की ओर से, जहाँ से वर्षा आती है, सीता अर्थात् कृषि के सम्बन्ध मे शुभ समाचार लिए राम के पास पहुँचता है । इसके अतिरिक्त इन्द्र का एक नाम 'शिप्रवत्' (ऋग्वेद ६, १७ २) है । निरुक्त मे लिखा है—**शिप्रे हनू नासिके वा,** अत इससे इन्द्र और हनुमान् इन दोनो वर्षा-देवताओ का सम्बन्ध निर्दिष्ट होता है ।

लक्ष्मण राम के सहायक मात्र है । वे कही भी घटनाओ की प्रगति को बदलने की चेष्टा नही करते । फिर भी उनका वैदिक देवता मित्र से सम्बन्ध असम्भव नही है क्योकि वे तो सुमित्रा के पुत्र ही है ।

रामामण के अन्य पात्रो और घटनाओ के विषय मे डॉ० याकोबी बहुत ढूढने पर भी वैदिक साहित्य मे कोई समानता न पा सके ।

६६ डॉ० याकोबी के इस मत के विरुद्ध हम सामान्य रूप से कह सकते है कि इसमे कल्पना प्रधान है, लेकिन इस कल्पना को प्रमाणित करने के लिए तर्क कम दिए जाते है ।

रामायण की सीता के वृत्तान्त पर हम भी वैदिक सीता के व्यक्तित्व का प्रभाव मानते है । लेकिन दोनो मे जो भिन्नता है, वह समानता की अपेक्षा कही अधिक महत्वपूर्ण है ।

राम और इन्द्र की अभिन्नता बहुत चिन्त्य है । रावणवध और वृत्रवध तथा सीताहरण और गायो के चुराए जाने मे जो थोडी सी समानता है, वह इस अभिन्नता को प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त नही है । वैदिक काल के अन्त मे सीता अवश्य एक बार पर्जन्यपत्नी और एक बार इन्द्रपत्नी कही गई है, लेकिन इस कारण इन्द्र और राम का

---

१ इससे उनका नाम 'मारुति' भी है । यह नाम वृत्र के विरुद्ध इन्द्र तथा मारुतो के सघ का स्मरण दिलाता है ।

मूलरूप एक मानना नितान्त अनावश्यक है[1]। वैदिक साहित्य मे बहुत सी कथाएँ और वृत्तान्त मिलते है, जिन से स्पष्ट है कि साधारण प्रवृत्ति यह है कि जो देवता और पात्र प्रारम्भ मे भिन्न थे उनसे सम्बन्ध रखने वाली घटनाएँ बाद मे मिला दी जाती है। डॉ० याकोबी हमको विपरीत दिशा मे ले जाना चाहते है। फिर यदि राम और इन्द्र का मूलरूप एक है, तब यह समझना कठिन हो जाता है कि राम के चित्रण मे इन्द्र के अत्यन्त स्पष्ट व्यक्तित्व की असरय विशेताओ का लोप क्यो हो गया है[2]। रावण और वृत्रासुर मे वध किए जाने के अतिरिक्त कोई विशेष समानता नही है। वृत्र ऋग्वेद मे कही भी इद्रजित् के अत्यन्त अनुपयुक्त नाम से विभूषित नही किया जाता है। यदि हमको मेघनाद को इन्द्रजित् अर्थात् रामजित् समझना है तो यह नाम भी उचित नही है।

हनुमान् के सम्बन्ध मे भी डॉ० याकोबी का यह अनुमान ठीक है कि उनकी व्यापक लोकप्रियता का एकमात्र कारण उनका रामायण मे चरित्र-चित्रण नही हो सकता। इसका कारण यही प्रतीत होता हे कि प्राचीन यक्ष-पूजा के साथ हनुमान् का सम्बन्ध स्थापित किया गया है (दे० अनु० ७१०) वर्षाकाल के किसी अधिष्ठाता देवता अथवा इद्र से हनुमान् की अभिन्नता का कही भी प्रमाण क्या, सकेत मात्र भी नही मिलता।

इन सब आपत्तियो को ध्यान मे रख कर हम निस्सकोच कह सकते है कि **रामायण** की उत्पत्ति और इसके मूलरूप के सम्बन्ध मे डॉ० याकोबी का मत समीचीन नही प्रतीत होता।

९७ ई० हॉपकिन्स के अनुसार **महाभारत** के शान्ति पर्व मे जो राम-कथा मिलती है, इससे डॉ० याकोबी के मत की पुष्टि होती है। इस कथा मे जो राम का चरित्र मिलता है वह किसी प्राचीन देवता सम्बन्धी आख्यान पर निर्भर होगा। बाद मे इससे सीता, कृषि की अधिष्ठात्री देवी की कथा जोड दी गई है और अन्त मे वाल्मीकि ने रावण, हनुमान्, लका आदि के वृत्तान्त लेकर उसे और बढाया है।[3]

राम का व्यक्तित्व इन्द्र की कथाओ से विकसित हुआ हो, यह तो शाति-पर्व के प्रसङ्ग के विरुद्ध है। वहाँ १६ राजाओ के सक्षिप्त वृत्तान्त दिए जाते हैं—सब महान् थे, लेकिन सबके सब मर गए। अत सृ जय को अपने पुत्र की मृत्यु के कारण शोक नही करना चाहिए।

---

१ दे० एच० ओल्डेन्बेर्ग डी रलिगियोन डेस वेद, पृ० ५७ टि०।

२ दे० वॉन नेगेलाइन वियेना ओरियन्टल जर्नल, भाग १६, पृष्ठ २४८।

३ ई० डब्लू हॉप्किस ज० अ० ऑ० सो०, भाग ५०, पृष्ठ ८५ आदि।

इसके अतिरिक्त शातिपर्व के वृत्तान्त मे एक वाक्य मिलता है, जिससे स्पष्ट है कि वह विकसित राम-कथा पर निर्भर है

स चतुर्दशवर्षाणि वने प्रोष्य महातपा ।
दशाश्वमेधां जारूथ्यानाजहार निरर्गलान् ॥

(म० भा० १२, २६, ५३)

इसमे चौदह वर्ष तक वनवास के बाद अश्वमेधो का स्पष्ट उल्लेख हे। ई० हॉपकिन्स के अनुसार वनवास का अभिप्राय यहॉ वानप्रस्थाश्रम से है। लेकिन एक तो चौदह वर्ष राम-कथा का स्मरण दिलाता हे और दूसरे वनवास के बाद ही अश्वमेध का उल्लेख है। अत यहॉ राम के वानप्रस्थ बनने का अर्थ असभव हे।

६८ डॉ० वान नेगैलैन के अनुसार भी राम-कथा वेदिक साहित्य की सामग्री से विकसित हुई है। वास्तव मे उनका मत कष्टकल्पना के अतिरिक्त और कुछ नही है। अत उसका विस्तृत निरूपण यहॉ अनावश्यक हे।[1] सार यह हे कि पुरूरवा-उर्वशी (ऋग्वेद १०, ९५) आदि अप्सराओ का मनुष्यो के साथ विवाह राम-कथा का बीज है। सीता के सौदर्य और उनके अलौकिक जन्म का उल्लेख उनके अप्सरा होने का निर्देश है। सीता पृथ्वी के मानवीकरण का परिणाम है। राम और पृथु वैन्य (ऋग्वद १, ११२, १५ आदि) अभिन्न है। पृथु पृथिवी का पुलिग मात्र हे। इत्यादि।

६६ राम-हुवास्त्र। डॉ० याकोबी ने अपने उपर्युक्त मत के प्रतिपादन के पश्चात् आगे चलकर अनुमान किया हे कि इरानीय राम-हुवास्त्र तथा भारतीय इन्द्र-राम का मूल-स्रोत एक है। लेकिन वह स्वय स्वीकार करते है कि 'अवेस्ता' के देवताओ के अस्पष्ट और धुंधले व्यक्तित्व के कारण इस प्रश्न का निर्णय असभव है।[2]

राम-हुवास्त्र (ह्वास्त्र) का उल्लेख 'जेद अवेस्ता' मे प्राय वायु तथा मिथ्र के साथ होता है[3]। राम का अर्थ है 'शाति, विश्राम', हुवास्त्र का अर्थ है 'चरागाह', राम-हुवास्त्र का अर्थ है 'चरागाह मे विश्राम।[4] प्रारम्भ मे वायु तथा मिथ्र से राम-हुवास्त्र (अर्थात् चरागाह मे विश्राम) के लिए प्रार्थना की जाती थी। बाद मे राम-हुवास्त्र स्वय देवता बन गया। वायु दो प्रकार का माना जाने लगा, एक भला और

१ दे० वान नेगैलाइन वियेना ओरियेटल जर्नल, भाग १६, पृष्ठ २२६।
एम्० विंटरनित्स वही, भाग १, पृष्ठ ५१६।
२ दे० एच० याकोबी वही, पृष्ठ १३६।
३ दे० सेक्रेड बुक्स ऑफ दि ईस्ट, भाग २३ और ३१।
४ दे० वही, भाग ३१, पृष्ठ ३२३, छद १५।

एक बुरा। राम-हुवास्त्र तथा अच्छा वायु अभिन्न है।[1] इस राम-हुवास्त्र के नाम पर एक पूरा यश्त जेंद अवेस्ता मे मिलता है। इसका रचनाकाल चौथी श० ई० पू० माना जाता है।[2] इस यश्त मे भी राम-हुवास्त्र का कोई स्पष्ट व्यक्तित्व अकित नही है और इस देवता की उत्पत्ति ध्यान मे रखकर हम निस्सकोच कह सकते है कि ईरानीय राम-हुवास्त्र तथा भारतीय राम-दाशरथि का कोई सबन्ध नही होता।

१०० यहा एक अन्य राम नामक देवता का उल्लेख असगत नही होगा। एक असिरियन देवना का नाम हे रम्मन अथवा रम्मानु, (हीब्रू मे इसका नाम रिमोन है तथा सिरियन मे हदाद)। रमानु की धातु का अर्थ है मेघगर्जन और वह वज्रपात, आँधी तथा वृष्टि का देवता माना जाता था।[3]

हीब्रू मे 'राम' धातु का अर्थ है ऊँचा, श्रेष्ठ। बाइबिल मे इस धातु से अनेक नगरो के नाम तथा दो तीन व्यक्तियो के नाम भी मिलते है।[4]

ग—दिनेशचन्द्र सेन का मत

१०१ डॉ० वेबर तथा डॉ० याकोबी की भाँति दिनेशचन्द्र सेन भी रामकथ के दो प्रधान मूल स्रोत मानते है।[5] एक तो **दशरथ-जातक** जो उत्तर भारत मे प्रचलित था तथा दूसरे रावण-सम्बन्धी आख्यान जो मुख्यतया दक्षिण मे प्रचलित थे। इन दोनो के सयोग से रामकथा उत्पन्न हुई है। एक तीसरा लेकिन गौण आधार हनुमान्-सम्बन्धी सामग्री है, जिसमे प्राचीन वानर-पूजा का अवशेष देखा जा सकता है।

दशरथ-जातक रामकथा का पूर्व रूप तथा आधार नही हो सकता है, इसके प्रमाण पिछले अध्याय मे दिए गए हैं। यहाँ दिनेशचन्द्र के दो अन्य आधारो पर विचार किया जायेगा।

---

१ दे० डारमेस्टटेर एटुड इरानियेन (भाग २, १९३) और ले जेंड अवेस्ता (भाग २, ३०९)।

२ ई० एम० कागा दि एज ऑव यश्तस, ए वाल्यूम ऑव ईस्टर्न एंड इंडियन स्टडीज, पृष्ठ १३४-४०।

३ दे० ए० उगनड वैबीलोनियन-एसिरियन डिक्शनरी।
आर० डुसो ले देकुवेर्ट द रास शकरा (पेरिस १९४१) और ले रलिजियो द वैबिलोनी ए दासिरी (पेरिस १९४५) पृ० ९८।

४ दे० एफ० विगुरु दिकसियोनेर द ला बिबल, पेरिस।

५ दे० दिनेश चन्द्र सेन वही, पृष्ठ ३, ७, २६-४१, ५६।

रावरण-सम्बन्धी स्वतन्त्र आख्यान प्रचलित थे, जिनका प्रधान विषय था, रावरण की धार्मिकता, तपस्या तथा महत्व। इस मत को सिद्ध करने के लिए बौद्ध तथा जैन साहित्य का सहारा लिया जाता है। जैन राम-कथा मे (दिनेशचन्द्र सेन केवल हेमचन्द्र का उल्लेख करते है) राक्षसवश तथा वानवश का जो विस्तृत वर्णन मिलता है, यह इस बात को पुष्ट करता है कि राम की अपेक्षा राक्षस तथा वानर अधिक लोकप्रिय थे। **लकावतार सूत्र** मे रावरण तथा बुद्ध का धर्म के विषय मे सवाद उद्धृत है और इस ग्रथ मे कही भी रावरण-राम युद्ध की ओर निर्देश मात्र भी नही मिलता। अत रावरण (लका का राजा) राम-कथा की उत्पत्ति के पहले प्रसिद्ध हो चुका था। धर्मकीर्ति (६ ठी श० ई) भी आदर्श बौद्ध राजा रावरण को **रामायण** के दोषारोपण से बचाने का प्रयत्न करता है। यही सक्षेप मे दिनेशचन्द्र सेन का तर्क है।

१०२ सबसे पहले कहना है कि रावरण जैनियो के अनुसार जैन-धर्मावलम्बी था और बौद्धो के अनुसार बौद्ध था। अत दोनो मे से कम से कम एक धारणा भ्रामक है।

जैनियो के साहित्य मे रावरण की कथा स्वतन्त्र रूप से नही मिलती। रावरण का उल्लेख केवल राम-कथा मे ही किया जाता है और जैन राम-कथा स्पष्टतया वाल्मीकीय राम-कथा पर निर्भर है (दे० ऊपर अनु० ५७)। अत जैन साहित्य मे राम-कथा का मूल स्रोत ढूँढना व्यर्थ है।

बौद्ध **लकावतार सूत्र** (अथवा **सद्धर्म-लकावतार सूत्र**) के विषय मे दिनेशचन्द्र सेन का तर्क अधिक महत्त्वपूर्ण है। यह रचना दूसरी श० ई० की मानी जाती थी और इसका प्रथम अध्याय (जिसमे लकापति रावरण तथा बुद्ध का सवाद मिलता है) प्रामाणिक माना जाता था। लेकिन आजकल इसके प्रमाण मिलते हैं कि लकावतार सूत्र चौथी शताब्दी ई० का है और उसका प्रथम अध्याय प्रक्षिप्त है।[1] मूल भारतीय पाठ अप्राप्य है। गुणभद्र ने उसका ४४३ ई० मे अनुवाद किया था। इस चीनी अनुवाद मे रावरण-बुद्ध-सवाद नही मिलता और रावरण का कोई उल्लेख नही है। ५१३ ई० मे इस रचना का पुन चीनी भाषा मे अनुवाद किया गया है और इस छठी शताब्दी के अनुवाद मे एक नया प्रथम अध्याय मिलता है, जिसमे रावरण धर्म के विषय मे बुद्ध से प्रश्न करता है। इस अध्याय के प्रक्षिप्त होने के अतरग प्रमाण भी मिलते हैं। अन्य अध्यायो मे गद्य और पद्य का सम्बन्ध ऐसा है कि पद्य गद्य का अर्थ दुहराता है, तथा सारी रचना बुद्ध तथा बोधिसत्व महामति

---

१ एम्० विटरनित्स वही, भाग २, पृ० ३३७।
डी० टी० सुजुकि स्टडीज इन दि लकावतार सूत्र, लन्दन, १६३०।

के सवाद के रूप मे है । उनमे कही भी रावण का उल्लेख नही मिलता । केवल प्रथम अध्याय मे पद्य गद्य का अर्थ नही दुहराता और इसमे कोई ऐसी सामग्री नही है, जो सूत्र को समझने के लिए आवश्यक हो । डी० टी० सुजुकि का अनुमान है कि रामकथा की लोकप्रियता के कारण **लकावतार सूत्र** का सम्बन्ध इससे जोडा गया है । लकावतार का अर्थ है बुद्ध का लका मे अवतार । लका दक्षिण मे मानी जाती थी । इसके अतिरिक्त रामकथा विषयक कोई भी निर्देश नही मिलता ।

रावण सिहल द्वीप का राजा हुआ हो, इसके लिए भी वहाँ के प्राचीनतम ग्रथो मे कोई प्रमाण नही पाया जाता । **दीपवश** (चौथी श० ई०) तथा **महावश** (पाचवी श० ई०) सिहल द्वीप के सबसे प्राचीन ऐतिहासिक काव्य है । इनमे रामकथा का निर्देश मिलता है (दे० महावश ६४, ४२) । लेकिन सिहल द्वीप के राजा रावण का कही भी उल्लेख नही पाया जाता है ।

१०३ वाल्मीकि के पहले हनुमान् के विषय मे आख्यान-काव्य प्रचलित रहा होगा और वाल्मीकि ने उसका प्रयोग अपनी रामकथा के लिए किया होगा, दिनेशचन्द्र की इस धारणा के लिए कोई प्रमाण नही मिलता । यह अनुमान मात्र ही है । वैदिक साहित्य मे हनुमान् का कही भी उल्लेख नही हुआ है । बौद्ध तिपिटक के जातको मे भी हनुमान् का नाम नही आया, अत उनके विषय मे रामकथा के पहले स्वतन्त्र आख्यान प्रचलित थे, यह बहुत सदिग्ध है । '**समुग्ग-जातक** (जातक न० ४३६) मे एक वायुस्स पुत्त[१] नामक विद्याधर का उल्लेख मिलता है, जो ऐद्रजालिक था लेकिन इसके सम्बन्ध मे न तो हनुमान् का उल्लेख हुआ है और न किसी अन्य वानर का ।

'हनुमान्' शब्द सभवत एक द्रविड शब्द का सस्कृत रूपातर है (आण-नर, मन्दि-कपि) जिसका अर्थ है 'नरकपि' । इसी कारण अनुमान किया गया है कि वृषाकपि तथा हनुमान् दोनो किसी प्राचीन द्रविड देवता के नाम के रूपान्तर है ।[२] इस अनुमान का आधार निर्मूल है । वृषाकपि का अर्थ नरकपि न होकर वाराह अथवा एकशृग वाराह होता है । महाभारत मे वृषाकपि को अनेक आर्य देवताओ (विष्णु, शिव, इद्र आदि) से अभिन्न माना गया है ।[३] ऋग्वेद (दे० १०, ८६) मे जो वृषाकपि का

---

१ अन्यत्र भी वायुस्स पुत्त का अर्थ ऐद्रजालिक है । दे० जर्मन ओरियेन्टल जर्नल भाग ६३, पृ० ८६ ।

२ एफ० ई० पार्गीटर ज० रो० ए० सो०, १६११, पृ० ८०३ और १६१३, पृ० ३६६ ।

३ जर्नल ओरियेटल इस्टिट्यूट (बडौदा), भाग ८, पृ० ४१-७१ ।

उल्लेख है, वह सभवत एक सूर्य देवता है, जिमका प्रतीक वाराह था।[1] अत ऋग्वेदीय वृषाकपि का द्रविड सभ्यता के साथ कोई भी सबध प्रमाणित नही होता। यह अवश्य बहुत ही सभव है कि 'हनुमान्' नाम एक द्रविड शब्द का सस्कृत रूपान्तर है और इसका अर्थ नरकपि है। कारण यह है कि रामायण के अन्य वानरो की तरह हनुमान् भी वानर-गोत्रीय आदिवासी थे (दे० आगे अनु० ११०)। वह एक प्राचीन द्राविड देवता थे, इसके लिए सकेत भी नही मिलता। रामायण मे हनुमान् की शक्ति के वर्णन मे अतिशयोक्ति का सहारा तो लिया गया है, फिर भी उनके देवता होने का कही भी उल्लेख नही हुआ है[2]।

घ—उपसहार

१०४ उपर्युक्त मतो की सामान्य विशेषता यह है कि रामकथा का मूल स्रोत निर्धारित करने के लिए दो अथवा तीन स्वतत्र कथाओ की कल्पना की जाती है। दशरथ-जातक के विषय मे डॉ० वेबर का मत सभवत इस प्रवृत्ति का मूल कारण है।

पिछले अध्याय से स्पष्ट हो गया होगा कि दशरथ-जातक का वृत्तान्त ब्राह्मण रामकथा का विकृत रूप मात्र है और प्रस्तुत अध्याय के विश्लेषण के आधार पर हम कह सकते है कि रामकथा के पूर्व रावण अथवा हनुमान् के विषय मे स्वतत्र आख्यानो का कोई भी प्रमाण नही मिलता। ऐसा प्रतीत होता है कि रामकथा के कारण ही दशरथ, रावण, हनुमान् आदि प्रसिद्धि प्राप्त कर सके। आगे चलकर भी इनका उल्लेख प्राय केवल रामकथा विषयक सामग्री मे मिलता है। यदि कही इनका स्वतन्त्र उल्लेख होता है तो यह निश्चित रूप से एक अपेक्षाकृत अर्वाचीन रचना अथवा किसी प्रक्षेप मे है, जैसे लकावतार सूत्र मे।

रामायण की अतरग समीक्षा करने पर बहुत से विद्वान् इस परिणाम पर पहुँचते है कि अयोध्याकाण्ड की घटनाएँ अत्यन्त स्वाभाविक है किंतु दण्डकारण्य तथा लका की घटनाएँ अलौकिक और काल्पनिक प्रतीत होती है। वास्तव मे रामकथा के इन दो भागो मे अन्तर अवश्य पाया जाता है, लेकिन इसे समझने के लिए रामकथा के भिन्न-भिन्न आधार मानने की आवश्यकता नही है। **रामायण** के इस द्वितीय भाग का प्रधान विषय है स्त्रीहरण और उसके कारण युद्ध। अयोध्या से राम के निर्वासन के समान

१ दे० श्री क्षेत्रेश चट्टोपाध्याय, इलाहाबाद युनिवर्सिटी स्टडीज़, भाग १, पृ० ६७-१५६।

२ परवर्ती रचनाओ मे हनुमान् तथा वृषाकपि का सम्बन्ध अवश्य जोडा गया है (दे० ब्रह्मपुराण, ८४, १६)।

यह भी एक अत्यन्त साधारण घटना प्रतीत होती है। अत कथावस्तु के दृष्टिकोण से दो भागो मे कोई मौलिक अतर नही है। लेकिन इन दोनो भागो के वर्णन मे अतर का आ जाना एक प्रकार से अनिवार्य था। लोकप्रिय नायक को विकट जगलो मे निवास करना पडता है, एक क्रूर आदिवासी राजा उसकी पत्नी हर लेता है, और नायक असभ्य जातियो की सहायता से युद्ध करके उसे पुन प्राप्त करता है। इस कथानक के काव्यात्मक वर्णन मे अतिशयोक्ति का प्रयोग कितना स्वाभाविक था। प्रतिनायक की क्रूरता, सहायको की वीरता, युद्ध की तीव्रता आदि अकित करने के लिए किसी भी देश अथवा भाषा का कवि अनिवार्य रूप से अतिशयोक्ति का सहारा लेता है। कवि मात्र की यह विशेषता ध्यान मे रख कर रामकथा के दो सर्वथा भिन्न भाग मानने की कोई आवश्यकता नही पडती।

परिशिष्ट १

रामकथा का ऐतिहासिक आधार

१०५ डॉ० याकोबी केवल अयोध्याकाड की घटनाओ के लिए ऐतिहासिक आधार मानते है। लेकिन अयोध्याकाड तथा **रामायण** के अन्य काडो के कथानक मे कोई मौलिक अन्तर मानने की आवश्यकता नही है। यह सभवत प्रस्तुत अध्याय के विश्लेषण से स्पष्ट हो चुका है। अत समस्त **रामायण** की प्रधान कथा-वस्तु के लिए ऐतिहासिक आधार मानने मे कोई आपत्ति नही होनी चाहिए, यही अनेक विद्वानो का मत है।[1] **वाल्मीकि-रामायण** पढ कर ऐसा प्रतीत होता है कि कवि को अपने कथानक की ऐतिहासिकता के विषय मे कोई सदेह नही है। फिर भी डॉ० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या का कहना है कि राम की ऐतिहासिकता प्राचीन भारत के किसी भी गभीर विद्यार्थी को स्वीकार्य नही है।[2]

१०६ डॉ० वेबर के अनुसार **रामायण** का समस्त काव्य एक रूपक मात्र है, जिसके द्वारा दक्षिण की ओर आर्य सभ्यता और कृषि का प्रचार दिखलाया जाता है।[3] प्रधान पात्र सीता, जिसका हरण और पुन प्राप्ति काव्य की कथा-वस्तु है, कोई ऐतिहासिक व्यक्ति न होकर, खेत की सीता (लागलपद्धति) का मानवीकरण मात्र है, जिसे आर्य कृषि का प्रतीक मानना चाहिए। वैदिक सीता, कृषि की अधिष्ठात्री देवी और **रामायण** की सीता अभिन्न है। **रामायण** मे सीता के जन्म और तिरोधान सबधी वृत्तान्त इसकी ओर निर्देश करते है। उसकी बहन उर्मिला के नाम का अर्थ लहराता हुआ खेत समझना चाहिए। भवभूति के **उत्तररामचरित** मे भी उसके पिता जनक का

---

१ दे० एम० मोनियेर विलियम्स इडियन एपिक पोइट्री, पृ० ८।
एस० के० बेल्वलकर वही, पृ० ४०।
एम० नारायण शास्त्री इ० ए०, भाग २६, पृ० ८-२७।
२ दे० ज० ए० सो० ब०, भाग १६ (१९५०), पृ० ७६।
३ दे० ए० वेबर वही, पृ० १४ आदि और हिस्ट्री ऑफ इडियन लिटरेचर, पृ० १९२। ए० वेबर का मत अशत निम्नलिखित ग्रन्थो मे मिलता है—
रमेशचन्द्र दत्त वही, पृ० २११।
ए० बी० कीथ सस्कृत लिटरेचर, पृ० ४३।
जे० पिक्फर्ड महावीर चरित, लन्दन, १८७१, पृ० ८ (भूमिका)।

एक विशेषण 'सीरध्वज' मिलता हे, जो कृषि से सबध रखता है। (डॉ० बेलवल्कर[1] उसके पुत्र का भी उल्लेख करते है—कुश एक घास का नाम है और लव लुनने से आता हे)। आदिवासियो के आक्रमणो से इस सीता, आर्य कृषि के प्रतीक, की रक्षा राम पर निर्भर है। डॉ० वेबर के अनुसार राम दाशरथि और बलराम (हलभृत्) का सबध स्वय-सिद्ध है। प्रारभ मे ये एक थे, बाद के विकास मे वे दो भिन्न-भिन्न पात्रो के रूप मे प्रसिद्ध हो गए। राम का वनवास हेमत ऋतु का प्रतीक है, जब प्रकृति और विशेषकर कृपि का कार्य स्थगित होता हे।[2] इसके अतिरिक्त **महाभारत** मे जहा रामराज्य का वर्णन है, वहाँ इस बात का विशेष उल्लेख मिलता है कि कृषि की असाधारण उन्नति हुई थी। वास्तव मे महाभारत के द्रोणपर्व और शातिपर्व मे रामराज्य का वर्णन किया जाता है। इस वर्णन के अनेक श्लोक **रामायण** मे मिलते है (दे० रा० ६, १२८) शातिपर्व (अध्याय २९) मे कृषि का उल्लेख हुआ है

कालवर्षाश्च पर्जन्या सस्यानि रसवन्ति च।
नित्य सुभिक्षमेवासीद्रामे राज्य प्रशासति ॥४८॥
नित्यपुष्पफलाश्चैव पादपा निरुपद्रवा ।
सर्वा द्रोणदुघा गावो रामे राज्य प्रशासति ॥५२॥

'पर्जन्य यथासमय जल बरसाकर शस्य उत्पन्न करता था। इससे राम के राज्य-शासन के समय किसी भाति का दुर्भिक्ष नही पडता था वृक्ष सदा फल-फूलो से युक्त रहते थे, गाएँ घडे परिमाण दूध देती थी।'

१०७ डॉ० वेबर का उपर्युक्त मत बहुत समीचीन नही प्रतीत होता है। राम-दाशरथि और बलराम की अभिन्नता के लिए वे कोई प्रमाण नही दे सके है। इस अभिन्नता के विरुद्ध यह कहा जा सकता हे कि भारत मे ये दोनो भिन्न ही माने जाते है। वैदिक साहित्य मे अनेक राम नामक व्यक्तियो का उल्लेख हुआ हे, जिससे स्पष्ट है कि 'राम' नाम प्रचलित हो चुका था (दे० ऊपर अनु० ४)।

इसके अतिरिक्त राम की दक्षिण की यात्रा के फलस्वरूप रावण और वालि के स्थान पर उनके भाई विभीषण और सुग्रीव तो राजा बनाए जाते है, लेकिन दक्षिण की सभ्यता या कृपि मे कोई महत्वपूर्ण परिवर्त्तन हुआ हो, यह **रामायण** मे कही भी नही दिखलाया जाता।[3] अत हमे मानना पडेगा कि जिस उद्देश्य की पूर्ति दिखलाने के लिए

---

१ उत्तररामचरित भूमिका, पृ० ५६।

२ कितु भारतवष मे ग्रीष्मकाल मे कृषि नही हो सकती। हेमन्त मे अवश्य होती है।

३ ए० ए० मैक्डानल वही, पृ० ३११। एच० याकोबी वही, पृ० १२६।

यह काव्य लिखा गया है, वह पूरा न हो सका। यदि सचमुच कवि के मन मे कृपि तथा कृषि सबधी देवताओ का विचार सर्वोपरि था तो यह समझ मे नही आता कि कृषि को इतना कम महत्व क्यो दिया गया।[1] वास्तव मे रामकथा तथा कृषि का कोई विशेष सम्बन्ध मानने की कोई आवश्यकता नही है। यह भी स्मरण रखने योग्य है कि आर्यो के आगमन के पहले ही कृषि भारतवर्ष तथा दक्षिण मे विद्यमान थी।

१०८ जे० टी० ह्वीलर मानते है कि रामकथा ब्राह्म और बौद्ध धर्म दोनो के सघर्ष का प्रतीक है। दिनेशचन्द्र सेन का भी विश्वास हे कि वाल्मीकि ने बौद्ध भिक्षुपन की प्रतिक्रिया स्वरूप गृहस्थ जीवन का आदर्श पाठको के सामने रखने के उद्देश्य से **रामायण** लिखा था (इन दोनो मतो के खडन के लिए दे० ऊपर अनु० ९०)।

रामायण की परवर्त्ती प्रतीकवादी व्याख्याए सभवत साहित्य मे प्रयुक्त रूपको से विकसित हुई है। रामकथा-विषयक रूपको के कुछ उदाहरण निम्नलिखित है

तीर्त्वा मोहार्णव हत्वा रागद्वेषाश्च राक्षसान्।
शान्तिसीतासमायुक्त आत्मरामो विराजते॥ ५०॥

(शकराचार्यकृत आत्मबोध)

दशेन्द्रियानन घोर यो मनोरजनीचरम्।
विवेकशरजालेन शम नयति योगिनाम्॥

(सात्वत सहिता, अ० १२, १५१)

दर्पोदग्रदशेन्द्रियाननमनो नक्तचराधिष्ठिते
देहेऽस्मिन्भवसिंधुना परिगते दीनान्दशामास्थित।
अद्यत्वेहंनुमत्समेन गुरुणा प्रख्यापितार्थे पुमान्
लकारुद्धविदेहराजतनयान्यायेन लालभ्यते॥ ७२॥

(सकल्पसूर्योदय, अ० १)

आनन्दरामायण के विलासकाड के **देहरामायण** नामक तृतीय सर्ग मे रामकथा को समस्त घटनाओ का प्रतीकात्मक अर्थ प्रतिपादित किया गया है—**मनोदुर्वृत्तिघातश्च ताटिकाया वधोऽत्र स, मनोवेगस्य यो भग स धनुभग उच्यते, अविवेकवध प्रोक्तश्चात्र वालिवधस्त्वया, अज्ञानतरणोपय सेतुबधो महोदधौ, मदस्य निग्रहस्तत्र कुभकणवधस्त्वया, तत्राहकारघातश्च रावणस्य वधस्त्वया, हृदयाकाशगमनम् अयोध्यागमन पुन**। तुलसी साहब ने भी अपने **घटरामायन** मे रामकथा को शरीर के अन्दर ही अवतारित कर दिया है—"**घट में रावन राम जो लेखा। भरत सत्रगुन दसरथ पेखा**"

१ ई० डब्लू० हॉप्किस एपिक मिथोलॉजी, पृ० ११-१२।

(घटरामायण, पृ० ११)। बलरामदास का उडिया **ब्रह्माण्डभूगोल** देहरामायण, घटरामायण आदि की श्रेणी मे आता है।

येदातोरे सुब्बराव के अनुसार **रामायण** का अर्थ दार्शनिक है[1], **रामायण** के भौगोलिक स्थान सचमुच योगशास्त्र के चक्र है। ई० मूर भी रामकथा मे एक दार्शनिक शास्त्र का प्रतिपादन देखते है।[2]

इतना ही निश्चित है कि ये कल्पनाएँ आदिकवि के मन से कोसो दूर थी। इनमे इतना ही तत्व है कि ऐतिहासिक घटनाओ के साथ-साथ कवि निश्चित रूप से आज्ञाकारी राम, पतिव्रता सीता, भ्रातृ-भक्त लक्ष्मण आदि का आदर्श अपने पाठको के सामने रखना चाहता था। इसी तरह राम नैतिकता के प्रतीक बन गए है तथा रावण अधर्म का, लेकिन सारी कथा मे रूपक अथवा प्रतीक मात्र देखने के लिए कोई समीचीन कारण नही है।

१०९ रामकथा का ऐतिहासिक आधार मानते हुए भी एम्० वेकटरत्नम् का विश्वास है कि यह वास्तव मे मिस्र देश के रैमसेस नामक राजा का इतिहास है।[3] रैमसेस के विषय मे आधुनिकतम खोज के आधार पर जो कुछ ज्ञात हुआ है, उससे स्पष्ट है कि **वाल्मीकि-रामायण** से उस राजा का कोई सबध नही हो सकता। मिस्र देश की प्राचीनतम पौराणिक कथाओ के अनुसार नू (आकाश) तथा गेब (पृथ्वी) के सयोग से रा अथवा रे (सूर्य) उत्पन्न हुआ।[4] रैमसेस का अर्थ है—'रा ने उसे जन्माया' (मस धातु का अर्थ है जन्म लेना)।[5] रैमसेस (१२९८-१२३२ ई० पू०) मिस्र देश के महान् सम्राटो मे से एक है। अपने शासनकाल के पूर्वार्द्ध मे उसको हिटैटसघ के विरुद्ध युद्ध करना पडा। उसकी पहली विजय कादेश (सिरिया) मे हुई थी (१२९४ ई० पू०), लेकिन इसके पश्चात् भी १२७८ ई० पू० तक युद्ध होता रहा। अत मे रैमसेस ने विजय प्राप्त कर एक हिटैट की राजकन्या से विवाह किया और इसके बाद १२३२ ई० पू० तक एक विशाल राज्य का शातिपूर्वक शासन किया।[6]

---

१ दे० क्वार्टर्ली जर्नल मिथिक सोसाइटी भाग २२, पृ० ५१४।

२ दे० ई० मूर द हिन्दू पथेयॉन, पृ० ३२९ टि०।

३ दे० वेकटरत्नम् राम दि ग्रेटेस्ट फेरो ऑव ईजिप्ट, १९३४।

४ जे० वान्डिवे ला रलिजियाँ एजिपशियेन, पेरिस, १९४४।

५ दे० एटुडस भाग १७३ (१९२२), पृ० १४७।

६ ए० मोरे हिस्टवार दि लोरियन, पेरिस, १९३६, भाग २, पृ० ५४७ आदि।

परिशिष्ट २

वानर और राक्षस

११० रामकथा के वानर, ऋक्ष और राक्षस विंध्य प्रदेश तथा मध्य-भारत की आदिवासी अनार्य प्रजातिया थी। इसके विषय मे प्राय मतभेद नही है। यद्यपि वाल्मीकि-रामायण मे इन आदिवासियो को वास्तव मे वानर, ऋक्ष आदि कहा गया है, फिर भी आदि-काव्य के अनेक स्थलो से पता चलता है कि प्रारभ मे ये सब मनुष्य ही माने जाते थे[1]। रामायण के वानर मनुष्यो की तरह बुद्धिसम्पन्न है, मानवीय भाषा बोलते है, कपडे पहनते है, घरो मे निवास करते है, विवाह-सस्कार को मान्यता देते है और राजा के शासन के अधीन रहते है। इससे स्पष्ट है कि कवि की दृष्टि मे वे निरे वानर नही है। उनकी अपनी-अपनी सस्कृति और सामाजिक व्यवस्था है। वास्तव मे वे वानर, ऋक्ष आदि जनजातिया थे। 'वानर' नाम की उत्पत्ति की समस्या सुलझाने के लिए अनेक अनुमान प्रस्तुत किए गए है। सी० वैद्य के अनुसार वानर जाति के लोग सचमुच वानर के समान दिखलाई पडते थे और इससे उनका यह नाम पडा।[2] अन्य विद्वान् जैन रामायणो के अनुसार मानते है कि वानर, ऋक्ष आदि नाम उन जातियो की ध्वजा के कारण उत्पन्न हुए—'जिस जाति की ध्वजा पर बन्दर का चिह्न था, वह वानर जाति कहलाती थी, जिसकी ध्वजा पर रीछ का चिह्न था, वह रीछ कहलाती थी, जैसा आजकल रूसियो की ध्वजा पर रीछ तथा अग्रेज जाति की ध्वजा पर सिह का चिह्न होने से उन देशो के वीरो को ब्रिटिश लॉयन्स और रस्सियन बयर्स कहते हैं। जैनो की राम-रावण-कथा मे वानरचिह्नाकित ध्वजा मुकुटधारी जाति वानरवशीय कही गई है।[3] यह मत असभव नही कहा जा सकता है, फिर भी जैनियो ने अनेक स्थलो पर रामकथा में अनेक चित्य परिवर्त्तन किये हैं। अत जैन साहित्य का उपयोग करने मे हमे सतर्क रहना चाहिए (दे० ऊपर, पाँचवाँ अध्याय)। सब मे स्वाभाविक अनुमान

---

१ दे० रामायण ६, ६६, ५ और जी० रामदास, दि ऐबॉरिजिनल ट्राइब्स इन दि रामायण, मैन इन इडिया, भाग ५, पृ० २८-५५ और एबॉरिजिनल नेम्स इन दि रामायण, जर्नल बिहार-उडीसा रिसर्च सोसाइटी, भाग ११, पृ० ४१-५३।

२ दे० सी० वी० वैद्य वही, पृ० १५३।

३ दे० शिवनन्दन सहाय तुलसीदास, पृ० ४१६।

यह है कि आजकल के आदिवासियो के समान उन जातियो के विभिन्न कुल विभिन्न पशुओ और वनस्पतियो की पूजा करते थे। जिस कुल के लोग जिस पशु या वनस्पति की पूजा करते थे, वे उसी के नाम से पुकारे जाते थे। इस पशु अथवा वनस्पति को आजकल के विद्वान् 'टोटम' कहते है। आधुनिक भारत के आदिवासियो मे ऐसे 'टोटम' या गोत्र विद्यमान् हे, जिनका उल्लेख रामायण मे हुआ है, अर्थात् वानर, ऋक्ष (जाम्बवान) और गीध (जटायु, सम्पाति और रावण)। आर० वी० रसेल[1] के अनुसार बदर और रीछ तेरह सर्वाधिक प्रचलित टोटमो मे सम्मिलित है।

छोटानागपुर मे रहने वाली उरॉव[2] तथा मुण्डा[3] जातियो मे तिग्गा, हलमान, बजरग और गडी नामक गोत्र मिलते है, इन सब का अर्थ बन्दर ही है। इसी प्रकार रेड्डी[4], बरई, बसोर, भैना और खगार[5] जातियो मे भी **वानर-द्योतक** गोत्र मिलते हैं। सिहभूम की भुइया जाति हनुमान् के वशज होने का दावा करती है, वे अपने को पवन-वश कहकर पुकारते है।[6] 'हनुमान्' नाम वास्तव मे एक द्राविड शब्द 'आणमदि' अथवा 'आण्-मन्ति' का सस्कृत रूपान्तर मात्र प्रतीत होता है, अण् का अर्थ है नर, और मद का अर्थ है कपि (दे० ऊपर अनु० १०३)।

ऋक्ष सूचक गोत्र रेड्डी[7], बरई, गदबा, केवत, सुध[8] आदि जातियो मे मिलते है। इसी प्रकार भैना[9], उरॉव[10] और बिर्होर[11] जातियो मे **गिद्ध या गिधि** गोत्र प्रचलित है। ध्यान देने योग्य है कि उरॉव, असुर तथा खरिया आदि आदिम जातियो

---

१ दे० दि ट्राइब्स एण्ड कास्ट्स ऑव दि सेट्रल प्रॉविसेस, भाग १, पृ० ६०।

२ दे० शरच्चद्र राय दि उराओस ऑव छोटानागपुर (रॉची १६१५), पृ० २२।

३ दे० एन्साइक्लोपिडिया मुडारिका (किलि, गोत्र शब्द के अतर्गत)।

४ दे० सी० वॉन फरर-हाइमेडार्फ दि रेड्डीस ऑव दि बाइसन हिल्स, पृ० ३२६।

५ बरई, बसोर, भना, खगार के लिए दे० आर० वी० रसेल, वही, क्रमश भाग २, पृ० १६४, पृ० २१०, पृ० २२८, भाग ३, पृ० ४४१।

६ दे० डॉलटन एथनॉलॉजी ऑव बगाल, पृ० १४०।

७ दे० सी० वॉन फ्रूरर-हाइमेडार्फ वही।

८ बरई, गदबा, केवत और सुध के लिए दे० आर० वी० रसेल वही, क्रमश भाग २, पृ० १६४, भाग ३, पृ० १०, पृ० ४२४, भाग ४, पृ० ५१५।

६ दे० आर० वी० रसेल वही, भाग २, पृ० २२८।

१० दे० पी० डेहो रेलिजन एण्ड कस्टम्स ऑव दी उराओस, मेम्वायर्स ऑव दि एसियाटिक सोसाइटी ऑव बगाल, भाग १, पृ० १६०।

११ दे० शरच्चद्र राय दि बिर्होर्स, (राँची, १६२५), पृ० ६१।

की भाषा मे 'रावना' का अर्थ गीध ही है ।[1] हाल मे मुझे पता चला कि राँची जिले के रयडीह थाने के कटकयाँ गाव मे एक 'रावना' नामक परिवार अब तक विद्यमान है । यह गोत्र कम प्रचलित है, इसके स्थान पर प्राय 'गिद्धि' नाम चलता है । निष्कर्ष यह है कि 'हनुमान्' की तरह 'रावण' का नाम भी एक वास्तविक अनार्य नाम का संस्कृत रूपान्तर ही प्रतीत होता है । इसके अतिरिक्त रायपुर जिले मे रहने वाले गोंड अपने को रावण के वंशज मानते है ।[2] उराव भी मानते है कि रावण से उनकी जाति की उत्पत्ति हुई थी[3] और इसीलिए उनको 'उराव' नाम मिला था ।[4] इन सब बातो को ध्यान मे रखकर स्पष्ट है कि आदिवासियो का रामकथा के साथ संबंध अवश्य ही है तथा यही अधिक संभव प्रतीत होता है कि रामायण के वानर-ऋक्ष-गीध वास्तव मे वानर-ऋक्ष-गीध-गोत्रीय आदिवासी थे ।

१११ वैदिक साहित्य, विशेष करके अथर्ववेद मे रक्षस्, राक्षस, पिशाच आदि भूतो का उल्लेख मिलता है । ये मनुष्य के शत्रु है, इनके विरुद्ध **अथर्ववेद** मे बहुत से मंत्र दिए गए है । इसी तरह राक्षस एक प्रकार से अनिष्ट, अशुभ, हिंसा और पाप का प्रतीक बन गया था और बाद मे रावण के क्रूर और हिंसात्मक अनुयायियो को भी यह नाम मिला । **रामायण** मे राक्षसो का जो वर्णन किया जाता है, वह **ऋग्वेद** मे अनार्य दस्युओ के वर्णन से बहुत कुछ मिलता है । उनके मनुष्य होने का स्पष्ट उल्लेख मिलता है (द० ६, ३७, ३३) । कवि वास्तविक नामो से अपरिचित था । अत जो नाम मिलते है, वे सब के सब वर्णनात्मक है—कुंभकर्ण, मेघनाद, दशग्रीव, विभीषण, प्रहस्त (लंबे हाथ वाला) इत्यादि ।

११२ यह सब होते हुए भी रामायण मे कवि ने अद्भुत रस तथा अतिशयोक्ति का बार-बार सहारा लिया है और इस कारण रामकथा को काल्पनिक ठहराने के लिए समालोचको को आधार अवश्य मिलता है । रावण के दस सिर थे, हनुमान् समुद्र लाँघते है और आकाश मे उडकर ओषधि-पर्वत ले आते है, इस प्रकार के कथन बहुतायत से पाए जाते है । फिर भी रावण का केवल एक सिर था, ऐसा वर्णन भी **रामायण** के कई स्थलो पर मिलता है ।[5] दशग्रीव नाम पहले रूपक के रूप मे प्रयुक्त हुआ होगा (दशग्रीव

१ डब्लू० रूबेन उबर दि लितेरातूर देर वोरारिशे स्तेम्मे इंदियेस (बेर्लिन, १९५२), पृ० ४४ ।

२ दे० आर० वी० रसेल वही, भाग १, पृ० ४०२ ।

३ दे० पी० डेहो वही, पृ० १२२ ।

४ दे० शरच्चन्द्र राय दि उराओस पृ० १४ ।

५ उदा० ५, सर्ग १०, २२ और ४२, दे० चिन्ताहरण चक्रवर्ती इ० हि० क्वा०, भाग १, पृ० ७७९ और एस० एन० व्यास, ज० ऑ० इ०, भाग ४, पृ० १ ।

अर्थात् जिसकी ग्रीवा दश अन्य साधारण ग्रीवाओं के समान बलवान हो) और बाद मे वस्तुत दशग्रीव धारण करने वाले प्राणी के अर्थ मे लिया जाने लगा।

अथर्ववेद मे एक दशास्य (दशमुख), दशशीर्ष ब्राह्मण का उल्लेख हे।[१] इसका प्रभाव भी रावण के स्वरूप की कल्पना पर पडा, यह असभव नही कहा जा सकता है। उद्धरण इस प्रकार है

ब्राह्मणो जज्ञे प्रथमो दशशीर्षो दशास्य ।
स सोम प्रथम पपौ स चकारारस विषम् ।।

(अथर्ववेद ४, ६, १)

हनुमान् के समुद्रलघन की कथा सभवत किसी आश्चर्यजनक लघन के आधार पर उत्पन्न हुई है। जब स्पेन की सेना को मेक्सिको से हटना पडा तब अलवाराडो नामक सिपाही एक अत्यन्त चौडा नाला लाघने मे समर्थ हुआ था। यह देखकर मेक्सिको निवासी बोल उठे 'यह सचमुच सूर्य का पुत्र है'। इसी तरह हनुमान् की कथा भी उत्पन्न हुई होगी, यह सी० वी० वैद्य का अनुमान है।[२] मेरा अपना अनुमान है कि समुद्रलघन का वर्णन क्षेपक ही है (दे० आगे अनु० ५३१)।

१ इस उद्धरण के लिए मैं डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल का आभारी हूँ।

२ दे० वही, पृष्ठ १६०।

परिशिष्ट ३

रामकथा का भूगोल

११३ वाल्मीकि दक्षिण तथा मध्य भारत के भूगोल से अपरिचित थे, इसका प्रमाण **रामायण** को पढकर मिलता है। अत **रामायण** के भूगोल के विषय मे जो विस्तृत साहित्य प्रकाशित हो चुका है और हो रहा है, वह अधिकाश अनुमान और कल्पना के आधार पर निर्भर हैं।

सिंहलद्वीप का सबसे प्राचीन नाम 'टप्रोवाने' है, जो यूनानियो मे प्रचलित था। अशोक के शिलालेखो मे भी यह 'तम्बपण्णि' के नाम से पुकारा जाता है। इसके बाद सिंहल नाम प्रचलित होने लगा। इतना ही निश्चित है कि सस्कृत काव्य मे सिंहल तथा लका भिन्न-भिन्न देश समझे जाते थे। भवभूति, मुरारि, राजशेखर आदि सिंहलदेश को लका से भिन्न मानते है। वाराह-मिहिर की **वृहत-सहिता** मे भी दोनो का अलग उल्लेख है। ऐसा प्रतीत होता है कि बौद्ध साहित्य मे पहले-पहल सिंहल के लिए **लका** नाम प्रयुक्त होने लगा था (दे० दीपवश ६, १) और सभवत दशवी शताब्दी ई० से इसका प्रयोग व्यापक होने लगा।[1]

अधिकाश आधुनिक लेखक **रामायण** को लका तथा किष्किन्धा दोनो को मध्य भारत मे रखते है।[2]

१ दे० एच० याकोबी वही, पृ० ६०-६३।

२ दे० एम० बी० कीबे ई० हि० क्वा०, भाग ४, पृ० ६६३-७०२।
हीरालाल झा कामेमोरेशन वाल्यूम, पृ० १५१-६१, कोशोत्सव-स्मारकग्रथ, पृ० १५।
राय कृष्णदास राम-वनवास का भूगोल, ना० प्र० प०, वर्ष ५४, अक १ और ३, ऋष्यमूक-किष्किधा की भौगोलिक अवस्थिति, वही, भाग ५२, अक ४।
इस साहित्य के सिंहावलोकन के लिए दे० एपिक एण्ड पुरानिक स्टडीज। भडारकर इस्टिट्यूट, पृ० १३७-८।

अध्याय ८

प्रचलित वाल्मीकिकृत रामायण के मुख्य प्रक्षेप

११४ रामकथा के प्रारंभिक विकास की रूपरेखा अंकित करने के पूर्व प्रचलित **वाल्मीकि-रामायण** की अंतरंग समीक्षा द्वारा मुख्य प्रक्षिप्त अंशो का पता लगाना है। यही प्रस्तुत अध्याय का विषय है। चतुर्थ भाग मे प्रत्येक कांड के विश्लेषण के साथ-साथ गौण प्रक्षेपो का भी उल्लेख किया जायगा।

क—उत्तरकांड

११५ रामायण के प्राय समस्त समालोचक उत्तरकांड को प्रक्षिप्त मानते है और इसके लिए भिन्न-भिन्न तर्क प्रस्तुत करते हैं।[1] सब से महत्वपूर्ण प्रमाण इस प्रकार है

(१) वाल्मीकिकृत **रामायण** के तीन प्रचलित पाठो की तुलना करने से स्पष्ट होता है कि उत्तरकांड की रचना अन्य कांडो के पश्चात् हुई थी (दे० ऊपर अनु० २२-२६)।

(२) युद्धकांड के अंत मे जो फलश्रुति मिलती है, उससे यह प्रमाणित होता है कि इसके रचनाकाल तक **रामायण** की परिसमाप्ति यही मानी जाती थी (**रामायणमिदं कृत्स्नं**, दे० ६, १२८, ११७)।

(३) बालकांड के प्रथम सर्ग मे एक अनुक्रमणिका मिलती है, जिसमे केवल अयोध्याकांड से लेकर युद्धकांड तक के विषयो का उल्लेख किया जाता है। बाद मे इस अनुक्रमणिका की अपूर्णता का अनुभव हुआ और फलस्वरूप एक दूसरी अनुक्रमणिका की रचना की गई, जिसमे बालकांड की सामग्री के साथ-साथ उत्तरकांड का भी निर्देश मिलता है

स्वराष्ट्ररंजनं चैव वैदेह्याश्च विसर्जनम् ॥ २८ ॥
अनागतं च यत्किंचिद्रामस्य वसुधातले।

---

१ दे० एच० याकोबी डस रामायण, पृ० २८ आदि, ६४
हृदयनारायण सिंह क्या उत्तरकांड वाल्मीकि-रचित है ?
नागरीप्रचारिणी पत्रिका १७, पृ० २५६-२८६।
ज० ऑ० रि०, भाग १८, पृ० १५७।

तच्चकारोत्तरे काव्ये वाल्मीकिभगवानृषि ॥ २६ ॥

(बडौदा सस्करण, सर्ग ३)

इसके अगले[1] सर्ग मे भी उत्तरकाण्ड का उल्लख है

प्राप्तराज्यस्य रामस्य वाल्मीकिर्भगवानृषि ।
चकार चरित कृत्स्न विचित्रपदमात्मवान् ॥ १ ॥
कृत्वा तु तन्महाप्राज्ञ सभविष्य सोत्तरम ।

(बडौदा स०, सर्ग ४) ।

इन दो उद्धरणो से स्पष्ट है कि बालकाण्ड की इस भूमिका के रचनाकाल मे उत्तरकाण्ड की सृष्टि प्रारभ हो चुकी थी । फिर भी **सीतात्याग** को छोडकर किसी अन्य विषय का उल्लेख न होने के कारण ऐसा प्रतीत होता हे कि उत्तरकाण्ड उस समय अपना वर्तमान रूप और विस्तार नही प्राप्त कर पाया था । इस तर्क की पुष्टि इससे भी होती हे कि बाद मे **वाल्मीकि-रामायण** के उदीच्य पाठ मे एक तीसरी अनुक्रमणिका जोडी गई ह, जिसमे सात काण्डो की सामग्री का ध्यान रखा जाता है (दे० ऊपर अनु० २३) ।

(४) उत्तरकाण्ड की रचना-शैली अन्य प्रामाणिक काडो की शैली से सर्वथा भिन्न है । प्रारभिक ३३ सर्गों मे रावण तथा हनुमान् की कथाओ के बाद ही रामचरित का वर्णन आगे बढा दिया गया है और तब भी असगत अतकथाओ के कारण कथानक मे कोई प्रवाह नही हे (दे० नृग, निमि, ययाति, श्वेत, इन्द्र, इल आदि के वृत्तान्त) । शेष सामग्री, जो आधे मे भी कम है, रामचरित स सबध तो रखती है, लेकिन इसमे भी एकता का अभाव खटकता है । सीतात्याग, शत्रुघ्न-चरित, शम्बूक-वध, राम का अश्वमेध, सीता का तिरोधान आदि मे कोई विशेष सबध नही है । इसके अतिरिक्त उत्तरकाड मे वर्णित अवतारवाद की व्यापकना भी इस काड को बाद की रचना सिद्ध करती ह ।

(५) उत्तरकाड तथा अन्य काडो मे पारस्परिक विरोधी बाते भी मिलती है । उदाहरणाथ युद्धकाड के अतिम सर्ग मे सुग्रीव, विभीषण आदि के चले जाने का स्पष्ट उल्लेख हुआ हे । फिर भी उत्तरकाण्ड मे पुन इनके प्रस्थान का वर्णन किया जाता है (दे० सर्ग ४०) ।

उत्तरकाड मे वेदवती का वृत्तान्त दिया जाता है (दे० सर्ग १७) । इसके अनुसार सीता अपने पूर्वजन्म मे वेदवती ही थी । यदि यह वृत्तान्त प्रक्षिप्त न होता तो

१ जिस श्लोक मे रामायण का विस्तार २४००० श्लोक बताया गया था, उसे बडौदा के प्रामाणिक सस्करण मे प्रक्षिप्त माना गया है ।

इसका उल्लेख **रामायण** के अन्य काडो मे, जहाँ सीता-जन्म का प्रसग आया है, अवश्य किया जाता ।

(६) वाल्मीकिकृत **रामायण** के इन अतरग प्रमाणो के अतिरिक्त एक बात और ध्यान देने योग्य है। **महाभारत** का रामोपाख्यान रामायण के किसी प्राचीन रूप पर निर्भर है (दे० ऊपर अनु० ४८) । इसके प्रारभ मे रावणचरित की कुछ सामग्री अवश्य मिलती है किंतु वह **आदिरामायण** की तरह रामाभिषेक तथा रामराज्य की स्तुति पर समाप्त होती है । **आदिरामायण** तथा रामोपाख्यान के कारण एक काव्य-परम्परा चल पडी और शताब्दियो तक चलती रही, जिसके अनुसार राम-चरित का वर्णन उनके अभिषेक पर समाप्त किया जाता है ।

उदाहरणार्थ—**रावणवह, भट्टिकाव्य,** कुमारदासकृत **जानकीहरण,** अभिनन्द-कृत **रामचरित,** भासकृत **अभिषेक नाटक,** मुरारि का **अनर्घराघव,** राजशेखर का **बालरामायण,** कम्बनकृत प्राचीनतम **तमिल रामायण,** तेलगु **दिवपद रामायण** तथा जावा का **रामायण ककविन** ।

ख—बालकाड

११६ उत्तरकाड की भाति बालकाड भी **आदिरामायण** का अग नही था । डॉ० याकोबी[1] की यह धारणा सिद्ध करने के लिए निम्नलिखित प्रमाण दिए जा सकते है -

(१) **रामायण** की पहली अनुक्रमणिका (सर्ग १) मे बालकाड की सामग्री का सर्वथा अभाव है । इस अभाव को पूरा करने के उद्देश्य से एक दूसरी अनुक्रमणिका की रचना कर ली गई है (दे० ऊपर अनु० ११५) । सुन्दरकाण्ड के ३१ वे सर्ग मे हनुमान् सीता को रामायण का सार सुनाते है । उसमे दशरथ तथा राम के परिचय के पश्चात् तुरत अयोध्याकाण्ड की कथावस्तु प्रारभ हो जाती है । रामायण के आमुख के विषय मे आगे विचार किया गया है—दे० अनु० १३६ ।

(२) बालकाड की शैली उत्तरकाड की शैली से बहुत कुछ मिलती-जुलती है । इसका प्राय आधा भाग रामचरित से सम्बन्ध नही रखता । सगर-कथा, समुद्रमथन, विश्वामित्र की कथा आदि वृत्तान्त पुराणो की शैली पर लिखे गए है ।[2] **रामायण** के प्रामाणिक काडो मे कही भी ऐसी पौराणिक कथाएँ नही मिलती ।

(३) बालकाड मे जो सामग्री रामचरित से सम्बन्ध रखती है इसका आगे चल-कर प्रामाणिक काडो मे कही भी उल्लेख नही मिलता । यही नही, बल्कि इससे विरोधी

१ दे० एच० याकोबी वही, पृ० ५० आदि ।

२ दे० वी० लेस्नी उबर डस पुराण-आर्टिगे गेप्रेग डेस बालकाड, जर्मन ओरियेन्टल जर्नल, भाग ६७, पृ० ४६७-५०० ।

बाते भी पाई जाती है । बालकाड मे लक्ष्मण और उर्मिला का विवाह वर्णित है, लेकिन अयोध्याकाड आदि मे कही भी उर्मिला का उल्लेख नही होता (यद्यपि तीनो निर्वासितो का प्रस्थान विस्तार से चित्रित किया गया है), वरन् अरण्यकाड मे लक्ष्मण को अविवाहित भी कहा जाता है (**अकृतदार** दे० ३, १८, ६) ।

अयोध्याकाड मे भरत की अवस्था के विषय मे कहा जाता है

बाल एव तु मातुल्य भरतो नायितस्त्वया । (२, ८, २८) ।

लेकिन बालकाड मे युधाजित् मिथिला मे पहुँचकर कहते हैं कि कैकय भरत को सस्त्रीक देखना चाहते है । इसके बाद चार भाइयो के विवाह का वर्णन किया जाता हे, लेकिन मिथिला मे युधाजित् का और उल्लेख नही होता । बालकाड के अन्तिम सर्ग मे दशरथ भरत को युधाजित् के साथ राजगृह भेज देते है और इसके बाद बहुत समय वीत जाने का उल्लेख है (**बहूनृतून्** दे० १,७७,२५) । फिर भी रामाभिषेक की तैयारी के समय भरत को बालक कहा गया है ।

ग—अवतारवाद

११७ रामकथा के विकास के दृष्टिकोण से प्रचलित वाल्मीकिकृत **रामायण** की सब से महत्वपूर्ण प्रक्षिप्त सामग्री अवतारवाद से सबध रखती है । अगले अध्याय मे अवतारवाद की उत्पत्ति और रामकथा के विकास मे उसके महत्व पर विचार किया जाएगा । प्रचलित **रामायण** मे इसके विस्तार तथा इसे प्रक्षिप्त मानने के कारण पर विचार करना ही इस परिच्छेद का उद्देश्य है[1] । प्रस्तुत विश्लेषण की विशेषता यह है कि इसमे **रामायण** की अवतारवादी समस्त सामग्री के साथ-साथ उसकी भिन्न-भिन्न पाठो मे उपस्थिति अथवा अभाव का उल्लेख भी किया जाता है ।

(१) सामग्री का निरूपण

११८ **बालकाड** । (१) पुत्रेष्टि-यज्ञ (सर्ग १५-१८), इसमे विष्णु का अवतार लेना विस्तार से वर्णित है । ये सर्ग बालकाड के प्रक्षेप है (दे० आगे अनु० ३३३) ।

(२) परशुराम राम से कहते है कि मैं आप को विष्णु मानता हूँ । आप से पराजय पाना कोई लज्जा की बात नही है । ये श्लोक तीनो पाठो मे पाए जाते है ।

---

१ दे० एच० याकोबी वही, पृ० १३८ ।
ई० डब्ल्यू हाप्किन्स एपिक मिथोलॉजी, पृ० २११ ।
जे० म्यूर ओरिजिनल सस्कृत टेक्स्ट्स, (दूसरा सस्करण), भाग ४, पृ० ४४१ ६१, और नोट डी ।
महाराष्ट्रीय श्री रामायण समालोचना, दूसरा भाग, पृ० ३४५-५० ।

अक्षय्य मधुहन्तार जानामि त्वा सुरेश्वरम् ॥ १७ ॥
न चेय तव काकुत्स्थ व्रीडा भवितुमर्हति ।
त्वया त्रैलोक्यनाथेन यदह विमुखीकृत ॥१६॥ (सर्ग ७६)

यद्यपि बालकाड स्वय प्रक्षिप्त है, फिर भी इसमे केवल इन दो स्थलो पर राम के अवतार होने का उल्लेख है। दाक्षिणात्य पाठ मे राम के दिव्य तेज के विषय मे जो वाक्याश—**दिव्येन स्वेन तेजसा** (१८, ६) मिलता है वह गौडीय पाठ मे अपने मूल रूप मे **सहजेन च तेजसा** (२२,१०) सुरक्षित है।

मूल बालकाड के रचनाकाल मे राम अवतार नही माने जाते थे, इसके बालकाड मे स्पष्ट प्रमाण मिलते है। राम का उत्कर्ष प्रथम सर्ग का वर्ण्य विषय है, फिर भी इसमे उनके अवतार होने का उल्लेख नही है, केवल विष्णु से उनकी तुलना की जाती है (**विष्णुना सदृशो वीर्य्ये**-श्लोक १८) और अन्त मे कहा जाता है कि राम अपना राज्य भोग कर ब्रह्मलोक जायँगे—

रामो राज्यमुपासित्वा ब्रह्मलोक प्रयास्यति । (श्लोक ६७)

यदि कवि राम को विष्णु का अवतार मानता होता तो उनकी इहलीला समाप्त होने पर उनके ब्रह्मलोक जाने का उल्लेख नही करता। इस तर्क की सगति इससे स्पष्ट है कि उदीच्य पाठ मे "**ब्रह्मलोक**" के स्थान पर "**विष्णुलोक**" रखा गया है (दे० बडोदा सस्करण के पाठान्तर)।

विश्वामित्र राम से ताटका के वध करने का अनुरोध कर विष्णु द्वारा भृगु-पत्नी के वध का उदाहरण देते है (२५,२१) तथा सिद्धाश्रम के विषय मे कहते है कि विष्णु ने वहाँ तप किया था।

इह राम महाबाहो विष्णुर्देवनमस्कृत ।
वर्षाणि सुबहूनीह तथा युगशतानि च ॥ २ ॥
तपश्चरणयोगार्थमुवास सुमहातपा । (सर्ग २६)

इससे स्पष्ट है कि विश्वामित्र राम के अवतार होने से अनभिज्ञ है।

११६ अयोध्याकाड। प्रथम सर्ग के ३५ प्रारम्भिक श्लोक प्रक्षिप्त है (दे० आगे अनु० ४३१)। इनमे राम के अवतार होने का उल्लेख है

स हि देवैरुदीर्णस्य रावणस्य वधार्थिभि ।
अर्थितो मानुषे लोके जज्ञे विष्णु सनातन ॥ (१, ७)

यह श्लोक तीनो पाठो मे मिलता है। इसके अतिरिक्त अयोध्याकाड मे अन्यत्र रामावतार का निर्देशमात्र भी नही मिलता। 'लोकनाथ' (११०, २) राम के लिए प्रयुक्त हुआ है लेकिन यह राजा की भी उपाधि है और जिस सर्ग मे यह शब्द प्रयुक्त हुआ है, वह भी प्रक्षिप्त है (दे० आगे अनु० ४३१)।

१२० **अरण्यकाण्ड** । (१) राम के पराक्रम का वर्णन करते हुए अकपन कहते है कि राम समस्त लोको का नाश कर सब की पुन सृष्टि करने मे समर्थ है—

सहृत्य वा पुनर्लोकान्विक्रमेण महायशा ।
शक्त श्रेष्ठ स पुरुष स्रष्टु पुनरपि प्रजा ॥२६॥ (सर्ग ३१)

यह प्रसग दाक्षिणात्य पाठ मात्र मे विद्यमान है ।

(२) दाक्षिणात्य पाठ मे लक्ष्मण राम के दिव्य तथा मानवीय पराक्रम का उल्लेख करते है—**दिव्य च मानुष चैवनात्मनश्च पराक्रमम** (६६, १६)

लेकिन गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठो मे राम के दिव्य तथा मानुषिक ग्रस्त्रा का उल्लेख है—

दिव्य त्व मानुष चास्त्रमात्मनश्च पराक्रम
(गो० रा० ३, ७१, १६)

(३) दाक्षिणात्य पाठ मे शबरी राम को देववर कहती है—**त्वयि देववरे राम पूजिते पुरुषषभ** (दा० रा० ३, ७४, १२) । परन्तु ग्रन्य पाठो मे इस श्लोक का सर्वथा ग्रभाव हे ।

(४) एक ग्रन्य स्थल पर (जो तीनो पाठो मे मिलता है) राम सारा जगत् नष्ट करने की धमकी देते है (दे० दा० रा० ३, ६४, ७०), लेकिन इसमे उनके ग्रवतार की ग्रोर निर्देश देखना ग्रनावश्यक हे । यह तो उनको दिए हुए दिव्य ग्रस्त्रो का प्रभाव माना जा सकता है ।

१२१ **किष्किधाकाड** । इस काड मे ग्रवतार सम्बन्धी कोई सामग्री नही मिलती । सुग्रीव तो लक्ष्मण से राम के विषय मे 'तस्य देवस्य' शब्द का प्रयोग करता है (३६, ६), लेकिन इसमे ग्रवतारवाद की भावना देखना व्यर्थ है । ग्रादरार्थ इस शब्द का राजाग्रो, ब्राह्मणो ग्रादि के लिए प्रयोग होना हे ।

१२२ **सुन्दरकाड** । (१) दाक्षिणात्य तथा पश्चिमोत्तरीय पाठ के ग्रनुसार हनुमान् ग्रशोकवन मे प्रवेश करने के पहले देवताग्रो की तथा राम-लक्ष्मण ग्रौर सीता की स्तुति करते है—

नमोऽस्तु रामाय सलक्ष्मणाय देव्यै च तस्यै जनकात्मजायै ।
नमोऽस्तु रुद्रेन्द्रयमानिलेभ्यो नमोऽस्तु चन्द्राग्निमरुद्गणेभ्य ॥
(दा० रा० ५, १३, ५७)

न केवल इस दीर्घ छन्द का, लेकिन सारे प्रसङ्ग (दा० रा० ५, १३, ५४-६७) का गौडीय पाठ मे ग्रभाव है ।

(२) हनुमान्-रावण सवाद का एक ग्रश (दा० रा० ५, ५१, ३६-४५) गौडीय

तथा पश्चिमोत्तरीय पाठो मे नही मिलता। इसमे हनुमान् राम के विषय मे कहते है कि वह विष्णुतुल्यपराक्रम, सर्वलोकेश्वर, लोकत्रयनाथ आदि है।

१२३ **युद्धकाड**। उत्तरकाड के बाद इसमे अवतारवादी सामग्री सबसे अधिक मिलती है। यह अस्वाभाविक भी नही प्रतीत होता है क्योकि युद्धकाड सबसे अधिक विस्तृत है तथा इसमे अपेक्षाकृत अधिक प्रक्षेप भी जोडे गए हैं।

(१) रावण से युद्ध न करने का अनुरोध करते हुए मत्री कहता है

लघन च समुद्रस्य दर्शन च हनूमत।
वध तु रक्षसा युद्धे क कुर्यान्मानुषो युधि॥

(दा० रा० ३४, २२, अन्य पाठो मे भी है)

डॉ० याकोबी के अनुसार यह सर्ग एक विस्तृत प्रक्षेप (सर्ग २३-४०) मे आया है (दे० आगे अनु० ५६२)।

(२) सुग्रीव विभीषण से कहते है कि राम और लक्ष्मण गरुड पर अधिष्ठित है

गरुडाधिष्ठितावेताव् भौ राघवलक्ष्मणौ। (दा० रा० ५०, २२)

यह श्लोक अन्य दोनो पाठो मे नही मिलता।

(३) सर्ग ५६ अनेक कारणो से प्रक्षिप्त माना जाता है (दे० आगे अनु० ५६३)। इसमे दो स्थलो पर कहा गया है कि लक्ष्मण तब सज्ञा प्राप्त करते है जब वह अपने विष्णु का अश होने का स्मरण करते है (दे० दा० रा० ६, ५६, ११० १२० तथा अन्य पाठो के समानान्तर स्थल)।

(४) मदोदरी-विलाप तीनो पाठो मे मिलता है। दाक्षिणात्य पाठ मे इसका विस्तार १२६ श्लोक का है, गौडीय पाठ मे ८२ का तथा पश्चिमोत्तरीय पाठ मे केवल ६३ का। तीनो मे राम को विष्णु का अवतार कहा गया है, लेकिन दाक्षिणात्य पाठ के जिन श्लोको मे इसका उल्लेख हुआ है, वे अन्य पाठो मे नही मिलते और अन्य पाठो के अवतारसबन्धी श्लोक दाक्षिणात्य मे नही पाये जाते है। उदाहरणार्थ—

गौडीय पाठ मे

अथवा रामरूपेण विष्णश्च स्वयमागत।
तव नाशाय मायाभि प्रविश्यानुपलक्षित॥ (९५, ६)

दाक्षिणात्य पाठ मे

अथवा रामरूपेण कृतान्त स्वयमागत।
माया तव विनाशाय विधायाप्रतितर्किताम्॥ (१११, ६)

इससे यह ध्वनि निकलती है कि स्वतत्र रूप से तीनो पाठो मे अवतारवादी सामग्री बाद मे आ गई है।

(५) अग्निपरीक्षा के समय देवता आकर राम की विष्णुरूप मे स्तुति करते है (दे० दा० रा० सर्ग ११७ तथा अन्य पाठो के समानान्तर स्थल)। इस सर्ग के प्रक्षेप होने मे कोई सदेह नही है (दे० आगे अनु० ५६५) । इसमे सीता और लक्ष्मी की अभिन्नता का भी उल्लेख है (दे० श्लोक २७) ।

(६) दाक्षिणात्य पाठ मे दशरथ राम से कहते है कि वह पुरुषोत्तम ही है (दे० ११६, १७)—

इदानी च विजानामि यथा सौम्य सुरेश्वरै ।
वधाय रावणस्येह पिहित पुरुषोत्तमम् ॥

गौडीय पाठ मे इस श्लोक मे अवतार का उल्लेख नही है—

इदानी च विजानामि यथा सौम्य सुरेश्वरै ॥ १८ ॥
वधाय रावणस्येह त्व वनवासाय दीक्षित । (सर्ग १०४)

दोनो की तुलना करने से स्पष्ट है कि किस तरह श्लोक को बदल कर अवतारवादी सामग्री जोडी गई है ।

इसके बाद दशरथ लक्ष्मण को भी सबोधित करके राम को पुरुषोत्तम, अक्षर ब्रह्म आदि मानते है । यह अग तीनो पाठो मे तो मिलता है, लेकिन वह राम-दशरथ-सवाद का अनुकरण मात्र प्रतीत होता है (दे० ११९, २७-३५) ।

(७) दाक्षिणात्य तथा पश्चिमोत्तरीय पाठ की फलश्रुति मे विष्णु और राम की अभिन्नता मानी जाती है—

प्रीयते सतत राम स हि विष्णु सनातन ।
आदिदेवो महाबाहुर्हरिर्नारायण प्रभु ॥ (दा० रा० १२८, ११७)

गौडीय पाठ मे यह श्लोक नही मिलता ।

(८) उपर्युक्त उद्धरणो के अतिरिक्त कुछ और सामग्री का उल्लेख करना है, जो दाक्षिणात्य पाठ म नही मिलती—

पश्चिमोत्तरीय पाठ मे, नागपाश के वृत्तान्त मे, नारद राम के पास पहुँचकर उनको उनके नारायणत्व का स्मरण दिलाते ह (दे० प० रा० ६, २७, ७-४१) ।

गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठो मे एक सर्ग मिलता है, जिसम रावण से अनुरोध किया गया है कि वह राम से युद्ध न करे क्योकि राम मनुष्य नही है (दे० गौ० रा० सर्ग ३३, प० रा० सर्ग ३५) ।

गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठो मे कुम्भकर्ण का एक भाषण उद्धृत है, जिसमे वह कहता है कि नारद ने उसे विष्णु के एक अवतार द्वारा रावण-वध का रहस्य बतलाया था (दे० गौ० रा० सर्ग ६०, प० रा० सर्ग ४१) ।

मम पृष्ठं समारुह्य राक्षसं शास्तुमर्हसि ।। १२२ ।।
विष्णुर्यथा गरुत्मन्तमारुह्यामरवैरिणम् । (६, ५६)

राम का दूत बनकर हनुमान् रावण से कहते है कि मैं विष्णु की ओर से नही आया हूँ, बल्कि राम की ओर से--

विष्णुना नास्मि चोदितः ।। १३ ।।
केनचिद्रामकार्येण आगतोऽस्मि तवान्तिकम ।। १८ ।। (रा० ५, ५०)

इसी तरह और उदाहरण दिए जा सकते है । अगस्त्य राम को विष्णु का धनुष देते हुए राम और विष्णु की अभिन्नता से परिचित नही है---

इदं दिव्यं महच्चापं हेमवज्रविभूषितम् ।
वैष्णवं पुरुषव्याघ्र निर्मितं विश्वकर्मणा ।। ३२ ।। (३, १२)

१२७ उपर्युक्त तर्क राम पर भी लागू होता है । राम न केवल नारायण तथा मधुसूदन (दे० २, ६, ३ ७) से प्रार्थना करते है, विधाता के विरुद्ध अपराध करने से डरते है (दे० २, २२, १८), अधर्म और परलोक के भय से राज्याधिकार नही प्राप्त करते (२, ५३, २६), वरन् वह अपने-आप को साधारण मनुष्य समझ कर विश्वास करते है कि पूर्वजन्म के किए हुए पापो का मुझे इसी जन्म मे फल भोगना है

पूर्वं मया नूनमभीप्सितानि पापानि (३, ६३, ४)
किं मया दुष्कृतं कर्म कृतमन्यत्र जन्मनि । (६, १०१, १८)

रावणवध के बाद राम सीता से कहते है

या त्वं विरहिता नीता चलचित्तेन रक्षसा ।
दैवसंपादितो दोषो मानुषेण मया जितः ।। ५ ।। (६, ११५)

इसके अतिरिक्त अवतारवाद की भावना की नवीनता ब्रह्मा के प्रति राम की उक्ति से स्पष्ट है---'मै तो अपने-आप को मनुष्य, दशरथ का पुत्र, समझता हूँ । वास्तव मे मै कौन हूँ, कहा से आया हूँ, इसे आप मुझसे कहिए'

आत्मानं मानुषं मन्ये रामं दशरथात्मजम् ।
सोऽहं यश्च यतश्चाहं भगवांस्तद् ब्रवीतु मे ।। (६, ११७, ११)

१२८ ऊपर इसका उल्लेख हुआ है कि **रामायण** के अनेक पात्र राम की तुलना विष्णु से करते है । इसका अर्थ यह है कि वे राम और विष्णु को भिन्न समझते है । अन्य स्थलो पर भी कवि स्वय इस तुलना का प्रयोग करते है (१, ७८, २६, ६, ५६, १२५) अथवा अन्य पात्रो द्वारा करवाते है अनसूया (२, ११८, २०), देवता (३, २३, २६, ३, २४, २२, ३, ३०, ३२), अयोध्या-निवासी (२, २, ४३) । न केवल राम की वरन् अन्य पात्रो की भी तुलना विष्णु से की जाती है । उदाहरणार्थ रावण

(७, २०, ५), अतिकाय (६, ७१, ८), इन्द्रजित् (६, ७३, ७), हनुमान् (६, ५६, ३८) ।

दूसरी ओर राम की तुलना अन्य देवताओ से भी की जाती है—इन्द्र, ब्रह्मा (१, १, १३, १, ७८, २५, २, ३०, २७, २, ८६, २८, ३, २३, ४, ४, २६, २ आदि), रुद्र (४, १६, ३८ आदि), बृहस्पति (१, १, ३२, १, १, ३६, २, २, ३० आदि, कुबेर या वैश्रवण (२, १६, ८, १, १, १६, २, १६, ४६ आदि), वरुण (३, ३७, ३ आदि), यम (१, १, १६), कामदेव (३, ३४, ६ आदि), अग्नि (५ ३६, ५३), यम (२, १, ३६), पर्जन्य (२, १, ३६, २, ३, २६) ।

विष्णु तथा इन्द्र मे जो तुलना की गई है, उससे स्पष्ट है कि **आदिरामायण मे** विष्णु की अपेक्षा इन्द्र का स्थान ऊँचा माना गया था । राम की तुलना विष्णु से १८ बार की जाती है, इन्द्र से ७७ बार । कई स्थलो पर राम तथा लक्ष्मण की तुलना क्रमश इन्द्र तथा विष्णु से की गई है, जिससे स्पष्ट है कि विष्णु की अपेक्षा इन्द्र श्रेष्ठ माने जाते है (६, ८६, १२, ६, ३३, २८, ३, ६८, २८) । एक उदाहरण पर्याप्त होगा—

ततो राममभिक्रम्य सौमित्रिरभिवाद्य च ।
तस्थौ भ्रातृसमीपस्थ शक्रस्येंद्रानुजो यथा ॥ (६, ९१, ४)

इस उद्धरण मे वैदिक साहित्य के अनुसार विष्णु इन्द्र के अनुज माने जाते है । वैदिक साहित्य के अनुसार भी प्रामाणिक **आदिरामायण** मे इन्द्र सर्वश्रेष्ठ देवता थे । राम की विजय इन्द्र की सहायता से होती है (दे० ६, १०२), यह भी इन्द्र की श्रेष्ठता सूचित करता है ।

अरण्यकाड मे इसका एक ज्वलत उदाहरण और मिलता है । इन्द्र शरभग से बातचीत करते हुए और राम को आते देख कर साथ के देवताओ से कहते है—'राम इधर आ रहे है । उनके यहा आने के पूर्व ही हम लोग यहाँ से चले जाएँ, क्योकि राम मुझको देखने के योग्य नही है । जब राम रावण पर विजय प्राप्त करेगे तब उनकी मुझसे भेट होगी' (दे० रा० ३, ५, २२) ।

गौडीय पाठ इससे अधिक सक्षिप्त है

यास्याम्यहमय रामो यावन्मा नाभिभाषते ।
कृतार्थमेनमविराद द्रष्टास्म्यहमरिंदमम ॥ (गौ० रा० ३, ९, १७)

इस वृत्तान्त से जो ध्वनि निकलती है, वह विष्णु-नारायण-अक्षर ब्रह्म के अवतार राम (६, ११७) की भावना से कितनी दूर है ।

अध्याय ६

रामकथा का प्रारंभिक विकास

क—रामकथा-संबंधी गाथाएं और आख्यान-काव्य

१२६ वैदिक साहित्य मे आख्यान इतिहास तथा पुराण मिलते है। ये ब्राह्मणो के अर्थवाद के एक आवश्यक अग समझे जाते थे। प्राचीन काल से धार्मिक सस्कारो तथा यज्ञो के अवसर पर ऐतिहासिक तथा पौराणिक इन्हे सुनाते थे[1]। अर्वाचीन वैदिक साहित्य मे ये पाँचवे वेद कहे जाते है—**अथर्वण चतुर्थम्, इतिहास-पुराण पचमम** (छान्दोग्य उप० ७, १, २)॥

आख्यानो के गद्य के साथ जो पद्य दिया जाता था, उसे गाथा कहा गया है। प्रारभ से ही दानस्तुति-स्वरूप 'नाराशसी' गाथाओ का उल्लेख मिलता हे (दे० ऋग्वेद १०, ८५, ६) और इसके विषय मे कहा जाता है कि ये झूठी है ('गाथानृत नाराशसी', दे० काठक सहिता १४, ५)। इस नाराशसी गाथा-साहित्य के रचयिता तथा रक्षक राजदरबारो मे रहनेवाले सूत थे। इनके अतिरिक्त कुशीलव जनसाधारण मे इन गीतो का प्रचार करते थे[2]।

१३० वाल्मीकि के पूर्व रामकथा सबधी गाथाएँ प्रचलित हो चुकी थी। इसका प्रमाण हमे बौद्ध तिपिटक मे मिलता है। एक ओर रामकथा सम्बन्धी गाथाएँ **रामायण** पर नही निर्भर हो सकती हे और दूसरी ओर बौद्ध गाथाओ मे जो रामकथा सबधी सामग्री मिलती है, वह **रामायण** के आधार के लिए पर्याप्त नही है। अत रामायण तथा रामकथा-विषयक बौद्ध गाथाए दोनो प्राचीन रामकथा सबधी आख्यान-काव्य पर निर्भर हे (दे० ऊपर अनु० ८६)। **दशरथ-जातक** की वर्तमान कथा मे जो 'पौराणिक पडिता' शब्द आए हे, इससे भी इस निर्णय की पुष्टि होती है। इसके अतिरिक्त हरिवश के एक श्लोक मे रामकथा के इस मूलस्रोत का उल्लेख मिलता हे। रामकथा के अत्यन्त सक्षिप्त वर्णन के पश्चात् इस प्रकार लिखा है—

गाथा अप्यत्र गायति ये पुराणविदो जना।
रामे निबद्धतत्त्वार्था माहात्म्यं तस्य धीमत ॥ (१, अध्याय ४१, १४६)

---

१ दे० शतपथ ब्राह्मण १३, ४, ३, शाखायन गृ० सू० १, २२, ११ आदि।
२ दे० एम्० विंटरनित्स हि० इ० लि० भाग १, पृ० ३१४।

इसमे अवश्य **रामायण** की ओर निर्देश देखा जा सकता है। फिर भी इसमे **रामायण** के पूर्व की प्राचीन गाथाओ का निर्देश देखना अधिक स्वाभाविक प्रतीत होता है। वाल्मीकि के दाक्षिणात्य पाठ मे इसका उल्लेख किया गया है कि नारद से कथा-वस्तु सुनने के बाद वाल्मीकि ने इसका अन्वेषण किया—**व्यक्तमन्वेषते भूयो यद् वृत्तम्** (१, ३, १)। अन्य पाठो (गो० रा० १, ३, १ तथा प० रा० १, ४, १) मे तत्सबधी श्लोक अधिक स्पष्ट है और लोक मे प्रचलित सामग्री के सकलन की ओर निर्देश करता है—

श्रुत्वा पूव काव्यबीज देवर्षेर्नारदादृषि
लोकादन्विष्य भयश्च चरित चरितव्रत ।

१३१ इस राम-सम्बन्धी गाथा-साहित्य की उत्पत्ति इक्ष्वाकु वश मे हुई थी। **रामायण** मे लिखा है

इक्ष्वाकूणामिद तेषा राज्ञा वशे महात्मनाम् ।
महदुत्पन्नमाख्यान रामायणमिति श्रुतम । (रा० १, ५,३)

राम इक्ष्वाकुवशीय थे। अत इक्ष्वाकुवश के सूतो ने इनके विषय मे गाथाएँ तथा व्याख्यान सुनाये होंगे। इसी तरह राम का चरित्र लेकर स्फुट आख्यान-काव्य का एक विस्तृत साहित्य बढने लगा।[1] **महाभारत** के द्रोणपर्व तथा शातिपर्व मे जो सक्षिप्त राम चरित मिलता है, वह इस प्राचोन आख्यान-काव्य पर निर्भर प्रतीत होता है। साथ-साथ **महाभारत** मे रामकथा की उपस्थिति इस बात को प्रमाणित करती है कि राम सम्बन्धी आख्यान-काव्य का प्रचार कोशल प्रदेश तक ही सीमित नही था वरन् पश्चिम की ओर भी फैलने लगा था, जहाँ **महाभारत** की रचना हुई थी। पाली तिपिटक के रचनाकाल (चौथी शताब्दी ई० पू०) मे इस रामकथा-सम्बन्धी आख्यान-काव्य का पर्याप्त प्रचार हो चुका था (दे० ऊपर अनु० ८६)। दूसरी ओर विस्तृत वैदिक साहित्य मे रामकथा सम्बन्धी गाथाओ का कही भी निर्देश नही मिलता (दे० ऊपर अनु० २०)। अत वैदिक काल के बाद और चौथी श० ई० पू० के पहले, सभवत छठी श० मे इस राम-कथा सम्बन्धी आख्यान-काव्य की उत्पत्ति हुई थी। वास्तव मे इसका निश्चित रचनाकाल निर्धारित करने के लिए कोई आधार नही मिलता।

ख—आदिरामायण की उत्पत्ति

१३२ जिस दिन किसी कवि ने रामकथा-विषयक स्फुट आख्यान-काव्य का सकलन

---

१ ध्यान देने योग्य है कि वाल्मीकि का आदिरामायण सूतो की सम्पत्ति न बनकर काव्योपजीवी कुशीलवो द्वारा पहले जनता मे लोकप्रियता प्राप्त करने लगा और बाद मे दरबारो मे प्रवेश कर सका। ऐसा ही बालकाड के चतुर्थ सर्ग मे प्रतीत होता है।

कर उसे एक ही कथा-सूत्र मे ग्रथित करने का प्रयास किया था, उस दिन रामायण उत्पन्न हुआ। वह कवि कौन था? प्राचीनतम परम्परा वाल्मीकि को आदिकवि मानती है। युद्धकाड की फलश्रुति मे लिखा है

आदिकाव्यमिद चाब पुरा वाल्मीकिना कृतम ।। १०५ ।। (सग १२८)

कालिदास ने भी वाल्मीकि को आद्य कवि की उपाधि प्रदान की है—कवेराद्यस्य शासनात् (रघुवश १५, ४१)। वाल्मीकि द्वारा श्लोक की सृष्टि की कथा (दे० बालकाड सर्ग २) मे इतना ऐतिहासिक सत्य अवश्य ही होगा कि वाल्मीकि ने इस छन्द को परिष्कृत किया है।

वास्तव मे वाल्मीकि के पूर्व किसी कवि ने एक आदिरामायण की रचना की है, इसके लिए कोई तर्कसगत प्रमाण नही मिलता। **बुद्धचरित** मे रामकथा के प्रसग मे जो च्यवन का उल्लेख हुआ है, इसके विषय मे ऊपर विचार किया गया है (दे० अनु० ३२)। पतजलि के महाभाष्य मे जिस प्राचीन गाथा का सस्कृत रूपान्तर मिलता है, इसका मौलिक प्रसग रामकथा से सबध नही रखता है और इसमे किसी प्राचीन **रामायण** का अवशेष देखना अनावश्यक है (दे० ऊपर अनु० ८८)।

१३३ **आदिरामायण** के विषय मे एक अन्य प्रश्न यह है कि इसमे राम के चरित्र का कितना अश वर्णित था। पिछले अध्याय से स्पष्ट है कि **आदिरामायण** मे न तो उत्तरकाड था, न बालकाड और न अवतारवाद। कई विद्वान् और आगे बढकर मानते है कि राम, रावण तथा हनुमान् के विषय मे पहले स्वतन्त्र आख्यान-काव्य प्रचलित थे और इनके सयोग से **रामायण** की उत्पत्ति हुई है। सातवे अध्याय मे यह दिखलाने का प्रयत्न किया गया है कि इस मत को सिद्ध करने के लिए कोई समीचीन प्रमाण नही दिए जा सकते है। अत **आदिरामायण** के लिखे जाने मे जो भिन्न-भिन्न सोपान माने जाते है, इनके लिए भी कोई आधार नही मिलता।[1] इस मत के अनुसार **रामायण** के विकास के प्रथम सोपान मे राम को हिमालय प्रदेश मे निर्वासित किया जाता है तथा सीता और लक्ष्मण उनके साथ जाते हैं। द्वितीय सोपान मे वनवास का स्थान गोदावरी के तट पर माना जाता है और राम आदिवासियो के आक्रमणो से तपस्वियो की रक्षा करते हैं। तृतीय सोपान मे दक्षिण के निवासियो को अधीन करने के आर्यों के प्रारभिक प्रयत्नो का वर्णन मिलता है। अन्तिम सोपान सिहलद्वीप की जानकारी के कारण उत्पन्न हुआ। इसमे राम द्वारा सिहल की विजययात्रा का वर्णन **रामायण** मे जोडा गया है। राम के कारण दक्षिण अथवा लका के निवासी आर्यों के अधीन हो गए थे, इसकी ओर

---

१ देखिए सी० लैस्सन इडिशे आलटरतुम्सकुडे, १८७४, भाग २, पृ० ५०५।

रामायण मे कोई निर्देश नही है । इसके अतिरिक्त लका तथा सिंहल की अभिन्नता भी अत्यन्त सदिग्ध है (दे० ऊपर अनु० ११३) ।

इसी तरह **आदिरामायण** के न तो भिन्न-भिन्न मूलस्रोत और न इसके लिखने मे उपर्युक्त सोपान मानने की कोई आवश्यकता प्रतीत होती है । अत **आदिरामायण रामसम्बन्धी स्फुट** आख्यान काव्य के आधार पर लिखा गया है और इसमे **अयोध्या-काड से लेकर युद्धकाड** तक की कथावस्तु विद्यमान थी । इसका अर्थ यह नही है कि प्रचलित वाल्मीकिकृत **रामायण** के इन पॉच काडो मे **आदिरामायण** का मूल रूप सुर-क्षित है । इनमे भी बहुत से प्रक्षेप तथा परस्पर विरोधी बाते पायी जाती है । प्रक्षेप जोडने की प्रवृत्ति प्रारम्भ ही से विद्यमान थी, यह **रामायण** के भिन्न-भिन्न काडो की तुलना से स्पष्ट है (दे० ऊपर अनु० २२-२६) और शताब्दियो तक बनी रही (यह मध्यकालीन टीकाकारो के साक्ष्य से ज्ञात है) । निबन्ध के चतुर्थ भाग मे प्रत्येक काड के विकास और प्रक्षिप्त सामग्री पर विचार किया जायगा ।

आदिरामायण के विस्तार के विषय मे **अभिधर्म महाविभाषा** मे कहा जाता है कि **रामायण** मे १२००० श्लोक मिलते है (दे० ऊपर अनु० ७६) । अत **आदि-रामायण** के विकास मे एक ऐसा समय हुआ, जब इसका विस्तार आजकल प्रचलित रामायण का आधा था ।

राय कृष्णदास[1] ने रामायण के प्रक्षेपो का अध्ययन करने के बाद रामायण के विकास के ये तीन सोपान निर्धारित किये है—(१) ३००० श्लोक वाला आदिरामायण अर्थात् वाल्मीकि रचित रामायण का सर्वप्रथम रूप , (२) ६००० श्लोकों वाला आर्ष रामायण, जिसमे बालकाड तथा उत्तरकाड की कथाएँ नही थी , (३) काव्य रामायण अर्थात् रामायण का विद्यमान २४००० श्लोक वाला सस्करण । यद्यपि यह वर्गीकरण रामायण के क्रमिक विकास पर आधारित है फिर भी वाल्मीकि द्वारा रचित काव्य की श्लोक-सख्या निर्धारित करना असभव-सा प्रतीत होता है । इसमे कोई संदेह नही है कि यह सख्या अपेक्षाकृत कम ही रही होगी ।

१३४ **आदिरामायण** क्षत्रियो की सम्पत्ति थी । इसमे आदर्श क्षत्रिय सत्यसध राम की महिमा प्रतिपादित की गई थी । मोक्ष तथा वैराग्य के स्थान पर आदर्श अत-गति स्वर्ग माना जाता था और इसे प्राप्त करने के लिए ब्राह्मणो की सहायता की आवश्यकता नही होती थी । बाद मे सारे काव्य को ब्राह्मण ढाँचे मे ढाल कर सवथा

१ राय कृष्णदास वाल्मीकिकृत आदिरामायण, भारती (वाराणसी) न० ६, पृ० १०५-१३१ ।

नवीन रूप दिया गया है। यह डॉ० रूबन का मत है[1]। इसके लिए कोई समीचीन प्रमाण नही दिया गया है। डॉ० रूबन के उदाहरण (ऋष्यशृंग तथा विश्वामित्र की कथा, उत्तरकांड के अश्वमेध) स्पष्टतया प्रक्षेप है। इनसे इतना ही ज्ञात होता है कि **रामायण** के अर्वाचीन प्रक्षेपो मे ब्राह्मणो का प्रभाव स्पष्ट है। इस सामग्री से **आदि-रामायण** के रूप के विषय मे कोई तर्क नही लिया जा सकता है। फिर भी डॉ० रूबन के इस मत मे कुछ तत्व है। रामकथा सम्बन्धी आख्यान-काव्य क्षत्रिय इक्ष्वाकु वंश मे उत्पन्न हुआ और इसका बहुत काल तक इन क्षत्रियो के दरबारो तथा जनता मे भी (दे० अनु० १३०) प्रचार रहा था।

वाल्मीकि ने उस स्फुट आख्यान काव्य को एक ही प्रबन्ध-काव्य मे संकलित करके लगभग ३०० ई० पू० मे **आदिरामायण** की रचना की है। यह रचना बहुत कुछ प्राचीन आख्यान-काव्य से मिलती-जुलती रही होगी। बाद के प्रक्षेपो की भावधारा स्पष्टतया भिन्न है (दे० आगे अनु० १३८)।

१३५ **आदिरामायण** की भाषा के विषय मे भी संदेह किया गया है। मूल रचना की भाषा प्राकृत रही होगी। बाद मे पहली शताब्दी ई० से इसका संस्कृत रूपान्तर चल पडा।[2] डॉ० याकोबी ने अकाट्य तर्को से इस मत का खंडन किया है। आजकल कोई भी इस मत का प्रतिपादन नही करता।[3] डॉ० याकोबी के मुख्य तर्क इस प्रकार है

(अ) भारत मे प्राकृत **मूलरामायण** तथा इसके संस्कृत रूपान्तर के विषय मे कोई उल्लेख नही मिलता।

(आ) यदि केवल पहली श० ई० मे **रामायण** का संस्कृत मे अनुवाद किया गया था, तो आर्ष प्रयोग कैसे संभव होते ?

(इ) प्राकृत साहित्य की मुख्य विशेषता है—शृंगार तथा अद्भुत् रस का बाहुल्य (दे० कथासरित्सागर)। इसके अतिरिक्त पाली तथा प्राकृत की शैली बहुत अपरिष्कृत है। अत प्राकृत-साहित्य उपर्युक्त कारणो से संस्कृत काव्य का आधार तथा आदर्श होने के नितान्त अनुपयुक्त सिद्ध होता है।

१३६ आठवे अध्याय मे बालकांड को प्रक्षिप्त सिद्ध किया गया है। डॉ० याकोबी[4] के अनुसार **आदिरामायण** का प्रारंभ बालकांड के निम्नलिखित श्लोको मे सुरक्षित है

---

१ डब्लू० रूबेन स्टुडियन चूर टेक्स्ट गेशिह्टे डेस रामायण, पृ० ६६।

२ बार्थ बुलेटीन दे रलिजियॉन दे लिन्द, पृ० २८८ आदि। ए० बी० कीथ इंडियन एंटीक्वेरी, भाग २३, पृ० ५२ आदि।

३ दे० एच० याकोबी जर्मन ओरियेंटल जर्नल, भाग ४८, पृ० ४०७-४१७।

४ दे० एच० याकोबी डस रामायण, पृ० ५० आदि।

रामायण की स्तुति	सर्ग ५,१-४
कोशल तथा अयोध्या की स्तुति	५,५-६
दशरथ की स्तुति	५,६,६,२-४
दशरथ के पुत्रो का उल्लेख	१८,१६ २१ (उत्तरार्ध २२)
पुत्रो की स्तुति	१८ २५ (अथवा अयो० १, ५)
राम की श्रेष्ठता	१८,२४ २६ १२ (अथवा अयोध्या १, ६ ८)

इस भूमिका के बाद काव्य की मुख्य कथावस्तु का वर्णन प्रारभ होता था (अयोध्या० १,३६) । डॉ० याकोबी का यह अनुमान निराधार नही था । पश्चिमोत्तरीय पाठ के चौदहवे सर्ग की कथावस्तु इस प्रकार हे—दशरथ तथा उनकी पत्नियो का परिचय , उनके चार पुत्रो का जन्म, शिक्षा तथा वयस्क हो जाने पर विवाह, चारो भाइयो का प्रेम, ननिहाल से बुलावा आने पर भरत का प्रस्थान, राम तथा सीता का बहुत समय तक विहार । सर्ग का अन्तिम श्लोक (३३) बालकाण्ड के अतिम श्लोक से मिलता-जुलता है (प० रा० १, ७२, १६) । अत इसके बाद अयोध्याकाड प्रारभ होता था ।

यह सर्ग अपने मे पूर्ण है । इसका पिछले अथवा अगले सर्गो से कोई सम्बन्ध नही हे । सर्ग ८ मे अश्वमेध तथा सर्ग १०-१३ मे पुत्रेष्टि यज्ञ का वर्णन हे। सर्ग १४ मे पुन कथा का प्रारभ मिलता है और दशरथ तथा उनकी पत्नियो का परिचय दिया जाता है । सर्ग १५ मे वानरो की उत्पत्ति और सर्ग १६ मे चारो भाइयो का जन्म वर्णित है ।

यह सब ध्यान मे रख कर इसमे सदेह नही रह जाता कि यह (सर्ग १४) वाल्मीकि रामायण का कोई प्राचीन आमुख है (दे० रायकृष्णदास, आर्ष रामायण का आमुख, ना० प्र०, प० वर्ष ६७, अक ३, पृ० १४२) ।

ग—आदिरामायण का विकास

१ प्रक्षेप

१३७ आदिरामायण का विकास समझने के लिए उसके प्रचार की रीति को ध्यान मे रखना परमावश्यक है । बालकाड (सर्ग ४) तथा उत्तरकाड मे लिखा है कि वाल्मीकि ने अपने शिष्यो को **रामायण** सिखला कर उसे राजाओ, ऋषियो तथा जनसाधारण को सुनाने का आदेश दिया

कृत्स्न रामायण काव्य गायता परया मुदा ।।४।।
ऋषिवाटेषु पुण्येषु ब्राह्मणावसथेषु च ।
रथ्यासु राजमार्गेषु पार्थिवाना गृहेषु च ।।५।। (उत्तरकाड ६३)

इससे ज्ञात होता है कि रामायण मौखिक रूप से प्रचलित था । कुशीलव सारे देश मे

उसे गाकर सुनाते थे और इस प्रकार अपनी जीविका चलात थ । वे काव्योपजीवी ही थे , रामायण उनको कठस्थ था और वे उसे अपन पुत्रो को सिखलाते थे । रामायण का कोई ग्रथ प्रचलित नही था और प्राचीन फलश्रुति श्रवणफल-स्तुति ही है

श्रुत्वा रामायणमिद दीर्घमायुश्च विन्दति । (६, १२८, १०६)

बाद मे रामायण के पढने तथा लिखने का भी उल्लेख मिलता हे

रामायणमिद कृत्स्न श्रृण्वत पठत सदा ॥११६॥
भक्त्या रामस्य ये चेमा सहितामृषिणा कृताम ।
ये लिखन्तीह च नरास्तेषा वासस्त्रिविष्टपे ॥१२०॥ (६, १२८)

लेकिन फलश्रुति का यह अन्तिम अश गौडीय पाठ मे नही मिलता । टीकाकार कनक ने भी उसे प्रक्षिप्त माना है ।

कुशीलव रामायण को गाते-गाते अपने श्रोताओ की रुचि का भी ध्यान रखने होगे । जिन गायको मे काव्यकोशल था वे लोकप्रिय अशो को बढाते थ और इसी तरह **आदिरामायण** का कलेवर बढने लगा ।[1]

१३८ चतुर्थ भाग मे इन प्रक्षेपो का निरूपण किया जाएगा, अत यहा इनकी सामान्य विशेषताओ का उल्लेख पर्याप्त है ।

(१) बहुत स प्रक्षेप पुनरुक्ति मात्र से उत्पन्न हुए है । एक ही घटना का वर्णन दुहराया जाता है अथवा मूल घटना के समान अन्य घटनाओ की कल्पना कर ली जाती है । उदाहरणार्थ

रावण का मारीच के यहा जाना (३, सर्ग ३१ और ३५) ।

रावण के गुप्तचरो का वृत्तान्त (६, २० और २५-३०) ।

सीता की गगा तथा यमुना से प्रार्थना (२, ५२ और ५५) ।

आश्रमो मे आगमन । अत्रि, वाल्मीकि, शरभग, सुतीक्ष्ण, अगस्त्य के आश्रमो का उल्लेख **आदिरामायण** मे नही मिलता था ।

विराध, अयोमुखी आदि राक्षसो का वध ।

राम के मायामय सिर का वृत्तान्त (६, ३१) मायामयी सीता-वध के वृत्तान्त (६, ८१) का अनुकरण मात्र है ।

(२) अद्भुत रस की सामग्री

लकादहन, जिसमे हास्य रस का भी समावेश है ।

ओषधिपर्वत का ले आना (इसका दो बार वर्णन होता है , दे० अनु० ५६४) ।

अग्निपरीक्षा ।

---

१ दे० एच० याकोबी डस रामायण, पृ० ६२-३ ।

(३) करुणात्मक स्थलो की पुनरुक्ति
विलाप (दे० अरण्यकाण्ड, सर्ग ६०, ६२ और ६३)।
हनुमान् का सीता से विदा लेना (५, ५८-६०)।
हनुमान् द्वारा सीता मे भेट का वर्णन (५, ६६-६८)।

(४) काव्यात्मक तथा अलकारपूर्ण वर्णन
गगा का वर्णन (२, ५०)।
वर्षा ऋतु का वर्णन (४, २८)।
शरद् ऋतु का वरान (४, ३०)।

(५) रामायरण को ज्ञान का भन्डार बनाने की प्रवृत्ति
नीति का उपदेश (२, १००)
जावालि का लोकायत दर्शन प्रस्तुत करना (२, १०८)।
दिग्वर्णन (४, ४०-४३)।

(६) आदर्शवाद का प्रभाव
राम का वालि-वध को न्यायसगत सिद्ध करने का प्रयत्न (४, १७-१८)।

(२) बालकाड और उत्तरकाड

१३६ **आदिरामायण** की कथावस्तु न केवल बीच के प्रक्षेपो के कारण बढने लगी वरन् राम कोन थे, सीता कौन थी, इनका विवाह कब और कैसे हुआ आदि नितान्त स्वाभाविक प्रश्न थे। जनसाधारण की इस जिज्ञासा को सन्तुष्ट करने के लिए बालकाड की रचना की गई।

यह बाद की रचना ही है, अत इसमे एक नवीन वातावरण का आ जाना आश्चर्यजनक नही है। इसकी शिथिल शैली पर आदिकवि की छाप नही है। राम के बालचरित के अतिरिक्त उसकी मुख्य नवीन सामग्री पौराणिक कथाएँ (जिनमे ब्राह्मणो का प्रभाव स्पष्ट है) और अवतारवाद की भावना (दे० पुत्रेष्टि-यज्ञ तथा परशुराम का बृतान्त) है। आठवे अध्याय मे दिखलाया गया है कि अवतारवाद मूल बालकाड का अश नही हो सकता। उत्तरकाड मे यह अवतारवाद अत्यन्त व्यापक है। इससे स्पष्ट है कि यह काड बालकाड के बहुत बाद रचा गया है। उत्तरकाड मे रामायण के प्रति-नायक रावण का पूर्वचरित सकलित है और इसके बाद राम का उत्तरचरित दिया जाता है—सीता-त्याग और सीता का भूमि-प्रवेश, राम का अश्वमेध तथा स्वर्गारोहण। इस काड मे भी बहुत सी पौराणिक कथाएँ उद्धृत हैं और ब्राह्मणो की श्रेष्ठता बहुत से स्थलो पर प्रतिपादित है (दे० शम्बूक वध, अश्वमेध)। चतुर्थ भाग मे बालकाड और उत्तर-

काड, दोनो के विकास की रूपरेखा अकित करने का प्रयत्न किया जायगा (दे० आगे० अनु० ३३३ और ६१८)।

यहाँ स्मरण दिलाना अनुचित नही होगा कि रामकथा के विकास मे **आदि-रामायण** के प्रक्षेप अर्थात् बालकाड, उत्तरकाड, अवतारवाद मूल **आदिरामायण** के प्रामाणिक अशो से कम महत्वपूर्ण नही है। द्वितीय अध्याय मे दिखलाया गया है कि दूसरी शताब्दी ई० से लेकर **रामायण** अपना प्रचलित रूप धारण कर चुका था और उस समय से लेकर कवियो तथा जनसाधारण ने प्रामाणिक तथा प्रक्षिप्त सामग्री मे कोई अन्तर नही माना है। इस सामग्री की सबसे महत्वपूर्ण भावना अवतारवाद ही है। इसकी उत्पत्ति पर किंचित् प्रकाश डालना अपेक्षित है।

(३) अवतारवाद

१४० अवतारवाद[1] की भावना हमे पहले-पहल **शतपथ ब्राह्मण** मे मिलती है। प्रारभ मे विष्णु की अपेक्षा प्रजापति को इस सम्बन्ध मे अधिक महत्व दिया जाता था। **शतपथ ब्राह्मण** के अनुसार प्रजापति ने ही मत्स्य (दे० १, ८, १, १), कूर्म (७, ५, १, ५, १४, १, २, ११) तथा वाराह (१४, १, २, ११) का अवतार लिया था। प्रजापति के **वाराह** का रूप धारण करने की कथा तैतिरीय सहिता (७,१, ५, १), तैत्तिरीय ब्राह्मण (१, १, ३, ६), तैत्तिरीय आरण्यक (१०, १, ८) तथा

१ दे० एच० याकोबी इनकारनेशन, इन्साइक्लोपीडिया ऑव रिलीजन एण्ड एथिक्स, भाग ७।
काणे हिस्टरी ऑव धर्मशास्त्र, जिल्द २, भाग २, पृ० ७१७ आदि।
एम० मोनियेर विलियम्स इ० विजडम, पृ० ३१८ आदि।
एच० राय चौधरी अर्ली हिस्ट्री आव वैष्णव सेक्ट, पृ० ९६।
जेन्द अवेस्ता मे भी अवतारवाद की भावना विद्यमान है।
बहराम यश्त (रचनाकाल चौथी श० ई० पू०) मे विजय के देवता वरथ्रघ्न के दस अवतारो का वर्णन है (दे० सेक्रेड बुक्स ऑव दि ईस्ट, भाग २३, पृ० २३६)। अधिक सभव है कि वरथ्रघ्न (वृत्रघ्न) का सम्बन्ध इद्र से है। फारसी मे वरथ्रघ्न का नाम बहराम है, इनके दस अवतार सभवत राशिचक्र के नक्षत्रो से सबद्ध है (दे० जे० सी० कोयाजी, कल्ट्स एड लेजेड्स ऑव एसियन्ट ईरान एड चाइना, बम्बई १९३६, पृ० ४५)। जेन्द अवेस्ता के आठवे यश्त मे एक नक्षत्र के अधिष्ठाता देवता का भी उल्लेख है, जो मनुष्य, वृषभ तथा अश्व के रूप मे प्रकट हो जाता है और वह अनावृष्टि के अपदेवता को परास्त करता है।

काठक सहिता (८, १) मे भी प्रारभिक रूप मे विद्यमान है। **रामायण** के दाक्षिणात्य पाठ मे इसका उल्लेख है

तत समभवद् ब्रह्मा स्वयभूर्दैवतै सह ॥३॥
स वराहस्ततो भूत्वा प्रोज्जहार वसुधराम ।

(अयोध्या काण्ड, सर्ग ११०)

अन्य दो पाठो मे इस स्थल पर परवर्ती भावना के अनुसार विष्णु का नाम लिया गया है (दे० गौ० रा० २, ११९ और प० रा० २, ११३)।

शतपथ ब्राह्मण के अतिरिक्त तैत्तिरीय आरण्यक मे भी **कूर्म** को प्रजापति का अवतार माना गया है (दे० १, २३, ३)। **महाभारत** मे समुद्र-मथन के प्रसग मे कूर्म-राज का उल्लेख तो हुआ है किंतु इसमे कही भी किसी देवता की ओर निर्देश नही मिलता। सुरासुर कूर्मराज से निवेदन करते है कि वे मन्दराचल के आधार बनने की कृपा करें

ऊचुश्च कूर्मराजानमकूपार सुरासुरा ।
गिरेरधिष्ठानमस्य भवान्भवितुमर्हति ॥१०॥

(आदिपर्व, अध्याय १६)

रामायण के उदीच्य पाठ मे समुद्र-मथन के वृत्तात मे **कूर्म** का उल्लेख नही है (दे० गौ० रा० १, ४६, प० रा० १, ४१) किंतु दाक्षिणात्य पाठ के एक प्रक्षेप मे इस अवसर पर विष्णु के वाराह अवतार लेने की कथा मिलती है (दे० रा० १, ४५ २७-३२)।

मत्स्य अवतार तथा प्रजापति का सबध महाभारत मे उल्लिखित है

अह प्रजापतिर्ब्रह्मा मत्पर नाधिगम्यते ।
मत्स्यरूपेण यूय च मयास्मान्मोक्षिता भयात् ॥ ४८ ॥

(आरण्यक पर्व, अध्याय १८५)

विष्णु पुराण मे भी मत्स्य, कूर्म तथा वाराह तीनो को प्रजापति का अवतार माना गया है

तोयान्त स्था महीं ज्ञात्वा जगत्येकार्णवीकृते ।
अनुमानत्तदुद्धार कर्तुकाम प्रजापति ॥ ७ ॥
अकरोत्स्वतनूमन्या कल्पादिषु यथा पुरा ।
मत्स्यकूर्मादिका तद्वद्वाराह वपुरास्थित ॥ ८ ॥ (१, अध्याय ४)

किंतु विष्णुपुराण मे विष्णु तथा ब्रह्मस्वरूप नारायण की अभिन्नता का प्रतिपादन किया जाता है, अत इसी चतुर्थ अध्याय मे विष्णु के रूप मे वाराह की स्तुति की

गयी है तथा एक अन्य अध्याय मे कूम को भी विष्णु का ही अवतार माना गया है (दे० १, ६)।

इस प्रकार हम देखते है कि मत्स्य, कूर्म तथा वाराह अवतार प्रारभ मे प्रजापति से सबध रखते थे किंतु बाद मे विष्णु का महत्त्व बढ जाने के कारण तीनो विष्णु के ही अवतार माने जाने लगे। महाभारत के नारायणीय उपाख्यान (दे० १२,३२६, ७२ तथा १२, ३३७, ३६) तथा हरिवशपुराण (दे० १, ४१) मे वाराह तथा विष्णु का सबध मान लिया गया है। आगे चलकर तीनो का नाम लेकर एक-एक महापुराण की सृष्टि हुई, जिसमे विष्णु से उनकी अभिन्नता प्रतिपादित है (दे० मत्स्य, कूर्म तथा वाराह पुराण)।

१४१ अन्य मुख्य अवतारो के प्राचीनतम उल्लेख इस प्रकार है। **वामनावतार** तथा **नृसिंह** अवतार प्रारभ से विष्णु से ही सबध रखते है। **वामनावतार** का उल्लेख तैत्तिरीय सहिता (२ १,३,१), शतपथ ब्राह्मण (१,२,५,५), तैत्तिरीय ब्राह्मण (१,८, १७) और ऐतरेय ब्राह्मण (६,३,७) मे हुआ है। यह अवतार ऋग्वेद की एक कथा से विकसित माना जाता है (दे० ऋग्वेद १, २२ और शतपथ ब्राह्मण १,२,५,१)। नारायणीय उपाख्यान (दे० महाभारत १२, ३२६, ७५) तथा हरिवश पुराण (दे० १, ४१) मे इसका विष्णु के अन्य अवतारो के साथ उल्लेख हुआ है **नृसिहावतार** की कथा पहले-पहल तैत्तिरीय आरण्यक के परिशिष्ट (१०, १,६) मे मिलती है। नारायणीय उपाख्यान (दे० १२, ३२६, ७३ और ३३७, ३६) तथा हरिवश पुराण (दे० १, ४१) मे इसका उल्लेख है तथा विष्णुपुराण मे नृसिह की कथा वर्णित है (दे० १, १६)।

परशुराम-विषयक प्रारभिक कथाओ मे इनके अवतार होने का निर्देश नही मिलता (उदा० दे० महाभारत ३, ११५-११७), किंतु नारायणीय उपाख्यान (दे० १२, ३२६, ७७), हरिवश पुराण (१, ४१, ११२-१२०) तथा विष्णुपुराण (१, ६, १४३) मे उनको विष्णु का अवतार माना गया है।

१४२ प्रस्तुत सिंहावलोकन का निष्कर्ष यह है कि ब्राह्मणो मे तथा अन्य प्राचीन साहित्य मे अवतारवाद विद्यमान है किन्तु उन ग्रन्थो के रचनाकाल मे न तो अवतारो की विशेष पूजा की जाती थी और न इसमे विष्णु का प्राधान्य था। **कृष्णावतार** के साथ-साथ अवतारवाद के विकास मे एक महत्त्वपूर्ण परिवर्त्तन प्रारभ हुआ—उस समय से लेकर अवतारवाद भक्ति-भाव से ओतप्रोत होने लगा।

वासुदेव कृष्ण भागवतो के इष्टदेव थे। प्रारम्भ मे उनका तथा विष्णु का कोई भी सबध नही था। डॉ० हेमचन्द्र राय चौधरी[1] का अनुमान है कि सभवत

---

१ दे० अर्ली हिस्टरी ऑव दि वैष्णव सेक्ट, पृ० ६३।

तीसरी शताब्दी ई० पू० से वासुदेव कृष्ण और विष्णु की अभिन्नता की भावना उत्पन्न हुई थी। अवतारवाद के इस विकास का कारण प्राय बौद्ध धर्म से जोडा जाता है।[1] बौद्ध धर्म तथा भागवत सम्प्रदाय का भक्तिमार्ग, दोनो समान रूप से ब्राह्मण साहित्य के कर्मकाण्ड तथा यज्ञ-प्रधान धर्म की प्रतिक्रिया के रूप मे उत्पन्न और विकसित हुए। इसके फलस्वरूप धर्म के क्षेत्र मे ब्राह्मणो का एकाधिकार लुप्त हो गया था। बौद्ध धर्म का अधिकाधिक प्रसार देखकर ब्राह्मणो ने भागवतो को अपनी ओर आकर्षित करने के उद्देश्य से भागवतो के इष्टदेव वासुदेव कृष्ण को विष्णु-नारायण का अवतार मान लिया है।[2]

इससे अवतारवाद को बहुत प्रोत्साहन मिला। साथ-साथ विष्णु का भी महत्व बढने लगा। इस तरह अवतारवाद की सारी भावना धीरे-धीरे विष्णु-नारायण मे केन्द्रीभूत होने लगी और वदिक साहित्य के अन्य अवतारो के कार्य विष्णु मे ही आरोपित किए गए।

१४३ एक ओर तो अवतारवाद की भावना फैलती जा रही थी, दूसरी ओर कई शताब्दियो से **राम का आदर्श** चरित्र भारतीय जनता के सामने रहा था। रामायण की लोकप्रियता के साथ-साथ राम का महत्व भी बढता रहा। उनकी वीरता के वर्णन मे अलौकिकता की मात्रा भी बढने लगी। रावण पाप और दुष्टता का प्रतीक बन गया और राम पुण्य और सदाचरण का। अत इस विकास की स्वाभाविक परिणति यह हुई कि कृष्ण की भाति राम भी विष्णु के अवतार माने जाने लगे। राम तथा विष्णु की अभिन्नता की धारणा कब उत्पन्न हुई, इसका ठीक समय निर्धारित करना असभव है। फिर भी अवतारवाद उत्तरकाण्ड मे इतना व्याप्त है कि इसे उत्तरकाण्ड की अधिकाश सामग्री के पूर्व का मानना चाहिए। अत बहुत सभव है कि पहली शताब्दी ई० पू० मे ही रामावतार की भावना प्रचलित होने लगी थी। [रामायण के प्रक्षेपो के अतिरिक्त (दे० ऊपर अनु० ११७-१२४), महाभारत (दे० ऊपर अनु० ४६) तथा वायु, ब्रह्माण्ड, विष्णु, मत्स्य, हरिवश आदि प्राचीनतम पुराणो मे अवतारो की तालिका मे राम दाशरथि का भी नाम आया है।

---

१ दे० एच० चौधरी, वही, पृ० ६३।
एम० मोनियेर विलियम्स, वही, पृ० ३२८।
सी० वी० वैद्य, वही, पृ० २५।

२ तैत्तिरीय आरण्यक (१०, १, ६) मे वासुदेव तथा विष्णु की अभिन्नता का प्राचीनतम उल्लेख मिलता है।

१४४ अवतारवाद के विकास मे छठी या सातवी शताब्दी ई० से महात्मा बुद्ध भी विष्णु के अवतार माने जाने लगे ।[1] प्राचीन साहित्य तथा पुराणो मे ८०० ई० तक अवतारो की सख्या तथा नामो मे भी एकरूपता नही मिलती । **नारायणीय उपाख्यान** मे विष्णु के ६ अवतारो की सूची इस प्रकार है—वाराह, नृसिंह, वामन, भार्गव राम, दाशरथि राम और वासुदेव कृष्ण (दे० महाभारत १२, ३२६, ७२-६२) । इसी उपाख्यान के एक अन्य स्थल पर केवल चार अवतारो का उल्लेख है अर्थात् वाराह, नृसिंह, वामन तथा मनुष्यावतार (दे० ३३७, ३६)[2] । **विष्णु पुराण** के एक स्थल पर प्रजापति के मत्स्य, कूर्म और वाराह अवतारो का उल्लेख है (दे० १, ४, ७-८), एक अन्य स्थल पर आदित्य, भार्गव, राम तथा कृष्ण नामक विष्णु के चार अवतारो की सूची दी गई है (दे० १, ६, १४३-१४४) । इसके अतिरिक्त उस पुराण मे वाराह (१, ४, १२ आदि), कूर्म (१, ६, ८८), मोहिनी (१, ६, १०६), नृसिंह (१, १६), राम दाशरथि (४, ४) तथा कृष्ण (भाग ५) सब का सबध विष्णु से ही माना गया है तथा उनकी कथाओ का न्यूनाधिक विस्तार के साथ वर्णन किया गया है । **हरिवश पुराण** मे चार बार विष्णु के अवतारो की सूची मिलती है, किन्तु निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट है कि उसमे एकरूपता का अभाव है-

(१) पौष्कर, वाराह, नृसिंह, वामन, दत्तात्रेय, परशुराम, राम, कृष्ण, वेदव्यास, कल्कि[3] (दे० १, ४१) ।

(२) वामन, नृसिंह, परशुराम, वाराह, मोहिनी, राम, कृष्ण (दे० २, २२) ।

(३) वाराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, कृष्ण (दे० २, ४८) ।

(४) वाराह, नृसिंह, वामन, राम, कृष्ण (दे० २, ७१) ।

भागवत पुराण मे अवतारो की सूचियो मे दो बार बाईस और एक बार इक्कीस अवतारो के नाम गिनाए गए है, किन्तु वहाँ भी न तो नामो मे एकरूपता मिलती है और न क्रम मे (दे० १, ३, २, ७, ११, ४) ।

---

१ दे० आर० सी० हाजरा एनल्स भडारकर इस्टिट्यूट, भाग १८, पृ० ३२१ । काणे . वही, पृ० ७२१ ।

२ नारायणीय उपाख्यान मे जो दस अवतारो की सूची मिलती थी, उसे पूना के प्रामाणिक सस्करण ने प्रक्षिप्त माना है, दे० अध्याय ३२६, ६५ तथा ३२६, ७१ की टिप्पणियाँ ।

३ यह कल्कि का प्राचीनतम उल्लेख प्रतीत होता है । किन्तु हरिवश का प्रामाणिक सस्करण अब तक नही तैयार हो सका ।

विष्णु के दस मुख्य अवतारो की भावना तथा उनके निश्चित क्रम की परम्परा (मत्स्य से कल्कि तक) ८०० ई० से ही सर्वमान्य होने लगी ।[1]

घ—रामकथा का व्यापक प्रसार

१४५ रामकथा-विषयक गाथाओ से लेकर वाल्मीकि रामायण के प्रचलित रूप तक रामकथा के प्रारभिक विकास की रूपरेखा अकित करने का प्रयत्न प्रस्तुत अध्याय मे किया गया है। यह उत्तरोत्तर विकास ही रामकथा की लोकप्रियता का प्रमाण है। निबन्ध के अन्तिम अध्याय मे इसके समस्त विकास के सिंहावलोकन के साथ-साथ रामकथा की सामान्य विशेषताओ पर भी विचार किया जायगा। यहा रामकथा के प्रारभिक व्यापक प्रसार की ओर सकेत करना है।

महाभारत की सामग्री से स्पष्ट है कि रामकथा न केवल कोशल प्रदेश मे प्रचलित थी वरन् इसका प्रचार पश्चिम की ओर भी हो चुका था। हरिवश से ज्ञात होता है कि रामायण की कथा को लेकर प्राचीन काल से नाटको का अभिनय भी हुआ करता था

रामायण महाकाव्यमुद्दिश्य नाटक कृतम् ।
जन्म विष्णोरमेयस्य राक्षसेंद्रवधेप्सया ॥६॥

(विष्णुपर्व, अध्याय ९३)

रामकथा की लोकप्रियता का एक और महत्वपूर्ण प्रमाण बौद्ध तथा जैन साहित्य से मिलता है। बौद्धो ने ईस्वी सन् के कई शताब्दियो पहले राम को बोधिसत्व मानकर रामकथा की लोकप्रियता और आकर्षकता का साक्ष्य दिया है (दे० चौथा अध्याय)। जैनियो ने भी वाल्मीकि की रचना को मिथ्या कहकर रामकथा के एक नये रूप मे राम को अपनाने का प्रयत्न किया है (दे० पॉचवा अध्याय)।

इसी तरह रामकथा प्रारम्भ से ही भारत की सस्कृति मे इतनी फैल गई कि राम ने उस समय के तीन प्रचलित धर्मो मे एक निश्चित स्थान प्राप्त किया—ब्राह्मण धर्म मे विष्णु के अवतार, बौद्ध धर्म मे बोधिसत्व तथा जैन धर्म मे आठवे बलदेव के रूप मे। आगे चलकर साहित्य की प्रत्येक शाखा मे, अन्य भारतीय भाषाओ के साहित्य मे, भारत के निकटवर्ती देशो मे सर्वत्र रामकथा का प्रभाव स्पष्ट दिखलाई पडता है।

---

१ आर० सी० हाजरा, पुराणिक रेकार्ड्स, पृ० ८८ और इ० हि० क्वा०, भाग ११, पृ० १२०-२७।

तृतीय भाग

अर्वाचीन रामकथा साहित्य का सिंहावलोकन

अध्याय १०

संस्कृत धार्मिक साहित्य मे रामकथा

क—रामभक्ति की उत्पत्ति और विकास

१४६ अर्वाचीन रामकथा-साहित्य मे अवतारवाद की उत्तरोत्तर बढती हुई व्यापकता के साथ-साथ भक्ति-भावना भी उत्पन्न हुई और धीरे-धीरे विकसित होने लगी। अत राम-भक्ति की उत्पत्ति और विकास पर किंचित् प्रकाश डालना अपेक्षित है।

भारतीय भक्तिमार्ग का सूत्रपात और विकास राम-भक्ति के शताब्दियो पूर्व हुआ था। वेदो मे इसका बीजारोपण हुआ और भागवत धर्म मे वह पल्लवित हुआ। बौद्ध-धर्म तथा जैनधर्म की भाँति भागवतो का भक्तिमार्ग भी कर्मकाड तथा यज्ञ-प्रधान ब्राह्मण धर्म की प्रतिक्रिया के रूप मे उत्पन्न हुआ था। लेकिन इसमे वेदो की निन्दा को स्थान नही मिला और इस प्रकार बाद मे ब्राह्मण तथा भागवत धर्म के समन्वय से वैष्णव धर्म की उत्पत्ति सम्भव हो सकी। इसमे भागवतो के देवता वासुदेव-कृष्ण प्राचीन वैदिक देवता विष्णु के अवतार माने गए है और भक्ति-भावना इन्ही विष्णु-नारायण-वासुदेव-कृष्ण मे केन्द्रीभूत होकर उत्तरोत्तर विकसित होने लगी। विष्णु के अन्य अवतार भी माने जाने लगे, जिनमे से रामावतार भारतीय संस्कृति के दृष्टिकोण से सबसे महत्त्वपूर्ण है (दे० ऊपर अनु० १४३)। फिर भी भक्तिमार्ग के इतिहास मे, भागवत-धर्म तथा पाच-रात्र के साहित्य मे, शाडिल्य-भक्ति सूत्र, नारदीय भक्ति-शास्त्र, रामानुज, निम्बार्क, मध्व तथा वल्लभाचार्य के सम्प्रदायो मे कृष्णावतार को प्राय एकाधिकार मिला है।[1]

१४७ प्राचीन रामकथा-साहित्य के निरूपण से ज्ञात हुआ है कि रामायण के प्रक्षिप्त अशो मे तथा महाभारत के कई स्थलो पर रामावतार का उल्लेख मिलता है। युद्धकाण्ड के एक प्रक्षिप्त सर्ग मे सीता को भी लक्ष्मी का अवतार बताया गया है (दे०

---

१ भक्तिमार्ग के विकास के लिए दे०—

इनसाइक्लोपीडिया ऑव रिलीजन एण्ड एथिक्स, 'भक्तिमार्ग'।

हेमचन्द्र राय चौधरी अर्ली हिस्टरी ऑव वैष्णव सेक्ट।

बलदेव प्रसाद मिश्र तुलसी दर्शन, पृ० ४१।

सर्ग ११७, २७), लेकिन प्राचीन राम-साहित्य मे कही भी राम-भक्ति का निरूपण नही मिलता। हरिवश तथा प्राचीन पुराणो मे भी राम-भक्ति का उल्लेख नही हुआ है। अत. रामावतार की भावना के बहुत काल बाद राम-भक्ति तथा राम-पूजा का आविर्भाव हुआ है। सर रामगोपाल भण्डारकर का कहना है कि यद्यपि ईसवी सन् के प्रारभ से राम विष्णु के अवतार माने गये थे, किन्तु उनकी विशेष रूप से प्रतिष्ठा ग्यारहवी शताब्दी के लगभग ही प्रारभ हुई थी।[1] डॉ० श्राडर का भी निर्णय यह है कि जिन वैष्णव सहिताओ मे राम अथवा राधा की एकातिक पूजा प्रतिपादित की गई है, ये अर्वाचीन है और पाचरात्र के प्रामाणिक साहित्य के अनुकरण से उत्पन्न हुई है।[2] फिर भी गुप्तकाल मे विष्णु के अन्य अवतारो की भाति राम की भी पूजा प्रचलित थी। **विष्णुधर्मोत्तर पुराण**[3] तथा वराह मिहिर की **बृहत्सहिता**[4] मे राम-मूर्ति के निर्माण के लिए नियम मिलते है। वाकाटक महारानी प्रभावती[5] के विषय मे प्रसिद्ध है कि वह भगवत् रामगिरि स्वामी की भक्तिन थी। अधिक सभव है कि वह रामगिरि स्वामी राम दाशरथि से अभिन्न है। **अग्नि पुराण**[6] मे भी मत्स्यादिप्रतिमा लक्षण नामक ४९वे अध्याय में राम की मूर्ति का उल्लेख हुआ है। गुप्तकाल के मदिरो मे रामायण सम्बन्धी फलक भी मिलते है।[7]

ऐसा प्रतीत होता है कि राम-भक्ति का पल्लवन दक्षिण भारत मे हुआ है।

---

१ सर भण्डारकर के तर्क अकाट्य प्रतीत होते है, दे० 'वैष्णविज्म शैविज्म', पृ० ४७ आदि।

२ दे० डॉ० श्राडर इट्रोडक्शन टु दि पाचरात्र (मद्रास १९१६, पृ० १९)।

३ ३, ८५, ६२, रचना-काल पाँचवी श० ई०।

४ दे० ५८, ३०, रचना-काल छठी श० ई०।

५ इनका जीवन-काल पाँचवी शताब्दी ई० है। दे० दि क्लासिकल एज, पृ० ४१७ (बम्बई १९५४)।

६ रचना-काल ८०० ई० के बाद।

७ दे० रत्नचन्द्र अग्रवाल उत्तर भारत की मूर्तिकला मे रामकथा (राजस्थान भारती, बीकानेर, भाग ११, अक १, पृ० ५१) और राजस्थान के शिलालेखो व मूर्तिकला मे रामकथा की अभिव्यक्ति (मैथिलीशरण अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ० ८५५)। भास्करनाथ मिश्र देवगढ और इलोरा के रामायण सबधी दृश्य (मैथिलीशरण अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ० ८०६)। मजुलाल र० मजूमदार शामला जी मदिर मे रामायण से सम्बन्धित दृश्य (मैथिलीशरण अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ० ८१४)।

तमिल आल्वारो की रचना, अर्थात् **नालायिर-प्रबन्ध** म भगवान् विष्णु तथा उनके अवतारो के प्रति असीम भक्ति तथा आत्म-समर्पण की भावना का हृदयस्पर्शी निरूपण मिलता है।[1] यद्यपि विष्णु के अवतार कृष्ण को अधिक महत्त्व दिया गया ह परन्तु प्राचीनतम आल्वारो के स्तोत्रो मे राम का उल्लेख है और परवर्त्ती आल्वारो मे निरन्तर मिलता ह (आठवी श० ई०)।

आल्वार कुलशेखर की रचना मे सम्भवत प्रौढ रामभक्ति का प्राचीनतम निरूपण सुरक्षित है (नवी श० ई० पूर्वार्द्ध)। यद्यपि उनके भी अधिकाश पद कृष्णावतार सम्बन्धी है, परन्तु उनकी रचना का पाचवा अश रामावतार से सम्बन्ध रखता ह और इसमे राम के प्रति अत्यन्त कोमल और हृदयस्पर्शी भक्ति अकित की गई ह।[2]

१४८ रामभक्ति के काव्यात्मक तथा भावात्मक निरूपण के अतिरिक्त वैष्णव सहिताओ तथा उपनिषदो मे रामभक्ति तथा रामपूजा का शास्त्रीय प्रतिपादन भी किया गया है। ऐसे ग्रन्थो की रचना पहले-पहल रामानुज सम्प्रदाय म हुई है। रामानुज ने तो स्वय रामभक्ति पर नही लिखा है, परन्तु अपने श्रीभाष्य मे उन्होने विभवो अर्थात अवतारो मे राम तथा कृष्ण का विशेष उल्लेख किया है (श्रीभाष्य २, २, ४२)। उनके सम्प्रदाय मे निम्नलिखित राम-सम्बन्धी वैष्णव सहिताओ का उल्लेख मिलता है, जिनमे राम के प्रति दास्य भक्ति का प्रतिपादन किया गया है—**अगस्त्य-सहिता, कलिराघव, बृहद्राघव,** और **राघवीय सहिता**[3]। तीन रामभक्ति सम्बन्धी साम्प्रदायिक उपनिषदे सुरक्षित है—**रामपूर्वतापनीय, रामोत्तरतापनीय** तथा **रामरहस्योपनिषत्**[4]। तीनो रामोपासना से सम्बन्ध रखती है तथा इनमे राम-यत्र, राम-मत्र, सीता-मत्र आदि का उल्लेख है। राम परमपुरुष तथा सीता मूल प्रकृति मानी जाती है। **उत्तरतापनीय** (२, १८) तथा **रामरहस्योपनिषद** (५, १९) मे अद्वैत भक्ति भी प्रतिपादित की गई ह

---

१ दे० टी० ए० गोपीनाथ राव हिस्टरी ऑव दि श्री वैष्णवस। पचम आल्वार शठकोप की रचना (तिरुवाय्मोलि) का सस्कृत अनुवाद 'सहस्रगीति' बम्बई के वेकटेश्वर प्रेस द्वारा तथा नवम आल्वार आण्डाल की रचना (तिरुप्पावै) का सस्कृत-हिन्दी अनुवाद 'गोदा-गीतावली' पटना की बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् द्वारा प्रकाशित है (१९६७)।

२ जर्नल श्री वेकटेश्वर ओरियेटल इस्टिट्यूट, तिरुपति, भाग ३ (१९४२), पृ० १६६।

३ दे० डॉ० श्राडर वही, न० २६, १०१, १३३।

४ दे० वैष्णव उपनिषद् (अडयार) और दयसन, सेकजिग उपनिषद्स, पृ० ८०२।

सदा रामोऽहमस्मीति तत्त्वत प्रवदन्ति ये ।
न ते ससारिणो नून राम एव न सशय ॥

रामतापनीय के अनेक स्थलो पर **अध्यात्मरामायण** के रामहृदय तथा राम-गीता से साम्य पाया जाता है ।[1] इसमे एक सक्षिप्त रामचरित भी दिया गया है (दे० ४, १७-२६), जिसके अनुसार रावण ने मुक्ति प्राप्त करने के उद्देश्य से सीता का हरण किया था (**स्वनिवृत्यर्थम्**), राम और लक्ष्मण सीता की खोज के मिस (**व्याजेन**) पृथ्वी का भ्रमण करते थे तथा सुग्रीव ने सीता को ले आने की आज्ञा दी थी । निम्नलिखित अन्य वैष्णव उपनिषदो मे भी राम का उल्लेख हुआ है—**कलिसतरण, कृष्ण** (जिसमे राम मुनियो को कृष्णावतार के समय गोपिकाएँ बनने का आश्वासन देते है), **गोपालोत्तरताप-नीय, तारसार, त्रिपाद-विभूति-महानारायण** तथा **मुक्तिकोपनिषद्** । इनमे राम-चरित का कोई वर्णन नहीं किया गया है ।

इन रचनाओ मे प्राय वेदात तथा भक्ति का समन्वय करने का प्रयत्न किया गया है तथा राम को परमब्रह्म से अभिन्न माना गया है । **मुक्तिकोपनिषद्** मे हनुमान् पर-मात्मा के रूप मे राम की स्तुति करने के पश्चात् (**राम त्व परमात्माऽसि सच्चिदानन्द, दे० अध्याय १, ४**) उनसे निवेदन करते है कि वह अपने स्वरूप का तात्त्विक निरूपण करे—**त्वद् रूप ज्ञातुमिच्छामि तत्त्वतो राम मुक्तये** (१, ५) । इसपर राम वेदान्त-ज्ञान को सायुज्य मुक्ति का साधन बताते है तथा हनुमान् को निर्गुण भक्ति की साधना करने का उपदेश देते है—**अनामगोत्र मम रूपमीदृश भजस्व** (२, ७३) ।

अड्यार लाइब्रेरी बुलेटिन (भाग १६, पृ० ३१३-२६) मे एक शाक्त **सीतोपँनिषद्** प्रकाशित हुई है, जिसमे सीता को प्रकृति, साक्षात् शक्ति, योगशक्ति, भोगशक्ति, वीरशक्ति आदि के रूप मे चित्रित किया गया है । इन सब ग्रन्थो का रचना-काल निर्धारित करना असभव प्रतीत होता है । डॉ० वेवर ने **राम-तापनीय** उपनिषद् का प्राचीन-तम काल ११वीं शताब्दी माना है । उस समय से लेकर राम-भक्ति-विषयक साहित्य का निर्माण होने लगा था । स्तोत्रो के अतिरिक्त रामोपासना के विषय मे भी बहुत सी रचनाओ का उल्लेख मिलता है, जिनमे से एकाध हस्तलिपि के रूप मे सुरक्षित है, जैसे **रामार्चनसोपान** (राजेन्द्र लाल मित्र, सस्कृत कैटालॉग, भाग ६, पृ० १०२), **सर्वसिद्धान्त** (वही ७, ६६), **रामार्चनपद्धति** (हरप्रसाद शास्त्री, सस्कृत कैटालॉग, भाग १, पृ० ३२३) और **रामपूजापद्धति** (वही) ।

भगवद्गीता के अनुकरण पर रचित अनेक **रामगीता** नामक ग्रन्थो का उल्लेख मिलता है, जिनमे वेदान्त के आधार पर राम के परमब्रह्मत्व का प्रतिपादन किया गया

---

[1] दे० ए० वेबर - मेम्वायर बर्लिन एकाडेमी, १८६४, पृ० २८३ ।

है। मद्रास से प्रकाशित (सन् १६०२) **श्रीरामगीता** गुरुज्ञानवासिष्ठ **तत्त्वसारायण का** भाग माना जाता है। गीता की भाँति इसमे भी १८ अध्याय है, जो राम-हनुमान्-सवाद के रूप मे प्रस्तुत किए गए है। सगुण-भक्ति के विषय मे कहा है (अध्याय ११) कि सात्विक भक्त परम पद प्राप्त करते है, राजभक्त सालोक्य मुक्ति के भोगो के पश्चात् ब्राह्मण के रूप मे जन्म लेते है तथा तामसभक्त, जो आर्थिक लाभ के कारण राम का आश्रय लेते है **(वित्तार्थं भजति माम्)** नरक जाते है तथा बाद मे कुत्ते आदि के रूप मे प्रकट होते है **(श्वादिजन्म प्रपद्यन्ते)**। कलकत्ता सस्कृत कॉलिज मे एक **रामगीता सटीका** (कैटालॉग भाग ४, न० २६०) सुरक्षित है, जो स्कद पुराण के निर्वाणखड का अश माना जाता है और जिसके तीन अध्यायो मे राम का परब्रह्मत्व प्रतिपादित है। हरप्रसाद शास्त्री के सस्कृत कैटालॉग मे भी (भाग १, न० ३१४) एक **रामगीताटीका** का उल्लेख है, जो उपर्युक्त रामगीता सटीका से भिन्न है।

१४६ इन सब रचनाओ का अब तक विश्लेषण नही हुआ है। राम-भक्ति के विकास मे उनका क्या महत्त्व है, उनका **रामानन्द** की रचनाओ से क्या सबध है आदि प्रश्नो पर खोज की अपेक्षा है। इतना ही स्पष्ट है कि दर्शन की दृष्टि से रामानन्द का सबध रामानुज सम्प्रदाय से ही रहा है। उनकी प्रामाणिक रचनाओ अर्थात् **वैष्णव-मताब्ज-भास्कर** तथा **श्री रामार्चनपद्धति** से पता चलता है कि भक्ति के क्षेत्र मे उन्होने (रामानुज के) विष्णु-लक्ष्मी के स्थान पर राम-सीता को अपना आराध्य माना है तथा उनके प्रति दास्य भक्ति का ही प्रचार किया है। भक्तमाल के कथनानुसार रामानन्द के गुरु राघवानन्द ने चारो वर्णो और आश्रमो के लिए भक्ति का द्वार खोल दिया था। रामानन्द के शिष्यो की परम्परागत सूची देखकर यह विश्वास दृढ हो जाता है कि रामानन्द भी अत्यधिक उदार थे। उनके हिन्दी पदो की प्रामाणिकता असदिग्ध नही है किन्तु उनसे प्रेरणा पाकर कई शिष्यो ने राम-भक्ति के प्रचार मे हिन्दी का उपयोग किया है[1]। रामावत सम्प्रदाय के प्रचार के कारण राम-भक्ति जनसाधारण मे फैलने लगी, आगे चलकर गोस्वामी तुलसीदास ने इस राम-भक्ति को अपने अमर **रामचरित-मानस** मे एक काव्यात्मक तथा हृदयग्राही रूप दिया है।

राम-भक्ति के विकास के साथ-साथ रामकथा को भक्ति के साचे मे ढालने की आवश्यकता का भी अनुभव हुआ, फलस्वरूप बहुत से साम्प्रदायिक रामायणो की सृष्टि होने लगी, जिनमे **अध्यात्मरामायण, आनन्दरामायण, अद्भुतरामायण** प्रमुख है (दे० आगे अनु० १७५-१७७)। **अध्यात्मरामायण** का स्पष्ट उद्देश्य है शकराचार्य के

१ दे० बदरीनारायण श्रीवास्तव का **रामानन्द-सम्प्रदाय** (प्रयाग, सन् १६५७ ई०)।

सुप्रसिद्ध वेदान्त के आधार पर राम-भक्ति का प्रतिपादन करते हुए वाल्मीकीय रामकथा **को किंचित्** परिवर्तन के साथ प्रस्तुत करना। इसका रचना-काल सभवत १५वी शताब्दी **ई० है**। यद्यपि इसकी रचना रामानन्दी सम्प्रदाय के बाहर हुई होगी, फिर भी **अध्यात्म-रामायण** शीघ्र ही इस सम्प्रदाय मे प्रतिष्ठा पाने लगा और उसे **रामचरितमानस** का **मुख्य** आधार-ग्रथ बनने का गौरव भी प्राप्त हुआ है।

१५० भारतीय भक्ति-मार्ग के इतिहास मे कृष्ण तथा बाद मे कृष्ण और राधा का स्थान निर्विवाद रूप से प्रधान है। अत राम-भक्ति पर कृष्ण-भक्ति का प्रभाव पड जाना स्वाभाविक था। राम के प्रति दास्य-भक्ति के अतिरिक्त माधुर्य भक्ति का भी प्रतिपादन किया गया है और इस माधुर्य भक्ति के आधार पर रसिक सम्प्रदाय का सभवत १५ वी श० ई० मे प्रवर्तन हुआ था। डॉक्टर भगवती प्रसाद सिंह ने इस रसिक साधना के विकास की रूपरेखा अकित की है।[1]

यहाँ केवल रामकथा पर कृष्ण-लीला का प्रभाव विचारणीय है। वाल्मीकि रामायण, उत्तररामचरित, जानकीहरण, हनुमन्नाटक आदि मे जो राम-सीता के सयोग श्रृगार का वर्णन हुआ है, वह न तो कृष्ण-लीला के अनुकरण पर हुआ है और न माधुर्य-भक्ति-भाव की प्रेरणा से।

अध्यात्मरामायण की बाल-लीला पर कृष्ण की बाल-लीला का प्रभाव सुस्पष्ट है, **आनन्दरामायण, सत्योपाख्यान** आदि मे जो राम-सीता की विलास-क्रीडाओ का विस्तृत वर्णन किया गया है, वह भी कृष्ण-लीला से प्रभावित है किन्तु कृष्ण-कथा के अनुकरण की चरम सीमा यह है कि **भुशुण्डीरामायण** (दे० आगे अनु० १८०), **महा-रामायण** (अनु० १८१), **हनुमत्सहिता** (अनु० १९०), **वृहत्कोशल खड** (अनु० १९१), **सगीत-रघुनन्दन** (अनु० २५०) आदि ग्रन्थो मे राम की रासलीला की भी कल्पना कर ली गई है। विवाह के पूर्व तथा विवाह के पश्चात् राम अयोध्या के आस-पास रास-लीला करते है तथा वनवास के समय चित्रकूट मे भी। आगे चलकर कृपानिवास, मधुरा-चार्य आदि रसिक सम्प्रदाय के आचार्यो ने रामकथा मे एक और परिवर्त्तन कर दिया है— "वास्तव मे न तो सीता का हरण हुआ और न स्वय ब्रह्म राम ने एक तुच्छ राक्षस के वध के लिए धनुष-बाण ही धारण किया"।[2] "वनयात्रा के समय राम, लक्ष्मण और सीता सहित चित्रकूट से आगे नहीं गये। वे स्वय ब्रह्म रूप मे अपनी आह्लादिनी शक्ति सीता जी के साथ चित्रकूट मे विहार करते रहे। इस विहार-लीला मे कैकर्य और व्य-वस्था लक्ष्मण जी करते थे, जो जीव तत्त्व के प्रतिनिधि थे। चित्रकूट से आगे लक्ष्मी,

१ दे० राम-भक्ति मे रसिक सम्प्रदाय, पृ० ७९ आदि।

२ दे० वही, पृ० २८२।

नारायण और शेष उनके वेष मे गये थे और परात्पर ब्रह्म की आज्ञा से उन्होने ही रावण का वध कर सीतारूप लक्ष्मी का उद्धार किया था। चित्रकूट मे राम का यह विलास तब तक चलता रहा, जब तक विभीषण को राज्य देकर नारायण, लक्ष्मी और शेष सहित पुन चित्रकूट नही लौट आये। कृपानिवास जी ने स्वरचित रामायण मे यह कथा विस्तारपूर्वक लिखी है। मधुराचार्य जी ने राज्याभिषेक के अनन्तर सीता-वनवास की घटना को इसी प्रकार राम की प्रकाशलीला माना है"।[1]

रसिक-सम्प्रदाय मे राम के बहुत से विवाहो का उल्लेख किया गया है (दे० आगे अनु० ४०४)। बाल-लीला के वर्णन मे राम द्वारा दैत्यो का मारा जाना भी कृष्ण-कथा का प्रभाव माना जा सकता है (दे० अनु० ३८०)।

ऐसा प्रतीत होता है कि राम-भक्ति की मधुर उपासना प्रधानतया मध्यदेश मे विकसित हुई, किन्तु बगाल मे भी इस प्रकार का विकास हुआ है।

जगतराम राय के **अद्भुतरामायण** के एक काड का नाम रामरास ही रखा गया है (दे० आगे अनु० २८७), उसी लेखक के **आत्मबोध** नामक ग्रथ के १२वे अध्याय मे राम को रसराज कहकर पुकारा गया है। बगीय सहजिया सम्प्रदाय मे यह नाम कृष्ण के लिए प्रयुक्त होता है। बगीय साहित्य परिषद् पत्रिका मे रामरास-विषयक ब्रजबुली के दो पदो का प्रकाशन हुआ है, इनका रचना-काल अनिश्चित है।[2] आसाम के **गीतिरामायण** मे माना गया है कि राम ने चित्रकूट मे एक मायामय अयोध्या की सृष्टि करके चैत्रचतुर्दशी का पर्व मनाया था (दे० अनु० ४४०)।

ख—पौराणिक साहित्य

(१) हरिवश

१५१ हरिवश का रचना-काल ४०० ई० के लगभग माना जाता है।[3] इसमे एक सक्षिप्त रामचरित मिलता है, जिसमे रामवतार के उल्लेख के बाद वनवास से लेकर रावण-वध तक रामकथा की मुख्य घटनाओ का वर्णन दिया गया है। अनन्तर राम-

१ दे० वही, पृष्ठ २९७।

२ दे० भाग २, पृ १२५-१२६। बगीय साहित्य के उपर्युक्त उद्धरणो के लिए मैं श्री देवीपाद भट्टाचार्य (यादवपुर विश्वविद्यालय) का आभारी हूँ।

३ आर० सी० हाजरा इण्डियन कल्चर, भाग २, पृ० २३७ और न्यू इडियन एटिक्वेरी, भाग १, पृ० ५२२।

राज्य की प्रशसा की गई है। इस वृत्तान्त मे दशरथ के यज्ञ का अथवा अयोनिजा सीता का कही उल्लेख नही हुआ है।[1]

हरिवश के दो स्थलो पर रामायण का (दे० २, ९३, ६, ३, १३२, ९५) तथा दो स्थलो पर वाल्मीकि के काव्य का निर्देश मिलता है—**गीत च वाल्मीकिमहर्षिणा** (१, १, ६) और **सरस्वती च वाल्मीके** (२, ३, १८)। अवतारो की चार तालिकाओ मे राम का नाम भी दिया गया हे (दे० ऊपर अनु० १४४)। इसके अतिरिक्त अन्य स्थलो पर भी राम अथवा रामकथा का उल्लेख किया गया है (उदा०—१, १५, २६, १, ५४, २६, २, ६०, ३५, ३, ७६, २४)।

(२) प्रधान महापुराण

१५२ पौराणिक साहित्य के काल-निर्णय के विषय मे प्रस्तुत निबन्ध मे डॉ० राजेन्द्र हाजरा की पुस्तक[2] तथा उनके अन्य लेखो का सहारा लिया गया है। उनके अनुसार प्राचीनतम महापुराण कालक्रमानुसार निम्नलिखित है—मार्कण्डेय, ब्रह्माण्ड, विष्णु, वायु, मत्स्य, भागवत तथा कूर्म पुराण।

मार्कण्डेय, ब्रह्माण्ड तथा **मत्स्य** पुराण मे रामचरित का कही वर्णन नही किया गया। अन्य अवतारो के साथ **ब्रह्माण्ड** तथा **मत्स्य पुराण** मे राम का नाम भी लिया गया है (दे० मत्स्य पु० अध्याय ४७, ब्रह्माण्ड पुराण ३, अध्याय ७३)। इसके अतिरिक्त **ब्रह्माण्ड** के मैथिल वश के वर्णन मे सीता के अलौकिक जन्म का उल्लेख दिया गया हे (दे० ३ अध्याय ६४, १५)। इस पुराण का काल चौथी शताब्दी ई० माना जाता है।

१५३ विष्णु पुराण (चौथी शताब्दी ई०) मे भी अयोनिजा सीता का उल्लेख मिलता है (४, अध्याय ५) और रामकथा का सक्षिप्त रूप भी उद्धृत किया गया है (४, अध्याय ४)। हरिवश की रामकथा की अपेक्षा इसमे कुछ अधिक सामग्री मिलती है, विशेषकर ताटकावध, अयोनिजा सीता तथा राम आदि चार भाइयो के पुत्रो का उल्लेख। एक अन्य स्थान पर लवणासुर-वध का वर्णन किया गया है (१, १२, ४)।

१५४ वायु पुराण (पॉचवी श० ई०) की रामकथा विष्णु-पुराण की रामकथा से भिन्न नही है (दे० राम-चरित, अध्याय ८८, १९१-२०० तथा अयोनिजा सीता का जन्म, अध्याय ८९, २२)।

---

१ दे० १, ४१, १२१-५५। हरिवश के सदर्भ गीता प्रेस, गोरखपुर के सस्करण के हे।

२ आर० सी० हाजरा पुरानिक रेकार्ड्स ऑन हिन्दू राइट्स एंड कस्टम्स, ढाका १९४०।

१५५ भागवत पुराण (छठी अथवा सातवी श० ई०) के राम-चरित मे पौराणिक साहित्य मे पहले-पहल सीता लक्ष्मी का अवतार मानी गई है, सीता-स्वयवर के अवसर पर राम धनुष तोडते है, राम ही शूर्पणखा को विरूपित करते है तथा धोबी के कारण सीता-त्याग का वर्णन किया गया है (दे० स्कध ९, अध्याय १०-११)। इस पुराण मे एक दूसरी अत्यन्त सक्षिप्त रामकथा (२, ७, २३-२५) मिलती है, जिसमे समुद्र राम को देख कर उन्हे तुरन्त मार्ग देता है (दे० आगे अनु० ५७३)।

✓**१५६ कूर्म पुराण** (सातवी श० ई०) मे रामकथा सम्बन्धी निम्नलिखित सामग्री पाई जाती है (वेकटेश्वर प्रेस सस्करण)—

राक्षस-वश-वर्णन (पूर्व विभाग, अध्याय १९)।

सूर्यवश के वर्णन के अतगत राम-चरित का वर्णन, जिसमे सीता को जनकात्मजा माना गया है और रावण-युद्ध के पश्चात् राम द्वारा शिवलिंग की स्थापना का उल्लेख है (पूर्वविभाग, अध्याय २१)।

पतिव्रतोपाख्यान मे माया-सीता के हरण का वृत्तान्त (उत्तरविभाग, अध्याय ३४)।

(३) गौण महापुराण

१५७ शेष महापुराणो मे प्राचीन सामग्री के साथ-साथ बहुत से प्रक्षेप भी पाए जाते है। कई महापुराणो का अनेक बार रूपान्तर भी किया गया है। अन्तिम रूपान्तर का काल डॉ० राजेन्द्र हाजरा के अनुसार दिया गया है।

वाराह पुराण (रचना-काल लगभग ८०० ई०) मे पूरी रामकथा तो मिलती ही नही किंतु एक स्थल पर दुर्जयकृत श्रीरामस्तवन (अध्याय १२) उद्धृत है और एक अन्य स्थल पर इसका उल्लेख किया गया है कि वसिष्ठ के परामर्श से दशरथ ने राम-द्वादशी-व्रत का पालन किया था, जिसके फलस्वरूप उनको रामादि पुत्र प्राप्त हुए (दे० अध्याय ४५)। अध्याय १६३ (रचना-काल ८००-१००० ई०) मे वाराह-मूर्ति की कथा भी मिलती है (दे० आगे अनु० ७८०)।

प्रचलित **अग्नि पुराण** की रचना ८०० ई० के पश्चात् हुई है, लेकिन इसकी बहुत कुछ सामग्री और बाद की माननी चाहिए[1]। **अग्निपुराण** की रामकथा **वाल्मीकि रामायण** के सात काडो का सक्षेप मात्र है (दे० अग्निपुराण, अध्याय ५-११), इसमे राम का मथरा पर अत्याचार करना वनवास का कारण बताया गया है तथा राम द्वारा माल्यवत् पर्वत पर चातुर्मास्य यज्ञ करने का उल्लेख है।

✓ **लिंग पुराण** (रचना-काल दशवी शताब्दी के पूर्व) के इक्ष्वाकुवश-वर्णन के अन्तर्गत राम-चरित का अत्यन्त सक्षिप्त रूप दिया गया है (पूर्वार्द्ध ६६, ३५-३६), अबरीष

१ आर० सी० हाजरा इडियन हि० क्वा०, भाग १२, पृ० ६८३ आदि।

उपाख्यान मे राम तथा उनके भाइयो के अवतारत्व का उल्लेख मिलता है (दे० अनु० ३६१)।

अपेक्षाकृत अर्वाचीन **वामन पुराण** (३७, ८-१२) मे वेदवती तीर्थ के प्रसग मे रावण द्वारा अपमानित वेदवती की सीता के रूप मे उत्पत्ति का उल्लेख है।

भविष्य पुराण का वर्तमान रूप अर्वाचीन है। इसके प्रतिसर्ग पर्व मे दशरथ की वशावली (दे० आगे अनु० ३३६) के अतिरिक्त हनुमान् की जन्मकथा, हनुमान्-रावण-मल्लयुद्ध तथा हनुमान की रामभक्ति विषयक सामग्री मिलती है (दे० आगे अनु० ६७१, ६६८ आर ७०४)।

१५८ प्राचीन **नारदीय पुराण** अप्राप्य हे, प्रचलित **नारदीय महापुराण** दसवी श० ई० का माना जाता हे लेकिन बाद मे इसमे बहुत से प्रक्षेप जोड दिए गए है।[1] पूर्वखड मे एक सक्षिप्त राम-चरित के बाद (बालकाड से युद्धकाड तक) राम द्वारा द्रविड देश मे ब्राह्मणो से बाँधे हुए विभीषण की मुक्ति की कथा दी गई है (दे० अध्याय ७९) तथा उत्तरकाड मे बालकाड से उत्तरकाड तक समस्त **वाल्मीकीय रामायण** की सक्षिप्त रामकथा दी गई है, जिसमे राम-लक्ष्मणादि नारायण-सकर्षणादि के अवतार बताए गए है (दे० अध्याय ७५)।

१५९ **ब्रह्मपुराण** की अधिकाश सामग्री भिन्न-भिन्न अन्य पुराणो से ली गई हे। २१३वे अध्याय का राम-चरित ज्यो का त्यो हरिवश के ४१वे अध्याय से उद्धत किया गया है। १७६ वे अध्याय मे रावणचरित के अन्तर्गत रावण की तपस्या के वर्णन के बाद एक सक्षिप्त रामकथा भी पाई जाती है, जिसमे रावण द्वारा अमरावती से चुराई हुई वासुदेवप्रतिमा का वृत्तान्त दिया गया है। रावण-वध के बाद राम ने समुद्र को यह मूर्ति समर्पित कर दी, लेकिन बाद मे कृष्ण ने उसे पुरुषोत्तम-क्षेत्र मे स्थापित किया। ब्रह्म पुराण की शेष रामकथा-सम्बन्धी सामग्री गौतमी माहात्म्य (अध्याय ७०-१७५) के अन्तर्गत मिलती है। यह माहात्म्य प्रारभ मे एक स्वतन्त्र ग्रन्थ था, जिसकी रचना १०वी शताब्दी मे अथवा इसके बाद हुई थी।[2] इसमे भिन्न-भिन्न तीर्थो का महत्त्व दिखलाने के लिए बहुत सी कथाओ का सकलन किया गया है। राम-तीर्थ-माहात्म्य (अध्याय १२३) मे रामकथा का वर्णन मिलता हे, जिसकी निम्नलिखित विशेषताएँ ह कैकेयी द्वारा देव-दानव-युद्ध मे तीन वरो की प्राप्ति, श्रवणकुमार-वध के प्रायश्चित्त स्वरूप दशरथ का अश्वमेध-यज्ञ करना तथा उसमे आकाश-वाणी द्वारा उसे पुत्रोत्पत्ति का आश्वासन दिया जाना, वनवास के समय गौतमी-तट पर राम के पिंड-दान द्वारा नरक से दशरथ की मुक्ति।

---

१ आर० सी० हाजरा इडियन कल्चर, भाग ३, पृ० ४७७।

२ वही, भाग २, पृ० २३५।

सहस्र-कुड माहात्म्य (दे० अध्याय १५४) मे सीता-त्याग का उल्लेख है और इसके बाद वियोगी राम के गौतमी-तट के सहस्र-कुड पर तपस्या करने का वर्णन किया गया है।

किष्किधा-तीर्थ-माहात्म्य (अध्याय १५७) मे रावणवध के बाद अयोध्या की यात्रा करते हुए गौतमी-तट पर राम के पाँच दिन तक निवास तथा शिवलिंग-पूजा का उल्लेख किया गया है।

१६० **गरुड पुराण** का रचना-काल सम्भवत दसवी शताब्दी ई० है, लेकिन इसमे जो **रामायण, महाभारत** तथा **हरिवश** का वर्णन किया गया है उसे बहुत अर्वाचीन प्रक्षेप मानना चाहिए।[1] गरुड पुराण की रामकथा की विशेषता यह है कि इसमे राम स्वय शूर्पणखा को विरूप कर देते है तथा अयोध्या लौटन के बाद पितृकर्म के लिए गयाशिर जाते है (दे० अध्याय १४३, वेकटेश्वर सस्करण)।

१६१ **स्कद पुराण** की अधिकाश सामग्री की सृष्टि आठवी शताब्दी के बाद[2] हुई है, लेकिन इसमे बहुत से प्रक्षेप मिलते है, जिनका रचना-काल अज्ञात है। वेकटेश्वर प्रेस के सस्करण मे निम्नलिखित रामकथा विषयक सामग्री पाई जाती है।

(१) माहेश्वर खड (अ) केदारखड

अध्याय ८—रावण-चरित के बाद रामावतार-वर्णन तथा राम द्वारा रावण-वध।

(आ) माहेश्वर खड

अध्याय ६—गौतम-पत्नी की कथा (दे० आगे अनु० ३४५)।

(२) वैष्णव खड

(अ) कार्तिकेय माहात्म्य

अध्याय २०-२५—अवतारकारण के वर्णन के अतर्गत वृन्दा-शाप तथा धर्मदत्त और कलहा की कथा। धर्मदत्त का पुनर्जन्म मे दशरथ होना।

(आ) वैशाखमासमाहात्म्य

अध्याय २१—वाल्मीकि की जन्म-कथा।

(इ) अयोध्यामाहात्म्य

अध्याय ६—राम का स्वधामगमन।

(३) ब्राह्मखड।

(अ) सेतुमाहात्म्य

अध्याय २—एक सक्षिप्त राम-चरित, जिसमे सेतुबन्ध का विशेष रूप से वर्णन किया गया है।

---

१ आर० सी० हाजरा - पुरानिक रेकार्ड्स, पृ० १४४ और एनल्स भ० ओ० रि० इ०, भाग १६, पृ० ६८-७५।

२ दे० आर० सी० हाजरा—पुरानिक रेकार्ड्स, पृ० १६५।

अध्याय ७—समुद्रबंधन के पूर्व शिवप्रतिष्ठा का वर्णन ।

अध्याय २२—सीता की अग्निपरीक्षा, अग्नि द्वारा सीता के सतीत्व की प्रशसा ।

अध्याय २७—रावणवध के बाद ब्रह्महत्या के प्रायश्चित्त के लिए राम द्वारा कोटि-तीर्थ पर शिवलिंग की स्थापना ।

अध्याय ३०—विभीषण द्वारा सेतु को तोडने के लिए राम से प्रार्थना ।

अध्याय ४४-४७—रामोपाख्यान पर आधारित एक सक्षिप्त राम-चरित, रावण-वध के प्रायश्चित्त-स्वरूप राम द्वारा रामेश्वर-लिंग की स्थापना, हनुमान् का शिवलिग ले आने के लिए कैलाश भेजा जाना तथा मुहूर्त बीत जाने की आशका से राम द्वारा सैकत लिंग की स्थापना ।

(आ) धर्मारण्यखड

अध्याय ३०-३१—एक सक्षिप्त काल-निर्णय रामायण (दे० आगे० अनु० १७६) ।

अध्याय ३२-३५—राम द्वारा धर्मारण्य की तीर्थ-यात्रा ।

(४) काशीखड । इसमे रामकथा का अभाव है ।

(५) अवतीखड । (अ) आवन्त्य क्षेत्रमाहात्म्य

अध्याय २१—शिवलिंग ले आने के उद्देश्य से हनुमान् की लका-यात्रा ।

अध्याय २४—वाल्मीकि की जन्मकथा ।

(आ) चतुरशीतिलिंगमाहात्म्य

अध्याय ७६—हनुमान् का चरित, इसमे हनुमान् को रुद्रावतार माना गया है ।

(इ) रेवा खड

अध्याय ८३—ब्रह्महत्यादोष के निवारण के लिए हनुमान् की तपस्या ।

अध्याय १३६—अहल्योद्धार की कथा, राम से उद्धार पाने के पश्चात् अहल्या नर्मदा तीर्थ पर शिव की पूजा करने जाती है ।

अध्याय १६८—रावणादि भाइयो की तपस्या तथा शिव द्वारा वरदान ।

(६) नागर खड ।

अध्याय २०—लक्ष्मण का स्वामिद्रोह तथा तपस्या ।

अध्याय ९६-९८—शनि से दशरथ द्वारा वर प्राप्ति, दशरथ-इद्र की मैत्री, दशरथ का कार्तिकेयपुर मे पुत्र के लिए तपस्या करना । चार पुत्रो तथा एक पुत्री का जन्म ।

अध्याय ९९-१०३—राम का स्वर्गारोहण, विभीषण को राम द्वारा धर्मोपदेश, राम द्वारा सेतुभग, अनेक तीर्थों मे राम द्वारा शिवप्रतिष्ठा ।

अध्याय १२४—वाल्मीकि की कथा ।

अध्याय २०८—अहल्योद्धार, अहल्या की तीर्थयात्रा तथा शिवपूजा ।

(७) प्रभासखड । प्रभासक्षेत्रमाहात्म्य ।

अध्याय १११-११३—रामेश्वर-तीर्थ मे राम-लक्ष्मण द्वारा शिवप्रतिष्ठा ।

अध्याय १२३—रावण द्वारा रावणेश्वर-तीर्थ मे शिवप्रतिष्ठा ।

अध्याय १७१—दशरथेश्वर मे दशरथ द्वारा शिवप्रतिष्ठा (पुत्रप्राप्ति क उद्देश्य से) ।

अध्याय २७८—वाल्मीकि की कथा ।

१६२ पद्मपुराण क खडो का अलग-अलग रचना-काल माना जाता है। पाताल खड, जिसमे बहुत-सी रामकथा-सम्बन्धी सामग्री मिलती ह, बारहवी शताब्दी का माना जाता है। उत्तरखण्ड अपना वर्त्तमान रूप १५०० ई० के लगभग प्राप्त कर सका। इसमे भी राम-चरित का पूरा वर्णन किया गया है[1] ।

पातालखण्ड का एक गोडीय पाठ सुरक्षित है, जिसमे प्रारम्भ के २८ अध्यायो मे कालिदासकृत रघुवश से बहुत कुछ मिलती-जुलती कथा दी गई है[2] । आनन्दाश्रम सस्करण के पाताल खण्ड मे रामाश्वमेध का विस्तृत वर्णन किया गया है (दे० अध्याय १-६८)। इस वर्णन की निम्नलिखित विशेषताएँ उल्लेखनीय ह

—रावण की तपश्चर्या तथा वरप्राप्ति (अध्याय ७) ।

—एक राम-चरित, जिसमे मुख्य घटनाओ की सब तिथियो का उल्लेख है। यह स्कन्द पुराण से उद्धृत किया गया है[3] (अध्याय ३६, ९-८०) ।

—हनुमान् की वीरता का वर्णन (अध्याय ४४) ।

—राम तथा शिव के अभेद का प्रतिपादन (अध्याय ४५-४६) ।

—धोबी-कथन के फलस्वरूप सीता-त्याग (अध्याय ५५-५८) ।

—कुश-लव की उत्पत्ति तथा उनका राम की सेना से युद्ध करना (अध्याय ५९-६६) ।

—राम-सीता का सम्मिलन, जिसमे रामकथा सुखात बना दी गई है (अध्याय ६७-६८) ।

पातालखड के १०० वे अध्याय मे राम द्वारा बाँधे हुए विभीषण की मुक्ति की कथा दी गई है (दे० ऊपर अनु० १५८) तथा ११२ वे अध्याय मे एक 'पुराकल्पीय-रामा-

१ आर० सी० हाजरा इण्डियन कल्चर, भाग ४, पृष्ठ ७३ आदि ।

२ दे० ढाका विश्वविद्यालय की हस्तलिपि न० १६२३ ।

३ दे० महाराष्ट्रीय श्री रामायण समालोचना, भाग २, पृ० ३६८ । राजा आरण्यक ने यह राम-चरित लोमश ऋषि से सुना था ।

यण' का विवरण भी दिया गया है। उस रामकथा मे दशरथ की चार पत्नियो (कौशल्या, सुमित्रा, सुरूपा तथा सुवेषा) का उल्लेख है, बाल-लीला का किंचित् वर्णन किया गया है, सीता-स्वयवर मे इन्द्र, रावण आदि के असफल प्रयत्न के पश्चात् राम के धनुर्भंग करने का उल्लेख मिलता है, शिव के दिए हुए अजगव धनुष पर वानर-सेना के समुद्र को पार करने की कथा दी गई है तथा कुँभकरण-वध रावण-वध के पश्चात् माना गया है। ११३वे अध्याय मे राम शिव से शिव-भक्ति का वरदान माँगते हुए दिखलाए गए है (**भक्तिरस्तु स्थिरा त्वयि**-श्लोक १७६)।

सृष्टिखड मे कोई विस्तृत राम-चरित नही मिलता है। केवल निम्नलिखित प्रसगो का वर्णन किया गया है

अध्याय २८ राम द्वारा दशरथ का श्राद्ध तथा लक्ष्मण का स्वामिद्रोह (दे० अनु० ४६२)।

अध्याय ३५ शम्बूक-वध की कथा।

अध्याय ३६-३८ राम-अगस्त्य-सवाद, जिसमे वाल्मीकीय उत्तरकाड (सर्ग ७६-८३) के पाँच सर्गों की सामग्री उद्धृत की गई है।

अध्याय ३६ राम का विभीषण को धर्मोपदेश देना तथा मथुरा मे वामन की प्रतिष्ठा करना।

अध्याय ५१ अहल्या की कथा।

उत्तर-खड मे वृन्दा-शाप (अध्याय १६ और १०५), रामरक्षास्तोत्र (अध्याय ७४) तथा शम्बूक-वध-कथा (अध्याय २३०) के अतिरिक्त राम-चरित का एक पूरा वृत्तान्त भी मिलता है (दे० अध्याय २६६-२७१)[1]। प्रारम्भ मे रामावतार-कारण के वर्णन मे स्वयभू मनु की तपस्या का उल्लेख है, जिसके फलस्वरूप वह तीन जन्मो मे विष्णु को पुत्र के रूप मे प्राप्त कर सके। शेष कथा वाल्मीकि रामायण के सात काडो का सक्षिप्त रूप मात्र है। अतर यह कि इसमे अवतारवाद अधिक व्यापक है। राम के अपनी माता को अपना विष्णु-रूप दिखलाने का वर्णन किया गया है, राम और सीता विष्णु और लक्ष्मी के पूर्णावतार माने जाते है तथा लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न क्रमानुसार अनन्त, सुदर्शन और पाचजन्य के अशावतार कहे गए है। इस कथा के अनुसार राम ने शूर्पणखा को विरूप किया था।

१६३ ब्रह्मवैवर्त्त पुराण की रचना सभवत ७०० ई० के पूर्व हुई थी, लेकिन

---

१ उत्तरखड की इस कथा के गौडीय पाठ के लिए दे० जर्नल एसियाटिक सोसाइटी बगाल, १८४२, पृ० ११२०-२८।

उसका वर्तमान रूप सोलहवी शताब्दी ई० का है ।[1] इसमे वेदवती-वृत्तान के वर्णन के बाद सीता-हरण की कथा दी गई है, जिसमे अग्नि द्वारा एक मायामय सीता की सृष्टि करने का उल्लेख किया गया है (दे० प्रकृतिखण्ड, अध्याय १४) । यह कथा **श्रीमद्देवी-भागवत** के वृत्तान्त मे अभिन्न है (स्कध ६, अध्याय १६) ।

कृष्ण-जन्म खण्ड मे अहल्योद्धार के वर्णन के प्रसगवश एक सक्षिप्त रामकथा (अध्याय ६२) मिलती है, जिसमे शूर्पणखा के कुब्जा के रूप मे प्रकट होने का वृत्तान्त पाया जाता है तथा हनुमान् को रुद्र का अशावतार माना गया है । इसी खण्ड (अध्याय ५६) मे जय-विजय के तीन जन्मो का भी उल्लेख है ।

(४) उपपुराण

१६४ **विष्णुधर्मोत्तर पुराण** की रचना सभवत पाँचवी शताब्दी के लगभग काश्मीर मे हुई थी ।[2] इसमे लवण-वध की कथा के बाद (खण्ड १, अध्याय २००) भरत के गन्धर्वो के विरुद्ध युद्ध का विस्तृत वर्णन किया गया है (अध्याय २०२-२६६) । इसके अतर्गत एक रावण-चरित मिलता है, जिसमे राम-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न क्रमानुसार नारायण-सकर्षण-प्रद्युम्न-अनिरुद्ध के अवतार बताए गए है (दे० अध्याय २१२) ।

१६५ **नृसिंह पुराण** (४००-५०० ई०)[3] मे छ अध्याय मिलते है, जिनमे **वाल्मीकि रामायण** के प्रथम छ काण्डो की कथा किंचित् परिवर्तन सहित सक्षेप मे दी गई है (अध्याय ४७-५२) । अवतारवाद को अधिक महत्त्व दिए जाने के कारण राम नारायण के पूर्णावतार तथा लक्ष्मण शेष के अवतार बताए गए है । अहल्या अपने पति के शाप से 'पाषाणभूता' कही गई है । सीता के स्वयवर के बाद अन्य क्षत्रिय राजाओ के राम पर आक्रमण का वर्णन किया गया है । सीता-हरण का ऐसा रूप प्रस्तुत किया गया है, जिसमे रावण सीता का स्पर्श नही करता (दे० आगे अनु० ५०२) । रावणवध के पश्चात् राम के यज्ञो का तथा उनके स्वर्गारोहण का उल्लेख किया गया है । सीता-त्याग का कोई भी निर्देश नही मिलता है । रावणवश का वर्णन वृत्तान्त के आरभ मे दिया गया है (अध्याय ४७) ।

१ दे० आर० सी० हाजरा पुराणिक रेकार्ड्स, पृ० १६६ और एनल्स ओ० इ०, भाग १६, पृ० ७६ ।

२ दे० आर० सी० हाजरा स्टडीज इन दि उपपुराण, भाग १, पृ० २१२ ।

३ आर० सी० हाजरा वही, भाग १, पृ० २४२ ।

१६६ **वह्नि पुराण** की स० १६४८ की एक हस्तलिपि लन्दन मे सुरक्षित है।[1] इसमे एक अत्यन्त विस्तृत रामकथा मिलती है, जिसमे बालकाण्ड से लेकर युद्धकाण्ड तक समस्त रामायण की कथावस्तु का वर्णन दिया गया है। प्रारभ मे रामावतार और सीता-हरण के कारण (भृगु और पृथ्वी का शाप) तथा रावण-कुभकर्ण की जन्म-कथा (मधु-कैटभ, हिरण्यकशिपु-हिरण्याक्ष) का उल्लेख किया गया है। 'पाषाणभूता' अहल्या का (पृ० १८२ अ) तथा हनुमान् के मूषिका-रूप मे लका प्रवेश का भी उल्लेख मिलता है। शेष कथा (पृ० २६६ अ) मे किसी मौलिकता का नाम भी नही है।

१६७ शैव स्कन्द पुराण को छोडकर उपर्युक्त पुराणो तथा उपपुराणो मे जो रामकथा मिलती है, उस पर साम्प्रदायिकता का प्रभाव कम पडा है। अन्य शैव तथा शाक्त उपपुराणो मे इस साम्प्रदायिकता की गहरी छाप स्पष्ट है। राम शिव अथवा देवी-भक्त के रूप मे दिखाई पडते है तथा शिव अथवा देवी के प्रसाद से रावण पर विजय प्राप्त करने मे समर्थ माने जाते है।

वेकटेश्वर प्रेस द्वारा प्रकाशित **शिवमहापुराण** की रुद्र सहिता (१४ वी श०)[2] मे रामकथा सम्बन्धी निम्नलिखित सामग्री मिलती है।

सृष्टि खण्ड—नारद-मोह की कथा (अध्याय ३-४)।

सती खण्ड—सती द्वारा राम की परीक्षा तथा राम का सती से कहना कि शकर की आज्ञा से मैने अवतार लिया है (अध्याय २४-२६)

युद्धखण्ड—वृन्दा-शाप की कथा (अध्याय २३)।

इसके अतिरिक्त **शतरुद्रसहिता** (१४वी श० ई०) मे शिव के वीर्य से हनुमान् के जन्म की कथा (अध्याय २०) भी दी गई है तथा **उमासहिता** मे राम द्वारा शिवपूजा तथा उनसे वरप्राप्ति का वर्णन मिलता है (अध्याय ३)।

गणपति कृष्णजी प्रेस के **शिवपुराण** के सस्करण मे, धर्मसहिता के अन्तर्गत एक सक्षिप्त रामकथा उद्धृत की गई है (अध्याय १३-१४), तथा ज्ञानसहिता के अन्तर्गत वनवास के समय सीता द्वारा दशरथ के लिए पिडदान का वर्णन किया गया है (अध्याय ३०) और सागर को पार करने के लिए राम द्वारा शिव से सहायता की प्रार्थना का उल्लेख है (अध्याय ५७)।

---

१ इण्डिया ऑफिस लाइब्रेरी कैटालॉग, पृ० १२९४। डॉ० हाजरा के अनुसार यह प्रामाणिक आग्नेय पुराण है, जिसका वर्त्तमान वैष्णव रूप पाँचवी श० ई० का है। दे० ज० ऑ० इ०, भाग ५, पृ० ४११-१६।

२ दे० ऑवर हेरिटेज (कलकत्ता), भाग १, पृ० ६५। शिवपुराण सबधी डॉ० हाजरा का निबध।

१६८ **श्रीमद्देवीभागवत पुराण**[1] के नवरात्रमाहात्म्य की रामकथा के अनुसार राम ने शूर्पणखा को विरूप किया था। शेष कथा रामायणीय कथा से बहुत कुछ मिलती-जुलती है। अन्तर यह है कि सीता-हरण के बाद नारद की शिक्षा के अनुसार राम रावण पर विजय प्राप्त करने के उद्देश्य से नवरात्रोपवास करते है। इसके अन्त मे 'सिंहारूढा देवी भगवती' राम को दर्शन देकर रावण पर विजय का आश्वासन देती है। अनन्तर राम विजया-पूजा करके वानर-सेना सहित समुद्र की ओर प्रस्थान करते है (दे० स्कंध ३, अध्याय २८-३०)। इस पुराण के नवे स्कंध मे वेदवती-वृत्तान्त तथा छाया-सीता की कथा (अध्याय १६) तथा समस्त रामकथा का संक्षेप (अध्याय २५,१०-२१) भी मिलता है।

१६९ डॉ० राजेन्द्र हाजरा के अनुसार[2] **महाभागवत पुराण** (गुजराती प्रिंटिंग प्रेस, बम्बई, १९१३) की रचना दसवी-ग्यारहवी शताब्दी के लगभग पूर्व बंगाल अथवा पश्चिम कामरूप मे हुई थी। इसमे एक रामोपाख्यान मिलता है (अध्याय ३७-४९) जिसकी कथावस्तु वाल्मीकीय रामकथा से बहुत भिन्न नही है। इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ है। विभीषण धर्मदेव के अवतार है। जब देवता रावण-वध करने के लिए विष्णु से अवतार लेने की प्रार्थना करते है, विष्णु उनसे कहते है कि जब तक देवी लंका मे निवास करती है, मै रावण को पराजित नही कर सकता। अनन्तर सब मिलकर कैलास पर देवी के पास जाते है। देवी सीता-हरण के कारण लंका को छोड देने की प्रतिज्ञा करती है तथा शिव हनुमान् का रूप धारण कर राम की सहायता करने का वचन देते है। युद्ध के वर्णन मे राम के देवी से प्रार्थना करने का अनेक स्थलो पर उल्लेख है, अंत मे राम देवी से अमोघ शस्त्र ग्रहण कर रावण को मारने मे समर्थ होते है (दे० अध्याय ४७, ६६)। ब्रह्मा भी राम की विजय के लिए देवी की मृण्मयी मूर्ति बनाकर उनकी पूजा करते है। इस वृत्तान्त मे सीता मंदोदरी के गर्भ से उत्पन्न मानी गई है (दे० अध्याय ४०, ६४)। इस पुराण मे अन्यत्र मायासीता के हरण तथा नारद-शाप दोनो का उल्लेख हुआ है (दे० अध्याय ११, १०७-११२)।

१७० **बृहद्धर्म पुराण** (१३वी श० ई०)[3] की रामकथा महाभागवत (देवी) पुराण से बहुत भिन्न नही है। इसमे महाभागवत पुराण की उपर्युक्त विशेषताओ के

---

१ रचना-काल ११वी अथवा १२ वीं शताब्दी ई०। दे० ज० ऑ० रि०, भाग २१, पृ० ६८।

२ दे० इ० हि० क्वा०, भाग २८ (१९५२), पृ० १७-२८।

३ आर० सी० हाजरा स्टडिस इन दि उपपुराणस्, भाग २, पृ० ३९६। इस रचना के अनुसार संदर्भ दिये गये है।

अतिरिक्त सीता-हरण का वृत्तान्त नृसिंह पुराण की कथा से मिलता-जुलता है, तथा हनुमान् विडाल का रूप धारण करके लंका में प्रवेश करते हैं (दे० पूर्वखंड, अध्याय १८-२२)। रामकथा के वर्णन के पश्चात् रामायणोत्पत्ति का वृत्तान्त दिया गया है, जिसमें श्लोकोत्पत्ति आदि के बाद रामायण के उत्कर्ष-वर्णन के प्रसंग में **रामायण** के महाभारत तथा पुराणों का बीज होने का उल्लेख किया गया है (दे० पूर्वखंड, अध्याय २५-३०)। मध्यखण्ड (अध्याय ११) में वाल्मीकि को विष्णु का अवतार माना गया है।

१७१ **सौर पुराण** (९५०-१०५० ई०)[1] में पौलस्त्य-संतति (अध्याय ३०, १४-१६) तथा सूर्यवंश (अध्याय ३०, ४८-६६) का किंचित् वर्णन किया गया है। इसके अन्तर्गत की रामकथा में राम को 'महादेवपरायण' कहा गया है तथा शंकर के प्रसाद-स्वरूप राम के अपना पद प्राप्त करने का उल्लेख किया गया है। जनक ने गौरी को संतुष्ट करके सीता को (जो पार्वती के अंश से उत्पन्न हुई है) प्राप्त किया था, ऐसा कथन भी मिलता है।

१७२ **कालिका पुराण** (दसवीं-ग्यारवीं श० ई०)। डॉ० हाजरा[2] ने इस पुराण के वेंकटेश्वर संस्करण के आधार पर इसकी कथावस्तु का विश्लेषण किया है। रामकथा विषयक सामग्री निम्नलिखित है—सीता की जन्म कथा (अध्याय ३८, दे० आगे अनु० ४०९), हनुमान की एक जन्मकथा से मिलती-जुलती सामग्री (अध्याय ४८—५३, दे० आगे अनु० ६४७), राम की विजय के लिए ब्रह्मा द्वारा दुर्गा की पूजा (अध्याय ६२, २०—३८)।

१७३ दो अपेक्षाकृत अर्वाचीन पुराणों में रामकथा विषयक किंचित् सामग्री मिलती है। **आदि पुराण**[3] का वर्ण्य विषय वसुदेव-विवाह से लेकर यमलार्जुन-वृत्तान्त तक कृष्ण-चरित है। "नन्ददृष्ट स्वप्न वर्णन" नामक १६वें अध्याय में कृष्ण-जन्म के पश्चात् नन्द के एक स्वप्न का विवरण है, जिसमें एक संक्षिप्त रामकथा के अतिरिक्त इसका भी उल्लेख किया गया है कि नन्द ने पूर्व-जन्म में भक्तिपूर्वक भगवान् से प्रार्थना की थी, जिसके फलस्वरूप रामावतार में तथा अब कृष्णावतार में उनको भगवान् के पिता हो जाने का वरदान प्राप्त हुआ था। आदि पुराण का राम-चरित वाल्मीकीय रामकथा के अनुरूप है, इसकी एक विशेषता यह है कि कनक-मृग को देखकर राम स्वयं कहते हैं कि यह अवश्य ही कोई मायावी राक्षस है।

---

१ आर० सी० हाजरा न्यू इंडियन एंटिक्वेरी, भाग ६, ११२०।

२ स्टडिस इन दि उपपुराणस्, भाग २, पृ० १९४।

३ बम्बई से सं० १९८६ में प्रकाशित। रचना-काल १३वीं तथा १६वीं शताब्दी के बीच। दे० हाजरा, स्टडीस इन दि उपपुराणस्, पृ० २८८।

कल्कि पुराण[1] की सक्षिप्त रामकथा (अश ३, ३, २६-५८) की विशेषता है कि इसमे राम-सीता के पूर्वानुराग की झलक मिलती हे (दे० आगे अनु० ८०३)। एक अन्य स्थल पर इसका उल्लेख है कि सीता ने अशोकवन मे रुक्मिणीव्रत किया था, जिसके फलस्वरूप वह राम से पुन मिल सकी (दे० ३, १७, ४०)।

ग—साम्प्रदायिक रामायण

योगवासिष्ठ

१७४ **योगवासिष्ठ रामायण** वास्तव मे साम्प्रदायिक रामायण नही है, लेकिन इसका उल्लेख यहाँ अन्य साम्प्रदायिक रामायणो के साथ अधिक सुविधाजनक है। एम० विटरनित्स तथा एम० एन० दासगुप्त **योगवासिष्ठ** को आठवी शताब्दी ई० का मानते है[2] लेकिन डा० वी० राघवन् के अनुसार उसकी रचना ११०० ई० और १२५० ई० के बीच मे हुई थी[3]। इस ग्रन्थ का मुख्य विषय वसिष्ठ-रामचन्द्र-सवाद है, जिसमे वसिष्ठ राम को मोक्ष-प्राप्ति पर एक विस्तृत उपदेश देते हैं। वाल्मीकि ने अरिष्टनेमि को यह सवाद सुनाया था तथा योगवासिष्ठ मे अगस्त्य सुतीक्ष्ण की शिक्षा के लिए वाल्मीकि-अरिष्टनेमि-सवाद दुहराते है।

इसके प्रारम्भ मे रामावतार के चार कारण बताए जाते है—सनत्कुमार, भृगु वृन्दा तथा देवशर्मा ब्राह्मण के शाप (दे० वैराग्य प्रकरण, सर्ग १, ६०)। तब राम के जीवन्मुक्त होने, विद्याभ्यास करने तथा उनकी तीर्थ-यात्रा का वर्णन है (सर्ग ३)। अनन्तर राम के सोलह वर्ष की अवस्था मे विरक्त हो जाने की कथा दी गई है (सर्ग ५)। विश्वामित्र के कहने पर वसिष्ठ ने एक विस्तृत उपदेश दिया, जिसके फलस्वरूप राम निर्लिप्त होकर अपने कर्त्तव्य के पालन के लिए तत्पर हुए।

अन्तिम प्रकरण मे काकभुशुण्डी के जन्म तथा उसके सुमेरु पर निवास की कथा दी गई है। इस कथा मे राम तथा भुशुण्डी का कोई विशेष सबध नही सूचित किया गया है (दे० निर्वाण प्रकरण, पूर्वार्ध, सर्ग १४-२४)। आगे चलकर समस्त रामकथा का

---

१ जीवानन्द विद्यासागर, कलकत्ता, १८९०। डॉ० हाजरा (वही, पृ० ३०८) के अनुसार इसकी रचना १७०० ई० के पूर्व हुई थी।

२ दे० क्रमश हि० इ० लि० भाग ३, पृ० ४४३ और हि० इ० फिलॉसफी, भाग २, पृ० २३०।

३ दे० जर्नल ऑव ओरियेण्टल रिसर्च, भाग १३, पृ० १००-१२८। शिवप्रसाद भट्टाचार्य इसे अभिनन्द (१०वी श० ई०) की रचना मानते है। दे० इ० हि० क्वा०, भाग २४, पृ० २०१-१२।

सिंहावलोकन भी किया गया है (दे० निर्वाण प्रकरण, पूर्वार्ध, सर्ग १२८,६८-७३)।

अध्यात्म रामायण

१७५ साम्प्रदायिक रामायणों मे **अध्यात्म रामायण** निर्विवाद रूप से सब से महत्त्वपूर्ण है। इसके रचना-काल तथा रचयिता के विषय मे खोज की अपेक्षा है। इस ग्रन्थ की रामानन्द सम्प्रदाय मे बहुत प्रतिष्ठा है और इसका प्रभाव आनन्द रामायण, रामचरितमानस तथा एकनाथ के मराठी रामायण आदि पर प्रत्यक्ष है। एकनाथ ने (१६ वी श० ई०) अध्यात्म रामायण को एक आधुनिक रचना कहा है। अत इसकी प्राचीनता मे बहुत सन्देह है।[1] सबसे अधिक सभव यह है कि इसकी रचना १४वी अथवा १५वी शताब्दी मे हुई थी। रामानन्द को भी इसके रचयिता सिद्ध करने का प्रयत्न किया गया है।[2] अध्यात्म रामायण मे रामानुज द्वारा प्रतिपादित समुच्चयवाद का स्पष्ट शब्दो मे विरोध किया गया है और विशिष्टाद्वैत का कही भी समर्थन नही हुआ। अत ऐसा प्रतीत होता है कि इसकी रचना श्री सम्प्रदाय तथा रामावत सप्रदाय से अलग रहते हुए किसी स्वतन्त्र दार्शनिक कवि द्वारा हुई थी।

राम-भक्ति के विकास मे इस ग्रन्थ का अधिक महत्त्व है, रामकथा के विकास मे इसका स्थान अपेक्षाकृत गौण है। इसका मुख्य उद्देश्य है वेदान्त दर्शन के आधार पर राम-भक्ति का प्रतिपादन। प्रस्तुत निबन्ध के दृष्टिकोण से इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ उल्लेखनीय हैं—

—समस्त रचना पार्वती-शकर-सवाद के रूप मे दी गई है। नारद ने ब्रह्मा से इस सवाद को सुना था।

—अवतारवाद की व्यापकता राम, सीता तथा लक्ष्मण के परब्रह्म, मूल-प्रकृति (योगमाया) तथा शेष के अवतार होने का निरन्तर उल्लेख किया गया है। विश्वामित्र वसिष्ठ, जनक, कौशल्या, कुभकर्ण, रावण आदि रामावतार के रहस्य से परिचित है।

—बालकाड मे भागवत का अनुकरण (दे० राम का कौशल्या को अपना विष्णुरूप दिखलाना तथा राम की बाल-लीला, सर्ग ३)।

—अहल्योद्धार के अनन्तर केवट का वृत्तान्त, जिसे तुलसीदास ने अयोध्याकाड मे रखा है (दे० १, ६)।

—युवराज-अभिषेक के पूर्व राम-नारद-सवाद (दे० २, १) तथा मथरा मे सरस्वती का प्रवेश (दे० २, २)।

---

१ दे० कलकत्ता सस्कृत सीरीज, भाग ११, भूमिका।

२ दे० दि आथरशिप ऑव दि अध्यात्म रामायण, जर्नल गगानाथ झा रिसर्च इस्टीट्यूट, भाग १, पृ० २१५-३६।

—राम-नाम-माहात्म्य दिखलाने के लिए वाल्मीकि का अपनी आत्म-कथा सुनाना (दे० २, ६)।
—मायामयी सीता के हरण का वृत्तान्त (दे० ३, ७)।
—लक्ष्मण का १२ वर्ष तक उपवास करना (दे० ३, ४ तथा ६, ८)।
—राम द्वारा सेतु-बन्ध के पूर्व शिवलिंग की स्थापना (६, ४)।
—कालनेमि का वृत्तान्त (६,६)।
—रावण का शुक्र के परामर्श के अनुसार यज्ञ करना तथा अंगद द्वारा उसका भंग किया जाना (६, १०)।
—रावण के नाभिदेश मे स्थित अमृत का उल्लेख (६, ११, ५३)।
—वैकुण्ठ जाने के उद्देश्य से रावण के सीताहरण करने का उल्लेख (७, ४, ९)।

अद्भुत रामायण

१७६ ऐसा प्रतीत होता है कि **अदभुत रामायण** अथवा अद्भुतोत्तरकाड की रचना अध्यात्म रामायण के कुछ काल बाद हुई।[1] भूमिका मे समस्त वृत्तात वाल्मीकि-भारद्वाज-सवाद के रूप मे प्रस्तुत किया गया है (दे० सर्ग १)। इसकी कथावस्तु तीन भागो मे विभाजित की जा सकती है।

[अ] अवतार के कारण (सर्ग २-८)

नारद तथा पर्वत द्वारा विष्णु को दिया हुआ शाप रामावतार का कारण बताया गया है। इस कथा के अनुसार अंबरीष की पुत्री श्रीमती को भी शाप दिया जाता है। वह जानकी बनकर राक्षस द्वारा चुरायी जायेगी (सर्ग २-४)।

अनन्तर सीता के अवतार के कारण के विषय मे एक नई कथा दी गई है। इसके अनुसार नारद ने स्वर्ग मे अपमानित किए जाने के कारण लक्ष्मी को शाप दिया था, जिसके फलस्वरूप वह मदोदरी की पुत्री बन गई (दे० सर्ग ५-८ तथा आगे अनु० ३७३)।

[आ] वाल्मीकीय राम-चरित (सर्ग ९-१६)

इसमे परशुराम के तेजोभग से लेकर रावण-वध के बाद अयोध्या म प्रत्यागम तक समस्त रामकथा का सक्षिप्त वर्णन किया गया है। इस रामकथा के अनुसार राम

---

१ दे० वी० राघवन म्युसिक इन दि अद्भुत रामायण, जर्नल म्युसिक एकेडमी, भाग १६, पृ० ६६।
जी० ग्रियर्सन आन दि अद्भुत रामायण, बुलेटिन स्कूल ओरियन्टल स्टडिस, भाग ४, पृ० ११।
प्रस्तुत परिचय वेंकटेश्वर प्रेस सस्करण पर निर्भर है।

वृन्दा-शाप तथा कलहा-धर्मदत्त का कैकेयी-दशरथ के रूप मे अवतार (सर्ग ४)।
सीताहरण के बाद सीता का रूप धारण कर उमा का राम की परीक्षा करना (सर्ग ७)।
रावण का शिव से आत्मलिंग तथा पार्वती को प्राप्त करने तथा दोनो को खो बैठने की कथा (सर्ग ६)।
ऐरावण तथा मैरावण का राम-लक्ष्मण को पाताल ले जाना तथा हनुमान् द्वारा उनकी मुक्ति (सर्ग ११)।
सुलोचना की कथा (सर्ग ११, २०५ आदि)।
मुक्ति प्राप्त करने के उद्देश्य से रावण के सीता-हरण करने का उल्लेख (सर्ग १३, ११६ आदि)।

[२] यात्राकाड (६ सर्ग)

वाल्मीकि रामायण की उत्पत्ति (दे० १, २-१२ आदि) तथा वाल्मीकि द्वारा शतकोटिश्लोक रामायण की रचना का उल्लेख (सर्ग १-२)।

इसके बाद आनन्द रामायण की अधिकाश सामग्री नवीन है। इस काड के अन्तर्गत चारो दिशाओ मे राम की तीर्थ-यात्रा का वर्णन मिलता है।

[३] यागकाड (६ सर्ग)।

राम के एक अश्वमेध का वर्णन।

[४] विलासकाड (६ सर्ग)।

शकरकृत रघुवीर-स्तव (सर्ग १), सीता का नख-शिख वर्णन, सीतालकार, जल-क्रीडा, सीता-राम-दिनचर्या (सर्ग २-६)।

एकपत्नीव्रत रखने के पुरस्कारस्वरूप अगले अवतार मे बहुत सी पत्नियो को प्राप्त करने का राम को आश्वासन (सर्ग ७, १-२८)।

राम का कामपीडिता देवपत्नियो को कृष्णावतार के समय गोपिकाएँ बनने का आश्वासन देना (सर्ग ७, २६ आदि)।

कृष्णावतार के समय सत्यभामा तथा कुब्जा बन जाने का गुणवती तथा पिंगला को राम द्वारा आश्वासन (सर्ग ८)।

सीता सहित राम की कुरुक्षेत्र-यात्रा (सर्ग ६)।

[५] जन्मकाड (६ सर्ग)।

राम द्वारा सीता-त्याग की कथा (सर्ग १-३, दे० आगे अनु० ७३३)।
कुश-जन्म तथा वाल्मीकि द्वारा लव की सृष्टि (सर्ग ४)।
कुश-लव का राम-सेना से युद्ध करना, सीता की शपथ से पृथ्वी देवी का प्रगट

—हनुमान् की जन्मकथा, जिसके अनुसार पार्वती उनकी माता मानी जाती है (४, १२)।
—सीता द्वारा शतानन रावण का वध (७, १-२)।
—जनक के पूर्वजन्म की कथा (७, ३)।

कालनिर्णय रामायण

१७६ रामायणो का एक ऐसा वर्ग मिलता है, जिसकी विशेषता यह है कि इसमे रामकथा की प्रधान घटनाओ की तिथिया दी गई हे।

स्कन्दपुराण (दे० ब्राह्म खण्ड के अन्तर्गत धर्मारण्यखण्ड, तीसवाँ अध्याय) तथा **पद्मपुराण** (दे० पातालखण्ड, छत्तीसवाँ अध्याय) मे सभवत इस प्रकार की सब से प्राचीन रामकथा सुरक्षित है। पद्मपुराण मे लोमश ऋशि इस रामचरित के वक्ता माने जाते है। अग्निवेश के नाम से इस प्रकार का एक अन्य रामायण प्रचलित है, जिसके अनेक सस्करण मिलते है, उदाहरणाथ

अग्निवेश-रामायण (वेंकटेश्वर प्रेस, विस्तार १०५ श्लोक)
समयादर्श-रामायण (लक्ष्मी नारायण प्रेस, विस्तार १०३ श्लोक)
समयनिरूपण-रामायण (वेंकटेश्वर प्रेस, विस्तार ४५ श्लोक)

राजेन्द्रलाल मित्र के कैटालॉग मे अग्निवेशकृत **रामायणसार** (भाग ७, पृ० ५८) तथा **रामायणरहस्य** व **रामहृदयम** (भाग ८, पृ० १२५) का उल्लेख किया गया है। इस रचना का विस्तार २७७ श्लोक बताया गया है। तजौर कैंटालॉग मे अग्निवेशकृत ५०० श्लोको के विस्तार के **रामजातकम्** का उल्लेख है (दे० न० ६४८८)। **अग्निवेश रामायण** मे कथा के दृष्टिकोण से कोई विशेषता नही है। घटनाओ की तिथियो के अतिरिक्त राम तथा सीता की अवस्था का भी ध्यान रखा गया है। विवाह के समय राम तथा सीता की अवस्था क्रमानुसार १५ तथा ६ वर्ष की थी, वनवास के समय २७ और १८ वर्ष की, राज्याभिषेक के समय ४२ और ३३ वर्ष की।

लोमश तथा अग्निवेशकृत रचनाओ के अतिरिक्त निम्नलिखित कालनिर्णय रामायणो का उल्लेख मिलता है

अब्द-रामायण (दे० कल्याण का रामायणाक, पृ० ३०४)
व्यासकृत **रामायणतात्पर्यदीपिका** (मद्रास कैटालॉग, आर, १५१८)
रामावतारकालनिर्णयसूचिका (मद्रास कैटालॉग, डी, १६०६)
श्रीनिवासराघवकृत **रामायणसग्रह** (मद्रास कैटालॉग, आर, २२३८ बी)

गौण रामायण

१८० अर्वाचीन रामकथा-साहित्य मे बहुसख्यक रामायणो के नामो का उल्लेख

मिलता है—**रामायणादेव नाना सति रामायणानि हि** (दे० आनन्द रामायण, मनोहर-काड, सग ८, ६२)। ये नाम मभवत अधिकाश कल्पित है और यदि उनकी रचना भी हुई हो तो इममे बहुत सदेह नही है कि ये ग्रथ अपेक्षाकृत अर्वाचीन ही है।

इनमे से **भुशुण्डीरामायण** का सबमे अधिक उल्लेख किया जाता है। इसके दो अन्य नाम भी प्रचलित है, **मूलरामायण**[1] और **आदिरामायण**। अयोध्या के श्रावण कुज तथा लक्ष्मण किले मे और अन्यत्र भी इसकी हस्तलिपि सुरक्षित होने का आश्वासन दिया जाता है। इसमे चार खण्ड (पूर्व, दक्षिण, पश्चिम तथा उत्तर) बताए जाते है, जिसके प्रथम खण्ड मे अवतार, बाल-चरित, राम-क्रीडा, सीता-स्वयवर का वर्णन किया गया है। प्रस्तुत लेखक इस रचना का अब तक निरीक्षण न कर सका। डा० भगवती-प्रसाद सिह को इसकी पूरी प्रति मिल गई है। बडौदा के ओरियेटल इस्टिटयूट मे इसके तीन खण्डो (दक्षिण, पश्चिम, उत्तर) की अर्वाचीन हस्तलिपिया विद्यमान है। जयपुर मे दो रायायण है, जिनके वक्ता भुशुण्डी ही है, एक **आदिरामायण** (ब्रह्मा-भुशुण्डी-सवाद), जो बडौदा के आदि रामायण तथा डॉ० भगवती प्रसाद सिह के भुशुण्डी रामायण से अभिन्न प्रतीत होता है और दूसरा **ब्रह्मरामायण** (भुशुण्डी गरुड-सवाद), जिसमे भी राम-रास-लीला का वर्णन है। इण्डिया ऑफिस से जो **चित्रकूट-माहात्म्य** मुझे मिला है, इसमे इसके **आदिरामायण** का एक अश होने का उल्लेख किया गया है (दे० इण्डिया ऑफिस कैटा-लॉग न० ३७०४)। **चित्रकूट-माहात्म्य** की हस्तलिपि मे रचना अथवा लिपि काल का उल्लेख नही है लेकिन यह मैकेजी महोदय के सग्रह की है, अत कम से कम डेढ सौ साल पुरानी है। इसमे भरत-अत्रि-सवाद भुशुण्डी द्वारा शाडिल्य को सुनाया जाता है। चित्र-कूट तथा उसके आस-पास के तीर्थों के वर्णन के अतिरिक्त इसके माहात्म्य का रहस्योद्-घाटन भी किया गया है। चित्रकूट के सॉतानक वन मे एक सरोवर है, जिसके मध्य मे एक रम्य मण्डप बना हुआ है, जहॉ एक वेदिका पर सीता और उनकी सखियो के साथ राम नित्य रास-क्रीडा करते है (दे० अध्याय ४ और ५)। डॉ० भगवती प्रसाद अपने 'रामभक्ति मे रसिक सम्प्रदाय' मे भुशुण्डी रामायण के कथानक के विषय मे लिखते है—"रावण द्वारा भेजे गए राक्षस, बाल्यावस्था मे ही राम को समाप्त करने का प्रयत्न करते है, किन्तु वे स्वय मारे जाते है। उनके डर से दशरथ राम को गुप्त स्थान पर भेज देते है। सरयूपार गोपप्रदेश मे गोपेन्द्र सुखित और उनकी स्त्री मागल्या राम का पालन-पोषण करते है। विवाह के पूर्व अयोध्या के प्रमोदवन मे देवावनार गोपियो और अपनी पराशक्ति सीता के साथ राम रासलीला करते है। मिथिला पहुँचकर एक पक्षी द्वारा वे सीता के पास अपना चित्र भेजते है। चित्र-दर्शन से सीता उन्हे प्राप्त करने के लिए उत्क-

---

१ प्रकाशित मूलरामायण वाल्मीकिकृत रामायण का प्रथम सर्ग मात्र है।

ठित होती है। दशरथ के अश्वमेध यज्ञ मे विजित राजाओ की सहस्रो कन्याओ को वे स्वीकार करते है। चित्रकूट मे गोप-गोपिकाओ के साथ रास-क्रीडा का आयोजन होता है। इसी प्रकार की अनेक शृंगारी लीलाओ के वर्णन इसमे आए है। सीता के अतिरिक्त **'सहजा'** सखी का राम की पत्नी के रूप मे उल्लेख। सहजा जनकवशी कन्या कही गई है। सीता, ज्ञानपरक भक्ति और सहजा, प्रेमाभक्ति की प्रतीक मानी गई है।" (दे० पृ० ६७)।

१८१ महारामायण का उल्लेख श्री रामदास गौड कृत 'हिन्दुत्व' मे किया गया है (दे० आगे अनु० १८२)। इसके पाँच अध्याय (४८-५२) अयोध्या मे सवत् १९-८५ मे छपे है। इनका वर्ण्य-विषय इस प्रकार है—रामचरणो की ४८ रेखाओ का वर्णन और उनके समस्त सृष्टि के उत्पत्ति-स्थान होने का उल्लेख (अध्याय ४८), रामोपासको के सस्कारो का वर्णन, जिनमे से एक धनुर्वाण सस्कार माना गया है (अध्याय ४९), राम के निरक्षरातीत ब्रह्म होने का तथा उनकी सखीभाव से उपासना की जाने का उल्लेख (अध्याय ५०), सीता की तैंतीस शक्तियो की नामावली तथा उनके कार्य-वर्णन (अध्याय ५१), रामनाम के महत्त्व-वर्णन के प्रसग मे रम् धातु से राम नाम की व्युत्पत्ति का प्रतिपादन तथा राम की रास-क्रीडा का उल्लेख (अध्याय ५२)। सभव है यह महारामायण भुशुण्डी रामायण से अभिन्न हो।

१८२ मत्ररामायण (वेकटेश्वर प्रेस) के प्रारम्भ मे रामरक्षास्तोत्र उद्धृत किया गया है किन्तु इसका मुख्य उद्देश्य है रामायण के **वेदमूलत्व** का प्रतिपादन। वेदो मे ही रामकथा निहित है, यह विश्वास एक प्रसिद्ध श्लोक द्वारा व्यक्त किया जाता है, जिसे रामायण का पाठ करने के पूर्व भक्तगण उच्चरित करते है, इसका आशय यह है कि राम के प्रकट होने के साथ-साथ वेद भी रामायण के रूप मे प्रकट हुए

वेदवेद्ये परे पुसि जाते दशरथात्मजे।
वेद प्राचेतसादासीत साक्षाद्रामायणात्मना॥

मत्ररामायण मे नीलकण्ठ ने वैदिक मत्रो का एक सग्रह प्रस्तुत किया है जिनका परोक्ष अर्थ रामकथा से सम्बन्ध रखता है। इस प्रकार उन्होने बालकण्ड से लेकर, उत्तरकाण्ड तक की समस्त कथा वैदिक मत्रो मे देखने का प्रयास किया है। उदाहरणार्थ वह ऋग्वेद के दसवे मण्डल का ९९ वे सूक्त, जिसमे इन्द्र की स्तुति की गई है, रामकथा का साराश समझते है। इस सूक्त के ऋषि वम्र वाल्मीकि का बोध कराते है, इन्द्र राम का, रुद्रगण हनुमान् तथा उनके साथियो का, आदि। मत्र रामायण का रचयिता अपने समालोचको को लक्ष्य करते हुए लिखता है—**"नैष स्थाणोरपराधो यदेनमन्धो न पश्यति"** (पृ० २९)।

मत्ररामायण के प्रथम श्लोक मे रामायण के गायत्री-स्वरूप का उल्लेख किया

गया है । **गायत्रीरामायण**[1], विद्यारण्यकृत **रामायणरहस्य** (श्री शकर गुरुकुल पत्रिका, भाग २), **तत्वसग्रहरामायण** (बालकाण्ड, सर्ग ५), गोविन्दराज की भूषण नामक टीका[2] आदि मे रामायण के गायत्री-स्वरूप का प्रतिपादन किया गया है । तर्क यह है कि रामायण के २४००० श्लोको मे से प्रत्येक सहस्र के प्रथम श्लोक का पहला अक्षर उद्धृत करने मे गायत्री मत्र बन जाता है—**प्रतिश्लोकसहस्रादौ मत्रवर्णा समुद्धृता** (दे० रामायणरहस्य, ६३) । वास्तव मे कोई भी गायत्री रामायण प्रत्येक सहस्र समूह का प्रथम श्लोक उद्धृत नही करता । विद्यारण्य ने वाल्मीकि रामायण के प्रथम सर्ग को भी गायत्री-स्वरूप प्रतिपादित किया है (दे० रामायणरहस्य, ४७-५९) ।

१८३ **वेदान्त रामायण** (लहरी प्रेस, बनारस स० १९६४) मे परशुराम के जन्म तथा चरित्र का वर्णन किया गया है । वाल्मीकि ने राम के सदेह का निवारण करने के लिए इस कथा को सुनाया था । राम ने पूछा था कि परशुराम ने क्यो क्षत्रियो का नाश किया था और क्षत्रियवश का लोप क्यो नही हुआ ।

१८४ उपर्युक्त प्राप्य रचनाओ के अतिरिक्त सस्कृत हस्तलिपि-सूचीपत्रो मे और बहुत से ग्रन्थो का उल्लेख किया गया है । ये अधिकाश १७ वी शताब्दी अथवा इसके बाद की रचनाएँ प्रतीत होती है । श्री रामदास गौड ने अपने **हिन्दुत्व** नामक ग्रन्थ मे बस्ती-निवासी प० बनराज शास्त्री की दी हुई टिप्पणियो के आधार पर उन्नीस रामायणो की कथावस्तु का सक्षिप्त परिचय दिया है (दे० पृ० १३१ आदि) । प्रस्तुत अध्याय के परिशिष्ट मे उन रामायणो के नाम उद्धृत किए जाएँगे ।

घ—अन्य धार्मिक साहित्य

जैमिनि-भारत

(अ) जैमिनीय अश्वमेध

१८५ ऐसी अनेक रचनाएँ मिलती है, जो **जैमिनि-भारत** की अश मानी जाती हैं । इस ग्रथ की रचना **भागवत पुराण** के बाद तथा १३ वी श० ई० के पूर्व हुई थी, क्योकि **जैमिनीय अश्वमेध**[3] मे भागवत पुराण का उल्लेख किया गया है तथा इसका १३ वी शताब्दी मे कन्नड भाषा मे अनुवाद हुआ था ।[4] इसका मुख्य विषय युधिष्ठिर के

---

१ के० एस० रामस्वामी शास्त्री अपने 'स्टडिस इन दि रामायण' नामक ग्रथ मे इस गायत्री रामायण के दो रूप उद्धृत करते है (दे० परिशिष्ट ४) ।

२ दे० **गायत्र्याश्च स्वरूप तद्रामायणमनुत्तमम्** (७, १११, १८) ।

३ दे० वेकटेश्वर प्रेस का सस्करण ।

४ दे० एम० विंटरनित्स वही, पृ० ५८४ ।

अश्वमेध का वर्णन है। इसमे कुशलवोपाख्यान (अध्याय २५-३६) भी दिया गया है, जिसकी कथावस्तु इस प्रकार है—धोबी के कथन के फलस्वरूप सीता-त्याग, कुश-लव का जन्म तथा यज्ञाश्व के कारण राम-सेना से युद्ध, अनन्तर राम और सीता का सम्मिलन। यह सुखान्त रामकथा **पद्मपुराण** के पातालखड के वृत्तान्त मे बहुत कुछ मिलती-जुलती है (दे० अध्याय ५५-६८)।

(आ) मैरावणचरित (मद्रास मेनुस्क्रिप्ट कैटालॉग, डी २०८२) अथवा **हनुमद्विजय** (वही, डी १२२१५)।

१८६ यह एक स्वतन्त्र रचना प्रतीत होती है, फिर भी अध्यायो की पुष्पिका मे इसे **जैमिनि-भारत** का एक अश माना गया है। इसमे मैरावण पर रुद्राश हनुमान् की विजय का वर्णन अगस्त्य द्वारा राम को सुनाया जाता है। मेघनाद-वध के बाद मैरावण राम तथा लक्ष्मण को पाताल ले जाता है और हनुमान् अपने पुत्र मत्स्यराज की सहायता से मैरावण का वध करके दोनो को छुडाते है।

(इ) सहस्रमुखरावणचरित्रम् (मद्रास कैटालॉग, डी २०९८)

१८७ यह रचना जैमिनि भारत के आश्रमवासपर्व का एक अश मानी जाती है। इसकी कथावस्तु उपर्युक्त अद्भुत रामायण के वृत्तान्त से मिलती-जुलती प्रतीत होती है। रावण पर सीता की विजय के विषय मे एकाध और हस्तलिपियो का पता मिला है—**सीताविजय** (वही, आर ९९४ और आर, १४८) जो **वासिष्ठोत्तर रामायण** का एक भाग माना जाता है और जिसमे सीता का शतस्कध रावण पर विजय का वर्णन किया गया है। इस प्रकार की एक और हस्तलिपि का उल्लेख है, जिसका शीर्षक है **शतमुखरावणचरित्रम्** (वही, आर, ६४७ बी)।

सत्योपाख्यान

१८८ सत्योपाख्यान (वेंकटेश्वर प्रेस) मे वाल्मीकि-मार्कण्डेय-सवाद वर्णित है। इसकी कथावस्तु से पता चलता है कि इसकी रचना अध्यात्म रामायण के बहुत बाद हुई थी, जब रामकथा तथा राम-भक्ति पर कृष्ण-लीला का गहरा प्रभाव पडने लगा था। सक्षेप मे इसका वर्ण्य विषय इस प्रकार है राम-लक्ष्मण आदि के विष्णु-शेष-सुदर्शन और शख के अवतार होने के उल्लेख के बाद (अध्याय १-२) मथरा-कैकेयी-सवाद दिया गया है, जिसमे दशरथ-कैकेयी के विवाह की कथा मिलती है (अध्याय ३-९), अनन्तर मथरा के पूर्वजन्म की कथा का वर्णन किया गया है, जिसके अनुसार वह दैत्य विरोचन की पुत्री थी और विष्णु की आज्ञा से इन्द्र द्वारा वज्र मे मारी गई थी (अध्याय १०-१५)। पूर्वार्द्ध के शेष अध्यायो (१६-४९) मे राम की बाल-लीला का विस्तार से वर्णन किया गया है। इसके निम्नलिखित वृत्तान्त उल्लेखनीय हैं

—देवताओ का अयोध्या मे आगमन तथा दशरथ द्वारा उनका स्वागत (अध्याय १७-२३)।

—काकभुशुण्डि का राम की रोटी (शुष्कलि) चुराना, बाद मे उनका राम से क्षमा माँगना, राम मे निश्चल भक्ति की प्रार्थना करना तथा उनके द्वारा गरुड को रामतत्व सिखलाने का उल्लेख (अध्याय २६)।

—रत्नालका और उसके पति का वृत्तान्त, अगले जन्म मे उनको नन्द और यशोदा बनने का आश्वासन (अध्याय २६-३०)।

—नवमीमाहात्म्य (अध्याय ३१-३५)।

—राम का गुह से मृगया की शिक्षा पाना (अध्याय ४३)।

उत्तरार्द्ध मे सीतास्वयवर का वर्णन किया गया है, जिसमे प्रहस्त की उपस्थिति का उल्लेख भी है। राम-सीता-विवाह के बाद उनकी तीर्थयात्रा का उल्लेख हुआ है तथा जलविहार, वनविहार, सीता की मानलीला, होलिकोत्सव आदि का शृङ्गारात्मक वर्णन किया गया है।

धर्मखण्ड

१८६ धर्मखण्ड की कई हस्तलिपियाँ मद्रास के राजकीय ओरियेटल पुस्तकालय मे सुरक्षित हैं। यह रचना स्कन्द पुराण का एक अश मानी जाती है तथा तत्व-सग्रह रामायण (दे० ऊपर अनु० १७८) के मुख्य आधार ग्रन्थो मे से एक है। इसका रचना-काल १५-१६ वी शताब्दी प्रतीत होता है। यह एक शैव ग्रन्थ है, अत इसकी रामकथा मे शिव को विशेष रूप से महत्व दिया गया है। वह पार्वती के साथ सीता-स्वयवर मे उपस्थित होकर राम को धनुष तोडने का आदेश देते है। इस रचना के कई स्थलो पर शिव और राम की अभिन्नता का भी प्रतिपादन किया गया है। राम के वनवास के लिए प्रस्थान करने के पश्चात् शिव ब्राह्मण का रूप धारण कर उनसे मिलते है, सवाद मे राम सुस्पष्ट शब्दो मे अपने तथा शिव मे अभेद व्यक्त करते है—"शिव मा प्रतिजानीहि नावयरोरन्तर द्विज" (अध्याय ३८)। अन्यत्र कहा गया है कि राम ने हनुमान् को भेजते समय उनसे कहा—'तुम शिव के अवतार हो, मैं स्वय शिव हूँ' (अध्याय ६८)। धर्मखण्ड की रामकथा की अन्य निम्नलिखित विशेषताएँ उल्लेखनीय हैं

—कैकेयी का पश्चात्ताप (अध्याय ३८)।

—सीताहरण का वृत्तान्त (अध्याय ८१)।

—अशोकवन मे रावण-सीता-सवाद के समय हनुमान् का प्रकट होना तथा रावण को भगा देना (अध्याय १०५)।

—मृत्यु द्वारा मायामयी सीता का रूप धारण करना (अध्याय १३०)।
इन प्रसगो का निरूपण आवश्यकतानुसार प्रबन्ध के चतुर्थ भाग मे किया जायेगा।

हनुमत्सहिता

१६० **हनुमत्सहिता** की सवत् १७१५ की एक हस्तलिपि का उल्लेख राजेन्द्र-लाल मित्र के कैटालॉग मे किया गया है (दे० भाग ७, पृ० २५०)। इस रचना का **महारासोत्सव** के नाम से प्रकाशन भी हुआ है (लखनऊ, सन् १६०४)।

इसमे हनुमान्-अगस्त्य-सवाद के रूप मे सरयू-तट पर राम की रासलीला तथा जलविहार का वर्णन किया गया है। विशेषता यह है कि सीता अपने शरीर से १८१०८ नारियो की सृष्टि करती है तथा इनके साथ रास करने के लिए राम, कृष्ण की भाँति, इतने ही रूप धारण कर लेते है। इसका वितार ३६० श्लोक का है।

रामकथा पर कृष्णलीला का यह प्रभाव अपेक्षाकृत अर्वाचीन है। फिर भी, **हनुमत्सहिता** की स० १७१५ की इस हस्तलिपि से पता चलता है कि गोस्वामी तुलसीदास के जीवन-काल मे ही इसका सूत्रपात अवश्य हुआ था।

वृहत्कोशल खण्ड

१६१ राजेन्द्र लाल मित्र ने वृहत्कोशल की एक हस्तलिपि (लिपि-काल स० १७१४) का विवरण दिया है (दे० वही, भाग ७, पृ० ५२), जिसे उन्होने बेतिया (चम्पारण) मे देखा है और उसका विस्तार ३०७२ श्लोको का बताया है। स० २००१ मे लाहौर के श्री रोशनलाल अग्रवाल ने हिन्दी टीका सहित इसकी १८० प्रतिया छपवायी। यह हिन्दी 'रसवर्द्धिनी' टीका श्री रामवल्लभाशरण महाराज की लिखी हुई है।

वेदव्यासकृत वृहत्कोशलखण्ड **ब्रह्मरामायण**[1] का अश माना जाता है और इसके पन्द्रह अध्यायो का कथानक तीन भागो मे विभक्त किया जा सकता है

(१) विवाह के पूव राम की लीला (अध्याय १–५)

प्रारम्भ मे यज्ञोपवीत-सस्कार तथा विद्याभ्यास के पश्चात् **सखारास** का वर्णन किया गया है। राम के सखा (जिनमे रुद्र भी शामिल है) स्त्री का रूप धारण कर राम के साथ रासलीला का आयोजन करते है (अध्याय १)। अनन्तर गोपिकाओ, देवकन्याओ तथा राजकन्याओ के साथ रास का वर्णन किया गया है। किसी अवसर पर राम को देखकर गोपियो का मन आकर्षित हुआ और वे उनको पतिस्वरूप प्राप्त करने के उद्देश्य से तप तथा पार्वती की पूजा करने लगी। पिता की आज्ञा लेकर राम शिकार करने के

---

१ जयपुर वाले ब्रह्मरामायण मे भुशुण्डी-गरुड-सवाद है। यहाँ पर केवल सूत-शौनक-सवाद का उल्लेख है।

बहाने यमुना तट पर पहुँचते है। शिव की आज्ञा से निकुभ आँधी उत्पन्न करता है, जिससे गोधन भाग जाता है तथा गोप उसका पीछा करते-करते चले जाते हैं। इतने मे राम गोपियो के पास पहुँचकर उनके साथ वसन्तोत्सव मनाते हैं तथा रासलीला भी करते है। इसमे लक्ष्मी, सरस्वती, उमा आदि मालिन का रूप धारण कर भाग लेती है। अन्त मे गोपियो को विदा कर राम अपने सखाओ को योगनिद्रा से जगाकर अयोध्या लौटते है (अध्याय २)। अगले अध्याय मे दशरथ राम को दही का कर वसूल करने के लिए गोपो के यहाँ भेज देते है, जो राम को अपनी पुत्रिया समर्पित करते है। राम सबसे विवाह कर उनको अयोध्या ले आते है। अनन्तर सान्तानिक वन की लताओ से **देवकन्याएँ** प्रकट होकर राम के साथ विविध विलास करती है तथा अन्त मे उनकी रासलीला का भी विधान होता है (अध्याय ३)। अब देवता अयोध्या पहुँचकर राम से निवेदन करते है कि वह उनकी कन्याओ को भी विवाह मे ग्रहण करे। इसके बाद दशरथ राम को शम्बरासुर का वध करने के लिए भेज देते है। राम उसका वैजयन्त नामक पुर घेर कर उसके पुत्र का वध करते है तथा शम्बरासुर द्वारा हरण की हुई राज, गधर्व, किन्नर, यक्ष आदि कन्याओ को मुक्त कर सब को अयोध्या ले आते है तथा उनके साथ भी रासक्रीडा करते है (अध्याय ४-५)।

(२) **राम-सीता का विवाह** (अध्याय ६-७)

एक तपस्विनी से राम के कार्यों का वर्णन सुनकर अष्टवर्षीय सीता विरह से व्याकुल होने लगती है। महेश्वर जनक को स्वप्न मे दिखाई पडते है तथा परामश देते है कि स्वयवर का आयोजन किया जाए— जो उनका धनुष चढाने मे समर्थ हो, वही सीता का पति बनने योग्य है। बहुत से राजा असफल होकर जनक से युद्ध करते है, किन्तु पराजय के बाद वे अपनी पुत्रियो को जानकी की सखी बनने के लिए मिथिला मे ले आते है। सीता राम का रूप धारण कर अपनी सखियो के साथ रामलीला करती है (अध्याय ६)। नारद राम के पास जाकर सीता के वियोग का वर्णन करते हैं तथा उनके स्वयवर का समाचार सुनाकर चले जाते है। शिव की प्रेरणा से विश्वामित्र राम तथा लक्ष्मण को मिथिला ले जाते है, जहाँ राम धनुष तोडकर सीता तथा कन्या-धन प्राप्त करते हैं [भरत, लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न का विवाह भी उल्लिखित है]।

(३) **विवाह के पश्चात् राम की लीला** (अध्याय ८-१५)

विवाह के बाद राम सीता तथा असख्य कन्याओ के साथ विश्वकर्मा-निर्मित प्रासाद मे निवास करते हैं, समय-समय पर विविध उत्सव मनाते है और वन मे जाकर रासलीला करते हैं। इन सब रासलीलाओ का विवरण यहाँ अनावश्यक है, क्रम इस प्रकार है—गोपकन्या, देवकन्या, गधर्वकन्या, किन्नरसुता, विद्याधरकन्या, सिद्धकुमारी,

वकन्या, यक्षकन्या, नागकन्या-रास । राम-रासलीला के
का स्पष्ट अनुकरण किया गया है—उदाहरणार्थ, राम
अन्तर्द्धान हो जाना, सीता की मान-लीला आदि।
धुएँ भी आकर राम के होलिकोत्सव मे भाग लेती है,
है कि पुरागनाओ के साथ विहार करना अनुचित है और
है। इस रचना मे राम की श्रृगार-चेष्टाओ का खुला
बात पर बल दिया जाता है कि सबो को यह रामलीला
हि लोकसग्रहपरा गुप्तेति (अध्याय १५,१८६)।

परिशिष्ट

'हिन्दुत्व' मे उल्लिखित रामायण[1]

१६२ महारामायण

शकर-पार्वती सवाद

विस्तार—३,५०,००० श्लोक

विशेषता—कनकभवन-विहारी राम की ६६ रासलीलाओ का वर्णन ।

१६३ सवृत रामायण

नारद-कृत

विस्तार—२४,००० श्लोक

विशेषता—स्वायभुव-शतरूपा की तपस्या तथा दशरथ-कौशल्या के रूप मे उनका आविर्भाव ।

१६४ लोमश रामायण

लोमश ऋषि-कृत[2]

विस्तार—३२,००० श्लोक

विशेषता—राजा कुमुद और वीरमती के दशरथ ओर कौशल्या के रूप मे जन्म लेने की कथा । जालधर शाप के फलस्वरूप रामावतार ।

१६५ अगस्त्य रामायण

अगस्त्य-कृत

विस्तार—१६,००० श्लोक

---

१ दे० ऊपर, अनु० १८४ ।

२ ध्यान देने योग्य है कि लोमश ऋषि का उल्लेख रामकथा के वक्ता के रूप मे अन्यत्र भी मिलता है । महाभारत मे जो प्रक्षिप्त परशुराम-तेजोभग का वर्णन पाया जाता है (दे० आगे अनु० ३५१), उसके वक्ता लोमश ही है । पद्मपुराण के पाताल खड मे आरण्यक का कहना है कि मैंने लोमश से रामकथा सुनी थी (दे० अध्याय ३६) । रामचरितमानस मे भी भुशुण्डी कहते हैं कि मुझे यह कथा लोमश ऋषि से मिली थी (दे० उत्तर काण्ड, ११३) । रसिक सम्प्रदाय मे एक लोमश सहिता प्रचलित है, जिसमें मुनि पिप्पलाद-लोमश का सवाद है (दे० राम-भक्ति साहित्य मे मधुर उपासना, पृ० १४८) । सत्योपाख्यान मे लोमश द्वारा अयोध्यावासियों को मथुरा की कथा सुनाने का उल्लेख है (दे० भाग १, अध्याय १०) ।

विशेषता—भानुताप अरिमर्दन की कथा तथा राजा कुन्तल और सिधुमती क दशरथ और कौशल्या के रूप मे जन्म लेने का वृत्तान्त ।

१९६ मजुल रामायण

सुतीक्ष्ण-कृत

विस्तार—१,२०,००० श्लोक

विशेषता—भानुप्रताप-अरिमर्दन की कथा तथा शबरी के प्रति राम द्वारा नवधा-भक्ति-विवरण ।

१९७ सौपद्म रामायण

अत्रि ऋषि-कृत

विस्तार—६२,००० श्लोक

विशेषता—वाटिकाप्रसग ।

१९८ रामायण महामाला

शिव-पार्वती-सवाद

विस्तार—५६,००० श्लोक

विशेषता—भुशुण्डी द्वारा गरुड-विमोह-निवारण ।

१९९ सौहार्द रामायण

शरभग ऋषि-कृत

विस्तार—४०,००० श्लोक

विशेषता—राम-लक्ष्मण के वानरी भाषा समझने और बोलने का उल्लेख ।

२०० रामायण मणिरत्न

वसिष्ठ-अरुन्धती-सवाद

विस्तार—३६,००० श्लोक

विशेषता—मिथिला तथा अयोध्या मे राम का वसन्तोत्सव आदि मनाना ।

२०१ सौर्य्य-रामायण

हनुमान्-सूर्य-सवाद

विस्तार—६२,००० श्लोक

विशेषता—शुक-चरित्र तथा शुक का रजक बन जाना और इसके कारण सीता-त्याग होना ।

२०२ चान्द्र-रामायण

हनुमान्-चद्रमा-सवाद

विस्तार—७५,००० श्लोक

विशेषता—केवट की पूर्व-जन्म-कथा ।

२०३ मैन्द-रामायण

मैन्द-कौरव-सवाद

विस्तार—५२,००० श्लोक

विशेषता—वाटिका-प्रसग

२०४ स्वायभुव-रामायण

ब्रह्मा-नारद-सवाद
विस्तार—१८,००० श्लोक
विशेषता—मदोदरी के गर्भ से सीता का जन्म ।

२०५ सुब्रह्म-रामायण

विस्तार—३२,००० श्लोक ।

२०६ सुवर्चस रामायण

सुग्रीव-तारा-सवाद

विस्तार—१५,००० श्लोक

विशेषता—सुलोचना की कथा । धोबी-धोबिन का सवाद तथा रावण के चित्र के कारण शान्ता की चुगली । शान्ता के प्रति सीता का शाप तथा उसको पक्षी-योनि की प्राप्ति । महारावण-वध ।

२०७ देव-रामायण

इन्द्र-जयन्त-सवाद

विस्तार—१,००,००० श्लोक ।

२०८ श्रवण-रामायण

इन्द्र-जनक-सवाद

विस्तार—१,२५,००० श्लोक

विशेषता—मथरा की उत्पत्ति । चित्रकूट मे भरत की यात्रा के समय जनक का आगमन ।

२०९ दुरत रामायण

वसिष्ठ-जनक-सवाद

विस्तार—६१,००० श्लोक

विशेषता—भरत की महिमा का वर्णन

२१० रामायण-चम्पू

शिव-नारद-सवाद

विस्तार—१५,००० श्लोक

विशेषता—शीलनिधि राजा के यहाँ स्वयवर ।

अध्याय ११

संस्कृत ललित साहित्य में रामकथा

२११ प्रचलित वाल्मीकीय रामायण मे आदिकाव्य के विषय मे कहा गया है कि यह कवियो का आधार सिद्ध होगा (**पर कवीनामाधारम्**, दे० बाल काण्ड, सर्ग ४, श्लोक २७) । **वृहद्धमपुराण** मे भी **रामायण** समस्त काव्यो, इतिहास, पुराण आदि का मूल स्रोत माना गया है

रामायण महाकाव्यमादौ वाल्मीकिना कृतम् ।
तन्मूल सर्वकाव्यानामितिहासपुराणयो ।। २८ ।।
सहिताना च सर्वासा मूल रामायण मतम ।
तदेवादशमाराध्य वेदव्यासो हरे कला ।। २९ ।।
चक्रे महाभारताख्यातमितिहास पुरातनम् ।
(पूवभाग—अध्याय २५)

वृहद्धमपुराण के इस अध्याय मे रामायणोत्पत्ति का भी विस्तृत वर्णन किया गया है । विधि ने सरस्वती को कविताशक्ति बनने का वरदान दिया था (**भव त्व कविताशक्ति कवीना वदनेषु ह**, दे० श्लोक ४६) । सरस्वती ने क्रौंच के विलाप से शोकाकुल वाल्मीकि को देखकर उनके मुख मे प्रवेश किया, जिसके फलस्वरूप वाल्मीकि ने श्लोक की सृष्टि की थी

कविताशक्तिरूपा च विद्यारूपा सरस्वती ।
तस्य शोकापनोदाय महर्षेर्मुखमाययौ ।। (वही, श्लोक ६४)

अनन्तर विधि ने **रामायण** की रचना करने के लिए वाल्मीकि को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि अन्य कवि तुम्हारा अनुकरण करेंगे :

कृते त्वया महाकाव्ये भाव्यर्थे रामचेष्टिते ।
लोकेष्वनुचरिष्यन्ति कवयोऽन्ये सदुक्तय ।। (वही, श्लोक ८०)

वृहद्धर्मपुराण के इस कथन की साथकता मे किसी सन्देह का अवकाश नही है । **रामायण** न केवल सस्कृत साहित्य का प्रथम महाकाव्य है, जिसकी शैली से अन्य कवि प्रभावित हुए है, वरन् उसकी कथावस्तु भी समस्त साहित्य के भिन्न-भिन्न अगो मे

व्यापक हो सकी[1]। कवियो ने स्वय इस बात का अनुभव किया है। **प्रसन्न-राघव** की प्रस्तावना मे नट सूत्रधार से पूछता है—'ये सब कवि क्यो रामचन्द्र का पुन -पुन वर्णन करते है।' इस पर सूत्रधार कहता है कि यह कवियो का दोष न होकर गुणो का दोष है, जिन्होंने राम ही मे अपने लिये एकमात्र आश्रय बनाया है, जिसके फलस्वरूप कवित्वरूपी वृक्ष रामप्रशसारूपी फल के बिना किसी महत्व का नही हो पाता है।

नट—कथ पुनरमी कवय सर्वे रामचद्रमेव वर्णयन्ति ।

सूत्रधार—नाय कवीना दोष । यत

> **स्वसूक्तीना पात्र रघुतिलकमेक कलयता**
> **कवीना को दोष स तु गुणगणानामवगुण ।**
> **यदेतैर्निश्शेषैरपरगुणलुब्धैरिव जग-**
> **त्यस'वेकश्चक्रे सततसुखसवासवसति ।। १२ ।।**

अपि च । भो

> **बीज यस्य चिराजित सुचरित प्रज्ञा नवीनोऽड्कुर**
> **काण्ड पडितमडलीपरिचय काव्य नव पल्लव ।**
> **कीर्ति पुष्पपरम्परा परिणत सोऽय कवित्वद्रुम**
> कि **वन्ध्य क्रियते विना रघुकुलोत्तसप्रशसाफलम् ।। १३ ।।**

क—महाकाव्य

२१२ रामकथा सम्बन्धी प्राचीन महाकाव्यो मे कथानक के दृष्टिकोण से कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन नही मिलता। उनकी एक विशेषता यह है कि उनमे वाल्मीकि की रचना की अपेक्षा शृगार को अधिक स्थान दिया गया है। पहले यह शृगारिक वर्णन राक्षसो के विषय मे किया गया है (दे० सेतुबध, सर्ग १०, भट्टिकाव्य, सर्ग ११)। लेकिन आगे चलकर कुमारदास ने कुमारसभव के अनुकरण पर राम-सीता के सभोग शृगार का वर्णन भी किया है, जो अश्लीलता की सीमा तक पहुँच गया है। अपक्षाकृत अर्वाचीन राम काव्यो मे भी शृगारात्मक वर्णनो का अभाव नही है। **उदाहरणार्थ** लक्ष्मणाध्वारि कृत **रामविहारकाव्यम्** (१२ सर्ग, १७ वी शताब्दी) के

---

१ रामकथा-सम्बन्धी काव्यो के रचनाकाल तथा उनकी साहित्यिक समालोचना के लिए दे०
एम्० विंटरनित्स हि० इ० लि०, भाग ३।
एस्० के० दे हिस्टरी ऑव सस्कृत काव्य लिटरेचर।
ए० बी० कीथ हि० स० लि० और सस्कृत ड्रामा।

दसवे सर्ग मे सीता तथा राम के उद्यान-विहार तथा ग्यारहवे सर्ग मे उनकी जलक्रीडा तथा मधुपान का वर्णन किया गया है। धनजय-कृत **राघवपाण्डवीय** के १५ वे सर्ग मे कपि-सेना के शृगार तथा जलक्रीडा का चित्रण किया गया है।

कालिदासकृत रघुवश (४०० ई० के लगभग)

२१३ **रघुवश** के नवे सर्ग मे दशरथ के राज्य के वर्णन के अन्तर्गत मुनिपुत्र-वध का उल्लेख मिलता है (श्लोक ७३-८२)। अनन्तर समस्त राम-चरित का छ सर्गों मे वर्णन किया गया है (दे० सर्ग १०-१५), कथानक वाल्मीकिकृत रामायण पर निर्भर है। सीतात्याग, लवणवध, कुश-लव-जन्म, शम्बूक-वध, लक्ष्मण-मरण तथा स्वर्गारोहण के उल्लेख से स्पष्ट है कि कालिदास प्रचलित उत्तरकाड की कथावस्तु से परिचित थे (दे० सर्ग १४-१५)। अयोनिजा सीता के अलौकिक जन्म की कथा तो मिलती है लेकिन कही भी सीता के लक्ष्मी के अवतार होने की ओर निर्देश नही किया गया है। काकजयत का वृत्तान्त भरत के चित्रकूट से चले जाने के बाद दिया गया है। वाल्मीकि रामायण मे इसका उल्लेख भरत के आने के पहले किया गया है। अहल्या के विषय मे कहा गया है कि वह वास्तव मे शिला बन गई थी। वाल्मीकि के अनुसार रावण ने ब्रह्मा को अपने शीर्षों को समर्पित कर दिया था। कालिदास के अनुसार उसने शिव को उन्हे समर्पित किया था। शेष कथा वाल्मीकि से भिन्न नही है।

रावणवह अथवा सेतुबन्ध (५५०--६०० ई०)

२१४ महाराष्ट्री प्राकृत मे लिखित **रावणवह**[1] की रचना राजा प्रवरसेन अथवा उनके दरबार के किसी कवि द्वारा हुई थी। इसका रचनाकाल प्राय छठी शताब्दी ई० माना जाता है। डॉ० सुशील कुमार दे उस रचना को पाँचवी शताब्दी की मानते है। इसके रचयिता के विषय मे एक भ्रामक धारणा प्रचलित है कि कालिदास ने उसे लिखा था। प्रवरसेन प्राय काश्मीर के राजा माने जाते हैं। यद्यपि यह असभव नही कहा जा सकता है कि वाकाटक वश के प्रवरसेन द्वितीय (शासनकाल ५ वी शताब्दी का मध्य) सेतुबन्ध के रचयिता है, किन्तु इसके विरोध मे जो तर्क दिए जाते है, वे अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं।[2]

रावणवह के पन्द्रह सर्गों मे वाल्मीकिकृत युद्धकाण्ड की कथावस्तु का अलकृत शैली मे वर्णन मिलता है। कथानक मे कोई महत्वपूर्ण परिवर्त्तन नही किया गया है।

---

१ राजकमल प्रकाशन ने डॉ० रघुवश का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित किया है।
२ दे० दि क्लॉसिकल एज, पृ० १८२-१८४।

समुद्र-बन्धन के वर्णन मे मछलियो के द्वारा सेतु को नष्ट करने का उल्लेख है। आगे चलकर इस घटना के विषय मे अनेक कथाओ की कल्पना कर ली गई है (दे० अनु० ५७८)। रावणवह की एक अन्य विशेषता यह है कि 'कामिनीकेलि' नामक दसवे सर्ग मे राक्षसियो का सभोग वर्णन मिलता है। इसका मूलस्रोत सभवत **पउमचरिय** है। बाद मे इस वर्णन का अनुकरण **भट्टिकाव्य, जानकी-हरण**, अभिनन्दन कृत **रामचरित**, कम्बकृत **तमिल रामायण, रामलिंगामृत** तथा जावा के प्राचीनतम **रामायण** आदि मे किया गया है (दे० आगे अनु० ६११)।

भट्टिकाव्य अथवा रावणवध (५००-६५०)

२१५ **भट्टिकाव्य** की रचना कच्छ मे छठी अथवा सातवी शताब्दी मे हुई थी। इसके २२ सर्गो मे व्याकरण के नियमो के निरूपण के साथ-साथ वाल्मीकिकृत रामायण के प्रथम छ काडो की कथावस्तु का किंचित् परिवतन सहित वर्णन किया गया है। इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ उल्लेखनीय है

दशरथ के शैव होने का उल्लेख (सर्ग १,३)।

पुत्रेष्टि-यज्ञ मे कोई देवता प्रकट नही होते वरन् दशरथ की पत्नियाँ हुतोच्छिष्ट खाती है (सर्ग १, १३)।

बला और अतिबला के स्थान पर जया तथा विजया नामक विद्याओ का उल्लेख है (सर्ग २, २१)।

केवल राम तथा सीता के विवाह का उल्लेख किया गया है (सर्ग २,४३)।

राम तथा लक्ष्मण दोनो खरदूषण तथा १४,००० राक्षसो का वध करते हैं (सर्ग ३, ३३)।

लक्ष्मण का सीता को शाप देना (सग ५,६०)।

सीता-हरण के पश्चात् राम पहले-पहल जटायु से मिलते है (सर्ग ६, ४१)।

राक्षसियो का सभोग-वर्णन (सर्ग ११)।

गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठो के अनुसार विभीषण की माता उससे अनुरोध करती है कि वह रावण को समझावे (सर्ग १२, १), रावण की केवल एक ही सभा का वर्णन है, जिसमे रावण विभीषण पर पाद-प्रहार करता है (सर्ग १२,७६)।

ब्रह्मा के स्थान पर शिव राम को उनके नारायणत्व का स्मरण दिलाते हैं (सर्ग २३, १६)।

जानकीहरण (८०० ई० के लगभग)

२१६ सम्पूर्ण **जानकीहरण** बहुत समय तक अप्राप्य था। अब वह हिन्दी अनुवाद सहित प्रकाशित हो गया है (मित्र प्रकाशन, इलाहाबाद १९६७)। इस ग्रन्थ की

पुष्पिका मे कवि का नाम नही है। उसके पिता के विषय मे कहा है कि उसका नाम मानित था और कि वह लङ्कानरेश कुमारमणि का सेनानी था। कवि बचपन से व्याधिग्रस्त और अनाथ था क्योकि उसका पिता युद्ध मे मारा गया था। सिंहलद्वीप की एक अपेक्षाकृत अर्वाचीन दतकथा के अनुसार कुमारदास छठी शताब्दी ई० मे वहाँ के राजा थे। आधुनिक समालोचक इस कथा पर विश्वास न रखकर जानकीहरण के रचयिता को आठवी शताब्दी के अन्त का और नवी शताब्दी के प्रारम्भ का कवि मानते है। **जानकीहरण** की कथावस्तु वाल्मीकिकृत रामायण के प्रथम छ काडो पर निर्भर है। कथानक मे अहल्या के शिला (सग ६, १४) बन जाने के अतिरिक्त कोई अन्य परिवर्त्तन नही किया गया है किंतु अधमुनि-पुत्र का वध प्रथम सग मे वर्णित है (दे० आगे, अनु० ४३३)। यद्यपि केवल राम के विवाह का वर्णन किया गया है, किन्तु अन्य भाइयो के विवाह का भी निर्देश मिलता है (दे० सर्ग ६)। प्रथम सर्ग मे दशरथ-राज्य-वर्णन के अन्तगत उनके हिमालय मे मृगया खेलने तथा मुनि-पुत्र का वध करने का किंचित् विस्तार सहित वर्णन किया गया है (दे० सग १, ४५-६०)। इस रचना की सबसे बडी विशेषता यह है कि इसके २० सर्गो मे शृङ्गारात्मक वर्णनो को पर्याप्त स्थान दिया गया है। उदाहरणार्थ दशरथ और उनकी पत्नियो के विहार, जलक्रीडा आदि का वणन (सर्ग ३), राम तथा सीता के पूर्वानुराग का वणन (सग ७, १-३४), मिथिला मे विवाह के पश्चात् राम तथा सीता का सभोगवर्णन, जिसमे कुमार-सभव का प्रभाव स्पष्ट है (समस्त सर्ग ८), सेतुबध के अनुकरण पर युद्ध के पूर्व राक्षसो की बलि का वणन (सर्ग १६)।

अभिनन्दकृत रामचरित (नवी शताब्दी)

२१७ गौडीय पालवश के युवराज हारवर्ष की प्रेरणा से अभिनन्द ने नवी शताब्दी ई० पूर्वार्द्ध मे **रामचरित** की रचना की थी। इसके ३६ सर्गो मे राम-लक्ष्मण के प्रस्रवण पर्वत के वर्षा-निवास (दे० रामायण ४, २७) से कुभ-निकुभ-वध तक (दे० वही ६, ७७) की वाल्मीकीय रामकथा का वर्णन मिलता है। भीम नामक कवि ने चार सर्गों का परिशिष्ट लिखकर युद्धकाड की कथावस्तु पूरी की है। इस राम-चरित मे निम्नलिखित विशेषताएँ है :

वर्षा ऋतु के पश्चात् सुग्रीव अपने आप राम के पास आता है और लक्ष्मण को भेज देने की आवश्यकता नही होती (सर्ग ५)।

अभिज्ञानस्वरूप राम हनुमान् को अगूठी के अतिरिक्त एक नूपुर और स्तनोत्तरीय भी देते हैं तथा दिलीप रघु, अज, दशरथ की वशावली भी सिखलाते हैं (सर्ग ८)।

हनुमान् आदि के गुफा मे प्रवेश करने की वाल्मीकिकृत किष्किन्धाकाड की कथा

मे (दे० रा० ४, ५०-५२) बहुत कुछ परिवर्तन किया गया है। कदरा के प्रवेश-पथ पर सोते हुए दुर्दम नामक राक्षस का अगद द्वारा वध किया जाता है। भीतर जाकर हनुमान् एक वानर-वरसुन्दरी का प्रेम-प्रस्ताव दो बार अस्वीकार करते है। स्वयप्रभा के गुफा मे निवास करने का कारण भी रामायण मे दिये हुए वृत्तान्त से कुछ भिन्न है (सर्ग १०-१२)

रावण के सभोग का भी विस्तृत वर्णन किया गया है (दे० 'दशाननपानकेलि-वर्णनम्' नामक १८वाँ सर्ग)।

वाल्मीकि रामायण के गौडीय पाठ के अनुसार रावण का विभीषण पर पाद-प्रहार करने का तथा विभीषण के राम की शरण लेने के पहले अपने भाई कुबेर के पास जाने का उल्लेख हुआ है (दे० सर्ग २३, ८७ तथा सर्ग २४, १३५)।

रामायणमजरी तथा दशावतारचरित (११वी श० ई०)

२१८ काश्मीर-निवासी क्षेमेन्द्र ने १०३७ ई० मे वाल्मीकिकृत रामायण के पश्चिमोत्तरीय पाठ का ५३८६ श्लोको मे सक्षेप किया था और अपनी रचना का नाम **रामायणमजरी** रखा था। इसमे क्षेमेन्द्र ने किसी मौलिकता का प्रदर्शन नही किया है, लेकिन **दशावतारचरितम** नामक अपने एक अन्य ग्रथ मे, जिसकी रचना १०६६ ई० मे हुई थी, उन्होने २९४ छन्दो के रामावतार-वर्णन मे रामकथा का एक नवीन रूप प्रस्तुत किया था।

इसकी विशेषता यह है कि समस्त कथा का वर्णन रावण के दृष्टिकोण से किया गया है। प्रारम्भ मे रावण की तपस्या, वरप्राप्ति, अत्याचार आदि का कुछ चित्रण मिलता है (छन्द १-६९)। अनन्तर रावण लक्ष्मी के अवतार पद्मजा सीता को पुत्री स्वरूप ग्रहण करता है (दे० छन्द ७०-१०४ और आगे अनु०४१८)।

१०५वे छन्द से रामायण की कथावस्तु का प्रारम्भ होता है। शूर्पणखा रावण के पास आकर अपने विरूपीकरण तथा खरदूषण-वध का वृत्तान्त सुनाती है। इस पर रावण मारीच के यहाँ जाकर उससे जन्म से लेकर वनवास तक की विष्णुअवतार राम की कथा सुनता है (१०५-१३०)।

अनन्तर रावण मारीच की सहायता से सीता को हर लेता है (१३१-१५१)। इसके बाद सुकेतु नामक गुप्तचर मारीच-वध से लेकर (सुग्रीव-सख्य, वानरो का प्रेषण, हनुमान् का समुद्रलघन, अशोकवाटिका-भजन आदि) लकादहन तक की कथा रावण को सुनाता है (१५२-१९४)।

सुकेतु तथा विभीषण, दोनो रावण से सीता को लौटा देने का अनुरोध करते है। विभीषण रावण की दुर्बुद्धि देखकर राम की शरण लेता है। अनन्तर रावण

एक गुप्तचर से विभीषण-अभिषेक, सेतुबन्ध तथा राम के त्रिकूटागमन की कथा (२०७-२१३) तथा प्रतिहारपति से नागपाश द्वारा राम लक्ष्मण के बन्धन तथा कुम्भकर्ण को जगाने का वृत्तान्त सुनता है (२१४-२२३)। प्रतिहारपति-रावण-सवाद के बाद कवि द्वारा शेष राम-चरित का वर्णन किया गया है। कुम्भकर्ण वध से लेकर राम के स्वर्गारोहण तक की समस्त वाल्मीकीय कथा सक्षेप मे दी गई है।

उदारराघव (१४ वी श० ई०)

२१६ **उदारराघव** की रचना १४ वी श० ई० के मध्य साकल्यमल्ल नामक कवि द्वारा हुई थी। कवि के अन्य नाम भी प्रचलित हैं—मल्लाचार्य, कविमल्ल और मल्लयाचार्य। इस रचना का विस्तार १८ सर्गों का बताया जाता है लेकिन इसके केवल नौ सर्ग सुरक्षित तथा प्रकाशित है, जिनमे शूर्पणखा-विरूपीकरण तक का वर्णन मिलता है। कथानक वाल्मीकि रामायण के अनुसार है।

अवतारवाद के विषय मे कुछ परिवर्तन किया गया है। राम विष्णु के पूर्णावतार माने गए है तथा लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न क्रमश शेष-सुदर्शन-शख के अशावतार। सीता वन-गमन के लिए राम से अनुरोध करते हुए कहती है कि मैंने बहुत से रामायण सुने हैं लेकिन उनमे राम कही भी सीता के बिना वन नही जाते है

> **रामायणानीह पुरातनानि पुरातनेभ्यो बहुश श्रुतानि।**
> **न क्वापि वैदेहसुता विहाय रामो वन यात इति श्रुत मे ॥**
>
> (सर्ग ५, ४८)

सारी रचना की शैली कृत्रिम और अत्यधिक अलकृत है तथा इसमे वाल्मीकि के काव्य की अपेक्षा शृगार को अधिक स्थान दिया गया है, उदाहरणार्थ—मिथिला की स्त्रियो का वर्णन (सर्ग ३), वनवास के समय वनविलास का प्रसग (सर्ग ६, ३३), शूर्पणखा का वृत्तान्त (दे० आगे अनु० ४६३)।

उत्तरकालीन महाकाव्य

२२० पद्रहवी शताब्दी से लेकर बहुत सी रचनाओ का उल्लेख मिलता है जो अधिकाश अप्रकाशित ही है। किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि उन परवर्त्ती काव्यो का कथानक की दृष्टि से कोई विशेष महत्त्व नही है। वामन भट्टवाण (अभिनव वाणभट्ट) का **रघुनाथचरित** (३० सर्ग) १५वी शताब्दी का है, रामपाणिवादकृत **राघवीय** (२० सर्ग) अट्ठारहवी श० ई० की रचना है और अड्यार लाइब्रेरी द्वारा प्रकाशित है। १८०० ई० के लगभग रघुनाथ उपाध्याय ने **रामविजय महाकाव्य** लिखा, जो १६३२ ई० मे वाराणसी मे प्रकाशित भी हुआ था। त्रिवेन्द्रम सस्कृत सीरिज मे प्रकाशित

रघुवीरचरित (१७ सर्ग) का रचयिता अज्ञात है ।[1] उदाहरणार्थ यहाँ पर चार अर्वाचीन रचनाओं की कथावस्तु का परिचय दिया जाता है ।

२२१ चक्रकविकृत **जानकी-परिणय**[2] (१७ वी श० ई०) मे वाल्मीकीय बालकाण्ड के अनुसार दशरथ-यज्ञ से लेकर परशुराम-तेजोभग तक की प्रधान घटनाओ का ८ सर्गों मे वर्णन किया गया है । अहल्या के शिला बन जाने के उल्लेख के अतिरिक्त कथानक मे कोई भी परिवर्तन नही किया गया है । छठे सर्ग मे दशरथ की मिथिला-यात्रा के वर्णन मे उनकी विलासक्रीडाओ का किंचित् विस्तार सहित चित्रण किया गया है । जानकीहरण तथा कम्ब-कृत तमिल रामायण मे भी दशरथ की इस यात्रा का विस्तृत वर्णन मिलता है ।

२२२ **रामलिंगामृत** की रचना बनारस-निवासी अद्वैत नामक कवि द्वारा सन् १६०८ ई० मे हुई थी ।[3] हिन्दी साहित्य के दृष्टिकोण से इसका महत्व यह है कि इसकी रचना उस समय हुई थी जब गोस्वामी तुलसीदास वाराणसी मे विद्यमान थे । अत रामलिंगामृत की कथावस्तु अपेक्षाकृत विस्तार से दी जाती है ।

सर्ग १—उपोद्घात

मगलाचरण के पश्चात् गोकुल की दो गोपिकाओ का सवाद उद्धृत है । दोनो मे से एक का जन्म रघुकुल मे हुआ था, जिससे उसे रामकथा की विशेष जानकारी है । अपनी सखी के अनुरोध से वह रघुवशीय गोपिका राम-चरित का वर्णन करती है (१-२४) । कथानक रावण-चरित से प्रारम्भ होता है । जय-विजय भृगु द्वारा दिए हुए शाप के फलस्वरूप राक्षसयोनि प्राप्त कर रावण तथा कुभकर्ण बन जाते हैं । प्रह्लाद के विभीषण बन जाने का भी उल्लेख है । अनन्तर रावण तथा कुभकर्ण की शिवाराधना और वरप्राप्ति तथा देवताओ द्वारा विष्णु से अवतार लेने की प्रार्थना का वर्णन मिलता है (२५-६४) ।

सर्ग २—रामबाललीला (१-७०) ।

रामादि भाइयो का जन्म, जातकर्म, स्तनपान, राम का अपनी माता को अपना विश्वरूप दिखलाना, बाललीला, वनक्रीडा, अध्ययन, यज्ञोपवीत-सस्कार तथा विश्वामित्र के राम और लक्ष्मण को ले जाने का वर्णन ।

---

१ दे० सुशील कुमार दे (हिस्टरी ऑव सस्कृत लिटरेचर, पृ० ६३०) । डॉ० आप्टे मल्लिनाथ को इसका रचयिता मानते है ।

२ त्रिवेन्द्रम सस्कृत सीरिज़ (सन् १९१३) मे प्रकाशित ।

३ इसकी हस्तलिपि लन्दन मे सुरक्षित है । दे० इडिया ऑफिस कैटालॉग न० ३९२० ।

सर्ग ३—रावणपराभव (१-६४)

दोनो भाइयो का विश्वामित्र के साथ सीतास्वयवर मे पहुँचना, सीता-सखियो द्वारा राम के सौन्दर्य का वर्णन, राजाओ, देवताओ तथा राक्षसो की उपस्थिति, रावण का धनुष को चढाने का प्रयत्न, राम द्वारा धनुर्भग ।

सर्ग ४—सीतास्वयवर (१-१०३)

दशरथ के कौशल्यादि के साथ आने के बाद विवाहोत्सव का वर्णन दिया गया है । राम को देखने की स्त्रियो की उत्सुकता के वर्णन मे कालिदास आदि कवियो का अनुकरण किया गया है । उदाहरणार्थ एक शार्दूलविक्रीडित छन्द उद्धृत किया जाता है

काचिन्मगलघोषहृष्टहृदया गेहात्सखीसवृता
व्यग्रा व्यस्तसमस्तभूषणगणान्सीघ्र[1] दध राध्वगा
सीतारामभुखारविंद-ज-रसोन्मत्ता गलन्मालती
केशे कर्कतिका चलत्कुचयुगा द्वारोर्ध्वभागे स्थिता ।। ८६।।

इन्द्र आदि देवगण के आगमन तथा इन्द्र की आज्ञा से विश्वकर्मा द्वारा निर्मित एक दिव्य नगर का उल्लेख है, जिनमे लक्ष्मी सीता को रामावतार का रहस्य बताती है ।

सर्ग ५—रामारण्यगमन (१-६३)

मिथिला से प्रस्थान तथा मार्ग मे परशुराम तेजोभग के वर्णन के बाद राम की अवस्था १५ वर्ष की तथा जानकी की ६ वर्ष की बताई जाती है, यद्यपि चौथे अध्याय मे सीता की १६ वर्ष की अवस्था का उल्लेख हुआ था । अनन्तर वाल्मीकि के अनुसार राम के निर्वासन का वणन किया गया है (२५-६३) ।

सर्ग ६— रामारण्यगमन (१-८१)

इसमे भगवान् माया-मनुष्य हरि (छन्द ४) के पचवटी मे निवास का वर्णन है, जहाँ खग, मृग, व्याघ्र आदि अपने 'स्वभाव वैर' का परित्याग कर रहते थे (छन्द ५) ।

शूर्पणखा के विरूपीकरण के उल्लेख के बाद नारद द्वारा रावण के पास जाकर सीता के सौंदर्य के वर्णन की कथा मिलती है, जिसके फलस्वरूप रावण मारीच की सहायता से सीता का हरण करता है । सीता की खोज के वर्णन मे शिलामयी अहल्या का उद्धार और केवट के राम-चरण धोने के आग्रह की कथा दी गई है । कबधवध के उल्लेख के बाद सीता को प्राप्त करने के लिए राम की शिव-पूजा का वर्णन किया गया है

सीतासगमनार्थाय रामो लिंगस्य पूजन ।
चक्रे तेन महादेव सीताशुद्धि चकार ह ।। ७६ ।।

१ शीघ्र के स्थान पर 'सीघ्र' ही लिखा है ।

अन्त मे वानरो मे राम के सख्य करने का उल्लेख मात्र मिलता है।

सर्ग ७—रामविभीषणदर्शन (१-६०)

इसमे हनुमान सीता के पास जाकर उनको एक अँगूठी के अतिरिक्त राम का एक पत्र देते है। लकादहन के उल्लेख के बाद हनुमान् राम को सीता का समाचार देते है। अनन्तर अगद के दूतकार्य का वर्णन किया गया है, जिसमे **महानाटक** के रावण-अगद-सवाद का अनुकरण स्पष्ट है। अन्त मे सेतुबन्ध तथा विभीषणागमन का उल्लेख किया गया है।

सर्ग ८—युद्धकाड (१-६१)

इसमे राक्षसो की केलि के वर्णन के बाद अहीमहीरावण राम-लक्ष्मण को पाताल ले जाते है। हनुमान् मकरध्वज की सहायता से दोनो को छुडाते है।

सर्ग के अन्त मे कुम्भकर्ण-वध, लक्ष्मण को शक्ति लगने का तथा लक्ष्मण-इन्द्र-जित्-युद्ध का उल्लेख मात्र मिलता है।

सर्ग ९—अहीरावणमहीरावणवध (१-४५)

इस सर्ग की कथावस्तु शीर्षक के अनुसार नही है, इसमे सुलोचना की कथा तथा युद्ध के लिए रावण के प्रस्थान का वर्णन मिलता है।

सर्ग १०—शिवलिग वर्णन (१-८३)

रणक्षेत्र मे राम को देखने पर रावण का एक विस्तृत भाषण दिया गया है (१-३५), जिसमे वह राम को राक्षसवश का नाश करने के लिए विष्णु का अवतार मानता है, विष्णु द्वारा वध किये जाने के कारण अपने भाग्य की प्रशसा करता है, राम द्वारा की हुई शिवपूजा को उनकी विजय का कारण मानता है और साथ-साथ रामनाम के सामर्थ्य का वर्णन करता है, जिसके स्मरण मात्र करने मे वानरसेना समुद्र का पार करने के समर्थ हो सकी।

अनन्तर राम रावण को अपना शिव-रूप दिखलाते है तथा शिवलिंग का वर्णन करते है। रावण के सर्वत्र राम के रूप को देखने का भी उल्लेख हुआ है (६४)।

सर्ग ११—रावणवध (१-८१)

रावण-वध के बाद सीता की अग्निपरीक्षा का उल्लेख नही है, लेकिन रावण-वध सुनकर सीता के आनन्द तथा मदोदरी के विलाप का उल्लेख किया गया है अनन्तर विभीषण के अभिषेक का वर्णन मिलता है।

सर्ग १२—रामराज्याभिषेक (१-७५)

प्रारम्भ मे राम आदि की अयोध्या-यात्रा का और अनन्तर राम के आगमन से अयोध्यावासियो के आनन्द का वर्णन किया गया है। कैकेयी राम से मिलकर कहती है

कि देवेन्द्र की प्रेरणा से मैने आपको रावण का वध करने के लिए वन भेजा था। सर्ग के अन्त मे राम का अभिषेक वर्णित है।

सर्ग १३—श्री जानकीरामक्रीडाह्निक (१-५२

राम और सीता के सभोगवर्णन के बाद (१-२०) प्रात शृगार, भोजन आदि का उल्लेख किया गया है। सभा मे नारद राम की स्तुति करते है

श्रीराम जगदाधार ब्रह्मानद सुखप्रद।
त्वन्नामस्मरणेनव तरिष्ये भवसागर।

अन्त मे गभवती सीता की दोहद का उल्लेख है।

सर्ग १४—३८ छन्दो के इस सर्ग मे (जिसका कोई नाम नही रखा गया है) वाल्मीकि आश्रम मे कुश-लव के जन्म और शिक्षा का वर्णन है। (सीता-त्याग का उल्लेख नही है)। नारद से समाचार पाकर राम सेना-सहित आश्रम जाते है तथा युद्ध के बाद सीता और कुश-लव के साथ अयोध्या लौटते है (दे० आगे अनु० ७४६)।

सर्ग १५—कुम्भगर्भवध (१-३४)

इसमे सीता द्वारा कुम्भकर्ण के पुत्र कुभगभ के वध का वर्णन किया गया है (दे० आगे अनु० ६४१)।

सर्ग १६—श्रीरगवर्णन (१-४१)

इस सर्ग मे श्रीरग-मूर्ति की कथा के अतिरिक्त राम द्वारा उसके पूजन का वर्णन किया गया है।

सर्ग १७—श्रीरामस्य स्वरूपवर्णन (१-८०)

वसिष्ठ की आज्ञा से राम द्वारा अश्वमेध-यज्ञ, जिसमे देवता आकर राम तथा सीता की स्तुति करते है (१-३३)। अनन्तर सरयूतीर्थ माहात्म्यसहित राम-सीता और अयोध्यासमाज का परलोकगमन वर्णित है (३४-५६)। अन्त मे अद्वैतमजरी मिलती है, जिसमे जीव, ब्रह्म, ईश्वर, माया आदि का निरूपण किया गया है (५७-८०)।

सर्ग १८—खिल (१-६०)

इसमे रामकथा नही मिलती। रामपूजा-विधि तथा रामकीर्ति के निरूपण के पश्चात् राम-शकर की तथा राम-कृष्ण की अभिन्नता का प्रतिपादन किया गया है।

अन्त मे रचना-काल (शक १५३०), ग्रन्थकार (अद्वैत) आदि का उल्लेख है।

२२३ **राघवोल्लास**[1] महाकाव्य की रचना भी एक अद्वैत नामक सन्यासी द्वारा वाराणसी मे ही हुई थी, सन्यास लेने के पूर्व कवि का नाम मुरारि था (दे० १२, १००)।

---

१ दे० राघवप्रसाद पाडेय, तुलसीदासकालीन राघवोल्लास काव्य, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त अभिनन्दन ग्रथ, पृ० ७०२।

सभव है यह रामलिगामृत के रचयिता से अभिन्न हो । इस महाकाव्य की हस्तलिपि लदन मे सुरक्षित है (दे० इण्डिया ऑफिस कैटालाग न० ३६१८) । इसके तीन प्रारभिक सर्ग अप्राप्य है । शेष नौ सर्गो मे लगभग १००० छन्द है (प्राय उपेन्द्रवज्रा) । लिपिक का नाम है मानसाहि कायस्थ तथा लिपि-काल सन् १६२८ ई० । इस काव्य की विशेषता है कवि की कोमल रामभक्ति जो इसे राम का सौदर्य बारम्बार अकित करने के लिए प्रेरित करती है तथा राम की स्तुति प्राय सब पात्रो द्वारा करवाती है । रामचरितमानस की भाति मर्यादित शृगार इस काव्य की एक अन्य विशेषता है—राम-सीता-पूर्वानुराग का वर्णन करते हुए कही भी सीता का नखशिख वर्णन नही दिया गया है । कथानक राम-जन्म से प्रारभ होकर विवाह के पश्चात् अयोध्या मे प्रत्यागमन पर समाप्त हो जाता है ।

सर्ग ४—राम का जन्म, रामसौदर्य-वर्णन, **चतुर्भुज-दर्शन** । सक्षिप्त बाललीला ।

सर्ग ५—विश्वामित्र द्वारा रामावतार की व्याख्या । दशरथ की मूर्छा, राम द्वारा शरीर की नश्वरता का उपदेश ।

सर्ग ६—ताडका, सुबाहु, मारीच । विश्वामित्र द्वारा राम-नाम-महिमा का वर्णन । पाषाणभूता अहल्या का उद्धार ।

सर्ग ७—अहल्या द्वारा राम की स्तुति । जनकपुर मे आगमन ।

सर्ग ८—सीता का पूर्वानुराग (दे० आगे अनु० ४०३), धनुभग ।

सर्ग ९—दशरथ का स्वागत ।

सर्ग १०-११—विवाह ।

सर्ग १२—कौतुकलीला (सीता राम के ललाट पर केसर का तिलक लगाती है), विदाई, परशुराम का तेजोभग, अयोध्या मे आगमन

२२४ मोहन स्वामी कृत **रामरहस्य** अथवा **रामचरित** की एक हस्तलिपि लदन मे सुरक्षित है (लिपिकाल सन् १७५० ई०, दे० इण्डिया ऑफिस कैटालॉग, न० ३६१७) । इस रचना के तेरह क्रीडोपकरणो की अधिकाश सामग्री ज्यो-की-त्यो अध्यात्म-रामायण से उद्धृत की गई है । द्वितीय उपकरण मे सुमत्र द्वारा स्वायभू मनु तथा उनकी पत्नी की तपस्या का वर्णन मिलता है, जिसके फलस्वरूप वे तीन जन्मो मे विष्णु को पुत्र के रूप मे प्राप्त करने का वरदान पाते है । दोनो अब दशरथ-कोशिल्या है और आगे चलकर वसुदेव-देवकी तथा कलियुग मे हरिव्रत-देवप्रभा के रूप मे जन्म लेगे । सूर्यवश-वर्णन से लेकर रामचन्द्र स्वर्गारोहण तक के इस कथानक मे कही भी मौलिकता का नाम नही है । विशेषता यह है कि विवाह के पश्चात् अयोध्या मे पहुँचकर नवदम्पति का सभोग-वर्णन के रूप मे महानाटक का समस्त द्वितीय अक उद्धृत किया गया है । अगद के कार्य-वर्णन मे भी महानाटक से एक विस्तृत अश (अक ८, ४-२०) ले लिया गया है ।

ख—नाटक

२२५ रामकथा को लेकर नाटको के अभिनय की प्रथा प्राचीन काल से चली आ रही है। इसका निर्देश नवे अध्याय मे उद्धृत किये हुए **हरिवंश** के एक श्लोक मे मिलता है (दे० अनु० १४५)। इन प्राचीन नाटको का लोप हुआ है, लेकिन आगे चलकर भी राम सम्बन्धी नाटको की रचना होती रही। यह इस परिच्छेद मे वर्णित सामग्री से स्पष्ट है।[1] महाकाव्यो की अपेक्षा रामकथा संबंधी नाटको मे कथानक के दृष्टिकोण से अधिक परिवर्तन किया गया है तथा अनेक नये पात्रो की सृष्टि भी की गई है, जिससे रामायण की आधिकारिक कथावस्तु (वनवास, सीताहरण, रावणवध) को अपेक्षाकृत कम स्थान मिल सका है।[2] दसवी शताब्दी से पूर्व के नाटको मे से केवल उत्तररामचरित और कुन्दमाला मे उत्तरकाण्ड संबंधी सामग्री का वर्णन किया गया है और दोनो मे नाटक को सुखान्त बनाने के लिए सीता के भूमिप्रवेश की कथा बदल दी गई है। रामकथा का यह महत्वपूर्ण परिवर्तन कथासरित्सागर, जैमिनीय अश्वमेध, पद्मपुराण तथा आनन्द-रामायण मे भी मिलता है। छलितराम और रामानन्द नामक नाटक भी उत्तररामचरित से संबंध रखते है किन्तु दोनो अप्राप्य है। प्रतिमानाटक, मैथिलीकल्याण, दूताङ्गद, उन्मत्त-राघव जैसे नाटको को छोड़कर प्राय सब अन्य रामकथा विषयक नाटक रामाभिषेक पर ही समाप्त हो जाते है।

प्रत्येक नाटक की विशेषताओ का अलग-अलग विवरण किया जायेगा। यहा रामकथा सम्बन्धी नाटको की सामान्य विशेषताओ की ओर निर्देश करना है। रामायण की आधिकारिक कथावस्तु को अपेक्षाकृत कम महत्त्व मिलने के अतिरिक्त इन नाटको मे निम्नलिखित विशेषताएँ पाई जाती है

(१) विस्तृत वर्णन और संवाद, जिसमे कही-कही नाटक की गति मे रुकावट पड़ी है।

(२) आदर्शवाद का प्रभाव। उदाहरणार्थ वालिवध का महावीरचरित, अनर्घराघव तथा महानाटक मे परिवर्तित रूप, प्रतिमानाटक, महावीरचरित, अनर्घराघव तथा बालरामायण मे कैकेयी का दोषनिवारण, छलितराम मे सीतात्याग का तथा कृत्या-रावण मे सीताहरण का नवीन रूप।

---

१ रामकथा संबंधी नाटको की साहित्यिक समालोचना के लिए दे० एस० लेवी ल थेआत्र इंडियेन, पृ० २६७ आदि।

२ संभवत इन परिवर्तनो को ध्यान मे रखकर आनन्दवर्धन अपने ध्वन्यालोक मे कहते है कि रामायण जैसी सिद्धरस कथाओ मे स्वेच्छा से रसविरोधी परिवर्तन नही करना चाहिए (दे० ३, ११ की वृत्ति)। इस संदर्भ मे वह यशोवर्मा कृत रामाभ्युदय का यह उद्धरण देता है—**कथामार्गे न चातिक्रम**।

(३) शृगार की व्यापकता । उदाहरणाथ बालरामायण मे रावण का विरह-वर्णन, मैथिलीकल्याण मे राम-सीता क पूर्वानुराग का चित्रण (अक १-८) तथा महानाटक मे राम-सीता का सभोग-वर्णन, जो अश्लीलता की सीमा तक पहुँच गया है (अक २) ।

(४) अद्भुत-रस का प्रवेश । उदाहरणाथ प्रसन्नराघव (अक ६), आश्चर्य-चूडामणि, अद्भुत दपण ।

(५) पात्रो का अन्य पात्रो का रूप धारण कर लेना । उदाहरणाथ महावीरचरित तथा अनर्घराघव मे शूपणखा मथरा का रूप धारण कर लेती है, उदात्तराघव मे सुग्रीव को धोखा देने के उद्देश्य से एक राक्षस हनुमान् के रूप मे उनके पास आता है तथा अतिम अक मे कई छद्मवेषी राक्षस भरत और राम मे छल-कपट करने का निष्फल प्रयास करते है, बालरामायण मे मायामय शूर्पणखा तथा एक परिचारिका क्रमश दशरथ, कैकेयी तथा मथरा का रूप धारण कर लेते है, महानाटक मे रावण अपने हाथ मे अपने दस शीष लिए हुए राम के रूप मे सीता के पास जाता है, आश्चय-चूडामणि मे रावण और उसका सारथि राम तथा लक्ष्मण का रूप धारण कर सीता का हरण करत ह और शूर्पणखा सीता के रूप मे राम के पास जाती हे ।

प्रतिमानाटक तथा अभिषेकनाटक

२२६ सभव ह कि प्रतिमानाटक तथा अभिषेकनाटक भासकृत न होकर किसी दक्षिण भारत-निवासी अन्य कवि द्वारा कालिदास के बहुत कुछ बाद रचित हुए हो ।[1]

प्रतिमानाटक मे कालिदास के अनुसार राम की वशावली (दिलीप, रघु, अज, दशरथ) तथा अभिषेकनाटक मे सीता के लक्ष्मी के अवतार होने के उल्लेख मे भी उपर्युक्त मत की पुष्टि होती है । फिर भी दोनो नाटको को यहा पहला स्थान दिया गया है ।

भास के नाम पर सन् १६४१ मे प्रकाशित **यज्ञफल**[2] एक अपप्राकृत अर्वाचीन रचना है । इसके सात अको मे राम के बालचरित तथा विवाह का वर्णन किया गया है । दशरथ राम-विवाह के पूव ही राम को युवराज बनाने की इच्छा प्रकट करते है और इसके लिए उनकी तीनो रानिया अपनी सहमति देती है (अक २) । रावण (माया द्वारा अदृश्य रह कर) राम को अयोध्या मे देखने आता है (अक ३) । विश्वामित्र की यज्ञ-रक्षा के पश्चात् मिथिला मे राम तथा सीता के पूर्वानुराग का चित्रण किया गया है

१ दे० एस० कुप्पुस्वामी की आश्चर्यचूडामणि की भूमिका (कलामनोरमा सिरीज, मद्रास) ।

२ दे० ए० डी० पुसलकर भास, ए स्टडी (दिल्ली, १६५८) ।

(अक ६)। अंतिम अक मे, जनक के यज्ञ के पश्चात् परशुराम मिथिला पहुँचते है किन्तु राम मे देवत्व के लक्षण देखकर उन्हे श्रद्धापूर्वक अपना धनुष अर्पित करते है।

प्रतिमानाटक के सात अको मे वाल्मीकीय अयोध्याकाड की कथावस्तु तथा सीता-हरण का वर्णन किया गया है। प्रथम अक मे राम को वनवास दिये जाने की कथा मिलती है। इसकी विशेषता यह है, कि शत्रुघ्न उस समय अयोध्या मे उपस्थित है।

द्वितीय अक मे दशरथ के मरण का वर्णन है, इसके अनुसार मृत्यु-शय्या पर पड़े हुए दशरथ को उनके पूर्वजो (दिलीप-रघु-अज) के दर्शन होते है, जो उनको परलोक ले जाने आए है।

तृतीय अक मे भरत के प्रत्यागमन का वर्णन है। प्रतिमागृह मे अयोध्या के मृत राजाओ की मूर्तियो को देखकर भरत जान जाते है कि दशरथ की मृत्यु हुई है और वे राज्य-सिंहासन ठुकराकर राम के पास जाने का सकल्प करते है। इसमे भरत को लक्ष्मण का अनुज बताया गया है।

चतुर्थ अक मे वाल्मीकि के अनुसार भरत की चित्रकूट-यात्रा का वर्णन मिलता है तथा पचम अक मे सीता-हरण का एक सर्वथा नवीन रूप प्रस्तुत किया गया है (दे० आगे अनु० ४६५)।

छठे अक के अनुसार भरत सुमत्र से सीताहरण का समाचार सुनकर कैकेयी को भर्त्सना देते है, जिस पर कैकेयी अपने निर्दोष होने का प्रमाण देती है। महर्षिशाप की रक्षा करने के लिए वसिष्ठ वामदेव आदि से परामर्श लेकर कैकेयी ने राम को वनवास दिलाया था (दे० आगे अनु० ४५२)। अनन्तर भरत रावण के विरुद्ध सेना-सचालन की आज्ञा देते है।

रावण-वध के बाद जनस्थान के आश्रम मे भरत आदि से राम की भेंट का वर्णन अंतिम अक मे किया गया है। उस वृत्तान्त के अनुसार राम का अभिषेक भी जनस्थान मे हुआ था, जिसके बाद सब पुष्पक से अयोध्या लौट गए।

२२७ **अभिषेक नाटक** मे वालिवध से लेकर रामाभिषेक तक की वाल्मीकीय कथा का अपेक्षाकृत कम परिवर्तन सहित वर्णन किया गया है। सेतुबन्ध के स्थान पर समुद्र विभक्त हो जाता है और सेना समुद्रतल से पार उतरती है (अक ४)। राम तथा लक्ष्मण दोनो के मायामय शीर्ष सीता को दिखलाए जाते है (इस परिवर्तन का महानाटक, जावा के प्राचीन रामायण तथा मलय के सेरी राम मे अनुकरण किया गया है)। सीता की अग्निपरीक्षा के समय अग्निदेव प्रकट होकर सीता के लक्ष्मी होने का रहस्योद्घाटन करते है

इमा भगवतीं लक्ष्मी जानीहि जनकात्मजाम्।
सा भवन्तमनुप्राप्ता मानुषीं तनुमास्थिता॥ २८॥ (अक ६)

प्रतिमानाटक मे राम को मनुष्य के रूप मे देखा गया था, इस नाटक मे राम के विष्णुत्व का अनेक स्थलो पर उल्लेख है। राम का अभिषेक लका मे आयोजित है (अक ६)।

भवभूति-कृत महावीरचरित तथा उत्तररामचरित

२२८ कन्नौज के दरबार के वातावरण मे रहने वाले भवभूति ने आठवी शताब्दी ई० पूर्वार्द्ध मे महावीरचरित तथा उत्तररामचरित की रचना की थी।

महावीरचरित के सात अको मे राम-सीता-विवाह से लेकर रामाभिषेक तक की कथा का वर्णन किया गया है। इसमे निम्नलिखित परिवर्तन मिलते है

विश्वामित्र के आश्रम मे राम-लक्ष्मण सीता-उर्मिला से मिलते है। आश्रम मे रावण के दूत के आ जाने का तथा धनुर्भंग का भी वर्णन किया गया है (अक १)।

विवाह के पश्चात् परशुराम के मिथिला ही मे आने का वर्णन है (अक २)।

कैकेयी का एक जाली पत्र लेकर शूर्पणखा मथरा के रूप मे मिथिला पहुँचती है। इस पत्र मे कैकेयी वर के बल पर राम का वनवास मागती है, जिसके फलस्वरूप राम भरत को अपनी पादुकाएँ देकर मिथिला ही मे सीता तथा लक्ष्मण के साथ वन के लिए प्रस्थान करते है (अक ४)।

माल्यवान् की प्रेरणा से वालि राम को मार्ग मे रोक लेता है और द्वन्द्वयुद्ध मे राम द्वारा मारा जाता है।

२२६ **उत्तररामचरित** के सात अको मे वाल्मीकीय उत्तरकाड की सामग्री का एक नवीन रूप प्रस्तुत है।

लोकापवाद के कारण सीतात्याग का वर्णन इस प्रकार है। सीता-सहित अपने वनवास के चित्रो का दर्शन करने तथा गर्भवती सीता को गगातट के आश्रमो को दिखलाने का आश्वासन देने के पश्चात् राम सीता के विषय मे लोकापवाद की कथा दुर्मुख से सुनते है तथा सीता का त्याग करने का निश्चय करते है (अक १)।

कुश-लव के जन्म की तथा शम्बूक-वध की कथा दोनो वाल्मीकि से कुछ भिन्न है (दे० आगे अनु० ७४१ और ६२६)। राम-सेना से कुश लव के युद्ध करने का भी वर्णन किया गया है (दे० आगे अनु० ७८८)। इस युद्ध के पूर्व वाल्मीकि-आश्रम मे जनक तथा कौशल्या की भेट चतुर्थ अक मे वर्णित है। कथा के दृष्टिकोण से नाटक की सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण विशेषता अतिम अक मे मिलती है। वाल्मीकि के आश्रम मे राम तथा अयोध्या की जनता के सामने सीता-चरित-सम्बन्धी (त्याग, कुश-लव-जन्म आदि) एक वाल्मीकिकृत नाटक का अभिनय वर्णित है, जिसके फलस्वरूप समस्त प्रेक्षकगण सीता की निर्दोषता पर विश्वास करते है और सीता तथा कुश-लव के साथ राम अयोध्या

लौटते है । रामकथा के इस सुखान्त निवहण की उत्पत्ति और विकास का २० वे अध्याय मे विश्लेषण किया जायगा (दे० अनु० ७५४-७५७) ।

उदात्तराघव

२३० **उदात्तराघव**[1] की रचना सभवत ८वी शताब्दी ई० मे अनगहष मायुराज (मात्रराज) द्वारा हुई थी । इसके ६ अको मे राम के निर्वासन से लेकर रावण-वध के वाद उनके अयोध्या मे प्रत्यागम तक की कथा प्रस्तुत की गई है । कथानक की विशेषताओ मे से सीताहरण का नवीन रूप प्रमुख है (दे० अनु० ४६२) । इसके अतिरिक्त कई राक्षस और असुर राम के पक्ष वाले पात्रो का रूप धारण करते है । चतुर्थ अक मे एक राक्षस हनुमान् का रूप धारण कर सुग्रीव को रावण द्वारा सीता-वध का समाचार देता है, इसपर सुग्रीव अगद को राज्य सौपकर चिता मे प्रवेश करना चाहते है किन्तु वास्तविक हनुमान् ठीक समय पर पहुँचकर उनको बचाते हे । अन्तिम अक मे एक राक्षस वसिष्ठ का शिष्य बनकर भरत को सन्देश देता है कि लक्ष्मण युद्ध मे मारे गए है । अनन्तर एक असुर नारद के रूप मे पहुँचकर कहता है कि राम का भी देहान्त हुआ है और अन्त मे एक राक्षसी सीता का रूप धारण कर उन दानो के कथन का समर्थन करती है । भरत सरयू मे डूब कर मरने पर है किन्तु हनुमान् शुभ समाचार ले कर आते है और उनको रोकते है । हनुमान् से पता चलता है कि एक असुर ने सुमत्र का रूप धारण कर राम को समाचार दिया था कि भरत मरणासन्न है । तृतीय अक मे एक तपस्वी राम के पास जटायु का पत्र लेकर आते है, जटायु ने अपनी चोच की कलम बनाकर इस पत्र को अपने रक्त मे एक पत्ती पर लिखकर कहा कि राम को अपना शोक भुलाकर रावण से बदला लेना चाहिए ।

कुन्दमाला

२३१ डॉ कालीकुमार दत्त[2] **कुन्दमाला** के रचयिता तथा रचनाकाल के विषय मे समस्त उपलब्ध सामग्री का अध्ययन करने के बाद इन निष्कर्षों पर पहुँचते है—(१) कवि का नाम धीरनाग, वीरनाग, नागय्य अथवा रविनाग न हो कर दिङ्नाग ही है, (२) रचनाकाल पाचवी शताब्दी का प्रारभ है, (३) कुन्दमाला उत्तररामचरित से पहले की रचना है ।[3]

---

१ प्रस्तुत परिचय डॉक्टर राघवन् के दिए हुए सक्षेप पर निर्भर है । उनको उदात्तराघव की एक हस्तलिपि प्राप्त हुई है ।

२ दे० कालीकुमार दत्त कुन्दमाला (सस्कृत कालेज, कलकत्ता १९६४) ।

३ एच० डी० सकालिया (कुन्दमाला एण्ड उत्तररामचरित, ज० ऑ० इ, भाग १५, पृ० ३२२-३३४) भी दिङ्नाग को कालिदास का समकालीन मानते है ।

कुन्दमाला की कथावस्तु उत्तररामचरित से मिलती-जुलती है। वह सीतात्याग से आरभ होती है और राम-सीता-मिलन पर समाप्त हो जाती है। तृतीय अक मे राम तथा लक्ष्मण वाल्मीकि-आश्रम के पास गौतमी के तट पर एक कुन्दमाला देखते है, जिसकी बनावट सीता के कौशल का स्मरण दिलाती है। आगे बढकर उन्हे सीता के चरण-चिह्न भी दिखलाई पडते है।

चतुर्थ अक के प्रारम्भ मे बताया जाता है कि राजसेना को निकट जानकर वाल्मीकि ने अपने तपोबल द्वारा आश्रम की स्त्रियो को अदृश्य हो जाने का वरदान दिया है। इसी तरह सीता अदृश्य होकर राम से मिलती है, राम सीता की छाया को जल मे देखकर विरह के कारण मूर्च्छित हो जाते है।

अतिम अक मे कुश-लव के रामायणगान के पश्चात् सीता सभा मे शपथ खाती है, जिसके फलस्वरूप पृथ्वी देवी प्रकट होकर सीता की निर्दोषिता का साक्ष्य देती है। इसपर राम सीता को स्वीकार करते है तथा पृथ्वी देवी अन्तर्द्धान हो जाती है।

मुरारिकृत अनर्घराघव

२३२ **अनर्घराघव** की रचना ६०० ई० के लगभग मुरारि द्वारा हुई थी। इसकी कथावस्तु विश्वामित्र के आगमन से लेकर अयोध्या मे रामाभिषेक तक का वृत्तात है। तृतीय अक मे रावणदूत शौष्कल के मिथिला मे आकर रावण की ओर से सीता को मागने का उल्लेख है। महावीरचरित मे भी रावण का एक दूत विश्वामित्र के आश्रम मे सीता को रावण की ओर से मागता है। अनर्घराघव मे वाल्मीकीय कथा के जो अन्य परिवर्तन मिलते है, वे सब महावीरचरित पर निर्भर है। उदाहरणार्थ, शूर्पणखा का मथरा के वेष मे कैकेयी के एक जाली पत्र के बल पर राम का निर्वासन माँगना (अक ४), परशुराम का मिथिला ही मे आगमन (अक ४) तथा राम-वालि द्वन्द्व-युद्ध (अक ५)।

राजशेखर-कृत बालरामायण

२३३ रामकथा-सम्बन्धी सबसे विस्तृत नाटक **बालरामायण** की रचना १० वी शताब्दी मे हुई थी। इसके १० अको मे सीतास्वयवर से लेकर रामाभिषेक तक की कथा भवभूति तथा मुरारि के अनुकरण पर वर्णित है। फिर भी कथानक के दृष्टिकोण से राजशेखर ने मौलिकता का भी प्रदर्शन किया है।

रावण स्वय प्रहस्त के साथ सीता के स्वयवर मे पहुँचकर धनुप-परीक्षा करना अस्वीकार करता है तथा सीता के पति को अपना शत्रु घोषित कर लौटता है (अक १)। अनन्तर वह परशुराम से सहायता के लिए निष्फल प्रार्थना करता है (अक २) तथा लका मे पहुँचकर सीता के विरह के कारण अत्यन्त व्याकुल हो जाता है। उसका

मन बहलाने के लिए सीता-स्वयवर मे अन्य राजाओ के प्रयत्नो के बाद राम की सफलता का अभिनय किया जाता है (अक ३)। बाद मे सीता और उनकी धात्रेयिका (दूध-बहन) की कठपुतलियाँ बनवाकर तथा उनके मुँह मे सारिकाएँ स्थापित करके माल्यवान् द्वारा विरही रावण को सान्त्वना देने का एक और निष्फल प्रयत्न किया जाता है (अक ५)।

भवभूति तथा मुरारि के अनुसार परशुराम मिथिला मे आते है, किंतु लक्ष्मण ही विष्णु के धनुष पर प्रत्यचा चढाते है (अक ४)। राम के निवासन की कथा कुछ भिन्न है। अयोध्या मे दशरथ तथा ककेयी की अनुपस्थिति का अवसर पाकर मायामय, शूर्पणखा तथा एक परिचारिका क्रमश दशरथ, ककेयी तथा मथरा का रूप धारण कर लेते ह और राम को निर्वासित करने मे सफल होते है (अक ६)।

सेतुबन्ध के अवसर पर सीता के मायामय शीष का प्रसग और रावणपुत्र सिंह-नाद तथा एक प्रभजनी नामक राक्षसी के वध का वर्णन मिलता है (अनु० ५७६), मछ-लियो द्वारा सेतु को नष्ट करन के प्रयत्न का भी उल्लेख होता है (अक ७)। त्रिजटा सीता के साथ अयोध्या जाती है (अक १०)।

महानाटक अथवा हनुमन्नाटक

२३४ **महानाटक** के प्रथम रूप की रचना सभवत दसवी शताब्दी मे हुई है।[1] लेकिन इसमे १४वी शताब्दी तक प्रक्षेप जोडे गए है, जिसके फलस्वरूप आजकल दो बहुत भिन्न पाठ प्रचलित हैं—दामोदर मिश्र का तथा (बगाल मे) मधुसूदन का। दामो-दर मिश्र का पाठ मूल रचना के अधिक निकट और प्राचीन है।[2]

इस नाटक के स्वरूप को लेकर बहुत वाद-विवाद हुआ है। इतना ही निश्चित है कि इसकी रचना रगमच पर अभिनय करने के उद्देश्य से नही हुई थी। अधिक सभव है कि इसका पाठ यात्राओ मे किया जाया करता था। दामोदर मिश्र के १४ अको के अनुसार, इसके कथानक मे निम्नलिखित विशेषताएँ है

अक १ **सीतास्वयवर** सीतास्वयवर मे रावण का एक दूत उपस्थित है तथा परशुराम मिथिला ही मे आकर पराजित होते है।

अक २ **रामजानकीविलास** इसमे विवाह के अनन्तर राम और सीता का सभोग-वर्णन किया गया है, जो अश्लीलता की सीमा तक पहुँच गया है।

अक ३ **मारीचागमन** राम के वनगमन के समय भरत के अयोध्या मे विद्यमान

---

१ दे० एस० के० दे दि प्राब्लेम ऑव दि महानाटक, इ० हि० क्वा०, भाग ७, पृ० ५३७ आदि।

२ ए० एस्टलेर दि एलटेस्टे वार्मियोन डस महानाटक, जर्मन ओरियेन्टल सोसाइटी, १६३६।

होने का उल्लेख है (छद ५) तथा अहल्योद्धार का वृत्तान्त अगस्त्याश्रम मे पचवटी की ओर जाते समय वर्णित किया गया है (२०)। सीता के रक्षणार्थ भूमि पर धनुष से रेखा खीचकर राम लक्ष्मण को साथ लकर, मायामृग को मारने जाते है (२७)।

अक ४ **सीताहरण** राम तथा लक्ष्मण मृग का शिकार करने के लिए साथ-साथ चले जाते है।

अक ५ **वालिवध** महावीरचरित आदि के अनुसार वालि स्वय राम को ललकारता है। इसमे हनुमान् को रुद्रावतार माना गया है (३३), अगले अक मे भी इसे 'रुद्राश' कहा गया है।

अक ६ **हनुमद्विजय** इसमे सीता हनुमान् को तीन अभिज्ञान देती है—चूडामणि, काक की कथा तथा राम द्वारा सीता को तिलक-प्रदान (३६)।

अक ७ **सेतुबध** राम के बाण चलाने का उल्लेख नही है।

अक ८ **अगदाधिक्षेपण** अपने पिता के वध के कारण राम मे बैर रखकर अगद रावण को युद्ध मे प्रवृत्त करने के उद्देश्य से रावण का अपमान करता है (छन्द २)।

अक ९ **मत्रिवाक्य** लका की सभा का वर्णन।

अक १० **रावणप्रपच** रावण पहले राम तथा लक्ष्मण के मायामय शीर्ष सीता को दिखलाता है (अभिषेक नाटक के अनुसार), अनन्तर रावण राम का रूप धारण कर तथा अपने दस मायामय शीष हाथ मे लेकर सीता को ठगने का प्रयत्न करता है।

अक ११ **कुम्भकर्णवध** इसमे अगद द्वारा राक्षसी प्रभजनी के वध का भी उल्लेख है।

अक १२ **इन्द्रजित्वध**

अक १३ **लक्ष्मणशक्तिभेद** इसमे हनुमान् को हटाने के लिए ब्रह्मा द्वारा नारद को भेज देने का उल्लेख है। इस तरह रावण लक्ष्मण को आहत करने का अवसर पाता है और उनकी चिकित्सा के लिए रावण के वैद्य सुषेण को लका से लाया जाता है। ओषधि-पवत के आनयन के वृत्तान्त मे भरत हनुमान को बाण मार कर गिराते है (दे० आगे अनु० ५८८)।

अक १४ **श्रीरामविजय** प्रारम्भ मे लोहिताक्ष नामक रावणदूत के राम के पास आने का वर्णन है। रावण राम से सधि का प्रस्ताव करता है तथा जामदग्न्य के परशु के लिए सीता को लौटाना चाहता है। राम इस प्रस्ताव को अस्वीकार करते है। रावणवध के बाद अगद अपने पिता के

वध का प्रतिकार लेने के लिए समस्त सेना को ललकारता है, जिस पर एक आकाशवाणी द्वारा कहा जाता है कि कृष्णावतार मे वालि व्याध के रूप मे राम-कृष्ण का वध करेगा (७५) ।

शक्तिभद्रकृत आश्चर्यचूडामणि

२३५ दक्षिण भारत का यह नाटक नवी शताब्दी का माना जाता है, लेकिन इसकी इतनी प्राचीनता बहुत सदिग्ध है ।[1] इसमे शूर्पणखा के आगमन से लेकर सीता की अग्निपरीक्षा तक की कथा का सात अको मे वर्णन मिलता है । इसकी विशेषता यह है कि राम तथा सीता के पास मुनियो से प्राप्त एक अँगूठी तथा चूडामणि हे, जिनके स्पर्श-मात्र से छद्मवेषी राक्षस अपना वास्तविक रूप धारण कर लेते है । इससे नाटक का नाम **आश्चर्यचूडामणि** रखा गया है (अक ३, छद ८) ।

राम का रूप धारण करने वाला रावण, लक्ष्मण का रूप धारण करने वाले अपने सारथि की सहायता से, सीता को हर लेता है । इतने मे शूर्पणखा सीता के रूप मे राम से बातचीत करती है तथा मारीच राम के रूप मे लक्ष्मण से ।

राम-सम्बन्धी प्राचीन अप्राप्य नाटक

२३६ काव्यशास्त्र-विषयक ग्रन्थो के उद्धरणो से अनेक प्राचीन रामकथा सम्बधी अप्राप्य नाटको का पता चलता है । क्षेमेन्द्रकृत **कनकजानकी** के कई उद्धरण **कविकण्ठाभरण** मे मिलते है । इसकी कथावस्तु सीता त्याग से सम्बन्ध रखती है, ऐसा अनुमान किया जा सकता है । क्षीरस्वामीकृत **अभिनव-राघव** (दसवी श०) का उल्लेख हेमचन्द्र के शिष्यो द्वारा हुआ है। **रामचन्द्र** (हेमचन्द्र के शिष्य) के दो नाटक अप्राप्य है, अर्थात् **रघुविलास** तथा **राघवाभ्युदय** (१२वी श०) ।

कुछ अन्य अप्राप्य प्राचीन नाटको के विषय मे डॉ० राघवन् ने निम्नलिखित सामग्री एकत्र की है ।[2] **रामाभ्युदय** तथा **स्वप्नदशानन** को छोडकर सबो के रचयिता अज्ञात है ।

(१) यशोवर्मन का **रामाभ्युदय** (८वी श० पूर्वार्द्ध) ।[3] इसका कथानक (६ अक) वाल्मीकि रामायण के अनुसार है । वह शूर्पणखा-विरूपीकरण से प्रारम्भ होकर राम-अभिषेक पर समाप्त हो जाता है ।

(२) **रामानन्द** की रचना सन् ९०० ई० के पूर्व हुई थी । कथावस्तु उत्तर-

---

१ सुशील कुमार दे हिस्टरी ऑव काव्य लिटरेचर, पृ० ३०२ ।
२ डॉ० राघवन **सम ओल्ड लोस्ट राम प्लेज** (अनामलाई १९६१ ई०)
३ दे० इ० हि० क्वा०, भाग ३०, पृ० ३७९-८१ ।

रामचरित स मम्बन्ध रखती है। शारदातनय एक अन्य **रामानन्द** नामक नाटक का उल्लेख करते है, जिसमे विभीषण का परिचय मीता-हरण के पूव ही मिलता है—

प्रागेव सीताहरणाद् यद् विभीषणवर्णनम् (दे० भावप्रकाश ८)

(३) **छलितराम** (नवी शताब्दी) का कथानक रावण-वध के पश्चात् राम क अयोध्या मे आगमन से प्रारम्भ होकर उनके अश्वमेध-यज्ञ पर समाप्त हो जाता है। मीता त्याग का कारण अयोध्या की जनता का अपवाद नही है, लवण दो राक्षस को राम क पास भेज देता हे, जो राम के अतरग सखा बनकर उनको मीता क प्रति उकसाते है। लवण के इस छल कपट से नाटक का नाम छलितराम ही रखा गया है।

लव-कुश-युद्ध का वर्णन भी मौलिक ह, लक्ष्मण लव को बदी बनाकर उनको राम के दरबार मे ले जाते है। लव अश्वमेध-मण्डप मे मुवर्णमयी मीता को देखकर अपनी माता सीता को पहचानता है। इससे राम को पता चलता है कि सीता जीवित है।

(४) **कृत्यारावण** की रचना सम्भवत नवी शती पूर्वार्द्ध मे हुई थी। इसमे मीताहरण मे लेकर सीता की अग्नि-परीक्षा तक की कथा सात अको मे प्रस्तुत की गयी है। शीषक रावण की कृत्या (माया) की ओर निर्देश करता है। मायामृग के अतिरिक्त राक्षसी माया का परिचय हमे शूर्पणखा के विभिन्न रूपो मे तथा मीता क सामने राम वध क प्रदर्शन से मिलता है। कथानक का मुख्य परिवतन सीताहरण का एक नवीन रूप ह, जिसमे सीता लक्ष्मण के प्रति कटु शब्दो का प्रयोग नही करती, शूपणखा ही सीता का रूप धारण कर लक्ष्मण की भर्त्सना करती है (दे० आगे अनु० ४९६)। छठे अक मे दारुणिका राक्षसी को सीता का वध करन का आदेश दिया जाता ह। दारुणिका सीता को आत्महत्या के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से उनके सामने एक मायामय राम का वध करवाती ह। अपने स्वामी की हत्या देखकर मीता अग्नि मे प्रवेश करने का निश्चय करती है (इस निश्चय का समाचार राम को दिया जाता है, नाट्यदर्पण मे, जो सीता विपत्ति-श्रवण का उद्धरण मिलता है, वह इस प्रसग की ओर निर्देश करता है)।

(५) **जानकीराघव** एक शृगार रस प्रधान नाटक है जिसके सात अको मे सीता-स्वयवर से लेकर रामाभिषेक तक की समस्त रामकथा को प्रस्तुत किया गया है। रावण को सीतास्वयवर मे उपस्थित माना गया है।

(६) **राघवाभ्युदय** का कथानक अरण्यकाण्ड की घटनाओ से प्रारम्भ होकर सीता की पुन प्राप्ति पर समाप्त हो जाता है। युद्ध के प्रारम्भ मे **रावण का सधिप्रस्ताव** इस नाटक की विशेषता है, रावण के आदेश पर जालिनी नामक राक्षसी सीता का रूप धारण कर लेती है और रावण उसे ही राम को समर्पित करना चाहता ह। यह प्रस्ताव सुनकर राम किकर्त्तव्यविमूढ हो जाते है क्योकि वह विभीषण को लका का राजा बनाने

की प्रतिज्ञा कर चुके है । उसी समय इन्द्र के रूप मे एक दूसरा राक्षस रावण का प्रस्ताव स्वीकार करने के लिए राम से अनुरोध करता है । अत मे लक्ष्मण रावण की माया का रहस्योद्घाटन करते है ।

(७) **मायापुष्पक** के प्रारम्भ मे अत्रमुनि का शाप मनुष्य का रूप धारण कर रगमच पर आता है । प्राप्त उद्धरणो से पता नही चलता कि रावण किस तरह एक मायावी पुष्पक-विमान का उपयोग करता है । यह १०वी शताब्दी से पहले की रचना है ।

(८) **स्वप्नदशानन** का रचयिता **भीमट** है । उसके पाँच नाटको मे से स्वप्न-दशानन ही श्रेष्ठ कहा जाता है । यह भी १०वी शताब्दी से पहले की रचना है ।

(९) **मारीचवचित** के पाच अको मे रावणवध तक की रामकथा प्रस्तुत की गई है ।

(१०) **रामविक्रम** के द्वितीय अक मे इसका वर्णन किया गया है कि जनक को किस प्रकार राम-सीता के वनवास का समाचार मिला था ।

(११) **राघवानन्द** । रचनाकाल १०वी शताब्दी से पहले । शृगारप्रकाश मे इसके दो उद्धरण है ।

(१२) **अभिजातजानकी** । इसका तृतीय अक सेतु-निर्माण से सम्बन्ध रखता है ।

(१३) उपर्युक्त नाटको के अतिरिक्त डॉ० राघवन् निम्नलिखित अको का भी उल्लेख करते है

अयोध्याभरत, कैकयीभरत, दशरथाक, प्रावृडक, विभीषणनिर्भर्त्सनाक, शक्त्यक, सपात्यक । अब तक इसका पता नही चल सका कि ये अक किन-किन नाटको के है । सम्पात्यक मे मायावती नामक राक्षसी अगद-हनुमानादि वानरो को धोखे मे डालने का प्रयत्न करती है । रामयण ककविन, भट्टिकाव्य तथा तिब्बती रामायण मे स्वयप्रभा वानरो को भुलाने का प्रयत्न करती है (दे० अनु० ५२६), सम्पात्यक की मायावती सभवत स्वयप्रभा से अभिन्न है ।

जयदेवकृत प्रसन्नराघव

२३७ महादेव के पुत्र जयदेव ने १२वी अथवा १३ वी शताब्दी मे **प्रसन्नराघव** की रचना की थी, जिसमे सीता-स्वयवर से लेकर राम के रावण-वध के बाद अयोध्या मे प्रत्यागमन तक की कथा का सात अको मे वर्णन किया गया है । इस रचना पर मुरारि कृत अनर्घराघव का स्पष्ट प्रभाव पडा है । कथानक के दृष्टिकोण से इसमे निम्न-लिखित विशेषताएँ मिलती है

सीतास्वयवर मे रावण तथा बाणासुर की उपस्थिति और उनके धनुष-सधान के निष्फल प्रयत्न । उस अवसर पर रावण का सीताहरण करने का सकल्प प्रकट करना (अक १) ।

धनुर्भंग के पूव राम और सीता का मिथिला के चडिकायतन मे मिलना (अक २)। मिथिला मे पहले परशुराम के दूत और बाद मे परशुराम का आगमन (अक ४)।

विविध नदियो (यमुना, गगा, सरयू, गोदावरी) का मानवीकरण तथा उनका सागर के तट पर मिलकर अपने भूमिभाग से सम्बन्ध रखनेवाली रामकथा सुनाना (अक ५)।

विद्याधर रत्नशेखर का विरह-व्याकुल राम को लका की घटनाएँ इन्द्रजाल द्वारा दिखलाना (अक ६)।

उल्लाघराघव

२३८ गुजरात के निवासी सोमेश्वर ने **उल्लाघराघव** की रचना १३वी शती ई० पूर्वार्द्ध मे की थी। इसकी अपूर्ण हस्तलिपि भण्डारकर इस्टिट्यूट (पूना) मे सुरक्षित है, कटालॉग मे इसका नाम **रामायणनाटक** रखा गया है। सपूर्ण नाटक बडौदा के ओरियेटल सीरिज मे प्रकाशित हुआ है (१९६१)। उल्लाघराघव मे वाल्मीकीय बाल काण्ड के अन्त से लेकर युद्धकाण्ड के अन्त तक का कथानक आठ अको मे प्रस्तुत किया गया है। प्रथम अक मे राम-सीता-विवाह के पश्चात् मिथिला से प्रस्थान का वर्णन किया गया है तथा इसके बाद कचुकी हरिदत्त परशुराम के तेजोभग की कथा सुनाते है। एक अपवाद को छोडकर वाल्मीकीय कथानक मे कही भी परिवर्तन नही किया गया है। अन्तिम अक के प्रारम्भ मे राम की पुष्पक-यात्रा को प्रस्तुत किया गया है। अनन्तर लवण का एक गुप्तचर मुनि का रूप धारण कर अयोध्या मे यह समाचार फैलाता है कि रावण राम-लक्ष्मण का वध करने के बाद अयोध्या पर आक्रमण करने आ रहा है। सेना को बुलाया जाता है तथा कौशिल्या और सुमित्रा अग्नि मे प्रवेश करने की तैयारिया कर रही है। पुष्पक के पहुँचने पर भरत विभीषण पर बाण चलाना चाहते है किन्तु वसिष्ठ उनको रोकते है। यह प्रसङ्ग उदात्तराघव के षष्ठ अक का स्मरण दिलाता है (दे० ऊपर अनु० २३०) किन्तु उल्लाघराघव पर अनर्घराघव का सर्वाधिक प्रभाव पडा है।[1]

राम-सम्बन्धी गौण नाटक

हस्तिमल्ल कृत मैथिलीकल्याण तथा अजनापवनजय

२३९ जैन कवि हस्तिमल्ल ने १२९० ई० के लगभग सीता-विवाह-सम्बन्धी **मैथिलीकल्याण** की रचना की थी।[1] इस शृगारात्मक नाटक के प्रथक चार अको मे राम तथा सीता के पूर्वानुराग का वर्णन किया गया है। दोनो स्वयवर के पूर्व मिथिला के कामदेवमन्दिर मे (अक १) और माधवी वन मे (अक २) मिलते है, अनन्तर दोनो के विरह-वर्णन तथा चन्द्रकान्तधर-गृह मे अभिसारिका सीता का भी चित्रण किया गया

१ माणिक चन्द्र दिगम्बर जैन ग्रन्थमाला, न० ५।

बम्बई सन् १६२५ ई०) नामक प्रेक्षणक मे विक्रमोर्वशीय के चतुर्थ अक का स्पष्टतया अनुकरण किया गया है ।

दुर्वासा के शाप से सीता के मृग रूप मे बदल जाने पर राम का सर्वत्र सीता को ढूढना तथा अगस्त्य की सहायता से उनको पुन प्राप्त करना इस रचना का वर्ण्य विषय है ।

विरूपाक्षकृत उन्मत्तराघव

२४२ भास्कर भट्ट की भाति विरूपाक्षदेव ने १५ वी शती के प्रारम्भ मे एक **उन्मत्तराघव** नामक प्रेक्षणक लिखा है, उसमे भी विप्रलभ शृगार प्रधान रस है (अडयार सन् १६४६ ई०) । सीताहरण का वर्णन वाल्मीकीय कथा के अनुसार है, किन्तु कनक-मृग मारने के बाद सीता को न पाकर राम उन्मत्त हो जाते है और लक्ष्मण अकेले ही जाकर वानरो की सहायता से रावण को मार डालते है तथा सीता को राम के सामने उपस्थित करते है ।

व्यासमिश्रदेव-कृत रामाभ्युदय

२४३ व्यासमिश्रदेव ने १५ वी शताब्दी पूर्वार्द्ध मे **रामाभ्युदय** की रचना की थी, जिसके दो अको मे लका का युद्ध, सीता की अग्निपरीक्षा, पुष्पक मे अयोध्यागमन तथा राम का अभिषेक वर्णित है ।

उत्तरकालीन नाटक

२४४ पन्द्रहवी शताब्दी के पश्चात्, विशेष कर सत्रहवी मे, विस्तृत रामकथा सम्बन्धी नाटक-साहित्य की सृष्टि हुई है । अधिकाश सामग्री अब तक अप्रकाशित है (दे० मद्रास तथा तजूर सस्कृत कैटालॉग) ।

ऐसा प्रतीत होता है कि इन नाटको मे अद्भुत् रस का उत्तरोत्तर महत्त्व दिया गया है । उदाहरणार्थ यहा दो रचनाओ का उल्लेख किया जाता है ।

निर्णयसागर मे प्रकाशित सत्रहवी शताब्दी के दक्षिण निवासी महादेवकृत **अदभुतदर्पण** (दस अक) मे राम को एक ऐद्रजालिक द्वारा दर्पण के माध्यम से लका की घटनाएँ दिखलाई जाती है ।

उसी काल के **जानकी-परिणय** (जिसकी रचना दक्षिणनिवासी रामभद्र दीक्षित द्वारा हुई थी) मे इतने पात्र एक दूसरे का रूप धारण कर लेते है कि समस्त नाटक हास्यप्रधान बन गया है । सीता का हरण करने के उद्देश्य से विराध राम का रूप धारण कर लेता है तथा शूर्पणखा राम को रोकने के उद्देश्य से सीता का रूप धारण करती है । दोनो आश्रम के पास पहुँच कर एक दूसरे को नही पहचानते है और फलस्वरूप विराध शूर्पणखा को ले जाता है । इस प्रकार के और अनेक वृत्तान्त मिलते है। अन्त मे छद्मवेशी शूर्पणखा राम-वध का झूठा समाचार लेकर हनुमान् के पूर्व ही अयोध्या मे पहुँच जाती है तथा भरत और शत्रुघ्न को आत्महत्या के लिए प्रेरित करती है ।

ग—स्फुट काव्य

श्लेषकाव्य

२४५ (१) संस्कृत साहित्य का प्रथम विस्तृत श्लेषकाव्य रामकथा से सम्बन्ध रखता है। सन्ध्याकर नन्दि ने बारहवी शताब्दी के प्रारभ मे **रामचरित** की रचना की थी। इसके २२० आर्याछन्दो मे समस्त रामकथा की प्रधान घटनाओ का वर्णन श्लेषात्मक शब्दो मे किया गया है, जिसमे साथ साथ वगीय राजा रामपाल का चरित्र भी वर्णित है। इसमे वाल्मीकि रामायण के कथानक से कोई भिन्नता नही है। इस रचना के अतिरिक्त निम्नलिखित राम सम्बन्धी श्लेषकाव्यो का उल्लेख मिलता है।

(२) दिगम्बर जैन धनजयकृत **राघवपाण्डवीय** (बारहवी श० पूर्वार्द्ध), जिसके १८ सर्गो मे रामायण तथा महाभारत की कथा का वर्णन किया गया है। पुत्रेष्टियज्ञ का अभाव (सर्ग ३), वालिवध के पश्चात् सुग्रीव द्वारा अपनी पुत्री कल्याणी का राम को अर्पित करना (सर्ग ६), लक्ष्मण द्वारा कोटिशिला का ऊपर उठाना (सर्ग १२)—यह सब जैनी रामकथा के अनुसार है (दे० ऊपर अनु० ६०)।

(३) कविराज माधव भट्ट अथवा कविराज पडित कृत **राघवपाण्डवीय** (१२वी शताब्दी उत्तरार्ध), जिसके १३ सर्गो मे रामायण तथा महाभारत की कथा वर्णित है।

(४) हरदत्त सूरि-कृत **राघवनैषधीय,** जिसमे राम तथा नल का चरित्रवर्णन मिलता है।

(५) चिदबर कृत **राघवपाण्डवयादवीय** (१६०० ई० के लगभग), जिसमे रामायण, महाभारत तथा भागवतपुराण की कथा का साथ-साथ वर्णन किया गया है।

(६) गगाधर महाडकर-कृत **सकटनाशनस्तोत्र** (१८वी शती), जो राम तथा कृष्ण स सम्बन्ध रखता है।

नीति-काव्य

२४६ राम कवि कृत **सन्नीति रामायण** १५वी श० का है। प्रत्येक श्लोक का पूर्वार्द्ध नीति-वाक्य है, उत्तरार्द्ध रामकथा विषयक है। इस प्रकार सात काण्डो मे समस्त रामकथा प्रस्तुत की गई है (दे० जर्नल त्रावाकुर युनिवर्सिटी ओरियेण्टल मैनुस्क्रिप्ट लाइब्रेरी, भाग ७, अक १-२)।

एक उदाहरण इस प्रकार है

धर्मार्थसाधक कुर्यात् व्यापार स्वकुलोचितम्।
इक्ष्वाकुवशजोऽरक्षत क्षोणीं दशरथोऽखिलाम्॥

विलोम-काव्य

२४७ (१) सूर्यदेवकृत **रामकृष्णविलोमकाव्य** (सन १५४० के लगभग)।

इसके ३६ छदो मे अक्षरो का स्वाभाविक क्रम राम से सम्बन्ध रखता है तथा विपरीत क्रम (दाहिने से बाएँ) कृष्ण से ।

(२) वेकटाध्वारिन्-कृत **यादवराघवीय** (१७वी श० पूर्वार्द्ध) । इसके ३०० छदो मे अक्षरो के स्वाभाविक क्रम से रामकथा तथा विपरीत क्रम से कृष्ण-कथा का वर्णन किया गया है (दे० मद्रास कैटालॉग न० डी ११८६१) ।

(३) **राघवयादवीय** । इसका विस्तार ६४ छदो का है तथा कथावस्तु उपर्युक्त यादवराघवीय के समान है (दे० मद्रास कैटालॉग न० डी ७१५८ तथा इडिया ऑफिस कैटालॉग न० ७१३३) ।

चित्रकाव्य

२४८ (१) कृष्णमोहनकृत **रामलीलामृत** के १२० छदो मे विश्वामित्र-आगमन से लेकर रावण-वध तक की रामकथा का वर्णन किया गया है । इस अपेक्षाकृत आधुनिक काव्य मे सम्बन्ध, पद्मबन्ध, सोपान, गोमूत्र आदि चित्रालकारो का व्यापक प्रयोग मिलता है (दे० हरप्रसाद शास्त्रीकृत सस्कृत कैटालॉग, भाग १, न० ३१७) ।

(२) आध्रदेश निवासी वेकटेशकृत **चित्रबधरामायण** का भी उल्लेख मिलता है । ६ सर्गो मे विभक्त इसका विस्तार ६२० छद है (दे० तजूर कैटालॉग न० ३७७२) ।

शृङ्गारिक खडकाव्य

२४६ राम सम्बन्धी शृगारिक खडकाव्य की सृष्टि विशेषकर मेघदूत तथा गीतगोविन्द के अनुकरण पर हुई है ।

मेघदूत के अनुकरण पर रचित निम्नलिखित ग्रथो का उल्लेख मिलता है ।

(१) **हससदेश अथवा हसदूत**—इसके रचयिता के कई नाम पाए जाते है, वेकटदेशिक, वेकटनाथ, वेदाताचार्य और श्री वेदान्तातेशिक । उन्होने १३वी शती ई० मे हसमदेश को लिखकर राम-काव्य के एक नवीन रूप का प्रवर्त्तन किया । इसमे यह कल्पना की गयी है कि लका से हनुमान के लोटने के बाद विरही राम ने एक राजहस को अपना दूत बनाया और उसे लका का मार्ग समझाकर सीता के लिए अपना सदेश दिया ।

(२) **भ्रमरदूत**—(१७वी श० ई०) । नैयायिक रुद्र वाचस्पति अथवा रुद्रन्याय-पचानन कृत । कथावस्तु हससदेश जैसी है, किन्तु हस के स्थान पर भ्रमर को सम्बोधित किया जाता है ।

(३) **कपिदूत**—इसमे हनुमान को भेजा जाता है (दे० ढाका यूनीवर्सिटी मेनुस्क्रिप्ट, न० ६७५ बी) ।

(४) **कोकिलसंदेश**—वेंकटाचार्य-कृत ३०० छंदों की १७ वीं शती की रचना (दे० तंजूर कटालॉग नं० ३८६२)।

(५) **चंद्रदूत**—कृष्णचन्द्र तर्कालंकार की रचना (दे० हरप्रसाद शास्त्री, नोटिसिस, भाग २, पृ० १५३)।

(६) **वातदूत**—(१९वीं श० ई०)। न्यायपंचानन कृष्णनाथ भट्टाचार्य कृत। विरहिणी सीता वायु को दूत बनाकर अशोकवन से राम के पास संदेश भेजती है।

(७) नित्यानन्द शास्त्री कृत **हनुमदद्दूत** इसका प्रमाण है कि बीसवीं श० ई० तक इस प्रकार की रचनाओं का क्रम चलता रहा। इसमें राम द्वारा सीता के पास संदेश भेजने का वर्णन है। यह मेघदूत के पदों के चतुर्थ चरण की समस्यपूर्तिपरक रचना है।

२५० **गीतगोविन्द** के अनुकरण पर भी बहुत से राम-सीता-विषयक काव्यों की रचना हुई है। उदाहरणार्थ—(१) **रामगीत-गोविन्द** (वेंकटेश्वर प्रेस)। यह काव्य भूल से जयदेवकृत माना जाता है। इसमें गीतगोविन्द का स्पष्टतया अनुकरण किया गया

> **यदि हरिस्मरणे सरसं मनो यदि विलासकलासु कुतूहलम्।**
> **मधुरकोमलकान्तपदावलीं शृणु तदा जयदेवसरस्वतीम् ॥३॥**
>
> (गीतगोविन्द, सर्ग १)

> **यदि रामपदाम्बुजे रतिर्यदि वा काव्यकलासु कौतुकम्।**
> **पठनीयमिदं तदौजसा रुचिरं श्रीजयदेवनिर्मितम् ॥ ४ ॥**
>
> (रामगीतगोविन्द, सर्ग १)

प्रस्तुत रचना के छः सर्गों (२४ गीत) में विष्णु-अवतार राम के जन्म से लेकर रावण-वध के पश्चात् अयोध्या में राम के अभिषेक तक समस्त रामकथा को संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है। गीतगोविन्द का अनुकरण होते हुए भी सीता के सौन्दर्य का वर्णन नहीं हुआ, शृंगारात्मक स्थल अत्यन्त मर्यादित हैं तथा समस्त काव्य शुद्ध राम-भक्ति से ओतप्रोत है। कथानक की निम्नलिखित विशेषताएँ उल्लेखनीय हैं

—जन्म के पश्चात् राम का अपना विष्णु-रूप दिखलाना।
—मिथिला में ही परशुराम का तेजोभंग।
—कैकेयी दशरथ-रथ का भग्न अक्ष सँभालती है।
—कई स्थलों पर रामचरितमानस का सादृश्य। विवाह में देवता लोग उपस्थित हैं तथा जनक राम के चरण धोते हैं, जयन्त सीता के पैर पर चोंच मारता है **शक्रसूनुरगमत् खगाकृतिः ॥२॥ विददार पदांगुष्ठम्** **(सर्ग ४)**, पंपासर के तट पर नारद-राम-संवाद।

(२) **गीतराघव** के नाम से दो रचनाएँ प्रचलित है, एक हरिशकरकृत तथा अन्य प्रभाकरकृत (दे० हरप्रसाद शास्त्री, नोटिसस, भाग २, पृ० ४३)।

(३) **जानकीगीता**। श्रीहर्याचार्य कृत। हरिनाथ कृत एक **राम-विलास** नामक रचना का उल्लेख मिलता है, जो सभवत **जानकीगीता** से अभिन्न हो।[1]

(४) **सगीतरघुनदन**। इस १८वी श० की विश्वनाथ सिह की रचना मे **गीतगोविंद** के अनुकरण के साथ-साथ सीता-राम की युग्मभक्ति का भी प्रतिपादन किया गया है। इसमे रामचन्द्र के गृहराम (सर्ग २), वसन्त रास (सर्ग ३) आदि का भी वर्णन मिलता है (दे० हरप्रसाद शास्त्री, नोटिसस, भाग ३, न० ३२४)।

(५) **राघवगीतम्** या **रामगीतम्** (१८ वी श० ई०)। इसका रचयिता श्रीकृष्ण भट्ट जयपुर के राजा के आश्रय मे रहता था तथा हिन्दी साहित्य के इतिहास मे लाल कवि के नाम से प्रसिद्ध है। राघवगीतम् के कारण उसे राजा की ओर से रामरासाचार्य की उपाधि मिली थी। इस रचना के १२ सर्गो मे प्रमुख रूप से राम, सीता तथा सीता की सखियो (ग्रामवधूटियो) की चित्रकूट-रासलीला का वर्णन है (दे० नागरी प्रचारिणी पत्रिका, वर्ष ७१, अक ३-४, पृ० २६३-३०६)।

अन्य स्फुट काव्य

२५१ उपर्युक्त रचनाओ के अतिरिक्त साहित्यदर्पण के रचयिता विश्वनाथ कृत **राघवविलास**, मुद्गलभट्ट कृत **रामार्याशतक**, कृष्णेन्द्रकृत **आर्यारामायण** आदि का उल्लेख भी मिलता है, जिनमे रामकथा के दृष्टिकोण से नई सामग्री नही मिलती, लेकिन जिनसे रामकथा की लोकप्रियता तथा समस्त काव्य मे व्यापकता का प्रमाण मिलता है। सोमेश्वर कृत **रामशतक** मानता है कि अहल्या वास्तव मे पाषाण बन गयी थी। रचना १३ वी शताब्दी की है तथा बडौदा के ऑरियेंटल सीरिज मे प्रकाशित है (१९६५)।

घ—कथा-साहित्य

२५२ दशकुमारचरित, वासवदत्ता, हर्षचरित, कादम्बरी आदि की आख्यायिका-शैली मे किसी विस्तृत राम-सम्बन्धी रचना की सृष्टि नही हो पाई है। कारण यह होगा कि इस शैली की रचनाओ का कथानक कल्पित माना जाता था। फिर भी कथा-साहित्य की सब से प्राचीन रचना, गुणाढ्यकृत **बृहत्कथा** मे (जिसकी रचना सभवत प्रथम श० ई० पूर्व[2] हुई थी) रामकथा भी वर्णित थी, ऐसा अनुमान किया जा सकता

१ दे० मोनियेर विलियम्स इडियन विजडम, पृ० ३६८।

२ दे० एल० ऐल्सदॉफ प्राच्य विद्या का १९वाँ अन्तर्राष्ट्रीय अधिवेशन, पृ० ३४६।

है । इस अनुमान का आधार यह है कि बृहत्कथा के जो दो विस्तृत रूपान्तर मिलते है, इनमे रामकथा भी सम्मिलित की गई है, अर्थात् जैनियो का **वसुदेवहिण्डि** (पाचवी श० ई० अथवा इसके पूव) तथा सामदेवकृत **कथासरित्सागर** । गुणाढ्य की रचना का सक्षेप क्षेमेन्द्र तथा बुधस्वामी द्वारा भी किया गया है । बुधस्वामी के **बृहत्कथा-श्लोक सग्रह** (लगभग ८०० ई०) मे रामकथा नही मिलती, लेकिन क्षेमेन्द्र की **बृहत्कथा-मजरी** मे रामकथा अति सक्षिप्त रूप मे वर्णित है ।

२५३ **वसुदेवहिण्डि** (वसुदेव-भ्रमण) अथवा वसुदेवचरिय मे सघदास ने जैन महाराष्ट्री गद्य मे बृहत्कथा का जैनी रूप प्रस्तुत किया है[1] । इसमे जो सक्षिप्त रामकथा मिलती है, वह जैनी रामकथा से प्रभावित होते हुए भी वास्तव मे गौण परिवर्तनो के साथ वाल्मीकीय कथा ही है । रामकथा के विकास की दृष्टि से वसुदेवहिण्डि की राम-कथा इसलिए महत्त्वपूर्ण है कि इसमे पहले-पहल सीता का जन्म लका मे माना गया है ।

कथानक रावण की अत्यन्त सक्षिप्त कथा से प्रारभ होता है—वशावली (जो कूर्म पुराण से सबध रखती है), लका मे प्रवास, मन्दोदरी से विवाह । अनन्तर दशरथ तथा उनकी सतति का उल्लेख हुआ—कौशल्या के पुत्र राम, सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण तथा कैकेयी के पुत्र भरत तथा शत्रुघ्न । इसके बाद मन्दोदरी तथा रावण की पुत्री सीता की जन्म-कथा का वर्णन किया गया है, जिसके अनुसार परित्यक्ता बालिका जनक की दत्तक पुत्री बन जाती है (दे० अनु० ४१२) । सीता स्वयवर मे किसी धनुष की चर्चा नही है, सीता बहुत से राजाओ मे से राम को चुनती है, अन्य भाइयो के विवाह का भी सकेत मिलता है । राम के १२ वर्ष के निर्वासन के वर्णन मे मथरा तथा कैकेयी के दो वरो का उल्लेख है (दे० अनु० ४४७) । भरत दशरथमरण के बाद अयोध्या पहुँच कर राम के पास जाते है । उसी अवसर पर कैकेयी पश्चात्ताप करते हुए राम से राज्य स्वीकार करने का निवेदन करती है । शूर्पणखा का विरूपीकरण, मारीच का कनक-मृग बनना, सीताहरण, जटायु-रावण-युद्ध, सुग्रीव से मैत्री, वालिवध, हनुमान् का सीता का पता लगाना, सेतुबध, विभीषण की शरणागति, रावण-वध के बाद विमानो पर अयोध्या का प्रत्यागमन, यह सब वाल्मीकि की कथा के अनुसार ही वर्णित है । जैनी रामकथा का प्रभाव इसमे परिलक्षित है कि लक्ष्मण ही रावण का वध करते है तथा उसी अवसर पर देवताओ द्वारा आठवे वासुदेव घोषित किए जाते है । इसके अतिरिक्त सघदास विमलसूरि के अनुसार वानरो और राक्षसो को विद्याधर की पदवी देते है, भरत तथा शत्रुघ्न को सहोदर भाई मानते है तथा कैकेयी के पश्चाताप का उल्लेख करते हैं ।

✓ १ दे० जैन आत्मानन्द सभा (भावनगर) का सस्करण, भाग २, पृ० २४०-२४६ और वी० एम० कुलकर्णी दि रामायण वर्सियन ऑव सघदास, ज० ऑ० इ०, भाग २, पृ० १२८-१३८ ।

सीताजन्म के नवीन रूप के अतिरिक्त दो अन्य स्थलो पर सघदास का वृत्तान्त मौलिक प्रतीत होता है—सुग्रीव का निमत्रण स्वीकार कर भरत की सेना युद्ध मे भाग लेती है (दे० आगे अनु० ५६७), कैकेयी के दो वरो के लिए दो भिन्न अवसरो की कल्पना कर ली गई है (दे० अनु० ४४७) ।

परवर्ती जैन राम-साहित्य पर सघदास का प्रभाव पडा है क्योंकि गुणभद्र उत्तर-पुराण मे रावण की वशावली तथा सीता की जन्म-कथा बहुत कुछ वसुदेवहिण्डि की रामकथा के अनुसार है ।

२५४ सोमदेव ने ग्यारहवी शताब्दी मे **कथासरित्सागर** की रचना की थी । इसमे दो स्थलो पर रामकथा का वर्णन किया गया है । चौदहवी लबक की तरग १०७ के अन्तर्गत वनवास से लेकर रावणवध के बाद राम की अयोध्या-यात्रा तक की अत्यन्त सक्षिप्त कथा मिलती है (१२-२६) । इसमे वाल्मीकीय कथानक से कोई भिन्नता नही पाई जाती है, लेकिन कथासरित्सागर की अन्य रामकथा मे इसका एक सर्वथा नवीन रूप प्रस्तुत किया गया है । अलकारवती लबक मे काचनप्रभा नामक विद्याधरी विरहव्याकुल नरवाहन को सान्त्वना देने के उद्देश्य से रामकथा का वर्णन करती है (दे० निर्णयसागर प्रेस सस्करण ६, ५१, ५८-११२) ।

प्रारभ मे विष्णु के अशावतार राम के निर्वासन, सीताहरण तथा रावणवध का अत्यन्त सक्षिप्त वर्णन है (दे० ५६-६५) । अनन्तर धोबी-वृत्तान्त से मिलती-जुलती सीता-त्याग की कथा दी गयी है (६६-७१), जिसका वर्णन निबध के बीसवे अध्याय मे किया जायेगा (दे० अनु० ७१६) ।

शेष वृत्तान्त की निम्नलिखित विशेषताएँ है

—वाल्मीकि के आश्रम मे सीता की परीक्षा, जिसमे पृथ्वी देवी प्रकट होकर सीता को टिट्टिभसर के उस पार पहुँचाती है (दे० आगे अनु० ६०१) ।

—लव के जन्म के बाद कुश के अलौकिक जन्म की कथा (दे० आगे अनु० ७४३) ।

—लव और कुश का राम-सेना से युद्ध (दे० आगे अनु० ७४७) ।

—राम तथा सीता का सम्मिलन, जिसके कारण यह रामकथा सुखान्त है (दे० आगे अनु० ७५६) ।

२५५ रामकथा को लेकर पन्द्रहवी शताब्दी के बाद एक विस्तृत चम्पू-साहित्य की सृष्टि की गई है, जिसकी अधिकाश सामग्री अप्रकाशित है । सबसे प्राचीन तथा सबसे प्रचलित राम-सम्बन्धी चम्पू की रचना ग्यारहवी शताब्दी मे विदर्भ के राजा भोज द्वारा हुई थी । इस **चम्पूरामायण** मे कही भी कथानक के दृष्टिकोण से परिवर्तन नही किया गया है । इसका आधार वाल्मीकि रामायण का दाक्षिणात्य पाठ है । यह निम्नलिखित

वृत्तान्तो से स्पष्ट है—अयोमुखी का विरूपीकरण (पृ० २५०, चौखम्बा विद्याभवन सस्करण, १६५६), लंकादेवी-हनुमान-सवाद (पृ० ३२१), विभीषण की पुत्री अनला का उल्लेख (पृ० ३४२), सुग्रीव-रावण-द्वन्द्वयुद्ध (पृ० ५८४)। इसके केवल पाच काड भोजकृत है, लक्ष्मण भट्ट ने युद्धकाड रचकर इस ग्रथ को समाप्त किया था। कालिदास के रघुवश का भी इस रचना पर प्रभाव पडा है।

दिवाकर कृत **अमोघराघव चम्पू** (१३ वी श० ई०) के अतिरिक्त वेकटाध्वरिन् का **उत्तररामचरितचपू** (१६ वी श० ई०) उल्लेखनीय है। इसमे वाल्मीकि के उत्तरकाड के आधार पर रावण तथा हनुमान के चरित्र का वर्णन है।

२५६ वासुदेव ने सत्रहवी शताब्दी ई० उत्तरार्द्ध मे **रामकथा** को लिखकर वाल्मीकिरामायण के प्रथम ६ काडो की कथा सक्षिप्त रूप से गद्य मे लिखी थी। इसमे महाभारत के रामोपाख्यान के अनुसार मथरा एक दुदुभी नामक गधर्वी का अवतार है। कथानक वाल्मीकीय कथा से भिन्न नही है, लेकिन उसमे अहल्या के वास्तव मे पत्थर बन जाने का उल्लेख किया गया है। पिटर्सन की सस्कृत हस्तलिपियो की सूची मे एक अन्य रामकथा सबधी गद्य रचना का नाम मिलता है अर्थात् अनन्तभट्ट कृत **रामकल्पद्रुम**।

अध्याय १२

आधुनिक भारतीय भाषाओ मे रामकथा

क—द्राविड भाषाओ के साहित्य मे रामकथा

तमिल रामायण

२५७ द्राविड भाषाओ का रामकथा-सम्बन्धी सबमे प्राचीन काव्यग्रन्थ कबरकृत **रामायण** है, जिसकी रचना बारहवी शताब्दी ई० मे हुई थी।[1] इसमे वाल्मीकि-कृत **रामायण** के प्रथम छ काडो की समस्त कथावस्तु स्वतन्त्र रूप से वर्णित है और अनेक नये वृत्तान्त भी जोड गए है। ऐसा कहा जाता है कि कबर के पूर्व ओट्टक्कूतन ने तमिल भाषा मे **रामायण** लिखा था, लेकिन कबर की रचना सुनकर वे अपना काव्य नष्ट करने लगे। यह सुनकर कबर उनके पास गये लेकिन वे उत्तरकाड ही बचा सके। इस विषय मे इतना ही निश्चित है कि **तमिल रामायण** का उत्तरकाड कबरकृत नही है। इसकी रचना बाद मे ओट्टक्कूतन द्वारा हुई थी।[2] तमिल उत्तरकाड मे राम धोबी के कथन के कारण सीता का परित्याग करते है, शेष कथानक प्रचलित **वाल्मीकि रामायण** के अनुसार है।

कबर की रचना के मगलाचरण आदि से ज्ञात होता है कि वह शैव थे।[3] उन्होने अपने काव्य के प्रारम्भ मे कहा है कि मै वाल्मीकि तथा दो अन्य कवियो के आधार पर लिख रहा हूँ। इन दोनो मे से एक सस्कृत कवि कुमारदास प्रतीत होते है, क्योकि अनेक **वाल्मीकीय रामायण** से भिन्न वृत्तान्त **जानकीहरण** (८वी शताब्दी ई०) तथा **तमिल रामायण** दोनो मे मिलते है।

कम्बर वाल्मीकि रामायण के दाक्षिणात्य पाठ से परिचित थे, यह निम्नलिखित प्रसगो से स्पष्ट है

समुद्रमथन के समय विष्णु का मोहिनी-रूप धारण करना (१,६ और अनु० ३३२), अयोमुखी का वृत्तान्त (३, १० और अनु० ४५६), लक्ष्मण-तारा-सवाद (४,

---

१ एस० वैयपुरी पिल्लै का कहना है कि सातवी श० ई० मे वाल्मीकि रामायण का तमिल मे पद्यात्मक अनुवाद हुआ था। यह अनुवाद अप्राप्य है (दे० हिस्टरी ऑव तमिल लैग्विज एण्ड लिटरेचर, मद्रास, १९५६, पृ० १०३)।

२ वी० एम० गोपाल कृष्णाचार्यर कब-रामायण बालकाड, पृ० ६।

३ एम० एस० पूर्णलिग पिल्ले तमिल लिटरेचर पृ० २२३।

१० और अनु० ५१०), द्रुमकुल्य का विनाश (६, ६ और अनु० ५७४, २), सुग्रीव-रावण का द्वन्द्व युद्ध (६, ६ और अनु० ५८४), वानरियो की अयोध्या-यात्रा (६, ३७ और अनु० ६०६)। रणभूमि मे कुभकरण-विभीषण-सवाद (६, १५) का प्रसग सभवत पश्चिमोत्तरीय पाठ के आधार पर लिखा गया है, किन्तु यह प्रसग अध्यात्मरामायण, रगनाथ रामायण आदि मे भी विद्यमान है अत कम्बर का आधार निश्चित करना असम्भव हे।

कथानक के दृष्टिकोण से कम्ब-रामायण के निम्नलिखित प्रसङ्ग विशेष रूप से उल्लेखनीय है

(१) राम-लक्ष्मण के विश्वामित्र के साथ मिथिला मे प्रवेश का स्वतन्त्र वर्णन किया गया है। मिथिला नगर के विस्तृत वर्णन के पश्चात् राम और सीता के एक-दूसरे को देखने का तथा फलस्वरूप रात मे दोनो के विरह का भी चित्रण किया गया है (बालकाड, सर्ग १०)। इसके बाद जनक द्वारा राम का स्वागत तथा सीता-स्वयवर वर्णित है (सर्ग १२)। यह प्रसङ्ग बहुत कुछ जानकीहरण के वृत्तान्त से मिलता-जुलता है (दे० अनु० ८०३)।

(२) कम्बर के बालकाड मे दशरथ की मिथिला-यात्रा का पाच सर्गों मे वर्णन किया गया है। दशरथ के साथ सेना, अन्त पुर की रमणिया आदि भी है। उनके विलास का विस्तृत चित्रण किया गया है—पुष्पचयन, जलक्रीडा, आपानकेलि आदि। जानकीहरण मे भी दशरथ का अपनी पत्नियो के साथ विहार विस्तारपूर्वक वर्णित है।

(३) सीताहरण के वृत्तान्त मे रावण सीता को स्पर्श करने के भय से पृथ्वी खोदकर भूमिभाग के साथ-साथ उन्हे ले जाता है (अरण्य काण्ड, सर्ग ८)।

(४) युद्धकाण्ड मे नारायणावतार राम स युद्ध न करने का अनुरोध करते हुए विभीषण रावण को नृसिंहावतार की कथा सुनाता है। किसी भी अन्य रामकथा मे ऐसा वनन नही मिलता (सर्ग ३)।

(५) महोदर की आज्ञा से मरुत नामक एक राक्षस जनक का रूप धारण कर लेता है और रावण को पतिस्वरूप स्वीकार करने का सीता से अनुरोध करता है। इस मायाजनक व्यक्ति का अन्यत्र उल्लेख नही है (सर्ग १६)।

(६) सेतुबन्ध तथा जानकीहरण के अनुकरण पर युद्ध के पूर्व राक्षस-राक्षसियो का सभोग भी वर्णित है (सर्ग २४)।

कम्ब-रामायण की कथावस्तु के और बहुत से स्थलो पर वाल्मीकि रामायण से भिन्नता[1] पाई जाती है। उदाहरणार्थ—इन्द्र का विडाल का रूप धारण करना (अनु०

---

१ गौण परिवर्तनो के लिए पाठक अनु० ३६५, ४३३, ४३४, ४६४ और ५१५ भी देख ले।

३४५), इन्द्र तथा अहल्या के प्रति गौतम का शाप (अनु० ३४६), मथरा के वैर का कारण (अनु० ४५४), निद्रादेवी का मानवीकरण (अनु० ४६१), शरभग-मोक्ष की कथा (अनु० ४५६), हनुमान के आभूषणो का उल्लेख (अनु० ५१२), लक्ष्मण द्वारा दुदुभि के अस्थिककाल का प्रक्षेपण (अनु० ५१७), राम (अनु० ५२५) तथा सीता (अनु० ५५०) द्वारा प्रदत्त अतिज्ञान, स्वयप्रभा (अनु० ५२६) तथा सम्पाति (अनु० ५२७) की कथा, विभीषण की पुत्री के रूप मे त्रिजटा का उल्लेख (अनु० ५४७), मन्दोदरी का सहगमन (अनु० ५४४), लक्ष्मण मात्र का नागपाश (अनु० ५८६) तथा ब्रह्मास्त्र (अनु० ५८७) द्वारा पराजित होना, मायासीता-वध के पश्चात् विभीषण का मधुमक्खी का रूप धारण कर लका मे प्रवेश करना (दे० अनु० ५६१), कुभकर्ण-वध (अनु० ५८६) तथा इन्द्रजित्-वध (अनु० ५६३) के वर्णन मे मोलिकता, भरत द्वारा आत्महत्या-विचार (अनु० ६०६)।

तेलुगु रामायण

(अ) द्विपद रामायण

२५८ तेलुगु साहित्य का सबमे महत्वपूर्ण रामकथा-विषयक ग्रन्थ रगनाथकृत **द्विपद रामायण** है, जिसकी रचना १४वी शताब्दी मे हुई थी। इसके रचयिता के विषय मे मतभेद है, क्योकि रगनाथ कवि गोनबुद्ध रेड्डी के आश्रित थे और उनकी रचना का श्रेय उनके आश्रयदाता गोनबुद्ध राजु को दिया गया है। फिर भी यह रगनाथ रामायण के नाम से प्रसिद्ध है।

लोकप्रिय द्विपद नामक छन्द तथा सरल भाषा के कारण इस रामायण का तेलुगु जनसाधारण मे बहुत प्रचार है, यद्यपि मोल्लकृत रामायण इससे अधिक प्रचलित है। द्विपद रामायण के छ काडो मे वाल्मीकि रामायण के प्रथम छ काडो की कथावस्तु का वर्णन किया गया है। इसका प्रधान आधार वाल्मीकि रामायण का दाक्षिणात्य पाठ है। राम की जन्मतिथि का उल्लेख, बालकाड की पौराणिक कथाएँ, कैकेयी के अपने पति द्वारा अपमानित किए जाने की कथा, अक्पन, अयोमुखी तथा लकादेवी के वृत्तान्त, रावण-सुग्रीव-युद्ध, अगस्त्य द्वारा राम को सूर्यस्तव-प्रधान, ये समस्त प्रसङ्ग जो केवल दाक्षिणात्य पाठ मे मिलते है, रगनाथ रामायण मे विद्यमान है (दे० अनु० २६)। समुद्र-लघन के वृत्तान्त मे मैनाक, सुरसा और सिंहिका का क्रम (दे० अनु० ५३१) तथा रावण की द्वितीय सभा का वर्णन (दे० अनु० ५५७) दाक्षिणात्य के अनुसार ही है।

फिर भी वाल्मीकि रामायण के अन्य पाठो की निम्नलिखित सामग्री रगनाथ रामायण मे विद्यमान है।

उदीच्य पाठ— यज्ञदत्त का नाम (दे० अनु० ४३३), दशरथ-सागर की मैत्री का

वर्णन, रावण-मंदोदरी-संवाद, नारद-कुंभकर्ण-संवाद और कालनेमि-वृत्तान्त (दे० अनु० ५५८)।

पश्चिमोत्तरीय पाठ—कैकेयी के विद्याबल प्राप्त करने की कथा (दे० अनु० ६३०), नारद-वाक्य, कुंभकर्ण-वाक्य और मन्दोदरी के केश-ग्रहण का वृत्तान्त (दे० अनु० ५६०)।

गौडीय पाठ—भरत-हनुमान-संवाद (दे० ५५६)।

इसके अतिरिक्त द्विपद रामायण के कुछ प्रसङ्ग वाल्मीकि रामायण के किसी भी पाठ में नहीं मिलते, उदाहरणार्थ

(१) इन्द्र ने मुर्गे का रूप धारण कर रात्रि में ही बाँग दी और इस प्रकार गौतम को भ्रम में डाला (दे० अनु० ३४५)।

(२) सीता-स्वयंवर के अवसर पर जनक कहते हैं कि यज्ञ के लिए हल चलाते समय मैंने सीता को एक मंजूषा में पाया था।[1]

(३) मंथरा के वैर के कारण (दे० अनु० ४५४)।

(४) लक्ष्मण के जागरण के वृत्तान्त में निद्रादेवी का मानवीकरण (दे० अनु० ६६१)।

(५) शूर्पणखा के पुत्र जम्बुमालि की कथा (दे० अनु० ६३२)।

(६) राम की सहायता करने जाने के पूर्व लक्ष्मण द्वारा कुटी के चारों ओर सात रेखाएँ खींची जाने का वृत्तान्त (दे० अनु० ४६८)।

(७) हनुमान के आभूषणों का उल्लेख (दे० अनु० ५१२)।

(८) समुद्र-मंथन के समय वालि-सुग्रीव द्वारा देवताओं की सहायता तथा तारा की उत्पत्ति (दे० अनु० ५१५)।

(९) नल द्वारा वर-प्राप्ति (दे० अनु० ५७५) तथा हनुमान से उसका संघर्ष (दे० अनु० ५७६)।

(१०) सेतु-निर्माण में गिलहरी की सहायता (दे० अनु० ५७७)।

(११) रावण के छत्र-चामरों पर बाण चलाने का वृत्तान्त (दे० अनु० ५८४)।

(१२) सुलोचना के सहगमन की कथा (दे० अनु० ५६४)।

(१३) रावण की नाभि में अमृत की स्थिति (दे० अनु० ५६८)।

(१४) अयोध्या की वापसी यात्रा में शिवप्रतिष्ठा (दे० अनु० ५८०)।

---

१ दे० बालकांड, अध्याय ३२। प्रस्तुत ग्रंथ के समस्त संदर्भ बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् द्वारा प्रकाशित रंगनाथ रामायण के हिन्दी अनुवाद के अनुसार दिए गए हैं।

(१५) सेतु-भंग का वृत्तान्त (दे० अनु० ६०७)।
(१६) हनुमान् का राम के पत्तल में भोजन करना (अनु० ७०७)।

(आ) अन्य रामायण

२५९ तेलुगु रामसाहित्य[1] की सर्वप्रथम रचना तिक्कन्न कृत **निर्वचोत्तर रामायण** (निर्वचन का अर्थ है गद्यविहीन) है। इसकी कथावस्तु वाल्मीकि के उत्तरकाण्ड के अनुसार है और यह १३वीं श० ई० की मानी जाती है। रंगनाथ रामायण में उत्तर-काण्ड की कथावस्तु का अभाव है। अतः काचविभुडु तथा विट्ठलराजु ने द्विपद छन्द में **उत्तररामायण** की रचना करके प्रचलित रामायण की कथा पूरी की थी। इसके अति-रिक्त कंकटि पापराजु (१८वीं श०) ने भी एक **उत्तररामायण** नामक चम्पू की रचना की है।

२६० चौदहवीं शताब्दी का **भास्कर रामायण** सबसे अधिक कलात्मक तथा साहित्यिक माना जाता है। यह **वाल्मीकि रामायण** का संस्कृत-गर्भित तेलुगु में स्वतन्त्र अनुवाद कहा है, किन्तु इसमें रंगनाथ रामायण के कुछ वृत्तान्तों का समावेश किया गया है, उदाहरणार्थ—अहल्या का शिला बन जाना, मंथरा वैर का कारण, जम्बुकुमार की कथा। भास्कर के अतिरिक्त उनके पुत्र, मित्र, शिष्य आदि अनेक व्यक्तियों ने इस रामायण के कुछ अंश लिखे हैं।

२६१ १६वीं श० ई० की निम्नलिखित रचनाएँ उल्लेखनीय हैं—रामभद्र कृत **रामाभ्युदयम** (चम्पू), पिंगलि सूरनार्य कृत **राघवपाण्डवीय** (श्लेषकाव्य) और कंदुकूरि रुद्रकृत **सुग्रीव-विजयमु**। तेलुगु जनसाधारण का सबसे लोकप्रिय रामायण **मोल्ल रामायण** है, जिसकी रचना लगभग १६०० ई० में एक मोल्ल नामक कुम्हारिन कुमारी द्वारा हुई थी। यह बहुत संक्षिप्त है और भक्तिभाव से ओत-प्रोत है किन्तु कथानक वाल्मीकि रामायण के अनुसार है।

२६२ सत्रहवीं श० ई० में कट्ट वरदराजु ने एक विस्तृत **द्विपद रामायण** की रचना की है, सम्पादक का कहना है कि कट्ट वरदराजु प्रायः वाल्मीकीय कथा ही प्रस्तुत करते हैं (दे० श्री रामायणमु ऑव कट्ट वरदराजु, मद्रास यूनिवर्सिटी, १९५०, भूमिका)। एक ही परिवर्तन का उदाहरण दिया जाता है—**पाषाणभूता** अहल्या का उद्धार। इस शताब्दी का **रघुनाथ रामायण** पूरा उपलब्ध नहीं है।

२६३ अठारहवीं शताब्दी की रचनाएँ वाल्मीकि रामायण के आधार पर लिखी गयी हैं—चम्पू शैली में रचित **गोपीनाथ रामायण**, द्विपद छन्द का **एकोजी रामायण**

---

१ दे० डॉ० चावलि सूर्यनारायण मूर्ति हिन्दी और तेलुगु के मध्यकालीन राम-साहित्यों का तुलनात्मक अध्ययन (१९६६)।

तथा ठेठ तेलुगु का **अच्च तेलुगु रामायण**। अंतिम रचना का लेखक कूचिमच तिम्म कवि है।

मलयालम रामायण

२६४ यद्यपि मलयालम साहित्य की प्राचीनतम रचना रामचरित से सम्बन्ध रखती है, किन्तु मलयाली कवियो ने रामकथा के वर्णन मे किसी मौलिकता का प्रदर्शन नही किया है। १७ वी शताब्दी तक निम्नलिखित राम-सम्बन्धी रचनाओ का उल्लेख मिलता है।

रामचरितम दक्षिण तिरुवाकुर की एक सुसंस्कृत उपभाषा मे लिखने वाले राम नामक कवि ने चौदहवी शताब्दी मे **रामचरितम्** की रचना की थी, जो मलयालम साहित्य का प्राचीनतम सुरक्षित ग्रन्थ है। इस रचना का वास्तविक नाम है **इरामचरित**। एक दन्तकथा के अनुसार इसके रचयिता तिरुवाकुर के एक राजा थे, लेकिन इसके लिए कोई प्रमाण नही मिलता।[1] अपनी रचना के प्रारम्भ मे कवि ने वाल्मीकि का उल्लेख किया है और अपने काव्य के बहुत से स्थलो पर वाल्मीकि का अक्षरश अनुवाद भी किया है। इसकी कथा वस्तु केवल वाल्मीकि के युद्धकाड से सम्बन्ध रखती है। अय्यि पिल्लैआशान का **रामकथप्पाटटु** भी उसी समय का माना जाता है और वह इरामचरित की भाँति राम-रावण-युद्ध मात्र प्रस्तुत करता है।

२६५ **कण्णश्श रामायण** पन्द्रहवी शताब्दी उत्तरार्द्ध की यह कण्णश्श पणिक्कर कृत रचना वाल्मीकि रामायण का अनुवाद मात्र है, कण्णश्श ने प्रचलित रामायण के अनेक अनावश्यक वृत्तान्त छोड दिये है।

२६६ लगभग १५०० ई० मे पुनम् नपूतिरि ने **रामायण चम्पू** मणिप्रवालम् शैली मे लिखा है। इस शैली मे संस्कृत मिश्रित मलयालम का प्रयोग किया जाता है।

२६७ **अध्यात्म रामायण** इसकी रचना १५७५ और १६५० के बीच मे एषुत्तच्छन द्वारा हुई थी।[2] यह ग्रथ मलयालियो में सबसे अधिक लोकप्रिय रामायण है।

२६८ **केरल वर्मा रामायण** राजा वीर केरल वर्मा की यह रचना भी वाल्मीकि रामायण का स्वतंत्र अनुवाद है।

कन्नड रामायण

२६९ ११वी शताब्दी से कन्नड भाषा मे एक विस्तृत जैन रामकथा-साहित्य की सृष्टि होने लगी थी। इसका उल्लेख ऊपर (अनु० ५९ और ६२) हो चुका है। उस

---

१ दे० आर० नारायण पणिक्कर भाषा साहित्य चरित्रम्, भाग १, १७२।

२ दे० सी०ए० मेनोन उपुतच्छन एन्ड हिज एज। युनिवर्सिटी ऑव मद्रास, १९४०।

जैन राम-साहित्य की अपेक्षा ब्राह्मण कन्नड राम साहित्य अर्वाचीन है। १६ वी शताब्दी मे तोरवे निवासी नरहरि ने अपना रामायण लिखा था, जो **तोरवे रामायण** के नाम से प्रसिद्ध है।[1] इस रचना के अतिरिक्त नरहरि कृत **मैरावण कालग** (मैरावण का युद्ध) का भी उल्लेख मिलता है, जिसकी चार मधियो मे हनुमान द्वारा मैरावण-वध की कथा मिलती है।

तोरवे रामायण के बाद कन्नड भाषा मे रामकथा विषयक एक अत्यन्त समृद्ध साहित्य की सृष्टि हुई किन्तु इसमे रामकथा के विकास की दृष्टि से कोई महत्त्वपूर्ण सामग्री नही मिलती है।[2] सोलहवी शताब्दी का **जैमिनी भारत** कर्नाटक मे अत्यन्त लोकप्रिय है, इसकी रचना सस्कृत जैमिनी भारत के आधार पर लक्ष्मीश नामक कवि द्वारा हुई थी (दे० अनु० १८५)। इसमे सीता वनवास का अत्यन्त करुणापूर्ण चित्र अकित किया गया है।

तोरवे रामायण के छ काण्डो मे बालकाण्ड से लेकर युद्धकाण्ड तक की वाल्मीकीय कथा का वर्णन किया गया है। वाल्मीकि रामायण के तीन पाठो मे से यह रचना **दाक्षिणात्य पाठ** से अधिक साम्य रखती है, यह निम्नलिखित प्रसगो से स्पष्ट है लक्ष्मण सीता के नूपुर मात्र पहचान लेते है (अनु० ४६२), लकादेवी की पराजय (अनु० ५३५), रावण की दो सभाएँ (५६८, ३), रावण-सुग्रीव-युद्ध (अनु० ५८४)। वाल्मीकि रामायण के अन्य पाठो की भी कुछ सामग्री तोरवे रामायण मे मिलती है किन्तु इसका आधार आनन्द रामायण प्रतीत होता है, यह सामग्री इस प्रकार है—कालनेमि का वृत्तान्त (अनु० ५८७), हिमालय-यात्रा के समय हनुमान-भरत के परस्पर दर्शन (अनु० ५८८), मन्दोदरी-केशग्रहण (अनु० ३६७)। उदीच्य पाठो का एक अन्य प्रसग अर्थात् शरणागति के पूर्व विभीषण का अपनी माता से भेट करना आनन्द रामायण मे नही मिलता किन्तु यह रगनाथ तथा भावार्थ रामायण मे भी विद्यमान है जिससे स्पष्ट है कि यह दक्षिण भारत मे पर्याप्त मात्रा मे प्रचलित था।

---

१ आर० नरसिहाचार्य के अनुसार नरहरि १५०० ई० के लगभग जीवित थे (दे० कर्णाटक कवि चरिते, भाग २, पृ० १४२)। इ० पी० रैस के अनुसार तोरवे रामायण की रचना १५६० के लगभग हुई थी। नरहरि अपने को कुमार वाल्मीकि कहते है। एक अन्य मत के अनुसार कवि का वास्तविक नाम अज्ञात है, वे अपने गाँव के देवता नरसिंह के अनन्य भक्त थे, इसीसे उनका नाम नरहरि माना गया है।

२ दे० श्री हिरण्मय कन्नड साहित्य मे रामकथा परम्परा, मैथिलीशरण गुप्त अभिनन्दन ग्रथ, पृ० ७५१।

अन्य मध्यकालीन रचनाओं की भाँति समस्त तोरवे रामायण भक्ति भाव में ओत-प्रोत है, उदाहरणार्थ अतिकाय तुलसी-माला आदि पहने वैष्णव-भक्त के रूप में रणक्षेत्र में आ पहुँचते हैं तथा लक्ष्मण द्वारा मारे जाने पर मुक्ति प्राप्त कर लेते हैं (दे० ६, सन्धि ६४)।

तोरवे रामायण के अनेक प्रसंग केवल **आनन्द रामायण**[1] में मिलते हैं, उदाहरणार्थ रावण का शिव-धनुष के नीचे दब जाना (दे० अनु० ३६७), इन्द्र की माला के कारण वालि की अजेयता (अनु० ५२२), लंका-दहन के वर्णन में ब्रह्मा का हनुमान से अनुरोध करना, हनुमान का तभी अपनी पूँछ बढ़ाना बन्द करना जब स्त्रियों के कपड़े माँगे जा रहे हैं, रावण की दाढ़ी जल जाना (दे० अनु० ५५२)। इसके अतिरिक्त निम्नलिखित सामग्री आनन्द रामायण तथा तोरवे रामायण दोनों में मिलती है यद्यपि यह अन्यत्र भी पाई जाती है पाषाणभूता अहल्या तथा सहस्र-भगवान इन्द्र को दिया हुआ शाप (अनु० ३४६), सीता के स्वयंवर में पराजित राजाओं के साथ राम का युद्ध (अनु० ४०२), चित्रकूट में कैकेयी का पश्चात्ताप (अनु० ४५३), लक्ष्मण का संयम (अनु० ४६१), वालि की मुक्ति-प्राप्ति (अनु० ५२०), सीता-रावण-संवाद के समय मन्दोदरी की उपस्थिति (अनु० ५४३), अंगद का अपनी पूँछ को कुण्डल बनाकर उस पर रावण-सभा में बैठ जाना तथा बाद में रावण पर प्रहार करना (अनु० ५८५), सेतु-भंग का उल्लेख (अनु० ६०७), लक्ष्मण द्वारा शूर्पणखा के पुत्र का वध (अनु० ६३२), हनुमान का राम का उच्छिष्ट खाना (अनु० ७०७)।

इससे स्पष्ट है कि नरहरि आनन्द रामायण के वृत्तान्त से परिचित थे। फिर भी तोरवे रामायण में बहुत ऐसी सामग्री भी मिलती है जो न तो वाल्मीकि और न आनन्द रामायण में विद्यमान है, उदाहरणार्थ रघुवंश के अनुसार दशरथ की वंशावली (अनु० ३३६), राम-परशुराम के संघर्ष का रूप (अनु० ३५१), जटायु के मर्म-स्थान का वृत्तान्त (अनु० ४७०), मायासीता की कथा (अनु० ५०४), वालि-सुग्रीव-अंजना की जन्म-कथा (अनु० ५१४), समुद्रलंघन के पश्चात् तृणविन्दु से हनुमान की भेंट (अनु० ५३१), सेतु पर मछलियों का आक्रमण (अनु० ५७८), रावण-सभा में पहुँचकर अंगद का रावण को पहचानने में असमर्थ होना (अनु० ५८५), माया-सीता-वध की सच्चाई की परीक्षा के लिए हनुमान का लंका में प्रवेश करना (अनु० ५६१)। यह सामग्री किसी-न-किसी रूप में अन्य रामकथाओं में भी पाई जाती है किन्तु तोरवे रामायण की निम्नलिखित सामग्री अन्यत्र नहीं मिली है।

---

१ ये प्रसंग प्रायः आनन्द रामायण पर निर्भर मराठी भावार्थ रामायण में भी पाये जाते हैं, दे० अनु० ३०४।

अधमुनि पुत्र का ताण्डव नाम (अनु० ४३३), अत्रि द्वारा जयत को शाप (अनु० ४३६), विष्णु-माया के अवतार के रूप मे मथरा का उल्लेख (अनु० ४५४), जाबालि का वन मे राम से मिलने आना (अनु० ४७६), अभिज्ञान स्वरूप चित्रकूट मे राम-सीता की जलक्रीडा का उल्लेख (अनु० ५२५), हनुमान का लका जाकर अगद को राम के पास ले आना (अनु० ५८५), कुभकर्ण के जीवरत्न का उल्लेख (अनु० ५८६, ८), ओषधि पर्वत का अपने आप अन्तर्द्धान हो जाना (अनु० ५८७), विभीषण के स्पर्शमात्र से माया-सीता के शव का ओझल हो जाना (अनु० ५६१)।

आदिवासी कथाएँ

२७० आदिवासियो का साहित्य सुरक्षित न रह सका, केवल उनकी कुछ दन्त-कथाएँ मिलती है। उन कथाओ मे रामकथा का मूल रूप ढूढना व्यर्थ है। ऊपर (दे० अनु० ११०) यह दिखलाने का प्रयास किया गया है कि रामायण के वानर, ऋक्ष, राक्षस आदि वास्तव मे आदिवासी ही है। यहाँ पर उदाहरणार्थ कुछ आदिवासी कथाओ का उल्लेख किया जाता है, जिनका विवरण आवश्यकतानुसार चतुर्थ भाग मे दिया जायेगा। कई जातियो मे शबरी-विषयक दन्तकथाये प्रचलित हैं (दे० आगे अनु० ४८०) बोडो जाति मे सीता-त्याग के विषय मे धोबी वृत्तान्त का विकृत रूप पाया जाता है (दे० अनु० ७२० पाद-टिप्पणी)। उराँव जाति मे लका-दहन की कथा का एक नवीन रूप प्रचलित है (दे० अनु० ५५२)।

२७१ बिहार और बगाल की सथाल नामक आदिवासी जाति मे प्रचलित रामकथा[1] की विशेषताएँ इस प्रकार है

(१) गुरु की आज्ञानुसार आम खाकर दशरथ की पत्नियो का गर्भवती हो जाना (दे० अनु० ३५४)।

(२) कैकेयी के गर्भ से भरत और शत्रुघ्न का जन्म।

(३) रावणवध के बाद लौटकर राम ने सथालो के यहाँ रहकर एक शिव-मन्दिर बनाया तथा उसमे वे नित्यप्रति सीता के साथ पूजा करने आते थे।

इसके अतिरिक्त[2] सीता की खोज करते समय राम गिलहरी और बेर को वरदान तथा बगुले को दण्ड देते है (दे० अनु० ४७४), लक्ष्मण हनुमान से भेट होने

---

१ दे० गोपाल लाल वर्मा, सथाली लोक-गीतो मे श्रीराम, सारग (दिल्ली, ७ फरवरी १६६०, पृ० ४३-४५)।

२ आदित्य मित्र 'सताली', सीता की खोज- (राँची आकाशवाणी द्वारा प्रसारित ५-११-५७)।

पर उनमे द्वन्द्व युद्ध करते है (दे० अनु० ५१२), हनुमान राम-बाण के सहारे समुद्र पार करते है (दे० अनु० ५३१) तथा लका-दहन के बाद अपना ही मुँह जलाकर काला कर लेते है (दे० अनु० ५५२)।

२७२ शरच्चन्द्र राय कृत 'दि बिर्होर्स' नामक ग्रन्थ मे इस जाति मे प्रचलित एक रामकथा उद्धृत है (पृ० ४०५-४२७), जिसमे भगवान् के अवतार राम के जन्म से लेकर रावण तथा कुम्भकर्ण के वध तक का वृत्तान्त सक्षेप मे वर्णित है। इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ उल्लेखनीय है

(१) दशरथ की सात पत्नियो का उल्लेख।

(२) दशरथ का ब्राह्मण (अर्थात् विश्वामित्र) के साथ पहले भरत-शत्रुघ्न को भेज देना तथा ब्राह्मण को इस धोखे का पता लगना। यह वृत्तान्त कृत्तिवास मे भी मिलता है। (दे० आगे अनु० ३८८)।

(३) सीता का आँगन को लीपने के लिए शिव का धनुष उठाना।

(४) लक्ष्मण के १२ वर्ष तक के उपवास का कुछ परिवर्तित रूप। इसके अनुसार लक्ष्मण केवल मिट्टी खाते थे। (दे० आगे अनु० ४६१)।

(५) सीता-हरण के पहले राम की सहायता करने जाते समय लक्ष्मण का सीता को राई के दाने देना, उनके द्वारा सीता का रावण को भस्मीभूत करना (दे० आगे अनु० ४६८)।

(६) सीता की खोज मे राम का बेर वृक्ष तथा गिलहरी को वर प्रदान करना और बगुले को दड देना। (दे० आगे अनु० ४७४)।

(७) हनुमान का शुक के रूप मे लका मे प्रवेश करना।

(८) राम-लक्ष्मण का हनुमान के पुच्छ पर समुद्र पार करना (दे० आगे अनु० ५७३)।

(९) लक्ष्मण द्वारा रावण-वध।

(१०) रावण-वध के पश्चात् लक्ष्मण द्वारा कुम्भकर्ण के वध का उल्लेख।

२७३ **मुण्डा** जाति मे एक दन्तकथा प्रचलित है जिसमे बिर्होर जाति की उपर्युक्त राम-कथा के अनुसार सीता की खोज का कुछ वर्णन किया गया है। बगुला राम की सहायता करना अस्वीकार करता है और राम दण्डस्वरूप उसकी गर्दन खीचते है। बेर वृक्ष राम को सीता की साडी के कुछ टुकडे देता है और अमरत्व का वरदान प्राप्त करता है। गिलहरी सीता का मार्ग बताती है और राम उसकी पीठ पर तीन रेखाएँ खीचते है[१]।

---

१ दे० एम्० सी० मित्र जर्नल ऑव डिपाटमेट ऑव लेटर्स, कलकत्ता, भाग ४, पृ० ३०३-३०४।

२७४ डॉ० डब्ल्यू रूबेन ने छोटा नागपुर की **असुर** नामक जाति मे प्रचलित दन्तकथाओ का सकलन किया है[1]। उनकी रचना से पता चलता है कि अन्य आदिवासी जातियो की भाति असुरो के यहाँ भी सीता की खोज करते समय राम के बगुले को दण्ड देने की कथा प्रचलित है (दे० आगे अनु० ४७४)। इसके अतिरिक्त उनके यहाँ हनुमान के अपने ही बाण पर समुद्र पार करने की कथा (दे० अनु० ५३१) तथा आदिवासियो के मनोविज्ञान के अनुसार लकादहन का एक परिवर्तित रूप भी मिलता है (दे० अनु० ५५२, १४)।

२७५ नर्मदा घाटी की **परधान जाति**[2] मे एक दन्तकथा प्रचलित है जिसमे सीता लक्ष्मण के सयम की परीक्षा लेती है और लक्ष्मण खरे ही उतरते है (दे० अनु० ४६२)।

२७६ मध्यप्रदेश की **बैगा-भूमिया** नामक जाति मे प्रचलित एक दन्तकथा मे सीता कृषि की अधिष्ठात्री देवी से सबध रखती है (दे० ऊपर अनु० ११-१६)। इसके अनुसार माता जानकी के हाथ मे छ उगलियाँ भी थी, उन्होने छठी उँगली काट कर भूमि मे रोप दी थी। कुछ समय के बाद उससे एक बाँस पैदा हुआ जिसके काडो की गाँठो के बीच सब प्रकार के बीज छिपे हुए थे। उस जाति के यहाँ हनुमान की एक जन्मकथा भी मिलती है जिसमे हनुमान शिव के वीर्य से उत्पन्न माने जाते है (अनु० ६७३)[3]।

२७७ टी० बी० नायक ने आदिवासियो मे प्रचलित रामायण-विषयक दन्तकथाओ का सर्वेक्षण किया है।[4] उनके निबध मे एक **भिलोडी रामायण** की चर्चा है जिसकी रचना लगभग बीस साल पहले एक समाज-सेवक द्वारा हुई थी। इस रामायण में कथानक की दृष्टि से कोई विशेष परिवर्तन नहीं किया गया है। टी० बी० नायक मध्यप्रदेश की **आगारिया** जाति मे प्रचलित सहस्र-स्कध-रावण के वध की कथा का भी उल्लेख करते हैं (दे० आगे अनु० ६३६)।

२७८ भारत के उत्तर-पूर्व क्षेत्रो मे रामकथा का निम्नलिखित विकृत रूप प्रचलित है किसी राजा की पुत्री उसके हाथ की सूजन से पैदा हुई थी। एक आठ

---

१ दे० आइसनश्मीडे एण्ड डेमोनेन इन इण्डियन (लाइदन, १९३९ पृ० ७८)।

२ दे० शामराव हिवाले दि परधान्स ऑव दि अपर नर्मदा वैली।

३ दे० एस्० फुक्स दि गोड एण्ड भूमिया ऑव ईस्टर्न मडला, बम्बई (१९६०), पृ० ४२१-४२२।

४ दे० बुलेटिन ऑव दि ट्राइबल रिसर्च इस्टीट्यूट (छिन्दवारा), भाग १, अक २। रामकथा एमाँग दि प्रिमिटिफ ट्राइब्स।

सिर वाले राक्षस ने उस पुत्री का हरण किया था, जिस पर उस राक्षस को मार कर राजा अपनी पुत्री को घर ले आया। बाद मे एक अन्य राक्षस उसे समुद्र पार ले गया। राजा उसकी खोज मे निकला और असफल होकर उसने वानरो के राजा की सहायता मॉगी। वानर-राजा राजकुमारी का पता लगाने के लिए उस राक्षस के गॉव मे जा पहुँचा। राक्षस ने उसे पकड कर उसकी पूॅछ जलाने का प्रयत्न किया। इस पर वानर-राजा ने गॉव मे इधर-उधर दौड कर सब घरो मे आग लगा दी और लोगो की घबराहट से लाभ उठाकर वह राजकुमारी के साथ भाग निकला और उसे उसके पिता के घर ले गया। राजा ने वानर-राजा को एक सुनहला महल भेट मे दिया। उस महल मे प्रवेश करते ही उस वानर के बाल गिर गये, उसके चमडे का रग बदलकर गोरा हो गया तथा वह प्रथम अग्रेज़ बन गया।[1]

ख—आर्य भाषाओ के साहित्य मे रामकथा

२७६ आधुनिक आय-भाषाओ के राम-साहित्य की रचना १४-१५ वी शताब्दी से प्रारभ होती है लेकिन अधिकाश इसके बाद ही हुई है, जब राम-भक्ति के आविर्भाव और प्रचार के साथ-साथ रामकथा का विकास भी अन्तिम परिणति पर पहुॅच चुका था। अत रामकथा के दृष्टिकोण से इस साहित्य का महत्व गौण हे। फिर भी, भिन्न भिन्न वृत्तान्तो की व्यापकता दिखलाने के उद्देश्य से इसका किंचित् निरूपण अपेक्षित है। पहले एक सिहली वृत्तान्त और इसके बाद काश्मीरी रामायण का परिचय दिया जाना है, क्योकि सम्भव है कि दोनो का आधार सिंहल द्वीप तथा काश्मीर मे प्रचलित प्राचीन रामकथा हो। प्राचीनतम असमिया रामायण १४वी शताब्दी का माना जाता है, अत पूर्वी राम-साहित्य का उल्लेख हिन्दी-राम-साहित्य के पहले किया जाता है। अन्त मे अन्य आर्य भाषाओ के साहित्य का भी महत्वानुसार वर्णन किया गया है। मैथिली तथा पजाबी राम-साहित्य का उल्लेख हिन्दी राम-साहित्य के सिंहावलोकन मे किया गया है। सिंधी मे केवल आधुनिक काल मे ही राम-कथा-विषयक सामग्री मिलती है अत इसका वर्णन छोड दिया गया है। नेपाली-राम-साहित्य की सबसे महत्त्वपूर्ण रचना **भानुभट्टकृत रामायण** है, यह अध्यात्म रामायण का पद्यानुवाद है, जो सन् १८५२ ई० मे पूरा हुआ था। इसके पूर्व ही रघुनाथ उपाध्याय ने **रामायण सुन्दरकाण्ड** लिखा था। अधिकाश समालोचक केवल **वाल्मीकि** रामायण तथा अपने प्रान्तीय साहित्य की तुलना करके सर्वत्र मौलिकता देखते हैं। इस तरह श्री दिनेशचन्द्र सेन लक्ष्मण के १४

---

१ दे० वेरियर एलविन, मिथ्स ऑव दि नॉर्थ ईस्टर्न फ्रॉटियर आव इण्डिय पृ० १३१-१३२।

वर्ष तक के उपवास को एक मौलिक बगाली वृत्तान्त मानते है[1] । वास्तव मे वाल्मीकि से भिन्न ये अधिकाश कथाएँ पद्रहवी शताब्दी से पूर्व बहुत व्यापक रूप से प्रचलित थी और अनेक प्रान्तो तथा विदेश मे भी किंचित् परिवर्तन सहित पाई जाती है ।

सिहली रामकथा

२८० सिंहल द्वीप मे एक कोहोम्बा 'यक्कम' नामक धार्मिक विधि है, जिसका सूत्रपात ५वी शताब्दी ई० पू० का माना जाता है, लेकिन जिसका साहित्य मे पहला वर्णन १५वी शताब्दी ई० का है[2] । इस विधि के समय काव्यात्मक कथाओ का पाठ होता है, जिनमे से सिंहल के प्रथम राजा विजय तथा नाग-राजकुमारी कुवेणी की और सीतात्याग की कथा, ये दो प्रधान है ।

सिंहली रामकथा मे राम अकेले ही वनवास करते है , उनकी अनुपस्थिति मे सीता का हरण होता है । वालि हनुमान का स्थान लेता है , वह लका का दहन करके सीता को राम के पास ले जाता है । रावण-चित्र के कारण सीतात्याग के उल्लेख के बाद (दे० आगे अनु० ७२४) सीता के पुत्र के जन्म का तथा वाल्मीकि द्वारा दो बालको की सृष्टि का वर्णन किया गया है । अन्त मे इन तीनो का राम सेना से युद्ध करने का भी उल्लेख मिलता है (दे० आगे अनु० ७४५ और ७५१) ।

काश्मीरी रामायण

२८१ **काश्मीरी रामायण** अर्थात् **रामावतारचरित** की रचना १८वी शताब्दी के अन्त मे दिवाकर प्रकाश भट्ट द्वारा हुई थी । यद्यपि इसका आधार कई शताब्दियो से चली आई हुई परम्परा हो सकती है, किन्तु आधुनिक काल मे लिपिबद्ध होने के कारण इसमे रामकथा के विकास के अन्तिम सोपान के लक्षण स्पष्ट दिखलाई देते है। यह **काश्मीरी रामायण** की निम्नलिखित विशेषताओ से प्रतीत होता है

(१) समस्त काव्य का शिव-पार्वती-सवाद के रूप मे प्रस्तुत किया जाना (दे० न० २)[3] ।

(२) अवतारवाद की व्यापकता राम पूर्णावतार माने जाते है तथा लक्ष्मण,

---

१ दे० दिनेशचन्द्र सेन वही, पृ० १७६, जहाँ इस उपवास के विषय मे लिखा है—ए प्युर्ली बगाली टेल ।

२ दे० ज० रॉ० ए० सो० (१६४६, पृ० १४-२२ , १८५-६१) तथा एलफाबेटिकल गाइड टु सिंगालीज फोक्लॉर (इ० ए० भाग ४५, सप्लेमेंट) ।

३ दे० दि काश्मीरी रामायण, जी० ए० ग्रियर्सन का सस्करण, कलकत्ता १६३० ।

भरत और शत्रुघ्न क्रमश शेष, शख और सुदर्शन के अवतार (दे० न० १३)।

(३) अयोध्याकाड के वृत्तान्त के प्रारम्भ मे नारद का राम के पास आकर राम को उनके अवतार होने का स्मरण दिलाना (दे० न० ८)।

यद्यपि **काश्मीरी रामायण** मे दशरथ-यज्ञ से लेकर सीता के भूमि-प्रवेश तथा राम के स्वर्गारोहण तक की समस्त कथा बहुत कुछ **वाल्मीकि रामायण** के अनुसार है, किन्तु इसमे बहुत से परिवर्तन तथा परिवर्द्धन भी किए गए है। कथानक के दृष्टिकोण से इनमे से चार वृत्तान्त अधिक महत्वपूर्ण है

(१) मदोदरी के गर्भ से सीता का जन्म (न० २४)।
(२) रावण के चित्र के कारण सीता का त्याग (न० ६३)।
(३) वाल्मीकि द्वारा कुश की सृष्टि (न० ६६)।
(४) कुश-लव का राम-सेना से युद्ध (न० ७१)।

ये वृत्तान्त अन्यत्र भी पाये जाते है। इनके विकास का विश्लेषण निबन्ध के चतुर्थ भाग मे किया जायेगा (दे० आगे १४वाँ और २०वा अध्याय)। इनके अतिरिक्त **काश्मीरी रामायण** मे कुछ और विशेषताएँ मिलती है, जिनका निरूपण महत्वानुसार चतुर्थ भाग मे किया जायगा। इनका यहाँ उल्लेख मात्र पर्याप्त है

(१) राम का दशरथ के लिए पिंडदान करना (न० १८)।
(२) वनवास के समय अहल्या से भेट (न० १६)।
(३) सीता के कहने पर रावण का जटायु को पत्थर खिलाना (न० २४)।
(४) नारद का लका मे सीता की खोज करते हुए हनुमान को रावण-चरित सुनाना (न० २६)।
(५) नल की कथा जिसमे उसके फेके हुए पत्थरो के पानी पर तैरने का कारण बताया गया है (न० ३६)।
(६) युद्ध के समय निराश रावण की कैलास-यात्रा (न० ४७)।

असमिया साहित्य मे रामकथा

२८२ भारत की प्रादेशिक आय भाषाओ का प्राचीनतम राम-साहित्य असमिया, बगाली तथा उडिया मे सुरक्षित है। तीनो भाषाओ मे एक-एक रामायण सर्वाधिक लोकप्रियता प्राप्त कर सका, असमिया मे माधव कदली का, बगाली मे कृत्तिवास का तथा उडिया मे बलरामदास का रामायण। इनमे से १४वी शताब्दी ई० के अन्त का माधव कदली कृत रामायण सबसे प्राचीन है, अत यहाँ पर पहले असमिया राम-

साहित्य का सिंहावलोकन प्रस्तुत किया गया है[1] ।

असमिया, बगाली तथा उडिया राम-साहित्य की एक सामान्य विशेषता यह है कि वह प्राय वाल्मीकि के गौडीय पाठ पर आधारित है, इसके अतिरिक्त इस साहित्य मे कुछ ऐसे वृत्तान्त भी विद्यमान है जो प्रचलित वाल्मीकि रामायण मे नही मिलते और अन्यत्र भी दुर्लभ है । कुछ ही उदाहरण यहाँ पर्याप्त होंगे । दशरथ के प्रति शनि के वरदान की कथा कृत्तिवास, बलरामदास तथा माधवदेव के बालकाण्ड मे समान रूप से मिलती है (दे० अनु० ४७२) । सारलादास का महाभारत, कृत्तिवास रामायण तथा माधवदेव का बालकाण्ड तीनो दशरथ की ७०० से अधिक पत्नियो का उल्लेख करते हैं (दे० अनु० ३४०), सुपार्श्व द्वारा सीता का हरण करते हुए रावण को चुनौती देने का वृत्तान्त माधद कदली तथा कृत्तिवास दोनो मे पाया जाता है (दे० अनु० ५००), माधवदेव का बालकाण्ड विशेष रूप से कृत्तिवास रामायण से प्रभावित हुआ । सारला-दास तथा बलरामदास की रामकथा कृत्तिवास के रामायण से साम्य रखती है (दे० अनु० २९२-२९३) ।

२८३ असमिया राम साहित्य का मुख्य ग्रथ प्रचलित **माधवकदली-रामायण** है । वस्तुत वह तीन लब्धप्रतिष्ठ कवियो द्वारा लिखा गया है । पॉच ही काण्ड (अयोध्या से युद्ध तक) माधवकदलीकृत माने जाते है, शकरदेव ने इसके उत्तरकाण्ड की रचना की है तथा शकरदेव के शिष्य माधवदेव ने आदिकाण्ड लिखा है । माधवकदलीकृत पॉच काण्डो मे वाल्मीकीय रामायण के गौडीय पाठ को प्रामाणिक माना गया है, यह निम्नलिखित प्रसगो से स्पष्ट है—राम की कुश-पादुकाओ का उल्लेख (दे० अनु० ४३६), सीता की जन्म-कथा मे मेनका का वृत्तान्त (दे० अनु० ४०९), राम के प्रति तारा का शाप (दे० अनु० ७२६), विभीषण पर रावण का पाद-प्रहार (दे० अनु० ५९८), शरणागति के पूर्व विभीषण द्वारा अपनी माता से तथा अपने भाई कुबेर से भेट (दे० अनु० ५९८), कालनेमि का वृत्तान्त (दे० अनु० ५८७), समुद्रलघन के वर्णन मे सुरसा का प्रथम स्थान मे उल्लेख (दे० अनु० ५३१), सम्पाति के पास सुपार्श्व का आगमन (दे० अनु० ५२७) । माधवकदली की रचना मे वर्णित थोडे ही वृत्तान्त वाल्मीकि रामायण मे नही मिलते है । जैसे

(१) सीताहरण के समय सुपार्श्व का रावण को रोकना (दे० अनु० ५००) ।

---

१ ऐस्पेक्ट्स ऑव ओल्ड असामीस लिटरेचर (गौहाटी युनिवर्सिटी, १९५२), उ० च० लेखारु, असमिया रामायण साहित्य (१९४८) । विष्णुकान्त शास्त्री, असमिया मे राम-साहित्य (मैथिलीशरण गुप्त अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ० ८३१-३९) ।

(२) हनुमान का लका की वाटिका का विध्वस करने के पूर्व वृद्ध ब्राह्मण के रूप मे रावण से भेंट करना (दे० अनु० ५५२)।

(३) नल को दिये हुए वरदान का यह स्पष्टीकरण कि उसके स्पर्श से पत्थर नही डूबेंगे (दे० अनु० ५७५)।

शकरदेव ने अपने **उत्तरकाण्ड** मे सीता-वनवास से लेकर राम के स्वर्गारोहण तक की वाल्मीकीय कथा किसी उल्लेखनीय परिवर्तन के बिना प्रस्तुत की है। सर्ग १४ मे अगस्त्य रावण-चरित का किंचित् वर्णन करते है किन्तु वाल्मीकीय उत्तरकाण्ड के प्रारभ का विस्तृत रावण-चरित छोड दिया गया है। शकरदेव ने इसका स्पष्ट उल्लेख किया है कि भक्ति-मार्ग का प्रचार मेरा उद्देश्य है।

माधवदेवकृत **असमिया बालकाण्ड** की सबसे बडी विशेषता यह है कि वह कृत्तिवासीय रामायण पर आधारित है। निम्नलिखित वृत्तान्त कृत्तिवास तथा असमिया बालकाण्ड दोनो मे विद्यमान है सूर्यवश का वर्णन, कैकेयी का स्वयवर, सुमित्रा का सिंहल के राजा की पुत्री के रूप मे उल्लेख, पायस के विभाजन के समय सुमित्रा की प्रतिज्ञा, गुह और बालक राम की मैत्री, सीता के पूर्वानुराग की कथा। रामादि के जन्म के पूर्व रानियो के स्वप्न की कल्पना सभवत कालिदास के रघुवश पर निर्भर है (दे० अनु० ३७५)। सीताजन्म (दे० अनु० ४१०) तथा अहल्या (अनु० ३४६) के विषय मे माधवदेव का असमिया बालकाण्ड मौलिक प्रतीत होता है।

२८४ यद्यपि असमिया साहित्य मे राम की अपेक्षा कृष्ण को अधिक महत्त्व दिया गया है, फिर भी आसाम के कवि राम-कथा की उपेक्षा नही कर सके, यह असमिया राम-साहित्य की निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट है

१४वीं शताब्दी ई०

(१) हरिहर विप्रकृत **लवकुशर युद्ध** (सीता-त्याग से उनके पाताल-प्रवेश तक की कथा)। इस रचना की एक विशेषता यह है कि वास्तविक त्याग के पूर्व ही राम ने स्वप्न देखा था जिसमे उन्होंने लोकापवाद के कारण सीता को वनवास दिया था। (दे० आगे अनु० ७१७)।

(२) माधवकदलीकृत **रामायण**।

१६वीं शताब्दी

(१) दुर्गावरकृत **गीतिरामायण**। इसमे माधवकदली के आधार पर रामकथा के चुने हुये प्रसगो को, विशेषकर अरण्यकाण्ड की घटनाओ को, भावपूर्ण गीतो मे प्रस्तुत किया गया है। कथानक की दृष्टि से सीता द्वारा पिंडदान का प्रसग (दे० अनु० ४३५) तथा चित्रकूट मे एक मायामय अयोध्या की सृष्टि (दे० अनु० ४४०) उल्लेखनीय है।

(२) अनन्तकदली कृत **जीवस्तुति-रामायण, महीरावण-वध, पातालखण्ड रामायण, सीतार पाताल प्रवेश नाटक** । अनन्तकदली ने स्वय लिखा है—"माधवकदली ने राम की सामान्य कथा लिखकर रामभक्ति को कम महत्त्व दिया था , मै इसीलिये राम-कथा लिखता हूँ कि पाठक राम को परब्रह्म के रूप मे स्वीकार करे ।"

(३) शकरदेवकृत **उत्तर काण्ड** और **रामविजय नाटक** (अथवा **सीता-स्वयवर**) रामविजय मे विश्वामित्र के आगमन से प्रारभ होकर राम-विवाह के बाद अयोध्या मे प्रत्यावर्तन तक की कथा वर्णित है । सीता-स्वयवर के अवसर पर राजाओ का राम पर आक्रमण (अनु० ४०२) तथा अयोध्या के मार्ग मे राम-परशुराम का द्वन्द्व-युद्ध परम्परागत कथानक के मुख्य परिवर्तन हैं । (अनु० ३५१) ।

(४) माधवदेव कृत **बाल काण्ड** तथा **रामभावना** नाटक

(५) अनन्त ठाकुर आता का **श्रीरामकीर्त्तन** ।

१७वीं तथा १९वीं शताब्दी

(१) धनजयकृत **गणकचरित** (हनुमान के लका प्रवेश विषयक खण्डकाव्य, दे० अनु० ५४२) ।

(२) गगारामदास कृत **सीतावनवास** ।

(३) भवदेव विप्र का **श्रीरामचन्द्र अश्वमेध** ।

(४) श्रीचन्द्र भारती कृत **महीरावणवध** ।

(५) रघुनाथ महत कृत **कथारामायण** (कथा-वाचक की गद्यशैली मे) तथा **अद्भुत रामायण** (इसमे हनुमान के पराक्रम के अतिरिक्त राम-कथा के निर्वहण का एक नया रूप प्रस्तुत किया गया है (दे० अनु० ७५७) ।

बगाली साहित्य मे रामकथा[1]

(अ) कृत्तिवास रामायण

२८५ कृत्तिवास ओझा ने बगाली साहित्य के प्रथम एव सर्वाधिक लोकप्रिय **रामायण** अथवा **श्रीरामपाचाली**[2] की रचना १५वी श० ई० के अन्त मे पयार छन्द

---

१ दे० सुकुमार सेन, बागाला साहित्येर इतिहास, भाग १ (सन् १९४८), दिनेश चन्द्र सेन, दि बगाली रामायण्स (१९२०) और हिस्ट्री ऑव बगाली लैंग्विज ऐंड लिटरेचर (१९२१) ।

२ पाचाली का अर्थ यहाँ पर आख्यान-काव्य है ।

मे की थी। इसका पाठ अनिश्चित है, इसमे न केवल बहुत सी प्रक्षिप्त सामग्री मिलती है बल्कि कृत्तिवास की मूल भाषा को भी कथाकार और लिपिकार बदलते रहे है। क्षेपको का पता लगाना दु साध्य है क्योकि इस रचना की कोई भी हस्तलिपि २०० वर्ष से अधिक पुरानी नही है। राक्षसो की रामभक्ति से सम्बन्ध रखने वाले अश सर्वसहमति से प्रक्षिप्त माने जाते है। ये अश सभवत १८वी श० ई० मे कविचन्द्र द्वारा लिखे गये है। कृत्तिवास का प्रथम सस्करण श्रीरामपुर मिशन प्रेस द्वारा सन् १८०३ ई० मे प्रकाशित किया गया था, इसमे अद्‌भुताचार्य के रामायण के बहुत से अश जोड दिए गए थे। बाद मे वगीय साहित्य-परिषद् ने अयोध्याकाण्ड (सन् १६०० ई०) तथा उत्तरकाण्ड (सन् १६०३ ई०) का सम्पादन किया था तथा सन् १६३६ ई० मे नलिनीकान्त भट्‌टशाली ने आदिकाण्ड सम्पादित किया था। सम्पूर्ण कृत्तिवास रामायण के प्रामाणिक सस्करण की अपेक्षा है।[1]

प्रचलित कृत्तिवास रामायण के कथानक की मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार है

(१) कृत्तिवास रामायण वाल्मीकीय रामायण के **गौडीय पाठ** पर निर्भर है। निम्नलिखित सामग्री दाक्षिणात्य पाठ मे नही मिलती किन्तु वह गौडीय पाठ तथा कृत्तिवास रामायण, दोनो मे समान रूप से पाई जाती है— दशरथ की पुत्री शान्ता का उल्लेख (दे० आगे अनु० ३४३), सीता की जन्मकथा मे एक अप्सरा का उल्लेख (दे० आगे अनु० ४०६), शापमोहिता कैकेयी का दोषनिवारण (दे० अनु० ४५१), राम के प्रति तारा का शाप (दे० अनु० ७२६), केसरी द्वारा धवल-वध तथा सम्पाति के पुत्र सुपार्श्व का प्रस्ताव (दे० अनु० ५१०), सरमा-वाक्य (दे० अनु० ५२६), निकषा-वाक्य (दे० अनु० ५५८), सभा मे रावण द्वारा विभीषण पर पाद-प्रहार (दे० अनु० ५६८), कालनेमि का वृत्तान्त (दे० अनु० ५८७), विभीषण की कैलास-यात्रा (दे० अनु० ५६८), भरत-हनुमान-सवाद (दे० अनु० ५८८), विभीषण-निकषा-सवाद (दे० अनु० ५६८)।

(२) कृत्तिवास का प्रारम्भिक कथानक **पद्म पुराण-पातालखड** के **गौडीय पाठ** से प्रभावित है।[2] कृत्तिवास के बालकाण्ड के पूर्वार्द्ध मे रघुवश के राजाओ

---

१ इसके अभाव मे प्रस्तुत ग्रन्थ के समस्त सन्दर्भ पूर्णचन्द्र दे द्वारा सम्पादित तथा चक्रवर्ती, चटर्जी ऐड क० द्वारा प्रकाशित कृत्तिवास रामायण के चतुर्थ सस्करण (कलकत्ता, सन् १६४६) की ओर निर्देश करते है। इस सस्करण मे प्रत्येक काण्ड अध्यायो मे विभाजित है।

२ दे० ऊपर अनु० १६२, जहाँ इसका उल्लेख हुआ है कि उस गौडीय पाठ तथा कालिदास के रघुवश का गहरा सम्बन्ध है।

का इतिहास प्रस्तुत किया गया है। निम्नलिखित सामग्री बगीय पातालखण्ड तथा कृत्तिवास दोनो मे मिलती है—हरिश्चन्द्र, सौदास, दिलीप, रघु, अज-इन्दुमती की कथा, दशरथ-जटायु की मित्रता (दे० अनु० ४७२), दशरथ द्वारा शनि से वर-प्राप्ति[1] (अनु० ४७२), अन्ध मुनि पुत्र का नाम सिन्धु (अनु० ४३३), मथरा तथा दु दुभी की अभिन्नता (दे० ४५४) अहल्या का शापवश शिला बन जाना (दे० ३४६)।

(३) **रामभक्ति** के प्रभाव के कारण भी परम्परागत कथानक मे बहुत कुछ परिवर्तन तथा परिवर्द्धन किया गया है, उदाहरणार्थ—वाल्मीकि के उद्धार की कथा (दे० ऊपर अनु० ३८), वामदेव के प्रति वसिष्ठ का शाप (दे० अनु० ३८४), केवट का वृत्तान्त (दे० आगे अनु० ४३२), हनुमान के वक्षस्थल पर राम-नाम अकित होने की कथा (दे० अनु० ७०६)। राक्षसो की राम-भक्ति का भी अनेक स्थलो पर उल्लेख किया गया है। रावण का पुत्र वीरवाहु रणभूमि मे राम को विष्णु-चिन्हो से आभूषित देखकर अपना धनुष फेक देता है तथा राम की स्तुति करने लगता है (दे० युद्धकाण्ड, अध्याय ५४)। विभीषण का पुत्र तरणी-सेन वैष्णव तिलक लगाये रणक्षेत्र मे आता है, उसके शरीर, रथ तथा पताका पर राम-नाम अकित है (दे० ६, ५३)। रावण भी रणक्षेत्र मे राम के सामने नतमस्तक होकर उनके अवतारत्व तथा दयालुता मे विश्वास प्रकट करता है (दे० ६, १०५)। रामजन्म के वर्णन मे शुक-सारण की राम-भक्ति का उल्लेख मिलता है (दे० अनु० ३७५)। नागपाश के वृत्तान्त मे कृष्णभक्ति की भी झलक मिलती है (दे० अनु० ५८६)।

(४) **कृत्तिवासीय** कथानक पर **शैव तथा शाक्त** सम्प्रदायो की भी गहरी छाप है। हनुमान शिव के अवतार माने जाते है (दे० अनु० ६७०) तथा महीरावण की कथा मे राम तथा शिव की अभिन्नता का उल्लेख किया गया है (दे० अनु० ३६२)। सेतुबध के वृत्तान्त मे राम द्वारा शिवप्रतिष्ठा का उल्लेख है (दे० अनु० ५८०)। लकावरोध के पश्चात् पार्वती रावण की सहायता करने के लिए शिव से अनुरोध करती है (दे० ६, १४)। लका-देवी का वृत्तान्त बदल दिया गया है—चामुंडा ही हनुमान को लका

---

१ यह प्रसग स्कद पुराण के नागर खण्ड मे भी वर्णित है (दे० ऊपर अनु० १६१)।

मे प्रवेश करने से रोक देती है (दे० अनु० ५३७)। राम की विजय भी उनकी देवी-पूजा का परिणाम माना गया है (दे० अनु० ७८५)।

(५) कृत्तिवास रामायण के निम्नलिखित प्रसग वाल्मीकि रामायण मे नही मिलते है किन्तु ये अन्य राम कथाओ मे विद्यमान है—राम तथा लक्ष्मण के स्थान पर भरत तथा शत्रुघ्न को विश्वामित्र के साथ भेजने का दशरथ का प्रयत्न (दे० अनु० ३८८), सीता का पूर्वानुराग (दे० अनु० ४०३), कैकेयी द्वारा दो भिन्न अवसरो पर वरप्राप्ति (दे० अनु० ४४७), राम के निर्वासन के पूव राम-गुहक की मैत्री (दे० अनु० ३८४), सीता द्वारा दशरथ को पिण्डदान (दे० अनु० ४३५), लक्ष्मण का राम की सहायता करने जाने के पूर्व कुटी के चारो ओर रेखाएँ खीचना (दे० अनु० ४९८), तारा का शाप कि वालि भिल्ल के रूप मे कृष्णावतार मे राम का वध करेगे (दे० अनु० ५२०), नल की वरप्राप्ति की कथा तथा हनुमान-नल-कलह (दे० अनु० ५७५ और ५७६), लक्ष्मण का सयम जिसके बल पर वह इन्द्रजित् का हराने मे समर्थ हुए (दे० अनु० ४६१), भस्मलोचन (अनु० ६१३) तथा महीरावण की कथा (दे० अनु० ६१४), सेतुभजन का वृत्तान्त (दे० अनु० ६०७), मन्दोदरी से विभीषण का विवाह (दे० अनु० ५७२), रावण-चित्र के कारण सीता-त्याग (दे० अनु० ७२३), कुश-लव का युद्ध (दे० अनु० ७४६)।

(६) कृत्तिवासीय कथानक के कुछ वृत्तान्त बगाल मे ही पाये जाते है—राम-सीता विवाह के अवसर पर चन्द्रमा का नृत्य (अनु० ४००), हनुमान का लका से ब्रह्मास्त्र ले आना (अनु० ५९८), राम का मन्दोदरी को आशीर्वाद देना जिसके फलस्वरूप रावण की चिता जलती रहती है (दे० अनु० ५९६), सीता के प्रति मन्दोदरी तथा अन्य राक्षसियो के शाप (दे० अनु० ६०२)।

(आ) सत्रहवी शताब्दी का बगाली राम-साहित्य

२८६ बगाली राम-साहित्य पर कृत्तिवास की श्रीरामपाचाली की सबसे गहरी छाप है। फिर भी परवर्ती राम-साहित्य पर अन्य तत्वो का भी प्रभाव पड गया। वास्तव मे सत्रहवी शताब्दी की राम-कथा विषयक-सामग्री तीन वर्गों मे विभक्त की जा सकती है (१) रामलीला पदावलियाँ, (२) अद्भुत रामायण के अनुवाद, (३) अध्यात्म रामायण के अनुवाद।

राधाकृष्ण भक्ति के प्रभाव से १६वी शताब्दी के अन्त मे श्रीरामपाचाली क

कीर्तन के तौर पर गान हुआ करता था। इसके फलस्वरूप सत्रहवी शताब्दी मे बहुत से रामलीला-विषयक पदो की रचना होने लगी। इन रामलीला पदावलियो पर राधा-कृष्ण पदावलियो का सुस्पष्ट प्रभाव है।

संस्कृत **अदभुत रामायण** (दे० अनु० १७६) मे सीता देवी का रूप धारण कर लकापति के बडे भाई सहस्र-स्कध रावण का वध करती है, सभवत इसी कारण बगाल मे अद्भुत रामायण इतना लोकप्रिय सिद्ध हुआ था। निम्नलिखित रचनाएँ अद्भुत रामायण पर आधारित मानी जाती है

(१) बड़ु नित्यानन्द आचार्य (अद्भुताचार्य) का **आश्चर्य रामायण** अथवा **अद्भुताश्चर्य रामायण**। यह रचना बहुत समय तक बगाल मे अत्यन्त प्रसिद्ध थी।

(२) रामेश्वर दत्त का **अदभुत रामायण,** जिस पर कृत्तिवास का भी प्रभाव पडा है।

(३) वर्दवान मे सुरक्षित एक हस्तलिपि जिसका रचयिता भूल से कृत्तिवास ही माना जाता है।

(४) चन्द्रावती की **रामायण गाथा**। इसमे कैकेयी की पुत्री कुकुआ की चर्चा है, जिसके अनुरोध से सीता रावण का चित्र खीचती है और इसके परिणामस्वरूप परित्यक्त की जाती है (दे० अनु० ७२३)।

सत्रहवी शताब्दी की दो रचनाएँ अध्यात्म रामायण पर आधारित हैं—द्विज भवानीनाथ कृत श्रीरामपाचाली अथवा **अध्यात्म रामायण पाचाली** तथा द्विज श्री लक्ष्मण का **अध्यात्म रामायण** जिसका अब तक केवल आदि काण्ड मिल सका है।

(इ) अर्वाचीन बगाली राम-साहित्य

२८७ परवर्ती बगाली राम-साहित्य मे अद्भुत रामायण पर आधारित बहुत सी रचनाओ का उल्लेख मिलता है। अद्भुत रामायण की भाँति रामानन्दकृत **रामलीला** के विस्तृत बालकाण्ड मे अम्बरीष की पुत्री श्रीमती के स्वयवर का वर्णन मिलता है। सभव है यह रामानन्द वास्तव मे रामानन्द घोष है जिन्होंने १८वी शताब्दी मे एक रामायण लिखा है। **श्रीरामपाचाली** के रचयिता **रामानन्द यति** सभवत इसी रामानन्द घोष से अभिन्न है।

जगतरामराय (१८वी श०) के **अद्भुत रामायण** मे युद्धकाण्ड तथा उत्तर काण्ड (जिसका नाम रामरास उत्तरकाण्ड भी रखा गया है) के बीच मे एक पुष्करकाण्ड मिलता है जिसमे सहस्रस्कध रावण का सीता के द्वारा वध वर्णित है। १९वी शताब्दी का **कमललोचन दत्तकृत रामभक्तिरसामृत** अद्भुत रामायण पर आधारित है, इसके अतिरिक्त उस शताब्दी मे ही अद्भुत रामायण का चार बार बगाली मे अनुवाद हुआ है—पद्य

मे हरिमोहन गुप्त तथा द्वारकानाथ कुण्डू द्वारा तथा गद्य मे कृष्णकान्त न्यायभूषण तथा दुर्गाचरण वद्योपाध्याय द्वारा।

२८८ अठाहरवी शताब्दी के शकरचक्रवर्ती (कविचन्द्र) विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उनकी **अध्यात्म रामायण पाचाली** विष्णुपुरी रामायण के नाम से विख्यात है। इसी रचना के कुछ अश कृत्तिवास रामायण मे स्थान पा चुके हे, उदाहरणार्थ **अगदेर रायबार** (अगद के दूतकाय का वर्णन तथा तरणीसेन-वध)।

२८९ अर्वाचीन बगाली राम-साहित्य की एक अन्य विशेषता रायबार नामक रचनाओ का बाहुल्य है। १८वी शताब्दी के निम्नलिखित ग्रन्थ उल्लेखनीय है

फकिर रामकविभूषण का अगद रायबार।
रामचन्द्र का विभीषणेर रायबार।
रामनारायण (द्विज राम) का विभीषणेर खोट्टा रायवार।
काशीराम का कालनेमिर रायबार।
द्विज तुलसी का अगद रायबार।
हाराधन दास का अगद रायबार।

२९० साहित्यिक दृष्टिकोण से कृत्तिवास के पश्चात् रघुनन्दन गोस्वामी का **रामरसायन** (१८३१ ई०) सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। इसका प्रधान आधार वाल्मीकि रामायण है, फिर भी इस पर कृष्णलीला का भी स्पष्ट प्रभाव पडा है। १९वी तथा २०वी शताब्दी मे बगाली मे वाल्मीकि रामायण का अनुवाद अथवा रामकथा पर आधारित मौलिक ग्रन्थो की रचना होती रही। जगत् मोहन राम का रामायण (१८३८ ई०) विशेष रूप से उल्लेखनीय है। २०वी शताब्दी मे राजशेखर वसु ने वाल्मीकि रामायण को गद्य मे प्रस्तुत किया है किन्तु इस शताब्दी का सर्वाधिक लब्धप्रतिष्ठ राम-काव्य माइकल मधुसूदन कृत **मेघनादवध** ही है।

उडिया

२९१ उडिया साहित्य[1] के प्राचीनतम रामकथा-कार १५वी शताब्दी के सिद्धेश्वर परिडा हैं। उन्होने अपनी इष्टदेवी सारला चडी के कारण अपना नाम **सारलादास** ही रखा था और वे इसी नाम से विख्यात है। उनकी रचनाओ मे से महाभारत तथा चण्डी पुराण प्रकाशित है। उनका रामायण अप्राप्य है, अत उनके महाभारत ही के आधार पर अगले अनुच्छेद मे सारलादास की रामकथा की रूपरेखा प्रस्तुत की जायेगी। **विलका रामायण** की रचना १७०० ई० के लगभग सिद्धेश्वर दास द्वारा हुई थी।

१ दे० कृष्णचरण साहु उडिया राम लिटरेचर (राँची विश्वविद्यालय, १९६४, अप्रकाशित)।

सिद्धेश्वर परिडा (सारलादास) तथा सिद्धेश्वर दास के नाम-सादृश्य के कारण विलका रामायण को सारलादासकृत माना गया है, जो भ्रामक है। विलका रामायण का प्रधान वर्ण्य विषय है सीता द्वारा (पूर्व-खण्ड मे) सहस्र स्कन्ध रावणवध तथा (उत्तर खण्ड मे) लक्षस्कध रावण-वध। यह उत्तरखण्ड नितान्त अप्रामणिक तथा अर्वाचीन है (दे० आगे अनु० ६३६-६४०)।

उडिया साहित्य के सब से प्रसिद्ध रामायण की रचना उत्कल-वाल्मीकि बलरामदास द्वारा १६वी शताब्दी के प्रारम्भ मे हुई थी। इस ग्रन्थ के कई नाम प्रचलित है जगमोहन रामायण (रचयिता का दिया हुआ), दाण्डि रामायण (छन्द के नाम पर) और बलरामदास रामायण (लेखक के नाम पर)। यद्यपि वाल्मीकि रामायण इसका प्रधान आधार है, फिर भी इसमे रामकथा के विकास की दृष्टि से बहुत से परिवर्तन मिलते है। (दे० नीचे अनु० २६३)।

बलरामदास की रामकथा-विषयक रचनाएँ निम्नलिखित है—

(१) दो सदेश काव्य। **कान्तकोइलि** (३४ छन्द) मे अशोकवन की विरहिणी सीता एक कोयल को सम्बोधित कर अपने हरण के बाद की घटनाओ का वर्णन करती हैं। **काकपोइ** (३४ छन्द) मे वह एक काक को सम्बोधित कर अशोकवन मे अपने दु ख का वर्णन करती है और राम के पास एक लिखित सदेश भेजती है।

(२) दो बारहमासे। **सीताक बारमासी भावना** मे अशोकवन मे रहने वाली सीता राम के साथ अपने अतीत जीवन का स्मरण करती है। **बारमासी** का विषय वही है, किन्तु इसमे वह कान्हु को सम्बोधित करती है।

(३) **ब्रह्माण्ड भूगोल** मे समस्त रामकथा को शरीर मे अवतारित किया गया है (दे० ऊपर अनु० १०८)।

(४) **हनुमन्त चउतीसा**। ३४ छन्दो मे सीता-हनुमान-सवाद।

(५) **कर्णदान** (२४० छन्द)। इसकी कथावस्तु आगे अनु० ६५८ मे देख ले।

नीलाम्बरदास कृत **ठिका रामायण** (१६वी श० ई०) मे समस्त रामकथा का वर्णन है। निम्नलिखित वृत्तान्त बलरामदास रामायण मे नही मिलते—महीरावण की कथा, रावण के चित्र के कारण सीता त्याग, लव-कुश-युद्ध। अर्जुनदास का **रामविभा** (राम विवाह) सोलहवी शताब्दी उत्तरार्ध की रचना है।

सत्रहवी शताब्दी की पाँच रामकथा-विषयक रचनाएँ उल्लेखनीय है—

(१) धनजय का सर्गबद्ध **रघुनाथ-विलास**।

(२) शकरदास कृत **बारमासी कोइलि**। इसमे बारहमासे की शैली मे वनवासी राम के प्रति कौशल्या का विरह वर्णन है।

(३) महेश्वरदास कृत **टीका रामायण**। शीर्षक का कारण यह है कि यह

रचना एक प्रकार से बलरामदास की टीका है । इसमे राम-सुग्रीव भेट के विषय मे एक कथा है, जो सेरी राम तथा रामकेर्ति के वृत्तान्तो से साम्य रखती है (दे० आगे अनु० ५१२) ।

(४) कान्हुदास का **रामरसामृतसिन्धु** ।

(५) हलधरदास कृत **अध्यात्म रामायण** का उडिया अनुवाद ।

अठारहवी शताब्दी का राम-साहित्य अपेक्षाकृत समृद्ध है । दो रचनाओ का वर्ण्य विषय है सहस्र-स्कन्ध रावण का वध, अर्थात् सिद्धेश्वरदास कृत **विलङ्का रामायण** और वारानिधिदास कृत **विलङ्का खण्ड** । **विचित्र रामायण** नामक दो रचनाएँ मिलती हैं , एक विश्वनाथ खुटिया की तथा दूसरी भुइआ माधवदास की । भुइआ माधवदास सिद्धेश्वरदास को अपना गुरु मानते है , उनके कथानक की कई विशेषताएँ है—दशरथ की २१ पटरानियो का उल्लेख (दे० अनु० ३४०), शान्ता की जन्मकथा (अनु० ३४३), डाकिनियो से वानर-सेनापतियो का जन्म (अनु० ३५७), लक्ष्मण द्वारा शूर्पणखा के पुत्र जयासुर का वध (अनु० ६३२), रामकथा के निर्वहण का किंचित् परिवर्तित रूप (अनु० ७५३) । उसी शताब्दी मे उपेन्द्र भज ने **रामलीलामृत, षोल पोइ** (सोलह छन्द), **वैदेहीश विलास** तथा **अवना-रस-तरङ्ग** की रचना की है । **वैदेहीश विलास** वाल्मीकि, अध्यात्म रामायण, भोजकृत चम्पूरामायण, महानाटक आदि पर आधारित एव पाण्डित्य-पूर्ण है । इसके अतिरिक्त निम्नलिखित काव्य-ग्रन्थो का उल्लेख मिलता है रामदास का **रामरसामृत**, गोपीनाथ कवि भूषण कृत **रामचन्द्र विहार** (८० सर्ग) , त्रिपुरारिदास का **रामकृष्णकेलिकल्लोल** (श्लेष काव्य) , ब्रजबधु सामन्तराय का **रामलीलामृत काव्य** , ईश्वरदासकृत **रामलीला**, लक्ष्मीधरदासकृत **अङ्गदपडि** (अगद के दूत कार्य का वर्णन) , मागुणी पट्टनायक का **रामचन्द्र विहार** । गोवर्धनदासकृत **पचीसा पोई** (युद्ध-काण्ड विषयक) , शिशु ईश्वरदासकृत **नलराम चरित** । उस शताब्दी मे तेलेगा गोपाल, नरहरि कविचन्द्र, सुर्यमणि-च्याउ पट्टनायक तथा सारलादास[1] ने **अध्यात्म रामायण** का अनुवाद किया है और हरिहर कवि के पुत्र वनमालीदास ने भोजकृत चम्पू रामायण अनूदित कर उसका नाम **सुचित्र रामायण** रखा है । १८वी शताब्दी मे नाट्य-साहित्य का प्रवर्तन हुआ था, वैश्य सदाशिव की **रामलीला** तथा रघुनाथदास का **छन्द रामायण** उल्लेखनीय है ।

१९वी तथा २०वी शताब्दी मे भी रामकथा-विषयक रचनाओ की सृष्टि होती

---

१ यह सारलादास महाभारत के रचयिता से भिन्न हैं, इनका काल अनिश्चित हैं ।

रही ।[1] १९वी शताब्दी मे कृष्णचरण पट्टनायककृत **रामायण**, भुवनेश्वर कविचन्द्र का **सीतेश विलास,** केशव पट्टनायक (केशव हरिचन्दन) का **नृत्यरामायण** (केशव रामायण) तथा केशव त्रिपाठी का **पूर्ण रामायण** उल्लेखनीय है । **हलिआ रामायण** हल चलाते समय के गीतो का सकलन है । नाट्य-साहित्य की तीन **रामलीला** नामक रचनाएँ मिलती है, जिनके लेखक पीताम्बर राजेन्द्र, अनग नरेंद्र तथा विक्रम नरेंद्र हैं ।

२९२ सारलादास ने अपने महाभारत मे बहुत से स्थलो पर रामकथा-विषयक सामग्री का समावेश किया है तथा आदि, वन और उद्योग पर्वो मे समस्त रामायण का सक्षिप्त रूप भी प्रस्तुत किया है ।[2] वन-पर्व की रामकथा अगस्त्य द्वारा विलका के राजा को सुनाई जाती है । सारलादास की रामकथा की निम्नलिखित विशेषताएँ उल्लेखनीय है

(१) रामकथा तथा कृष्णकथा के पात्रो की अभिन्नता का प्रतिपादन , उदा० राम = कृष्ण , सीता = द्रौपदी , अगद = जारा (दे० आगे० अनु० ५२१), अजना = कुन्ती , सुग्रीव-अर्जुन , वालि = कर्ण, लक्ष्मण = बलराम, वालि = भीम, सुग्रीव = दुशासन । लक्ष्मण तथा भरत भी राम के अन्तरग सखा होने के नाते अर्जुन से अभिन्न माने गये है ।

(२) अवतारवाद का एक नया रूप जिसके अनुसार विष्णु राम मे, इन्द्र भरत मे, ब्रह्मा शत्रुघ्न मे तथा ईश्वर (महादेव) लक्ष्मण मे अवतरित माने जाते है (दे० वन पर्व पृ० २२८, आदि पर्व पृ० १९७) ।

(३) लक्षशिर, सहस्रशिर, शतशिर दशशिर रावणो का उल्लेख जो विभिन्न कल्पो मे राम द्वारा मारे जाते है ।

(४) बगाल मे प्रचलित रामकथा का सादृश्य । कृत्तिवास मे विद्यमान निम्नलिखित सामग्री सारलादास रामायण मे भी है दशरथ की ७५० पत्नियो का उल्लेख (अनु० ३४०), दशरथ की पुत्री शान्ता का वृत्तान्त (दे० अनु० ३४३) , दशरथ का विश्वामित्र के साथ भरत तथा शत्रुघ्न को भेज देने का प्रयास (दे० अनु० ३८८) , सीता द्वारा पिंडदान (दे० अनु० ४३५) नल-हनुमान-कलह (दे० अनु० ५७६) ।

---

१ दे० देवीप्रसन्न पट्टनायक, उडिया मे राम साहित्य, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ० ७७०-७७७ ।

२ दे० राधारमण पुस्तकालय (कटक १९५२) का सस्करण तथा कृष्णचरण साहु, रामकथा इन सारलादास महाभारत, जर्नल ऑव हिस्टॉरिकल रिसर्च (राँची), भाग १, पृ० ५०-५९ ।

(५) सारलादास के निम्नलिखित वृत्तान्त रामकथा के विकास की दृष्टि से महत्व रखते है लक्ष्मण द्वारा शूर्पणखा के पुत्र का वध (दे० अनु० ६३२), वालि तथा सुग्रीव का अहल्या की सन्तान के रूप मे उल्लेख (दे० अनु० ५१४) , हनुमान का रुद्रावतार माना जाना (दे० अनु० ६७२), हनुमान के वज्र-कोपीन का उल्लेख (दे० अनु० ६६७), ब्रह्मा के वीर्य से वाल्मीकि की उत्पत्ति (दे० अनु० ३६), अर्जुन के गर्व-निवारण की दो कथाएँ (दे० अनु० ६८५), रावण-वध के बाद राम का वानरो के साथ किष्किन्धा होकर पैदल ही अयोध्या वापस जाना (दे० अनु० ६०६) ।

२९३ बलरामदास के रामायण की निम्नलिखित विशेषताएँ महत्वपूर्ण है

(१) वह मुख्यतया वाल्मीकि रामायण के **गौडीय पाठ** पर निर्भर है । बलरामदास की निम्नलिखित सामग्री इसका प्रमाण है—दशरथ की पुत्री शान्ता का उल्लेख , सीता की जन्म-कथा मे मेनका का प्रसग, शापदोष-मोहिता कैकेयी का दोष-निवारण , राम की कुश-पादुकाओ की चर्चा, राम के प्रति तारा का शाप , जटायु गरुड का पुत्र है , सम्पाति से वानरो की भेट के प्रसग मे सुपार्श्व का आगमन , विभीषण पर रावण का पाद-प्रहार, हनुमान की हिमालय-यात्रा के वर्णन मे कालनेमि तथा भरत का उल्लेख ।

(२) समस्त ग्रन्थ शिव-पार्वती-सवाद के रूप मे प्रस्तुत किया गया है ।

(३) बलरामदास का अवतारवाद अनिश्चित है । पुत्रेष्टि-यज्ञ के वर्णन के अनुसार चारो भाई तो विष्णु के अवतार है किन्तु अन्यत्र लक्ष्मण को शेष का अवतार माना गया है तथा भरत, शत्रुघ्न को क्रमश चक्र और शख का । अरण्यकाण्ड मे बलरामदास लक्ष्मण को रुद्र, भरत को सूर्य तथा शत्रुघ्न को चन्द्र मानता है । अनुसूया लक्ष्मण को शूलधारी कहती है । उत्तरकाण्ड मे सीता तथा सरस्वती की अभिन्नता का उल्लेख है तथा यह भी कहा जाता है कि स्वर्ग मे राम तथा सीता नारायण और लक्ष्मी के रूप मे मिलते है किन्तु एक अन्य स्थल पर राम, सीता और लक्ष्मण क्रमश जगन्नाथ, सुभद्रा तथा बलभद्र भी माने गये है (दे० अनु० ३६२) ।

(४) सारलादास की रामकथा की भाँति बलरामदास रामायण भी बगाली रामकथा से सादृश्य रखता है । दशरथ के प्रति शनि का वरदान , सीता का पूर्वानुराग , राम-गुह-बधुत्व , केवट-प्रसग , विभीषण-मन्दोदरी-

विवाह, यह सब सामग्री कृत्तिवास तथा बलरामदास दोनो मे मिलती है (दे० अनु० २८५)।

(५) वाल्मीकि कथानक के निम्नलिखित परिवर्तन रामकथा के विकास की दृष्टि से उल्लेखनीय है

माया-सीता का वृत्तान्त (अनु० ५०५), वेदवती की कथा (अनु० ४१०), नारद-मोह की कथा (अनु० ३७३), रावण का सीता-स्वयवर देखने आना (अनु० ३९७), सुरभि के अवतार, मथरा का वैर (अनु० ४५४), सीता के प्रति लक्ष्मण का शाप (अनु० ४८९), राम का मुनियो को गोरी बन जाने का वरदान देना (दे० अनु० ७८७)।

हिन्दी साहित्य मे रामकथा

(अ) गोस्वामी तुलसीदास की रामकथा

२९४ गोस्वामी तुलसीदास की समस्त रचनाएँ उनके इष्टदेव राम से सबध रखती है, लेकिन इनमे से **रामचरितमानस** सबसे अधिक लोकप्रिय प्रमाणित हुई है। इसी एक रचना के द्वारा हिन्दी प्रदेश मे रामभक्ति की धारा फैल गई और आज तक प्रवाहित होती रही। अत रामभक्ति के विकास मे **रामचरितमानस** का महत्व अद्वितीय है।

रामकथा के विकास के दृष्टिकोण मे **रामचरितमानस** तथा तुलसीदास की अन्य रचनाओ मे कोई महत्वपूर्ण परिवतन नही मिलते। ऐसा प्रतीत होता हे कि प्रारभ मे तुलसीदास **वाल्मीकि रामायण** मे अधिक प्रभावित थे और अपनी बाद की रचनाओ मे अन्य रामकथा साहित्य से भी। मिथिला की वाटिका मे राम और सीता के परस्पर दर्शन का उल्लेख **रामाज्ञाप्रश्न** तथा **जानकी-मगल** मे नही है, लेकिन वह **रामचरितमानस** तथा **गीतावली** मे मिलता है। मिथिला मे रावणदूत के आगमन का उल्लेख **रामाज्ञाप्रश्न** मे नही मिलता, लेकिन **रामचरितमानस** तथा **गीतावली** मे पाया जाता है। **रामाज्ञाप्रश्न, जानकी-मगल** तथा **गीतावली** के अनुसार परशुराम तथा राम की भेट बारात की वापसी मे होती है, किन्तु **रामचरितमानस** तथा **कवितावली** मे परशुराम के मिथिला मे आगमन का वर्णन किया गया है।

चित्रकूट मे जनक के आगमन का वर्णन तथा सेतुबध के समय शिवप्रतिष्ठा का उल्लेख केवल **रामचरितमानस** मे मिलते है, **रामाज्ञाप्रश्न** तथा **गीतावली** मे नही।

वाल्मीकि रामायण के अनुसार ही सीतात्याग तथा लव-कुश की कथा **रामाज्ञाप्रश्न** तथा **गीतावली** मे दी गई है। **रामचरितमानस** मे इन प्रसगो का उल्लेख नही मिलता।

गीतावली की समस्त रचना मे कृष्ण-काव्य का प्रभाव अत्यन्त स्पष्ट है। इस कारण उत्तरकाण्ड मे राम सीता के दोलोत्सव, वसतविहार आदि का वर्णन भी किया गया है। इस रचना मे वाल्मीकि रामायण के गौडीय पाठ के अनुसार राम की शरण लेने के पूर्व विभीषण के अपने भाई कुबेर के पास जाने का वर्णन भी किया गया हे।

अत विषय-निर्वाह मात्र के दृष्टिकोण से इन ग्रन्थो का रचना-क्रम इस प्रकार प्रतीत होता हे **रामाज्ञाप्रश्न जानकीमगल, गीतावली**[1], **रामचरितमानस, कविता-वली।**

२६५ हिन्दी रामसाहित्य मे **रामचरितमानस** सबसे अधिक महत्वपूर्ण है, इसलिए रामकथा के विकास के दृष्टिकोण से इसके कथानक की विशेषताओ का उल्लेख अपेक्षित है। आध्यात्मिक विचारो के दृष्टिकोण से इस पर **अध्यात्म रामायण** का सबसे अधिक प्रभाव पडा, लेकिन कथानक मे भी अध्यात्म-रामायण का प्रभाव स्पष्ट हे। अध्यात्म-रामायण की भाँति **रामचरितमानस** शिव-पार्वती के सवाद के रूप मे प्रस्तुत किया गया है। अध्यात्म-रामायण की दार्शनिक व्याख्याए तथा भक्ति सम्बन्धी अश (स्तोत्र आदि) प्राय सबके सब किंचित् परिवर्तन सहित रामचरितमानस मे भी मिलते हे। अतर यह है कि रामचरितमानस मे शास्त्रीय प्रतिपादन को इतना स्थान नही दिया गया हे। अत रामचरितमानस का प्रधान आधार अध्यात्म-रामायण सिद्ध होता हे।

प्रस्तुत निबन्ध के दृष्टिकोण से **रामचरितमानस** के निम्नलिखित वृत्तान्त उल्लेखनीय हैं

(१) अवतारहेतु जयविजय की कथा, जालधर की पत्नी वृन्दा का शाप, नारद-मोह, मनु-शतरूपा की तपस्या, प्रतापभानु की कथा। इन कथाओ का तुलनात्मक अध्ययन १४वे अध्याय मे किया जायगा (दे० अनु० ३६६-३७३)।

(२) **अध्यात्म रामायण** के अनुसार राम का अपनी माता को अपना विष्णु-रूप दिखलाना तथा उनकी बाललीला का कुछ वर्णन (दे० अध्यात्म-रामायण १, ३, ४४-५३)। बाद मे **भगवद्गीता** (११,७) तथा **भागवत पुराण** (१०, ७, ३५-३७) के अनुकरण पर बालक राम का अपनी

---

१ कालक्रम निर्धारित करने के लिए विषय-निर्वाह के अतिरिक्त शैली, बहि साक्ष्य आदि का भी ध्यान रखना आवश्यक है। इस प्रकार के सर्वतोमुखी अध्ययन के पश्चात् डॉ० माताप्रसाद गुप्त का विचार है कि गीतावली की रचना रामचरितमानस के बहुत बाद हुई थी। दे० तुलसीदास, तृतीय स०, पृ० २७६।

माता के सामने अपना विराट् रूप प्रकट करना। राम के जन्मोत्सव के अवसर पर शिव तथा भुशुण्डी का मानव रूप धारण कर अयोध्या का भ्रमण करना ।

(३) मिथिला की वाटिका मे राम तथा सीता का परस्पर दर्शन, (दे० आगे अनु० ४०३) तथा मिथिला मे ही परशुराम का तेजोभग (दे० आगे अनु० ३५१) ।

(४) अयोध्या मे तथा पपासरोवर के तट पर नारद का आगमन । नारद का स्थान अपेक्षाकृत महत्वपूर्ण है (दे० आगे अनु० ४४३ और ४७६) ।

(५) राम के निर्वासन के लिए सरस्वती का अयोध्या भेजा जाना (दे० अध्यात्म रामायण २, ३, ४४-४६) ।

(६) अयोध्याकाण्ड मे केवट का वृत्तान्त अध्यात्म तथा आनन्द रामायण दोनो मे इसका उल्लेख अहल्योद्धार के अनन्तर हुआ है ।

(७) चित्रकूट की यात्रा करते हुए राम की एक तापस के द्वारा वन्दना । श्री रामचन्द्र शुक्ल का अनुमान है कि 'इस ढग से कवि ने अपने को ही तापस रूप मे राम के पास पहुँचाया है' ।[1]

(८) भरत-राम-मिलाप के समय चित्रकूट मे जनक का आगमन ।

(९) माया-सीता का वृत्तान्त (दे० अनु० ५०५) ।

(१०) सेतुबन्ध के समय शिव-प्रतिष्ठा (दे० अध्यात्म रामायण ६, ४)।

(११) हनुमान की हिमालय-यात्रा के वर्णन मे हनुमान द्वारा कालनेमि-वध तथा भरत से उनकी भेट का वृत्तान्त ।

(ये दोनो कथाएँ वाल्मीकिकृत रामायण के गोडीय पाठ मे पाई जाती हैं) ।

(१२) रावण-होम की कथा (दे० अध्यात्म रामायण ६, १०) ।

(१३) भुशुण्डी-चरित । (दे० आगे अनु० ३८१) ।

२९६ **रामचरितमानस** के बहुत से सस्करणो मे प्रक्षेप मिलते ह, जिनमे से कथानक के दृष्टिकोण से निम्नलिखित वृत्तान्त उल्लेखनीय ह—बालक राम और हनुमान की सगति , सुलोचना की कथा , अहिरावण-वध तथा लव-कुश-काण्ड के अन्तर्गत सीता-त्याग, लवकुश का जन्म तथा राम-सेना मे युद्ध ।

(आ) अन्य हिन्दी राम-साहित्य

२९७ हिन्दी रामकथा साहित्य मे तुलसीदास का एक प्रकार से एकाधिकार है—"तुलसी की प्रतिभा और काव्यकला इतनी उत्कृष्ट प्रमाणित हुई कि उनके बाद

---

१ दे० हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ० १४८ । दे० आगे अनु० ४३२ ।

किसी भी कवि की रामचरित सम्बन्धी रचना उनके मानस की समानता मे प्रसिद्धि प्राप्त न कर सकी मानम के सामने कोई भी प्रबन्ध-काव्य आदर की दृष्टि से न देखा गया"।[1] अत यहाँ पर अन्य हिन्दी राम-साहित्य का सिंहावलोकन मात्र प्रस्तुत किया गया है[2]। अत मे दो अपेक्षाकृत महत्वपूर्ण प्रबध काव्यो की कथानक सम्बन्धी विशेषताओ की सूची भी दी गयी है (दे० अनु० ३०२-३०३)। प्रारम्भिक हिन्दी साहित्य के विषय मे डॉ० अमरपाल सिंह का तुलसीपूर्व राम-साहित्य (रचना प्रकाशन, इलाहाबाद १९६८) और राम की माधुय भक्ति के सम्बन्ध मे डॉ० भगवती प्रसाद सिंह का शोध-प्रबन्ध, रामभक्ति मे रसिक सम्प्रदाय (बलरामपुर, स० २०१४) विशेष उपयोगी है।

२९८ तुलसीदास के पूर्व का हिन्दी-राम-साहित्य अधिक विस्तृत नही है। सर्व-प्रथम विष्णुदास कृत **'भाषा वाल्मीकि रामायण'** का उल्लेख होना चाहिए। यह १५वी शताब्दी के मध्य की रचना है, इसका कथानक वाल्मीकि के अनुसार ही है, किन्तु यह हिन्दी चौपाइयो मे वाल्मीकि रामायण का प्राचीनतम अनुवाद है। **रामानन्द** के कुछ भक्ति-विषयक पद सुरक्षित है तथा सूरदास ने **सूरसागर** मे वाल्मीकि रामायण के क्रमानुसार रामकथा के मार्मिक स्थलो पर लगभग १५० पदो की रचना की है।[3] इनमे केवट-वृत्तान्त रामचरितमानस की भाति वनवास की कथा मे रखा गया है (अध्यात्म रामायण मे यह वृत्तान्त अहल्योद्धार के अनन्तर ही मिलता है) और राम की सहायता करने जाने के पूर्व लक्ष्मण के द्वारा कुटी के चारो ओर रेखा खीचने का उल्लेख हुआ है। **'पृथ्वीराजरासो'** के द्वितीय समय मे दशावतार कथा के अन्तगत रामकथा विषयक लगभग १०० छन्द मिलते है,[4] जिनमे लका युद्ध के वर्णन को सर्वाधिक महत्त्व दिया गया है।। **ईश्वरदास**[5] (१६वी शताब्दी पूर्वार्द्ध) के **भरत-मिलाप** मे अयोध्या काण्ड

---

१ डॉ० रामकुमार वर्मा, हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, पृ० ३४४।

२ द्रष्टव्य 'हिन्दी साहित्य कोश' मे 'हिन्दी राम-साहित्य' शीर्षक लेख तथा डॉ० माता प्रसाद गुप्त का 'रामकाव्य' (हिन्दी साहित्य, द्वितीय खड, भारतीय हिन्दी परिषद्, प्रयाग, १९५९, पृ० ३००-३३१)

३ दे० ना० प्र० सभा सस्करण, दूसरा खण्ड, नवम स्कध, पद ४६०-६१३

४ कुछ सस्करणो मे रामावतार-विषयक केवल ३८ छद मिलते है। दे० विपिनविहारी त्रिवेदी, पृथ्वीराजरासो मे रामकथा, मैथिलीशरण गुप्त अभिनदन ग्रन्थ, पृ० ६७७।

५ दे० ना० प्र० पत्रिका, वर्ष ६१ (स० २०१३), अक १ और हिन्दुस्तानी भाग २४, अक ३, पृ० ११७।

की कथावस्तु का दोहा-चौपाइयो मे वर्णन किया गया है और इसमे भरत **को आदर्श** दास्य भक्त के रूप मे चित्रित किया गया है। इनके **'रामजन्म'** तथा **'अगदपैज' भी** सुरक्षित है, ये सब एक ही विस्तृत ग्रन्थ के अश प्रतीत होते है, जिसमे रामचरित**मानस** का पूर्वाभास मिलता है।

२९९ तुलसीदास के समकालीन कवियो मे रामसाहित्य के विकास की दृष्टि से अग्रदास तथा नाभादास प्रमुख है। उनकी रचनाओ से पता चलता है कि तुलसीदास के समय मे राम की माधुर्यभक्ति का प्रचलन हुआ था। कई अनुसन्धानकर्ताओ की यह धारणा निराधार है कि प्राचीन सस्कृत रामसाहित्य के शृगारात्मक वर्णनो मे राम की मधुरोपासना का सूत्रपात देखा जा सकता है (दे० अनु० १५०)। राम की मधुरोपासना के विषय मे कोई प्राचीन रचना उपलब्ध नही है, इसके अभाव मे यह मानना पडेगा कि उपासना की यह पद्धति सम्भवत १५वी शताब्दी ईस्वी मे कृष्णभक्ति के अनुकरण पर चलायी गयी है। अग्रदास के **अष्टयाम** मे राम की रासक्रीडा का वर्णन है। इनकी **'पदावली'** तथा **'ध्यानमजरी'** मे मँजी हुई भाषा के भक्तिपूर्ण पद मिलते है। अग्रदास के शिष्य नाभादास ने भी राम-सीता-चरित को लेकर **'अष्टयाम'** की रचना की है।

भक्तिकाल की कुछ अन्य रचनाएँ इस प्रकार है

(१) **रामचन्द्रिका** (दे० आगे अनु० ३०२)।

(२) सोढी मेहरबान का **'आदिरामायण'** (हिन्दी मिश्रित पजाबी)।

(३) सस्कृत महानाटक पर आधारित हृदयरामकृत **हनुमन्नाटक** (सन् १६२३ ई०) कवित्त-सवैये मे है और उन्नीसवी शताब्दी तक लोकप्रिय रही।

(४) लालदास कृत **अवध विलास**।

(५) राजस्थानी मे एक विस्तृत जैनी राम साहित्य मिलता है। समयसुन्दर की **सीताराम चौपाई**[1] विशेष रूप से उल्लेखनीय है। जैनेतर रचनाओ मे **लक्ष्मणायण** १६वी शताब्दी का है तथा नरहरिदास के **अवतार-चरित** का रामावतार विषयक अश रामचरितमानस और रामचन्द्रिका पर निर्भर है।

---

१ रचनाकाल सवत् १६७७ तथा १६८३ के बीच मे। इस रचना की स० १७३८ की एक हस्तलिपि बीकानेर के भारतीय विद्यामन्दिर, शोध प्रतिष्ठान मे सुरक्षित है। राजस्थानी मे जैनी रामसाहित्य की विस्तृत सूची के लिये दे० श्री अगरचन्द नाहटा, राजस्थानी भाषा मे रामकथा सबधी ग्रन्थ। मैथिलीशरण गुप्त अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ० ८४०-८४३।

३०० रीतिकाल का रामसाहित्य महत्त्वपूर्ण न होते हुए भी भक्तिकाल की अपेक्षा अधिक विस्तृत है। यहाँ पर उन रचनाओ की नामावली देने की अपेक्षा, रीतिकालीन रामसाहित्य की सामान्य विशेषताओ का उल्लेख किया जायेगा[1]

(१) शृंगार की व्यापकता तथा कृष्णकाव्य की गहरी छाप उस साहित्य की प्रथम विशेषता है, विशेष रूप से रसिक सम्प्रदाय की रचनाओ मे जहा राम तथा सीता की शृगारमय चेष्टाओ का खुलकर वर्णन किया गया है।[2]

(२) रीतिकाल मे प्रसिद्ध सस्कृत रामकाव्यो का अनुवाद भी हुआ है, उदाहरणार्थ वाल्मीकि रामायण, जैमिनी पुराण, रामाश्वमेध (पद्मपुराण), अध्यात्मरामायण, योगवसिष्ठ आदि के अनुवाद।

(३) विश्वनाथ सिह, केशव कवि, भगवन्त राय खीची, मनियार सिंह, गणेश, खुमान आदि कवियो ने हनुमद्भक्तिपरक रचनाओ की सृष्टि की है।

(४) प्रारम्भिक हिन्दी नाट्य साहित्य मे कृष्णकथा की अपेक्षा रामकथा को अधिक महत्वपूर्ण स्थान मिला है।

(५) खडी बोली गद्य की प्राचीनतम प्रौढ रचनाओ मे से तीन ग्रन्थ रामसाहित्य से सबन्ध रखते है रामप्रसाद निरजनी का **भाषा योग वासिष्ठ** (१७४१ ई०), दौलतराम का **पद्मपुराण** (सन् १६६१ ई०, जैनी रामकथा) तथा सदल मिश्र का **रामचरित** (सन् १८०७ ई०, अध्यात्म रामायण का अनुवाद, दे० सदल मिश्र ग्रन्थावली, बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्)।

३०१ आधुनिक काल मे रामकथा विषयक गद्य तथा नाटक साहित्य उपेक्षणीय नही है, फिर भी इस काल का राम-काव्य कही अधिक महत्वपूर्ण होता है। पुरानी धारा के कवियो ने **रामभक्तिपरक मुक्तक काव्य** के अतिरिक्त प्रबन्ध काव्यो की भी रचना की है, उदाहरणार्थ रसिकबिहारी का **रामरसायन**, रघुनाथदास का **विश्रामसागर** (रामायण खण्ड), रघुराजसिंह का **रामस्वयवर**, बाघेली कुवरि का **अवधविलास**, बलदेव प्रसाद मिश्र का **कोशल किशोर** तथा मैथिली मे चदा झा का **रामायण**। सन् १६०० ई० के बाद भी यह धारा प्रवाहित होती रही, उदाहरण शिवरत्न शुक्ल का **श्रीरामा-**

---

१ गोविन्द रामायण के लिए दे० नीचे अनु० ३०३। डॉ० गोपीवल्लभ नेमा ने नागरीप्रचारिणी पत्रिका (वर्ष ६६, अक ३, पृ० ३६५) मे कृपानिवास कृत रामरसामृतसिंधु नामक विस्तृत प्रबन्ध काव्य का परिचय दिया है।

२ दे० डॉ० लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय, ईस्ट इण्डिया कपनी-कालीन राम-काव्य, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ० ८२१-८२६।

वतार, वशीधर शुक्ल का **राम मड़ैया** तथा रामनाथ ज्योतिषी का **श्रीरामचन्द्रोदय**।

खडी बोली का रामकाव्य अपेक्षाकृत समृद्ध है। निम्नलिखित महाकाव्य साहित्यिक मूल्य रखते है रामचरित उपाध्याय का **रामचरित चिन्तामणि** (सन् १६२० ई०), मैथिलीशरण गुप्त का **साकेत** (सन् १६२६ ई०), अयोध्या सिह उपाध्याय का **वैदेही वनवास** (१६३६ ई०), बलदेव प्रसाद मिश्र कृत **साकेत सन्त** (१६४६ ई०), केदारनाथ मिश्र कृत **कैकेयी** (१५५० ई०), बालकृष्ण शर्मा नवीन कृत **ऊर्म्मिला** (१६५७) । इन महाकाव्यो की तीन प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार है

(१) मूलभूत दृष्टिकोण—अवतारवाद को कम महत्व दिया गया है अथवा राम को पूर्णतया मानव मात्र के रूप मे चित्रित किया गया है।

(२) भक्तिकालीन धार्मिक भावना और रीतिकालीन शृगारिकता के स्थान पर नवीन सामाजिक तथा राजनीतिक आदर्श।

(३) पूर्ववर्ती रामकाव्य के उपेक्षित अथवा कम विकसित पात्रो को नायक-नायिका बनाने की प्रवृत्ति। उदा०—साकेत (लक्ष्मण-उर्मिला), साकेत-सन्त (भरत-माण्डवी), कैकेयी, ऊर्म्मिला।

३०२ गोस्वामी तुलसीदास के समकालीन केशवदास की **रामचन्द्रिका** मे कोई प्रबन्धात्मकता नही मिलती। कथानक के दृष्टिकोण से इसमे निम्नलिखित विशेषताएँ पाई जाती है

(१) सीतास्वयवर मे बाणासुर-रावण-सवाद, जो प्रसन्नराघव के आधार पर लिखा गया है।

(२) मिथिला मे परशुराम का तेजोभग।

(३) रावण-वध के पश्चात् अयोध्या मे लौटकर राम की विरक्ति तथा वासिष्ठ का समझाना (दे० २५वा प्रकाश)। इस वृत्तान्त का आधार योगवसिष्ठ का राम-वैराग्य-वर्णन है।

(४) महानाटक के आधार पर राम से अगद का बैर (दे० २६वाँ प्रकाश)।

(५) पद्मपुराण तथा जैमिनीय अश्वमेध के अनुसार सीता-त्याग, लव-कुश का जन्म और राम-सेना से युद्ध (दे० आगे अनु० ७४६)।

३०३ सिक्खो के दसवे गुरु गोविन्द सिह ने सन् १६६८ ई० मे एक राम-कथा विषयक काव्य की रचना की, जो सन् १६५३ ई० मे **गोविन्द रामायण** के नाम से प्रकाशित हुई है। कथानक की दृष्टि से निम्नलिखित विशेषताएँ उल्लेखनीय है

—राम सीता का पूर्वानुराग (दे० अनु० ४०३) तथा अयोध्या मे भी परशु-राम का तेजोभग (दे० अनु० ३५१)।

—राम की सहायता करने जाने के पूर्व लक्ष्मण का कुटी के चारो ओर रेखा खीचना (अनु० ४६८) ।
—सीता का नागमत्र पढकर राम तथा लक्ष्मण को नागपाश से मुक्त करना (दे ० अनु० ५८६) ।
—वाल्मीकि द्वारा सीता के एक पुत्र की सृष्टि (दे० अनु० ७४३) ।
—लव-कुश-युद्ध के अन्त मे सीता का अपने सतीत्व की शपथ खाकर समस्त राम-सेना को जिलाना तथा राम के साथ अयोध्या के लिए प्रस्थान करना । (दे० अनु० ७४६) ।
—रावण-चित्र के कारण राम का सीता पर सन्देह तथा फलस्वरूप सीता का भूमि-प्रवेश (दे० अनु० ७५३) ।

मराठी

३०४ मराठी साहित्य की प्राचीनतम रामकथा एकनाथ कृत **भावार्थ रामायण** है, जिसकी रचना १६वी शताब्दी के अन्त मे हुई थी । इसका उत्तरकाण्ड एकनाथ के किसी शिष्य द्वारा लिखा हुआ है । एक दन्तकथा के अनुसार एकनाथ ने युद्धकाण्ड के केवल ४४ अध्याय लिखे थे और गवब ने उसे पूरा किया था किन्तु आधुनिक मराठी समालोचको का विश्वास है कि एकनाथ ने अहि-महिरावण-वृत्तान्त को छोडकर समस्त युद्धकाण्ड की रचना की है । अहि-महिरावण की कथा जयरामसुत द्वारा लिखी मानी जाती है ।

एकनाथ के तीन मुख्य आधार वाल्मीकि, अध्यात्म तथा आनन्द रामायण है । भावार्थ रामायण के कथानक को वाल्मीकि के ढाचे के अनुसार प्रस्तुत किया गया है , समस्त रचना मे जो भक्ति का वातावरण है उसका आधार अध्यात्म रामायण है तथा उसकी वाल्मीकि से भिन्न नवीन सामग्री मुख्यतया आनन्द रामायण पर आधारित है ।

एकनाथ वाल्मीकि रामायण के पश्चिमोत्तरीय पाठ से परिचित थे । भावार्थ रामायण के निम्नलिखित प्रसग दाक्षिणात्य पाठ मे नही मिलते किन्तु गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठो मे विद्यमान है दशरथ की पुत्री शान्ता का उल्लेख (अनु० ३४३) , तारा का शाप (अनु० ७२६) , निकषा-वाक्य (अनु० ५६८,३), रावण द्वारा विभीषण पर पाद-प्रहार (अनु० ५ ८,५), नारद-कुम्भकर्ण-सवाद (अनु० ५८९,५) और कालनेमि का वृत्तान्त (अनु० ५५८,९) । भावार्थ रामायण के कुछ अन्य प्रसग केवल पश्चिमोत्तरीय पाठ मे पाए जाते है , उदाहरणार्थ विभीषण-निकषा-सवाद, नारद-वाक्य, कुम्भकर्ण-वाक्य और मन्दोदरी-केश-ग्रहण (दे० अनु० ५६०) । भरत हनुमान-सवाद केवल गौडीय पाठ मे विद्यमान है किन्तु एकनाथ ने सभवत आनन्द रामायण के आधार पर इस प्रसग का वर्णन किया है (दे० अनु० ५८८) ।

वाल्मीकि से भिन्न सामग्री जो समान रूप से भावार्थ रामायण तथा अध्यात्म-रामायण मे विद्यमान है, वह आनन्द रामायण मे भी पाई जाती है, सामग्री इस प्रकार है नवजात शिशु राम द्वारा विष्णु रूप-प्रदर्शन (अनु० ३७५), लक्ष्मण का शाप (अनु० ४६१), रावण का छत्रभग (अनु० ५८४), रावण की नाभि मे अमृत की स्थिति (अनु० ५९८), रावण की मुक्ति (अनु० ५९९)।

एकनाथ के कथानक पर आनन्द रामायण की गहरी छाप है। निम्नलिखित सामग्री न तो वाल्मीकि रामायण और न अध्यात्म रामायण मे मिलती है किन्तु वह समान रूप से आनन्द रामायण तथा भावार्थ रामायण मे विद्यमान है—दशरथ-कौशल्या-विवाह की कथा (अनु० ३३७), भरत और शत्रुघ्न सहोदर है (अनु० ३४१), पाषाणभूता अहल्या की कथा (अनु० ३४६), बालक राम की तीर्थ-यात्राए (अनु० ३८५), परशुराम से शिव-धनुष का सम्बन्ध तथा सीता द्वारा धनुष के उठाये जाने की कथा (अनु० ३९२), सीता-स्वयवर मे रावण की उपस्थिति (अनु० ३९७), अग्निजा सीता की जन्म-कथा (अनु० ४२२), भरत द्वारा मथरा का पीटा जाना (अनु० ४३४), लक्ष्मण का कुटी के चारो ओर रेखा खीचना (अनु० ४६८), पार्वती द्वारा राम की परीक्षा (अनु० ४७५), रावण की बहन क्रौचा का वध (अनु० ५३१), हनुमान का विभीषण को रामकीर्तन मे सलग्न देखना (अनु० ५३८), लका मे हनुमान के उत्पात (अनु० ५३९), लकादहन के वर्णन मे साम्य, विशेषकर रावण की दाढी जल जाने की कथा (अनु० ५५२), हनुमान की वीरता विषयक ब्रह्मा का पत्र (अनु० ५५४), रेती की लका मे विभीषण का अभिषेक (अनु० ५७१), नल (अनु० ५७६) तथा हनुमान (अनु० ५८०) का गर्व-निवारण, अगद का अपनी कुडलाकार पूँछ पर बैठना तथा मण्डप की छत राम के पास ले आने की कथा (अनु० ५८५), सुलोचना (अनु० ५९४) तथा मन्दोदरी (अनु० ५९९) का सहगमन, अहि-महिरावण की कथा (अनु० ६१४), हनुमान के पुत्र की उत्पत्ति (अनु० ६१५), लक्ष्मण द्वारा शूर्पणखा के पुत्र का वध (अनु० ६३२), रावण मन्दोदरी के विवाह की कथा (अनु० ६५०), दशरथ-यज्ञ के पायस से हनुमान की उत्पत्ति (अनु० ६७७), रामकथा-श्रवण मे सर्वत्र उपस्थित रहने की हनुमान द्वारा वरप्राप्ति (अनु० ७०२)।

एकनाथ के कुछ प्रसग उपर्युक्त तीन आधार ग्रन्थो (अर्थात् वाल्मीकि, अध्यात्म और आनन्द रामायण) मे नही मिलते है, उदाहरणार्थ पउमचरिय के अनुसार भरत तथा शत्रुघ्न का कैकेयी की सन्तान के रूप मे उल्लेख (अनु० ३४१), योग वासिष्ठ के आधार पर राम के वैराग्य का वर्णन (अनु० ३८६), भरत की चित्रकूट यात्रा के प्रसग मे भरत-लक्ष्मण युद्ध तथा वाल्मीकि द्वारा रामायण का गान (अनु० ४३४), जयन्त के स्थान पर सुदसुव गधर्व का उल्लेख (अनु० ४३९), अनावृष्टि के

कारण इन्द्र के विरुद्ध युद्ध करते समय दशरथ की सहायता करने से कैकेयी की वर-प्राप्ति (अनु० ४४७), मथरा को उभाडने के उद्देश्य से ब्रह्मा द्वारा विकल्प का प्रेषण (अनु० ४५४), लक्ष्मण की जितेन्द्रियता की कथा (अनु० ४६२), नृसिंह पुराण की भाति शूर्पणखा के प्रसग मे राम के पत्र का उल्लेख (अनु० ४६४), माया-सीता की कथा का एक नवीन रूप (अनु० ५०५), राम द्वारा हनुमान की पराजय (अनु० ५१२), वालि-सुग्रीव की जन्म कथा मे पार्वती के शाप का उल्लेख (अनु० ५१३), हेमा की कथा (अनु० ५२६), सीता-मन्दोदरी-सवाद (अनु० ५४४), हनुमान का रावण-सभा मे कुण्डलाकार पूँछ पर बैठना (अनु० ५५२), द्रुमकुल्य के स्थान पर मरुदैत्य का वध (अनु० ५७४, ५), सेतु के पत्थरो को राम के चरणस्पर्श से बचाने की युक्ति (अनु० ५८१), लक्ष्मण का वैराग्य (अनु० ६१०)।

अन्य काण्डो की अपेक्षा भावार्थ रामायण का उत्तरकाण्ड वाल्मीकीय उत्तरकाण्ड मे अधिक साम्य रखता है। दाक्षिणात्य पाठ के अनुसार भृगुशाप का उल्लेख किया गया है (दे० अनु० ७२५)। निम्नलिखित प्रसग आनन्द रामायण पर आधारित प्रतीत होते है स्त्रीराज्य मे हनुमान का प्रेषण (अनु० ६८७), बलि के यहाँ रावण की पराजय (अनु० ६५५), लव-कुश-युद्ध के पश्चात् राम के साथ सीता का अयोध्या लौटना (अनु० ७४७), सीता द्वारा मूलकासुर-वध (अनु० ६४१)। अन्य उल्लेखनीय नवीन सामग्री इस प्रकार है—सीता-वनवास का परोक्ष कारण (अनु० ७२८), कोपीन पहनकर हनुमान का जन्म (अनु० ६६७), कैकेयी के दोषारोपण के कारण सीता का भूमि-प्रवेश (अनु० ७५३)।

३०५ शेष मराठी रामसाहित्य की एक विशेषता **सीता स्वयवर** नामक रचनाओ का बाहुल्य है। १६वी शताब्दी मे जनी जनार्दन और विठा रेणुकानन्दन, १७वी शताब्दी मे रामदास, वेणाबाई, वामन और जयराम स्वामी वडगॉवकर, १८वी शताब्दी मे आनन्दतनय, गोसावीनन्दन, नागेश और बिट्ठल ये सब किसी सीता स्वयवर के रचयिता माने जाते है।

सत्रहवी शताब्दी की निम्नलिखित रचनाएँ उल्लेखनीय है कृष्णदास मुद्गल का **युद्धकाण्ड**, मुक्तेश्वर का **सक्षेप रामायण** तथा **अहि-महिरावण-वध**, माधव स्वामी के दो **रामायण**, समर्थ रामदास का **लघु रामायण, सुन्दरकाण्ड** तथा **युद्धकाण्ड**, वेणाबाई का रामायण।

परवर्ती राम-साहित्य की सबसे लोकप्रिय रचना श्रीधर कृत **रामविजय** (रचनाकाल १७०३ ई०) है। इसके कथानक पर भावार्थ रामायण की गहरी छाप है। भावार्थ रामायण की प्राय समस्त उपर्युक्त विशेषताएँ रामविजय मे भी पाई जाती है। अहल्या-गौतम-विवाह की कथा ब्रह्मपुराण के अनुसार दी गई है। **मोरोपन्त**

(मराठी साहित्य के केशवदास) के ७४ रामायण प्रकाशित है , कथानक प्राय वाल्मीकीय रामायण के अनुसार ही है । अमृतराव ओक ने १९वी शतब्दी मे **शतमुख रावणवध** की रचना की है ।

गुजराती

३०६ गुजराती साहित्य मे रामकथा की अपेक्षा कृष्णकथा को अधिक महत्वपूर्ण स्थान मिला है । "श्रीकृष्ण के चरित्र से सम्बन्धित महाभारत का अश गुजराज के व्यावहारिक और कौतूहलप्रिय आत्मा को जितना खीच सका उतना रामायण खीच भी नही सका ।"[1] फिर भी गुजराती साहित्यकारो की सूची से पता चलता हे कि सन् १३७० ई० से सन् १८५२ ई० तक ३७२ कवियो मे से पचास कवियो ने रामकथा-विषयक साहित्य की सृष्टि की है ।

कृष्ण-काव्य मे प्रबन्धात्मकता का अभाव है । सभवत इसके प्रभाव के कारण [illegible]धिकाश गुजराती रामकथा-सबधी साहित्य [illegible]नी पदावली के रूप मे अथवा आख्यान शली मे लिखा गया हे । उदाहरणार्थ आशाएत (असाईत) कृत **रामलीला ना पदो** (१४वी श०) , भालणकृत **रामविवाह** और **रामबालचरित** (१५वी शताब्दी) , मत्री कर्मण कृत **सीताहरण** (१५वी श०) , भीमकृत **रामलीला ना पदो** (१५वी श०) , माडण बधारो का **रामायण** (१५वी श०) , लावण्यसमय कृत **रावण-मन्दोदरी सवाद** (१६वी श०) , उद्धवकृत **सीता-हनुमान-सवाद,** नाकर का **लवकुशाख्यान** (१६वी श०) , प्रेमानन्द कृत **रणयज्ञ** (१७वी श०) तथा हरिदास कृत **सीता विरह** (१७वी श०) आदि ।

भालण के पुत्रो—उद्धव और विष्णुदास—ने १६वी शताब्दी मे समस्त रामायण की रचना की थी लेकिन वह अधिक प्रचलित नही हो सकी है , आजकल गुजरात मे १९वी शताब्दी का **गिरधरदासकृत रामायण** सब से श्रेष्ठ माना जाता है और सबसे लोकप्रिय भी है ।

आधुनिक काल मे योगवासिष्ठ, अध्यातम रामायण, रामचरितमानस आदि का गुजराती मे अनुवाद किया गया है ।

गुजरात प्रान्त मे प्रचलित रामकथा का निरूपण नर्मदा कृत **रामायणनोसार** (१९वी श०) मे मिलता हे । इस रचना से पता चलता है कि वाल्मीकि रामायण तथा

---

१ दे० प्रल्हाद चन्द्रशेखर दीवान जी, गुजरात मे रामायण (कल्याण का रामायणाक पृ० ३९८) । उसी लेखक का गुजराती राम-साहित्य का सिंहावलोकन द्रष्टव्य है—ज० ऑ० इ० भाग ४ (१९५४), पृ० ४६-५७ । इसके अतिरिक्त श्री शान्ति आकडियाकर, मध्यकालीन गुजराती साहित्य का तिथि-क्रम । साहित्य (पटना), वर्ष १०, अक १, पृ० ५२-५७ ।

अध्यात्म रामायण के अतिरिक्त अन्य रचनाओं का भी गुजराती राम-साहित्य पर प्रभाव पड़ा, यद्यपि इन दोनों का प्रभाव प्रधान है। रामायणसार में सीता-त्याग के दो कारण बतलाये जाते है (धोबी वृत्तान्त तथा रावण-चित्र की कथा) तथा राम-सेना से लव-कुश के युद्ध का भी वर्णन किया गया है।

उर्दू-फारसी रामायण

३०७ राम-कथा-विषयक उर्दू साहित्य अधिक महत्त्वपूर्ण नही है। उर्दू साहित्य के इतिहासकार इसके संबध मे प्राय मौन ही रहते है। १९वी शताब्दी उत्तरार्द्ध के निम्नलिखित चार रामायण उल्लेखनीय है

(१) मुंशी जगन्नाथ खुश्तर का **रामायण खुश्तर**। इस सर्वोत्तम तथा सबसे लोकप्रिय उर्दू रामायण की रचना १८६४ ई० मे हुई थी।

(२) मुंशी शकरदयाल 'फर्हत' का **रामायण मजूम**।

(३) बाँकेबिहारी लाल 'बहार' का **रामायण बहार**।

(४) सूरज नारायण मेह्र का **रामायण मेह्र**।

इनकी रचना के लिए रामचरितमानस, वाल्मीकि रामायण आदि प्रसिद्ध रामायणो का सहारा लिया गया है, फिर भी इन ग्रन्थो को स्वतन्त्र-काव्य-ग्रन्थ मानना उचित होगा।

३०८ उर्दू की अपेक्षा फारसी रामकथा-साहित्य अधिक प्राचीन है। अकबर के आदेशानुसार **अल बदायूनी** (अब्दुल कादिर इब्न-इ-मुलूक शाह) ने सन् १५८४-१५८९ ई० मे वाल्मीकि रामायण का पद्यानुवाद किया था।

जहाँगीर के राज्यकाल मे तुलसीदास के समकालीन **गिरिधरदास**[1] ने वाल्मीकि रामायण का सक्षिप्त पद्यानुवाद प्रस्तुत किया था तथा मुल्ला **मसीह** ने अपने **रामायण मसीहा** (दे० अनु० ३०९) की रचना की थी। शेष उपलब्ध फारसी राम-साहित्य इस प्रकार है **रामायण फैजी** (शाहजहाँ के समय का गद्यानुवाद), गोविन्द-पुत्र गोपाल कृत **तर्जुमा-इ-रामायण** (१७वी श० ई० उत्तरार्द्ध), **चन्द्रभान बेदिल** का वाल्मीकि रामायण का सक्षिप्त गद्यानुवाद (१६८५ ई०) तथा पद्यानुवाद (१६९३ ई०), लाला

---

१ ई० एस० ए० एच० अबीदी द स्टोरी ऑफ रामायण इन इन्डोपर्सियन लिटरेचर (इन्डो-इरैनिका, कलकत्ता, भाग १७, पृ० १७-२९। इस लेख मे १९वीं श० की भी अनेक फारसी रामायणो का उल्लेख है। देवीदास ने उसी शताब्दी मे फारसी गद्य मे रामचरितमानस का अनुवाद किया था और राय मुंशी परमेश्वरी सहाय तथा लाला चदा मल चद ने इसका सक्षिप्त फारसी पद्यानुवाद।

अमरसिह का गद्यात्मक **रामायण अमर प्रकाश** (रचनाकाल १७०५ ई०) तथा **लाला अमानत राय** कृत वाल्मीकि रामायण का पद्यानुवाद (रचनाकाल सन् १७५४ ई०)।

३०६ रामायण मसीही की रचना जहाँगीर के समय मे मुल्ला मसीह द्वारा हुई थी, नवलकिशोर प्रेस (लखनऊ) ने उसे सन् १८९८ ई० मे प्रकाशित किया था। मुल्ला मसीह मुजफ्फरनगर (उ० प्र०) के निकट किराना गाव के निवासी थे। वह सभवत ईसाई थे क्योकि रामायण मसीही मे ईसा, मरियम आदि बाइबिल के पात्रो का उपमान के रूप मे बहुधा उल्लेख हुआ है। इस रचना के ५००० छन्दो मे दशरथ-यज्ञ से लेकर लव-कुश-युद्ध के बाद सीता के भूमि-प्रवेश तक की समस्त रामकथा प्रस्तुत की गई है। कथानक [१] की निम्नलिखित विशेषताएँ उल्लेखनीय है

(१) पाषाणभूता अहल्या के उद्धार की कथा अरण्यकाण्ड के अन्तर्गत रखी गई है (दे० अनु० ३४८)।

(२) विश्वामित्र सीता की जन्म-कथा सुनाते है, इसके अनुसार सीता एक मजूषा मे पाई गई थी (दे० अनु० ४१३)।

(३) रावणवध के पश्चात् मन्दोदरी स्वय सीता को राम के पास ले आती है (अनु० ६०२)।

(४) राम की बहन सीता को दशमुख रावण का चित्र अकित करने के लिए प्रेरित करती है और बाद मे राम के पास जाकर कहती है कि सीता दिन-रात उसी चित्र की पूजा करती है। (दे० अनु० ७२३)।

(५) वाल्मीकि द्वारा सीता के एक पुत्र की सृष्टि (दे० अनु० ७४३)।

(६) लव-कुश-युद्ध मे राम को भी पराजित तथा अचेत किया जाता है किन्तु वाल्मीकि जल छिडक कर राम को होश मे लाते है (दे० अनु० ७४९)।

(७) रामकथा का निर्वहण मौलिक प्रतीत होता है (दे० अनु० ७५३)।

२ मैं प्रो० हीरालाल चोपडा, एम० ए० का आभारी हूँ, जिन्होने मेरे साथ बैठकर मुझे रामायण मसीही का कथानक समझा दिया है। एशियाटिक सोसाइटी के कैटालॉग मे इस रचना का नाम हदीस-इ-राम-उ सीता रखा गया है, लेखक का नाम इस प्रकार है—सादुल्लाह कैरानवी तखल्लुस मसीह।

अध्याय १३

विदेश मे रामकथा

३१० पिछले तीन अध्यायो से भारतीय सस्कृति मे रामकथा की व्यापकता का अनुमान किया जा सकता है। न केवल भारत किन्तु निकटवर्ती देशो की सस्कृति तथा साहित्य मे भी रामकथा एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर सकी है, यह प्रस्तुत अध्याय से स्पष्ट होगा। रामकथा की एक धारा उत्तर की ओर फैल गई, इसका प्रमाण हमे **तिब्बती तथा खोतानी रामायणो** मे मिलता है। यह सामग्री अपेक्षाकृत प्राचीन है अत इसका निरूपण प्रथम परिच्छेद मे किया गया है। एक दूसरी धारा भारत से हिंदेशिया तक पहुँच गई थी और वहाँ से हिन्द-चीन और इसके पश्चात् श्याम तक तथा श्याम से बर्मा तक फैल गई थी। इसका वर्णन द्वितीय तथा तृतीय परिच्छेदो मे किया गया है। अत मे पाश्चात्य वृतान्तो का भी किंचित् निरूपण किया जायेगा। प्रस्तुत अध्याय मे रामकथा के पात्रो के नाम प्राय सस्कृत रामायण के अनुसार ही दिये जायेगे।

क—तिब्बत खोतान

तिब्बती रामायण

३११ बौद्ध रामकथा के निरूपण मे **अनामक जातकम्** तथा **दशरथकथानम्** का उल्लेख हुआ है, जिनका क्रमश तीसरी और पाँचवी शताब्दी ई० मे चीनी भाषा मे अनुवाद हुआ था (दे० ऊपर अनु० ५२-५३), अत रामकथा प्राचीन काल से उत्तर की ओर फैलने लगी थी। तिब्बती भाषा मे भी अनेक हस्तलिपियाँ प्राप्त है जिनमे रावण-चरित्र से लेकर सीता-त्याग और राम-सीता-सम्मिलन तक की समस्त कथा मिलती है, जो सम्भवत आठवी अथवा नवी शताब्दी की है।[1] प्रारम्भ मे रावणचरित का कुछ वर्णन किया गया है, अनन्तर विष्णु दशरथ के पुत्र के रूप मे अवतार लेने की प्रतिज्ञा करते है। दशरथ की केवल दो पत्नियाँ है, विष्णु कनिष्ठा के गर्भ से जन्म लेते है और रामन कहलाते है; तीन दिन बाद विष्णु के पुत्र ज्येष्ठा से जन्म लेते है और उनका नाम लक्षण रखा जाता है।

---

१ दे० एफ० डब्लू० थॉमस ए रामायण स्टोरी इन तिब्बतन, इडियन स्टडिस पृ० १९३। एम्० लालू जर्नल अजियाटिक, १९३६, पृ० ५६०।

गुणभद्र के **उत्तरपुराण** की भाँति इनमे भी सीता रावण की पुत्री मानी जाती है। दशग्रीव की पटरानी के एक कन्या उत्पन्न होती है जिसके जन्मपत्र मे लिखा है कि वह अपने पिता का नाश करेगी। फलस्वरूप वह समुद्र मे फेकी जाती है और बचने पर भारत के कृषको द्वारा पाली जाती है, इसका नाम लीलावती है। (लेकिन अन्य हस्त-लिपियो मे 'सीता' नाम का भी उल्लेख है)।

दो पुत्रो मे से किसे राज्य दिया जाय, अपने पिता की इस प्रकार की किंकर्त्तव्य-विमूढता देखकर रामन स्वेच्छा से किसी आश्रम मे तपस्या करने जाते है, और लक्ष्मण को राज्य दिलवाते है। कृषको के अनुरोध से रामन तपस्या छोडकर लीलावती (सीता) से विवाह करते है, और इसके बाद राज्यशासन ग्रहण करते है।

गुणभद्र मे सीता का हरण राजधानी के पास के अशोकवन मे होता है। **तिब्बतीय रामायण** मे भी ऐसा प्रतीत होता है, क्योकि इसका वर्णन वनवास के बाद मिलता है। इस वर्णन मे विशेषता यह है कि रावण सीता का स्पर्श नही करता तथा जटायु को रक्त से सने पत्थर खिलाकर मार डालता है। (दे० आगे अनु० ५०२ और ४७०)।

अनन्तर सीता की खोज, वानरो से मैत्री, हनुमान का प्रेषण आदि रावण-वध तक का वर्णन मिलता है। इसमे निम्नलिखित विशेषताएँ पाई जाती है, वालि-सुग्रीव द्वन्द्व मे माला के स्थान पर सुग्रीव की पुच्छ मे दर्पण बाधा जाता है, हनुमान आदि एक दूसरे की पुच्छ पकड कर स्वयप्रभा की गुफा मे प्रवेश करते है, रावण का मर्मस्थान उसका अँगूठा बताया गया है।

उत्तरकाण्ड से सम्बन्ध रखने वाली सामग्री (धोबी के कारण सीता-त्याग, कुश की वाल्मीकि द्वारा सृष्टि तथा अन्त मे राम-सीता सम्मिलन) **कथा-सरित्सागर** के अनु-सार है, अन्तर यह है कि लव तथा कुश का जन्म सीता-त्याग के पूर्व होता है (दे० अनु० ७२१)।

खोतानी रामायण

३१२ खोतान (पूर्वी तुर्किस्तान) की रामकथा, जो नवी शताब्दी ई० की मानी जाती है, तिब्बती रामायण से बहुत कुछ मिलती-जुलती है। फिर भी तिब्बती तथा खोतानी रामायण एक दूसरे का एकमात्र आधार नही हो सकते है, क्योकि एक ओर तिब्बती रामायण का उत्तररामचरित खोतानी रामायण मे नही पाया जाता है और दूसरी ओर खोतानी रामायण मे अनेक वृत्तान्त मिलते है, जिनका **तिब्बती रामायण** मे अभाव है।[1]

१ दे० बुलेटिन स्कूल ऑव ओरियन्टल स्टडिस, भाग १०, पृ० ५५६।

तिब्बती तथा **खोतानी रामायण** की निम्नलिखित बातो मे समानता पाई जाती है —

राम तथा लक्ष्मण, केवल दो भाइयो का उल्लेख।
सीता (दशग्रीव की पुत्री) की जन्म-कथा।
वनवास के समय सीता का विवाह।
रावण जटायु को रक्त से सने पत्थर खिलाता है।
द्वन्द्वयुद्ध के समय विजेता वानर की पुच्छ मे दर्पण बाधे जाने की कथा।
रावण के मर्मस्थान का उल्लेख।

खोतानी रामायण की निम्नलिखित विशेषताएँ तिब्बती रामायण मे नही मिलती

(१) बौद्ध प्रभाव प्रारम्भ मे एक बौद्ध प्रस्तावना दी गई है, जिसमे शाक्यमुनि द्वारा बौद्धधर्म के प्रचार का उल्लेख है। जातको की शैली के अनुसार महात्मा बुद्ध वक्ता है तथा अन्त मे रामकथा तथा बौद्ध इतिहास के पात्रो की अभिन्नता प्रकट करते है। रामकथा के समय बुद्ध राम थे तथा मैत्रेय लक्ष्मण, अत खोतानी रामायण मे अवतारवाद का उल्लेख नही हुआ है। बौद्ध प्रभाव के कारण राम की चिकित्सा के के लिए बौद्ध वैद्य जीवक को (जो जातको मे अत्यन्त प्रसिद्ध है) बुलाया जाता है, तथा आहत रावण का वध नही किया जाता है।

(२) रावणचरित के बाद अर्जुन कार्त्तवीर्य सहस्रबाहु तथा परशुराम की कथा मिलती है, लेकिन इसमे राम दाशरथि तथा परशुराम की कथा का मिश्रण हुआ है। दशरथ का पुत्र सहस्रबाहु परशुराम के पिता की धेनु चुराता है, जिसके कारण परशुराम सहस्रबाहु को मारते है। सहस्रबाहु के दो पुत्र राम और लक्ष्मण होते है, उनकी माता दोनो को बारह वर्ष तक पृथ्वी मे छिपाती है और इसके बाद राम परशुराम का वध करते है।

(३) राम और लक्ष्मण दोनो वन मे निवास करते है (निर्वासन का कारण नही दिया गया है) तथा दोनो सीता से विवाह करते है। यह उन देशो के बहुपतित्व की प्रथा का प्रभाव है।

(४) सीताहरण के वृत्तान्त मे सीता के रक्षणार्थ कुटी के चारो ओर रेखाएँ खीची जाने का उल्लेख है।

(५) सम्पाति-वृत्तान्त का परिवर्तित रूप (दे० आगे अनु० ५२७ टि०)।

(६) सेतुबन्ध के समय **कश्मीरी रामायण** से मिलता-जुलता एक वृत्तान्त मिलता है, जिसमे नल के फेके हुए पत्थरो के न डूबने का कारण बताया गया है।

(७) आहत रावण कर चुकाने की प्रतिज्ञा करता है और उसको बचाया जाता है। (दे० अनु० ५९५) ।

(८) अन्त मे सीता के विषय मे लोकापवाद तथा सीता के भूमि प्रवेश का निर्देश मिलता है।

इन विशेषताओ के कारण तिब्बती रामायण खोतानी रामायण का आधार नही हो सकता है। **महानाटक** की रामकथा मे भी सीता के रक्षणार्थ रेखाएँ खीची जाने का तथा रावण के वैद्य सुषेण के बुलाए जाने का उल्लेख हुआ है तथा **काश्मीरी रामायण** मे भी नल की कथा मिलती है। अत **खोतानी रामायण** के अधिकाश वाल्मीकि से भिन्न वृत्तान्त भारत मे भी पाये जाते है। यह चतुर्थ भाग के विश्लेषण से और स्पष्ट होगा।

ख—हिन्देशिया

३१३ हिन्देशिया मे रामकथा प्राचीन काल से विदित है, इसका प्रमाण नवी शताब्दी के एक शिव-मन्दिर के शिला-चित्रो से मिलता है। बाद मे जावा तथा मलय मे एक विस्तृत राम-साहित्य की रचना की गई है, जिसमे रामकथा के दो भिन्न रूप मिलते है (१) जावा के प्राचीन रामायण का रूप जो वाल्मीकीय कथा के अधिक निकट है तथा (२) अर्वाचीन रामकथा जिसमे वाल्मीकि से बहुत भिन्नता पाई जाती है। इन दोनो रूपो का प्रस्तुत परिच्छेद मे अलग वर्णन किया जाता है। इनकी सामान्य विशेषता यह है कि इसमे राम-भक्ति का भाव नही आया है। जावा के प्राचीनतम रामायण के रचयिता शैव थे तथा जिन दो मन्दिरो मे रामकथा की विस्तृत शिला-चित्र-माला है, वे भी दोनो शिव-मन्दिर हैं।

३१४ हिन्देशिया की प्राचीनतम राम-सम्बन्धी साहित्यिक रचना **रामायण ककविन** है, जो दसवी शताब्दी की मानी जाती है। आधुनिकतम खोज[२] से सिद्ध हुआ है कि योगीश्वर इसके रचयिता नही है। **रामायण ककविन** का लेखक अज्ञात ही है। डच अनुवाद[१] से पता चलता है कि इसका मुख्य आधार **भट्टिकाव्य**[३] है। ग्यारहवे अध्याय मे **भट्टिकाव्य** के कथानक की जितनी विशेषताओ का उल्लेख हुआ है वे सब **रामायण ककविन** मे भी पाई जाती है। प्रारम्भिक बारह सर्गो का विभाजन **भट्टि-**

---

१ दे० सी० हॉयकास, दि ओल्ड जवनीस रामायण। ऐम्सटेरडेम, १९५८।

२ दे० डच ओरियेन्टल जर्नल, भाग ७३-९४।

३ श्री मनमोहन घोष ने इस विशेषता की ओर विद्वानो का ध्यान आकर्षित किया है। दे० जर्नल ऑव ग्रेटर इडिया सोसाइटी, भाग ३, पृ० ११३।

काव्य के अनुसार हुआ है। अन्तर यह है कि **भट्टिकाव्य** का नवां अध्याय **रामायण ककविन** के नवें तथा दसवें अध्याय में विभक्त किया गया है। युद्ध के वर्णन पर रामायण ककविन अधिक विस्तार से जाता है, जिसमें **भट्टिकाव्य** के २२ सर्गों की सामग्री २६ सर्गों में दी गई है। दोनों रचनाओं में युद्धकांड की कथा तक का वर्णन किया गया है। फिर भी **भट्टिकाव्य** इसका एकमात्र आधार नहीं रहा है। **अभिषेक नाटक** तथा **महानाटक** के वृत्तान्त के अनुसार रावण सीता को निरुत्साहित करने के लिए राम तथा लक्ष्मण दोनों का मायामय शीष दिखलाता है। गुणभद्र में एक पत्र का उल्लेख हुआ है जिसे राम हनुमान द्वारा सीता के पास भेज देते हैं। **रामायण ककविन** में सीता अभिज्ञान स्वरूप चूड़ामणि के अतिरिक्त एक पत्र भी हनुमान को देती है। फिर भी पत्र की कल्पना इतनी स्वाभाविक है कि इसके कारण गुणभद्र का प्रभाव मानना अनावश्यक है। **ककविन** की दो अन्य विशेषताएं अन्यत्र नहीं मिलती। शबरी राम से अपनी कथा सुनाती हुई कहती है कि विष्णु ने वाराहावतार में मेरी माला खाई थी और मर गये थे, तब मैंने उनकी लाश खाई थी और फलस्वरूप मेरा मुख काला बन गया है। अनन्तर वह राम से अनुरोध करती है कि वह उसका मुख पोंछ कर उसे शुद्ध करें। इसके अतिरिक्त इन्द्रजित् की सात पत्नियों का उल्लेख है, जो अपने पति की ओर से युद्ध करती हैं और रणभूमि में मारी जाती हैं। रामायण ककविन की एक अन्तिम विशेषता त्रिजटा का अपेक्षाकृत महत्वपूर्ण स्थान है (दे० आगे अनु० ५४७)।

३१५ जावा में एक प्राचीन **उत्तरकांड** भी मिलता है, जिसमें वाल्मीकीय उत्तरकांड की कथा का गद्य में वर्णन किया गया है। इसके अतिरिक्त एक **चरित रामायण**[1] (अथवा कवि जानकी) भी पाया जाता है जिसके १०१ श्लोकों में रामायण के प्रथम छः कांडों की कथा के साथ व्याकरण के उदाहरण भी दिये गये हैं। अतः इस रचना पर भी **भट्टिकाव्य** का प्रभाव स्पष्ट है। हिमांशुभूषण सरकार[2] जावा की प्राचीन भाषा (कवि) की तीन और रचनाओं का उल्लेख करते हैं

(१) ११वीं शताब्दी का **सुमनसांतक ककविन** जिसका वर्ण्य विषय है इन्दुमती का जन्म, अज से उसका विवाह तथा दशरथ का जन्म।

(२) प्राचीन उत्तरकाण्ड पर आधारित **हरिश्रय ककविन** जिसमें विष्णु द्वारा माली तथा माल्यवान का वध वर्णित है (१३वीं श० के बाद)।

---

१ दे० संस्कृत टेक्स्ट्स फ्रॉम बाली, पृ० ८६, गायकवाड ओरियेन्टल सीरिज।

२ दे० इंडियन इन्फ्लुएन्सेस ऑन दि लिटरेचर ऑव जावा एण्ड बाली। कलकत्ता १९३४, पृ० २२४-२३१।

(३) **अर्जुनविजय** (१८वी श०), जिसकी अधिकारिक कथावस्तु अर्जुन सहस्त्रबाहु द्वारा रावण की पराजय है ।

३१६ जावा का आधुनिक **सेरत राम** भी **रामायण ककविन** की भाँति वाल्मीकीय कथा से बहुत कुछ मिलता-जुलता है । प्रारम्भ मे रावण-चरित का वर्णन दिया गया है, जो **रामायण** मे नही पाया जाता है । सेरत राम पद्य मे है , कवि का नाम यस दि पुरा है ।

३१७ मध्य जावा के परमबनन (परमब्रह्म) नामक स्थान पर नवी शताब्दी ई० का एक शिव-मन्दिर है । इस मन्दिर के चारो ओर की ऊँची दीवारो पर **रामायण** की समस्त घटनाओ को शिला-चित्रो मे अकित किया गया है । इसमे जिस राम-कथा का वर्णन किया गया है वह बहुत कुछ वाल्मीकीय कथा से मिलती-जुलती है । अनेक गौण बातो मे अवश्य **रामायण ककविन** से भिन्नता पाई जाती है, लेकिन हिन्देशिया की अर्वाचीन रामकथा की अधिकाश विशेषताओ का इसमे निर्देश नही मिलता । **सेरी राम** के अनुसार भरत सीताहरण के बाद ही राम से मिलकर उनकी पादुकाएँ अयोध्या ले जाते है किन्तु परमबनन मे भरत-मिलाप का स्थान **रामायण ककविन** के अनुसार सीताहरण के पूर्व ही माना गया है । वाल्मीकीय रामायण से जो किंचित् विभिन्नता इसमे है, इसका प्राय भारत मे भी उल्लेख पाया जाता है , उदाहरणार्थ

जटायु द्वारा राम को सीता की अगूठी दी जाने का वृत्तात **महानाटक** मे है ।

मछलियो के सेतु नष्ट करने की कथा **सेतुबध** तथा **बालरामायण** मे भी पाई जाती है ।

दशरथ की पुत्री (शान्ता) का उल्लेख **रामायण** के गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठ, भवभूति के **उत्तररामचरित** आदि मे किया गया है ।

लक्ष्मण के तरकश मे सुग्रीव के आसुओ का पानी जमा होना तथा इस तरह सुग्रीव का पता लगाया जाना, इससे मिलता-जुलता वृत्तान्त महेश्वरदास कृत **टीकारामायण** मे मिलता है (दे० अनु० ५१२)

३१८ पूर्व जावा के पनतरन नामक स्थान के चौदहवी शताब्दी पूर्वार्द्ध के एक शिव-मदिर मे भी रामकथा शिला-चित्रो मे अङ्कित की गई है । यह कथा प्राचीन **रामायण ककविन** के कथानक से अभिन्न है, जिससे पता चलता है कि यद्यपि बाद मे अर्वाचीन रामकथा अधिक लोकप्रिय हुई फिर भी **रामायण ककविन** का भी कुछ महत्त्व बना रहा ।

हिन्देशिया की अर्वाचीन रामकथा

सिहावलोकन

३१६ **रामायण ककविन** की प्राचीन परम्परा के अतिरिक्त हिन्देशिया म राम-कथा का एक अर्वाचीन रूप भी प्रचलित है, जो अधिक लोकप्रिय है और जिसके आधार पर आधुनिक समय तक सुमात्रा और जावा मे रामकथा सम्बन्धी नाटको का अभिनय होता हे। जावा का नाटक-साहित्य प्राय **सेरत काड** तथा **राम केलिग** पर आधारित है। बाली का "वायाग वोग" नामक नाटको का पूरा वग (जिसमे अभिनेता चेहरा नही पहनते) केवल रामायण के दृश्य ही प्रस्तुत करता है। रामकथा का यह अर्वाचीन रूप हिन्देशिया से हिन्दचीन, श्याम और ब्रह्मदेश तक फैल गया है।

हिन्देशिया की अर्वाचीन रामकथा[1] के विस्तृत साहित्य की सामग्री का परिचय निम्नलिखित तालिका मे दिया गया हे

(अ) मलयन अर्वाचीन रामकथा।

हिकायत सेरीराम के तीन साहित्यिक पाठ

(१) रोरन्दा वान ऐसिगा का सस्करण (ऐमस्टरडेम, १८४३)।

(२) शेलाबेर का सस्करण (ज० रॉ० ए० सो० स्ट्रेट्स ब्रैच, भाग ७१, दिसबर १६१५)। इसका अग्रेजी सक्षेप भी प्रकाशित हे (दे० ज० रॉ० ए० सो०, एस० बी०, भाग ७०, पृष्ठ १८०-२०७)।

(३) राफल्स मलय हस्तलिपि का पाठ। (ज० रॉ० ए० सो० १६४८, पृ० ६६)। इसका कथानक प्रथम दो सस्करणो से अधिक भिन्न नही हे। प्रारभ मे रावण का पूर्वचरित्र दिया गया हे, जो अन्य पाठो म नही मिलता। इस कथा की एक अन्य हस्तलिपि[2] का परिचय सन १६६३ ई० मे मिला। इसमे रावण के पूर्व-चरित (अत्याचार, पराभव तपस्या) के विषय मे अतिरिक्त सामग्री है तथा हनुमान का एक जन्मकथा हे जो महाशिवपुराण के वृत्तान्त से साम्य रखता है (दे० आगे अनु० ६७३)। राफल्स के पाठ की एक विशेषता यह है कि राम की आज्ञानुसार लक्ष्मण शूर्पणखा से विवाह करते है।

इसके अतिरिक्त सेरी राम पर निर्भर अनेक कथाएँ जनसाधारण मे प्रचलित है। उदाहरणार्थ

---

१ प्रस्तुत परिच्छेद मे मुख्यतया दो रचनाओ से सहायता मिली है —
(१) डब्लू० स्टुटरहाइम राम लेगडन एड रामरेलिफ्स इन इडोनेशियन।
(२) ए० चीसनिस डी राम सागे बाई डेन मलाइयन।

२ दे० बुलेटिन ऑव स्कूल ऑव ओरियटल स्टडिस, भाग २६, पृ० ५३१।

(४) **हिकायत महाराज रावण** (ज० रॉ० ए० सो०, मलयन ब्रँच, भाग ११)। इसका कथानक सेरी राम मे बहुत मिलता-जुलता हे। विशेषता यह है कि इसमे रावण की पुत्री सोती हुई सीता के वक्षस्थल पर रावण का एक चित्र रख देती है और इसके कारण राम सीता को त्याग देते ह (दे० आगे अनु० ७२३)।

(५) **श्रीराम** । डब्लू ई० मैक्सवेल द्वारा सम्पादित (दे० ज० रॉ० ए० सो० स्ट्रेटस ब्रँच, भाग १७, १८८६)। अत मे (पृ० ८५-११५) इस रचना का अँगरेजी सक्षेप भी दिया गया है। इसमे हनुमान के जन्म से लेकर लका मे राम की विजय तक की कथा हिकायत सेरी राम के आधार पर दी गई है।

अतरग प्रमाण के आधार पर यह अधिक से अधिक १६वी श० ई० की रचना हो सकती है।[1]

(६) रामकथा का **पातानी पाठ** (दे० आगे अनु० ३२१)।

(आ) जावा की अर्वाचीन रामकथा।

(१) **राम केलिग** । इस रचना मे मलयन सेरी राम से कोई महत्वपूर्ण विभिन्नता नही मिलती।

(२) **सेरत काण्ड** (दे० आगे अनु० ३२२)।

इसके अतिरिक्त जावा मे और बहुत सी काण्ड नामक रचनाएँ मिलती हैं लेकिन डॉ० स्टुटरहाइम सेरत काण्ड को जावा की अर्वाचीन रामकथा का वास्तविक और सर्वाधिक प्रचलित रूप मानते है।

इस साहित्य के रचनाकाल का ठीक निर्णय नही हुआ है। अधिकाश विशेषज्ञो का मत है कि इसकी रचना पद्रहवी या सोलहवी शताब्दी मे हुई थी[2] फिर भी सम्भव है इसके पहले **सेरी राम** आदि की कुछ सामग्री प्रचलित हुई हो। **सेरी राम** की प्राचीनतम हस्तलिपि १६३३ की हे।

हिंदेशिया के अर्वाचीन रामकथा-साहित्य के इस सिहावलोकन के पश्चात् मुख्य रचनाओ का परिचय दिया जाता है।

हिकायत सेरी राम

३२० इस विस्तृत रचना मे रावण-चरित से लेकर सीतात्याग के बाद राम-सीता-सम्मिलन तक की कथा वर्णित है। निवन्ध के अन्तिम भाग मे वाल्मीकि से भिन्न

---

१ दे० सरावाक म्यूसीयम जर्नल, भाग १४, पृ० ४६८-४८५।

२ आर० ओ० विन्स्टेड, दि मलय वर्शन ऑव दि रामायण। वी० सी० लॉ वाल्यूम, भाग २, पृ० १।

प्रसगो का तुलनात्मक अध्ययन किया जायगा। यहाँ सारी रचना का ढाँचा तथा प्रमुख विशेषताए प्रस्तुत करनी है। **सेरी राम** का कथानक निम्नलिखित भागो मे विभक्त किया जा सकता है

(१) **रावण-चरित**। दुराचार के कारण रावण अपने पिता द्वारा निर्वासित किया जाता हे।[1] रावण-निर्वासन के इस वर्णन मे सिहलद्वीप के विजय नामक प्रथम राजा की कथा का मिश्रण हुआ है (विजय की कथा **महावश** के छठे सग मे मिलती है)। सिंहलद्वीप मे पहुँचकर रावण तपस्या करके (नबी आदम के अनुरोध से) अल्लाह से चार लोको का राज्याधिकार प्राप्त करता है। प्रत्येक लोक की किसी राजकुमारी से विवाह कर रावण अनेक पुत्रो को उत्पन्न करता है, जो वाद मे राजा बन जाते हे

इन्द्रजित्—देवलोक का राजा
पाताल महारायन (महिरावण) —पाताल का राजा
गगा महासूरी—नागलोक का राजा

इसके वाद रावण पृथ्वी प लौटकर लकापुरी बसाता है और इसमे अपने भाइयो कुम्भकर्ण, विभीषण तथा शूर्पणखा के पति बर्गासीगा को क्रमश सेनापति, ज्योतिषी तथा प्रधान गुप्तचर के पद पर नियुक्त करता है।

(२) **राम का जन्म**। दशरथ के मदूदारी तथा बलियादारी के साथ विवाह के वर्णन के बाद उनके पुत्रेष्टि यज्ञ का उल्लेख हे, जिसमे एक काक बलियादारी का पायस चुराकर उसे लका ले जाता है (दे० अनु० ३५७)। अनन्तर अधमुनि-पुत्र-वध और (राम, लक्ष्मण, वर्दन, चित्रदन) चार पुत्रो तथा (कीकवी नामक) एक पुत्री का जन्म वर्णित है।

(३) **सीता का जन्म और विवाह**। मदूदारी के सौदर्य का वर्णन सुनकर रावण उसे दशरथ से माँगता है तथा एक माया मदूदारी को लका ले जाता है, जिसके गर्भ से सीता उत्पन्न होती हे (दे० आगे० अनु० ४२८)। अशुभ जन्मपत्र के कारण सीता समुद्र मे फेकी जाती है तथा महारेसि (महर्षि) कली द्वारा पाली जाती है। महारेसि कली के यहाँ सीता के स्वयवर मे रावण अन्य राजाओ के असफल प्रयत्नो के पश्चात् राम परीक्षा मे सफल होकर सीता से विवाह करते हे (दे० आगे अनु० ३६६)। विश्वामित्र-आगमन तथा परशुराम-तेजोभग के वृत्तान्त भी दिये गये है।

(४) **राम का वनवास**। बलियादारी के अनुरोध से दशरथ उसके पुत्र वर्दन (भरत) को राज्य देने का निश्चय करते है। राजा के सोते समय बलियादारी राम को

---

१ रावण का पूर्व इतिहास राफल्स मलय हस्तलिपि मे वर्णित है, दे० अनु० ६४६ टि० और ६४८ टि०।

बुलाकर दशरथ के इस निश्चय का समाचार सुनाती है। यह सुनकर राम प्रसन्न होकर ऋषि बनने के लिए सीता और लक्ष्मण के साथ वन को प्रस्थान करते है। वन मे पहुँच कर और कुटी बनाकर राम कुश-घास से सात लडकियो तथा पाँच लडको की सृष्टि करते है। ये नौकर बनकर घर का काम करते हे, जिसमे राम, लक्ष्मण, सीता निश्चिन्त होकर साधना कर सकते हें।

रावण द्वारा शूर्पणखा के पति बर्गामीगा के वध के बाद उसका पुत्र दर्सासीगा अलौकिक खग सिद्ध करने के लिए तपस्या करने जाता है। अनन्तर बालि-रावण-युद्ध और अगद (मदोदरी के पुत्र) का जन्म वर्णित है। इसके बाद अजनी-वालि-सुग्रीव की उत्पत्ति (तीनो गोतम की सन्तान हे, दे० आगे अनु० ५१४) तथा हनुमान्-जन्म का वर्णन किया गया है। इसके अनुसार हनुमान् राम के वीर्य से उत्पन्न हुए हे (दे० आगे अनु० ६७५)।

(५) **सीता का हरण और खोज**। किसी दिन लक्ष्मण तपस्या करते हुए शूर्पणखा के पुत्र दर्सासीगा का सयोग से वध करते हैं (दे० आगे अनु० ६३२)। बाद मे शूर्पणखा अपने पुत्र से मिलने आती हे और लक्ष्मण द्वारा निरूपित होकर अपने भाई रावण के पास जाती है। शेष कथानक बहुत कुछ वाल्मीकि के क्रम के अनुसार है। वालि के मित्र मम्बूरान की कथा हिन्दचीन तथा श्याम मे भी मिलती हे (दे० अनु० ५२४)।

(६) **युद्ध**। युद्धकाण्ड की सामग्री मे वाल्मीकि से कोई महत्वपूर्ण अन्तर नही पाया जाता है। बगाली रामायण की भस्मलोचन की कथा तथा महिरावण की कथा दोनो यहाँ भी किंचित् परिवर्तन सहित दी गई है। इन्द्रजित् की पत्नी सती बनने का तथा रावण के मर्मस्थान (दाहिने कान के पीछे उसका एक छोटा ग्यारहवा सिर) का भी उल्लेख किया गया हे। युद्ध के बाद आहत रावण का शरीर सेरन्दीब पर्वत के तल मे पडा रहता है और सारी सेना उसको देखने जाती हे। विभीषण (जो राम के मन्त्री बन जाते है) राम की बहन कीकवी देवी से विवाह करते ह। एक और विशेषता यह है कि कुम्भकर्ण-वध के बाद तथा इन्द्रजित्-वध के बाद भी युद्ध चालीस-चालीस दिन के लिए स्थगित किया जाता है।

(७) **सीता-त्याग तथा राम-सीता सम्मिलन**। इस अन्तिम भाग मे रावण के चित्र के कारण सीता-त्याग का वर्णन मिलता है (दे० आगे अनु० ७२३)। अनन्तर लव के जन्म तथा महर्षि कलि द्वारा कुश की सृष्टि की कथा दी गई है। लक्ष्मण से कुश-लव के युद्ध के बाद राम-सीता-सम्मिलन वर्णित है। अत मे कुश, लव तथा वानर-सेना के अनेक सेनापति राक्षसियो से विवाह करते है।

हिन्देशिया की प्राचीन रामकथा के मुख्य आधार के विषय मे सदेह की गुन्जायश नही होती (दे० अनु० ३१४), किन्तु सेरी राम का मूलस्रोत निर्धारित करना अस-

भव सा प्रतीत होता है। फिर भी इतना स्पष्ट है कि सेरी राम मे, जो वाल्मीकि से भिन्न बहुसख्यक प्रसग मिलते हैं, उनका आधार प्राय भारतीय ही है। **जैनी** (अनु० ४४६, ५८५, ६०५, ६३२, ६५५ और ७२३) तथा **बगाली** (अनु० ३४३, ३८८, ५५२, ५७६, ५६८, ६१३, ६१४ और ७२३) रामकथाओ का प्रभाव निर्विवाद है। उडिया राम-साहित्य, रगनाथ रामायण तथा कम्ब रामायण अर्थात् भारत के पूर्वी तट की रचनाओ का प्रभाव भी सेरी राम पर पडा है (दे० अनु० ४५४, ४७४, ५१२, ५१४, ५१६, ५५२, ५७८, ५८३, ५८५, ५६१ और ६७५)। सेरी राम के अनेक प्रसग आनन्द रामायण (अनु० ३५०, ४२८, ५१७, ५३६ और ५५२), कथासरित्सागर (अनु० ७४५, ७५६), सेरात्रणचरित (अनु० ६१४) अथवा तोरवे रामायण (अनु० ५१३) मे विद्यमान है। सेरी राम पर रामायण ककविन (अनु० ४६६, ५७४, और ५८३) तथा मुसलमानी धर्म (अनु० ३३६ और ६४६) का जो प्रभाव पडा है, वह एक प्रकार से अनिवार्य ही था।

पतानी रामकथा

३२१ **पातानी रामकथा**[1] मे सेरी राम के अनेक पात्रो का महासिकु नामक तपस्वी मे एकीकरण हुआ है। प्रारभ मे उनकी पत्नी की चार सन्तानो का वर्णन है एक पुत्री, बालि, सुग्रीव और बिलो। दूसरे भाग मे महासिकु की दत्तक पुत्री मदुदकी की कथा मिलती है। मदुदकी रावण से विवाह करती है और उसके गर्भ मे सीता का जन्म होता है। सीता के त्यक्त किये जाने पर महासिकु उसे पुत्री-स्वरूप ग्रहण करते है। उनका एक और मेरावी नामक (राम) दत्तक पुत्र है, जिसको महासिकु सीता पर अनुरक्त होने के कारण घर से निकालते है।

अनन्तर सीता के स्वयवर का वर्णन दिया गया है, जिसमे रावण भी आया था। शेष कथानक **सेरी राम** के अनुसार है। लेकिन इसमे केवल रावण-वध तक की कथा मिलती है।

जावा का सेरत काड

३२० **सेरतकाड** की रामकथा **सेरी राम** से बहुत भिन्न नही है। इसमे विशेषता यह है कि इसकी विस्तृत भूमिका मे नबी आदम की कथा के बाद जावा के प्राचीन राजाओ की वशावली के वर्णन के अन्तर्गत देवताओ की अनेक पौराणिक कथाएँ मिलती है।

---

१ रायल बतेवियन सोसाइटी का जयन्ती ग्रन्थ। बतेविया (१६२६), पृ० ४२३।

अनन्तर रावरा-चरित का वरान किया गया है, जिसमे वाल्मीकीय उत्तरकाड का प्रभाव स्पष्ट है। क्रमानुसार निम्नलिखित विषय पाए जाते है राक्षस-वशावली के बाद रावरा का जन्म, निर्वासन (सेरी राम के अनुसार), तप, वरप्राप्ति (सेरी राम के अनुसार) तथा वैश्रवरा पर विजय। अपने पिता की पराजय के फलस्वरूप विल्मनरज (विमान), वैश्रवरा का पुत्र, रावरा का वाहन बन जाता है।

इसके बाद रावरा द्वारा विष्णु पर विजय तथा विष्णु के अनेक अवतारो से (परविजय, कार्तवीर्य आदि) युद्ध का वर्णन किया गया है। रामावतार का वर्णन इस प्रकार है। विष्णु, वासुकी तथा श्री अवतार लेने के उद्देश्य मे पृथ्वी की ओर प्रस्थान करते है। मार्ग मे रावरा उनसे युद्ध करता है, विष्णु तथा वासुकी भागकर दशरथ के पुत्रो के रूप मे प्रकट होते है। रावरा से डरकर श्री अपने को एक अडे मे बदल देती है। रावरा इसे खाता है और फलस्वरूप श्री मन्दोदरी के गर्भ से जन्म लेती है।

शेष कथानक बहुत कुछ **सेरी राम** की कथा मे मिलता-जुलता है। सीतात्याग (रावरा-चित्र के काररा) के पश्चात् सीता के केवल एक पुत्र कुतलव का उल्लेख है, जो लक्ष्मरा आदि से युद्ध करता है। अनन्तर राम-सीता का सम्मिलन होता है। लव को राज्यभार सौपकर राम (सीता, लक्ष्मरा आदि के साथ) तपस्या करने जाते है। अत मे एक अनल नामक वानर अपने को अग्नि मे बदल देता है और इसमे प्रवेश कर राम, सीता, लक्ष्मरा, विभीषरा, सुग्रीव, अगद आदि सब भस्मीभूत हो जाते है। हनुमान् को आहत रावरा पर पहरा देने का कार्य दिया गया था। अत वह दूसरो के साथ अग्नि मे प्रवेश नही करते।

ग—हिन्दचीन, श्याम, ब्रह्मदेश

हिन्दचीन

३२३ इतिहासज्ञो का अनुमान है कि पहली शताब्दी ई० से लेकर भारतीय व्यापारी अपने यहाँ की संस्कृति का प्रचार हिंदचीन मे करने लगे थे। फलस्वरूप पूर्व हिन्दचीन मे चम्पा राज्य की स्थापना हुई थी, जिसके सातवी शताब्दी के शिलालेखो से पता चलता है कि **वाल्मीकि रामायण** का वहाँ पर्याप्त प्रचार हुआ होगा। राजा प्रकाश धर्म (सातवी श० ई० उत्तरार्ध) के समय के एक वाल्मीकि-मदिर मे वाल्मीकि की एक मूर्ति मिली है। इस मदिर के एक शिलालेख मे श्लोकोत्पत्ति तथा वाल्मीकि के विष्णु-अवतार होने का उल्लेख किया गया है[1]

---

१ दे० बलेटिन एकोल फ्रान्सेस एक्सट्रेम ओरियन भाग २८, पृ० १४७।

यस्य शोकात् समुत्पन्न श्लोक ब्रह्माभिपूज (ति)
विष्णो पुस पुराणस्य मानुषस्यात्मरूपिण ॥

उस समय का कोई साहित्य सुरक्षित नही है। अनाम मे अठारहवी शताब्दी की एक सक्षिप्त रामकथा का प्रचार था, जिसका कथानक **वाल्मीकि रामायण** से बहुत भिन्न नही है। अन्तर यह है कि दशानन का राज्य अनाम के दक्षिण भाग मे तथा दशरथ का राज्य अनाम के उत्तरीय भाग मे माना जाता है और रावण सेना सहित दशरथ के राज्य पर आक्रमण कर सीता को हर लेता है।[1]

प्रथम श० ई० मे भारतीयो ने दक्षिण कम्बोदिया मे ख्मर जाति के बीच फ़ूनान राज्य स्थापित किया था। छठी श० ई० मे एक अधीनस्थ राजा ने फ़ूनान विरुद्ध विद्रोह कर उत्तर मे कम्बुज नामक राज्य स्थापित किया, जो १४वी श० ई० तक फलता-फूलता रहा।[2] चीनी इतिहास मे उस राज्य का नाम चेन-ला रखा गया है। वहा सैकडो मदिरो के खण्डहर मिलते है, जिनका काल नवी और तेरहवी शताब्दी के बीच का माना जाता है। प्राचीन राजधानी अगकोरवाट के एक विशाल मन्दिर मे रामायण, महाभारत तथा हरिवश की कथाओ को लेकर बहुत से शिला-चित्र अकित किए गए हैं, जिन पर जावा की कला का प्रभाव स्पष्ट है। इस मदिर का समय ११वी-१२वी श० ई० है।

३२४ ख्मेर साहित्य की सबसे कलात्मक रचना **रामकेर्ति**[3] है, जिसका रचयिता तथा रचनाकाल अज्ञात है। प्राचीनतम हस्तलिपियाँ १७वी शताब्दी की है किन्तु वे अपूर्ण है। कथानक विश्वामित्र-यज्ञ के वर्णन से प्रारम्भ होकर इन्द्रजित्-वध पर रुक जाता है (सर्ग १-१०)। इसके बाद सीता-त्याग से लेकर लव-कुश-युद्ध तक का वर्णन ६ सर्गो मे किया गया है (दे० सर्ग ७५-८०) किन्तु **रामकियेन** (श्याम के रामायण) से तुलना करने पर अनुमान किया जा सकता है कि सर्ग ८० रामकेर्ति का अन्तिम सर्ग नही है।

रामकेर्ति के फ्रेंच अनुवाद[4] से इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ निर्धारित की जा सकती है

(१) लेखक कोई धार्मिक बौद्ध है, जो राम को नारायण का अवतार मानते

---

१ दे० बुलेटिन एकोल फ्रासेस एक्सट्रेम ओरियन, भाग ५, पृ० १३८।

२ दे० ए० फुशे सर आशुतोष मुकर्जी वाल्युम, भाग ३, पृ० १ आदि।

३ इसका उच्चारण **रेआमकेर** अथवा **रियामके** होता है।

४ मै अनुवादक श्री एफ० मारटिनी का आभारी हूँ, जिन्होने मुझे अपनी अप्रकाशित पाण्डुलिपि निरीक्षणार्थ दी है।

हुए भी, उनको बोधिसत्व की भी उपाधि देता है तथा कई स्थलो पर बौद्ध शब्दावली का प्रयोग करता है ।

(२) यद्यपि **रामकेर्त्ति** पर **सेरी राम** की गहरी छाप है, फिर भी लेखक ने **वाल्मीकि रामायण** तथा **सेरी राम** की कथाओं का समन्वय करने का प्रयत्न किया है, फलस्वरूप **सेरी राम** की अपेक्षा **रामकेर्त्ति वाल्मीकीय रामायण** के अधिक निकट है । **सेरी राम** मे दशरथ की केवल दो रानियो का उल्लेख है । **रामकेर्त्ति** मे तीनो के नाम वाल्मीकि के अनुसार ही दिये गये है । **रामकेर्त्ति** मे रावण की सीता-स्वयवर मे उपस्थिति की ओर सकेत नही मिलता, सेरी राम के अनुसार रावण भी इसमे आया था । **सेरी राम** मे राम स्वेच्छा से वन के लिए प्रस्थान करते है, जबकि **रामकेर्त्ति** मे कैकमी (कैकेयी) के अनुरोध से राम को निर्वासित किया जाता है । **सेरी राम** मे लक्ष्मण द्वारा शूर्पणखा के पुत्र के वध का वृत्तान्त मिलता है, जिसका उल्लेख **रामकेर्त्ति** मे नही है । **ख्मेर रचना** मे सीता जनक की दत्तक पुत्री मानी जाती है तथा राम द्वारा परित्यक्त होने पर वाल्मीकि के आश्रम मे निवास करती है । **सेरीराम** मे सीता महारेसि कली की दत्तक पुत्री है तथा त्याग के बाद उनके यहाँ रहती है । **सेरी राम** मे हनुमान राम के पुत्र माने जाते है किन्तु **रामकेर्त्ति** के अनुसार वह वायु और अजना की सन्तान है ।

(३) निम्नलिखित सामग्री का मिलता-जुलता रूप **मलयन सेरी राम** मे भी मिलता है, जिससे स्पष्ट है कि **ख्मेर रामायण** तथा **सेरी राम** का गहरा सम्बन्ध है ।

- एक असुर, काक का रूप धारण कर विश्वामित्र-यज्ञ भङ्ग करने का प्रयत्न करता है और विश्वामित्र उसे मारने के लिए राम तथा लक्ष्मण को धनुष-बाण देते है (दे० अनु० ३८६) ।
- जटायु-रावण-युद्ध मे सीता की अँगूठी का उल्लेख (दे० अनु० ४७१)। लक्ष्मण द्वारा १४ वर्ष तक नीद तथा भोजन का त्याग (दे० अनु० ४६१) ।
- लक्ष्मण-हनुमान का युद्ध (दे० अनु० ५१२) ।
- सुग्रीव को अपने सामर्थ्य का विश्वास दिलाने के लिए राम सात तालो का एक ही बाण से भेदन करते है । ये सात ताल महाराज नाग की पीठ पर स्थित है (दे० अनु० ५१६) ।

—मम्बूरानू का वृत्तान्त, जिसे हनुमान् राम के पास ले आते है। (दे० अनु० ५२४)।
—सेतु बाँधने के समय मछलियो का उत्पात। (दे० अनु० ५७८)।
—रावण के चित्र के कारण सीता-त्याग (दे० अनु० ७२४)। वाल्मीकि द्वारा सीता के एक पुत्र की सृष्टि (दे० अनु० ७४४)। राम-सेना से सीता के पुत्रो का युद्ध (अनु० ७५०)।

(४) कथा का निर्वहण मौलिक है (दे० अनु० ७५७)।

श्याम

३२५ श्याम देश मे रामकथा **राम कियेन** (अर्थात् रामकीर्त्ति) के नाम से विख्यात है। अपेक्षाकृत प्राचीनकाल से वहाँ के नाटको मे रामकथा का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। प्रारम्भिक नाटको के दो वर्गों (खोन, जिसमे अभिनेता चेहरा लगा लेते है और रबम) का एक मात्र विषय रामकथा ही था और एक तीसरा वर्ग (नाग अर्थात् छाया-नाटक) प्रधानतया रामकथा के दृश्य प्रस्तुत करता था।[1] १८वी शताब्दी मे नाटको के एक नवीन रूप का प्रचलन हुआ (वेयुक रोग), जिसकी कथावस्तु रामकियेन पर आधारित थी। १८वी तथा १९वी शताब्दी के रामकथा विषयक नाट्य-साहित्य की कुछ सामग्री सुरक्षित है।

राम कियेन की प्राचीन हस्तलिपियाँ १७वी शताब्दी की है। इस रामायण के दो भिन्न सस्करण १८वी शताब्दी उत्तरार्द्ध मे निकाले गये है तथा इसका एक तीसरा सस्करण नाटक के रूप मे १९वी श० पूर्वार्द्ध मे प्रकाशित हुआ था। बाङ्कोक के चिडला ओरियेंटल सीरीज मे रामकियेन का अग्रेजी सक्षेप रामकीर्त्ति के नाम से प्रकाशित किया गया है। अगले अनुच्छेद मे जो रामकियेन के कथानक का विश्लेषण किया गया है, वह उस रामकीर्त्ति के दूसरे सस्करण (सन् १९४१) पर निर्भर है।

१७वी शताब्दी की अनेक छोटी रचनाओ का उल्लेख मिलता है, जिनकी कथा-वस्तु रामायण की किसी घटना से सम्बन्ध रखती है, उदाहरणार्थ वालि का सुग्रीव को उपदेश देना कि किस प्रकार राम के दरबार मे व्यवहार करना चाहिए तथा दशरथ का राम को राजनीति तथा धर्म के विषय मे शिक्षा देना।

१८वी तथा १९वी शताब्दी मे कई कवियो ने रामकियेन नामक महाकाव्यो की रचना की है, उदाहरणार्थ थोनबुरी, फुत्तायोत्फा (इनका रामकियेन सर्वाधिक विस्तृत है) तथा फुत्तालेउत्ला।

---

१ दे० पी० श्वाइसगुट, एट्यूड सुर ला लिटेराटुर सियामॉइस (पैरिस, १९५१), पृ० ६०-६१।

३२६ रामकियेन का सक्षिप्त अग्रेजी रूपान्तर ४५ अध्यायो मे विभक्त किया गया है। [1] प्रथम अध्याय मे अयोध्या के राजवश का परिचय मिलता है तथा द्वितीय अध्याय मे राम तथा उनके भाइयो के जन्म का वर्णन दिया गया है। अनन्तर लका का निमाण, रावण के कृत्य तथा रामकथा के अनेक पात्रो की जन्मकथा मिलती है, अर्थात् वालि-सुग्रीव, हनुमान्, अगद और सीता (अध्याय ३-११)। इसके बाद विश्वामित्र के यज्ञ से लेकर सीता-त्याग के पश्चात् राम-सीता-सम्मिलन की समस्त कथा प्रस्तुत की गई है (अध्याय १२-४५)। **रामकियेन** के कथानक की निम्नलिखित विशेपताएँ उल्लेखनीय है

(१) रामकियेन के पात्र सबके सब स्याम देश के निवासी है तथा रामायण का घटना-स्थल स्याम मे ही माना गया है।

(२) इसका मुरय आधार रमेर भाषा का रामकेर्ति है। दोनो मे कथा का निर्वहण सदृश है (दे० ७५७)। रामकेर्त्ति की भॉति रामकियेन भी सेरी राम की अपेक्षा वाल्मीकीय कथा के अधिक निकट हे। रामकेर्त्ति तथा वाल्मीकि रामायण की तुलना करते हुए रामकेर्त्ति की जितनी विशेषताओ का उल्लेख हुआ है (दे० ऊपर अनु० ३२४), वे प्राय सब रामकियेन मे भी विद्यमान है। अन्तर यह है कि रामकियेन मे हनुमान् को अजना तथा शिव का पुत्र माना गया है तथा लक्ष्मण द्वारा शूर्पणखा के पुत्र का वध वर्णित है। रामकियेन का एक अन्य प्रसग, राम-सीता का पूर्वानुराग, न वाल्मीकि रामायण मे मिलता हे और न रामकेर्त्ति मे किंतु कुछ बातो मे रामकियेन रामकेर्त्ति की अपेक्षा वाल्मीकीय कथा के अधिक निकट है—अयोमुखी का वृत्तान्त रामकेर्त्ति मे नही हे किन्तु वह रामकियेन मे विद्यमान है। रामकियेन के अनुसार सीता-स्वयवर का धनुष ईश्वर (शिव) का है, जबकि रामकेर्त्ति मे जनक स्वय उस इद्रजाल से बनाते हे। रामकियेन मे वाल्मीकीय कथा के अनुसार अगस्त्य राम का दिव्य अस्त्र प्रदान करते हे किन्तु इसका उल्लेख रामकेर्त्ति म नही हुआ है। उपर्युक्त विश्लेषण का निष्कर्ष यह ह कि रामकेर्त्ति के अतिरिक्त रामकियेन पर वाल्मीकि रामायण का भी सीधा प्रभाव पडा है।

(३) रामकेर्त्ति की भॉति रामकियेन भी बहुत से अर्वाचीन वृत्तान्तो के लिए मलयन सेरी राम पर निर्भर है। वाल्मीकि से भिन्न, जो सामग्री सामान्य

---

१ विस्तृत विवरण के लिए, दे० जर्नल ऑॅव दि असम रिसर्च सोसाइटी, भाग १५ (१९६३ मे प्रकाशित)

रूप से रामकेर्त्ति तथा सेरी राम मे मिलती है (दे० ऊपर अनु० ३२८, ३), वह प्राय. अक्षरश: रामकियेन मे भी पाई जाती है। अन्तर यह है कि रामकियेन म सुग्रीव से मैत्री करने के पूर्व राम की किसी परीक्षा का उल्लेख नही है और लक्ष्मण के सयम का भी निर्देश नही मिलता है।

ऐसा प्रतीत होता है कि रामकियेन पर सेरी राम का सीधा प्रभाव भी पडा है, क्योकि निम्नलिखित सामग्री रामकेर्त्ति मे नही है किन्तु वह रामकियेन तथा सेरी राम दोनो मे विद्यमान है[1]

—महिरावण का राम को पाताल ले जाना (दे० अनु० ६१४)।
—नम्पलोचन की कथा से मिलता-जुलता वृत्तान्त (दे० अनु० ६१३)।
—वालि-सुग्रीव-अजना का अहल्या की सन्तान के रूप मे उल्लेख (दे० अनु० ५१४)।
—अगद की जन्मकथा, जिसके अनुसार वह वालि तथा मन्दोदरी का पुत्र है (अनु० ६५५)।
—सीता का लका मे जन्म (अनु० ४१५-४१६)।
—हनुमान तथा नल का कलह (अनु० ५७६)।

(४) रामकेर्त्ति, वाल्मीकि रामायण तथा सेरी राम के अतिरिक्त रामकियेन का कोई मौलिक आधार ग्रन्थ रहा होगा कि नही इस प्रश्न का निश्चयात्मक उत्तर तभी सम्भव होगा, जब रामकेर्त्ति की कोई पूरी हस्तलिपि मिल जायेगी। रामकियेन मे विभीषण-मन्दोदरी के विवाह का उल्लेख मिलता है, यह प्रसग सेरी राम अथवा रामकेर्त्ति मे नही आया है किन्तु वह अनेक भारतीय राम-कथाओ मे उल्लिखित है। निम्नलिखित सामग्री श्याम देश को छोडकर अब तक और कही नही मिली है

—सेतुबन्ध के पूर्व रावण का तपस्वी के रूप मे राम के पास पहुँचना और युद्ध छोड देने के लिए उनसे अनुरोध करना (अध्याय २५)।
—रावण के इस निष्फल प्रयत्न के अनन्तर बेजकाया (विभीषण की पुत्री) का सीता का रूप धारण कर मृतवत् राम के शिविर के पास की नदी के ऊपर बह जाना (अध्याय २५)।
—रावण का ब्रह्मा को बुला भेजना, लका मे ब्रह्मा का आगमन, रावण द्वारा राम पर अभियोग। ब्रह्मा का राम को बुलाना और वाद

---

१ रामकेर्त्ति की अपूर्ण हस्तलिपियो के कारण इस समस्या का अन्तिम निर्णय नही हो पाता है।

मे सीता को भी। अन्त मे ब्रह्मा का सीता को लौटाने की आज्ञा देना तथा रावण के अस्वीकार करने पर ब्रह्मा का रावण को शाप देना (अध्याय ३२)।

—रावण-वध तथा राम के अयोध्या मे प्रत्यागमन के बाद रावण के एक पुत्र का विभीषण के विरुद्ध विद्रोह करना। भरत तथा शत्रुघ्न का राम-सेना के साथ लका की ओर प्रस्थान करना और रावण के पुत्र को पराजित कर विभीषण को पुन राज्य दिलाना। इस युद्ध का विस्तृत वर्णन प्रथम युद्ध की पुनरावृत्ति मात्र है। यह प्रसग रामकेर्ति मे तो तो नही मिलता किन्तु सर्ग ७६ मे इसकी ओर सकेत किया गया है। इसका आधार भारतीय है (द० अनु० ६४१)।

—समस्त युद्ध की इस पुनरावृत्ति के अतिरिक्त और बहुत से वृत्तात दुहराये गये है। इन्द्रजित् के यज्ञ-भग के अतिरिक्त रामकियेन मे ऐसा वर्णन कुम्भकर्ण (अध्याय २८), रावण (अध्याय ३१) तथा मन्दोदरी (अध्याय ३४) के विषय मे भी मिलता है।

(५) रामकियेन की एक अन्तिम विशेषता यह है कि इसमे हनुमान् की बहुत सी प्रेमलीलाओ का वर्णन किया गया है। स्वयप्रभा (अध्याय २३), बेजकाया (अध्याय २५), नागकन्या सुवर्णमच्छा (अध्याय २६), अप्सरा वानरी (अध्याय ३१) के अतिरिक्त वह मन्दोदरी के साथ भी क्रीडा करते है। मन्दोदरी के सजीवन-यज्ञ को भग करने के लिए वह दशकठ के रूप मे मन्दोदरी के पास पहुँचकर उसका आलिगन करते है (अध्याय ३४)। एक अन्य अवसर पर वह रावण के पास पहुँच कर राम की भर्त्सना करते हैं तथा रावण की ओर से युद्ध करने का प्रस्ताव करते है। वास्तव मे वह एक दिन तक ऐसा करते है और पुरस्कारस्वरूप इन्द्रजित् को समस्त सम्पत्ति के अतिरिक्त मन्दोदरी को भी रावण से प्राप्त कर रात भर उसके साथ क्रीडा करते है (अध्याय ३५)।

३२७ श्याम के उत्तरपूर्वीय प्रातो मे लाओ भाषा बोली जाती है। लाओ साहित्य के पचतत्र मे दशरथ द्वारा अन्धमुनि-पुत्र-वध तथा राम के पास विभीषण की शरणागति का उल्लेख मिलता है।[1] इसके अतिरिक्त सोलहवी शताब्दी मे **राम जातक** की रचना लाओ भाषा मे की गई है।[2] रामकियेन की भाति इस जातक मे समस्त

१ दे० बुलेटिन एकोल फ्रासेस एक्सट्रेम ओरियन, भाग १७, पृ० १०१।

२ दे० दि राम-जातक जर्नल स्याम सोसाइटी, भाग ३६, पृ० १।

कथा का घटनास्थल श्याम देश मे ही माना गया है। पूर्वार्द्ध मे रावण तथा राम की जन्मकथा दी गई है, जिसके अनुसार राम तथा रावण चचेरे भाई है। राम के केवल एक ही भाई लक्ष्मण तथा एक बहन शान्ता का उल्लेख है। रावण शान्ता का अपहरण करता है तथा राम-लक्ष्मण द्वारा पराजित किया जाता है (दे० अनु० ३३६)।

उत्तरार्द्ध मे वाल्मीकीय रामायण का समस्त कथानक रामकियेन से मिलते-जुलते रूप मे प्रस्तुत किया गया है। सीता को इन्द्राणी का अवतार माना गया है (दे० अनु० ३६५) किन्तु इनकी शेष जन्मकथा रामकियेन के वृत्तान्त के सदृश है। रावण सीता-स्वयवर मे उपस्थित है। सीता की खोज के समय के दो वृत्तान्त अपेक्षा-कृत विस्तार-पूर्वक वर्णित है

(१) राम का वानर रूप धारण कर अजना से हनुमान् को उत्पन्न करना। यह कथा सेरी राम के वृत्तान्त पर आधारित है (दे० अनु० ६७५)।

(२) राम का वालि की विधवा से विवाह करना तथा अगद का पिता बनना। यह कथा और कही नही मिलती।

हनुमान् और अगद दोनो मिलकर सीता की खोज मे लका जाते है और वहाँ उत्पात भी मचाते है। विभीषण रावण की विधवा (शान्ता) से विवाह करते है (दे० अनु० ५७२) बेजकाया के स्थान पर केले का एक वृक्ष सँवार कर और उसे सीता का रूप देकर राम के शिविर के पास की नदी मे बहाया जाता है (दे० अनु० ५७६)।

कथानक की अन्य विशेषताएँ रामकियेन मे भी मिलती है—नागकन्याओं का सेतु नष्ट करने का प्रयास (दे० अनु० ५७८), महिरावण की कथा (दे० अनु० ६१४), रावण-चित्र के कारण सीता-त्याग (दे० अनु ७२४), वाल्मीकि द्वारा एक शिशु की सृष्टि, जिसका सीता पुत्रवत् पालन करती है (दे० अनु० ७४४), लव-कुश-युद्ध (अनु० ७५०) तथा कथानक का सुखान्त निर्वहण (दे० अनु० ७५६)।

अन्त मे जातक शैली के अनुसार राम-बुद्ध, रावण-देवदत्त, दशरथ-शुद्धोदन, लक्ष्मण-आनन्द, सीता-उप्पलवण्णा (भिक्षुणी) आदि रामकथा तथा बौद्ध इतिहास के पात्रो की अभिन्नता का उल्लेख किया गया है।

रामजातक का एक अन्य रूप **पालक-पालाम** के नाम से विख्यात है।[1] राम-

---

१ दे० पी० बी० लाफो, पालक-पालाम, एकोल फासेस एक्सट्रेम ओरियन (१६५७)। एच० देदिए, दि रामायण इन लाओस, ज० ऑ० रि०, भाग २२, पृ० ६४-६६ और लेस ऑरिजिन ए ला नेसाँस द रावण, बी० ई० एफ० ई० ओ०, भाग ४४, १४१ आदि।

जातक के कथानक से इतना अन्तर है कि ब्रह्मा को रावण मे (दे० अनु० ६४७ तथा बोधिसत्व को राम और लक्ष्मण मे अवतारित माना गया है (दे० अनु० ३६२)।

३ ८ सन् १९५३ ई० के पहले एच० देदिये ने लाओस मे तीन और रामकथा-विषयक रचनाओ का पता लगाया था—**तुआलाफी** (दु दुभि), **लकानीय** (इसमे सीता को रावण की पुत्री माना जाता है) तथा **पोम्मचका** (ब्रह्मचक्र)।[1] इनकी अकाल मृत्यु के कारण इन रचनाओ का प्रकाशन नही हो पाया है, किन्तु एक अन्य विद्वान् ने **ब्रह्मचक्र** की एक हस्तलिपि प्राप्त की है तथा इसके कथानक का सार सन् १९५७ ई० मे प्रकाशित किया है।[2] यह रामकथा जातक के रूप मे है इसमे ब्रह्मचक्र अर्थात् रावण (अनु० ६४७), राम (दे० अनु० ३६२) तथा सीता (दे० अनु० ४२५) की जन्म कथाओ का वर्णन मिलता है। इसके बाद सीता-स्वयवर का वृत्तान्त दिया गया है, जिसके अनुसार अन्य राजाओ की उपस्थिति मे राम धनुष चढाते है। हनुमान की जन्म-कथा (अनु० ६६८) तथा सीता हरण का वृत्तान्त (दे० अनु० ४९३) दोनो मौलिक है। राम का वनवास, वालि-वध, हनुमान् की लका-यात्रा लका-दहन, सेतु-बन्ध, विभीषण की शरणागति, अगद का दूतकार्य, महिरावण की कथा, यह सब सामग्री अन्य रामकथाओ के समान ही है। सीता की अग्नि-परीक्षा (दे० अनु० ६०२) तथा सीता-त्याग (दे० अनु० ७२४) मे कुछ नये तत्व पाये जाते है। लव के जन्म के बाद वाल्मीकि एक दूसरे शिशु कुश की सृष्टि करते है लव और कुश बाद मे राम और लक्ष्मण से युद्ध करते है। रामकियेन तथा रामजातक की भाति रामकथा को सुखान्त बना दिया गया है (दे० अनु० ७५६)। अन्त मे राम-बुद्ध, दशरथ-शुद्धोदन, लक्ष्मण-आनन्द आदि की अभिन्नता का उल्लेख है।

बर्मा

३२९ बर्मा का रामकथा-साहित्य बहुत अर्वाचीन है।[3] बर्मा के एक राजा ने १७६७ ई० मे श्याम की राजधानी अयुतिया को नष्ट कर दिया था। इस विजय के बाद राजा ने बहुत से बन्दियो को अपने साथ ले लिया था, जो बर्मा मे श्याम के राम-नाटक का अभिनय करने लगे। श्याम की रामकथा के आधार पर यू तो ने १८०० ई० के लगभग **राम यागन** की रचना की थी, जो बर्मा का सबसे महत्वपूर्ण काव्य

१ प्रस्तुत लेखक के नाम २२ जून, १९५३ का पत्र।
२ दे० पी० बी० लाफो, पोम्मचक, ई० एफ० ई० ओ०, १९५७।
३ दे० जी० पी० कानोर दि रामायण इन बर्मा, जर्नल बर्मा, रिसर्च सोसा-इटी, भाग १५, पृ० ८०।
के० बी० आयर याम-प्वे, त्रिवेणी, भाग १४, पृ० २३६ आदि।

माना जाता है। आजकल राम-नाटक, जिसे वहाँ की भाषा मे यामप्वे कहते है, बहुत लोकप्रिय है। इसकी एक विशेषता यह है कि अभिनेता बहुमूल्य चेहरे पहनते है और अभिनय के दिन इन चेहरो की पूजा भी करते है। श्याम के रामकियेन पर निर्भर होते हुए भी कथानक मे कही-कही मौलिकता पाई जाती है। सीता-हरण वहाँ के अभिनय का एक बहुत लोकप्रिय विषय है। इसमे शूर्पणखा (जिनका नाम गाम्बी रक्खा गया है) मृग का रूप धारण कर राम को दूर ले जाती है और राम से आहत किये जाने पर अपने राक्षसी रूप से प्रकट होती है। राम की सहायता करने जाने के पूर्व लक्ष्मण द्वारा कुटी के चारो ओर तीन रेखाए खीचने का भी उल्लेख है, जो भारत तथा हिंदेशिया आदि मे भी मिलता है।

घ—पाश्चात्य वृत्तान्त

३३० पद्रहवी शताब्दी से लेकर पाश्चात्य यात्रियो तथा मिशनरियो की भारत-सम्बन्धी रचनाओ मे रामकथा के विषय मे बहुत कुछ सामग्री मिलती है। अर्वाचीनता तथा लेखको की अपेक्षाकृत कम जानकारी के कारण यह साहित्य महत्त्वपूर्ण नही है, फिर भी उसकी उपेक्षा नही की जा सकती है। अत उसका यहाँ बहुत सक्षेप मे किंचित् निरूपण किया जाता है। चतुर्थ भाग मे रामकथा के भिन्न-भिन्न प्रसगो के तुलनात्मक अध्ययन मे इन वृत्तान्तो का भी निम्नलिखित सख्याओ के अनुसार उल्लेख किया जायगा

(१) जे० फेनिचियो (१६०६ ई०)

एक जेसुइट मिशनरी जे० फेनिचियो ने १६०६ मे **लिब्रो डा सैटा** की रचना की थी, जिसमे दशावतार-निरूपण के अन्तर्गत दक्षिण की उस समय की एक रामकथा का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है।[1] दशरथ के यज्ञ से लेकर सीता की अग्निपरीक्षा के प्रारम्भ तक का वृत्तान्त इसमे मिलता है। इसके बाद हस्तलिपि के कई पन्ने खो जाने के कारण रामकथा का पूरा वर्णन नही हो पाया है। अधिकाश कथानक वाल्मीकि के अनुसार है, फिर भी इसमे अनेक स्थलो पर वाल्मीकीय कथा से विभिन्नता पाई जाती है। इसकी एक विशेषता यह है कि रावणचरित का वर्णन अरण्यकाड की कथा के अतर्गत किया गया है। अग्निजा सीता और हनुमान् की जन्म-कथाएँ तथा राम के स्वेच्छा से वन के लिए प्रस्थान करने का वृत्तान्त वाल्मीकि रामायण से सर्वथा भिन्न है।

(२) ए० रोजेरियुस (१७वी श० ई०)

ए० रोजेरियुस डच ईस्ट कम्पनी के पादडी की हैसियत से पुलिकत मे ग्यारह वर्ष तक रहे (१६३१-४१)। उनकी रचना **दि ओपन दोरे** का प्रकाशन १६५१ मे हुआ

---

१ दे० लिब्रो डा सैटा (उप्साला १९३३), पृ० ६९-१३३।

था । अवनारवर्णन के अन्तर्गत रावणचरित से लेकर अयोध्या के प्रत्यागमन तक राम-कथा का वर्णन वाल्मीकि के अनुसार किया गया है ।

(३) **पी० बलडेयुस** (१७वी श० ई०)

बलडेयुस १६५८ ई० से लेकर छ वर्ष तक सिंहलद्वीप तथा दक्षिण भारत मे रहे । उनकी डच भाषा की रचना **आफगोडेरैय डर ओस्ट इण्डिशे हाइडेनन**[1], जो अधिकाश उपर्युक्त वृत्तान्त न० १ पर निर्भर है, १६७२ मे प्रकाशित हुआ था । रावण-चरित से लेकर राम के स्वर्गारोहण तक की कथा इसमे पाई जाती है । अग्नि-परीक्षा के अतिरिक्त सीता की ओर अनेक परीक्षाओ का उल्लेख इस रचना की एक विशेषता है ।

(४) **ओ० डैप्पर** (१७वी श० ई०)

डॉ० ओ० डैप्पर की **असिया** नामक रचना वृत्तान्त न० २ और ३ पर निर्भर है । इसका प्रकाशन हॉलैड मे १७वी शताब्दी उत्तरार्द्ध मे हुआ था ।

(५) **डे फरिया** (१७वी श० ई०)

डे फरिया की स्पैनिश रचना **असिया पोतु गेसा** का प्रकाशन १६७४ मे हुआ है । इसमे जो रामकथा मिलती है, वह उपर्युक्त वृत्तान्त न० १ पर निर्भर है ।[2] इसमे रावण के चित्र के कारण सीता के परित्यक्त किये जाने का वर्णन किया गया है ।

(६) **रलासियो डेस एरयर** (१६४४ ई०)

फ्रेंच भाषा की यह रचना सभवत डे नोबिलि के नोट्स के आधार पर लिखी गई है ।[3] इसकी रामकथा (पृ० १२-७) बहुत सक्षिप्त है । इसमे धोबी के वृत्तान्त के कारण सीता-त्याग का उल्लेख किया गया है ।

(७) **ला जानिटिलिटे डु बेंगाल** (१६६८ ई०)

फ्रेंच भाषा की इस रचना की रामकथा एक पुर्तगाली वृत्तान्त (दे० न० ८) से बहुत भिन्न नही है । इसका रचयिता अज्ञात है ।

(८) **पुर्त्तगाली वृत्तान्त, क** (१६७० ई०)

डॉ० कालेड ने तीन पुर्त्तगाली रचनाओ का प्रकाशन करके साथ-साथ इनका डच मे अनुवाद भी किया है ।[4] डॉ० कालेड के अनुसार वृत्तान्त क० सम्भवत १६७० ई० का है । इसकी रामकथा मे (पृ० १०-१६) उत्तरकाण्ड की सामग्री का भी वर्णन किया गया है ।

---

१ दे० नया प्रकाशन, (दि हेग, १९१७), अध्याय ४ ।

२ दे० भाग २, पृ० ६६६ आदि ।

३ इसका प्रकाशन वृत्तान्त न० ७ के साथ-साथ डब्लू० कालेड द्वारा १९२३ मे हुआ है ।

४ दे० ड्री औडे पार्तगेशे वरहैडलिगन, एमस्टरडम, १९१५ ।

(९) पुर्त्तगाली वृत्तान्त, ख (१७७४ ई०)

इस रचना की रामकथा (पृ० ५६-६४) की विशेषता यह है कि सीता अग्नि से उत्पन्न होती है। (दे० आगे अनु० ३२४)।

(१०) पुर्त्तगाली वृत्तान्त, ग (१७२३ के पूर्व)

इस रचना की रामकथा फ्रेंच वृत्तान्त नं० ६ पर निर्भर है।

(११) जे० बी० टावर्नियें (१७वीं श० ई०)

जे० बी० टावर्नियें ने अपनी भारत की यात्रा का वर्णन १६७६ ई० में फ्रेंच भाषा में प्रकाशित किया था[1], जिसके अन्तर्गत एक संक्षिप्त रामकथा मिलती है।

(१२) एम० सोनेरा (१८वीं श० ई०)

एम० सोनेरा ने अपनी रचना **वोयाज ओस इण्ड ओरियन्टाल** १७८२ में पेरिस में प्रकाशित की थी। इसमें एक अत्यन्त संक्षिप्त रामकथा मिलती है (पृ० १६३), जिसकी विशेषता यह है कि राम १५ वर्ष की अवस्था में अयोध्या छोड़कर सीता तथा लक्ष्मण के साथ चित्रकूट में तपस्या करने जाते है।

(१३) डे पोलिये (१८वीं श० ई०)

डे पोलिये की रचना **मिथोलोजी डेस इण्डू** १८०९ ई० में पैरिस में प्रकाशित हुई थी। इसमें एक विस्तृत राम-चरित (भाग १, पृ० २९० ३९४) मिलता है, जिसे डे पोलिये ने लखनऊ में १८वीं शताब्दी उत्तरार्द्ध में विलियम जोन्स के भूतपूर्व पण्डित से सुना था। इस राम-चरित में बहुत सी कथाएँ पाई जाती है, जो वाल्मीकि रामायण से सर्वथा भिन्न है, लेकिन जो प्राय अन्य अर्वाचीन वृत्तान्तों में भी मिलती है, उदाहरणार्थ रक्तजा सीता की जन्म-कथा, महिरावण के राम-लक्ष्मण को पाताल ले जाने की कथा आदि।

(१४) जे० ए० दुब्वा (१९वीं श० ई०)

जे० ए० दुब्वा की प्रसिद्ध रचना **हिन्दू मैनर्स, कस्टम्स एंड सेरेमोनिस** में एक संक्षिप्त रामकथा मिलती है (पृ० ६१९-२४, तीसरा संस्करण) जो वाल्मीकीय कथा से अनेक स्थलों पर भिन्न है, उदाहरणार्थ कैकेयी राम से अनुरोध करती है कि वह अपना राज्याधिकार भरत को प्रदान करे, हनुमान् समुद्र को धारा पर चलकर लङ्का पहुँचते हैं।

अंतिम को छोड़कर निम्नलिखित रचनाओं में कोई पूर्ण रामकथा नहीं पाई जाती, लेकिन इनमे राम-चरित के किसी न किसी तत्त्व की ओर निर्देश किया गया है।

---

१ दे० जी० बी० टावर्नियें ट्रावल्स इन इंडिया (लन्दन १८८९), भाग २, पृ० १९१-१९५।

(१५) **बोले ले गोज** (१७वी श० ई०)

बोले ले गोज की रचना मे (रैजे एन ऑपटेकर्निग, एमस्टरडम १६६०) सीता-हरण तथा हनुमान् के लङ्का मे सीता को राम के पास ले आने की कथा मिलती है।

(१६) **पी० एफ० विनजेनजा मरिया** (१७वी श० ई०)

इनकी रचना **इल वियाजियो अल इन्डिये ओरियेन्टालि** रोम मे १६७२ ई० मे प्रकाशित हुई थी। इसमे सीता का जन्म लका मे माना गया है।

(१७) **बीगेनबाल्ग** (१८वी श० पूर्वार्द्ध)

इनकी रचना का अग्रेजी अनुवाद १८६९ मे मद्रास से प्रकाशित किया गया है। मूल जर्मन रचना, जो १८वी शताब्दी के प्रारम्भ मे लिखी गई थी, १८६७ ई० मे ही प्रकाश मे आ सकी।

(१८) **एन्० मानुच्ची**

इनकी **स्टोरिया डी मोगोर** (१६५३-१७०८) मे धोबी के कारण सीता-त्याग का उल्लेख किया गया है तथा राम परमेश्वरी के पुत्र माने गए है।

(१९) **लेट्रस एडिफियन्ट**

यह जेसुइट मिशनरियो के पात्रो का सग्रह है, जो पेरिस मे प्रकाशित किया गया है। १३वे भाग (१७१८ ई०) मे अग्निजा सीता का जन्म-वृत्तान्त (पृ० १४०) तथा शूर्पणखा-पुत्र-वध का एक नया रूप (पृ० १७२) मिलता है।

(२०) **दिओगो गोसाल्वेस** (सन् १६१५ ई०)।

इन्होंने अपना **हिस्तोरिया दो मालावार** केरल मे लगभग सन् १६१५ ई० मे लिखा था। इसका सम्पादन तथा प्रकाशन सन् १९५५ ई० मे मुस्टर से हुआ है। द्वितीय भाग के नवे अध्याय मे रावण के अत्याचार तथा विष्णु के अवतार होने से प्रारम्भ होकर रावण-वध के बाद रामेश्वर-तीर्थ की स्थापना तक वाल्मीकीय कथानक का सक्षेप प्रस्तुत किया गया है। अन्तर यह है कि राम विष्णु के अवतार तथा लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न क्रमश शेष, शख और चक्र के अवतार माने जाते है। लक्ष्मण शूपणखा के कान और नाक के अतिरिक्त उसके स्तन भी तलवार से काटते है, राम हनुमान के कानो मे कुण्डल देखते हैं, जिससे हनुमान राम की सेवा स्वीकार करते है, क्योकि उनकी माता ने उनसे कहा था जब तुम अपना स्वामी देखोगे, तभी तुम्हारे कान मे कुण्डल दिखाई देगे। हनुमान् के कुण्डलो का प्रसग पाश्चात्य वृत्तान्त न० १, **सेरी राम, राम-केर्त्ति** तथा **रामकियेन** मे भी मिलता है (दे० अनु० ५१२)।

चतुर्थ भाग

रामकथा का विकास

अध्याय १४

बालकांड

१—वाल्मीकि रामायरा का बालकाड

३३१ क—बालकाड की कथावस्तु

(१) **भूमिका** (सर्ग १-४)

नारद का वाल्मीकि से अयोध्याकाड से लेकर युद्धकाड तक की रामकथा का कथन (सर्ग १), श्लोकोत्पत्ति, नारद से सुनी हुई रामकथा को श्लोकबद्ध करने की वाल्मीकि को ब्रह्मा की आज्ञा (सर्ग २), अनुक्रमणिका (सर्ग ३), वाल्मीकि का कुश-लव को अपना काव्य सिखाना और उनका राम के सम्मुख उसे सुनाना (सर्ग ४)।

(२) **दशरथयज्ञ** (सर्ग ५-१७)

अयोध्या का वर्णन , राजा, नागरिक, मत्री और पुरोहितो का वर्णन (सर्ग ५-७)।

अश्वमेधयज्ञ का सकल्प (सर्ग ८), ऋष्यशृंग की कथा (सर्ग ९-११), ऋष्यशृंग द्वारा अश्वमेध (सर्ग १२-१४)।

ऋष्यशृंग द्वारा **पुत्रेष्टियज्ञ**, देवताओ की विष्णु से अवतार लेने की प्रार्थना, पायस प्राप्त कर दशरथ का उसे अपनी पत्नियो मे बाँटना (सर्ग १५-६), देवताओ का अप्सराओ और गर्धावयो से वानरो की उत्पत्ति करना (सर्ग १७)।

(३) **राम का जन्म तथा प्रारम्भिक कृत्य** (सर्ग १८-३१)

राम, भरत, लक्ष्मरा और शत्रुघ्न का जन्म। विश्वामित्र का आगमन (सर्ग १८) और अपने यज्ञ की रक्षा के लिए दशरथ से राम-लक्ष्मरा को माँगना (सर्ग १९-२१)।

राम-लक्ष्मरा का **विश्वामित्र के साथ गमन**, सरयू तट पर विश्वामित्र से बला और अतिबला की प्राप्ति (सर्ग २२), गगा-सरयू के सगम पर विश्वामित्र द्वारा काम दहन की कथा (सर्ग २३), मलद और करूष की कथा (सर्ग २४)।

ताटका की कथा (सर्ग २५) , राम द्वारा उसका वध (सर्ग २६) , राम को दिये गये आयुधो की सूची (सर्ग २७-२८) , सिद्धाश्रम पर वामनावतार की कथा (सर्ग २९) , मारीच का समुद्र मे निक्षेप और सुबाहु का वध (सर्ग ३०) , मिथिला के लिए प्रस्थान (सर्ग ३१) ।

(४) **पौराणिक कथाएँ** (सर्ग ३२-६५)

विश्वामित्र के वश की कथा (सर्ग ३२-३४) , हिमवान् की पुत्रियाँ , गगा का स्वर्गारोहण , उमा का शिव से विवाह , कार्तिकेय-जन्म (सर्ग ३५-३७) ।

सगर-पुत्रो का पाताल मे भस्म होना , भगीरथ द्वारा गगावतरण , जह्नु द्वारा गगा का पिया जाना और मुक्त होकर भगीरथ का अनुसरण करते हुए पाताल मे सगर-पुत्रो का उद्धार करना (सर्ग ३८-४४) ।

समुद्रमथन की कथा (सर्ग ४५-४७) , गौतम द्वारा इन्द्र और अहल्या को दिए गए शापो की कथा , **अहल्योद्धार** (सर्ग ४८-४९) , जनक द्वारा विश्वामित्र, राम और लक्ष्मण का स्वागत (सर्ग ५०) ।

विश्वामित्र की कथा शतानन्द द्वारा विश्वामित्र के ब्राह्मण बनने की कथा, राजा विश्वामित्र का वसिष्ठ को परास्त न कर सकने के कारण ब्राह्मण बनने का निश्चय (सर्ग ५१-५६), उनका राजर्षि बनना, त्रिशकु की कथा (सर्ग ५७-६०) । अबरीष के यज्ञ मे शुन शेप का बलिदान , विश्वामित्र का ऋषि बनना, मेनका की सफलता एव रभा की असफलता और अत मे विश्वामित्र का ब्रह्मर्षि बनना (सर्ग ६१-६५) ।

(५) **राम-विवाह** (सर्ग ६६-७७)

धनुर्भंग जनक द्वारा धनुष तथा सीता के अलौकिक जन्म की कथा, उनकी सीता-विवाह-विषयक प्रतिज्ञा । राजाओ की असफलता और उनका आक्रमण (सर्ग ६६) । राम द्वारा धनुर्भंग । दशरथ का बुलावा और मिथिला मे उनका आगमन (सर्ग ६७-६९)

विवाह वसिष्ठ द्वारा दशरथ के वश का परिचय, जनक का अपना वश-वर्णन । चारो भाइयो का विवाह (सर्ग ७०-७३) ।

परशुराम उत्तरीय पर्वतो पर विश्वामित्र का गमन । दशरथ के मार्ग मे अपशकुन और परशुराम का आगमन । वैष्णव धनुष चढाकर राम द्वारा परशुराम की पराजय (सर्ग ७४-७६) , अयोध्यागमन , भरत और शत्रुघ्न का प्रस्थान , राम की लोकप्रियता (सर्ग ७७) ।

ख—बालकाड का विश्लेषण

तीन पाठो मे विभिन्नता

३३२ प्रचलित वाल्मीकि रामायण के दाक्षिणात्य पाठ मे रामादि की जन्म-

तिथि (चैत्रे नावमिके तिथौ दे० १८, ८) तथा उसी अवसर पर राशियों के सङ्गम का उल्लेख किया गया है, जो अन्य दोनों पाठों में नहीं मिलता।[1]

इसके अतिरिक्त निम्नलिखित पौराणिक कथाएँ केवल दाक्षिणात्य पाठ में पाई जाती है—कश्यप की तपस्या, जिसके फलस्वरूप उन्होंने वामनावतार में हरि को पुत्र-स्वरूप प्राप्त किया था (२६, १०-१७), जह्नु का गंगा-पान (४३, ३४-४१), विष्णु का मोहिनी रूप धारण कर अमृत चुराना (४५, ४०-४३), विष्णु का कूर्मावतारवर्णन (४५, २७-३२)।

गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठों में शांता को दशरथ की पुत्री माना गया है (दे० आगे अनु० ३४३) तथा उनमें एक तीसरी अनुक्रमणिका पाई जाती है, जिसमें रामायण के सात कांडों की कथावस्तु की ओर निर्देश किया गया है (गौ० रा० सर्ग ४, प० रा० सर्ग ३)। इसके अतिरिक्त इन दोनों पाठों में दो सर्ग मिलते है, जिनमें भरत और शत्रुघ्न की यात्रा तथा राजगृह में निवास का कुछ विस्तार सहित वर्णन किया गया है (दे० गौ० रा० बालकाण्ड सर्ग ७६-८० तथा प० रा० अयोध्याकांड सर्ग १-२)। दाक्षिणात्य पाठ में इसका उल्लेख मात्र मिलता है।

बालकांड की उत्पत्ति

३३३ आठवें अध्याय में समस्त बालकांड के प्रक्षिप्त माने जाने के कारण दिए गए है, अत बहुत सम्भव है कि वाल्मीकिकृत रचना में अयोध्या, दशरथ तथा उनके पुत्रों के परिचय के बाद अयोध्याकांड की कथावस्तु का वर्णन प्रारम्भ हुआ हो (दे० ऊपर अनु० १३६)। **महाभारत** के द्रोणपर्व, **हरिवंश, विष्णु पुराण** आदि के प्राचीन वृत्तान्तों में भी वनवास से ही लेकर रावण-वध तक की रामकथा का वर्णन किया गया है।

प्रस्तुत बालकांड के निरीक्षण से उसकी उत्पत्ति और विकास के भिन्न-भिन्न सोपानों का कुछ आभास मिलता है। दो स्थलों को छोड़कर बालकांड में और कहीं भी अवतारवाद की ओर निर्देश नहीं किया गया है। यही नहीं, वरन् उसकी शेष सामग्री से भी स्पष्ट है कि मूल बालकांड के रचनाकाल में राम विष्णु के अवतार नहीं माने

---

१ यह पाचवीं श० ई० अथवा इसके बाद का प्रक्षेप है। दे० क्वाटर्ली जर्नल मिथिक सोसायटी, भाग १२, पृ० ७३।

कथानक के दृष्टिकोण से पाठों की विस्तृत तुलना के लिए, दे० प्रस्तुत लेखक का निबन्ध दी जेनेजिस ऑव दी वाल्मीकि रामायण रिशन्शन्स, ज० ऑ० इ० भाग ५, पृ० ६६-६४, वाल्मीकि रामायण के तीन पाठ, नागरीप्रचारिणी पत्रिका, वर्ष ५८, पृ० १-३५।

जाते थे, इसके प्रमाण आठवे अध्याय मे दिए गए है। अत ये दोनो स्थल (अर्थात् दशरथ के पुत्रेष्टियज्ञ तथा राम-परशुराम भेट का वर्णन) बालकाड के अन्तिम विकास के समय जोड दिए गए होंगे। पुत्रेष्टि यज्ञ के प्रक्षिप्त होने के स्पष्ट प्रमाण बालकाड मे मिलते है। सर्ग ८ मे दशरथ सुतार्थ अश्वमेध यज्ञ करवाने का सकल्प करते है। सर्ग १३ और १४ मे इस अश्वमेध यज्ञ का वर्णन किया गया है। १४वे सर्ग मे ब्राह्मणो को दक्षिणा दिए जाने के उल्लेख के बाद ऋष्यश्रृग दशरथ को आश्वासन देते है कि उनके चार पुत्र उत्पन्न होंगे—

भविष्यति सुता राजश्चत्वारस्ते कुलोद्वहा ॥ ५६ ॥

ऋष्यश्रृग के इस आश्वासन के पश्चात् पुत्रेष्टि की कोई आवश्यकता नही प्रतीन होती है। फिर भी इसके अनन्तर पुत्रेष्टियज्ञ का वर्णन प्रारम्भ होता है (सर्ग १५-१७) जिसमे विष्णु के अवतार लेने का विस्तृत वर्णन किया गया है। यह होते हुए भी १८वे सर्ग के प्रारम्भ मे अश्वमेध ही की समाप्नि पर (**निवृत्ते तु क्रतौ तस्मिन्हयमेधे**) देवताओ तथा राजाओ के प्रस्थान का उल्लेख किया गया है, जिससे स्पष्ट है कि पहले १४वे सर्ग के पश्चात् १८वाँ सर्ग ही आता था।

पौराणिक कथाओ का बाहुल्य बालकाड तथा उत्तरकाड की एक विशेषता है। गगावतरण सर्ग (३८-४४) एक स्वतन्त्र काव्य था, जो बाद मे अपने श्रवणफल सहित बालकाड की अन्य पौराणिक कथाओ के साथ रखा गया है। विश्वामित्र की कथा (सग ५१-६५) ने अशुद्ध श्लोको का बाहुल्य उसे एक स्वतन्त्र रचना सिद्ध करता है।[1] बालकाड की अन्य पौराणिक कथाएँ भी रामकथा से कोई सम्बन्ध नही रखती है, अत बहुत सम्भव है कि वे भी प्रारम्भिक बालकाड मे विद्यमान नही थी। ६वे सर्ग से लेकर १२वे तक मे ऋष्यश्रृग की जो पौराणिक कथा है वह ८वे सर्ग की पुनरावृत्ति मात्र है।

३३४ उपर्युक्त प्रक्षेपो को हटाकर जो निम्नलिखित सामग्री रह जाती है, इसे हम बालकाड का प्रारम्भिक रूप मान सकते है।

सर्ग १-४	भूमिका।
सर्ग ५-७	अयोध्या का वर्णन।
सर्ग ८, १३ और १४	दशरथ के अश्वमेध का वर्णन।
सर्ग १८-३१	राम का जन्म तथा प्रारम्भिक कार्य।
	(ताटका वध, विश्वामित्र-यज्ञ की रक्षा)।
सर्ग ६६-७३	राम का विवाह।
सर्ग ७७	अयोध्या मे प्रत्यागमन।

---

१ एच० याकोबी डस रामायण, पृ० २६।

२—बालकाड का विकास

३३५ अयोध्याकाड से लेकर युद्धकाड तक की राम कथा पर आदि कवि की छाप स्पष्ट दिखलाई पडती है। घटनाएँ इस प्रकार सम्बद्ध है कि आधिकारिक कथा-वस्तु की गति अबाध रूप से आगे बढ रही है। अत बाद की रामकथाओ मे इन काडो के कथानक का अपक्षाकृत कम विकास हुआ है। बालकाड तथा उत्तरकाड की परिस्थिति दूसरी है। प्रारम्भ ही से इनकी कथावस्तु को कोई विशेष एकता नही थी। फलस्वरूप इन दोनो काडो मे सबसे अधिक परिवर्तन तथा परिवर्द्धन किया गया है।

निम्नलिखित बालकाड-सम्बधी विषयो मे इतनी विभिन्नता पाई जाती है अथवा इनके विकास का वर्णन इतना विस्तृत है कि तत्सम्बधी सामग्री अलग-अलग परिच्छेदो मे रखी गई है अवतारवाद, राम का बालचरित, राम-सीता-विवाह, सीता की जन्म-कथा। बाद की राम-कथाओ मे प्राय बालकाड की पौराणिक कथाओ (दे० सर्ग ३२-६५) का अभाव है, अत इनका कोई विकास नही हो पाया है। यहा पर बालकाड की शेष कथावस्तु के विकास पर प्रकाश डालना है।

क। दशरथ की वशावली

३३६ इक्ष्वाकु-वशावली के निरूपण मे पर्याप्त विभिन्नता पाई जाती है। अधिकाश पुराणो तथा वाल्मीकि रामायण मे प्रधान अतर यह है कि पौराणिक साहित्य मे इक्ष्वाकु से राम तक ६३ राजाओ के नाम दिये जाते है किन्तु रामायण मे इनकी सख्या केवल ३६ है। इसके अतिरिक्त रामायण के ३६ नामो मे से केवल १८ नाम दोनो वशावलियो मे विद्यमान है। सभव है कि रामायण मे केवल उन राजाओ के नाम उल्लिखित है, जिनका राज्याभिषेक हुआ था।[1]

राम-साहित्य की दो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्राचीन रचनाओ मे भी वशावली के विषय मे एकरूपता नही है। **वाल्मीकि** की सूची के अनुसार २३वाँ नाम दिलीप है; २६वाँ रघु, ३८वाँ अज तथा ३९वा दशरथ (दे० बालकाड, सर्ग ७०)। कालिदास के **रघुवश** तथा हरिवश पुराण (१, १५, २४-२६) के अनुसार दिलीप, रघु, अज और दशरथ मे क्रमश पिता-पुत्र का सम्बन्ध है। श्री रायकृष्णदास[2] के अनुसार इसका समन्वय यह है कि इस वश मे दिलीप तथा रघु नामक दो-दो राजा रह चुके है, द्वितीय दिलीप का नाम खट्वाग तथा द्वितीय रघु का नाम दीर्घबाहु था। इस प्रकार रघुवश का क्रम ठीक सिद्ध हो जाता है। जो कुछ भी हो, बहुत सी परवर्ती रचनाओ मे कालि-दास की वशावली ही प्रामाणिक मानी गई है, जैसे प्रतिमा-नाटक (अक २), अग्नि-

१ दे० पुराणम् (वाराणसी) भाग २, पृ० १३७ और भाग ४, पृ० २३।
२ दे० पुराणम्, भाग २, पृ० १४४-१४७।

पुराण (ककुत्स्थ, रघु, अज, दशरथ , अध्याय ५, ३), लिंग-पुराण (१, ६५), गरुड़ पुराण (८, ८५-८६), पद्मपुराण का गौडीय पाताल खण्ड, भविष्यपुराण (प्रतिसर्ग पर्व प्रथम खंड, अध्याय २, ३-६), उदारराघव, कृत्तिवास रामायण (१, ६२) तोरवे रामायण (१, ३) आदि ।

पउमचरिय (पव २१-२२) मे दशरथ की विस्तृत वशावली इस प्रकार है (वाल्मीकि रामायण मे दिये हुए नाम रेखाकित है) विजय,[१] पुरन्दर, कीर्तिधर, सुकोशल, हिरण्यगभ, **नघुष**, **सौदास**, सिहरथ, ब्रह्मरथ, चतुर्मुख, हेमरथ, यशोरथ पद्मरथ, मृगरथ, शशिरथ, रविरथ **मान्धाता**, उदयरथ, गनिवचन, कमलबन्धु, रविशत्रु, वसन्ततिलक, कुबेरदत्त, कुथु, सरभ, विरथ, रथनिर्घोष, मृगारिदम, हिरण्यनाभ[१], पुजस्थल, **ककुत्स्थ**, **रघु**, **अनरण्य**, **दशरथ** । अनरण्य के दो पुत्र माने जाते है—अनन्तरथ तथा दशरथ किन्तु अनन्तरथ अपने पिता अनरण्य के साथ दीक्षा ले लेते है, जिससे दशरथ को राज्याधिकार मिलता है ।[२]

खोतानी रामायण मे सहस्रबाहु दशरथ के पुत्र माने गये है तथा राम-लक्ष्मण सहस्रबाहु के ही पुत्र है । **सेरी राम** मे नामावली इस प्रकार है नबी आदम, दशरथ रामन, दशरथ चक्रवर्ती तथा दशरथ । स्याम के **रामजातक** मे दशरथ को रावण का चाचा माना गया है—ब्रह्मा के पुत्र तप्परमेस के दो पुत्र थे, दशरथ तथा विरुल्होक (विश्रवा) । तप्परमेस यह देखकर कि दशरथ अच्छा योद्धा नही है, अपने कनिष्ठ पुत्र को ही अपना उत्तराधिकारी नियुक्त करते है, जिससे दशरथ राज्य छोडकर अन्यत्र अपनी एक नई राजधानी का निर्माण करते है । (इस कथा मे वैश्रवण तथा दशरथ का एकीकरण किया गया है) । दशरथ का भतीजा रावण भी एक नई राजधानी (लका) का निर्माण करता है तथा दशरथ की पुत्री को हर लेता है । बाद मे दशरथ के दो पुत्र राम तथा लक्ष्मण अपनी बहन शान्ता के अपहरण का प्रतिकार करने के लिए रावण को पराजित करते है । रावण की राजधानी की यात्रा मे तथा वापसी मे भी राम और लक्ष्मण दोनो अनेक विवाह करते है । उन विवाहो से जो पुत्र उत्पन्न होते है, वे दूसरे राम-रावण युद्ध मे राम की सहायता करेगे, ऐसा उल्लेख है । बाद मे रावण के साथ सधि की जाती है तथा रावण और शाता का विवाह सम्पन्न हो जाता है ।[३] इस भूमिका के पश्चात् ही रामायण की कथा प्रारम्भ होती है, जिसमे रावण द्वारा सीताहरण के कारण एक नया युद्ध छिड जाता है ।

---

१ ये नाम पुराणो मे भी मिलते है

२ रविषेणकृत पद्मचरित की वशावली इससे भिन्न है ।

३ पालक पालाम मे भी इससे मिलती-जुलती कथा पाई जाती है (दे० अनु० ३२७)।

परवर्ती रामकथाओ मे दशरथ के पूर्व-जन्मो की भी चर्चा होती है। इसके अनुसार दशरथ अपने पूव जन्म मे कश्यप (अनु० ३६७), स्वायभूमनु (३६८), धर्मदत्त (३६९), राजा कुमुद (१९४) अथवा राजा कुन्तल (१९५) थे।

ख। दशरथ के विवाह

३३७ दशरथ के विवाहो के विषय मे अनेक कथाएँ मिलती है, जिनका यहा सक्षेप मे वर्णन किया जाता है।

आनन्द रामायण (१, १, ३२-७४) मे दशरथ-कौशल्या विवाह का विस्तृत वर्णन किया गया है। ब्रह्मा रावण के पास जाकर कहते है कि दशरथ तथा कोशल नरेश की पुत्री कौशल्या का विवाह शीघ्र ही होने वाला है, इन दोनो का पुत्र तुम्हारा वध करेगा। इस पर रावण सरयू मे दशरथ की नौका तोडकर उनको पराजित करता है। दशरथ तथा सुमत्र एक नौका-खण्ड पर समुद्र की ओर बह जाते है। इतने मे रावण कौशल्या को हर लेता है और उसे एक पेटिका मे रखकर तिमिंगल नामक मत्स्य की रक्षा मे छोड देता है। तिमिंगल उस पेटिका को एक द्वीप पर रखकर किसी अन्य मत्स्य से युद्ध करता है। दशरथ तथा सुमत्र उस द्वीप मे पहुँचते है और पेटिका को देखकर उसे खोल देते है। तदुपरान्त दशरथ तथा कौशल्या गाधर्व विवाह करते है और तीनो पेटिका मे छिप जाते है। अनन्तर रावण ब्रह्मा के सामने डीग मारता है कि उनकी भविष्यवाणी झूठी सिद्ध हुई। ब्रह्मा से यह सुनकर कि उन दोनो का विवाह हो चुका, रावण पेटिका को मँगवाता है और उसे खोलकर कौशल्या, दशरथ तथा सुमत्र को देखता है। ब्रह्मा रावण को तीनो का वध करने से रोक लेते है। अनन्तर पेटिका साकेत भेजी जाती है, जहाँ सुमित्रा, कैकेयी तथा सात सौ अन्य स्त्रियो से भी दशरथ विवाह करते हैं। भावार्थ रामायण (५, ९), पाश्चात्य वृत्तान्त न० १३, स्वायभुव रामायण तथा रामचरितमानस के कुछ सस्करणो के एक प्रक्षेप मे इस कथा का भी उल्लेख किया गया है।

पउमचरिय (२२, १०६-१०७) के अनुसार पद्म (राम) की माता का नाम अपराजिता था और वह अरुहस्थल के राजा सुकोशल तथा अमृत प्रभा की पुत्री थी। गुणभद्र के **उत्तर पुराण** मे राम की माता का नाम सुबाला माना गया है। पूर्व जन्म विषयक कथाओ के अनुसार कौशल्या पहले अदिति (दे० अनु० ३६७), शतरूपा (अनु० ३६८), कलहा (३६९), वीरमती (१९४) अथवा सिन्धुमती (१९५) थी।

३३८ वाल्मीकि रामायण मे केकय की पुत्री कैकेयी के स्वयवर का उल्लेख नही मिलता। **पउमचरिय** (पर्व २४) मे इस स्वयवर का पहले-पहल वर्णन हुआ है। इसके अनुसार कौतुकमगल नगर के राजा शुभमति तथा उसकी पत्नी पृथ्वीश्री की पुत्री कैकेयी के स्वयवर का आयोजन किया गया था।

उस समय दशरथ तथा जनक रावण के भय से गुप्त वेश मे भिन्न-भिन्न देशो का भ्रमण कर रहे थे और सयोग से कैकेयी के स्वयवर मे भी पहुँच गये। कैकेयी ने दशरथ को चुन लिया। इस पर स्वयवर मे आये हुए अन्य राजाओ के साथ दशरथ का युद्ध होने लगा, जिसमे कैकेयी दशरथ का रथ हाँकने लगी।

विवाह सम्पन्न होने के पश्चात् दशरथ और जनक अपनी-अपनी राजधानी लौटे। घर पहुँचकर दशरथ ने कैकेयी से सग्राम मे रथ हाँकने के पुरस्कार स्वरूप एक वर माँगने के लिए कहा। कैकेयी ने उत्तर दिया "इस समय तो कोई वर मागने की आवश्यकता नही है, जब मागूगी तभी देना।"

कृत्तिवास रामायण (१, २५) के अनुसार गिरिराज नगर मे आयोजित कैकेयी के स्वयवर मे पृथ्वी भर के राजा आमन्त्रित हुए थे किन्तु इसमे युद्ध का उल्लख नही है। माधवदेवकृत **असमिया बालकाड** (अध्याय ८-१०) मे भी कैकेयी के स्वयवर का वर्णन मिलता है।

सत्योपाख्यान मे कैकेयी तथा दशरथ का विवाह इस प्रकार वर्णित है। किसी दिन नारद दशरथ के पास पहुँचकर केकय की पुत्री के सौदर्य की प्रशसा करते हैं तथा यह भी कहते है कि कैकेयी की हस्तरेखा से प्रतीत होता है कि उसे एक महान् पुत्र उत्पन्न होगा। बाद मे दशरथ एक देवयोगिनी को कैकेयी के पास भेजते है, जो कैकेयी से दशरथ की प्रशसा करके दशरथ की पत्नी बनने की इच्छा उसके मन मे उत्पन्न करती है। कैकेयी विरह के कारण उदासीन हो जाती है, जिसपर उसकी माता, कारण जानकर, केकय से दशरथ-कैकेयी का विवाह करवाने का अनुरोध करती है। बाद मे केकय दशरथ को बुलाकर इस शर्त पर अपनी पुत्री देते है कि कैकेयी के पुत्र को राज्य अवश्य दिया जाय (दे० अध्याय ५-७)।

३३९ सुमित्रा के हाथ दशरथ के विवाह का वाल्मीकि रामायण के दक्षिणात्य पाठ मे न तो कोई वर्णन किया गया है और न सुमित्रा का परिचय मिलता है। उदीच्य पाठ (गौ० रा० १, १६, ६, प० रा० १, १४, ४) मे उसे वामदेव की 'करणी सुता' (दत्तक पुत्री) कहा गया है। प्राचीन काल से वह मगध नरेश की पुत्री मानी गई है (दे० रघुवश ६, १७)। **पउमचरिय** (१२, १०७-१०८) के अनुसार वह कमलसकुलपुर के राजा सुबधुतिलक की कैकेयी नामक पुत्री थी, दशरथ ने उसके साथ विवाह किया तथा उसका नाम सुमित्रा रखा। **कृत्तिवास रामायण** (१, २६) मे इसके विवाह का वर्णन मौलिक प्रतीत होता है। सिहल के राजा सुमित्र ने अपनी पुत्री सुमित्रा के विवाह का निमत्रण दशरथ को भेजा था। कौशल्या तथा कैकेयी से यह कह कर कि मैं मृगया खेलने जाता हूँ, दशरथ ने सुमित्रा का निमत्रण स्वीकार किया। विवाह की द्वितीय रात को दशरथ ने अपनी नवविवाहिता पत्नी के साथ अयोध्या के लिए प्रस्थान

किया । बगाल मे उस रात को अशुभ मानकर उसे काल रात्रि कहते है । इस अशुभ रात्रि को दशरथ ने सुमित्रा के साथ बिताया, जिसका परिणाम यह हुआ कि वह बाद मे दशरथ द्वारा उपेक्षित हुई । सुमित्रा के अन्त पुर मे प्रवेश करते समय कौशल्या और कैकेयी को आशका हुई, वे सोचने लगी—"यह हमसे सुन्दर है, दशरथ हमारी उपेक्षा करेंगे ।" अत दोनो ने पार्वती-शकर की पूजा करके वर मागा कि सुमित्रा गर्भागिनी हो । बाद मे सुमित्रा को प्रमाद हुआ, जिससे सब सपत्नियो मे सुन्दर होते हुए भी दशरथ उसे उपेक्षा की दृष्टि से देखने लगे तथा कैकेयी को सबसे अधिक चाहने लगे । **असमिया बालकाड** (अध्याय ११) मे भी सिहल द्वीप के राजा सुमित्र की कन्या का दशरथ के साथ विवाह वर्णित है ।

३६० वाल्मीकि रामायण तथा अधिकाश परवर्ती रामकथाओ के अनुसार दशरथ की तीन पटरानियो का उल्लेख है और उनके नाम प्राय कौशल्या, सुमित्रा तथा कैकेयी ही रखे गये है । पउमचरिय के अनुसार राम की माता अपराजिता थी तथा गुणभद्र के अनुसार उसका नाम सुबाला था ।

कुछ जैन तथा बौद्ध रामकथाओ मे पटरानियो की सख्या चार तक बढा दी गई है । इसका कारण यह है कि पुत्रो की सख्या चार थी । रविषेण, हेमचन्द्र आदि के अनुसार दशरथ की ये चार रानिया थी—अपराजिता (कौशल्या), सुमित्रा, कैकेयी तथा सुप्रभा (शत्रुघ्न की माता) । पद्मपुराण के पातालखण्ड (अध्याय ११५) मे चार पटरानियो के नाम मिलते है, भरत की माता का नाम सुरूपा है तथा शत्रुघ्न की माता का नाम है सुवेषा । दशरथ कथानम् तथा पाश्चात्य वृत्तान्त न० १४ मे भी चार पटरानियो का उल्लेख है, किन्तु इनके नामो का अभाव है ।

रामकथाओ का एक अन्य वर्ग मिलता है, जिसमे दशरथ की केवल दो महिषियो की चर्चा है । इसका प्राचीनतम उदाहरण प्रसिद्ध दशरथ जातक है । तिब्बती तथा खोतानी रामायणो के अनुसार भी दशरथ की केवल दो पटरानियाँ थी । इसी प्रकार हिन्देशिया की रामकथाओ मे दशरथ के केवल दो विवाहो का उल्लेख मिलता है । **सेरी राम** तथा **हिकायत महाराज रावण** मे दशरथ अपनी नई राजधानी का निर्माण करते समय बाँसो के समूह मे सिहासन पर बैठी हुई एक सुन्दर स्त्री को देखते है, जिसका नाम मदूदारी है । दशरथ तथा मदूदारी के विवाहोत्सव मे बल्यादारी नामक एक उपपत्नी टूटने वाली पालकी को सँभालती है । इस पर दशरथ उसे अपनी धर्मपत्नी बनाकर उसके भावी पुत्र को राज्य दिलाने की प्रतिज्ञा करते है । जावा के सेरत काण्ड मे दशरथ बाँस के समूह मे पहले बलियादारू नामक अप्सरा को देखकर उसके साथ विवाह करते है तथा बाद मे उसी स्थान पर बादोदारी को भी प्राप्त करते हैं । बादोदरी अपना नाम देवोरागी मे बदल देती है । रावण द्वारा उसे प्राप्त करने के

प्रयत्न का वर्णन सीता की जन्म-कथा के अन्तर्गत किया जायेगा (दे० आगे० अनु० ४२८)। पाश्चात्य वृत्तान्त न० ११ मे भी दशरथ की केवल दो पटरानियो का उल्लेख है। भुइआ माधवदास के उडिया विचित्र रामायण मे २१ पटरानियो की चर्चा है, जिनमे से तीन श्रेष्ठ हैं।

दशरथ की स्त्रियो की सख्या मे बहुत मतभेद है। वाल्मीकि रामायण के अनुसार राम ने वनवास के लिए प्रस्थान करते समय अपनी ३५० माताओ से विदा ली थी (२, ३९, ३६)। पउमचरिय (२८, ७१) दशरथ की ५०० उत्तम स्त्रियो का उल्लेख करता है। आनन्द रामायण के अनुसार दशरथ ने तीन महिषियो के अतिरिक्त ७०० और विवाह किए थे (१, १, ७२)। कृत्तिवास रामायण (१, २६) तथा सारलादास के महाभारत मे दशरथ की ७५० स्त्रियाँ मानी गई है। **असमिया बालकाण्ड** (अध्याय ११) मे इनकी सख्या ७०० हे। **दशरथ जातक** मे दशरथ की १६००० स्त्रियो की चर्चा है।

बिर्होर जाति की रामकथा मे दशरथ की स्त्रियो की सख्या सात है तथा जावा के सेरत काण्ड मे दो महिषियो के अतिरिक्त छ और पत्नियो का उल्लेख किया गया है।

ग। दशरथ की सन्तति

३४१ वाल्मीकि रामायण मे दशरथ के चार पुत्रो का वर्णन किया गया है, जिनमे से लक्ष्मण और शत्रुघ्न यमल माने जाते है। इसके अतिरिक्त उदीच्य पाठ मे उनकी एक पुत्री शान्ता का भी उल्लेख है, शान्ता विषयक सामग्री का अलग विश्लेषण किया जायगा (दे० आगे अनु० ३४३)।

विमल सूरि के **पउमचरिय** (दे० २५, १४) मे पहले-पहल भरत तथा शत्रुघ्न यमल माने गये है, बाद की कुछ रामकथाओ मे भी भरत तथा शत्रुघ्न सहोदर भाई कहे गये है, उदाहरणार्थ सघदास की वसुदेवहिण्डि, गुणभद्र का उत्तरपुराण, **आनन्द-रामायण** (१, २, १०), सथाली रामकथा, मराठी भावार्थ रामायण (१, ६)। **राम-चरितमानस** के लक्ष्मण विषयक कथन—'निज माता के एक कुमारा' (६, ६१, १४) से भी यही ध्वनि निकलती है। जावा के सेरत काण्ड मे दशरथ की दो पत्नियो के दो-दो पुत्र उत्पन्न होते है, ज्येष्ठा के राम-भरत तथा कनिष्ठा के लक्ष्मण-शत्रुघ्न। हिकायत महाराज रावण मे राम-लक्ष्मण कनिष्ठा के पुत्र माने जाते है और भरत-शत्रुघ्न ज्येष्ठा के पुत्र। सेरी राम मे भी राम और लक्ष्मण मदूदारी के पुत्र माने जाते है, इस रचना मे दशरथ की एक पुत्री की भी चर्चा है, जो भरत-शत्रुघ्न की सहोदरी है और जिसकी माता का नाम बलियादारी है।

सेरी राम के पातानी पाठ के अनुसार लक्ष्मण भाई न होकर राम के सखा मात्र है तथा राम स्वय विष्णु के सेनापति के पुत्र है । एक अन्य विकृत वृत्तान्त के अनुसार राम परमेश्वरी के पुत्र माने जाते है (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त, न० १८, भाग ३, पृ० ३४३) ।

भरत तथा लक्ष्मण मे से कौन ज्येष्ठ है, इसके विषय मे वाल्मीकि रामायण के पाठो मे मतभेद है । दशरथ-जातक की भाँति उदीच्य पाठ मे भरत कनिष्ठ माने जाते है (दे० गौ० रा० १, १६, १०, प० रा० १, १४, ५) । लेकिन दाक्षिणात्य पाठ मे लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न कनिष्ठ है (रा० १, १८, १३-१४) । फिर भी दाक्षिणात्य पाठ के एक स्थल से ऐसा प्रतीत होता हे कि भरत कनिष्ठ ही थे । युद्ध के बाद राम से मिलने के अनन्तर भरत ही लक्ष्मण का अभिवादन करते है

ततो लक्ष्मणमासाद्य वैदेही च परतप ।
अथाभ्यवादयत्प्रीतो भरतो नाम चाब्रवीत् ॥४१॥　　(६, १२७)

पउमचरिय, गुणभद्रकृत उत्तरपुराण, दशरथ जातक, दशरथ कथानम्, विष्णु-पुराण, पद्मपुराण तथा प्रतिमा नाटक (दे० अक ३) मे भी भरत लक्ष्मण के अनुज माने गये है । फिर भी अपेक्षाकृत प्राचीन काल से अधिकाश रामकथाओ के अनुसार भरत लक्ष्मण के अग्रज है, उदाहरणार्थ अग्निपुराण, कूर्मपुराण, क्षेमेन्द्र की रामायण-मजरी । रघुवश मे भी ऐसा माना गया है, इसके फलस्वरूप युद्ध के पश्चात् लक्ष्मण ही भरत का अभिवादन करते है (दे० १३, ७३) ।

भरत तथा लक्ष्मण के विषय मे उपर्युक्त विभिन्नता को लेकर **भरतज्यैष्ठ्य-निर्णय** की रचना की गई है, जिसमे भरत को ज्येष्ठ सिद्ध करने का प्रयत्न किया गया है (दे० मद्रास कैटालॉग न० आर० ३४६२ सी) ।

३४२ बहुत सी विदेशी रामकथाओ मे दशरथ के केवल दो पुत्रो का उल्लेख किया गया है । तिब्बती रामायण मे दशरथ की दो पत्नियों के एक-एक पुत्र होता है । खोतानी रामायण मे भी राम और लक्ष्मण का उल्लेख किया गया है । किन्तु इस रचना मे दोनो सहस्रबाहु के पुत्र तथा दशरथ के पौत्र माने जाते है । इसी प्रकार सेरी राम की राफल्स हस्तलिपि मे केवल राम-लक्ष्मण की चर्चा है । राम जातक तथा पालक पालाम मे भरत-शत्रुघ्न का निर्देश नही मिलता, लेकिन इनमे राम-लक्ष्मण के अतिरिक्त शान्ता का भी उल्लेख पाया जाता है ।

दशरथ जातक के अनुसार दशरथ की महिषी के तीन सन्ताने थी—राम, लक्ष्मण तथा सीता । इस महिषी की मृत्यु के पश्चात् ही दशरथ ने एक दूसरी को महिषी के पद पर नियुक्त किया था । उसे एक पुत्र उत्पन्न हुआ । मुनिचन्द्र सूरि (१२वी श० ई०) के द्वारा हरिभद्र कृत उपदेशपद की टीका मे कौशल्या, सुमित्रा तथा

कैकेयी के एक-एक पुत्र का उल्लेख मिलता है, अर्थात् राम, लक्ष्मण तथा भरत (दे० गाथा १४)। इसी प्रकार ब्रह्मचक्र मे दशरथ की तीन महिषियो के एक-एक पुत्र की चर्चा है। जावा के सेरत काण्ड में राम-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न के अतिरिक्त दशरथ की छ और सन्तानो का उल्लेख किया गया है।

३४३ वाल्मीकीय रामायण के विभिन्न पाठो मे शान्ता के विषय मे मतैक्य नही है[1]। दाक्षिणात्य पाठ मे दशरथ तथा रोमपाद की घनिष्ठता की ओर निर्देश किया गया है (**अगराजेन सख्य** १, ११, ३, **सख्य सबधक चैव तदा त प्रत्यपूजयत** १, १०, १८)। साथ-साथ इसका भी स्पष्ट शब्दो मे उल्लेख किया गया है कि शाता रोमपाद की ही पुत्री थी (दे० १, ६, १३ और १, ११, १६), जिसे रोमपाद ने ऋष्यशृग को पत्नीस्वरूप प्रदान किया था (दे० १, १०, ३२)। सुमत्र के परामर्श के अनुसार दशरथ रोमपाद के यहाँ जाकर निवेदन करते है कि ऋष्यशृग अयोध्या मे अश्वमेध का अनुष्ठान करे। अत ऋष्यशृग सपत्नीक दशरथ के साथ अयोध्या आते हैं, इस अवसर पर कही भी सकेत मात्र भी नही मिलता कि शान्ता अपने मायके वापस आ गई है (१, ११, ३०)। इसके अतिरिक्त दशरथ को 'अनपत्य' कहा गया है (१, ११, ५)। गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठो मे भी शाता लोमपाद[2] की पुत्री मानी गई है—**शाता स्वका दुहितरम्** (दे० गौडीय रामायण १, ८, २६, प० १, ८, २५)।

महाभारत मे लोमपाद को 'सखा दशरथस्य' कहा है (३, ११०, १६) तथा इसका कई स्थलो पर स्पष्ट उल्लेख किया गया है कि लोमपाद ने अपनी पुत्री शान्ता ऋष्यशृग को प्रदान किया था (दे० ३, ११०, ५, १२, २२६, ३५, १३, १३७, २५)।

हरिवश-पुराण (१, ३१, ४६), मत्स्य पुराण (४८, ६५), वायु पुराण (११, १०३) तथा ब्रह्म पुराण (१३, ४०), इन सब मे शान्ता को लोमपाद की ही पुत्री मान गया है। फिर भी यह असभव नही कहा जा सकता है कि रामायण के दाक्षिणात्य पाठ के कुछ द्वयर्थक स्थलो के कारण ही शान्ता दशरथ की पुत्री मानी जाने लगी। सुमत्र दशरथ से कहते है कि—**ऋष्यशृ गस्तु जामाता पुत्रास्तव विधास्यति** (दे०, १, ६, १६)। यहा पर सदर्भ के कारण ऋष्यशृग को रोमपाद का जमाता समझना चाहिए किन्तु व्याकरण की दृष्टि से वह दशरथ के जमाता भी हो सकते है। इसी कारण

---

१ शशाक चट्टोपाध्याय ने शान्ता-समस्या का विस्तृत विश्लेषण किया है। दे० दि प्रॉब्लेम ऑव शातास परेटज, आवर हेरिटेज (कलकत्ता), भाग २, (१९५४), पृ० ३५३-३७४।

२ उदीच्य पाठो मे रोमपाद के स्थान पर लोमपाद ही रक्खा गया है।

टीकाकार गोविन्दराज लिखते हैं—"**जामाता रोमपादस्य दशरथस्यापि वा । दशरथस्यौरसी शाता दत्ता रोमपादस्य ।**"

इसके अतिरिक्त सर्ग ११ का निम्नलिखित उद्धरण ध्यान देने योग्य है

इक्ष्वाकूणा कुले जातो भविष्यति सुधार्मिक ।
नाम्ना दशरथो राजा श्रीमान्सत्यप्रतिश्रव ॥ २ ॥
अगराजेन सख्य च तस्य राज्ञो भविष्यति ।
कन्या चास्य महाभागा शा ता नाम भविष्यति ॥ ३ ॥

इसमे 'अस्य' स्पष्ट रूप से अगराज से सम्बन्ध रखता ~ किन्तु श्रम स्वर ठाकुर के सस्करण से पता चलता ह कि बगाल तथा अन्यत्र (दे० उडा।ा सस्क ण १, १०, ३ की टिप्पणी) की कुछ हस्तलिपियो मे 'अस्य' के स्थान पर 'तस्य' मि ता है, जिससे शान्ता दशरथ की पुत्री सिद्ध होती है । इसी श्लोक क अनन्तर गोडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठो मे दशरथ द्वारा अपनी पुत्री शान्ता को प्रदान करन का वृत्तान्त दिया गया है

अगराजोऽनपत्यस्तु लोमपादो भविष्यति ।
स राजान दशरथ प्रार्थयिष्यति भूमिप ॥ ४ ॥
अनपत्याय मे कन्या सखे दातु त्वमह सि ।
शान्ता शातेन मनसा पुत्रार्थं वरवर्णिनी ॥ ५ ॥

(गो० रा० सर्ग १०, प० रा० सर्ग ६)

उदीच्य पाठो के उसी सग मे लोमपाद ऋष्यशृग के पास जाकर दशरथ के विषय मे कहते है

अनेन मे ऽनपत्याय दत्तय वरवर्णिनी ।
याचते पुत्रकृत्याय शान्ता प्रियत्मात्मजा ॥ २५ ॥

अत स्पष्ट ही ह कि गौडाय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठो के अनुसार शान्ता दशरथ की ही पुत्री थी, जिसे दशरथ न अपने नि सन्तान सखा लोमपाद को प्रदान किया था । उदीच्य पाठो की यह धारणा दाक्षिणात्य पाठ की द्वयर्थता से उत्पन्न तो हो सकी है, किन्तु ऐसा प्रतीत होना हे कि इसका वास्तविक कारण अन्यत्र ढूढना चाहिये । हरिवश, मत्स्य, वायु तथा ब्रह्म नामक पुराणो के अनुसार अगराज चित्ररथ के पुत्र के दो नाम थे दशरथ तथा लोमपाद । अत शान्ता पहले अगराज दशरथ की पुत्री तो मानी गई थी, किन्तु अयोध्यानरेश (अज-पुत्र) दशरथ कहीं अधिक विख्यात थे, अत शान्ता बाद मे उन्ही दशरथ की पुत्री मानी जाने लगी होगी । हरिवश का उद्धरण इस प्रकार है

अथ चित्ररथस्यापि पुत्रो दशरथोऽभवत ।
लोमपाद इति ख्यातो यस्य शाता सुताऽभवत् ॥ ४६ ॥

(पर्व १, अध्याय ३१)

परवर्ती रचनाओं में बहुधा अयोध्यानरेश दशरथ की पुत्री शान्ता का उल्लेख किया गया है, उदाहरणार्थ विष्णु पुराण (४, १८, १८), भागवत पुराण (६, २३, ८), भवभूति का उत्तर-रामचरित (अंक १ की प्रस्तावना), स्कंद पुराण (नागर खण्ड, अध्याय ६८), पद्मपुराण के गौडीय पातालखण्ड (अध्याय १२), आनन्द रामायण, (१, १, १६-१७), असमिया बालकाण्ड (अ० १८), मराठी भावार्थ रामायण, सारलादास का उडिया महाभारत। बलराम दास रामायण में शांता कौशल्या की पुत्री है। भावार्थ रामायण में इंद्र दशरथ को शांता तथा ऋष्यशृंग का विवाह सम्पन्न करने का परामर्श देते हैं (१, १,)।

ऊपर गोविन्दराज का उद्धरण दिया गया है (१, ६, १६), जिसमें वह शान्ता को दशरथ की औरसी पुत्री मानता है। इसी प्रकार सर्ग ११ में रोमपाद तथा दशरथ के जो 'सबधकम्' का उल्लेख है, उसे राम वर्मा तथा गोविन्दराज यह अर्थ देते हैं कि शान्ता दशरथ की पुत्री थी, जिसे उन्होंने रोमपाद को प्रदान किया था (दे० १, ११, १८)।

कृत्तिवास (१, २६) के अनुसार दशरथ ने निस्सन्तान लोमपाद को अपनी पहली सन्तान देने की प्रतिज्ञा की थी। अत जब उनकी पत्नी (भार्गव राजा की पुत्री) एक कन्या को जन्म देती है, दशरथ उसका नाम हेमलता रखकर उसे लोमपाद के यहाँ भेजते हैं। बाद में हेमलता नाम का उल्लेख नहीं मिलता, किन्तु दशरथ द्वारा दी हुई कन्या का नाम शान्ता ही माना जाता है।[1] बङ्गाल की रामकथाओं में दशरथ की पुत्री का प्राय उल्लेख मिलता है। अद्भुताचार्य के रामायण में इसका नाम शान्ता ही है, किन्तु चन्द्रावती कृत रामायण में कुकुआ नामक कैकेयी की एक पुत्री की चर्चा है (दे० दिनेशचन्द्रसेन, पृ० १६७)। कहा जाता है कि सुवर्चस रामायण में शान्ता के प्रति सीता के शाप तथा उसके पक्षि-योनि प्राप्त करने की कथा पाई जाती है (दे० ऊपर अनु० २०६)।

विदेश की कुछ ही रामकथाओं में दशरथ की पुत्री का उल्लेख है। हिन्देशिया के **सेरी राम** में इसका नाम कीकवी है और वह भरत-शत्रुघ्न की सहोदरी मानी जाती है। श्याम के **राम जातक** तथा **पालक पालाम** में दशरथात्मजा शांता का विवाह रावण के साथ सम्पन्न हो जाता है (दे० अनु० ३३६)। **दशरथ जातक** में सीता को दशरथ की पुत्री माना गया है (दे० ऊपर अनु० ५१)।

शान्ता की जन्मकथा माधवदासकृत विचित्र रामायण के अनुसार इस प्रकार

१. बङ्गवासी संस्करण (१३२१) के पृ० ४५ की पादटिप्पणी में एक छंद उद्धृत है, जिसमें इसका नाम 'कान्ता' रखा गया है।

है। इन्द्र के यहा जाते समय दशरथ ने उतावली के कारण गोमाता तथा मुनि ताराक्ष्य की अवज्ञा की थी और मुनि ने उन्हे निस्सन्तान होने का शाप दिया था। लौटते समय दशरथ फिर उस मुनि से मिले। दशरथ की अनुनय-विनय को सुनकर मुनि ने शाप बदलकर कहा—तुम्हारी पहली सन्तान एक लडकी होगी, तुमको उसे ऋष्यशृग को देना चाहिये। ऋष्यश्रग से यज्ञ करवा कर तुम्हे पुत्र उत्पन्न होगे। बाद मे शान्ता के स्वयवर के अवसर पर परशुराम आ पहुँचते हैं तथा ऋष्यश्रग के साथ कन्या का विवाह कराने का आदेश देते है, इस पर एक वेश्या को भेजा जाता है, जो ऋष्यश्रग को ले आती है और ऋष्यश्रग तथा शान्ता का विवाह सम्पन्न हो जाता है।

घ। अहल्या का उद्धार

३४४ शतपथ ब्राह्मण मे लेकर वैदिक साहित्य के अनेक ग्रन्थो मे इन्द्र और अहल्या की कथा का बीज मिलता है, क्योकि इनमे इन्द्र को अहल्यायार कहकर पुकारा गया है।[1] वैदिक साहित्य के टीकाकारो ने अहल्या की कथा को रूपक मात्र माना है तथा उस रूपक की अनेक प्रकार से व्याख्या की है। अहल्या भूमि (जिसमे हल नही चलाया गया है) तथा वर्षा के अधिष्ठाता देवता इन्द्र का सबध स्वाभाविक ही प्रतीत होता है। परवर्ती साहित्य मे अहल्या की कथा का पर्याप्त विकास हुआ तथा उसके उद्धार का सबध राम मे जोडा गया है।

महाभारत मे गौतम को अहल्या का पति माना गया है (दे० आगे अनु० ३४६)। वास्तव मे वैदिक साहित्य मे लिखा है कि इन्द्र अपने को गौतम कहलवाते थे **कौशिक ब्राह्मण गौतम ब्रुवाणेति** (शतपथ ब्रा० ३, ३, ४, १८, जैमिनीय ब्रा० २, ७९)। **षड्विंश ब्राह्मण** (१, १, २४) मे इसके विषय मे निम्नलिखित कथा मिलती है देवता तथा असुर युद्ध कर रहे थे। गौतम दोनो सेनाओ के बीच तपस्या कर रहे थे। इन्द्र ने उनके पास जाकर निवेदन किया कि वे देवताओ के गुप्तचर बन जाये। गौतम ने अस्वीकार कर दिया, जिसपर इन्द्र ने गौतम का रूप धारण कर गुप्तचर बन जाने का प्रस्ताव रखा, गौतम ने इसे स्वीकार किया। इस कथा के आधार पर तथा इन्द्र के 'अहल्यायार' नाम को दृष्टि मे रखकर यह माना जाने लगा होगा कि अहल्या के पति

---

१ दे० शतपथ ब्राह्मण (३, ३, ४, १८), मैकडॉनल-कीथ, वेदिक इडेक्स-अहल्या; डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, अहल्या-उद्धार की कथा का विकास, विचारधारा, पृ० २९-३४। जैमिनीय ब्राह्मण (२, ७९) तथा षड्विंश ब्राह्मण (१, १, २०) में अहल्या को मैत्रेयी की उपाधि दी गई है।

का नाम गौतम ही था ।[1]

अहल्या की वशावली के विषय मे **हरिवश पुराण** (१, ३२, २८-३२) में माना गया है कि मुद्गल, मौद्गल, इन्द्रसेन और बध्यश्व मे क्रमश पिता-पुत्र का सबध था । वध्यश्व तथा मेनका की दो सन्तान थी—दिवोदास तथा अहल्या । अहल्या ने गौतम की पत्नी बनकर शतानन्द को जन्म दिया । अहल्या के पिता का नाम विष्णु पुराण (४, १६, ६१) मे वृहदश्व, मत्स्यपुराण (५०, ६) मे विन्ध्याश्व तथा भागवत पुराण (६, २१, ३४) मे मुद्गल ही माना गया है ।

वाल्मीकीय **उत्तरकाण्ड** मे पहले-पहल अहल्या की उत्पत्ति तथा गौतम-अहल्या के विवाह के विषय मे निम्नलिखित वृत्तान्त मिलता है । ब्रह्मा ने दूसरे प्राणियो के सर्वश्रेष्ठ अग लेकर एक ऐसी स्त्री का निर्माण किया, जिसमे 'हल' (कुरूपता) का सर्वथा अभाव था और उसका नाम अहल्या रखा । इन्द्र अहल्या की अभिलाषा करते थे; किन्तु ब्रह्मा ने उसे धरोहर के रूप मे गौतम ऋषि के यहाँ रखा । बहुत वर्षों के बाद गौतम ने उसे ब्रह्मा को लौटाया और ब्रह्मा ने तपस्वी गौतम की सिद्धि देखकर उन्हे अहल्या को पत्नीस्वरूप प्रदान किया ।[2]

ब्रह्मपुराण (अध्याय ८७) मे इस वृत्तान्त का विकसित रूप पाया जाता है । इसके अनुसार ब्रह्मा ने गौतम को अहल्या के पालन-पोषण का भार सौपा था । अहल्या की यौवन-प्राप्ति पर समस्त देवता, मुनि, दानव, यक्ष तथा राक्षस उसे माँगने लगे, किन्तु इन्द्र ने विशेष आग्रह किया । यह देखकर ब्रह्मा ने कहा जो पृथ्वी की प्रदक्षिणा करके सर्वप्रथम मेरे पास आये, उसी को अहल्या दी जायेगी । इसपर समस्त देवता पृथ्वी की प्रदक्षिणा करने निकले, किन्तु गौतम ने अर्धप्रसूता सुरभि तथा शिव-लिंग की प्रदक्षिणा

---

१ ऋग्वेद (१, १०, ११) के समय से कौशिक इन्द्र का एक नाम रहा है । अत षड्विंश ब्राह्मण का वाक्याश—**कौशिको हि स्मैना ब्राह्मण उपन्यैति** (१, १, २२) का अर्थ नही है कि इन्द्र कौशिक का रूप धारण कर अहल्या से मिलने जाया करते थे । इस अर्थ के आधार पर सायण मानते हैं कि अहल्या के पति का नाम कौशिक ही था ।

२ कृत्तिवास रामायण के अनुसार (१, ५६) ब्रह्मा ने पहले १००० सुन्दरियो की सृष्टि की थी और बाद मे उनके सौंदर्य से अहल्या का निर्माण किया । ब्रह्मा द्वारा अहल्या की सृष्टि होने के कारण उसे ब्रह्मा की पुत्री भी कहा जाता है (दे० अध्यात्म रामायण १, ५, ३५) । रामकियेन मे गौतम-अहल्या-विवाह का एक अन्य रूप मिलता है (दे० आगे अनु० ५१४) ।

की और अहल्या को प्राप्त किया। आनन्द रामायण मे इस कथा की ओर सकेत किया गया है—**ब्रह्मणा निर्मिताऽहल्या द्विमुखी गो परिक्रमात् दत्ता पुरा गौतमाय**(१, ३, १८)।

पउमचरिय (पर्व १३) के अनुसार अहल्या ज्वलनसिंह तथा वेगवती की पुत्री है, जिसने अपने स्वयवर के अवसर पर राजा इन्द्र को ठुकराकर राजा नन्दिमाली (अथवा आनन्दमालिवर) को चुन लिया था। बाद मे नन्दिमाली को वैराग्य हुआ और उन्होंने दीक्षा ली थी। किसी दिन इन्द्र ने उस ध्यानस्थ नन्दिमाली को बाधा था, जिसका परिणाम यह हुआ कि इन्द्र रावण से हार गये। पाश्चात्य वृत्तान्त न० १ मे अहल्या को भूल से विश्वामित्र की पत्नी माना गया है।

गौतम तथा अहल्या की सन्तति के विषय मे विभिन्न उल्लेख मिलते है। महाभारत मे उनके पुत्र चिरकारी (दे० १२, २५८, ४) तथा एक पुत्री की चर्चा है, जिसका विवाह गौतम ने अपने प्रिय शिष्य उत्तक के साथ कराया था (दे० प्रचलित महाभारत, पर्व १४, अध्याय ५६)। इसके अतिरिक्त गौतम-पुत्र शरद्वान्[1] का भी उल्लेख है, जो सरकण्डो के साथ उत्पन्न हुआ था (दे० आदि पर्व, १२०, २)। वाल्मीकि रामायण (दे० १, ५१, २) तथा महावीरचरित आदि राम-नाटको मे जनक के पुरोहित शतानन्द को गौतम तथा अहल्या का पुत्र माना गया है। रामकथाओ का एक अन्य वग भी मिलता है, जिसके अनुसार अजना, वालि तथा सुग्रीव अहल्या की सन्तान है (दे० आगे अनु० ३४७)।

३४५ गौतम-पत्नी के साथ इन्द्र के दुराचार का वर्णन पहले-पहल महाभारत मे मिलता है, जहाँ चिरकारिता की प्रशसा करते हुए गौतम के पुत्र चिरकारी का उदाहरण प्रस्तुत किया गया है।[2] अपनी स्त्री के व्यभिचार से क्रुद्ध होकर गौतम ने चिरकारी को अहल्या का वध करने का आदेश दिया तथा वन चले गये। अपने स्वभाव के अनुसार चिरकारी ने अपने पिता की इस आज्ञा पर बहुत समय तक विचार किया और वह इस निष्कर्ष पर पहुँच गया कि माता निर्दोष है क्योकि इन्द्र गौतम के वेश मे उसके पास गये थे (३७)। इतने मे गौतम वन मे सोचने लगे कि मैने अपनी निर्दोष पत्नी के वध का आदेश देकर अच्छा नही किया। इन्द्र ब्राह्मण के वेष मे मेरे आश्रम आये, उसने उनका आतिथ्य-सत्कार किया। बाद मे जो दुखद घटना हुई, उसमे मेरी स्त्री का कोई

---

१. हरिवंश पुराण (१, ३२, ३२) मे अहल्या-पति का नाम शरद्वान् माना गया है। महाभारत में अहल्या-पुत्र शरद्वान् गौतम भी कहलाता है (दे० १ १२०, ५)।

२ दे० शातिपर्व, अध्याय २५८। उद्योग पर्व मे इन्द्र के दुराचार का उल्लेख मात्र किया गया है, दे० ५, १२, ६।

दोष नही था—**अत्र चकुशले जाते स्त्रिया नास्ति व्यतिक्रमः** (२५८, ४६)। अत वह घर लौटे तथा अपनी पत्नी को सकुशल पाकर अपने पुत्र की चिरकारिता की प्रशसा करने लगे। महाभारत के कई स्थलो पर इन्द्र के प्रति गौतम के शाप का उल्लेख है, किन्तु अहल्या को महाभारत मे सर्वत्र निर्दोष ही माना गया है। वाल्मीकीय रामायण के उत्तरकाण्ड (सर्ग ३०) के अनुसार भी अहल्या निर्दोष हे किन्तु बालकाण्ड (सर्ग ४८) मे कहा गया है कि जिज्ञासा से प्रेरित होकर अहल्या ने इन्द्र को गौतम के वेष मे पहचानते हुये भी उनका प्रस्ताव स्वीकार किया था

मुनिवेष सहस्राक्ष विज्ञाय रघुनन्दन।
मति चकार दुर्मेधा देवराजकुतूहलात् ॥ १९ ॥

स्कदपुराण (माहेश्वरखड, कौमारखड, अध्याय ६, ८०-१६१) मे भी चिरकारी की कथा पाई जाती है। इसमे बहुत से श्लोक महाभारत के ही हैं, फिर भी इस कथा मे दो महत्वपूर्ण अतर है। गौतम-पत्नी[1] का अपराध यह है कि वह अपने स्त्री-स्वभाव के अनुसार कौशिकी के तट पर बलि नामक राजा की ओर देखती रही।[2] अपनी पत्नी के वध का आदेश देने के कारण गौतम दुखी थे, इतने मे इन्द्र ब्राह्मण के वेश मे उनके पास आए और उन्होने गौतम को स्त्री की स्वाभाविक दुर्बलता के विषय मे एक गाथा सुनायी

अनृता हि स्त्रिय सर्वा सूत्रकारो यदब्रवीत् ॥ ११० ॥
अतस्ताभ्य फल ग्राह्य न स्याद्दोषेक्षण सुधी।

यह सुनकर गौतम अपने चिरकारी पुत्र के पास गये और अपनी पत्नी को जीवित देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए। वह अपने पुत्र तथा भार्या के साथ चिरकाल तक अपने आश्रम मे रहकर अत मे स्वर्ग सिधारे —ततश्चिरमुपास्याथ दिव यातश्चिर मुनि (१३१)।

परवर्ती कथाओ मे इस बात पर प्राय बल दिया जाता है कि अहल्या ने इन्द्र को नही पहचाना था।[3] **ब्रह्मपुराण** (अध्याय ८७) का वृत्तान्त इस प्रकार है। गौतम

---

१ चिरकारी की कथा के अन्तर्गत अहल्या का नाम न तो महाभारत मे और न स्कदपुराण मे मिलता है।

२ दे० श्लोक १०८। यह रेणुका के अपराध का स्मरण दिलाता है; पत्नी सहित जलक्रीड़ा करते हुए चित्ररथ को देखकर रेणुका उसकी ओर आकर्षित हुई थी (दे० महाभारत, आरण्यकपर्व ११६, ६-७)।

३ दिनेश चन्द्र सेन द्वारा सम्पादित कृत्तिवास रामायण के अनुसार इन्द्र अपने ही रूप मे आकर अहल्या की बुद्धि को भ्रष्ट करने मे सफल है। कब रामायण (१, ९), रंगनाथ रामायण (१, २६) तथा तेलुगु कवि एरेन्न के महाभारत (अरण्यपर्व) मे अहल्या को दोषी माना गया है।

अपनी पत्नी के साथ ब्रह्मगिरि पर तप करते थे। अहल्या के विवाह के-पहले से ही इन्द्र उस पर आसक्त हुये थे, अत गौतम की अनुपस्थिति मे इन्द्र गौतम का रूप धारण कर अहल्या के पास आया करते थे, किन्तु अहल्या उन्हे गौतम समझती थी—**न बुबोध त्वहल्या त जार मेने तु गौतमम** (श्लोक ४४)। किसी दिन सयोगवश आश्रम मे दोनो ही गौतम दिखाई पडे। आश्रमवासी यह आश्चय देखकर तथा इसे तप का प्रभाव समझकर गौतम से कहने लगे

> भगवन्किमिद चित्र बहिरन्तश्च दृश्यसे।
> **प्रिययाऽन्त प्रविष्टोऽसि तथैव च बहिर्भवान्**
> **अहो तप प्रभावोऽय नानारूपधरो भवान ॥४८॥**

यह सुनकर गौतम अपने घर गए तथा इन्द्र ने गौतम के आगमन पर विडाल का रूप धारण कर लिया।[1]

वाल्मीकीय **बालकाण्ड** के अनुसार इन्द्र ने देवताओ के पास जाकर कहा था कि गौतम की तपस्या मे विघ्न डालकर तथा उनमे क्रोध उत्पन्न कर मैने देवताओ का उपकार किया है (दे० १, ४९, २)। परवर्ती रचनाओ मे इन्द्र के इस उद्देश्य को अधिक महत्त्व दिया गया है। **असमिया बालकाण्ड** (अध्याय ३८) के अनुसार इन्द्र गौतम की घोर तपस्या देखकर डर गये थे। वह उस तपस्या मे विघ्न डालने के विचार से उनके आश्रम मे आ गए, किन्तु अहल्या को देखकर आसक्त हो गए। **रगनाथ रामायण** (१, २९) मे भी माना गया है कि गौतम की तपस्या मे विघ्न डालने के उद्देश्य से इन्द्र ने अहल्या का सतीत्व नष्ट किया था।

ब्रह्मवैवर्त पुराण मे इन्द्र के दुराचार का दो स्थलो पर वर्णन किया गया है (दे० कृष्ण-जन्म खण्ड, अध्याय ४७ और ६१)। दोनो वृत्तान्त अहल्या को निर्दोष मानते हैं। अध्याय ६१ के अनुसार इन्द्र कामशास्त्र मे अपनी पहुँच का उल्लेख करते हुए अहल्या को प्रलोभन देते हैं तथा शची को अहल्या की दासी बनाने की प्रतिज्ञा करते हैं। अहल्या अविचलित रहकर घर जाती है और गौतम को सब कुछ बतलाती है। बाद मे इन्द्र गौतम का रूप धारण कर अहल्या के साथ रमण करते हैं, किन्तु सर्वज्ञ मुनि घर लौटकर उनको शाप देते हैं।[2]

---

१ विडाल का रूप धारण करने की कथा कथासरित्सागर (दे० आगे अनु० ३४७), पद्मपुराण (सृष्टिखण्ड ५१, ५७), कम्ब रामायण (१, ९, ७६), बलरामदास रामायण आदि मे भी मिलती है। पद्मपुराण के अनुसार गौतम [illegible]थ होकर इन्द्र का पाप जान लिया था।

२ बलरामदास रामायण मे भी इन्द्र पहले अपने ही रूप मे तथा बाद में गौतम के रूप में अहल्या के पास आते हैं।

कृत्तिवास रामायण (१, ५६) मे इन्द्र को गौतम का प्रियतम शिष्य माना गया है, उन्होंने गौतम का वेष धारण कर अहल्या के साथ रमण किया। बाद मे गौतम घर पहुँचे और अहल्या के शरीर पर शृंगार के लक्षण देखकर इन्द्र का दुराचार जान गए। इन्द्र आश्रम मे ही निवास करते थे तथा बुलाये जाने पर पुस्तके काख मे दबाये गौतम के पास आए।

रगनाथ रामायण (१, २६) तथा तत्त्वसग्रह रामायण (१, २५) के अनुसार इन्द्र ने मुर्गे का रूप धारणकर रात्रि मे ही बाँग दी और गौतम को भ्रम मे डाला कि **पौ फटने पर है**।[1]

३४६ अधिकाश रचनाओ के अनुसार गौतम अचानक घर पहुँचकर इन्द्र तथा अहल्या, दोनो को शाप देते है, कुछ ही वृत्तान्तो मे उनकी पुत्री भी उनका कोपभाजन बन जाती है (दे० आगे अनु० ३४७)। वाल्मीकीय उत्तरकाण्ड के अनुसार गौतम शाप देकर अपने ही आश्रम मे निवास करते है, किन्तु बालकाण्ड के अनुसार उन्होंने अहल्या को वहाँ छोडकर हिमालय की ओर प्रस्थान किया।[2]

गौतम के शाप के कई रूप मिलते है। **महाभारत** के अनुसार इस शाप के कारण इन्द्र की दाढी पीली पड गयी थी—**अहल्याधर्षणनिमित्त हि गौतमाद्धरिश्मश्रुतामिन्द्र प्राप्त**।[3] वाल्मीकीय **उत्तराकाण्ड** मे लिखा है कि गौतम ने इन्द्र को पराजित होने का शाप दिया, जिसके फलस्वरूप मेघनाद ने इन्द्र को हरा दिया था। इसके अतिरिक्त गौतन ने कहा कि मनुष्यो के इस प्रकार के पापो का आधा दोष इन्द्र का ही रहेगा और इन्द्र (अथवा किसी भी भावी सुरेन्द्र) का पद कभी स्थिर नही हो पायेगा (दे० सर्ग ६०, ३२-३५)। **लिंग पुराण** (अध्याय २६) मे किसी शाप का उल्लेख नही है, किन्तु यह माना गया है कि गौतम ने इन्द्र का वृषण काट कर भूमि पर फेक दिया था

इन्द्रस्यापि च धर्मज्ञ छिन्न तु वृषण पुरा।
ऋषिणा गौतमेनोर्व्या क्रुद्धेन विनिपातितम्॥ २७॥

---

१ हिन्दी विश्रामसागर मे भी इस प्रकार का निर्देश मिलता है—सुनि मुनि गे तमचुर सम बानी (अध्याय ७)।

२ अध्यात्म रामायण मे भी गौतम हिमालय जाते है (१, ५, ३३)।

३ दे० शाति पर्व ३२६, १४ (१)। महाभारत के एक अन्य स्थल पर इसका उल्लेख मात्र किया गया है कि अहल्या के कारण इन्द्र को शाप दिया गया था, दे० १३, १५३, ६ (यह सदर्भ गीता प्रेस के सस्करण का है)।

वाल्मीकि के बालकाण्ड के वृत्तान्त मे गौतम शाप द्वारा इन्द्र को नपुंसक बना देते है।[1] बालकाण्ड के इस शाप का उल्लेख परवर्ती रचनाओ मे तो मिलता है,[2] किन्तु गौतम-शाप का सर्वाधिक प्रचलित रूप यह है कि इन्द्र के शरीर मे सहस्र भग प्रकट हुये, दे० ब्रह्मपुराण (८७, ५९), स्कन्द-पुराण (नागरखण्ड, अ० २०७), कथा-सरित्सागर (३, १७), पद्मपुराण (५, ५१, २८), अध्यात्म रामायण (१, ५, २६), कब रामायण (१, ६), रगनाथ रामायण (१, २६), ब्रह्मवैवर्त पुराण (कृष्णजन्म खण्ड, अध्याय ४७ और ६१), आनन्द रामायण (१, ३, १६), बलरामदास रामायण, तत्त्वसग्रह रामायण (१, २५), तोरवे रामायण (१, १२), कृत्तिवास रामायण (१, ५६)। इन सब रचनाओ मे प्राय इसका उल्लेख मिलता है कि इन्द्र बाद मे सहस्र भगवान् से सहस्रनयन बन गये। **ब्रह्मपुराण** के अनुसार गोतमी नदी मे स्नान करने से इन्द्र मे यह परिवर्तन हो सका था किन्तु **ब्रह्मवैवत्त** पुराण मे इन्द्र को इसके लिए एक सहस्र वर्ष तक सूर्य की आराधना करनी पडी। इस रचना मे गौतम के दो अन्य शापो का भी उल्लेख है—**'पूर्णवर्ष च सतत योनिगध त्वमाप्नुहि'** और **'अष्टश्री भव'** (दे० अध्याय ४७, ३१-३२)। बलरामदास तथा कब रामायण के अनुसार गौतम ने ब्रह्मा के अनुरोध पर अपना शाप बदलकर इन्द्र को सहस्रनयन बना दिया था।[3] **कृत्तिवास** (दे० १, ६०) के अनुसार इन्द्र के अश्वमेध-यज्ञ करने पर उनमे यह परिवर्तन आ गया है। **पद्मपुराण** (५, ५१, ४८) के अनुसार देवी के वरदान के फलस्वरूप इन्द्र सहस्राक्ष बन गये थे।

माधवदेवकृत असमिया बालकाण्ड (अध्याय ३८) मे इस सबध मे निम्न-

---

१ इस शाप के कारण इन्द्र का वृषण भूमि पर गिर गया (सर्ग४८)। अगले सर्ग मे देवताओ द्वारा इन्द्र को मेष का वृषण दिलाने का वर्णन है। महाभारत के अनुसार विश्वामित्र ने ही इन्द्र को इस प्रकार का शाप दिया था—**कौशिकनिमित्त चेंद्रो मुष्कवियोग मेषवृषणत्व चावाप** (दे० शाति पर्व, ३२६, १४ (२)।

२ दे० पद्मपुराण (सृष्टिखण्ड ५१, २६), बलरामदास रामायण, तत्व-सग्रह रामायण आदि।

३ वास्तव मे सहस्रनयन अथवा सहस्राक्ष उपाधि महाभारत के आदिपर्व से लेकर इन्द्र के लिए प्रयुक्त हुई है (दे० अध्याय २१, १२)। इसकी उत्पत्ति की भी कथा दी गई है, तिलोत्तमा को देखने की अभिलाषा मे इन्द्र स्वत-सहस्राक्ष बन गये थे (दे० आदिपर्व २०३, २६)

लिखित कथा मिलती है। इन्द्र भिक्षार्थी ब्राह्मण का रूप धारण कर गौतम के आश्रम से चले गये थे। रास्ते मे गौतम स भेट होन पर इन्द्र कापने लगे, गौतम को यह देखकर सन्देह हुआ और उन्होन इन्द्र को पहचान कर उन्हे (नपुसक तथा सहस्रभगवान बनने का) दोहरा शाप दिया। इन्द्र अपनी यह लज्जाजनक दशा देख कर एक पद्म-कोष मे छिप गये। बहुत दिनो के बाद शची ने बृहस्पति से पूछा कि इन्द्र कहाँ है। दुर्गा से इन्द्र के छिपन का स्थान जानकर बृहस्पति ने वहाँ जाकर उन्हे दुर्गा की पूजा करन का परामर्श दिया। इन्द्र की पूजा से सन्तुष्ट होकर दुर्गा ने कहा कि मैं शाप दूर करन मे असमर्थ हूँ, किन्तु म उन बदल सकती हू, इस पर दुर्गा ने इन्द्र का सहस्रनयन बना दिया था। वर पहुच कर इन्द्र ने अश्विनीकुमारो को बुलाया और उन्होने इन्द्र को अज का अण्डकोप लगाया। इसी कारण से अज पवित्र हो गया है तथा पितृकार्य मे इसका मास चढाया जाता है।

महाभारत मे अहल्या के प्रति किसी शाप का उल्लेख नही है। वाल्मीकीय उत्तरकाण्ड के अनुसार गौतम न अहल्या से कहा कि तुम्हारे सौन्दर्य के कारण यह अनर्थ हुआ है, अत अब से लेकर तुम अकेली ही सुन्दर नही होगी, सभी लोग तुम्हारे सौदर्य के भागी बन जाय।

तस्माद्रूपवती लोके न त्वमेका भविष्यसि।
रूप च ते प्रजा सर्वा गमिष्यन्ति न सशय ॥ (सर्ग ३०, ३७-३८)

बालकाण्ड (सर्ग ४८) के वृत्तान्त मे गौतम अहल्या को आदेश देते है कि वह अदृश्य होकर राम के पहुँचने तक तपस्या करे

इह वषसहस्राणि बहूनि निवसिष्यसि ॥ २९ ॥
वातभक्षा निराहारा तप्यन्ती भस्मशायिनी।
अदृश्या सवभूतानामाश्रमेऽस्मिन्वसिष्यसि ॥ ३० ॥

पद्मपुराण (सृष्टिखड ५१, ३३) म अहल्या को मासहीन, अस्थिचर्मावशिष्ट हो जाने का शाप दिया जाता है—

अस्थिचर्मसमाविष्टा निर्मासाऽनखवर्जिता।
चिर स्थास्यसि चैकापि त्वा पश्यन्तु जना स्त्रिय ॥

वाल्मीकि के बालकाण्ड मे गौतम यह भी कहते है कि राम का आतिथ्य-सत्कार करने के पश्चात् तुम पूववत् अपना शरीर धारण कर मेरे पास आओगी अर्थात् अपने पूर्वरूप मे मेरे साथ रहोगी—**स्व वपुर्धारयिष्यसि** (४८, ३२)। सम्भवत इस वाक्याश के कारण यह धारणा उत्पन्न हुई कि अहल्या शापवश शिला बन गई थी। शाप का यह परिणाम पहले-पहल **रघुवश** (११, ३४) मे पाया जाता है। आगे चलकर पाषाणभूता अहल्या का बहुत सी रचनाओ मे उल्लेख मिलता है, उदाहरणार्थ

नृसिंह पुराण (अध्याय ४७), स्कंदपुराण (रेवाखण्ड, अ० १३६, नागरखण्ड, अ० २०८), जानकीहरण (६, १४), कथासरित्सागर (३, १७), महानाटक (३, १७), वह्निपुराण (पृ० १८२), उदारराघव (३, २६), सोमेश्वरकृत रामशतक (१८), कब रामायण (१, ६), रगनाथ रामायण (१, २६), सारलादासकृत महाभारत (मध्य पर्व पृ० २०३), कृत्तिवास रामायण (१, ५६), ब्रह्मवैवर्त्त पुराण (कृष्णजन्म खण्ड, अ० ४७ ओर ६१), गणेश पुराण[1], पद्मपुराण (उत्तरखण्ड, अ० २६६ तथा गोडीय पाताल-खण्ड अ० १६), आनन्द रामायण (१, ३, १६), राघवोल्लास काव्य (सर्ग ६), तोरवे रामायण (१, १२), रामचरितमानस (१, २१०), गीतावली (१, ५७), असमिया बालकाण्ड, सूरसागर (नवम स्कद, पद ४६६), सत्योपाख्यान (२, ५), मराठी भावार्थ रामायण (१, १४), तत्वसग्रह रामायण (१, २५), पाश्चात्य वृत्तात न० १० आदि ।

रामकियेन के अनुसार गोतम ने अहल्या को इसी उद्देश्य से पत्थर बनने का शाप दिया था कि नारायण के रामावतार के समय वह सेतु बनाने के काम मे आ जाये और इस प्रकार सदा के लिए सागर मे दफनायी जाय (अध्याय ६) ।

गौतम के शाप का एक अन्य रूप कम प्रचलित है, इसके अनुसार अहल्या नदी बन गई थी । **ब्रह्मपुराण** (८७, ५६) मे शाप इस प्रकार है— **शुष्कनदी भव** तथा **आनन्द रामायण** (१, ३, २३) के अनुसार अहल्या जनस्थान मे नदी के रूप मे प्रकट हुई ।[2] **पद्मपुराण** (सृष्टिखण्ड ५१, ३३) के अनुसार गौतम के शाप के कारण अहल्या का शरीर सूख गया था—**अस्थिचर्मसमाविष्टा निर्मासा ।**

योगवासिष्ठ के रचयिता ने पौराणिक कथा के अनुकरण पर एक अन्य अहल्या तथा इन्द्र को एक दूसरे के अनन्य प्रेमियो के रूप मे चित्रित किया है । कथा इस प्रकार है

इन्द्रद्युम्न नामक राजा की पत्नी अहल्या ने किसी दिन गौतम की पत्नी अहल्या तथा इन्द्र की कथा सुनी, जिससे वह अपने नगर के सुन्दर ब्राह्मण-कुमार इन्द्र पर आसक्त हुई । रानी ने ब्राह्मण-कुमार को देखना चाहा । एक सखी इन्द्र को रानी के पास ले आई, जिससे दोनो मे परम अनुराग उत्पन्न हुआ और वे उस समय से बहुधा मिलते थे । राजा ने वृत्तान्त सुनकर दोनो को दण्ड दिया, किन्तु एक दूसरे के प्रेम मे

---

१ द० सातवलेकर, श्री रामायण महाकाव्य का बालकाण्ड (१९४३), पृ० ५५६ ।

२ अपभ्रंश मे सिरा (सिला) का अर्थ 'शिला' तथा 'नदी' दोनो हो सकता है, सभव है इसी कारण से गौतम के शाप का यह रूप प्रचलित हुआ ।

मग्न रहने के कारण उनको इस शारीरिक दण्ड का अनुभव ही नही हुआ। यहाँ तक कि हाथियो के पैरो के नीचे डाले जाने पर अथवा अग्नि मे फेके जाने पर भी उनको दु ख नही हुआ। दोनो का प्रेम नष्ट करने मे असफल होकर राजा भरत नामक ऋषि के पास गए और उन्होने उनसे दोनो को शाप देने की प्रार्थना की। भरत ने ऐसा ही किया और दोनो के शरीर शापवश भूमि पर गिर पडे। दोनो मृगयोनि मे उत्पन्न होकर साथ ही रहते थे। बाद मे दोनो पक्षी बने और इसके बाद ब्राह्मण-दम्पत्ति के रूप मे प्रकट होकर एक-दूसरे मे अनुरक्त रहे। इसके पीछे भी उनके अनेक जन्म हो गए, लेकिन दोनो प्रत्येक जन्म मे एक दूसरे से प्रेम करते रहे (दे० उत्पत्ति प्रकरण, सर्ग ८९)।

३४७ अहल्या की कथा का एक अन्य रूप भी मिलता है, जिसमे अजनी उसकी पुत्री मानी गई है। इस कथा का बीज **कथासरित्सागर** मे विद्यमान है, जहाँ अजना का उल्लेख नही है। गौतम ऋषि दिव्य ज्ञान द्वारा अपनी पत्नी अहल्या का इन्द्र के साथ व्यभिचार जानकर अकस्मात् घर पहुँचे, इस पर इन्द्र ने मार्जार का रूप धारण कर लिया। गौतम के पूछने पर अहल्या ने प्राकृत मे—**एसो ठिओ खु मज्जारो (एष स्थित खलु मार्जार)**, इसके दो अर्थ है—यह मार्जार है अथवा यह मेरा जार हे। उत्तर सुन-कर गौतम ने इन्द्र और अहल्या दोनो को शाप दिया, अहल्या को शिला बन जाने का तथा इन्द्र को सहस्रयोनि हो जाने का (दे० ३, १७)। इस वृत्तान्त पर आधारित अजनी के विषय मे निम्नलिखित कथा पजाब मे प्रचलित है—गौतम ने गगा-स्नान से लौटकर अपनी पुत्री अजनी से पूछ लिया था कि घर मे कौन है। अजनी ने उत्तर दिया—'माजार' (मार्जार अथवा माँ का जार)। इस द्व्यथता के कारण गौतम ने अपनी पुत्री को गर्भवती हो जाने का शाप दिया और फलस्वरूप उसने हनुमान को जन्म दिया (दे० मैकॉलिफ, दि० सिख रेलिजन, भाग ६, पृ० ५२ और अनु० ६७२)। इस कथा के विकसित रूप मे गौतम की पत्नी अहल्या की तीन सन्ताने है—अजनी (गौतम की पुत्री) और दो पुत्र वालि और सुग्रीव, जिन्हे गौतम तो अपनी सतान समझते हैं, किन्तु वास्तव मे वे इन्द्र और सूर्य के पुत्र है (दे० आगे अनु ५१४)।

३४८ महाभारत मे अहल्या की कथा के प्रसग मे राम का उल्लेख नही होता। राम द्वारा अहल्योद्धार का प्राचीनतम रूप वाल्मीकि रामायण मे सुरक्षित है। उत्तर-काण्ड के अनुसार गौतम ने अहल्या को आश्वासन दिया कि विष्णु-अवतार राम के दर्शन-मात्र से वह पवित्र हो जायेगी (**त द्रक्ष्यसि यदा भद्रे तत पूता भविष्यसि,** सर्ग ३०, ४३)। बालकाण्ड के वृत्तान्त (सर्ग ४९) मे राम के विष्णुत्व की ओर निर्देश नही किया गया है। गौतम ने अहल्या से कहा—'तपस्या करो तथा राम के आने पर

उनका आतिथ्य-सत्कार करने के बाद मेरे पास लौटो।' राम के आगमन तक वह शाप के प्रभाव से अदृश्य होकर तपस्या करती है। विश्वामित्र से यह कथा सुनकर राम तथा लक्ष्मण आश्रम मे प्रवेश करते है। उसी समय शाप की अवधि समाप्त हो जाती है, अत वे अहल्या को देखने मे समर्थ हैं और ऋषि-पत्नी के पैर छूते हैं **राघवौ तु तदा तस्या पादौ जगृहतुस्तदा।**[1]

राम-लक्ष्मण का आतिथ्य-सत्कार करने के पश्चात् (**पाद्य मध्य तथातिथ्य चकार सुसमाहिता**) अहल्या अपने पति के पास लौट जाती है (सर्ग ४६)।

अधिकाश परवर्ती रचनाओं के अनुसार अहल्या वास्तव मे शिला बन गई थी और राम उसे अपने चरणों के स्पर्श से पुनर्जीवन प्रदान करते है, उदाहरणार्थ महा-नाटक (३, १७), आनन्द रामायण (१, ३, २०), ब्रह्मवैवर्त्त पुराण (कृष्णखण्ड, अध्याय ४७ और ६१) आदि। कृत्तिवास के अनुसार राम ने अहल्या के मस्तक पर ही अपना पैर रखकर उसे पाषाण मे से प्रकट किया था।

उदारराघव (३, २६-४१) के अनुसार राम के चरण-स्पर्श से पत्थर से स्त्री बनते देखकर विश्वामित्र और दोनो राजकुमार विस्मित हो गये। इस पर अहल्या अपनी कथा सुनाती, राम-सीता-विवाह की भविष्यवाणी करती और विश्वामित्र से अनुरोध करती है कि वह राम-लक्ष्मण को मिथिला ले जाये। गौतम अपनी पत्नी ग्रहण करते है और वे दोनो भी विश्वामित्र के साथ जनक की राजधानी जाते है।

स्कन्द पुराण की कथा मे शैव सम्प्रदाय का प्रभाव स्पष्ट है। इसके अनुसार राम ने हाथ से शिला का स्पर्श करके अहल्या का उद्धार किया और उसे विभिन्न तीर्थों की यात्रा करने का आदेश दिया। अहल्या ने ऐसा किया और अनेक तीर्थों मे हरलिंग की स्थापना की (दे० नागरखण्ड, अ० २०८)।

पद्मपुराण के अनुसार गौतम ने अपने शाप के अन्त के विषय मे अहल्या को आश्वासन दिया कि राम किसी दिन सीता तथा लक्ष्मण के साथ इस आश्रम मे आयेगे तथा तुमको **'शुष्करूपा प्रतिमा'** के रूप मे देखकर वसिष्ठ से पूछ लेगे कि यह मूर्त्ति क्या है। वसिष्ठ से पूर्व वृत्तान्त सुनकर राम तुमको निर्दोष घोषित करेगे, तब तुम दिव्य रूप धारण कर मेरे पास आओगी **दिव्यरूप समास्थाय मद्गृह चागमिष्यसि** (दे० सृष्टिखण्ड, अध्याय ५१)।

---

१ दे० श्लोक १७। दाक्षिणात्य पाठ के अनुसार अहल्या ने भी राम-लक्ष्मण के पैर छुए—**'स्मरन्ती गौतमवच प्रतिजग्राह सा हि तौ'**। यह अर्द्धश्लोक प्रक्षिप्त है, इसके स्थान पर उदीच्य हस्तलिपियो मे प्राय मिलता है—**'सा च तौ पूजयामास स्मृत्वा गौतमभाषितम्।"**

नदी-रूपा अहल्या का उद्धार दो प्रकार से वर्णित है। **ब्रह्मपुराण** मे राम का उल्लेख नही है, गौतमी नदी से मिलने पर अहल्या ने अपना पूर्व रूप धारण किया था— **तया तु सगता देव्या (गौतम्या) अहल्या गौतमप्रिया पुनस्तद्रूपमभवत्** (८७, ६६)। **आनन्द रामायण** के अनुसार राम ने मिथिला जाते समय पाषाणभूता अहल्या का उद्धार किया था, किन्तु उस रचना मे कल्पभेद का भी उल्लेख है, जिसके अनुसार राम ने वनवास के समय नदी-रूपा अहल्या का स्पर्श करके उसको शाप मुक्त किया था **रामेण भ्रमतारण्ये स्वाङ्घ्रिस्पर्शात्समुद्धृता नदीरूपा अहल्या** (१, ३, २१)।

रामभक्ति से अनुप्राणित रचनाओ मे प्रस्तुत वृत्तान्त का वातावरण नितान्त बदल गया है। **अध्यात्म रामायण** का रचयिता पाषाणभूता अहल्या की कथा से अनभिज्ञ नही था (दे० केवट वृत्तान्त १, ६, ३) फिर भी उसने माना है कि अहल्या शिला पर खडी होकर तपस्या करती रही (**तिष्ठ दुर्वृत्ते शिलायामाश्रमे मम,** १, ५, २७)। राम ने उस आश्रयशिला का अपने चरण से स्पर्श किया और उसको अपना विष्णु-रूप दिखाया। अहल्या ने राम का विधिवत् पूजन किया और अनन्तर एक विस्तृत स्तुति मे राम के ब्रह्मस्वरूप का निरूपण किया तथा भक्ति का वरदान मागा (१, सर्ग ५)। अहल्या की स्तुति को राघवोल्लास काव्य (सर्ग ७) तथा रामचरितमानस मे भी एक महत्त्वपूर्ण स्थान मिला है। इस तरह "अहल्या-उद्धार की यह प्रसिद्ध पौराणिक कथा ब्राह्मण-ग्रन्थो के अहल्याजार इन्द्र से प्रारभ होकर अनेक रूप धारण करने के उपरान्त अहल्या-तारक राम की भक्ति मे लय हो जाती है।"[1]

अधिकाश रचनाओ के अनुसार राम ने मिथिला की यात्रा मे अहल्या का उद्धार किया था। फिर भी अनेक रामकथाओ मे राम के वनवास के समय इस घटना का वर्णन किया गया है। महानाटक मे अगस्त्याश्रम से चले जाने के उपरान्त राम अहल्या का उद्धार करते है (दे० अक ३)। रामलिगामृत मे राम सीता की खोज करते हुए शिलामयी अहल्या को शाप से मुक्त कर देते है (दे० सर्ग ६)। आनन्द रामायण मे भी वनवास के समय इसका वर्णन किया गया है। रामायण मसीही के अरण्यकाण्ड मे राम द्वारा पाषाणभूता अहल्या के उद्धार की कथा मिलती है। काश्मीरी रामायण के अरण्यकाण्ड के प्रारभ मे राम सीता से अहल्या का परिचय कराते है।

नाटककारो ने रामकथा को बदलने मे कभी सकोच नही किया है। जानकी-परिणय मे अहल्योद्धार की कथा इस प्रकार है। सीता-स्वयवर के पूर्व राक्षसो द्वारा निर्मित एक माया-सीता के प्राणो को सकट मे देखकर राम आत्महत्या करने के उद्देश्य

---

१ दे० डॉ० धीरेन्द्र वर्मा विचारधारा, पृ० ३४।

से एक चट्टान पर से नीचे कूदना चाहते है। लेकिन राम के स्पर्श से इस चट्टान से प्रकट होकर अहल्या राम को राक्षसी माया का रहस्य बताती है।[1]

ड । परशुराम

३४६ वाल्मीकि रामायण मे परशुराम के तेजोभग का प्रसग बालकाण्ड के विकास के अन्तिम सोपान का है, इसका उल्लेख ऊपर हो चुका है (दे० अनु० ३३३)। महाभारत के रामोपाख्यान अथवा विमलसूरि के पउमचरिय मे इस घटना की ओर कही भी निर्देश नही मिलता। महाभारत के अनेक स्थलो पर परशुराम की कथा का वर्णन किया गया है, किन्तु पूना के प्रामाणिक सस्करण मे राम द्वारा उनके तेजोभग का उल्लेख कही भी नही किया गया है। अत यह प्रसग अपेक्षाकृत अर्वाचीन प्रतीत होता है।

रामकथाओ मे प्राय परशुराम के दो कार्यों की ओर निर्देश किया जाता है, एक मातृवध तथा दूसरा क्षत्रियो का विनाश। दोनो का वर्णन पहले-पहल महाभारत मे किया गया है। परशुराम जमदग्नि तथा रेणुका के पाँचवे पुत्र थे। किसी दिन उन्होने जमदग्नि की आज्ञा शिरोधार्य कर अपने परशु[2] से अपनी माता का मस्तक काट डाला और अपने इस आज्ञापालन के फलस्वरूप वर पाकर उसे फिर जिलाया था (दे० ३, अध्याय ११६)। महाभारत के अनुसार परशुराम ने पृथ्वी को इक्कीस बार क्षत्रिय-विहीन कर दिया **त्रि सप्तकृत्व पृथिवी कृत्वा नि क्षत्रिया पुरा** (दे० १, ५८, ४)। कथा इस प्रकार है। कार्त्तवीर्य सहस्रार्जुन ने जमदग्नि की कामधेनु के बछडे को चुराया था, जिसपर परशुराम ने उनका वध किया था। बाद मे सहस्राजुन के पुत्रो ने परशुराम की अनुपस्थिति मे जमदग्नि को मार डाला। प्रतिकारस्वरूप परशुराम ने पृथ्वी को इक्कीस बार क्षत्रियविहीन कर उसे कश्यप को प्रदान किया और महेन्द्र पर्वत पर निवास करने लगे (दे० वनपर्व, अध्याय ११३-११७, शातिपर्व, अध्याय ४६)।

अर्वाचीन रामकथाओ मे परशुराम का कई अवसरो पर उल्लेख होता है।

---

१ केवट का वृत्तान्त (दे० आगे अनु० ४३२) पाषाणभूता अहल्या के उद्धार पर आधारित है, इसी वृत्तान्त के फलस्वरूप कुछ रचनाओ मे यह कल्पना कर ली गई है कि वानर-सेना ने राम को पैरो से सेतु का स्पर्श नही करने दिया (दे० आगे अनु० ५८१)।

२ प्रचलित महाभारत के एक श्लोक के अनुसार परशुराम ने गधमादन पर्वत पर महादेव को सन्तुष्ट कर अत्यन्त तेजस्वी कुठार तथा अनेक प्रकार के शस्त्र प्राप्त किये थे। पूना का प्रामाणिक सस्करण यह श्लोक प्रक्षिप्त मानता है, दे० १२, ४६, २६, पाद-टिप्पणी।

वेदान्त रामायण मे वाल्मीक राम को परशुराम की कथा सुनाते है (दे० ऊपर अनु० १८३)। शान्ता-स्वयवर (दे० अनु० ३४३) तथा दशरथयज्ञ (अनु० ३५८) के अवसर पर परशुराम के आगमन का वर्णन किया गया है। कृत्तिवास रामायण के अनुसार परशुराम ने दशरथ को शब्दभेदी बाण चलाना सिखलाया था (दे० १, २३) तथा शिव की आज्ञा से जनक के पास शिव-धनुष ले आये थे (दे० अनु० ३६२)। भावार्थ रामायण के अनुसार उन्होने सीता-स्वयवर के अवसर पर जनक को धनुष की परीक्षा लेने का परामर्श दिया था (दे० १, १७)।

३५० वाल्मीकि रामायण के अनुसार राम-परशुराम के सघर्ष का कारण यह है कि क्षत्रिय-विरोधी परशुराम दाशरथि राम के पराक्रम तथा उनके द्वारा धनुर्भंग के विषय मे सुनकर उनके साथ द्वन्द्व-युद्ध करना चाहते है। वे विष्णु-चाप लिए आते है और राम से निवेदन करते है कि इसे चढाकर वह अपने को योग्य प्रतिद्वन्द्वी सिद्ध करे। विष्णु-चाप का इतिहास इस प्रकार है विश्वकर्मा ने दो धनुषो का निर्माण किया था, एक शिव के लिए और एक विष्णु के लिए। किसी दिन विष्णु तथा शिव मे युद्ध होने वाला था कि विष्णु के हुँकार मात्र से शिव का यह धनुष ढीला पड गया और शिव हार गये। बाद मे शिव ने अपना धनुष विदेह के राजा देवरात को दे दिया तथा विष्णु ने अपना धनुष भृगुवशी ऋचीक को (बालकाण्ड, सर्ग ७५)। महाभारत के शातिपर्व (अध्याय २७८) मे माना गया है कि शिव ने अपने शूल को ही झुकाकर पिनाक मे परिणत कर दिया था

आनतेनाथ शूलेन पाणिनामिततेजसा।
पिनाकमिति चोवाच शूलमुग्रायुध प्रभु ॥ १८॥

अनुशासनपर्व के दाक्षिणात्य पाठ (गीताप्रेस गोरखपुर सस्करण, पृ० ५६१५) के अनुसार ब्रह्मा ने एक ही बास से पहले दो धनुष बनाये, एक शिव के लिए और दूसरा विष्णु के लिए। बाद मे उन्होने उसी बास के अवशेष से गाण्डीव बना कर उसे सोम को प्रदान किया। अर्जुनदास ने भी मान लिया है कि ब्रह्मा ने एक ही बॉस से पिनाक, वैष्णव धनुष तथा गाण्डीव तीनो का निर्माण किया था।

वाल्मीकि तथा अधिकाश रामकथाओ के अनुसार राम-परशुराम-सघर्ष का कारण यह है कि परशुराम एक सुयोग्य प्रतिद्वन्द्वी क्षत्रिय से युद्ध करना चाहते है। नृसिह पुराण मे पहले-पहल एक अन्य कारण का उल्लेख मिलता है। परशुराम राम को यह चुनौती देते है या तो राम नाम छोड दो अथवा मेरे साथ युद्ध करो (**त्यज त्व रामसज्ञा तु मया वा समर कुरु,** अध्याय ४७, १४६)। अध्यात्म रामायण तथा आनन्द रामायण मे जो कारण दिया गया है, वह वाल्मीकीय बालकाण्ड तथा नृसिह पुराण के कारणो का सम्मिलित रूप है, परशुराम कहते है

त्व राम इति नाम्ना मे चरसि क्षत्रियाधम ।।
द्वन्द्वयुद्ध प्रयच्छाशु यदि त्व क्षत्रियोऽसि वै ।

(अध्यात्म १, ७, ११, आनन्द रा० १, ३, ३५०)

हिन्देशिया के सेरी राम तथा कम्बोडिया की रामकेर्ति मे राम नाम ही सघर्ष का कारण माना गया है।

राम-नाटको मे इसका एक तीसरा कारण मिलता है। अध्यात्म रामायण मे परशुराम शिव के धनुष की अवज्ञा करते हुये कहते है कि यह तो पुराना तथा जजर है—**पुराण जजर चाप भक्त्वा त्व कत्थसे मुधा** (१, ७, १२), किन्तु राम-नाटको मे परशुराम को शिव का शिष्य माना गया है और वे अपने गुरु के प्रति किये हुए अनादर का प्रतिकार करने आते है। इस कारण का प्रथम उल्लेख महावीरचरित मे मिलता है—रावण-मत्री माल्यवान के उकसाने पर (अक २, १२) परशुराम हरचापभजक राम का दमन करने के लिए मिथिला मे आ पहुँचते है (अक २, १७)। असमिया बालकाण्ड मे भी परशुराम के क्रोध का कारण यह है कि उनके गुरु शिव का धनुष तोडा गया है (अध्याय ४४)। परवर्ती रचनाओ मे परशुराम को बहुधा शिव के शिष्य अथवा शैव-सन्यासी के रूप मे चित्रित किया गया है, उदाहरणार्थ अनघ-राघव (४, ३२), बाल रामायण (अक ४), महानाटक (१, १८), प्रसन्नराघव (इसमे धनुर्भग के पूर्व भी परशुराम का दूत आकर जनक से निवेदन करता है कि शिव-धनुष का अनादर न किया जाय। दे० अक ३, ३८), रामगीतगोविन्द (सर्ग २, १२), रामचरितमानस (१, २६८)। कृत्तिवास दो कारणो का उल्लेख करते है—परशु-राम के गुरु शिव के धनु का अपमान तथा राम का नाम (मम सम करि राखियाछ पुत्र नाम, दे० १, ६३)। **रगनाथ रामायण** (१, ३७) मे तीनो कारणो की चर्चा है।

३५१ **वाल्मीकि रामायण** (तथा अधिकाश परवर्ती रामकथाओ) के अनुसार परशुराम विवाह के पश्चात् अयोध्या की यात्रा मे राम को चुनौती देने आते है। वास्तव मे दोनो का युद्ध होता ही नही, क्योकि ज्यो ही राम विष्णु-चाप चढाते है, परशुराम निस्तेज होकर राम को विष्णु के रूप मे प्रणाम करते है। राम चढे हुए बाण से परशुराम के तपोबल द्वारा सचित लोक[1] नष्ट करते है और परशुराम महेन्द्र पर्वत की ओर प्रस्थान करते है (सर्ग ७६)।

---

१ भावार्थ रामायण (१, २६) मे इस घटना को एक आध्यात्मिक अर्थ दिया गया है। राम ने परशुराम का अहकार नष्ट किया था, जिससे परशुराम को अपने तप द्वारा सचित लोक मे जाने की इच्छा नही रही।

अदभुत रामायण (सर्ग ६) तथा महाभारत के एक प्रक्षिप्त[1] अश मे राम ने धनुष चढाकर परशुराम को अपना विराट् रूप दिखलाया और अनन्तर बाण छोडकर उनका तेज ले लिया, जिससे परशुराम ने होश मे आकर राम को विष्णु-अवतार मानकर प्रणाम किया तथा उनकी आज्ञा लेकर वह महेद्र पर्वत को चले गये। पाश्चात्य वृत्तान्त न० १३ के अनुसार राम ने क्षत्रिय-विध्वस के प्रायश्चित्त के लिए तप करने के उद्देश्य से परशुराम को महादेव के पास भेज दिया। रामकेर्ति मे रामपरमसू को एक क्रूर यक्ष माना गया हे, राम उनसे कहते हे कि मै नारायण का अवतार हूँ। इसपर रामपरमसू प्रमाण के रूप मे चाहते है कि राम उनका चाप उठा ले। राम लीलापूर्वक बाये हाथ से उस धनुष को उठाकर बाण चढाते है, जिसपर रामपरमसू घुटने टककर क्षमा माँगते है तथा राम को अपना धनुष तथा अपने ऐद्रजालिक बाण भी अर्पित करते है।

कृत्तिवास के रामायण मे सीता यह देखकर कि परशुराम धनुष लिए आते है, इस प्रकार आशका प्रकट करती हे—एक धनुष तोडकर रघुनाथ ने मेरे साथ विवाह किया, अब भृगु मुनि एक और धनुष लाये ह। न जाने मेरी कितनी सपत्निया होगी (१, ६३)। गोविन्द रामायण मे सीता की यह आशका इस प्रकार व्यक्त की गई है

तोर शरासन सकर को जिमि
मोहि बर्यो तिमि और बरैगे (पृ०३४)

अध्यात्म रामायण (१, ७), आनन्द रामायण (१, ३, ३७७), राघवोल्लास काव्य (सर्ग १२), रामचरितमानस आदि मे प्रस्तुत वृत्तान्त का वातावरण नितान्त बदल दिया गया है। तेजोभग के पश्चात् परशुराम द्वारा राम की स्तुति को सर्वाधिक महत्त्व दिया जाता है और परशुराम अचल रामभक्ति का वरदान प्राप्त कर चले जाते है। राघवोल्लास काव्य मे परशुराम राम की प्रभावपूर्ण बातो से ही शान्त हो जाते है। राम को उनका धनुष नही चढाना पडता है। परशुराम अपने सभी अस्त्र-शस्त्रो को वही राम के चरणो पर छोडकर प्रस्थान करते है। **कब रामायण** (१, २२) के अनुसार परशुराम-तेजोभग के पश्चात् देवता लोग आकाश मे दिखाई देकर पुष्पवृष्टि करते हैं और राम विष्णु-धनुष वरुण को अर्पित कर देते है।

महावीरचरित से लेकर अधिकाश राम-नाटको मे परशुराम के मिथिला मे आगमन का वर्णन किया गया है, उदाहरणार्थ अनर्घराघव, बालरामायण, महानाटक, प्रसन्नराघव और यज्ञफल। इन नाटको के प्रभाव के कारण रामचरितमानस, रामचन्द्रिका

---

१ दे० प्रचलित महाभारत ३, ६६, ३४ आदि तथा पूना का प्रामाणिक सस्करण, आरण्यक पर्व, परिशिष्ट १, न० १४।

तथा गोविन्द रामायण मे तेजोभग-वर्णन मिथिला मे ही रखा गया है।

इन वृत्तान्तो की एक अन्य विशेषता यह है कि इस प्रसग को अपेक्षाकृत अधिक महत्त्व दिया जाता है तथा राम-परशुराम के वाग्युद्ध का विस्तृत वर्णन मिलता है। परशुराम का क्रोध बहुत उग्र रूप धारण कर लेता है और वह बार-बार राम का वध करने की धमकी देते है (द० महावीरचरित २, ३२, ३, १६ आदि)। प्रस्तुत प्रसग के प्रारम्भिक वर्णना के अनुसार लक्ष्मण इसमे कोई भाग नही लेते।

राजशेखर के बालरामायण के अनुसार दशरथ तथा इसके अनन्तर परशुराम भी राम-सीता-विवाह के पश्चात् ही मिथिला पहुँचते है। विश्वामित्र का आदेश पाकर लक्ष्मण ही नारायणीय धनुष पर प्रत्यचा चढाते है, जिस पर जनक लक्ष्मण और ऊर्मिला के विवाह का प्रस्ताव करते है (अक ४, ७५)। इसके बाद विश्वामित्र के सुझाव के अनुसार भरत-माण्डवी तथा शत्रुघ्न-श्रुती-कीर्त्ति के विवाह भी निश्चित हो जाते है।

प्रसन्नराघव (तथा उस पर आधारित रामचरितमानस तथा कृत्तिवास रामायण) मे लक्ष्मण राम-परशुराम के वाग्युद्ध मे भाग लेकर परशुराम का अपमान करते है। रामचन्द्रिका मे भरत (७, २२) तथा शत्रुघ्न (७, २८) भी परशुराम को सम्बोधित करते है तथा अन्त मे महादेव स्वय आकर दोनो रामदेवो को समझाकर शात कर देते है (७, ४३)।

भारतीय रामकथाओ मे प्राय राम-परशुराम के किसी युद्ध का वर्णन नही किया गया है, फिर भी **महावीरचरित** (अक ३, ४८), **अनर्घराघव** (अक ४, ५६) और **प्रसन्नराघव** (अक ४, ४२) के अनुसार राम तथा परशुराम युद्ध करने के उद्देश्य से रगमच से चले जाते है।[1] राम के वैष्णव धनुष चढाने पर परशुराम का तेज नष्ट हो जाता है, जिससे युद्ध की नौबत नही आती, परशुराम राम का यथार्थ स्वरूप पहचानकर तपस्या करने जाते है। शकरदेवकृत **रामविजय** मे कथा इस प्रकार है अयोध्या के रास्ते मे परशुराम ने राम का वध करने का प्रयत्न किया, क्योकि राम ने उनके गुरु का धनुष तोड डाला था। द्वन्द्वयुद्ध मे राम ने परशुराम को पराजित किया तथा उनका स्वर्ग जाने का मार्ग सदा के लिए बन्द कर दिया था। **तोरवे रामायण** (१, १७) के अनुसार राम ने अपने तोमर से परशुराम का परशु आकाश मे फेक दिया तथा बाद मे अपने रथ से उतरकर परशुराम के हाथो से वैष्णव धनुष भी छीन लिया।

विदेशी रामकथाओ मे राम तथा परशुराम का सघर्ष और उग्र रूप धारण कर

---

१ अनर्घराघव मे लिखा है **विमर्दक्षम प्रदेशान्तरमवतराव**, प्रसन्नराघव मे **समरक्षमा क्षमामवतराम**। गोविन्दरामायण मे दोनो सेनाओ का तुमुल युद्ध वर्णित है, किन्तु राम-परशुराम का कोई द्वन्द्व-युद्ध नही होता।

लेता है। **खोतानी रामायण** के अनुसार राम ने बाण मारकर परशुराम का वध किया। कथा इस प्रकार है किसी दिन दशरथ ने परशुराम के पिता के आश्रम पर उनकी कामधेनु को देखा था तथा बाद मे उनका पुत्र महस्रबाहु उसे चुरान आया। अपने पिता के प्रति किये हुए अन्याय का प्रतिकार करने के उद्देश्य मे परशुराम ने तपस्या की, कुठार प्राप्त किया तथा दशरथ के पुत्र महस्रबाहु का वध किया। बाद मे सहस्रबाहु के पुत्र राम तथा लक्ष्मण परशुराम की खोज मे निकले, अन्त मे राम ने बाण चलाकर उन्हे मार डाला।

हिन्देशिया के **सेरी राम** के अनुसार पुष्पराम राम को आदेश देते है कि वह अपना नाम छोड दे। राम के अस्वीकार करने पर दोनो का द्वन्द्वयुद्ध दोपहर से सन्ध्या तक चलकर अनिश्चित रहता है। अगले दिन राम का बाण पुष्पराम का पीछा करता है, स्वर्ग, पाताल तथा महासागर पारकर पुष्पराम राम की शरण लेते है और उनको विष्णु का अवतार मानकर क्षमा-याचना करते है। **रामकियेन** के अनुसार राम ने द्वन्द्व-युद्ध के अन्त मे अपने को नारायण के रूप मे प्रकट किया। इस पर रामासुर ने राम को ईश्वर का धनुष प्रदान किया। राम ने उसे ले लिया और आकाश मे फेक दिया, जिससे आवश्यकता पडने पर वह धनुष उनके काम आ सके (दे० अध्याय १३)।

३५२ महाभारत मे परशुराम की कथा का अनेक स्थलो पर वर्णन किया गया है, किन्तु इनमे कही भी उनके विष्णुत्व की ओर सकेत नही मिलता। फिर भी नारायणीय उपाख्यान मे विष्णु के अवतारो मे उनका उल्लेख किया गया है (दे० १२, ३२६, ७७)। परवर्ती रचनाओ मे विष्णु के अवतारो की सूची मे उनका नाम प्राय आया है, दे० हरिवंश (१, ४१, ११२-१२०, २, २२, ?, ४८), विष्णु पुराण (१, ६, १४३), भागवत पुराण (१, ३, २०, २, ७, २२)।

वाल्मीकि रामायण मे परशुराम-तेजोभग के वर्णन मे परशुराम के विष्णुत्व का उल्लेख नही मिलता। **नृसिह पुराण** प्राचीनतम रचना है, जिसमे उनके तेजोभग के प्रसग मे परशुराम का अवतार होने का सकेत किया गया है। राम के धनुष चढाने पर परशुराम का वैष्णव तेज उनके शरीर से निकल कर राम के मुख मे प्रविष्ट हुआ— **परशुरामस्य देहान्निष्क्रम्य वैष्णव पश्यता सर्वभूताना तेजो राममुखेऽविशत्** (दे० अध्याय ४७, १४८-१४६)। अध्यात्म रामायण (१, ७, २४), आनन्द रामायण (१, ३, ३६४-३६६), पद्मपुराण (उत्तरखण्ड, २६६, १६२), रामचन्द्रिका[1] तथा पाश्चात्य वृत्तान्त न० १३ मे भी तेजोभग के प्रसग के अन्तर्गत ही परशुराम के अशावतार होने

१ महादेव स्वय आकर परशुराम को यह कहकर शात करते हैं "एकै तुम दोऊ और न कोऊ एकै नाम कहायै", दे० रामचन्द्रिका ७, ४५।

का उल्लेख किया गया है ।

च । नवीन सामग्री

३५३ वाल्मीकि के पश्चात् की रामकथाओ मे बालकाण्ड के कथानक के अन्तर्गत प्रचुर मात्रा मे सर्वथा नवीन सामग्री रखी गई हे ।

(१) भिन्न भिन्न प्रकार की भूमिकाओ के अतिरिक्त प्राय अवतार के कारणो का विस्तृत निरूपण किया गया हे (दे० आगे अनु० ३६६-३७४) ।

उन भूमिकाओ मे बहुधा सूर्यवश अथवा इक्ष्वाकुवश के राजाओ का इतिहास भी दिया गया हे । कालिदासकृत रघुवश, बगीय पद्मपुराण का पातालखण्ड, कृत्तिवास रामायण इसके विशिष्ट उदाहरण ह । रावण की कथा बहुत-सी रचनाओ मे प्रारम्भ मे ही वर्णित है (दे० आगे अनु० ६४३) ।

(२) दशरथ के विभिन्न विवाहो का तथा अन्ध-मुनि-पुत्र-वध का भी प्राय रामकथा के प्रारम्भ मे वर्णन किया जाता है (दे० अनु० ३३७-३४० और ४२३) ।

(३) कृष्ण बाललीला के अनुकरण पर बहुधा राम की बाललीला का भी किंचित् वर्णन मिलता है (दे० अनु० ३७६-३८०) । इसके अतिरिक्त भुशुण्डी तथा हनुमान् के साथ बालक राम की मित्रता की भी कल्पना कर ली गई है (दे० ३८१-३८२) ।

(४) राम के प्रारभिक कृत्यो के वर्णन मे अनेक सर्वथा नवीन प्रसग आ गये है, उदाहरणार्थ म्लेच्छो से युद्ध, गुह से मैत्री, तीर्थ-यात्राएँ, वैराग्य, रासलीला (दे० अनु० ३८३-३८७) ।

(५) सीता-स्वयवर (अनु० ३६४-३६८) तथा राम-सीता के पूर्वानुराग (दे० अ० ४०३) का भी बहुधा वर्णन किया जाता है, जो वाल्मीकि रामायण मे नही मिलता ।

(६) बालकाड की कथावस्तु के अन्तर्गत आगे चलकर शृगार रस का भी प्रवेश हुआ है । जानकीहरण (सर्ग ८) और महानाटक (अक २) मे विवाह के उपरान्त राम और सीता के सभोग का वर्णन किया गया है । जानकीहरण (सर्ग ३), जानकीपरिणय (अक ६) तथा कम्ब रामायण (१, १३-१७) मे दशरथ की क्रीडा का भी विस्तृत वर्णन मिलता है । सत्योपाख्यान के उत्तरार्द्ध मे राम तथा सीता के जल-विहार (सर्ग २० और २६), वन-विहार (सर्ग २१), अशोकवन मे सीता की मानलीला (सग २५), होलिकोत्सव (सर्ग २८) आदि का चित्रण किया गया है । **बृहत्कोशलखड** (अध्याय १-५) तथा **उडिया नृसिंह रामायण** (तृतीय रत्नाकर) मे विवाह के पूर्व राम की रास-लीला का वर्णन किया गया है । **हनुमत्सहिता** का मुख्य विषय है राम की रासलीला तथा जलविहार (दे० ऊपर अनु० १६०) ।

३—अवतारवाद

क । दशरथ-यज्ञ

३५४ **वाल्मीकि रामायण** मे दशरथ के पुत्रेष्टि-यज्ञ के वर्णन के अन्तर्गत अवतारवाद का विस्तृत निरूपण किया गया है । प्रस्तुत अध्याय के प्रथम परिच्छेद मे (दे० ऊपर अनु० ३३३) उस पुत्रेष्टि-यज्ञ का समस्त प्रसग प्रक्षिप्त होने के तर्क दिए गए है । पुत्रेष्टि-यज्ञ का विकास दिखलाने के पूर्व यहाँ पर पहले उन रचनाओ का उल्लेख करना है, जिनमे दशरथ के यज्ञ का कोई निर्देश नही मिलता ।

पश्चिमोत्तरीय पाठ के चौदहवे सर्ग का विश्लेषण ऊपर हो चुका हे (दे० अनु० १३६) । इसमे चार पुत्रो के जन्म के उल्लेख मे किसी यज्ञ की ओर निर्देश नही है—**ततोऽस्य जज्ञिरे पुत्राश्चत्वारोऽमितविक्रमा** (श्लोक ५) । राय कृष्णदास की पाडुलिपि मे इसका पाठ इस प्रकार हे—**राज्ञ पुत्रा महात्मानश्चत्वारो जज्ञिरे पृथक्** ।

महाभारत के रामोपाख्यान मे अवतारवाद का उल्लेख तो किया गया है, लेकिन उसमे कही दशरथ के किसी भी यज्ञ का सकेत नही मिलता (दे० ३, २६०) । प्राचीन महापुराणो मे अर्थात् **हरिवश, विष्णु पुराण, वायु पुराण, गरुड तथा भागवत पुराण** मे जो सक्षिप्त रामकथाएँ मिलती है, उनमे कही भी दशर-यज्ञ की ओर निर्देश नही किया गया है । पश्चिमोत्तरीय पाठ के एक प्रक्षिप्त स्थल के अनुसार देवताओ के लिए युद्ध करने के पश्चात् दशरथ ने एक वर प्राप्त किया था । उन्होने देवताओ से एक पुत्र माँगा और देवताओ ने कहा कि तुम्हारे चार पुत्र होगे (दे० ५, ६६, ५३-६०) ।

बौद्ध तथा जैन रामकथाओ मे अवतारवाद का अभाव स्वाभाविक है, फलस्वरूप इन रचनाओ मे दशरथ के किसी यज्ञ का निर्देश नही मिलता है ।

वाल्मीकि रामायण मे इसका उल्लेख हुआ है कि पुत्र-प्राप्ति के लिए तपस्या करते हुए भी दशरथ के कोई पुत्र नही था

सुतार्थं तप्यमानस्य नासीद्वशकर सुत ।। १ ।। (बालकाण्ड, सर्ग ८)

स्कद पुराण के दो स्थलो पर दशरथ की इस तपस्या का वर्णन किया गया है । नागरखड मे दशरथ के शनैश्वर से युद्ध करके के बाद इन्द्र उनसे कहते है कि **अपुत्रस्य गतिर्नास्ति** । इसपर दशरथ १०० वर्ष तक कार्त्तिकेयपुर मे तप करने जाते है । इसके अन्त मे जनार्दन प्रकट होते हैं और चार रूप धारण कर दशरथ के पुत्र बनने की प्रतिज्ञा करते है (**कृत्वा रूपचतुष्टयम्**) । बाद मे दशरथ को चार पुत्र और एक पुत्री के प्राप्त होने का उल्लेख किया गया है (दे० अध्याय ९६-९८) । प्रभासखण्ड मे भी पुत्र-प्राप्ति के लिए प्रभास मे दशरथ के तप करने तथा शिवलिंग स्थापित करने का निर्देश किया गया है (दे० अध्याय १७१) ।

वाराह पुराण (अध्याय ४५) मे इसका उल्लेख किया गया है कि दशरथ ने वसिष्ठ के परामर्श के अनुसार रामद्वादशी व्रत का पालन किया था जिसके फलस्वरूप विष्णु उनकी सन्तान के रूप मे प्रकट हुए। सारलादास के उडिया महाभारत मे दशरथ की पुत्र-प्राप्ति की कथा इस प्रकार है इन्द्र के यहा से लौटते समय दशरथ ने कपिला का अपमान किया था तथा कपिला ने उन्हे शाप दिया था। बाद मे दशरथ कपिला को बाघ के आक्रमण से बचाते है तथा उससे यह वरदान प्राप्त करते है कि उनके चार पुत्र उत्पन्न होगे।[1]

ग्राम-गीतो मे भी दशरथ तथा कौशल्या के तपस्या करने तथा किसी योगी के प्रसाद से पुत्र प्राप्त करने का उल्लेख मिलता है (दे० रामनरेश त्रिपाठी द्वारा सम्पादित ग्राम-साहित्य, भाग १, पृ० ६१, कविता-कौमुदी, भाग ५, पृ० १४ और १६)। बिर्होर रामकथा के अनुसार किसी ब्राह्मण को अपने ज्येष्ठ पुत्र देने की प्रतिज्ञा करने के बाद दशरथ उसके जादू द्वारा चार पुत्र प्राप्त करते है। सथाल जाति मे प्रचलित कथा के अनुसार दशरथ ने किसी योगी से चार आम प्राप्त कर उन्हे अपनी पत्नियो को खिलाया और फलस्वरूप तीनो पत्नियाँ गर्भवती हुइ। ब्रज लोकसाहित्य मे भी इससे मिलती-जुलती कथा का सकेत पाया जाता है (दे० भारतीय साहित्य, आगरा, वर्ष २, अक ३, पृ० ६६)।

जावा के सेरत काण्ड, तिब्बती तथा खोतानी रामायणो मे भी दशरथ के किसी यज्ञ का उल्लेख नही किया गया है। तिब्बती रामायण के अनुसार दशरथ ने ५०० कैलास-निवासी ऋषियो से पुत्र-प्राप्ति के लिए प्रार्थना की थी। उन्होने दशरथ को एक फल दिया था जिसे उनकी दो पत्नियो ने खाया था। फलस्वरूप दोनो को गर्भ रह गया। **असमिया बालकाण्ड** मे शृगक मुनि का दिया हुआ फल दशरथ की पुत्र-प्राप्ति मे सहायक माना गया है (दे० अनु० ४३३)। **सेरी राम** के एक पाठ के अनुसार एक योगी ने दशरथ को सन्तान-प्राप्ति के उद्देश्य से चार "गा-जहर" नामक पत्थर प्रदान किये थे, एक अन्य पाठ के अनुसार दशरथ को एक सहस्र हाथियो का वध करने का परामर्श दिया गया था (दे० आगे अनु० ४३३)। ये पत्थर कुछ जानवरो के पक्वाशय मे उत्पन्न होते है, पहले चिकित्सा मे उनका उपयोग होता था।

३५५ वाल्मीकि रामायण मे दशरथ के दो यज्ञो का वर्णन किया गया है।

---

१ इस घटना का वर्णन पद्मपुराण (गौडीय पाताल खण्ड, अध्याय ५-६, उत्तरखण्ड, अध्याय १६८-१६६) तथा रघुवश के प्रथम सर्ग मे दिलीप के विषय मे किया गया है। शाता की जन्म-कथा मे भी यह प्रसग आ गया है (दे० अनु० ३४३)।

सुमत्र के परामर्श के अनुसार दशरथ अगराज के यहाँ जाकर ऋष्यशृंग[1] को अयोध्या ले आते है और पुत्र प्राप्त करने के उद्देश्य से उनके द्वारा अश्वमेध-यज्ञ करवाते है (दे० सर्ग ८–१४)। अनन्तर ऋष्यशृंग पुत्रेष्टि-यज्ञ भी करते है (सर्ग १५–१६)। उसी अवसर पर देवता, गन्धर्व, सिद्ध, परमर्षि आदि अपना-अपना हविर्भाग ग्रहण करने के उद्देश्य से (**भागप्रतिग्रहार्थम्**) एकत्र होकर ब्रह्मा से निवेदन करने लगे कि आप के दिये हुये वर के बल पर रावण हम लोगो को तग करता है (**सर्वान्नो बाधते**), आप उसके वध का उपाय निकालिये। ब्रह्मा उत्तर देते है कि मनुष्य से उसका वध सभव है। उसी समय विष्णु आ पहुँचे तथा उन्होने देवताओ का यह प्रस्ताव स्वीकार किया कि वह दशरथ की सन्तति बन कर रावण का वध करे। तदनुसार पुत्रेष्टि-यज्ञ की अग्नि से एक विशालकाय महद् भूतम्' (१६, ११) प्रकट हुआ जो अपने को 'प्राजापत्य नर' (१६, १६) कहता है और दशरथ को पायस प्रदान करता है। टीकाकार उस 'महद् भूतम्' को 'पुरुपविशेष' मानते है, जिसे प्रजापति ने भेज दिया और अन्य टीकाकार उसे 'अग्निरेव मूर्तिमान्' समझते है। **नृसिह पुराण** (अ० ४७), **अध्यात्म रामायण** (१, ३, ७), **आनन्द रामायण** (सारकाण्ड, सर्ग १, १०२) तथा **रामचरित मानस** (प्रगटे अगिनि चरु कर लीन्हे, १, १८९, ६) मे अग्नि का उल्लेख है। दशरथ उस पायस को अपनी तीन पत्नियो मे बाट देते है, जिसमे तीनो गर्भवती हो जाती है (पायस के विभाजन के विपय मे दे० अनु० ३५९)। अनतर विष्णु-अवतार राम की सहायता करने के लिए देवता ब्रह्मा की आज्ञानुसार अप्सराओ और गन्धर्वियो से वानरो की उत्पत्ति करते है (सर्ग १७)।

३५६ वाल्मीकि रामायण मे पहले दशरथ के अश्वमेध-यज्ञ ही का वर्णन किया गया था, बाद मे पुत्रेष्टि-यज्ञ का वर्णन भी जोड दिया गया है (दे० ऊपर अनु० ३३३)। परवर्ती रामकथाओ मे प्राय केवल पुत्रेष्टि-यज्ञ का वर्णन किया गया है, उदाहरणार्थ रघुवश, नृसिह पुराण (अ०४०), भट्टिकाव्य, रामायण ककविन्, जानकी-हरण, सेरी राम, रामकियेन, पद्मपुराण (पातालखण्ड, अध्याय ११२ तथा उत्तर-खण्ड, अध्याय २६९), अध्यात्म रामायण, रामचरितमानस आदि।

---

[1] महाभारत के वनपर्व मे ऋष्यशृंग की उत्पत्ति, तपोभग, लोमपाद के यहाँ अनावृष्टि–निवारण के लिए यज्ञ तथा शाता से उसका विवाह वर्णित है (दे० वनपर्व, अध्याय ११०–११२)। **अलम्बुस जातक** (५२३) मे इसिसिंग की उत्पत्ति और तपोभग की कथा मिलती है, **नलिनिका जातक** (५२६) मे यही विषय है, किन्तु इसमे तपोभग का उद्देश्य है अनावृष्टि का निवारण।

जानकीहरण (४, १-२) मे दशरथ के पूर्ववर्ती असफल यज्ञो का भी उल्लेख है।

ब्रह्मपुराण मे दशरथ वसिष्ठ से परामर्श करते है कि श्रवणकुमार-वध का प्रायश्चित्त किस प्रकार किया जाये। इसपर अश्वमेध-यज्ञ का आयोजन किया जाता है तथा यज्ञ के समय एक आकाशवाणी सुनाई पडती है कि राजा दशरथ अपने ज्येष्ठ पुत्र के प्रसाद से पापमुक्त हो जायँगे (दे० अध्याय १२३)। अन्य रामकथाओ[1] मे भी दशरथ का यज्ञ, जिसके फलस्वरूप उन्होने रामादि पुत्रो को प्राप्त किया था, वास्तव मे अंध-मुनिपुत्र-वध के प्रायश्चित्त के लिए आयोजित किया गया था। अंध-मुनिपुत्र-वध के कई वृत्तान्तो मे दशरथ को पुत्र-प्राप्ति के लिए यज्ञ करवाने का परामर्श दिया जाता है (दे० अनु० ४३३)।

३५७ आगे चलकर पुत्रेष्टि-यज्ञ के वर्णन मे हनुमान, विभीषण, सीता और वानर-सेनापतियो के जन्म की ओर भी निर्देश किया गया है। **आनन्द रामायण** के अनुसार एक गीध ने कैकेयी का पायस उसके हाथ से छीन लिया तथा उसे अजनी पर्वत पर फेक दिया, इस पर अन्य रानियो ने अपने पायस का कुछ अश कैकेयी को दे दिया (दे० १, १)। **भावार्थ रामायण** मे इससे मिलती-जुलती कथा पाई जाती है (दे० अनु० ६७७)। अन्य रचनाओ मे कहा जाता है कि कैकेयी को क्रोध हुआ था, क्योकि दशरथ ने सर्वप्रथम उसे पायस नही दिया था। वह मान कर रही थी कि एक चील ने आकर उसके हाथ से पायस को छीन लिया और उसे अजनी के मुख मे गिरा दिया। फलत अजनी को गर्भ हुआ और उसने हनुमान जी को जन्म दिया।[2]

दक्षिण भारत के एक वृत्तान्त मे यज्ञ के पश्चात् ऋषि ने दशरथ से उनकी पत्नियो के नाम पूछे थे। भूल से दशरथ के मुह से कैकसी (रावण की माता) का नाम निकला। इसपर ऋषि ने पायस के चार भागो के पाच भाग बना दिये। जब दशरथ अपनी पत्नियो के यहाँ जा रहे थे, तो एक काक ने पायस का एक भाग चुरा लिया और वह उसे कैकसी के पास लाया। उसे खाने के फलस्वरूप कैकसी ने विभीषण को जन्म दिया (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न०१)।

सेरी राम तथा रामकियेन मे सीता के जन्म का सबध पुत्रेष्टि-यज्ञ से स्थापित किया गया है। **सेरी राम** मे एक काक पायस का षष्टमाश चुराता है। इसपर याजक कहता है कि यह काक दशरथ की पत्नी के पुत्र राम के द्वारा मारा जायेगा तथा जो इस पायस को खायेगा, उसे एक पुत्री उत्पन्न होगी, जिसका विवाह राम के साथ होगा।

---

१ दे० आनन्द रामायण (१, १, ६६), भावार्थ रामायण (१, १), पाश्चात्य-वृत्तान्त न० १३, ई० मूर, दि हिन्दू पथेयॉन, पृ० ३१५, पी० थोमस, लेजेंड्स ऑव इडिया, पृ० ८०।

२ दे० ई० मूर, वही, पी० थोमस, वही।

बाद मे रावण उस पायस को खाता है। **रामकियेन** के अनुसार दशरथ-यज्ञ के पायस की सुगन्ध लका तक पहुँच गई। मन्दोदरी ने रावण से उसे मागा। उसपर रावण ने काकना नामक राक्षसी को पायस चुराने का आदेश दिया। राक्षसी ने काक का रूप धारण कर पायस का अष्टमाश चुराया और उसे मन्दोदरी को दे दिया। फलस्वरूप मन्दोदरी ने सीता को जन्म दिया (दे० अध्याय १०)। भुइआ माधवदास कृत **विचित्र रामायण** के अनुसार डाकिनिया आकर पुत्रेष्टि-यज्ञ के धुएँ का पान करती है। वे गर्भवती हो जाती है और वानर-सेना के २५ सेनापतियो को जन्म देती है।

३५८ परवर्ती रचनाओ के दशरथ-यज्ञ-वर्णन मे अनेक गौण परिवर्तन किये गये है।

भट्टिकाव्य तथा रामायण ककविन् मे दशरथ-यज्ञ का वर्णन तो किया गया है, लेकिन किसी दिव्य पुरुष द्वारा दिए गए पायस का उल्लेख नही मिलता। **भट्टिकाव्य** मे रानिया यज्ञ के पश्चात् पायस के स्थान पर हुतोच्छिष्ट का कुछ अश खाती है (दे० सर्ग १)। अपेक्षाकृत अर्वाचीन रचनाओ मे अग्नि के स्थान पर विष्णु स्वय यज्ञाग्नि मे से प्रकट होकर पायस प्रदान करते है, उदाहरणार्थ पद्मपुराण का पातालखण्ड (अध्याय ११२, २३) और उत्तरखण्ड (अध्याय २६६, ४७), कृत्तिवास रामायण (१, ४१), बलरामदास रामायण, रामरहस्य (२, १४२)। तिलक नामक वाल्मीकि रामायण की टीका अपेक्षाकृत अर्वाचीन है, उसमे 'भूतम्' (दे० ऊपर अनु० ३५५) का अर्थ विष्णु ही माना गया है।

बृहद्धर्मपुराण (पूर्व खण्ड, अध्याय १८) के अनुसार जब विष्णु देवताओ को आश्वासन देते है कि मै दशरथ के पुत्र राम के रूप मे अवतार लूगा, उसी अवसर पर शिव हनुमान के रूप मे राम की सहायता करने की प्रतिज्ञा करते है। **अध्यात्म रामायण** का वृत्तान्त इस प्रकार है रावण आदि राक्षसो के भार से व्यथित होकर पृथ्वी गौ का रूप धारण कर देवताओ तथा मुनियो के साथ ब्रह्मा की शरण लेती है।[1] इसपर ब्रह्मा सब को ले जाकर क्षीरसमुद्र के तट पर विष्णु के पास आते है, उनकी स्तुति करते है तथा उनसे निवेदन करते है कि वह मनुष्य का रूप धारण कर देवशत्रु का वध करे। विष्णु कश्यप को प्रदत्त वर का उल्लेख करते हुए लक्ष्मी सहित अवतार

---

१ विष्णु पुराण (अश ५, अध्याय १) के अनुसार **पृथ्वी** ने दैत्यगण के भार से पीडित होकर देवताओ तथा ब्रह्मा के साथ विष्णु की शरण ली थी तथा कृष्णावतार का आश्वासन प्राप्त किया था। भागवत पुराण (स्कध १० अध्याय १) मे इसी अवसर पर पृथ्वी के गौ का रूप धारण करने का उल्लेख है।

लेन की प्रतिज्ञा करते है। तब ब्रह्मा वाल्मीकि रामायण के अनुमार देवताओ को आदेश देते है कि वे अपने-अपने अश से वानर वश मे पुत्र उत्पन्न करे (बालकाड, अध्याय २)।

पद्मपुराण के **गौडीय पाताल खण्ड** मे शान्ता अपने पिता दशरथ के पास आकर अपने पति ऋष्यशृग की शक्ति का वर्णन करती है। यह सुनकर दशरथ ऋष्यशृग द्वारा पुत्रेष्टि-यज्ञ करवाने का सकल्प करते है (दे० अध्याय १४)। पद्मपुराण के एक अन्य स्थल पर नामदेव नामक साधु दशरथ को पुत्रेष्टि-यज्ञ की विधि बतलाते है (दे० पाताल खण्ड, अध्याय ११२)।

कृत्तिवास रामायण (१, ३५) के अनुसार दशरथ अपने मत्रियो को बुलाकर कहते है—"मेरी अवस्था अब ६००० वर्ष की हो गई है, अन्धक मुनि ने मुझे वर दिया था कि ऋष्यशृग द्वारा यज्ञ का आयोजन कर पुत्र प्राप्त करूँगा। यह ऋष्यशृग कौन है?" इस पर वसिष्ठ ऋष्यशृग की कथा सुनाते है। तब दशरथ लोमपाद के यहाँ जाकर ऋष्यशृग को अयोध्या ले आते है तथा यज्ञ सम्पन्न हो जाता है (अध्याय ३६)। **सारलादास** के उडिया महाभारत (वन पर्व, पृ० २२८) मे ऋष्यशृग लोमपाद की राजधानी मे दशरथ के लिए यज्ञ करते है और दशरथ पायस अयोध्या ले जाते है। **माधवदास** के विचित्र रामायण के अनुसार परशुराम पुत्रेष्टि-यज्ञ के अवसर पर आ पहुँचते है तथा आदेश देते है कि जो ज्येष्ठ पुत्र होगा, उसे मेरा ही नाम देना। **काश्मीरी रामायण** मे नारायण स्वप्न मे दशरथ को दर्शन देकर कहते है कि मै तेरा पुत्र बन जाऊँगा। अनन्तर वसिष्ठ से परामर्श लेकर दशरथ पुत्रेष्टि-यज्ञ का आयोजन करते है। पाश्चात्य-वृत्तान्त न० १ के अनुसार विश्वामित्र ने वन मे दशरथ के लिए यज्ञ चढाया था (दे० अध्याय १)।

ख। अवतारवाद का विकास

३५६ अवतारवाद के प्रथम रूप के अनुसार विष्णु ने चार अशो मे अवतार धारण किया था। पायस के विभाजन मे अवश्य पर्याप्त विभिन्नता पाई जाती है, फिर भी चारो भाई विष्णु के ही अशावतार माने गये है। दाक्षिणात्य पाठ मे कहा गया है कि पायस के विभाजन के समय कौशल्या को आधा भाग मिला था, सुमित्रा को एक चतुर्थाश और एक अष्टमाश तथा कैकेयी को एक अष्टमाश (दे० सर्ग १६, २६)[1],

---

१ उदीच्य पाठ (तथा रामचरितमानम) मे पायस का विभाजन इस प्रकार है—कौशल्या को आधा, कैकेयी को एक चतुर्थाश और सुमित्रा को दो अष्टमाश। रघुवश, रामायण मजरी, अध्यात्म रामायण तथा कृत्तिवास मे भी चारो भाई एक-एक चतुर्थाश से जन्म लेते है। अभिनन्दकृत रामचरित (८, ६२) के अनुमार दशरथ ने कौशल्या तथा कैकेयी को पायस का आधा-आधा दे दिया और दोनो ने सुमित्रा को अपने पायस का कुछ अश दिया।

किन्तु आगे चलकर तीनो भाई भरत, लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न विष्णु के एक-एक चतुर्थांश से समन्वित माने जाते हैं (दे० सर्ग १८, १३-१४)। ऐसा प्रतीत होता है कि यह अंतिम रूप सबसे प्राचीन है और चारो भाई ही विष्णु के चतुर्थांश माने जाते थे। हरिवंश, विष्णु पुराण, वायु पुराण आदि मे विष्णु के चार रूपो मे प्रकट होने का उल्लेख मिलता है

कृत्वात्मानं महबाहुश्चतुर्धा प्रभुरीश्वर । (हरिवंश १, ४१, १२२)

फिर भी प्रारम्भ ही से राम को सबसे अधिक महत्त्व दिया गया था तथा **महाभारत** मे विष्णु के राम-रूप मे ही प्रकट होने का उल्लेख किया गया है।

३६० अंशावतार का एक अन्य रूप भी मिलता है, जिसमे पांचरात्र के एक सिद्धान्त का सहारा लिया गया है। इस सिद्धान्त के अनुसार नारायण चतुर्व्यूह के रूप मे आविर्भूत है अर्थात् वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न तथा अनिरुद्ध। **विष्णु धर्मोत्तर पुराण** (अध्याय २१२) तथा **नारद पुराण** (उत्तरखण्ड, अध्याय ७५) के अनुसार राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न क्रमश उपर्युक्त चतुर्व्यूह से अभिन्न हैं।

३६१ बाद की अधिकांश रचनाओ मे राम विष्णु के पूर्णावतार माने गये है।[1] प्रारम्भ मे भरत तथा शत्रुघ्न को छोडकर केवल लक्ष्मण के अवतारवाद का उल्लेख किया जाता है। **तिब्बती रामायण** मे राम तथा लक्ष्मण क्रमश विष्णु तथा विष्णु के पुत्र के अवतार माने गये है। अन्य रचनाओ मे केवल राम तथा लक्ष्मण का उल्लेख है, जो विष्णु तथा शेष के अवतार हैं, उदाहरणार्थ **नृसिंह पुराण** (अध्याय ४७), **देवीभागवत** (३, ३०), जावा का **सेरत काण्ड**, रामचरितमानस, पाश्चात्य-वृत्तान्त न० **१३**। परवर्ती साहित्य मे लक्ष्मण को प्राय शेष का अवतार माना गया है।

अर्वाचीन रचनाओ मे भरत तथा शत्रुघ्न के अवतारत्व के विषय मे सर्वाधिक प्रचलित धारणा यह है कि वे क्रमश पांचजन्य शंख तथा सुदर्शन चक्र के अवतार हैं। अध्यात्म रामायण मे लिखा है—**भरतशत्रुघ्नौ शंखचक्रे** (दे० १, ४, १८), **शंखचक्रे द्वे भरत सानुज** (दे० ३, २, १६)। आनन्द रामायण मे भी इसका स्पष्ट शब्दो मे उल्लेख किया गया है

शंखो बभूव भरत श्रीविष्णो सव्यसत्करे ।
वामे करे बभूवाथ शत्रुघ्नश्च सुदर्शनम् ॥ (९, ६, १६)

निम्नलिखित रचनाओ मे इसी प्रकार का निर्देश मिलता है—पद्मपुराण (उत्तर खण्ड, २६९, ९३–९५), सत्योपाख्यान (२, ४-५), रामरहस्य (अध्याय ३)।

---

१ सेरी राम के पाठ मे राम को विष्णु से अभिन्न माना गया है, दूसरा पाठ उन्हे विष्णु का वंशज मानता है। प्रथम पाठ मे इसका भी उल्लेख किया गया है कि राम क्रुद्ध हो जाने पर सहस्रस्कंध विष्णु का रूप धारण कर लेते हैं (१००० सिर, २००० भुजाये, २००० पैर)।

अध्यात्म रामायण के एक अन्य स्थल पर भरत को चक्र का तथा शत्रुघ्न को शख (दर) का अवतार माना गया है—**बभूवतुश्चक्रदरौ च दिव्यौ कैकेयिसूनुलवणान्तकश्च** (उत्तरकाण्ड ६, ५७)। उदारराघव (सर्ग ?) तत्त्वसग्रह रामायण (१, १८), काश्मीरी रामायण (२, १३) तथा बलरामदास के रामायण मे भरत-शत्रुघ्न को चक्र शख का अवतार माना गया है।

भरत तथा शत्रुघ्न के अवतारत्व के विषय मे **लिंगपुराण** (२, ५, १४७-१४८) और **अदभुत रामायण** मे लिखा है कि विष्णु की दाईं तथा बाईं बाहु क्रमश भरत तथा शत्रुघ्न के रूप मे प्रकट हुई थी (दे० सर्ग ४, ६६-६७)। पाश्चात्य वृत्तान्त न० १ के अनुसार चक्र तो भरत मे अवतरित हुआ, किन्तु अनन्त ने लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न दोनो मे अवतार लिया था (दे० अध्याय १)। श्याम के रामकियेन मे भरत को चक्र का तथा शत्रुघ्न को गदा का अवतार माना गया है (दे० अध्याय २)।

सारलादासकृत महाभारत के अनुसार विष्णु राम मे अवतरित हुए, ब्रह्मा शत्रुघ्न मे, इन्द्र भरत मे तथा महादेव लक्ष्मण मे (दे० वनपर्व, पृ० २२८)। दीनकृष्णदास कृत उडिया **रसविनोद** मे लक्ष्मण के अवतार-तत्व के विषय मे यह कथा मिलती है। शिव गोहत्या के प्रायश्चित्त के लिए तप कर रहे थे और विष्णु ने उन्हे त्रेतायुग मे लक्ष्मण के रूप मे जन्म लेने का वरदान दिया। वह मेघनाद की शक्ति से आहत होने के कारण गोहत्या-दोष से मुक्त हो जायेगे।

३६२ रामभक्ति के विकास के साथ अवतारवाद का भी विकास हुआ। रामतापनीय उपनिषद् से लेकर समस्त रामभक्ति-विषयक रचनाओ मे राम को विष्णु के अवतार के अतिरिक्त परब्रह्म का भी अवतार माना गया है (दे० अध्यात्म रामायण, बालकाण्ड, अध्याय १)।

बहुत सी रचनाओ मे राम तथा शिव की अभिन्नता पर विशेष रूप से बल दिया गया है। पद्मपुराण के पातालखण्ड (अध्याय ४६) मे राम शिव से कहते है—जो लोग हम दोनो मे अन्तर देखते है, वे न केवल मूर्ख है, किन्तु उनको नरक की यातना भी भोगनी पडेगी

ममास्ति हृदये शर्वो भवतो हृदये त्वहम्।
आवयोरन्तर नास्ति मूढा पश्यन्ति दुर्धिय ॥ २० ॥
ये भेद विदधत्यद्धा आवयोरेकरूपयो ।
कुभीपाकेषु पच्यन्ते नरा कल्पसहस्रकम् ॥ २१ ॥

कृत्तिवास रामायण के महिरावण-वध प्रसग के अन्तर्गत दुर्गा हनुमान से कहती हैं कि राम शिव के गुरु हैं तथा दोनो मे वस्तुत अन्तर नही है—**शिवरामे अभेद कहेन शूलपाणि** (दे० ६, अध्याय ८४)।

इसी प्रकार **स्कद पुराण** (माहेश्वर खण्ड, केदार खण्ड, ८, २०), **आनन्द रामायण** (मनोहरकाण्ड सर्ग ७ और १२), **रार्मालगामृत** (सर्ग १६) तथा **धर्मखण्ड** (अध्याय ६८) मे राम तथा शिव के अभेद का प्रतिपादन किया गया हे ।

अध्यात्म रामायण के अयोध्याकाण्ड के प्रथम सर्ग मे नारद राम को स्मरण दिलाते हे कि वह विष्णु, शिव, ब्रह्मा तथा सूर्य से अभिन्न ह तथा तदनुसार लक्ष्मी, पार्वती, सरस्वती तथा प्रभा सीता मे अवतरित है

त्व विष्णुर्जानकी लक्ष्मी शिवस्त्व जानकी शिवा ।
ब्रह्मा त्व जानकी वाणी सूयस्त्व जानकी प्रभा ।। १३ ।।

आनन्द रामायण के राज्यकाड मे राम तथा कृष्ण की अभिन्नता का उल्लेख किया गया है—**राम एवात्र कृष्णश्च कृष्ण एवात्र राघव ।। उभयोर्नान्तरम्** (सर्ग ३, ११५) । **तत्त्व-सग्रह रामायण** के प्रारम्भ मे लिखा है कि विभिन्न रचनाओ मे राम निम्नलिखित देवताओ के अवतार माने जाते है–शिव, ब्रह्मा, हरिहर, त्रिमूर्त्ति, सच्चिदानन्द परब्रह्म । **बलरामदास** तो विष्णु को रामादि चार भाइयो मे अवतरित मानते है तथा लक्ष्मी को सीता मे, किन्तु अरण्यकाण्ड के मगलाचरण तथा दण्डकारण्य के वृत्तात मे उन्होने उडीसा के लोकप्रिय देवताओ से राम, सीता और लक्ष्मण की अभिन्नता का प्रतिपादन किया है । तदनुसार राम, सीता, लक्ष्मण क्रमश जगन्नाथ, सुभद्रा तथा बलभद्र से अभिन्न है ।[1] बौद्ध रचनाओ मे राम को बोधिसत्त्व माना जाता है तथा बौद्ध इतिहास और रामकथा के अन्य पात्रो की अभिन्नता का उल्लेख होता है ।[2] श्याम देश के **पालक पालाम** (दे० अनु० ३२७) के अनुसार दशरथ ने देवताओ से एक ऐसे पुत्र की याचना की थी जो रावण को पराजित करने मे समर्थ हो । इस पर इन्द्र ने बोधिसत्त्व को भेज दिया, जो दशरथ के दोनो पुत्रो मे प्रकट हुए । **ब्रह्मचक्र** (अनु० ३२८) के अनुसार लका की जनता को रावण के शासन से पीडित देखकर इन्द्र ब्रह्मा के पास गये तथा उन्होने रावण से युद्ध करने की आज्ञा माँगी । ब्रह्मा ने अनुमति दी तथा कई देवताओ को, जिनमे बुद्ध भी सम्मिलित थे, पृथ्वी पर भेज दिया । ये देवता राम-लक्ष्मण तथा भरत के रूप मे जन्म लेते है ।

३६३ जैन साहित्य मे रामकथा के प्रधान पात्रो के पूर्वजन्म की कथाओ को

---

१ आनन्द रामायण (६, ५, ४४) मे भी लक्ष्मण-बलराम की अभिन्नता का उल्लेख है ।

२ दे० दशरथ जातक (अनु० ५१), अनामक जातकम् (अनु० ५२), दशरथ कथानम् (अनु० ५३), खोतानी रामायण (अनु० ३१२), रामकेर्त्ति (अनु० ३२४), रामजातक (३२७) ।

अपेक्षाकृत अधिक महत्त्व दिया गया है। **पउमचरिय** के अनुसार राम के तीन पूर्व जन्मों का उल्लेख है, इसके अनुसार वह क्रमशः एक व्यापारी का पुत्र धनदत्त, विद्याधर राजकुमार नयनानन्द तथा राजकुमार श्रीचन्द्र कुमार थे। लक्ष्मण किसी पूर्व जन्म मे धनदत्त (राम) का भाई वसुदत्त था, बाद मे वह हरिण के रूप मे प्रकट हुआ तथा कई बार जन्म लेने के पश्चात् वह दशरथ के पुत्र मे अवतरित हुआ।[1]

गुणभद्र के उत्तरपुराण मे जो कथा मिलती है, उसमे राम-लक्ष्मण अपने पूर्व जन्म मे भाई न होकर अन्तरंग मित्र माने जाते हैं। लक्ष्मण राजा प्रजापति का पुत्र चन्द्रचूल था तथा राम राजमंत्री का विजय नामक पुत्र। दुराचरण के कारण राजा ने दोनो को प्राणदण्ड की आज्ञा दी थी, किन्तु मंत्री उनको एक महाबल नामक साधु के पास ले गया। साधु ने कहा कि ये तो वासुदेव तथा बलदेव बनने वाले हैं। चन्द्रचूल तथा विजय दीक्षा लेकर तप करने लगे तथा स्वर्ग मे क्रमशः मणिचूल तथा सवर्णचूल देवता बन गए, अगले जन्म मे वे लक्ष्मण तथा राम के रूप मे प्रकट हुए (दे० सधि ६७, ६० आदि)।

३६४ सीता का लक्ष्मीत्व राम के विष्णुत्व का एक स्वाभाविक विकास प्रतीत होता है। सीता तथा लक्ष्मी की अभिन्नता का उल्लेख **वाल्मीकि रामायण** के एक अपेक्षाकृत अर्वाचीन सर्ग मे पाया जाता है जिसमे अग्नि-परीक्षा के अवसर पर देवता आकर राम की विष्णु-रूप मे स्तुति करते हैं (दे० ६, सर्ग ११७, २७)। इस सर्ग मे राम, कृष्ण तथा विष्णु तीनो की अभिन्नता का भी उल्लेख किया गया है। यह **वाल्मीकि रामायण** का एकमात्र स्थल है, जहाँ कृष्ण का नाम आया है। उत्तरकाड मे कुशध्वज की पुत्री वेदवती की कथा मिलती है, जिसके अनुसार वेदवती सीता के रूप मे प्रकट होती है (दे० सर्ग १७)। इस कथा की रचना उस समय की गई होगी, जब सीता तथा लक्ष्मी की अभिन्नता की भावना व्यापक नही हो पाई थी।

सीता के लक्ष्मीत्व का उल्लेख दाक्षिणात्य पाठ के उत्तरकाड के ३७वे सर्ग के बाद के प्रक्षिप्त सर्गो मे भी मिलता है, लेकिन ये सर्ग अन्य पाठो मे नही पाये जाते (दे० ७, ३७ प्र० सर्ग ३ और ८)।[2]

वायु, ब्रह्माड और **विष्णु** जैसे प्राचीन महापुराणो मे तथा **रघुवश** मे सीता

---

१ दे० पर्व १०३। लक्ष्मण तथा रावण का कई जन्मो तक परस्पर विरोध चलता रहा। दे० आगे अनु० ४१०।

२ वेदवती की कथा का जैनी रूप आगे अनु० ४१० मे देखे। सीता के पूर्व-जन्म की एक अन्य कथा गुणभद्र के उत्तरपुराण मे मिलती है (दे०

तथा लक्ष्मी की अभिन्नता की ओर निर्देश नहीं किया गया है, यद्यपि इन रचनाओ मे राम विष्णु के अवतार माने गय ह। **हरिवंश** (१, अध्याय ४१), भागवत पुराण (६, अध्याय १०), ब्रह्मपुराण (२१३, १२६), देवीभागवत पुराण (३, २८, १३), अभिषेक नाटक (अनु० २२७), रामकियेन (अध्याय २ और १०), पद्मपुराण (६, २६९, ९९), सेरत काड (दे० ऊपर अनु० ३२२) तथा अधिकाश अर्वाचीन रचनाओ के अनुसार सीता तथा लक्ष्मी अभिन्न ही है।

रामतापनीय उपनिषद् मे पहले-पहल सीता तथा प्रकृति की अभिन्नता का उल्लेख किया गया है। बाद के साम्प्रदायिक साहित्य मे लक्ष्मी के अतिरिक्त सीता मूल-प्रकृति, योगमाया तथा परमशक्ति (दे० अध्यात्म रा० १, ७, २७) भी मानी जाती है

एषा सा जानकी लक्ष्मीर्योगमायेति विश्रुता ॥ ११ ॥

(अध्यात्म रामायण २, ५)

मूलप्रकृतिरित्येके प्राहुर्मायेति केचन ॥ २२॥

(वही ३, ३)

३६५ सीता के अवतार-तत्त्व[1] के विषय मे अन्य उल्लेख भी मिलते है। **सौर पुराण** मे कहा गया है कि जनक ने तपस्या द्वारा पार्वती को सन्तोष दिया था और फलस्वरूप पार्वती उनकी पुत्री के रूप मे प्रकट हुई।

पार्वत्यंशसमुद्भवा जनकेन पुरा गौरी तपसा तोषिता यत ।

(अध्याय ३०, ५१)

महाभागवत पुराण के अनुसार सीता और लक्ष्मी अभिन्न तो है, लेकिन लक्ष्मी स्वय देवी के अश से उत्पन्न मानी जाती है (दे० अध्याय ३६)। **स्कन्द पुराण** के माहेश्वर खण्ड के अनुसार ब्रह्म-विद्या सीता के रूप मे अवतरित हुई (दे० अध्याय ८, ९५)। इसी पुराण के ब्रह्मखड (सेतुमाहात्म्य के अग्नितीर्थ प्रसग) मे कहा है कि सीता परशुराम-अवतार मे धरणी, राम-अवतार मे सीता तथा कृष्ण-अवतार मे रुक्मिणी है। **अध्यात्म रामायण** के अनुसार सीता निम्नलिखित देवियो से अभिन्न है लक्ष्मी, पार्वती, सरस्वती और प्रभा (दे० ऊपर अनु० ३६२)। **आनन्द रामायण** मे सीता तथा दुर्गा की अभिन्नता का प्रतिपादन किया गया है (दे० मनोहरखड, अध्याय १२, श्लोक २६ और ३६)।

श्याम के **राम-जातक** मे रावण इन्द्र का रूप धारण कर स्वर्ग की रानी को धोखा देते है। रावण से प्रतिकार लेने के लिए वह सीता के रूप मे प्रकट होती है। इसके अनुसार इन्द्राणी सीता मे अवतरित है (अनु० ४१७)। **पालक पालाम** मे भी इस

---

१ सीता और सुभद्रा की अभिन्नता का अनु० ३६२ मे उल्लेख हो चुका है।

प्रका¯ की कथा मिलती ह । **अदभुत रामायण** मे अम्बरीष की पुत्री श्रीमती सीता के रूप मे प्रकट हुई (दे० आगे अनु० ३७३) ।

ग | अवतार के कारण

३६६ प्रारम्भ मे रावण-वध ही विष्णु के राम के रूप मे प्रकट होने का उद्देश्य कहा गया ह (दे० वाल्मीकि रामायण १, १६) । बाद मे भगवद्गीता के अनुकरण पर रामावतार के विपय मे विष्णु अवतारो के सामान्य उद्देश्य का भी उल्लेख होने लगा

यदा यदा हि धमस्य ग्लानिभवति भारत ।
अभ्युत्थानमधमस्य तदात्मान सृजाम्यहम् ।। ७।।
परित्राणाय साधूना विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धमसस्थापनार्थाय सभवामि युगे युगे ।। ८ ।।

(भगवद्गीता, अध्याय ४)

रामभक्ति के पल्लवित होने के पश्चात् इसका भी प्राय उल्लेख मिलता है कि अपने भक्तो को भवसागर के पार पहुँचाने अथवा उनको अपना सगुण रूप दिखलाने के उद्देश्य से निगुण ब्रह्म राम के रूप मे प्रकट हो जाते है ।[१]

रामावतार के इस उद्देश्य के अतिरिक्त विष्णु के अवतार धारण करने के कई कारणो का उल्लेख मिलता है । इसके सम्ब¯ध मे अनेक वरो अथवा शापो की कथाएँ पाई जाती है ।

(अ) वर

३६७ कश्यप अदिति का सम्बन्ध पहले-पहल वामनावतार मात्र के साथ माना जाता था, बाद मे कृष्ण और राम की कथाओ के प्रसग मे भी उनका उल्लेख मिलता है । विकास की रूपरेखा इस प्रकार है । वामनावतार की प्राचीनतम कथाओ मे (दे० अनु० १४१) कश्यप-अदिति की चर्चा नही है किन्तु **महाभारत** के आदि पर्व (१, २७)

---

१ अर्वाचीन रामकथाओ मे प्राय कहा गया है कि जय-विजय नामक विष्णु के द्वारपाल सनकादि के शाप से वशीभूत होकर रावण-कुम्भकर्ण के रूप मे प्रकट हो गये थे । रामचरितमानस मे इसका भी उल्लेख मिलता है कि इन दोनो के हित के लिए भगवान् ने राम का अवतार धारण कर लिया ।

मुकुत न भए हते भगवाना । तीनि जन्म द्विज बचन प्रवाना ।
एक बार तिन्ह के हित लागी । धरेउ शरीर भगत अनुरागी ।

(बालकाण्ड, १२३, १-२)

रावण-कुम्भकर्ण के पूर्व जन्म की अन्य कथाओ के लिए दे० आगे अनु० ६४८ ।

मे कश्यप तथा विनता की तपस्या का वर्णन किया गया है जिसके फलस्वरूप उनको दो पुत्र (अरुण तथा गरुड) प्राप्त हुए। महाभारत के अन्य स्थलो पर अदिति की आराधना (३, १३५, ३) तथा तपस्या (१३, ८३, २६-२७) का उल्लेख मिलता है, जिसके फलस्वरूप वह विष्णु की माँ बन सकी।[1] **हरिवश पुराण** (३, अध्याय ६७-६६) मे देवता, कश्यप तथा अदिति सब मिलकर १००० वर्ष तक तपस्या करते है और अन्त मे विष्णु से यह वरदान प्राप्त करते है कि वह वामन के रूप मे अदिति के गभ मे जन्म लेकर वलि को परास्त करेगे। **वाल्मीकि रामायण** के दाक्षिणात्य पाठ (१, २६, १०-१७) तथा **वामन पुराण** (अध्याय २४-२८) मे भी कश्यप तथा अदिति की तपस्या एव वरप्राप्ति का वर्णन किया गया है।

महाभारत के शाति पर्व मे विष्णु के विषय मे लिखा है—**अदित्या सप्तरात्र तु पुराणे गर्भता गत** (१२, ४३, ६), बहुत सी हस्तलिपियो मे 'सप्तरात्र' के स्थान पर 'सप्तधा' पाठ मिलता है। सभव है इसी कारण से वामनावतार के अतिरिक्त अदिति का सम्बन्ध अन्य अवतारो मे भी जोडा गया है। **मत्स्य पुराण** (अध्याय ४७, ६), **ब्रह्माड पुराण** (२, ७१, २०० और २३८), **ब्रह्मवैवर्त्त पुराण** (कृष्णजन्मखण्ड, अध्याय ७) आदि मे कश्यप-अदिति को वसुदेव-देवकी से अभिन्न माना गया है।

भागवत् पुराण के अनुसार सुतपा तथा वृश्नि ने स्वायभू मन्वन्तर म १२००० वर्ष तक तपस्या कर भगवान से वर प्राप्त किया कि वह तीन बार उनके पुत्र बन जाएँ। फलस्वरूप भगवान् वृश्निगर्भ (सुतपा-पुत्र), उपेन्द्र अथवा वामन (कश्यप-पुत्र) तथा कृष्ण (वसुदेव पुत्र) के रूप मे अवतरित हुए (दे० स्कन्ध १०, अध्याय ३, ३२-४५)।

अपेक्षाकृत अर्वाचीन रचनाओ मे कश्यप-अदिति के दशरथ-कौशल्या के रूप मे प्रकट होने का उल्लेख मिलता है, उदाहरणार्थ—**अध्यात्म रामायण** का बालकाण्ड (२, २५, ३, ३२, ४, १४-१६), **रामचरितमानस** (१, १८७), **काश्मीरी रामायण** (अयोध्या काण्ड, न० १३)। **आदि पुराण** मे नन्द के एक स्वप्न का विवरण दिया गया है, जिसके अनुसार वह अपने पूर्वजन्म मे दशरथ था (अध्याय १६)। **कृत्तिवास रामायण** मे विष्णु कश्यप-अदिति की ओर निर्देश करते हुए देवताओ से कहते हैं कि दशरथ तथा कौशल्या ने मेरी सेवा की और मै उनको यह वर दे चुका हूँ कि मै तुम्हारे घर मे जन्म लूगा (दे० बालकाण्ड, अ० ३६)। अच्युतानन्द (१६ वी० श० ई०) के उडिया **हरिवश** के अनुसार गोमाता ने कश्यप तथा अदिति को विभिन्न युगो मे जन्म लेने का शाप दिया था।

---

१ मत्स्य पुराण मे भी अदिति की यह तपस्या उल्लिखित है (दे० अध्याय २४३, ६)।

३६८ ब्रह्मा के पुत्र स्वायभू मनु की तपस्या[1] का प्रथम उल्लेख **शतपथ ब्राह्मण** मे मिलता है—प्रजा की कामना से प्रेरित होकर वह आराधना तथा तपस्या मे प्रवृत्त हुए (दे० १,८, १ ७)। **विष्णु पुराण** मे स्वायभू की सृष्टि, उसकी तपश्चर्या, शतरूपा[2] की प्राप्ति तथा इन दोनो की सन्तति का वर्णन किया गया है (दे० १, अध्याय ७)। **भागवत पुराण** मे भी स्वायभू के विरक्त हो जाने, राज्य छोड देने तथा अपनी पत्नी के साथ वन मे तपस्या करने की कथा वर्णित है (दे० स्कध ८, अध्याय १)। **देवीभागवत पुराण** के अनुसार स्वायभू मनु ने १०० वर्ष तक तपस्या तथा देवी की आराधना की थी तथा अन्त मे उनसे यह वर मागा—**सर्गकार्ये विघ्ना नश्यन्तु मे** (दे० १०, १, २१)। देवी ने उनको अकटक राज्य तथा पुत्रो की प्राप्ति का आश्वासन दिया—**राज्य निष्कटक तेऽस्तु पुत्रा वशकरा अपि** (दे० १०, २, ३)।

उपर्युक्त कथाओ मे किसी अवतार का उल्लेख नही होता, सभवत वैवस्वत मनु[3] की कथा के प्रभाव के कारण अर्वाचीन रचनाओ मे स्वायभू मनु की तपस्या तथा अवतारवाद का सम्बन्ध स्थापित किया गया है। **पद्मपुराण** के उत्तरखण्ड के अनुसार स्वायभू ने १००० वर्ष तक तपस्या करके विष्णु से यह वर प्राप्त किया था कि विष्णु तीन जन्मो मे उनके पुत्र बन जाये। तदनुसार स्वायभू-शतरूपा क्रमश दशरथ-कौशल्या, वसुदेव-देवकी तथा कलियुग मे शभल ग्रामवासी ब्राह्मण हरिगुप्त तथा उनकी पत्नी देवप्रभा के रूप मे प्रकट होते है (दे० अध्याय २६६)। रामरहस्य (सर्ग १) तथा तत्त्व-सग्रह रामायण (१, १३) मे भी इससे मिलती-जुलती कथा पाई जाती है। रामरहस्य मे हरिगुप्त के स्थान पर हरिव्रत का उल्लेख है और तत्त्वसग्रह रामायण मे मनु अतिम बार विष्णुव्रत के रूप मे प्रकट होकर कल्कि के पिता बन जाते है।

रामचरितमानस (१, १४१) तथा पाश्चात्य वृत्तान्त न० १३ मे भी मनु-शतरूपा

---

१ प्रजा-प्राप्ति के उद्देश्य से तप करने का उल्लेख तैत्तिरीय उपनिषद् मे परमात्मा के विषय मे (दे० २, ६, १) तथा प्रश्नोपनिषद् मे प्रजापति के विषय मे हुआ है—**प्रजाकामो वै प्रजापति स तपोऽतप्यत** (दे० १, ४)।

२ महाभारत मे स्वायभू की पत्नी का नाम सरस्वती है (दे० ५, १५, १४) बाद मे प्राय शतरूपा ही का उल्लेख मिलता है। **गरुड पुराण** (१, ६१, १) मे भी स्वायभू आदि मुनियो की साधना का उल्लेख किया गया है।

३ मनु वैवस्वत की तपस्या तथा फलस्वरूप प्रजापति के मत्स्यावतार की कथा महाभारत (दे० ३, १८५) तथा परवर्ती रचनाओ मे विस्तार सहित वर्णित है।

तथा दशरथ-कामन्या की अभिन्नता का उल्लेख है।

३६९ **स्कन्दपुराण** के वैष्णवखण्ड (अध्याय २४), पद्मपुराण (उत्तरखण्ड, अध्याय १०६) तथा **आनन्द रामायण** (सारकाण्ड सर्ग ४, ११७-१७० तथा सर्ग ५,१-२८) मे विष्णुभक्त धर्मदत्त तथा कलहा की कथा दी गई है, जिनके अनुसार दोनो क्रमश दशरथ तथा कैकेयी के रूप मे प्रकट हुए है। सवृत रामायण मे भी इस प्रकार का वृत्तान्त मिलता है (दे० ऊपर अनु० २६३)।

(आ) शाप

३७० भृगु-शाप की कथा के प्राचीनतम रूप मे किसी अवतार विशेष का उल्लेख नही किया गया है। **मत्स्यपुराण** के अनुसार भृगु की पत्नी का वध करने के कारण भृगु ने विष्णु को सात बार मनुष्यो मे अवतार धारण कर लेने का शाप दिया— **तस्मात्त्व सप्तकृत्वेह मानुषेषूपपत्स्यसे** (अध्याय ४७, १०६)। लिंगपुराण मे भृगु के शाप के फलस्वरूप विष्णु के दस अवतारो का उल्लेख है

भृगोरपि च शापेन विष्णु परमवीर्य्यवान्।
प्रादुर्भावान् दश प्राप्तो दु खितश्च सदा कृत ॥२६॥

(अध्याय २९)

वायुपुराण (अध्याय ९७), ब्रह्माण्ड पुराण (२, अध्याय ७२) और देवीभागवत पुराण (४, अध्याय १२) मे भी ऐसी कथा मिलती है। वाल्मीकि रामायण के एक स्थल के अनुसार, जो केवल दाक्षिणात्य पाठ मे मिलता है, भृगु ने विष्णु को बहुत वर्षों तक पत्नी-वियोग सहने का शाप दिया था। इस शाप के फलस्वरूप रामावतार मे सीता-त्याग की घटना हुई थी (दे० उत्तरकाण्ड, सर्ग ५१)। वह्नि पुराण मे भृगु शाप रामावतार का कारण माना गया है (दे० पृ० १७०)। योगवासिष्ठ के अनुसार विष्णु ने भृगु की पत्नी का वध किया था और इसपर भृगु ने शाप दिया कि तुम भी स्त्री के वियोग मे व्याकुल हो जाओगे। इस शाप के वशीभूत विष्णु राम के रूप मे प्रकट हुये (दे० वैराग्य प्रकरण, सर्ग १, ६१)।

३७१ योगवासिष्ठ मे दो अन्य शापो का भी उल्लेख किया गया है, जिनके कारण विष्णु को राम का रूप धारण करना पडा। किसी दिन विष्णु ब्रह्मपुरी गये थे, जहाँ सनत्कुमार को छोडकर सबो ने उनका स्वागत किया था। इसपर विष्णु ने सनत्कुमार को कामातुर बन जाने का शाप दिया तथा प्रत्युत्तर मे सनत्कुमार ने विष्णु को 'अज्ञानी' हो जाने का शाप दिया (दे० १, १, ५९-६०)। एक अन्य अवसर पर नृसिहरूपधारी विष्णु ने देवशर्मा की पत्नी को डराया था, जिससे वह मर गई थी। इसपर देवशर्मा ने विष्णु को पत्नी-वियोग भोगने का शाप दिया था (दे० योगवासिष्ठ १, १, ६३-६४)।

३७२ स्कन्द पुराण (वैष्णव खण्ड, कार्तिकमास माहात्म्य, अध्याय २०-२१), शिवमहापुराण (रुद्र संहिता, युद्ध-खण्ड, अध्याय २३), पद्मपुराण (उत्तर खण्ड, अध्याय १६ और १०५), योगवासिष्ठ रामायण (१, १, ६२) आनन्द रामायण (१,४, ८०-११२) तथा लोमश रामायण (दे० अनु० १६४) मे वृन्दा-शाप का वर्णन किया गया है। दैत्य जलधर शिव से युद्ध करते हुए अपनी पत्नी वृन्दा के सतीत्व के कारण अजेय है। इसपर विष्णु ने जय विजय की सहायता से वृन्दा का सतीत्व नष्ट कर दिया था। वृन्द ने जय-विजय को, जिन्होने उसे राक्षस के रूप मे डराया था, राक्षस बन जाने का शाप दिया तथा विष्णु को, जिन्होने उसे जलधर के रूप मे धोखा दिया था, यह शाप दिया कि तुम मनुष्य बनोगे और ये दोनो तुम्हारी पत्नी का हरण करेगे। तत्त्वसग्रह रामायण मे राम स्वय वृन्दा-शाप को सीता-हरण का कारण मानते है (दे० ३, १६)।

स्कन्दपुराण (अध्याय २२) मे वृन्दा का शाप इस प्रकार है

यौ त्वया मायया द्वा स्थौ स्वकीयौ दर्शितौ मम।
तावेव राक्षसौ भूत्वा भार्या तव हरिष्यन्त ॥२८॥

पद्मपुराण के उत्तर खण्ड (अध्याय १६) मे यह शाप बदल दिया गया है

अह मोह यथा नीता त्वया मायातपस्विना।
तथा तव वधू मायातपस्वी कोऽपि नेष्यति ॥५५॥

रामचरितमानस मे विष्णु द्वारा वृन्दा का सतीत्व नष्ट किये जानेका उल्लेख मात्र किया गया है। कथा मे इस प्रकार परिवर्तन किया गया है कि जलधर ही रावण के रूप मे प्रकट होकर और राम के हाथ से मरकर परमपद प्राप्त कर लेता है।

छल करि टारेउ तासु व्रत, प्रभु सुर कारज कीन्ह।
जब तेहि जानेउ मरम तब, स्राप कोप करि दीन्ह ॥१२३॥
तासु स्राप हरि कीन्ह प्रवाना। कौतुक निधि कृपाल भगवाना ॥
तहाँ जलधर रावन भएऊ। रन हति राम परम पद दएऊ ॥

(बालकाण्ड)

३७३ नारद के मोह तथा विष्णु के प्रति उनके शाप की कथा अर्वाचीन है, किन्तु उस कथा के तत्त्व प्राचीन साहित्य मे विद्यमान है। **महाभारत** मे नारद तथा पर्वत का अनेक स्थलो पर साथ-साथ उल्लेख किया गया है। नारद-पर्वत का सम्बन्ध मामा-भानजे का माना जाता है—**मातुलो भागिनेयश्च** (१२, ३०, ५)। दोनो द्रौपदी-स्वयवर के अवसर पर आकाश मे दर्शक बनकर उपस्थित है (१, १७८, ७) तथा साथ-साथ इन्द्रलोक की यात्रा करते है (३, ५१, १२)। शाति पर्व मे दोनो सृजय के यहाँ पहुँचते है तथा उनकी पुत्री के कारण एक दूसरे को शाप देते है। नारद पर्वत की स्वर्ग-गति रोक लेते है तथा पर्वत शाप देते है कि नारद सृजय की पुत्री के साथ विवाह

करने के पश्चात् 'वानरमुख' हो जायँगे। नारद सृजय की पुत्री से विवाह कर वास्तव मे 'वानर-मुख' बन जाते है, किन्तु बाद मे नारद-पर्वत मिलकर एक दूसरे को शापमुक्त करते है (दे० अध्याय ३०-३१)।[1]

महाभागवत पुराण प्राचीनतम रचना प्रतीत होती है, जिसमे नारद का शाप सूर्यवश मे विष्णु के जन्म तथा सीता-हरण का कारण माना गया है (दे० ११, १०७-११२)। **अद्भुत रामायण** मे कथा इस प्रकार है। अम्बरीष की पुत्री श्रीमती को देखकर नारद तथा पर्वत दोनो उसको अम्बरीष से मागते है। अम्बरीष कहते है कि कन्या जिसे चुन लेगी वही उसका पति बन जायेगा। इस पर नारद तथा पर्वत दोनो अलग-अलग विष्णु के पास जाकर एक दूसरे को 'वानरमुख' दिखलाते है। विष्णु हँसकर दोनो की प्रार्थना पूरी करते है। स्वयवर के समय श्रीमती नारद तथा पर्वत को न देखकर केवल दो वानरो को तथा दोनो के बीच मे सुन्दर युवक के रूप मे विष्णु को देखती है। वह विष्णु के गले मे माला डाल देती है और विष्णु उसे बैकुठ ले जाते है। बाद मे नारद तथा पर्वत विष्णु और श्रीमती को राम और सीता के रूप मे प्रकट होने का शाप देते है।[2] **शिवमहापुराण** मे जो कथा मिलती है वह **रामचरितमानस** के वृत्तान्त के अधिक निकट है। श्रीमती को प्राप्त करने के लिए नारद ने विष्णु के पास जाकर हरिरूप माँगा। विष्णु ने उसे हरि अर्थात् वानर का मुख दिया और स्वय श्रीमती के स्वयवर मे जाकर उसे प्राप्त किया। उस स्वयवर मे दो शिवगणो ने नारद का उपहास किया और नारद के शाप के कारण वे रावण और कुभकर्ण बन गये। नारद ने विष्णु को यह शाप दिया—तुम मनुष्य बनकर वानरो के साथ विरह का दु ख भोगो

---

१ जैन रामकथाओ मे नारद-पर्वत के यज्ञ-विषयक विवाद का विस्तृत वर्णन मिलता है। पर्वत हिंसात्मक यज्ञ का पक्ष लेता है तथा नारद इसका विरोध करते है (दे० पउमचरिय, पर्व ११, गुणभद्र का उत्तरपुराण सधि ६७, २५९ आदि)। पउमचरिय के अनुसार नारद ब्राह्मण ब्रह्मरुचि तथा वरकुर्मी के पुत्र है, जृभक नामक देवता नारद को शास्त्र तथा आकाशगामिनी विद्या सिखलाते है और नारद देवर्षि बन जाते है। पउमचरिय ने नारद को ब्राह्मण कथाओ के अनुसार सगीतज्ञ, विनोदी तथा कलहप्रिय के रूप मे चित्रित किया।

२ दे० सर्ग ३-४। लिंग पुराण (उत्तरार्द्ध, अध्याय ५) मे भी विष्णु की माया के कारण श्रीमती नारद-पर्वत को वानर के रूप मे देखती है तथा विष्णु को माला प्रदान करती है, किन्तु इस वृत्तान्त मे नारद के किसी शाप का उल्लेख नही मिलता।

(दे० रुद्रसंहिता, सृष्टिखण्ड, अध्याय ३-४)। **रामचरितमानस** मे अम्बरीष की पुत्री श्रीमती के स्थान पर शीलनिधि की पुत्री विश्वमोहिनी का उल्लेख किया गया है (दे० बालकांड १३०, ७-८)। बलरामदास के रामायण मे अम्बरीष की पुत्री का नाम लीलावती है (दे० किष्किन्धा कांड)।

अद्भुत रामायण के एक अन्य स्थल के अनुसार लक्ष्मी ने किसी अवसर पर स्वर्ग मे नारद का अपमान किया था, इस पर नारद ने उनको राक्षसो के यहाँ जन्म लेने का शाप दिया, जिसके फलस्वरूप लक्ष्मी मंदोदरी की पुत्री बन गई (दे० सर्ग ६)। बलरामदास के अनुसार लक्ष्मी ने जय-विजय के साथ अन्याय किया था और इसी कारण उनको सीता के रूप के अवतार लेना पड़ा (दे० अनु० ६४८)।

३७४ प्रामाणिक वाल्मीकीय रामायण मे नारद का उल्लेख नहीं था किन्तु प्रचलित रामायण से लेकर परवर्ती रामकथाओ की एक विशेषता यह है कि इनमे नारद का महत्त्व बढता जाता है।

प्रचलित रामायण के सर्वप्रथम सर्ग मे नारद वाल्मीकि को रामचरित का सार सुनाते है। उत्तरकाण्ड के अनुसार नारद ने किसी दिन रावण को यम पर आक्रमण करने के लिए उकसाया था (दे० सर्ग २०-२१) तथा ब्राह्मण-कुमार की अकाल मृत्यु के रहस्य का उद्घाटन किया था (दे० सर्ग ७४)। **पश्चिमोत्तरीय पाठ** मात्र मे शर-पाश के प्रसग मे नारद की चर्चा की गई है—नारद राम को उनके नारायणत्व का स्मरण दिलवाकर गरुड को बुलाने का परामर्श देते है (दे० प० रा० ६, २७, ७-१४)। **गौडीय** तथा **पश्चिमोत्तरीय पाठो** मे कुम्भकर्ण के जगाये जाने के पश्चात् उनका एक अपेक्षाकृत लम्बा भाषण उद्धृत किया गया है, जिसमे वह कहता है कि नारद ने मुझे विष्णु-अवतार द्वारा रावण-वध की योजना से अवगत कराया था (दे० गौ० रा० ६, ४०, प० रा० ६, ४१)। **दाक्षिणात्य पाठ** के एक प्रक्षेप के अनुसार नारद ने रावण को श्वेत द्वीप मे भेजा, जहा रावण स्त्रियो द्वारा बुरी तरह से हराया जाता है (दे० ७ ३७ प्रक्षिप्त सर्ग ५)।

परवर्ती रामकथाओ मे नारद के हस्तक्षेप का बार-बार उल्लेख मिलता है। वह दस्यु वाल्मीकि के हृदय-परिवर्तन का साधन बन जाते है (दे० अनु० ३८), दशरथ तथा जनक को विभीषण के आक्रमण से बचाते है (दे० अनु० ३३८), अनावृष्टि के समय दशरथ को परामर्श देते है (दे० कृत्तिवास रामायण १, २७), उनके शाप के कारण राम, सीता, रावण तथा कुम्भकर्ण प्रकट हो जाते है (दे० ऊपर अनु० ३७३), उनके परामर्श पर जनक पुत्रेष्टि यज्ञ करते है (अनु० ४०७) तथा मन्दोदरी अपनी पुत्री को स्वर्णपेटिका मे बन्द कर किसी दूर देश मे गाडने का आदेश देती है (अनु० ४१८ और ४१०)।

पउमचरिय, अध्यात्म रामायण, पद्म पुराण (पाताल खण्ड) तथा बृहत्कोशल खण्ड मे सीता-स्वयवर के अवसर पर नारद के हस्तक्षेप का उल्लेख किया गया है (दे० अनु० ३६४, ३६५, ४०३) ।

नारद राम और रावण के बीच मे सघर्ष उत्पन्न करने के उद्देश्य मे पृथ्वी पर उतरते है (दे० बाल रामायण, अक २, विष्कभ), अयोध्या मे पहुँचकर राम को अवतार का उद्देश्य स्मरण दिलाकर उनसे अनुरोध करते है कि वह राज्याभिषेक अस्वीकार करे (अनु ४४३), जयत को राम के पास भेज देते है (अनु० ४३६) । सीता-हरण के लिए रावण को उकसाते है (अनु० ४८६), सीता को माया-सीता की सृष्टि करने का परामर्श देते है (अनु० ५०५), पपा सरोवर के तट पर विरही राम से भेट करने जाते है (अनु० ८७६) और वालि-वध के बाद राम का देवी-पूजा करने का उपदेश देते है (अनु० ५२३) । समुद्रलघन के बाद हनुमान् उनके आश्रम मे पहुँचते है (अनु० ५३१) और लका मे ही सीता की खोज करते हुये नारद से भेट करते है (अनु० ५३८ और अनु० ६८३) । कुम्भकर्ण-वध के बाद नारद आकर राम की स्तुति करते है (अनु० ५८६) तथा रावण-वध के बाद देवताओ के लिए रावण की मुक्ति का रहस्योद्घाटन करते है (दे० अनु० ५६६) । पउमचरिय के अनुसार वह लका मे विलब करते हुए राम को उनकी माता का विरह समझाते है (अनु० ६०५) । तोरवे रामायण मे शम्बूक-वध के एक नवीन रूप मे नारद का उल्लेख मिलता है (अनु० ६३२) तथा पउमचरिय के अनुसार नारद ही लव-कुश-युद्ध के लिए उत्तरदायी है (दे० अनु० ७४६) । आनन्द रामायण के अनुसार नारद ने शत्रुघ्न के पुत्र यूपकेतु तथा मदनसुन्दरी के विवाह का प्रबन्ध किया था (दे० विवाह काण्ड, सर्ग ८) तथा सीता को तुलसी-पत्र-सन्धि की शिक्षा दी थी (दे० राज्यकाण्ड, सर्ग २२) ।

तुलसीदास ने नारद को एक आदश रामभक्त के रूप मे चित्रित किया है । रामचरितमानस के उत्तरकाण्ड मे कहा गया है कि नारद अयोध्या आया करते थे तथा वहा नये-नये चरित्र देखकर ब्रह्मलोक मे उनका गुणगान करते थे

बारबार नारद मुनि आवहि । चरित पुनीत राम के गावहि ॥
नित नव चरित देखि मुनि जाहीं । ब्रह्मलोक सब कथा कहाही ॥

(दे० ७, ४२, २३) । तुलसी ने एक अन्य स्थल पर नारद की राम-स्तुति उद्धृत की है (दे० ७, ५१) । इसके अतिरिक्त गरुड-चरित के अन्तर्गत इसका उल्लेख किया गया है कि नारद ने राम को नागपाश से मुक्त करने के उद्देश्य से गरुड को लका भेजा था तथा बाद मे मोह-ग्रस्त गरुड को ब्रह्मा के यहा जाने का आदेश दिया (७, ५८-५६) ।

इस प्रकार हम देखते है कि प्रामाणिक रामायण मे भले ही नारद का नाम तक न आया हो, किन्तु परवर्ती रामकथाओ मे हमे पग-पग पर नारद के दर्शन मिलते है ।

४—राम का बालचरित

क । जन्म

३७५ वाल्मीकीय रामायण के दाक्षिणात्य पाठ के एक अपेक्षाकृत अर्वाचीन प्रक्षेप मे राम तथा उनके भाइयो की जन्मतिथि चैत्र शुक्ल नवमी बताई गई है (दे० ऊपर अनु० ३३१)। परवर्ती रचनाओ मे इस तिथि का प्राय उल्लेख किया जाता है। उदाहरणार्थ अध्यात्म रामायण (१, ३), आनन्द रामायण (१, २, ४), पद्मपुराण (उत्तर खण्ड, अध्याय २६६), कृत्तिवासीय रामायण (१, ४२), बलरामदास रामायण, रामचरितमानस (१, १९१), भावार्थ रामायण (१, ६)।

राम-जन्म के अवसर पर अलौकिक घटनाओ का वर्णन प्राचीन काल से आ रहा है। **पउमचरिय** (पर्व २५) मे राम तथा लक्ष्मण के जन्म के पूर्व उनकी माताओ के शुभ स्वप्नो का उल्लेख मिलता है। राम की माता ने स्वप्न मे सिंह, सूर्य तथा चन्द्रमा को देखा था, दशरथ ने सुनकर कहा था—हे सुन्दरी, ये स्वप्न उत्तम पुरुष का जन्म सूचित करते है (**इमे वरपुरिस सुन्दरि पुत्त निवेएन्ति**)। इसी प्रकार सुमित्रा ने हाथ मे कमल धारण करती हुई लक्ष्मी को तथा किरणो से प्रज्वलित चन्द्र और सूय को स्वप्न मे देखा, इसके अतिरिक्त उसने पवत के शिखर पर स्थित होकर सागर तक फैली हुई पृथ्वी को देखा। पद्मचरित के अनुसार राम की माता ने 'महापुरुषवेदी' (महा-पुरुष का जन्म सूचित करने वाले) स्वप्न देखे थे। प्रथम स्वप्न मे उन्होने सफेद हाथी, दूसर मे सिंह, तीसरे मे सूर्य और चौथे मे चन्द्रमा देखा था। सुमित्रा ने स्वप्न मे देखा कि लक्ष्मी और कीर्त्ति आदरपूर्वक सिंह का अभिषेक कर रही है। फिर देखा कि मै स्वय किसी ऊँचे पर्वत पर चढकर समुद्र रूपी मेखला से अलकृत पृथ्वी को देख रही हूँ। इसके बाद उन्होने देदीप्यमान किरणो से युक्त, सूय के समान सुशोभित, रत्नो से खचित घूमता हुआ सुन्दर चक्र देखा था।[1]

यह असभव नही कहा जा सकता हे कि पउमचरिय के प्रभाव से कालिदास ने रघुवश (१०,६०-६४) मे लिखा है कि रामादि के जन्म के पूर्व दशरथ की रानियो को यह स्वप्न दिखाई देता था कि कमल, खग, गदा, धनुष और चक्र लिए कोई बौना-सा

---

१ दे० पर्व २५, १-१८। गुणभद्र के उत्तरपुराण मे भी राम की माता के शुभ स्वप्नो का (दे० ६७, १४८) तथा कैकेयी के पाँच महाफल देने वाले स्वप्नो का (६७, १५१) उल्लेख किया गया हे—**सर सुर्येन्दुकलमक्षेत्र-सिहान् महाफलान् स्वप्नान**। परवर्ती जैन साहित्य मे भी इन स्वप्नो को पर्याप्त महत्त्व दिया गया है।

पुरुष हमारी रक्षा कर रहा हे, गरुड हमे आकाश मे उडाकर ले जा रहे हैं, लक्ष्मी हाथ मे कमल का पखा लेकर हमारी सेवा कर रही ह और सप्तर्षि भी वेद-पाठ करते हुए हमारी उपासना कर रहे हे । अपनी रानियो से स्वप्नो के विषय मे सुनकर दशरथ प्रसन्न हुए और समझ गए कि मै जगद्गुरु का पिता बन रहा हूँ । **असमिया बालकाड** (अध्याय २३) मे भी इसका उल्लेख हे कि रामादि के जन्म के पूर्व तीनो माताओ ने गरुड पर आरूढ नारायण को स्वप्न मे देखा था ।

कालिदास ने राम-जन्म का अत्यन्त काव्यमय वर्णन किया हे । "बालक के तेज से सूतिकागृह के दीपको की ज्योति मन्द पड गई थी" तथा उस समय "ससार के सारे दोष भाग गए और चारो ओर गुण ही गुण फैल गए मानो स्वर्ग भी विष्णु भगवान् का अनुसरण करता हुआ पृथ्वी पर उतर आया हो"—**अन्वागादिव हि स्वर्गो गा गत पुरुषोत्तमम्** (१०, ७२) । अनन्तर कालिदास लका मे उस समय घटने वाले अपशकुनो का उल्लेख करते हुए कहते है कि रावण के मुकुटो से कुछ मणि पृथिवी पर गिर पडे मानो राक्षसो की लक्ष्मी अपने दुर्भाग्य पर आँसू बहा रही हो

दशाननकिरीटेभ्यस्तत्क्षण राक्षसश्रिय ।
मणिव्याजेन पर्यस्ता पृथिव्यामश्रुबिन्दव ।।७५।।

कृत्तिवास ने इस प्रसग को आगे बढाकर लिखा है कि उस समय रावण का मुकुट भूमि पर गिर गया तथा अन्य अपशकुनो के अतिरिक्त एक आकाशवाणी भी सुनाई पडी कि दशरथ के घर मे विष्णु का जन्म हुआ है । इसपर रावण ने विचार किया कि शैशव मे ही उन्हे मारने मे मेरा कल्याण है और उसने पता लगाने के उद्देश्य से शुक-सारण को अयोध्या भेज दिया । दोनो राक्षस जाकर शिशु को प्रणाम करते है, भक्ति का वरदान मागकर लका लोटते है तथा रावण को आश्वासन देते हैं कि उसकी आशका निर्मूल ही हे (दे० १, ४५) ।

अध्यात्म रामायण (१, ३, १३-३५) प्राचीनतम रचना हे जिसमे इसका वर्णन किया गया है कि शिशु राम जन्म लेते ही अपनी माता के सामने अपने विष्णु-रूप मे प्रकट हुए । कौशल्या **"नीलोत्पलदलस्याम पीतवासाश्चतुर्भुज"** बालक को देखकर भगवान् के रूप मे उनकी स्तुति करने लगती हे तथा अन्त मे उनसे निवेदन करती है कि वह अपना सुकोमल शिशुरूप ग्रहण करें । इसपर राम अपनी माता को उनके पूर्वजन्म की तपस्या तथा वर-प्राप्ति (दे० ऊपर अनु० ३६७) का स्मरण दिलाकर बालक का रूप धारण कर लेते है । इस प्रसग का आधार स्पष्टतया **भागवत पुराण** (१०, ३) है, जिसमे बालक कृष्ण द्वारा वसुदेव-देवकी के सामने विष्णु-रूप प्रदर्शन, वसुदेव-देवकी द्वारा उनकी स्तुति, देवकी द्वारा बालक-रूप ग्रहण करने का निवेदन तथा कृष्ण द्वारा पूर्व-जन्म मे वसुदेव-देवकी की तपस्या और वर-प्राप्ति का उल्लेख

बहुत कुछ एक ही शब्दावली मे वर्णित है। अध्यात्म रामायण के अनुकरण पर परवर्ती रामकथाओ मे भी प्राय कौशल्या के सामने राम के अपने विष्णु-रूप मे प्रकट हो जाने की कथा मिलती है, उदाहरणार्थ—पद्मपुराण (उत्तर खण्ड, २६६, ८० आदि),आनन्द रामायण (१, २, ४), रामचरितमानस (१,१६१), रामरहस्य (सर्ग ३),भावार्थ रामायण (१, ६), राघवोल्लास काव्य (सर्ग ४), तत्वसग्रह रामायण (१, १४)।

रघुवश की भाति रामलिगामृत (सर्ग २) तथा कृत्तिवास रामायण (१, ८१) के अनुसार राम जन्म के पूर्व ही एक स्वप्न मे अपनी माता कौशल्या को विष्णु रूप मे दिखाई पडे।

रामचरितमानस के अनुसार काक भुशुण्डी तथा शिव दोनो मनुष्य का रूप धारण कर रामजन्ममहोत्सव[1] के अवसर पर अयोध्या आये थे (दे० १, १६५, ४)।

३७६ भगवद्गीता (अध्याय ११) के अनुसार कृष्ण ने अर्जुन को अपना विराट् रूप दिखलाया था तथा भागवत पुराण (१०, ७, ३५-३७) के अनुसार यशोदा ने बालक कृष्ण के मुँह मे समस्त ब्रह्माण्ड देखा था। कुछ अर्वाचीन रचनाओ मे इस प्रकार की कथा राम के विषय मे भी मिलती है। रामलिगामृत (सर्ग २, २४) तथा रामचरितमानस (१, २०१-२०२) मे राम के अपनी माता कौशल्या को अपना विराट् रूप दिखलाने का वर्णन किया गया है। पद्म पुराण के उत्तरखण्ड (२६६, ८०) के अनुसार राम ने अपना विष्णु-रूप प्रकट करते समय अपने विश्व-रूप का भी उद्घाटन किया था।

अन्य अर्वाचीन रचनाओ मे इसका उल्लेख मिलता है कि राम ने रामायण के अनेक अन्य पात्रो को भी अपना दिव्य रूप दिखलाया था, उदाहरणार्थ—परशुराम को (दे० अनु० ३५१), हनुमान को (दे० अनु० ५१२), भुशुण्डी को (दे० अनु० ३८१), अभिषेक के अवसर पर अपने अतिथियो को (पद्मपुराण, उत्तर खण्ड, अध्याय २७०, ४२)।

कृष्णकथा का यह प्रभाव बाललीला की अन्य घटनाओ मे भी परिलक्षित है, विशेषकर राम की नटखटी के वर्णन मे (दे० अनु० ३७६), राक्षसो के आक्रमण के वृत्तान्तो मे (दे० अनु० ३८०) तथा वनक्रीडा और रासलीला के प्रसग मे (दे० अनु० ३८७)।

३७७ वाल्मीकि रामायण मे वसिष्ठ द्वारा नामकरण के अवसर पर राम तथा लक्ष्मण के नामो के विषय मे कहा गया है—**रामस्य लोकरामस्य** (१, १८, २६),

---

१ इस जन्मोत्सव का प्राचीनतम उल्लेख वाल्मीकि रामायण मे मिलता है **उत्सवश्च महानासीदयोध्याया जनाकुल.** (दे० १, १८, १८)।

लक्ष्मणो लक्ष्मिवर्धन (१, १८, २८) तथा **लक्ष्मणो लक्ष्मिलपनो** (१, १८, ३०)।

अर्वाचीन रचनाओ मे चारो नामो का स्पष्टीकरण किया जाता है। अध्यात्म रामायण की धारणा सर्वाधिक प्रचलित है[1]—**रमणाद् राम इत्यपि ॥ भरणाद् भरतो नाम लक्ष्मण लक्षणान्वित शत्रुघ्न शत्रुहन्तारमेव गुरुरभाषत** (१, ३, ४०-४१)। पद्म-पुराण के पाताल खण्ड मे ब्रह्मा स्वय आकर जातकर्म सम्पन्न करते है, इस प्रसग मे राम की '**त्रिभुवनाभिरामता**' तथा लक्ष्मण की '**रूपशौर्यादिलक्ष्मीयोग्यता**' का उल्लेख किया गया है। दूसरे भाइयो के विषय मे लिखा है—**भव भारान्तारयतीति भरत शत्रून्हन्तीति शत्रुघ्न** (दे० अध्याय ११२, ३३-३४)। पद्मपुराण के उत्तरखण्ड (अध्याय २६६) के अनुसार वसिष्ठ द्वारा जातकर्म सम्पन्न होता है, केवल राम, लक्ष्मण और शत्रुघ्न के नामो का कारण बताया गया है। राम के विषय मे लिखा है

श्रिय कमलवासिन्या रमणोऽय महाप्रभु ।
तस्माच्छ्रीराम इत्यस्य नाम सिद्ध पुरातनम् ॥४७॥

इसके बाद लक्ष्मण को '**शुभलक्षण**' तथा शत्रुघ्न को '**देवशत्रुप्रतापन**' कहा गया है।

कृत्तिवास ने भरत के सम्बन्ध मे लिखा है

पृथिवीर भार सहिबेन अविरत ।
तेइ हेतु तॉर नाम हइल भरत ॥ (१, ४७)

ख | बाललीला

३७८ वाल्मीकि रामायण मे एक ओर राम-लक्ष्मण और दूसरी ओर भरत-शत्रुघ्न की विशेष आत्मीयता का उल्लेख किया गया है (दे० १, १८, २९-३२)। प्राय सभी परवर्ती रामकथाओ मे भी इसकी चर्चा मिलती है और यह भी बताया जाता है कि पायस का जो अश कौशल्या ने सुमित्रा को दिया था उससे लक्ष्मण उत्पन्न हुए थे और यही राम-लक्ष्मण की घनिष्ठता का कारण है, यह भरत-शत्रुघ्न पर भी लागू है (दे० अध्यात्म रामायण—**पायसाशानुसारत** १, ३, ४२)। कृत्तिवास रामायण

---

१ तुलसीदास ने अध्यात्म रामायण के आधार पर लिखा है

सो सुख धाम राम अस नामा । अखिल लोक दायक बिश्रामा ॥
बिश्व भरन पोषन कर जोई । ताकर नाम भरत अस होई ॥
जाके सुमिरन ते रिपु नासा । नाम सत्रुहन बेद प्रकासा ॥
लच्छन धाम राम प्रिय सकल जगत आधार ॥
गुरु वसिष्ठ तेहि राखा लछिमन नाम उदार ॥१९७॥

(बालकाण्ड)

मे इस प्रसग को और विस्तार दिया गया है। इसके अनुसार दशरथ ने सुमित्रा की उपेक्षा करके केवल कौशल्या तथा कैकेयी को पायस प्रदान किया था।[1] सुमित्रा को उदास देखकर कौशल्या ने यह कहकर उसको अपने पायस का आधा भाग दिया था—अगर तुमको पुत्र हुआ तो यह मेरे पुत्र के साथ रहा करेगा, जिस पर सुमित्रा ने प्रतिज्ञा की थी—मेरा पुत्र तुम्हारे पुत्र का दास होगा। अनन्तर कैकेयी ने भी वही शर्त रखकर सुमित्रा को अपने पायस का आधा भाग प्रदान किया (दे० १, ४१)। असमिया बालकाड (अध्याय २३) मे भी सुमित्रा को इसी शर्त पर पायस के दो भाग मिलते हैं।

३७९ वाल्मीकि के बाद की रचनाओ मे राम की बाललीला के वर्णन मे भागवत पुराण की कृष्ण-बाललीला का अनुकरण किया गया है। अध्यात्म रामायण मे राम की नटखटी, मक्खन की चोरी, बरतनो का फोडना आदि वर्णित है (दे० १, ३, ४७-५८), जो स्पष्टतया भागवत पुराण पर निर्भर है (दे० दशम स्कध, ८वॉ अध्याय)। यह वर्णन आनन्द रामायण (१, २) और रामरहस्य (सर्ग ३) मे भी पाया जाता है। पद्मपुराण (पातालखण्ड, अ० ११२) मे लिखा है कि बालक राम ने दशरथ पर अन्न फेंक दिया—**अन्न वामकरेण गृहीत्वा राजनि विक्षेप**। सत्योपाख्यान (पूर्वार्द्ध, अ० २५) मे राम द्वारा जलपात्र मे प्रतिबिंबित चन्द्रमा को पकडने की चेष्टा का वर्णन है।

तुलसीदास ने भी अपनी कवितावली (१, १-७) तथा गीतावली (१, ७ आदि) मे राम की बाललीला के वर्णन मे सूरसागर की कृष्ण-बाललीला का अनुकरण किया है।

३८० कई रचनाओ मे बालक राम पर राक्षसो के आक्रमण का भी वर्णन किया गया है। **पद्मपुराण** के पाताल खण्ड (अध्याय ११२, ३६-४६) के अनुसार एक ब्रह्मराक्षस वात्या का रूप धारण कर आता है और राम को गिराकर मूर्च्छित कर देता है। वसिष्ठ मत्र पढकर राक्षस को शाप से मुक्त करते है। ब्रह्मराक्षस अपना परिचय देकर कहता है कि मै वेदगर्वित ब्राह्मण था और परधन हथियाने के कारण ब्रह्मराक्षस बन गया था। पद्मपुराण के गौडीय पाताल खण्ड (अध्याय १५) मे बालक राम एक पुष्पनिर्मित धनु से एक राक्षस को मार डालता है जो मृग के रूप मे आया था। **भुशुण्डी रामायण** मे भी भागवत पुराण का प्रभाव स्पष्ट है। "रावण द्वारा भेजे गये राक्षस बाल्यावस्था मे ही राम को समाप्त करने का प्रयत्न करते है, किन्तु वे स्वय मार जाते है। उनके डर से दशरथ राम को किसी गुप्त स्थान भेजते है।

---

१ सुमित्रा के दुर्भगा होने का कारण ऊपर स्पष्ट किया गया है (दे० अनु० ३३६)।

सरयूपार गोपप्रदेश मे गोपेंद्र सुखित और उनकी स्त्री मागल्य राम का पालन पोषण करते है।"[1] कृत्तिवास मे ये राक्षस रामभक्त बन जाते है (दे० अनु० ३७५)।

३८१ काक भुशुण्डी की कथा का पहले-पहल **योगवसिष्ठ** मे वर्णन किया गया है। इसके अनुसार काक भुशुण्डी और उसके भाइयो का पिता चड नामक काक (अलबसा देवी का वाहन) है तथा उनकी माताएँ ब्राह्मी भगवती के रथ की हसियाँ हैं। पिता के कहने से वे सुमेरु पर्वत पर निवास करने गए जहाँ भुशुण्डी के सब भाई मर गए, लेकिन भुशुण्डी निर्विकार और चिरजीव रहे (दे० निर्वाण-प्रकरण, सर्ग १४-२४)। योगवासिष्ठ के इस भुशुण्डी-उपाख्यान मे कही भी उसके पूर्वजन्म अथवा उसकी राम-भक्ति का उल्लेख नही किया गया है। **रामचरितमानस** के उत्तरकाड मे उसके पूर्वजन्मो की भी कथा दी गई है, पूर्व कल्प के एक कलियुग मे वह अयोध्यावासी शूद्र था। गुरु का सत्कार न करने के कारण वह शिव-शाप से सर्प हो गया। बाद मे वह गुरु तथा शिव की कृपा से सगुणरूप राम का उपासक ब्राह्मण बन गया और अत मे लोमस-ऋषि के शाप से उसे काक-योनि प्राप्त हुई (दे० दो० ९५-११४)।

रामचरितमानस के अनुसार काक भुशुण्डी तथा शिव, दोनो मनुष्य के रूप मे राम-जन्म-उत्सव के उपलक्ष्य मे अयोध्या गए थे (दे० १, १९५, ४) **सत्योपाख्यान** मे रामभक्त काक भुशुण्डी राम को शष्कुलि (एक प्रकार की पूरी) खाते देखकर उनके नारायणत्व पर सदेह करता है। परीक्षा करने के उद्देश्य से वह उसे राम के हाथ से छीन कर भाग जाता है। लेकिन राम गरुड पर आरूढ होकर तीनो लोको मे उसका पीछा करते है। अत मे काक राम की शरण लेता है और निश्चल भक्ति का वरदान पाकर अपने आश्रम लौटता है। अनन्तर शिव तथा भुशुण्डी, दोनो के ब्राह्मण के वेश मे राम को देखने के लिए अयोध्या जाने का उल्लेख है (दे० २९वाँ अध्याय)।

रामचरितमानस के उत्तरकाण्ड (दो० ७५) मे भुशुण्डी गरुड से कहता है कि मेरा इष्टदेव बालक राम है। वह प्रत्येक रामावतार मे राम की बाललीला देखने जाता है तथा पाँच वर्ष तक बालक राम की सगति मे बिताता है। अनन्तर वह अपने मोह की कथा सुनाता है—किसी दिन राम की बाललीला देखकर (**प्राकृत सिसु इव लीला देखि**) भुशुण्डी के मन मे उनके नारायणत्व के विषय मे सन्देह उत्पन्न हुआ। इसपर

---

१ दे० भगवती प्रसाद सिह, रामभक्ति मे रसिक सम्प्रदाय, पृष्ठ ९७। सारलादास कहते है कि परशुराम के डर से दशरथ ने अपने पुत्रो को सात वर्ष की उम्र तक छिपाया। खोतानी रामायण के अनुसार रानी ने राम और लक्ष्मण को परशुराम के आक्रमण से बचाने के उद्देश्य से उनको १२ वर्ष तक भूमि के अन्दर छिपा रखा था (दे० अनु० ३५१)।

राम भुशुण्डी को पकडने आगे बढे और भुशुण्डी भाग गया, किन्तु वह आकाश मे दूर तक उडता हुआ भी राम की भुजा अपने पास ही देखता रहा। अन्त मे भयभीत होकर भुशुण्डी ने अपनी आखे बन्द कर ली और अपने को अयोध्या मे पाया। राम उनके सामने हँसते हुये खडे थे और भुशुण्डी ने उनके मुख मे प्रवेश कर राम के शरीर के अन्दर बहुत से ब्रह्माण्ड देख लिये। इस प्रकार भुशुण्डी का मोह दूर हुआ (दे० दो० ७७-८३)।

३८२ बालक राम तथा हनुमान् की मित्रता की कथा का कोई प्राचीन आधार नही मिलता। रामचरितमानस के अप्रामाणिक सस्करणो के एक क्षेपक तथा विश्राम-सागर (बीसवाँ सस्करण, सन् १६५६ ई०, पृ० ४१८) मे इसका वर्णन किया गया है।

अर्वाचीन रचनाओ मे यह प्रसग अपेक्षाकृत विस्तार सहित वर्णित है।[1] शकर मदारी बन कर हनुमान् को अयोध्या ले आते हे। बालक राम बन्दर को देखकर उसपर मुग्ध हो जाते हैं। मदारी बन्दर को अयोध्या मे छोडकर चला जाता है। हनुमान् राम के साथ रहकर बहुत दिनो तक उनकी सेवा तथा मनोरजन करते है तथा बाद मे राम द्वारा किष्किन्धा भेजे जाते है।

ग । प्रारम्भिक कृत्य

३८३ **वाल्मीकि रामायण** (१, १८, ३१) मे इसका उल्लेख मात्र किया गया है कि जब राम मृगया खेलने जाते है, लक्ष्मण धनुष लेकर उनका साथ देते है तथा उनकी रक्षा करते है। **अध्यात्म रामायण** (१, ३, ६२-६३) के अनुसार राम नित्यप्रति लक्ष्मण के साथ दुष्ट पशुओ को मारने के लिए वन जाते थे। **रामचरितमानस** मे उन पशुओ को पवित्र कहा गया है तथा उनके स्वर्ग जाने का भी उल्लेख है—**पावन मृग मारहिं जे मृग रामबान के मारे, ते तनु तजि सुरलोक सिधारे** (दे० १, २०५, १-२)। **सत्योपाख्यान** मे इस आखेट का अपेक्षाकृत विस्तृत वर्णन मिलता है। राम और उनके भाई अनेक पशुओ को मारते है जो वध किये जाने पर दिव्य रूप धारण कर अपना परिचय देते हैं। राम का मारा महिष अपने को नारद द्वारा शापित विल्व बताता हे (दे० पूर्वार्द्ध, अध्याय ४१), इसी प्रकार भरत का मारा सिंह भरद्वाज द्वारा शापित कलिंग देश निवासी शकर नामक ब्राह्मण (दे० अध्याय ४७) तथा शत्रुघ्न का मारा हुआ हाथी ऋषि सुदर्शन द्वारा शापित एक 'मद्यपाननिरत' ब्राह्मण था (दे० अध्याय ४८)।

इन सबो के शापो की अवधि रामावतार के कारण समाप्त हो जाती हे। इस प्रकार राम का आखेट भी मुक्तिप्रद माना गया है। सत्योपाख्यान मे राम द्वारा एक

---

१ दे० शान्तनुबिहारी द्विवेदी का 'भक्तराज हनुमान्,' पृ० १३, सत्यदेव चतुर्वेदी का 'अमितवेग' पृ० १६ तथा सुदर्शन सिंह का 'श्री हनुमान् चरित्', पृ० २८।

किरात को मुक्ति का भी वृत्तान्त मिलता है। किसी दिन राम मृगया के समय एक नराकृति वल्मीक देखते है, जो उनके स्पर्शमात्र से दिव्य देह धारण कर अपना परिचय देता है। वह डिडिर नामक किरात था जो साधुओ के सदुपदेश से तपस्या करने लगा था। वह रामावतार का रहस्य जानता है तथा राम द्वारा रावण-वध की भविष्यद्-वाणी करता है। अन्त मे राम उसको वैकुण्ठ-वास का वरदान देते है (दे० अध्याय ४२)। किसी दिन चारो भाई आखेट करते हुए ऋष्यश्रृग के आश्रम मे पहुँचकर अपनी बहन शान्ता से भी मिलते है (दे० अध्याय ४६)।

कृत्तिवास रामायण मे मृगया के वर्णन मे दो नए तत्व मिलते है। किसी दिन राम मारीच को देख लेते है जो अपने को मृग मे बदलकर जनक के राज्य मे शरण लेने भाग जाता है (दे० १, ४६)। कृत्तिवास के अनुसार ब्रह्मा ने मृगया के कारण राम-लक्ष्मण की थकावट देखकर इन्द्र को भेजा कि वह मृणाल मे अमृत भर दे जिसे दोनो भाई खाने वाले है। इस प्रकार वनवास के समय उनको भूख नही लगेगी—**मृणाल भितर तुमि राख गिया सुधा सुधापाने रामेर ना लागिबेक क्षुधा** (दे० १, ४६)। यह इन्द्र द्वारा सीता को प्रदत्त हवि का स्मरण दिलाता है (दे० अनु० ५००)।

विश्वामित्र के आगमन के पूर्व ही राम की वीरता के विषय मे **वृहत्कोशल खण्ड** तथा **पउमचरिय** मे कुछ सामग्री मिलती है। वृहत्कोशल खण्ड के अनुसार दशरथ ने राम को शम्बरासुर का वध करने भेजा था (दे० अध्याय ४) तथा पउमचरिय के अनुसार राम तथा लक्ष्मण ने म्लेच्छो को हरा दिया था, जो जनक के राज्य पर आक्रमण करने की तैयारियाँ कर रहे थे (दे० पर्व २७)।

३८४ **वाल्मीकि रामायण** के अयोध्याकाण्ड मे गुह के विषय मे कहा गया है कि वह राम का सखा है—**तत्र राजा गुहो नाम रामस्यात्मसम सखा** (२, ५०, ३३)। **सत्योपाख्यान** मे यह माना गया है कि राम ने वनवास के पूर्व ही गुह से मृगया की शिक्षा प्राप्त की थी (दे० पूर्वार्द्ध, अध्याय ४३)। **बलरामदास रामायण** मे राम शिकार खेलते समय अपनी सेना से अलग हो जाते है तथा गुह से मिलकर उनके साथ सख्य करते है। राम-गुह-सख्य का विस्तृत वर्णन **कृत्तिवासीय रामायण** मे मिलता है।

किसी दिन दशरथ अपने पुत्रो के साथ गगा-स्नान करने गये। गुहक चाण्डाल तीन करोड चाण्डालो को साथ लेकर दशरथ की सेना को रोक लेता है तथा राम को देखने की इच्छा प्रकट करता है। दशरथ राम को रथ मे छिपाकर गुहक से युद्ध करते है और गुहक को हराकर तथा उसके हाथ बाँधकर रथ पर रखवाते है। इसपर गुहक पैर के अँगूठे से बाण मारता है। राम जिज्ञासा से प्रेरित होकर यह कौतुक देखने आते है। तब गुहक राम के दर्शन पाकर उनको अपने पूर्व-जन्म की कथा सुनाता है कि उस जन्म मे मैं वसिष्ठ का पुत्र वामदेव था। जिस दिन दशरथ ने अध-मुनि-पुत्र सिन्धु का

वध किया था और अपने उस पाप के प्रायश्चित्त का उपाय पूछने के लिए वह वसिष्ठ से मिलने आये थे उस समय मेरे पिता वसिष्ठ घर पर नही थे, मैंने ही दशरथ को तीन बार राम-नाम का जप करने का परामर्श दिया। बाद मे मैंने अपने पिता को यह सब बताया, इसपर वसिष्ठ ने क्रुद्ध होकर मुझे चाण्डाल बन जाने का शाप दिया—**"एक रामनामे कोटि ब्रह्महत्या हरे। तिन बार रामनाम बलालि राजारे॥"** अन्त मे वसिष्ठ ने मुझसे कहा कि दशरथ के घर मे राम का जन्म होगा, उनके चरणस्पर्श से तुम शाप से मुक्त होगे। मैं वही वसिष्ठ-पुत्र वामदेव हूँ और पिता के शाप के कारण ही गुहक के रूप मे उपस्थित हूँ। गुहक से यह कथा सुनकर राम दशरथ की अनुमति से गुहक के बधन अपने हाथ से काटते हैं तथा लक्ष्मण की जलाई हुई अग्नि को साक्षी बना कर गुहक से मित्रता करते हैं (दे० १, ५३)।

माधवदेवकृत **असमिया बालकाण्ड** (अध्याय २७) मे इस वृत्तान्त का एक अन्य रूप मिलता है। दशरथ किसी दिन अपने चार पुत्रो के साथ गगा की तीर्थ-यात्रा करने गये थे। जहाँ राजकुमार स्नान करते थे वहाँ एक गुह नामक चाडाल ने भी स्नान करने का दु साहस किया था। राजा के अनुचरो ने उसे पकड कर राजा के सम्मुख उपस्थित किया। राम भी वहाँ थे और राम को देखकर गुह को अपना पूर्व जन्म याद आया। उसने कहा—"मैं ब्राह्मण था, किन्तु गगा की उपेक्षा करने के कारण गगा ने मुझे यह शाप दिया कि अभी चाडाल बन जाओ, किन्तु बाद मे राम को देखकर मुक्त हो जाओगे।"

३८५ **योगवासिष्ठ रामायण** (वैराग्य प्रकरण, सर्ग ३), **आनन्द रामायण** (१, २, २६) तथा **भावार्थ रामायण** (१, ७) मे विश्वामित्र के आगमन के पूर्व राम की तीर्थयात्राओ का उल्लेख किया गया है। **सत्योपाख्यान** (पूर्वार्द्ध, अध्याय १८) मे इसका वर्णन विवाह के पश्चात् ही रखा गया है, अन्य रचनाओ मे रावण-वध के बाद राम की तीर्थयात्राओ का वर्णन मिलता है (दे० अनु० ६३७)। **सेरी राम** के अनुसार राम तथा लक्ष्मण विवाह के पूर्व तीन महीने तक नीलपुर्व नामक मुनि के यहाँ रहकर तपस्या करते हैं तथा उनसे जादू सीख लेते है। नीलपुर्व उनको एक धनुष तथा नागस्कन्द पतील देव नामक तपस्वी उनको तीन बाण प्रदान करते है।

३८६ **योगवासिष्ठ रामायण** मे राम के १६ वर्ष की अवस्था मे विरक्त हो जाने तथा वसिष्ठ के उपदेश के प्रभाव से फिर अपने कर्त्तव्य-पालन के लिए तत्पर होने का वर्णन किया गया है (दे० वैराग्य प्रकरण, सर्ग ५)। **उदारराघव** (सर्ग २) तथा **भावार्थ रामायण** (१, ८) मे भी राम के इस वैराग्य का उल्लेख मिलता है। **रामचन्द्रिका** मे रावण-वध के बाद अयोध्या मे पहुँचकर राम के विरक्त हो जाने की चर्चा है (दे० प्रकरण २४)।

३८७ **रामलिंगामृत** के द्वितीय सर्ग मे राम की बाललीला के अनन्तर उनकी वन-क्रीडा का भी उल्लेख किया गया है। कृष्णकथा का यह अनुकरण उडिया नृसिंह पुराण (तृतीय रत्नाकर) और **बृहत्कोशल खण्ड** मे और आगे बढा दिया गया है तथा विवाह के पूर्व राम की रासलीला का विस्तृत वर्णन किया गया है (दे० अध्याय १-५)।

३८८ **वाल्मीकि रामायण** मे विश्वामित्र सबाहु तथा मारीच से अपने यज्ञ की रक्षा के लिए राम की सहायता माँगने आते है (दे० १, १९)। **सत्योपाख्यान** के अनुसार विश्वामित्र ने शिव के आदेश के अनुसार ही ऐसा किया था (दे० उत्तरार्द्ध अध्याय ४)। **कृत्तिवास** मे विश्वामित्र के आगमन का कारण यह माना गया है कि राक्षसो के उत्पात से मिथिला-प्रदेश को यज्ञ-हीन देखकर जनक ने विश्वामित्र से निवेदन किया कि वह राम को ले आये (दे० १, ५४)। **रामकेर्ति** विश्वामित्र-यज्ञ के प्रसग से ही प्रारम्भ होता है। एक असुर महाकाय काक का रूप धारण कर विश्वामित्र के यज्ञ मे विघ्न करता है। इस 'काकनासुर' का वध कराने के लिए विश्वामित्र अयोध्या जाकर राम तथा लक्ष्मण को अपने यहा ले आते है। **रामकियेन** (अध्याय ११) मे भी राम द्वारा काकनासुर के वध का वर्णन मिलता है, किंतु इस रचना मे स्वाहु (सुबाहु) और मारिश (मारीच) दोनो काकनासुर के पुत्र माने जाते है।

ऐसा प्रतीत होता है कि इस अवसर पर दशरथ द्वारा विश्वामित्र को धोखा देने के प्रयत्न की कथा पूर्व भारत मे उत्पन्न हुई है तथा वहा से हिन्देशिया तक फैल गई है। यह वृत्तान्त **कृत्तिवास रामायण, सारलादास महाभारत, बिर्होर** नामक आदिवासी जनजातियो की रामकथा तथा **सेरी राम** मे मिलता है। कृत्तिवास रामायण (१, ५६) के अनुसार दशरथ ने राम तथा लक्ष्मण के स्थान पर भरत तथा शत्रुघ्न को विश्वामित्र के साथ भेज दिया। सरयूतट पर पहुँचकर विश्वामित्र ने राजकुमारो से कहा—यहाँ से दो पथ है, पहले पथ से जाने मे हमे तीन दिन लगेगे, दूसरे पथ से हम तीसरे पहर पहुँच जायेगे किन्तु इस पथ पर ताडका राक्षसी का भय रहता है। भरत ने उत्तर दिया—"दूसरे पथ से हमे क्या प्रयोजन है।" यह सुनकर विश्वामित्र समझ लेते है कि दशरथ ने उनको धोखा दिया है और वह अयोध्या लौटकर राम को माँग लेते है। एक आदिवासी कथा (दे० अनु० २७२) मे विश्वामित्र का प्रस्ताव इस प्रकार है—पहला मार्ग सुगम है और सुन्दर नगर की ओर ले जाता है, दूसरा मार्ग भयकर वन की ओर ले जाता है जहाँ व्याघ्र, ऋक्ष आदि हिसक पशु रहते है।

सेरी राम मे महारीसी कली (सीता के पोष्य पिता) स्वय आकर दशरथ से निवेदन करते है कि उनके पुत्र सीता के स्वयवर मे भाग ले। दशरथ भरत तथा शत्रुघ्न को उनके साथ भेज देते है। कली उनको चार मार्गों मे से चुनने देते हैं, जिनमे क्रमश १७, २०, २५, और ४० दिन लगेगे। अन्तिम मार्ग निरापद है, अन्य मार्गों मे क्रमश

राक्षसी, गैंडे और नागिन का भय रहता है। भरत और शत्रुघ्न लम्बा मार्ग चुन कर अयोग्य ठहरते है, कली लौटकर दूसरी बार राम और लक्ष्मण को साथ ले जाते है, राम १७ दिन का मार्ग चुनकर जगीन नामक राक्षसी का वध करते है।

३८६ वाल्मीकि रामायण मे विश्वामित्र के साथ राम लक्ष्मण के प्रस्थान से लेकर मिथिला मे पहुँचने तक का वृत्तान्त ३४ सर्गो से वर्णित है। इसकी अधिकाश सामग्री पौराणिक कथाएँ है, जिनका प्राय उस प्रदेश से कोई सम्बन्ध है जिसे विश्वामित्र पार कर रहे हैं। यात्रा के पूर्वार्द्ध मे विश्वामित्र कामदहन (सर्ग २३), ताटका (सर्ग २४) तथा वामनावतार (सर्ग २६) की कथाएँ और मिथिला के रास्ते मे विश्वामित्र-वश, गगा का स्वर्गारोहण, शिव-उमा-विवाह, गगावतरण, समुद्र-मथन तथा अहल्या की कथा सुनाते है (सर्ग ३२-४८)। मिथिला मे शतानन्द विश्वामित्र के ब्राह्मण बनने का वृत्तान्त सुनाते है (दे० सर्ग ५१-६५)। इन कथाओ मे से केवल अहल्या की कथा का रामकथा के साथ सीधा सम्बन्ध है, इसका विकास ऊपर निरूपित किया जा चुका है (दे० अनु० ३४४-३४८)।

वाल्मीकि रामायण के अनुसार वसिष्ठ दशरथ को समझाते हुए कहते है कि विश्वामित्र के अस्त्र कृशाश्व तथा प्रजापति दक्ष की जया तथा सुप्रभा नामक कन्याओ के पुत्र है (रा० १, २१, १३-१५)। अगले सर्ग मे इसका उल्लेख है कि विश्वामित्र ने सरयू-तट पर पहुँचकर राम को **बला** तथा **अतिबला** नामक मत्र प्रदान किये जिन्हे जपकर राम को श्रम, ज्वर, भूख-प्यास का अनुभव नही होगा, उनके रूप मे विपर्यय नही आयेगा और वह ज्ञान प्राप्त करेगे। इस सर्ग मे बला तथ अतिबला पितामह की पुत्रियाँ कही गयी है (रा० २२, १३-१४)। बाद मे विश्वामित्र द्वारा राम को विभिन्न अस्त्र दिए जाने का वर्णन किया गया है (सर्ग २७-२८)। कुछ परवर्ती रचनाओ मे बला-अतिबला के स्थान पर जया-विजया का उल्लेख है (दे० भट्टिकाव्य २, २१ और बलरामदास रामायण)। असमिया बालकाड (अध्याय २७) के अनुसार दशरथ ने किसी अवसर पर अपने चार पुत्रो के साथ भारद्वाज-आश्रम की यात्रा की थी। वही राम ने स्वप्न मे देखा कि इन्द्र मेरा अभिषेक कर मन्त्र सिखलाते है और धनुष-बाण भी प्रदान करते है। जागने पर राम ने अपने हाथो मे धनुष देखा और मन मे मन्त्र का उच्चारण किया।

सिद्धाश्रम पहुँचने के पूर्व विश्वामित्र राम को सुकेतु की पुत्री, सुन्द की पत्नी तथा मारीच की माता ताटका की कथा सुनाते है। अगस्त्य ने सुन्द को मार डाला और मारीच को राक्षस तथा ताटका को एक विकराल नरभक्षिणी यक्षी बन जाने का शाप दिया। अनन्तर राम द्वारा ताटका के वध का वर्णन दिया जाता है (सर्ग २५-२६)। आश्रम मे यज्ञ-रक्षा करते समय राम सुबाहु और अन्य राक्षसो को मार डालते है तथा मारीच पर मानवास्त्र चला कर उसको शतयोजन की दूरी पर समुद्र मे फेकते

है। परवर्ती रचनाओ मे राम के इन प्रारम्भिक कृत्यो मे अधिक परिवर्तन नही किया गया है। प्रधान विकास यह है कि वाल्मीकि रामायण के अनुसार राम के बाणो से विद्ध ताटका भूमि पर गिरकर मर जाती है किन्तु **अध्यात्म रामायण** (१, ४), **पदम पुराण** (उत्तरखड, अध्याय २६६, १२१), **रामचरितमानस** आदि मे ताटका के दिव्य रूप धारण कर स्वर्गलोक के लिए प्रस्थान करने का वर्णन मिलता है। **कृत्तिवास** के अनुसार राम द्वारा मारे हुये राक्षसो की सख्या तीन करोड है। **सेरी राम** मे राम द्वारा जगीन (ताटका) के अतिरिक्त महाकाय गैडे तथा सूरनागिन का वध करने का वर्णन है। ऊपर इसका उल्लेख हो चुका है कि **रामकेर्ति** मे ताटका, सुबाहु आदि के स्थान पर काकनासुर के वध का वर्णन किया गया है (दे० अनु० ३८८)।

५——राम-सीता-विवाह

क। धनुर्भग

३६० प्रचलित **वाल्मीकि रामायण** मे राम द्वारा धनुर्भग के पश्चात् चारो भाइयो के विवाह का वर्णन किया गया है। **महाभारत** के रामोपाख्यान मे, जो रामायण के किसी प्राचीन रूप पर निर्भर है, न तो धनुर्भग और न राम को छोडकर अन्य भाइयो के विवाह का निर्देश किया गया है (दे० ३, २६१)। अत ऐसा प्रतीत होता है कि प्रारम्भ मे केवल राम-सीता-विवाह का उल्लेख मिलता था। धनुर्भग तथा अन्य भाइयो का वृत्तान्त बाद मे जोड दिया गया होगा। इस अनुमान की पुष्टि इस बात से होती है कि **वाल्मीकि रामायण** के अरण्यकाड मे लक्ष्मण को स्पष्ट शब्दो मे अविवाहित कहा गया है।[1]

वाल्मीकि के कथानक का विकास दिखलाने के पूर्व उन रचनाओ का उल्लेख करना है जिनमे **महाभारत** की भाति धनुर्भग का प्रसग नही मिलता। गुणभद्रकृत **उत्तर-पुराण** मे विश्वामित्र के स्थान पर जनक ही दशरथ से राम तथा लक्ष्मण को अपने यज्ञ की रक्षा के लिए माँगते है तथा राम को पुरस्कारस्वरूप अपनी दत्तक पुत्री सीता प्रदान करते है। **तिब्बती रामायण** के अनुसार सीता कृषको द्वारा पाली जाती है, इन्ही

---

१ दे० ३, १८, ३। अयोध्याकाण्ड के एक प्रक्षिप्त अश मे लक्ष्मण-ऊर्मिला की चर्चा है, दे० आगे अनु० ४३१ (७)। सुन्दरकाण्ड मे इसका उल्लेख किया गया है कि राम का साथ देने के लिए लक्ष्मण ने अपूर्व सुख-सम्पदा तथा वरागनाओ का परित्याग किया था—**प्रिया याश्च वरागना** (दे० ५, ३८, ५४)। भरत राम के पूर्व ही विवाह कर चुके थे, इसका निर्देश बालकाड मे मिलता है (दे० १, ७३, ४)। अयोध्याकाड मे एक स्थल पर भरत के विवाहित होने का उल्लेख किया गया है (दे० २, ५३, ११)।

कृषको के अनुरोध से वनवासी राम अपनी तपस्या छोडकर सीता के साथ विवाह करते है। **खोतानी रामायण** मे वनवास के समय सीता से राम तथा लक्ष्मरा, दोनो के विवाह का उल्लेख किया गया है। **दशरथ जातक** मे राम वनवास के पश्चात् अपनी सहोदरी बहन के साथ विवाह करते है। दोनो अन्य बौद्ध कथाओ मे राम के विवाह का उल्लेख नही किया गया है (दे० अनामक जातकम् तथा दशरथ कथानकम्)।

३६१ **वाल्मीकि रामायण** के अनुसार विश्वामित्र जनक के यज्ञ के अवसर पर राम-लक्ष्मरा को मिथिला ले जाते है (सर्ग ३१) और वहा पहुँचकर जनक से शिव-धनुष दिखलाने की प्रार्थना करते है। इस पर जनक कहते है कि शिव ने मेरे पूर्वज देवरात को यह धनुष दे दिया था। सीता के भूमि से प्रकट होने के पश्चात् जनक ने प्रण किया था कि जो शिव-धनुष चढा सके, उसी को सीता पत्नीस्वरूप दी जायेगी। बहुत से राजाओ ने प्रयत्न किया तथा असफल होने पर उन्होने मिथिला का अवरोध किया। जनक न देवताओ की भेजी हुई सेना से उनको पराजित किया (सर्ग ६६)। अनन्तर राम धनुष चढाकर उसे तोडते है जिस पर दशरथ को बुलाया जाता है तथा राम के अतिरिक्त लक्ष्मरा, भरत तथा शत्रुघ्न भी क्रमश ऊर्मिला, माडवी तथा श्रुतकीर्त्ति से विवाह करते है (सर्ग ६७-७३)।

राम-विवाह के इस वृत्तान्त मे धनुर्भंग को एक महत्त्वपूर्ण स्थान मिला है। उपर्युक्त रचनाओ को छोडकर सब रामकथाओ मे धनुर्भंग का वरान प्राय वाल्मीकि के अनुसार किया गया है। **महावीरचरित** के अनुसार विश्वामित्र के आश्रम मे ही राम-लक्ष्मरा सीता-ऊर्मिला को देखकर उनकी ओर आकर्षित हो जाते है। उसी आश्रम मे रावरा एक दूत द्वारा सीता को मागता है तथा राम द्वारा धनुर्भंग भी किया जाता है (दे० अक १)। **अनघराघव** मे भी रावरादूत शौष्कल मिथिला मे आकर रावरा की ओर से सीता को मॉगता है तथा धनुष-परीक्षा को रावरा के अयोग्य बताता है। राम के धनुर्भंग के पश्चात् चारो भाइयो के विवाह का निश्चय हो जाने पर शौष्कल रावरा के पास लौटता है (अक ३)। **सत्योपाख्यान** मे वाल्मीकि रामायरा के अनुसार सीता-स्वयवर का वर्णन किया गया है, जिसमे बहुत से राजा धनुष-परीक्षा मे असफल होते है। लेकिन इसमे प्रहस्त के आगमन का भी उल्लेख किया गया है, जो कहता है कि शिव के प्रति श्रद्धा रखने के कारण रावरा धनुष-परीक्षा मे सम्मिलित होना अस्वीकार करता है। उस स्वयवर के पश्चात् ही वाल्मीकि के अनुसार राम द्वारा धनुर्भंग का वर्णन मिलता है (दे० उत्तरार्द्ध, सर्ग ३)। **देवीभागवत पुराण** मे रावरा सीता से कहता है कि मैने तुमको जनक से मॉगा तक, किन्तु उन्होने धनुष-परीक्षा मे सफलता ही विवाह की शर्त रखी थी। शिवचाप के भय से मै तुम्हारे स्वयवर मे सम्मिलित नही हुआ (**रुद्रचापभयान्नाह सम्प्राप्तस्तु स्वयवरे;** दे० स्कन्ध ३, अध्याय २८)।

उपर्युक्त वृत्तान्तो तथा रघुवश आदि अधिकाश प्राचीन रामकथाओ मे वाल्मीकि के अनुसार धनुर्भंग के अवसर पर अन्य राजाओ की उपस्थिति का उल्लेख नही किया गया है तथा प्राय चारो भाइयो के विवाह का निर्देश मिलता है ।

३६२ **वाल्मीकि रामायण** के बालकाण्ड के अनुसार देवताओ ने देवरात को शिव का धनुष दे दिया था (दे० १, ३१ तथा १, ६६), किन्तु परशुराम के तेजोभग के प्रसग मे कहा गया है कि शिव ने स्वय ही देवरात को अपना धनुष दिया था (दे० ऊपर अनु० ३५०) । अयोध्याकाण्ड मे सीता अनुसूया से कहती है कि देवरात से प्रसन्न होकर वरुण ने उसे एक धनुष प्रदान किया था (दे० २, ११८, ३९) । **भटि्ट-काव्य, बाल-रामायण** (४, ५४), **अध्यात्म रामायण** (१, ६, ७०), **आनन्द रामायण** (१, ३, ५६), **पद्मपुराण** के वगीय उत्तरखण्ड[1] तथा **रामकियेन** (अध्याय १२) आदि मे ऐसा उल्लेख भी मिलता है कि शिव ने उस धनुष से त्रिपुर को नष्ट किया था ।

सत्योपाख्यान (उत्तरार्द्ध, अध्याय २) तथा **बृहत्कोशलखण्ड** (अध्याय ६) मे शिव जनक को स्वप्न मे दर्शन देकर कहते है कि धनुर्भंग करने वाला ही सीता के साथ विवाह करे ।

अनेक रामकथाओ के अनुसार जनक ने ही उस धनुष को प्राप्त किया था । **पद्मपुराण** के पाताल खण्ड के अनुसार जनक को चिन्ता होती है कि राम के साथ सीता का विवाह किस प्रकार निश्चित हो । वह शिव-पार्वती से प्रार्थना करते है और शिव उसे अजगव[2] नामक धनुष प्रदान करते है, जिसे तोडने मे राम ही समर्थ होगे (दे० अध्याय ११२) । **कृत्तिवास** मे भी जनक ही यह धनुष शिव से प्राप्त करते है । ब्रह्मा ने शिव से निवेदन किया था कि वह ऐसी युक्ति निकाल ले जिससे राम को छोडकर किसी अन्य वर के साथ सीता का विवाह न हो । इसपर शिव ने परशुराम को अपना धनुष देकर आदेश दिया—मेरा यह धनुष लेकर जनक के घर मे रख देना तथा जनक से कहना कि वही सीता के साथ विवाह करे जो इस धनुष को तोड सके (दे० १, ५१) । **काश्मीरी रामायण** के अनुसार शिव ने जनक को इस शर्त पर एक धनुष दिया था कि जो उसे चढा सके, वही सीता के साथ विवाह करे (दे० बालकाण्ड न० ५) । **सेरी राम** के अनुसार देवताओ ने यह धनुष किसी महर्षि की हड्डियो से बनाया था, शिव ने उसे ब्रह्मा को दिया और ब्रह्मा ने उसे सीता के पोष्य पिता को समर्पित किया था । जावा के **सेरत**

---

१ ज० ए० सो० ब० १८४२, पृ० ११२१ ।

२ शकरदेव कृत असमिया **रामविजय** के अनुसार एक आकाशवाणी ने यह घोषित किया था कि शिव के अजगव नामक धनुष पर शर-सधान करने वाला ही सीता का पति बन सकता है ।

काण्ड मे भी सीता के पोष्य पिता को आकाश से गिरा हुआ एक धनुष प्राप्त होने का उल्लेख किया गया है। **रामकेर्त्ति** के अनुसार जनक ने सीता का अपूर्व सौदर्य देखकर मत्रो द्वारा एक दिव्य धनुष की सृष्टि की थी तथा यह प्रण किया था कि जो यह धनुष उठाने मे समर्थ हो, उसी को म सीता को प्रदान करूँगा (सर्ग १)।

आनन्द रामायण (१, ३, ५७) तथा **भावार्थ रामायण** (१, १७) मे कहा गया है कि जो शिव-धनुप जनक के पास है, उससे परशुराम ने क्षत्रियो का २१ बार नाश किया था। **जैन पउमचरिय** के अनुसार विद्याधर चद्रगति वज्रावर्त्त नामक धनुष मिथिला पहुँचा देते है और इससे राम के बल की परीक्षा होती है (दे० सर्ग २८)। एक अन्य वृत्तान्त के अनुसार सीता धनुष के साथ-साथ यज्ञ की अग्नि से उत्पन्न हुई थी (दे० आगे अनु० ४२४)।

आनन्द रामायण (१, ३, ५८), भावार्थ रामायण (१, १७), बिर्होर रामकथा, पाश्चात्य वृत्तान्त न० १३ आदि बहुत-सी अर्वाचोन रामकथाओ[1] के अनुसार सीता के शिव-धनुष को उठा लेने के पश्चात् ही जनक ने प्रण किया था कि जो उस धनुष को तोडेगा उसी से सीता का विवाह होगा। **आनन्द रामायण** (१, ३, ६०) मे कहा गया है कि सीता के उस कार्य से जनक ने सीता के लक्ष्मी-अवतार होने का रहस्य जान लिया। **भावार्थ रामायण** (१, १७) के अनुसार परशुराम ने जनक के महल मे सीता को धनुष के साथ खेलते हुए देखा तथा जनक को यह सुझाव दिया कि जो यह धनुष भग करने मे समर्थ हो, वही सीता का पति बन जाये।

---

१ दे० रामनरेश त्रिपाठी कविताकौमुदी ५वॉ भाग, पृ० १४६, ग्रामसाहित्य, भाग १, पृ० २७६। राम इकबाल सिह राकेश कृत मैथिली लोकगीत, पृ० १२३। डब्लू वार्ड, व्यू आव दि हिस्ट्री, लिटरेचर एड मिथालोजी ऑव दि हिन्दूस, भाग ३, पृ० १८०। शिवनन्दन सहायकृत,'श्री गोस्वामी तुलसीदास जी' मे सीता के धनुष उठाने की निम्नलिखित प्रचलित कथाओ का उल्लेख किया गया है (पृ० ४०६)—

क सीता ने सखियो के सग खेलते समय उठा लिया।

ख खेलते समय उनकी ओढनी मे लगकर हट गया।

ग यह समझकर कि धनुष की पूजा के लिए पिता जी को दूर जाते कष्ट होता है सीताजी उसे घर उठा लाई।

घ माता के सावकाश नही रहने से धनुष के स्थान को पूजा के निमित्त एक दिन लीपने गई और उसे हटा कर उन्होने चौकोर चौका लगा दिया।

ख । सीता-स्वयवर

३६३ वाल्मीकि रामायण मे सीता के स्वयवर का उल्लेख किया गया है, उस अवसर पर बहुत मे राजा शिव-धनुष को चढाने मे असमर्थ ही रहे और उन्होने बाद मे मिथिला पर आक्रमण किया। उस घटना के बहुत काल बाद **(सुदीर्घस्य तु कालस्य)** राम ने धनुष तोड दिया और सीता से विवाह किया (दे० बालकाड, सर्ग ६६ तथा अयोध्याकाड, सर्ग ११८)।

बाद की रामकथाओ मे सीता-स्वयवर तथा राजाओ के आक्रमण, दोनो घटनाओ का राम से सम्बन्ध स्थापित किया गया है। सीता-स्वयवर मे रावणदूत अथवा रावण ही के आगमन का भी प्राय उल्लेख मिलता है।

३६४ पउमचरिय प्राचीनतम रचना है, जिसमे राम सीता-स्वयवर मे धनुष चढाते है। कथा इस प्रकार है राम ने म्लेच्छो के विरुद्ध जनक की सहायता की थी और जनक ने उन्हे सीता को देने की प्रतिज्ञा की थी। यह सुनकर कि सीता तथा राम का विवाह निश्चित हुआ है नारद को सीता के दर्शन करने की अभिलाषा हुई। मिथिला जाकर नारद ने सीता के भवन मे प्रवेश किया। उन्हे अचानक आते देखकर सीता भयभीत हुई[1], वह भागकर छिप गई तथा नारद को महल से निकाला गया। प्रतिकार करने के उद्देश्य से नारद ने भामण्डल के उद्यान मे सीता का चित्र बना दिया, जिसे देखकर भामण्डल सीता पर आसक्त हुआ। बाद मे नारद भामण्डल से मिलकर बताते है कि यह चित्र किसका है। भामण्डल की विरहावस्था देखकर उसके पालक पिता चद्रगति ने एक विद्याधर को यह आदेश देकर मिथिला भेजा कि जनक को किसी-न-किसी तरह यहाँ ले आओ। वह विद्याधर मायावी घोडे का रूप धारण कर जनक को ले आया तथा चन्द्रगति ने जनक के सामने भामण्डल तथा सीता के विवाह का प्रस्ताव रख दिया। जनक ने उत्तर दिया कि मै राम से प्रतिज्ञा कर चुका हूँ। चन्द्रगति के अनुरोध करने पर जनक राम-सीता-विवाह की यह शर्त स्वीकार करते है कि राम को पहले वज्रावर्त्त धनुष चढाना होगा। इसपर चन्द्रगति ने जनक तथा धनुष, दोनो को मिथिला पहुँचा दिया। स्वयवर का आयोजन हुआ तथा सभी राजाओ को बुलाया गया। राम भी लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्न के साथ मिथिला आए और उन्होने स्वयवर मे धनुष चढा दिया। बाद मे लक्ष्मण ने भी ऐसा ही किया[2], उनका पराक्रम देखकर विद्याधर राजाओ

---

१ स्वयभूदेव के **पउमचरिउ** के अनुसार सीता ने दर्पण मे नारद का प्रतिबिम्ब देखा था तथा मूर्च्छित होकर भूमि पर गिर पडी, उनकी सहेलियाँ चिल्लाने लगी तथा नारद को बाहर निकाल दिया गया (सधि २१)।

२ रविषेण के पद्मचरित मे दो चापो की चर्चा है, राम वज्रावर्त्त को चढाते

ने लक्ष्मण को १८ कन्याओ को प्रदान किया (दे० पर्व २८)।

३६५ परवर्ती रचनाओ मे राम प्राय अन्य राजाओ की उपस्थिति मे अर्थात् सीता-स्वयवर के अवसर पर धनुष चढाते है। उदाहरणार्थ—नृसिह पुराण(अध्याय ४७), भागवत पुराण (९, १०), अध्यात्म रामायण (१, ६, २४), कब रामायण (१, १२), द्विपद रामायण (१, २८), मैथिली-कल्याण (अक ५), सूरसागर (९, ४६७), रामकेर्त्ति (सर्ग १)। **अध्यात्म रामायण** के अनुसार नारद जनक के पास पहुँचकर राम तथा सीता के अवतार का रहस्य प्रकट करते है तथा दोनो के विवाह का आयोजन करने को कहते है (दे० १, ६, ६५), इसपर जनक सीता-स्वयवर की घोषणा करते है। पद्मपुराण (पाताल खण्ड) मे नारद के अनुरोध पर सीता-स्वयवर का आयोजन किए जाने का वर्णन मिलता है। अपने पुत्रो का विवाह करने के उद्देश्य से दशरथ ने नाना देशो मे दूतो को भेज दिया। इनमे से एक शीघ्र ही लौट कर यह समाचार ले आया कि विदर्भ (!) देश के राजा विदेह की पुत्री वैदेही राम के सर्वथा योग्य है। इसपर वसिष्ठ को भेजा जाता है जो लग्न निश्चित करके अयोध्या लौटते है। अनन्तर दशरथ विवाह-मगल गाती हुई युवतियो आदि के साथ मिथिला के लिए प्रस्थान करते है, जनक उनका स्वागत करते है तथा उनको विदेह नगर के पश्चिम के एक महल मे ठहराते है। अब नारद आ पहुँचते है और वे अगले दिन होने वाले विवाह के लिए जनक द्वारा निमन्त्रित किए जाते है, नारद उत्तर देते हैं कि यह विवाह के लिए उपयुक्त मुहूर्त नही है। नारद, गार्ग्य आदि के साथ परामर्श करने के बाद जनक दशरथ की अनुमति से सीता-स्वयवर के लिए अन्य राजाओ को भी बुला भेजते है। उसी रात को जनक शिव से अजगव नामक धनुष प्राप्त कर लेते है जिसे राम को छोडकर कोई भी राजा चढाने मे असमर्थ होगा (दे० अध्याय ११२, ४९-९०)।

३६६ ऊपर इसका उल्लेख किया गया है कि महावीरचरित, अनर्घराघव तथा सत्योपाख्यान मे एक **रावणदूत** की चर्चा है, जो सीता को माँगने आता है (दे० अनु० ३६१)। निम्नलिखित रचनाओ मे सीता-स्वयवर मे ही रावणदूत[1] के आगमन तथा उसी अवसर पर राम द्वारा धनुर्भंग का वर्णन मिलता है—महानाटक (१, २१-२२), देवीभागवत पुराण (३, २८), राम-रहस्य (४, ५८)।

३६७ अधिकाश अर्वाचीन रचनाओ मे राम तथा रावण दोनो सीता-स्वयवर मे विद्यमान हैं। प्राचीनतम रचना जिसमे उस अवसर पर रावण की उपस्थिति का

वही है तथा लक्ष्मण सागरावर्त्त को (पर्व २८)। रामकियेन मे लिखा है कि लक्ष्मण ने सीता के प्रति राम का प्रेम जानकर धनुष चढाना अस्वीकार किया (अ० १२)।

१ इसका नाम प्राय शौष्कल माना जाता है।

उल्लेख है राजशेखर कृत **बालरामायण** है । इस नाटक के अनुसार रावण ने धनुष-परीक्षा को अस्वीकार किया था ।

प्रसन्नराघव मे रावण तथा वाणासुर दोनो आकर धनुष चढाने का असफल प्रयत्न करते है, इसपर रावण सीता का हरण करने का सकल्प प्रकट कर चला जाता है । **पद्मपुराण** का पातालखण्ड (अध्याय ११२), **बलरामदास रामायण, रामचरित-मानस, कवितावली, जानकीमगल, रामचन्द्रिका** आदि रचनाएँ भी सीता-स्वयवर मे रावण तथा वाणासुर के आगमन का उल्लेख करती है ।

निम्नलिखित रामकथाओ मे सीता-स्वयवर के अवसर पर राम तथा रावण की उपस्थिति का निर्देश मिलता है—जानकीराघव (दे० ऊपर अनु० २३६), आनन्द रामायण (१, ३, ३०), भावार्थ रामायण (१, १८), रामलिगामृत (सर्ग ३), धर्मखण्ड (अध्याय २८), तोरवे रामायण (१, १५), गुजराती रणयज्ञ, हिकायत सेरी राम, पातानी रामा-कथा, जावा का सेरत काण्ड, ब्रह्मचक्र, रामजातक, पाश्चात्य वृतान्त न० ३, ४, ७, ८, १३ । **आनन्द रामायण** (१, ३, ७७-८५) के अनुसार रावण ने धनुष उठाने का प्रयत्न किया, किन्तु धनुष उलट गया और रावण उसके नीचे दबकर छटपटाने लगा । जब कोई भी धनुष नही उठा सका तब विश्वामित्र ने राम को रावण के प्राण बचाने का आदेश दिया । **तोरवे रामायण** का वृत्तान्त इससे मिलता-जुलता है ।

बलरामदास रामायण के अनुसार रावण पुष्पक मे बैठा हुआ राम द्वारा धनुर्भंग देखकर डरता है और लका वापस जाता है । बलरामदास तथा कृत्तिवास के अनुसार रावण ने राम के आगमन के पूर्व ही धनुष चढाने का प्रयास किया था (दे० १, ५२) । सेरी राम मे इसका उल्लेख मिलता है कि इन्द्रजिए भी विद्यमान है, किन्तु वह इसीलिए धनुष के पास नही जाता कि वह 'पुत्री-कोमाल-देवी' नामक अपनी प्राणप्यारी सह-धर्मिणी को एक सपत्नी देने के लिए तैयार नही है ।

३६८ अर्वाचीन रामकथाओ मे बहुधा स्वयवर के वर्णन मे देवताओ की उप-स्थिति का भी उल्लेख हुआ है । **पदमपुराण** के पाताल-खण्ड (अध्याय ११२, ६६-१०३) के अनुसार महेन्द्र, सूर्य और वायु ने धनुष चढाने का निष्फल प्रयास किया था । **बलराम-दास रामायण** मे इन्द्र मात्र के असफल प्रयास का वर्णन किया गया है । **रामकेर्ति** मे भी ब्रह्मा, इन्द्र, शिव, वायु, अग्नि आदि ३३ देवताओ की चर्चा है जो एक-एक करके धनुष-परीक्षा मे अनुत्तीर्ण होकर चले जाते है ।

कुछ रचनाओ मे अन्य राजाओ की असफलता के पश्चात् शिव राम को धनुष तोडने का आदेश देते है—उदाहरणार्थ धर्मखण्ड (अध्याय २८) और तत्त्वसग्रह रामायण (१, २६) ।

कम्ब रामायण (१, २१), रामलिगामृत (सर्ग ३) और रामगीतगोविन्द मे भी

स्वयवर के अवसर पर देवताओ की उपस्थिति का उल्लेख है। **रामचरितमानस** मे तुलसीदास देवताओ के मनुष्य का रूप धारण करने की चर्चा करते है तथा अन्य देवताओ के आकाश मे स्थित स्वयवर देखने का उल्लेख करते है

देखहि सुर नभ चढे विमान (१, २४६)
देव दनुज धरि मनुज सरीरा (१, २५१)

३६६ सुग्रीव द्वारा राम की परीक्षा का वृत्तान्त हिन्देशिया की रामकथाओं मे सीता-स्वयवर ही के अवसर पर रखा गया है। **सेरत काड** के अनुसार सीता के पोष्य पिता रेमिकल ने आकाश से गिरा हुआ एक धनुष प्राप्त किया और सकल्प किया कि जो उस धनुष के चलाये हुए बाण से सात ताल वृक्ष विद्ध कर सकता है, उसी को सीता पत्नीस्वरूप दी जायेगी। रावण केवल छ वृक्षो का छेदन कर सकता है। लक्ष्मण की सहायता से राम सफलता प्राप्त करते है, ये सात ताल एक साँप की पीठ पर चक्राकार खडे है और लक्ष्मण ने उस साँप को दबाकर उसे सीधा किया था। पातानी पाठ की कथा इस वृत्तान्त से मिलती-जुलती है।[1]

सेरी राम तथा **हिकायत महाराज रावण** मे ७ वृक्षो के स्थान पर चालीस का उल्लेख किया गया है, जिनमे रावण केवल ३८ को छेदने मे समर्थ है। **सेरी राम** मे महरीसी कली राम की एक अन्य परीक्षा भी लेते है। सीता को मूर्तिवत् खडी रहने का आदेश देकर महरीसी कली उनको एक मन्दिर मे छिपाते है जहाँ एक सहस्र मूर्तियाँ है। राम सीता की खोज करते हुये मन्दिर मे पहुँचते है और मूर्तियो को गुदगुदाकर सीता का पता लगाते है। एक अन्य पाठ के अनुसार राम मूर्तियो की आँखो पर पुष्प मारकर सीता को खोज निकालते है। **पाश्चात्य वृत्तान्त** न० ३ मे धनुष चढाने के अतिरिक्त लक्ष्य-भेदन की भी परीक्षा होती है, जिसमे रावण के निष्फल प्रयत्न के बाद राम सफलता प्राप्त कर लेते है।

सेरी राम मे सीता के पोष्य पिता विवाह के पूर्व राम से काकासुर का वध करने का निवेदन करते है। यह काकासुर यज्ञ मे प्रयुक्त होने वाला दूध पीकर यज्ञो मे विघ्न डाला करता है। राम का बाण काक का पीछा करता हुआ समुद्र पार कर एक टापू पर पहुँच जाता है, काक भयभीत होकर प्रतिज्ञा करता है कि आगे चलकर वह महरीसी कली को कष्ट नही देगा। राम का बाण काक का यह सन्देश लेकर मिथिला वापस आता है। इसके बाद विवाह का आयोजन होता है।

ग। विवाहोत्सव

४०० वाल्मीकीय बालकाण्ड मे धनुर्भंग के पश्चात् दशरथ को बुलाया जाता है

---

१ इस प्रसग का मूल स्रोत भारतीय है, दे० आगे अनु० ५१७।

और वह वसिष्ठ, वामदेव, जाबालि, कश्यप, मार्कण्डेय तथा अपनी चतुरगिणी सेना के साथ मिथिला आते है। वहाँ राम-सीता के अतिरिक्त अन्य तीन भाइयो के विवाह भी सम्पन्न किये जाते है। लक्ष्मण सीता की बहन ऊर्मिला से तथा भरत-शत्रुघ्न क्रमश जनक के भाई कुशध्वज की पुत्रियो माडवी-श्रुतकीर्त्ति से विवाह करते है (दे० सर्ग ७३)। प्राय सभी रामकथाओ मे ऐसा ही वर्णन मिलता है, किन्तु इस सामान्य नियम के अपवादो का अभाव नही होता। वाल्मीकि रामायण के पश्चिमोत्तरीय पाठ (सर्ग १४) मे जनक को राम-भरत का और कुशध्वज को लक्ष्मण-शत्रुघ्न का ससुर कहा गया है—

जनक श्वसुरो राजा रामस्य भरतस्य च।
कुशध्वजसुताभ्या च सुमित्रानन्दनौ पती ॥ २० ॥

गुणभद्र के उत्तरपुराण, तिब्बती रामायण, खोतानी रामायण तथा बौद्ध जातको का उल्लेख हुआ है जिनमे सीता ही का विवाह वर्णित है (दे० ऊपर अनु० ३६०)। निम्नलिखित रचनाओ मे भी केवल राम तथा सीता के परिणय का उल्लेख हुआ है— भट्टिकाव्य (२, ४३), रामायण ककविन, सेरी राम, रामकेर्त्ति, रामकियेन, रामलिगामृत, दामोदर मिश्र द्वारा सम्पादित महानाटक। कुछ अन्य रामकथाओ मे राम तथा लक्ष्मण मात्र के विवाह का उल्लेख है—उदाहरणार्थ वह्निपुराण (पृ० १८३), पद्मपुराण का गौडीय उत्तर खण्ड। पउमचरिय मे राम के अतिरिक्त भरत के विवाह का वर्णन मिलता है। राम-सीता-विवाह के कारण भरत को उदास देखकर कैकेयी ने भरत-सुभद्रा के विवाह का प्रस्ताव किया, सुभद्रा[1] जनक के भाई कनक की कन्या है। इसपर सुभद्रा के स्वयवर का आयोजन होता है जिसमे वह भरत को चुन लेती है। अनन्तर राम तथा भरत दोनो का विवाहोत्सव मनाया जाता है (दे० पर्व २८)।

राम के विवाह के वर्णन मे कवियो ने प्राय अपने समाज की तत्कालीन लोक-रीतियो का निरूपण किया है, इसका विश्लेषण रामकथा मे सीधा सम्बन्ध नही रखता।

कम्ब रामायण (१, १३), उदार राघव (३,१०३) और बलरामदास, धनजय भज तथा उपेद्र भज की उडिया रामकथाओ के अनुसार दशरथ अपनी रानियो को भी मिथिला ले जाते है।

कुछ अर्वाचीन रचनाओ मे विवाहोत्सव मे देवताओ के आगमन का उल्लेख मिलता है। तत्त्वसग्रह रामायण शिव तथा ब्रह्मा की उपस्थिति का उल्लेख करता है (१, ३०)। रामचरितमानस के अनुसार देवता विमान पर चढकर राम का विवाह देखने आते है

---

१ रविषेण के पद्मचरित के अनुसार उसका नाम लोक सुन्दरी था (दे० २८, २५८)।

(१, ३१४, ३), ब्राह्मण का रूप धारण कर विवाहोत्सव मे भाग लेते है (१, ३१६, छद) तथा होम के समय प्रकट होकर पूजा स्वीकार करते है (सुर प्रकटि पूजा लेहिं, दे० १, ३२३, छन्द)। इसके अतिरिक्त उनकी स्त्रियाँ भी छद्मवेश मे परछन के अवसर पर राम की आरती उतारती है

सची सारदा रमा भवानी । जे सुरतिय सुचि सहज सयानी ॥
कपट नारि बर बेष बनाई । मिलीं सकल रनिवासहिं जाई ॥३१८॥

कृत्तिवास रामायण मे राम-सीता के विवाह के अवसर पर चन्द्रमा के नृत्य का भी वर्णन मिलता है। देवताओ को आशका थी कि यदि विवाह शुभ मूहूर्त्त पर सम्पादित हो सका तो राम-सीता का वियोग असभव होगा। इसीलिए उन्होंने चन्द्रमा को विवाहोत्सव मे भेज दिया। चन्द्रमा ने नर्त्तकी का रूप धारण कर अपने नृत्य से सबो को मत्रमुग्ध किया था, जिससे किसी को मूहूर्त्त का ध्यान नही रहा। अत शुभ मुहूर्त्त के बीत जाने के बाद ही विवाह सम्पन्न हुआ (दे० १, ६२)।

४०१ विवाह के समय राम तथा सीता की अवस्था का सभवत आदि रामायण मे निर्देश नही किया गया था। प्रचलित वाल्मीकि बालकाण्ड मे दशरथ विश्वामित्र से कहते हैं कि राम की उम्र १६ वर्ष से कम है (**ऊनषोडश वर्ष**, १, २०, २), इसी काण्ड के अन्त मे (दे० १, ७७, १४) तथा प्रक्षिप्त सीता-अनसूया-सवाद के अन्तर्गत विवाह के समय सीता की **'पतिसयोगसुलभ'** अवस्था का उल्लेख किया गया है (दे० २, ११८, ३४)। बालकाड के अन्त मे कहा गया है कि विवाह तथा वनवास के बीच मे बहुत समय बीत गया (बहूनृतून्, १, ७७, २५)। अरण्यकाड के रावण-सीता-सवाद के एक प्रक्षिप्त अश के अनुसार सीता विवाह के पश्चात् १२ वर्ष तक अयोध्या मे रही थी (दे० ३, ४७, ४) तथा निर्वासन के समय राम-सीता की अवस्था क्रमशः २५ और १८ की थी (दे० ३, ४७, १०-११)। इसका अर्थ यह है कि विवाह के समय राम और सीता की उम्र क्रमश तेरह और छ वर्ष थी। अयोध्याकाड के अन्य स्थल के अनुसार राम की अवस्था निवासन के समय १७ वर्ष का थी (दे० २, २०, ४५)। सुन्दरकाड मे सीता-हनुमान-सवाद के अन्तगत सीता के १२ वष तक अयोध्या मे निवास करने का उल्लेख हुआ है (दे० ५, ३३, १७)।

परवर्ती रचनाओ मे भी राम-सीता की अवस्था के विषय मे मतैक्य का अभाव है। अधिकाश रचनाओ मे तथा विशेषकर काल-निर्णय रामायणो (अनु० १७६) मे विवाह के समय राम-सीना की अवस्था क्रमश १५ और ६ वष मानी गई है, उदाहरणार्थ स्कद पुराण (ब्राह्मखण्ड, धर्मारण्यखण्ड, अध्याय ३०) तथा पद्मपुराण का पातालखण्ड (अध्याय ३३)।

विवाह तथा वनवास के बीच १२ वर्ष बीत गए थे, इसका भी प्राय उल्लेख

किया गया है—दे० कालनिर्णय रामायण (अनु० १७६), अध्यात्म रामायण (१, १, ३७), आनन्द रामायण (१, ५, १३१), पद्मपुराण का उत्तरखण्ड (२६६, १८०)। आनन्द रामायण के अनुसार राम ने छ वर्ष की अवस्था के पूर्व ही विवाह किया था (दे० १, ४, २५)।

४०२ नृसिह पुराण (अध्याय ४७) से लेकर अनेक रामकथाओ मे सीता स्वयवर के पश्चात् अन्य राजाओ के आक्रमण का वर्णन किया गया है। अपने भाइयो की सहायता से राम उन राजाओ को पराजित करते है। पद्मपुराण के पातालखण्ड (अध्याय ११२), तोरवे रामायण (१, १५), असमिया बालकाड (अध्याय ४१), असमिया रामविजय तथा मलय के सेरी राम मे इस युद्ध का उल्लेख किया गया है। आनन्द रामायण (१, ४) मे इस युद्ध का वर्णन एक अन्य अवसर पर रखा गया है। जनक ने दशरथ को कुटुम्ब के साथ दीवाली के अवसर पर निमत्रित किया था। उत्सव के पश्चात् अयोध्या के रास्ते मे स्वयवर मे पराजित राजाओ ने आक्रमण किया तथा राम ने अपने भाइयो की सहायता से उनको हरा दिया था।

घ। पूर्वानुराग

४०३ आठवी शती ई० से लेकर विवाह के पूर्व राम तथा सीता के पारस्परिक आकर्षण और प्रेम का उल्लेख मिलता है। **महावीरचरित** मे विश्वामित्र सीता और ऊर्मिला को अपने आश्रम मे बुलाते है, जहाँ राम और लक्ष्मण उनको देखकर आकर्षित हो जाते है (दे० अक १)। **जानकीहरण** मे धनुर्भग के बाद, किन्तु विवाह के पूर्व, सीता के विरह का वर्णन किया गया है (दे० सर्ग ७)। परवर्ती रचनाओ मे इस पूर्वानुराग के वर्णन मे उत्तरोत्तर विकास हुआ है। रामकथाओ का एक वर्ग है जिसमे स्वयवर मे ही राम को देखकर सीता के अनुरक्त हो जाने का वर्णन किया गया है। **महानाटक** के प्रथम अक मे कहा गया है कि धनुष की कठोरता तथा राम की कोमलता देखकर सीता ने अपने पिता की प्रतिज्ञा पर खेद प्रकट किया था और इसका भी उल्लेख है कि राम ने धनुर्भग के पूर्व ही सीता की प्रेममय मुस्कुराहट देखी थी (**स्मरस्मेर**, छद १६)। **कल्कि पुराण** (३, ३, २६) के अनुसार राम सीता के कटाक्ष से प्रेरणा लेकर धनुष चढाते है (**जनकजेक्षितैरर्च्चित**)। **आनन्द रामायण** (१, ३, १११-१२०) मे कहा गया है कि स्वयवर के समय राम को सभा के आगन मे देखकर सीता प्रेमविह्वल हो जाती है, वह अपनी सखी से कहती है कि यदि पिता जी राम को छोडकर किसी अन्य पुरुष से मेरे विवाह का आयोजन करेंगे तो मै जीवित नही रह सकूगी। तब वह देवताओ से प्रार्थना करती है कि वे राम के लिए धनुष को पुष्पवत् बना दे तथा राम के सफल होने पर चौदह वर्ष तक वनवास करने का व्रत लेती है। **कृत्तिवास रामायण** (१, ६०-६१) तथा **बलरामदास रामायण** मे भी स्वयवर के समय राम को देखकर सीता की प्रेमदशा तथा

देवताओ से उनकी विनय का वर्णन मिलता है ।

रामकथाओ के एक अन्य वर्ग के अनुसार सीता ने राम को मिथिला मे प्रवेश करते देख लिया था तथा उसी क्षण उनके हृदय मे राम के प्रति प्रेम अकुरित हुआ था। तमिल **कम्ब रामायण** मे इस प्रकार का प्रथम वर्णन मिलता है—राम के मिथिला मे प्रवेश करते समय राम और सीता एक दूसरे को देखते है और दोनो मे प्रेम उत्पन्न होता है ।

"कल्पनातीत सौन्दर्य से युक्त सीता इस प्रकार कन्याभवन पर खडी थी कि राम-लक्ष्मण विश्वामित्र मुनि के पीछे-पीछे उसी कन्याभवन के निकट होकर गये । सयोगवश राम की दृष्टि सीता पर पडी और इसी समय सीता की दृष्टि भी राम पर पड गई । फिर क्या था ? नेत्रो ने नेत्रो को ग्रस लिया । अत्यन्त सुरुचिपूर्ण होने के कारण एक दूसरे का रसास्वादन करने लगे । इसी के द्वारा दोनो के चित्त भी जुडकर एक हो गये । तदनन्तर दोनो अपनी सुध-बुध खो, एक-दूसरे के परवश हो, महान् व्यक्ति राम ने भी सीता को निहारा और उसने भी राम को निहारा" (१, १०, ३५) ।[१]

कम्बर ने उसी दशवे पटल मे सीता तथा राम दोनो के रात्रि मे विरह का विस्तृत वर्णन किया है । **गोविन्द रामायण** मे भी सीता प्रासाद की छत पर से राम को मिथिला मे पहुँचते देखती है और राम-सीता मे पारस्परिक प्रेम उत्पन्न होता है । **असमिया बालकाण्ड** (अध्याय ३६) मे इसका वर्णन किया गया है कि मिथिला मे प्रवेश करते हुए राम को देखकर सीता मुग्ध हो गई थी तथा उन्होने राम के साथ ही विवाह करने का प्रण किया था । **रामकियेन** (अध्याय १२) के अनुसार राम जनक की राजधानी मे पहुँचकर सीता को महल के झरोखे मे देखते है जिसके फलस्वरूप दोनो उसी क्षण एक दूसरे के प्रति आकर्षित हो जाते है । उपेन्द्र भज के वैदेहीश विलास तथा त्रिपुरारिदासकृत रामकृष्णकेलिकलोल मे भी इसका उल्लेख है । रामकियेन मे कहा है कि सीता के प्रति राम का प्रेम जान कर लक्ष्मण धनुष चढाने मे समर्थ होते हुए इसे नही उठाते है ।

राम-सीता के पूर्वानुराग के चित्रण मे कुछ कवियो ने पुष्पवाटिका मे राम और सीता के साक्षात्कार की कल्पना की है । **प्रसन्नराघव** (दे० अनु० २३७) मे राम सीता को चडिकायतन की ओर जाते हुये देखते है तथा छिपकर सीता और उनकी सखियो की बातचीत सुनते है, बाद मे दोनो के एक दूसरे को देखकर आकर्षित हो जाने का वर्णन किया गया है । **मैथिलीकल्याण** नाटक (दे० अनु० २३६) मे सीता तथा राम के पूर्वानुराग, दोनो के विरह-वर्णन तथा अभिसारिका सीता का भी चित्रण किया गया

---

१ दे० डॉ० सु० शकर राजू नायडू, कम्बर और तुलसी, (मद्रास १६५६) पृ० ६२ ।

है । प्रसन्नराघव के आधार पर रामचरितमानस तथा गीतावली मे तुलसीदास ने जनकपुर की वाटिका मे राम-सीता के पारस्परिक दर्शन का वर्णन किया है । मापद्य रामायण (दे० अनु० १६७), वनजय भज के रघुनाथ विलास तथा मेंद रामायण (दे० अनु० २०३) मे भी वाटिका-प्रसग मिलता है ।[1]

साहित्य दर्पण मे विप्रलम्भ-पूर्वराग के दो कारण अर्थात् श्रवण तथा दर्शन उल्लिखित है । काव्यशास्त्र के ग्रन्थो मे कई प्रकार के दर्शन माने जाते है—प्रत्यक्ष-दर्शन, स्वप्नदर्शन तथा चित्रदर्शन । राम-सीता-पूर्वराग के प्रसग मे इन सब कारणो की चर्चा मिल जाती है । प्रत्यक्षदर्शन-विषयक कथाओ का उल्लेख ऊपर हो चुका है । **राघवोल्लास काव्य** के द्वादश सर्ग मे स्वप्न-दर्शन को सीता के पूर्वराग का कारण माना गया है । "सीता सबेरे रोती-रोती जगकर रात मे देखे स्वप्न को अपनी प्रिय सखी को सुनाती है—एक सुन्दर पुरुष-रत्न स्वप्न मे मुझे मिला था, कोमल स्वच्छ तुलसीदल की माला उसके गले मे थी । उसी समय जनक-पुत्री ने कोलाहल सुना । पूछा कि यह कैसा कोलाहल हो रहा है । शीघ्र ही पता लगाकर एक मृगनयनी ने कहा—अरी विशाल भाल वाली जनकनन्दिनी, घर के भीतर क्या छिपी हो, इधर गवाक्ष पर आकर देखो । एक सुन्दर पुरुष आ रहा है, उसका नाम राम है, अलौकिकसौन्दर्य समन्वित है । सीता सखियो के साथ राम को देखती है । राम की रूपमाधुरी पर मुग्ध होकर चेतना शून्य हो जाती है । अन्त मे किसी प्रकार सीता होश मे लाई जाती है । राम को देखने के लिए पुन गवाक्ष पर जाना चाहती है, सखियो के मना करने पर उत्तर देती है कि राम के दर्शन से तो शायद प्राण निकले, किन्तु उनके वियोग से तो मरण निश्चित है—**रामेक्षण प्राणहर कदाचित् ध्रुव मृतिं दास्यति तद्वियोग** ।[2]

भुशुण्डी रामायण के अनुसार राम मिथिला मे पहुँचकर एक पक्षी द्वारा सीता के पास अपना चित्र भेज देते है, चित्र-दर्शन से सीता उन्हे प्राप्त करने के लिए उत्कण्ठित होती है ।[3] **बृहत्कोशलखण्ड** मे गुण-श्रवण पूर्वराग का कारण माना गया है । एक तपस्विनी से राम के कार्यों का गुणगान सुनकर अष्टवर्षीय सीता विरह से व्याकुल होने लगती है, जिस पर महादेव जनक को स्वप्न मे दिखाई पडते है तथा स्वयवर का आयोजन करने को कहते है (दे० अध्याय ६) ।

---

१ साकेत (सर्ग १) मे पुष्पवाटिका के प्रसग मे लक्ष्मण-ऊर्मिला के पूर्वानुराग का भी चित्रण है ।

२ दे० राघवप्रसाद पाण्डेय, तुलसीदासकालीन राघवोल्लास काव्य, मैथिलीशरण गुप्त अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ० ७०४ ।

३ दे० भगवती प्रसाद सिंह, रामभक्ति मे रसिक सम्प्रदाय, पृ० ६८ ।

ड । राम का एकपत्नीव्रत

४०४ वाल्मीकि ने राम को 'सत्यपराक्रम' क्षत्रिय, आज्ञाकारी पुत्र तथा, 'स्व-दारनिरत' पति के रूप मे चित्रित किया है। परवर्ती रामकथाओ मे राम को प्राय 'एकपत्नीव्रत' भी माना गया हे, यह वाल्मीकीय आदर्श का स्वाभाविक विकास प्रतीत होता है।

प्रस्तुत विषय का विश्लेषण करते समय हमे स्मरण रखना चाहिए कि उच्चाशय मानव का चित्र अकित करत हुए भी वाल्मीकि का दृष्टिकोण यथार्थवादी ही है, अत उनकी रचना मे यत्र-तत्र ऐसी उक्तिया भी मिल जाती है जो परवर्ती रामकथाओ के मर्यादावाद को आघात पहुँचा सकती है। अयोध्याकाण्ड के एक स्थल पर राम की 'स्त्रियो' की ओर सकेत किया गया हे, कैकेयी को उभाडती हुई मथरा कहती है कि राम के अभिषेक के बाद उनकी स्त्रियाँ फूली नही समायेगी—**हृष्टा खलु भविष्यन्ति रामस्य परमा स्त्रिय ।**[1] समुद्र के तट पर प्रायोपवेशन के वर्णन मे 'अनेकधा परम नारियो की भुजाओ से स्पृष्ट राम की बाहु' का उल्लेख मिलता है—**"भुजं परमनारीणामभिमृष्टमनेकधा"** (६, २१, ३)। यद्यपि असख्य स्थलो पर सीता के प्रति राम के प्रेम की चर्चा है फिर भी कैकेयी से भरत के युवराजाभिषेक का समाचार सुनकर राम कहते है कि पिता की आज्ञा पर मै भरत को अपना राज्य, अपनी सम्पत्ति, अपना जीवन तथा सीता को भी सहर्ष अर्पित कर सकता हूँ

अह हि सीता राज्य प्राणानिष्टान्धनानि च ।
हृष्टो भ्रात्रे स्वय दद्या भरताय प्रचोदित ।।७।।

(२, सर्ग १६)

शरपाश मे वद्ध लक्ष्मण के लिए विलाप करने वाले राम की यह उक्ति[2] प्रसिद्ध ही है

---

१ दे० २, ८, १२। उदीच्य पाठ के कुशीलवो ने इस श्लोकार्ध का सीधा अर्थ आपत्तिजनक समझकर इसे इस प्रकार बदल दिया है—**ऋद्धियुक्ता श्रिया जुष्टा रामपत्नी भविष्यति** (गौ० ७, ६, प० रा० १०, ६)। दाक्षिणात्य पाठ के कुछ टीकाकार मानते है कि यहाँ आदर के कारण सीता ही के लिए वहुवचन का प्रयोग हुआ है—**सीताबहुत्वमादरार्थम्** (रामायण शिरोमणि)। अन्य टीकाकारो के अनुसार 'स्त्रिय' का अर्थ है सीता की सखिया—**बहुवचनेन सीता सख्य** (तिलक)।

२ अग्नि-परीक्षा के समय सीता के प्रति राम के कठोर शब्द यहाँ अप्रासगिक है, क्योकि अग्नि-परीक्षा का समस्त वृत्तान्त प्रक्षिप्त है (दे० अनु० ५६५)।

किं नु मे सीतया कार्यं लब्धया जीवितेन वा ।
शयान योऽद्य पश्यामि भ्रातर युधि निर्जितम् ।।५।।
शक्या सीतासमा नारी मर्त्यलोके विचिन्वता ।
न लक्ष्मणसमो भ्राता सचिव सापरायिक ।।६।।

(युद्धकाण्ड, सग ४९)

अपनी माता से राम के वनवास का समाचार सुनकर भरत यह आशका प्रकट करते है—**कच्चिन्न परदारान्वा राजपुत्रोऽभिमन्यते** (२, ७२, ४५) ।

उपर्युक्त उद्धरणो का उत्तरदायित्व वाल्मीकि का है अथवा रामायण क प्राचीन गायको का, इसका निर्णय करना असभव है । इस समस्या का जो भी समाधान हो किन्तु विवाह-सबध के विषय मे तथा सीता के प्रति राम के निश्चल प्रेम के विषय मे जो सामग्री रामायण मे मिलनी है, इस पर परवर्ती रचनाओ के 'एकपत्नीव्रत' का आदर्श आधारित है ।

आदिकाव्य के एक स्थल पर 'एकपत्नीव्रत' की प्रशसा की गई (द० २, ६४, ४३) । राम के साथ वन जाने के लिए अनुरोध करते समय सीता यह तक देती है कि धर्म-विधि के अनुसार विवाह होने पर स्त्री परलोक मे भी अपने पति की होकर रहती है[1]

इहलोके च पितृभिर्या स्त्री यस्य महाबल ।
अद्भिर्दत्ता स्वधर्मेण प्रेत्यभावेऽपि तस्य सा ।।१८।। (२, २९)

वाल्मीकि रामायण मे सीता के प्रति राम के प्रेम का बहुत से स्थलो पर चित्रण किया गया है, सीता से उनका वियोग तथा सीता के लिए उनका विलाप अनेक सर्गो का वर्ण्य-विषय है (दे० ३, ६०-६६, ३, ७५, ४, २७-२८, ४, ३०, ५, ६६, ६, ५) । सीता राम को **'स्वदारनिरत'** (३, ९, ६) तथा अपने प्रति **'स्थिरानुराग'** (२, ११८, ४) मानती है तथा यह विश्वास प्रकट करती है कि राम का प्रेम कभी नष्ट नही हो सकता

युद्ध-काड का १०१वा सर्ग भी प्रक्षिप्त है (दे० अनु० ५३५), इसमे राम कहते है—**देशे देशे कलत्राणि त तु देश न पश्यामि यत्र भ्राता सहोदर** (दे० १०१, १४) । इसी प्रकार जिस सर्ग मे सीता राम के चरित्र पर सन्देह प्रकट करती है (५, २८, १४), अधिक सभव है कि वह भी प्रक्षिप्त है (दे० अनु० ५३०) । इसी सर्ग मे सीता अपना एकपत्नीत्व व्यर्थ बताती है—एकपत्नीत्वमिद निरर्थकम् (श्लोक १३) ।

१ वसिष्ठ की यह उक्ति भी द्रष्टव्य है—**आत्मा हि दारा सर्वेषा दारसग्रह-वर्तिनाम्** (२, ३७, २४) ।

(५, २६, ३६)। राम को निर्वासन दिलाने वाली कैकेयी भरत की उपर्युक्त आशका सुनकर उत्तर देती है—**न राम परदाराश्च चक्षुर्भ्यामपि पश्यति** (२, ७२, ४८)।

आदिकाव्य मे राम के इस चरित्र-चित्रण के आधार पर उत्तरकाण्ड के व्यासो ने यह माना है कि सीता-त्याग के बाद राम ने दूसरा विवाह नही किया (दे० ७, ६६, ८)। अत एकाध अपवादो को छोडकर परवर्ती रामकथाओ की धारणा यह है कि राम एकपत्नीव्रत थे। **भागवत पुराण** मे राम के विषय मे लिखा है—**एकपत्नीव्रतधरो राजर्षिचरित शुचि** (९ १०, ५५)। आनन्द रामायण मे राम स्वय कहते है कि सीता को छोडकर सभी नारिया उनके लिये कौशल्या के समान ही है

अन्यत्सीता विनाऽन्या स्त्री कौशल्या सदृशी मम ॥
न क्रियते परा पत्नी मनसाऽपि च चितये ॥१३॥

(विलास काण्ड, सर्ग ७)

आनन्द रामायण के उसी सर्ग मे यह भी माना गया है कि रामावतार मे एकपत्नी-व्रत रखने के फलस्वरूप कृष्णावतार मे उनको बहुत सी पत्नियाँ मिलेगी। राम-चरित्र के इस आदर्श को न स्वीकार करनेवाली प्राचीनतम रचनाएँ जैन रामायण है। विमलसूरि के पउमचरिय (अनु० ६०) तथा गुणभद्र के उत्तरपुराण (अनु० ६४) और उनपर आधारित जैन रामकथाओ मे लक्ष्मण की १६००० तथा राम की ८००० पत्नियो की चर्चा है। रसिक सम्प्रदाय के राम-साहित्य पर कृष्णलीला की गहरी छाप है, अत उसमे राम को बहुपत्नीक माना गया है। भुशुण्डी रामायण मे राम की दो पटरानियो के अतिरिक्त सहस्रो पत्नियो का उल्लेख है (दे० अनु० १८०), बृहत्कोशलखण्ड (दे० अनु० १६१) मे भी राम के बहुत से विवाहो का वर्णन किया गया है।[1] विदेश की रचनाओ मे राम को प्राय एकपत्नीव्रत ही माना गया है, रामजातक इसका एकमात्र अपवाद प्रतीत होता है (दे० अनु० ३२७)। एक ही रचना मे अर्थात् खोतानी रामायण मे सीता राम तथा लक्ष्मण दोनो से विवाह करती है, उस देश के बहुपतित्व के आधार पर इस प्रकार की कल्पना उत्पन्न हुई होगी।

६—सीता की जन्म-कथा

४०५ प्रारम्भिक रामकथाओ मे सीता के कुल-परम्परा सम्बन्धी तथ्यो के अभाव के कारण अनेक प्रकार की एक दूसरी से सर्वथा भिन्न कथाएँ प्रचलित हो गई है। जनक, रावण और दशरथ तीनो सीता के पिता माने गए है। अत रामकथा के विकास मे

---

१ डॉ० भगवती प्रसाद सिंह के अनुसार नृत्यराघवमिलन मे राम की पटरानियो की सख्या ८ मानी गई तथा सिद्धान्त तत्त्वदीपिका मे उनकी असख्य विवाहित स्त्रियो की चर्चा है (दे० राम-भक्ति मे रसिक सम्प्रदाय, पृ० २६०)।

सीता-जन्म के वैभिन्न की एक अलग समस्या प्रतीत होती है। इसे सुलझाने के लिए उन भिन्न-भिन्न रूपो की प्राचीनता और सापेक्षिक महत्त्व को ध्यान मे न रखने के कारण अनेक विद्वानो ने बहुत चित्य प्रस्ताव किए है। उनके अनुसार सीता पहले दशरथ की पुत्री और राम की सहोदरी बहन मानी जाती थी। इसके बाद वह रावण की पुत्री बनाई गई है और अत मे अयोनिजा सीता (जनक की दत्तक पुत्री) की कल्पना कर ली गई है। प्रस्तुत परिच्छेद मे इस जन्म-कथा के भिन्न-भिन्न रूपो के सक्षिप्त वर्णन के साथ-साथ इसके विकास की रूप-रेखा खीचन का भी प्रयत्न किया जाएगा। आरम्भ मे उन कारणो का स्पष्टीकरण किया जायेगा जो इस विश्वास की पुष्टि करते है कि सीता पहले जनक की औरस पुत्री मानी जाती थी, तदुपरान्त वाल्मीकि के अनुसार भूमिजा सीता के अलोकिक जन्म का वर्णन किया जायेगा। यह आख्यान सर्वाधिक प्रचलित तथा महत्त्वपूर्ण है और सीता की अर्वाचीन जन्म-कथाओ का भी आधार प्रमाणित हुआ है। वाल्मीकि से भिन्न कथाओ मे एक बात प्राय सर्वत्र वर्णित है और वह यह है कि मिथिला मे परित्यक्त होने के पूर्व सीता का सम्बन्ध लका से भी स्थापित किया जाता है। अत मे **दशरथ जातक** तथा हिंदेशिया की जन्म-कथाओ का वर्णन किया जाएगा जिनमे दशरथ सीता के पिता माने गए है। इनके कम महत्त्व का प्रमाण यह है कि शताब्दियो तक अज्ञात होने के कारण इन कथाओ का भारत पर कोई प्रभाव नही पड सका।

४०६ सीता की जन्म-कथा के भिन्न-भिन्न रूपो का परिचय निम्नलिखित तालिका मे दिया जाता है

क । जनकात्मजा

महाभारत, हरिवश, कूर्मपुराण, पउमचरिय, आदि वाल्मीकि रामायण।

ख । भूमिजा

(१) **प्रचलित वाल्मीकि रामायण** तथा अधिकाश रामकथाएँ।

(२) दशरथ तथा मेनका की मानसी पुत्री **वाल्मीकि रामायण** के उदीच्य पाठ।

(३) वेदवती अथवा लक्ष्मी के अवतार।

ग । सीता और लका

(अ) रावणात्मजा

(१) **वसुदेव हिण्डि,** गुणभद्रकृत **उत्तरपुराण, महाभागवत पुराण।**

(२) **काश्मीरी रामायण,** पाश्चात्य वृत्तान्त न० १६।

(३) **तिब्बती** तथा **खोतानी रामायण।**

(४) **सेरत काण्ड, सेरीराम** का पातानी पाठ।

(५) **राम कियेन**, (रामकेर्त्ति ?) ।

(६) **रामजातक, पालकपालाम** ।

(आ) पद्मजा

(१) **दशावतारचरित** (११ वी श० ई०), तोरवे रामायण ।

(२) गोविदराज का **वाल्मीकि रामायण** का पाठ ।

(इ) रक्तजा

(१) **अदभुत रामायण** (१५वी श० ई०) ।

(२) सिहल द्वीप की रामकथा, विविध भारतीय वृत्तान्त ।

(ई) अग्निजा

(१) **आनन्द रामायण** (१५वी श० ई०), **भावार्थ रामायण** ।

(उ) फल अथवा वृक्ष से उत्पन्न

(१) पाश्चात्य वृत्तान्त न० १६ ।

(२) पाश्चात्य वृत्तान्त न० १ ।

(३) ब्रह्मचक्र ।

घ । दशरथात्मजा

(१) **दशरथ जातक** ।

(२) जावा के **राम केलिग**, मलय के **सेरी राम** तथा **हिकायत महाराज रावण** ।

— — —

क । जनकात्मजा सीता

४०७ बहुत सम्भव है कि रामकथा-सम्बन्धी प्राचीन गाथाओ मे तथा **आदि रामायण** मे भी सीता जनक की औरस पुत्री मानी जाती थी । **महाभारत** मे चार रामकथाएँ पायी जाती है, किन्तु अयोनिजा सीता के अलौकिक जन्म की ओर कही भी निर्देश नही किया गया है । सर्वत्र वह जनकात्मजा है । रामोपाख्यान के आरम्भ मे लिखा है **विदेहराजो जनक सीता तस्यात्मजा विभो** (३, २५८, ९) ।

हरिवश (१, ४१) की रामकथा मे भी सीता की अलौकिक उत्पत्ति का तनिक भी उल्लेख नही मिलता । **कूर्मपुराण** (पूर्वभाग, अध्याय २१, १८) का यह अर्धश्लोक द्रष्टव्य है—**रामस्य भार्या सुभगा जनकात्मजा शुभा** । **कथासरित्सागर** (९, १, ६०) मे भी सीता को जनक की आत्मजा कहा गया है—**सीता तस्याभवद् भार्या प्राणेशा जनकात्मजा** । प्रचलित **वाल्मीकि रामायण** मे भूमिजा सीता के जन्म का प्राचीनतम वर्णन पाया जाता है । प्रामाणिक काडो (२-६) मे उसका उल्लेख केवल निम्नलिखित तीन स्थलो पर किया गया है—अनसूया-सीता-सवाद, अशोकवन मे सीता को देखने पर

हनुमान का विलाप तथा अग्निपरीक्षा । अनसूया-सीता-सवाद तथा अग्निपरीक्षा, ये दो वृत्तान्त समुचित कारणो से प्रक्षिप्त माने जाते है (दे० आगे अनु० ४३१ और ५६५) । हनुमान का विलाप सुन्दरकाड के १६ वे सर्ग मे दिया गया है । इस सर्ग मे हनुमान १५वे सर्ग के विषय को ही दुहराते और विस्तार देते है, अत इस सर्ग को बाद का विकास मानने मे कोई विशेष आपत्ति नही होनी चाहिए ।

उपर्युक्त विश्लेषण के अनुसार बहुत सम्भव है कि **आदि रामायण** मे सीता मिथिला की राज-कन्या और जनक की पुत्री के रूप मे वर्णित थी । वास्तव मे **रामायण** के अनेकानेक स्थलो पर[1] इसका उल्लेख किया गया है कि सीता जनक के कुल मे उत्पन्न हुई थी । जैन **पउमचरिय** के अनुसार जनक की पत्नी विदेहा से सीता अपने यमल भ्राता भामडल के साथ उत्पन्न हुई थी (पर्व २६) । जन्म होते ही इस भामडल को एक देवता ने उठा लिया था और किसी अन्य राजा के यहा छोड दिया था । **वाल्मीकि रामायण** मे जनक के किसी पुत्र का कही उल्लेख नही है, किन्तु **ब्रह्माण्डपुराण** (३, ६४, १८), **विष्णुपुराण** (४, ५, ३०) तथा **वायुपुराण** (८६, १२) आदि मे भानुमान जनक का पुत्र कहा गया है । अत सम्भव है कि **पउमचरिय** के वृत्तान्त मे ऐतिहासिक तत्त्व विद्यमान हो । **कालिका पुराण** (अध्याय ३८) मे ऐसा उल्लेख है कि नारद निस्सन्तान जनक को यज्ञ कराने का परामर्श देते हुए कहते है कि यज्ञ के प्रभाव से दशरथ को चार पुत्र उत्पन्न हुए है । तदनुसार जनक यज्ञ के लिए क्षेत्र तैयार करते समय एक पुत्री के अतिरिक्त दो पुत्रो को भी प्राप्त करते है ।

ख । भूमिजा सीता

४०८ सीता की अलौकिक उत्पत्ति का वर्णन **वाल्मीकि रामायण** मे दो बार कुछ विस्तारपूर्वक किया गया है, कतिपय अन्य स्थलो पर भी इसके सकेत मिलते है ।[2]

---

१ दे० १, १, २७, ५, १३, १४, २, २८, ३, ३, ४७, ३ । लोक-साहित्य मे भी सीता को जनक की औरसी पुत्री माना गया है । उदाहरणार्थ ब्रज प्रदेश मे एक गीत प्रचलित है जिसके अनुसार सीता भाट की बेटी थी । शिकार खेलते समय राम उनका परिचय प्राप्त कर लेते है तथा बाद मे अपने पिता 'जसरथु' से जनक के पास पत्र लिखवाते है । उत्तर मे जनक कहते है—**"हम तौ के भाट-भिखारिया और तुम राजा महाराज, हमे तुमे कैसें होइगी सजनई"** (दे० भारतीय साहित्य, आगरा, वर्ष २, अक ३, पृ० ७४) ।

२ दे० १, ६६ तथा २, ११८ (वर्णन के लिए) और ५, १६, ६, ११६, ७, १७, ७, ६८, ७, ३७ प्र० ३, ५ (उल्लेख के लिए) ।

एक दिन जब कि राजा जनक यज्ञ-भूमि तैयार करनेके लिए हल चला रहे थे, एक छोटी सी कन्यका मिट्टी से निकली । उन्होने उसे पुत्री-स्वरूप ग्रहण किया तथा उसका नाम मीता रखा । सीता-जन्म का यह वृत्तान्त अधिकाश रामकथाओ मे मिलता है । **विष्णु-पुराण** मे यह भी कहा गया है कि जिस यज्ञ के लिए जनक भूमि तैयार कर रहे थे वह 'पुत्रार्थम्' था । जनक की उस पुत्रकामेष्टि का उल्लेख **पद्मपुराण** के उत्तरखड के वगीय पाठ मे भी मिलता है । उस वृत्तान्त के अनुसार भूमि मे एक सुवर्ण धनुष मिला था जिसे खोल देने पर जनक ने एक कन्यका को देखा तथा उसे सीता का नाम देकर ग्रहण किया ।

सभव है कि भूमिजा सीता की अलौकिक जन्म-कथा सीता नामक कृषि की अधिष्ठात्री देवी के प्रभाव से उत्पन्न हुई हो । कृषि की उस देवी से सम्बन्ध रखनेवाली सामग्री का वर्णन प्रस्तुत प्रबन्ध के प्रथम अध्याय मे किया गया है । मैं यह नही कहता कि यह वैदिक देवी और रामायणीय मीता अभिन्न हे । वैदिक सीता ऐतिहासिक न होकर मीता अर्थात् लागल-पद्धति के मानवीकरण का परिणाम है । किन्तु यह असम्भव नही है कि किसी निश्चित कुलपरम्परा के अभाव मे ऐतिहासिक राजकुमारी सीता की जन्म-कथा पर कृषि की अधिष्ठात्री देवी सीता के व्यक्तित्व का प्रभाव पडा हो ।

साथ भी यह भी सर्वथा सम्भव प्रतीत होता है और ऐसा मानना निश्चय ही अधिक स्वाभाविक भी है कि 'सीता' नाम के कारण ही, जिसका अर्थ ही लागलपद्धति (हल से खीची हुई रेखा) है, लोगो ने यह कल्पना की है कि वह लागलपद्धति से निकली थी । ऐसे अनेक उदाहरण दिए जा सकते है कि किसी का नाम उसकी जन्म-कथा का कारण बन गया है (दे० अनु० ७७६) । **तैत्तिरीय ब्राह्मण** की सीता सावित्री की कथा से ज्ञात होता है कि प्राचीन वैदिक काल मे ही कन्याओ के नामो मे सीता भी एक नाम था (दे० ऊपर अनु० ८) ।

४०६ वाल्मीकि रामायण के गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठो मे उपर्युक्त भूमिजा सीता की जन्म-कथा का परिवर्द्धन किया गया है । तीनो पाठो मे सीता स्वय अत्रि की पत्नी अनसुइया को अपनी जन्म-कथा बताती है । गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठो मे यह वर्णन अधिक विस्तृत है ।[1] कथा इस प्रकार है

'राजा जनक को कोई सन्तान नही थी । एक दिन जब वह यज्ञ की भूमि मे हल चला रहे थे उन्होने आकाश मे लावण्यमयी अप्सरा मेनका को देखा और मन मे सन्तानार्थ उसके साहचर्य्य की अभिलाषा की । इस पर एक आकाशवाणी सुनाई दी जिससे उन्हे विश्वास दिलाया गया कि मेनका के ारा उन्हे एक पुत्री प्राप्त होगी जो सौदर्य मे अपनी माता मेनका के समकक्ष होगी । आगे बढकर जनक ने भूमि से निकली हुई सीता

---

१ दे० गौ० रा० ३, ४, प० रा० ३, २ ।

को देखा। पुन यह आकाशवाणी सुनाई दी—**मेनकाया समुत्पन्ना कन्येय मानसी तव** (मेनका से उत्पन्न यह कन्या तुम्हारी मानस पुत्री है)।'

क्षेमेद्रकृत **रामायणमजरी** (दे० ३४४-३४६) मे भी यह कथा पाई जाती है। इस कथा से यह आभास मिलता है कि प्राचीन काल मे सीता की समुत्पत्ति के विषय मे कोई एक वृत्तान्त सर्वप्रामाणिक नही माना जाता था। ईस्वी की प्रारम्भिक शताब्दियो से लेकर **वाल्मीकि रामायण** की सीता-जन्म-कथा की अपूर्णता का अनुभव होने लगा था। गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठ का उपर्युक्त वृत्तान्त उस कथा को पूर्ण बनाने का प्राचीनतम प्रयत्न प्रतीत होता हे।

माधवकदली कृत असमिया रामायण (३, १) मे सीता की जन्म-कथा वाल्मीकि रामायण के गौडीय पाठ से मिलती-जुलती है, किन्तु **कृत्तिवास** ने प्रस्तुत वृत्तान्त को एक नया रूप दिया है। मेनका के स्थान पर जनक ने उर्वशी को देख लिया था तथा काम-मोहित हो जाने के कारण उनका तेज भूमि पर गिर गया था, जिससे पृथ्वी गर्भवती हुई। बहुत समय बाद जनक ने हल जोतते समय भूमि मे से एक डिम्ब प्राप्त कर लिया था और उसमे से सीता निकली थी।[1] **बलरामदास** (अरण्यकाण्ड) लिखते है कि हल जोतते समय जनक ने मेनका को देखकर उसी के समान एक कन्या प्राप्त करने की इच्छा प्रकट की थी। मेनका ने उनकी यह इच्छा जानकर उनको आश्वासन दिया कि मुझसे भी सुन्दर कन्या तुझको प्राप्त होगी।

४१० **वाल्मीकि रामायण** के उत्तरकाण्ड (सर्ग १७) मे जो वेदवती की कथा मिलती है वह भी उस समय उत्पन्न हुई होगी। इस वृत्तान्त मे सीता के पूर्व जन्म का वर्णन किया गया है, अत उसकी उत्पत्ति के समय सीता के लक्ष्मी के अवतार होने का सिद्धान्त सर्वमान्य नही था। कथा इस प्रकार है

'ऋषि कुशध्वज की पुत्री वेदवती नारायण को पतिरूप मे प्राप्त करने के उद्देश्य से हिमालय मे तप करती है। उसके पिता की भी ऐसी ही अभिलाषा थी। किसी राजा को अपनी पुत्री प्रदान करने से इनकार करने पर कुशध्वज का उस राजा द्वारा वध किया गया था। किसी दिन रावण की दृष्टि उस कन्या पर पडती है। उसके रूप-लावण्य से विमोहित होकर वह उसे उसके केशो से पकडता है। अपना हाथ असि के रूप मे बदलकर वेदवती उससे अपने केशो को काटकर अपन को विमुक्त करती है। अनन्तर

---

१ दे० १, ४०। यह प्रसग पूर्णचन्द्र दे, पूर्णचद्र शील, ताराचाद दास, बगवासी प्रेस, सुबोधचन्द्र मजूमदार आदि के सस्करणो मे मिलता है। दिनेशचन्द्र ने उसे छोड दिया है किन्तु उनके सस्करण मे भी जनक को पृथ्वी मे से एक डिब मिल जाने का उल्लेख है।

वह रावण को शाप देकर भविष्यद्वाणी करती है कि मै तुम्हारे नाश के लिए अयोनिजा के रूप मे पुन जन्म ग्रहण करूँगी। अन्त मे वह अग्नि मे प्रवेश करती है और बाद मे जनक की यज्ञभूमि मे उत्पन्न होती है।'

श्रीमद्देवीभागवत पुराण (९, १६) तथा **ब्रह्मवैवर्त्त पुराण** (प्रकृति खड, अध्याय १४) मे इस कथा मे परिमार्जन किया गया है। कुशध्वज और उसकी पत्नी मालवती लक्ष्मी की उपासना करते है और उनसे उनको पुत्रीस्वरूप मे प्राप्त करने का वर पाते है। जन्म ग्रहण करते ही लक्ष्मी वैदिक मत्रो का गान करती है, इस कारण उन्हे वेदवती का नाम दिया जाता है। कुछ समय के उपरान्त वह हरि को पतिरूप मे वरण करने के लिए तप करने लगती है तथा रावण द्वारा अपमानित हो जाने पर वह उसे शाप देती है कि मै तेरे विनाश का कारण बन जाऊँगी। अनन्तर वह योग के बल पर अपना शरीर त्याग देती है और बाद मे सीता के रूप मे उत्पन्न होती है। यह स्पष्ट है कि सीता तथा लक्ष्मी की अभिन्नता के विश्वास की प्रेरणा से वेदवती की कथा को यह नवीन रूप दिया गया है।[1]

कृत्तिवास रामायण (७, १७) के अनुसार कुशध्वज जिस समय वेदपाठ कर रहे थे उस समय उनके मुह से एक कन्या का जन्म हुआ जिसका नाम उन्होने वेदवती ही रखा था। शुभ नामक दैत्य ने कुशध्वज को मार डाला और वेदवती तपस्या करने गई। रावण से अपमानित हो जाने पर वह अग्नि तैयार कर उसमे प्रवेश कर गई तथा सीता के रूप मे प्रकट हुई। **बलरामदास रामायण** के अनुसार वेदवती सागर के तट पर तपस्या करती थी, रावण के अपमान के पश्चात् वह उसे शाप देती है तथा अपने तपोबल द्वारा आग उत्पन्न करके उसमे प्रवेश करती है। कुछ दिन बाद रावण वहा आकर देख लेता है कि वेदवती का शरीर नही जला है, अत वह उसे पुष्पक पर लाद कर लका ले जाता है। घर पहुँच कर वह मदोदरी को आदेश देता है कि उसका मास भोजन के लिए तैयार किया जाय। नारद के परामर्श से मन्दोदरी दूसरा मास तैयार करती है तथा वेदवती की लाश समुद्र मे बहा देती है। वरुण उसे जम्बूद्वीप मे पहुँचाता है, जहा जनक उसे सीता के रूप मे हल चलाते समय प्राप्त कर लेते है। **पउमचरिय** का वेदवती-वृत्तान्त स्पष्टतया वाल्मीकीय कथा का विस्तार मात्र है। सागरदत्त की पुत्री गुणमती की सगाई धनदत्त (भावी राम) के साथ हुई थी। उसकी माता रत्नप्रभा उसे धनी श्रीकान्त (भावी रावण) को देना चाहती थी। फलस्वरूप धनदत्त के भाई वसुदत्त (भावी लक्ष्मण) तथा श्रीकान्त द्वन्द्वयुद्ध मे एक दूसरे का वध करते है। दोनो हरिण बन जाते है तथा गुणमती भी मर कर एक ही प्रदेश मे हरिणी के रूप मे प्रकट हो

---

१ सीता के अवतारत्व के विषय मे ऊपर देख ले, अनु० ३६४-३६५।

जाती है। उसी के कारण दोनो फिर एक दूसरे को मार डालते है। अनेक जन्मो के बाद गुणमती पुरोहित श्रीभूति की वेदवती नामक कन्या बन जाती है।[१] स्वायभू नामक राजकुमार वेदवती को पत्नीस्वरूप चाहता हे, किन्तु श्रीभूति उसे अपनी पुत्री को देना अस्वीकार करता है। इसपर स्वायभू श्रीभूति की हत्या कर वेदवती के साथ वलात्कार करना है। वेदवती उमे शाप देकर (मै तेरे नाश का कारण बनूगी) श्राविका का जीवन अपनाती हे, बाद मे वेदवती तथा स्वायभू क्रमश मीता तथा दशमुख के रूप मे जन्म लेते है (पर्व १०३)।

माधवदेव कृत **असमिया बालकाड** मे सीता की जन्म-कथा भूमिजा सीता तथा वेदवती की कथाओ का मिश्रित रूप है। कथा इस प्रकार है—भगवान ने राम के रूप मे अवतार लेने की प्रतिज्ञा की थी, इसके बाद लक्ष्मी ने उनसे पूछ लिया था कि मै क्या करूँ। उन्होने उत्तर दिया कि तुम जनक के यहाँ जन्म लो (अध्याय २२)। बाद मे लक्ष्मी पृथ्वी पर उतरकर एक पर्वत के शिखर पर बैठ गई। रावण उन्हे देखकर आसक्त हुआ और नीचे उतरकर उनके पास आ पहुँचा। लक्ष्मी ने रावण को डाटा—तुमको मारने के लिए भगवान पृथ्वी पर उत्पन्न हो चुके है। यह कहकर वह सागर मे कूदकर अतर्द्धान हो गई। तब सागर मे सौ योजन का द्वीप ऊपर आया और लक्ष्मी उसपर विराजमान थी। अनन्तर वसुमती ने आकर लक्ष्मी को आदरपूर्वक अपने गर्भ मे धारण कर लिया। बाद मे लोगो ने यज्ञ के लिए हल जोतते समय पृथ्वी मे एक रक्तमय डिम्ब पाया तथा उसे द्वीप के पास के मिथिला नगर मे ले गए। राजा जनक ने डिम्ब तोडकर उसमे से एक कन्या को निकाला (दे० अध्याय २६)।

ग। सीता और लका

४११ रामायण की अलौकिक सीता-जन्म-कथा मे परिवर्द्धन किया जाना अत्यन्त स्वाभाविक है। भूमि मे पडी हुई कन्यका आखिर आई कहाँ से ? वह रावण के नाश का कारण क्यो सिद्ध हुई ? वेदवती की कथा मे इन प्रश्नो का उत्तर मिलता है, इस कथा मे सीता-हरण के पूर्व ही मीता-रावण-सबध का प्राचीनतम उल्लेख मिलता है। बाद की बहुत सी रामकथाओ मे यह सबध अधिक निकट हो जाता है। जनक द्वारा प्राप्त होने के पूर्व किमी-न-किसी तरह सीता का सबध लका से स्थापित किया गया है। बलरामदास रामायण की कथा के अतिरिक्त (दे० ऊपर अनु० ४१०) यह

---

१ किसी दिन वेदवती ने सुदर्शन मुनि की निन्दा की थी, इससे वह अपने अगले जन्म मे लोकापवाद का शिकार बनी।

सबध चार सर्वथा भिन्न रूप धारण करता है। साहित्य मे उल्लेख के काल-क्रमानुसार इनका यहा निरूपण किया जाता है।

(अ) रावणात्मजा

४१२ सीता-जन्म की कथाओ मे, जिनका हमे यहा पर विश्लेषण करना है, सर्वाधिक प्राचीन तथा प्रचलित कथा वह है जिसमे सीता को रावण की पुत्री माना गया है। भारत, तिब्बत, खोतान (पूर्वी तुर्किस्तान), हिदेशिया और श्याम मे हमे यह कथा मिलती है। भारतवर्ष मे इस कथा का प्राचीनतम रूप वसुदेवहिण्डि (दे० ऊपर अनु० २५३) मे सुरक्षित है। इसके अनुसार विद्याधर मय ने रावण के पास जाकर उसके साथ अपनी पुत्री मन्दोदरी के विवाह का प्रस्ताव रखा। शरीर के लक्षणो का ज्ञान रखने वालो ने कहा कि मन्दोदरी की पहली सन्तान अपने कुल के नाश का कारण बनने वाली है (कुल-क्षयहेतु)। रावण मन्दोदरी का सौदर्य देखकर मोहित हो चुका था, अत उसने उसकी पहली सन्तान को त्याग देने का निर्णय कर उसके साथ विवाह किया। बाद मे मन्दोदरी ने एक पुत्री को जन्म दिया तथा उसे रत्नो के साथ एक मजूषा मे रखकर मन्त्री को आदेश दिया कि उसे कही छोड दिया जाय। मन्त्री ने उसे जनक के खेत मे रख दिया। बाद मे जनक से कहा गया कि यह बालिका हल की रेखा से उत्पन्न हुई है। जनक ने उसे ग्रहण किया तथा महारानी धारिणी को सौप दिया। गुणभद्र के **उत्तरपुराण** की निम्नलिखित कथा मे वेदवती वृत्तान्त तथा वसुदेवहिण्डि की कथा का समन्वय किया गया है—'अलकापुरी के राजा अमितवेग की पुत्री राजकुमारी मणिमती विजयार्थ (विन्ध्य) पर्वत पर तप करती थी। रावण ने उसे प्राप्त करने का प्रयास किया। सिद्धि मे विघ्न उत्पन्न होने के कारण मणिमती ने क्रुद्ध होकर निदान किया कि मै रावण की पुत्री बनकर उसके नाश का कारण बन जाऊँगी। उस निदान के फलस्वरूप वह मन्दोदरी के गर्भ से उत्पन्न हुई। उसका जन्म होते ही लका मे भूकम्प आदि अनेक अपशकुन होने लगे। यह देखकर ज्योतिषियो ने कहा कि यह कन्या रावण के नाश का कारण होगी। इसपर रावण ने मारीच को यह आदेश दिया कि वह उसे किसी दूर देश मे छोड दे। मन्दोदरी ने कन्या को द्रव्य तथा परिचयात्मक पत्र के साथ-साथ एक मजूषा मे रख दिया। मारीच ने उसे मिथिला देश की भूमि मे गाड दिया जहाँ वह उसी दिन कृषको द्वारा पाई गई। कृषक उसे जनक के पास ले गए। मजूषा को खोलकर जनक ने उसमे से कन्यका को निकाल लिया तथा उसे पुत्रीवत् पालने का आदेश देकर अपनी पत्नी वसुधा को सौप दिया।"[1]

---

१ दे० पर्व ६८। सोमसेन के रामचरित मे पउमचरिय तथा उत्तरपुराण के

स्पष्ट है कि यह वृत्तात वेदवती की कथा पर आधारित हे और सीता की धर्म्म माता वसुधा का नाम यह भी सूचित करता है कि रचयिता वाल्मीकि की उस कथा से परिचित था जिसमे सीता को पृथ्वी की पुत्री माना गया है। **महाभागवत पुराण** (अध्याय ४२, गुजराती प्रिंटिग प्रेस, १९१३) मे भी इसका उल्लेख है कि सीता मन्दोदरी से उत्पन्न हुई थी —

सीता मदोदरीगर्भे सभूता चारुरूपिणी ।
क्षेत्रजा तनयाप्यस्य रावणस्य रघूत्तम ।।६४।।

तेलुगु **रगनाथ रामायण** (१, ३२), रामायण मसीही (दे० ऊपर अनु० ३०६) तथा दक्षिण भारत की एक अन्य कथा (दे० पाश्चात्य वृतान्त न० १७) मे भी सीता के एक मजूषा मे पाये जाने का उल्लेख किया गया है, यद्यपि उन रचनाओ मे रावण का निर्देश नही है। स्वायभू रामायण मे मन्दोदरी के गर्भ से सीता के जन्म का वर्णन किया गया है (दे० ऊपर अनु० २०४)।

४१३ सीता की जन्म-कथाओ का एक ऐसा वर्ग भी मिलता है जिसके अनुसार रावण की पुत्री जन्म के पश्चात् समुद्र अथवा नदी मे फेकी जाती है। **काश्मीरी रामायण** मे कथा इस प्रकार है—'मन्दोदरी रावण की अनुपस्थिति मे एक पुत्री को जन्म देती है। जन्मपत्र से पता चलता है कि यह बालिका अपने पिता की मृत्यु का कारण बनेगी और यदि उसका विवाह हुआ तो वह वनवासिनी बनकर लका का नाश करेगी। यह सुनकर मन्दोदरी उसके गले मे एक पत्थर बाधकर उसे किसी नदी मे फेकवा देती है।' एक अन्य कथा के अनुसार रावण स्वय उस कन्यका को मजूषा मे बन्द कर समुद्र मे फेकने की आज्ञा देता है और जनक उसे समुद्र-तट पर प्राप्त करते है (दे० पाश्चात्य वृतान्त न १६)। उपर्युक्त कथा का निम्नलिखित रूप भी मिलता है—'एक ब्राह्मण ने किसी बालिका के विषय मे रावण से कहा था कि यह तुम्हारे निधन का कारण बनेगी। उस समय से रावण ने उसपर कडा पहरा लगा दिया। जब यह कन्यका केवल छ मास की थी, तो किसी दिन इतने जोरो की वर्षा हुई कि उसके पास के समस्त व्यक्ति पानी मे डूबकर मर गये किन्तु वह कन्यका मजूषा मे होने के कारण जल प्रवाह के द्वारा सिहलद्वीप से दूर किसी नदी के पुलिन पर पहुँच गई। कहा जाता है कि इस कन्या ने बाद मे उस राम से विवाह कर लिया, जिसके द्वारा रावण की हत्या

वृत्तान्तो का समन्वय किया गया है। सीता रावण और मन्दोदरी की पुत्री थी और मिथिला मे गाडी गई। जिस दिन जनक की रानी से भामडल उत्पन्न हुआ और एक देव द्वारा उठा लिया गया था उसी दिन एक कृषक ने जनक को वह मजूषा दे दी जिसमे सीता पडी थी।

हुई ।'[1]

४१४ भारत के निकटवर्ती देशो की रामकथाओ मे इससे मिलती-जुलती कथाएँ पाई जाती है। **तिब्बती और खोतानी रामायणो** मे (जो सम्भवत नवी शताब्दी के है) रावण की पुत्री अपनी जन्मकुडली के कारण परित्यक्त की जाती है और उसे एक पेटिका मे रखकर जल मे फेक दिया जाता है। किन्तु जनक के स्थान पर तिब्बती ग्रथ के अनुसार एक कृषक तथा खोतानी ग्रन्थ के अनुसार एक ऋषि उस कन्या की रक्षा और भरण-पोषण करते है।

४१५ जावा के **सेरत काड** मे भी रावण की महिषी एक पुत्री को जन्म देती है जो श्री का अवतार थी। माता को मालूम हुआ था कि यदि उसकी सतान पुत्री है तो वह भविष्य मे रावण की प्रेमिका बनेगी। इस कारण माता अपनी पुत्री को एक पेटिका मे बन्द करके समुद्र मे फेकवाती हे। बाद मे मतिलि निवासी कल नामक एक ऋषि उम शिशु को पाते है, उसे पालते है और उसका नाम सीता रखते है। समुद्र मे प्रक्षिप्त शिशु की स्थानपूर्ति के लिए चिवीसन (विभीषण) नामक जादूगर बादलो से एक शिशु को खीचता है, इससे उसका नाम मेघनाद रखा जाता है। इस कथा मे 'मतिली' शब्द मिथिला का स्मरण दिलाता है। इस तरह स्पष्ट होता है कि इस वृत्तान्त का सबध वाल्मीकीय सीता-जन्म-कथा से है।

सेरी राम के पातानी पाठ के अनुसार रावण की महिषी एक कन्यका को जन्म देती है जिसके मुँह का तालू काला है। इस कारण ज्योतिषी कन्या को अशुभ मानते है और वह समुद्र मे फेकी जाती है। एक मकर उसे डूबने से बचाता है और मरुतो से प्रार्थना करता है कि वह उसे उठा ले जाये। इस पर मरुत उसे एक ऋषि की वाटिका मे एक पद्म पर रख देते है। ऋषि उसे प्राप्त कर उसका पुत्रीवत् पालन करते है। इस वृत्तान्त पर पद्मजा सीता की कथा का भी प्रभाव पडा है (दे० अनु० ४१८)।

४१६ कम्बोदिया के **रामकेर्त्ति** के अनुसार जनक यमुना के तीर पर यज्ञ के लिए हल चलाते हुए सीता को एक बेडे पर देखते है और उसे प्राप्त करके पुत्री के रूप मे स्वीकार करते है। इस कथा मे इसका निर्देश नही किया गया है कि सीता कहाँ से आई किन्तु एक तो **रामकेर्त्ति** की हस्तलिपिया अपूर्ण है तथा दूसरे **राम कियेन** मे, जो **रामकेर्त्ति** पर निर्भर माना जाता है, लका का स्पष्ट उल्लेख किया गया है। अत **राम-केर्त्ति** की कथा भी सीता-जन्म की कथाओ के प्रस्तुत वर्ग के अतर्गत रखी जा सकती है।

श्याम देश के **राम कियेन** मे सीता की जन्म-कथा का विस्तार-सहित वर्णन किया

---

१ दे० सी० नीबुहर वायाज अन अरावी, भाग २, पृ० २२।

गया है। दशरथ-यज्ञ के पायस का अष्टमाश खाकर मदोदरी एक कन्यका को जन्म देती है जो वास्तव मे लक्ष्मी का अवतार है (दे० ऊपर अनु० ३५७)। विभीषण आदि ज्योतिषियो से यह जानकर कि यह कन्यका मेरे वश का नाश करेगी रावण उसे विभीषण को देता है। विभीषण उसे एक घडे मे रखकर नदी मे फेकवाता है। नदी मे एक कमल उत्पन्न होता है जो घडे का आधार बन जाता है। लक्ष्मी की दिव्य शक्ति से यह घडा जनक के पास पहुँचता है। जनक उस समय वन मे नदी के किनारे पर तप करते है। घडा उठाकर वह उसे वन ले जाते है तथा एक पेड के नीचे खोदकर यो प्रार्थना करते है—'यदि यह कन्या राजा के रूप मे नारायणावतार की रानी बनने वाली है, तो इस स्थान पर एक कमल उत्पन्न हो जो उस घडे को ग्रहण कर सके।' उसी क्षण एक कमल उत्पन्न होता है, जनक उस पर घडा रखकर और उसे मिट्टी से ढककर पुन: तपस्या करने जाते है। इस तपस्या मे सतोष न पाकर जनक १६ वर्ष के बाद अपनी राजधानी लौटने का निश्चय करते है, किन्तु ढूढने पर भी वह उस घडे को कही भी नही पाते है। सेना बुलाई जाती है लेकिन सैनिक भी खोज मे असफल है। अत मे जनक हल चलाने जाते है और घडा अपने आपसे हलपद्धति मे प्रकट होता है। इसमे एक अत्यन्त सुन्दर युवती पद्म पर बैठी हुई दिखाई पडती है। सीता से उत्पन्न होने के कारण उसका नाम सीता रखा जाता है (दे० अध्याय १०)। इस मिश्रित वृत्तान्त मे गुणभद्रकृत उत्तर-पुराण तथा हिंदेशिया की सीता-जन्म की कथाओ के समन्वय का प्रयत्न किया गया है तथा साथ-साथ पद्मजा सीता के वृत्तान्त का भी सहारा लिया गया है।

४१७ श्याम के **रामजातक** तथा **पालक पालाम** मे सीता को इद्राणी का अवतार माना गया है। **रामजातक** के अनुसार रावण ने इद्र का रूप धारण कर इद्राणी को धोखा दिया। प्रतिकार के उद्देश्य से वह मन्दोदरी के गर्भ से जन्म लेती है। विभीषण के परामर्श के अनुसार शिशु को त्यक्त किया जाता है और एक ऋषि उसे प्राप्त करके उसका पालन-पोषण करते है। **पालक पालाम** मे रावण इद्र के यहा इन्द्रजाल की शिक्षा ले रहा था। इद्राणी ने सीता के रूप मे जन्म लेकर अपने पिता रावण पर छुरी का प्रहार किया, इस पर बालिका को बेडे पर रखकर समुद्र मे बहाया जाता है तथा किसी टापू पर रहने वाले ऋषि उसको पुत्रीवत् पालते हैं।

(आ) पद्मजा सीता

४१८ क्षेमेद्र-कृत **दशावतार-चरित** मे सीता के जन्म की एक सर्वथा भिन्न कथा वर्णित है। रामायण की भूमिजा सीता की कथा इसमे स्वीकृत है, साथ ही सीता और लक्ष्मी का अभेद भी। लक्ष्मी के अनेक नामो मे एक नाम पद्मा है और इस नाम

ने सम्भवत पद्मजा सीता की कथा की आधारभूमि तैयार की हो।

रावण एक विशिष्ट स्थान पर बार-बार जाता है। वह आरम्भ मे वहाँ एक पर्वत देखता है, तत्पश्चात् नगर देखता है, फिर जगल देखता है, उसके बाद एक विस्तृत गड्ढा और अत मे कमलयुक्त एक सुन्दर सरोवर। वहा एक लिंग स्थापित कर रावण सरोवर के कमलो से शिव की उपासना करता है। एक कनकपद्म पर उसे एक कन्यका दृष्टिगत होती है जो लक्ष्मी ही है। वह उसे पुत्री के रूप मे ग्रहण कर लका ले आता है और मदोदरी को दे देता है। नारद एक दिन मदोदरी के यहा पहुँचते है और उसकी गोद मे उस कन्यका को देखकर कहते है कि यह कन्या बाद मे रावण की प्रेमपात्री बनेगी (**कन्या भविष्यति अभिलाषभूमि चपलेंद्रस्य**)। यह सुनकर मदोदरी उस कन्यका को स्वर्ण पेटिका मे बद करके किसी दूर देश मे गाड आने का आदेश देती है। यज्ञ के लिए स्वर्ण हल चलाते हुए जनक उसे प्राप्त करते हैं (दे० ७०-१०४)।

तोरवे रामायण (१, १६) का निम्नलिखित वृत्तान्त सभवत इस कथा से प्रभावित हुआ है। हल जोतते समय जनक ने पृथ्वी के नीचे कमलो का एक सरोवर पाया तथा वहाँ एक सुवर्ण पद्म पर विराजमान एक शिशु को देखा। इस अलौकिक दृश्य से भयभीत होकर जनक लक्ष्मी के इस पवित्र स्थान को छोड देने की बात सोच रहे थे कि नारद आ पहुँचे। मुनि ने जनक को यह आदेश दिया—"सीता नाम रखकर इस शिशु का पालन करो, विष्णु भी अवतार लेने वाले है और सीता को पत्नीस्वरूप ग्रहण करेगे। समय आने पर तुम इसके स्वयवर का आयोजन करना तथा शिवधनुष चढाने वाले को इसका पति घोषित करना।"

४१९ सीता की उत्पत्ति की यह कथा बहुत प्रचलित नही है। फिर भी **सेरीराम** के पातानी पाठ तथा **राम कियेन** के वृत्तान्तो पर इसका प्रभाव पडा है। इसके अतिरिक्त वाल्मीकि रामायण के टीकाकार गोविदराज के पाठ मे भी यह पाई जाती है। उसके अनुसार वेदवती एक पद्म मे पुन उत्पन्न होती है। रावण उसे पद्म पर बैठे हुए देखता है और अपने यहाँ ले जाता है। एक लक्षणज्ञ मत्री उसे चेतावनी देता है कि वह कन्या उसकी मृत्यु का कारण बनेगी। यह सुनकर रावण उसे समुद्र मे फेक देता है। कन्या बच जाती है और जनक द्वारा पाई जाती है।[1]

(इ) रक्तजा सीता

४२० सीता-जन्म की अनेक अर्वाचीन कथाओ मे सीता ऋषियो के रक्त से

---

१ दे० रामायणम्। गुजराती प्रिंटिंग प्रेस, उत्तर काड, सर्ग १७, श्लोक ३३ के बाद का प्रक्षेप।

उत्पन्न मानी जाती हे । **अद्भुत रामायण** मे इस कथा का प्रथम तथा विस्तृत वर्णन मिलता है (दे० सर्ग ८) ।

रावण दिग्विजय करते-करते दडकारण्यवासी ऋषियो से राजकर लेता है। द्रव्य के अभाव मे वे रावण को रक्त की कुछ बूँदे प्रदान करते है जिन्हे ऋषि गृत्समद के पात्र मे एकत्र किया जाता है । उस पात्र मे कुश का किंचित् रस था जिसमे गृत्समद के मत्रो के फलस्वरूप लक्ष्मी विद्यमान थी । रावण उस पात्र को लका ले जाता है और मन्दोदरी को उसे यह कह कर दे देता है 'इसमे तीव्र विष भरा है ।' कुछ समय बाद रावण दूसरी विजययात्रा के लिए चला जाता है । यह सुनकर कि रावण परस्त्रियो के साथ रमण करता है मन्दोदरी आत्महत्या के विचार से उस रक्त का पान कर लेती है और गर्भवती हो जाती है । इस पर वह तीर्थयात्रा के लिए निकलती है और गर्भपात करके कुरुक्षेत्र मे भ्रूण गाड देती है । बाद मे जनक के यज्ञ के लिए वहाँ हल जोतते समय एक कन्या भूमि से निकलती है । जनक उसे पुत्रीवत् ग्रहण कर उसका नाम सीता रखते है ।

४२१ उपर्युक्त कथा का निर्देश सिहल द्वीप की रामकथा मे भी मिलता है ।[1] भारत मे इसके भिन्न-भिन्न रूप पाए जाने है । एक कथा के अनुसार मन्दोदरी केवल जिज्ञासा से प्रेरित होकर कतिपय रक्तबिंदुओ का पान कर लेती है और फलस्वरूप बाद मे एक कन्या को जन्म देती है । रावण के कोप की आशका से वह उस शिशु को उसी रक्त पात्र मे रखकर समुद्र मे छोड देती है । जनक के राज्य मे पहुँचकर कन्या कृषको द्वारा जनक के पास ले जाई जाती है ।[2]

उत्तरभारत की एक अन्य कथा इस प्रकार है । जनक ने महादेव के धनुष के प्रभाव से रावण को कई बार पराजित किया था । अद्भुत रामायण के वृत्तान्त के अनुसार रावण राजस्व के स्थान पर ऋषियो का रक्त लेता है । इस पर ऋषि शाप देते है कि इस रक्त से तुम्हारा नाश होगा । रावण उस शाप की अवज्ञा करता है और उस रक्त को एक घडे मे रखकर उसे लका ले जाता है । उस समय से लका राज्य मे अनावृष्टि आदि अनिष्ट घटित होते हे । शास्त्री रावण से कहते है कि जब तक यह रक्त लका मे विद्यमान हे विपत्तियो का अन्त नही होगा । यह सुनकर रावण जनक से प्रतिकार लेने के उद्देश्य से उस घडे को मिथिला मे गडवाता है । अब वहाँ भी वे ही अनिष्ट घटित होने लगते है । मन्त्री राजा को रानी के साथ जाकर हल जोतने का परामर्श देते है । ऐसा करते हुए जनक उस घडे को प्राप्त करने है जिसमे ऋषिरक्त से उत्पन्न

---

१ दे० इ० ए० भाग ४५, सप्लेमेट ।

२ दे० सेक्रेड बुक्स ऑव दि हिन्दूस, भाग २६, पृ० २३९ ।

सीता दिखलाई पडती है । इसके बाद सब अनर्थ शात हो जाते है (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० १३) । अन्यत्र भी इसका उल्लेख किया गया है कि मिथिला मे रक्त गाडा गया था, कन्या नही ।[1]

(ई) अग्निजा सीता

४२२ लका के साथ सीता के सम्बन्ध का अतिम रूप **आनन्द रामायण** मे उपलब्ध है । सीता-जन्म का यह वृत्तान्त वेदवती की कथा पर आधारित प्रतीत होता है । कठोर तपस्या के उपरान्त राजा पद्माक्ष ने लक्ष्मी को पुत्रीरूप मे प्राप्त किया था और उसका नाम पद्मा रखा था । पद्मा के स्वयवर के अवसर पर युद्ध हुआ और उसका पिता पद्माक्ष मारा गया । यह देखकर पद्मा ने अग्नि मे प्रवेश किया । एक दिन वह अग्निकुड से निकलकर रावण द्वारा देखी जाती है, जिस पर वह शीघ्र ही अग्नि मे प्रवेश करती है । किन्तु रावण अग्नि को बुझा देता है और उसकी राख मे पाच दिव्य रत्न देखकर उन्हे एक पेटिका मे रख देता है और लका ले जाता है । लका मे कोई भी उस पेटिका को उठा नही सकता है । उसे खोला जाता है और उसमे एक कन्यका मिलती है । मदोदरी के परामर्श से यह पेटिका मिथिला मे गाड दी जाती है । बाद मे उसे एक शूद्र पाता है जो एक ब्राह्मण के लिए खेती कर रहा था । वह ब्राह्मण जनक को वह पेटिका प्रदान करता है और उसे खोलकर तथा उसमे एक कन्या को देखकर जनक उसे पुत्रीरूप मे स्वीकार करते हैं ।[2]

(उ) फल तथा वृक्ष से उत्पन्न

४२३ दक्षिण भारत के एक वृत्तान्त के अनुसार लक्ष्मी एक फल से उत्पन्न होती हैं और वेदमुनि नामक एक ऋषि द्वारा उनका पालन-पोषण होता है । उनका नाम सीता है और बाद मे वह समुद्रतट पर तपस्या करने जाती है । उनके सौदर्य के विषय मे सुनकर रावण उनके पास पहुँचता है जिस पर वह अग्नि मे प्रवेश कर भस्मीभूत हो जाती हैं । राख को एकत्र कर वेदमुनि उसे एक स्वर्णयष्टि मे बद कर देता है । बाद मे यह

---

१ दे० सेक्रेड बुक्स ऑव दि हिन्दूस, वही, दूसरी कथा । बिर्होर रामकथा मे भी उपर्युक्त कथा का निर्देश मिलता है, क्योकि इसमे कहा गया है कि अनावृष्टि के निवारण के लिए हल जोतते हुए जनक को सीता मिल गई थी ।

२ दे० आ० रा० १, ३, १८८-२७५ । पाश्चात्य वृत्तान्त न० ६ मे भी वही कथा पाई जाती है लेकिन वह अपूर्ण रह गई । **भावार्थ रामायण की अग्निजा सीता विषयक कथा आनन्द रामायण पर निर्भर है (दे० १, १५) ।**

यष्टि रावण के पास पहुँच जाती है जो उसे अपने कोषागार मे रख देता है। कुछ समय के उपरान्त उस यष्टि से आवाज सुनाई पडती हे। उमे खोला जाता है और उसमे एक लघु कन्यका के रूप मे परिणत सीता दिखाई देती है। ज्योतिषी कहते हे कि यह कन्या सिंहल के नाश का कारण सिद्ध होगी, इस कारण रावण उसे एक स्वर्ण मजूषा मे बद करके समुद्र मे फेक देता हे। यह मजूषा लहरो पर तैरती हुई बगाल की ओर बह जाती है और गगा मे प्रविष्ट होकर एक खेत तक पहुँच जाती है। वहाँ कृपक उसे देखते ह और अपने राजा को दे देते है।[1]

इस कथा मे वेदवती के वृत्तान्त का प्रभाव स्पष्ट है। जिम फल से सीता का जन्म माना गया है वह अवश्य सीताफल ही है।

४२४ अच्युतानद के **हरिवश** (पृ० ६६०) तथा दक्षिण भारत के एक वृत्तान्त मे द्रौपदी की उत्पत्ति की कथा का अनुकरण किया गया है। **महाभारत** मे द्रौपदी वेदी से उत्पन्न मानी गई है (दे० १, १५५, ४१, **कुमारी चापि पाचाली वेदिमध्यात्समुत्थिता**)। वाल्मीकि रामायण के उदीच्य पाठ की जन्मकथा ऊपर (अनु० ४०६) दी गयी है। इसके अतिरिक्त यह अर्धश्लोक भी मिलता है—**अयोनिजा समुत्पन्ना वेदीमध्यात् सुमध्यमा** (गौ० रा० १, ७३, २१, प० रा० १, ६७, २१)। अच्युतानन्द के अनुसार सीता जनक की पुत्रेष्टि के अग्निकुण्ड से उत्पन्न हुई थी। दक्षिण भारत की कथा इम प्रकार है। योगी का रूप धारण कर ईश्वर लका मे निवास करते है और उसमे अनेकानेक उत्पात करते है। बाद मे वह नगर के एक फाटक पर पहरा देना स्वीकार करते है। वहाँ वह बहुत राख एकत्र करते हैं जिसमे से एक बहुत ऊँचा पेड उत्पन्न होता है। इसके बाद योगी चले जाते है और रावण उस पेड को चार टुकडो मे काटकर समुद्र मे बहा देने का आदेश देता है। एक टुकडा जनक के राज्य मे पहुँचता है। मत्री उसे यज्ञ की अग्नि मे जलाने का परामर्श देते है। ऐसा किये जाने पर सीता एक धनुष के साथ-साथ अग्नि से उत्पन्न हो जाती है। धनुष मे लिखा है—जो धनुष तोडेगा उसी के साथ इस कन्या का विवाह होगा (दे० पा० वृ० न० १)।

४२५ **ब्रह्मचक्र** (दे० अनु० ३२८) की कथा मे भी यह माना गया है कि सीता एक वृक्ष से उत्पन्न हुई थी। रावण की वाटिका के एक वृक्ष से किसी दिन एक कन्यका पैदा हुई। माली उसे रावण के पास ले गया। रावण को देखकर कन्या ने यक्षिणी का रूप धारण कर लिया। इस पर रावण ने उसे घडे मे बन्द कर समुद्र मे बहा दिया। वह घडा कन्नक नामक नगर के पाम समुद्रतट पर जा पहुँचा। वहाँ के राजा की कोई सन्तान नही थी, किसी ऋषि ने उस राजा को उस घडे का रहस्य बता दिया।

---

१ दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० १६, भाग १३, पृ० १३६।

राजा ने जाकर उसे प्राप्त किया तथा उसमे से कन्या को निकालकर अपनी ही पुत्री की तरह उसका पालन-पोषण किया ।

(ऊ) उपसहार

४२६ सीता जन्म के ये समस्त विभिन्न रूप **वाल्मीकि रामायण** मे वर्णित भूमिजा सीता के अलौकिक जन्म की घटना को स्वीकार करते है । इन वृत्तान्तो पर वेदवती की कथा की प्राय गहरी छाप पाई जाती है, जिनमे यह प्रभाव स्पष्ट नही है वे सीता तथा लक्ष्मी के अभेद को स्वीकार करते हैं और उनकी उत्पत्ति वाल्मीकि के बहुत बाद ही सम्भव हुई होगी । अत वाल्मीकि रामायण मे वर्णित भूमिजा सीता की जन्मकथा और वेदवती के वृत्तान्त को ही सबसे प्राचीन और अन्य जन्मकथाओ का बीज तथा आधार मानना सर्वथा युक्तिमगत प्रतीत होता है । वेदवती का वृत्तान्त भूमिजा सीता की जन्मकथा की एक पूर्तिमात्र है । सम्भवत सीता की कुल परम्परा-सम्बन्धी तथ्यो के अभाव की पूर्ति करने के उद्देश्य से भूमिजा सीता के वृत्तान्त की सृष्टि की गई हो । सम्भव है कि सीता कृषि की अधिष्ठात्री देवी के व्यक्तित्व का प्रभाव भूमिजा सीता के वृत्तान्त पर पडा है । किन्तु अधिक सम्भव यह है कि सीता के नाम के कारण (उसका अर्थ लागलपद्धति है) भूमिजा सीता का वृत्तान्त उत्पन्न हुआ है ।[1]

घ । दशरथात्मजा

४२७ **दशरथ जातक** मे राम, लक्ष्मण और सीता दशरथ की महिषी की सन्तान हैं । उस महिषी के मरने के पश्चात् ही नवीन पटरानी भरत को जन्म देती है । सर्वप्रथम डॉ० ए० वेबर ने और उनके बाद बहुत से विद्वानो ने **दशरथ जातक** को रामकथा का प्राचीनतम रूप माना है । इस समस्या का पूरा विश्लेषण निबन्ध के छठे अध्याय मे किया गया है । निष्कर्ष यह निकला है कि **दशरथ जातक** का कथानक या तो **रामायण** पर ही अथवा **रामायण** से मिलती-जुलती किसी अन्य रामकथा पर निर्भर है । प्रस्तुत विश्लेषण से स्पष्ट है कि सीता-जन्म-सम्बन्धी कथाएँ जो **वाल्मीकि रामायण** से भिन्न है और विशेष रूप से वे कथाएँ जिनमे रावण सीता का पिता माना गया है इन सब कथाओ का आधार **वाल्मीकि रामायण** का वेदवती का वृत्तान्त ही है । अत उन विद्वानो का यह मत जिसके अनुसार सीता प्रथम दशरथ की पुत्री, बाद

---

१ अत मे सिहलद्वीप की एक कथा का उल्लेख भी आवश्यक है जिसके अनुसार स्नान करते समय एक देवी के वस्त्र चुरा लिए गये थे, राम ने उसे अन्य वस्त्र देकर उससे विवाह कर लिया । दे० इ० ए० भाग ४५, सप्लेमेट ।

मे रावरण की पुत्री और अन्त मे अयोनिजा मानी गई है सर्वथा निर्मूल सिद्ध होता है।[1]

४२८ अन्त मे सीता जन्म का एक अन्य रूप भी प्रस्तुत करना है जिसमे वह दशरथ की पुत्री मानी गई है। यह रूप हिंदेशिया की निम्नलिखित रामकथाओ मे मिलता है जावा का **राम केलिंग,** मलय का **सेरी राम** तथा **हिकायत महाराज रावण**। इसका अन्यत्र कही भी उल्लेख नही किया गया है, कथा इस प्रकार है

दथरथ की पटरानी मन्दोदरी के सौदर्य का वरान सुनकर रावरण दशरथ के पास जाता है और मदोदरी की याचना करता है। मदोदरी यह देखकर कि उसका पति उसे दे देने को समुद्यत सा हो रहा है अपने भवन मे जाती है और जादू के द्वारा एक दूसरी मदोदरी उत्पन्न करती है जिसे रावरण ले जाता है। बाद मे वास्तविक मदोदरी से सच वृत्तान्त सुनकर दशरथ घबडाते है। यह नई मदोदरी अक्षतयोनि है जिससे रावण को धोखे का पता चलेगा। अनन्तर दशरथ लका जाते है और छिपकर उस नवीन मदोदरी से मिलते है। बाद मे रावरण-मदोदरी का विवाह मनाया जाता है और मदोदरी के एक पुत्री उत्पन्न होती है। उसकी जन्मकुडली से पता चलता है कि उसका पति रावरणहता सिद्ध होगा, अत उसे पेटिका मे बन्द करके समुद्र मे फेका जाता है। महर्षि कली उसे पाते है और उसका पालन-पोषण करते है।

ये महर्षि कली जावा के **सेरत काड** के ऋषिकल ही प्रनीत होते है, जिसको वहाँ मतिलि (मिथिला) का निवासी बताया गया है। दशरथ की पत्नी के रूप मे मदोदरी का उल्लेख अन्यत्र कही भी नही मिलता। यह असम्भव नही है कि ऐसी कल्पना **दशरथ जातक** के कारण उत्पन्न हुई हो जिसमे सीता को दशरथ की पुत्री माना गया है। फिर भी ऐसा प्रतीत होता है कि यह वृत्तान्त रावरण द्वारा पावती के स्थान पर मदोदरी को प्राप्त करने की कथा का विकृत रूप है (दे० आगे अनु० ६५०)।

इस कथा का उत्तरार्द्ध जावा के **सेरत काड** से और उपर्युक्त अन्य कथाओ से मिलता-जुलता है, जिनमे सीता रावरण-मदोदरी की पुत्री मानी गई है।

---

१ दे० डब्लू० स्टुटरहाइम राम-लेगेन्डन उड राम-रेलिप्स इन इडीनेजियन, पृ० १०५। जे० चिलुस्की इ० हि० क्वा० भाग १५, पृ० २८६। उडीसा मे वहाँ के मुख्य इष्टदेवताओ के कारण सीता को सुभद्रा से अभिन्न माना गया है (दे० ऊपर अनु० ३६२)। इसमे दशरथ जातक का प्रभाव देखना **अनावश्यक है।**

अध्याय १५

अयोध्याकांड

१—वाल्मीकि रामायण का अयोध्याकांड

४२६ क । अयोध्याकांड की कथावस्तु

(१) राम का निर्वासन (सर्ग १-४४)

पुनरावृत्ति भरत और शत्रुघ्न का अश्वपति के यहाँ रहना, राम की लोकप्रियता और गुणकथन (सग १, १-३४)।

राम के युवराज्याभिषेक की तैयारी (मर्ग १, ३५ से सर्ग ६ तक)।

मथरा-कैकेयी-सवाद—दो वर माँगने के विषय मे मथरा की सफलता (सर्ग ७-९)।

दशरथ कैकेयी-सवाद—दशरथ द्वारा दो वरो की स्वीकृति (मर्ग १०-१४)।

दशरथ के पास राम का आगमन—दशरथ के सम्मुख कैकेयी का समाचार-कथन (सर्ग १५-१९)।

राम-कौशल्या-सवाद—लक्ष्मण और कौशल्या द्वारा निर्वासन का विरोध। राम का उनको समझाना। कौशल्या द्वारा विदा और मगलाकाक्षा (मर्ग २०-२५)।

राम-सीता-सवाद—वन की भयकरता से राम का सीता को भयभीत करना, अत मे साथ चलने की स्वीकृति देना (सर्ग २६-३०)। लक्ष्मण का आग्रह और राम द्वारा साथ ले चलने की स्वीकृति (सर्ग ३१)।

प्रस्थान—दान-वितरण, राम का राजा के पास जाना (सर्ग ३२-३४), सुमत्र के द्वारा कैकेयी की भत्सना (सर्ग ३५), दशरथ का राम के साथ सेना भेजने का प्रस्ताव, कैकेयी की आपत्ति (सर्ग ३६)। कैकेयी द्वारा दिये हुए वल्कल का धारण करना (मर्ग ३७)। दशरथ द्वारा कैकेयी की भर्त्सना (सर्ग ३८)। सुमत्र का रथ लाना, कौशल्या द्वारा सीता को शिक्षा, विदा (सर्ग ३९-४०)। विलाप-कलाप, दशरथ की मूर्च्छा, कौशल्या का विलाप और सुमित्रा का सान्त्वना देना (सर्ग ४१-४४)।

(२) चित्रकूट की यात्रा (सर्ग ४५-५६)

अयोध्यानिवासी—उनका रथ के साथ जाना, तमसा के पास रात्रि-निवास, उनके सोते समय तीनो का सुमत्र के साथ प्रस्थान (सर्ग ४५-४६)। लोगो का विलाप और अयोध्या लौटना (मर्ग ४७-४८)।

गुह—वेदश्रुति और गोमती के पार गुह का मिलन (मर्ग ४९-५०)। लक्ष्मण और गुह

का राम का गुणकथन करते हुए रात्रि व्यतीत करना (सर्ग ५१)। सुमंत्र को विदा करके गुह की नौका पर गगा पार करना (सर्ग ५२)।

भरद्वाज—राम का विलाप और लक्ष्मण की सान्त्वना, यमुना और गगा के सगम पर भरद्वाजाश्रम मे जाना, भरद्वाज की चित्रकूट-निवास की मत्रणा (सर्ग ५३-५४)। यमुना को पार करना, चित्रकूट पहुचना, वाल्मीकि से मिलन, लक्ष्मण द्वारा एक पर्णशाला का निर्माण (सर्ग ५५-५६)।

(३) दशरथ-मरण (सर्ग ५७-७८)

सुमंत्र का लौटना—सुमंत्र से राम का सदेश सुनकर दशरथ की मूर्च्छा और विलाप। सुमंत्र द्वारा कौशल्या को सान्त्वना (सर्ग ५७-६०)।

दशरथ-मरण—कौशल्या की भर्त्सना से दशरथ का मूर्च्छित होना (सर्ग ६१-६२)। दशरथ द्वारा अंधमुनि-पुत्र-वध की कथा, दशरथ-मरण, विलाप (सर्ग ६३-६६)।

भरत का राज्य अस्वीकृत करना—भरत का बुलाया जाना और अयोध्या-आगमन, कैकेयी द्वारा राज्य-ग्रहण का अनुरोध। भरत की भर्त्सना और मत्रियो के सम्मुख राज्य को अस्वीकृत करना तथा उनका कौशल्या को अपने निरपराधी होने का आश्वासन (सर्ग ६७-७५)।

दशरथ की अन्त्येष्टि—भरत द्वारा अन्त्येष्टि-क्रिया और दान-वितरण। भरत और शत्रुघ्न का विलाप, शत्रुघ्न द्वारा मथरा की ताडना (सर्ग ७६-७८)।

(४) भरत की चित्रकूट-यात्रा (सर्ग ७९-११५)

प्रस्थान—भरत का पुन राज्य को अस्वीकार करना और यात्रा की आज्ञा देना, सभा मे वसिष्ठ का भरत को समझाना परन्तु उनका न मानना, प्रस्थान और शृगवेरपुर आगमन (सर्ग ७९-८३)।

गुह और भरद्वाज—भरत द्वारा गुह का सदेह-निवारण, गुह का लक्ष्मण की वार्ता का उल्लेख करना तथा राम का शयन-स्थल दिखलाना (सर्ग ८४-८८), गगा पार करना। भरद्वाज का तप शक्ति से आतिथ्य-सत्कार (सर्ग ८९-९२)।

चित्रकूट आगमन—चित्रकूट को देखकर भरत का सेना रोकना (सर्ग ९३)। राम द्वारा चित्रकूट और मदाकिनी की शोभा का वर्णन, सेना को निकट आते देख लक्ष्मण का आक्रोश और राम का उनको शात करना (सर्ग ९४ ९७)। भरत और शत्रुघ्न का राम के निकट जाना, राम का कुशल-प्रश्न (सर्ग ९८-१००)।

राम द्वारा प्रत्यागमन की अस्वीकृति—भरत का दशरथ-मरण का समाचार देना और राम से राज्य-ग्रहण का अनुरोध। राम का अस्वीकार करना (सर्ग १०१-१०२)। राम का विलाप और दशरथ के लिए जल-क्रिया करना (सर्ग १०३)। माताओ का आना (सर्ग १०४)। सभा मे भरत का अनुरोध और राम की अस्वीकृति (सर्ग

१०५-१०७) । जाबालि-वृत्तान्त (सर्ग १०८-१०९), वसिष्ठ का आग्रह, भरत द्वारा प्रायोपवेशन की धमकी । लौटने पर राज्यग्रहण का राम द्वारा आश्वासन (सर्ग ११०-१११) । ऋषियो की आकाशवाणी सुनकर भरत का पादुकाएँ लेकर वापस जाना (सर्ग ११२) ।

भरत का प्रत्यागमन—भरद्वाज से मिलकर भरत का जन-शून्य अयोध्या मे लौटना । राज्यसिहासन पर पादुकाएँ स्थापित कर भरत का नदिग्राम मे निवास (सर्ग ११३-११५) ।

(५) राम का चित्रकूट से प्रस्थान

राक्षसो के उपद्रव से तपस्वियो का चित्रकूट-त्याग और राम से भी आग्रह, राम का अस्वीकार करना (सर्ग ११६) । बाद मे चित्रकूट त्याग कर राम का अत्रि के आश्रम मे जाना । सीता-अनसूया-सवाद, अनसूया का माला-वस्त्र-आभूषण-अगराग प्रदान करना, सीता का अपना जीवन-वृत्तान्त कहना (सर्ग ११७-११८) । प्रस्थान (सर्ग ११९)।

ख । अयोध्याकाड का विश्लेषण

तीनो पाठो मे विभिन्नता

४३० कथानक के दृष्टिकोण से अयोध्याकाड के तीन पाठो मे कोई महत्त्वपूर्ण अन्तर नही पाया जाता है । निम्नलिखित वृत्तात केवल दाक्षिणात्य पाठ से मिलते है

(१) कैकेयी की माता के अपने पति द्वारा त्यक्त किये जाने की कथा (सर्ग ३५) ।

(२) प्रात राम को न देखकर अयोध्यावासियो का विलाप (सर्ग ४७) ।

(३) वाल्मीकि से राम, सीता तथा लक्ष्मण की भेट (सर्ग ५६, १६-१७) ।

इसके अतिरिक्त दाक्षिणात्य पाठ का ९८ वाँ सर्ग गौडीय पाठ मे नही मिलता तथा १०९ वे सग का पश्चिमोत्तरीय पाठ मे अभाव है ।

गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठो मे एक ब्राह्मण द्वारा कैकेयी को शाप दिये जाने का उल्लेख है, जिसके फलस्वरूप **शापदोषमोहिता** कैकेयी ने मथरा पर विश्वास किया था (गौ० रा० ८, ३३-३७ तथा प० रा० ११, ३७-४१) ।

केवल पश्चिमोत्तरीय पाठ मे कैकेयी के विद्याबल प्राप्त करने की कथा मिलती है, जिससे वह दशरथ को बचाने मे समर्थ हुई थी (प० रा० ११, ४२ आदि) ।

प्रक्षेप

४३१ अयोध्याकाड का कोई भी महत्वपूर्ण कथाश प्रक्षिप्त नही है । निम्नलिखित प्रक्षेप उल्लेखनीय है

(१) प्रथम सर्ग के प्रारम्भिक श्लोक (१-३५) बालकाड के अतिम श्लोको की

पुनरावृत्ति मात्र होने के कारण प्रक्षिप्त माने जाते है ।

(२) डॉ० याकोबी का अनुमान है कि आदिरामायण मे राम के प्रस्थान के अनन्तर उनकी चित्रकूट तक की यात्रा का वर्णन किया गया था । अत सम्भव है कि सर्ग ४१-४६ प्रक्षिप्त हो। सर्ग ५० के प्रारम्भ से पता चलता है कि राम उस समय अयोध्या के निकट ही थे ।

(३) ऐसा प्रतीत होता हे कि अधमुनि-पुत्र-वध का प्रसग आदिरामायण के पूर्व ही प्रचलित था । अत बहुत सभव है कि सर्ग ६३-६४ की अधिकाश सामग्री प्रक्षिप्त हो (दे० आगे अनु० ४३३) ।

(४) दशरथ की मृत्यु से लेकर भरत के चित्रकूट मे आगमन तक की कथा (सर्ग ६६-६३) अपेक्षाकृत अधिक विस्तारपूर्वक वर्णित है तथा इसमे बहुत पुनरावृत्तियाँ भी पाई जाती है । अत यह स्पष्ट है कि यह अश वाल्मीकिकृत रामायण मे इतना विस्तृत नही था ।

(५) १०० वाँ सर्ग स्पष्टतया प्रक्षिप्त है । इसमे राम भरत से उनके राज्य के विषय मे बहुत से प्रश्न पूछते है मानो भरत दीघकाल तक शासन कर चुके हो, अनन्तर १०१ वे सर्ग के प्रारम्भिक श्लोक मे कहा गया है कि राम प्रश्न पूछने लगे (प्रष्टु समुपचक्रमे) । वास्तव मे १००वे सर्ग की सामग्री महाभारत (दे० सभापर्व, अध्याय ५०) से उद्धृत की गयी है, जहाँ नारद युधिष्ठिर को सबोधित करते है ।

(६) जाबालि का वृत्तान्त भी निश्चित रूप से प्रक्षिप्त है । राम के अयोध्या न लौटने के दृढ सकल्प

प्रवेक्ष्ये दडकारण्यमहमप्यविलम्बयन ।
आभ्या तु सहितो वीर वैदेह्या लक्ष्मणेन च ।। (१०७, १६)

के पश्चात् भरत के प्रत्युपवेशन का प्रसग आना चाहिए

एवमुक्तेन रामेण भरत प्रत्यनन्तरम् ।
उवाच विपुलोरस्क सूत परमदुर्मना ।।१२।।
इह तु स्थण्डिले शीघ्र कुशानास्तर सारथे ।
आर्यं प्रत्युपवेक्ष्यामि यावन्मे सप्रसीदति ।।१३।। (सर्ग १११)

प्रचलित पाठो मे राम के सकल्प के पश्चात् जाबालि लोकायत दर्शन का प्रतिपादन करने लगते है (सर्ग १०८) । राम जाबालि को प्रत्युत्तर देकर अपना सकल्प पुन प्रकट करते है (सर्ग १०६ १-२६) । इसके अनन्तर राम के प्रत्युत्तर का साराश उपजाति छदो मे दोहराया जाता है (सर्ग १०६,३०-३६), इस अश मे, जो केवल दाक्षिणात्य पाठ मे मिलता है, राम बुद्ध को चोर और नास्तिक कहते है । यह समस्त १०६ वाँ सर्ग पश्चिमोत्तरीय पाठ मे नही मिलता । इसके अनन्तर वसिष्ठ राम की वशावली

सुनाकर राज्यभार स्वीकार करने के लिए राम से अनुरोध करते है (सर्ग ११०)।

(७) डॉ० याकोबी के अनुसार चित्रकूट से प्रस्थान करने के पश्चात् राम आदि के अत्रि के आश्रम मे जाने का वृत्तान्त प्रक्षिप्त है (सर्ग ११७, ५ से काड के अत तक)। प्रामाणिक रामायण मे बालकाड की घटनाओ का निर्देश नही मिलता, लेकिन सीता-अनसूया-सवाद के अनन्तर लक्ष्मण-उर्मिला के विवाह का उल्लेख किया गया है, यद्यपि अरण्यकाड मे लक्ष्मण को अविवाहित कहा गया है। इसके अतिरिक्त इस अश मे अयोनिजा सीता का तथा दक्ष-यज्ञ के अवसर पर वरुण के देवरात को धनुष देने का उल्लेख मिलता है। अन्यत्र देवताओ द्वारा देवरात को धनुष-दान का उल्लेख किया गया है।

(८) उपर्युक्त प्रक्षेपो के अतिरिक्त अन्य स्थलो पर भी परस्पर-विरोधी बाते पाई जाती है, जिससे स्पष्ट है कि आदि-कवि की रचना अपने मूल रूप मे हमारे सामने नही है। उदाहरणार्थ, राम कौशल्या से कहते है कि मै वन मे मास का सेवन नही करूँगा

कन्दमूलफलैर्जीवन्हित्वा मुनिवदामिषम् (सर्ग २०, २९)

लेकिन आगे चलकर राम के मास खाने का कई स्थलो पर उल्लेख किया गया है (दे० अयोध्या काड ५२, १०२, ५४, १७, ५५, ३२, ९६, १-६)।

२—अयोध्याकाण्ड का विकास

४३२ अयोध्याकाण्ड के कथानक का अधिक विकास नही हुआ है। इसकी प्रधान कथावस्तु राम का निर्वासन है, इससे सम्बन्ध रखनेवाली सामग्री तीसरे परिच्छेद मे रखी गई है। यहाँ पर अयोध्याकाण्ड के कुछ अन्य प्रसगो पर विकास की दृष्टि से विचार किया जायेगा।

क। राम की चित्रकूट-यात्रा

पउमचरिय को छोडकर, जहाँ वन-भ्रमण का विस्तृत वर्णन किया गया है (पर्व ३३-४२), राम की इस यात्रा के वर्णन मे अधिक परिवर्तन नही मिलता।

(१) प्रचलित वाल्मीकि रामायण के तीन पाठो के अनुसार दशरथ ने अयोध्या मे ही राम को विदा किया था (द० रा० सर्ग ४२, गौ० रा० सर्ग ४१, प० रा० सर्ग ४५), किन्तु बालकाड के प्रथम सर्ग मे दशरथ दूर तक राम के साथ जाते है—**पौरैरनुगतो दूर पित्रा दशरथेन च** (श्लोक २८)। यह अधिक मौलिक है क्योकि अयोध्याकाण्ड मे भी इसका अवशेष मिलता है—

इत्येव विलपन राजा जनौघेनाभिसवृत।
अपस्नात इवारिष्ट प्रतिवेश पुरोत्तमम्॥

(बडौदा सस्करण ३७, १९)

यह श्लोक गौण पाठ भेदो सहित तीन पाठो मे विद्यमान है (दा० रा० ४२, २२, गौ०

रा० ४१, २०, प० रा० ४५, २१)।

(२) जावा के **रामायण ककविन्** (३, १५) के अनुसार राम ने **सुमन्त्र** को भी अन्य नागरिको के साथ छोड दिया और वह लक्ष्मण तथा सीता के साथ छिपकर वन की ओर चल दिए। **सेरी राम** मे अयोध्या से राम के चले जाने के तुरन्त बाद दशरथ मर जाते है किन्तु राम उनकी अन्त्येष्टि के लिए लौटना अस्वीकार करते है। रात मे राम अपना दिव्य रथ अयोध्या वापस भेजकर सीता और लक्ष्मण के साथ वन की ओर प्रस्थान करते है। प्रात काल जनता राम को न देखकर रथ के चिह्नो पर चलते हुये अयोध्या मे लौटती है।

(३) महाभारत के रामोपाख्यान मे गुह का उल्लेख नही किया गया है। वाल्मीकि रामायण के अनुसार राम चित्रकूट की यात्रा करते समय अपने सखा गुह (निषादो के राजा) के यहाँ पहुँचकर वहा रात बिताते है। गुह लक्ष्मण तथा सुमन्त्र के साथ रात भर सोते हुये राम और सीता की रक्षा करता है तथा अगले दिन नौका मगाकर राम-सीता-लक्ष्मण को गगा के उस पार पहुँचाता है। अनेक परवर्ती रचनाओ म इस स्थान पर केवट का वृत्तान्त रखा गया है और इसी की नोका पर राम गगा पार करते है। **सेरी राम** के अनुसार राम ने बहुत समय तक किकूकन तथा उनकी पत्नी माई रानी सूरी का आतिथ्य-सत्कार ग्रहण किया था। **रामचरितमानस** के अनुसार गुह यमुना तक राम के साथ चला आया था।

राम तथा गुह की मैत्री का वर्णन तथा गुह के पूर्वजन्म की कथा बालकाण्ड के अन्तर्गत रखी गई है (दे० अनु० ३८४)। **अध्यात्म रामायण** (६, १६, १८) तथा परवर्ती रामकथाओ मे राम के अभिषेक के अवसर पर गुह की उपस्थिति का उल्लेख मिलता है।

(४) राम के चरण धोने का अनुरोव करने वाले **केवट** का प्राचीनतम उल्लेख महानाटक मे मिलता है (दे० ३, २०)। उस नाटक मे अहल्योद्धार का वृत्तान्त राम की चित्रकूट-यात्रा के वर्णन मे रखा गया है तथा अहल्योद्धार के अनन्तर ही केवट का प्रसग आ गया है। अधिकाश रचनाओ मे अहल्या के उद्धार की कथा बालकाण्ड मे मिलती है; अत केवट का वृत्ता त भी बहुधा उसी काण्ड के अतर्गत रखा गया है, उदा० अध्यात्म रामायण (१, ६), आनन्द रामायण (१, ३, २४-२८), रामरहस्य (सर्ग ४), कृत्तिवास रामायण (१, ६०)। सारलादास महाभारत (सभापर्व पृ० २१७), बलरामदास रामायण, सूरसागर, रामचरितमानस तथा कवितावली मे महानाटक के अनुसार ही केवट की कथा चित्रकूट यात्रा के अन्तर्गत मिलती है। रामलिगामृत मे इसका वर्णन राम और लक्ष्मण द्वारा सीता की खोज के अन्तर्गत रखा गया है (सर्ग ६)। कहा जाता है कि चान्द्र रामायण मे केवट के पूर्वजन्म की कथा मिलती है (दे० ऊपर अनु० २०२)।

महानाटक (१४, ५७) मे सीता अग्निपरीक्षा के पश्चात् राम का चरणस्पर्श नही करती, उन्हे आशका है कि कही अहल्या की तरह ककण की मणियाँ स्त्रिया न बन जाये—**अहल्यावच् चरणस्पर्शमात्रेण योषितो मा भवन**। रामचरितमानस मे इस प्रकार की कल्पना स्वयवर के प्रसग मे आयी है—**गौतम तिय गति सुरति करि नहिं परसति पग पानि** (१, २६५)।

(५) वाल्मीकि से राम के मिलने जाने का वृत्ता त वाल्मीकीय दाक्षिणात्य पाठ के एक प्रक्षेप मे पाया जाता है। अध्यात्म रामायण मे वाल्मीकि इस अवसर पर रामनाम का महत्व दिखलाने के उद्देश्य से अपनी आत्मकथा सुनाते है (दे० २, ६, ४२-८८), रामचरितमानस मे भी राम और वाल्मीकि की भेट का वर्णन किया गया है।

(६) तुलसीदास ने एक **तापस** की वन्दना तथा सीता के साथ **ग्राम वधूटियो** का सवाद चित्रकूट की यात्रा के वर्णन के अन्तर्गत रखा है। इन दोनो प्रसगो का उल्लेख अन्य रचनाओं मे भी मिलता है। धर्मखण्ड (अध्याय ६८) के अनुसार शिव ब्राह्मण का रूप धारण कर राम से मिलने आते है। आनन्दरामायण (१, ६, ७४) मे भी इसका उल्लेख है कि इद्रादि देवताओ ने मार्ग मे राम का सत्कार किया था। महानाटक (३, १५-१६), कृत्तिवास, सूरसागर, उदारराघव (८, २६) तथा बलरामदास रामायण मे सीता तथा ग्रामवासियो के सवाद का विवरण दिया गया है।

ख। अंधमुनि-पुत्र-वध

४३३ बौद्ध **साम-जातक** मे बनारस के राजा पिलियक द्वारा अन्धे दुकूलक तथा पारिका के पुत्र साम के वध का वर्णन किया गया है (दे० ऊपर अनु० ८४)। इसमे दशरथ का निर्देश नही मिलता, जिससे प्रतीत होता है कि अधमुनि-पुत्र-वध का वृत्तान्त रामकथा से स्वतत्र रूप मे प्रचलित था। **वाल्मीकि रामायण** (सर्ग ६३-६४) मे दशरथ राम के निर्वासन के बाद कौशल्या को अपनी मृत्यु के कारण के विषय मे निम्नलिखित कथा सुनाते है—"मै तुमसे विवाह करने के पूर्व किसी समय रात्रि मे सरयू के तीर पर मृगया खेलने गया था। उस समय एक तपस्वी अपने अन्धे माता-पिता के लिए घडे मे पानी भरने आया। उसे हाथी समझकर मैंने ,उसे शब्दवेधी वाण से आहत किया। समीप आने पर उस तपस्वी ने अपना परिचय दिया और मुझे आश्रम का रास्ता बताकर निवेदन किया कि मै उसके शरीर से वाण निकाल लू। मेरे वाण निकालते ही वह मर गया। तब मैं घडा लेकर उसके माता-पिता के पास आया और दुर्घटना का समाचार सुनाया। उसके माता-पिता के अनुरोध करने पर मैं उन्हे उनके पुत्र के पास ले गया और उन्होने पुत्र की उदकक्रिया को सम्पन्न किया। उसके बाद ही वह दिव्य रूप धारण कर एक विमान पर दिखाई पडा तथा अपने माता-पिता को शीघ्र ही अपने

पास आने का निमत्रण देकर स्वर्ग चला गया। अनन्तर अन्धमुनि मुझे यह शाप देता हुआ अपनी पत्नी के साथ चिता की अग्नि मे प्रवेश कर गया

पुत्रव्यसनज दुःख यदेतन्मम साप्रतम्।
एव त्व पुत्रशोकेन राजन्काल करिष्यसि ॥५४॥ (सर्ग ६४)

रामायण के दाक्षिणात्य पाठ मे उस पुत्र के नाम का कोई उल्लेख नही है, लेकिन अन्य पाठो, अग्निपुराण, रामायणमजरी आदि मे उसका नाम **यज्ञदत्त** रखा गया है (दे० गो० रा० ६६, ६, प० रा० ७०, ६)। आगे चलकर उसके अन्य नाम भी प्रचलित हो गये है—**श्रवण** (आनन्द रामायण १, १, ८८), **श्रवणकुमार** (दे० ब्रह्मपुराण अध्याय १२३) अथवा **श्रावण** (दे० काश्मीरी रा०, भावार्थ रा० आदि), **सिंधु** (दे० पद्मपुराण, गौडीय पाताल खण्ड, अध्याय १४, कृत्तिवास का रामायण, माधवदेव का असमिया बाल-काण्ड), **सुरेचन**,[1] **ताण्डव** (तोरवे रामायण)।

वाल्मीकि रामायण के तीनो पाठो के अनुसार उसकी माता शूद्रा है, केवल गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठ उसके पिता को ब्राह्मण मानते है—**ब्राह्मणेन त्वह जात शूद्राया** (गौ० रा० ६५, ४३)। दाक्षिणात्य पाठ के अनुसार इसका पिता वैश्य ही माना गया है—**शूद्राया वैश्येन जातो नरवराधिप** (दा० रा० ६३, ५१)।

आगे चलकर इसका प्राय उल्लेख किया गया है कि वह ब्राह्मण नही है

द्विजेतरतपस्विसुत (रघुवश ६, ७६)।
न ब्रह्महा त्व (उदारराघव सर्ग १)।
ब्रह्महत्या स्पृशेन्न त्वा वैश्योऽह तपसि स्थित (अध्यात्म रा० २, ७, २७)।

आनन्द रामायण मे भी उसे वैश्य माना गया है (दे० १, १, ८८)।

परवर्ती वृत्तान्तो मे इस कथा को अनेक प्रकार से विस्तार दिया गया है। रघुवश के अनुसार दशरथ ने विवाह के पश्चात् मुनिपुत्र को मारा था और क्योकि उसे उस समय तक पुत्र प्राप्त नही हो सका, उसने मुनि से कहा कि मै आपका शाप वरदान ही समझता हूँ—**शापोऽप्यदृष्टतनयाननपद्मशोभे सानुग्रहो भगवता मयि पातितोऽयम्** (९, ८०)। **रगनाथ रामायण** (२,२२) मे यज्ञदत्त विमान पर से अपने पिता से निवेदन करता है कि वह दशरथ पर क्रोध न करे। **असमिया बालकाण्ड** (अध्याय १५) मे अन्धकमुनि ऋष्यश्रृग को बुलाकर पुत्र-प्राप्ति के उद्देश्य से यज्ञ करने का परामर्श दशरथ को देते है। इसके अतिरिक्त वह दशरथ को एक श्रीफल प्रदान करते हुये कहते है कि इसे खाकर उनकी रानियाँ गर्भवती हो जायेगी। दशरथ ने घर पहुँचकर यह श्रीफल कौशल्या को दे दिया

---

[1] दे० कम्बरामायण २, ७६। सुरेचन के तीन पूर्वजन्मो का भी उल्लेख है, जिनमे उसका नाम क्रमश काश्यप, वृत्रेश और चलभोज था।

और उसने सुमित्रा तथा कैकेयी के साथ उस फल को खा लिया। **तोरवे रामायण** (२, ५) के अनुसार अधमुनि-पुत्र एक तारडव नामक वैश्य था जो कधे पर बाँस लगाकर अपने अधे माता-पिता को सभी तीर्थस्थानो मे ले जाता था। जब दशरथ ने उसका वध किया था, तब केवल काशी-तीर्थ मे जाना शेष था। **आनद रामायण** (१, ११, ८८) के अनुसार भी श्रवण उनको काशी ले जा रहा था।

एक **श्रवण रामायण** का उल्लेख मिलता है जिसके विषय मे कहा गया है कि इसमे श्रवणकुमार की मातृ-पितृ-भक्ति, श्रवण-विवाह तथा श्रवण-वध का वर्णन मिलता है (दे० अनु० २०८)।

हिन्देशिया के **सेरीराम** मे अधमुनि-पुत्र के वध का निम्नलिखित रूप पाया जाता है।

एक वृद्ध तपस्वी वर्मादेव (ब्रह्मदेव) ने दशरथ से कहा था कि एक सहस्र हाथियो का वध करने के पश्चात् तुम्हारे चार पुत्र और एक पुत्री उत्पन्न होगी। इस कारण दशरथ निरन्तर आखेट करते है और १०००वे हाथी के स्थान पर भूल से एक अधे ब्राह्मण के पुत्र का वध करते है।

श्याम की लाओ भाषा के **पचतत्र** मे बिना विचार किए कार्य करने के दृष्टान्त के रूप मे दशरथ की कथा पाई जाती है (दे० ऊपर अनु० ३२७)। कथा इस प्रकार है—मृगया खेलते हुए दशरथ एक आश्रम मे पहुँचते है जहाँ एक पुत्र अपने अधे माता-पिता की सेवा मे अपना जीवन बिताता है। दशरथ से प्रार्थना की जाती है कि वह हानिकर हाथियो से आश्रम की रक्षा करे। एक वृक्ष पर बैठकर दशरथ दिन-रात हाथियो को मारते है। किसी रात वह सो जाते है और वृक्ष के नीचे की आवाज़ से जाग जाते है। पुत्र उस समय जल लेने जा रहा है। हाथी समझकर दशरथ उसे बाण से मारते है। अपने पुत्र की मृत्यु सुनकर दोनो वृद्ध शोक के कारण मर जाते है।

कृत्तिवास रामायण के अनुपार सिन्धु ने अपने पूर्वजन्म मे एक कपोत मार डाला था और कपोती ने उसे शाप दिया था। उसी शाप के फलस्वरूप वह अब इस जन्म मे दशरथ द्वारा मारा जाता है (दे० १, ३०)। कृत्तिवास ने अन्धक मुनि की विपत्ति का भी कारण दिया है। अधक स्वय दशरथ से कहते है कि मुनि त्रिजट के धूल-धूसरित चरणो को देखकर मुझे घृणा हुई थी। उनकी चरण-रज लेते समय मैंने अपनी आखे बन्द कर ली थी जिससे मै अब अधा बन गया हूँ। अन्त मे अन्धक दशरथ को ऋष्यशृग द्वारा यज्ञ कराने का आदेश देते है तथा यह भी कहते है कि दशरथ के घर मे हरि का जन्म होगा (दे० १, ३१)।

ग। भरत की चित्रकूट-यात्रा

४३४ वाल्मीकि रामायण मे दशरथ का मरण, भरत का अयोध्या आकर

राज्य अस्वीकृत करना[1], दशरथ की अन्त्येष्टि तथा भरत की चित्रकूट-यात्रा विस्तार-पूर्वक वर्णन है (सर्ग ५७-११५)। परवर्ती रामकथाओं मे इस सामग्री मे अपेक्षाकृत कम परिवर्तन किया गया है। वाल्मीकि रामायण के अनुसार शत्रुघ्न **मथरा** को पीटते है, किन्तु आनन्द रामायण (१, ६, ६६) तथा भावार्थ रामायण (२, ११) मे भरत यह कार्य स्वय करते हे। **भावार्थ रामायण** के अनुसार भरत ने दशरथ की अन्त्येष्टि के बाद राम की **पादुकाओ** को सिंहासन पर रख कर चित्रकूट के लिए प्रस्थान किया। चित्रकूट पहुँच कर भरत तथा लक्ष्मण के **युद्ध** तथा राम द्वारा दोनो को अलग करने का भी वर्णन मिलता हे (भावार्थ रामायण २, १५)। वाल्मीकि रामायण मे भी भरत के आगमन पर भरत और कैकेयी का वध करने के लिए लक्ष्मण उद्यत हैं (२, ६६,२३-२६)। भावार्थ रामायण के अनुसार भरत तभी वापस जाने के लिए तयार हो जाते हे जब वाल्मीकि आकर पूरा रामायण सुनते है, जिसके अनुसार भरत का अयोध्या लोटना राम की महिमा के लिए आवश्यक हे (दे० २,१७)। रामचन्द्रिका (१०,३६) मे **मदाकिनी** स्त्री का रूप धारण कर भरत को समझाती हैं। कबरामायण (२, १२, १३१) मे एक **आकाशवाणी** भरत को उनके कर्तव्य के विषय मे उपदेश देती हे।

महावीरचरित मे भरत **मिथिला** मे ही राम की पादुकाएँ ग्रहण करते है और राम वही से वन के लिए प्रस्थान करते है, बाद मे भरत की किसी वन-यात्रा का उल्लेख नही मिलता। **कृत्तिवास रामायण** (२, १६) मे **कैकेयी** भरत मे इतना डरती हैं कि वह मथरा के साथ अयोध्या मे ही रह जाती है। **रामचरितमानस** मे **जनक** के चित्रकूट मे आगमन का विस्तृत वर्णन किया गया हे। कहा जाता है कि श्रवण रामायण (दे० ऊपर अनु० २०८) के अनुसार भी जनक चित्रकूट गये थे। इस प्रसग का अन्यत्र उल्लेख नही मिलता।

सेरी राम मे भरत का आगमन **वालिवध के पश्चात्** वर्णित है। एक पाठ के अनुसार राम-लक्ष्मण की माता सीताहरण का समाचार सुनकर मर जाती है। अन्त्येष्टि के बाद भरत-शत्रुघ्न किष्किन्धा आकर राम से राज्य सभालने का अनुरोध करते हे।

---

१ वाल्मीकि ने भरत को 'नि स्वार्थ' की मूर्त्ति के रूप मे प्रस्तुत किया है। उसी कारण से बाद मे भरत को दास्य भक्ति का आदर्श माना गया है, यह विशेष रूप से तुलसीदास के भरत के विषय मे कहा जा सकता है। फिर भी वाल्मीकि के यथार्थवादी दृष्टिकोण के कारण आदिकाव्य के एकाध स्थलो पर राम के मन मे भरत के प्रति सन्देह होने का उल्लेख किया गया है, उदाहरणार्थ राम सीता से कहते है कि भरत के सामने तुम मेरी कभी भी प्रशसा न करो (२, २६, २८)।

राम के अस्वीकार करने पर वे उनकी पादुकाएँ माग कर तथा उनको अपने मुकुट पर धारण कर राजधानी लौटते हे । दूसरे पाठ के अनुसार दशरथ के देहान्त के पश्चात् भरत-शत्रुघ्न राम को राज्य अर्पित करने के लिए किष्कि धा आते हे ।

४३५ वाल्मीकि रामायण मे कोशल्या दशरथ के लिए राम द्वारा अर्पित इगुदी की खली का **पिण्डदान** देखकर विलाप करने लगती हैं (दे० २, १०४) । परवर्ती रचनाओ मे राम अथवा सीता द्वारा पिण्डदान का विभिन्न अवसरो पर उल्लेख **किया गया है ।**

ब्रह्मपुराण (अध्याय १२३) के अनुसार दशरथ अपने निर्वासित पुत्रो को दर्शन देकर ब्रह्महत्या के कारण अपनी नरक-यातना का वर्णन करते है और उनसे गौतमी-तट पर पिण्डदान करने का निवेदन करते है । अनन्तर राम द्वारा पिण्डदान का उल्लेख है जिसके फलस्वरूप दशरथ नरक से मुक्ति प्राप्त करते है । **काश्मीरी रामायण** का वृत्तान्त ब्रह्मपुराण पर निभर प्रतीत होता है, दशरथ से उनकी नरक-यातना के विषय मे सुनकर राम यमलोक जाते है और तक्षक का वध करके दशरथ को पितृलोक मे पहुँचाते है (अयोध्या काड, न० ११५) । **स्कन्द-पुराण** के प्रभास-क्षेत्र-माहात्म्य मे दशरथ राम को स्वप्न मे दिखाई देते है और राम ब्राह्मणो से परामर्श कर उनके द्वारा पिण्डदान की धर्मक्रिया करवाते है (अध्याय १११) । **पद्म पुराण** के सृष्टिखड (अध्याय २८, ४८-६०) मे भी वनवास के समय राम के इसी स्वप्न-दर्शन तथा फलस्वरूप श्राद्ध के आयोजन का वर्णन मिलता है । **गरुड पुराण** (दे० अध्याय १४३) के अनुसार राम अयोध्या मे लौट आने के पश्चात् पितृ-कर्म के लिए गयाशिर जाते है । **प्रतिमानाटक** मे दशरथ का श्राद्ध योग्य रीति से सम्पन्न करने की राम की चिन्ता का उल्लेख मिलता है (दे अनु० ४६५) ।

अनेक अपेक्षाकृत अर्वाचीन रामकथाओ मे राम के स्थान पर **सीता द्वारा पिण्डदान** होने का वर्णन किया गया है । शिव महापुराण (ज्ञान सहिता, अध्याय ३०) मे राम और लक्ष्मण दशरथ के श्राद्ध की सामग्री ले आने के लिए गाँव जाते है । विलम्ब होने पर सीता, श्राद्धकाल की किंचित् अवधि शेष समझकर स्वय श्राद्ध की क्रिया करती है । अनन्तर दशरथ प्रकट होकर कहते है—मै दशरथ हूँ, तुम्हारे सफल श्राद्ध से मैं तृप्त हुआ । बाद मे राम के अर्पण करने पर दशरथ उनसे कहते है—**किमर्थं हूयते पुत्र ह्यनया तर्पिता वयम ।**

आनन्द रामायण मे गरुड पुराण की तरह राम अपने अभिषेक के बाद सीता के साथ तीर्थयात्रा करते हुये गया पहुँचते है । सीता फल्गु मे स्नान करने जाती है तथा महेश्वरी की पूजा करने के उद्देश्य से १०८ बालूपिण्ड तैयार करती है । इस अवसर पर धरती मे से दशरथ का हाथ प्रकट हो जाता है और सीता एक-एक करके १०८ पिण्ड

दशरथ के हाथ मे रख देती है। सीता भयभीत होकर यह वृत्तान्त छिपा रखती है। बाद मे राम पिण्ड चढाने जाते हे किन्तु दशरथ का हाथ प्रकट नही होता जिसमे राम को आश्चर्य होता हे। तब सीता अपना रहस्य प्रकट कर कहती है कि दशरथ मुझसे पिण्ड ग्रहण कर चुके है। राम साक्षी चाहते है, इस पर सीता एक-एक करके आम वृक्ष, फल्गु नदी, ब्राह्मणो, विडाल, गाय तथा अश्वत्थ से अपने पक्ष मे साक्ष्य देने का निवेदन करती हैं। सब अस्वीकार करते है और सीता से अभिशप्त हो जाते है।[1] अन्त मे सूर्य सीता का समर्थन करते है, जिस पर दशरथ विमान पर आ पहुँचते है तथा राम को आश्वासन देते हे—**प्राह त्वया तारितोऽह नरकादतिदुस्तरात् मैथिल्या पिडदानेन जाता मे तृप्तिरुत्तमा** (यात्रा काण्ड सर्ग ६, १११)।

सारलादास के महाभारत तथा कृत्तिवास के रामायण मे जो वृत्तान्त मिलता हे, वह आनन्द रामायण की कथा से अधिक भिन्न नही हे, किन्तु इन दोनो रचनाओ मे माना गया है कि यह घटना वनवास के समय की है। **सारलादास** के अनुसार चित्रकूट निवास के समय राम अनेक तीर्थ यात्राएँ करते है। किसी दिन वह 'रामगया' पहुँचते है तथा पितृकर्म के लिए गैंडा आवश्यक समझकर वह लक्ष्मण के साथ उसी की खोज मे शिकार खेलने जाते है। सीता ब्रह्मा के पुत्र फल्गु नदी के सरक्षण मे रामगया मे रह गई, राम को समय पर न आते देखकर सीता ने राम के पूर्वजो को सात बालू-पिण्ड समर्पित किए। दशरथ का हाथ प्रकट हुआ जिसमे सीता को मालूम हुआ कि दशरथ का देहान्त हो चुका है। सीता ने फल्गु से निवेदन किया कि वह इस घटना को राम से छिपा रखे। इस पर फल्गु ने सीता से अनुचित प्रस्ताव किया और ठुकराये जाने पर ब्राह्मणो से कहा कि सीता ने पिण्डदान किया है। ब्राह्मण दक्षिणा के लिए अनुरोध करने लगे तथा राम के प्रत्यागमन तक प्रतीक्षा करना अस्वीकार किया। इस पर सीता ने अपने कपडे दे दिये तथा पद्मपत्रो से अपना शरीर ढँक लिया। वापस आकर सारा वृत्तान्त जान लेने पर राम ने फल्गु तथा गया के ब्राह्मणो को शाप दिया।[2] **कृत्तिवास** (२, २२) के अनुसार दशरथ की मृत्यु के एक वर्ष बाद उनका श्राद्ध उचित रीति से सपन्न करने के लिए राम और लक्ष्मण अगूठी बेचने चले जाते है। इतने मे सीता फल्गु

१ उस शाप के फलस्वरूप आम वृक्ष फलहीन, फल्गु अधोमुखी (अन्त सलिला), विडाल की पूछ अस्पृश्य, गाय का मुख अपवित्र तथा अश्वत्थ 'अचलदल' बन गया। सीता ने ब्राह्मणो से कहा—युष्माक नाऽत्र सतृप्ति कदा द्रव्यैर्भविष्यति ॥१०३॥ द्रव्यार्थं सकलान् देशान् भ्रमध्व दीनरूपिण ।

२ दे० कृष्णचरण साहु, रामकथा इन सारला महाभारत। जर्नल ऑव हिस्टोरिकल रिसर्च, भाग १, अक २, पृ० ५६।

के किनारे खेलती है और दशरथ दर्शन देकर कहते है—भूख की पीडा असह्य हो उठी है, रेत का पिण्ड देकर मेरी भूख शान्त कर दो। बाद मे ब्राह्मण, तुलसी और फल्गु सीता के पक्ष मे साक्ष्य देना अस्वीकार करते है जिससे सीता उनको शाप देती है। वटवृक्ष मात्र सीता का समर्थन करता है और राम तथा सीता दोनो से आशीर्वाद प्राप्त कर लेता है।[1]

दुर्गावरकृत असमिया **गीतिरामायण** मे भी इस प्रसग का वर्णन मिलता है। इसमे सीता चन्द्रमा, सूर्य, वायु, पृथ्वी, फल्गु तथा ब्राह्मणो को शाप देती है। **बलराम दास रामायण** का तद्विषयक वृत्तान्त आनन्द रामायण की उपर्युक्त कथा से मिलता जुलता है किन्तु राम स्वय फल्गु नदी को 'अत सलिला' बन जाने का शाप देते है, फल्गु के अनुनय करने पर सीता उसे यह वरदान देती है कि तुम वर्षा ऋतु मे अवश्य प्रकट होगी। ब्राह्मणो ने जब दक्षिणा के लिए अनुरोध किया, तब राम ने यह शाप दिया कि जो कोई गया मे मर जायेगा वह अपने अगले जन्म मे गधा बन जायेगा (अरण्य-काण्ड)।

४३६ राम की **पादुकाओ** का वृत्तान्त वाल्मीकि रामायण के तीन पाठो मे कुछ भिन्न है, जिससे यह आभास मिलता है कि यह प्रसग सम्भवत बाद मे जोड दिया गया हो।

दाक्षिणात्य पाठ मे भरत राम की हेमभूषित पादुकाएँ ले जाने की राम से प्रार्थना करते है (दे० दा० रा० २, ११२, २१)। गौडीय पाठ मे भरत के प्रस्थान के समय शरभग राम को कुशपादुकाओ का एक जोडा भेज देते है, और वसिष्ठ के अनुरोध मे राम भरत को इन्हे प्रदान करते है। माधवकदली तथा बलरामदास के रामायणो मे भी कुशपादुकाओ की चर्चा है।

पश्चिमोत्तरी पाठ मे न तो शरभग का और न कुशपादुकाओ का उल्लेख हुआ है, लेकिन वसिष्ठ के कहने पर राम भरत को अपनी पादुकाएँ देते है।

दशरथ जातक मे कहा जाता है कि अमात्य राम की इन पादुकाओ के सामने राजकार्य करते है। अन्याय होते ही पादुकाएँ एक दूसरे पर आघात करती है तथा ठीक निर्णय होने पर वे शान्त रहती है।

घ। राम का चित्रकूट मे निवास

४३७ दाक्षिणात्य पाठ मे चित्रकूट की केवल एक पर्णशाला का उल्लेख है (दे० ५६, २०), लेकिन गौडीय (दे० ५९, २०) तथा पश्चिमोत्तरीय पाठ (दे० ६०, २०) मे

---

१ राम कहते है—अमर अक्षय हो। सीता कहती है—शीतकाल मे उष्ण, ग्रीष्मकाल मे शीतल तथा सर्वदा पत्रो से विभूषित बने रहो।

लक्ष्मण द्वारा **दो पर्णशालाओं** का निर्माण हुआ था, ऐसा उल्लेख है।

४३८ जावा के **सेरी राम** के अनुसार राम ग्राम मे सात लडकियो तथा पाच लडको की सृष्टि करते है, जिससे राम, सीता लक्ष्मण तीनो निश्चित होकर एकाग्रता से साधना कर सकते है।

४३९ सुन्दरकाड मे सीता अभिज्ञान-स्वरूप हनुमान् को **काक-वृत्तान्त** सुनाती है। किसी दिन राम सीता की गोद मे सो रहे थे, उस समय एक मासलोभी काक (इद्र का पुत्र) सीता के स्तनो पर आघात करने लगा। जागकर राम ने ब्रह्मास्त्र पर दर्भ रखकर उसे काक पर चलाया। कही भी शरण न पाकर काक राम के पास[1] लौटा और एक आख ब्रह्मास्त्र को देकर बच गया (दे० रा० ५, ३८)। हनुमान् राम के पास लौट कर इसी वृत्तान्त को दोहराते है (दे० रा० ५, ६७)।

इस वृत्तान्त का आदिरामायण के अयोध्याकाड मे उल्लेख नही था। दाक्षिणात्य पाठ के सस्करणो मे सर्ग ९५ के बाद एक प्रक्षिप्त सर्ग रखा जाता है, जिसमे काक-वृत्तान्त का किंचित् भिन्न रूप से वर्णन किया गया है। भोजन के बाद सीता कौओ को खिला रही थी, कि एक काक उन्हे कष्ट देने लगा। इस पर राम ने ईषीकास्त्र चलाकर काक को भगाया। अन्त मे काक ने राम की शरण ली और अस्त्र को एक आख समर्पित कर बच गया। गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठो मे यह सर्ग प्रक्षिप्त नही माना गया है, इसकी गणना अन्य सर्गो के साथ-साथ हुई है (दे० गौ० रा० २, १०५, प० रा० २, १०६)। इस सर्ग मे राम द्वारा सीता के ललाट पर **तिलक** लगाने तथा बाद मे भीमकाय वानर को देखने से भयविह्वला सीता द्वारा इस तिलक के राम के वक्षस्थल पर अकित हो जाने का वर्णन भी मिलता है।

वाल्मीकि रामायण मे यह सर्ग भरत के चित्रकूट मे आगमन के पूर्व रखा गया है, कालिदास ने काक-वृत्तान्त का वर्णन भरत के प्रस्थान के पश्चात् किया है (दे० रघुवश, सर्ग १२)। फलस्वरूप बहुत सी रामकथाओ मे इस घटना का उल्लेख कालिदास के क्रमानुसार किया जाता है, उदाहरणार्थ नृसिंहपुराण, सन्ध्याकरनन्दिकृत रामचरित, रामायण मजरी, पद्मपुराण (उत्तरकाड अध्याय २६९), रामचरितमानस, काश्मीरी रामायण।

जयन्त स्थूलशिर के शाप के कारण काक बन गया था, ऐसा कथन पद्मपुराण के उत्तरकाड के गौडीय पाठ मे मिलता है।[2] कन्नड तोरवे रामायण के अनुसार अत्रि ने जयन्त को काक बन जाने का शाप देते हुए उसे आश्वासन दिया था कि सीता के चरण-

---

१ रामचरितमानस मे नारद जयत को राम के पास भेज देते है (दे० ३, २, ५)।

२ दे० जर्नल एसियाटिक सोसाइटी ऑव बगाल १८४२, पृ० ११२०।

स्पर्श से शाप से मुक्ति मिलेगी (दे० अयोध्याकाड, सधि ७)। देव-रामायण मे जयत के काक के रूप मे परिवर्तन की कथा का विशेष वर्णन किया गया है (दे० ऊपर अनु० २०७)। भावार्थ रामायण (२, १४) के अनुसार काक एक सुदसुव नामक गधर्व है।

अध्यात्मरामायण के अनुसार काक ने सीता के पैर के अगूठे को फाड डाला था (**मत्पादागुष्ठमारक्त विददारामिषाशया,** दे० ५, ३, ५४)। आनन्द रामायण (१, ६, ८६), रामगीतगोविंद (सर्ग ४) तथा रामचरितमानस मे भी ऐसा वर्णन है।

हिन्देशिया के सेरी राम तथा सेरत काण्ड मे काक-वृत्तान्त का एक परिवर्तित रूप मिलता है (दे० अनु० ३६६)। रामकेर्त्ति तथा रामकियेन मे विश्वामित्र यज्ञ के प्रसग मे राम द्वारा काकासुर-वध का वर्णन किया गया है (दे० अनु० ३८८)। इसके अतिरिक्त सीताहरण के ठीक पहले राम एक अन्य काकासुर का वध करते है (दे० अनु० ४६२)।

४४० रसिक सम्प्रदाय की रचनाओ मे **चित्रकूट** मे राम की **रासलीला** का विस्तृत वर्णन किया गया है (दे० ऊपर अनु० १८० और १८१)। दुर्गावर कृत असमिया गीतिरामायण मे वनवास के समय चैत्र चतुदशी के अवसर पर एक मायामय अयोध्या की सृष्टि का वर्णन किया गया है। राम, सीता और लक्ष्मण पिचकारी हाथ मे लिए अयोध्यावासियो के साथ **मदनोत्सव**[1] मनाते हुए चित्रित किये गये है। इस रचना मे राम और सीता का चौसर खेलना भी वर्णित है।

४४१ वाल्मीकि रामायण मे राम के चित्रकूट से **प्रस्थान** करने के **दो कारण** बताये गये है

इह मे भरतो दृष्टो मातरश्च सनागरा।
सा च मे स्मृतिरन्वेती तान्नित्यमनुशोचत ॥२॥
स्कधावारनिवेशेन तेन तस्य महात्मन।
हयहस्तिकरीषैश्च उपमर्द कृतो भृशम् ॥३॥ (२,११७)

एक तो चित्रकूट को देखकर भरत आदि का स्मरण आता है और दूसरे, भरत की सेना ने उस स्थान को मैला कर दिया है। महाभारत के रामोपाख्यान मे जो कारण दिया गया है, उसका आगे चलकर बहुत उल्लेख है। राम इसलिए चित्रकूट को छोड देते है कि जनता उनके पास न आ सके (**पुनराशक्य पौरजानपदागमम्** दे० ३, २६१, ३६)। अध्यात्मरामायण, आनद रामायण तथा रामचरितमानस मे यही कारण दिया गया है।

---

१ डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी ने अपनी 'प्राचीन भारत के कलात्मक विनोद' नामक पुस्तक (बम्बई १९५२) मे इस उत्सव का वर्णन किया है (दे० पृ० १०८-१११)।

३—राम का निर्वासन

४४२ अयोध्याकाड की प्रधान घटना राम का निर्वासन है। केवल दो राम-कथाओ मे इसका उल्लेख नही किया गया है। गुणभद्रकृत जैन उत्तर पुराण मे रावण राजधानी के निकट के अशोकवन मे सीता को हर लेता है, तथा अनाम की रामकथा मे दशानन सेना सहित दशरथ के राज्य पर आक्रमण करके सीता को अपने साथ ले जाता है।

शेष रामकथाओ मे वाल्मीकि रामायण के अनुसार राम के निर्वासन का वर्णन किया गया है। फिर भी राम के वनवास के भिन्न-भिन्न कारणो की कल्पना कर ली गई है। इसके अतिरिक्त कैकेयी की वरप्राप्ति की अनेक कथाए प्रचलित हो गई है, तथा कैकेयी के दोष-निवारण के लिए भी अनेक उपायो का सहारा लिया गया है। इन बातो से सम्बन्ध रखने वाली सामग्री पर अलग विचार किया जायगा। इसके पहले यहाँ पर गौण परिवर्तनो की ओर निर्देश किया जाता है।

४४३ महानाटक के अनुसार निर्वासन के समय **भरत** अयोध्या मे थे (अक ३,५), तथा प्रतिमानाटक मे भरत **शत्रुघ्न** के बिना अपने ननिहाल गए थे (अक ३)। अनामकम् जातकम् तथा पाश्चात्य वृत्तान्त न० ६ और ६ मे केवल **राम और सीता** के वनवास का उल्लेख है तथा दशरथ कथानम् मे केवल **राम और लक्ष्मण** वन के लिए प्रस्थान करते है। सिंहली रामकथा तथा तिब्बती रामायण मे **राम अकेले** ही वन जाते है। वाल्मीकि रामायण के अनुसार प्राय सभी रामकथाएँ वनवास की **अवधि** १४ वर्ष की मानती है। दशरथ जातक मे वनवास का स्थान हिमालय-प्रदेश है तथा इसकी अवधि १२ वर्ष की है। इसी तरह दशरथकथानम्, सघदास की वसुदेवहिण्डि, पाश्चात्य वृत्तान्त १, २, ३, ७, १३ आदि वनवास बारह वर्ष का मानते है। स्वयभूदेव के पउमचरिउ (२३, ६) मे राम लक्ष्मण को १६ वर्ष तक वनवास करने का निमन्त्रण देते हैं। महाभारत के रामोपाख्यान, पउमचरियम् तथा अनामकम् जातकम् मे वनवास की किसी निश्चित अवधि का उल्लेख नही है।

वाल्मीकि के अनुसार दशरथ ने राम के युवराज्याभिषेक के सम्बन्ध मे पहले अपने मन्त्रियो के साथ परामर्श किया (रा० २, १, ४२) और अनन्तर राजपरिषद की अनुमति ली (रा० २, २, १७)। प्रचलित रामायण (२, २, १८) मे जनता की स्वीकृति का भी उल्लेख है। किन्तु बडौदा के सस्करण मे तत्सम्बन्धी श्लोक प्रक्षिप्त माना गया है। यज्ञफल नाटक मे दशरथ राम-विवाह से पहले ही अपनी तीनो पत्नियो से उनके अभिषेक की अनुमति प्राप्त कर लेते है।

अध्यात्म रामायण तथा उसके परवर्ती अनेक रामकथाओ मे **नारद** के आगमन का उल्लेख किया गया है, जो राज्य अस्वीकृत करने के लिए राम से अनुरोध करते है

तथा उनको अवतार के उद्देश्य का स्मरण दिलाते है (दे० २, १ और आनन्द रामायण, १, ६, काश्मीरी रामायण, रामरहस्य, अध्याय ६, तत्त्वसग्रहरामायण, २, ४, रामचरितमानस के अनेक सस्करणो का क्षेपक)।

वाल्मीकि रामायण के अनुसार राम के साथ वन जाने के लिये अनुरोध करते हुए सीता आत्महत्या की धमकी देती है (रा० २, ३०, १६) और यह भी कहती है, ब्राह्मणो ने मेरा वनवास अनिवार्य बताया है (**वस्तव्य किल मे वने** दे० सर्ग २६, ८, और अध्यात्म रा० २, ४, ७६)। आगे चलकर सीता यह भी कहती है कि मैने जितने रामायण सुने है, उन सब मे सीता राम के साथ वन जाती है (अध्यात्म रामायण २, ४, आनन्द रामायण १, ६, उदारराघव सर्ग ५)। इसके अतिरिक्त आनन्द रामायण मे सीता एक तीसरा तर्क देकर कहती है—मैने स्वयवर के समय राम को पतिस्वरूप प्राप्त करने के लिये १४ वर्ष तक वनवास का व्रत किया था। वाल्मीकि रामायण मे राम के वनवास के कई अन्य परोक्ष कारणो का उल्लेख किया गया है—दशरथ द्वारा प्राणियो का वध (२, ३६, ४) और अधमुनि-पुत्र-वध (दे० २, ६३, ११), पूर्व जन्म मे कौशल्या द्वारा गायो के स्तनो का काटना (दे० २, ४३, १७) तथा स्त्रियो को पुत्रहीन करना (दे० २, ५३, १६)।

प्रचलित रामायण मे एक श्लोक मिलता है, जो बडौदा सस्करण मे प्रक्षिप्त माना गया है। इस मे दशरथ अपने मत्रियो से अयोध्या मे होने वाले अपशकुनो का उल्लेख करते है और इसलिए अनुरोध करते है कि राम को अभिषेक दिया जाये—**दिव्यन्तरिक्षे भूमौ च घोरमुत्पातत भयम्** (२, १, ४३)। **महानाटक** मे भी अपशकुनो की चर्चा है, किन्तु वहा सीता पर इनका दोष लगाया जाता है (दे० आगे अनु० ४४४)। **तोरवे रामायण** मे राम अभिषेक के दिन वसिष्ठ से कहते है, "मैने स्वप्न देखा कि मै सीता के साथ वन मे भटक रहा था।"

राजशेखर के **बालरामायण** (अक ६, छन्द २५) मे वनवास के प्रसग मे पहले पहल ऊर्मिला की ओर सकेत किया गया है। उद्धरण इस प्रकार है—

दयितमनुसरन्ती मैथिलीम् इक्षमाना
गृहिणमनुयियासुर् जानकी सा कनिष्ठा।
गुरुगुरुजनलज्जा-नम्रवक्त्राम्बुजेन
भ्रुकुटिपुटनिबन्धाद् वारिता लक्ष्मणेन॥

क । वनवास के भिन्न-भिन्न कारण

४४४ वाल्मीकि रामायण के अनुसार कैकेयी ने अपने दो वरो के बल पर भरत के लिये राज्य तथा राम के लिये १४ वर्ष का वनवास दशरथ से माँग लिया था। अत

राम के निर्वासन का यह कारण सब से प्राचीन और बाद मे सब मे प्रचलित और प्रामाणिक माना गया है। रामकेर्त्ति (सर्ग १) मे कैकेयी राम और लक्ष्मण दोनो के लिये १४ वर्ष का वनवास मागती है। यह सुनकर लक्ष्मण कैकेयी का वध करना चाहते है, किन्तु राम उनको शान्त करते है। वाल्मीकि रामायण (सर्ग २१) के अनुसार भी लक्ष्मण ने दशरथ को मार डालने का प्रस्ताव किया था और कौशल्या ने लक्ष्मण के इस प्रस्ताव का समर्थन किया था। सभी रामकथाओ मे राम इस परीक्षण मे खरे उतर कर अपने पिता की आज्ञा के पालन मे दृढ रहते है।

उदारराघव मे दशरथ स्वय लक्ष्मण से अनुरोध करते है कि वह विद्रोह कर राम को बलपूर्वक राजा बनाये—**वीरोऽसि मौलै सह लक्ष्मण त्व राम प्रतिष्ठापय राज्यपीठे** (४, १०५)।

महानाटक मे कैकेयी दशरथ से कहती है कि सीता 'अमगली वधू' है, क्योकि **"अस्या आगमनमात्रेण महोत्पाता सम्भवन्ति"** और इन उत्पातो की शाति के लिए राम को सीता के साथ वन भेजना चाहिए (३,३)। भट्टिकाव्य (३, ६), महावीर-चरित (४, ४१) तथा अनर्घराघव (४, ६६) मे कैकेयी राम, लक्ष्मण तथा सीता का वनवास मागती है।

४४५ दशरथ जातक तथा दशरथ कथानम् मे भरत की माता के केवल एक वर का उल्लेख है, जिसके बल पर वह भरत के लिए राज्य माँग लेती है। बाद मे भरत की माता के षड्यत्रो के भय से दशरथ अपने दो पुत्रो (राम और लक्ष्मण) को वन भेज देते है, और बारह वर्ष के पश्चात् लोटने को कहते है। अत इन बोद्ध कथाओ के अनुसार **सौतेली माँ के षड्यन्त्रो** का भय निर्वासन का कारण माना जाता है।

४४६ रामकथाओ का एक तीसरा वग मिलता है, जिसमे राम **स्वेच्छा से** वन के लिए प्रस्थान करते है। इसी प्रकार के प्राचीनतम वृत्तान्त बोद्ध तथा जैन साहित्य मे पाये जाते है।

अनामक जातक मे कथा इस प्रकार है। अपने मामा के आक्रमण की तैयारियो के विषय मे सुन कर राजा (राम) सघप के निवारण के लिए स्वेच्छा से रानी के साथ पहाडी वन मे जाकर निवास करने लगे।

पउमचरिय तथा अन्य जैन रामकथाओ के अनुसार दशरथ को वैराग्य हुआ और भरत को राज्य दिया गया। यह सुनकर राम स्वेच्छा से सीता तथा लक्ष्मण के साथ दक्षिण की ओर प्रस्थान करते है।

तिब्बती रामायण के अनुसार दोनो पुत्रो मे से किसे राज्य दिया जाय, अपने पिता की इस प्रकार की किंकर्त्तव्यविमूढता के विषय मे सुनकर राम स्वेच्छा से किसी आश्रम मे जाकर तपस्या करने लगते है।

था, जिसके द्वारा वह अपने पति को बचाने मे समर्थ हुई। तेलुगु द्विपद रामायण (२, ७) मे कहा गया है कि शम्बर ने दशरथ से युद्ध करते हुए माया का सहारा लिया था, लेकिन ववलग से सीखी हुई माया द्वारा कैकेयी ने शम्बर की माया का प्रभाव नष्ट करके दशरथ को बचाया था।

बहुत से ऐसे वृत्तान्त भी मिलते है, जिनके अनुसार कैकेयी ने देवासुर युद्ध मे दशरथ के **रथ का अक्ष** टूटा हुआ देखकर उसमे अपना हाथ रख दिया था (दे० ब्रह्म पुराण, अध्याय १२३, पद्मपुराण[1], अध्यात्म रामायण २, १, ६६, आनन्द रामायण १, १, ८५, रामकियेन, अध्याय १४)। आनन्द रामायण (१, १, ८३) के अनुसार एक मुनि ने बालिका कैकेयी की सेवा से सतुष्ट होकर उसे यह वरदान दिया था कि समय पडने पर तुम्हारा हाथ वज्रकठिन बन जाएगा।

भावार्थ रामायण (१, १) के अनुसार अत्रमुनि के शाप के फलस्वरूप दशरथ के राज्य मे अनावृष्टि हुई। दशरथ कैकेयी को साथ ले जाकर इन्द्र के विरुद्ध युद्ध करने गये। युद्ध मे शुक्र ने अक्ष तोडा किन्तु कैकेयी ने अपने भुजा मे रथ सम्हाला जिससे इन्द्र की पराजय हुई।

बाद मे कैकेयी के दो वरो के लिए दो भिन्न घटनाओ का उल्लेख किया गया है। कृत्तिवास रामायण (१, ३३-३४) तथा असमिया बालकाण्ड (अध्याय १६) मे शम्बर-युद्ध के अवसर पर कैकेयी को एक वर मिला था और दूसरा वर उसे **दशरथ के व्रण** की पीब चूसने के लिए मिला था।[2] पाश्चात्य वृत्तान्त न० १३ के अनुसार कैकेयी ने बिच्छू से डसे हुए दशरथ को स्वस्थ कर अपना दूसरा वर प्राप्त किया था। सेरी राम मे भरत और शत्रुघ्न की माता बल्यादारी दशरथ की कमर के फोडे की पीब चूसकर दशरथ से यह आश्वासन पाती है कि उनके पुत्रो को राज्य मिलने वाला है।[3] प्रथम बार उनको यह आश्वासन दशरथ तथा मन्दूदारी के विवाहोत्सव के अवसर पर मिला था। उस समय उसने उन दोनो की **पालकी** सभाली थी (दे० अनु० ३४०)।

सघदास की **वसुदेवहिण्डि** मे कैकेयी की वरप्राप्ति का वर्णन मौलिक है। प्रथम

१ दे० उत्तरकाण्ड, बगीय पाठ, जर्नल एसियाटिक सोसाइटी, १८४२, पृ० ११२२।

२ पाश्चात्य वृतान्त न० ३ मे भी कैकेयी द्वारा दशरथ के अगूठे की चिकित्सा करने का उल्लेख है। लोकगीतो मे कैकेयी दशरथ के पेर से काटा निकाल कर वर प्राप्त करती है (दे० रामनरेश त्रिपाठी द्वारा सम्पादित ग्राम साहित्य, पहला भाग, पृ० २१७ तथा कविता कौमुदी, ५ वा भाग, पृ० १०३)।

३ हिकायत महाराज रावण मे इससे मिलती-जुलती कथा पायी जाती है।

वर उनको **कामशास्त्र मे निपुणता** के कारण दिया जाता है (**राया कैकईए सयणोवया-रवियक्खणाए तोसिओ—राजा कैकेय्या शयनोपचारविचक्षणया तोषित**)। दूसरे वर की कथा इस प्रकार है। किसी दिन एक सीमावर्ती राजा ने दशरथ को युद्ध मे बदी बना लिया था। यह सुनकर कैकेयी ने **सेना का नेतृत्व** लेकर विरोधी राजा को हराया तथा दशरथ को मुक्त किया था।

४४८ एक वर। महाभारत (दे० ३, २६१, २१), रामकियेन तथा पद्म-पुराण के उत्तर काण्ड के गौडीय पाठ मे (पृ० ११२२) कैकेयी के केवल एक वर का उल्लेख किया गया है लेकिन इसी एक वर के बल पर वह भरत के लिये राज्य तथा राम के लिये वनवास माँग लेती है।

पउमचरिय के अनुसार कैकेयी ने अपने स्वयवर के बाद दशरथ का रथ हाँक कर अन्य राजाओ के विरुद्ध दशरथ की सहायता की थी और इस प्रकार एक वर प्राप्त किया था (दे० ऊपर अनु० ३३८)।

दशरथ जातक तथा **दशरथकथानम्** दोनो मे भरत की माता के केवल एक वर का उल्लेख है, जिसके बल पर वह भरत को राज्य दिलवाती है। दशरथ जातक मे कहा गया है कि भरत के जन्म के अवसर पर दशरथ ने इस वर को दिया था।

४४९ तीन वर। ब्रह्मपुराण मे देवासुर-युद्ध मे कैकेयी ने अपने हाथ से दशरथ के रथ का टूटा हुआ अक्ष सभाला था। दशरथ केवल वापसी मे देखते है कि कैकेयी क्या कर रही है। इस पर प्रसन्न होकर दशरथ उनको तीन वर प्रदान करते है (दे० अध्याय १२३)।

ग। कैकेयी का दोष-निवारण

४५० आदिकवि वाल्मीकि ने कैकेयी की **दुष्टता और कुटिलता** का स्पष्ट शब्दो मे चित्रण किया है।[1] चित्रकूट की यात्रा करते समय राम आशका करते है कि कैकेयी कही भरत को राज्य दिलाने के लिए दशरथ के प्राण न ले तथा कौशल्या-सुमित्रा को विष न खिला दे (सर्ग ५३)

सा हि देवी महाराज कैकेयी राज्यकारणात्।
अपि न च्यावयेत्प्राणान्दृष्ट्वा भरतमागतम् ॥७॥
परिदद्याद्धि धर्मज्ञ गर ते मम मातरम ॥१८॥

सीता भी कैकेयी को कलहशीला कहकर उनकी निन्दा करती है

---

१ सुमन्त्र द्वारा कैकेयी की निन्दा तथा उनकी माता के त्यक्त किए जाने की कथा केवल दाक्षिणात्य पाठ मे मिलती है (दे० अनु० ४३०)।

कुलमुत्सादित सर्व त्वया कलहशीलया (६, ३२, ४)।

४५१ वाल्मीकि रामायण ही मे कैकेयी के **दोष-निवारण** का प्रयत्न किया गया है। भरद्वाज राम से कहते है कि कैकेयी को दोष नही देना चाहिए क्योकि राम का निर्वासन सबो के हित का कारण सिद्ध होगा

देवाना दानवाना च ऋषीणा भावितात्मनाम् ।
हितमेव भविष्यद्धि रामप्रव्राजनादिह ॥३१॥ (सग ६२)

चित्रकूट मे जब भरत कैकेयी की भर्त्सना करते है, राम स्वय कैकेयी का पक्ष लेकर भरत को स्मरण दिलाते है कि **दशरथ** ने विवाह के अवसर पर कैकेयी के पुत्र को राज्य देने की **प्रतिज्ञा** की थी

पुरा भ्रात पिता न स मातर ते समुद्वहन् ।
मातामहे समाश्रौषीद्राज्यशुल्कमनुत्तमम् ॥३॥ (रा० २, १०७)

कैकेयी को निर्दोष ठहराने के लिय दशरथ की प्रतिज्ञा के अतिरिक्त गोडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठो मे ब्राह्मण-शाप का उल्लेख किया गया है (अनु० ४३०)। कैकेयी ने किसी ब्राह्मण की निन्दा की थी और ब्राह्मण ने कैकेयी का शाप दिया था कि तुम्हारी भी निन्दा की जायेगी। इस कारण **'शापदोषमोहिता'** कैकेयी मथरा के जाल मे फस गई थी। इस शाप का उल्लेख रामायणमजरी और कृत्तिवास तथा वलरामदास के रामायणो मे भी मिलता है।

४५२ **विमलसूरि** के अनुसार कैकेयी ने भरत का वैराग्य दूर करने के उद्देश्य से उनके लिये राज्य माँगा था, उन्होने राम के वनवास के विषय मे कुछ नही कहा था। सीता और लक्ष्मण के साथ जब राम स्वेच्छा से चले जाते है तब कैकेयी अपनी सपत्नियो को शोकातुर देखकर भरत को भेज देती है कि वह राम को वापस ले आये। भरत के प्रस्थान के बाद वह स्वय राम के पास जाकर क्षमा माँगती है तथा लौटने के लिये राम से अनुरोध करती है। राम अस्वीकार करते है तथा भरत को राज्याभिषेक देकर अयोध्या भेजते है (सर्ग ३२)। **वसुदेवहिण्डि** मे भी कैकेयी के पश्चात्ताप का वर्णन है। **धर्मखण्ड** (अध्याय ३८) तथा **तत्त्वसग्रहरामायण** (२, ११) के अनुसार कैकेयी अयोध्या-वासियो का दु ख देखकर द्रवित हो जाती है। वह राम के पास जाकर उनकी आराधना करती है तथा क्षमा माँगती हुई वापस आने के लिये अनुरोध करती है। राम उनको यह कहते हुये क्षमा प्रदान करते है—**देवकृते कोऽपराध । त्व मे मातृसमा देवि त्वयि मे नास्ति दुर्मन ।**

जानकीहरण (१, ४२) मे कैकेयी की प्रशसा इसीलिए की गई है कि उनके दोष के कारण राक्षसो का नाश हुआ था—**यस्या दोषोदपि भुवनत्रयस्य रक्षोभयनाशाय हेतुर्बभूव ।**

प्रतिमानाटक मे कैकेयी के दोष-निवारण के लिए एक अन्य मार्ग अपनाया गया है। ऋषि-शाप के फलस्वरूप पुत्रवियोग के कारण दशरथ का मरण अनिवार्य जानकर कैकेयी ने उस शाप की रक्षा करने के लिए तथा राम को किसी और विकट विपत्ति से बचाने के लिए वसिष्ठ, वामदेव आदि से परामर्श करने के पश्चात्, राम को वन भिजवाया था। यह सुनकर भरत उनसे पूछते है कि आपने १४ वर्ष का निर्वासन क्यो दिलाया है। इस पर कैकेयी उत्तर देती है कि भूल से '१४ दिन' के स्थान पर '१४ वर्ष' मुँह से निकला था।

भवभूति के **महावीरचरित** तथा मुरारिकृत **अनर्घराघव** मे कैकेयी के किसी दोष का प्रश्न नही उठता है। स्वयवर के समय शूर्पणखा मथरा के वेष मे मिथिला पहुँचकर दशरथ को कैकेयी का एक जाली पत्र देती है जिसमे वर के बल पर राम का निर्वासन माँगा गया था। फलस्वरूप राम, भरत को अपनी पादुकाएँ देकर, मिथिला ही मे वन के लिए प्रस्थान करते है (दे० अक ४)।

बालरामायण मे महावीरचरित के वृत्तान्त का किंचित् विकसित रूप पाया जाता है। दशरथ कैकेयी के साथ इन्द्र से मिलने गये थे। इन दोनो की अनुपस्थिति का सुअवसर पाकर मायामय, शूर्पणखा तथा एक परिचारिका क्रमानुसार दशरथ, कैकेयी तथा मथरा का रूप धारण कर लेते है और राम निर्वासन दिलाने का सफल प्रयत्न करते है (दे० अक ६)।

अध्यात्म रामायण (२, २, ४४-४६) मे मथरा तथा कैकेयी दोनो को मोहित करने के उद्देश्य से **सरस्वती** को अयोध्या भेजे जाने का उल्लेख किया गया है। आनन्द रामायण (दे० ८, २, ५६), रामचरितमानस आदि मे भी कैकेयी का दोष सरस्वती पर लगाया गया है। **बलरामदास रामायण** के अनुसार दुर्बल नामक देवता दशरथ मे तथा खल नामक देवता कैकेयी मे प्रवेश करते है। रामलिगामृत (सर्ग १२) मे कैकेयी राम से कहती है कि **देवेंद्र** से प्रेरित होकर मैने रावण का वध करने लिए आपको वन भेज दिया था।

४५३ वाल्मीकि रामायण के अनुसार चित्रकूट मे कैकेयी मौन रहती है। आगे चलकर सभवत **पउमचरिय** के अनुकरण पर अध्यात्म रामायण (२, ६, ५५-६०), आनन्द रामायण (१, ६, ११२), तोरवे रामायण (२, ६), रामलिगामृत (सर्ग १२) तथा रामचरितमानस मे कैकेयी के इस अवसर पर **पश्चात्ताप** प्रकट करने तथा क्षमा माँगने का वर्णन किया गया है। अध्यात्म रामायण के अनुसार उस समय राम ने कैकेयी से कहा था कि (निर्वासन के लिए अनुरोध करने वाली) वाणी मुझसे प्रेरित होकर आपके मुँह से निकली थी।

मयैव प्रेरिता वाणी तव वक्त्राद्विनिर्गता। (२, ६, ६३)

घ । मथरा

४५४ मथरा द्वारा कैकेयी के भडकाये जाने का वाल्मीकि रामायण के दाक्षिणात्य पाठ मे कोई विशेष कारण नही दिया गया है । अन्य वृत्तान्तो मे इसके लिए भिन्न-भिन्न कारणो की कल्पना की गई हे ।

(१) महाभारत के रामोपाख्यान (दे० ३, २६०, १०) मे जब राम की सहायता करने के लिए देवताओ द्वारा ऋक्षो तथा वानरो की स्त्रियो से पुत्र उत्पन्न करने का उल्लेख किया गया है, गधर्वी **दुदुभी** के मथरा के रूप मे प्रकट होने की चर्चा मिलती हे । पद्मपुराण के पाताल खण्ड के गोडीय पाठ (अध्याय १५), आनन्द रामायण (दे० १, ७, २), कृत्तिवास रामायण (२, ४), वसुदेवकृत रामकथा आदि मे भी इसका निर्देश किया गया हे । तोरवे रामायण मे मथरा को **विष्णुमाया** का अवतार माना गया है । बलरामदास के अनुसार मथरा वास्तव मे गोमाता **सुरभि** है जिसे देवताओ ने पृथ्वी पर भेजा था ।

(२) बाद के अनेक वृत्तान्तो मे मथरा को मोहित करने के लिए **सरस्वती** के भेजे जाने का वर्णन मिलता है (दे० अध्यात्म रामायण २, २, ४४, आनद रामायण १, ६, ४१, रामचरितमानस, काश्मीरी रामायण) । भावार्थ रामायण के अनुसार ब्रह्मा ने मथरा के मन मे ईर्ष्या उत्पन्न करने के उद्देश्य से **विकल्प** को भेजा था ।

(३) वाल्मीकि रामायण मे शत्रुघ्न राम के निर्वासन के कारण मथरा को पीटते हैं (दे० २, ७८) । बाद मे राम द्वारा मथरा का **उत्पीडन** वनवास का कारण बताया गया है

पादौ गृहीत्वा रामेण कर्षिता साऽपराधत ।
तेन वैरेण सा राम वनवास च काक्षति ।। ८ ।।

(अग्निपुराण, अध्याय ५)

(४) वाल्मीकि रामायण के उदीच्य पाठ की कुछ हस्तलिपियो मे मथरा के पूर्व-वैर का उल्लेख इस प्रकार है—

रामे सा निश्चिता पापा पूर्ववैरमनुस्मरन् ।
कस्मिश्चिदपराधे हि क्षिप्ता रामेण सा पुरा ।
चरणेण क्षिति प्राप्ता तस्माद्वैरमनुत्तमम

(दे० बडौदा सस्करण, अयोध्याकाड, सर्ग ७, ६ की पाद टिप्पणी)

रामायणमजरी मे भी राम के प्रति मथरा के वैर का कारण उल्लिखित है

शैशवे किल रामेण पुरा प्रणयकोपत ।
चरणेनाहृता तत्र चिर कोपमुवाह सा ।। (१, ६६७)

बलरामदास के अनुसार मथरा ने विवाह के अवसर पर राम का उपहास किया था और राम ने उसे पीटा था। कवरामायण (२, २, ४१, ५, ८, ३२) मे इसका उल्लेख मिलता है कि लडकपन मे राम ने मिट्टी के ढेलो को अपने धनुष पर चढाकर मथरा के कूबर पर मारा था।

तेलुगु रगनाथ रामायण (१, १४, २, ७) के अनुसार राम ने बचपन मे मथरा की एक टाग को तोड दिया था, सेरी राम और रामकियेन (अध्याय १४) के अनुसार राम ने उसके कुब्ज मे वाण चलाया था। तेलुगु भास्कर रामायण मे माना गया है कि राम ने मथरा को लात मारी थी।

(५) सत्योपाख्यान (अध्याय १०-१४) के अनुसार मन्थरा ने पूर्व-जन्म के वैर के कारण राम को वनवास दिलाया था। वह दैत्य विरोचन की पुत्री थी और दैत्य-देवता-युद्ध मे उसने पाशो से देवताओ के विमान और वाहन बाधे थे। इसपर विष्णु की आज्ञा से इन्द्र ने उसे वज्र द्वारा मारा था (दे० अध्याय १०-१४)।

मन्थरा के **अगले जन्म** का भी उल्लेख किया गया है। आनन्द रामायण के अनुसार वह कृष्णावतार के समय पूतना के रूप मे प्रकट होगी और कृष्ण द्वारा मार डाली जायगी (दे० ६, ५, ३५), लेकिन इसी रचना के एक अन्य स्थल पर कहा गया है कि वह कस के यहा कुब्जा के रूप मे अवतार लेगी (दे० १, २, ३)।

अध्याय १६

अरण्यकाड

१—वाल्मीकि रामायण का अरण्यकाड

४५५ क । अरण्यकाड की कथावस्तु

(१) दण्डकारण्य-प्रवेश (सग १-१६)

विराध—दडकारण्य-निवामी ऋषियो का स्वागत (सर्ग १), विराध द्वारा सीता-अपहरण तथा राम-लक्ष्मण का उसे परास्त करना (सर्ग २-४)।

शरभग—राम को देख इद्र का आश्रम से प्रस्थान। शरभग का राम को सुतीक्ष्ण के आश्रम भेजना। राम द्वारा राक्षसो के विरुद्ध सहायता देने की प्रतिज्ञा (सर्ग ५-६)।

सुतीक्ष्ण—सुतीक्ष्ण के आश्रम मे रात्रि व्यतीत कर प्रस्थान (सर्ग ७-८)। सीता द्वारा अहिंसा का आग्रह, राम द्वारा राक्षसो के विरुद्ध सहायता करने की प्रतिज्ञा का उल्लेख (सर्ग ६-१०)।

अगस्त्य—पचाप्सर-तडाग पर आगमन। राम का तडाग के चारो ओर के आश्रमो मे दस वष तक निवास। सुतीक्ष्ण से अगस्त्य-आश्रम का माग पूछना। अगस्त्य द्वारा इल्वल और वातापि के वध की कथा का राम द्वारा उल्लेख। अगस्त्य का स्वागत और विष्णु-धनुष प्रदान, फिर गोदावरी-तट पर स्थित पचवटी का पथ-प्रदर्शन (सर्ग ११-१३)।

जटायु—दशरथ के मित्र और सम्पाति के भाई का जटायु से मिलना (सर्ग १४)। पचवटी मे लक्ष्मण द्वारा पर्ण-कुटी-निर्माण। लक्ष्मण का कैकेयी को दोष देना। राम का उन्हे रोक कर भरत-गुण-कथन के लिए आग्रह (सर्ग १५-१६)।

(२) शूर्पणखा (सर्ग १७-३४)

शूर्पणखा का विरूपीकरण—राम और लक्ष्मण से प्रवचित होकर शूर्पणखा का सीता की ओर झपटना। लक्ष्मण का उसके नाक-कान काटना (सर्ग १७-१८)। खर के भेजे हुए १४ राक्षसो का राम द्वारा वध (सर्ग १६-२०)।

खर-वध—खर के १४००० की सना लेकर पहुँचने पर सीता और लक्ष्मण का गुफा मे जाना (सर्ग २१-२४)। राम द्वारा राक्षसो तथा दूषण, त्रिशिर और खर

का वध (सर्ग २५-३०)। अकपन का रावण को समाचार देने और सीता-हरण के लिए प्रोत्साहित करना, मारीच से मन्त्रणा (सर्ग ३१)।

शूर्पणखा-रावण-सवाद—शूर्पणखा का लका जाकर रावण की भर्त्सना करना और सीता के सौंदर्य का वर्णन करना, रावण का सीताहरण का निश्चय (सर्ग ३२-३४)।

(३) सीताहरण (सर्ग ३५-५६)

रावण-मारीच सवाद—रावण का मारीच के सम्मुख सीता-हरण का प्रस्ताव रखना। मारीच का समझाना, बाद मे चेतावनी देकर स्वीकार करना (सर्ग ३५-४१)।

कनक-मृग—मारीच के कनक-मृग-रूप को देखकर सीता का उसके लिए प्रार्थना करना। सीता को लक्ष्मण की रक्षा मे छोडकर राम का मृग के लिए जाना। दूर जाने पर राम का मारीच को मारना। मरते समय उसका राक्षस रूप मे 'सीता-लक्ष्मण' शब्द करना, सीता की लाछना से लक्ष्मण का प्रस्थान (सर्ग ४२-४५)।

सीता-हरण—परिव्राजक के रूप मे रावण का सीता से जीवन-वृत्तात सुनना। प्रकट होकर रावण का बलपूर्वक सीता को अपने रथ पर ले चलना। सीता द्वारा पुकारे जाने पर जटायु का युद्ध करना और आहत होना (४६-५१)। सीता के आभूषणो का गिरना, पाँच बन्दरो की ओर सीता का आभूषण फेकना, लका मे सीता का अशोकवन मे राक्षसियो के नियत्रण मे रहना (सर्ग ५२-५६)। (एक प्रक्षिप्त सर्ग इन्द्र का सीता के लिए हवि ले आना)।

(४) सीता की खोज (सर्ग ५७-७५)

शून्य पर्णशाला—लौटते समय राम का लक्ष्मण से मिलना और शकाकुल होकर लक्ष्मण को दोष देना (सर्ग ५७-५६)। शून्य कुटी देखकर राम का विलाप और लक्ष्मण की सान्त्वना। गोदावरी तट पर खोज। पुष्प तथा आभूषणो का मिलना, जटायु-युद्ध के चिह्न दिखाई देना (सर्ग ६०-६४), लक्ष्मण की सान्त्वना (सर्ग ६५-६६)।

जटायु—मरण के पूर्व जटायु का रावण द्वारा सीता-हरण तथा दक्षिण की ओर प्रस्थान का उल्लेख (सर्ग ६७-६८)।

कबध—लक्ष्मण का अयोमुखी को विरूप करना। कबध का बाहुविच्छेद, उसके विषय मे स्थूलशिर तथा इन्द्र के शाप का उल्लेख, चिता के प्रज्वलित होने पर कबध का दिव्य रूप मे सुग्रीव के पास जाने की मन्त्रणा देना (सर्ग ६६-७३)।

शबरी—पम्पासर स्थित आश्रम मे शबरी का स्वागत और उसका स्वर्गारोहण। पपा-वर्णन और राम का विलाप (सर्ग ७४-७५)।

ख । अरण्यकांड का विश्लेषण

तीनो पाठो मे विभिन्नता

४५६ दाक्षिणात्य पाठ के कई पूरे सर्ग अन्य पाठो मे नही मिलते है।

सर्ग ३१ अकंपन रावण के पास जाकर राम द्वारा खर के वध का समाचार सुनाता है, और सीता के सौंदर्य की प्रशंसा कर उनको हर लेने का परामर्श देता है। इसपर रावण मारीच के पास जाकर उससे सहायता मांगता है, लेकिन मारीच राम की वीरता का वर्णन कर रावण को सीताहरण करने मे रोकता है। यह सर्ग न तो गौडीय पाठ मे मिलता है और न पश्चिमोत्तरीय पाठ मे, इन दोनो मे शूर्पणखा पहले-पहल रावण को खरवध का समाचार सुनाती है।

सर्ग ६० सीता की खोज करते हुए राम वृक्षो तथा पशुओ को सम्बोधित करते हैं। यह सर्ग गौडीय पाठ मे नही मिलता।

सर्ग ६२ और ६३ इन दो सर्गों मे राम-विलाप तथा सर्ग ६० की पुनरावृत्ति मात्र मिलती है। दोनो सर्ग केवल दाक्षिणात्य पाठ मे पाये जाते है।

इसके अतिरिक्त दाक्षिणात्य पाठ मे लक्ष्मण द्वारा राक्षसी अयोमुखी के वध का जो वृत्तान्त दिया गया है (दे० सर्ग ६६, ११-१८) वह अन्य पाठो मे नही मिलता है। दाक्षिणात्य पाठ मे सर्ग ५६ के पश्चात् एक प्रक्षिप्त सर्ग मिलता है, जिसमे इंद्र द्वारा सीता के पास पायस ले आने का वर्णन किया गया है। यह सर्ग अन्य पाठो मे प्रक्षिप्त नही माना गया है (दे० आगे अनु० ५००)। तीनो पाठो की शेष विभिन्नताएँ गौण है।

प्रक्षेप

४५७ एच० याकोबी का अनुमान है कि आदिरामायण मे चित्रकूट से प्रस्थान करने के बाद अरण्यकांड के ग्यारहवे सर्ग का प्रारम्भ (श्लोक १-५) मिलता था

अग्रतः प्रययौ रामः सीता मध्ये सुशोभना।
पृष्ठतस्तु धनुष्पाणिर्लक्ष्मणोऽनुजगाम ह ॥ १ ॥

अनन्तर पंचवटी मे आगमन का वर्णन था (सर्ग १५)। इसके अनुसार **विराध-वध, शरभंग-सुतीक्ष्ण-अगस्त्य** के आश्रमो मे गमन तथा सीताहरण से पहले **जटायु से भेंट,** ये सब वृत्तान्त वाल्मीकिकृत काव्य मे नही पाए जाते थे। इनका आधिकारिक कथावस्तु के दृष्टिकोण से कोई महत्त्व भी नही है। भरत के प्रस्थान के पश्चात् शूर्पणखा के आगमन तक की ११-१२ वर्ष की अवधि का कुछ वर्णन करने के उद्देश्य से उपर्युक्त वृत्तान्त यहाँ रखे गए होंगे। एच० याकोबी का यह अनुमान न्यायसंगत प्रतीत होता है। वास्तव मे अनेक ऐसी रामकथाएँ भी मिलती है, जिनमे राम केवल सीताहरण के पश्चात् जटायु से मिलते है तथा रामायण से भी ऐसी ही ध्वनि निकलती है (दे० आगे अनु० ४७०)।

इसके अतिरिक्त परस्पर विरोधी बातों से पता चलता है कि अरण्यकाड का मूलरूप हमारे सामने नहीं है। सीता-रावण-सवाद मे सीता अपनी कथा सुनाती हुई कहती है, कि मैंने १२ वर्ष अयोध्या मे बिताये है, और राम के निर्वासन के समय मेरी अवस्था १८ वर्ष की थी। इसके अनुसार विवाह के समय सीता की अवस्था ६ वर्ष की थी (सर्ग ४७)। किन्तु रामायण के कई अन्य स्थलो पर विवाह के समय सीता के उस समय 'पतिसयोगसुलभ' वयस का उल्लेख किया गया है।

जटायु राम से स्पष्ट शब्दो मे कहता है कि रावण ने सीता का अपहरण किया है (सर्ग ६८), लेकिन आगे चलकर राम सीता के अपहर्ता के नाम से अनभिज्ञ है।

अधिक सभव है कि अरण्यकाण्ड के दो महत्वपूर्ण वृत्तान्त आदिरामायण मे विद्यमान नही थे, अर्थात् शूर्पणखा का विरूपण (दे० आगे अनु० ४८३) तथा कनकमृग (दे० अनु० ४९०)।

२—अरण्यकाड का विकास

४५८ अरण्यकाड की मुख्य कथा-वस्तु सीताहरण है, इसके विकास की रूप-रेखा अगले परिच्छेद मे प्रस्तुत की जायेगी। शेष सामग्री मे कोई विशेष परिवर्तन अथवा परिवर्द्धन नही किया गया है। वाल्मीकि के कथानक के क्रमानुसार कुछ गौण बातो की ओर निर्देश करना है।

क। दण्डकारण्य-प्रवेश (सर्ग १-१६)

पहले परिच्छेद मे इसका उल्लेख किया गया है कि इस अश की अधिकाश सामग्री सभवत वाल्मीकिकृत रचना मे नही पाई जाती थी।

दाक्षिणात्य पाठ मे **विराध** के वध के बाद उसके दिव्य रूप धारण करने का उल्लेख नही किया गया है। यह प्रसग गौडीय और पश्चिमोत्तरीय पाठ (दे० गो० रा० ३, ८, प० रा० ३, ५) मे तथा आगे चलकर भी प्राय सब रामकथाओ मे मिलता है। इसके अतिरिक्त अध्यात्म रामायण मे विराध राम से भक्ति की याचना करता है (दे० ३, १, ३९)। वाल्मीकि रामायण (३, ४, १६) मे वह एक तुम्बुरु नामक गन्धर्व है जो रभा के कारण कुबेर का शापभाजन बन गया था। अध्यात्म रामायण (३, १, ३८) तथा आनन्द रामायण (१, ७, १६) इसको दुर्वासा द्वारा शापित विद्याधर मानते है। **रगनाथ रामायण** (दे० ३,३) मे वह अपना परिचय देते हुए कहता है कि मेरी माता शतह्रद और मेरे पिता जय है।

हिन्देशिया के **सेरीराम** मे विराध के स्थान पर एक 'पुर्वा ईता' नामक राक्षस की चर्चा है जो रावण का कृपापात्र बनने के उद्देश्य से सीता का हरण करने का निष्फल प्रयत्न करता है। **जैनी रामायणो** मे **विराधित** नामक विद्याधर को पर्याप्त महत्व दिया गया

है। वह वरदूषण की सेना हराने मे लक्ष्मण की सहायता करता है, उसके सेवक सीता की खोज करते है तथा लका के युद्ध मे उसकी सेना भी राम का साथ देती है (दे० **पउमचरिय** पर्व ४५ तथा ५४, ३६)। **हेमचन्द्र** (६, ४५) उस विराध ही कह-कर पुकारता है, पउमचरित्र (६, २२) के अनुसार वह चन्द्रोदर तथा अनुराधा का पुत्र है।

४५६ राम के भिन्न भिन्न **आश्रमो** मे जाकर तपस्वियो से मिलने के वृत्तात का इतना ही विकास हुआ है कि वाल्मीकि रामायण मे राम का स्वागत केवल अतिथि के रूप मे किया जाता है, लेकिन अर्वाचीन रचनाओ मे विष्णु के रूप मे राम की स्तुति की जाती है। इस प्रकार के विकास के दो उदाहरण यहा पर्याप्त होगे। **शरभग** के आश्रम के निकट पहुँचकर राम, सीता और लक्ष्मण इन्द्र का रथ स्वर्ग की ओर प्रस्थान करते हुये देखते है। उस समय इद्र शरभग से यह कहकर चले जा रहे थे कि राम (रावण पर) विजय पाने के बाद ही मुझे देखने के योग्य बनेगे।[1] अनन्तर रामादि आश्रम मे प्रवेश कर शरभग के पैरो का स्पर्श करते है

तस्य पादौ च सगृह्य राम सीता च लक्ष्मण ।
निषेदुस्तदनुज्ञाता लब्धवासा निमन्त्रिता ॥२६॥

राम के प्रश्न का उत्तर देते हुये शरभग कहते है कि इन्द्र मुझे ब्रह्मलोक ले जाने के लिए आए थे किन्तु आप जैसे प्रिय अतिथि को देखे बिना मै ब्रह्मलोक नही जाना चाहता था

अह ज्ञात्वा नरव्याघ्र वर्तमानमदूरत ।
ब्रह्मलोक न गच्छामि त्वामदृष्टवा प्रियातिथिम ॥२६॥

कब रामायण (३, २) के अनुसार इद्र शरभग को ब्रह्मलोक ले जाने के लिए उनके आश्रम आए थे किंतु शरभग मोक्ष ही चाहते थे और इसीलिए उन्होने इद्र के साथ जाना अस्वीकार किया। राम को आते देखकर इद्र ने परब्रह्म तथा विष्णु अवतार के रूप मे राम की स्तुति की और अनन्तर वे स्वर्ग सिधारे। राम, लक्ष्मण तथा सीता का स्वागत करने के पश्चात् शरभग ने चिता जलाई तथा उसमे अपनी स्त्री के साथ प्रवेश कर मोक्ष प्राप्त कर लिया।

अध्यात्म रामायण मे शरभग राम को देखकर सहसा उठ खडे हुए (**सभ्रमादुत्थित** दे० ३, २, २) और आगे बढकर उन्होने उनकी भली भाति पूजा की। राम ने

1 दे० ३, ५, २२-२३। रगनाथ रामायण (३, ४) मे इसके विषय मे लिखा है—"इद्र भी बहुत दुखी होकर, वनवास से खिन्न आपको न देख सकने के कारण यहाँ से चले गये है।"

शरभग के पर छुए, ऐसा कोई उल्लेख अध्यात्म रामायण मे नही मिलता। चिता पर चढ कर वह राम से यह प्रार्थना करते है—'मेरे हृदय मे सर्वदा अयोध्यापति राम विराजमान रहे।'[१]

पद्मपुराण के उत्तरकाण्ड, बलरामदास रामायण तथा अन्य अर्वाचीन रचनाओ के अनुसार राम ने दण्डकारण्यवासी ऋषियो को आश्वासन दिया कि वे कृष्णावतार के समय गोपियाँ बन जायेगे (दे० आगे अनु० ७८७)

४६० **अगस्त्य** के पास पहुँच कर राम ने उनके पैर छुए, इसका उल्लेख वाल्मीकि रामायण मे किया गया है

जग्राहापततस्तस्य पादौ च रघुनन्दन ॥२४॥ (सर्ग १२)

अनन्तर अगस्त्य महान् धर्मचारी और प्रभावशाली राजा तथा पूजनीय अतिथि के रूप मे राम का स्वागत करते है

राजा सर्वस्य लोकस्य धर्मचारी महारथ ।
पूजनीयश्च मान्यश्च भवान्प्राप्त प्रियातिथि ॥३०॥

अध्यात्म रामायण के अनुसार अगस्त्य[२] राम का आगमन सुनकर शीघ्र ही उठकर राम के पास पहुचे (**स्वयमुत्थाय मुनिभि सहितो द्रुतम्** दे० ३,३,११) और

---

१ दे० अ० रा० ३, २, १०। **वाल्मीकि रामायण** (सर्ग ११) मे इसका उल्लेख है कि राम अगस्त्य से मिलने के पूर्व पचाप्सर-सरोवर के तट पर पहुँचे थे। माण्टकर्णि मुनि ने तपोबल से इसका निर्माण किया था और अपनी तपस्या को छोडकर उसमे देवताओ द्वारा भेजी हुई पाँच अप्सराओ के साथ निवास करते थे। **आनन्द रामायण** (विवाहकाण्ड, सर्ग ५-७) के अनुसार कथा इस प्रकार है—पाच गन्धर्वकन्याएँ और सात नागकन्याए उस सरोवर मे जल-क्रीडा किया करती थी। एक तपस्वी ने उनको कई बार मना किया किन्तु तपस्वी की साधना मे बाधा उपस्थित करने के विचार से इन्द्र ने उन कन्याओ को वहाँ जाते रहने के लिए उभाडा। अन्त मे तपस्वी ने जलदेवियो से निवेदन किया कि वे उन कन्याओ को अपने यहाँ कैदी बना ले। तपस्या समाप्त कर ऋषि तो स्वर्ग चले गये किन्तु जलदेवियो ने उन कन्याओ को अपने पास रोक लिया। रावण-वध के बहुत समय बाद राम ने उनको मुक्त किया तथा उनके विवाह का भी प्रबन्ध किया।

२ **कब रामायण** (३, ३) मे अगस्त्य को मधुर तमिल भाषा का प्रवर्त्तक माना गया है।

उनकी पूजा की (**सम्पूज्य पूजया बहुविस्तरम्** दे० वही, श्लोक १६) । राम की विस्तृत स्तुति करने के उपरान्त अगस्त्य प्रार्थना करते है कि मेरे हृदय मे आपकी भक्ति सर्वदा बनी रहे और आपके भक्तो का सत्सग मुझे प्राप्त हो

तस्माद्राघव सदभक्तिस्त्वयि मे प्रेमलक्षणा ॥४१॥
सदा भूयाद्धरे सगस्त्वद्भक्तेषु विशेषत ।

वाल्मीकि रामायण के कई स्थलो पर तथा परवर्ती रामकथाओ मे भी उन आयुधो की चर्चा है जिन्हे अगस्त्य ने राम को प्रदान किया था । इन्द्र ने उन्हे पूर्वकाल मे अगस्त्य को दिया था । वाल्मीकि रामायण के अनुसार उनकी सूची इस प्रकार है— विश्वकर्मा द्वारा निर्मित वैष्णव चाप, ब्रह्मा का दिया हुआ अमोघ शर, अक्षय-बाणो मे भरे दो तरकश तथा एक हेमविभूषित खग (दे० ३, १२, ३२-३४) । **रामकियेन** (अध्याय १६) के अनुसार ईश्वर ने राम के लिये अगस्त्य के यहा अपना कवच छोड दिया था, जिसे पहनकर उन्होने त्रिपुर को हराया था । **तत्त्वसग्रह रामायण** (३, ६) मे पृथ्वी देवी प्रकट होकर सीता को जडाऊ पादुकाओ का एक जोडा देती है, जिसे पहन कर राम पादपीडा तथा क्षुधा का अनुभव नही करेगे ।

ख । लक्ष्मण का संयम

४६१ **अध्यात्म रामायण** मे सभवत लक्ष्मण के **उपवास तथा जागरण** का प्राचीनतम उल्लेख किया गया है । इन्द्रजित् के विषय मे विभीषण राम से कहते है कि जिसने बारह वर्ष तक आहार और निद्रा[1] को छोड दिया हो उसी के हाथ से ब्रह्मा ने इन्द्रजित् की मृत्यु निश्चित की है

यस्तु द्वादश वर्षाणि निद्राहारविवर्जित ॥६४॥
तेनैव मृत्युर्निर्दिष्टो ब्रह्मणास्य दुरात्मन ।

(युद्धकाण्ड, सर्ग ८)

निम्नलिखित रचनाओ मे भी लक्ष्मण के इस सयम की चर्चा है

आनन्दरामायण (१, ११, १७६), कबरामायण, द्विपद रामायण, तोरवे रामायण, भावार्थ रामायण (६, ३६), बिर्होर रामकथा, रामकेर्त्ति, पाश्चात्य वृत्तान्त न० १ और ५ । कुछ अन्य रचनाओ मे अन्न तथा निद्रा के अतिरिक्त स्त्री का त्याग भी उल्लिखित है, उदाहरणार्थ कृत्तिवास रामायण, बलरामदास रामायण, रामचन्द्रिका (**बारह वष छुधा, त्रिया, निद्रा, जीते होइ;** दे० १८, ३१), सेरीराम, पाश्चात्य वृत्तान्त न० १३ ।

---

१ अध्यात्म रामायण के अरण्यकाण्ड मे भी लक्ष्मण के जागरण की ओर सकेत किया गया है, दे० ३, ४, १२-१३ ।

कृत्तिवास रामायण के उत्तरकाण्ड मे प्रस्तुत प्रसग का विस्तृत वर्णन किया गया है (दे० ७, २)। अगस्त्य राम से कहते है कि इन्द्रजित् के समान त्रिभुवन मे कोई भी वीर नही था, वही उसका वध करने मे समर्थ था, जिसने चौदह वर्ष तक निद्रा और आहार छोड दिया हो तथा उस अवधि मे स्त्री का मुख भी नही देखा हो। यह सुनकर राम को आश्चर्य होता है और वह लक्ष्मण को बुला भेजते हैं। अगस्त्य का कथन सुनकर लक्ष्मण स्वीकार करते है कि मुझ मे ये शर्ते विद्यमान थी। श्रीचरणो को छोडकर मने सीता की ओर दृष्टिपात नही किया था और इसलिए मैं नूपुरो के अतिरिक्त उनके आभरणो को पहचानने मे असमर्थ था (दे० अगला अनु०)। आपकी और माता जानकी की रखवाली करते समय जब निद्रा पहले-पहल मेरी आँखो पर छा जाना चाहती थी तब मैंने क्रोध करके उसे बाण से छेदित किया तथा १४ वर्ष तक मेरे पास न आने का उसे आदेश दिया। फल देते समय आपने खाने की आज्ञा नही दी थी, सो मै अपना अश झोपडी में रख कर उपवास करता रहा। इस पर हनुमान् को फल ले आने के लिए भेजा जाता है, **वह फलो** से भरा हुआ तरकश देखते तो है किन्तु अहकार हो जाने के कारण वह उसे उठाने मे असमर्थ है। बाद मे लक्ष्मण जाते है और बाये हाथ से तरकश धारण कर उसे राम के सामने रख देते है। गिनने पर पता चलता है कि सात दिन के फल नही है किन्तु लक्ष्मण अपनी सफाई देते हुए राम को स्मरण दिलाते है कि किस-किस दिन वे फल बटोरने नही गये थे। अन्त मे लक्ष्मण विश्वामित्र की मत्रदीक्षा का उल्लेख करते हैं जिसके बल पर वह चौदह वर्ष तक अन्न का त्याग कर सके।[1]

इस वृत्तान्त मे लक्ष्मण के उपवास का जो कारण दिया गया है वह गौण परिवर्तनो के साथ अन्यत्र भी मिलता है। बिर्होर रामकथा के अनुसार लक्ष्मण को अन्न देते समय सीता कहती थी—"लो, यह तुम्हारा हिस्सा है।" वह इसे खाने के लिए नही कहती, इसीलिए लक्ष्मण केवल मिट्टी खाते रहे। **तोरवे रामायण** (६, ४५) मे भी लक्ष्मण के १४ वर्ष के उपवास, ब्रह्मचर्य तथा जागरण का उल्लेख किया गया है।

कम्ब रामायण तथा **द्विपद रामायण** मे लक्ष्मण के जागरण की कथा मे निद्रा देवी का मानवीकरण किया गया है। कम्ब रामायण (२, ६, ५१) के अनुसार लक्ष्मण शृगवेरपुर मे राम की रक्षा करते हुए रात भर जागते रहे। निद्रा देवी उनके सामने प्रकट हुई और लक्ष्मण ने उनसे कहा—जब हम अयोध्या लौटकर आयेगे, तब तुम मेरे पास आना। उसपर निद्रा देवी लक्ष्मण को प्रणाम करके चली गई। द्विपद रामायण के दो स्थलो पर उस प्रसग का उल्लेख मिलता है। कम्ब रामायण

१ कृत्तिवास ने बालकाण्ड मे भी लिखा था कि इस मन्त्रदीक्षा के फलस्वरूप लक्ष्मण उपवास कर सकेगे तथा इन्द्रजित् का वध करेगे (दे० १, ५७)।

की कथा के अनुमार श्रृगवेरपुर मे निद्रा देवी लक्ष्मरण से मिलने आई थी और इमी अवसर पर लक्ष्मरण ने उनसे कहा—"तुम दिन रात उर्मिला को अपनी शरण लो। (१४ वर्ष की) अवधि समाप्त होने पर मै तुमको फिर ग्रहण करूँगा" (२, १८)। परिणाम यह हुआ कि लक्ष्मण के लौटने तक ऊर्मिला सोती ही रही। अयोध्या मे राम के राजतिलक के पश्चात् राजसभा के वर्णन के अन्तर्गत निद्रादेवी के विषय मे निम्नलिखित कथा मिलती है (६, १६८)। उस समय निद्रा देवी लक्ष्मण को अपने वश मे कर लेने का उपक्रम करने लगी। लक्ष्मण यह देखकर अचानक सभा मे जोर से हँसने लगे। सभासदो ने लक्ष्मण का व्यवहार अपमान-जनक समझा और राम ने लक्ष्मण से हँसी का कारण पूछा। इसपर लक्ष्मण ने कहा—"वन मे निद्रा मुझपर प्रभाव डालने आई थी। मैने उनसे कहा कि तुम चोदह वर्ष मुझ से दूर रहो। मेरी बाते सुनकर वह चली गई। अब वह फिर मेरे पास आई। यह देखकर मुझे हँसी आई।" लक्ष्मण का यह स्पष्टीकरण सुनकर सबो की शका दूर हुई।[1] **रामकेर्ति** मे 'निद्रा' नामक लक्ष्मरण की एक हितैषिणी की चर्चा है जो उसे नीद देने आया करती थी। गुह के मिलन के बाद वन मे प्रवेश करने के पूर्व लक्ष्मरण ने उसे बुलाकर कहा—"आज से लेकर १४ वर्ष तक तुम्हे मुझे नीद नही दिलानी चाहिए। इस अवधि मे मै भोजन भी नही करूँगा अत तुम क्षुधा को मुझसे दूर हटाकर मुझे स्वस्थ और सबल बनाए रखो।" निद्रा ने ऐसा करने की प्रतिज्ञा की थी (सर्ग १)। उसी रचना मे इसका भी वर्णन किया गया है कि सीताहरण के पूर्व लक्ष्मरण राम की आज्ञा लेकर अकेले ही तपस्या करने गये थे (सर्ग ३)। **सेरीराम** मे लक्ष्मण के सयम की कथा इस प्रकार है। सीताहरण के पश्चात् राम मूर्च्छित होकर सीता के पलक पर गिर जाते है। लक्ष्मण चालीस दिन तक निद्रा, अन्न तथा स्त्री-प्रसग का त्याग करते हुए राम का सिर गोद मे लेकर निश्चल बैठे रहते है। एक आकाशवाणी लक्ष्मरण के इस सयम की प्रशसा करती है तथा यह भी प्रकट करती है कि राम-सीता-वियोग १२ वर्ष के बाद समाप्त होगा।'

४६२ वाल्मीकि के आदिकाव्य मे **सीता-लक्ष्मरण के सबध** का कोई विशेष ध्यान नही रखा गया था। लक्ष्मरण राम तथा सीता, दोनो की सेवा करते हुए सीता के साथ निस्सकोच बातचीत तथा व्यवहार करते थे। एक स्थल पर इसका उल्लेख किया गया है कि लक्ष्मरण ने राम तथा सीता के पैर धोये थे (दे० २, ५०, ४६)। गगा पार

१ दे० चा० सूर्यनारायण मूर्त्ति, ऊर्मिला की नीद। हिन्दी अनुशीलन, वर्ष ११, अक २, पृ० ३७। उस लेख मे एक तेलुगु लोकगीत का विश्लेषरण किया गया है। कथावस्तु द्विपद रामायण पर आधारित है।

करने के अवसर पर राम लक्ष्मण को आज्ञा देते है कि वह सीता को उठाकर नाव पर रख दे—**सीता चारोपयान्वक्ष परिगृह्य मनस्विनीम** (दे० २, ५२, ७५), **सीता चारोपय शनै परिरभ्य तपस्विनी** (गौ० रा० २, ५२, ६)। बाद मे यह अनुचित जान पडा और कई उदीच्य हस्तलिपियो मे इसके बदले मे यह मिलता है—**अध्यारोहता ता (नाव) तु सीतया सह राघवौ** (दे० बडोदा सस्करण २, ४६, ६४, पादटिप्पणी १०६५)। चित्रकूट (दे० २, ५६, २०) तथा पचवटी (दे० ३, १५, २१) मे पहुँच कर लक्ष्मण के एक ही पर्णशाला बनाने का उल्लेख मिलता है, जिसमे तीनो साथ ही निवास करते थे। हरण के ठीक पहले राम की आर्त्तवाणी सुनकर तथा अपने पति की सुरक्षा के विषय मे चिंतित होकर सीता उत्तेजित हो जाती है तथा अपने देवर पर यह आरोप लगाती है कि वह अपनी भाभी पर अनुरक्त है और इसीलिए राम के साथ वन मे चले आए—**सुदुष्टस्त्व वने राममेकोऽनुगच्छसि मम हेतो** (दे० ३, ४५, २४) और यह भी कहती है कि राम से बिछुडने पर मै अवश्य आत्महत्या कर लूगी। महाभारत के रामोपाख्यान (३, २६२, २७) मे भी सीता की इस धमकी का उल्लेख है। सभवत सीता की इस लाछना के आधार पर **स्कद पुराण** के नागर खण्ड (अध्याय २०) मे लक्ष्मण के **स्वामिद्रोह** के वृत्तान्त की कल्पना कर ली गई है। पितृकूपिकातीर्थ मे पहुँचकर राम दशरथ के श्राद्ध का आयोजन करते है। सीता कही छिप जाती है और लक्ष्मण को विप्रो की सेवा करनी पडती है। श्राद्ध के बाद सीता फिर दिखाई देती है, जिससे लक्ष्मण को इतना क्रोध आ जाता है कि यह साथरी के लिए पत्ते तथा पैर धोने के लिए पानी ले आना अस्वीकार करते है। बाद मे 'कोपरक्तलोचन' लक्ष्मण दूर से राम को सोते हुए देखते है तथा उनके मन मे राम का वध करने तथा सीता को अपनी पत्नी बनाने का विचार उठता है

हत्वैन राघव सुप्त सीता पत्नी विधाय च।
कि गच्छामि निज स्थान विदेश वापि दूरत ॥४५॥

प्रात राम तथा सीता दक्षिण के लिए प्रस्थान करते है, लक्ष्मण राम-वध का अवसर ढूढते हुए दिन भर उनका पीछा करते है

लक्ष्मणोऽपि धनु सज्य कृत्वा सधाय सायकम्।
अनुव्रजति पृष्ठस्थस्तस्य छिद्र विलोकयन् ॥४६॥

शाम को गोकर्ण पहुँचकर लक्ष्मण राम के पास जाकर अपना अपराध स्वीकार करते है तथा राम से क्षमा पाते है। लक्ष्मण आत्मशुद्धि के उद्देश्य से राम के हाथ से मृत्यु चाहते है, नही तो वह अग्नि मे प्रवेश करने की सोच रहे है। मार्कण्डेय उस समय आ पहुँचते है तथा स्वामिद्रोह के प्रायश्चित्त के लिए बालमण्डन-तीर्थ मे स्नान करने का परामर्श देते है। पद्मपुराण के सृष्टि खड (अध्याय २८, १२६-१६०) मे भी लक्ष्मण का विद्रोह

(**नाह राम मवकाल दासभाव करोमि ते**, श्लोक १२७) तथा बाद मे उनका पश्चात्ताप वर्णित है, किन्तु पद्मपुराण मे सीता के प्रति आसक्ति का उल्लेख नही है ।

ऊपर इसका उल्लेख हो चुका है कि **खोतानी रामायण** मे, माता को राम तथा लक्ष्मण, दोनो की पत्नी माना गया है (दे० अनु० ३१२) । इस प्रकार की कल्पना वहाँ की बहुपति-प्रथा के आधार पर ही सभव हो सकी । प्राचीन काल म राम-साहित्य मे लक्ष्मण के सयम की प्रशसा मिलती है तथा सीता-लक्ष्मण सबध के चित्रण मे मर्यादा-वाद का ध्यान रखा गया है । प्रचलित वाल्मीकि रामायण के गौडीय (२, ५६, २०) तथा पश्चिमोत्तरीय पाठ (२, ६०, २०) मे लिखा है कि लक्ष्मण ने चित्रकूट मे दो पर्णशालाओ का निमाण किया था तथा परवर्ती रामकथाओ मे भी प्राय दो झोपडियो की चर्चा है ।[1] दाक्षिणात्य पाठ के एक प्रक्षेप मे जो अन्य पाठो मे नही मिलता लक्ष्मण कहते है कि वह सीता के आभूषणो मे से केवल नूपुर ही पहचान सकते है

नाह जानामि केयूरे नाह जानामि कुण्डले ॥२॥
नूपुरे त्वभिजानामि नित्य पादभिवन्दनात् ॥

(किष्किन्धा काण्ड, सग ६)

सीतात्याग के समय भी लक्ष्मण सीता से कहते है कि मैंने चरणो को छोडकर आपकी ओर आँख उठाकर कभी नही देखा है—**दृष्टपूर्व न ते रूप पादौ दृष्टौ तवानघे** (दे० ७, ४८, २१) । लक्ष्मण की यह उक्ति प्रक्षिप्त है क्योकि वह अन्य पाठो मे नही मिलती । फिर भी उपर्युक्त उद्धरणो मे तथा परवर्ती रामकथाओ मे उनकी व्यापकता से पता चलता है कि जैनी रामायणो को छोडकर रामकथा-साहित्य मे लक्ष्मण को शताब्दियो से सयमी के रूप मे देखा गया है । इसके विषय मे यहा पर दो कथाओ का उल्लेख करना है । **भावार्थ रामायण** के अरण्यकाड (अध्याय ८) के अनुसार राम किसी दिन सीता को लक्ष्मण की रक्षा मे छोडकर बाहर गये थे । सीता को नीद आई थी और उस नीद मे उनके कपडे अस्त-व्यस्त हो गये थे जिससे उनका शरीर अनावृत्त हो गया था । लक्ष्मण ने साधना मे लीन रहकर उसकी ओर ध्यान ही नही दिया । राम ने वापस आकर लक्ष्मण से पूछा कि स्त्री का रूप देखकर किसका मन स्थिर रह सकता है । लक्ष्मण ने उत्तर दिया—राम-भक्त का ही मन इससे प्रभावित नही होता । एक आदिवासी कथा (दे० अनु० २७५) के अनुसार लक्ष्मण ने किसी मन्दिर मे रहकर

---

१ अध्यात्म रामायण (२,६, ६०) के अनुसार वाल्मीकि के शिष्य एक सुविस्तीर्ण शाला बनाते है जिसमे दो मन्दिर है, तुलसीदास ने माना है कि देवता स्वय "**मजु दुइ साला एक ललित लघु एक बिसाला**" बनाने आये थे (दे० २, १३३) ।

१२ वप तक राम तथा सीता को नही देखा था। अन्त मे वह जैधपुर मे दानो से मिलने जाते ह। सीता उनसे कहती हे कि "स्वप्न मे मैंने तुमको कलसापुर के राजा के साथ युद्ध करते देखा और उसमे तुम्हारी जीत हुई थी।" लक्ष्मण इस स्वप्न के सत्य की परीक्षा लेने के लिए कलसापुर की ओर प्रस्थान करते हे। सीता सोचती हे कि मने लक्ष्मण को मृत्यु की जोखिम मे डाल दिया हे। वह महल छोडकर लक्ष्मण को रोकने का प्रयत्न करने जाती है। वह क्रमश लोमडी, अजीर का पेड तथा जलस्रोत बन जाती है और लक्ष्मण का स्पश पाकर अपना ही रूप धारण कर लेती ह तथा लक्ष्मण की परीक्षा लेती ह। लक्ष्मण उनकी ओर ध्यान न देकर कलसापुर की ओर आगे बढते हे और सीता निराश होकर घर जाती हे। बाद मे सीता स्वप्न मे देखती ह कि कलसापुर मे लक्ष्मण का वध हुआ, सीता से यह जान कर राम वहा जाते हे तथा लक्ष्मण को जिलाते है।

ग । शूर्पणखा

४६३ शूपणखा के विषय मे वाल्मीकीय उत्तरकाड मे लिखा है कि रावण ने कालकेन्द्र दानवेंद्र विद्युज्जिह्व के साथ अपनी बहन शूर्पणखा का विवाह कराया था (दे० ७, १२, २)। बाद मे रावण रसातल की दिग्विजय के अवसर पर अश्मनगर मे विद्युज्जिह्व[1] की सेना हराकर अपने बहनोई का भी वध करता है (दे० ७, २३, १७-१८)। शूपणखा लका पहुँचकर रावण की भर्त्सना करती हे तथा रावण उसको दण्डकारण्य मे भेज देता है, जहाँ वह खर को १४००० राक्षसो का नायक नियुक्त करता है (दे० ७, सर्ग २४)। इस वृत्तान्त मे खर को शूर्पणखा का मौसेरा भाई (मातृष्वसेय, श्लोक ३७) माना गया है तथा दूषण को खर का सेनापति। अयोध्याकाड मे खर को रावण का अनुज (**रावणावरज** २, ११६, ११) कहा गया है तथा अरण्यकाण्ड मे भी खर-शूर्पणखा का सम्बन्ध भ्राता-भगिनी का है (दे० १८, २५, १६, १ और २३, २०, २५, २२, ६ और २३)। शूर्पणखा एक अन्य स्थल पर खर और दूषण दोनो को अपना भाई मानती है (**भ्रातरौ खरदूषणौ,** ३, १७, २३)। अन्यत्र दूषण को खर का सेनापति माना है (३, २२, ७)। सारलादास के महाभारत मे शूर्पणखा के पति का नाम केशी है।

सेरी राम मे विद्युज्जिह्व का नाम वगासीगा है। किसी यात्रा से लौटकर रावण लका को चारो ओर से वर्गासीगा की जीभ[2] से घिरा हुआ पाता ह, जिससे वह शहर

---

१ विद्युज्जिह्व नामक राक्षस की चर्चा युद्ध काण्ड मे भी मिलती है। दे० अनु० ५८३।

२ बहुत सभव है कि यह प्रसग उत्तरकाण्ड के इस अर्धश्लोक पर निर्भर ह जिसमे कहा गया है कि जब रावण ने विद्युज्जिह्व को मारा था, तो उस

की रक्षा करता है, तब रावण अपनी तल्वार मे उसे काट कर अनजाने अपने बहनोई का वध करता हे। उस समय सूरा पदाकी (शूर्पणखा) गर्भवती थी, बाद मे वह दर्मासीगा को प्रसव करती है जो अपने पिता की हत्या का प्रतिकार लेने की शक्ति प्राप्त करने के लिए तपस्या करने जाता है। शूर्पणखा के इस पुत्र की कथा **पउमचरिय** पर आधारित है। इस रचना के अनुसार खरदूषण एक विद्याधर-वशी राजकुमार है जिनका विवाह चन्द्रनखा (शूर्पणखा) के साथ हुआ है, उनका पुत्र शम्बूक लक्ष्मण द्वारा वध किया जाता हे (दे० अनु० ६३१-६३२)।

सेरी राम की राफल्स हस्तलिपि मे लक्ष्मण शूर्पणखा के पुत्र का वध करने के बाद उसके साथ विवाह करते है (दे० ऊपर अनु० ३१६)। इस कल्पना का आधार भारतीय कथाओ मे देखा जा सकता हे। **पउमचरिय** के अनुसार लक्ष्मण चन्द्रनखा का रूप देखकर अनुरक्त हुए थे और उन्होने किसी बहाने से राम को छोडकर वन मे उसकी खोज की थी, किन्तु उसे न पाकर लौटे (दे० ४३, ४८)। **पद्मचरित** मे लक्ष्मण के इस विरह तथा खोज का उल्लेख मिलता हे—**पुनरालोकनाकाक्षो विरहादाकुलोऽभवत् ॥ अटवी पादपद्माभ्या बभ्रामान्वेषणातुर** (दे० ४३, ११४-११५)। **उदारराघव** (६, ६६) मे लक्ष्मण शूर्पणखा मे कहते है कि यदि तुम सचमुच चाहती हो, तो चौदह वर्ष के बाद अयोध्या आओ और मै स्वजनो की आज्ञा लेकर तुम से विवाह करूगा। **आश्चर्यचूडामणि** (१, ६) मे भी लक्ष्मण शूर्पणखा का सौन्दर्य देख कर विकारग्रस्त हो जाते है। **सारलादास** के महाभारत (वनपर्व) मे सीता सखी पाने की इच्छा से चाहती है कि लक्ष्मण शूर्पणखा से विवाह करे और राम भी इसके लिए अनुरोध करते है, किन्तु लक्ष्मण अस्वीकार करते है। बाद मे वह उसके कान और नाक काटते है।

४६४ शूर्पणखा के इस **विरूपीकरण** की कथा का अधिक विकास नही हुआ हे। इसकी प्रामाणिकता के विषय मे आगे विचार किया जायेगा (दे० अनु० ४८३)। **वाल्मीकि रामायण** के अनुसार शूर्पणखा राम के पास आकर प्रस्ताव करती है कि वह सीता तथा लक्ष्मण का भक्षण करके उनकी पत्नी बन जाये (सर्ग १७)। राम उसको अविवाहित लक्ष्मण के पास भेज देते है, किन्तु लक्ष्मण आपत्ति करते है कि मैं राम का दास हूँ और उसको राम के पास वापस भेजते है। राम की अस्वीकृति सुनकर शूर्पणखा सीता पर आक्रमण करने पर है, किन्तु राम की आज्ञा पाकर लक्ष्मण तलवार से उसके कान और नाक काटते है (सर्ग १८)। दाक्षिणात्य पाठ मे राम के सौन्दर्य तथा शूर्पणखा की कुरूपता को विशेष महत्त्व दिया गया है, गौडीय पाठ मे इसका स्पष्ट

समय विद्युज्जिह्व एक राक्षस को जीभ से चाट रहा था—**जिह्वया सलिहन्त च राक्षस समरे तदा** (७, २३, २८)।

शव्दो मे उल्लेख मिलता है कि राम के पास जाने के पूर्व शूर्पणखा ने मोहक रूप धारण कर लिया था (दे० ३, २३, १८-२५)। बहुत सी परवर्ती रचनाओ मे भी ऐसा कहा गया है।

निम्नलिखित रचनाओ मे राम द्वारा शूर्पणखा के विरूपण का उल्लेख मिलता है—**भागवत पुराण** (९, १०, ९), **गरुड पुराण** (अध्याय १४३), **पद्मपुराण** (पाताल खण्ड, अध्याय ३६, उत्तर खण्ड, अध्याय २६९), **देवी भागवत पुराण** (३, २८)। **नृसिंह पुराण** (अध्याय ४९) मे पहले-पहल राम के एक पत्र की चर्चा है। उस रचना मे शूर्पणखा राम को प्रलोभन देती हुई कहती है—**अतीव निपुणा चाहं रतिकर्मणि।**[1] राम द्वारा ठुकराए जाने तथा लक्ष्मण के पास भेजे जाने पर वह लक्ष्मण के नाम पत्र माँगती है, राम उस पत्र मे उसकी नासिका काटने का आदेश देते हैं। **भावार्थ रामायण** (३, ८), **सेरी राम** तथा **पाश्चात्य वृत्तान्त** न० ३ (अध्याय ४) मे भी राम के पत्र का उल्लेख मिलता है। **सेरी राम** के अनुसार सूरापदाकी (शूर्पणखा) अनुमान करती है कि लक्ष्मण ने उसके पुत्र का वध किया था, वह अपने रिश्तेदार राक्षस राजा दर-कालहसीन (खरदूषण) के पास जाकर कहती है कि मैंने लक्ष्मण का प्रेमप्रस्ताव अस्वीकार किया था, इसीलिए उसने मेरे पुत्र का वध किया है। मन्त्री के परामर्श के अनुसार सूरापदाकी सुन्दर रूप धारण कर राम को आकर्षित करने का प्रयत्न करती है, राम उसे साधना मे लीन लक्ष्मण के पास भेजते है, किन्तु लक्ष्मण उसकी ओर दृष्टिपात भी नही करते। राम के पास लौटकर सूरापदाकी राम तथा सीता का अपमान करती है। तब राम उसकी पीठ पर पत्र लिखकर उसे लक्ष्मण के पास लौटने को कहते है। पत्र मे लिखा है कि लक्ष्मण उसकी नाक तथा हाथ काट दे। लक्ष्मण ऐसा ही करना चाहते है कि वह अपना राक्षसी रूप धारण कर लक्ष्मण को आकाश मे ले जाती है। लक्ष्मण राम की आज्ञा पूरी करके राक्षसी के साथ भूमि पर गिर जाते है, किन्तु देवताओ की रक्षा के फलस्वरूप चोट से बच जाते है।

शूर्पणखा के विरूपीकरण के विषय मे अन्य गौण विभिन्नताएँ भी पायी जाती हैं। भट्टि काव्य (४, ३१), महानाटक (मधुसूदन के सस्करण ३, ५३), चम्पू रामायण (३, १९), बालरामायण (५,७८) तथा प्रसन्नराघव (५, ३४) के अनुसार लक्ष्मण उसकी नाक मात्र काटते है किन्तु महावीर चरित (५, १२), अनर्घराघव (५, ५) तथा उदारराघव (९, १०६) मे लक्ष्मण कान तथा नाक के अतिरिक्त उसके होठ भी काटते है। कई रामकथाओ के अनुसार लक्ष्मण ने शूपणखा के स्तन भी काट दिये थे,

---

१ बलरामदास रामायण मे भी शूर्पणखा अपनी इस निपुणता का उल्लेख करती है।

उदाहरणार्थ **कब रामायण** (३, ५), **आनन्द रामायण** (१, ७, ५५), वासुदेव कृत राम-कथा तथा मलयालम **अध्यात्म रामायण, पाश्चात्य वृत्तान्त** १ और २० । **सेरी राम** की भाँति **पाश्चात्य वृत्तान्त** न० १ मे भी शूर्पणखा के लक्ष्मण को ऊपर उठाने का उल्लेख है, उस वृत्तान्त मे लक्ष्मण नाक और कान के अतिरिक्त उसके स्तन तथा उसके गाल भी काट लेते हैं तथा यह भी लिखा है कि उसके स्तनो के रक्त से जोके उत्पन्न हुई थी (दे० पृ० ८०) । **रामकियेन** (अध्याय १०) के अनुसार लक्ष्मण ने उसके कान, नाक, हाथ और पेर भी काट दिए थे ।

बालरामायण (अक ५) के अनुसार शूर्पणखा वनवास के पूर्व ही अयोध्या के निकट राम तथा लक्ष्मण द्वारा ठुकरायी तथा विरूपित की गई थी । वह रावण के पास जाकर कहती है कि मेने सीता को आपके योग्य समझकर उनका अपहरण करना चाहा जिसमे राम-लक्ष्मण ने मेरी यह दुर्गति कर दी है । इस पर रावण उत्तर देता है

दाशरथिविनाशाय कारणद्वयी सम्पन्ना सीता शूर्पणखा च ।

४६५ जैनी रामायणो मे लक्ष्मण अथवा राम द्वारा शूर्पणखा के विरूपण की कथा नही मिलती, गुणभद्र के **उत्तरपुराण** मे इसका नितान्त अभाव हे, किन्तु **पउमचरिय** (पर्व ४४) मे इस विरूपण की प्रतिध्वनि अवश्य विद्यमान है । चन्द्रनखा अपने पुत्र शम्बूक (दे० अनु० ६३१) के लिए विलाप करती हुई वन मे घूमती थी । राम तथा लक्ष्मण को देखकर वह मोहित हुई तथा दोनो द्वारा ठुकराये जाने पर वह अपने महल लौटी । वह अपने नाखूनो से अपना शरीर विक्षत कर, अपने बाल बिखेर कर तथा धूल से धूसरित होकर अपने भवन मे विलाप करने लगी । उसके पति खरदूषण के पूछने पर उसने शम्बूक-वध का समाचार सुनाया तथा यह भी कहा कि शम्बूक के हत्यारे ने मेरा आलिंगन किया तथा मुझसे बलात्कार करना चाहा किंतु मै किसी न किसी तरह से अपने को छुडाने मे समर्थ हुई ।

ब्रह्मचक्र के अनुसार शूर्पणखा अपनी दो पुत्रियो के साथ लका-किष्किन्धा के सीमान्तो की रखवाली करती थी । किसी दिन वे राम-सीता-लक्ष्मण को देखकर उन पर आक्रमण करती है । लक्ष्मण शूर्पणखा की दोनो पुत्रियो को मार डालते है तथा राम शूर्पणखा को भाग जाने के लिए बाध्य करते है ।

४६६ वाल्मीकि रामायण के अनुसार शूर्पणखा, विरूपित हो जाने के बाद, जनस्थान मे अपने भाई **खर** के पास पहुँचकर विलाप करती है । खर राम-लक्ष्मण का वध करने के लिए शूर्पणखा के साथ १४ राक्षसो को भेज देता है । राम सबो को मार डालते है तथ शूर्पणखा खर के पास लौटती है (दे० सर्ग १६-२१) । खर अब अपने सेनापति दूषण को १४००० राक्षसो को एकत्र करने का आदेश देकर उन सबो के साथ राम के पास जाता है । राक्षसो की सेना आते देखकर राम आदेश देते है कि सीता तथा

लक्ष्मण पहाड की किसी गुफा मे छिप जाएँ (सर्ग २२-२४)। अनन्तर राम अकेले ही राक्षसो का सामना करते ह, दूषण तथा उसकी समस्त सेना को मार कर राम अन्त मे त्रिशिरा का तथा इसके बाद खर का वध करते है।[1] शूर्पणखा अब रावण के पास जाती है (सग ३२)। राम अकले ही इतने राक्षसो को हराने मे समर्थ हुए, इसका कारण गौडीय पाठ के अनुसार यह है कि गान्धर्वास्त्र के प्रभाव मे राक्षस अपने साथियो मे राम का रूप देखकर एक-दूसरे को मारते थे (दे० गौ० रा० ३१, ४६-४७)। रघुवंश (१२, ४५) तथा **आनन्द रामायण** (१, ७, ६२) मे माना गया है कि खर-सेना मे जितने राक्षस थे राम ने उतने रूप धारण कर लिये।

अध्यात्म रामायण तथा अन्य परवर्ती रामकथाओ मे केवल **एक ही युद्ध** का वर्णन है जिसमे १४००० राक्षस मार डाले जाते है (दे० ३, ५)। ब्रह्मवैवर्त्त पुराण (कृष्ण जन्मखण्ड ६२, ४७) मे **लक्ष्मण द्वारा** खर-दूषण के वध का उल्लेख मिलता है। ऐसा प्रतीत होता है कि पउमचरिय मे पहले-पहल लक्ष्मण को युद्ध का नायक माना गया है। उस रचना के अनुसार विराधित (दे० अनु० ४५८) की सेना की सहायता से लक्ष्मण खरदूषण को हराने मे समर्थ हुए। बाद मे राम तथा लक्ष्मण खरदूषण के राजमहल मे ठहरते है (दे० पर्व ४५)।

भट्टिकाव्य (४, ४१), **सारलादास महाभारत** (वनपर्व), **रामायण ककविन** (४, ७१) तथा **सेरी राम** के अनुसार **राम तथा लक्ष्मण** दोनो मिलकर राक्षसो का सामना करते है। सेरी राम मे लक्ष्मण ही राक्षस राजा दरकालहसीन (खरदूषण) का वध करते है, युद्ध के बाद राजा का पुत्र[2] रावण के पास जाता है तथा सेमदारीसोना नामक मन्त्री को राज्याभिषेक दिया जाता है।

४६७ रामनाटको के अनुसार शूर्पणखा मथरा अथवा कैकेयी का रूप धारण कर राम को निर्वासित कराने का सफल प्रयत्न करती है (दे० अनु० ४५२)। कृत्तिवास (दे० अनु० ५००) तथा भावार्थ रामायण (५, १०) के अनुसार शूर्पणखा अशोकवन मे सीता से मिलने आई थी। भावार्थ रामायण मे वह सीता से रावण की पत्नी बनने का अनुरोध करती है।

---

१ दे० सर्ग २५-३०। दाक्षिणात्य पाठ मे यहाँ पर अकम्पन का वृत्तान्त मिलता है जो रावण को जनस्थान की घटनाओ से अवगत कराता है (दे० ऊपर अनु० ४५६)।

२ पउमचरिय के अनुसार भी खरदूषण का पुत्र सुन्द खरदूषण-वध के बाद अपनी माता चन्द्रनखा तथा अपनी सेना के साथ लकापुरी जाता है (दे० पर्व ४५)।

४६८ गुणभद्र के **उत्तरपुराण** मे रावण सीता-हरण के पूर्व **सीता के सतीत्त्व की परीक्षा** लेने के लिए शूर्पणखा को वाराणसी भेज देता है (दे० अनु० ६८)। कुछ विदेशी कथाओं मे शूर्पणखा स्वय **कनकमृग** बनकर सीता-हरण मे अपने भाई रावण की सहायता करती है, जैसे स्याम देश का ब्रह्मचक्र (दे० आगे अनु० ४९३) तथा बर्मा के राम-नाटक (दे० अनु० ४९३ टि०) मे। अनेक राम-नाटको मे शूर्पणखा **छद्मवेष** मे सीताहरण मे सहायक है, आश्चर्य चूडामणि मे वह सीता बन जाती है (दे० अनु० ४९४) तथा कृत्यारावण मे वह पहले तापसी तथा बाद मे सीता का रूप धारण कर लेती है (दे० अनु० ४९६)। जानकी परिणय (दे० ऊपर अनु० २४४) मे छद्मवेशी शूर्पणखा रावण वध के पश्चात् हनुमान् से पहले अयोध्या पहुँचती है और भरत तथा शत्रुघ्न को राम-वध का झूठा समाचार देती है। **ब्रह्मचक्र** मे शूर्पणखा सीता **को रावण का चित्र** बनाने के लिए प्रेरित करके सीता-त्याग का कारण बन जाती है (दे० अनु० ७२४)।

४६९ **ब्रह्मवैवर्त्त पुराण** (कृष्णजन्म खण्ड, अध्याय ६२) मे शूर्पणखा के **अगले जन्म** का भी उल्लेख किया गया है। राम से ठुकराये जाने पर वह उनको शाप देती है (**मम शापात्तथा रामो हृतभार्यो भविष्यति,** श्लोक ४४) तथा विरूपण के पश्चात् वह रावण को उसकी सूचना देकर पुष्कर मे तपस्या करने जाती है। इसके फलस्वरूप वह ब्रह्मा से यह वरदान पाती है कि वह अपने अगले जन्म मे राम को पति-स्वरूप प्राप्त करेगी, इसके बाद वह अपना शरीर अग्नि मे जलाकर कुब्जा के रूप मे अवतार लेती है।

नीलगिरि मे शूर्पणखा की अब तक पूजा की जाती है[1] तथा मलयाली नत्तु नामक जाति की स्त्रियाँ शूर्पणखा की सन्तान मानी जाती है।[2]

घ। जटायु

४७० प्रचलित रामायण के तीन पाठो मे सीताहरण के पूर्व ही **जटायु से भेट** का तथा सीता की रक्षा करने की उसकी प्रतिज्ञा का उल्लेख मिलता है। सीताहरण के समय जटायु की निष्क्रियता का कारण गौडीय पाठ मे यह माना गया है कि कनक-मृग के आगमन के पूर्व वह अपने सम्बन्धियो से मिलने की आज्ञा लेकर तथा शीघ्र ही वापस आने की प्रतिज्ञा करके चला गया था (दे० गौ० रा० २३, ३-१०)। अन्य पाठो के अनुसार राम सीता को लक्ष्मण तथा जटायु की रक्षा मे छोडकर कनकमृग का वध करने गए थे। दाक्षिणात्य पाठ मे ही इसका उल्लेख मिलता है कि हरण के बाद सीता

१ दे० ओपर्ट, जर्मन एथनॉलॉजिकल जर्नल, भाग ३७, पृ० ७३४।

२ अनन्त कृष्ण अय्यर, कोचिन ट्राइब्स एड कस्टम्स, भाग १, पृ० २९।

ने सोते हुये जटायु को जगाकर उसको राम तथा लक्ष्मण के लिए एक सन्देश दिया था (दे० ४६, ३६-४०)। वास्तव मे आदि रामायण मे राम केवल सीताहरण के बाद ही जटायु से मिले थे। उपयुक्त पाठ-वैभिन्य के अतिरिक्त इसका प्रमाण यह है कि सीता की खोज करते समय राम जटायु को देखकर उसे गृध्र का रूप धारण करने वाला कोई राक्षस समझते है जिसने सीता का भक्षण किया है

अनेन सीता वैदेही भक्षिता नात्र सशय ।
गृध्ररूपमिद व्यक्त रक्षो भ्रमति काननम् ।।११।। (सर्ग ६७)

महाभारत (३, २६३), **भट्टिकाव्य** (सर्ग ५), **रामायण ककविन** (सर्ग ५) और **उदारराघव** (सर्ग ८) के अनुसार भी सीताहरण के पश्चात् ही जटायु का उल्लेख किया गया है।

रावण-जटायु-युद्ध के वर्णन मे **वाल्मीकि रामायण** के तीन पाठो मे कोई उल्लेखनीय अन्तर नही मिलता। जटायु रावण को देखकर सीताहरण के कारण उसकी निन्दा करता है तथा युद्ध के लिए चुनौती देता है (सर्ग ५०)। इस युद्ध मे जटायु अपने नखो से रावण को आहत करता है तथा उसके दो धनुष छीन कर नष्ट करता है। वह रथ के खरो का वध करके रथ तोड देता है, रथ मे बैठे हुए राक्षसो को गिरा देता है तथा सारथि को भी मार डालता है जिससे रावण सीता के साथ भूमि पर गिर जाता है

स भग्नधन्वा विरथो हताश्वो हतसारथि ।
अकेनादाय वैदेही पपात भुवि रावण ।।१६।। (सर्ग ५१)

अब रावण के पास केवल उसकी तलवार रह गई है। वह फिर उठकर आकाश मे सीता को ले जाता है। जटायु उसकी बाई भुजाओ को काट लेता है किन्तु वे फिर उत्पन्न हो जाती है। अन्त मे रावण सीता को छोड देता है तथा जटायु के अग काट कर भूमि पर गिरा देता है **पक्षौ पादौ च पार्श्वौ च खगमद्धृत्य सोऽच्छिनत्** (५१, ४२)। सीता जटायु के पास जाकर विलाप करती है किन्तु रावण उन्हे केशो से पकड कर (**केशेषु जग्राह,** सर्ग ५२, ८) आकाश के मार्ग से लका की ओर प्रस्थान करता है। अर्वाचीन रामकथाओ मे इस युद्ध के वर्णन मे गौण परिवर्द्धन किए गए हैं।

काश्मीरी रामायण मे सीता यह देखकर कि रावण जटायु को खग से मारने-वाला है, रावण से कहती है—'उसे रक्त से सने पत्थर खिलाइए, वह उन्हे खाकर गिर जाएगा।' रावण ऐसा ही करता है और जटायु पृथ्वी पर गिर पडता है। इससे मिलते-जुलते अनेक वृत्तात पाये जाते है। **खोतानी** तथा **तिब्बती** रामायणो मे रावण जटायु को रक्त से सने धातुओं के टुकडे खिलाकर उसे मार डालता है। दक्षिण भारत की एक रामकथा मे रावण जटायु को अपनी जाघ के रक्त से सना पत्थर खिलाता है (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० ३)।

हिन्देशिया के **सेरी राम** के अनुमार रावण-जटायु-युद्ध का वर्णन इस प्रकार है। सात दिन युद्ध करने के बाद दोनो एक-दूसरे को अपना **ममस्थान** बताते है। रावण धोखा देकर अपने पैर का अगूठा बताता है। इतने मे सीता पक्षियो की बोली मे जटायु से मर्मस्थान न कहने के लिए अनुरोध करती है। लेकिन जटायु सीता की बात टाल कर उसे (पख का अग्रभाग) प्रकट करता है और रावण से मारा जाता है। जटायु के गिरने के पहले सीता अपनी **अगूठी** उसके मुह मे रख देती है। रावण और जटायु के मर्मस्थलो का उल्लेख भारतीय कथाओ मे भी मिलता है। **भावार्थ रामायण** (३, १७), **तत्त्वसग्रह रामायण** (३, १५) तथा **पाश्चात्य वृत्तान्त** न० १ के अनुसार जटायु रावण के धोखे मे आकर अपना ममस्थान (पख का अग्रभाग) प्रकट करता है और हार जाता है। रावण भूठ बोलते हुए कहता है कि मेरा मर्मस्थान पर का अगूठा है (तत्वसग्रह रामायण) अथवा दाहिनी पिडली (पाश्चात्य वृत्तात न० १)। **तोरवे रामायण** (३ १०) मे भी इससे मिलती-जुलती कथा पाई जाती है।

रामकेर्ति, रामकियेन और **रामजातक** के अनुसार रावण ने सीता की अगूठी छीनकर इससे जटायु को मारा था और वह आहत होकर भूमि पर गिर गया था।

४७१ महाभारत के **रामोपाख्यान** के अनुसार राम और लक्ष्मण कनकमृग-वध के बाद वापस आते हुये जटायु से भेट करते है जो उनसे कहता है कि रावण सीता का अपहरण कर दक्षिण की ओर भाग गया है। **वाल्मीकि रामायण** मे दोनो पहले झोपडी को खाली पाते है, बाद मे सीता को खोजते समय वे रावण-जटायु युद्ध के चिह्न (टूटा हुआ रथ, मारे हुये खर और सारथि आदि) देखकर राक्षसो द्वारा सीतावध अथवा हरण की आशका करते है (सर्ग ६४)। आगे बढकर वे मरणासन्न जटायु से जान लेते है कि रावण सीता को लेकर दक्षिण की ओर चला गया है। जटायु राम-लक्ष्मण के सामने ही अपने प्राण छोड देता है। राम तथा लक्ष्मण विधिवत् उसकी अन्त्येष्टि तथा उदकक्रिया पूर्ण करते है और सीता की खोज मे दक्षिण की ओर आगे बढते है। **उदात्तराघव** मे मरणासन्न जटायु रक्त से सनी हुई चोच मे पत्ते पर पत्र लिखकर रावण को मारने के लिए राम से अनुरोध करता है तथा किसी ऋषि के हाथ से पत्र भेज देता है। **सेरी राम** के अनुसार राम सीता की खोज करते समय किसी नदी का जल पीते है तथा उसके स्वाद के बिगडने का कारण खोजते है। इस तरह जटायु का पता चलता है जो आहत होकर नदी के किनारे पडा हुआ है। वह राम-लक्ष्मण को अपने भाई दसमपानी (सम्पाति) का परिचय देकर कहता है कि वह 'गदारवानम्' नामक पहाड पर तपस्या करता है और मै उसको पन्द्रह-पन्द्रह दिन पर भोजन देने जाता हूँ।

बालरामायण (६, ५६ आदि) के अनुसार मरणासन्न जटायु ने रत्नशिखड द्वारा

सीताहरण का समाचार अपने सखा दशरथ के पास भेज दिया, जिसे सुनकर दशरथ ने आत्महत्या करने का विचार प्रकट किया।

वाल्मीकि रामायण मे राम मृत जटायु के प्रति शुभकामना प्रकट करते हुए कहते है—**मया त्वं समनुज्ञातो गच्छ लोकाननुत्तमान्** (६८, ३०)। परवर्ती रचनाओ मे जटायु के दिव्य रूप धारण कर राम की स्तुति गाने तथा स्वर्ग लोक के लिए प्रस्थान करने का उल्लेख मिलता है (दे० अध्यात्म रामायण ३, ८)।

पउमचरिय के अनुसार जटायु अपने अपवित्र शरीर का परित्याग करके पुण्योदय के कारण देवता बन गया (**सुरो जाओ**, ४४, ५५)।

४७२ **वाल्मीकि रामायण** के अनुसार जटायु **दशरथ का सखा** तथा **सम्पाति का भाई** है। विनता-पुत्र अरुण के दो पुत्र थे—गरुड तथा अरुण। **दाक्षिणात्य** (१८, ३३) तथा **पश्चिमोत्तरीय** (१६, ५५) पाठो के अनुसार सम्पाति तथा जटायु दोनो अरुण के पुत्र थे, **गौडीय पाठ** (२०, ३४) उनको गरुड की सन्तान मानता है। कृत्तिवास तथा बलरामदास के रामायणो मे भी सम्पाति तथा जटायु, दोनो गरुड के पुत्र है। दोनो किसी समय सूर्य के पास पहुँच गये थे, सम्पाति ने अपने अनुज को सूर्य की किरणो से व्याकुल देखकर उसे अपने पखो से ढक लिया था। इस प्रकार जटायु तो बच गया किन्तु सम्पाति के पख जल गये और वह निस्सहाय होकर विन्ध्य पर्वत पर गिर गया था।[1] सीताहरण के समय जटायु की अवस्था ६०००० वर्ष की थी (दे० ३, ५०, २०)।

सेरीराम के अनुसार कीसूब्रीसू नामक तपस्वी ने ३०० वर्ष तक तप करने के बाद विष्णु के तीन वाहनो को पुत्र के रूप मे प्राप्त किया था, अर्थात् गरुड, दसमपानी (सम्पाति) तथा जटायु।

महाभारत के रामोपाख्यान तथा वाल्मीकि रामायण के कई स्थलो पर जटायु को दशरथ का सखा कहा गया है।[2] **पद्मपुराण** के पातालखण्ड के गौडीय पाठ[3], **असमिया बालकाड** (अध्याय १२) और **कृत्तिवास रामायण** मे दशरथ-जटायु की इस

---

१ दे० ४, ५८, ८-७। इस वृत्तान्त का किंचित परिवर्तित रूप ४, ६१ मे मिलता है।

२ दे० महाभारत ३, २६३, १, रामायण ३, १४, ३-४, ३, ६७, २७, ४, ५६, २३, ४, ५७, ६।

३ दे० अध्याय १२। स्कद पुराण (नागर खड, अ० ६६), पद्मपुराण के उत्तरखण्ड (अध्याय ३४) तथा बलरामदास रामायण मे भी शनि से दशरथ की वरप्राप्ति का वर्णन किया गया है किन्तु इसमे जटायु का उल्लेख नही होता।

मित्रता के विषय मे निम्नलिखित वृत्तान्त मिलता है। किसी समय अयोध्या मे अनावृष्टि हुई थी। नारद मे इसका कारण रोहिणी नक्षत्र पर शनि का दृष्टिपात जानकर दशरथ शनि से युद्ध करने गये। शनि की दृष्टि मात्र से दशरथ का रथ टूट गया किंतु जटायु ने उसे सँभाला, जिससे दशरथ की विजय हुई। इसके फलस्वरूप दोनो ने अग्नि को साक्षी बनाकर मित्रता की थी—'उभये मित्रता करे अग्नि करि साक्षी' (दे० कृत्तिवास १, २७)।

पउमचरिय मे **जटायु तथा दण्डक** की अभिन्नता का प्रतिपादन किया गया है। वाल्मीकि रामायण के उत्तर काण्ड[1] मे अगस्त्य दण्डकारण्य के विषय मे कहते है कि इक्ष्वाकु के १०० पुत्रो मे से सबसे छोटा मूर्ख था, और अपने भाइयो का आदर नही करता था। उसे दडनीय समझकर इक्ष्वाकु ने उसका नाम दड ही रखा तथा उसे विन्ध्य और शैवाल के बीच का देश प्रदान किया था। दड ने किसी दिन अपने गुरु भार्गव (उशना) के आश्रम मे पहुँचकर तथा उनकी पुत्री अरजा को अकेली पाकर उसके साथ बलात्कार किया। भार्गव के शाप से इन्द्र ने राज्य के समस्त प्राणियो सहित दड को भस्म कर दिया। इस प्रकार दडकारण्य उत्पन्न हुआ।[2] **पउमचरिय** (पव ४१) के अनुसार एक गीध ने सुगुप्ति मुनि की शरण ली थी तथा मुनि ने उसके पूर्व-जन्म की यह कथा राम को सुनायी। दडक राजा एक श्रमण का धैर्य देखकर अपनी राजधानी मे श्रमणो को बुलाकर उनको विशेष आदर देने लगा था। इसपर एक पापी परिव्राजक ने निर्ग्रथ मुनि का वेष धारणकर दडक के अन्तःपुर[3] मे अनधिकार प्रवेश

---

१ दे० ७, सर्ग ७९-८१। पश्चिमोत्तरीय पाठ मे दण्डकारण्य की कथा अरण्यकाण्ड के अन्तर्गत रखी गई है, दे० ३, १७।

२ आनद रामायण (७, १८, १००) के अनुसार मुनि ने कन्या की प्रार्थना स्वीकार कर शाप का अत निर्धारित किया। अगस्त्य के आगमन पर वह देश फिर सजल होगा।

३ पउमचरिय के अनुसार दडक की पत्नी साध्वी तथा जैन धर्मावलबिनी है (दे० ४१, २०)। पद्मचरित (४१, ६१ और ७२) मे वह दुष्टा तथा परिव्राजको की भक्तिन मानी जाती है। पउमचरिउ (३५, ७-१०) के अनुसार वह अपने पुत्र की सहायता से जैन मुनियो पर राजकीय कोष की चोरी का झूठा आरोप लगाती है, बाद मे पउमचरिय के अनुसार जैनी श्रमण का रूप धारणकर दडक के अन्तःपुर मे किसी के अनधिकार प्रवेश की कथा भी दी गई है। हेमचन्द्र के जैन पुराण (५, ३३९ आदि) के अनुसार दडक कुभकारकुटनामक नगर का राजा था। उनका

किया जिससे राजा ने क्रोध मे आकर सब श्रमणो को यत्रो मे पेरने का आदेश दिया। एक ही श्रमण उस समय राजधानी मे नही थे, लोटकर उन्होने अपनी क्रोधाग्नि से समस्त शहर को जला दिया और वह स्थान अब दडकारण्य[1] के नाम से प्रसिद्ध है। दडक चिरकाल तक पृथ्वी पर भटक कर मर गया तथा बाद मे उस गीध के रूप मे प्रकट हुआ। अत मे मुनि ने गीध को सदुपदेश दिया जिससे वह श्रावक धर्म मे सम्मिलित हुआ तथा मुनि ने सीता से निवेदन किया कि वह उसकी रक्षा करे, राम ने उसके सिर की जटाएँ देखकर उसका नाम जटायु ही रखा।

ड। सीता की खोज

४७३ **वाल्मीकि रामायण** के अरण्यकाण्ड के अन्तिम १६ सर्गो की कथावस्तु इस प्रकार है। कनकमृग-वध के बाद राम लोटकर अपशकुन देखते है तथा आशका करने लगते है। रास्ते मे ही लक्ष्मण को पाकर राम सीता को अकेली छोड देने के कारण उनकी भर्त्सना करते है तथा झोपडी के पास पहुचकर और कही भी सीता को न देखकर वह उन्मत्त होकर वृक्षो तथा पशुओ को सम्बोधित करते हुए सीता का समाचार पूछते है।[2] राम द्वारा सम्बोधित हरिण दक्षिण की ओर प्रस्थान करते है जिससे राम-लक्ष्मण भी उसी दिशा मे खोज करने जाते है। इस खोज मे वे क्रमश जटायु,

---

पालक नामक मन्त्री स्कधक मुनि से द्वेष रखता था, उसने स्कधक के निवासस्थान पर अस्त्र छिपाकर उनपर झूठा अभियोग लगाया जिससे राजा ने पालक को स्कधक तथा उनके ५०० साथियो को दड देने की आज्ञा दी। पालक ने सबो को यत्र मे पेरने का आदेश दिया। स्कधक ने तब वह्निकुमार के रूप मे प्रकट होकर सब निवासियो के साथ दडक का राज्य भस्मीभूत कर दिया और इस प्रकार दडकारण्य उत्पन्न हुआ। इस कथा मे दडक की रानी जैन मुनियो का पक्ष लेती है।

१ इस कथा के बावजूद अगले सर्ग मे लिखा है कि दडकगिरि के शिखर पर दडक नाम का एक महानाग था जिससे यह प्रान्त दडकारण्य के नाम से विख्यात है (दे० ४२, १४)।

२ इस प्रसग पर **उन्मत्तराघव** नामक नाटक (अनु० २४१-२४२) तथा **विक्रमोवर्शीय** का चतुर्थ अक निर्भर प्रतीत होता है, अगले अनुच्छेद (४७४) की सामग्री भी इसका स्वाभाविक विकास माना जा सकता है। सर्ग ६४ मे गोदावरी से निवेदन किया जाता है कि वह सीता का समाचार बता दे किन्तु वह मौन ही रहती है (**भयात्तु नदी न शशस**), इसी के आधार पर प्रसन्नराघव मे नदियो के मानवीकरण की कल्पना कर ली गई है (दे० अनु० २३७)।

अयोमुखी, कबंध तथा शबरी से मिलकर अन्त मे पम्पा सरोवर के तट पर पहुँचते है। बीच-बीच मे राम का विलाप तथा लक्ष्मण की सान्त्वना विस्तार सहित वर्णित है (सर्ग ५७-७५)। सेरीराम के अनुसार राम-लक्ष्मण ने सीता-हरण के पश्चात् परिचरो को (दे० अनु० ४३८) महरीतीकन्नी के यहा भेज दिया, जिन्होंने दशरथ की राजधानी जाकर सीताहरण का समाचार सुनाया था।

जटायु (दे० अनु० ४७०-४७२) तथा **शबरी** (दे० अनु० ४७७-४८१) विषयक सामग्री का अलग विश्लेषण किया गया है। **अयोमुखी** का वृत्तान्त केवल दाक्षिणात्य पाठ मे मिलता है, वास्तव मे वह शूर्पणखा की कथा की आवृत्ति मात्र प्रतीत होती है। लक्ष्मण उस राक्षसी का प्रेम-प्रस्ताव अस्वीकार करते हुए उसके कान, नाक तथा स्तन अपनी तलवार से काटते है और वह भाग जाती है (दे० सर्ग० ६९, ११-१८)।

कबंध का प्रसग वाल्मीकि रामायण मे अपेक्षाकृत अधिक विस्तार के साथ वर्णित है (सर्ग ६९-७३)। राम-लक्ष्मण द्वारा भुजाएँ कट जाने के बाद कबंध निस्सहाय होकर भूमि पर गिर गया। अनन्तर कबंध ने अपने विषय मे दो भिन्न शापो का उल्लेख किया। प्रथम शाप की कथा इस प्रकार है।[1] कबंध डरावना रूप धारण कर ऋषियो को सताया करता था। इसी रूप मे उसने स्थूलशिरा पर आक्रमण किया था, जिससे मुनि ने यह शाप दिया कि तुम यह भयकर रूप धारण किये रहो। उसके अनुनय करने पर स्थूलशिरा ने कहा—'जब राम तुम्हारी भुजाएँ काटकर तुम्हारा शरीर जला देंगे तभी तुम अपना शुभ रूप फिर ग्रहण करोगे।' दूसरी कथा के अनुसार वह दनु का सुन्दर[2] पुत्र था, जिसने उग्र तप करके ब्रह्मा से दीर्घायु होने का वर प्राप्त किया था

---

१ दे० ७१, २-७। यह अंश स्पष्टतया प्रक्षिप्त है, इसी कारण से गोरेसियो ने उसे अपने सस्करण मे स्थान नही दिया।

२ दे० ७१, ७, बाद मे उसका नाम दनु ही माना गया है (दे० ७१, २०), एक पाठान्तर के अनुसार यहा पर भी दनु ही होना चाहिए। मूल के **'श्रिया विराजितम्'** का अर्थ **'सौंदर्ययुक्त'** न मानकर टीकाकार 'श्री नामक दनु का पुत्र' अर्थ भी देते है। इसी कारण से भट्टिकाव्य (६, ४८) तथा रामायण ककविन (६, ७५ आदि) मे कबंध को श्री का पुत्र माना गया है, जो किसी दिन मद्य के प्रभाव से एक मुनि का अनादर करके शाप का शिकार बन गया था। महावीरचरित मे कबंध राम को अपना परिचय इस प्रकार देता है—

दनुर्नाम श्रिय पुत्र शापाद्राक्षसता गत।
इन्द्रास्त्र-कृत-काबन्ध्य पूतोऽस्मि भवदाश्रयात् ।। (५, ३४)

और इस वर के बल पर इन्द्र को चुनौती दी थी। इन्द्र ने उसके हाथ पैर काट दिये तथा सिर पर वज्र मारा जिससे उसका सिर उदर मे धँस गया था। ब्रह्मा के वरदान को सत्य प्रमाणित करने के लिए इन्द्र ने उसे एक योजन की लम्बी भुजाए देकर तथा उसके उदर मे मुँह बनाकर आश्वासन दिया कि राम-लक्ष्मण द्वारा भुजाएँ कट जाने पर तुम स्वर्ग प्राप्त करोगे। अनन्तर राम-लक्ष्मण ने उसका शरीर जला दिया और चिता मे से एक दिव्य पुरुष उत्पन्न हुआ जिसने आकाश मे एक विमान पर विराजमान होकर राम को सुग्रीव के पास जाने का परामर्श दिया और पम्पा सरोवर तथा ऋष्यमूक का मार्ग बताकर स्वर्ग की ओर प्रस्थान किया।

महाभारत के **रामोपाख्यान** (३, २६३, २५-४३) के अनुसार भुजाए कट जाने पर कबध भूमि पर गिर गया तथा उसके शरीर से तत्काल एक दिव्य पुरुप उत्पन्न हुआ जिसने आकाश मे स्थित होकर अपना परिचय इस प्रकार दिया—मै विश्वावसु नामक गधर्व हूँ जो ब्रह्मा अथवा किसी ब्राह्मण के शाप[1] से राक्षस बन गया था। अनन्तर उसने बताया कि रावण ने सीता का हरण किया है तथा राम को सुग्रीव के पास जाने का परामर्श दिया।

अध्यात्म रामायण (३, ९) तथा **आनद रामायण** (१, ७, १५१-१६१) के अनुसार कबध 'रूपयौवनदर्पित' गधर्वराज था, जिसने ब्रह्मा से अवध्यता का वर प्राप्त किया था। बाद मे उसने अष्टावक्र[2] नामक मुनि का उपहास किया और उनसे शापित होकर राक्षस बन गया। इस कथा के अनुसार कबध के राक्षस बनने के पश्चात् ही इन्द्र ने उसके सिर पर वज्र मारा था जिससे उसके सिर तथा पैर उदर मे घुस गए थे। उसके शरीर के जल जाने के बाद उसमे से एक दिव्य पुरुष प्रकट हुआ, जो राम की स्तुति करने लगा। राम ने उसकी भक्ति से सन्तुष्ट होकर उसे अपने परमधाम को भेज दिया। अन्त मे कबध ने राम को शबरी के यहाँ जाने का परामर्श दिया तथा विमान पर चढ-कर विष्णुलोक के लिए प्रस्थान किया (३, १०, १-३)। **कृत्तिवास रामायण** (३, २८) मे भी यही कथा है, किन्तु यहा वह गधर्वराज न होकर कुबेरनामक दैत्य बताया जाता है।

रामचरितमानस (३, ३) मे माना गया है कि दुर्वासा ने कबन्ध को शाप

---

१ 'ब्रह्मानुशापेन', 'ब्राह्मणशापेन' पाठातर भी मिलता है।

२ महाभारत (३, १३२) के अनुसार अष्टावक्र कुहोड नामक मुनि का पुत्र था, कुहोड ने उसे गर्भावस्था मे ही यह शाप दिया था—**वक्रो भवितास्यष्ट-कृत्व**। समगा नदी मे नहाकर अष्टावक्र के सीधे हो जाने की कथा पूना सस्करण के अनुसार प्रक्षिप्त है (दे० ३, १३४, ३८ टि०)।

दिया था और राम के चरणो के दर्शन से वह शापमुक्त हो गया । राम ने कबन्ध को ब्राह्मणो की सेवा का महत्त्व समझाकर उसे परमपद प्रदान किया । **रामचन्द्रिका** (१२, ३३-३७) के अनुसार वह पहले इन्द्र के शाप के कारण गन्धर्व से राक्षस बन गया था तथा बाद मे इन्द्र से उसका युद्ध हुआ था । इन्द्र ने उससे कहा था कि राम द्वारा इसका उद्धार हो सकेगा ।

सेरी राम मे कबन्ध का उल्लेख नही मिलता, किन्तु सुग्रीव से मिलने के पूर्व राम-लक्ष्मण एक मत्स्य-भक्षी श्यामवर्ण दाती जग्गाल नामक राक्षस से भेंट करते ह, जिसकी लाल जटाएँ सात धनु लम्बी है । वह राम का रग देखकर उन्हे विष्णु का अवतार मानता है तथा राम-लक्ष्मण को मार्ग बताता है ।

४७४ **खोतानी रामायण** तथा **सेरी राम** मे राम और लक्ष्मण सुग्रीव से मिलने के पूर्व १२ वर्ष तक सीता की खोज करते है । इस खोज के वर्णन के अतर्गत सेरी राम मे **दो पक्षियो** की कथा मिलती है, जिनमे से एक राम का उपहास करता है और दूसरा राम का सहायक बन जाता है । प्रथम पक्षी की चार मादाएँ है, वह विरही राम को देखकर उनका यह कहकर उपहास करना है कि राम अपनी एक ही पत्नी की भी रक्षा नही कर पाये । इसपर राम उसे अन्धा बना देते है, जिससे उसकी चारो मादाएँ उसे छोडकर चली जाती है । एक अन्य पक्षी राम को बताता है कि रावण ने सीता का अपहरण किया है । वर पाकर वह एक लम्बी ग्रीव माग लेता है, जिससे वह सुगमता से अपना भोजन प्राप्त कर सके । बाद मे एक लडका उसे फसाकर बाजार ले जाता है । राम अपनी अँगूठी देकर उसे खरीद लेते है तथा लम्बी ग्रीव के स्थान पर उसे चार मादाओ को प्रदान करते है, जो उसके लिए भोजन ले आती रहेगी ।

इस प्रकार की कथाओ का मूलस्रोत भारतीय ही है क्योकि वे सारलादासकृत महाभारत (गदापर्व), बलरामदास रामायण, दुर्गावर कृत असमिया रामायण तथा आदिवासी वृत्तान्तो मे भी पाई जाती है । बाण की **कादम्बरी** (कथामुख २०) मे पम्प-सरोवर-वर्णन के अन्तर्गत राम द्वारा अभिशप्त चक्रवाक-मिथुनो का उल्लेख मात्र मिलता है ।

कृत्तिवासरामायण (३, २५) की तत्सबधी कथा इस प्रकार है । सीताहरण के बाद आहत जटायु से मिलने के पूर्व ही एक चक्रवाक से राम-लक्ष्मण की भेट हुई । राम ने चक्रवाक से पूछा कि जनकनदिनी को कौन ले गया है किन्तु चक्रवाक ने परिस्थिति समझने के बाद राम का इस प्रकार उपहास किया—"तुम दो मनुष्य होते हुए भी एक स्त्री की रक्षा नही कर पाये ? मै अकेला पक्षी हूँ, फिर भी दो मादाओ को रख लेता हूँ । तुम लोगो ने स्त्री को खो दिया और अब इधर-उधर भटक कर उसके विषय मे पूछते हो, क्षत्रिय समाज तुमको क्या समझेगा !"

राम ने क्रोध मे आकर उसको यह शाप दिया कि आज से तुम रति-सुख से

वंचित रहोगे, रात मे आहार खोजते-खोजते तुमको मादा से अलग रहना पडेगा। इस पर चक्रवाक पतित-पावन भक्तवत्सल नारायण के रूप मे राम की स्तुति करते हुए अनुनय-विनय करने लगा। अत मे राम ने तरस खाकर कहा कि द्वापर मे व्याध तुम्हे जाल मे फँसाएगा, तब तुम मेरे शाप से मुक्त हो जाओगे।

बलरामदास रामायण के अनुसार राम और लक्ष्मण ने पम्पा सरोवर के निकट पहुँचकर चकवा-चकवी के एक जोड को क्रीडा करते हुए देखा। राम ने पास जाकर उनसे पूछा कि सीता कहा है। चक्रवाक ने राम की निन्दा करते हुए कहा कि क्या तुम यह भी नही जानते कि इस समय बाधा डालना अनुचित है। इस पर राम ने यह अभिशाप दिया कि तुम दोनो का मिलन फिर कभी नही होगा, किन्तु जब वे राम को भगवान जानकर उनकी आराधना करने लगे तब राम ने अपना शाप बदलकर कहा कि केवल दिन मे ही तुम्हारा मिलन हो सकेगा। बाद मे किसी व्याध ने दोनो को फँसाकर एक टोकरी मे बन्द कर दिया, वे आपस मे कहने लगे कि हमारे साथ रहने से राम का कथन असत्य ही सिद्ध होगा किन्तु रात के पूर्व ही टोकरी अपने आप ही खुल गई और दोनो अलग हो गए। उपर्युक्त प्रसग अरण्यकाड मे वर्णित है, इसके अतिरिक्त किष्किन्धा मे बक तथा कुक्कुट के विषय मे भी निम्नलिखित कथाए मिलती है। वर्षाऋतु के अन्त मे जब लक्ष्मण किष्किन्धा चले गये थे और राम अकेले ही माल्यवन्त पर्वत पर रह गए थे तब एक बगुले ने उनका विरह देखकर कहा—"तुम कैसे महात्मा हो! मूर्ख ही रोते है, तुम क्यो रोते हो?" उत्तर मे राम ने अपनी हरण की गई पत्नी का समाचार पूछा। बगुले ने राम को आश्वासन दिया—"लका का रावण सीता को ले गया है। मैने उन्हे रोते देखा था। उनका अश्रुजल मुझपर गिर गया था और मै सफेद हो गया। दुर्गा तुम पर प्रसन्न होगी और तुमको सीता फिर मिल जायेगी।" राम से वर पाकर बगुले ने कहा—"वर्षा मे भोजन एकत्र करने मे कठिनाई होती है। मुझे यहाँ बैठे हुए आहार मिलना चाहिए।" इसपर राम ने उत्तर दिया—"तुम्हारी मादा तुमको बरसात मे खाना ला देगी।" बगुले ने आपत्ति की—"वह मुझसे छोटी है, उसका जूठा खाकर मै उपहास का पात्र बन जाऊँगा।" राम ने इसका खण्डन करते हुए कहा—"पति-पत्नी एक है, कोई बडा-छोटा है ही नही।" अन्त मे राम ने कहा कि कार्तिक शुक्ला दशमी से पूर्णिमा तक कोई भी आमिष का सेवन नही करेगा और तुम्हारे आदर मे इस व्रत का नाम बकपचक रखा जायगा। बाद मे एक कुक्कुट ने भी सहानुभूति प्रकट करते हुए राम से कहा कि तुम क्यो रोते हो और यहाँ पर अकेले क्यो रहते हो। राम ने उत्तर मे अपना परिचय दिया तथा वनवास, सीताहरण आदि की अपनी सपूर्ण कथा सुनाई। तब मुरगे ने कहा कि रावण ने सीता का हरण किया है। राम ने यह कहकर उसे वरदान दिया कि तुम्हारे सिर पर सप्तशाखा लाल मुकुट रहेगा

और जो तुमको मारेगा वह मेरा शत्रु होगा ।[1]

असमिया [illegible] मे राम द्वारा बगुले तथा पीपल वृक्ष से सीता का समाचार पूछे जाने का वृत्तान्त पाया जाता है ।

सताल (दे० अनु० २७१), बिर्होर (दे० अनु० २७२) तथा मुण्डा (दे० अनु० २७३) नामक जातियो मे सीता की खोज के वर्णन मे बगुले, गिलहरी तथा बेर वृक्ष की कथा का वर्णन किया गया है । राम ने एक बगुले से सीता का पता पूछा था। बगुले ने उनकी अवज्ञा करके उत्तर दिया—"मुझे सीता से क्या, केवल पेट की चिन्ता है ।" इस पर लक्ष्मण ने उनकी ग्रीव को पकड कर खीच लिया और उस दिन से बगुले की लम्बी ग्रीव होती है ।[2] सन्ताली रामकथा के अनुसार राम ने किसी वृक्ष की डालियो पर फूट-फूट कर रोती हुई गिलहरी से सीता का समाचार पूछा था । गिलहरी ने उत्तर दिया—"उन्ही के लिए तो मैं रो रही हूँ । रावण ने सीता का हरण किया है । वह इसी रास्ते से निकल गया है ।" राम ने उसकी पीठ थपथपाकर कहा—"कितनी भी ऊँची जगह से क्यो न गिरो, लेकिन तुम्हे चोट नही लगेगी ।" मुण्डा तथा बिर्होर जातियो की कथाओ मे गिलहरी के रोने की चर्चा नही है, किन्तु उनमे राम के उसकी पीठ पर तीन रेखाएँ खीचने का उल्लेख किया गया है ।[3] सताली रामकथा के अनुसार राम ने बेर वृक्ष मे एक चिथडा लटका हुआ देखा । बेर ने राम से कहा—"रावण इसी रास्ते से सीता को ले गया है । मैने सीता को छुडाने का प्रयत्न किया था, किन्तु मुझे उनकी साडी के इस चिथडे के अतिरिक्त और कुछ नही मिल सका ।" राम ने बेर को आशीर्वाद देकर आश्वासन दिया—"तुमको कितना ही क्यो न काटा जाय किन्तु कोई भी तुम्हारा नाश नही कर सकेगा ।"

मुण्डा तथा बिर्होर जातियो की कथा के अनुसार बेर ने सीता को छुडाने का प्रयत्न नही किया किन्तु उसने राम को सीता का मार्ग बताया, उनकी साडी का चिथडा

---

१ सभवत इसी कथा के कारण उडीसा मे कुक्कट रामपक्षी कहकर पुकारा जाता है ।

२ बगुले की कथा असुरो के यहाँ भी मिलती है (दे० अनु० २७४) । सेरी-राम की कथा मे लबी ग्रीव पुरस्कार के रूप मे मिलती है, यह पुरस्कार अधिक सार्थक प्रतीत होता है । महाभारत (१२, ११६, ६) मे एक ऊँट की कथा है, जिसने भारी तपस्या के बल पर ब्रह्मा से एक 'शत-योजन' लम्बी गरदन प्राप्त की थी ।

३ अन्य रामकथाओ मे सेतुबन्ध के समय गिलहरी की कथा मिलती है । दे० अनु० ५७७ ।

दे दिया तथा अमरत्व का वरदान प्राप्त किया ।

४७५ सीता का रूप धारण कर **सती** द्वारा विरही राम की परीक्षा का प्रथम वृत्तान्त शिव महापुराण (दे० ऊपर अनु० १६७) मे मिलता है। बाद मे आनन्द रामायण (१, ७, १४३), भावार्थ रामायण (३, २०) तथा रामचरितमानस की भूमिका मे भी इसका वर्णन किया गया है ।

४७६ पपा-सरोवर के तट पर विरही राम से **नारद** के मिलने और भक्ति का वरदान प्राप्त करने का वृत्तान्त न तो वाल्मीकि रामायण मे मिलता है और न अध्यात्म रामायण मे । इसका वर्णन **रामगीतगोविन्द** (४, ७) तथा **रामचरितमानस** के अरण्यकाण्ड के अन्त मे किया गया है । वालि वध के बाद भी नारद अथवा ब्रह्मा के विरही राम से भेट करने आने की कथा मिलती है (दे० आगे अनु० ५२३) । तोरवे रामायण (३, २) के अनुसार जाबालि ने राम के वनवास से भरत को दुखी देखकर राम के पास जाने की प्रतिज्ञा की । उधर राम भी अयोध्या से कोई समाचार न पाने के कारण रो रहे थे जब जाबालि उनके पास पहुचे । जाबालि ने राम को सान्त्वना देते हुए नल और हरिश्चन्द्र की कथाएँ सुनाई और बाद मे अयोध्या लौटे ।

च । शबरी

४७७ शबरी-प्रसग का वाल्मीकीय आधिकारिक कथावस्तु से कोई सीधा सम्बन्ध नही ज्ञात होता है । यह प्रसग महाभारत के रामोपाख्यान मे नही मिलता और अधिक सभव यह प्रतीत होता है कि आदि रामायण मे भी शबरी का उल्लेख नही था । परवर्ती राम-साहित्य मे शबरी की कथा का उत्तरोत्तर विकास हुआ है, अत इसकी रूपरेखा यहाँ अकित करना अपेक्षित है ।[1]

वाल्मीकि रामायण के तीन पाठो मे जो सामग्री समान रूप से मिलती है, उसमे शबरी की कथा इस प्रकार है । कबन्ध राम को मतगाश्रम का मार्ग बताकर शबरी का भी इस प्रकार परिचय देता है । मतगाश्रम के ऋषि तो चले गये किन्तु उनकी **'परि-चारिणी श्रमणी शबरी'** अब तक वहा विद्यमान है और देवोपम राम के दर्शन करने के पश्चात् वह स्वर्गलोक के लिये प्रस्थान करेगी (दे० सर्ग ७३, २६-२७) । राम शबरी

---

१ आधुनिक काल तक हिन्दी साहित्यकारो ने शबरी को अपनी रचनाओ की नायिका बना दिया है । दे० गोविन्ददास कृत शबरी (दिल्ली १९६०), शभुप्रसाद बहुगुना का शबरीमगल, पृ० ३४ (मानस सघ, राम वन, १९५०) तथा आचार्य सीताराम चतुर्वेदी कृत 'शबरी' (स० २००६) । आनन्द रामायण (मनोहर काड, सर्ग १२) मे जिस शबरी से राम की भेट का वर्णन किया गया है, वह दूसरी है ।

के आश्रम पहुँचकर तथा उसका आतिथ्य-सत्कार स्वीकार कर उसकी तपश्चर्या के विषय मे प्रश्न करते है। इस पर शबरी उत्तर देती है कि जिस समय राम चित्रकूट पहुँचे, उस के ऋषि, जिनकी सेवा मे करती थी, स्वर्ग चले गये। जाते समय ऋषियो ने कहा था कि लक्ष्मण के साथ राम अतिथि के रूप मे यहा पधारेगे, उनके दर्शन करने के पश्चात् शबरी भी स्वर्ग जा सकेगी। शबरी राम से यह भी निवेदन करती है कि मने आपके लिए वन के विविध कन्दमूल एकत्र कर रखे है—**मया तु सचित वन्य विविध पुरुषर्षभ** (७४, १७)। तब वह अपने गुरुओ का गुणगान करती हुई राम-लक्ष्मण को मतगवन के दर्शन कराती हैं। अत मे वह उन ऋषियो के पास जाने की इच्छा प्रकट करती है तथा राम की आज्ञा लेकर अग्नि मे प्रवेश करती है। तदनन्तर वह दिव्य रूप धारण कर उसमे से प्रकट हो जाती है और विद्युत् सा प्रकाश फैलाती हुई (**विद्युत् सौदामिनी यथा,** ७४, ३४) अपने गुरु-महर्षियो के पास पहुँच जाती है। शबरी-कथा के इस प्रथम रूप मे गुरुभक्ति तथा तपस्या की महिमा पर विशेष बल दिया गया है। शरभग (अनु० ४५६) तथा अगस्त्य (अनु० ४६०) के प्रसगो की भाँति यहा पर भी राम को एक महान् अतिथि के रूप मे देखा गया है।[1] **भट्टिकाव्य** (सर्ग ६, ८६-७१) मे भी शबरी कथा का यही रूप मिलता है। राम शबरी की साधना के विषय म प्रश्न पूछते हैं तथा शबरी आदरपूर्वक उनका आतिथ्य-सत्कार करके क्षत्रिय[2] के रूप मे राम की वन्दना करती है तथा यह आश्वासन देकर अतर्द्धान हो जाती है कि सुग्रीव की सहायता से मैथिली के दर्शन शीघ्र ही प्राप्त होगे।

महावीरचरित (५, २७) के अनुसार शबरी मतग-आश्रम मे रहनेवाली तपस्विनी है, जो राम के पास आकर उन्हे विभीषण का पत्र देती है। विभीषण ने खरदूषण आदि के वध का समाचार सुन कर अपने भाई को छोड दिया और अब वह अपने मित्र सुग्रीव के यहा रहता है।

४७८ **अध्यात्म रामायण** (३, १०, १-४४) मे शबरी-प्रसग इस प्रकार है। कबध शबरी की राम-भक्ति का उल्लेख करता है तथा राम को आश्वासन देता है कि

---

१ दाक्षिणात्य पाठ मे शबरी राम को 'देववर' की उपाधि देती है (सर्ग ७४, १२) और उनकी कृपादृष्टि के फलस्वरूप अपने को 'पूता' मानती है (७४, १३), राम भी अपने प्रति उसकी भक्ति की प्रशसा करते है (गोविन्द पाठ ७४, ३१)। अन्य पाठो मे इस प्रकार के उल्लेख नही मिलते।

२ '**सर्वत्राऽऽख्यदनामयम्**'' (६, ७०)। मनु के अनुसार—''क्षत्रबधुमनामयम्'' (२, १२७)।

शबरी उनको सीता के विषय मे सब बाते बता देगी।[1] शबरी भक्तिपूर्वक राम-लक्ष्मण का आतिथ्य-सत्कार करती है तथा उनको अपने इकट्ठे किए हुए दिव्य फल अर्पित करती है। अनन्तर यह बताती है कि इस आश्रम मे पहले उसके जो गुरु निवास करते है, उनके आदेशानुसार वह राम का ध्यान करती हुई उनकी प्रतीक्षा करती रही। अन्त मे वह राम से पूछती है कि मै मूढ स्त्री हीन जाति मे उत्पन्न होते हुए भी आपके दर्शनो के योग्य क्यो ठहरी। इसपर राम कहते है कि पुरुषत्व, स्त्रीत्व, जाति, नाम, आश्रम आदि का कोई महत्त्व नही है, भक्ति ही सर्वोपरि है। अनन्तर राम शबरी को नवधा भक्ति की शिक्षा देकर कहते है कि उन साधनो द्वारा प्रेमलक्षणा भक्ति का आविर्भाव होता है, जिससे इसी जन्म मे मुक्ति मिलती है। अन्त मे राम सीता के विषय मे पूछते है—**"सीता कमललोचना कुत्रास्ते केन वा नीता।"** शबरी राम को उनकी सर्वज्ञता का स्मरण दिलाकर कहती हैं कि आप लोकाचार का अनुसरण करते हुए सीता का पता पूछते है। तब वह प्रकट करती है कि सीता लका मे है और राम को सुग्रीव के पास जाने का परामर्श देती है। अन्त मे वह अग्नि मे प्रवेश करती है तथा राम के प्रसाद से मोक्ष प्राप्त कर लेती है। इस प्रकार हम देखते है कि अध्यात्म रामायण के रचयिता ने शबरी-कथा को रामभक्ति के गुणगान मे परिणत कर दिया है। शबरी की हीन जाति को अधिक महत्त्व दिया गया है जिससे यह स्पष्ट हो जाय कि रामभक्ति भेद-भाव से ऊपर उठकर सब को मुक्ति प्रदान करती है (**भक्तिर्मुक्तिविधायिनी भगवत श्रीरामचद्रस्य,** छन्द ४४)।

परवर्ती रामकथा-साहित्य मे शबरी-कथा का रूप प्राय अध्यात्म रामायण के अनुसार ही है, उदाहरणार्थ—आनन्द रामायण (१, ७, १६०-१६६), पद्म-पुराण (६, २६६, २६५-२६८), मजुल रामायण (दे० अनु० १६६), रामचरितमानस (३, ३४-३६), रामगीतावली (१७, १-८), रामचन्द्रिका (१२, ४३-४६)। **तत्त्व-सग्रह-रामायण** (३, १७) मे शबरी की महत्ता के विषय मे निम्नलिखित कथा मिलती है। गोदावरी ने राम को उत्तर देना अस्वीकार किया था तथा राम ने उसे यह शाप दिया था कि जो कोई तुझमे नहा लेगा वह चाण्डाल बन जायेगा। बाद मे ब्रह्मादि देवताओ ने राम से निवेदन किया था कि वह गोदावरी को पुन पवित्रता प्रदान करे। इसपर राम ने अपने चाप से पृथ्वी पर रेखा खीच कर गोदावरी की धारा को उस कूप से मिला दिया जहाँ शबरी नित्यप्रति नहाया करती थी।

सूरदास ने शबरी के फलो के विषय मे पहले-पहल लिखा है कि ये जूठे ही थे

---

१ वाल्मीकि रामायण मे शबरी की कथा प्रक्षिप्त है। कबध राम को सीता-खोज की सहायता के लिए सुग्रीव के पास जाने का परामर्श दे चुका था, अत शबरी-प्रसग मे सीता का कोई उल्लेख नही मिलता।

(दे० सभा सस्करण, ५११) । बलरामदास के वृत्तान्त की विशेषता यह है कि शबरी अपने पति के साथ राम-लक्ष्मण से भेट करती है तथा इसका भी स्पष्ट उल्लेख किया गया है कि राम वे फल नही खाते है जिनमे शबरी के दाँतो के निशान नही थे । आनद-तनय कृत मराठी शबर्याख्यान (१८ वी श०) मे भी शबरी के जूठ फलो की चर्चा है ।

४७९ भक्तमाल की प्रियादासकृत टीका (१८वी श० ई०) प्राचीनतम रचना है जिसमे शबरी की पवित्रता सिद्ध करने वाली निम्नलिखित कथा पाई जाती है । शबरी ऋषियो की सेवा करने की उत्कट अभिलाषा से प्रेरित होकर रात के पिछले पहर को उनके आश्रम मे प्रवेश किया करती थी, वह ऋषियो के स्नान करने जाने का मार्ग झाड-बुहार कर साफ करती थी तथा उनके लिए लकडियाँ भी लाया करती थी । मतग के मन मे यह जानने की इच्छा हुई कि कौन यह सब करता रहता है, अत उनके शिष्यो ने रात मे जगकर शबरी को मतग के सामने उपस्थित किया, उन्होने शबरी को राम-भक्ति की दीक्षा देकर उसे आश्रम मे रहने की अनुमति दे दी । बाद मे परलोक जाने के पूर्व मतग ने शबरी को आश्वासन दिया कि वह राम के दर्शन करेगी । किसी दिन शबरी ने अनजाने ही किसी ऋषि का स्पर्श किया और ऋषि ने उस पर अपना क्रोध प्रकट किया । फलस्वरूप जब वह ऋषि स्नान करने के लिए सरोवर के पास पहुँचा तो उसने देखा कि वह रक्त तथा कृमियो से भरा हुआ है ।

बहुत दिन बीत जाने पर राम वहा पहुँचे तथा शबरी के यहाँ जाकर आतिथ्य-सत्कार ग्रहण किया तथा उसके जूठे फल खाये । ऋषि आकर राम से सरोवर को स्वच्छ करने का निवेदन करने लगे । इसपर राम ने सरोवर के अपवित्र हो जाने का रहस्य प्रकट किया और यह भी बताया कि वह शबरी के स्पर्श से फिर स्वच्छ हो जायेगा (पद ६) । रघुराजसिह की **रामरसिकावली** मे वही कथा मिलती है[1] किन्तु सरोवर को स्वच्छ करने की कथा इस प्रकार है कि राम पहले उसका स्पर्श करते है जिससे **"भयो दून शोणित सर बारी"**, तब राम प्रकट करते है कि शबरी ही उसे पवित्रता प्रदान कर सकती है । मुनियो के निवेदन करने पर

शबरी सकुचि सलिल पग डारी ।
तुरतहि भो निमल सर बारी ॥

४८० शबरी की कथा आदिवासियो मे अपेक्षाकृत लोकप्रिय है । मध्य भारत के कोल अपने को शबरी के वशज मानते है । उनमे प्रचलित दन्तकथा इस प्रकार है ।[2]

---

१ दे० पृ० १२२-१२३ । बबई (स० २०१३) का सस्करण ।

२ डब्ल्यू० जी० ग्रिफित्स दि कोल ट्राइब ऑफ सेंट्रल इण्डिया (कलकत्ता, १६४६), पृ० २०७ ।

कथा[1] इस प्रकार है—शबरी का जन्म एक उच्च तथा सम्पन्न परिवार मे हुआ था, किन्तु परतन्त्रता के कारण उसे सत्सग तथा साधना के लिए अवकाश नही मिलता था। अत उसने प्रार्थना की थी कि उसका अगला जन्म किसी नीच जाति मे हो जिससे उसकी भक्ति-साधना मे बाधा न पडे। फलस्वरूप वह भीलो के यहाँ उत्पन्न हुई थी। विवाह-योग्य हो जाने पर उसने देखा कि घर मे सैकडो बकरे-भैसे इकट्ठे किये जा रहे है। पूछने पर उसे पता चला कि उसके विवाह के अवसर पर इन सब का बलिदान किया जायेगा। यह सुनकर वह बहुत घबराई तथा सब जानवरो को मुक्त कर वह जगल मे चली गई तथा पपासरोवर के निकट झोपडी बनाकर ऋषियो की सेवा करने लगी।

३—सीताहरण

४८२ बौद्ध साहित्य के **दशरथ जातक** और **दशरथ कथानम्** मे सीताहरण का उल्लेख नही किया गया है। बोधिसत्व राम द्वारा रावण का वध किया जाना बौद्ध आदर्श के प्रतिकूल था, अत सीताहरण का और फलस्वरूप रावण का अभाव स्वाभाविक प्रतीत होता है। इसके अतिरिक्त **दशरथ जातक** के प्रसग के अनुसार इसका उल्लेख अनावश्यक भी था (दे० ऊपर अनु० ८१)। **महाभारत** के शातिपर्व की रामकथा मे भी सीताहरण का वर्णन नही किया गया है। इस अत्यन्त सक्षिप्त वृत्तान्त का प्रसग है कि महान् राजा भी मर जाते है। अत इस रामकथा मे राम तथा उनकी महिमा का ही वर्णन किया गया है, फिर भी १४ वर्ष के वनवास का उल्लेख मिलता है जिससे स्पष्ट है कि लेखक पूर्ण रामकथा से परिचित था।

इन तीनो को छोडकर सीताहरण तथा फलस्वरूप राम-रावण-युद्ध अन्य सभी रामकथाओ की मुख्य आधिकारिक कथावस्तु ही है। इसके वर्णन मे पर्याप्त मात्रा मे विभिन्नता आ गई है। प्रस्तुत परिच्छेद मे पहले सीताहरण के विभिन्न कारण दिये गए है। अनन्तर इस घटना के विभिन्न रूपो का निरूपण किया गया है, और अत मे माया-सीता के विकास की रूपरेखा अकित की गई है।

क। सीताहरण के कारण

४८३ प्रचलित वाल्मीकि रामायण मे **शूर्पणखा के विरूपण** को सीताहरण का मूल कारण माना गया है। विरूपित शूर्पणखा खर-सेना की पराजय देखकर लका के लिए प्रस्थान करती है तथा रावण को जनस्थान के विनाश तथा सेना-सहित खरदूषण

---

१ दे० भागवत द्विवेदी कृत "भक्त शबरी" (मानस सघ, रामवन, स० १९९२) पृ० ४ तथा जी० ग्रियर्सन, ज० रॉ० ए० सो० १९१०, पृ० २७५।

के वध का समाचार सुनाती है।[1] अनन्तर वह राम की वीरता तथा सीता के सौदर्य का वर्णन करके कहती है कि सीता आपके योग्य है, उनको आप के पास ले आने के प्रयत्न मे मुझे विरूपित किया गया है (**भार्यार्थे तु तवानेतुमुद्यताह वरानना विरूपितास्मि**, ३४, २१)। अन्त मे वह रावण को सीता का हरण करने का सुझाव देती है (दे० सर्ग ३२-३४)।

अधिक सभव यही प्रतीत होता है कि आदि रामायण मे शूर्पणखा के विरूपण की कथा विद्यमान नही थी। युद्धकाड के दो स्थल इस अनुमान के आधार है। रावण की सभा (सर्ग ९) मे विभीषण ने सीताहरण के कारण के विषय मे केवल खर का ही उल्लेख किया है। विभीषण ने कहा—राम ने रावण का क्या बिगाडा था कि उसने उनकी भार्या का अपहरण किया। खर ने अपनी सीमा का उल्लघन किया था (**अतिवृत्त**) और इसीलिए वह राम से मारा गया, (यह स्वाभाविक था क्योकि) हर प्राणी को यथाशक्ति अपने प्राणो की रक्षा अवश्य करनी चाहिए।

किं च राक्षसराजस्य रामेणापकृत पुरा।
आजहार जनस्थानाद्यस्य भार्या यशस्विन ॥१३॥
खरो यद्यतिवृत्तस्तु स रामेण हतो रणे।
अवश्य प्राणिना प्राणा रक्षितव्या यथाबलम् ॥१४॥

युद्धकाड के अन्त मे (सर्ग १२६) हनुमान द्वारा जो सक्षिप्त रामचरित सुनाया जाता है, उसमे पहले दण्डकारण्य के तपस्वियो की रक्षा के निमित्त राम द्वारा खर-दूषण-त्रिशिरा आदि **राक्षसो के वध** का वर्णन मिलता है और केवल बाद मे शूपणखा के विरूपण का उल्लेख होता है। अत यह सभव नही कहा जा सकता है कि राक्षसो के वध के कारण ही रावण का विरोध उत्पन्न हुआ था। बाद मे **शूर्पणखा के विरूपण** की कथा प्रचलित होने लगी। परवर्ती रामकथाओ मे सीताहरण का यह कारण व्यापक रूप से प्रामाणिक माना गया है। फिर भी, अन्य कारणो की भी कल्पना कर ली गई ह, इनका निरूपण नीचे किया जा रहा है।

४८४ विमलसूरिकृत पउमचरिय मे लक्ष्मण द्वारा चन्द्रनखा के पुत्र **शम्बूक का वध** सीताहरण का कारण माना गया है। यह कथा तेलुगु रगनाथ रामायण, सारलादास के उडिया महाभारत, कन्नड तोरवे रामायण, हिन्देशिया की अर्वाचीन रामकथा, स्याम के रामकियेन, आनन्द रामायण तथा मराठी भावार्थ रामायण मे भी मिलती है

---

१ ऊपर (अनु० ४५६) इसका उल्लेख हो चुका है कि दाक्षिणात्य पाठ का ३१वाँ सर्ग प्रक्षिप्त है। इसके अनुसार अकम्पन ने सबसे पहले रावण को खर-वध का समाचार सुनाया था।

(दे० आगे अनु० ६३१–६३२)। श्याम देश की एक रामकथा मे शूर्पणखा की दो पुत्रियो का उल्लेख है, जिनका लक्ष्मण ने वध किया था (दे० नीचे अनु० ८६३)।

४८५ **महावीरचरित** से लेकर अनेक राम नाटको तथा अन्य रामकथाओ मे रावण **सीतास्वयवर** के समय से ही सीता को पत्नीस्वरूप चाहता है। वह दूत को भेजता है, अथवा स्वय सीता के स्वयवर मे आता हे (दे० ऊपर अनु० ३९६)। इन रामकथाओ मे प्राय शूर्पणखा के विरूपण की कथा भी मिलती है, लेकिन ऐसे अनेक वृत्तान्त मिलते है जहाँ स्वयवर का ही उल्लेख किया गया है, उदाहरणार्थ—अनर्घराघव, बाल-रामायण, महानाटक, पाश्चात्य वृत्तान्त न० ७ और ८। राजशेखर के बाल-रामायण मे रावण का विरह प्रधान वर्ण्य विषय बन गया है। आनन्द रामायण मे उपर्युक्त तीनो कारणो का उल्लेख है।

४८६ गुणभद्रकृत **उत्तरपुराण** की रामकथा मे न तो शूर्पणखा के विरूपण का और न सीतास्वयवर के अवसर पर रावण का उल्लेख किया गया है। राम-सीता-विवाह के पश्चात् **नारद** रावण के पास जाकर सीता के अद्वितीय सौदर्य का वर्णन करते है जिससे रावण सीता को हर लाने का सकल्प करता है।

रामलिगामृत मे शूर्पणखा के विरूपण के बाद ही नारद रावण से सीता के सौदर्य की प्रसशा करता है (दे० सर्ग ६)।

४८७ १८वी शताब्दी के एक वृत्तान्त के अनुसार सीता और लक्ष्मण के साथ चित्रकूट मे पहुँचकर राम ने अपने बहुत से शिष्यो को पुनर्जन्म का सिद्धान्त सिखाया था। उन्होने **सिहलद्वीप** मे भी अपने **सिद्धात का प्रचार** करना चाहा, लेकिन रावण ने इसका विरोध किया और राम को पराजित कर सीता को उनसे छीन लिया। बाद मे विभीषण की सहायता से राम ने ब्रह्मा द्वारा भेजी हुई सेना से रावण को जीत लिया (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० १२)।

४८८ राम-भक्ति के पल्लवित होने के पश्चात् सीताहरण का एक और कारण दिया गया है। दाक्षिणात्य पाठ के उत्तरकाण्ड के ३७वे सर्ग के बाद जो प्रक्षिप्त सर्ग मिलते है, उनमे सीताहरण के कारण के विषय मे निम्नलिखित कथा दी गई है। रावण किसी दिन सनत्कुमार से मिलकर उनसे जान लेता है कि जो दैत्य, दानव, राक्षस आदि हरि द्वारा मार डाले जाते है वे उनका पद प्राप्त कर लेते है, क्योकि उनका क्रोध भी वरदान का रूप धारण कर लेता है—**क्रोधोऽपि देवस्य वरेण तुल्य** (सर्ग २, २२)। इसपर रावण विचार करने लगा कि मेरा तथा हरि का सघर्ष किस प्रकार छिड सकता है। तब मुनि ने उसको समझाया कि त्रेतायुग मे नारायण राम का रूप धारण कर लेगे तथा अपने पिता की आज्ञा से वह लक्ष्मी-रूपी सीता के साथ वन मे निवास करेगे। अत रावण विष्णु के हाथ से मारे जाने की इच्छा से ही सीता का अपहरण करता

हैं—**अपहृता सीता त्वत्तो मरणकाक्षया** (सर्ग ५, ४३)। साथ-साथ यह भी माना गया है कि रावण ने सीता को लका ले जाकर माता के समान उनकी रक्षा की थी—**लकामानीय यत्नेन मातेव परिरक्षिता** (सर्ग ५, ५४)। यह सामग्री केवल दाक्षिणात्य पाठ मे मिलती है किन्तु अन्य पाठो मे रावण-कुभकरण सवाद के अन्तगत (जो दाक्षिणात्य पाठ मे विद्यमान नही है) रावण कहता है कि मै विष्णु के हाथ से मरकर **मुक्ति** प्राप्त करना चाहता हूँ—**निहतो गन्तुमिच्छामि तद्विष्णो परम पदम्** (गौ० रा० ६, ४१, २५, प० रा० ६, ४२, २४)।

परवर्ती राम-साहित्य मे प्राय सनत्कुमार-रावण का उपर्युक्त सवाद उद्धृत किया जाता है। अथवा यह माना गया है कि **मोक्षप्राप्ति** के उद्देश्य से रावण ने सीता का अपहरण किया था, उदाहरणार्थ—रामतापनीय उपनिषद् (४, १७), अध्यात्म रामायण (३, ५, ६०, ७, २, ४०, ७, ४, १०), आनन्द रामायण (१, ११, २४४, १, १३, १२०-१२६), पद्मपुराण (६, २६६, २५५), रामचरितमानस (३, २३, ४), भावार्थ रामायण (६, २३), बलरामदास रामायण, प्रेमानन्द कृत रण-यज्ञ। शिवपुराण के अनुसार रावण ने पाताल मे विष्णु से प्रार्थना की थी कि तुम्हारे हाथ से मेरी मृत्यु हो—**त्वद्धस्ताद् भगवन् मृत्युर्ममास्तु**।[1]

४८६ सीताहरण के कइ **परोक्ष कारणो**[2] का भी उल्लेख मिलता है। रामावतार के कारणो के प्रसग मे **विष्णु** को दिए हुए **भृगु, वृन्दा और नारद के शापो** की चचा हो चुकी है, उन शापो के फलस्वरूप विष्णु को मनुष्य बनकर पत्नी-वियोग का दुख उठाना पडा, अत ये शाप सीताहरण के परोक्ष कारण माने जा सकते है (दे० ऊपर क्रमश अनु० ३७०,३७२, ३७३)। **लक्ष्मी** के प्रति **नारद के शाप** का भी उल्लेख मिलता है (दे० अनु० ३७३)। वह्निपुराण (पृ० १७४) मे लक्ष्मी के प्रति पृथ्वी के शाप की कथा इस प्रकार है—किसी दिन ब्रह्मा तथा पृथ्वी विष्णुलोक गये थे। उनके आगमन के समय विष्णु लक्ष्मी के साथ शयन कर रहे थे, जिससे लक्ष्मी ने उनका सत्कार नही किया। इस पर पृथ्वी ने लक्ष्मी को यह कहकर शाप दिया कि पति से तुम्हारा वियोग होगा।[3]

---

१ दे० शिवपुराण, गणपतिकृष्ण जी प्रेस, धर्मसहिता, अध्याय १३। रावण की मुक्ति-प्राप्ति के विषय मे दे० आगे अनु० ५६६।

२ इसी तरह सीतात्याग के विषय मे भी विभिन्न-परोक्ष कारणो की कल्पना कर ली गई है। दे० अनु० ७२५-७२६।

३ इसी श्रेणी मे देवताओ को प्रदत्त महादेव का यह वरदान रखा जा सकता

इसके अतिरिक्त रामकथा से सीधा सबध रखने वाले तीन अन्य कारणो का भी उल्लेख मिलता है। इनमे से सबमे व्यापक सीता के प्रति **लक्ष्मण का शाप** है। इसका मूलस्रोत वाल्मीकि रामायण मे सुरक्षित लक्ष्मण की इस उक्ति मे देखना चाहिए—आज विनष्ट होने वाली तुम्हे धिक्कार है, क्योकि तुम मुझ पर शका कर रही हो, **धिक्त्वामद्य विनश्यतीं यन्मामेव विशकसे** (३,४५, ३२)। भट्टिकाव्य मे शाप का रूप इस प्रकार है—**शत्रुहस्त त्व यास्यसि** (दे० सर्ग ५ ६०)। लक्ष्मण के इस शाप का निर्देश रामायण ककविन (सर्ग ५), देवीभागवत पुराण (३, २८, ४६), अध्यात्म रामायण (३, ७, ३६), बलरामदास रामायण आदि मे भी मिलता है।

ब्रह्मवैवर्त्त पुराण (कृष्णजन्म खण्ड, अध्याय ६२) के अनुसार **शूर्पणखा** ने राम से ठुकराये जाने पर उनको यह शाप दिया कि तुम्हारी पत्नी का हरण होगा।

कृत्तिवास के रामायण मे राम-सीता-विवाह के अवसर पर **चन्द्रमा का नृत्य** वर्णित है। इस नृत्य के कारण मुहूर्त्त का ध्यान नही रखा गया था, जिससे बाद मे सीताहरण सभव हो सका (दे० ऊपर अनु० ४००)।

ख। सीताहरण का मूलरूप

४६० चिन्तामणि विनायक वैद्य का अनुमान है कि वाल्मीकिकृत आदि-रामायण मे सीताहरण के वृत्तान्त मे **कनक-मृग** का कोई उल्लेख **नही** था। यह वृत्तान्त अद्भुत रस की लोकप्रियता के कारण बाद मे रामायण मे रखा गया है। उनका तर्क यह है कि यदि कनकमृग की घटना का वर्णन सचमुच आदि रामायण मे था तो सीता-रावण-सवाद अस्वाभाविक प्रतीत होता है। यदि सीता राम के विषय मे इतनी चिन्तित थी कि उन्होने लक्ष्मण को अत्यन्त कटु शब्द सुनाकर उन्हे राम की सहायता के लिए भेजा था, तो उन्होने राम के विषय मे अपनी आशका का उल्लेख रावण से क्यो नही किया था? यदि उत्तर दिया जाय कि उनको रावण पर विश्वास नही था, इसका प्रत्युत्तर यह है कि यदि सीता रावण पर विश्वास नही करती थी, तो उन्होने अपनी आत्मकथा विस्तारपूर्वक क्यो सुनाई होती।[1] वास्तव मे सीता-रावण-सवाद के अन्तर्गत यह स्पष्ट शब्दो मे कहा गया है कि सीता राम की प्रतीक्षा कर रही थी, जो लक्ष्मण के साथ मृगया खेलने गये थे—**तत सुवेष मृगयागत पति प्रतीक्षमाणा सहलक्ष्मण तदा** (३, ४६, ३८)। इसके अतिरिक्त सीता रावण से कहती है कि मेरे पति मृग, वराह आदि मारकर बहुत मास लिये लौटनेवाले हैं

है—**"उत्पत्स्यति हितार्थं वो नारी रक्ष क्षयावहा"**। राक्षसियो के विलाप के अतर्गत इसका उल्लेख किया गया है (दे० रामायण ६, ९४, ३५)।

१ दे० सी० वी० वैद्य दि रिडल आव दि रामायण, पृ० १४४।

आगमिष्यति मे भर्ता वन्यमादाय पुष्कलम् ।
रुरून्गोधान्वराहाश्च हत्वाऽऽदायामिष बहु ॥२३॥ (सर्ग ४७)

किष्किधा काण्ड मे लक्ष्मण हनुमान से राम की कथा सुनाते हुए सीताहरण के विषय मे इतना ही कहते है कि एक कामरूपी राक्षस ने आश्रम से राम की भार्या का अपहरण किया—**रक्षसापहृता भार्या रहिते कामरूपिणा** (४, ४, १४) । गौडीय पाठ मे इस स्थान पर लिखा है—**रक्षसापहृता भार्या छलेनास्य महाद्युते** (४, ४, १३) ।

श्री वैद्य के तर्कों की पुष्टि के लिये इन थोडी सी रामकथाओ का भी सहारा लिया जा सकता है, जिनमे कनक-मृग का उल्लेख नही किया गया है । **अनामक जातकम्** (३ री श० ई०) मे ऐसी कथा मिलती है कि जब राजा फल लेने चले गये थे, तब एक दुष्ट नाग ने रानी का अपहरण किया था । **पउमचरिय** (४थी श० ई०) के अनुसार खरदूषण अपनी पत्नी चन्द्रनखा से अपने पुत्र का वध सुनकर वन मे उसे देखने गया तथा घर लौटकर इसका समाचार रावण के पास भेज दिया । रावण के विलब करने पर उसने १४००० योद्धाओ के साथ वन की ओर प्रस्थान किया । यह सेना आते देखकर लक्ष्मण ने राम से कहा—"मेरे रहते आपको लडना उचित नही है । आप यहा सीता की रक्षा करे । जिस समय मैं शत्रुओ से घिर कर सिंहनाद करूँ, उस समय आप अवश्य ही जल्दी आना ।" लक्ष्मण राक्षसो की सेना का सामना कर रहे थे कि रावण पुष्पक पर आ पहुँचा तथा सीता को देखकर उन पर आसक्त हुआ । 'अवलोकन' नामक विद्या से उसने तुरन्त सीता, राम और लक्ष्मण को जान लिया तथा सिंहनाद वाली बात भी उसने जान ली । अत रावण ने सिंहनाद किया जिसे सुनकर राम उनकी सहायता करने चले गये । रावण ने सीता को पुष्पक पर रख दिया तथा जटायु को भूमि पर गिराकर लका की ओर प्रस्थान किया । इतने मे राम लक्ष्मण के पास पहुँचते है तथा लक्ष्मण द्वारा वापस भेजे जाते है । राम लौटकर तथा झोपडी को खाली पाकर मूर्च्छा खाते है (दे० पर्व ४४) । **कूर्म पुराण** (नवी श० ई०) मे भी रावण द्वारा अकेली वन मे टहलती हुई सीता के अपहरण का उल्लेख मिलता है

चरती विजने वने सीता गृहीत्वा
(उत्तर विभाग, अध्याय ३४)

उपर्युक्त अपेक्षाकृत प्राचीन वृत्तान्तो के अतिरिक्त अनेक विदेशी तथा पाश्चात्य वृत्तान्त मिलते है जिनमे कनक-मृग का निर्देश नही पाया जाता है । **सिंहली** रामकथा के अनुसार राम की अनुपस्थिति मे सीता का हरण राजधानी से ही होता है । **अनाम** के राम-चरित मे दशानन सेना-सहित दशरथ के राज्य पर आक्रमण करता है, और विजयी होकर सीता को अपने साथ ले जाता है ।

पाश्चात्य वृत्तान्तो न० ६, ६, ११ तथा १५ मे भी कनक-मृग का उल्लेख नही मिलता। वृत्तान्त न० ११ के अनुसार राम एक पक्षी का शिकार करने गये थे और देर होने पर सीता ने लक्ष्मण को उनकी खोज मे भेज दिया था। वृत्तान्त न० १५ मे कहा गया है कि जब राम अपने किसी उपद्रवी सामन्त से युद्ध करने गए थे तब भिखारी का रूप धारण कर रावण के नौकर ने सीता को अपने मालिक के लिए हर लिया था। **कथासरित्सागर** (६, १, ६२) मे इतना ही लिखा है कि रावण ने माया द्वारा अर्थात् छल से सीता का अपहरण किया था—**अहरत् सीता मायया रावण**।

४६१ महाभारत के रामोपाख्यान मे सीताहरण के समय रावण के रथ का निर्देश नही मिलता। वाल्मीकिकृत रामायण के एक स्थल से भी यह आभास मिलता है कि सम्भवत मूल-कथा मे रथ का उल्लेख नही था। किष्किन्धा काड मे सम्पाति अपने पुत्र सुपार्श्व का वृत्तान्त हनुमान आदि वानरो को सुनाता है। इसके अनुसार सुपार्श्व महेन्द्र की घाटी को रोकते हुए (**महेद्रस्य गिरेर्द्वारमावृत्य** दे० रा० ४, ५६, १२) नीचे के मार्ग पर पहरा दे रहा था। उस समय उसने किसी को देखा जो एक सुन्दर स्त्री को लिए जा रहा था। सुपार्श्व ने उन दोनो को अपने पिता को देने का निश्चय किया लेकिन उस मनुष्य ने विनीत भाव से मार्ग माँगा और सुपार्श्व ने उसे जाने दिया

> **तत्र कश्चिन्मया दृष्ट सूर्योदयसमप्रभाम्।**
> **स्त्रियमादाय गच्छन्वै भिन्नाजनचयोपम ॥१४॥**
> **सोऽहमभ्यवहारार्थं तौ दृष्ट्वा कृतनिश्चय ।**
> **तेन साम्ना विनीतेन पथानमनुयाचित ॥१५॥**

ग। कनक मृग

४६२ प्रचलित वाल्मीकि रामायण मे कनक-मृग का वृत्तान्त इस प्रकार है (दे० सर्ग ३५-४६)। विरूपित शूर्पणखा से खर-वध का समाचार तथा सीता के सौंदर्य की प्रशसा सुनकर रावण मारीच[1] के पास जाता है तथा उससे निवेदन करता है कि वह कनकमृग का रूप धारण कर सीताहरण मे सहायक बने। मारीच इस प्रस्ताव को राम के पराक्रम के कारण ही अस्वीकार करता है। वह इस पराक्रम के विषय मे दो आप-बीती घटनाओ का वर्णन भी करता है। विश्वामित्र-यज्ञ की रक्षा करते समय राम ने बाण मार कर उसे शतयोजन की दूरी पर समुद्र मे फेक दिया था (दे० अनु० ३८६)। बाद मे मारीच ने दो राक्षसो के साथ मृग का रूप धारण कर

---

१ शूर्पणखा के आगमन के पूर्व मारीच से रावण की भेट का प्रक्षिप्त वर्णन दाक्षिणात्य पाठ मात्र मे मिलता है (दे० अनु० ४५६)।

दण्डकारण्य मे प्रवेश किया था तथा वहाँ विचरकर तपस्वियो का मास खा जाता था। राम ने बाण मारकर उसके दो साथियो का वध किया जिससे मारीच भयभीत होकर भाग गया और अब तपस्वी का जीवन बिताता है। मारीच रावण को स्पष्ट शब्दो मे चेतावनी देता है कि यदि वह अपने सकल्प मे दृढ रहा तो लका का सत्यानाश होगा। रावण उसका सत्परामर्श ठुकराकर मारीच को पुरस्कार स्वरूप अपना आधा राज्य प्रदान करने की प्रतिज्ञा करता है और अन्त मे यह भी धमकी देता है—यदि तुम स्वीकार नही करते, तो म तुम्हारा वध करूँगा। इसपर मारीच यह जानकर कि मैं किसी भी प्रकार नही बच सकता शत्रु के हाथ से वीरोचित मरण चुन लेता है

अनेन कृतकृत्योऽस्मि म्रिये चाप्यरिणा हत ।[1]

मारीच की स्वीकृति के तुरन्त बाद रावण उसे अपने रथ पर बिठाकर जनस्थान की ओर प्रस्थान करता है। वहाँ पहुँचकर मारीच कनकमृग का रूप धारण कर लेता है तथा सीता का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करता है। राम तथा लक्ष्मण को बुलाकर सीता कनकमृग को दिखाती है तथा उसे पाने के लिये अनुरोध करने लगती है।[2] इस पर राम सीता को लक्ष्मण की रक्षा मे छोडकर कनकमृग का शिकार करने जाते है। मारीच राम को दूर ले जाता है तथा अन्त मे राम-बाण से आहत होकर अपना ही रूप धारण कर लेता है तथा पूर्वनिश्चित योजना के अनुसार राम की वाणी

१ दे० रा० ३, ४१, १७। मारीच की मुक्ति-प्राप्ति के विषय मे नीचे अनु० ४६६ देखे। गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठो मे रावण-मारीच-सवाद सबधी दो अतिरिक्त सर्ग मिलते है किन्तु उनमे नवीन सामग्री नही है (दे० गौ० रा०, सर्ग ४६-४७, प० रा०, सर्ग ४५-४६)।

२ दाक्षिणात्य (सर्ग ४३) तथा गौडीय (सर्ग ४९) पाठो के अनुसार लक्ष्मण ने इस अवसर पर यह आशका प्रकट की थी कि यह मृग मारीच तो नही है। पश्चिमोत्तरीय पाठ का समानान्तर सग इसका उल्लेख नही करता (सर्ग ४८)। दाक्षिणात्य पाठ मात्र मे राम मारीच के मरण पर लक्ष्मण की इस आशका की ओर निर्देश करते है (सर्ग ४४)। मृग की पुकार सुनकर लक्ष्मण सीता को समझाते हुए कहते है कि यह मृग कोई राक्षस होगा, दे० दाक्षिणात्य (४५, १७) तथा पश्चिमोत्तरीय पाठ (५०, १५)। यह उल्लेख गौडीय पाठ के समानान्तर सर्ग (५१) मे नही मिलता। पाठो की यह विभिन्नता इस बात का प्रमाण है कि आदि रामायण लक्ष्मण की इस आशका के विषय मे मौन था। आदि पुराण के अनुसार राम ने इस प्रकार की आशका प्रकट की थी (दे० ऊपर अनु० १७३)।

का अनुकरण करते हुए चिल्लाता है—**हा सीते लक्ष्मण**। राम मायावी राक्षस को मृत छोडकर आशका करते हुए शीघ्रता से लौटते है।

उधर सीता मारीच की पुकार सुनकर तथा राम को सकट मे समझकर लक्ष्मण से अनुरोध करने लगती है कि वह अपने भाई की सहायता करने जायँ। लक्ष्मण पहले अस्वीकार करते है किन्तु सीता के कटु शब्द (दे० ऊपर अनु० ४६२) तथा आत्महत्या की धमकी सुनकर वह चले जाते है।[1] अब रावण परिव्राजक के रूप मे सीता के पास पहुँचकर उनसे आतिथ्य-सत्कार ग्रहण करने के पश्चात् अपना परिचय देता है तथा सीता के सामने लका की महारानी बनने का प्रस्ताव रख देता है। सीता का कटु उत्तर सुनकर वह अपने राक्षस-रूप मे प्रकट हो जाता है तथा उनको अपने रथ[2] पर रखकर लका की ओर प्रस्थान करता है।

सीताहरण का यह रूप न केवल भारतीय रामकथा-साहित्य मे सबसे अधिक व्यापक है किन्तु विदेशो मे भी मिलता है। तिब्बत, खोतान, हिन्देशिया, स्याम और बर्मा मे कनक-मृग की कथा प्रचलित है।

महानाटक (दमोदर, ३, २७) के अनुसार राम तथा लक्ष्मण कनकमृग का शिकार करने के लिये साथ-साथ चले जाते है। **उदात्तराघव** मे सीताहरण का रूप इस प्रकार है। लक्ष्मण कनक-मृग को मारने चले जाते है तथा रावण आश्रम के कुल-पति का रूप धारण कर राम और सीता के पास पहुँचता तथा राम की निन्दा करता है क्योकि उन्होने तरुण लक्ष्मण को भेज दिया है। उसी समय एक अन्य छद्म-वेषी राक्षस आकर यह समाचार देता है कि कनकमृग राक्षस मे बदलकर लक्ष्मण को ले जा रहा है। इसपर राम सीता को रावण की रक्षा मे छोडकर लक्ष्मण की सहायता करने जाते है।

---

१ लक्ष्मण के शाप के विषय मे अनु० ४८६ देखे।

२ जैन रामकथाओ मे पहले-पहल सीताहरण के समय पुष्पक का उल्लेख है (दे० अनु० ४६०)। भरत के प्रति हनुमान द्वारा कथित राम-चरित मे दाक्षिणात्य पाठ के अनुसार पुष्पक की चर्चा है (दे० ६, १२६, २६), किन्तु अन्य पाठो के समानान्तर सर्गो (गौ० रा० सर्ग ११०, प० रा० सर्ग १०७) मे ऐसा कोई निर्देश नही है। बहुत सी परवर्ती रामकथाओ मे सीताहरण के प्रसग मे पुष्पक का उल्लेख है। उदाहरणार्थ नृसिह पुराण (अनु० ४६४)। बलरामदास रामायण मे रावण रथ के टूट जाने के बाद पुष्पक का स्मरण करता है। तब वह आता है और रावण उस पर सीता को लका ले जाता है।

सेरीराम के अनुसार सीताहरण के ठीक पहले राम अलौकिक शक्ति प्राप्त करने के उद्देश्य से यज्ञ कर रहे है। इस समय गागकनासिर नामक राक्षस काक बनकर राम का यज्ञ भग करने आता है और राम द्वारा वध किया जाता है। तब रावण गागकनासिर के दो पुत्रो को मृग का रूप धारण करने का आदेश देता है (एक सुवर्ण और एक रजत)।

४६३ **ब्रह्मचक्र** (दे० अनु० ३२८) मे सीताहरण का एक सर्वथा नवीन रूप मिलता है। रावण की बहन शूर्पणखा अपनी दो पुत्रियो के साथ लका तथा किष्किन्धा की सीमा की रखवाली करती है। किसी दिन वे राम, लक्ष्मण और सीता को देखकर उन पर आक्रमण करती हैं। लक्ष्मण शूर्पणखा की दोनो पुत्रियो का वध करते है तथा राम शूर्पणखा को हटने को विवश करते है। शूर्पणखा लका जाती है तथा स्वय कनक-मृग बनकर[1] सीताहरण मे रावण की सहायता करती है। राम कनक-मृग का शिकार करने जाते हैं। लक्ष्मण मृग की पुकार सुनकर तथा राम को जोखिम मे समझकर सीता को नगथोरानी (पृथ्वी) को सौप देते है और चले जाते हैं। रावण सीता को ले जाने का प्रयत्न करता है किन्तु पृथ्वी देवी सीता के पैर पकड कर रोक लेती है, जिससे रावण कुछ नही कर सकता है। राम, लक्ष्मण को देखकर सीता के विषय मे चिन्ता प्रकट करते है किन्तु लक्ष्मण उनको आश्वासन देते है कि मैने उनको पृथ्वी देवी की रक्षा मे छोड दिया है। इसपर राम कहते है कि मैं पृथ्वी पर विश्वास नही करता। राम के इन शब्दो के विषय मे जानकर पृथ्वी देवी सीता को छोड देती है और रावण उनको लका ले जाता है।

४६४ कनकमृग का एक परिवर्तित रूप इस प्रकार है—राम और लक्ष्मण के चले जाने के बाद रावण आकर सीता को विश्वास दिलाता है कि अब अयोध्या जाना है। इसपर विश्वास करके सीता अपने आप रथ पर चढती हैं। कथा का यह रूप नृसिह

---

१ बर्मा मे गाम्बी (शूर्पणखा) कनक-मृग का रूप धारण कर लेती है। सी० कोलमैन (दि मिथॉलॉजी ऑव दि हिन्दूस पृ० २४) ने एक कथा सुनी थी जिसके अनुसार रावण स्वय कनकमृग बन गया था। **सेरीराम** का भी एक ऐसा रूप भी मिलता है जिसके अनुसार रावण स्वय कनकमृग बन जाता है और राम को उनके राजमहल से दूर ले जाता है और तब सीता के पास लौटकर उनको अपने साथ भाग निकलने के लिए राजी करता है। बाद मे उसको पता चलता है कि सीता मेरी पुत्री है वह उनको अपने महल मे सुरक्षित रखता है। अत मे हनुमान सीता को फिर राम के पास पहुँचाते है। दे० ज० रा० ए० सो० स्ट्रेट्स ब्रैंच, भाग ५५, पृ० १-२४।

पुराण, बृहद्धर्मपुराण, गुणभद्रकृत उत्तरपुराण, आश्चर्य-चूडामणि नाटक तथा दक्षिण भारत के एक वृत्तान्त मे पाया जाता है ।

नृसिह पुराण के अनुसार रावण सन्यासी के रूप मे आकर सीता से कहता है—भरत आ गए है और उन्होने आपको ले जाने के लिए मुझे भेजा है । राम भी मृग को फँसाकर अयोध्या जा रहे है । यह सुनकर सीता विमान पर चढती है । इस वृत्तात मे पाठक का ध्यान इस बात की ओर आकृष्ट किया गया है कि रावण ने सीता का स्पर्श नही किया (दे० अध्याय ४६) । **बृहद्धर्मपुराण** मे रावण भिक्षु के रूप मे सीता के पास आकर कहता है कि कौशल्या आपको देखने के लिए उत्सुक है (दे० पूर्वखड, अध्याय १६) । दक्षिण भारत के एक वृत्तान्त (१६०६ ई०) मे रावण ऋषि के वेष मे एक रथ के साथ सीता के पास आता है । इस रथ पर अयोध्या के नागरिको का रूप धारण करने वाले राक्षस बैठते है । रावण कहता है, हम भरत की ओर से आए है । राम का राज्याभिषेक होने वाला है और राम ने स्वय अयोध्या के लिए प्रस्थान किया है (दे० पाश्चत्य वृत्तान्त न० १, पृ० ८५) । **आश्चर्य-चूडामणि** नाटक मे राम और लक्ष्मण के चले जाने के बाद रावण और उसका सारथि क्रमश राम[1] और लक्ष्मण का रूप धारण कर सीता के पास पहुँचते है । रथ को दिखलाकर लक्ष्मण (सारथि) राम (रावण) से कहता है—'भरत का राज्य सकट मे है । उनकी सहायता करने के लिए तपस्वियो ने यह रथ भेजा है ।' अनन्तर तीनो रथ पर चले जाते है । उधर शूर्पणखा, सीता के वेष मे, राम के साथ बातचीत कर रही है तथा मारीच, राम के वेष मे, लक्ष्मण के साथ । गुणभद्रकृत जैन **उत्तरपुराण** मे वनवास का उल्लेख नही मिलता । राम सीता के साथ बनारस मे निवास करते हैं । नगर के पास ही चित्रकूट नामक उपवन से सीता का हरण होता है । इस वृत्तान्त की एक और विशेषता यह है कि इसमे लक्ष्मण का उल्लेख नही किया गया है । मृग को मारने के लिए राम के चले जाने के बाद रावण राम के रूप मे सीता के पास आकर कहता है—'मैंने मृग को फँसाया है और उसे बनारस भेजा है । अब घर जाने का समय आ गया है ।' यह सुनकर सीता रावण के पुष्पक पर बैठ जाती है (सीता को धोखा देने के लिए पुष्पक ने सीता की पालकी का रूप धारण कर लिया था) ।

---

१ परिव्राजक (भिक्षु, सन्यासी, ऋषि आदि) तथा राम के रूप के अतिरिक्त रावण के और छद्मरूप मिलते है । तिब्बती रामायण मे रावण पहले हाथी का और इसके बाद घोडे का रूप धारण कर लेता है । हिदेशिया के एक वृत्तान्त मे रावण पहले एक सुवर्ण अज के रूप मे आता है । दे० ज० रो० ए० सो०, स्ट्रेट्स ब्रैच० १६१०, पृ० १५ ।

४६५ भासकृत **प्रतिमानाटक** मे एक सर्वथा नवीन कथानक पाया जाता है। दशरथ के वार्षिक श्राद्ध के एक दिन पूर्व राम और सीता सोच रहे थे कि श्राद्ध कैसे योग्य रीति से मनाया जाए। इस पर रावण परिव्राजक का रूप धारण कर आता है और अपना परिचय देकर भिन्न-भिन्न शास्त्रो का उल्लेख करता है जिनका उसने अध्ययन किया है। इनमे से एक है **प्राचेतस श्राद्धकल्पम**। राम श्राद्ध के विषय मे जिज्ञासा प्रकट करते है। तब रावण कहता है कि हिमालय मे रहने वाले काचनपार्श्व मृग से पितृ विशेष रूप से प्रसन्न हो जाते हैं। उसी क्षण मारीच इस प्रकार का मृग बनकर दिखाई देता है। लक्ष्मण उस समय आश्रम के कुलपति का स्वागत करने गए थे। अत सीता को रावण के पास छोडकर राम मृग के पीछे चले जाते है। तब रावण अपना रूप धारण कर सीता को लका ले जाता है (दे० अक ५)।

४६६ **कृत्यारावण** मे सीताहरण का जो रूप मिलता है, उसका प्रधान उद्देश्य यही प्रतीत होता है कि लक्ष्मण पर झूठा अभियोग लगाने के दोष से सीता को बचाया जाय। कनकमृग के पीछे राम के चले जाने के बाद शूर्पणखा तपस्विनी गौतमी का रूप धारण कर सीता को कही दूर ले जाती है। तब वह सीता के रूप मे लक्ष्मण के पास लौटकर उनको अपने कटु शब्दो द्वारा राम की सहायता करने जाने के लिए बाध्य करती है (अक १)। इतने मे रावण सीता के पास आकर उनको यह कहकर पुष्पक पर चढने के लिए विवश कर देता है—यदि तुम स्वेच्छा से पुष्पक पर नही चढोगी तो मै आश्रम के सब तपस्वियो का सिर काट दूगा (अक २)।

४६७ दक्षिण भारत के एक वृत्तान्त मे सीताहरण का वर्णन इस प्रकार है— रावण स्वय दो सिर वाले मृग का रूप धारण कर लेता है। सीता उसे देखकर उसके चमडे के लिए इच्छा प्रकट करती है। राम मृग के पीछे दूर तक निकलकर अत मे उसे मार डालते है। उसी क्षण रावण का जीव एक साधू के शरीर मे प्रवेश करता है। वह साधू पर्णशाला के पास आकर लक्ष्मण से कहता है 'तुम्हारा भाई वैरियो से घिरा हुआ है, उसकी सहायता करने जाओ'। सीता के अनुरोध करने पर लक्ष्मण जाते है और रावण सीता को लेकर लका की ओर प्रस्थान करता है (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० ३ और ४)।

४६८ **वाल्मीकि रामायण** मे सीता को लक्ष्मण तथा जटायु की रक्षा मे छोडकर राम मृग को मारने जाते है। ऊपर इसका उल्लेख किया गया है कि आदि रामायण मे सीताहरण के पूर्व सभवत जटायु से भेट नही हुई थी। आगे चलकर जटायु के अतिरिक्त सीता की रक्षा के प्रबन्ध के विषय मे कुछ नवीन सामग्री रामकथाओ मे आ गयी है।

वाल्मीकि रामायण मे माना गया है लक्ष्मण सीता के कटु शब्द सुन कर (दे०

ऊपर अनु० ४६२) राम की सहायता करने गये । बहुत-सी परवर्त्ती रचनाओ मे लक्ष्मण प्रस्थान करने से पहले सीता की रक्षा के लिये कुटी क चारो ओर धनुष से **रेखा** खीचते है, और देवताओ की शपथ खाकर कहते है कि जो कोई इसके भीतर घुसेगा उसका सिर फट जायेगा । बाद मे छद्मवेषी रावण के अनुरोध करने पर सीता उसे भोजन देने के लिये हाथ रेखा के बाहर बढाती है और रावण उनको खीच लेता है । इस प्रकार की कथा खोतानी रामायण, सेरीराम, हिकायत महाराज रावण, स्याम तथा बर्मा की रामकथा (तीन रेखाये), मधुसूदन[1] द्वारा सम्पादित महानाटक (अक ३, ६५), तेलुगु द्विपद रामायण (३, १८, सात रेखाये), कृत्तिवास रामायण, आनन्द रामायण (१, ७, ६८), भावार्थ रामायण (३, १५), सूरसागर (नवाँ स्कन्ध, पद ५०३ नागरी प्रचारिणी सभा सस्करण), रामचरितमानस (६, ३६, २), असिमया गीतिरामायण, रामचन्द्रिका (१२, १८) तथा पाश्चात्य वृत्तान्तो (न० ३, ४ और १३) मे पाई जाती है । पाश्चात्य वृत्तान्त न० १३ मे कहा गया है कि जब रावण रेखा को पार करना चाहता है, अग्नि की लपटे उठकर उसको भीतर घुसने से रोकती है । सारलादास के उडिया महाभारत के अनुसार ये तीन रेखाये ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव (के प्रतीक) है ।

मधुसूदन के महानाटक (३, ६६-७२) मे रावण सीता को **तुलसी** देना चाहता है किन्तु सीता रेखा का उल्लघन करना अस्वीकार करती है, इस पर रावण रेखा पार कर सीता को ले जाता है । सेरीराम के पातानी पाठ के अनुसार सीता रावण को एक पुष्प अर्पित करने के लिये अपना हाथ रेखा के बाहर बढाती है । धर्मखण्ड (अध्याय ८१) तथा तत्वसग्रह रामायण (३, १५) मे सीता अपने पति के कुशलक्षेम के विषय मे चिन्तित है किन्तु रावण उनकी **हस्तरेखा** देखकर ही उनको उत्तर देने की प्रतिज्ञा करता है ।

बिर्होर नामक आदिवासी जाति की रामकथा मे लक्ष्मण जाने के पहले यह कह-कर सीता को अभिमन्त्रित **राई के दाने** देते है—'यदि कोई आए तो उस पर दाने फेकना । एक दाना फेकने से वह एक घण्टा तक मूर्च्छित रहेगा । दो दाने फेकने से वह दो घण्टे तक मूर्च्छित रहेगा, इत्यादि । रावण के आने पर सीता ने एक दाना फेक दिया और वह एक घण्टे तक मूर्च्छित रहा । इसके बाद सीता ने पुन कई बार एक दाना फेका । अन्त मे रावण ने कहा—'इतना कष्ट क्यो करती हो । सब दाने एक साथ फेक दो जिससे मै मर जाऊँ ।' सीता ने ऐसा ही किया और रावण भस्मीभूत हो गया । लेकिन भस्म से उठकर रावण सीता के बालो को पकड कर उनको ले गया ।

---

१ दामोदर के सस्करण (३, २७) मे राम स्वय यह रेखा खीचते है किन्तु एक अन्य स्थल (४, ३) पर वह लक्ष्मण द्वारा खीची हुई मानी जाती है ।

४९९ वाल्मीकि रामायण के अनुसार मारीच मरण के पूर्व अपना राक्षस रूप धारण कर लेता है। राम-भक्ति की प्रेरणा से लिखित परवर्ती राम साहित्य मे मारीच की **सायुज्य-मुक्ति** की प्राप्ति का प्राय उल्लेख मिलता है। अध्यात्म रामायण के अनुसार मारीच के शरीर से निकला हुआ तेज सब के देखते-देखते राम ही मे समा गया (दे० ३, ७, २०)। श्रीमद्देवीभागवत पुराण मे मारीच को वैकुण्ठ के दोनो द्वारपालो का किकर माना गया है, राम द्वारा वध किए जाने के बाद वह वैकुण्ठ लौटता है (दे० ६, १६, ४०)।

५०० सीता का हरण करने के बाद रावण को जटायु का सामना करना पडा।[1] लका की शेष यात्रा मे एक ही घटना उल्लेखनीय हे। किसी गिरिशृग पर (सुग्रीवादि) पाँच वानरो को देखकर सीता ने रावण की आँख बचाकर अपना उत्तरीय तथा अपने आभूषण उनके मध्य फेक दिए।[2]

लका पहुँचकर रावण ने सीता को अपने अन्त पुर मे राक्षसियो की रक्षा मे छोड दिया तथा आठ[3] गुप्तचरो को जनस्थान भेज दिया कि वे राम का पता लगाकर उनकी हत्या करने का प्रयत्न करे (सर्ग ५४)। बाद मे रावण ने सीता का मन विचलित करने के उद्देश्य से उनको लका का वैभव दिखाया। सीता के दृढ रहने पर रावण ने उन्हे एक वर्ष का समय दे दिया, यदि वह इस अवधि के अन्त मे स्वेच्छा से रावण के पास नही आएँगी तो रावण उनको खा जायेगा। तब उसने भयकर राक्षसियो को बुलाकर सीता को अशोकवन मे ले जाने का आदेश दिया (सर्ग ५५-५६)।

काश्मीरी रामायण (३, २४) का वृत्तान्त इस प्रकार है। रावण ने सीता को एक वाटिका मे रखकर उनकी रक्षा का भार मदोदरी को सौप दिया। मदोदरी आकर

---

१ दे० ऊपर अनु० ४७०। माधव कदली कृत असमिया रामायण (४, २५), असमिया गीति रामायण तथा कृत्तिवास (३, २१) के अनुसार विन्ध्याचल पर रहने वाले सुपार्श्व ने रावण को रोकना चाहा किन्तु रावण ने निवेदन किया—मुझे जाने दीजिये। आपसे कोई वैर नही है। जिसने मेरी बहन का अपमान किया है, उसी की पत्नी को ले जा रहा हूँ (दे० अनु० ४९१)।

२ दे० ३, ५४, १-२। किष्किन्धा काण्ड (सर्ग ६) मे सुग्रीव राम को ये आभूषण दिखाते है। तत्वसग्रह रामायण (३, १५) के अनुसार कुछ वानरियाँ सीता की विवशता देखकर उनकी हँसी करती थी, इस पर सीता ने उनको यह शाप दिया कि उनकी छाती सदा अनाच्छादित रहेगी।

३ आनद रामायण (१, ७, १३०) मे इनकी सख्या १६ है, वे कबध द्वारा खाये जाते हे।

अपनी पुत्री को पहचानती है जिसे उसने जन्म के बाद ही नदी मे फेकवा दिया था (दे० ऊपर अनु० ४१३)। सीता अपनी माता को अपना जीवन-वृत्त सुनाती है और दोनो मिलकर विलाप करती है।

पउमचरिय के अनुसार रावण ने सीता को पहले देवरमण उद्यान (४६, १५) और बाद मे समन्त-कुसुम उद्यान (४६, ६६) मे रख दिया था। **गुणभद्र** के अनुसार सीता को नन्दनवन (६८, ३०७) मे रखा गया था। पाश्चात्य वृत्तान्त न० १ मे यह माना गया है कि सीता चारो ओर से अग्नि से घिरी हुई थी, इसी कारण से रावण उनको अपने महल मे नहीं रख सकता था। कृत्तिवास (३, २२) के अनुसार शूपणखा ने अशोकवन मे सीता के पास आकर उनको मार डालने की धमकी दी थी किन्तु रावण के डर से वह कुछ कर न सकी।

हरण के पश्चात् सीता के प्रति रावण का व्यवहार समझने के लिए परवर्ती साहित्य मे कई मार्ग अपनाये गये है। एक के अनुसार रावण को यह शाप दिया गया कि अनासक्त पर-स्त्री के साथ सभोग करने से उसका सिर फट जाएगा (दे० अनु० ६५४)। जैनी रामायणो मे यह माना गया है कि रावण ने विरक्त पर-नारी के साथ रमण न करने का व्रत[1] लिया था। **पउमचरिय** (पर्व ४६) के अनुसार रावण मन्दोदरी के सामने स्वीकार करता है कि मैने सीता का हरण किया है तथा यह भी कहता है कि यदि सीता मेरा तिरस्कार करती रहेगी तो मेरे प्राण नही बच सकेगे। मन्दोदरी बलप्रयोग का परामर्श देती है जिस पर रावण उत्तर देता है कि यह मेरे व्रत के कारण असभव है। अनन्तर मन्दोदरी स्वय जाकर रावण की बात मानने के लिये सीता से अनुरोध करती है। बाद मे रावण माया की सहायता से सीता को हाथी, सिह, बाघ, राक्षस, बेताल और सर्पो से डराता है किन्तु यह सब होते हुये भी सीता रावण की शरण नही लेती। **गुणभद्र** के उत्तर पुराण के अनुसार रावण ने हरण के समय भी सीता का स्पर्श इसीलिए नही किया था कि पतिव्रता स्त्री के स्पर्श से उसकी आकाशगामिनी विद्या शीघ्र नष्ट हो जाएगी (दे० ६८, २१३)। रावण द्वारा सीता का स्पर्श न होने के अन्य कारणो का भी उल्लेख मिलता है (दे० अनु० ५०२)। सेरी राम मे माना गया है कि रावण को लका मे सीता से ४० धनु दूर रहना पडता था (दे० अनु० ५२४)।

---

१ पउमचरिय के अनेक स्थलो पर इस व्रत का निर्देश मिलता है; उदाहरणार्थ पर्व १४, १५३, ४४, ४५, ४६, ३३, गुणभद्र के उत्तर पुराण मे व्रत इस प्रकार है—**नानिच्छन्ती प्रतीच्छामि** (६८, ४८६)। बाद मे रावण ने सीता को विचलित करने की जिन युक्तियो का सहारा लिया है उनका वर्णन आगे किया जाएगा—(दे० अनु० ५४२ और ५८३)।

सुन्दरकाण्ड की घटनाओ के पूर्व सीता के लका-निवास के विषय मे वाल्मीकि रामायण के एक प्रक्षिप्त सर्ग मे निम्नलिखित कथा मिलती है।[1] सीताहरण के पश्चात् ब्रह्मा ने इन्द्र को बुला कर उनको आदेश दिया कि सीता के पास अन्न ले जाकर उनके प्राण बचा ले। इसपर इन्द्र और निद्रा लका चले गए। निद्रा ने राक्षसो को सम्मोहित किया जिससे इन्द्र सीता के पास जा सके। इन्द्र ने सीता को राम के आगमन का आश्वासन देकर उनको क्षुधा-तृषा मिटानेवाला पायस खिलाया। यह वृत्तान्त गौण परिवर्तनो के साथ वृहद्धर्म पुराण (पूर्व खण्ड, अध्याय १९), श्रीमद्देवीभागवत पुराण (३, ३०), आनन्द रामायण (१, ७), कृत्तिवास रामायण (३, २३), काश्मीरी रामायण (३, २३) आदि मे भी मिलता है। श्रीमद्देवीभागवत तथा काश्मीरी रामायण के अनुसार इन्द्र ने सीता को अमृत पिलाया था।

इस कथा की प्रक्षिप्तता असदिग्ध है। सुन्दरकाण्ड मे सीता को **'उपवासकृशा'** (५, १८) कहा गया है। जैनी रामायणो के अनुसार सीता ने यह प्रण किया था कि जब तक पति की कुशल वार्ता न मिल जाए, मै भोजन नही करूँगी (पउमचरिय ४६, १४, गुणभद्र कृत उत्तरपुराण ६८, २२४)।

घ। माया-सीता

५०१ वाल्मीकि रामायण मे सीताहरण का जो चित्र खीचा जाता है वह किंचित् वीभत्स कहा जा सकता है। रावण एक हाथ से सीता के बाल और दूसरे हाथ से उनकी जघाओ को पकड कर उनको अपने रथ पर रख देता है

अभिगम्य सुदुष्टात्मा राक्षस काममोहित।
जग्राह रावण सीता बुध खे रोहिणीमिव ॥१६॥
वामेन सीता पद्माक्षी मूर्धजेषु करेण स।
ऊर्वोस्तु दक्षिणेनैव परिजग्राह पाणिना ॥१७॥

(अरण्यकाड, सर्ग ४९)

इस वर्णन की उग्रता का निवारण करने के लिए रामकथा-साहित्य मे दो मार्ग अपनाए गए है। सीताहरण के वृत्तान्तो का एक ऐसा समूह मिलता है जिसमे रावण सीता का हरण करते हुए भी उनका स्पर्श नही करता। दूसरा मार्ग यह है कि रावण वास्तविक सीता का हरण न कर सीता की एक छाया मात्र लका ले जाता है।

---

१ यह सर्ग दाक्षिणात्य पाठ मे सर्ग ५६ के अनन्तर रखा गया है, अन्य पाठो मे इसे प्रक्षिप्त नही माना गया है (दे० गौ० रा० तथा प० रा० सर्ग ६३)। दाक्षिणात्य के किष्किधाकाण्ड के ६४ वे सग मे प्रस्तुत कथा का उल्लेख है, किन्तु वह सर्ग भी प्रक्षिप्त है (दे० अनु० ५३०)।

५०२ नृसिंह पुराण तथा गुणभद्र के उत्तरपुराण मे सीता के स्पर्श से बचने के लिए रावण ने एक ऐसा उपाय निकाला है, जिससे सीता अपने आप विमान पर चढती है (दे० अनु० ४६४)।

कई अन्य वृत्तान्तो मे सीता को रावण के स्पर्श से बचाने के लिए अलौकिकता का सहारा लिया गया है। तिब्बती रामायण (नवी शताब्दी), कम्ब रामायण, अध्यात्म रामायण, तत्त्वसग्रह रामायण (३, १५) आदि मे रावण पृथ्वी को खोद कर सीता को **भूभाग के साथ-साथ** ले जाता है।

तमिल रामायण (३, ८) के अनुसार रावण ने पृथ्वी को एक योजन की गहराई तक खोद कर सीता तथा झोपडी को अपने रथ पर रख दिया। यह इसलिए हुआ कि उसको यो शाप दिया गया था, 'परस्त्री स्पश करने से तुम मर जाओगे'।

अध्यात्म रामायण मे रावण केवल एक माया-सीता का हरण करता है। फिर भी यह पृथ्वी को नखो से खोद कर उस सीता का भी स्पर्श नही करता

> **ततो विदार्य धरणी नखैरुद्धृत्य बाहुभि ॥५१॥**
> **तोलयित्वा रथे क्षिप्त्वा ययौ क्षिप्र विहायसा।**
>
> (अरण्यकाड, सर्ग ७)

प्रसन्नराघव (१४वी श०) मे गोदावरी अन्य नदियो तथा सागर को सीताहरण का वृत्तान्त सुनाती है। सागर पूछता है—**'अपि नाम मम वधूटिका स्पृष्टा निशाचरेण'**। इस पर गोदावरी उत्तर देती है—**'न स्पृष्टा'** और कहती है कि जब रावण ने सीता पर हाथ डालना चाहा तब अनसूया का दिया हुआ अंगराग अग्नि के रूप मे सीता का आवरण बन गया था, तब रावण ने वरुणमन्त्र द्वारा बादल को बुलाया और उस बादलरूपी आचल से सीता को ढँक कर उसे ले गया (अक ५)।

दक्षिण भारत के एक नृसिंह पुराण मे मिलते-जुलते वृत्तान्त मे लिखा है कि रावण के रथ मे तथा लका मे भी अग्नि सीता की रक्षा करती थी। इस कारण रावण न तो सीता का स्पर्श कर पाता था और न उनको महल के भीतर ले जा सकता था (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० १)। इसका उल्लेख सेरीराम के पातानी पाठ मे भी हुआ है।

५०३ इस प्रकार हम देखते है कि भिन्न-भिन्न युक्तियो से सीता को रावण के स्पर्श से बचाया गया है। फिर भी सीता रावण के वश मे हुई हो यह विचार भक्ति भावना के लिए असह्य और असम्भव सा प्रतीत हुआ। अत एक मायामयी सीता को वास्तविक सीता का स्थान लेना पडा। रामकथा के इस महत्वपूर्ण परिवर्तन की उत्पत्ति और विकास पर प्रकाश डालना अपेक्षित है।

उस वृत्तान्त मे दो तत्त्व आ जाते है। पहले, एक **माया-सीता** का हरण होता

है और दूसरे, वास्तविक सीता अग्नि मे निवास करने जाती है। इन दोनो का सूत्रपात हम **वाल्मीकि रामायण** मे देख सकते है ।

लकाकाड मे सीता को विद्युज्जिह्व द्वारा निर्मित राम का एक मायामय सिर दिखलाया जाता है (सर्ग ३२) और बाद मे इन्द्रजित् वानर-सेना के सामने एक मायामयी सीता का सिर काटता है (सर्ग ८१), आगे चल कर रामकथा-साहित्य मे इस प्रयोजन का और स्थलो पर भी सहारा लिया जाता है। राजशेखर के **बालरामायण** मे सीता और उनकी धात्रेयिका (दूध-बहन) सिंदूरिका की मूर्तिया बनवाकर और उनके मुँह मे सारिकाएँ स्थापित करके माल्यवान् विरही रावण का मन बहलाने का प्रयत्न करता है (अक ५) । इसी नाटक मे सेतुबध के समय राम को निरुत्साह करने के लिए सीता का एक मायामय सिर समुद्र के तट पर फेका जाता है। अत माया-सीता की कल्पना प्राचीन काल से चली आ रही है।[1] इसके अतिरिक्त सम्भव है कि **वाल्मीकि रामायण** की निम्नलिखित उपमा भी माया-सीता की कल्पना के लिए सहायक हो सकी हो, 'रावण ने सीता को लका मे रख दिया मानो मय ने अपने महल मे आसुरी माया को'

निदधे रावण सीता मयो मायामिवासुरीम् । (३, ५४, १४)

टीकाकारो ने इस उपमा मे मायासीता के वृत्तान्त का निर्देश देखा है । **रामायण तिलक** मे लिखा है—**मायामिवासुरीमित्यनेन मायारूपैवैषा सीता या लकामागतेति ध्वनितम् ।**

इस मायासीता के हरण के पहले वास्तविक सीता **अग्नि** मे निवास करने जाती हैं। रामकथा के विकास की पृष्ठभूमि पर यह भी अत्यन्त स्वाभाविक प्रतीत होता है। वाल्मीकि रामायण मे अग्निपरीक्षा के अवसर पर अग्नि सीता की रक्षा कर और उनके पातिव्रत्य का साक्ष्य देकर अन्य देवताओ से अधिक महत्त्वपूर्ण स्थान लेते है। आगे चलकर सीताहरण के प्रसग मे भी अग्नि का उल्लेख होने लगा ।

श्रीमद्देवीभागवतम् मे सीता रावण का प्रस्ताव सुनकर गार्हपत्य (अर्थात्

---

१ यह भी असभव नही है कि महाभागवत पुराण (अध्याय ११, १६) मे जो छाया-सती की कथा मिलती है वह छाया-सीता की कल्पना मे सहायक हुई हो । अद्भुत रामायण मे वास्तविक हरण को अवास्तविक सिद्ध करने का तर्क दिया जाता है । हनुमान् राम को सान्त्वना देते हुए कहते है, जिस तरह विश्व आभास है उसी तरह सीताहरण भी आभास मात्र है ।

तव भार्या महाभाग रावणेन हृतेति यत् ।
विश्व यथेदमाभाति तथेद प्रतिभाति मे ।।३।। (सर्ग १६)'

झोपडी मे स्थापित अग्नि) की ओर शरण के लिए भाग जाती है (स्कध ३, अध्याय २६)।

रगनाथकृत तेलुगु **द्विपद रामायण** (३, १८) मे लक्ष्मण अग्निदेव से प्रार्थना कर और सीता को उनकी रक्षा मे सौपकर राम की सहायता करने जाते है। दक्षिण भारत के उपर्युक्त वृत्तान्त के अनुसार भी अग्नि सीता की रक्षा करती है और उनको रावण के स्पर्श से बचाती है। इस वृत्तान्त के एक अन्य स्थल पर सीता अग्नि की पुत्री मानी गई है (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० १, पृ० १००)।

५०४ माया-सीता के हरण का वृत्तान्त पहले पहल **कूर्मपुराण** के पतिव्रतोपाख्यान मे मिलता है (७वी श०)। निजन वन मे टहलती हुई सीता ने रावण को आते देखकर और उसका अभिप्राय समझकर घर की अग्नि की शरण ली (**जगाम शरण वह्निमावसथ्यम**) तथा वह्न्यष्टक का जप किया (**वह्न्यष्टक जप्त्वा**)।

इसपर आवसथ्य से प्रकट होकर अग्नि ने एक मायामयी सीता को बनाया और (**सीतामादाय रामेष्टा पावकोऽन्तरधीयत**) वास्तविक सीता को ग्रहण कर उसको छिपा दिया। तब रावण मायामयी सीता को लका ले गया। रावणवध के बाद राम ने उस मायासीता पर शका की। फलस्वरूप वह अग्नि मे प्रवेश कर जल गई। तब अग्नि ने प्रकट होकर वास्तविक सीता को दिखलाया और राम ने नतमस्तक होकर अग्नि को सतुष्ट कर दिया। इसपर अग्नि ने मायामयी सीता का रहस्य खोलकर राम से निष्कलक सीता को ग्रहण करने का अनुरोध किया तथा उनको उनके नारायणत्व का स्मरण दिलाया

गृहाण चैता विमला जानकीं वचनात्मम।
पश्य नारायर्ण देव स्वात्मान प्रभवाव्ययम्॥[1]

इस वृत्तान्त के अनुसार राम केवल अग्निपरीक्षा के समय जान जाते है कि वास्तविक सीता का हरण नही हुआ था। **ब्रह्मवैवर्त्त पुराण** के रचयिता ने इसमे किंचित् परिवर्तन किया है। सीताहरण के पूर्व ही अग्निदेव, ब्राह्मण के वेश मे, राम के पास आकर कहते है—'सीताहरण का समय आ गया। मुझे सीता को देकर उसकी छाया अपने पास रख लो। अग्निपरीक्षा के अवसर पर मैं उसे लौटा दूगा। देवताओ ने मुझे भेजा है। मैं ब्राह्मण न होकर अग्नि हूँ।' यह सुनकर राम सहमत हो गये और अग्नि ने

---

१ दे० कूर्मपुराण, उत्तरविभाग, अध्याय ३४ (कलकत्ता सस्करण, पृ० ६६८ आदि)। नरहरिकृत तोरवे रामायण (१५०० ई०) मे लक्ष्मण के चले जाने के बाद अग्नि और अन्य देवता सीता को अग्नि के गढ मे रखकर उनका एक अश मात्र पर्णशाला मे छोड देते है (दे० अरण्यकाड, सधि ६)।

एक मायामयी सीता बनाकर उसे राम को दे दिया। तब इस रहस्य को किसी से भी न प्रकट करने का आदेश देकर अग्नि वास्तविक सीता के साथ चले गये। अग्नि-परीक्षा के समय जब अग्नि ने वास्तविक सीता को लौटा दिया, तब माया-सीता ने पूछा कि मैं अभी क्या करूँ। इसपर अग्नि ने उसको पुष्कर भेज दिया। वहाँ तीन लाख वर्ष तक तपस्या करके मायामयी सीता भी लक्ष्मीपद प्राप्त कर सकी और बाद मे द्रौपदी के रूप मे प्रकट हुई (प्रकृति खण्ड, १४, ४८-५५)। **श्रीमद्देवीभागवत पुराण** मे भी अग्नि राम के पास जाकर उनको एक छाया-सीता देते है और वास्तविक सीता को अग्नि-परीक्षा के समय तक अपने साथ रखते है।[1]

अध्यात्म रामायण मे हमे मायामयी सीता के वृत्तान्त का विकसित रूप मिलता है। लेखक ने राम की सर्वज्ञता पूर्ण रूप से सुरक्षित रखने का प्रयत्न किया है तथा सारे वृत्तान्त मे अग्निदेव को जो प्रधानता मिली थी उसे राम और सीता को दे दिया है। कथा इस प्रकार है (अरण्यकाड, सर्ग ७)

रावण और मारीच का षड्यन्त्र जानकर राम ने एकान्त मे सीता से कहा—'रावण तुम्हारे पास भिक्षु का रूप धारण कर आवेगा, इसलिए तुम अपनी छाया को कुटी मे छोडकर अग्नि मे प्रवेश कर जाओ और मेरी आज्ञा से वहाँ अदृश्य रूप से एक वर्ष रहो।' सीता ने वैसा ही किया। मायामयी सीता को छोडकर वह स्वय अग्नि मे अतर्द्धान हो गई (**माया-सीता बहि स्थाप्य स्वयमन्तदधेऽनले**)। रावण-वध के पश्चात् मायासीता अग्नि मे प्रवेश करती हे (युद्धकाड, सर्ग १२) तथा अग्नि राम को वास्तविक सीता प्रदान करते है (सर्ग १३)। महाभागवत पुराण मे भी सीता अपनी छाया छोडकर अन्तर्द्धान हो जाती है (अध्याय ११, १०८)।

५०५ अध्यात्म रामायण मे जो मायासीता का वृत्तान्त मिलता हे, वह हिन्दी राम-साहित्य मे प्रामाणिक माना गया है, उदाहरणार्थ रामचरितमानस (३, २४), रामचन्द्रिका (१२, १२)। अर्वाचीन रामकथा साहित्य मे भी सीताहरण का यही रूप गौण परिवर्तनो सहित पाया जाता है। उदाहरणार्थ महेश्वरदास का टीका रामायण तथा धनजय भजकृत रघुनाथ विलास।

भावार्थरामायण (३, १६) के अनुसार देवताओ को आशका थी कि सीता का स्पर्श करते ही रावण भस्मीभूत हो जायेगा, वे चाहते थे कि लका-युद्ध मे सभी राक्षसो का नाश हो। अत जब रावण ब्राह्मण के रूप मे सीता के पास आया और सीता भिक्षा

---

१ दे० ब्रह्मवैवर्त्तपुराण, प्रकृति खण्ड, अध्याय १४। श्रीमद्देवीभागवत, स्कध ६, अध्याय १६। दोनो रचनाओ मे यह भी कहा गया है कि वह माया-सीता आगे चलकर द्रौपदी के रूप मे प्रकट हुई।

लाने के लिये पर्णकुटी के अन्दर चली गई तब देवताओ ने सीता को आदेश दिया कि वह स्वय रावण को भिक्षा न दे और देवताओ द्वारा निर्मित एक मायामयी सीता को भेज दे। इसपर सीता ने उत्तर दिया कि माया-सीता का निर्माण आप लोगो की शक्ति के बाहर है। मै स्वय अपनी छाया भेजकर देवताओ का कार्य सम्पन्न करूँगी।

बलरामदास रामायण (उत्तरकाड) मे यह माना गया है कि लक्ष्मण के चले जाने के बाद सीता ने नारद की पूर्व-शिक्षा के अनुसार अपना माया-रूप छोडकर अग्नि मे प्रवेश किया था। अग्निपरीक्षा के समय वास्तविक सीता फिर प्रकट हुई थीं।

धर्मखण्ड (अध्याय १३०) तथा **तत्त्वसग्रह रामायण** (३, १३) के अनुसार नारद ने वनवास के अन्त मे राम को उनके कर्त्तव्य (अर्थात् रावण-वध) का स्मरण दिलाया। राम ने उत्तर दिया कि रावण आ रहा है। तब राम ने लक्ष्मण के अनजान मे माया-सीता का निर्माण कर मृत्यु देवी से निवेदन किया कि वह सीता के रूप मे लका मे प्रवेश करे। राम ने वास्तविक सीता को अपनी छाती मे छिपा लिया। लकायुद्ध के ठीक पहले राम ने सीता से कहा कि तुम्हारे रहते युद्ध मे जाना दुष्कर है। इसपर सीता अपनी माता पृथ्वी की शरण मे चली गईं (तत्त्वसग्रह रामायण ६, १४) तथा अग्नि-परीक्षा के समय लौटी (वही ६, ३४-३५)।

काश्मीरी रामायण मे अग्निपरीक्षा के समय माया-सीता के प्रवेश करने के बाद अग्नि १४ दिनो तक जलती रहती है, तत्पश्चात् वास्तविक सीता उसमे से निकलती हैं (६, ५४)।

५०६ **आनन्दरामायण** मे माया-सीता के वृत्तान्त का एक परिवर्तित रूप मिलता है। खरादि-वध के पश्चात् राम सीता को तीन रूपो मे विभक्त हो जाने का आदेश देते है—रजोरूप से वह अग्नि मे वास करेगी, सत्वरूप से राम के वामाग मे और तमोरूप से वन मे

सीते त्व त्रिविधा भूत्वा रजोरूपा वसानले ॥६७॥
वामागे मे सत्वरूपा वस छाया तमोमयी।
पचवट्या दशास्यस्य मोहनार्थं वसात्र वै ॥६८॥ (सारकाड, सर्ग ७)

उपर्युक्त वृत्तान्त आनन्द रामायण को छोडकर और कही नहीं मिलता। जिस तरह अन्य वृत्तान्तो मे वास्तविक सीता का हरण नही होता उसी तरह इसमे सात्विक-तथा रजोमयी सीता दोनो की रक्षा होती है और रावण केवल एक तमोमयी छाया हर लेता है।

५०७ रसिक सम्प्रदाय मे भी सीताहरण को अवास्तविक माना गया है। "वास्तव मे न तो सीता का हरण हुआ और न स्वय ब्रह्म राम ने एक तुच्छ राक्षस

के वध के लिए धनुष-बाण ही धारण किया था।"[1] उस सम्प्रदाय मे चित्रकूट का अत्यधिक महत्व है, राम "ब्रह्मरूप मे अपनी आह्लादिनी शक्ति सीता जी के साथ चित्रकूट मे विहार करते रहे। इस विहारलीला मे कैकर्य और व्यवस्था लक्ष्मण जी करते थे, जो जीव-तत्व के प्रतिनिधि थे। चित्रकूट के आगे लक्ष्मी, नारायण और शेष उनके वेष मे गए थे और परात्पर ब्रह्म की आज्ञा से उन्होने ही रावण का वध कर सीतारूप लक्ष्मी का उद्धार किया।"[2] बाद मे तीनो चित्रकूट लौटे।

५०८ मायासीता के इन सब वृत्तान्तो का अभिप्राय स्पष्ट है। उपास्य देवी की मर्यादा की रक्षा करने के लिए भक्ति-भावना ने सीता की एक छाया मात्र का हरण स्वीकार किया और साथ-साथ राम की सर्वज्ञता को भी पूर्ण रूप से सुरक्षित रखने का प्रयत्न किया।

अत मे युनानी साहित्य के एक समान विकास की ओर निर्देश करना है।[3] होमर के काव्य मे हेलेन पतिता बनकर अपने अपहर्ता पैरिस के साथ स्वेच्छा से भाग निकलती है और युद्ध के बाद अपने पति मेनेलोस को पुन प्राप्त होती है। युनानी धार्मिक विकास मे वही हेलेन बाद मे देवी मानी गई। फलस्वरूप भक्तो ने होमर का वृत्तान्त इष्टदेवी की मर्यादा के प्रतिकूल समझकर उसे इस तरह बदल दिया कि पैरिस हेलेन की एक छाया (ऐडोलोन = मायामयी मूर्ति, छाया) अपने साथ ले जाता है। इसी तरह भक्ति-भावना ने दोनो देशो मे एक ही उपाय का सहारा लिया है। फिर भी हेलेन तथा सीता की कथाओ मे किंचित् भी पारस्परिक प्रभाव मानने की कोई आवश्यकता नही। इस प्रकार इन दोनो कथाओ का स्वतत्र रूप से समानान्तर विकास हुआ है।

---

१ दे० रामभक्ति मे रसिक सम्प्रदाय, पृ० २८२।

२ दे० वही, पृ० २६७।

३ दे० डब्लू० प्रिट्ज हेलेन उएड सीता (याकोबी मेमोरियल वाल्युम, पृ० १०३-११३)।

अध्याय १७

किष्किंधाकांड

१—वाल्मीकि रामायण का किष्किधाकाण्ड

५०६ क । किष्किंधाकाड की कथावस्तु

(१) सुग्रीव से मैत्री (सर्ग १-१२)

हनुमान्—पपासर देखकर राम की विरह-व्यथा । सुग्रीव का हनुमान को भेजना । हनुमान का उनको सुग्रीव के पास ले जाना (सर्ग १-४) ।

सुग्रीव—सुग्रीव का स्वागत तथा अपनी कथा बताना । राम द्वारा वालिवध की प्रतिज्ञा । सुग्रीव का राम को सहायता का वचन देना तथा सीता के आभरण दिखलाना (सर्ग ५-६) । सुग्रीव का पुन सहायता के लिए वचन देना तथा अपनी कथा सुनाना (सर्ग ७-१०) ।

राम की परीक्षा—सुग्रीव द्वारा वालि की शक्ति का वर्णन । राम द्वारा दुदुभि के अस्थि-ककाल का फेका जाना, अनन्तर राम से सात ताड तरुओ के एक वाण द्वारा भेदे जाने पर सुग्रीव का विश्वस्त होना । किष्किधा जाकर सुग्रीव का वालि से प्रथम द्वन्द्व-युद्ध । राम का सुग्रीव को न पहचानना । ऋष्यमूक मे लौटना (सर्ग ११-१२) ।

(२) वालिवध (सर्ग १३-२८)

वालि का आहत होना—द्वितीय बार सुग्रीव का वालि को द्वन्द्वयुद्ध के लिए ललकारना (सर्ग १३-१४) । तारा द्वारा रोके जाने पर भी बालि का युद्ध के लिये जाना तथा राम के वाण से आहत होना (सर्ग १५-१६) ।

वालि की भर्त्सना—इन्द्र-माला के कारण वालि का जीवित रहना तथा राम को भर्त्सना देना, राम का प्रत्युत्तर (सर्ग १७-१८) ।

तारा-विलाप—समाचार पाकर तारा का आना और विलाप करना (सर्ग १६-२०) । हनुमान का तारा को सान्त्वना देना (सर्ग २१) ।

वालि-मरण—वालि का सुग्रीव के हाथ अगद को सौपना । सुग्रीव के इन्द्र-माला उतार लेने पर उसका मरण, बानरो और तारा का विलाप (सर्ग २२-२३) । सुग्रीव का पश्चात्ताप और राम का सान्त्वना देना (सर्ग २४-२५) ।

वर्षा-ऋतु—राम का प्रस्रवण पर्वत की एक गुफा मे वर्षा-निवास। सुग्रीव का अभिषेक तथा अगद का युवराज होना, राम द्वारा वर्षा-वर्णन तथा उनका विलाप (सर्ग २६-२८)।

(३) वानरो का प्रेषण (सर्ग २६-४४)।

शरद-ऋतु—सुग्रीव का वानरसेना बुलाना, राम का शरद-ऋतु वर्णन तथा सुग्रीव की कृतघ्नता का उल्लेख, क्रुद्ध होकर लक्ष्मण का सुग्रीव के पास जाना (सर्ग २६-३२)।

लक्ष्मण-सुग्रीव-भेंट—तारा का लक्ष्मण को शात करना। लक्ष्मण का सुग्रीव की भर्त्सना करना। तारा तथा सुग्रीव की क्षमा-प्रार्थना। सुग्रीव की आज्ञा से सेना का आगमन (सर्ग ३३-३७)।

दिग्वर्णन—सुग्रीव का सेना के साथ राम के पास पहुँचना (सर्ग ३८-३९)। दिशाओ का वर्णन करते हुए सुग्रीव का वानरसेना को चतुर्दिक् भेजना (सर्ग ४०-४३)। विश्वास-पात्र हनुमान् का दक्षिण दिशा मे भेजा जाना तथा राम का उन्हे अभिज्ञान रूप मे अगूठी देना (सर्ग ४४)।

(४) वानरो की खोज (सर्ग ४५-६७)

असफलता—वानरो का प्रस्थान तथा पूर्व, पश्चिम और उत्तर से वानरो का निराश लौटना (सर्ग ४५-४७)। हनुमान् और उनके साथियो की विध्यपर्वत मे व्यर्थ खोज (सर्ग ४८-४९)।

स्वयप्रभा—उनका कदरा मे प्रवेश, स्वयप्रभा द्वारा सत्कार तथा आँखे बद करवाकर उनको गुफा के बाहर ले जाना (सर्ग ५०-५२)।

अगद की निराशा—कदरा से निकल कर विध्य-नल के सागर-तट पर उनका पहुचना। अगद का प्रायोपवेशन के लिये प्रस्ताव। अगद का सुग्रीव से भयभीत होना, सभी का दुखी और निराश होना (सर्ग ५३-५५)।

सपाति—सपाति के समुख अगद द्वारा जटायु मृत्यु का उल्लेख। सपाति का वृत्तान्त पूछना और लका की स्थिति बतलाना (सर्ग ५६-५८)। उसका अपने पुत्र सुपार्श्व द्वारा रावण को सीता ले जाते देखने का उल्लेख करना। ऋषि निशाकर के कथनानुसार सपाति के पखो का फिर से उग आना (सर्ग ५९-६३)।

सागर का तट—सागर के तट पर पहुँचकर अगद की निराशा। जाम्बवान् द्वारा हनुमान् की कथा तथा सामर्थ्य-वर्णन। हनुमान् का महेद्र पर्वत पर चढकर कूदने के लिए तत्पर होना (सर्ग ६४-६७)।

ख]। किष्किधाकाड का विश्लेषण

तीनो पाठो मे विभिन्नता ।

५१० किष्किधाकाड की आधिकारिक कथावस्तु, अर्थात् सुग्रीव से मैत्री, वालिवध और वानरो के प्रेषण तथा खोज मे कोई विशेष अतर नही पाया जाता है ।

दाक्षिणात्य पाठ की निम्नलिखित सामग्री अन्य दोनो पाठो मे नही मिलती

सर्ग ३, २८-३८ । राम द्वारा हनुमान् की शुद्ध भाषा और व्याकरण के अध्ययन का उल्लेख ।

सर्ग २४ । वालिवध के पश्चात् सुग्रीव का पश्चात्ताप तथा राम द्वारा तारा को सान्त्वना ।

सर्ग २७, ५-३० । प्रस्रवणगिरि का वर्णन ।

सर्ग २८, १४-५२ । वर्षाऋतु का त्रिष्टुभ मे वर्णन ।

सर्ग ३०, २८-५७ । शरत् का त्रिष्टुभ मे वर्णन ।

सर्ग ३३, २५-६२ । तारा-लक्ष्मण-सवाद । क्रुद्ध लक्ष्मण को आते देखकर सुग्रीव उनको शात करने के लिए तारा को भेजते है ।

इसके अतिरिक्त दाक्षिणात्य २१ वा सर्ग (हनुमान् द्वारा तारा को सान्त्वना) तथा ३९वाँ सर्ग (वानर सेना का आगमन) पश्चिमोत्तरीय पाठ मे नही मिलते, यद्यपि दोनो गौडीय पाठ मे विद्यमान है (दे० गौ० रा० ४, सर्ग २३ और ३६) ।

गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठो मे तीन वृत्तान्त मिलते है, जिनका दाक्षिणात्य पाठ मे अभाव है

(१)राम के प्रति तारा का शाप । तारा का विलाप उदीच्य पाठो मे अपेक्षाकृत विस्तृत है, इसमे तारा राम को शाप देकर कहती है कि सीता थोडे समय तक तुम्हारे साथ रहकर भूतल मे प्रवेश करेगी (गौ० २०, १५-१६, प० १६, ३६-४०) ।

(२) सम्पाति का अपने पुत्र सुपार्श्व को बुलाना जो अगद को अपनी पीठ पर समुद्र के उस पार ले जाने का प्रस्ताव करता है (गौ० रा० ४, ६२ तथा प० रा० ४, ५५) ।

(३) केसरी द्वारा दिग्गज धवल का वध, जिसके लिये उसने वरस्वरूप 'मुरुत-विक्रम' पुत्र हनुमान् को प्राप्त किया था (दे० गौ० रा० ५, ३ तथा प० रा० ४, ५८) ।

प्रक्षेप ।

५११ किष्किन्धाकाण्ड की निम्नलिखित सामग्री प्रक्षिप्त है

(१) **राम का दोषनिवारण । सर्ग १७-१८ ।** परवर्ती साहित्य मे वालिवध के दोष से राम को बचाने के लिए जो मार्ग अपनाया गया है, उसका वर्णन आगे किया

जाएगा (दे० अनु० ५२२)। प्राचीनकाल से रामायण के गायकों ने राम के इस कार्य को न्यायसगत सिद्ध करने का प्रयत्न किया है और महाभारत की रीति के अनुसार उन्होंने अभियोग (सर्ग १७) तथा प्रत्युत्तर (सर्ग १८) को शास्त्रीय ढग से प्रस्तुत किया है।[1] इस प्रसग मे मनुस्मृति के दो श्लोको का भी उद्धरण दिया गया है।[2]

वास्तव मे वाल्मीकि ने राम को आदर्श क्षत्रिय के रूप मे प्रस्तुत किया था और आदि रामायण के अनुसार राम ने वालि को छल से नही, बल्कि युद्ध मे मारा था। यह प्रचलित रामायण की अतरग परीक्षा से प्रतीत होता है (दे० आगे अनु० ५१८) इसके अतिरिक्त अधिक सभव यह है कि आदि रामायण मे राम की बल-परीक्षा की कोई भी चरचा नही मिलती थी (दे० आगे अनु० ५१७)।

(२) **दिग्वर्णन। सर्ग ४०** मे पूर्व दिशा का वर्णन, **सर्ग ४१-४३,४५-४७।** वानरो के प्रेषण के विषय मे ८४वा सर्ग सबसे प्राचीन है, इसमे हनुमान राम की अगूठी लेकर दक्षिण की ओर प्रस्थान करते है। अनन्तर ४८वाँ सर्ग रहा होगा जिसमे हनुमान और उनके साथियो का विन्ध्य मे सीता की असफल खोज करने का वर्णन किया गया है। बाद मे वानरो के प्रेषण के पहले भिन्न-भिन्न दिशाओ का जो विस्तृत वर्णन किया गया है, उसका केंद्र किष्किन्धा मे न होकर उत्तर भारत मे है।[3] दक्षिण दिशा के वर्णन मे (सर्ग ४१) हनुमान आदि का प्रेषण भी वर्णित है यद्यपि इसका ४४वे सर्ग मे पुन वर्णन मिलता है। इससे स्पष्ट है कि यह दिग्वर्णन प्रक्षिप्त है। महाभारत के रामोपाख्यान मे भी इस प्रकार का कोई वर्णन नही किया गया है। सर्ग ४५ मे सभी दिशाओ मे वानरो के प्रस्थान का वर्णन किया गया है, सर्ग ४६ मे सर्ग ९-१० की पुनरावृत्ति मात्र है तथा सर्ग ४७ मे दक्षिण को छोडकर अन्य दिशाओ मे भेजे हुये वानरो का प्रत्यागमन वर्णित है। यह भी सभव है कि मूल रामायण मे हनुमान को अकेला ही सीता का अन्वेषण करने दक्षिण भेजा गया था (दे० आगे अनु० ५२४)।

(३) **सर्ग ३१, ३२, ३५, ३७, ३९।** डॉ० याकोबी ने अरण्यकाड के एक विस्तृत अश का प्रामाणिक पाठ निर्धारित किया है, अर्थात् ३०, ६१ से लेकर ४४, १५ तक।[4] परिणाम यह हुआ कि ६०० श्लोको मे से लगभग १५० श्लोक मात्र प्रामाणिक सिद्ध

---

१ दे० डब्ल्यू० हॉप्किंस, दि ग्रेट एपिक ऑव इण्डिया, पृ० १९। एच० याकोबी, डस रामायण, पृ० १२८।

२ दे० रा० ४, १८, ३१-३२ और मनुस्मृति ८, ३१८, ३१९।

३ दे० एच० याकोबी, वही, पृ० ३७।

४ दे० जर्मन ओरियेन्टल जर्नल, भाग ५१ पृ० ६०५।

हुए। उपयुक्त दिग्वर्णन के अतिरिक्त सर्ग ३१-३२ (लक्ष्मण के किष्किन्धा-प्रवेश का प्रथम वर्णन), सर्ग ३५ (तारा द्वारा सुग्रीव का दोष-निवारण), सर्ग ३७ (वानर-सेना का किष्किन्धा मे आगमन) और सर्ग ३९ (राम के पास वानर-सेना का आगमन) —ये सभी सर्ग डॉ० याकोबी के अनुसार प्रक्षिप्त है। ३९ वॉ सर्ग पश्चिमोत्तरीय पाठ मे नही मिलता।

(४) **ऋषि निशाकर और सम्पाति की कथा। सग ६०-६३**। सर्ग ५६-५९ मे सम्पाति से वानरो की भेट का वर्णन हुआ है, सम्पाति ने वानरो को अपनी कथा तथा लकेश रावण द्वारा सीताहरण का समाचार भी सुनाया। सग ६४ मे वानर सागर के तट पर पहुँच कर उसे पार करने के विषय मे चिन्ता करने लगते है। बीच के सर्गो मे सम्पाति पुन अपनी कथा अनावश्यक विस्तार के साथ दोहराते है। सर्ग ६२ मे इन्द्र द्वारा सीता के पास पायस के ले आने का उल्लेख है (दे० अनु० ५००), जिससे उस सर्ग की प्रक्षिप्तता की पुष्टि होती है।

(५) **हनुमान् की जन्मकथा। सग ६६**। आदिरामायण हनुमान् की जन्म-कथा के विषय मे मोन था, इसके प्रमाण बाद मे दिए जाएँगे (दे० अनु० ६५९-६६१), अत सर्ग ६६, जिसका वर्ण्य-विषय हनुमान् की यह जन्मकथा है, निश्चित रूप से वाल्मीकिकृत नही है।

(६) किष्किन्धा के अन्य सर्गो मे भी **परस्पर विरोधी उल्लेखो** का अभाव नही है जिनका उत्तरदायित्व वाल्मीकि जैसे प्रतिभाशाली महाकवि पर नही लादा जा सकता है। अनेक स्थलो पर कहा गया है कि राम अथवा वानर सीता के अपहर्त्ता के नाम से अनभिज्ञ है (दे० ४, १४, ७, २, ५९, ३)। यह होते हुए भी रावण का नाम (७, १९, १७, ५०, २६, १७ आदि) तथा उनकी राजधानी लका (३५, १५) का बारबार उल्लेख किया गया है। सर्ग ५८ मे सम्पाति का कहना है कि मैंने स्त्री का अपहरण करते हुए रावण को आकाश मे देखा था (श्लोक १५) किन्तु अगले सर्ग मे वही सम्पाति कहता है कि मैंने अपने पुत्र सुपार्श्व से सीता के अपहरण के विषय मे सुना था (दे० ५९, ६)। अत यह स्पष्ट है कि किष्किन्धाकाण्ड मे उपयुक्त प्रक्षिप्त सर्गो के अतिरिक्त और बहुत से गौण प्रक्षेप भी मिलते है।

२—किष्किधाकाण्ड का विकास

क। हनुमान्-सुग्रीव से भेंट

५१२ वाल्मीकीय रामायण के अनुसार सुग्रीव राम-लक्ष्मण को देखकर तथा उनको वालि का गुप्तचर समझकर भयभीत हुआ और उसने पता लगाने के लिए हनुमान् को भेजा। हनुमान् भिक्षु का रूप धारण कर राम-लक्ष्मण के पास आया

और उसने अपना परिचय देकर कहा कि सुग्रीव आपकी मित्रता चाहता है। राम ने सुग्रीव की सहायता करने की प्रतिज्ञा की। बाद मे हनुमान् ने लक्ष्मण से सीताहरण की कथा सुनकर सुग्रीव की सहायता का आश्वासन दिया और अपने वानर रूप मे प्रकट होकर[1] तथा राम-लक्ष्मण को अपने कन्धे पर चढाकर दोनो को पर्वत के शिखर पर सुग्रीव के पास पहुँचा दिया (सर्ग २-४)।

परवर्ती साहित्य मे इस वृत्तान्त मे युद्ध का भी प्रसग आ गया है।

बगाली रामकथाओ मे 'शिव-रामेर युद्ध' का वर्णन किया गया है जिसके अनुसार लक्ष्मण शिव की वाटिका मे फल तोडने जाते है और द्वारपाल हनुमान से युद्ध करते है। देर होने पर राम स्वय आते है, इतने मे शिव भी पहुँचे और राम से युद्ध करने लगते है। युद्ध के अन्त मे शिव राम को अपने द्वारपाल हनुमान् को समर्पित करते है और उस समय से हनुमान् शिव की सेवा छोडकर रामभक्त हो गए।[2] उत्तर भारत के एक वृत्तान्त मे लक्ष्मण राम के लिए फल तोडते समय रुद्रावतार हनुमान् से युद्ध करते है। पराजित होकर और यह सुनकर कि लक्ष्मण राम के भाई है, हनुमान् राम की शरण लेते है और राम-लक्ष्मण को सुग्रीव के पास ले जाते है (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० १३, पृ० ३३७)।

भावार्थ रामायण (४, १) के अनुसार हनुमान् राम की शक्ति की परीक्षा लेने के उद्देश्य से साल वृक्ष हाथ मे लिए राम-लक्ष्मण के पास पहुँचे और उन्होने धमकी देकर पूछा कि तुम लोग कौन हो। राम ने हनुमान् पर बाण चला कर उसे परास्त कर दिया। तब हनुमान् ने वायु का सुझाव मानकर राम से क्षमा माँग ली।

सताली रामकथा (दे० अनु० २७१) के अनुसार हनुमान् तरबूजो की रखवाली करता था। लक्ष्मण इनमे से कुछ लेना चाहते थे जिससे लक्ष्मण और हनुमान् मे भिडन्त हुई। अत मे हनुमान ने राम तथा लक्ष्मण दोनो को तरबूज खिलाया।

कुछ अन्य रामकथाओ मे युद्ध के साथ-साथ **हनुमान के आभूषणो** का भी उल्लेख होता है। सेरीराम के अनुसार हनुमान् राम का पुत्र है (दे० आगे अनु ६७५), जन्म से ही उनके कान कुण्डलो मे अलकृत थे, एक आकाशवाणी ने अजना को आदेश दिया कि बालक का नाम हनुमान् रखा जाय और यह भी कहा कि जो व्यक्ति बालक के कुण्डल देख सकेगा, वही उसका पिता है। १२ वर्ष की अवस्था मे हनुमान् को यह

---

१ **भिक्षुरूप परित्यज्य वानर रूपमास्थित** (४, ३४), अगले सर्ग मे सुग्रीव के पास पहुँचने के बाद इसका पुन उल्लेख है—**ततो हनुमान्सत्यज्य भिक्षु-रूपमरिन्दम** (५, १३)।

२ दे० दि० च० सेन दि बगाली रामायन्स, पृ० ४७।

रहस्य बताया गया, उस समय से वह तपस्वी बनकर अपनी माता की देख-रेख करने लगा। बाद मे अजना के पितामह सगपरदान ने हनुमान् को बालि के दरबार मे जाने का परामर्श दिया तथा दोहराया कि कुण्डलो को पहचानने वाला उसका पिता है। बालि के यहाँ जाते समय हनुमान् को भूख लगी और वह किसी पेड पर चढकर उसके फल खाने लगा। पेड के नीचे उसने लक्ष्मण की गोद मे सिर डाले राम को सोते हुये देखा। लक्ष्मण का ध्यान आकर्षित करने के लिए हनुमान उनपर पत्ते और फल फेकने लगा तथा अन्त मे नीचे उतरकर उसने लक्ष्मण को हराया तथा राम के तीन बाण छीनकर फिर पेड के पत्तो मे छिप गया। इसपर लक्ष्मण ने राम को जगाया तथा हनुमान् को देखने मे अपने को असमर्थ पाकर प्रार्थना द्वारा पेड को छोटा बना दिया जिससे हनुमान् दृष्टिगोचर हुआ। राम ने उस सफेद वानर के कुण्डलो को देखकर उसे अपने पुत्र के रूप मे स्वीकार किया तथा उसे उसके मामा बालि के पास भेज दिया। सेरीराम के **पातानी पाठ** मे हनुमान् राम से युद्ध करता है तथा अन्त मे राम को पहचानकर उनका सहायक बन जाता है। **रामकेर्ति** (सर्ग ५) के अनुसार हनुमान् वायु का पुत्र है तथा सुग्रीव द्वारा भेजा जाता है, वह लक्ष्मण को हराता है और राम उसके कुण्डल पहचानते हे। अजना ने उससे कहा था—जो तुम्हारे कुण्डल देख सके, वही तुम्हारे स्वामी है। इसके बाद हनुमान सुग्रीव को समाचार देने जाता है। **रामकियेन** का वृत्तान्त रामकेर्ति पर निर्भर होते हुये भी वाल्मीकीय कथा के अधिक निकट है—लक्ष्मण को हराने के पश्चात् हनुमान अपनी माता के दिये हुये सकेत से राम को नारायण जानकर अपने को राम की सेवा मे समर्पित करते है और राम-लक्ष्मण को सुग्रीव के पास ले जाते है (अध्याय ७ और १६)।

हनुमान् के कुण्डलो का प्रसग भारतीय कथाओ पर निर्भर है। **रगनाथ रामायण** (४, ३) के अनुसार हनुमान् ने तपस्या द्वारा ब्रह्मा से वर पाकर पूछा था—इस पृथ्वी पर मेरे मोक्ष तथा इच्छित कार्यो की सिद्धि का आधार तथा मेरा आराध्य कौन होगा। ब्रह्मा ने उत्तर दिया—"जो तुम्हारे शरीर के आभूषणो को देख सकेगा, वही तुम्हारा स्वामी और प्रभु होगा।" **पद्मपुराण** (पाताल खड ११२, १३५) मे लिखा है कि जब राम लक्ष्मण की गोद मे सिर रखकर विश्राम कर रहे थे उन्होने एक **"मणिकुडल हेमपिगल वानरम्"** को देखा था। कत्र रामायण (४, २, ३५), बलरामदास रामायण तथा पाश्चात्य वृत्तान्तो १ और २० मे भी कुण्डलो की चर्चा है। वृत्तान्त २० के अनुसार राम को देखने पर हनुमान् ने अनुभव किया कि मेरे कानो मे कुण्डल आ गए है तथा वृत्तान्त १ के अनुसार हनुमान् ने देखा कि उसके राम-लक्ष्मण के पास पहुचने पर दोनो के कानो मे कुण्डल प्रकट हो रहे है। **भावार्थ रामायण** (४, १) के अनुसार अजना ने हनुमान से कहा था कि जो तुम्हारी लगोटी देख सकेगा वही तुम्हारा

स्वामी है (इस रामायण मे यह माना गया है कि हनुमान लगोटी पहनकर उत्पन्न हुआ था)।

बिर्होर-रामकथा (दे० अनु० २७२) के अनुसार सीताहरण के बाद राम-लक्ष्मण वन मे खोज कर रहे थे कि हनुमान् अपनी माता के गर्भ मे से उनको पहचानकर चिल्ला उठा—दादा, रुकिये, मै आपके साथ जाना चाहता हूँ। इस पर उसने जन्म लिया तथा राम-लक्ष्मण के साथ चला गया।

अध्यात्म रामायण (८, १, १३-१६) के अनुसार हनुमान् ने भेट के अवसर पर राम की आराधना की थी तथा **अद्भुत रामायण** (सर्ग १०) मे उस प्रथम मिलन के अन्त मे राम द्वारा हनुमान् का अपना विष्णु रूप दिखलाने का वर्णन किया गया है। **कब रामायण** (४, २, ३८) के अनुसार प्रथम भेट के अवसर पर हनुमान ने अपना शरीर बढाकर राम को अपनी शक्ति का प्रमाण दिया था।

गुणभद्र के **उत्तर पुराण** के अनुसार नारद ने हनुमान् और सुग्रीव को राम के पास भेज दिया, दोनो साथ-साथ उनके पास पहुँचे थे (६४, २८६)।

अन्त मे कुछ वृत्तान्तो का उल्लेख करना है जिनमे हनुमान् के प्रस्थान करने के बाद सुग्रीव से राम की भेट का एक सर्वथा नवीन रूप प्रस्तुत किया गया है। **सेरी-राम** के एक पाठ के अनुसार लक्ष्मण राम के लिए पानी लाये और राम ने पीकर उसे (सुग्रीव के आसुओ से) नमकीन पाया। कारण का पता लगाने पर सुग्रीव से भेट हो जाती है। यही कथा **रामकेर्ति** (सर्ग ५) मे भी मिलती है। सेरीराम के शेलाबेर पाठ के अनुसार राम लक्ष्मण द्वारा लाये हुए पानी को पीने के बाद उसकी गोद मे सिर रखकर चार दिन और रात तक एक पेड के नीचे सोते रहे। सुग्रीव पेड पर से लक्ष्मण का यह भ्रातृ-प्रेम देखकर रोने लगा। सुग्रीव के एक आँसू ने राम की छाती पर गिरकर उन्हे जगाया। राम ने इसे लक्ष्मण का आसू समझकर उनको घर लौटने का आदेश दिया, इस पर लक्ष्मण की प्रार्थना के फलस्वरूप पेड के पत्ते छोटे बन गए और सुग्रीव दिखाई दिया। अनन्तर राम-सुग्रीव की मैत्री का वर्णन किया गया है। **सेरत काण्ड** तथा **हिकायत महाराज रावण** के अनुसार वालि ने सुग्रीव को दूर वन मे फेक दिया था जिससे वह अधमरा होकर एक वृक्ष की शाखाओ पर गिर गया था। राम ने उसी वृक्ष के नीचे विश्राम किया और सुग्रीव के आसू राम पर गिर पडे। इन हिदेशियाई कथाओ का मूलस्रोत भारतीय है क्योकि महेश्वरदास के टीका रामायण मे भी राम-सुग्रीव-भेट के प्रसग मे राम की प्यास का उल्लेख है किन्तु सुग्रीव के आँसूओ के स्थान पर उसकी लार की चरचा है।

ख। वालि-सुग्रीव-चरित

५१३ प्रामाणिक वाल्मीकिकृत आदिरामायण मे वालि-सुग्रीव की **जन्मकथा**

का कोई उल्लेख नही था। प्रचलित वाल्मीकि रामायण के दाक्षिणात्य बालकाण्ड (१७, १०) मे वालि तथा सुग्रीव को क्रमश इन्द्र तथा सूर्य का पुत्र माना गया है। उनकी जन्मकथा दाक्षिणात्य पाठ के एक प्रक्षिप्त सर्ग मे मिलती है, जिसके अनुसार अगस्त्य नारद से सुनी हुई कथा राम को सुनाते है।[1] अन्य पाठो मे यह कथा युद्ध काड (सर्ग ४) मे रखी गई है, शुक उसे रावण को सुनाते है।

दाक्षिणात्य पाठ की कथा इस प्रकार है—"मेरु पवत के शिखर पर योगाभ्यास करते हुए ब्रह्मा की आखो से आसू निकले। ब्रह्मा के हाथ से पोछे जाने पर ये आसू भूमि पर गिरे और उनमे से ऋक्षरजा नामक वानर उत्पन्न हुआ जो पवत पर रहने लगा और प्रति दिन सध्या समय ब्रह्मा के पास आकर उनको फल-फल चढाया करता था। किसी दिन ऋक्षरजा ने मेरु पर्वत के सरोवर मे से पानी पीना चाहा और उसने झुककर जल मे अपना प्रतिबिम्ब देखा। वह उसे अपना शत्रु समझकर सरोवर मे कूद पडा और एक अत्यन्त लावण्यमय नारी के रूप मे उसमे से निकला। इन्द्र तथा सूर्य सयोग से उस समय आ पहुँचे और उसे देखकर दोनो आसक्त हुये। इन्द्र का तेज उसके बालो पर गिरा और उससे बालि उत्पन्न हुआ, सूर्य का तेज उसकी ग्रीवा पर पडा और उससे सुग्रीव उत्पन्न हुआ। इन्द्र ने अपने पुत्र को एक अक्षय सुवर्ण माला दे दी तथा सूर्य ने अपने पुत्र की सेवा मे हनुमान् को नियुक्त किया। अगले दिन सूर्योदय होते ही ऋक्षरजा ने पुन अपना वानर रूप प्राप्त किया और अपने पुत्रो के साथ ब्रह्मा के पास गया। ब्रह्मा ने ऋजरजा के साथ एक देवदूत को विश्वकर्मा-निर्मित किष्किन्धा भेज दिया। वहाँ पहुँचकर देवदूत ने ऋक्षरजा को वानर-राजा के पद पर अभिषिक्त किया।"

अन्य पाठो की कथा अस्पष्ट है, उसमे न तो ऋक्षरजा का नाम आया है और न वालि-सुग्रीव के वानर होने का कारण दिया गया है। किसी दिन प्रजापति की बाई आँख मे एक रजकण पड गया था। उन्होने उसे बाये हाथ मे दूर फेक दिया था और उसमे से एक अत्यन्त सुन्दर स्त्री उत्पन्न हुई। बाद मे सूर्य ने उसका आलिगन किया तथा उसे यह कहकर वरदान दिया कि तुम्हे एक वीर पुत्र उत्पन्न होगा। एक अन्य अवसर पर इन्द्र उसे देखकर आकर्षित हुए और अपने हाथ से उसका स्पर्श करके उसे आशीर्वाद दिया कि तुम से वालि-सुग्रीव नामक दो कामरूपी यमल वानर उत्पन्न होगे जो किष्किन्धा मे राज्य करेगे और उनमे से एक राम के साथ सख्य करेगा।

अध्यात्म रामायण (७, ३, १-२४) तथा **आनन्द रामायण** (१, १३, १४०-

---

१ दे० उत्तरकाण्ड, सर्ग ३७ के बाद प्रथम प्रक्षिप्त सर्ग। प्रचलित रामायण के कुछ अन्य प्रक्षिप्त स्थलो पर ऋणरजा को वालि तथा सुग्रीव का पिता माना गया है। उदाहरणार्थ—३, ७२, २०, ४, ५७, ५, ७, ३६, ३६।

१५२) मे वाल्मीकीय दाक्षिणात्य रामायण के अनुसार वालि-सुग्रीव की जन्म-कथा का वर्णन किया गया है। **भावार्थ रामायण** (७, ३७) मे ऋक्षरजा के स्त्री-रूप का कारण पार्वती का शाप माना गया है। किसी दिन कैलाश के एक सरोवर मे शिवपार्वती की जलक्रीडा के समय वहा कुछ मुनि अचानक आ गये थे, जिससे शिव तथा पार्वती को अन्तर्द्धान हो जाना पडा था। पार्वती ने शाप दिया था कि जो कोई पुरुष इसमे स्नान करेगा वह नारी के रूप मे उसमे से निकलेगा। ऋक्षरजा ने उस शाप से अनभिज्ञ होकर उस सरोवर मे स्नान किया था।

बलरामदास के वृत्तान्त मे कई नये तत्व पाये जाते है। ऋक्षरजा की उत्पत्ति की कथा इस प्रकार है। इन्द्र मदनिका नामक अप्सरा को अपनी सभा मे अचानक हँसने के कारण यह शाप देते है कि वह वानरमुखी बनकर मानसरोवर के निकट पृथ्वी पर निवास करे और कश्यप से पुत्र प्रसव करने के बाद ही मुक्ति प्राप्त करे। अत मदनिका मानसरोवर के निकट निवास करने लगती है। किसी दिन उर्वशी का सौंदर्य देखने के कारण कश्यप का वीर्यपात हो जाता है और वह अपना तेज जल मे फेंक देते है। मदनिका उस जल का पान कर गर्भवती हो जाती है और वह यथासमय एक ऐसे पुत्र को जन्म देती है जिसका शरीर मनुष्य का है किंतु मुख वानर का है। एक शबरी उस शिशु का पालन-पोषण करती है और बाद मे ब्रह्मा उसे ऋक्षनृपति का नाम देकर अरण्य के राजा के पद पर अभिषिक्त करते है।

ऋक्षरजा के स्त्री बन जाने की कथा भावार्थ रामायण के वृत्तान्त से साम्य रखती है। ब्रह्मा ऋक्षनृपति को पार्वती-वन के पश्चिमी भाग मे प्रवेश करने मे मना करते है किंतु ऋक्षनृपति उस निषेध की अवज्ञा करके उस वन मे प्रवेश करता है और नारी के रूप मे बदल जाता है। इसका कारण यह है कि शिव-पार्वती ने किसी दिन उस वन मे रमण किया था किंतु पार्वती को तृप्ति नही मिली थी जिससे उन्होने यह शाप दिया था कि जो कोई पुरुष उस वन मे प्रवेश करेगा वह नारी के रूप मे बदल जाएगा।

वालि तथा सुग्रीव का जन्म वाल्मीकीय कथा के अनुसार है, अतर यह है कि ब्रह्मा यहाँ ऋक्षरजा को परामर्श देते है कि वह अपने पुत्रो को दण्डकारण्य मे छोड दे। बाद मे गौतम की पत्नी अहल्या दोनो को गोतमी नदी के तट पर पाती है, गौतम और अहल्या उन दोनो का धर्मपुत्र के रूप मे पालन करते है (इस प्रसग मे अहल्या-गौतम का उल्लेख अनु० ५१८ की कथा का स्मरण दिलाता है)। जब ये बच्चे तीन वर्ष के हो जाते है किष्किन्धा का राजा खडद मृगया के अवसर पर गौतम से मिलता है और ऋषि को बताता है कि अजना नामक पुत्री को छोडकर मुझे कोई सतान नही है। ऋषि वालि तथा सुग्रीव को राजा के हाथो सौंप देते है। बाद मे खडद वालि को राजा तथा सुग्रीव को युवराज बनाता है।

पाश्चात्य वृत्तान्त नं० १ के अनुसार हनुमान् ने राम को वालि-सुग्रीव की जन्म कथा का निम्नलिखित विकृत रूप सुनाया था—अरुण किसी दिन दो स्त्रियों को सूर्य का रथ हाँकते देखकर हँस पड़ा। इस पर सूर्य ने अरुण से सूर्य-रथ हाँकने का निवेदन किया और अरुण ने इसे स्वीकार किया। अरुण बाद में अप्सराओं का नाच देखने गया और नारी में परिवर्तित हुआ था। इन्द्र ने उससे एक पुत्र उत्पन्न किया और उस पुत्र को प्रतिद्वन्द्वी की आधी शक्ति खींच लेने का वरदान दिया। अरुण पुन पुरुष बनकर अपने पुत्र के साथ सूर्य के पास लौटा। सारा वृत्तान्त सुनकर सूर्य ने उसका स्त्री-रूप देखने की इच्छा प्रकट की तथा अरुण से एक पुत्र उत्पन्न किया। दोनों बालकों को अगस्त्य के हाथों सौंपा गया। बढ़ने पर उन्होंने तपस्या में सलग्न अगस्त्य पर पानी छिड़क दिया और अगस्त्य ने दोनों को वानर बन जाने का शाप दिया।

जैन रामकथाओं में वालि-सुग्रीव की कोई जन्म-कथा नहीं मिलती। **पउमचरिय** (पर्व ६) के अनुसार आदिरजा तथा इन्द्रमाली की तीन सन्तानें थीं—वालि, सुग्रीव तथा श्रीप्रभा। गुणभद्र के **उत्तरपुराण** के अनुसार वालि तथा सुग्रीव किलकिल नामक नगर के राजा बलीन्द्र तथा उनकी पत्नी प्रियगुसुन्दरी के दो पुत्र हैं (दे० ६८, २७१)।

५१४ वालि-सुग्रीव की जन्म-कथा का एक अन्य रूप मिलता है, जिसके अनुसार दोनों गौतम की पत्नी **अहल्या की सतान** माने जाते हैं। **सारलादास महाभारत** के वनपर्व में अहल्या के साथ इन्द्र के दुर्व्यवहार के विषय में निम्नलिखित कथा दी गई है। गौतम स्नान के लिए जाते समय अपनी पत्नी अहल्या का जीव अपने साथ ले जाया करते थे। किसी दिन इन्द्र और सूर्य इस निर्जीव शरीर पर आसक्त हुए। इन्द्र ने पहले उस शरीर में प्रवेश किया जिससे सूर्य उसके साथ सभोग कर सके, बाद में सूर्य ने अहल्या शरीर में प्रवेश किया और इन्द्र ने उसके साथ रमण किया। इस प्रकार अहल्या के दो पुत्र (श्यामशील तथा जवशील) उत्पन्न हुए। अजना ने किसी दिन अपने पिता गौतम से अपने जारज भाइयों का रहस्य खोल दिया। परीक्षा लेने के उद्देश्य से गौतम ने दोनों को जल में फेंक दिया और वे वानर बन गये। गौतम ने दोनों को निस्सन्तान राजा खडगद को प्रदान किया और राजा ने उनका नाम वालि और सुग्रीव रख दिया। अर्जुनदास कृत **रामविभा** में भी माना गया है कि वालि-सुग्रीव अहल्या की जारज सतान हैं (दे० सर्ग ४)। **रगनाथ रामायण** के उत्तरकाड[1] में गौतम-पत्नी अहल्या की चार सन्तानों का उल्लेख है—अजना, गौतम की पुत्री, वाली तथा शतानन्द, इन्द्र के पुत्र और

---

१ यह उत्तरकाड स्वतन्त्र रूप से छपता है। रचयिता के विषय में विवाद है। दे० चा० सूर्यनारायण मूर्ति हिन्दी और तेलुगु के मध्यकालीन राम-साहित्यों का तुलनात्मक अध्ययन, पृ० २१८।

सुग्रीव, सूर्य का पुत्र ।

तोरवे रामायरा (४, २) के अनुसार 'किष्किधा' शब्द कश्यप और कुशस्थली के किष्क नामक पुत्र से सबध रखता हे । किष्क के वश मे ऋक्षरजा उत्पन्न हुआ, उससे वालि तथा सुग्रीव का जन्म हुआ और बाद मे उसने अपनी पत्नी से अजना को भी पैदा किया था ।

सेरीराम की कथा इस प्रकार है । दशरथ के द्वारपाल के पुत्र गौतम अपनी पत्नी देवी इन्द्र के साथ तपश्चर्या करते थे । देवी इन्द्र ने किसी दिन एक देवता के साथ व्यभिचार किया और फलस्वरूप वालि को प्रसव किया । अजना अपनी माता के पाप के विषय मे जानती थी किन्तु एक ऐद्रजालिक मरिण पाकर चुप रही । बाद मे गौतम-पत्नी ने किसी राजकुमार के साथ व्यभिचार कर सुग्रीव को जन्म दिया । गौतम वालि और सुग्रीव दोनो को अपनी सन्तान समझते थे । वालि ने किसी दिन अपनी बहन की मरिण हथियाने का प्रयत्न किया, जिससे अजना ने क्रुद्ध होकर अपनी माता का व्यभिचार प्रकट कर दिया । इस पर गौतम ने अपने पुत्रो की परीक्षा लेने के उद्देश्य से उनको यह कह-कर सरोवर मे फेक दिया—यदि वे जारज है तो वानर बनकर जल से निकले । वालि तथा सुग्रीव वानर के रूप मे सरोवर से निकलकर लगुर नामक स्थान की ओर चले गए, वहाँ वालि राजा तथा सुग्रीव मत्री बन गया । गौतम अपने घर लौटे और अपनी पत्नी का परित्याग कर तथा अपनी पुत्री को शाप देकर स्वर्ग सिधारे (दे० अनु० ६७५) ।

सेरत काड के अनुसार रेसि गुतम की पत्नी देवी रोतह् के दोनो पुत्र सुवालि तथा सुग्रीव वास्तव मे सूर्य की सन्तान है । उनकी बहन देवी अजनी माँ का पाप छिपाने के लिए पुरस्कार के रूप मे ऐद्रजालिक मरिण पाकर स्वर्ण-मुद्राओ की मजूषा भी चाहती है । इस पर मा-बेटी का झगडा हुआ और गुतम ने यह कहकर मजूषा को समुद्र मे फेक दिया कि जो मजूषा निकालने मे समर्थ हो, वही मजूषा का अधिकारी बन जाय । अजना का प्रतिनिधि सुमन्दा तथा उसके भाई समुद्र मे कूदकर मजूषा तो नही ही निकाल पाते प्रत्युत वानरो के रूप मे बदल जाते है । प्रतिकार के उद्देश्य से वे उसी जल से अजनी का मुख धोते है जिससे अजनी को भी वानर-मुख प्राप्त हुआ । गुतम अपनी पत्नी को शिला बन जाने का शाप देकर तप करने चला गया ।[1]

रामकियेन (अध्याय ६) के वृत्तान्त मे गौतम को साकेत का राजा माना गया है । निस्सन्तान होने के कारण वह अपना राज्य छोडकर वन मे तपस्या करने लगा । किसी पक्षी से यह जानकर कि निस्सन्तान होना महापाप है उसने यज्ञ का आयोजन किया, यज्ञ की अग्नि से एक सुन्दर कन्या प्रकट हुई जिसे गौतम ने अपनी पत्नी के रूप

---

१ दे० हि० भू० सरकार, इण्डियन इन्फ्लुएन्सेस, पृ० २०३-२०४ ।

मे स्वीकार किया। कन्या का नाम कल-अचना था, उसने एक पुत्री उत्पन्न की जिसका नाम गोतम ने स्वाहा रखा। बाद मे गौतम की पत्नी के काकाशबीरी तथा सुग्रीव नामक दो पुत्र हुए जिनके पिता क्रमश इन्द्र और सूर्य थे। गौतम उनको अपनी ही सन्तान समभते थे। किसी दिन गौतम काकाश को कन्धे पर रखकर, सुग्रीव को गोद मे लिए तथा स्वाहा का हाथ पकडकर स्नान करने जा रहे थे। स्वाहा को बहुत बुरा लगा और उसने कहा—आप अपनी सन्तान को पैदल चलने देते है किन्तु दूसरो की सन्तान सिर पर चढाते है। गौतम ने इसका अर्थ पूछा और स्वाहा ने अपनी माता के व्यभिचार का रहस्य प्रकट कर दिया। गौतम को विश्वास नही हुआ और उन्होने तीनो को यह कहकर नदी मे फेक दिया—मेरी सन्तान मेरे पास लौटे, दूसरो की सन्तान वानर बनकर वन मे प्रवेश करे। इसका परिणाम यह हुआ कि काकाश तथा सुग्रीव वानर बनकर वन मे चले गए। बाद मे इन्द्र और सूर्य ने अपनी सन्तान के लिए खिदखिन नगर का निर्माण किया तथा मत्र द्वारा सब वानरो को बुलाकर काकाश को उनका राजा बना दिया।

रामजातक तथा **पालकपालाम** मे वही कथा मिलती है किन्तु स्वाहा का नाम फायेगसी तथा काकाश का नाम वालि (अथवा फालिकहन) माना गया है।

५१५ वाल्मीकि रामायण मे **वालि-सुग्रीव की शत्रुता** के कारण के विषय मे निम्नलिखित कथा मिलती है। वालि को अपने पिता[1] की मृत्यु के बाद राज्य मिला था और सुग्रीव उसके अधीन रहता था। दुदुभि के ज्येष्ठ पुत्र मायावी[2] ने किसी दिन वालि को ललकारा। वालि उसे मारने निकला और सुग्रीव उसके साथ निकल पडा। मायावी ने वालि को आते देखकर एक बिल मे प्रवेश किया। वालि सुग्रीव को बिल के द्वार पर खडा करके अन्दर चला गया। एक वर्ष बीत जाने पर सुग्रीव ने बिल मे से फेन के साथ रक्त निकलते देखकर तथा असुरो का गर्जन सुनकर समझ लिया कि वालि मारा गया है। अत उसने पत्थर से बिल का द्वार बन्द किया और वह अपने भाई की उदक-क्रिया सम्पन्न करके किष्किधा लौटा। मन्त्रियो ने सुग्रीव को राजा के रूप मे अभिषिक्त किया और वह न्यायपूर्वक शासन करने लगा। वालि अपने शत्रु को मार डालने के बाद लौटा, उसने सुग्रीव की अनुनय-विनय का तिरस्कार किया और उसकी पत्नी रुमा को ग्रहण कर सुग्रीव को निर्वासित किया। सुग्रीव सारी पृथ्वी पर भटककर अन्त मे वालि के लिये अगम्य ऋष्यमूक पर्वत पर रहने लगा (दे० सर्ग

---

१ **राज्य प्रशासतस्तस्य पितृपैतामह महत्** (९, ३), इस वाक्याश के रचनाकाल मे उत्तरकाड की जन्मकथा प्रचलित नही थी।

२ उत्तरकाड (सर्ग १२) मे मायावी तथा दुदुभि दोनो को मय-हेमा की सतान माना गया है।

९-१०)। दिग्वर्णन के बाद सुग्रीव ने राम को पुन वही कथा सुनाई। इस द्वितीय वृत्तान्त के अनुसार असुर का नाम दुदुभि ही था, सुग्रीव के राजा बनने पर तारा तथा रुमा दोनो उसकी पत्निया बन गई थी।[1] वालि ने सुग्रीव का सर्वत्र पीछा किया तब हनुमान ने सुग्रीव को मतग के शाप का स्मरण दिलाया जिससे सुग्रीव ऋष्यमूक पर रहने लगा (दे० सर्ग ४६)। **अध्यात्म रामायण** मे मायावी को मय दानव का पुत्र माना गया है (४, १, ४७) और **आनन्द रामायण** मे मय दानव के पुत्र दुर्मद की चर्चा है (दे० १, ८, १६)। **सेरीराम** के वृत्तान्त के अनुसार युद्ध के पूर्व ही गुफा को रगभूमि के रूप मे निश्चित किया गया था। वालि ने सुग्रीव से कहा—यदि सफेद रक्त गुफा मे से निकला तो मुझे मृत समझो, यदि लाल रक्त निकला तो शत्रु का मरण निश्चित है। वास्तव मे दोनो[2] निकले और सुग्रीव वालि को मरा समझकर लौटा। किष्किन्धा पहुँचकर सुग्रीव ने वालि की पत्नी के सामने विवाह का प्रस्ताव रखा और उसने सुग्रीव से एक सप्ताह की अवधि माँग ली। इस अवधि मे वालि ने लौटकर सुग्रीव को दूर एक वन मे फेक दिया जहाँ सुग्रीव तपस्वी के रूप मे रहने लगा। **पद्मपुराण** (४, ११२ १६३) के अनुसार वालि ने ६०,००० वर्ष पूर्व दशरथ के अभिषेक के दिन ही सुग्रीव को निर्वासित किया था।

गुणभद्र के **उत्तर पुराण** (दे० ६८, २७१-२७५) के अनुसार वालि के पिता ने उसे राजा तथा सुग्रीव को युवराज बनाया था किन्तु वालि ने लोभवश सुग्रीव का निर्वासित किया था। **पउमचरिय** मे कथा इस प्रकार है। आदित्यरजा ने अपने पुत्र वालि को राजा तथा सुग्रीव को युवराज नियुक्त कर दीक्षा ग्रहण की थी। बाद मे राम के आगमन के पूर्व ही वालि को वैराग्य हुआ और उसने अपना राज्य सुग्रीव को सौपा था (पर्व ९)। सुग्रीव ने तारा के साथ विवाह किया और उससे अगदभट तथा जयानन्द दो पुत्रो को उत्पन्न किया। साहसगति नामक विद्याधर ने भी तारा

१ पद्मपुराण (४, ११२, १६१), भावार्थ रामायण (४, अध्याय ४) आदि रचनाओ के अनुसार भी सुग्रीव ने वालि के लौटने के पूर्व तारा को पत्नी-स्वरूप अपना लिया था।

२ यह वाल्मीकि रामायण के अनुसार ही है—**सफेन रुधिर दृष्ट्वा** (९, १७)। सेरीराम मे किसी असुर का उल्लेख नही है, वालि का प्रतिद्वन्द्वी वास्तव मे महिष ही माना गया है। वह महिष अपने जनक का वध करके झुण्ड का स्वामी बन गया। वह दीमको की बाबियाँ नष्ट किया करता था, इसलिए दीमको ने उसे वालि से युद्ध करने को प्रेरित किया। रामकेर्त्ति (सर्ग ४) मे काले तथा सफेद रक्त का उल्लेख है।

से विवाह करना चाहा था किन्तु उसका प्रस्ताव ठुकरा दिया गया था। साहसगति रूप-परिवतनकारी विद्या सिद्ध करने के उद्देश्य मे हिमाचल पर साधना करने लगा। बाद मे साहसगति ने सुग्रीव का रूप धारण कर उसकी पत्नी और उसका राज्य छीन लिया था।

महाभारत के रामोपाख्यान मे रुमा का उल्लेख नही मिलता। **नृसिह पुराण** (५०, २१-२७) तथा **महानाटक** (५, ५१) के अनुसार तारा सुग्रीव की ही पत्नी थी जिसे वालि ने सुग्रीव से छीन लिया था। **रगनाथ रामायण** (४, ४) मे तारा के विषय मे माना गया है कि समुद्रमथन के समय वालि और सुग्रीव ने देवताओ की सहायता की थी। लक्ष्मी और चद्रमा के पश्चात् देवकामिनियो की उत्पत्ति हुई। देवताओ ने उन सुन्दरियो मे से तारा को वालि-सुग्रीव को दिया था और वे अपनी राजधानी लौटकर उसके साथ रहने लगे। इसके कुछ दिनो के बाद सुग्रीव ने सुषेण[1] की पुत्री रुमा के साथ विवाह किया। **रामकियेन** (अध्याय ६) के अनुसार वालि और सुग्रीव ने ईश्वर के लिए सुमेरु पर्वत को पूर्ववत् सीधा कर दिया। पुरस्कार स्वरूप वालि को एक त्रिशूल और सुग्रीव को तारा मिल गई किन्तु वालि ने तारा को चुराकर उसके साथ विवाह किया।

वाल्मीकीय किष्किन्धाकाण्ड के अनुसार सुग्रीव ने वालि की वीरता का वर्णन करते हुए उसके दो कार्यो का उल्लेख किया है (दे० अनु० ५१६)। परवर्ती साहित्य मे **रावण की पराजय** वालि का सबसे महान् कार्य माना गया है। विदेशी रामकथाओ मे उस पराजय को एक नया रूप दिया गया है जिसके अनुसार अगद को मदोदरी तथा वालि की सन्तान माना गया है तथा उनके एक और पुत्र अनील (अनूल) की भी चर्चा है (दे० अनु० ६५५)। **सिंहली रामकथा** मे वालि हनुमान् का स्थान लेकर लकादहन के पश्चात् सीता को राम के पास ले आता है। इस कथा के अनुसार वालि को विष्णु से तीन वरदान मिले थे—समुद्र पर चलने की शक्ति, अग्नि से सुरक्षा, बाण द्वारा अवध्यता।

पउमचरिय (पर्व १०३, १२५-३४) मे वालि के पूर्वजन्मो की कथा भी दी गई है। इसके अनुसार वह क्रमश मृग, मघदत्त, राजकुमार सुप्रभ तथा वालि के रूप मे प्रकट हुआ था।

ग। राम की बलपरीक्षा

५१६ वाल्मीकि रामायण के अनुसार ऋष्यमूक पर राम-लक्ष्मण के स्वागत के पश्चात् सुग्रीव और राम ने अग्नि की प्रदक्षिणा करके सख्य कर लिया। राम ने वालि

---

१ वाल्मीकि रामायण मे सुषेण को तारा का पिता माना गया (दे० ४, २२, १३)। सुषेण के विषय मे आगे अनु० ५८६ देख ले। कम्बरामायण (४,३, ३८ और ४, ७, १८) मे माना गया है कि वालि ने अकेले ही समुद्र का मथन किया था।

इसपर राम ने अपने पादागुष्ठ से दुदुभि के **अस्थि-ककाल** को दश योजन की दूरी तक फेक दिया किन्तु सुग्रीव का सन्देह दूर नही हुआ (सर्ग ११)। तब राम ने **सात ताल** तरुओ का एक ही वाण से भेदन किया, रामवाण पर्वत तथा सप्तभूमि पारकर अपने आप से उनके तूणीर मे आ गया—**भित्वा तालान्गिरिप्रस्थ सप्तभूमि विवेश ह॰ पुनस्तूण तमेव प्रविवेश ह** (१२, ३-४)। यह देखकर सुग्रीव वालि को चुनौती देने को तैयार हुआ।[1]

५१७ सभव है कि आदि रामायण मे राम की बल-परीक्षा विषयक सामग्री नही मिलती थी। महाभारत के रामोपाख्यान, गुणभद्रकृत उत्तर पुराण और रामकियेन मे राम के इन दोनो कृत्यो का कोई उल्लेख नही किया गया है। कुछ अन्य रचनाओ मे केवल वृक्षो के भेदन का प्रसग उल्लिखित है, उदाहरणार्थ—नृसिंह पुराण (अध्याय ५०), भट्टिकाव्य (सर्ग ६, ११६), रामायण ककविन (सर्ग ६), तत्त्वसग्रह रामायण, पाश्चात्य वृत्तान्त न० १ और १३। शेष रामकथाओ मे इन दोनो कृत्यो का प्राय वर्णन किया गया है।

—**महावीरचरित** (७, १६), **अनर्घराघव** (अक ५) तथा **कम्ब रामायण** (४, ५) के अनुसार लक्ष्मण ने दुदुभि के अस्थिककाल को फेक दिया था। **रगनाथ रामायण** मे लिखा है कि दुदुभि-वालि का द्वन्द्व युद्ध १०० वर्ष तक चलता रहा (४, ४)। **सेरीराम** मे महिष के अतिरिक्त राक्षस कर्तीविहार (कार्तवीर्य) की चर्चा है, जिसे वालि ने मार डाला था, राम ने अपने पादागुष्ठ से उसका अस्थिककाल समुद्र मे फेक दिया।

—ताल वृक्षो के विषय मे एक भविष्यवाणी का प्राचीन काल से उल्लेख मिलता है। **नृसिह पुराण** के अनुनार पुराणज्ञो ने कहा था कि जो इन सात ताल वृक्षो का एक साथ भेदन करेगा वह वालि का वध करेगा (५०, २२)। **रगनाथ रामायण** (४, ४), **आनन्द रामायण** और **पश्चात्य वृत्तान्त** न० १३ मे भी इस भविष्यवाणी की चर्चा है।

रगनाथ रामायण मे इस पर बल दिया गया है कि वे सात ताल टेढे-मेढे ढग से खडे थे। **महानाटक** (५, ४४), आनन्द रामायण, उपेन्द्र भजकृत वैदेहीश विलास, अग्निवेश रामायण (छन्द २६), पाश्चात्य वृत्तान्त न० १, सेरीराम, रामकेर्ति आदि रचनाओ के अनुसार वे सात ताल एक सर्प की पीठ पर चक्राकार स्थित थे। **आनन्द रामायण** (१, ८, ३५-४६) की तत्सबधी कथा इस प्रकार है। वालि ने किसी गुफा मे ताल वृक्ष के फल रखे थे किन्तु कोई उनमे से सात फल ले गया। वालि ने गुफा मे एक सर्प

---

१ दे० सर्ग १२, १-१३। लका के युद्ध मे सुग्रीव का भाग अनु० ५८४ मे वर्णित है। उत्तरकाड (सर्ग १०८) के अनुसार सुग्रीव ने समुद्र को राज्य देकर राम के साथ स्वर्गगमन किया।

देखा और उसे चोर समझकर शाप दिया कि तेरे शरीर पर सात ताल वृक्ष उगेंगे। सर्प ने यह प्रतिशाप दिया—जो पुरुष उन वृक्षो को काटेगा, वह तुझे मार डालेगा। राम ने सर्प के शरीर पर चक्राकार स्थित उन वृक्षो को देखा, तब उन्होने शेषांश लक्ष्मण[1] के पॉव को अपने पॉव से दबाकर उस सर्प को सीधा किया और एक बाण से सात वृक्षो को काट डाला। यह देखते हुए भी सुग्रीव का सन्देह दूर नही हुआ और उसने राम से वालि की माला की कथा सुनाई। कश्यप ने कठोर तप के बल पर शिव से वह माला प्राप्त की थी और बाद मे उसे अपने पुत्र इन्द्र को दिया। इन्द्र ने किसी समय वालि को वह माला प्रदान की थी, इस माला की विशेषता[2] यह है कि उसे देखकर शत्रुगण युद्ध मे बलहीन हो जाते हे। वालि उसे सदा ही पहने रहता हे। इस पर राम ने जिस सॉप को सात वृक्ष काट कर शापमुक्त किया उसे आदेश दिया कि वह किष्किन्धा जाकर रात्रि मे वालि के सोते समय उस माला को ले जाय। सॉप ने उसे चुराकर इन्द्र को दे दिया। इसके बाद ही सुग्रीव वालि से द्वन्द्वयुद्ध करने के लिए सहमत हुआ।

तत्त्वसंग्रहरामायण के अनुसार राम ने वृक्ष-भेदन के पश्चात् सुग्रीव को अपना विश्वरूप दिखलाया और उसे ज्ञानमुद्रा तथा रामसहस्रनामस्तोत्र भी सिखलाया (दे० ४,३-४)।

—**सेरीराम** के अनुसार राम ने सर्वप्रथम एक ही बाण से एक समस्त वन नष्ट किया, उस समय राम-धनुष की टंकार सुनकर सुग्रीव और लक्ष्मण दोनो मूर्च्छित होकर भूमि पर गिर पडे, बाद मे राम ने वृक्ष-भेदन तथा अस्थिककाल-निक्षेप द्वारा भी अपनी

---

१ महानाटक के अनुसार लक्ष्मण ने अपने पैर से सर्प दबाया था। सेरनकाड की कथा अनु० ३९९ मे देख ले। अन्य वृत्तान्तो मे माना गया है कि राम ने सर्प को दबाकर उसे सीधा होने के लिये बाध्य किया था, दे० पाश्चात्य वृत्तान्त १, सेरीराम, रामकेर्त्ति।

२ वाल्मीकि रामायण मे भी इन्द्र की माला का अनेक स्थलो पर उल्लेख हुआ है किन्तु इसकी इस विशेषता के विषय मे कुछ नही कहा गया। तारा की एक उक्ति के अनुसार इन्द्र ने युद्ध मे वालि से सन्तुष्ट होकर उसे यह माला दी थी—**या दत्ता देवराजेन तव तुष्टेन संयुगे** (४, २३, २८)। उत्तरकाड मे माना गया है कि इन्द्र ने उसे वालि को जन्म के बाद ही दिया था (दे० अनु० ५१३)। रंगनाथ रामायण (४, ९) के अनुसार वालि को यह माला मायावी से मिली थी। परवर्ती रामकथाओ मे माना गया है कि माला के कारण राम ने वालि को छिपकर मारा था (दे० आगे अनु० ५२२)। **भावार्थ रामायण** (४, ४) के अनुसार कश्यप ने वालि को यह माला प्रदान की थी।

शक्ति का प्रमाण दिया ।[1]

—**पउमचरिय**(पर्व ४८) मे सुग्रीव आदि वानर रावण से युद्ध करने से बहुत डरते है और लक्ष्मण उनको विश्वास दिलाने के उद्देश्य से कोटिशिला उठाते है । इस कोटिशिला के विषय मे भी एक भविष्यवाणी प्रसिद्ध थी कि जो उसे उठा सकेगा उससे रावण की मृत्यु होगी ।

घ । वालिवध

५१८ यह असभव नही कहा जा सकता हैं कि आदि रामायण मे राम ने छल से नही, बल्कि सग्राम मे वालि को मारा था । बडौदा के प्रामाणिक सस्करण के कथा-बोज मे तत्सम्बन्धी कथन इस प्रकार हे, "सुग्रीव राम के साथ वालि की गुफा के पास गया, वालि सुग्रीव का गर्जन सुनकर निकला । राम ने सग्राम मे वालि को मारा और सुग्रीव को राज्य दिया"—

किष्किन्धा रामसहितो जगाम च गुहा तदा ॥५३॥
ततोऽगर्जद्धरिवर सुग्रीवो हेमपिगल ।
तेन नादेन महता निर्जगाम हरीश्वर ॥५४॥
तत सुग्रीववचनाद्धत्वा वालिनमाहवे ।
सुग्रीवमेव तद्राज्ये राघव प्रत्यपादयत् ॥५५॥ ।(बालकाड, सर्ग १)

इस सग्राम के विषय मे प्रचलित रामायण मे और सामग्री विद्यमान है । वालि-वध के बाद तारा वानर-सेना को डाँटती है किन्तु वानर उत्तर मे कहते हैं, "आपका पुत्र जीवित हैं, उसी की रक्षा कीजिए । यमराज ने राम के रूप मे आकर वालि का वध किया । उसने वालि द्वारा फेके हुए वृक्ष और पत्थर विदीर्ण किये और वालि को मारा है । वालि के मरने के बाद समस्त वानर-सेना भाग गयी"—

जीवपुत्रो निवर्तस्व पुत्र रक्षस्व चागदम् ।
अन्तको रामरूपेण हत्वा नयति वालिनम् ॥११॥
क्षिप्तान् वृक्षान् समाविध्य विपुलाश्च तथा शिला ।
वाली वज्रसमैर्बाणैर्वज्रेणेव निपातित ॥१२॥
अभिभूतमिद सर्वं विद्रुत वानर बलम् ।
अस्मिन् प्लवगशार्दूले हते शक्रसमप्रभे ॥१३॥ (दा०पाठ, ४, सर्ग १६)

यह प्रसग गौडीय (४, १८, १०-१२) तथा पश्चिमोत्तरीय (४, १५, ११-१४)

---

१ हिन्देशिया की कथाओ मे विवाह के अवसर पर भी बल-परीक्षा के प्रसग मे वृक्ष-भेदन की कथा मिलती है (दे० ऊपर अनु० ३६६) ।

पाठो मे भी मिलता है। इसके अतिरिक्त हनुमान दो अवसरो पर कहता है कि राम ने युद्ध मे वालि को मारा था प्रथम बार सीता से—**ततो निहत्य तरसा रामो वालिन-माहवे** (५, ३५, ५०) और दूसरी बार भरत से—**वालिन समरे हत्वा महाकाय महाबलम्** (६, १२६, ३८)। महाभारत के रामोपाख्यान मे भी राम सुग्रीव से मैत्री करने के पश्चात् प्रतिज्ञा करते है कि मै वालि को समर मे मारूँगा—**प्रतिजज्ञे च काकुत्स्थ समरे वालिनो वधम्** (पूना सस्करण, वनपर्व २६४, १४)।

प्रचलित वाल्मीकि रामायण के तीनो पाठो मे वालि-सुग्रीव के दो द्वन्द्व युद्धो का वर्णन किया गया है। प्रथम द्वन्द्व युद्ध के समय राम दोनो भाइयो को पहचानने मे असमर्थ थे। जिससे पराजित सुग्रीव को ऋष्यमूक पर लौटना पडा। इसके बाद सुग्रीव को गजपुष्प की माला पहना दी गयी (सर्ग १२, १४-४२)।

द्वितीय द्वन्द्व युद्ध का अपेक्षाकृत अधिक विस्तार के साथ वर्णन किया गया है। सुग्रीव का आह्वान सुनकर वालि अपनी पत्नी तारा का अनुरोध ठुकराकर पुन अपने महल से निकला, सुग्रीव से द्वन्द्व-युद्ध करते समय राम-बाण द्वारा छाती मे मारा गया और मूर्च्छित होकर भूमि पर गिर पडा (सर्ग १३-१६)।

—प्रचलित वाल्मीकि रामायण मे इसके अनन्तर दो प्रक्षिप्त सर्ग मिलते हैं। प्रथम सर्ग मे वालि राम को उनके अक्षत्रिय-व्यवहार के कारण दोष देता है—**अधर्मेण त्वयाऽह निहतो रणे,** मैने आपके साथ कोई अन्याय नही किया था और आपने अदृश्य रहकर मुझे दूसरे के साथ युद्ध करते समय मारा है। इस पर राम अपनी सफाई मे दो तर्क उपस्थित करते है—(१) मैने राजा भरत का प्रतिनिधि होकर तुमको अनुज की भार्या के अपहरण के कारण समुचित दन्ड दिया है, जैसा कि मैने सुग्रीव को प्रतिज्ञा दी थी, (२) धर्मपडित राजर्षि तक मृगया खेलते है, तुम वानर मात्र हो, अत किसी भी प्रकार से तुम्हारा वध करने का मुझे अधिकार है।

वालि यह तर्क स्वीकार कर राम से क्षमा माँगता है तथा अगद, सुग्रीव और तारा की रक्षा करने का राम से निवेदन करता है (सर्ग १७-१८)।

—तारा का आगमन, उसका विलाप तथा हनुमान् द्वारा उसको सात्वना तीन सर्गो मे वर्णित है।[1] इसके अनन्तर वालि सुग्रीव को सबोधित कर अपना राज्य सौप देता है और उससे अगद को पुत्र के रूप मे ग्रहण करने का निवेदन करता है, तारा के परामर्श के अनुसार चलने तथा राम की सेवा करने का उपदेश देता है और अन्त मे

---

१ दे० सर्ग १९-२१। सर्ग २१ की सामग्री का पश्चिमोत्तरीय पाठ मे अभाव है। गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठो मे तारा के विलाप के अन्तर्गत राम के प्रति उसके शाप का उल्लेख है (दे० अनु० ७२६)।

उसे अपनी माला प्रदान करना है। तब वह अगद को सुग्रीव का आज्ञापालन करने का आदेश देकर अपने प्राण छोड देता है (सर्ग २२)। तारा-विलाप, सुग्रीव-पश्चात्ताप तथा वालि की अन्त्येष्टि के बाद किष्किन्धा मे सुग्रीव के राजा तथा अगद के युवराज बनने का वर्णन किया गया है। राम तथा लक्ष्मण वन मे ही रह जाते है (दे० सर्ग २३-२६)।

५१६ महाभारत के रामोपाख्यान मे वालि की पत्नी 'सर्वभूतरुतज्ञा' (समस्त प्राणियो की बोली समझनेवाली) है और वह वालि को बताती है कि सुग्रीव को राम का सहारा मिला है और उसे बाहर निकलने से रोकना चाहती है। वालि को शका हो जाती है कि तारा सभवत "सुग्रीवगतमनसा" है और वह उसकी हित की बाते पर ध्यान न देकर गुफा से निकलता है (पूना सस्करण ३, २६४, १६-२६)। इस मे तथा नृसिह पुराण की रामकथा मे सुग्रीव-वालि के केवल **एक ही द्वन्द्व-युद्ध** का उल्लेख किया गया है।

—दक्षिण भारत के एक वृत्तान्त के अनुसार वालि ने प्रथम द्वन्द्व-युद्ध के बाद सुग्रीव की छाती पर एक पवत रख दिया था जिसे राम ने उठा लिया (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० १)।

तिब्बती और खोतानी रामायणो मे द्वितीय द्वन्द्व-युद्ध के लिए सुग्रीव की पूछ मे एक दर्पण बाँधा जाता है। रामकियेन मे राम अपने वस्त्र का किनारा सुग्रीव की कमर मे लपेटते है। सेरीराम के अनुसार सुग्रीव को पहचानने के उद्देश्य से उसकी कमर मे एक जड लपेटी गई और उसकी पूछ के नीचे लाल रग चढाया गया था।

—सेरीराम, रामकेर्ति तथा रामकियेन मे यह माना गया है कि वालि ने आहत होने के पूर्व ही **राम-बाण** हाथ से रोक दिया था। सेरीराम के अनुसार वालि ने अपनी निर्दोषता के प्रमाण देने के बाद राम को उनका बाण लौटाना इसलिये अस्वीकार कर दिया कि विष्णु का बाण अमोघ है। तब उसने बाण छोड दिया और वह ऊपर उठकर वालि की छाती मे घुस गया। आहत वालि ने राम का हाथ पकडकर उनको अपनी पत्नी तथा अपने दो पुत्रो को सौप दिया और हनुमान् को राम-सेवा के लिये उपयुक्त बताया। अनन्तर उसने राम का हाथ छोड दिया और चल बसा। राम किष्किन्धा जाकर वहाँ राजा के रूप मे शासन करने लगे। रामकेर्ति (सर्ग ५) मे राम ने आहत वालि को जीवित रखना चाहा किन्तु वालि ने अस्वीकार किया क्योकि पराजय तथा क्षतचिह्न के कारण अपयश होगा। उसने रामबाण छोड दिया और उस बाण से छेदित होकर वह मर गया।

रामकियेन (अध्याय २१) मे भी वालि रामबाण हाथ से सँभाल कर राम की भर्त्सना करता है जिसपर राम अपना नारायण रूप दिखलाकर वालि को उसके पापो का स्मरण दिलाते है। वालि अगद-सुग्रीव-हनुमान् को राम की रक्षा मे छोड कर मरने के लिए तैयार हो जाता है। इसपर राम वालि का जीवन बचाने के विचार से उससे

रक्त का अर्द्धविन्दुमात्र माँगते है और यह आश्वासन देते है कि क्षतचिह्न बाल के सप्तम अश से भी कम चौडा होगा। वालि इस प्रस्ताव को अपनी मर्यादा के विरुद्ध समझकर राम-बाण अपने हृदय मे घुसा कर आत्महत्या कर लेता है।[1] उपर्युक्त कथाओ का आधार भारतीय प्रतीत होता है। **पदमपुराण** (४, ११२, १६७) मे इसका उल्लेख किया गया है कि मरने के पूव वालि ने राम को उनका बाण लौटाया था। **कम्ब रामायण** के वालिवधपटल के अनुसार वालि ने आहत होने के बाद रामबाण को अपने शरीर से बाहर निकलने के पूर्व ही अपने बलिष्ठ हाथ से पकड लिया था। बाद मे उसके हाथ शिथिल पडे, रामबाण वालि का शरीर भेदित कर और समुद्र जल मे धुलकर राम के तूणीर मे जा पहुँचा।

५२० **अभिषेकनाटक** मे वालि राम से कहता हे कि म आपसे दण्डित हो कर निष्पाप हो गया हूँ—**भवता दण्डितत्वाद विगतपापोऽह ननु** (१, २२) और इसके बाद यमराज द्वारा भेजा हुआ विमान उसे ले जाता हे—**एष सहस्रहसप्रयुक्तो वीरवाही विमान कालेन प्रेषितो मा नेतुमागत** (१, २७ के बाद)। अधिकाश अर्वाचीन राम कथाओ मे वालि की **मुक्ति-प्राप्ति** का वर्णन किया गया हे। वह प्राय नारायण के रूप मे राम की स्तुति करने के पश्चात् स्वर्ग की ओर प्रस्थान करता है, दे० अध्या म रामायण (४, २), पद्मपुराण (४, ११२, १६६-१६६), आनन्द रामायण (१, ८, ६३), कम्ब रामायण, रगनाथ रामायण (४, ६), तोरवे रामायण (४, ४), बलरामदास रामायण, रामचरितमानस (४, १०-११), पाश्चात्य वृत्तान्त न० १ और १३, राम-केर्ति। **सेरीराम** के अनुसार उसके शरीर से एक ज्योति निकलकर आकाश मे विलीन हो गई थी। **रामकियेन** (अध्याय ३३) मे माना गया है कि वालि देवता बन गया और उसी रूप मे उसने रावण का यज्ञ नष्ट किया था। **तिब्बती रामायण** के अनुसार राम ने ऋषियो से यह वर प्राप्त किया था कि उनके हाथ से मारा गया मनुष्य स्वर्ग मे देवता बन जाएगा और इसीलिए वालि भी देवता बन गया।

—कुछ रामकथाओ मे वालि के **अगले जन्म** के विषय मे माना गया हे कि द्वापर युग के अन्त मे वालि **भील** के रूप मे प्रकट होकर विष्णु के अन्य अवतार कृष्ण का वध करेगा। यह कथा महाभारत के वृत्तान्त पर आधारित है। मौसल पर्व (अध्याय ५) मे इसका वर्णन मिलता है कि जरा नामक व्याध ने कृष्ण को सुप्त मृग समझकर उन

१ रामचरितमानस के अनुसार भी राम ने वालि को बचाने का प्रस्ताव किया था किन्तु वालि ने राम के दर्शन पाकर मरना ही श्रेयस्कर समझा। पाश्चात्य वृत्तान्त न० १३ मे भी लिखा है कि राम ने उसी शर्त पर वालि को जीवित रखना चाहा था कि वह सुग्रीव को पत्नी और राज्य लौटा दे। वालि ने विष्णु के हाथ से मरकर स्वर्गप्राप्ति को ही चुन लिया था।

पर वाण चलाया था। **महानाटक** मे इस व्याध तथा वालि की अभिन्नता का प्राचीनतम उल्लेख मिलता है (५, ५७, १४, ७५)। **आनन्द रामायण** (१, ८, ६६-६८) के अनुसार राम ने आहत वालि से कहा था कि तुम द्वापर के अन्त मे भील होकर पूर्व-वैर के कारण वाण से मेरे पैर को छेदोगे और इसके बाद ही मेरे हाथ से मरने के फल-स्वरूप मुक्ति प्राप्त करोगे। उत्तर भारत के एक वृत्तान्त (पाश्चात्य वृ० न० १३, पृ० ३४२) मे भी इसका उल्लेख किया गया है। कृत्तिवास ने इस प्रसग को एक नया रूप दिया है। वालि के लिए विलाप करते हुए तारा ने राम को शाप दिया था कि "जन्मान्तर मे वालि तुमको मारेगा" (४, १३)।

५२१ वालि-वध के कारण राम के प्रति **अगद-वैर** का कई रामकथाओ मे वर्णन किया गया है। **वाल्मीकि रामायण** मे अगद बारबार सुग्रीव की कठोरता का उल्लेख करता है तथा इस प्रसग मे राम का भी नाम लेता है—**भेतव्य तस्य सतत रामस्य च महात्मन** (४, ४६, ६), **इहास्ति नो नैव भय पुरन्दराग्न राघवाद वानर-राजतोऽपि वा** (४, ५३, २६)। परवर्ती साहित्य मे अगद के राम-वैर को सक्रिय रूप दिया गया है। अगद ने दूतकार्य के लिये जाते समय राम के प्रति वैर तथा उनका वध करने की अभिलाषा प्रकट की थी, इसका महानाटक मे स्पष्ट उल्लेख है (दे० अक ८, ३), इसके अतिरिक्त युद्ध के पश्चात् अयोध्या मे पहुँचकर अगद ने राम को युद्ध के लिए ललकारा था किन्तु एक आकाशवाणी से यह जान कर वह शान्त हुआ कि वालि-वध का प्रतिकार मथुरावतार (अर्थात् कृष्णावतार) के समय वालि-रूपी भील द्वारा ही होने वाला है (अक १४, ७२-७६)। **हिकायत महाराज रावण** के अनुसार अगद ने राम को द्वन्द्व युद्ध मे हरा दिया, तब राम ने विभीषण को वालि की कब्र पर भेज दिया और विभीषण वालि को जिलाकर उसे राम के पास लाया। अपने पिता को देखकर अगद शान्त हुआ, वालि अगद को राजा बनाने का आदेश देकर अतर्द्धान हुआ। इस प्रकार अगद ही वानरो का राजा बन गया।

सारलादास के महाभारत (विराट पर्व, पृ० २३) मे यह माना गया है कि अगद ही ने भील के रूप मे अपने पिता वालि के वध का प्रतिकार किया था। **रामचन्द्रिका** (प्रकाश २६ और ३८) मे अगद के वैर तथा उसके गर्वनिवारण का वर्णन किया गया है।[1]

---

१ अगद के विषय मे अनु० ५८५ भी देख ले। विदेशी रामकथाओ मे अगद को वालि और मन्दोदरी का पुत्र माना गया है (दे० अनु० ६५५)। रामजातक मे अगद के पिता के रूप मे राम का उल्लेख है (दे० अनु० ३२७)।

५२२ वालिवध के दोष से राम को मुक्त करने का प्राचीनकाल से प्रयास किया गया है। वाल्मीकि रामायण के तत्सबधी प्रक्षिप्त सर्गो का सार ऊपर दिया गया है (दे० अनु० ५१८)। **कम्ब रामायण** के अनुसार लक्ष्मण ने वालि को यह तर्क दिया था—"राम ने सुग्रीव को शरणागत के रूप मे स्वीकार किया था और वचन भी दिया कि वह तुम्हारा वध करेगे। यदि वह सामने आते तो तुम भी उनके पाव पकडकर शरण की प्राथना करते। मेरे भाई का व्रत है कि वह शरणार्थियो को अभयदान दे, अत सुग्रीव को दिए हुए वचन की रक्षा के लिए वह छिपकर तुम पर तीर चलाने के लिए विवश हुए।" **तत्व सग्रह रामायण**(४, ५) मे शिव भी पार्वती के सामने यह तर्क प्रस्तुत करते है।

—**आनन्दरामायण** के अनुसार वालि की **माला** को देखकर शत्रु बलहीन बन जाते थे और इसीलिए राम ने सर्प को माला चुराने का आदेश दिया था (दे० अनु० ५१७)। परवर्ती साहित्य मे माना गया है कि राम ने माला के कारण वालि को छिपकर मारा था।[1] वाल्मीकि रामायण के अनुसार आहत वालि नही मर सकता था जब तक वह उस माला को पहनता रहा (४, १७, ५), वालि ने उसे सुग्रीव को अर्पित करत हुए कहा था कि इसमे श्री का निवास है। रामायण के टीकाकार **गोविन्दराज** ने लिखा है कि यह माला सामने से युद्ध के लिए आये हुए प्रतिद्वन्दी (**य पुरो युद्धायागच्छति**) का बल खीचकर उसे माला धारण करने वाले को प्रदान करती है (४, ११, ३६)। **कम्ब रामायण** (४, ७, २०, ४, ३, ४०) के अनुसार वालि को अपने प्रतिद्वन्दी के बल का अर्द्धा श मिला करता था। **तत्व सग्रह रामायण** (४, ६) के अनुसार वालि ने समुद्र-मथन के समय विष्णु से यह वर प्राप्त किया था कि सामने से लडनेवाले शत्रु की अर्द्ध-शक्ति उसे मिलेगी।

—कुछ अन्य रचनाओ मे वालिवध के कारण राम के दोप का प्रश्न उठ ही नही सकता। **अनामक जातकम्** मे वालि राम का धनुष-सधान देखते ही भयभीत होकर भाग जाता है और उसका आगे चलकर कोई उल्लेख नही होता। **पउमचरिय** (पर्व ४७) के अनुसार वालि स्वेच्छा से सुग्रीव को राज्य दिलाकर श्रमण बन गया था किन्तु साहस-गति नामक विद्याधर ने सुग्रीव का रूप धारणकर उसकी पत्नी तथा राज्य को छीन लिया था। राम सेना को लेकर सुग्रीव के साथ किष्किन्धा के निकट पहुँचे। साहसगति ने अपनी सेना के साथ राम का सामना किया और दोनो सेनाओ मे घोर युद्ध हुआ। इस

---

१ दे० भावार्थ रामायण (४, ४)। तोरवे रामायण (४,४) मे भी माना गया है कि इन्द्र द्वारा प्रदत्त माला के कारण शत्रु की आधी शक्ति युद्ध मे वालि को मिला करती थी।

युद्ध मे साहसगति ने सुग्रीव को आहत किया। सुग्रीव को शिविर मे लाया गया और राम ने उससे कहा कि मैने तुम दोनो को पहचानने मे असमर्थ होने के कारण साहसगति को नही मारा है। इसके बाद दोनो सेनाओ मे फिर युद्ध हुआ जिसमे राम ने साहसगति का वध किया। गुणभद्रकृत **उत्तरपुराण** (६८, ४४०-४६३) का वृत्तान्त इस प्रकार है। वालि ने राम के पास सन्देश भेजकर कहा कि रावण का सामना करने मे सुग्रीव और हनुमान असमथ है, मैं ही उसका वध कर सकता हूँ। राम ने इस प्रस्ताव का कटु शब्दो मे उत्तर देकर वालि का महामेघ नामक हाथी माँगा था। वालि ने उसे देना अस्वीकार किया जिसपर दोनो सेनाओ मे घोर युद्ध हुआ। अन्त मे लक्ष्मण ने एक तीक्ष्ण बाण से वालि का सिर काट दिया।

—रामकथा विषयक नाटको मे प्राय **राम-वालि के द्वन्द्व-युद्ध** का वर्णन किया गया है। **महावीरचरित** (अक ५) मे माल्यवान के उभाडने पर वालि राम-लक्ष्मण का मार्ग रोक लेता है और राम द्वारा द्वन्द्वयुद्ध मे मारा जाता है।[1] मायुराजकृत उदात्तराघव मे भी इस प्रकार का वर्णन मिलता है। **अनर्घराघव** मे लक्ष्मण दुदुभि के अस्थिककाल को दूर तक फेक देते है (वालि ने उसे एक वृक्ष पर रख दिया था), इसपर वालि आकर युद्ध के लिए ललकारता है और राम द्वन्द्वयुद्ध मे उसका वध करते है (अक ५)। **महानाटक** (अक ५), **जानकीपरिणय** (अक ६) और पाश्चात्य वृत्तान्त न० ३ मे वालि का वध द्वन्द्वयुद्ध मे ही माना गया है।

ड । राम की वर्षाकालीन साधना

५२३ **वाल्मीकि रामायण** के अनुसार राम ने लक्ष्मण के साथ प्रस्रवण गिरि की एक गुफा मे वर्षा ऋतु बिताई थी (दे० सर्ग २७-२८)। **अग्नि पुराण** (८, ५) मे इसका उल्लेख मात्र किया गया है कि राम ने माल्यवान पर्वत पर चातुर्मास्य यज्ञ किया था। **देवीभागवत** (३, ३०) के अनुसार नारद ने वालिवध के पश्चात् राम के पास आकर कहा कि रावण पर विजय प्राप्त करने के लिये नवरात्रोपवास करना चाहिए। राम के इस उपवास के अन्त मे सिंहारूढा देवी भगवती राम को दर्शन देकर रावण पर विजय का आश्वासन देती है। अत राम विजयापूजा सम्पन्न करने

---

१ निर्णयसागर प्रेस द्वारा प्रकाशित महावीरचरित (सन् १६०१ ई०) के अनुसार वालि भयभीत होकर सग्रामभूमि जाते समय अतर्द्धान हो जाता है। इतने मे राम धनुष का सधान करते है और एक मृग को देखकर उसका वध करते है। मृग दिव्य पुरुष का रूप धारण कर राम से कहता है कि 'मै वालि हूँ, मतग के शाप के कारण मै मृग बन गया था, अब आप की कृपा से मुझे शाश्वत पद प्राप्त है' (अक ६, ५-६)।

के बाद वानर-सेना के साथ लका के लिए प्रस्थान करते है ।

कुछ अन्य रचनाओ मे राम की वर्षाकालीन शिवपूजा का वर्णन किया गया है । **शिव महापुराण** (वेकटेश्वर प्रेस, ज्ञानसहिता, अध्याय ३, ५३-५५) मे लिखा है कि राम ने पर्वत पर शिव की आराधना की थी तथा घोर तपस्या करने के पश्चात् शिव से धनुष, बाण तथा ज्ञान प्राप्त किया था जिससे वह रावण पर विजयी हो सके। नवलकिशोर प्रेस द्वारा प्रकाशित हिन्दी **शिव पुराण** (शतरुद्र सहिता, अध्याय ३४-३६) मे राम की इस शिवपूजा का विस्तृत वर्णन किया गया है । अगस्त्य ने राम से कहा था कि रावण को हराने के लिये शिव की शरण लेना तथा घोर तप करना अनिवार्य है। इसपर राम ने गोदावरी के निकट रामगिरि पर शिवलिंग की स्थापना की थी और चार महीने शिवपूजा तथा तप मे बिताए । तब शिव अन्य देवताओ के साथ दिखाई दिये और उन्होने राम को धनुष तथा अस्त्र प्रदान किये । देवताओ ने शिव के आदेश पर राम को अपने-अपने अस्त्र दे दिये तथा वे राम को सहायता करने के लिए वानर और रीछ बन गये । राम ने शिव से निवेदन किया कि वह भी अवतार लेकर उनकी सहायता करे और शिव ने आश्वासन दिया कि मै हनुमान् के रूप मे तुम्हारी सहायता करूँगा । अन्त मे शिव राम को अपनी गीता का ज्ञान देकर अन्तर्धान हो गये ।

शिवगीता (वेकटेश्वर प्रेस) का वर्ण्य विषय उपर्युक्त वृत्तान्त से अधिक भिन्न नही है । इसके अनुसार अगस्त्य विरही राम को सान्त्वना और ससार की असारता के विषय मे उपदेश देने आए । रावण पर विजय प्राप्त करने का उपाय राम ने उनसे पूछा और अगस्त्य ने उनको पाशुपतव्रत करने का परामर्श दिया । अत राम शिवलिंग स्थापित कर चार महीने तक नित्य ही उसकी पूजा और ध्यान करते रहे । अन्त मे पार्वती तथा देवताओ के साथ शिव प्रादुर्भूत हुए और उन्होने राम को दिव्य-धनुष के साथ महापाशुपतास्त्र प्रदान किया । तब शिव ने देवताओ को आज्ञा दी कि वे राम को अपने-अपने अस्त्र दे दे और वानरो का रूप धारण कर उनकी सहायता करे । अनन्तर भगवद्गीता के अनुकरण पर इसका वर्णन किया गया है कि शिव ने अपना विश्वरूप दिखाकर राम को ब्रह्मज्ञान के विषय मे शिक्षा दी थी ।[1] **अब्दरामायण** (दे०अनु०१७६) मे भी माल्यवान् पर्वत पर राम द्वारा लिंगार्चन का उल्लेख किया गया है ।

---

१ रामकथा पर शैवप्रभाव के विषय मे अनु० ७८३-७८४ देख ले । बलरामदास रामायण मे भी वर्षाऋतु के अत मे राम के पास अगस्त्य के आगमन् का वर्णन किया गया है । मार्कण्डेय अगस्त्य के साथ आये थे और राम का विरह देखकर, उसने राम के भगवान होने पर सदेह प्रकट किया था अगस्त्य ने उसका समाधान करते हुए कहा कि विष्णु ने मानव शरीर धारण कर अज्ञानी बनने और रावण को मार डालने की प्रतिज्ञा की थी ।

च । वानरो का प्रेषण

५२४ प्रचलित वाल्मीकि रामायण मे वानरो के प्रेषण का अपेक्षाकृत अधिक विस्तार मे वर्णन किया गया है (सर्ग २९-४७) । इसकी अधिकाश सामग्री प्रक्षिप्त ही है (दे० अनु० ५१०-५११), शेष कथानक सक्षेप मे इस प्रकार है। शरत्काल के प्रारभ मे सुग्रीव ने हनुमान के अनुरोध पर नील को सेना बुलाने का आदेश दिया (सर्ग २९) । विरही राम ने सुग्रीव की निष्क्रियता की भर्त्सना करके लक्ष्मण को किष्किधा भेज दिया (सर्ग ३०) । लक्ष्मण ने किष्किन्धा मे प्रवेश कर (सर्ग ३३) अकृतज्ञ सुग्रीव को धमकी दे दी (सर्ग ३४), सुग्रीव ने दीनतापूर्वक क्षमायाचना की और लक्ष्मण के साथ राम के पास जाना स्वीकार किया (सर्ग ३६) । राम ने सुग्रीव का प्रेमपूर्वक स्वागत किया (सर्ग ३८) और सुग्रीव ने अपने साथ आए हुए वानरो को दिखाकर राम की आज्ञा मागी (सर्ग ४०) । सुग्रीव से हनुमान् की योग्यता जानकर राम ने उसे अभिज्ञानस्वरूप अपनी अगूठी सौप दी और हनुमान् अपने साथियो के साथ सीता की खोज मे निकल पडे (सर्ग ४४) । सभव है कि आदि रामायण मे हनुमान को ही दक्षिण की ओर भेजा गया हो । वह सीता से मिल कर कहता है कि मै सुग्रीव की आज्ञा से अकेला ही यहाँ आया हूँ । मै कामरूपी हूँ, मैने आपका पता लगाने की इच्छा से घूम-फिर कर बिना किसी सहायक के (असहायेन) इस दक्षिण दिशा का अनुसधान किया है—

अहमेकस्तु सप्राप्त सुग्रीववचनादिह ।

मयेयमसहायेन चरता कामरूपिणा ।।७५।।

दक्षिण दिगनुक्रान्ता त्वन्मार्गविचयैषिणा । (सुदरकाण्ड, सर्ग ३५)

—वाल्मीकि रामायण मे सुग्रीव विलासिता के कारण निष्क्रिय है किन्तु **सेरीराम, रामकेर्त्ति** (सर्ग ७) तथा **रामकियेन** (अध्याय २२) मे इसके लिए एक अन्य कारण दिया गया है । सेरीराम का तत्सबधी विस्तृत वृत्तान्त इस प्रकार है । सम्बूरान[1] इन्द्र के शाप के कारण वानर बन गया था, वह वालि का परममित्र था और निकटवर्ती राज्य मे वानरो पर शासन करता था। सुग्रीव सम्बूरान के कारण राम की सहायता करने से डरता था । इसपर लक्ष्मण ने एक पत्र लिखकर सम्बूरान को विष्णु-अवतार राम की अधीनता स्वीकार करने का आदेश दिया । सुग्रीव और हनुमान् यह पत्र सम्बूरान के पास ले गये किन्तु उसने राम के अवतारत्व पर अविश्वास प्रकट किया । रात्रि मे सुग्रीव और हनुमान् सम्बूरान का अपहरण करके उसे राम के पास ले गए । राम को देखकर सम्बूरान ने उनको विष्णु के रूप मे स्वीकार किया

---

१ रामकेर्ति मे इसका नाम महाजम्ब्र तथा रामकियेन मे जम्बु है ।

तथा अपनी सेना राम की सहायता मे अर्पित की। तब जाम्बवान को ज्योतिष द्वारा यह ज्ञात हुआ कि सीता ने आत्महत्या का विचार छोड दिया है और रावण ४० धनु की दूरी तक सीता के निकट आने मे असमर्थ है। इसपर राम ने पूछा कि जाम्बवान के कथन की सच्चाई की परीक्षा लेने के लिये कौन लका जाने को तैयार हे। सबो की अनिच्छा देखकर राम ने वालि का बचन याद किया (दे० अनु० ५१६) और हनुमान् को बुलाया। हनुमान् इस शर्त पर जाने के लिए तैयार हो गये कि उसे राम के साथ एक ही पत्तल मे खाने की अनुमति मिल जाय। राम ने हनुमान् को समुद्र मे स्नान करने का आदेश देकर इस शर्त को स्वीकार किया। इस कथा का आधार भारतीय ही है (दे० अनु० ७०७)।

गुणभद्र के **उत्तरपुराण** मे हनुमान् को तीन बार लका भेजा जाता है। प्रथम बार वह सीता से ही मिलकर लौटता है (६८, ३७५), द्वितीय बार वह दूत के रूप मे रावण के पास भेजा जाता है और लौटने से पूर्व सीता से पुन मिलता है (६८,४३५), विभीषण की शरणागति के पश्चात् हनुमान् तृतीय बार समुद्र पार कर रावण की वाटिका नष्ट करता है और बहुत से योद्धाओ का वध करता है (६८, ५०६)।

५२५ वाल्मीकि रामायण मे राम हनुमान् को **अभिज्ञान** के रूप मे **स्वनामाकोपशोभित अगुलीयम्''** (४४,१२) सौप देते हे। अधिक सभव यही प्रतीत होता है कि आदि रामायण मे इस अभिज्ञान का उल्लेख नही मिलता था, सीता द्वारा दिये हुये अभिज्ञानो के अनुकरण पर (दे० अनु० ५५०) राम द्वारा भी अभिज्ञान दिये जाने की कल्पना अत्यन्त स्वाभाविक है। महाभारत के रामोपाख्यान मे राम की अगूठी की चर्चा नही मिलती है।

परवर्ती रचनाओ मे अनेक नवीन अभिज्ञानो की कल्पना कर ली गई है। **आनन्द रामायण** (१,८, ६३-६७) के अनुसार राम ने हनुमान् को अगूठी के अतिरिक्त अपना निज मत्र भी दिया और सीता के भाल पर तिलक लगाने तथा उनके कपोलो पर पत्रावली की रचना करने का वृत्तान्त सुनाया। **बलरामदास** रामायण मे काक-वृत्तान्त तथा तिलक-वृत्तान्त दोनो राम द्वारा दिये हुये अभिज्ञान माने गये है। **तोरवे रामायण** (५,६) मे अगूठी तथा काकवृत्तान्त के अतिरिक्त चित्रकूट में जलविहार की कथा भी राम द्वारा प्रदत्त अभिज्ञान माना गया है।

गुणभद्र के **उत्तरपुराण** तथा **रामलिगामृत** मे अगूठी के साथ राम सीता के नाम पत्र देते है। **तिब्बती रामायण** मे भी राम के पत्र का उल्लेख है।

अभिनन्दकृत **रामचरित** (सर्ग ८) मे राम अपनी मुद्रिका के अतिरिक्त सीता का नूपुर तथा स्तनोत्तरीय देते है, हनुमान् को अपनी वशावली भी सिखलाते हैं और सीता के रूप तथा उनके गुणो का वर्णन करते हैं। **भावार्थ रामायण** (५, १२) में

हनुमान् अभिज्ञान के रूप मे सीता से कहते है कि जब आप वल्कल पहनने मे असमर्थ थी तब राम ने आपकी सहायता की थी। **रामकियेन** (अध्याय २३) के अनुसार हनुमान् ने राम की मुद्रिका तथा सीता का उत्तरीय पाकर यह आपत्ति की थी कि इनसे सीता की आशका दूर नही होगी क्योकि शत्रु भी इन्हे प्राप्त कर ले सकता है। इसपर राम ने पूर्वानुराग का रहस्य प्रकट किया—"जब मै पहले-पहल मिथिला मे प्रवेश कर रहा था, सीता ने अपनी खिडकी से मुझे देख लिया था और हम दोनो मे प्रेम उत्पन्न हुआ था। **कम्ब रामायण** (४, १२) तथा बलरामदास के अनुसार भी राम ने हनुमान् को पूर्वानुराग का वृत्तान्त सुनाया था, कम्ब रामायण मे दो और घटनाओ का वर्णन किया गया था—(१) वन जाने की अनुमति न मिलने पर सीता की मूर्च्छा और क्रोध, (२) नगर निकलने के पूर्व पैदल चलने वाली सीता का प्रश्न (अरण्य कहाँ है ?)।

दूसरी ओर सीता को पहचानने मे हनुमान् की सुविधा के लिये राम ने **कम्ब-रामायण** के अनुसार (४,१२, ३३-६६) सीता का विस्तृत नख-शिख-वर्णन किया था।[1] **भावार्थ रामायण** (४, १३) मे राम हनुमान् से कहते है कि सीता की हनु पर मेरा चित्र अकित है।

५२६ हनुमान् तथा उसके साथी विन्ध्य की गुफाओ मे सीता की खोज करते हुये एक निर्जल तथा निर्जन वन मे पहुँच गये। कण्डु ने अपने द्वादशवर्षीय पुत्र की अकाल मृत्यु से शोकातुर होकर उस प्रदेश को शाप दिया था। इस स्थल पर अगद ने एक असुर का वध किया। तब तृषित वानरो ने विन्ध्य की दक्षिण-पश्चिम कोटि पर ऋक्षबिल नामक गुफा से जलपक्षियो को निकलते देखा। अगद ने द्वार पर पहरा देने वाले दानव[2] को मार डाला और सब वानर हनुमान् के नेतृत्व मे अधेरी गुफा मे प्रवेश कर गये। एक योजन तक आगे बढकर उन्होने एक ज्योतिर्मय सुवर्णनगरी मे एक वृद्धा तपस्विनी से भेट की। उसने अपना परिचय देकर कहा—'मैं मेरुसावर्णी की पुत्री **स्वयप्रभा** हूँ, मय नामक दानव ने इस नगर का निर्माण किया था किन्तु हेमा नामक अप्सरा पर आसक्त हो जाने के कारण इन्द्र ने मय का वध किया था।

---

१ इसका आधार सुन्दरकाण्ड (१५, ४१-४३) मे हनुमान् का यह कथन है कि जिन आभरणो का वर्णन राम ने किया था वे सीता के शरीर पर विद्यमान है।

२ कम्ब रामायण (४, १४) मे अगद द्वारा तुमिर नामक असुर का वध स्वय-प्रभा के वृत्तान्त के बाद रखा गया है। सेरीराम की राफ़्ल्स पाण्डुलिपि (पृ० ३६५) मे यह राक्षस इन्द्र द्वारा अभिशप्त कोई राजा है।

बाद मे ब्रह्मा ने हेमा को यह वन प्रदान किया और मै हेमा के लिये इसकी रखवाली करती हूँ।' तब स्वयप्रभा ने वानरो को भोजन दिया और आँखे बन्द कर लेने का आदेश देकर वह उनको गुफा के बाहर ले गई। वानरो को विन्ध्य, प्रश्रवण तथा समुद्र दिखलाकर उसने पुन गुफा मे प्रवेश किया (सर्ग ४८-५२)। उत्तरकाण्ड मे मय अपनी पुत्री मन्दोदरी के साथ वन मे रावण से मिलकर अपने विषय मे कहता है कि देवताओ ने मुझे हेमा को प्रदान किया था और हम दोनो ने १००० वर्ष सुख से बिताये। १४ वर्ष पूर्व हेमा "देवतकार्येण" मुझे छोड कर चली गई। तब मैंने एक सुवर्ण नगर का निर्माण किया और अब मै हेमा के वियोग के कारण दु खी होकर वहाँ निवास करता हूँ। हेमा से मुझे यह पुत्री मन्दोदरी तथा दो पुत्र दुदुभि और मायावी प्राप्त हुए थे (सर्ग १२)।

परवर्ती रामकथाओ मे उपर्युक्त वृत्तान्त मे गौण परिवर्तन किये गये है। स्वयप्रभा के स्थान पर महाभारत मे प्रभावती, नृसिह पुराण मे प्रभा, अग्नि पुराण मे सुप्रभा, कृत्तिवास मे सभवा, बलरामदास मे गिरिजा, गुजराती रामायणसार मे बदरी तथा रामकियेन मे पुष्पमाली नाम मिलता है।

रामायण ककविन (सर्ग ७) के अनुसार स्वयप्रभा वानरो को भुलाने के लिये उनको आँखे बन्द कर लेने के लिये कहती है, क्योकि वह दानवी है और राक्षसो से मैत्री रखती है। **भट्टिकाव्य** के वृत्तान्त से भी वही ध्वनि निकलती है (७, ७१)। **तिब्बती रामायण** मे भी श्री देवी की पुत्री वानरो को मोहित कर देती है जिससे उनको दिशाभ्रम हो जाता है। इस रचना मे वानर एक दूसरे की पूछ पकडकर गुफा मे प्रवेश करते है। **कम्ब रामायण** (४, १३) मे भी हनुमान् की पूछ पकडकर वानर गुफा मे आगे बढते है।

अभिनन्दकृत **रामचरित** (सर्ग ११-१२) के अनुसार अगद ने गुफा के प्रवेश द्वार पर दुर्दम नामक एक राक्षस का वध किया था तथा हनुमान् ने एक वानर-वारसुन्दरी का प्रेम-प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया, तब सर्वाङ्गसुन्दरी का रूप धारण कर वह हनुमान् को मोहित करने मे पुन असफल हुई और स्वयप्रभा के आगमन पर चली गई।[1] स्वयप्रभा ने गुफा मे अपने निवास के कारण के विषय मे कहा कि मय

---

१ रामकियेन (अध्याय २३) के अनुसार हनुमान् ने गुफा से प्रस्थान करने के पूर्व पुष्पमाली (स्वयप्रभा) के साथ रमण किया था तथा उसके बाद उसे स्वर्ग भेज दिया। पुष्पमाली एक अप्सरा थी जो रभा के हरण मे मयन के राजा तवन की सहायता करने के कारण ईश्वर द्वारा अभिशप्त थी। सेरीराम की राफल्स पाण्डुलिपि मे हनुमान स्वयप्रभा के साथ विवाह करते हैं (पृ० ३७१)।

श्रौर हेमा बहुत समय तक पत्ति-पत्नी के रूप मे यहाँ रह चुके थे, हेमा किसी दिन स्वर्ग मे अपने पिता से मिलने गई श्रौर इन्द्र ने उसे वहाँ रोक लिया। तब हेमा ने मय को सूचना देने के लिए स्वयप्रभा को भेज दिया, गुफा मे पहुँचकर स्वय प्रभा नेमय को विरह के कारण मरा हुआ पाया, स्वयप्रभा को लौटकर हेमा को इसका समाचार देने का साहस नही हुआ, कही ऐसा न हो कि हेमा भी मर जाय। अत स्वयप्रभा ने मरण तक इस गुफा मे तपस्या करने का निश्चय किया था। **कम्ब रामायण** (४, १३) मे कथा इस प्रकार है। ब्रह्मा ने मय को यह नगर प्रदान किया था तथा स्वयप्रभा हेमा को मय की पत्नी के रूप मे वहाँ ले आई थी। थोडे ही दिनो के बाद इन्द्र ने आकर मय का वध करके स्वयप्रभा को दण्ड दिया कि वह राम के दूतो के आगमन तक वहाँ निवास करे। तब इन्द्र हेमा को स्वर्ग ले गये। यह वृत्तान्त सुनाने के बाद स्वयप्रभा ने वानरो से निवेदन किया कि वे उसे गुफा से निकलने मे सहायता दे। इस पर हनुमान् ने अपना शरीर बढाकर गुफा को खोल दिया श्रौर स्वयप्रभा ने स्वर्ग के लिये प्रस्थान किया। **रगनाथ रामायण** (४, १७) के अनुसार भी हेमा मय की पत्नी थी, इन्द्र मय का वध कर हेमा को स्वर्ग ले गये थे। स्वयप्रभा हेमा की सखी है जो हेमा की आज्ञा से गुफा मे तप करती है। **भावार्थ रामायण** (४, १४-१५) के अनुसार इन्द्र ने हेमा को भेजकर मय को गुफा के बाहर आने का प्रलोभन दिया था श्रौर इस प्रकार वह मय को मारने मे समर्थ हुए।

राम-भक्ति-भाव से ओतप्रोत **अध्यात्म रामायण** (४, ६, ५१-८४) मे प्रस्तुत वृत्तान्त को एक नवीन रूप दिया गया है। विश्वकर्मा की पुत्री हेमा ने अपने नृत्य से शिव को प्रसन्न कर उनसे वह दिव्य नगर प्राप्त किया था। ब्रह्मलोक के लिये प्रस्थान करते समय हेमा ने अपनी सखी स्वयप्रभा (दिव्य नामक गन्धर्व की पुत्री) को आदेश दिया था—"तुम यहा पर तपस्या करती रहो, त्रेतायुग मे जब राम के दूत आवेगे तब उनका आतिथ्य-सत्कार करना।" वानरो को भोजन देने के बाद स्वयप्रभा उनको गुफा के बाहर ले गई श्रौर राम के पास आ गई। उसने राम की स्तुति करने के पश्चात् भक्ति का वरदान माँग लिया श्रौर राम का आदेश पाकर वदरी-वन चली गई, जहाँ उसने अपना शरीर छोडकर परम पद प्राप्त किया। **आनन्द रामायण** (१, ८, १०३-१०६) तथा **रामचरितमानस** (४, २५) मे भी यही कथा सक्षिप्त रूप मे मिलती है।

५२७ स्वयप्रभा की गुफा से निकलकर वानर यह जानकर निरुत्साह हो गये कि सुग्रीव की निर्धारित (एक मास की) अवधि समाप्त हुई है। अगद ने पुन गुफा मे प्रवेश कर वहा निवास करने का प्रस्ताव किया किन्तु हनुमान् ने इसका विरोध किया। अन्त मे सबो ने प्रायोपवेशन करने का निश्चय किया। **सम्पाति** ने उपवास करने वाले वानरो को अपने भाई जटायु का उल्लेख करते सुना श्रौर पास आकर इसका समाचार

पूछा, बाद मे उसने अपनी कथा भी सुनाई तथा वानरो से यह प्रकट किया कि सीता का अपहर्ता रावण एक सौ योजन की दूरी पर समुद्र के उस पार निवास करता है, इसके बाद वानरो ने परामर्श किया कि कौन समुद्र पार कर सकेगा, अन्त मे जाम्बवान ने हनुमान को समुद्रलघन करने का आदेश दिया और उसकी जन्म-कथा भी सुनाई। किष्किधाकाड के अतिम सर्ग मे हनुमान अपनी शक्ति का गुणगान करता है, जाम्बवान उसे आश्वासन देता है कि उसके लौटने तक सब वानर एक पैर पर खडे होकर तपस्या करेंगे—**स्थास्यामश्चैकपादेन यावदागमन तव** (६७,३४)। अन्त मे हनुमान द्वारा महेन्द्र पर्वत का आरोहण वर्णित है (सर्ग ५३-६७)।

वाल्मीकि रामायण के इस अश मे प्रक्षिप्त सामग्री का बाहुल्य—(१) हनुमान् की जन्म-कथा (सर्ग ६६), इस पर आगे विचार किया जायगा (दे० अनु० ६५६), (२) सर्ग ५८ मे सम्पाति कहता है कि मैने रावण को एक स्त्री का अपहरण करते हुये देखा है, किन्तु अगले सर्ग के अनुसार उसने अपने पुत्र सुपार्श्व से यह वृत्तान्त सुना था, अतिम कथन अधिक प्राचीन होगा। इन परस्पर-विरोधी उक्तियो के लिए वाल्मीकि उत्तरदायी हो ही नही सकते, (३) सम्पाति अपनी कथा को दो बार सुनाता है, द्वितीय वृत्तान्त (सर्ग ६०-६३) निश्चित रूप से प्रक्षिप्त है।

विकास की दृष्टि से केवल सम्पाति की कथा का विश्लेषण अपेक्षित है। वाल्मीकि रामायण मे सम्पाति की कथा का **प्रथम रूप** इस प्रकार है। सम्पाति और जटायु, दोनो भाई वृत्र के वध के बाद (इन्द्र पर) विजय प्राप्त करने की इच्छा से आकाश के मार्ग से स्वर्ग जा रहे थे। सूर्यमडल के समीप पहुँचकर तथा जटायु को सूर्य की प्रचण्ड किरणो से सत्रस्त देखकर सम्पाति ने उसे अपने पखो से ढँक लिया। फलस्वरूप सम्पाति के पख जल गये और वह विन्ध्य पर्वत पर गिर गया। बाद मे सम्पाति को जटायु के विषय मे कभी भी कोई समाचार नही मिला था (५८, ४-७)। **द्वितीय कथा** कही और विस्तृत है। उसके अनुसार सम्पाति अपने भाई जटायु के साथ निशाकर के आश्रम मे जाया करते थे, अत पख जल जाने के बाद भी सम्पाति निशाकर से भेट करने गया था। वहा पहुँचकर उसने निशाकर से कहा कि हम दोनो भाई किसी समय अपनी शक्ति की परीक्षा लेने के उद्देश्य से आकाश मे सूर्य की ओर आगे बढने लगे थे। सूर्य के पास पहुँचकर दोनो भयभीत हुये। जटायु पहले गिर पडा, सम्पाति के पखो से आच्छादित होकर वह जनस्थान मे सकुशल पहुँच गया। सम्पाति के पख जल गये और वह निस्सहाय होकर विध्य पर गिर गया। उसने आत्महत्या करने का विचार किया किन्तु निशाकर ने उसे यह आश्वासन दिया—राम के दूत सीता की खोज मे इधर आयेगे, तुम उनको सीता का समाचार दोगे और तब अपने पख फिर प्राप्त करोगे। अपनी यह कथा सुनाते समय सम्पाति ने अनुभव किया मेरे पख बढ रहे है। तब उसने

इस चमत्कार का श्रेय निशाकर को दिया और ऊपर उठकर आकाश मे विलीन हो गया (सर्ग ६०-६३)। अन्य पाठो मे भी सम्पाति अपना स्वास्थ्य-लाभ निशाकर का प्रभाव मानता है किन्तु गौडीय पाठ के एक प्रक्षेप (६३, ३-६) मे वानर सम्पाति को अचानक स्वस्थ देखकर इस चमत्कार का श्रेय राम-लक्ष्मण को देते है—**ऊचुश्च राममाहात्म्य महावीर्यं च लक्ष्मण। ययो प्रभावात् सम्पातिरपक्ष पक्षवानभूत**। इसपर एक आकाशवाणी ने वानरो के इस कथन का समर्थन किया।

—गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठो मे **सुपार्श्व** के आगमन का भी वर्णन किया गया है (गौ० रा० सर्ग ६२, प० रा० सर्ग ५५)। जाम्बवान ने समुद्र पार करने की सहायता मागी और सम्पाति ने अपनी असमर्थता प्रकट कर अपने पुत्र सुपार्श्व को बुलाया। सुपार्श्व ने अगद को अपनी पीठ पर समुद्र के उस पार ले जाने का प्रस्ताव किया किन्तु अगद ने अस्वीकार किया। इन दोनो पाठो मे सम्पाति अन्त मे हिमालय के लिये प्रस्थान करता है। सुपार्श्व के आगमन की कथा माधव कदलीकृत असमिया रामायण, कृत्तिवास के बगला रामायण तथा बलरामदास के उडिया रामायण मे भी मिलती है। माधव कदली (४, २५) के अनुसार सुपार्श्व ने अगद तथा वानरसेना को अपनी पीठ पर चढाकर समुद्रपार किया और उनको लका दिखलाई। धनजय के रघुनाथविलास तथा उपेन्द्र भज के वैदेहीविलास मे भी इसका उल्लेख है। सेरीराम की राफल्स पाण्डुलिपि (पृ० ३८४) के अनुसार सम्पाति हनुमान को अपनी पीठ पर चढा कर समुद्र पार ले गया।

—**कम्ब रामायण** (४, १५) के अनुसार सूर्य ने सबसे पहले सम्पाति को यह आश्वासन दिया था कि जब वानर रामनाम का उच्चारण करेगे उस समय तुम्हारे पख फिर निकल आयेगे। **भावार्थ रामायण** (४, १६) मे भी सूर्य के इस आश्वासन का उल्लेख है।

—**अध्यात्म रामायण** (४, ८) की कथा वाल्मीकि रामायण की द्वितीय कथा पर आधारित है। निशाकर के स्थान पर मुनि का नाम चन्द्रमा माना गया है।[1] चन्द्रमा ने आहत सम्पाति को एक विस्तृत उपदेश देकर आत्महत्या करने से रोका था

---

१ **आनन्द रामायण** मे मुनि का नाम चन्द्रशर्मा है, कम्ब ने इसका नाम लोक-सारग रखा है। अध्यात्म रामायण पर आधारित आनन्द रामायण की सक्षिप्त कथा (१, ८, १११-१२१) मे नया तत्व यह है कि सम्पाति ने अपने पुत्र से सीताहरण का समाचार सुनकर उसे सीता को न छुडाने के कारण बहुत डाँटा था। इसपर वह क्रुद्ध होकर चला गया और फिर कभी अपने पिता सम्पाति से मिलने नही आया।

तथा उसको नारायणावतार राम के दूतो की प्रतीक्षा करने का आदेश दिया था। पखो के बढ जाने पर सम्पाति ने वानरो को इस प्रकार आश्वासन दिया—"जिनके नाम के स्मरणमात्र से दुष्टजन भी इस अपार ससार-सागर को पार कर विष्णु के शाश्वत पद को प्राप्त कर लेते है उन्ही भगवान राम के तुम प्रिय भक्तगण हो। फिर इस समुद्र मात्र के पार करने मे तुम क्यो समर्थ न होगे।" इस प्रकार हम देखते है कि सम्पाति की कथा धीरे-धीरे अलौकिक घटनाओ के परिवर्तन से विकसित होकर अन्त मे भगवान राम के गुणगान मे परिणत हुई।[1]

---

१ सेरीराम के अनुसार जटायु ने मरने के पहले राम-लक्ष्मण को अपने भाई दसमपानी के पास भेज दिया था। सूर्य ने दसमपानी से कहा था कि विष्णु-अवतार राम के पुत्र हनुमान् से भेट करने पर तुम्हारे पख फिर बढ जायेंगे। महावीरचरित (अक ५) के अनुसार जटायु ने सम्पाति के पास आकर राम के पचवटी-निवास, शूर्पणखा-विरूपीकरण और खर-दूषण-वध का समाचार दिया था। सम्पाति ने रावण के प्रतिकार की आशका प्रकट कर जटायु से अनुरोध किया था कि वह रामादि की रक्षा करे। तिब्बती रामायण के अनुसार वानर पदा नामक गीध से भेट करते है, पदा उनको अपने पिता अगजय (जटायु) की कथा सुनाता है जो सीता को छुडाने के प्रयत्न मे रावण द्वारा मारा गया है। इस वृत्तान्त मे पदा के अनुज सपदा के पख जल जाने की कथा भी मिलती है। खोतानी रामायण मे प्रस्तुत प्रसग को एक नया रूप दिया गया है। राजा ने खोज करने वाले वानरो से कहा था कि यदि तुम लोग सात दिनो के अन्दर सीता का पता नही लगा सकोगे तो मै तुम्हारी आँखे गीधो को खिलाऊँगा। अवधि के अत मे किसी वानरी ने सुना कि एक गीध अपने बच्चो से कह रहा है—तुमको वानरो की आँखे खाने को मिलेगी क्योकि वानर यह भी नही जानते कि रावण सीता को लकापुर ले गया है।

अध्याय १८

सुन्दरकाड

१—वाल्मीकि रामायण का सुन्दरकाड

५२८. क । सुन्दरकाड की कथावस्तु

(१) लका मे हनुमान् का प्रवेश (सर्ग १-१७)

समुद्रलघन—लघन करते हुए हनुमान् से मैनाक का आग्रह, सुरसा से भेट, सिंहिका-वध (सर्ग १)।

लका-वर्णन—विडाल जितने आकार मे हनुमान् का लका मे प्रवेश, लका-देवी को परास्त करना, नगर, महल, पुष्पक, शयनागार आदि का वर्णन, सीता का पता न मिलना (सर्ग २-१२)।

अशोक-वन—हताश होकर हनुमान् का अशोक-वन मे प्रवेश और वहाँ राक्षसो से घिरी हुई सीता को देखना (सर्ग १३-१७)।

(२) रावण-सीता-सवाद (सर्ग १८-२८)

रावण की प्रताडना—कामातुर रावण का सीता से अनुरोध तथा सीता की अस्वीकृति (सर्ग १८-२१)। रावण का भय दिखलाना और दो महीने की अवधि देना। सीता की भर्त्सना। सीता को समझाने के लिए रावण द्वारा राक्षसियो को नियुक्त किया जाना (सर्ग २२)।

राक्षसियों का प्रयास—राक्षसियो का प्रयास और सीता की अस्वीकृति तथा विलाप (सर्ग २३-२६)।

त्रिजटा का स्वप्न—त्रिजटा का राक्षस-पराजय-सूचक स्वप्न-वर्णन (सर्ग २७)। सीता-विलाप (सर्ग २८)।

(३) हनुमान्-सीता-सवाद (सर्ग २९-४०)

सीता को शकुन होना (सर्ग २९)। हनुमान का रामकथा-वर्णन (सर्ग ३०-३१)। सीता का भयभीत होना (सर्ग ३२)। हनुमान का प्रकट होना, सीता का सदेह, हनुमान् द्वारा राम का वर्णन, सीता का विश्वास करना

(सर्ग ३३-३५) । हनुमान् का राम-मुद्रिका देना और शीघ्र छुटकारे का आश्वासन, हनुमान् की पीठ पर जाने की सीता द्वारा अस्वीकृति । अभिज्ञान-स्वरूप मीता का काक-वृत्ता त सुनाना तथा चूडामणि देना । विदा (सर्ग ३६-४०) ।

(४) लका-दहन (सर्ग ४१-५५)

अशोकवन-ध्वस—हनुमान् द्वारा अशोक-वन और चैत्य का विध्वस तथा प्रहस्त-पुत्र जबुमाली और रावण-कुमार अक्ष का वध (सर्ग ४१-४७) ।

हनुमान-बधन—ब्रह्मास्त्र से इन्द्रजित् द्वारा बधन । राम-दूत के रूप मे हनुमान् का रावण से सीता-मुक्ति का आग्रह । विभीषण द्वारा हनुमान् की रक्षा (सर्ग ४८-५२) ।

लका-दहन—दड-रूप हनुमान् की पूछ जलाई जाने की रावण द्वारा आज्ञा । हनुमान् द्वारा लकादहन । चारणो की बातचीत से हनुमान् को सीता की रक्षा का आश्वासन (सर्ग ५३-५५) ।

(५) हनुमान् का प्रत्यावत्तन (सग ५६-६८)

समुद्र-लघन—हनुमान् का आकाशमार्ग से अपने साथियो के पास प्रत्यागमन और अपनी सफलता का वर्णन (सर्ग ५६-५६) । अगद द्वारा सीता-मुक्ति का प्रस्ताव, जाम्बवान् का विरोध (सर्ग ६०) ।

मधुवन—मधुवन मे पहुँच कर हनुमान् आदि का उत्पात, दधिमुख का सुग्रीव को समाचार देना (सर्ग ६१-६४) ।

सुखद समाचार—हनुमान् का राम से सीता के जीवित होने का समाचार कहना और अभिज्ञान देना (सर्ग ६५), राम का विलाप (सर्ग ६६), हनुमान् का काक-वृत्तान्त कहना और सीता-सवाद का उल्लेख करना (सर्ग ६७-६८) ।

ख । सुन्दरकाड का विश्लेषण

तीनों पाठों मे विभिन्नता

५२६ दाक्षिणात्य पाठ के दो वृत्तान्त अन्य पाठो मे नही पाये जाते है—लका मे प्रवेश करते समय हनुमान् का लका देवी से युद्ध (सर्ग ३, २०-५१) तथा हनुमान् द्वारा चैत्यप्रासाद का विध्वस (सर्ग ४३) ।

इसके अतिरिक्त दाक्षिणात्य २३वा सर्ग, जिसमे सीता से अनुरोध करने वाली राक्षसियो की नामावली दी गई है, पश्चिमोत्तरीय पाठ (सर्ग १८) मे तो मिलता है, लेकिन इसका गौडीय पाठ मे अभाव है ।

दाक्षिणात्य पाठ (सर्ग १३, ५४-६७) तथा पश्चिमोत्तरीय पाठ (सर्ग ८, ६४-७७) के अनुसार, हनुमान् अशोकवन मे प्रवेश करने के पहले देवताओ की स्तुति करते हैं। इसका उल्लेख गौडीय पाठ मे नही किया गया है।

गौडीय (सर्ग ५२) तथा पश्चिमोत्तरीय पाठ (सर्ग ५१) का सरमावाक्यम् नामक सर्ग, जिसमे सरमा सीता से लका-दहन का वर्णन करती है, दाक्षिणात्य पाठ मे नही मिलता।

प्रक्षेप

५३० सुन्दरकाण्ड मे बहुत-सी प्रक्षिप्त सामग्री विद्यमान है। **समुद्रलघन** की प्रामाणिकता अत्यन्त सदिग्ध है। इसके अतिरिक्त दाक्षिणात्य पाठ मे इसका वर्णन अन्य पाठो की अपेक्षा अधिक विस्तृत है (दे० आगे अनु० ५३१)। **लका-वर्णन** (सर्ग २-११) मे पुनरावृत्ति के अतिरिक्त दीर्घ छन्दो के कई अनावश्यक सर्ग मिलते है। **पुष्पक** का वर्णन निश्चित रूप से अपेक्षाकृत अर्वाचीन है (सर्ग ७-६)। आगे चलकर भी **अनावश्यक सामग्री** की कमी नही है, उदाहरणार्थ—**सर्ग १४** (अशोकवन का प्रथम विध्वस), **सर्ग २३-२६** (भयकर राक्षसियो का वर्णन तथा उनकी धमकियाँ), **सर्ग२८-२६** (पूर्वापर सबध का अभाव, बहुत सी हस्तलिपियो मे दोनो सर्ग अविद्यमान हैं)। **सीता-हनुमान्-सवाद** की पर्याप्त सामग्री प्रक्षिप्त प्रतीत होती है। सर्ग ३२ का उत्तरार्द्ध (दीर्घ छन्द) अनावश्यक है, सर्ग ३३ मे सीता के विश्वस्त हो जाने के पूर्व उनका आत्मपरिचय अस्वाभाविक है, सर्ग ४० मे सीता के पुन अभिज्ञान देने का वर्णन किया गया है (सर्ग ३८ की आवृत्ति)।

आदिरामायण मे **लका-दहन** (सर्ग ४१-५५) का वर्णन नही मिलता था, यह डॉ० याकोबी के निम्नलिखित तीन तर्कों का निष्कर्ष है।[1]

(१) सीता द्वारा हनुमान् की विदा का वर्णन सुन्दरकाड मे तीन वार किया गया है—लकादहन के पूर्व (सर्ग३६), लकादहन के पश्चात् (सर्ग ५६) और राम-हनुमान्-सवाद मे (सर्ग ६८)। इसका मौलिक स्थान ३६ वाँ सर्ग है, क्योकि इसमे सीता हनुमान् से एक दिन ठहरने के लिये अनुरोध करती है, वह लकादहन के पश्चात् स्वाभाविक नही कहा जा सकता है। लकादहन के पूर्व यह नितान्त स्वाभाविक प्रतीत होता है।

इस वर्णन की पुनरावृत्ति का कारण यह है कि लकादहन के विस्तृत प्रक्षेप के बाद मौलिक कथावस्तु से सबध स्थापित करना था और इसका सरल उपाय विदा का

---

१ दे० डस रामायण, पृ० ३२-३५।

वर्णन दुहराना समझा गया है ।[1]

(२) हनुमान् दो बार सीता से भेट का वर्णन करते है (दे० रा० ५, ६५-६८ तथा ६, १२६), लेकिन लकादहन का कोई उल्लेख नही करते । इसके अतिरिक्त लका-वरोध के समय लका के सौदर्य का वर्णन किया गया है, जिसमे कही भी उसके दहन का निर्देश मात्र भी नही मिलता (दे० रा० ६, ३८-३९) ।

(३) लकादहन के प्रसग के अन्तर्गत हनुमान् द्वारा विरूपाक्ष तथा यूपाक्ष के वध का वर्णन किया गया है (सर्ग ४६) किन्तु युद्धकाड मे पुन दोनो का उल्लेख मिलता है (सर्ग ७६ और ९६) ।

यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि लका मे प्रवेश करते समय हनुमान् स्वय कहते है कि यदि मै राक्षसो द्वारा देखा गया तो राम के कार्य मे बाधा पड जायगी

मयि दृष्टे तु रक्षोभी रामस्य विदितात्मन ।
भवेद् व्यर्थमिद कार्यं रावणानर्थमिच्छत ।।४०।। (सर्ग २)

इसके अतिरिक्त भरद्वाज ने रामायण का जो सार सुनाया था (६, १२४), इसमे भी लकादहन का अभाव है। यद्यपि लकादहन का वर्णन निश्चित रूप से प्रक्षिप्त है फिर भी वह विभिन्न पाठो के पृथक् हो जाने के पूर्व प्राचीनकाल से किष्किधाकाण्ड का अग बन चुका था, इसका उल्लेख महाभारत के रामोपाख्यान (३, २६६, ६८) तथा बालकाण्ड की अनुक्रमणिकाओ (१, १, ७७, १, ३, ३३) मे भी मिलता है ।

लकादहन के बाद मे अनावश्यक पुनरावृत्ति पाई जाती है । **सर्ग ५६** मे हनुमान् पुन सीता से विदा लेते है । **सर्ग ५८** मे हनुमान् पुन वानरो के लिये लका की घटनाओ का वर्णन करते है और लकादहन का भी उल्लेख करते है । **सर्ग ५९-६०** अस्तव्यस्त तथा पुनरावृत्ति से भरपूर है । मधुवन मे वानरो के उत्पात का वर्णन (**सर्ग ६१-५४**) आधिकारिक कथावस्तु की गति मे बाधा उपस्थित करता है । इसमे जो हास्यरस का प्राधान्य पाया जाता है, वह भी मूल रचना के अनुकूल नही है ।[2] समुद्र-तरण की तैयारी का जो प्रस्ताव सर्ग ६५ के अन्त मे रखा गया है (**सागरजले सतार प्रविधीयताम्**), इससे पता चलना है कि पहले इस सर्ग के बाद सेतुबन्ध का वर्णन आता था (युद्धकाड सर्ग १) , वास्तव मे बीच के सर्गों (६६-६८) मे पुनरुक्ति मात्र मिलती है । सुन्दरकाड की निम्नलिखित शेष सामग्री अपेक्षाकृत प्राचीन है

---

१ गौडीय पाठ मे विदा का पहला वर्णन (लकादहन के पूर्व) सर्वथा हटाया गया है, जिससे पुनरावृत्ति-दोष का निवारण हुआ है ।

२ दे० एच० याकोबी, वही, पृ० ३७ ।

समुद्रलघन—सर्ग १ (अशत)
लका मे हनुमान् का प्रवेश—सर्ग २, ३ (अशत), ४
लका मे सीता की खोज—सर्ग ६
रावण के अन्त पुर मे हनुमान् का प्रवेश—सर्ग १०-११
हनुमान् का अशोकवन मे आगमन—सर्ग १३ (अशत) और १५
रावण-सीता-सवाद—सर्ग १८-२२
त्रिजटा का स्वप्न—सर्ग २७
हनुमान्-सीता-सवाद—सर्ग ३०, ३१, ३२ (१-५), ३४-३६
हनुमान् का अपने साथियो के पास लोटना—सर्ग ५७
राम के पास हनुमान् का प्रत्यागमन—सर्ग ६५

सुन्दरकाड का विकास

क । लका मे हनुमान् का प्रवेश

५३१ समुद्रलघन । प्रचलित रामायण के तीनो पाठो मे हनुमान् का समुद्रलघन वर्णित है, अद्भुत तथा अतिलौकिक होने के कारण यह प्रसग परवर्त्ती राम-साहित्य मे लोकप्रिय रहा है । मूल रामायण के अनुसार हनुमान समुद्र लाँघ कर नही, वल्कि तैर कर लका पहुँचा था । कथाबीज मे लिखा है—**"शतयोजनविस्तीर्णं पुप्लुवे लवणार्णवम्** (१, १, ७२), जिसका मुख्य तथा स्वाभाविक अर्थ है कि उसने तैर कर समुद्र को पार किया था ।[1]

सुन्दरकाण्ड के दो अन्य स्थलो मे इसका सकेत मिलता है कि हनुमान तैरकर आया था । वह सीता से कहता है—**त्वा तु पृष्ठगता कृत्वा सतरिष्यामि सागरम्** (३७, २२) और बाद मे हनुमान 'फिर' समुद्र के मध्य मे लोटने का निश्चय करता है—**प्रतिगन्तु मनश्चक्रे पुनर्मध्येन सागरम्** (५६, २५) ।

कालिदास के रघुवश (**मारुति सागर तीर्णं**, १२, ६०) तथा अग्निपुराण (**शतयोजनविस्तीर्णं पुप्लुवेऽब्धि स मारुति** , ९, २) के तत्सम्बन्धी उल्लेखो का भी तैर

---

१ 'प्लु' धातु का अर्थ लाँघना भी हो सकता है किन्तु मूल रामायण मे यह 'तैरने' के अर्थ मे प्रयुक्त हुआ है। सीता हनुमान् से कहती है कि समुद्र मे नौका नष्ट हो जाने पर तैरने वाले वीर की भाति राम शोक का समुद्र कैसे पार करेगे—

शोकस्यास्य कथ पार राघवोऽधिगमिष्यति ।
प्लवमान परिश्रान्तो हेतनौ सागरे यथा ।। (५, ३७, ५)

कर पार करने का अर्थ लगाया जा सकता है। धूर्ताख्यान में सुस्पष्ट शब्दो मे लिखा है कि रामायण के अनुसार हनुमान ने "भुजाभ्याम्" तैर कर समुद्र पार किया था—

श्रृण रामायणोदितम् ।
हनुमान् राघवोदिष्टो जानकीशुद्धिहेतवे ।
तीर्त्वा भुजाभ्यामम्भोधिं क्षणाल्लंकापुरीमागात् ।। (७३)

वाल्मीकि रामायण के दाक्षिणात्य पाठ मे हनुमान् के भार से महेन्द्र-पर्वत का दोलायमान हो जाना अपेक्षाकृत अधिक विस्तार से वर्णित है। दाक्षिणात्य तथा पश्चिमोत्तरीय पाठो के अनुसार हनुमान् समुद्रलंघन के समय क्रमश मैनाक, सुरसा तथा सिंहिका से भेंट करते है। गौडीय पाठ, अध्यात्म रामायण, आनन्द रामायण, माधव-कदलीकृत असमिया रामायण और कृत्तिवास रामायण मे क्रम इस प्रकार है—सुरसा मैनाक, सिंहिका। कम्ब रामायण, रंगनाथ रामायण, बलरामदास उडिया रामायण, तोरवे रामायण, रामचरितमानस, भावार्थ रामायण आदि मे दाक्षिणात्य पाठ का ही क्रम रखा गया है। स्याम के राम जातक मे हनुमान् और अंगद दोनो लंका मे प्रवेश करते है तथा सिंहली रामकथा मे हनुमान् के स्थान पर वालि लंका जाता है। शेष रामकथाओ मे हनुमान् ही समुद्र पार कर सीता का पता लगाते है। पाश्चात्य वृत्तान्त नं० १४ के अनुसार हनुमान् समुद्र पर पैदल चलकर लंका तक पहुँच गए थे।

सेरीराम मे हनुमान् कोई दृढ आधार न पाकर अन्त मे राम की बाहु से ही समुद्र को लाघते है। इस कथा मे कहा गया है कि हनुमान् का वीर्य समुद्र मे गिर गया तथा मछलियो की रानी ने उसे खाया और गर्भवती हुई। सेरीराम के पातानी पाठ के अनुसार हनुमान् राम के कन्धे से लंका-तट पर कूदते हैं।

बिर्होर तथा सथाल नामक आदिवासी जातियो की रामकथा मे हनुमान् समुद्र के मध्य मे राम द्वारा चलाये हुये बाण पर विश्राम करते है। एक अन्य आदिवासी कथा के अनुसार हनुमान पहले एक बाण चलाते है, तब कूदकर उस पर सवार हो जाते है और इस प्रकार समुद्र पार करते हैं (दे० अनु० २७४)।

अनेक वृत्तान्तो के अनुसार हनुमान् अपने लक्ष्य को पार करके लंका से बहुत दूर जाकर उतरते है। **सेरीराम** मे हनुमान् किसी महर्षि के आश्रम मे पहुँचकर उनका आतिथ्य सत्कार स्वीकार करते है और महर्षि के दिये हुये पथ-प्रदर्शक के साथ लंका मे प्रवेश करते है। **रामकियेन** (अध्याय २३) मे उस अवसर पर हनुमान् के गर्व-निवारण के विषय में निम्नलिखित कथा मिलती है। हनुमान् लंका के उस पार नारद के आश्रम मे पहुँचे। उन्होने नारद से रात भर रहने का स्थान माँगा और नारद हनुमान् को एक कुटीर के पास ले गये। नारद की अलौकिक शक्ति की परीक्षा लेने के उद्देश्य से हनुमान् ने अपना आकार बढाया जिस पर नारद ने भी कुटीर बढाया।

यह देखकर हनुमान अपने को और बढाने लगे किन्तु नारद के तपोबल से अत्यन्त ठडी वर्षा होने लगी जिससे हनुमान् अपना स्वाभाविक आकार धारण करने के लिए बाध्य हुए। दूसरे दिन प्रात काल हनुमान् आश्रम के निकट एक सरोवर मे नहाने गये, जहा नारद की प्रेरणा से एक जोक हनुमान् की ठोढी मे लग गई। हनुमान् उसे हटाने मे असमर्थ थे, उन्होने ऋषि के पास जाकर क्षमा मागी और जोक तुरन्त ही गिर गई। इन दोनो विदेशी कथाओ का आधार भारतीय ही है। **तोरवे रामायण** (५, १) के अनुसार हनुमान् ने लका से ७०० योजन दूर एक टापू पर उतरकर तृणविन्दु मुनि से भेट की तथा उनको सीताहरण का वृत्तान्त सुनाकर लका का मार्ग पूछा। मुनि ने उत्तर दिया कि मेरी समझ मे नही आता कि एक कायर कपि कैसे त्रिलोकविजेता रावण की राजधानी मे प्रवेश कर सकेगा। तब मुनि ने हनुमान् की बलपरीक्षा लेने के उद्देश्य से कहा—मुझे पद्मासन से ऊपर उठाओ। हनुमान् पूरी शक्ति लगाकर अन्त मे ऐसा करने मे समर्थ हुए और मुनि ने उनको बताया कि लका उत्तर मे है जिससे हनुमान् को लौटना पडा।

दक्षिण भारत के एक वृत्तान्त के अनुसार हनुमान् मलय तक लाँघकर वहाँ से सिंहलद्वीप पर कूद गये थे (पाश्चात्य वृत्तान्त न० ८)। **आनन्द रामायण** (१, ६, १७) मे इसका उल्लेख मात्र किया गया है कि हनुमान् ने परलका मे पहुँचकर वहाँ रावण की वहन क्रौंचा का वध किया था।[1] **भावार्थ रामायण** (५, १८) मे इस प्रसग का किंचित विस्तार सहित वर्णन मिलता है। लका के उपनगर परलका मे रावण की बहन तथा घर्घरासुर की विधवा अपनी १८००० दासियो के साथ निवास करती थी। हनुमान् ने दासियो को समुद्र मे फेक दिया तथा क्रौंचा का वध किया। यह कथा श्रीधरकृत **रामविजय** मे दुहराई गई है। पाश्चात्य वृत्तान्त न० १३ (पृ० ३४६) मे भी हनुमान् लका को पार करके लका द्वीप के दक्षिण तट पर उतरते है।

५३२ हनुमान् के छद्मवेश। वाल्मीकि रामायण के अनुसार हनुमान् ने विडाल के आकार के छोटे बन्दर का रूप धारणकर लका मे प्रवेश किया था

> **सूर्ये चास्त गते रात्रौ देह सक्षिप्य मारुति ।**
> **वृषदशकमात्रोऽथ बभूवाद्भुतदर्शन ॥४७॥** (सुन्दरकाड सर्ग २)

बाद मे इसका स्वाभाविक विकास यह हुआ कि हनुमान् वास्तव मे विडाल बनकर लका मे प्रवेश करते है। इसका उल्लेख अनेक रामकथाओ मे मिलता है, उदाहरणार्थ

१ इस रचना के अन्य स्थल (१, १३, ६४) पर लिखा है कि रावण ने खड्गजिह्व के साथ अपनी बहन क्रौंची का विवाह कराया था तथा दहेज मे परलका दे दी थी।

—बृहद्धर्मपुराण (पूर्वखड, अध्याय २० श्लोक २—श्रोतु भूत्वा) ।

—पद्मपुराण, बगीय पाठ, (जर्नल रो० ए० सो० १८४२, पृ० ११२६) ।

—दक्षिण भारत की १७ वी शती की दो रामकथाएँ (पाश्चात्य वृत्तान्त न० १ और ३) ।

—उत्तर भारत की एक रामकथा (पाश्चात्य वृत्तान्त न० १३) ।

—गुजराती नर्मदकृत रामायणसार ।

५३३ **रामचरितमानस** मे हनुमान् मशक सा छोटा रूप धारण कर लका मे प्रवेश करते है

मसक समान रूप कपि धरी ।
लकहि चलेउ सुमिरि नरहरी ॥ (५, ३, १)

भिन्न-भिन्न रामकथाओ मे हनुमान् भिन्न-भिन्न रूप धारण कर लका मे घुसते है । उदाहरणार्थ

भ्रमर गुणभद्रकृत उत्तरपुराण (दे० ६८, २६८), पाश्चात्य वृत्तान्त न० ३ और १३ ।

मूषिका वह्निपुराण (पृ० २६६ अ) ।

ब्राह्मण पाश्चात्य वृत्तान्त न० १, सेरीराम, गणकचरित्र । महानाटक के अनुसार हनुमान् ब्राह्मण के रूप मे अशोकवन नष्ट करते हैं ।

शुक बिर्होर आदिवासी कथा ।

काक पजाब का एक लोकगीत (दे० इ० ए० भाग ३८, पृ० १५०) ।

भैसा हिंदेशिया (ज० रो० ऐ० सो० स्ट्रेटस ब्रेच १६१०, पृ० २०) ।

राक्षस रामकियेन (अध्याय २४) ।

बलरामदास रामायण मे हनुमान छोटे वानर के रूप मे लका मे प्रवेश करता है और बाद मे ये रूप धारण कर लेता है—विडाल, कुत्ता, व्याघ्र, हाथी, सिंह, मनुष्य, गाय,भैसा, रात्रि-प्रहरी और भ्रमर ।

५३४ **अध्यात्म रामायण** मे कहा गया है कि सीता के सामने आते समय हनुमान् ने चटक पक्षी के बराबर आकार वाले छोटे वानर का रूप धारण किया (दे० ५, ३, ३०) । **आनन्द रामायण** की एक कथा के अनुसार हनुमान् छोटे बालक के रूप मे सीता के सामने प्रकट हुये (दे० ८, ७, २६) तथा **हिकायत महाराज रावण** के अनुसार एक वृद्धा के रूप मे । बलरामदास रामायण के अनुसार हनुमान् ने भ्रमर का रूप धारण कर सीता-रावण-सवाद सुना था । **माधव कदली** के रामायण के अनुसार हनुमान् अशोकवाटिका-विध्वस के पूर्व एक वृद्ध ब्राह्मण के रूप मे रावण से मिलने गये थे (दे० अनु० ५५२) । धनजय-कृत **गणकचरित्र** मे हनुमान क्रमश ज्योतिषी, भ्रमर,

विडाल तथा फिर ज्योतिषी का रूप धारण कर लेते हैं (दे० अनु० ५४२)। युद्ध तथा उत्तरकाड विषयक कथाओ मे भी हनुमान् के छद्मवेषो का उल्लेख मिलता हे (दे० ५६१, ५६६, ५६८, ६१४ ओर७५७)।

५३५ **लकादेवी**—वाल्मीकि रामायण के एक प्रक्षेप मे, जो केवल दाक्षिणात्य पाठ मे मिलता है, लकादेवी राक्षसी के रूप मे हनुमान् को रोक लेती है। हनुमान् से पराजित होकर वह कहती है कि स्वयभू ने उससे कहा था—तुम्हारी पराजय के बाद राक्षसो का नाश होगा (दे० ३, २०-५१)।

यह वृत्तान्त बाद की अधिकाश रामकथाओ में मिलता है, किन्तु अर्वाचीन रचनाओ मे इस वृत्तान्त मे रामभक्ति का भी समावेश किया गया है। **आध्यात्म रामायण** (५, १, ५७) मे लकादेवी हनुमान् से कहती है—आज बहुत दिनो के बाद मुझे ससार-बन्धन से मुक्त करने वाली राघव की स्मृति हुई है और उनके भक्त का अतिदुर्लभ सत्सग हुआ है। मै धन्य हूँ। मेरे हृदय मे विराजमान दशरथनन्दन मुझ पर प्रसन्न रहे। उस रचना मे तथा आनन्द रामायण (१, ६, २१) मे भी लकादेवी हनुमान् से सीता के रहने के स्थान का रहस्य प्रकट करती है। **रामचन्द्रिका** (१३, ४४) मे लकादेवी हनुमान् से पराजित हो जाने के बाद सुन्दरी का रूप धारण कर लेती है—**तजि देह भई तब ही बर नारी**। लकादेवी-वृत्तान्त के दो अन्य रूप भी मिलते है।

५३६ **पउमचरिय** (पर्व ५२) मे हनुमान् लका मे प्रवेश करते समय वज्रमुख का वध करते है और इसके बाद उसकी पुत्री **लकासुन्दरी** से युद्ध करते है। अन्त मे दोनो एक दूसरे की ओर आर्कषित होकर रात भर प्रेमक्रीडा करते है।

५३७ रामकथाओ का एक वर्ग पाया जाता है जिसमे लकादेवी के स्थान पर **चण्डिका** का उल्लेख किया गया है।

वृहद्धर्मपुराण (अध्याय २०) तथा **महाभागवत पुराण** (अध्याय ३६) के अनुसार हनुमान् शिव के अवतार है और देवी लका मे निवास करती है। लका मे पहुँचकर हनुमान् देवी के मन्दिर मे जाकर उनसे लका को त्याग देने की प्रार्थना करते है। सीता के अपमान के कारण रावण से अप्रसन्न होकर देवी लका छोड देती है।

कृत्तिवासीय रामायण मे लिखा है कि शकर ने चामुण्डा को हनुमान के आगमन तक लका मे निवास करने का शाप दिया था। गुजराती **नर्मदकृत रामायणसार** मे भी हनुमान् का उग्रचण्डिका से भेट करने का उल्लेख किया गया है।

५३८ **लका मे सीता की खोज**। वाल्मीकि रामायण मे इसका वर्णन किया गया है कि हनुमान् ने मुख्य राक्षसो के महलो मे (सर्ग ६) तथा रावण के अन्त पुर मे सीता की असफल खोज की थी (सर्ग १०-११)। इस वृत्तान्त के अनुसार हनुमान्

किसी से नही मिले और छिपकर अशोकवन मे चले गये। बहुत-सी परवर्ती राम-कथाओ मे उस अवसर पर हनुमान्-विभीषण की भेट का वर्णन किया गया हे। विमल-सूरिकृत **पउमचरिय** (पर्व ५३) के अनुसार विभीषण ने लका मे हनुमान् का स्वागत किया था, तथा सीता को लोटा देने के लिए रावण से आग्रह करने की प्रतिज्ञा भी की थी। गुणभद्रकृत **उत्तरपुराण** मे हनुमान् सीता से ही मिलकर राम के पास लौटते है, और राम द्वारा पुन लका भेजे जाते है जहा वह पहले विभीषण से मिलते है। विभी-षण रावण को समझाने की प्रतिज्ञा करता है और हनुमान् को रावण के पास ले जाता है। रावण सीता को लोटा देने से इनकार करता है और हनुमान् सीता को प्रणाम करने के बाद राम के पास लौटते है (पर्व ६८, ३६०-४३५)।

अर्वाचीन रामकथाओ मे विभीषण रामभक्त माना जाता है। **आनन्द रामायण** (१, ६, २४) मे लिखा हे कि रात को सीता की खोज करते हुए हनुमान् ने राम कीर्तन मे सलग्न विभीषण का देख लिया। भावार्थ रामायण (५, १) रामचरित मानस, गुजराती रामायणसार तथा उत्तर भारत के एक वृत्तान्त (पाश्चात्य वृत्तान्त न० १३) मे भी इस प्रकार का वर्णन मिलता है। रामचरितमानस के अनुसार विभीषण ने हनु-मान् से बताया कि सीता कहा है। उपर्युक्त पाश्चात्य वृत्तान्त मे विभीषण स्वय हनुमान् को सीता के पास ले जाता है। काश्मीरी रामायण (न० २६) के अनुसार नारद से हनुमान् की भेट हुई थी और नारद ने हनुमान् को लका की उत्पत्ति के विषय मे बता दिया था (दे० अनु० ६४४ टि०)।

५३६ अनेक अर्वाचीन रामकथाओ मे हनुमान् रात को लका मे सीता की खोज करते हुए अनेक प्रकार के **उत्पात** करते है।

आनन्द रामायण के अनुसार हनुमान् ने दीपो को बुझा दिया, बहुत से राक्षसो तथा राक्षसियो को नग्न किया, घडो को फोड डाला (१, ६, २५-२७) तथा अन्त मे रावण के वस्त्र विभीषण के पलग पर रख दिये तथा मय नामक राक्षस के वस्त्र रावण के पलग पर (दे० १, ६, ६२-६३)। **तत्त्वसग्रह रामायण** (५, ३) के अनुसार हनुमान् रावण तथा उसकी पत्नियो के सब वस्त्र समेट कर ले गये थे। दक्षिण भारत की एक रामकथा मे हनुमान् मन्दोदरी के बाल पलग के खम्भे मे बॉधते है, उसके आभरण चुराते है, रावण की छाती पर बैठ जाते है तथा दीपक बुझाकर चले जाते है (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० १, पृ० ६६)। **रामकेर्ति** (सर्ग ६) और **रामजातक** मे हनुमान् रावण तथा मन्दोदरी के बाल साथ-साथ बॉधते है और मत्र पढकर लिखते है कि जब तक मन्दोदरी रावण के सिर मे थप्पड न मारे कोई भी गॉठ नही खोल सकेगा। इस प्रकार उत्पातो के उल्लेख **रामकियेन** तथा **सेरीराम** के पातानी पाठ मे मिलते है, जब

हनुमान् युद्ध के समय छिपकर लका मे प्रवेश करते है (दे० अनु० ५९६)। पाश्चात्य वृत्तान्त न० १ के अनुसार हनुमान् ने लका मे सीता की खोज करते समय रावण का चन्द्रहास नामक खग चुराया था। **भावार्थ रामायण** (५, ३) के अनुसार हनुमान् ने सब के देखते-देखते उत्पात मचाया था तथा रावण की सभा के दीपको को बुझाया था।

ख। सीता-रावण-सवाद

५४० वाल्मीकि रामायण के अनुसार हनुमान् ने सीता को लका मे न पाकर अशोकवन मे प्रवेश किया था और वहाँ सीता को देखा (सर्ग १३-१७)। उसी रात्रि के अन्त मे रावण अपनी पत्नियो के साथ सीता के दर्शन करने आया तथा उसने दीनता-पूर्वक सीता से निवेदन किया कि वह उसे पति के रूप मे स्वीकार कर। सीता ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार[1] करते हुए रावण की निन्दा की और उसे परामर्श दिया कि मुझे राम के पास पहुँचा दो, नही तो राम निश्चय ही तुम्हारा वध करेगे। इस पर रावण ने क्रुद्ध होकर कहा कि निर्धारित अवधि (दे० ऊपर अनु० ५००) के दो मास रह गए, यदि तुम इसके बाद स्वेच्छा से मेरी पत्नी नही बनोगी तो रसोइये तुम्हारा शरीर काट कर मेरे प्रात के भोजन के लिये तैयार करेगे

द्वौ मासौ रक्षितव्यौ मे योऽव धिस्तेमया कृत।
तत शयनमारोह मम त्व वरवर्णिनि ॥८॥
द्वाभ्यामूर्ध्वं तु मासाभ्या भर्तार मामनिच्छन्तीम।
मम त्वा प्रातराशार्थे सूदाश्छेत्स्यन्ति खण्डश ॥९॥ सर्ग २२॥

यह कहकर रावण ने पहरा देनेवाली राक्षसियो को आदेश दिया कि वे सीता को उनके वश मे लाने का प्रयत्न करती रहे। तब धान्यमालिनी नामक राक्षसी ने रावण का आलिगन किया तथा सीता को त्यागकर अपने साथ रमण करने का निवेदन किया। इसके बाद रावण देव-गधर्व-नाग कन्याओ के साथ अपने महल लौटे (सर्ग १८-२२)।

अभिनन्दकृत **रामचरित** मे सीता रावण को शाप देती है कि तुम सपरिवार मर जाओगे और लका जला दिया जायेगा (१६, १६)। **अभिषेक** नाटक मे भी सीता

---

१ दाक्षिणात्य तथा पश्चिमोत्तरीय पाठ के अनुसार सीता ने अपने तथा रावण के बीच मे तृण रखा था, "**तृणमन्तरत कृत्वा**" (५, २१, ३)। पहले-पहल लका मे पहुँचकर सीता ने रावण को उत्तर देने के पूर्व ऐसा ही किया था (दे० ३, ५६, १)। अरण्यकाड का उल्लेख मौलिक है तथा तीनो पाठो मे मिलता है, यहा पर इसकी आवृत्ति प्रक्षिप्त है क्योकि गौडीय पाठ के समानान्तर सर्ग मे (५, २३) इसका उल्लेख नही होता।

के शाप का उल्लेख है (२, १८) ।

५४१ वाल्मीकि रामायण मे रावण के अशोकवन मे आगमन का कारण उसकी कामवासना ही मानी गई है (दे० १८, ५)। **पउमचरिय** (पर्व ५३) के अनुसार हनुमान् ने सीता की गोद मे राम की मुद्रिका फेक दी थी, उसे देखकर सीता को आनन्द हुआ। सीता के प्रसन्न होने के विषय मे सुनकर मन्दोदरी तुरन्त उनके पास आकर अनुरोध करने लगी कि वह रावण को पतिस्वरूप ग्रहण करे।[1] सीता ने अस्वीकार किया जिससे मन्दोदरी क्रुद्ध होकर उन्हे मारने के लिए उद्यत हुई । हनुमान् ने प्रकट होकर मन्दोदरी को रोक दिया और मन्दोदरी ने जाकर रावण को यह समाचार दिया कि हनुमान् आ गए है ।

अध्यात्म रामायण, आनन्द रामायण (१, ६, ६६) तत्त्वसग्रह रामायण (५, ४) मे रावण के आगमन का एक नया कारण दिया गया है। **अध्यात्म रामायण** (५, २, १५-१६) की तत्सबन्धी कथा इस प्रकार है । रावण उत्सुकतापूर्वक राम की प्रतीक्षा करता था, क्योकि उसे विष्णु के हाथ से मरकर मुक्ति की तीव्र अभिलाषा थी। उसी दिन रावण ने स्वप्न मे देखा कि राम का सन्देश लेकर कोई कामरूपी वानर वृक्ष की शाखा पर बैठकर सीता को देख रहा है। रावण ने सोचा कि यह स्वप्न सभवत सच है। अत उसने निश्चय किया कि मै अब अशोकवन जाकर सीता को अपने वाग्बाणो से वेधकर दु ख पहुँचा दू जिससे वानर यह सब देखकर राम को बताये और मुझे शीघ्र ही मुक्ति मिल जाय ।

धर्मखण्ड (अध्याय १०५) तथा **तत्वसग्रह रामायण** (५, ४) मे हनुमान् सीता-रावण-सवाद के अन्त मे रावण को भगा देते है। धर्मखण्ड मे रावण सीता को चन्द्रहास से मार डालना चाहता है किन्तु मन्दोदरी उसको रोक देती है और हनुमान् प्रकट होकर रावण की छाती पर मुष्टि प्रहार करते है जिससे रावण भयभीत होकर भाग जाता है। तत्त्वसग्रह रामायण के अनुसार भी हनुमान् ने विशालकाय रूप धारण कर रावण की छाती पर प्रहार कर उसे भगा दिया था । **प्रसन्नराघव** (अक ६, ३४) मे यह माना गया है कि जब रावण सीता का वध करने पर उतारू हो गया था तब हनुमान् ने रावण के हाथ मे अक्षयकुमार का मस्तक रख दिया था जिसे देखकर रावण मूर्च्छित होकर भूमि पर गिर गया था। बाद मे सचेत होकर वह हनुमान् को पकडने के लिए सीता को छोडकर चला गया ।

५४२ वाल्मीकि रामायण के अनुसार रावण ने सीता को **प्रलोभन** देने के उद्देश्य से उनको लका का वैभव दिखाया था (दे० अनु० ५००) तथा बाद मे दीनता-

---

१ रविषेण के पद्मचरित मे रावण उस अवसर पर मन्दोदरी को सीता के पास भेज देता है ।

पूर्वक उनसे निवेदन किया था कि वह उसे पति के रूप मे ग्रहण करे (दे० अनु० ५४०)। परवर्ती रचनाओ के अनुसार रावण ने सीता को विचलित करने के लिए अनेक उपायो का सहारा लिया था।[1] गुणभद्र के **उत्तरपुराण** (६८, ३२१-३२८) मे मजरिका नामक रावण की दूती की चर्चा है, जिसने सीता को विचलित करने का असफल प्रयत्न किया था। असमीया **गणकचरित** मे रावण की एक अन्य युक्ति का वर्णन किया गया है, कथावस्तु इस प्रकार है। रावण ने एक मायामय राम और लक्ष्मण की सृष्टि की और उनके साथ अशोकवन मे प्रवेश किया। रावण चाहता था कि वे मायामय राम-लक्ष्मण रावण को पतिस्वरूप ग्रहण करने का सीता से अनुरोध करे। इतने मे हनुमान चन्द्रपुर के ज्योतिषी के रूप मे लका मे प्रवेश कर गये, बाद मे वह भ्रमर बन कर और मालिनी के फूलो पर बैठकर मन्दोदरी के महल मे पहुँच गए। मन्दोदरी के यहाँ हनुमान् ने विडाल का रूप धारण कर लिया, मन्दोदरी ने उस विडाल को खिलाया किन्तु वह उसका माणिक्य छीनकर तथा उसके स्तनो पर नखक्षत कर भाग गया। तब हनुमान् ज्योतिषी के रूप मे उस समय अशाकवन मे जा पहुँचे जब माया-राम रावण से जीवन की भिक्षा माग रहा था। रावण को ज्योतिषी के गले मे मन्दोदरी का कण्ठमाणिक्य देखकर आश्चर्य हुआ। हनुमान् ने उससे कहा—मुझे यह माणिक्य एक गधर्व से मिला था जिसने मन्दोदरी के साथ अनुचित सम्बन्ध रखा है तथा उसके स्तनो पर नखक्षत किया है। इस पर रावण ने क्रुद्ध होकर ज्योतिषी को पकड लिया तथा उससे कहा—यदि तुम्हारा अभियोग सच निकला तो इनाम मिलेगा, नही तो मै तुम्हारा वध करूँगा। हनुमान् का कथन सच निकला, बाद मे वह सीता के पास आए तथा उनका समाचार लेकर राम के पास लौटे। उस वृत्तान्त के अन्त मे मन्दोदरी के सतीत्व का प्रभाव वर्णित है। रावण के तिरस्कार के कारण विरक्त होकर वह नारायण की स्तुति किया करती थी। बाद मे उसने अपने सतीत्व की शपथ खाकर भूकम्प उत्पन्न किया, सूर्य को रोक लिया तथा इन्द्र द्वारा पुष्प-वृष्टि कराई। यह सब देखते हुए भी रावण का सन्देह दूर नही हुआ। मन्दोदरी की अग्नि-परीक्षा के लिए आग जलाई जा चुकी थी कि दुवरी नामक स्त्री ने आकर रावण को विश्वास दिलाया कि हनुमान् का अभियोग मिथ्या है। मन्दोदरी ने अन्त मे रावण से यह अनुरोध किया—"तुमने सीता का अपहरण किया है, इसीलिए हनुमान् ने मेरा अपमान किया है। सीता को लौटाओ।"

---

१ पउमचरिय के अनुसार रावण ने सीता को लका मे पहुँचाकर उनको अपने वश मे करने के लिए माया का सहारा लिया था (दे० अनु० ५००), युद्ध के समय की युक्तियो का वर्णन अनु० ५८३ मे किया गया है।

बिर्होर नामक आदिवासियो की रामकथा (दे० अनु० २७२) मे यह माना गया है कि सीता ने रावण के बलात्कार से बचने के लिए जादू द्वारा अपने शरीर मे भयकर फोडे उत्पन्न किए थे। रावण के अपेक्षाकृत अच्छे व्यवहार के कारणो का विश्लेषण ऊपर हो चुका है (दे० अनु० ५००)।

५४३ वाल्मीकि रामायण के सीता-रावण सवाद के अन्तर्गत (सर्ग १८-२२) मन्दोदरी का कही भी उल्लेख नही किया गया है। सुन्दरकाण्ड के प्रक्षिप्त सर्ग ५८ मे हनुमान् वानरो के लिए पुन लङ्का की घटनाओ का वर्णन करते है। सीता-रावण सवाद के विषय मे यह कहते है कि सीता के अपमानजनक शब्द सुनकर रावण उन्हे मारने के लिए उद्यत हुआ किन्तु मन्दोदरी ने उसे रोक लिया तथा अपने साथ क्रीडा करने का रावण से अनुरोध किया था। इस वृत्तान्त के आधार पर बहुत-सी परवर्ती रचनाओ मे यह माना गया है कि मन्दोदरी सीता-रावण-सवाद के समय अशोकवन मे उपस्थित थी, उदा०---रगनाथ रामायण (५, ७), धर्मखण्ड (अध्याय १०५), अध्यात्म रामायण (५, २, ३८), आनन्द रामायण (१, ९, ८४), भावार्थ रामायण (५, ८), तोरवे रामायण (५, ३), रामचरितमानस (५, १०), आश्चर्यचूडामणि (अक ५)। इन अधिकाश रचनाओ मे मन्दोदरी रावण को सीता-वध करने से रोक लेती है। बलरामदास रामायण के अनुसार त्रिजटा ने उस अवसर पर रावण को रोका था।

काश्मीरी रामायण के अनुसार रावण ने हरण के बाद ही सीता को मन्दोदरी की देखरेख मे छोड दिया था (दे० अनु० ५००)। गुणभद्र के **उत्तरपुराण** (६८, ३२८-३६४) के अनुसार रावण अपनी दूती मजरिका के असफल प्रयत्न के पश्चात् स्वय सीता के पास आकर अनुनय-विनय करने लगा। सीता का तिरस्कार-पूर्ण उत्तर सुनकर रावण को क्रोध आया था किन्तु मन्दोदरी ने उसे शान्त कर दिया तथा उसे स्मरण दिलाया कि सती स्त्रियो का अपमान करने से आकाशगामिनी आदि विद्याएँ नष्ट हो जाती है। इस पर रावण अपने महल लौटा, मन्दोदरी सीता के पास आई तथा यह देखकर कि मेरा स्नेह बढ रहा और मेरे स्तनो से दूध झर रहा है, उसने अनुमान किया कि यह मेरी पुत्री है जिसे मैने जन्म के बाद ही छोड दिया था (दे० अनु० ४१२)। मन्दोदरी ने सीता मे अनुरोध किया कि चाहे मरना ही क्यो न पडे किन्तु रावण का मनोरथ पूर्ण मत करना। तब उसने यह कहकर सीता को भोजन के लिए बाध्य किया कि यदि तुम नही खाओगी तो मैं भी उपवास करूँगी। मन्दोदरी के चले जाने के बाद हनुमान् ने अपने को सीता के सामने प्रकट किया।

५४४ प्रामाणिक वाल्मीकि रामायण मे रावण-वध के पूर्व मन्दोदरी के हस्तक्षेप का कही भी उल्लेख नही था। सुन्दरकाण्ड के एक प्रक्षेप के अनुसार (जो

तीनो पाठो मे मिलता है) मन्दोदरी ने सुन्दरकाण्ड की घटनाओं के समय रावण को सीता-वध करने से रोका था (दे० ऊपर अनु० ५४३)। उदीच्य पाठ मे इसका वर्णन मिलता है कि मन्दोदरी ने प्रहस्त-वध के बाद रावण से अनुरोध किया कि वह राम से युद्ध न करे क्योकि राम मनुष्य-मात्र नही है (दे० अनु० ५५८)। इसके अतिरिक्त पश्चिमोत्तरीय पाठ मे रावण के यज्ञध्वस के प्रसग मे मन्दोदरी के केशग्रहण का वर्णन किया गया है (दे० अनु० ५६७)। उत्तरकाण्ड (सर्ग १२) मे रावण के साथ मन्दोदरी के विवाह का भी वर्णन किया गया है (अनु० ६५०)।

परवर्ती रामसाहित्य मे मन्दोदरी को कथानक मे अधिक स्थान मिला है। सीता की बहुत-सी जन्म-कथाओ मे वह सीता की मा मानी गई है (दे० अनु० ४१२-४१७, ४२०-४२१)। सीताहरण के बाद (दे० अनु० ५००) तथा सीता रावण-सवाद (दे० अनु० ५४१-५४३) के समय मन्दोदरी विषयक सामग्री का निरूपण हो चुका है।

युद्धकाण्ड के कथानक मे भी मन्दोदरी के हस्तक्षेप का अनेक रचनाओ मे वर्णन किया गया है। **पउमचरिय** (७०, ३१) के अनुसार अतिम युद्ध के ठीक पहले मदोदरी ने रावण के सामने यह प्रस्ताव रखा था कि मे सीता को लेकर राम के पास जाऊँ। **भावार्थ रामायण** (६, ५५) मे इन्द्रजित्-वध के बाद रावण मन्दोदरी को धमकी देकर बाध्य करता हे कि अशोकवन मे जाकर रावण की इच्छा पूरी करने का सीता से अनुरोध करे। बहुत-सी अर्वाचीन रचनाओ मे मन्दोदरी ने उसी समय रावण को सीता का वध करने से रोका था (दे० अनु० ५६३)। **अध्यात्म रामायण** (६, १०, ४४) तथा **आनन्द रामायण** (१, ११, २४१-२४२) मे मन्दोदरी रावण के यज्ञ विध्वस के बाद फिर अपने पति से सीता को लौटाने का अनुरोध करती है। **रामचरितमानस** मे मन्दोदरी को रामभक्तिन के रूप मे चित्रित किया गया है, वह अपने पति को तीन विभिन्न अवसरो पर भगवान की शरण लेने का उपदेश देती है (सुन्दरकाण्ड ३६, युद्धकाण्ड १४-१६ और ३५)। **रामकियेन** मे मन्दोदरी के सजीवन-यज्ञ का भी वर्णन किया गया है (दे० अनु० ५६७)।

वाल्मीकीय युद्धकाण्ड (सर्ग १११) मे रावण-वध के पश्चात् मन्दोदरी के विलाप का विस्तार के साथ वर्णन किया गया है, किन्तु आदिकाव्य मन्दोदरी के उत्तर-चरित के विषय मे मौन है। आनन्द रामायण और भावार्थ रामायण (६, ५५) के अनुसार मन्दोदरी रावण के वध के बाद सती बन गई थी— **तदा मन्दोदरी भर्त्रा सह देह विसृज्य सा ययौ वैकुण्ठभवन रावणेन मुदान्विता।**[1] अनेक रामकथाओ मे मन्दोदरी और विभीषण के विवाह का उल्लेख मिलता है (दे० अनु० ५७२)।

---

१ दे० आनन्द रामायण, सारकाण्ड ११, २५५। **कबरामायण** (६, ८५) के कुछ सस्करणो मे भी मन्दोदरी के सती हो जाने की कथा मिलती है।

काश्मीरी रामायण (युद्धकाण्ड, ५४) तथा **मसीही रामायण** (अनु० ३०६) के अनुसार मन्दोदरी रावणवध के बाद सीता को राम के पास ले गई थी किन्तु कृत्तिवास ने माना है कि जब सीता सुवर्ण पालकी मे बैठकर राम से मिलने जा रही थी उस समम मन्दोदरी ने सीता को यह शाप दिया था---तुम्हारे कारण मैने अपने पति को खो दिया है । तुम्हारा भी आनन्द अचानक निरानन्द बन जायगा (६, ११४) ।

मन्दोदरी की सृष्टि तथा विवाह विषयक सामग्री रावण-चरित के अन्तर्गत रखी गई है (दे० अनु० ६५०) । काश्मीरी रामायण के अनुसार मन्दोदरी वास्तव मे एक अप्सरा थी जो रावण के विनाश के लिए पृथ्वी पर आई थी (दे० युद्धकाण्ड, ५३) ।

ग । त्रिजटा-चरित

५४५ वाल्मीकि रामायण के अनुसार त्रिजटा एक बूढी राक्षसी[1] थी जो सीता का चरित्र देखकर उनकी ओर आर्कषित हुई थी और जिसने दो अवसरो पर सीता को सान्त्वना दी थी ।

सुन्दरकाण्ड (सर्ग २७) का प्रसग इस प्रकार है । रावण के चले जाने के बाद राक्षसियाँ सीता को डराने लगी थी । त्रिजटा ने उन्हे डाटकर कहा कि मैने एक भयानक स्वप्न देखा है जो राक्षसो का नाश तथा राम की विजय सूचित करता है । अनन्तर उसने विस्तार-पूर्वक उस स्वप्न[2] का वर्णन किया तथा अन्त मे राक्षसियो से अनुरोध किया कि वे सीता से क्षमा माँग ले । सीता ने सबो को अभयदान दिया ।

युद्धकाण्ड मे जब इन्द्रजित् ने राम तथा लक्ष्मण को नागपाश मे बाँधा था (दे० अनु० ५८६) तब रावण ने सीता तथा त्रिजटा को पुष्पक पर बैठा कर रणभूमि मे निस्सहाय पडे हुए राम और लक्ष्मण को दिखलाया । सीता दोनो को मृत समझ कर करुण विलाप करने लगी किन्तु त्रिजटा ने सीता को आश्वासन दिया कि राम और लक्ष्मण जीवित ही हैं । उस सर्ग मे त्रिजटा ने सीता के प्रति अपने स्नेह का उल्लेख किया—**स्नेहादेतद् ब्रवीमि ते** (४८, २८), **चारित्रसुखशीलत्वात्प्रविष्टासि मनो मम** (४८,२६) । **रामायण ककविन** (सर्ग २१) के अनुसार सीता राम को शरपाश मे

---

१ "राक्षसी त्रिजटा वृद्धा,' (५, २७, ४) । महाभारत (३, २६४,४) मे उसे "धर्मज्ञा प्रियवादिनी" कहा गया है ।

२ परवर्ती साहित्य मे त्रिजटा के स्वप्न का कोई विशेष विकास परिलक्षित नही होता । स्वयभूदेवकृत पउमचरिउ (५०, ८) तथा कृत्तिवास के रामायण (५, १५) के अनुसार त्रिजटा ने स्वप्न मे हनुमान् का आगमन, लका-दहन आदि देखा था ।

बँधा हुआ देखने के बाद त्रिजटा से चिता तैयार करने का निवेदन करती है किन्तु त्रिजटा अपने पिता विभीषण से मिलने जाती है और राम के कुशल-क्षेम का शुभ समाचार लेकर लौटती है।

५४६ त्रिजटा-चरित का परवर्ती विकास समझने के लिए सीता की अन्य हितैषिणी राक्षसियो से सम्बन्ध रखने वाली सामग्री का निरूपण आवश्यक है।

वाल्मीकीय सुन्दरकाण्ड मे विभीषण की पत्नी तथा पुत्री की चर्चा है। सीता इनके विषय मे हनुमान् से कहती है कि **कला** नामक विभीषण की ज्येष्ठा पुत्री ने अपनी माता के आदेशानुसार मुझसे कहा है कि विभीषण तथा अविंध्य[1] के सत्परामर्शों की अवज्ञा करके रावण ने सीता को लौटाना हठपूर्वक अस्वीकार कर दिया है (५, ३७)। विभीषण की इस पुत्री के नाम के विषय मे मतैक्य नही हैं। उदीच्य पाठ के अनुसार इसका नाम **नन्दा** था (गौ० रा० ५, ३५, १२, प० रा० ४, ३४, ११) और टीकाकार गोविन्दराज के पाठ मे (५, ३७, ११) तथा जानकीपरिणय मे कला के स्थान पर **अनला** नाम मिलता है।[2]

सीता की अन्तिम हितैषिणी **सरमा** का उल्लेख वाल्मीकि रामायण के प्रामाणिक सर्गो मे नही मिलता। युद्धकाण्ड के एक प्रक्षेप के अनुसार (दे० अनु० ५८३) रावण ने सीता को विचलित करने के उद्देश्य से सीता को राम का मायाशीर्ष दिखलाया था किन्तु सरमा ने सीता के पास आकर रावण के छल-कपट का रहस्य प्रकट किया। इसके बाद सरमा ने सीता को यह शुभ समाचार दिया कि राम समुद्र पार कर लङ्का के निकट आ पहुँचे हैं। उसने राम के पास सीता का सन्देश ले जाने का प्रस्ताव किया किन्तु सीता ने यह निवेदन किया—"मेरे विषय मे रावण के निर्णय का पता लगाकर आओ।" सरमा ने ऐसा ही किया और वह सीता के पास यह समाचार लेकर आई कि रावण अपनी माता और सभासदो का अनुरोध ठुकराकर सीता को लौटाना अस्वीकार करता है। सरमा के विषय मे लिखा है कि वह सीता की '**प्रणयिनी**' सखी है जिसके साथ सीता ने मित्रता की थी (**सा हि तत्र कृता मित्र सीतया**, ६, ३३, ३)। उदीच्य पाठ (गौ० रा० ५, ५२, प० रा० ५, ५१) मे सरमावाक्यम् नामक सर्ग पाया

---

१ अविंध्य के विषय मे अनु० ४६ देख ले। विभीषण-सम्बन्धी सामग्री अनु० ५६८-५७२ मे सकलित है।

२ उत्तरकाण्ड मे एक अन्य अनला नामक राक्षसी का उल्लेख है जो माल्यवा। की पुत्री, विभीषण की मौसी (७, ५, ३६) तथा कुभनसी की माता (७, २५, २४) है।

जाता है जिसमे सरमा सीता के लिए लङ्कादहन का वर्णन करती है।[1]

उपर्युक्त दोनो वृत्तान्तो मे सरमा तथा विभीषण के किसी सम्बन्ध का सकेत मात्र भी नही किया गया है। सुन्दरकाण्ड मे सीता-हनुमान्-सवाद के अन्तर्गत सीता-हितकारिणी के रूप मे विभीषण की पत्नी का उल्लेख था, बाद मे सीता की प्रिय सखी सरमा के उपकारो का वर्णन मिलता था, अत उत्तरकाण्ड के व्यासो ने सरमा को विभीषण की पत्नी घोषित कर दोनो को अभिन्न माना है। उत्तरकाण्ड के अनुसार 'धर्मज्ञा' सरमा गन्धर्वराज शेलूष की पुत्री है, इसके नाम की व्युत्पत्ति के विषय मे कहा गया है कि उसने मानस नामक सरोवर के तट पर जन्म लिया था। वर्षा के कारण सरोवर की बाढ अपने तक आते देखकर शिशु रोने लगा था जिस पर उसकी माँ ने कहा था—**'सरो मा वर्धत'** और इसलिए शिशु का नाम **'सरमा'** ही रखा गया था (७, १२, २४-२७)।

सरमा नाम के विषय मे कृत्तिवास ने एक अन्य कल्पना की हे। उन्होने सरमा को लङ्का मे सीता की एकमात्र हितैषिणी मानकर लिखा है—**सीता ओ सरमा जेन दुइटि भगिनी**। हनुमान् के प्रकट होने के पूर्व सरमा सीता से मिलने आई थी, उस अवसर पर सीता ने सरमा से कहा—मै रमा हूँ, मेरे ही कारण तुम्हारा नाम सरमा रखा गया हे (कृत्तिवास रामायण ५, १६)।

५४७ (१) रामायण अथवा महाभारत मे कही भी **विभीषण** और **त्रिजटा** के किसी सम्बन्ध का निर्देश नही मिलता। परवर्ती साहित्य मे सीता के प्रति कला तथा सरमा के उपकारो का श्रेय त्रिजटा को दिया गया, फलस्वरूप त्रिजटा को विभीषण की पुत्री अथवा उसकी पत्नी माना गया है। बहुत-सी रचनाओ मे त्रिजटा का विभीषण की पुत्री के रूप मे उल्लेख मिलता है, उदाहरणार्थ—गोविन्दराज की टीका (५, २७, ४), कब रामायण (५, ६), बलरामदास रामायण, रामायण ककविन, सेरीराम। **आनण्द रामायण** के रचयिता ने त्रिजटा को विभीषण की पत्नी माना है—**त्रिजटा नाम्नी विभीषणप्रियानुगा** (१, ६, १०१)। **वसुदेवहिण्डि** तथा **भावार्थ रामायण** (५, १०) मे त्रिजटा का विभीषण की बहन के रूप मे उल्लेख हुआ है। **रामकियेन** (अध्याय

---

१ कल्किपुराण (३, १७, ४०) मे कहा गया है कि सीता ने सरमा के साथ रुक्मिणी व्रत का पालन किया था। महाभारत के रामोपाख्यान अथवा पउमचरिय मे कही भी सरमा का उल्लेख नही है। आनन्द रामायण (१, १२, ४४) के अनुसार सरमा तथा त्रिजटा दोनो ने सीता के साथ पुष्पक पर अयोध्या की यात्रा की थी।

२५) के अनुसार रावण ने विभीषण को निर्वासित कर उसकी पत्नी त्रिजटा को सीता की सेवा मे नियुक्त किया था।

(२) महाभारत के रामोपाख्यान के अनुसार सीता ने हनुमान् से कहा था कि त्रिजटा ने मुझे अविंध्य का यह सन्देश दिया—"राम तथा लक्ष्मण सकुशल है और वे वानर-सेना लेकर तुम्हे छुडाने आ रहे है। रावण से मत डरना क्योकि नलकूबर के शाप के कारण वह तुम्हारा कुछ भी नही बिगाड सकता है" (दे० ३, २६४, ५८)। वाल्मीकि रामायण के अनुसार सीता ने उस अवसर पर कला नामक विभीषण की पुत्री की चर्चा की है।[1] त्रिजटा के स्वप्न के प्रसग के अतिरिक्त महाभारत के एक अन्य स्थल पर भी त्रिजटा का उल्लेख है, रावण-वध के बाद लङ्का से चले जाते समय राम ने त्रिजटा को अर्थ और सम्मान प्रदान किया था—**त्रिजटा चार्थमानाभ्या योजयामास राक्षसीम्** (३, २७५, ३९)।

(३) रघुवश (१२, ७४), सेतुबध (सर्ग ११), बलरामदास रामायण, रामायण ककविन (सर्ग १७), सेरीराम आदि रचनाओ मे राम के मायाशीर्ष के प्रसग मे त्रिजटा ही सरमा का स्थान लेती है (दे० अनु० ५८३)। **प्रसन्नराघव** (अक ६) मे त्रिजटा सीता के निवेदन पर आकाश मे स्थित होकर (**खेचरी भूत्वा**) मेघनाद द्वारा हनुमान् के बधन तथा लकादहन का वर्णन करती है। उदीच्य पाठ मे इस प्रसग मे सरमा की चर्चा है।[2] इस प्रकार हम देखते है कि वाल्मीकि रामायण के अनुसार विभिन्न राक्षसियो ने सीता के लिए जो कुछ भी किया था, वह सब बाद मे त्रिजटा का ही उपकार माना गया है। रामकथा के कवियो ने इतने ही से सन्तोष न लेकर कथानक मे त्रिजटा का स्थान और महत्त्वपूर्ण बना दिया है।

(४) प्रचलित वाल्मीकि रामायण के एक प्रक्षिप्त सर्ग मे सीता के **आत्महत्या-विचार** का उल्लेख है (५, सर्ग २८)। प्रसन्नराघव तथा रामचरितमानस के अनुसार त्रिजटा ने इस अवसर पर सीता की रक्षा की थी (दे० अनु० ५४८)। परवर्ती साहित्य मे राम के मायाशीर्ष तथा नागपाशबधन के प्रसग मे भी त्रिजटा द्वारा सीता के आत्महत्या-विचार दूर करने की कथा मिलती है (दे० अनु० ५८३ और ५८६)। बलराम-

---

१ कम्ब रामायण (५, ६) मे भी सीता हनुमान् से कहती है कि विभीषण की पुत्री त्रिजटा ने मुझे रावण को दिए हुए शाप से अवगत किया है। यदि रावण उसके साथ मिलने की इच्छा न रखने वाली स्त्री का स्पर्श करे तो वह मर जायगा। बलरामदास के अनुसार सीता ने हनुमान् से कहा था—यदि मैं आज जीवित हूँ तो इसका श्रेय त्रिजटा को है।

२ इसका उल्लेख कम्ब रामायण (५, ६) मे भी मिलता है।

त्रिजटा ने सीता से अनुरोध किया था कि वह रावण की शरण लेकर लका की पटरानी बन जाए ।

(७) भारत की अपेक्षा **हिन्देशिया** के राम-साहित्य मे त्रिजटा को अधिक महत्त्व दिया गया हे । **रामायण ककविन** मे त्रिजटा-चरित इस प्रकार है । सीता-रावण-सवाद के बाद ३०० राक्षसियाँ सीता को सताने और धमकी देने लगी, एक ही त्रिजटा नामक राक्षसी ने सीता का पक्ष लिया । त्रिजटा की सहानुभूति पाकर सीता ने उसे अपने दुर्भाग्य की कथा सुनाई । बाद मे दोनो मिलकर मदिर मे प्रार्थना करने गई (सर्ग ८) । राम-लक्ष्मण के मायामय शीर्ष देखकर सीता अग्नि मे प्रवेश करने की तैयारिया करने लगी, और त्रिजटा ने उसका साथ देने का निश्चय किया किन्तु वह पहले अपने पिता विभीषण को इसकी सूचना देने चली गई और सुवेल पर्वत पर अपने पिता से मिलकर यह शुभ समाचार लेकर लौटी कि राम और लक्ष्मण दोनो जीवित हैं । अनन्तर सीता ने राम-विजय के लिए अग्नि से प्रार्थना की, तब वह त्रिजटा और अन्य कुमारियो के साथ खेलने लगी किन्तु उनका मन राम पर ही लगा रहता था (सर्ग १७) । शरपाश मे राम को बँधा हुआ देखकर सीता ने चिता तैयार करने का त्रिजटा से निवेदन किया, किन्तु त्रिजटा ने अपने पिता से मिलकर सीता को आश्वासन दिया कि राम सकुशल है (सर्ग २१) । अग्नि-परीक्षा के समय त्रिजटा ने सीता के सतीत्व का साक्ष्य दिया तथा वह बाद मे सीता के साथ अयोध्या चली आई (सर्ग २४) । सीता द्वारा त्रिजटा की विदाई का वर्णन अन्तिम सर्ग मे किया गया है ।

सेरीराम मे विभीषण को पुत्री त्रिजटा को सीता पर पहरा देने वाली राक्षसियो की अध्यक्षा माना गया है । राम-लक्ष्मण का माया-शीर्ष देखकर सीता आत्म-हत्या करना चाहती थी, उस समय त्रिजटा ने राम के पास जाकर सीता को प्रमाण दिया कि राम जीवित ही है (दे० अनु० ५८३) । **सेरत काण्ड** मे त्रिजटा तथा जाम्ब-वान के विवाह का भी उल्लेख किया गया है ।

घ । सीता-हनुमान्-संवाद

५४८ वाल्मीकि रामायण के एक प्रक्षिप्त अश के अनुसार (सर्ग २८-२६) हनुमान् के आगमन के ठीक पहले सीता **आत्महत्या** करने का विचार कर रही है ।[1] विष अथवा किसी तीक्ष्ण शस्त्र के अभाव मे वह अपनी वेणी से फाँसी लगाने के विचार

---

१ सर्ग ३० मे हनुमान् आशका प्रकट करते है कि यदि मैं सीता से बातचीत किये बिना चला जाऊँ तो वह अवश्य ही आत्महत्या कर लेगी (श्लोक ६ और १२) ।

से अशोकवृक्ष के पास जाती है । इसकी एक शाखा पकडकर वह राम-लक्ष्मण तथा अपने कुल के विषय मे सोचने लगती है, उसी समय उनके शरीर मे शुभ लक्षण प्रकट होने लगते है । **अध्यात्म रामायण** (५, ३, २), **आनन्द रामायण** (१, ६, १०७) तथा अन्य परवर्ती रचनाओ मे भी इस प्रकार का वर्णन मिलता है । अभिनन्द कृत राम-चरित (२०, २-३) तथा **रामकियेन** (अध्याय १४) के अनुसार सीता अपने को फासी लगा चुकी थी कि हनुमान् ठीक समय पर पहुँचकर गाँठ खोल देते है । **आश्चर्यचूडामणि** (अक ५) मे भी सीता के जल मे प्रवेश कर आत्महत्या करने के विचार का उल्लेख मिलता है । उत्तर भारत के एक वृत्तान्त के अनुसार सीता ने एक वर्ष के बाद रावण की पत्नी बनने का वचन दिया था और हनुमान् के पहुचने के समय आत्महत्या का विचार कर रही थी ।[1]

प्रसन्नराघव (६, १४-३५) की तत्सबधी कथा इस प्रकार है । अशोकवन मे रावण के आगमन के पूर्व सीता और त्रिजटा वार्त्तालाप कर रही थी, रावण के चले जाने के बाद सीता ने त्रिजटा से कहा कि मैने अग्नि मे प्रवेश करने का निश्चय किया है मुझे कही से आग ला दो—**तदुपनय अगारखडकम** । त्रिजटा ने यह कह कर टाल दिया कि इस स्थान मे आग सुलभ नही है । **रामचरितमानस** (५, १२) का यह वृत्तान्त प्रसन्नराघव पर ही आधारित है ।

५४६ वाल्मीकि रामायण मे सीता से हनुमान् के मिलने की कथा इस प्रकार है ।[2] सीता को अशोकवन मे देखकर हनुमान् सोचने लगते है कि मै अब क्या करूँ और अन्त मे यह निश्चित करते है कि मै "**मानुषी सस्कृत**" बोलकर राम का गुणगान करूँगा (सर्ग ३०) । अनन्तर हनुमान् ने सीता के सुनने योग्य स्वर मे रामचरित का सक्षिप्त वर्णन किया । सीता को सुनकर विस्मय हुआ और उन्होने आखे ऊपर उठाकर शिशपा वृक्ष पर हनुमान् को देखा (सर्ग ३१) और विलाप करने लगी (सर्ग ३२, १-५) । हनुमान् ने अपने को रामदूत कहकर राम के कुशलक्षेम का शुभ समाचार सुनाया । सीता को पहले तो हर्ष हुआ किन्तु अनन्तर वह हनुमान् को कामरूपी रावण समझकर सन्देह मे पड गई (सर्ग ३४) । तब हनुमान् ने सीता को राम की मुद्रिका अर्पित की तथा आश्वासन दिया कि राम शीघ्र ही आने वाले है (सर्ग ३६) । सीता

१ दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० १३, पृ० ३५८ । अन्य अवसरो पर भी सीता के आत्महत्या-विचार का उल्लेख मिलता है, दे० अनु० ५८३, ५८६ और ७४१ ।

२ प्रस्तुत निरूपण मे केवल प्रामाणिक सामग्री का ध्यान रखा गया है (दे० अनु० ५३०) ।

अब पूर्ण रूप से विश्वस्त होकर यह सन्देश देने लगी कि यदि राम मुझे जीवित पाना चाहे तो दो महीने के अन्दर आ जाएँ। तब हनुमान् ने सीता को अपनी पीठ पर राम के पास ले जाने का प्रस्ताव किया। सीता ने पहले हनुमान् की सामथ्य पर अविश्वास किया—**कथ चाल्पशरीरस्त्व मामितो नेतुमिच्छसि** (३७,३२)। इस पर हनुमान् ने अपना शरीर बढाकर अपनी शक्ति का प्रमाण दिया। अनन्तर सीता ने हनुमान् के विरोध मे पाच तर्क प्रस्तुत किए—(१) मुझे गिर जाने का भय है, (२) तुमको जाते देखकर राक्षस आक्रमण करेगे, तुम उनके साथ युद्ध करते समय मेरी रक्षा न कर सकोगे, (३) यदि तुम ही राक्षसो को मारोगे तो राम का अपयश होगा, (४) राक्षस सभवत मुझे पकडकर किसी गुप्त स्थान मे रखेगे, (५) मै राम को छोडकर किसी दूसरे का शरीर नही स्पर्श करना चाहती हूँ—**भर्तुर्भक्ति पुरस्कृत्य रामादन्यस्य वानर, नाह स्प्रष्टु स्वत गात्रमिच्छेय वानरोत्तम** (३७, ६२)। हनुमान् ने सीता के तर्क मानकर एक अभिज्ञान मागा।

यदि नोत्सहे यातु मया सार्धमनिंदिते।
अभिज्ञान प्रयच्छ त्व जानीयाद्राघवो हि यत् ॥१०॥ (सग ३८)

सीता ने उनको काक-वृत्तान्त सुनाया, अपना चूडामणि दे दिया (सर्ग ३८) तथा हनुमान् को जाने के लिए उद्यत देखकर उनसे निवेदन किया कि वह एक दिन के लिए उनके पास ठहर जाएँ। हनुमान् राम के शीघ्र आने का आश्वासन देकर चले गए (सर्ग ३९)।

५५० इस सामग्री मे आगे चलकर अपेक्षाकृत कम परिवर्तन अथवा परिवर्द्धन किया गया है।

(१) सीता के सामने प्रकट होते समय हनुमान् के विभिन्न **छद्मवेषो** का उल्लेख ऊपर हो चुका है (दे० अनु० ५३४)। **सेरीराम** के अनुसार हनुमान् ने ब्राह्मण के रूप मे लका मे प्रवेश किया था। वह किसी जलकूप के पास बैठकर विश्राम कर रहे थे कि ४० महिलाएँ स्वर्ण पात्रो मे जल भरने आई। हनुमान् को पता चला कि ये सीता के स्नान के लिए पानी ले जा रही है, अत उन्होने राम की मुद्रिका एक पात्र मे फेक दी। बाद मे सीता ने मुद्रिका पाकर ब्राह्मण को बुलाया।

(२) वाल्मीकि रामायण के एक प्रक्षिप्त सर्ग के अनुसार सीता के निवेदन पर हनुमान् ने राम के शरीर का "**यथातत्व**" वर्णन किया था (सर्ग ३५)। **कम्ब रामायण** (५, ५, ३९-५८) और **रगनाथ रामायण** (५, १४) मे यह वर्णन अपेक्षाकृत अधिक विस्तार के साथ दिया गया। राम द्वारा दिए हुए अभिज्ञानो का किष्किन्धाकाण्ड के प्रसग मे उल्लेख हो चुका है (दे० अनु० ५२५)।

(३) हनुमान् की पीठ पर चढना स्वीकार करते समय सीता के उपर्युक्त तर्कों मे से अन्तिम तर्क (कुलवधू-मर्यादा) को ही परवर्ती साहित्य मे सर्वाधिक मान्यता दी गई है। फिर भी वाल्मीकि रामायण के प्रक्षिप्त सर्ग ५८ मे सीता के केवल इस क्षत्रियोचित उत्तर का उल्लेख किया गया है राम ही रावण को परास्त कर मुझे ले जायँ—**रावणमुत्पाट्य राघवो मा नयतु** (५८, १०१)। एक अन्य प्रक्षिप्त सग मे सीता पुन इस पर बल देती हे कि रावण के समान लुक-छिपकर मुझे ले जाना राम को शोभा नही देगा, उनकी कीर्ति के लिए आवश्यक है कि रावण पर विजय प्राप्त कर ले

बलै समग्रैयदि मा हत्वा रावणमाहवे ॥
विजयी स्वपुरी रामो नयेत्तत्स्याद्यशस्करम् ॥१२॥
यथाह तस्य वीरस्य वनादुपधिना हृता ।
रक्षसा तद्भयादेव तथा नार्हति राघव ॥१३॥ (सर्ग ६८)

काश्मीरी रामायण (५, ३४) मे राम की कीर्ति विषयक तर्क के अतिरिक्त सीता कहती है—रावण मेरे पिता है, मुझे उनकी इच्छा के विरुद्ध कुछ नही करना चाहिये।

(४) हनुमान्-सीता-सवाद विषयक प्रामाणिक सर्गों मे सीता द्वारा दिए हुए केवल **दो अभिज्ञानो** का वर्णन है—चूडामणि तथा काक-वृत्तान्त (दे० अनु० ४३६)। महाभारत के **रामोपाख्यान** (३, २६६, ६६-६७) मे केवल इन दोनो का उल्लेख मिलता है। वाल्मीकि रामायण के अनुसार हनुमान् मैनसिल के तिलक का स्मरण दिलाकर राम को एक तीसरा अभिज्ञान देते है (दे० ६५, २३)। एक प्रक्षिप्त सर्ग मे भी सीता द्वारा इस घटना का वर्णन किया गया हे, सीता के तिलक मिट जाने पर राम ने उनकी कनपटी पर मैनसिल का तिलक बनाया था—**मन शिलायास्तिलको गण्डपार्श्वे निवेशित** (४०, ५)। अयोध्याकाण्ड के एक प्रक्षिप्त सर्ग मे तिलक के मिट जाने का कारण भी दिया गया है (दे० अनु० ४३६)।

परवर्ती साहित्य मे इन दो अथवा तीन अभिज्ञानो का प्राय उल्लेख मिलता है। चूडामणि के अतिरिक्त सीता हनुमान् को **रामायण ककविन** मे एक पत्र तथा **पउमचरिय** (५३, १२) मे अपना उत्तरीय देती हैं। **सेरीराम** के अनुसार सीता ने हनुमान् को राम के लिए इत्र की जडाऊ मजूषा दी थी। **कब रामायण** (५, ५) मे काक-वृत्तान्त तथा चूडामणि के अतिरिक्त सीता ने अभिज्ञान-स्वरूप हनुमान् से कहा था कि मैंने एक बार राम से पूछा था कि अपनी एक शुकी का क्या नाम रखा जाय और राम ने उत्तर दिया—'मेरी माँ दोषहीन कैकेयी का नाम रखना'। इस रचना मे ऊर्मिला आदि के प्रति यह सन्देश भी मिलता है कि राम के प्रिय वचनो से मैं अपनी वेदनाओ

को भूल जाती हूँ तथा सीता के इस अनुरोध का भी उल्लेख है कि उनके पालतू शुक-सारिकाओ की देख-रेख का ठीक ढग ऊर्मिला को सिखाया जाय ।

ड । लकादहन

५५१ वाल्मीकि रामायण मे अशोकवन-विध्वस तथा लकादहन विषयक विस्तृत प्रक्षेप[1] की कथावस्तु इस प्रकार हे । राक्षसो की बल-परीक्षा करने तथा रावण का मन जानने के उद्देश्य से हनुमान् ने अशोकवन नष्ट किया (सर्ग ४१) । इसके बाद उन्होने रावण के भेजे हुए ८०००० योद्धाओ, जम्बुमाली, सात मत्रि-पुत्रो, पाच सेनापतियो, तथा रावणपुत्र अक्ष का वध किया ।[2] अन्त मे इन्द्रजित् हनुमान् को ब्रह्मपाश से बाँध कर रावण के पास ले गया । हनुमान् ने अपने को सुग्रीव द्वारा भेजा हुआ रामदूत कहकर रावण से सीता को लौटाने का अनुरोध किया जिस पर रावण ने क्रुद्ध होकर हनुमान् का वध करना चाहा, किन्तु विभीषण की आपत्ति पर ध्यान देकर उसने दण्डस्वरूप हनुमान् की पूँछ जलाने का आदेश दिया । अत राक्षस हनुमान् की पूँछ मे कपास के पुराने कपडे लपेटने लगे जिस पर हनुमान् ने अपना आकार बढाया । तब राक्षसो ने तेल डाल कर हनुमान् की पूँछ मे आग लगा दी और उनको नगर मे चारो ओर घुमाया । सीता को हनुमान् की दुर्दशा का समाचार[3] जब मिला उन्होने अग्नि से प्रार्थना की कि वह हनुमान के लिए शीतल बन जाय । फलस्वरूप हनुमान् ने अग्नि की शीतलता का अनुभव किया और उन्होने इस चमत्कार का श्रेय सीता की दयालुता, राम के प्रभाव तथा अग्नि से अपने पिता की मित्रता को दिया । अन्त मे हनुमान् ने अपना शरीर पहले अधिक बढाकर और बाद मे घटा कर अपने को बन्धनो से मुक्त किया[4] तथा अपना आकार फिर बढाकर विभीषण के महल को छोडकर समस्त लका को भस्म कर डाला और बाद मे अपनी जलती हुई पूँछ समुद्र मे बुझा ली । तब हनुमान् को सीता के कुशल-क्षेम के विषय मे चिन्ता हुई, किन्तु शकुनो तथा चारणो की बातचीत से उन्हे उनके विषय मे आश्वासन मिला (सर्ग ४८-५५) ।

---

१ सर्ग (४१-५५) । दे० ऊपर अनु० ५३० । युद्धकाण्ड मे रात्रि के समय वानरो द्वारा लकादहन का पुन वर्णन मिलता है (सर्ग ७५) ।

२ दे० सर्ग ४२ और ४४-४७ । सर्ग ४३ (चैत्यविध्वस) केवल दाक्षिणात्य पाठ मे मिलता है ।

३ उदीच्य पाठ के अनुसार सरमा ने सीता के लिए लकादहन का वर्णन किया है (दे० ऊपर अनु० ५२९) ।

४ सर्ग ४८ मे इसका स्पष्ट उल्लेख किया गया है कि राक्षसो ने ब्रह्मपाश के अतिरिक्त अन्य बन्धनो को काम मे लाकर ब्रह्मपाश का प्रभाव नष्ट कर डाला था ।

५५२ अद्भुत एव हास्यरस की सभावनाओ के कारण लकादहन कवियो का प्रिय विषय रहा है, अत इसके वर्णन मे पर्याप्त नई सामग्री की कल्पना कर ली गई है। प्रस्तुत अनुच्छेद मे वाल्मीकि रामायण के वृत्तान्त के क्रमानुसार इस सामग्री का सक्षिप्त निरूपण किया जा रहा है।

(१) **अध्यात्म रामायण**(५, ३, ६७-७१) के अनुसार हनुमान् को भूख लगी थी, उन्होने सीता की अनुमति लेकर अशोकवन के फल खाये और बाद मे प्रणाम करके चले गये। फिर कुछ दूर चलने पर उन्होंने निश्चय किया कि रावण से मिलकर जाना अच्छा है और इसलिए वे अशोकवन उजाडने लगे। **आनन्दरामायण** (१,६, १,२३-१३६) मे इस प्रसग को बढा दिया गया है जब हनुमान् ने अशोकवन के फल खाने की आज्ञा माँगी सीता ने अपना ककण उतारकर कहा—"यह लो और लका की दूकानो से फलो के ढेर खरीद कर खा लो।" हनुमान् ने आपत्ति करते हुए उत्तर दिया—"मै दूसरे के हाथ के तोडे फल नही खाता, रहने दीजिए, मैं ऐसे ही जाता हूँ"। उन्हे चले जाते देख कर सीता ने कहा कि जो फल पृथ्वी पर गिर पडे है उनको चुपचाप खा लो। इस पर हनुमान् पूँछ से बाधकर वृक्षो को हिलाने लगे और अशोकवन के सब फल खा गये। अन्त मे उन्होने वन के समस्त वृक्ष गिरा दिए। **भावार्थ रामायण** (५, १३) का वृत्तान्त इससे अधिक भिन्न नही है।

माधवकदली के असमिया रामायण के अनुसार सीता ने विदा के समय हनुमान् को एक मधुफल दे दिया। हनुमान् को और खाने की इच्छा हुई और उन्होंने सीता से पता लगाया कि यह फल अशोकवन का ही है। तब हनुमान् ने एक वृद्ध ब्राह्मण के वेश मे रावण के पास जाकर अपना यह परिचय दिया—"मै सौराष्ट्र का ब्राह्मण हूँ। कल एकादशी व्रत था, मेने सोचा कि राजा के सामने वेदपाठ करके चला जाऊँगा"। इसके बाद हनुमान् चले गए और अशोकवन मे पहुँचने पर बन्दर बन कर फल खाने तथा उत्पात मचाने लगे।[१]

सेरीराम मे तत्सबधी प्रसग इस प्रकार है। सीता से दो आम पाकर हनुमान् ने पूछा कि ये कहाँ से आये। सीता ने उन्हे रावण की अमराई का मार्ग बताकर सावधान किया कि १०० राक्षस दिन-रात उसकी रखवाली करते हैं। हनुमान् ने वहाँ जाकर छोटे वानर के रूप मे अमराई मे पडी हुई पत्तियाँ तथा टहनियाँ बटोर कर रक्षको को प्रसन्न किया। किसी दिन सब के सब मद्य पीकर मतवाले बन गए और हनुमान् ने सब फल खाकर वाटिका नष्ट कर डाली। दूसरे दिन रक्षक हनुमान् से पूछने लगे कि यह किसका काम है। हनुमान् के चुप रहने पर रक्षक उन्हे रावण के पास ले गए।

---

१ दे० लेखारु—असमिया रामायण साहित्य, पृ० ५८।

गुणभद्र के **उत्तरपुराण** (६८, ५०८-५१५) के अनुसार हनुमान् के नेतृत्व मे वानर-सेना ने विभीषण की शरणागति के पश्चात् समुद्र पारकर अशोकवन को नष्ट किया तथा उसके रक्षको को मार डाला था।

(२) अशोकवन विध्वस के अनन्तर हनुमान् के **विभिन्न युद्धो** का कोई विशेष महत्वपूर्ण विकास नही हुआ है। आनन्दरामायण (१, ६, १५६), तोरवे रामायण (५, ६) तथा भावार्थ रामायण (५, १७ और ३२) के अनुसार ब्रह्मा ने हनुमान् से निवेदन किया कि तुम मेरे ब्रह्मास्त्र का मान रक्खो और उसमे बँधकर रावण के पास जाओ। दक्षिण भारत की एक कथा मे इससे मिलता-जुलता वर्णन मिलता है (पाश्चात्य वृत्तान्त न० ३)। एक अन्य कथा के अनुसार हनुमान् ने इन्द्रजित् के साथ युद्ध करते समय आहत होने का अभिनय किया था। वह निश्चेष्ट भूमि पर पडे रहे जिससे राक्षसो ने आकर उन्हे बाधा था। बाद मे वे हनुमान् को उठाकर ले जाने मे असमर्थ रहे, तब हनुमान् ने कहा कि यदि मेरे बन्धन कुछ ढीले किये जायँ तो मैं चल सकूगा। इन्द्रजित् ने राक्षसो को वानर की पूँछ पकडने का आदेश दिया, किन्तु हनुमान् सब से पीछा छुडाकर अपने आप रावण से मिलने गये (पाश्चात्य वृत्तान्त न० १)।

(३) भावार्थ रामायण (५, १७ और ३३), दक्षिण भारत की एक राम-कथा (पाश्चात्य वृत्तान्त न० १) तथा सेरी राम आदि रचनाओ के अनुसार हनुमान् रावण की सभा मे अपनी पूँछ का कुण्डल बनाकर रावण से ऊचे सिहासन पर विराजमान हुए। ऐसा प्रतीत होता है कि इस प्रकार का वर्णन पहले पहल अगद के विषय मे किया गया था (दे० अनु० ५८५)।

(४) प्राय समस्त कथाओ मे **विभीषण** के बीच-बचाव का उल्लेख है। सेरी-राम के अनुसार विभीषण ने रावण को एक भविष्यवाणी का स्मरण दिलाया जिसके अनुसार एक छोटे वानर की हत्या लका के लिए अहितकर है।

(५) कुछ रामकथाओ मे हनुमान् स्वय सुझाव देते है कि उनकी **पूँछ जलाई जाय**। आनन्द रामायण (१,६, १७७-१८४) के अनुसार रावण ने हनुमान् की पूछ काटकर फेकने का आदेश दिया था किन्तु राक्षस के हथियार (कुल्हाडा, आरा आदि) इसमे अस-मर्थ सिद्ध हुए। तब रावण ने हनुमान् से पूछा कि तुम्हारी पूछ नष्ट करने का क्या उपाय है और वानर ने उसे जलाने का परामर्श दिया। अनेक पाश्चात्य वृत्तान्त (न० १, ३, ८ और १३), भावार्थ रामायण (५, १८ और ३३), सेरीराम तथा रामकेर्ति आदि इसी प्रसग का उल्लेख करते है।

(६) हनुमान् की **पूँछ के बढ जाने** के विषय मे कृत्तिवास (५, २६) लिखते है कि वह पचास योजन लम्बी थी, उसे तीन लाख राक्षसो ने पकडकर दबाया था और उसमे ३० मन कपडा लपेट दिया गया था। उराव नामक आदिवासी अपने को रावण

के वशज समझते हे । उनमे लकादहन के विषय मे निम्नलिखित कथा प्रचलित है।[1] जब हनुमान् लका आये थे रावण ने हनुमान् की पूछ जलाने के लिए अपनी प्रजा के सब कपडे ले लिए थे और उस समय से रावण की प्रजा तथा उनके वशजो मे अपने शरीर को अच्छी तरह से ढकने के लिए कपडो की कमी हे ।

(७) आनन्द रामायण (१, ६, १६२) मे सभवत सबसे पहले इसका उल्लेख किया गया है कि हनुमान् ने तभी अपनी पूछ बढाना बन्द किया था जब उनके सुनने मे आया कि राक्षस **सीता के कपडे** भी लेने जा रहे हे । **तोरवे रामायण** (५, ८), भावाथ रामायण (५, ३३), पाश्चात्य वृत्तान्त न० ८, तथा सेरीराम मे भी इससे मिलता-जुलता वर्णन किया गया हे ।

(८) आनन्दरामायण (१, ६, १६५-१६६), तोरवे रामायण (५, ८), भावार्थ रामायण (५, १८) तथा पाश्चात्य वृत्तान्त न० १ मे **रावण की दाढी** के जल जाने का प्रसग आया है । आनन्द रामायण की कथा इस प्रकार है । अपनी पूछ मे आग लगाने के व्यर्थ प्रयत्न को देखकर हनुमान् ने कहा यदि रावण स्वय अपने मुँह से फूक दे तो अग्नि प्रदीप्त हो सकती है । किन्तु ज्यो ही रावण ने फूँकना आरम्भ किया उसके दस सिरो के बालो तथा दाढी-मूँछ मे आग लग गई । इसे बुझाने के लिए रावण अपने बीस हाथो से अपने मुखो पर थप्पड मारने लगा, जिससे सभी राक्षस खिलखिलाकर हँस पडे ।

(९) अर्वाचीन रचनाओ मे लकादहन के समय **राक्षसो की दुर्दशा** का भी वर्णन किया गया है । आनन्द रामायण (१, ६, २०६-२११) मे रावण दस करोड राक्षसो को लेकर लडने निकला किन्तु हनुमान् ने लोहे के खम्भे से सब को मारा और अनन्तर करोडो को एक साथ पूँछ मे बाँध कर लीलापूर्वक रावण के सिर पर मारा जिससे रावण मूर्च्छित हो गया । उस अवसर पर **देवकन्याओ अथवा देवताओ की मुक्ति** का भी उल्लेख मिलता है, उदा० तत्वसग्रह रामायण (५, ६), विनयपत्रिका (३१, ३), हनुमान् बाहुक (६) । महावीरचरित (अक ७, ५) के अनुसार विभीषण ने रावणवध के बाद ही **"सुरलोकबन्दिस्त्रिय"** मुक्त कर दिया था । अभिनन्दनकृत रामचरित (सर्ग १६) मे इसका उल्लेख मिलता है कि हनुमान् ने लका मे सीता की खोज करते समय कारावास मे स्थित देवागनाओ का विलाप सुना था ।[2]

---

१ रसेल ट्राइब्स एण्ड कास्ट्स, भाग ४, पृ० ३२० ।

२ रगनाथ रामायण (३, ११ और ३, २२) मे भी रावण के कारागार मे पडी हुई स्त्रियो का उल्लेख किया गया है । वाल्मीकीय उत्तरकाण्ड (सर्ग २४) मे रावण द्वारा मानव-देव-दानव-नाग-गधर्वादि कन्याओ का हरण वर्णित है ।

(१०) वाल्मीकि रामायण तथा परवर्ती कथाओ मे भी **विभीषण के महल** सुरक्षित रहने का उल्लेख है, सेरीराम के अनुसार केवल **सीता का घर** जलने से बच गया था। सीता के विषय मे हनुमान् की चिन्ता का प्रसग भी वाल्मीकि रामायण मे मिलता है किंतु आनन्द रामायण (१, ६, २३१) के अनुसार हनुमान् को एक आकाशवाणी द्वारा सीता के कुशल-क्षेम का आश्वासन मिला था। भावार्थ रामायण (५, २०) मे वायु ने अपने पुत्र हनुमान् को सीता के विषय मे आश्वस्त किया था।

(११) वाल्मीकि रामायण के अनुसार हनुमान् ने अपनी जलती हुई पूछ को समुद्र मे डुबो कर बुझा लिया था। कृत्तिवास मे हनुमान् ने सीता के कहने पर उसे मुँह से बुझा कर अपना मुख जला दिया था। उन्होने सीता मे इसकी शिकायत करके कहा कि सब मेरी हसी उडायेगे। सीता ने उत्तर दिया—सभी कृष्णमुख बन जायँगे। सताल आदिवासियो मे भी इस प्रकार की कथा मिलती है। सेरीराम के अनुसार हनुमान् ने व्याकुल होकर नारद से पूँछ की आग बुझाने का उपाय पूछा। नारद ने उत्तर दिया—क्या तुम अपने छोटे कूप का उपयोग नही जानते हो? हनुमान् समझ गए उन्होने अपनी पूँछ को मुँह मे रख दिया और आग बुझ गई। पाश्चात्य वृत्तान्त न० ३ मे प्रस्तुत प्रसग का एक अन्य रूप मिलता है। सीता ने हनुमान् को जाते समय सावधान किया कि समुद्र के उस पार पहुँचने के पूर्व किसी भी तरह से मुडकर पीछे की ओर नही देखना चाहिए। हनुमान् को रास्ते मे ऐसा लगा कि प्रज्वलित लङ्का की आग धीरे-धीरे मेरे पास आ रही है, उन्होने सिर घुमा कर देखा जिससे उनका मुँह जल गया।

अनेक रचनाओ मे हनुमान् के समुद्र मे अपनी पूछ बुझाने के वृत्तात मे उनके पुत्र की उत्पत्ति का भी उल्लेख किया गया है (दे० अनु० ६१५)।

(१२) सेरीराम के अनुसार रावण ने लङ्कादहन के पश्चात् स्वर्ग से एक महर्षि बुलाकर उनकी प्रार्थनाओ द्वारा **लका का जीर्णोद्धार** किया था। बलरामदास रामायण मे यह माना गया है कि देवताओ ने विश्वकर्मा को भेज दिया था और उन्होने एक ही रात मे लङ्का का पुनर्निर्माण किया था।

(१३) पउमचरिय (पर्व ५३) मे लकादहन का उल्लेख नही है। इसके अनुसार इन्द्रजित् हनुमान् को बाँधकर लाया था। रावण ने उनको नगर मे चारो ओर घुमाकर प्रजा को दिखलाने का आदेश दिया किन्तु हनुमान् अपने बन्धनो को तोडकर तथा लङ्का मे बहुत से महल गिरा कर राम के पास लौटे।

(१४) **असुर** नामक आदिवासी जाति (दे० अनु० २४७) मे लङ्कादहन विषयक निम्नलिखित कथा प्रचलित है। असुरवीर अपनी पत्नी के साथ लोहा गला रहा

था । हनुमान् ने पास आकर तथा लाल लोहा देखकर उसे खाना चाहा । असुर दम्पत्ति ने उसे भगाने की बडी कोशिश की, किन्तु हनुमान् धौकनी पर बैठकर तथा भट्टी मे गडबडी करके दोनो को तग करता रहता था । अन्त मे बूढे ने छिपकर हनुमान् की पूँछ मे कपास बाँध दिया, उसकी पत्नी ने उस पर तेल उडेला और आग लगा दी । हनुमान् बहुत परेशान होकर उछल-उछल कर दौडने लगा, इस प्रकार लङ्का पहुँच कर हनुमान् ने उसे भस्म कर डाला बाद मे उसने अपनी पूँछ को किसी पेड से रगड-कर बुझा लिया था ।

च । हनुमान् का प्रत्यावर्त्तन

५५३ लङ्कादहन के वर्णन के बाद सुन्दरकाण्ड के केवल दो ही सर्ग प्रामाणिक है । सर्ग ५७ मे हनुमान् के अपने साथियो के पास लौटने का वर्णन किया गया है । लङ्का की घटनाओ के विषय मे हनुमान् केवल यही कहते है कि मैंने सीता को देखा है

अशोकवनिकासस्था दृष्टा सा जनकात्मजा ।।३८।।
रक्ष्यमाणा सुघोराभी राक्षसीभिरनिन्दिता ।
एकवेणीधरा बाला रामदर्शनलालसा ।।३९।।
उपवासपरिश्रान्ता मलिना जटिला कृशा ।

सर्ग ६५ मे हनुमान् राम को सीता का चूडामणि देकर अपनी लङ्कायात्रा कर इस प्रकार वर्णन करते है—समुद्र लाँघकर मैने सीता को रावण के यहाँ देखा है । वह राक्षसियो से घिरकर आपको ही सोचा करती है । वह आपका समाचार पाकर प्रसन्न हुई तथा अभिज्ञान-स्वरूप उन्होने चूडामणि के अतिरिक्त काक-वृत्तान्त तथा मैनसिल के तिलक के विषय मे आपको स्मरण दिलाने को कहा तथा यह भी निवेदन किया कि मैं अब केवल एक महीने तक जीवित रह सकूँगी । अन्त मे हनुमान् ने राम से यह प्रस्ताव किया कि समुद्र पार करने की तैयारिया प्रारम्भ हो जाये ।

सुन्दरकाण्ड के अन्त की शेष सामग्री मे पुनरावृत्ति के अतिरिक्त मधुवन-ध्वस का वर्णन तथा सीता को ले जाने का प्रस्ताव मिलता है । इस प्रस्ताव के विषय मे नीचे विचार किया गया है (दे० अनु० ५५५) । **मधुवन-विध्वस-वर्णन** (सर्ग ६१–६४) का कोई उल्लेखनीय विकास नही हुआ है, अत तत्सबधी सामग्री का निरूपण अनावश्यक है ।

५५४ परवर्ती रामकथा-साहित्य की एकाध रचनाओ मे हनुमान् के प्रत्यावर्त्तन के विषय मे किंचित परिवर्द्धन किया गया है । आनन्दरामायण के अनुसार **ब्रह्मा** ने लङ्का से प्रस्थान करते हुए हनुमान् को एक **पत्र** दिया था जिसमे लङ्का मे हनुमान्

के चरित का वर्णन था (१, ९, २८०-२८१) और जिसे हनुमान् ने बाद मे राम को अर्पित किया (वही, ३०६)। भावार्थ रामायण मे भी इस ब्रह्म-पत्र की चर्चा है, हनुमान् ने उसे जाम्बवान को पढने के लिए दिया (५,२३) तथा बाद मे लक्ष्मण ने राम के आदेशानुसार उसे सबो को सुनाया (अध्याय २६-३४)। मराठी रामविजग मे इसी प्रसग को दुहराया गया है।

सेरीराम के अनुसार राम ने लङ्कादहन के कारण हनुमान् की भर्त्सना की थी। इसका आधार सभवत आनन्दरामायण मे वर्णित **हनुमान् के गव-निवारण** की निम्न-लिखित कथा है। समुद्र को पुन पार करने के पश्चात् हनुमान् ने नीचे उतरकर एक मुनि को देखा तथा गर्वान्वित होकर उनसे कहा—मै राम का कार्य करके आ रहा हूँ, मै यहा पानी पीना चाहता हूँ। मुनि ने सकेत द्वारा जलाशय का मार्ग बतलाया। इस पर हनुमान् राम-मुद्रिका (जिसे सीता ने लोटाया था), सीता-चूडामणि तथा ब्रह्मपत्र मुनि के पास रखकर जल पीने चले गये। इतने मे एक वानर ने आकर राम की मुद्रिका मुनि के पास रखे हुए कमण्डल मे डाल दी। लौटने पर हनुमान् ने पूछा कि मुद्रिका कहा है? मुनि ने भौ से कमण्डल की ओर सकेत किया। हनुमान् ने कमण्डल मे हजारो मुद्रिकाए देखकर कहा—आप मुझे बताएँ कि मेरी लाई हुई मुद्रिका कौन है? मुनि ने उत्तर दिया—जब-जब हनुमान् ने लङ्का जाकर तथा सीता का पता लगाकर राममुद्रिका को मेरे पास छोड दिया है तब-तब बानरो ने इसे इस कमण्डल मे गिरा दिया है, इनमे से अपनी मुद्रिका खोज निकालो। हनुमान् ने पूछा कि यहा कितने राम आए है तथा मुनि के कहने पर मुद्रिकाओ को निकालकर गिनना आरम्भ कर दिया किन्तु उनका अन्त नही हुआ। तब हनुमान् ने सब को फिर कमण्डल मे भर दिया तथा यह सोचकर गर्वरहित हो गये कि मेरे जैस सैकडो हनुमान् सीता का समाचार राम के पास ले जा चुके है तो मेरी कौन सी गिनती है—**का गणनाऽद्य मे** (१, ९, २८३-२९८)। किष्किधा मे पहुँचकर हनुमान् ने राम को ब्रह्मपत्र तथा सीता-चूडामणि अर्पित किया, काक-वृत्तान्त सुनाया तथा बाद मे भयभीत होकर मुनि द्वारा अपने गर्वनिवारण तथा मुद्रिका खो बैठने का वृत्तान्त भी कह दिया। उत्तर मे राम ने मुस्कराकर कहा कि मैने मुनि के रूप मे यह कौतुक दिखलाया था—**मयैव दर्शित मार्गे कौतुक मुनि-रूपिणा** (१, ९, ३१३)।

उदात्तराघव (अक ४) मे हनुमान् के प्रत्यावर्त्तन के विषय मे राक्षसी माया का वृत्तान्त भी मिलता है। कथा इस प्रकार है—एक राक्षस हनुमान् का रूप धारण कर सुग्रीव के पास आया और यह समाचार लाया कि रावण ने सीता का वध किया है। सुग्रीव ने यह सुनकर चिता तैयार करने का आदेश दिया किन्तु वास्तविक हनुमान्

ने ठीक समय पर पहुँचकर सुग्रीव को बचा लिया।[1]

५५५ वाल्मीकि रामायण के दो प्रक्षिप्त सर्गों के अनुसार हनुमान् तथा अगद दोनो ने राक्षसो को हराकर **सीता को राम के पास पहुँचाने** का प्रस्ताव अपने साथियो के सामने रखा था किन्तु जाम्बवान ने इसे अस्वीकार करते हुए कहा—एक तो हमे सीता का पता लगाने मात्र का कार्य सौपा गया, दूसरे राम ने हम लोगो के सामने जो यह प्रतिज्ञा की है कि —"मैं सीता का उद्धार करूँगा", उस प्रतिज्ञा को हम मिथ्या नही कर सकते।

हनुमान् ने लङ्का मे भी सीता से अपने साथ चलने का प्रस्ताव किया था। इस सामग्री के आधार पर कई रामकथाओ मे माना गया है कि हनुमान् युद्ध के पूर्व ही सीता को राम के पास ले गये थे। उदाहरणार्थ उत्तर-पूर्व क्षेत्रो की आदिवासी कथा (अनु० २७८), पाश्चात्य वृत्तान्त न० ६, १० और १५ और सेरीराम की एक दत-कथा (ज० स० ए० सो०, स्ट्रेट्स ब्राच, भाग ५५, पृ० १-२४)। **सिहली रामकथा** के अनुसार वालि ने हनुमान् का स्थान लेकर सीता को राम के पास पहुँचा दिया था। **रामतापनीय उपनिषद्** (४, ७४) मे सुग्रीव वानरो को सीता का पता लगाने के लिए भेजते समय सीता को ले आने का भी आदेश देते है।

---

१ भरत के विषय मे भी इस तरह के वृत्तान्त मिलते है (दे० अनु० ६०६)।

अध्याय १६

युद्धकाण्ड

१—बाल्मीकि रामायण का युद्धकाण्ड

५५६ क। युद्धकाड की कथावस्तु

(१) लका का अभियान (सर्ग १-४१)

समुद्र की ओर प्रस्थान—समुद्र की बाधा के विचार से राम की निराशा तथा सुग्रीव द्वारा सेतुबध का प्रस्ताव (सर्ग १-२)। हनुमान् द्वारा लका का वर्णन (सर्ग ३)। समुद्र तक पहुँचना तथा राम का विरहवर्णन (सर्ग ४-५)।

रावण-सभा—सभासदो द्वारा रावण को विजय का आश्वासन तथा सीता को लौटा देने की विभीषण की मत्रणा (सर्ग ६-६)। दूसरे दिन विभीषण द्वारा चेतावनी, कु भकर्ण का जगकर रावण को दोष देना लेकिन सहायता की प्रतिज्ञा करना (सर्ग १०-१२)। पुजिकस्थला के कारण पितामह के शाप का रावण द्वारा उल्लेख (सर्ग १३)। इन्द्रजित् तथा रावण द्वारा निन्दित होकर विभीषण का रावण को छोडकर जाना (सर्ग १४-१६)।

विभीषण की शरणागति—सुग्रीवादि के विरोध करने पर भी हनुमान् के आग्रह के कारण विभीषण को शरण मिलना, राम द्वारा विभीषण का अभिषेक, प्रायोपवेशन द्वारा समुद्र को विवश करने की विभीषण की मत्रणा (सर्ग १७-१६)। शार्दूल द्वारा रावण को राम-सेना की सूचना मिलना, सुग्रीव को अपनी ओर मिलाने के लिए रावण द्वारा शुक का भेजा जाना, शुक का बधन और राम द्वारा मुक्ति (सर्ग २०)।

सेतुबध—तीन दिन के प्रायोपवेशन के बाद राम का समुद्र पर ब्रह्मास्त्र प्रयोग के लिए तत्पर होना। समुद्र की विनय तथा द्रुमकुल्य का ब्रह्मास्त्र द्वारा विध्वस। सागर के कथन से नल द्वारा सेतुबध और सेना का सतरण (सर्ग २१-२२)। लका मे अपशकुन तथा शुक का रावण को समाचार देना (सर्ग २३-२४)।

शुक-सारण-शार्दूल—रावण-गुप्तचर शुक और सारण का विभीषण द्वारा बधन और राम द्वारा मुक्ति। उनका रावण को समाचार देना। शार्दूल का रावण द्वारा भेजा जाना, उसका बधन, मुक्ति और समाचार देना (सर्ग २५-३०)।

राम का मायामय शीष—विद्युज्जिह्व द्वारा निर्मित राम के मायामय शीर्ष का सीता को दिखलाया जाना। सीता का विलाप तथा सरमा द्वारा रहस्योद्घाटन (सर्ग ३१-३३)। सरमा द्वारा सीता को रावण-सभा का समाचार मिलना (सर्ग ३४)। माल्यवान का रावण को समझाना, अपशकुन होने पर भी रावण का दृढ निश्चय होकर नगर के प्रवेश-द्वारो की रक्षा की आज्ञा देना (सर्ग ३५-३६)।

लका का अवरोध—सुबेल पर्वत से राम का लका-दर्शन (सर्ग ३७-३९)। सुग्रीव-रावण-द्वन्द्व (सर्ग ४०)। लकावरोध तथा अगद का दूत-कार्य (सर्ग ४१)।

(२) युद्ध-प्रकरण (सग ४२-११२)

शरपाश—रात्रि तक दोनो सेनाओ का युद्ध अगद द्वारा इद्रजित् की पराजय। अदृश्य इन्द्रजित् द्वारा राम-लक्ष्मण का शरपाश मे बधन (सर्ग ४२-४५)। रावण का सीता को पुष्पक से भेजकर आहत राम-लक्ष्मण को दिखलाना। सीता-विलाप, त्रिजटा की सान्त्वना (सर्ग ४६-४८)। जगकर राम का लक्ष्मण के लिए विलाप। हनुमान् द्वारा विशल्या-ओषधि को लाने के लिए सुषेण का प्रस्ताव। गरुड का राम-लक्ष्मण को स्वस्थ करना (सर्ग ४९-५०)।

द्वन्द्व-युद्ध—धूम्राक्ष, वज्रदष्ट्र, अकपन तथा प्रहस्त का वध। रावण-लक्ष्मण द्वन्द्व-युद्ध, लक्ष्मण का आहत होना, मुष्टिप्रहार से हनुमान् का रावण को मूर्छित करना। राम-रावण-युद्ध, रावण की पराजय और लज्जित होकर लौटना (सर्ग ५१-५९)।

कुम्भकर्ण-वध—कुम्भकर्ण का जागरण (सर्ग ६०), विभीषण द्वारा राम से कुभकर्ण-निद्रा की कथा का उल्लेख (सर्ग ६१)। कुम्भकर्ण द्वारा रावण की भर्त्सना। कुम्भकर्ण-सुग्रीव-द्वन्द्व। राम द्वारा कुम्भकर्ण-वध। रावण-विलाप (सर्ग ६२-६८)।

द्वन्द्व-युद्ध—रावण के चार पुत्रो का (नरातक, देवान्तक, त्रिशिर, अतिकाय) तथा दो भाइयो (महोदर महापार्श्व) का वध। रावण-विलाप, इन्द्रजित् का अदृश्य होकर युद्ध करना तथा राम और लक्ष्मण को व्यथित करना (सर्ग ६९-७३)।

लकादहन—हनुमान् का ओषधिपर्वत लाकर आहतो तथा राम-लक्ष्मण को स्वस्थ करना (सर्ग ७४)। रात्रि मे वानरो द्वारा लकादहन (सर्ग ७५)। कम्पन, कुभ, निकुम्भ तथा मकराक्ष का वध (सर्ग ७६-७९)।

इन्द्रजित् वध—यज्ञ करके इन्द्रजित् का युद्धारम्भ (सर्ग ८०)। मायामय सीता का वानर-सेना के सम्मुख वध। राम-विलाप तथा लक्ष्मण द्वारा सान्त्वना (सर्ग ८१-८३)। विभीषण द्वारा मायामय सीता का रहस्योद्घाटन तथा निकुभिला मे इन्द्रजित्-यज्ञ-ध्वस का परामर्श, सेना सहित लक्ष्मण का यज्ञ-ध्वस तथा इन्द्रजित्-वध करना

(सर्ग ८४-९०)। सुषेण द्वारा लक्ष्मण की चिकित्सा (सर्ग ९१)। रावण-विलाप, सुपार्श्व का रावण को सीता-वध से रोकना (सर्ग ९२)।

विभिन्न युद्ध—विरूपाक्ष, महोदर तथा महापार्श्व का वध (सर्ग ९३-९८), राक्षसियो का विलाप (सर्ग ९४)।

रावण वध—रावण द्वारा लक्ष्मण को शक्ति लगना तथा हनुमान् द्वारा महोदय पर्वत से ओषधि लाना (सर्ग ९९-१०१)। इन्द्ररथ का मातलि सहित भेजा जाना, राम-रावण-युद्ध का आरम्भ (सर्ग १०२-१०४)। अगस्त्य का राम को आदित्य-हृदय नामक स्तोत्र सिखाना (सर्ग १०५), सात दिन के युद्ध के बाद ब्रह्मास्त्र से रावण वध (सर्ग १०६-१०८)। विभीषणादि का विलाप, रावण की अन्त्येष्टि (सर्ग १०९-१११)। विभीषण का अभिषेक तथा राम का सीता को बुला भेजना (सर्ग ११२)।

(३) **प्रत्यावर्तन** (सग ११३-१२८)।

अग्निपरीक्षा—राम का सीता को अस्वीकार करना (सर्ग ११३-११५)। लक्ष्मण द्वारा निर्मित चिता मे सीता का प्रवेश (सर्ग ११६)। देवताओ द्वारा राम की विष्णुरूप मे पूजा (सर्ग ११७)। अग्नि द्वारा राम को सीता का समर्पण (सर्ग ११८)। शिव द्वारा प्रशसा, दशरथ की शिक्षा। मृत वानरो का इन्द्र द्वारा जीवित किया जाना। विभीषण का यात्रा के लिए पुष्पक प्रस्तुत करना। वानरो को दान दिया जाना (११९-१२२)।

वापसी यात्रा—आकाश मार्ग से राम का विभिन्न स्थानो का वर्णन करना। किष्किधा मे वानर-पत्नियो को साथ लेना। भरद्वाज से भेट (सर्ग १२३-१२४)। हनुमान् का गुह और भरत को आगमन का समाचार देना (सर्ग १२५-१२६)।

अयोध्या-प्रवेश—अयोध्यावासियो सहित भरत और शत्रुघ्न का राम से मिलना, नन्दिग्राम मे भरत का राम को शासन सौपना, पुष्पक का कुबेर के पास लोटाया जाना (सर्ग १२७)। रामाभिषेक, राम-राज्य-वर्णन, फलश्रुति (सग १२८)।

ख। युद्धकाड का विश्लेषण

तीन पाठो मे विभिन्नता

५५७ अन्य काडो की अपेक्षा युद्धकाड के तीनो पाठो मे कही अधिक अन्तर पाया जाता है। दाक्षिणात्य पाठ की निम्नलिखित सामग्री का गौडीय पाठ मे नितान्त अभाव है

सर्ग १०-१५—रावण की दूसरी सभा की घटनाओ का वर्णन, दे० अनु० ५९८ (३), इसकी कुछ सामग्री (अर्थात् सर्ग १०, १४ और १५) पश्चिमोत्तरीय पाठ मे मिलती है (दे० प० रा० ५, सर्ग ७६, ८७ और ८६)।

सर्ग २० और २४—गुप्तचरो, शार्दूल तथा शुक का वृत्तान्त जो २५ वे सर्ग के वृत्तान्त के अनुकरण पर लिखा गया है। ये सर्ग अन्य पाठो मे नही मिलते है।

सग २२, २५-४०—द्रुमकुल्य का ब्रह्मास्त्र द्वारा विध्वस। यह वृत्तान्त पश्चिमोत्तरीय पाठ मे भी मिलता है (दे० प० रा० ५, ६६)। शेष निम्नलिखित सामग्री गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय दोनो पाठो मे नही मिलती है।

सर्ग २३—युद्ध के पूर्व लका मे अपशकुन (**निमित्तानि**)।

सर्ग ४० तथा ४१, १-१०—सुग्रीव-रावण-द्वन्द्व।

सर्ग ५३-५४—अगद-वज्रदष्ट्र-युद्ध।

सर्ग ६०, ८-१२—रावण के विरुद्ध अनारण्य, वेदवती, उमा, नन्दीश्वर, रभा तथा पुजिकस्थला के शापो का उल्लेख।

सग १०५—अगस्त्य का राम को आदित्यहृदय स्तोत्र सिखाना।

सग १२३, २०—सेतु पर शिव-प्रतिष्ठा का निर्देश।

सग १२३, २३-३८—सीता के अनुरोध से किष्किधा मे वानर-पत्नियो को पुष्पक मे साथ लेना।

५५८ उपर्युक्त सामग्री से स्पष्ट है कि उदीच्य पाठ से अलग हो जाने के पश्चात् दाक्षिणात्य पाठ मे पर्याप्त मात्रा मे प्रक्षेप जोड दिये गये है। दूसरी ओर अन्य पाठो मे बहुत सी सामग्री मिलती है जिसका उल्लेख दाक्षिणात्य पाठ मे नही किया गया है। निम्नलिखित वृत्तान्त केवल गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठ मे मिलते है

(१) **निकषा वाक्यम्**—निकषा अपने पुत्र विभीषण से अनुरोध करती है कि वह रावण को समझावे, दे० अनु० ५६८ (४)।

(२) **रावण-सभा**—केवल एक बार होनी है लेकिन इसके वर्णन मे गौडीय पाठ मे सात नये सर्ग जोड दिये गये है, दे० अनु० ५६८ (५)।

(३) **दशरथ-सागर की मैत्री का वर्णन**—(दे० गौ० रा० ५, ६४, २१-२२ तथा प० रा० ५, ६६, ४३-६६)।

(४) **वालि-सुग्रीव की जन्मकथा**—दाक्षिणात्य पाठ मे यह वृत्तान्त उत्तरकाण्ड के ३७ वे सर्ग के बाद के प्रथम प्रक्षिप्त सर्ग मे मिलता है (दे० गौ० रा० ६, ४, ३०-५० और प० रा० ६, सर्ग ४)।

(५) **रावण-मदोदरी-सवाद**—प्रहस्त-वध के पश्चात् मन्दोदरी रावण से अनुरोध करती है कि वह युद्ध न करे क्योकि राम मनुष्य नही है (दे० गौ० रा० ६, ३३ तथा प० रा० ६, ३५)।

(६) **नारद-कुम्भकर्ण-सवाद**—नारद ने कुंभकर्ण से विष्णु द्वारा रावण-वध का रहस्य प्रकट किया था। नारद के इस कथन का उल्लेख कर कुम्भकर्ण युद्ध न करने का रावण से अनुरोध करता है। रावण विष्णु द्वारा अपना वध तथा फलस्वरूप परम पद प्राप्त करने की इच्छा प्रकट करता है (दे० गौ० रा० सर्ग ४०-४१ तथा प० रा० सर्ग ४१-४२)।

(७) **कालनेमि-वृत्तान्त**—हिमालय-यात्रा के वर्णन के अन्तर्गत हनुमान् द्वारा कालनेमि-वध, गन्धर्वो से युद्ध तथा रावण के भेजे हुए राक्षसो का वध (दे० गौ० रा० सर्ग ८२, १४२ आदि, सर्ग ८३ और ८४, प० रा० सर्ग ८१)।

५५९ दो वृत्तान्त केवल गौडीय पाठ मे ही पाये जाते है—

(१) **विभीषण की कैलास-यात्रा**—दे० अनु० ५६८ (६)।

(२) **हनुमान-भरत-सवाद**—दे० अनु० ५८८।

५६० अन्त मे उस सामग्री का उल्लेख करना है जो केवल पश्चिमोत्तरीय पाठ मे मिलती है—

(१) **विभीषण-निकषा-सवाद**—दे० अनु० ५६८ (६)।

(२) **समुद्र का** राम और लक्ष्मण को एक कवच और अस्त्र प्रदान करना। रावण के मन्त्रियो का रावण को विजय का आश्वासन देना (दे० प० रा० ५, सर्ग ९९ और १००)।

(३) **नारद-वाक्य**—नागपाश के अवसर पर नारद का आना और राम को उनके नारायणत्व का स्मरण दिलाना (दे० प० रा० ६, २७, ७-४१)।

(४) **कुम्भकर्ण-वाक्य**—रणभूमि मे विभीषण से मिलकर कुम्भकर्ण राम की शरण लेने की उसकी दूरदर्शिता की प्रशसा करता है (दे० प० रा० ६, ४६, ८२-९१)।

(५) **केश-ग्रहण**—विभीषण के कहने पर वानर रावण के यज्ञस्थल पर पहुँच कर उसका ध्यान भग करने मे असमर्थ है। इस पर अगद मन्दोदरी के केशो को खीच कर उसे रावण के पास ले आता है, जिससे रावण उत्तेजित हो जाता है और फलस्वरूप उसका यज्ञ समाप्त नही हो पाता है (दे० प० रा० ६, ८२ और अनु० ५९७)।

प्रक्षेप

५६१ तीन पाठो की उपर्युक्त विभिन्नता से स्पष्ट है कि गायको ने युद्धकाड का कलेवर बढाने मे सकोच नही किया है। प्रारम्भिक सर्गों मे से निम्नलिखित सर्ग प्रक्षिप्त प्रतीत होते है, सर्ग १-३ (अनु० ५६७), सर्ग ६-८ (अनु० ५६८), सर्ग १०-

१५ और २० (दाक्षिणात्य पा० मात्र मे मिलते है), सर्ग २१ (अनु० ५७४)। अत **युद्धकाण्ड के प्रारम्भ** की प्रामाणिक सामग्री इस प्रकार है

सर्ग ४-५—वानर-सेना का अभियान, राम का विलाप।

सर्ग ९ और १६—विभीषण की चेतावनी, रावण द्वारा उसका अपमान तथा विभीषण का लका से प्रस्थान।

सर्ग १७-१९—विभीषण की शरणागति और अभिषेक। इसके सबध मे सदेह है (दे० अनु० ५३८)।

सर्ग २२ (अंशत)—सेतुबन्ध। इसकी प्रामाणिकता के सबध मे आगे (अनु० ५७४) विचार किया जायेगा।

५६२ आदि रामायण मे सेतु-विषयक वृत्तान्त के पश्चात् अगद के दूतकार्य (सर्ग ४१) का वर्णन आता था, यह डॉ० याकोबी[1] का अनुमान है, इसके अनुसार **सर्ग २३-४०** प्रक्षिप्त है। इस अनुमान का कारण यह है कि सर्ग २३ के कुछ श्लोक (२-१३) सर्ग ४१ मे दुहराये गये है (दे० ४१, ११-२२), यदि दोनो के बीच की सामग्री हटा दी जाय तो आधिकारिक कथावस्तु के किसी आवश्यक अश का अभाव नही परिलक्षित होगा। इस अश मे बालकाड मे वर्णित वानरो की उत्पत्ति का निर्देश मिलता है (२८, ५, और ३०, २७), प्रामाणिक सर्गों मे बालकाड की सामग्री का उल्लेख नही होता। इस प्रक्षिप्त अश की मुख्य कथावस्तु इस प्रकार है—गुप्तचरो की कथाएँ (दे० अनु० ५८२), राम के मायाशीर्ष का वृत्तान्त (दे० अनु० ५८३) तथा सुवेल पर्वत के चढाव का प्रसग (दे० अनु० ५८४)'

५६३ युद्ध प्रकरण (सर्ग ४२-११२) मे इतनी पुनरावृत्ति और नीरसता पाई जाती है कि यह समस्त सामग्री वाल्मीकि जैसे महान् कवि की रचना हो ही नही सकती। परस्पर विरोधी सामग्री के तीन उदाहरण यहाँ पर पर्याप्त होगे।

सर्ग ५० मे गरुड के आगमन का वर्णन किया गया है, राम-लक्ष्मण मूर्छित होकर पडे हुए है और गरुड के आने पर नागपाश से मुक्त हो जाते है। किन्तु सर्ग ४९ मे शर-पाश-बद्ध राम के जगने का उल्लेख हो चुका था, अत सर्ग ५० का अनावश्यक वृत्तान्त बाद का प्रक्षेप सिद्ध हो जाता है।

सर्ग ५९ मे अकम्पन तथा नरातक दोनो को जीवित माना गया है किन्तु उनके वध का उल्लेख क्रमश सर्ग ५६ तथा सर्ग ५८ मे हो चुका है। इसके अतिरिक्त इस सर्ग मे राम-रावण-युद्ध का वर्णन है यद्यपि आगे चलकर राम के प्रथम बार रावण से युद्ध करने का स्पष्ट उल्लेख किया गया (सर्ग १००, ४६-५२)। वास्तव मे लक्ष्मण के

१ दे० वही पृ० ४३।

शक्ति से आहत होने का जो वर्णन इस सर्ग मे किया गया है, वह सर्ग १०० का अनुकरण मात्र प्रतीत होता है, अत सर्ग ५६ की प्रक्षिप्तता असदिग्ध है।

इसी प्रकार सर्ग ६९-७० को भी बाद का प्रक्षेप मानना चाहिए। यत्रतत्र इन्द्रवज्रा छन्दो के प्रयोग के अतिरिक्त इन सर्गो की कथावस्तु इन्हे प्रक्षिप्त ठहराती हैं, इनमे दो राक्षसो का वध वर्णित है जो पहले ही मारे जा चुके है—त्रिशिरा (३, २७) और नरातक (६, ५८, २०) तथा दो अन्य राक्षसो के मरने का उल्लेख है जिनके वध का वर्णन बाद मे फिर किया गया है—महोदर (६, ९७) और महापार्श्व (६, ९८)।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि इन्द्रजित्-वध के बाद इसका स्पष्ट शब्दो मे उल्लेख किया गया है कि उस समय तक युद्ध केवल तीन दिन से चल रहा है (दे० ९१, १६)। रावण-वध के लिये एक दिन और रखने पर यह अनुमान किया जा सकता है कि आदि रामायण मे समस्त युद्ध का वर्णन इस प्रकार विभक्त किया गया था

१ला दिन—सामूहिक युद्ध और नागपाश का प्रसग।

२रा दिन—कुभकर्ण का वध।

३रा दिन—इन्द्रजित् का वध।

४था दिन—रावण का वध।

युद्धकाण्ड के समस्त प्रक्षिप्त सर्गों का ठीक-ठीक पता लगाना असभव प्रतीत होता है। कथानक के दृष्टिकोण से निम्नलिखित तीन प्रक्षिप्त प्रसग अपेक्षाकृत अधिक महत्व रखते है।

५६४ हनुमान की हिमालय-यात्रा (सर्ग ७४ और सर्ग १०१)। प्रचलित वाल्मीकि रामायण मे हनुमान् की इस यात्रा का दो बार वर्णन किया गया है। इस प्रसग के प्रक्षिप्त होने का सबसे महत्वपूर्ण तर्क हनुमान् के समुद्र-लघन का वर्णन है (दे० रा० ५, १)। हिमालय की यात्रा इस लघन से कही अधिक असाधारण है, फिर भी इस कार्य की कठिनाई का कुछ भी वर्णन नही किया गया है। यदि समुद्र-लघन तथा हिमालय-यात्रा का वर्णन दोनो एक के ही द्वारा रचित होते तो हिमालय-यात्रा को अधिक महत्व दिया जाता। महाभारत के रामोपाख्यान मे भी हनुमान् की हिमालय-यात्रा का उल्लेख नही है। सर्ग ७४ मे त्रिष्टुभ छन्दो का बाहुल्य भी प्रामाणिकता के विषय मे सन्देह उत्पन्न करता है। सर्ग १०१ को हटाने से सर्ग १०० सुगमता से सर्ग १०२ से मेल खाता है।[1] इसके अतिरिक्त सर्ग १०० के कुछ श्लोक सर्ग १०२ मे दुहराये गये है, इसमे भी सर्ग १०० के प्रक्षिप्त होने का निर्देश देखा जा सकता है।

---

१ १००, ५५ के बाद १० वा सर्ग आना चाहिए। दे० एच० याकोबी वही, पृ० ४५।

५६५ अग्निपरीक्षा (सर्ग ११४-१२०)। सीता की अग्नि-परीक्षा के प्रक्षिप्त होने मे बहुत कम सदेह है।[1] इस प्रसग मे सीता के प्रति राम के प्रेम मे जो सहसा परिवतन दिखाया गया हे वह अप्रत्याशित ही नही सर्वथा अस्वाभाविक भी है। सीता-हरण के बाद राम के विरह का बहुत से सर्गो मे वणन किया गया हे, युद्धकाण्ड के प्रारम्भ मे राम स्वय कहते है कि मेरा विरह-जनित शोक दिनोदिन बढता जाता ह

शोकश्च किल कालेन गच्छता ह्यपगच्छति।
मम चापश्यत कान्तामहन्यहनि वर्धते ॥४॥ (सग ५)

लकावरोध के बाद भी सीता के लिए राम की अभिलाषा का उल्लेख किया गया है **जगाम मनसा सीतां दूयमानेन चेतसा** (४२, ७)। इन्द्रजित् द्वारा माया-सीता के वध का समाचार सुनकर राम मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिर पडे

तस्य तद्वचन श्रुत्वा राघव शोकमूर्च्छित।
निपपात तदा भूमौ छिन्नमूल इव द्रुम ॥१०॥ सग (८३)

इसमे स्पष्ट हे कि सीता क प्रति राम का प्रेम अपरिवर्तित बना हुआ था, किन्तु यह सब होते हुए भी रावण वध के पश्चात् राम सीता को देखकर उनसे कहते है कि मै अपने शत्रु के अपमान का प्रतिकार कर चुका हूँ, मुझे तुम्हारे प्रति कोई आकर्षण नही रहा, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, सुग्रीव अथवा विभीषण किसी को भी पति के रूप मे चुन सकती हो, मुझे तुम्हारे चरित्र पर सदेह है। अग्निपरीक्षा के बाद राम अवश्य स्वीकार करते ह कि मैने तो तुम पर सदेह नही किया किन्तु जनता की दृष्टि म तुम्हारे इस शुद्धीकरण को आवश्कता थी। इस प्रकार का दिखावा समस्त मूल वाल्मीकि रामायण की भावधारा क विरुद्ध हे और अवतारवाद स्वीकार होने के पश्चात् ही ऐसा सभव था, परवर्ती साहित्य मे इस पर बारबार बल दिया जाता है कि राम को वास्तविक दु ख नही है, वह कवल मनुष्य-चरित करते हे। अत आश्चय नही होना चाहिए कि इस प्रसग मे राम तथा सीता दोनो के अवतार होने का उल्लेख है। ब्रह्मा आदि देवता प्रकट होकर राम की विष्णु के रूप मे स्तुति करते ह तथा सीता को लक्ष्मी से अभिन्न मानते है (११७, २७)। यह वाल्मीकि रामायण का एकमात्र स्थल है, जहाँ सीता तथा लक्ष्मी की अभिन्नता का प्रतिपादन किया गया हे (दे० अनु० ३६४)।

उपर्युक्त तर्क के अतिरिक्त यह भी ध्यान देने योग्य है कि युद्धकाण्ड क अन्त मे दो बार समस्त रामकथा का सिहावलोकन प्रस्तुत किया गया है (सर्ग १२४ और १२६) किन्तु अग्निपरीक्षा का उल्लेख नही होता। बालकाड के प्रारम्भ की दोनो अनुक्रमणिकाओ

१ दे० ए० वेबर, आन दि रामायण, पृ० ३५। डब्लू० प्रिस, याकोबी मेमोरियल वोल्युम, पृ० २०८।

(सर्ग १ और ३) का प्रामाणिक सस्करण अग्निपरीक्षा के विषय मे मौन है ।[1] यही नहीं, उत्तरकाड भी अग्निपरीक्षा के विषय मे कुछ नही कहता, दो स्थलो पर राम सीता की निर्दोषता के प्रमाण का उल्लेख करते है । प्रथम बार सीता-त्याग के समय वह केवल देवताओ के साक्ष्य की चर्चा करते है,[2] दूसरी बार वह वाल्मीकि से कहते है कि मैंने लका-निवास के बाद सीता को तभी ग्रहण किया जब उन्होने अपने सतीत्व की शपथ खायी थी

प्रत्ययश्च पुरा वृत्तो वैदेह्या सुसनिधौ ।
शपथश्च कृतस्तत्र तेन वेश्म प्रवेशिता ।।३।।

(सर्ग ९७)

यदि उस सर्ग के रचनाकाल मे अग्नि-परीक्षा का वृत्तान्त प्रचलित होता तो यहाँ पर राम द्वारा अवश्य ही सीता के सतीत्व के सबसे महत्वपूर्ण प्रमाण का उल्लेख हुआ होता । अत यह मानना पडेगा कि उत्तरकाड की आधिकारिक कथावस्तु के लिपिबद्ध होने के पश्चात् ही अग्निपरीक्षा विषयक प्रक्षेप युद्धकाड का अश बन गया है ।[3]

महाभारत के रामोपाख्यान से भी हमारे निर्णय की पुष्टि होती है, रामायण के इस प्राचीनतम सक्षेप मे कही भी अग्निपरीक्षा का निर्देश मात्र भी नही मिलता (दे० अनु० ६०१) । अग्नि-परीक्षा के बाद के दो सर्ग (११९-१२०) भी अनावश्यक है और प्रायः प्रक्षिप्त माने जाते है ।[4] इनमे शिव राम की स्तुति करते है, दशरथ दिखाई देते हैं तथा इन्द्र राम का निवेदन स्वीकार कर मृत वानर-सैनिको को जीवित कर देते है ।

५६६ पुष्पक मे अयोध्या की यात्रा (सर्ग १२३) । यदि आदि रामायण के रचनाकाल मे यह मानी हुई बात होती कि रावण के पास पुष्पक है तो सीताहरण के समय अवश्य ही रावण द्वारा इसके उपयोग का वर्णन किया गया होता किन्तु अरण्य-काड मे कही भी पुष्पक का उल्लेख नही मिलता (दे० अनु० ४९२) । सुन्दरकाण्ड के पुष्पक-वर्णन विषयक सर्ग ७ और ८ भी प्रक्षिप्त है (दे० अनु० ५३०) । त्रिजटा-स्वप्न के विवरण (किष्किन्धा काड, सर्ग २७) मे पुष्पक का दो बार उल्लेख है (श्लोक १८

---

१ दे० जी० एच० भट्ट ज० ऑ० इ०, भाग ५, पृ० २९२ ।

२ दे० गौ० रा० ७, ४८, ६, प० रा० ७, ४७, ७ । दाक्षिणात्य पाठ के समानान्तर स्थल पर अग्निपरीक्षा का उल्लेख है (७, ४५, ७), जो अन्य पाठो मे नही मिलता ।

३ दे० नीलमाधव सेन । ज० ऑ० इ०, भाग १, पृ० २०६ ।

४ दे० महाराष्ट्रीय श्री रामायण समालोचन, भाग १, पृ० २३९ ।

और २०)। इस सर्ग मे बहुत-से श्लोक बाद मे जोडे गये है। बडौदा के सस्करण में श्लोक १८ प्रक्षिप्त माना गया हे। युद्धकाड के अन्तिम सर्गों की अतरग परीक्षा से प्रतीत होता है कि आदि रामायण मे वापसी यात्रा के प्रसग मे पुष्पक का कोई उल्लेख नही था। सर्ग १२३ के अन्त मे पुष्पक के अयोध्या के पास पहुँचने का उल्लेख किया गया है किन्तु अगले सर्ग १२४ मे वनवास की समाप्ति पर राम के भरद्वाज-आश्रम मे पहुँचने का वर्णन किया गया है। लका मे राम ने विभीषण से अयोध्या के दुर्गम मार्ग का उल्लेख किया था—**अयोध्या गच्छतो ह्येष पन्था परमदुगम** (१२१, ७), और भरद्वाज-आश्रम मे राम ने मुनि से यह वरदान माँग लिया कि अयोध्या के मार्ग मे सभी वृक्ष अकाल मे ही फलदार हो—**अकालफलिनो वृक्षा**।[1] इसके अतिरिक्त हनुमान् से समाचार प्राप्त करने के पश्चात् जब अयोध्यावासी राम के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे है, तब वानर-सेना द्वारा गोमती नदी के पार करने का तथा उनके द्वारा उडाई हुई धूल का उल्लेख किया गया हे

मन्ये वानरसेना सा नदी तरति गोमतीम।
रजोवर्षं समुद्भूत पश्य सालवन प्रति॥२८॥ (सर्ग १२७)

इन उद्धरणो के आधार पर यह अनुमान किया जा सकता हे कि आदि रामायण मे राम स्थल-मार्ग से ही अयोध्या लौटे थे, अत युद्धकाण्ड के अन्त मे पुष्पक-विषयक सामग्री को, विशेषकर सर्ग १२३ को, प्रक्षिप्त माना जाना चाहिए।[2]

२–युद्धकाण्ड का विकास

५६७ वाल्मीकि रामायण के युद्धकाण्ड से सम्बन्ध रखनेवाली सामग्री मे आगे

---

१ दे० १२४, १६। सर्ग १२४ और १२५ मे प्रत्यावर्तन के वर्णन की प्राचीनतम सामग्री सुरक्षित है। सर्ग १२५ के प्रारम्भ मे पुष्पक का जो उल्लेख है वह गौडीय पाठ के समानान्तर सर्ग १०६ मे नही मिलता।

२ महानाटक तथा कुछ अन्य रचनाओ मे राम की पैदल-यात्रा का वर्णन मिलता है (दे० अनु० ६०६)। प्रचलित रामायण के अनुसार राम ने अयोध्या पहुँचकर पुष्पक को वैश्रवण के पास भेज दिया है (दे० ६, १२७)। बाद मे पुष्पक राम के पास लौटा किन्तु राम ने उसे यह कहकर फिर कुबेर के पास भेज दिया कि स्मरण किये जाने पर मेरे पास आना (दे० ७, ४१)। शम्बूक-वध के अवसर पर राम ने पुष्पक को बुलाया (दे० अनु० ६२८)। रावण ने वैश्रवण को हराकर पुष्पक प्राप्त किया था (दे० अनु० ६५१)। आनन्द रामायण (१, १२, १६१) के अनुसार राम ने पुष्पक को आदेश दिया कि वह सुग्रीव आदि को उनके स्थान पर पहुँचा दे।

चलकर बहुत कुछ परिवर्द्धन किया गया है तथा सर्वथा नवीन सामग्री भी जोड दी गई है। फिर भी आधिकारिक कथावस्तु का कोई विकास नही हुआ ह। अधिकाश परिवर्द्धन पुनरावृत्ति मात्र ही है और इसमे बहुत उपेक्ष्य सामग्री भी मिलती है। अत यहा पर कुछ अपेक्षाकृत महत्त्वपूर्ण अथवा रोचक वृत्तान्तो का कथानक के क्रमानुसार उल्लेख अथवा निरूपण किया जाता है। अन्त मे सर्वथा नवीन सामग्री प्रस्तुत की गई है (अनु० ६११-६१५)।

क। वानर-सेना का अभियान

युद्ध-काण्ड के प्रारम्भ मे राम हनुमान् की प्रशसा करते हुए लका-दहन का उल्लेख करते है तथा समुद्र के कारण चिन्तित हो जाते है (सर्ग १)। सुग्रीव राम को विजय का आश्वासन देकर सेतु-निर्माण का आयोजन करने का निवेदन प्रस्तुत करता है (सर्ग २)। राम से पूछे जाने पर हनुमान् लका-दुर्ग तथा राक्षस-सेना की शक्ति का वर्णन करते हुए फिर लकादहन की ओर सकेत करते है (सर्ग ३)। इस सामग्री मे लकादहन तथा सेतु-निर्माण का जो उल्लेख मिलता है, उससे अनुमान किया जा सकता है कि ये तीनो सर्ग बाद के प्रक्षेप है। अगले सर्ग से स्पष्ट है कि सेतु-निर्माण का अब तक निश्चय नही हुआ था क्योकि राम ने समुद्र के तट पर पहुँचकर कहा कि अब हमे समुद्र पार करने के उपाय पर परामर्श करना चाहिए—**सप्राप्तो मत्रकालो न सागरस्येह लघने** (४, १०१)। इस सर्ग मे सेना-अभियान का वर्णन किया गया है—राम तथा लक्ष्मण ने क्रमश हनुमान् तथा अगद पर चढकर वानर-सेना के मध्य मे समुद्र की ओर प्रस्थान किया। तट पर पहुँच कर वानर-सेना ने वृक्षो के नीचे पडाव डाला (सर्ग ४)। अनन्तर सीता-विरह से व्याकुल राम के विलाप का वर्णन किया गया है (सर्ग ५)।

परवर्ती साहित्य मे वानर-सेना के अभियान के प्रसग मे अन्य सेनाओ का भी उल्लेख किया गया है। वाल्मीकीय उत्तरकाण्ड के अनुसार भरत ने सीताहरण का समाचार सुनकर सब राजाओ को बुलाया था (सर्ग ३८, २४-२५) और वे अपनी सेनाओ के साथ अयोध्या आए भी थे किन्तु युद्ध मे भाग न ले सके—**भरतेन वय पश्चात्समानीता निरर्थकम्** (३६, ४)। गौडीय पाठ के अनुसार हनुमान् ने अपनी हिमालय-यात्रा के समय भरत को युद्ध का समाचार दिया था जिससे भरत काशेय, जनक, कैकय आदि राजाओ को बुलाकर युद्ध की तैयरियाँ करने लगे थे—**समुद्योग कर्तुमारभत्**।[1]

१ दे० गौ० रा० ६, ८२, १३६। **प्रतिमानाटक** मे भरत सुमन्त्र से सीताहरण का समाचार सुनकर अन्य राजाओ के साथ लका पर आक्रमण करने का

वसुदेवहिंडि (सातवी श० ई०) मे माना गया है कि भरत ने सुग्रीव द्वारा युद्ध का समाचार पाकर एक चतुरगिनी सेना भेज दी थी जो समय पर वानर-सेना के साथ समुद्रतट पर पहुँची थी । **पउमचरिय** (पर्व ५५) तथा अन्य जैन रामकथाओ मे सीता का भाई भामण्डल अपनी सेना के साथ राम की सहायता करने आता है । गुणभद्र के **उत्तरपुराण** मे राम अपनी ही सेना तथा वानर-सेना दोनो के साथ लका पर आक्रमण करते है । सम्बूरान की सेना का उल्लेख अनु० ५२४ मे हो चुका है ।

ख । विभीषण-चरित

५६८ वाल्मीकि रामायण के प्रथम सर्ग मे सेतु-निर्माण से पहले विभीषण का उल्लेख नही है तथा समस्त युद्ध-प्रकरण के विषय मे एक ही श्लोक मिलता है

समुद्रवचनाच्चैव नल सेतुमकारयत् ।। ६५।।
तेन गत्वा पुरीं लका हत्वा रावणमाहवे ।
अभ्यषिचत्स लकाया राक्षेन्द्र विभीषणम ।। ६६।।

(बडौदा सस्करण)

द्वितीय अनुक्रमणिका मे विभीषण का उल्लेख सेतु-निर्माण तथा लकावरोध के अनन्तर रखा गया है

सगम च समुद्रस्य नलसेतोश्च बन्धनम् ।। २४ ।।
प्रतार च समुद्रस्य रात्रौ लकावरोधनम् ।
विभीषणेन ससर्गं वधोपायनिवेदनम् ।। २५।।

(बालकाण्ड, सर्ग ३ । बडौदा सस्करण)

अत यह अनुमान निराधार नही है कि विभीषण-चरित सम्बन्धी सामग्री अपेक्षाकृत अर्वाचीन है और सम्भवत इस कारण तीनो पाठो की तत्सम्बन्धी सामग्री मे इतनी विभिन्नता पायी जाती है ।

सकल्प करते है (दे० ६, १६) । **साकेत** (सर्ग १२) मे भरत-हनुमान्-सवाद के पश्चात् भरत के आदेश पर अयोध्यावासियो की रणसज्जा का विशद वर्णन किया गया है, वसिष्ठ ने राम-विजय का आश्वासन देकर उनको जाने से रोक लिया तथा सबो को दूर-दृष्टि दिलाकर लका की घटनाओ का साक्षी बनाया । **आनद रामायण** (१, ११, ७२) मे इसका उल्लेख मात्र किया गया है कि हनुमान् के चले जाने के बाद भरत ने राजाओ को बुलाकर राम की सहायता करने जाने का निश्चय किया था । बलरामदास के रामायण मे बहुत से राजा भरत के निमन्त्रण पर राम की सहायता करने के लिए अपनी सेना के साथ अयोध्या मे एकत्र हो जाते है ।

(१) **रावण की सभा** के विषय मे दो सर्ग सबसे प्राचीन है।[1] सर्ग ९ की मुख्य कथावस्तु है विभीषण द्वारा लका के विनाश की आशका तथा सीता को लौटाने का रावण से अनुरोध। सर्ग १६ मे रावण सम्बन्धियो की सामान्य निन्दा करते हुए (**घोरा स्वार्थप्रयुक्तास्तु ज्ञातयो नो भयावहा,** श्लोक ७) विभीषण को राक्षस-कुल का कलक बताता है (**धिक्कुलपासन,** श्लोक १३)। इस घोर भर्त्सना से घबराकर विभीषण चार[2] राक्षसो के साथ लका छोड देता है (सर्ग १६)।

(२) **विभीषण की शरणागति** के विषय मे वाल्मीकि रामायण का वृत्तान्त इस प्रकार है। विभीषण वानर-सेना के शिविर के पास पहुँचकर अपना परिचय देते हुये कहता है कि मैं रावण का अनुज हूँ, उसने मेरे सत्परामर्श को ठुकराकर मेरा अपमान किया है, अत मै अपना परिवार छोडकर राम की शरण मे आ गया हूँ—**त्यक्त्वा पुत्राश्च दाराश्च राघव शरण गत** (१७, १६)। तब सुग्रीव विभीषण को मार डालने का परामर्श[3] देते है किन्तु राम शरणागत को अवध्य बताकर उसे ग्रहण करते है —

बद्धाजलिपुट दीन याचन्त शरणागतम्।
न हन्यादानृशस्यार्थमपि शत्रु परतप॥२७॥ (सर्ग १८)

अनन्तर विभीषण रावण तथा उसकी सेना की शक्ति का वर्णन करता है और युद्ध मे राम की सहायता करने की प्रतिज्ञा करता है। तब राम विभीषण का राज्याभिषेक करते हैं और इसके बाद विभीषण राम को सागर की शरण लेने का परामर्श देता है (सर्ग १९)।

(३) प्रचलित वाल्मीकि रामायण के विभिन्न पाठो मे रावण-सभा तथा विभीषण

---

१ सर्ग ६ मे रावण तीन प्रकार के मत्रियो के विषय मे नीति की शिक्षा देता है, सर्ग ७-८ मे विभिन्न राक्षस रावण को विजय का आश्वासन देते हुए उत्तर-काण्ड मे वर्णित रावण की विजय-यात्राओ का उल्लेख करते है। सर्ग १०-१५ गौडीय पाठ मे नही मिलते।

२ युद्ध काण्ड, सर्ग ३७, के अनुसार इनके नाम इस प्रकार है—अनल, पनस, सम्पाति और प्रमाति। गोविन्दराज के पाठ मे पनस के स्थान पर शरभ नाम आया है।

३ दे० सर्ग १७। शरणागति के वर्णन मे एक विस्तृत प्रक्षेप मिलता है (१७, ३१-६८ और १८, १-२२), इसमे राम विभीषण के विषय मे प्रमुख वानरो का विचार पूछते है तथा सुग्रीव के तर्कों का उत्तर देते है। प्रक्षिप्तता का प्रमाण इसमे है कि सर्ग १७ के चार श्लोक (२७-३०) सर्ग १८ मे दोहराये गये है (१७-२०)। अधिकाश सामग्री उदीच्य पाठ मे नही मिलती।

की शरणागति के विषय मे प्रक्षिप्त सामग्री पर्याप्त मात्रा मे विद्यमान हे । **दाक्षिणात्य पाठ** के छ सर्ग गौडीय पाठ मे नही मिलते है, इनकी कथावस्तु इस प्रकार है—रावण की सभा के दूसरे दिन विभीषण ने रावण के पास जाकर अपनी चेतावनी दुहराई (सर्ग १०) । अनन्तर रावण की **द्वितीय सभा**[1] का वर्णन किया गया है । कुम्भकर्ण ने सीताहरण के कारण रावण की भर्त्सना करने के बाद युद्ध मे सहायता देने की प्रतिज्ञा की, सीता के साथ बलप्रयोग करने के महापार्श्व के सुझाव का उत्तर देते हुये रावण ने ब्रह्मा के शाप का उल्लेख किया (दे० अनु० ६५४), विभीषण ने फिर लका के विनाश की आशका प्रकट की तथा इन्द्रजित् ने उसे कायर कहकर पुकारा (सर्ग ११-१५) ।

(४) दाक्षिणात्य पाठ मे इसका उल्लेख मात्र किया गया है कि **रावण की माता** ने लकावरोध के समय सीता को लौटाने का रावण से अनुरोध किया था, उदीच्य पाठों के अनुसार निकषा ने रावण-सभा के पूर्व ही अपने पुत्र विभीषण के पास जाकर उससे निवेदन किया कि वह रावण को समझावे ।[2]

(५) उदीच्य पाठो मे विभीषण की शरणागति के पूर्व रावण की एक ही सभा वर्णित है किन्तु इस सभा के वर्णन मे बहुत प्रक्षिप्त सामग्री है, जिसका दाक्षिणात्य पाठ मे नितान्त अभाव हे । रावण-विभीषण-सवाद के अतिरिक्त इसमे प्रहस्त-वाक्यम्, महोदरवाक्यम् तथा विरूपाक्ष-वाक्यम् नामक सर्ग भी मिलते है, अन्त मे इसका उल्लेख है कि रावण ने राम की शरण लेने का विभीषण का सकल्प सुनकर उस पर **पाद-प्रहार** किया था ।[3]

---

१ विभीषण की शरणागति के बाद सभी पाठो मे रावण की सभा के मिलने का दो बार उल्लेख किया गया है—राम के मायाशीष के प्रसग के ठीक पहले (दे० सर्ग ३१) तथा इसके बाद (दे० सर्ग ३५) । इसके अतिरिक्त पश्चिमोत्तरीय पाठ मात्र मे वानर-सेना के समुद्र-तरण के पश्चात् रावण-सभा के मिलने का वर्णन किया गया है (दे० सुन्दरकाण्ड, सर्ग १००) ।

२ दे० दा० रा० ६, ३४, २०, गौ० रा० ५, ७६, प० रा० ५, ७५ । भावार्थ रामायण (५, ३५) तथा कृत्तिवास रामायण (५, ३७) मे भी इसका वर्णन किया गया है । रगनाथ रामायण (६, ३१) मे कैकसी का हितोपदेश लकावरोध के बाद ही रखा गया है।

३ दे० सुन्दरकाड, गौ० रा० ८१-८७, प० रा० सर्ग ८१-९० । रावण के पाद-प्रहार का उल्लेख अभिनन्द (२३, ८७), माधव कदली, कृत्तिवास, बलरामदास, रगनाथ, एकनाथ तथा तुलसीदास आदि के रामायणो मे भी मिलता है ।

(६) राम की शरण लेने के पूर्व विभीषण पहले अपनी माता से मिलने गया था इसका उल्लेख मात्र गौडीय पाठ मे मिलता है किन्तु पश्चिमोत्तरीय पाठ मे **विभीषण-निकषा-सवाद** का पूरा वर्णन किया गया है।[1] गौडीय पाठ ही विभीषण की **कैलास-यात्रा** का उल्लेख करता है। इसके अनुसार विभीषण अपनी माता से विदा लेकर अपने भाई वैश्रवण के पास चला गया था। कैलास पर, विभीषण वैश्रवण तथा शिव दोनो से मिला और दोनो ने उसे राम की शरण लेने का परामर्श दिया।[2]

५६६ शरणागति के प्रसग के बाहर वाल्मीकि रामायण की विभीषण विषयक सामग्री निम्नलिखित है

(१) सुन्दरकाण्ड के अनुसार विभीषण ने सीता को लौटाने का रावण से **अनुरोध** किया था (दे० अनु० ५४६) तथा बाद मे हनुमान् का वध करने से रावण को **रोका** था (दे० अनु० ५५१)। इसके अतिरिक्त इसका भी उल्लेख किया गया है कि लका-**दहन** के समय विभीषण का भवन सुरक्षित रहा (दे० ५, ५४, १६)।

(२) युद्धकाण्ड मे विभीषण को राम के मुख्य परामर्शदाता के रूप मे चित्रित किया गया है। उसके परामर्श के अनुसार राम समुद्र की शरण लेते है (सर्ग १६) तथा **अगद** को रावण के पास भेज देते है (सर्ग ४१)। विभीषण गुप्तचरो शुक-सारण को **(सर्ग २५)** तथा बाद मे शार्दूल को (सर्ग २६) पहचानकर पकडवाता है, उसके मत्री **लका** जाकर राक्षसो की सेना का समाचार ले आते है (सर्ग ३७)। वह राम को कुभ-**कर्ण** (सर्ग ६१) तथा प्रहस्त (सर्ग ५८) का परिचय देता है। माया-सीता के वध के **अवसर** पर वह रावण की माया के रहस्य का उद्घाटन करता है तथा इन्द्रजित् के यज्ञ[3] **के** विध्वस का परामर्श देता है (सर्ग ८४)।

परवर्ती साहित्य मे विभीषण को **ज्योतिषी तथा मायावी** माना गया है। इसका **आधार** युद्धकाण्ड के उस स्थल मे विद्यमान है, जहाँ कहा गया है कि विभीषण ही

---

१ दे० गौ० रा० ५, ८६, ४, प० रा० ५, ६१, ४-६२। माधव कदली (५, ४०), कृत्तिवास (५, ३६), रगनाथ (६, १४) तथा एकनाथ (५,३७) ने विभीषण और उसकी माता की इस भेट का वर्णन किया है। इसका उल्लेख तोरवे रामायण मे भी मिलता है (६, २)।

२ दे० गौ० ५, ८६, ५-४२। विभीषण की इस कैलास-यात्रा का वर्णन माधव कदली (५, ४०), कृत्तिवास (५, ४०), अभिनन्द (रामचरित सर्ग २४) तथा तुलसीदास ने (गीतावली ५, २७-२८) भी किया है।

३ पश्चिमोत्तरीय पाठ मे रावण के यज्ञ का विध्वस भी विभीषण के परामर्श से किया जाता है (दे० अनु० ५६७)।

अपनी माया के बल पर इन्द्रजित् को देखने मे समर्थ था (दे० सर्ग ४६)। इसका भी उल्लेख मिलता है कि विभीषण ने सुग्रीव की (सर्ग ४६, ९) तथा बाद मे राम-लक्ष्मण की (सर्ग ५०) आखो को जल से धोया था, महाभारत के अनुसार यह जल कुबेर का भेजा हुआ था, इससे आख धो लेने के बाद अदृश्य प्राणी दृष्टिगोचर हो जाते थे।[1]

युद्ध के वर्णन मे विभीषण का तीन बार उल्लेख मिलता है—वह प्रथम सामान्य युद्ध मे भाग लेता है (सर्ग ४३), इन्द्रजित् की सेना का सामना करता है (सर्ग ८९-९०) तथा लक्ष्मण के विरुद्ध लडते हुए रावण के घोडे को मार डालता है (सर्ग १००)।

रावणवध के बाद विभीषण ने पहले अपने भाई की अन्त्येष्टि करना अस्वीकार किया था,[2] किन्तु राम के समझाने पर (**मरणान्तानि वैराणि**, १११, १००) उसने रावण का दाह-सस्कार सम्पन्न किया था। अन रावण के वध पर विभीषण-विलाप विषयक सर्ग अस्वाभाविक प्रतीत होता है (दे० दा० रा० सर्ग १०९, गौ० रा० सर्ग ९३) वास्तव मे यह सर्ग प्रक्षिप्त है और पश्चिमोत्तरीय पाठ मे नही मिलता।

युद्धकाण्ड के अन्त मे राम विभीषण का अभिषेक करने के लिए लक्ष्मण को लका भेज देते है (सर्ग ११२), बाद मे विभीषण दूसरो के साथ अयोध्या जाकर राम के अभिषेक मे सम्मिलित होता है (सर्ग १२१ और १२८)।

(३) **वाल्मीकीय उत्तरकाण्ड** (सर्ग ९) मे विभीषण की धार्मिकता पर विशेष बल दिया गया है। उसके ज म के विषय मे यह कथा मिलती है—कैकसी विश्रवा के पास उस समय पहुँची थी जब वह अग्निहोत्र कर रहे थे अत उन्होने कैकसी से कहा कि तुम्हारे पुत्र दारुण क्रूरकर्मी राक्षस होगे। कैकसी के अनुनय करने पर विश्रवा ने कहा था कि तुम्हारा अन्तिम पुत्र मेरे (ब्राह्मण) वश के अनुरूप धर्मात्मा होगा

पश्चिमो यस्तव सुतो भविष्यति शुभानने।
मम वशानुरूप स धर्मात्मा च न सशयः ॥२७॥

तदनुसार विभीषण बचपन से ही धार्मिक, स्वाध्यायनिरत, नियताहार तथा जितेन्द्रिय था (९, ३९)। घोर तपस्या के द्वारा वर पाकर उसने धर्मबुद्धि को ही चुन लिया था—**परमापद्गतस्यापि धर्मे मम मतिर्भवेत्** (१०, ३०)। इस वर के अतिरिक्त

---

१ **'अर्तार्हिताना भूताना दर्शनार्थम्'** (दे० ३, २७३, १०)। आनन्द रामायण मे भी कुबेर के भेजे हुए जल का उल्लेख है (दे० १, ११, २९)।

२ दे० ६, १११ ९४। वाल्मीकि का यह यथार्थवादी दृष्टिकोण शरणागति के समय विभीषण के इस कथन से भी स्पष्ट है—राक्षसाना वधे साह्य लकायाश्च प्रधर्षणे। करिष्यामि यथाप्राण प्रवेक्ष्यामि च वाहिनीम् (६, १९, २३)।

ब्रह्मा ने विभीषरण को अमरत्व भी प्रदान किया था (१०, ३५)। सुन्दरकाण्ड मे विभीषरण की पत्नी तथा उसकी पुत्री का उल्लेख मिलता है (दे० अनु० ५४६), उत्तरकाण्ड मे सरमा विभीषरण की पत्नी मानी गई है (सर्ग १२, २५)। एक अन्य स्थल पर इसका उल्लेख किया गया है कि विभीषरण ने कन्याओ का हरण करने के कारण रावण की भर्त्सना की थी (दे० सर्ग २५)।

राम के अश्वमेध पर विभीषरण उपस्थित था, उस अवसर पर वह ऋषियो की सेवा मे लग गया था—**पूजा चक्रे ऋषीणाम्** (९१, २९)। अपने स्वर्गारोहरण के समय राम ने विभीषरण को यह आश्वासन[1] दिया कि लका मे तुम्हारा राज्य चिरस्थायी होगा -

यावत्प्रजा धरिष्यन्ति तावत्त्व वै विभीषरण।
राक्षसेंद्र महावीय लकास्थ स्व धरिश्यसि ।।२४।।
यावच्चद्रश्च सूर्यश्च यावत्तिष्ठति मेदिनी।
यावच्च मत्कथा लोके तावद्राज्य तवास्त्विह ।।२५।। (सर्ग १०८)

५७० वाल्मीकि रामायण तथा परवर्ती रामकथाओ मे विभीषरण की वशावली तथा उसकी **जन्म-कथा** सबधी सामग्री रावण-चरित के अन्तर्गत रखी गई है (दे० अनु० ६४४-६४७)। तुलसीदास ने विभीषरण को प्रतापभानु के मत्री धर्मरुचि का अवतार माना है (दे० अनु० ६२५), रामलिंगामृत (१, ३०) के अनुसार वह प्रह्लाद का अवतार है तथा महाभागवत पुराण की यह धारणा है कि धर्म नामक देवता विभीषरण के रूप मे प्रकट हुए थे—**धर्म स्वय तु सजातो हि विभीषरण** (३७, १४)। दशरथ-यज्ञ का एक ऐसा रूप भी मिलता है जिसके अनुसार विभीषरण विष्णु का अशावतार ठहरता है (दे० अनु० ३५७)। रामकियेन (अध्याय ४) मे लिखा है कि रावण के जन्म के बाद ईश्वर ने विस्सुज्ञन नामक देवता को आदेश दिया कि वह रावण के भाई के रूप मे नारायणावतार राम की सहायता करे। तदनुसार विस्सुज्ञन विभेक (विभीषरण) के रूप मे प्रकट हुए, उनके पास एक मायावी दर्पण था जिसकी सहायता से वह अज्ञान का अन्धकार दूर करने तथा भविष्य का रहस्य प्रकट करने मे समर्थ था। सेरीराम, सेरतकाण्ड (दे० अनु० ४१५) आदि रचनाओ मे विभीषरण को ज्योतिषी तथा गुप्त बातो का ज्ञाता माना गया है। पउमचरिय मे विभीषरण की मायावी शक्ति का उल्लेख मिलता है।

भारत के परवर्ती राम-साहित्य मे विभीषरण को मुख्यतया **राम-भक्त** के रूप मे चित्रित किया गया है। तुलसीदास के अनुसार विभीषरण ने तपस्या द्वारा वर पाकर

---

१ उसी अवसर पर जगन्नाथ की आराधना करने के परामर्श का वृत्तान्त प्रक्षिप्त है (दे० अनु० ७८०)।

धर्मबुद्धि ही नही अपितु भगवद्भक्ति माँग ली थी—**तोहि माँगेउ भगवत पद कमल अमल अनुरागु** (रामचरितमानस १, १७७)। अत जब हनुमान् सीता की खोज करते हुए लका पहुँचे उसने विभीषण को राम की स्तुति मे सलग्न देखा (दे० अनु० ५३८)। रावण की सभा मे वह भगवान की शरण लेने का अपने अग्रज से अनुरोध करता है तथा स्वय शरणागत बनकर राम की स्तुति भगवान के रूप मे करता है।[1] **आनद रामायण** (८, ७, १२४) मे समस्त रामभक्त विभीषण के अशावतार (**विभीषणाशभूता**) माने गए है।

सरमा के अतिरिक्त त्रिजटा (दे० अनु० ५४७), पकजसुन्दरी (दे० पउमचरिय, पर्व ८, ६२) तथा नारायण की पुत्री (सेरी राम) का उसकी **पत्नी** के रूप मे उल्लेख मिलता है। त्रिजटा अधिकतर उसकी **पुत्री** मानी गई है।[2] कृत्तिवास रामायण मे विभीषण के **पुत्र** तरणीसेन को रामभक्त के रूप मे प्रस्तुत किया गया है (दे० अनु० २८५, ३)।

५७१ विभीषण की **शरणागति** के विषय मे बहुत-सी रचनाओ मे माना गया है कि रावण ने उसे **निर्वासित** किया था, उदाहरणार्थ—गुणभद्र का उत्तर पुराण (६८, ४६७), रगनाथ रामायण (७, १३), सेरीराम तथा रामजातक। रगनाथ रामायण के अनुसार रावण ने खग उठाकर विभीषण का वध करना चाहा किन्तु प्रहस्त ने उसे रोका था।

शरणागति का **समय** प्राय वाल्मीकि रामायण के अनुसार है किन्तु पद्मपुराण के पाताल खण्ड (११२, २२०) मे माना गया है कि विभीषण ने इन्द्रजित्-वध के बाद ही राम की शरण ली थी। सेरीराम मे इस घटना को राम के समुद्र-तरण के पश्चात् रखा गया है। महावीरचरित (५, ३०) के अनुसार विभीषण खर-दूषण के वध के बाद लका छोडकर अपने मित्र सुग्रीव के यहाँ रहने लगा था तथा उसने राम-सुग्रीव-भेट के पूर्व ही राम के पास आत्म-समर्पण का पत्र भेजा था।

वाल्मीकि रामायण मे विभीषण **चार मन्त्रियो** के साथ राम के पास आता है। पउमचरिय (५५, २२) के अनुसार वह ३० अक्षौहिणी सेनाओ के साथ राम की शरण मे आया था। रामायण ककविन (सर्ग १५) मे भी माना गया है कि विभीषण ने अपनी

---

१ कब रामायण के अनुसार विभीषण ने राम को नारायणावतार बताकर, रावण को नृसिहावतार की कथा सुनाई थी (६, ३)। रामायण ककविन (सर्ग १३) मे विभीषण को शिवभक्त माना गया है।

२ दे० अनु० ५४७। विभीषण की पुत्री बेजकाया की कथा अनु० ५७६ मे देखे।

सेना के साथ राम की शरण ली थी । सेरीराम मे वह अपनी पत्नी तथा अपने पुत्रो के साथ राम के पास पहुँचता है । रामजातक के अनुसार रावण के दो भाई (विभीषण और इन्द्रजित्) तथा एक पुत्र (चेतकुमार) अपने-अपने परिवार के साथ राम की शरण मे आये थे । सेरीराम के पातानी पाठ के अनुसार रावण के आदेश से विभीषण को बाधकर समुद्र मे फेक दिया गया था किन्तु एक मकर से बचाया जाकर वह हनुमान् द्वारा राम के पास पहुँचा दिया गया था । दक्षिण भारत की एक कथा मे विभीषण काक का रूप धारण कर राम की शरण मे आता है (पाश्चात्य वृत्तान्त न० १) । एक अन्य कथा के अनुसार विभीषण तथा उसके पॉच मन्त्री वानर के वेश मे राम की सेना मे पहुँचे थे (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० ३) ।

लकादहन प्रक्षिप्त होने के कारण वाल्मीकि रामायण मे विभीषण की शरणागति के समय **हनुमान्-विभीषण** के पूर्व परिचय का उल्लेख नही मिलता । **रगनाथ रामायण** (६, १६) के अनुसार हनुमान् ने विभीषण के पक्ष मे राम से अनुरोध करते हुए कहा था कि उसने मुझे वध किए जाने से बचाया था । **बलरामदास रामायण** मे हनुमान् ने उसी अवसर पर राम से कहा था कि उसकी पुत्री त्रिजटा सीता के प्रति सद्भाव रखती है । **भावार्थ रामायण** (५, ३८) के अनुसार हनुमान् ने विभीषण की शरणागति के बाद शीघ्र माया द्वारा एक नई लका की सृष्टि की थी और उसी मे राम द्वारा विभीषण का अभिषेक सम्पन्न हुआ था । यह कथा **आनन्द रामायण** (१, १०, ४१-४५) पर निर्भर है, जिसमे इसका वर्णन मिलता है कि हनुमान् ने समुद्र-तट पर रेती की लका (सिकतोद्भवा लका) बनाई थी, जो बाद मे हनुमल्लका के नाम से प्रसिद्ध हुई ।

युद्ध के वर्णन मे विभीषण विषयक नयी सामग्री कम मिलती है । सेतुवन्ध के अवसर पर उसने आपस मे लडते हुए नल और नील को अलग कर दिया था (अनु० ५७६), नागपाश के प्रसग मे राम को गरुड को बुलाने का परामर्श दिया (अनु० ५८६), और कुम्भकर्ण (अनु० ५८६) तथा रावण (अनु० ५६८) के वध करने का उपाय प्रकट किया । इसके अतिरिक्त वह लक्ष्मण की चिकित्सा मे भी सहायक बने (दे० अनु० ५६६) ।

पउमचरिय मे विभीषण पहले रावण की सहायता करता है । वह राम तथा सीता के जन्म के पूर्व दशरथ तथा जनक के वध करने का विफल प्रयत्न करता है (पर्व २३) तथा सीताहरण के पश्चात् माया के बल से लका के चारो ओर एक दुर्गम प्राकार का निर्माण करता है (पर्व ४६) । वह रणभूमि मे भी सीता को लौटाने का रावण से अनुरोध करता है (पर्व ६१ और ७३) तथा रावण-वध के पश्चात् आत्म-हत्या करने का प्रयास करता है, किन्तु राम द्वारा रोका जाता है (पर्व ७४) । अन्त मे इसका उल्लेख मिलता है कि विभीषण ने अपने पुत्र सुभूषण को राज्य सौपकर जैन दीक्षा ली थी (पर्व ११४) ।

५७२ विभीषण के **उत्तरचरित** के विषय मे मन्दोदरी से उसका विवाह परवर्ती रामकथाओ का सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन कहा जा सकता है। साहित्य मे इसका प्राचीनतम उल्लेख स्वयभूदेवकृत पउमचरिउ मे मिलता है, श्रेणिक दूसरे सम्प्रदायो मे रामकथा विषयक भ्रामक धारणो के उदाहरण देते हुए गौतम से कहता है कि जिस विभीषण ने परस्त्री मे आसक्त रावण का वध कराया वह जननी-तुल्य मन्दोदरी को कैसे ग्रहण कर सकता था (१, १०, ६)। महानाटक के दोनो पाठो मे विभीषण-मन्दोदरी विवाह का प्रसग मिलता है। दामोदर द्वारा सम्पादित महानाटक मे मन्दोदरी के प्रश्न (**अत पर मम का गति**) का उत्तर देते हुए राम उसके सहगमन का विरोध करते है तथा विभीषण के साथ राज्य करने का परामर्श देते है—**महाभागे न खलु राक्षसीना सहगमने धर्म । अतस्त्वया विभीषणालयमास्थाय लकाचले राज्य चिराय भुज्यताम्** (१४, ६०)। मधुसूदन के सस्करण मे विभीषण पूछते है—**किमपर** ? और राम उत्तर देते है कि मन्दोदरी तुम्हारी पटरानी बन जाय

मन्दोदरी तव विभीषण पट्टराज्ञी ।
भूयादिमा च परिपालय वीर लकाम् ॥ (६, १०३)

सरस्वतीकठाभरण (५, ३६४) मे विभीषण-मन्दोदरी-विवाह का उल्लेख किया गया है

मयेन निर्मिता लब्ध्वा लका मन्दोदरीमपि ।
रेमे मूर्ता दशग्रीवलक्ष्मीमिव विभीषण ॥

बहुत सी मध्यकालीन रचनाओ मे माना गया है कि विभीषण ने मन्दोदरी से विवाह किया था, उदाहरणार्थ—कृत्तिवास रामायण (६, ११२), रामचरित-मानस (१,२६, ७), रामचन्द्रिका (३७, १८), बलरामदास रामायण, रामकियेन (अध्याय ३६), पाश्चात्य वृत्तान्त (१, ३ और १३)। बलरामदास के अनुसार राम ने यह सोचकर मन्दोदरी को दूसरे विवाह के लिये बाध्य किया कि मेरी पत्नी का जो अनादर हुआ उसका प्रतिकार होना चाहिये। पाश्चात्य वृत्तान्त न० १ के अनुसार रावण ने मरण के समय विभीषण के लिए मन्दोदरी को समर्पित किया था। रामजातक के अनुसार रावण ने राम की बहन शान्ता के साथ विवाह किया था, उस जातक का एक रूप पालक पालाम नामक रचना मे सुरक्षित है, जिसमे विभीषण तथा शान्ता (रावण की विधवा) के विवाह का उल्लेख मिलता है। सेरीराम के अन्त मे विभीषण के साथ राम की बहन कीकवी के विवाह का वर्णन किया है गया।

सेतुभग करवाने के अतिरिक्त (दे० अनु० ६०७) विभीषण के उत्तरचरित की दो नवीन घटनाओ का उल्लेख मिलता है। राम ने किसी समय दक्षिण की यात्रा की थी तथा उस अवसर पर विभीषण से मिलने गए थे। इस यात्रा का कारण यह भी

बताया जाता है कि द्रविडो ने विभीषरा को कारागार मे बन्द किया था और राम ने उसे मुक्त कर दिया था (अनु० ६३५) । अन्य रचनाओ मे कुम्भकर्ण के पुत्र या पोता के विद्रोह तथा शतस्कध रावरा द्वारा लका से विभीषरा के निर्वासन का भी वर्णन मिलता है (दे० अनु० ६४० और ६४१) ।

ग । सेतुबध

५७३ अनेक रामकथाओ मे **सेतु-निर्मारा का उल्लेख नही मिलता** । विमल-सूरिकृत **पउमचरिय** मे समुद्र नामक राजा नल द्वारा पराजित किया जाता है ।[1] हेमचद्रकृत जैन रामायरा मे राम-लक्ष्मरा सेना सहित आकाश मार्ग से लका के पास पहुँचते है और नल-नील द्वारा समुद्र तथा सेतु नामक राजाओ को पराजित किया जाता है (सर्ग ७) । गुराभद्रकृत उत्तर पुरारा मे भी राम और लक्ष्मरा विमान से ही जाकर सेना सहित लका के पास उतरते है (सर्ग ६८, ५२२) ।

अभिषेक नाटक के अनुसार जब राम वारा चलाने के लिए तैयार है उस समय वरुरा दिखलाई देते है और उनकी आज्ञा से समुद्र का जल दो भागो मे बँट जाता है जिससे राम की सेना समुद्रतल से ही पार उतरती है ।[2] भागवत पुरारा (२, ७, २३) मे भी लिखा है कि क्रोधाग्नि के काररा राम की आखे इतनी लाल थी कि उनकी दृष्टि मात्र से समुद्र के जीव जलने लगे और भय से काँपते समुद्र ने राम को तुरन्त मार्ग दिया—**"यस्मा अदादुदधि मार्गं सपदि ।"**

पद्मपुरारा के अनुसार राम ने समुद्र के तट पर शिव से सहायता के लिए प्रार्थना की । प्रसन्न होकर शिव ने अजगव धनुष को दे दिया । राम ने उस धनुष को समुद्र मे फेक दिया और उसी पर समस्त सेना ने समुद्र को पार किया (पातालखड, अध्याय ११२) ।

बिर्होर रामकथा मे हनुमान् अपनी पूछ बढाते है और राम तथा लक्ष्मरा उसी पर समुद्र पार करते है । **रामकियेन** के अनुसार सीता की खोज मे हनुमान् ने इसी तरह अपने साथियो को एक नदी के उस पार उतारा था (अध्याय २३) । सेतु के स्थान पर

---

१ दे० पर्व ५४ । मलयन सेरीराम पर जैन रामकथा की गहरी छाप है, अत सेरीराम मे सेतु-निर्मारा के अतिरिक्त उस अवसर पर नील और अगद द्वारा अनेक राजाओ की पराजय का वर्णन किया गया है ।

२ दे० अक ४ । जावा के **राम-सिन्ता** नामक आधुनिक नृत्य-प्रधान नाटक मे भी सागर विभक्त हो जाता है । दे० हिन्दुस्तान स्टैंडर्ड, १५ जनवरी, १९६१ ।

हनुमान् की पूछ का उल्लेख पाश्चात्य वृत्तान्त न० १ और १३ मे भी मिलता है, तथा कम्बोदिया मे इसके विषय मे एक चित्र भी सुरक्षित है।[1]

५७४ (१) प्रचलित **वाल्मीकि रामायण** की सेतुबन्ध विषयक अधिकाश सामग्री प्रक्षिप्त प्रतीत होती है, तत्सबधी वर्णन मे अलौकिक तत्वो का बाहुल्य तथा तीनो पाठो का वैभिन्न्य इस अनुमान का आधार है। नल के नेतृत्व मे वृक्षो तथा पत्थरो से वानरो द्वारा सेतु का निर्माण तथा बाद मे वानर-सेना का समुद्र-तरण इस प्रसग का मूल रूप रहा होगा (दे० सर्ग २२, ४१-७७)। फिर भी अपेक्षाकृत प्राचीन काल से सेतु-बन्ध के वर्णन मे अलौकिक तत्वो का समावेश किया गया है। तीनो पाठो मे राम का तीन दिन तक **प्रायोपवेश** करने तथा क्रुद्ध होकर समुद्र को अपने बाणो से क्षुब्ध करने का वर्णन किया गया है (दे० सर्ग २१)। सागर का प्रकट होकर विश्वकर्मा के पुत्र नल द्वारा सेतु-निर्माण का सुझाव तीनो पाठो मे समान रूप से मिलता है। प्रामाणिक सामग्री मे कही भी देवताओ से वानरो की उत्पत्ति की ओर निर्देश नही किया गया है।

कथाबीज के दाक्षिणात्य पाठ (१, १, ८०) मे लिखा है—**समुद्रवचनाच्चैव नल सेतुमकारयत्**। 'नल' के स्थान पर अन्य पाठो मे 'नल' ही मिलता है (गौ० रा० १, १, ८३, प० रा० १, १, ८०) तथा कई हस्तलिपियो मे—"**समुद्रवचनाच्चैव नलसेतुमकारयत्** (दे० बडौदा सस्करण १, १, ६५ की टिप्पणी)। 'नलसेतु' प्रचीनतम पाठ प्रतीत होता है[2], जो दाक्षिणात्य तथा उदीच्य पाठो मे स्वतन्त्र रूप से बदल दिया गया हे। रामायण की दूसरी अनुक्रमणिका मे 'नलसेतु' सभी पाठो मे रह गया है—**सगम च समुद्रस्य नलसेतोश्च बन्धनम्** (रा० १, ३, ३४)। किन्तु यहाँ पर कई हस्त-लिपियो मे महत्त्वपूर्ण पाठभेद सुरक्षित है—**सगम च समुद्रस्य नलसेतोश्च दर्शनम्** (दे० बडौदा सस्करण १, ३, ३४ तथा प० रा० १, ४, २७ की पादटिप्पणियाँ)। इन सब पाठभेदो के आधार पर यह अनुमान किया जा सकता है कि लका के पास कोई नलसेतु (डमरू-मध्य ?) पहले से विद्यमान था, जहाँ वानरसेना पुल बना कर लका पहुँच गयी थी। 'नलसेतु' नाम के कारण प्रचलित रामायण की कथाएँ उत्पन्न हो गयी होगी।

(२) **द्रुमकुल्य-विनाश** का वृत्तान्त गौडीय पाठ मे नही मिलता। अन्य पाठो मे

---

१ दे० बुलेटिन एकोल फ्राजेस एक्सट्रेम ओरियाँ भाग १२, पृ० ४७।

२ तीनो पाठो मे भरद्वाज राम से कहता है-**विदितायां च वैदेह्या नलसेतुर्यथा कृत** (रा० ६, १२४, १३)। दाक्षिणात्य पाठ मे हनुमान भरत से कहता है—**तत समुद्रमासाद्य नल सेतुमकारयत्** (रा० ६, १२६, ४६), किन्तु दोनो अन्य पाठो मे यह रूप मिला है—**तत समुद्रमासाद्य नलसेतुमकारयत्** (गौ० रा० ६, ११०, ५६, प० रा० ६, १०७, ६६, ।

कथा इस प्रकार है। राम के ब्रह्मास्त्र का सधान करते ही सागर प्रकट हुए। राम ने कहा कि मेरा यह महाबाण अमोघ है, इसे कहाँ चलाऊँ। इसपर सागर ने राम को द्रुमकुल्य नामक देश के विनाश करने का सुझाव दिया, क्योकि वहाँ आभीर आदि बहुत-से दस्यु निवास करते है। राम ने ऐसा ही किया और बाद मे **द्रुमकुल्य** देश मरुकान्तार नाम से विख्यात हुआ (दे० २२, २५-४०)।

(३) गौडीय पाठ मे **दशरथ सागर की मैत्री** का उल्लेख मात्र किया गया है (दे० ५, ६४, २१-२२), किन्तु पश्चिमोत्तरीय पाठ (५, ९६, ४३-६६ मे सागर राम से कहते है कि तेरे पिता दशरथ ने मेरे साथ असुरो को हराया था तथा देवताओ से वर पाकर वह मुझे अयोध्या ले गये थे। महीने भर उनके यहाँ रहकर मै अन्त मे अपने घर चला गया।[1]

(४) केवल पश्चिमोत्तरीय पाठ (सुन्दर काण्ड, सर्ग ९९) मे इसका वर्णन किया गया है कि समुद्र-तरण के पश्चात **समुद्र** ने फिर प्रकट होकर राम तथा लक्ष्मण को **कवच** तथा **आयुध** प्रदान किए थे।

(५) पद्मपुराण के उत्तरखण्ड (अध्याय २६९) के अनुसार राम ने अपने बाणो से **समुद्र को सोख लिया** तथा सागर के विनय करने पर वारुणास्त्र द्वारा उसमे पुन जल भर दिया। तत्त्वसग्रह रामायण (६, ७) मे इससे मिलती जुलती कथा पाई जाती है। दक्षिण भारत के एक वृत्तान्त मे भी राम-बाण द्वारा समुद्र के सूख जाने का उल्लेख है (पा० वृ० न० १)। भट्टिकाव्य तथा रामायण ककविन के अनुसार राम-बाण के कारण करोडो मछलियाँ मर जाती है तथा समुद्र के विनय करने पर राम उन्हे पुन जिलाते है (दे० सर्ग १५)। भावार्थ रामायण (५, ३९) मे द्रुमकुल्य के स्थान पर मरुदैत्य का उल्लेख है। राम के इस प्रश्न पर कि मै अपना बाण कहाँ चलाऊ सागर ने उत्तर दिया कि पश्चिम मे निवास करने वाले दैत्य मरु का वध किया जाय क्योकि मरु सागर का जल अपवित्र किया करता था।

(६) महाभारत के **रामोपाख्यान** मे राम समुद्र मे बाण नही चलाते है। सागर राम को स्वप्न में दिखाई देता है तथा नल द्वारा फेके हुए पदार्थ न डूबने देने की प्रतिज्ञा करता है (दे० ३, २६७, ३२ आदि)। स्कन्द पुराण के सेतु माहात्म्य मे भी इस प्रकार का वर्णन मिला है (दे० अध्याय २)। भागवत पुराण मे तीन दिनो तक उप-वास करने के बाद राम समुद्र पर कोप प्रकट करते है तथा समुद्र राम की क्रोधपूर्ण दृष्टि से भयभीत होकर प्रकट होता है (दे० ९, १०, १३)। महानाटक मे भी राम के बाण चलाने का कोई उल्लेख नही है (अक ७)।

---

१ रगनाथ रामायण (६, २४) मे इस मित्रता का उल्लेख किया गया है।

अद्भुत रामायण मे लक्ष्मण क्रोध मे आकर समुद्र मे कूद पडते हैं तथा उनके शरीर के ताप से समुद्र सूख जाता है। अनन्तर राम सीता के लिए आँसू बहाकर समुद्र पुन भर देते है (दे० सग १६)।

(७) **अनामक जातकम्** मे इन्द्र ने लघु वानर के रूप मे प्रकट होकर सेतु बनाने का परामर्श दिया। पाश्चात्य वृत्तान्त न० १४ मे माना गया है कि हनुमान् ने अकेले ही सेतु का निर्माण किया था। अपने शरीर पर जितने बाल थे उतने ही पत्थर वह प्रत्येक बार ले आते थे। पाश्चात्य वृत्तान्त न० १ के अनुसार नल ने राम के वरदान द्वारा चार हाथ प्राप्त किए जिससे सेतु-निर्माण का काय शीघ्र ही समाप्त हो जाय।

(८) **तत्वसग्रह रामायण** (६, ६) मे इसका वर्णन किया गया है कि सेतुबन्ध के पूर्व सागर की पुत्री कन्याकुमारी ने राम के पास आकर विवाह का प्रस्ताव किया था। राम ने युद्ध का बहाना देकर उसे अस्वीकार कर दिया तथा सागर पर सेतु बनवाने की अनुमति माँगी।[1]

५७५ वाल्मीकि रामायण मे समुद्र **नल** द्वारा प्राप्त किए हुये वर का उल्लेख करता है (**पित्रा दत्तवर**, दे० ६, २२, ४१) और नल स्वय राम से कहता है कि मुझे अपने पिता विश्वकर्मा का सामर्थ्य प्राप्त है, इसलिए मै समुद्रमे सेतु बाँध सकता हूँ। विश्वकर्मा ने नल की माता को यह कहकर वर दिया है कि तुम्हारा पुत्र मेरे समान ही होगा

मया तु सदृश पुत्रस्तव देवि भविष्यति ॥४७॥ (सर्ग २२)

माधव कदली (५, ४०) इस वर के विषय मे कहते है कि नल को यह आश्वासन दिया गया था कि तुम्हारे स्पर्श से पत्थर नही डूबेगे। **रगनाथ रामायण** (६, २५) मे नल की वरप्राप्ति की कथा इस प्रकार है। नल ने किसी दिन पद्मकण्व नामक मुनि की सभी पूजा-मूर्तियो को समुद्र मे फेक दिया मुनि ने बालक को दड नही देना चाहा, अत उन्होने उसे यह वरदान दिया—यह बालक जो कुछ समुद्र मे फेक देगा, वह जल पर ही तैरता रहेगा। इसके फलस्वरूप मुनि की मूर्त्तियाँ जल के ऊपर तैरने लगी। **कृत्तिवास रामायण** (५, ४५) मे नल कहता है कि बचपन मे मैं जब अपने पिता के यहाँ था ब्रह्मा मानसरोवर के तट पर सध्या पूजा किया करते थे। मैं उनके जूठे वर्तन (जो केवल एक बार काम मे लाए जाते थे) समुद्र मे फेक कर उनकी सहायता किया करता था। ब्रह्मा ने प्रसन्न होकर मुझे वरदान दिया कि मेरे स्पर्श से पत्थर भी जल पर तैरते रहेगे। तुलसीदास ने नल और उसके भाई नील दोनो की वरप्राप्ति का उल्लेख किया है (रामचरितमानस ५, ५६, १)।

---

१ कन्याकुमारी के विषय मे अनु० ६१४ देखे।

आनन्द रामायण, भावार्थ रामायण (६, ८०), काश्मीरी रामायण, खोतानी रामायण तथा उत्तर भारत के एक वृत्तान्त मे वर के स्थान पर शाप का उल्लेख किया गया है। **आनन्द रामायण** के अनुसार नल ने किसी ब्राह्मण का शालिग्राम गगा मे फक दिया था, ब्राह्मण ने उस यह शाप दिया—तेरे स्पर्श से पत्थर आदि पानी पर तैरते रहेगे—**पाषाणादि तरिष्यति त्वद्धस्तात्** (१,१०,८७)। **काश्मीरी रामायण** के अनुसार बल (नल) नामक वानर ने ऋषियो के कपड धोने अथवा पहनने के लिए किसी धोबी से अनुरोध किया था। धोबी के इनकार करने पर बल ने उसका पत्थर पानी मे फेक दिया। इस पर धोबी ऋषि के पास गया और ऋषि ने कहा कि जो कुछ नल पानी मे फेकेगा वह नाव के समान पानी पर तैरता रहेगा। वरुण ने राम को यह कथा सुनाकर अन्त मे कहा कि यह वानर आपकी सेवा मे है (दे० युद्धकाण्ड, न० ३६ तथा पाश्चात्य वृत्तान्त न० ३)। उत्तर भारत के एक वृत्तान्त के अनुसार वरुण के एक सामन्त ने प्रकट होकर कहा कि सुग्रीव की सेना मे दो सेनापति विद्यमान है, वे शापवश समुद्र के तल तक पहुँचने मे असमर्थ है और उनके द्वारा फेकी हुई वस्तुएँ नही डूब सकती है (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० १३)।

खोतानी रामायण मे नन्द नामक वानर राम से अपनी शाप की कथा सुनाता है। एक ब्राह्मण ने उसे शाप दिया था कि तुम पानी मे मर जाओगे। अन्य ब्राह्मणो के अनुरोध करने पर उसने अपना शाप इस प्रकार बदल दिया—जो कुछ तुम पानी मे फेकोगे, वह नही डूबेगा और तुम भी नही।

५७६ अर्वाचीन रामायणो मे सेतु निर्माण के अवसर पर बहुधा **हनुमान तथा नल के कलह** का वर्णन किया गया है। **रगनाथ रामायण** (६, २७) के अनुसार नल एक हाथ से लाए हुए पर्वतो को ग्रहण करता था तथा दूसरे हाथ से समुद्र मे रखता था। उसके घमण्ड को चूर कर देने के उद्देश्य से हनुमान् सारी शक्ति लगाकर एक सात योजन लम्बा पर्वत ले आए और राम ने नल को आदेश दिया कि वह उसे दोनो हाथो से ग्रहण करे। तिब्बती रामायण, सारलादासकृत महाभारत, बलरामदास रामायण तथा कृत्तिवास रामायण मे इस झगडे का उल्लेख है। **कृत्तिवास** (५, ४३) के अनुसार कलह का कारण यह है कि नल हनुमान् द्वारा लाया हुआ पर्वत बाये हाथ से पकडता है। क्रुद्ध होकर हनुमान् एक ही बार मे चार पर्वत ले आते हैं और नल उन्हे नही पकड पाता है, इस पर दोनो एक दूसरे पर अभियोग लगाने के लिए राम के पास जाते हैं।

सेरीराम मे भी नल और नील हनुमान् के लाए हुए पत्थर बाये हाथ से ग्रहण करते थे। हनुमान् को इतना क्रोध हुआ कि उन्होने अपनी पूछ मे सात पर्वतो को लपेट कर उनको आकाश मे फेक दिया जिससे चारो ओर अधकार फैल गया। राम ने

आती थी। राम बडी दर तक गिलहरी का यह काय देखते रहे, अत मे सुग्रीव राम के आदेशानुसार गिलहरी को पकड कर राम के पास ले आए और राम ने अपना सुन्दर दाहिना हाथ उसकी पीठ पर फेरा।[1] **कृत्तिवास** (५, ४७) के अनुसार गिलहरियो का एक दल सहायता करने आया था। वे गिलहरिया जल मे कूद-कूद कर तथा रेत मे लोट कर पुल पर बालू झाडती थी। हनुमान् उनको मारने लगे जिससे वे रोती हुई शरण के लिए राम के पास आयी। राम ने हनुमान को समझाया तथा गिलहरियो की पीठ पर हाथ फेर दिया। डब्लू० क्रूक ने पजाब मे भी यह कथा पाई थी, वह लिखते है—पजाब मे गिलहरी रामचन्द्र की भक्तिन मानी जाती है। सेतुबन्ध के समय उसने अपनी पूछ हिला कर बालू के कुछ कण सेतु पर फेक दिए और राम ने पुरस्कार स्वरूप उसकी पीठ पर तीन रेखाएँ खीची।[2]

५७८ सेतु-निर्माण की **बाधाओ** का भी वर्णन किया गया है। सेतुबन्ध (७, ८), जानकीहरण (१४, ८६), बालरामायण (८, ५२), रगनाथ रामायण (६, २५), तोरवे रामायण (६, ५) तथा मराठी रामविजय मे सेतु पर **मछलियो** के आक्रमण का उल्लेख किया गया है। गोस्वामी तुलसीदास ने सब जलचरो को रामभक्त बना दिया है। सेतु-निर्माण के बाद जब राम समुद्र पार करने लगे तब

देखन कहु प्रभु करुना कन्दा। प्रकट भए सब जलचर बृन्दा॥
प्रभुहि बिलोकहि टरहि न टारे। मन हरषित सब भए सुखारे॥
(रामचरितमानस ६, ४)

विदेशी रामकथाओ मे मछलियो के आक्रमण का प्रसग अपेक्षाकृत विस्तार सहित वर्णित है।

सेरीराम मे रावण अपने पुत्र गगा-महासूरा को बुलाता है, जो समुद्र की रानी गगा महादेवी के गर्भ मे उत्पन्न माना जाता है। गगा महासूरा मछलियो को सेतु नष्ट करने का आदेश देता है। उनका आक्रमण देखकर हनुमान् समुद्र मे अपनी पूछ हिलाते हैं जिससे जल पकिल हो जाने पर मछलियाँ ऊपर आ जाती है और वानरो द्वारा पकडी तथा खाई जाती है। बाद मे एक केकडा सेतु पर आक्रमण करता है। हनुमान् अपनी पूछ पानी मे रखते है और केकडा उसे काटना चाहता है तब हनुमान् केकडे को स्थल पर पटक देते हैं। वह केकडा इतना बडा है कि समस्त सेना उसे खाकर तृप्त हो

१ पाश्चात्य वृत्तान्त न० १ मे भी सेतु-निर्माण के समय गिलहरी की सहायता का उल्लेख है। सीता-खोज के प्रसग मे भी गिलहरी की चर्चा मिलती है (दे० अनु० ४७४)।

२ दे० पोपुलर रेलिजन एड फोकलोर, भाग २, पृ० २४२।

जाती है। इसका उल्लेख हिकायत महाराज रावण मे भी मिलता है। सेरीराम के **पातानी पाठ मे** सेतु-निर्माण के समय मछलियाँ अपनी रानी की आज्ञा से सेतु को नष्ट करने लगती है। हनुमान् रानी के पास जाकर उससे सेतु को पुन बनवाते है तथा उसके पति की अनुपस्थिति मे उससे पुत्र भी उत्पन्न करते है। **रामकेर्ति** (सर्ग ७) के अनुसार सागर ने नागो तथा मछलियो को सेतु नष्ट करने का आदेश दिया। यह जान कर राम समुद्र मे बाण चलाने के लिए उद्यत हो गए, जिस पर सागर ने प्रकट होकर क्षमा माँग ली तथा मछलियो को पत्थर ले आने को कहा। **रामकियेन** (अध्याय २६) मे रावण अपनी नागकन्या सुवर्णमच्छा को सेतु नष्ट करने के लिए भेजता है। सुवर्ण-मच्छा अपनी सेना के साथ सेतु नष्ट करने लगती है। बाद मे हनुमान् सुवर्णमच्छा के यहाँ जाकर उससे सेतु पुन बनवाते है तथा उससे एक पुत्र मच्छानु को भी उत्पन्न करते है। **रामजातक** मे नागकन्याएँ सेतु नष्ट करती है तथा हनुमान् आदि द्वारा लुभाए जाने पर उनके साथ क्रीडा करती है।

सेरीराम मे एक घटना का वर्णन किया गया है जिसका अन्यत्र कही भी उल्लेख नही मिलता। सागर का एक स्थल नही पाटा जा सकता था। इसलिए क्रुद्ध होकर राम ने समुद्र मे बाण चलाना चाहा किन्तु उसी समय एक सुन्दरी ने प्रकट होकर कहा—यह स्थल पातालभूमि जाने का मार्ग है, यहाँ अमृतमय जल है, इसे पीकर आपके सैनिक अजेय बन जायगे। यह सुनकर राम ने सब वानरो को उस स्थान के पानी को पीने की आज्ञा दी।

५७६ **बालरामायण** मे रावण सेतु-निर्माण के समय विमान पर चढकर राम के शिविर के पास पहुँचता है तथा राम के देखते एक 'यत्रजानकी' का वध करके तथा उसका **मायाशीर्ष** समुद्र तट पर फेककर लका लौट जाता है (अक ७, ७१-७६)। इसके पश्चात् रावण का पुत्र **सिहनाद** (जिसके पाच मुख तथा दस भुजाएं है) आकर राम को ललकारता है तथा राम द्वारा मार डाला जाता है (अक ७, ८१)। बाद मे एक **प्रभजनी** नामक राक्षसी सोए हुए राम और लक्ष्मण को मार डालने के लिए आती है किन्तु अगद उसका वध करता है। महानाटक (अक ११, २-३) मे भी अगद द्वारा प्रभजनी-वध का उल्लेख है।

श्याम के **रामजातक** मे एक बनावटी सीता राम-सेना की छावनी के पास की नदी की धारा मे बहती हुई दिखलाई पडती है। बाद मे पता चलता है कि वास्तव मे यह एक केला का धड है जिसे रावण ने सीता के रूप मे बनवाया था।

रामकियेन मे इस वृत्तान्त का वर्णन सेतुबन्ध के पूर्व ही किया गया है। रावण की आज्ञा से **बेंजकाया**, विभीषण की पुत्री, सीता के रूप मे नदी पर मृतवत् बहती हुई दिखलाई पडती है। राम उसे देखकर निराश हो जाते हैं, लेकिन हनुमान के सन्देह

प्रकट करने पर बनावटी सीता प्रज्वलित चिता पर रखी जाती है। बेजकाया चिल्लाकर अपने रूप में प्रकट हो जाती है। सुग्रीव द्वारा कोडों से मारी जाने पर वह अपने को विभीषण की पुत्री कहती है। इस पर राम विभीषण को उचित दण्ड देने का आदेश देते हैं। विभीषण के अपनी पुत्री को प्राणदण्ड की आज्ञा देने पर राम उसकी निष्पक्षता से प्रसन्न होकर बेजकाया को हनुमान् के साथ लंका भेज देते हैं। लंका पहुँचने के पहले हनुमान बेजकाया को लुभा कर उससे एक पुत्र उत्पन्न करते हैं (दे० अध्याय २५)।

५८० दाक्षिणात्य पाठ के अनुसार राम वापसी यात्रा में सीता को सेतु दिखला कर कहते हैं कि महादेव ने यहाँ मुझ पर अनुग्रह किया था—**अत्र पूर्वं महादेव प्रसाद-मकरोद्विभु** (दे० रा० ६, १२३, २०)।

शिव-प्रतिष्ठा का यह निर्देश अन्य पाठों में नहीं पाया जाता है। बाद की रामकथाओं में सेतुबंध के समय शिव-प्रतिष्ठा का प्रायः उल्लेख किया गया है, लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि पहले राम द्वारा शिव-प्रतिष्ठा युद्ध के पश्चात् ही मानी जाती थी। नारदीय पुराण (उत्तरार्द्ध अ० ७६), नृसिंह पुराण (अध्याय ५२), कूर्म पुराण (अध्याय २१), सौर पुराण (अध्याय ३०), बृहद्धर्मपुराण (पूर्व खण्ड, अध्याय २०) तथा पद्मपुराण (पातालखण्ड ११२, १२२ और सृष्टिखण्ड, अध्याय ४०) में केवल युद्ध के पश्चात् ही राम द्वारा शिवलिंग की स्थापना का उल्लेख किया गया है। **स्कन्द-पुराण** (ब्राह्मखण्ड, सेतुमाहात्म्य, अध्याय ३ और अध्याय ४४-४७) तथा **कृत्तिवास रामायण** (५, ४८ और ६, १२२) में सेतुबन्ध के समय तथा युद्ध के बाद दोनों बार इसका वर्णन किया गया है। सेतुमाहात्म्य में द्वितीय शिव-प्रतिष्ठा का वृत्तान्त इस प्रकार है। युद्ध के पश्चात् गंधमादन पर्वत पर जाकर राम दण्डकारण्य से आए हुए मुनियों से पूछते हैं कि रावणवध का प्रायश्चित्त किस तरह किया जाय। वे रामेश्वर लिंग की स्थापना का परामर्श देते हैं। इस पर राम हनुमान् को शिवलिंग ले आने के लिए कैलाश भेज देते हैं। वहाँ पहुँचकर हनुमान को उसे प्राप्त करने के लिए तपस्या करनी पड़ती है। मुहूर्त बीत जाने के भय से मुनि सैकत लिंग स्थापित करने का अनुरोध करते हैं। सैकत लिंग की प्रतिष्ठा के पश्चात् पहुँचकर हनुमान् अत्यन्त दुखित हैं। राम हनुमान् को स्थापित सैकत-लिंग उठाने की आज्ञा देते हैं लेकिन हनुमान इसमें असमर्थ हैं और मूर्च्छित होकर गिर जाते हैं। बाद में हनुमान अपने लाए हुए लिंग को रामेश्वर लिंग के उत्तर में स्थापित करते हैं।[1] इस प्रकार की कथा आनन्द रामायण में भी मिलती है, लेकिन इसका वर्णन युद्ध के पूर्व ही रखा गया है

१ स्कंदपुराण (अवन्ती खंड, अवंती क्षेत्र माहात्म्य, अ० २१) के अनुसार हनुमान् ने अवंती में भी एक लिंग स्थापित किया।

(दे० आ० रा० १, १०, ९६-१६४)। इस कथा के अनुसार हनुमान् को काशी भेजा गया था तथा शिव ने हनुमान् को दो लिंग प्रदान किये थे तथा बाद मे समुद्र तट पर राम को दर्शन देकर बारह ज्योतिर्लिंग की कथा और रामेश्वर लिंग का माहात्म्य कह सुनाया था। **भावार्थ रामायण** (६, ७४-७६) की कथा आनन्द रामायण पर निर्भर है किन्तु एकनाथ ने उस घटना को युद्ध के पश्चात् ही अयोध्या की वापसी-यात्रा के समय रखा है। **रगनाथ रामायण** (६, १६०-१६१) की तत्सबधी कथा इस प्रकार है। विमान पर अयोध्या की यात्रा करते समय राम सीता को सेतु दिखला रहे थे कि उन्होंने अचानक अपने सामने रावण की भयकर मूर्ति देखी। इस पर विभीषण ने राम से कहा—"आपको ब्रह्महत्या का दोष लग गया है, आपको प्रायश्चित्त करना चाहिए। राम ने पुष्पक उतरवाया तथा ब्रह्मा का ध्यान किया। ब्रह्मा ने प्रकट होकर सेतु पर शिवप्रतिष्ठा करने का परामर्श दिया। अनन्तर हनुमान् का काशी भेजा जाना, मुहूर्त के बीत जाने के डर से राम द्वारा सैकत लिंग की स्थापना, हनुमान् का गर्व-निवारण आदि वर्णित है।

अर्वाचीन रामकथाओ मे शिवप्रतिष्ठा का वर्णन प्राय सेतु-निर्माण के अवसर पर ही रखा गया है, उदाहरणार्थ अध्यात्म रामायण (६, ४, १), रामचरितमानस (६, २) आदि।

एक सथाली रामकथा के अनुसार (दे० अनु० २७१) राम ने रावणवध के बाद सथालो के यहाँ रहकर एक शिवमन्दिर बनवाया था तथा उसमे नित्यप्रति सीता के साथ पूजा करने आते थे।

५८१ पाषाणभूता अहल्या के उद्धार की कथा के आधार पर **भावार्थ रामायण** (५,४१) मे माना गया है कि वानरो ने राम को उठाकर सेतु के उस पार पहुँचाया था कि कही राम के चरणस्पर्श से सेतु के पत्थरो से सुन्दरियाँ प्रकट न हो जाय। **सेरी-राम** के अनुसार हनुमान् ने उस अवसर पर एक सहस्रस्कध सिंह का रूप धारण किया था और राम ने उस पर चढकर सेतु पार किया था। उत्तर भारत मे गोवर्द्धन-पर्वत के विषय मे एक लोककथा प्रचलित है जिसके अनुसार हनुमान् सेतु के लिए एक पहाड लिए जा रहे थे कि उन्हे अचानक ज्ञात हुआ कि सेतु का निर्माण समाप्त हो गया है अत हनुमान् उस पहाड को वही छोडकर राम की सेवा मे उपस्थित हुए। राम ने हनुमान् से कहा कि वह पर्वत मेरा परम प्रेम-पात्र है, मै उसे अपने कृष्णावतार मे सात दिनो तक अपनी उँगली पर रखकर व्रजवासियो की रक्षा करूँगा।

सेतु-भग का वर्णन प्राय युद्ध के बाद ही रखा गया है (दे० आगे अनु० ६०७)। किन्तु केवल **खोतानी रामायण** मे सेना के पार होने के बाद ही सेतु को इसलिए नष्ट किया जाता है कि कोई भी युद्ध छोडकर न भाग सके।

घ । लका का अवरोध

५८२ रावण के **गुप्तचरो** के विषय मे जो सामग्री तीनो पाठो मे मिलती है, वह इस प्रकार है[1]। वानर-सेना के समुद्र पार करने के बाद रावण ने शुक तथा सारण को शत्रु-सेना की शक्ति का पता लगाने के लिए भेज दिया। शुक तथा सारण वानर-रूप धारण कर राम की सेना मे आ गए, विभीषण ने उनको पहचान लिया और राम के सामने उपस्थित किया किन्तु राम ने उनको रावण के पास लौटने दिया। दोनो ने लका पहुँचकर सीता को वापस देने का परामर्श दिया। (सर्ग २५)। रावण ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार किया और सारण तथा शुक के साथ एक ऊँचे भवन पर चढकर वानर-सेना का निरीक्षण किया (सर्ग २६-२८)। अन्त मे रावण ने शत्रुदल की प्रशसा करने के कारण दोनो की भर्त्सना की तथा शार्दूल के नेतृत्व मे नए गुप्तचरो को भेज दिए। पहले की भाति विभीषण ने उनको पहचानकर पकडवाया, वह शार्दूल को राम के पास ले गया और राम ने उनको मुक्त करने का आदेश दिया। शार्दूल ने लौटकर रावण को यह समाचार दिया कि राम की सेना ने सुवेल पर्वत पर पडाव डाला है (सर्ग २९-३०)।

राजशेखर ने शुक-सारण को गुप्तचर न मानकर रावणदूतो के रूप मे प्रस्तुत किया है। वे रावण द्वारा द्वन्द्वयुद्ध का प्रस्ताव राम के पास ले आते हैं, राम उस द्वन्द्व-युद्ध के लिए अपनी ओर से अगद को नियुक्त करते है, और रावण अपने पुत्र नरान्तक को चुन लेता है, जो अगद द्वारा मार डाला जाता है (दे० बालरामायण अक ८, ३-४)।

अध्यात्म रामायण तथा आनन्द रामायण मे शुक को रामभक्त के रूप मे चित्रित किया गया है, जो अपने पूर्वजन्म मे एक धर्मभीरु ब्राह्मण था (दे० आगे अनु० ६२५)। रामचरितमानस मे भी इस कथा की ओर निर्देश मिलता है, इसके अतिरिक्त तुलसीदास ने माना है कि शुक ने राम के यहाँ से लौटकर रावण को लक्ष्मण का एक पत्र दिया था जिसमे सीता को लौटाने की चेतावनी थी (दे० ५, ५२)।

रामकियेन (अध्याय २५) के अनुसार शुक्रसार नामक गुप्तचर गीध बनकर रामसेना के पास पहुँचा तथा अनन्तर वानर के रूप मे राम के शिविर का निरीक्षण

---

१ गुप्तचरो का वृत्तान्त प्रक्षिप्त है (दे० अनु० ४६२)। दाक्षिणात्य पाठ मे शुक को दो बार भेजा जाता है। प्रथम बार रावण उसको सुग्रीव के लिये एक सन्देश देता है, जिसे सुग्रीव ठुकराता है (सर्ग २०)। बाद मे शुक रावण को अपनी विफलता का समाचार देता है (सर्ग २४)। शुक के इस प्रथम प्रेषण का वर्णन अन्य पाठो में नही मिलता।

करने लगा। विभीषण के संकेत पर हनुमान् ने उसे पकड लिया। शुक्रसार कोडो की मार खाकर रावण के पास लौटा। तब रावण सन्यासी का रूप धारण कर राम के पास आया तथा युद्ध न करने का राम से अनुरोध करने लगा किन्तु राम को दृढसकल्प पाकर रावण लका लौट गया।

पद्मपुराण के अनुसार अतिकाय तथा महाकाय वानरो द्वारा फँसाए गए थे, अतिकाय ने राम को शुक्राचार्य की एक भविष्यवाणी से अवगत किया था। शुक्राचाय ने कहा था कि लका के द्वार पर अकित **'दारुपचवक्त्र'**[1] के विच्छिन्न हो जाने पर रावण का वध निश्चित होगा—**एतेन विच्छिन्नेन रावणो हन्यते**। यह सुनकर राम ने उस पचवक्त्र को अपने बाण से छिन्न-भिन्न कर दिया (दे० पाताल खण्ड ११०, २०८-२१०)।

५८३ राम के **माया-शीर्ष** का वृत्तात प्रक्षिप्त है (द० अनु० ५६२)। महाभारत के रामोपाख्यान अथवा पउमचरिय मे इस प्रसग का वर्णन नही मिलता, वास्तव मे यह मायासीता-वध का अनुकरण मात्र है (दे० अनु० ५६१)। प्रचलित वाल्मीकि रामायण का तत्सबधी वृत्तान्त इस प्रकार है। शार्दूल से सारा विवरण सुनने के बाद रावण ने मायावी विद्युज्जिह्व को आदेश दिया कि वह राम का मायाशीर्ष तथा माया-धनुष बनाकर दोनो को अशोकवन मे ले जाय। इतने मे रावण ने सीता के पास जाकर प्रहस्त द्वारा राम के वध का समाचार सुनाया, तब विद्युज्जिह्व को पास बुलाकर रावण ने सीता को राम का शीर्ष तथा धनुष दिखलाया (सर्ग ३१)। इस पर सीता करुण विलाप करने लगी, उसी समय मन्त्रियो ने रावण को बुला भेजा, रावण के चले जाने पर राम का मायावी शीर्ष और धनुष भी अन्तर्द्धान हुए (सर्ग ३२) तब सरमा ने सीता के पास आकर रावण की माया का रहस्य प्रकट किया तथा यह आश्वासन भी दिया कि राम समुद्र पार कर चुके है और मैने उन्हे अपनी आँखो से देखा है (सर्ग ३३)। अनन्तर सरमा ने राम के पास सीता का सन्देश ले जाने का प्रस्ताव रखा किन्तु सीता ने उससे निवेदन किया कि वह रावण-सभा के निर्णयो का पता लगाकर आये। सरमा ने ऐसा ही किया तथा लौटकर कहा कि रावण अपनी माता तथा मन्त्रियो का सत्परामर्श ठुकराकर कर सीता को लौटाना हठपूर्वक अस्वीकार करता है (सर्ग ३४)।

परवर्ती रामकथाओ मे इस वृत्तान्त मे अनेक गौण परिवर्तन किए गए हैं। रघुवश, सेतुबध, बलरामदास रामायण, रामायण ककविन तथा सेरीराम मे सरमा के

---

१ दारुपचवक्त्र का अर्थ है—काठ का बना हुआ कीर्तिमुख, वह रुद्र का प्रतीक माना जाता है। दे० पुराणम् (वाराणसी), भाग २, पृ० ६७-१०६।

स्थान पर त्रिजटा का उल्लेख है।[1] महानाटक (अंक १०) तथा रंगनाथ रामायण (६, ३५) मे एक आकाशवाणी सीता को आश्वासन देती है कि यह राम का वास्तविक सिर नही है। **आनन्द रामायण** (१, ११, २२१) के अनुसार ब्रह्मा ने पहले ही सीता को बता दिया था कि रावण तुमको राम का कृत्रिम सिर दिखलाने वाला है। इस रचना मे राम का शीर्ष मय का बनाया हुआ माना जाता है तथा इस घटना को मेघनाद-वध के पश्चात् रखा गया है। पाश्चात्य वृत्तान्त न० १ के अनुसार सीता ने सूर्य देवता से प्रार्थना की थी तथा सूर्य ने अपनी एक किरण राम के शीर्ष पर डाल कर उसे कृत्रिम सिद्ध किया था। अभिषेक नाटक (अंक ५), महानाटक, बलरामदास रामायण, अग्निवेश रामायण (८२), रामायण ककविन (सर्ग १७), सेरीराम तथा रामरहस्य (क्रीडोपकरण ११) मे सीता को राम-लक्ष्मण दोनो के मायामय शीर्ष दिखलाए जाते है। कृत्या रावण (अंक ६) मे प्रस्तुत प्रसंग को एक नवीन रूप दिया गया है। रावण ने दारुणिका नामक राक्षसी को सीता का वध करने का आदेश दिया था। दारुणिका को इसका साहस नही हुआ, अत वह एक ऐसा उपाय काम मे लाती जिससे सीता अपने आप आत्महत्या के लिए तैयार हो जाए। दारुणिका ने सीता के सामने एक माया-राम का वध कराया। अपने पति को मृत समझकर सीता ने आग मे प्रवेश करने का निश्चय किया।

हिन्देशिया की रामकथाओ मे त्रिजटा को अपेक्षाकृत अधिक महत्व दिया गया है। **रामायण ककविन** (सर्ग १७) के अनुसार सीता ने राम-लक्ष्मण के मायामय शीर्ष देखने के पश्चात् मध्यरात्रि मे आग जलाकर आत्महत्या करना चाहा। त्रिजटा सीता का साथ देने को तैयार थी किन्तु वह पहले अपने पिता विभीषण को सूचित करने गई तथा बाद मे सीता के पास लौटकर उसने राम-लक्ष्मण के कुशल-क्षेम का समाचार सुनाया। **सेरीराम** का वृत्तान्त इस प्रकार है रावण के निरन्तर आग्रह करने पर सीता ने किसी दिन उससे कहा—जब तक राम जीवित है, मै कदापि तुम्हारी पत्नी नही बन सकती और तुम्हारे हाथ मे राम का शीर्ष देखने पर ही अपने पति की मृत्यु पर विश्वास करूँगी। यह सुनकर रावण दो कैदियो का सिर काटकर[2] तथा उन पर मुकुट रखकर दोनो को सीता के पास ले आया। त्रिजटा ने रावण को सीता से भेंट करने नही दिया किन्तु दोनो शीर्ष ग्रहण कर उससे कहा कि कल स्नान करने के बाद आ जाना।

---

१ तोरवे रामायण (६, १२) मे सरमा और त्रिजटा दोनो रावण के छल-कपट का रहस्योद्घाटन करती है।

२ बलरामदास के अनुसार भी रावण ने उसके लिए दो राक्षसो का वध किया था।

बाद मे सीता ने दोनो सिर देखकर आत्महत्या करना चाहा किन्तु त्रिजटा ने उनको यह कहकर रोक दिया कि मै पहले सच बात का पता लगाने जाऊँगी। इस पर त्रिजटा राम के पास जाती है तथा सीता द्वारा बुना हुआ राम का कमरबन्द लिए लौटती है। दूसरे दिन त्रिजटा छल-कपट के कारण रावण की निन्दा करती है तब रावण उसे मार डालने पर उतारू हो जाता है किन्तु त्रिजटा सीता की शरण लेती है। इसके बाद रावण एक लोहे के किले मे सीता को बन्द कर देता है तथा अपने किसी मन्त्री की अध्यक्षता मे एक पूरी सेना को इसके पहरे पर तैनात कर देता है।

महानाटक (अक १०) मे रावण की एक अन्य युक्ति का उल्लेख है। राम का मायामय शीर्ष दिखलाने के बाद रावण राम का रूप धारण कर लेता है तथा रावण के दस मायामय शीर्ष हाथ मे लिये सीता के पास आता है किन्तु सरमा सीता को सावधान करती है। **कब रामायण** (६, १६) के अनुसार मायाजनक की भी चर्चा है। रावण के आदेश पर मरुत नामक राक्षस ने जनक के वेष मे आकर सीता से अनुरोध किया कि वह रावण को पतिस्वरूप ग्रहण करे।[1]

५८४ वाल्मीकि रामायण के दाक्षिणात्य पाठ मात्र मे अगद-दूतकार्य के वर्णन पूर्व ही **सुग्रीव-रावण-द्वन्द्वयुद्ध** का वर्णन किया गया है। कथा इस प्रकार है— राम वानर-सेनापतियो के साथ सुवेल पर्वत पर चढकर लङ्का का निरीक्षण कर रहे थे। सुग्रीव सहसा पर्वत पर से लङ्का के गोपुर तक कूदकर रावण के पास पहुँचा तथा उसका मुकुट छीनकर भूमि पर पटक दिया। अनन्तर सुग्रीव रावण को द्वन्द्वयुद्ध मे परास्त कर राम के पास लौटा।[2]

सुवेल-पर्वत पर आसीन राम के एक चमत्कार का बहुधा उल्लेख होता है। **अध्यात्म रामायण** (६, ५, ४१-४५) के अनुसार राम ने सुवेल पर्वत पर से लका के राजभवन पर विराजमान रावण को उसके मन्त्रियो के साथ देखा था और उन्होंने एक ही बाण से रावण के हजारो श्वेत छत्र तथा दस मुकुट काट डाले थे। इसपर रावण लज्जित होकर अपने भवन के अन्दर चला गया था। **आनन्द रामायण** (१, १०, २४६), अग्निवेश रामायण (६५), **तोरवे रामायण** (६, ९), **भावार्थ रामायण** (६, २), **रग-**

१ रावण की अन्य युक्तियो का ऊपर उल्लेख हो चुका है, दे० अनु० ५००,५४२।

२ दे० सर्ग ४०। कब रामायण (६, ६) रगनाथ रामायण (६, ३८), आनन्द रामायण (१, १०, २४६), तोरवे रामायण (६, ९) आदि रचनाओ मे सुग्रीव-रावण के इस द्वन्द्वयुद्ध का वर्णन किया गया है। वाल्मीकि रामायण के सभी पाठो के अनुसार सुग्रीव ने कुम्भकर्ण का सामना किया (दे० सर्ग ६७), तथा कुम्भ (सर्ग ७६), विरूपाक्ष (सर्ग ९६) और महोदर (सर्ग ९७) का वध किया।

नाथ रामायण (६, ४१), **बलरामदास रामायण, रामचरितमानस** (६, १३) आदि मे भी इस घटना का वर्णन किया गया है। **रंगनाथ रामायण** में माना गया है कि राम का एक ही बाण विभक्त होकर एक ही समय ८०००० छत्र, ८०००० पंखे तथा ८०००० चामर काटकर पुन राम के तूणीर मे लौट आया था। **कृत्तिवास** (६, ४) के अनुसार विभीषण ने रावण को पहचानकर राम को सुझाव दिया था कि रावण पर बाण चलाया जाय किन्तु ज्योंही राम ने बाण चढाया रावण भाग गया था। विदेशी रामकथाओं मे रावण के छत्र के विषय मे निम्नलिखित सामग्री मिलती है। **सेरीराम** के अनुसार जाम्बवान ने सेतु पार करने के पूर्व ही राम से कहा कि रावण ने एक नवीन भवन का निर्माण किया है और इसपर ब्रह्मा के आदर मे १७ छत्र स्थापित किए हैं। जाम्बवान ने यह भी सुझाव दिया कि राम उनको नष्ट कर दे। राम की इस आपत्ति पर कि ब्रह्मा कहीं क्रुद्ध न हो जायँ, जम्बवान ने उत्तर दिया कि आप विष्णु के वंशज हैं, जो ब्रह्मा से महान् है। **रामकियेन** (अध्याय २६) का वृत्तान्त इस प्रकार है। ब्रह्मा ने रावण को एक चमत्कारी छत्र प्रदान किया था। जब जब रावण उस छत्र को खोल देता था तब लंका के चारों ओर गहन अधकार छा जाता था जिससे वानर-सेना का कोई भी योद्धा लंका देखने मे समर्थ नही हो सकता था। सुग्रीव ने कूदकर छत्र को छिन्न-भिन्न करके लंका का अन्धकार दूर कर दिया।

कृत्तिवास रामायण (६, १४) मे लंकावरोध के पश्चात् **शिव-पार्वती-कलह** का भी उल्लेख मिलता है। प्रसंग इस प्रकार है। सब देवता अन्तरिक्ष मे स्थित होकर युद्ध देखने की प्रतीक्षा कर रहे थे। पार्वती ने शंकर से अनुरोध किया कि वह अपने भक्त रावण की रक्षा करे। शंकर ने उत्तर दिया—"तुम जाकर लंका की रक्षा करो। हजारों वर्ष तक तपस्या करने पर भी रावण अमरत्व का वरदान नही प्राप्त कर सका। अब विष्णु अवतार लेकर उसका वध करने आये है। रावण नही बच सकता। तुम व्यर्थ ही मेरी निन्दा करती हो।" बालरामायण (८, २) मे माना गया है कि रावण ने शुक-सारण को भेज देने के पश्चात् शंकर की पूजा करते समय पार्वती को स्त्री समझकर उनको प्रणाम नही किया था, इसी कारण गिरिजा को क्रोध हुआ और उन्होंने शंकर का (वर देनेवाला) बाँया हाथ खींच लिया था।

५८५ वाल्मीकि रामायण की प्रामाणिक सामग्री के अनुसार राम ने समुद्र पार कर लंका का अवरोध[1] किया था तथा विभीषण के परामर्श के अनुसार युद्ध के पूर्व

1 राम ने अंगद को दक्षिण द्वार पर, हनुमान् को पश्चिम द्वार पर और नील को पूर्व द्वार पर नियुक्त करके स्वयं उत्तर द्वार पर लक्ष्मण के साथ रावण का सामना करने का निश्चय किया। सुग्रीव एक विशाल सेना के साथ बीच मे डट गये। प्रक्षिप्त सर्ग ३७ मे भी सेना के इस नियोजन का वर्णन है।

अगद द्वारा रावण के पास यह सदेश भेज दिया कि यदि सीता को नही लौटाओगे तो मै सब राक्षसो का नाश करूँगा। अगद के मुँह से राम का यह सन्देश सुनकर रावण ने क्रुद्ध होकर उसका वध करने का आदेश दिया। चार राक्षसो ने अगद को पकडना चाहा किन्तु अगद चारो को उठाकर इतने वेग से एक भवन पर कूद पडा कि ये राक्षस निस्सहाय भूमि पर गिर पडे। तब अगद उस भवन को ढहाकर राम के पास लौटा।[1]

परवर्ती रामकथा साहित्य मे **अगद के दूतकार्य** को अपेक्षाकृत अधिक महत्त्व दिया गया है। महानाटक (अक ८) तथा अभिनन्दकृत रामचरित (सर्ग २८) मे पहले-पहल **अगद-रावण-सवाद** का विस्तार के साथ वर्णन किया गया है। महानाटक के अनुसार अगद अपने पिता के वध के कारण राम से वैर रखता है और इसीलिए रावण को फटकारता है जिससे वह राम से युद्ध करने का निश्चय करे। कृत्तिवास रामायण, रामचरितमानस तथा बलरामदास रामायण की तत्सबन्धी सामग्री महानाटक पर आधारित है।

कृत्तिवास रामायण (६, १५) के अनुसार अगद ने सभा-भवन मे पहुँच कर सैकडो रावणो को देखा था। **तोरवे रामायण** (६, १०) मे भी अगद राक्षसो की सभा मे पहुँचकर रावण को पहचानने मे असमर्थ है। पाश्चात्य वृत्तान्त न० ३ मे अगद के ११ रावणो को देखने की चर्चा है। महानाटक (अक ८, ३) मात्र मे इसका उल्लेख किया गया है कि अगद ने रावण के सिहासन के ऊपर चढकर रावण का अपमान किया था, अन्य रामकथाओ मे बहुधा माना गया है कि अगद अपनी **पूँछ का कुण्डल** बनाकर एक सिहासन की भाति उस पर बैठ गया था, उदाहरणार्थ आनन्द रामायण (१, १०, २२१), तोरवे रामायण (६, १०), भावार्थ रामायण (६, ७), कृत्तिवास रामायण (६, १५), सारलादास महाभारत (द्रोणपर्व), रामकेर्त्ति (सर्ग ८), रामकियेन (अध्याय २६), कविचन्द्र कृत अगद रायबार।

अगद द्वारा **बलप्रदर्शन** तथा राक्षसो की पराजय के विषय मे अनेक नई घटनाओ की कल्पना कर ली गई है। रामचरितमानस के अनुसार अगद ने प्रण करके पैर रोपा था जिसे उठाने मे कोटि सुभट असमर्थ ही रहे—**सभा माझ पन करि पद रोपा** (६, ३४)। बहुत सी रचनाओ मे अगद के रावण पर भी प्रहार करने का उल्लेख है,

---

१ युद्ध के वर्णन मे अगद का बारम्बार उल्लेख किया गया है। इन्द्रजित् (सर्ग ४३-४४) तथा कुम्भकर्ण (सर्ग ६६) का सामना करने के अतिरिक्त अगद ने नरातक (सर्ग ६६), कपन तथा प्रजघ (सर्ग ७६) और महापार्श्व (सर्ग ९८) का वध किया था। अगद द्वारा वज्रदष्ट्र का वध (सर्ग ५४) केवल दाक्षिणात्य पाठ उल्लिखित है।

उदा० नृसिंह पुराण (५२, २०), सारलादास महाभारत (द्रोणपर्व), आनन्द रामायण (१, १०, २३६), तोरवे रामायण (६, १०), भावार्थ (६, ६), रामकेर्त्ति (सग ८)। कृत्तिवास ने रावण-अंगद के मल्लयुद्ध का वर्णन किया है तथा यह भी माना है कि अंगद रावण का मुकुट राम के पास ले आया था (६, १७)। भावार्थ रामायण (६, ६), बलरामदास रामायण, रामचन्द्रिका (१३, ३४) आदि रचनाओं में भी इसका उल्लेख मिलता है। रामचरितमानस (६, ३२) के अनुसार अंगद के बल-प्रदर्शन करने पर पृथ्वी हिलने लगी तथा रावण के मुकुट गिर गये। कुछ तो रावण ने उठाकर अपने सिर पर रखे, कुछ अंगद ने राम के पास फेंक दिए थे। आनन्द रामायण (१, १०, २३७-२४२) तथा भावार्थ रामायण के अनुसार रावण के सभा-मण्डप की छत अंगद के सिर पर अटक गई थी, और राम ने अंगद को उसे वापस ले जाने का आदेश दिया था। सारलादास महाभारत के वनपर्व में इस अवसर पर अंगद द्वारा मन्दोदरी का अपमान वर्णित है तथा द्रोणपर्व में माना गया है कि रावण मुकुट के अतिरिक्त अंगद छत को काख में दबा कर राम के पास ले आया था। **तोरवे रामायण** (६, ३०) के अनुसार रावण की सेना के साथ अंगद का युद्ध हुआ तथा राम का आदेश पाकर हनुमान् ने अंगद को ले आने के लिए लङ्का में प्रवेश किया था।

अनेक रामकथाओं में अंगद के स्थान पर **हनुमान** को रावण के पास भेजा जाता है। गुणभद्र के **उत्तर पुराण** (दे० ऊपर अनु० ५२४) के अतिरिक्त **बिलका रामायण** तथा **सेरीराम** में हनुमान् अंगद का स्थान लेते हैं। **बलरामदास** रामायण में माना गया है कि अंगद के प्रत्यागमन के पश्चात् हनुमान् राम का बाण लेकर रावण को धमकी देने गए थे। **सेरीराम** में अंगद के दूत-कार्य का उल्लेख नहीं मिलता किन्तु कुम्भकर्ण के वध के बाद राम हनुमान् द्वारा रावण के पास एक पत्र भेज देते हैं, जिसमें सीता को लौटाने तथा संधि करने का प्रस्ताव है। रावण राम का प्रस्ताव स्वीकार करने के लिए प्रस्तुत है बशर्ते कि उसकी बहन को विरूपित करने वाले लक्ष्मण को बाँध कर लङ्का भेज दिया जाय।[1] **रामचन्द्रिका** (३६, ३२) में भी रावण निम्न-लिखित शर्तों पर सीता को लौटाने के लिए तैयार है—सुग्रीव को मारकर अंगद को राज्य दिया जाय, विभीषण को बाँध कर लङ्का भेजा जाय, सेतु नष्ट किया जाय, हनु-मान् की पूँछ जला दी जाय तथा राम रुद्र की पूजा करें।

---

१ शेलाबेर के पाठ तथा बलरामदास रामायण में हनुमान् के अपनी कुण्डली-कृत पूँछ पर बैठ जाने का उल्लेख है। रावण के संधि-प्रस्तावों का उल्लेख आगे किया गया है (दे० अनु० ५६७)।

ड । नागपाश

५८६ लका को वानर-सेना से अवरुद्ध जानकर रावण ने उसका सामना करने के लिए अपनी सेना को भेज दिया। इस प्रथम तुमुल युद्ध के वर्णन मे अनेक द्वन्द्वयुद्धो का भी उल्लेख है किन्तु अगद द्वारा इन्द्रजित् की पराजय तथा इन्द्रजित् के नागपाश मे राम-लक्ष्मण का बँध जाना इसकी सबसे महत्त्वपूर्ण घटना है। ब्रह्मा के वरदान से अदृश्य[1] होकर इन्द्रजित् ने बहुत से योद्धाओ को तथा अन्त मे राम-लक्ष्मण को भी नागमय शरो से आहत किया जिससे राम तथा लक्ष्मण दोनो निश्चेष्ट होकर रणभूमि मे पडे रहे। इन्द्रजित् दोनो को मृत समझकर रावण को इसकी सूचना देने गया (सर्ग ४२-४६)। यह सुनकर रावण ने सीता तथा त्रिजटा को पुष्पक पर बैठाकर रणभूमि मे मूर्च्छित पडे हुए राम-लक्ष्मण को दिखलाया। सीता दोनो को मृत समझ कर विलाप करने लगी किन्तु त्रिजटा[2] ने उनके जीवित होने के निम्नलिखित तर्क प्रस्तुत किए—(१) रक्षा करने वाले वानर अधिक व्याकुल नही प्रतीत होते है, (२) पुष्पक विधवाओ का वहन[3] नही करता, (३) राम तथा लक्ष्मण के मुख पर मृत्यु का विकार परिलक्षित नही हो रहा है (सर्ग ४७-४८)। बाद मे राम चेतना प्राप्त कर कर लक्ष्मण के लिए विलाप करने लगे (सर्ग ४६) और सुषेण ने यह प्रस्ताव रखा कि ओषधि ले आने के लिए हनुमान् को द्रोणाचल भेज दिया जाय। इतने मे गरुड को आते देखकर नाग भाग गए तथा गरुड के स्पर्श मात्र से राम और लक्ष्मण स्वस्थ हो गये (सर्ग ५०)।

गरुड का यह आगमन प्रक्षिप्त है (दे० अनु० ५६३)। पश्चिमोत्तरीय पाठ मात्र मे इस प्रसग मे नारद का भी उल्लेख किया गया है—सुषेण के प्रस्ताव के बाद नारद ने राम के पास आकर उनको उनके नारायणत्व का स्मरण दिलाया तथा गरुड को

---

१ विभीषण को छोडकर कोई इन्द्रजित् को नही देख सकता था, दे० ऊपर अनु० ५६६।

२ रामायण ककविन के अनुसार वह सीता का आत्महत्या-विचार दूर करती है और अपने पिता विभीषण से मिलकर सीता के पास लौटती है तथा आश्वासन देती है कि राम सकुशल है (सर्ग २१)। अन्यत्र भी सीता के आत्महत्या-विचार की चर्चा है, दे० अनु० ४६२, ५२४, ५४८, ५८३, ७४१ और वाल्मीकि रामायण २, ३०, १६। **तोरवे रामायण** (६, १६) मे त्रिजटा के स्थान पर इस प्रसग मे सरमा की चर्चा है।

३ इस तर्क का उल्लेख रगनाथ रामायण (६, ४८), रामकियेन (अध्याय ३०) आदि मे भी मिलता है।

बुलाने का परामर्श दिया[1]। सेतुबन्ध (१४, ५५) मे विभीषण राम को समझाता है कि पाश के बाण वास्तव मे सर्प ही है, जिस पर राम गरुड को बुलाते है।

महाभारत के **रामोपाख्यान** (३, २७३) मे विभीषण स्वय प्रज्ञास्त्र द्वारा राम और लक्ष्मण को शरपाश से मुक्त कर देता हे। **गोबिन्द रामायण** (पृ० १३७) के अनुसार सीता ने नाग-मन्त्र पढकर नागपाश काट दिया था

पढ नाग मन्त्र सघरी पाश। पति भ्रात जिवइ चित भा हुलास॥

अनेक रचनाओ मे राम नागपाश द्वारा नही बँध जाते हे। **पउमचरिय** (पर्व ६०) के अनुसार भुजङ्गपाश ने लक्ष्मण की पताका पर विद्यमान गरुड को देख लिया तथा हार मानकर भाग गया।[2] **कब रामायण** (६, १८) मे लक्ष्मण मात्र नागपाश से बाँधे जाते तथा गरुड द्वारा मुक्त किये जाते है। **रामकियेन** (अध्याय २६) मे बहुत से वानरो के साथ लक्ष्मण के नागपाश द्वारा बँधे जाने का वर्णन मिलता हे। राम आकर विभीषण के परामर्श के अनुसार गरुड को बुलाते है और गरुड के आगमन पर सभी चेतना प्राप्त कर लेते है। **अध्यात्म रामायण** मे नागपाश का प्रसङ्ग पूर्ण रूप से छोड दिया गया है।

सेरीराम मे इस प्रसङ्ग को एक नया रूप दिया गया है। इन्द्रजित् को एक विशाल सेना के साथ आकाश-मार्ग से आते देखकर हनुमान् ने राम को परामर्श दिया कि वानर सेना की रक्षा के लिए गरुड महावीरू को बुलाया जाय। गरुड महावीरू के आने के बाद इन्द्रजित् पत्थर बरसाने लगा तथा गरुड ने राम के आदेशानुसार समस्त वानर-सेना पर अपने पङ्ख फैला दिये। बाद मे गरुड ने पत्थरो के भार से व्यग्र होकर राम से सहायता माँगी जिस पर राम ने गरुड को ऊपर उठाकर तथा उसका शरीर हिलाकर उसको पत्थरो के भार से मुक्त कर दिया। इन्द्रजित् चालीस दिनो तक पत्थरो की वर्षा करता रहा और राम प्रतिदिन इसी प्रकार से गरुड को पत्थरो के भार से मुक्त करते रहे।

कृत्तिवास रामायण (६, २१) मे गरुड की कृष्णभक्ति तथा हनुमान् की अनन्य रामभक्ति के विषय मे निम्नलिखित वृत्तान्त मिलता है। राम ने शरपाश से मुक्त होकर गरुड को एक वर दिया था और गरुड ने राम का कृष्ण रूप देखने की अभिलाषा प्रकट

---

१ दे० ६, २६, ७-४१। रगनाथ रामायण (६, ५०), आनन्द रामायण (१, ११, ८), भावार्थ रामायण (६, ५०) आदि मे भी पश्चिमोत्तरीय पाठ के अनुसार नारद की चर्चा है।

२ इस रचना मे इन्द्रजित् राम-लक्ष्मण के स्थान पर सुग्रीव-भामण्डल को भुजङ्गपाश से बाध लेता है।

की । इस पर राम ने आपत्ति प्रकट करते हुए कहा—मुझे उस रूप मे देखकर वानर-सेना किंकर्तव्यविमूढ हो जायगी । तब गरुड ने अपने पख पसार कर राम को छिपा लिया और राम ने कृष्ण रूप धारण कर लिया । हनुमान् ने योग के बल पर सारा वृत्तान्त जानकर कृष्णावतार के समय गरुड से बदला लेने का निश्चय किया (दे० अनु० ६८६) ।

वाल्मीकि रामायण मे तारा के पिता वानर-सेनापति **सुषेण** को वैद्य भी माना गया है । प्रस्तुत प्रसङ्ग मे इसकी ओर सकेत मिलता है, इसके अतिरिक्त वह इन्द्रजित्-वध के पश्चात् लक्ष्मण तथा अन्य योद्धाओ की चिकित्सा करता है (दे० सर्ग ९१) तथा हनुमान द्वारा लाई हुई ओषधियो की सहायता से रावण-शक्ति से आहत लक्ष्मण को स्वास्थ्य-लाभ प्रदान करता है (सर्ग १०१) । अनेक परवर्ती रचनाओ मे वह राक्षस-वैद्य माना गया है, जिसे हनुमान् लङ्का से ले आते है, उदाहरणार्थ—महानाटक (अङ्क १३, १७), रामचरितमानस (६, ५५), पाश्चात्य वृत्तान्त न० १३ । खोतानी रामायण मे जातको का सुप्रसिद्ध वैद्य जीवक सुषेण का स्थान लेता है ।

च । हनुमान् की हिमालय-यात्राए ।

५८७ हनुमान् की हिमालय-यात्रा-विषयक सामग्री प्रक्षिप्त ह (दे० अनु० ५६४), फिर भी परवर्ती रामकथाओ मे इस प्रसङ्ग को अपेक्षाकृत अधिक महत्व दिया गया है । प्रचलित वाल्मीकि रामायण मे तीन अवसरो पर हनुमान् को हिमालय भेज देने की चर्चा मिलती है ।[1]

(१) नाग-पाश के प्रसङ्ग मे इसका प्रस्ताव मात्र किया गया हे क्योकि गरुड के आगमन के कारण हनुमान् को इस यात्रा की आवश्यकता नही होती (दे० अनु० ५८६) । **आनन्द रामायण** (१, ११, १०-१८) मे माना गया है कि उस अवसर पर भी सेना के लिए ओषधि ले आने के उद्देश्य से हनुमान् को हिमालय भेजा गया था ।

(२) कुम्भकर्ण-वध के पश्चात् इन्द्रजित् के द्वितीय युद्ध का वर्णन मिलता है जिसमे वह अदृश्य होकर ब्रह्मास्त्र से राम-लक्ष्मण को आहत करता हे तथा बहुत से योद्धाओ का वध भी करता है । जाम्बवान के आदेशानुसार हनुमान् रात को हिमालय जाते है तथा चार ओषधियो को न देखकर समस्त ओषधि-पर्वत ले आते है तथा बाद में उसे वापस ले जाते है । ओषधियो की सुगन्ध मात्र से सभी योद्धाओ को स्वास्थ्य-

---

१ इस महान् कार्य के अतिरिक्त हनुमान् रावण (सर्ग ५९) तथा इन्द्रजित् (सर्ग ८४, ८६, ८९) का सामना करते और निम्नलिखित राक्षस-वीरो का वध भी करते है—धूम्राक्ष (सर्ग ५२), अकम्पन (सर्ग ५६), त्रिशिरा (सर्ग ७०), निकुभ (सर्ग ७७) ।

लाभ हो गया।[1] इस **प्रथम यात्रा** के वर्णन मे किसी विशेष घटना का उल्लेख नही किया गया है तथा परवर्ती रचनाओ मे भी इसका कोई विकास नही हुआ। **कम्ब रामायण** (६, २१) तथा **रामकियेन** (अध्याय २६) मे माना गया है कि इन्द्रजित् ने लक्ष्मण तथा बहुत से वानरो को ब्रह्मास्त्र द्वारा आहत किया था। लक्ष्मण को आहत देखकर राम रणभूमि मे मूर्च्छित होकर गिर पडे। उसी अवसर पर रावण ने सीता को पुष्पक पर बिठाकर उनको निस्सहाय पडे हुए राम और लक्ष्मण को दिखलाया (दे० कम्ब ६, २२ तथा रामकियेन, अध्याय ३०)। **सेरी राम** के अनुसार इन्द्रजित् ने रात्रि के समय एक मायामय बाण द्वारा विभीषण को छोडकर समस्त वानर-सेना को निद्रा मे मग्न कर दिया तथा इन्द्रजित् पास आकर वानरो का वध करने लगा किन्तु विभीषण ने उसे भगा दिया और राम, लक्ष्मण तथा ३३ सेनापतियो को जगाया। तब राम ने मलायकीरी से 'विशल्यावीनि' को ले आने के लिए हनुमान् को भेज दिया। इसी रचना के एक अन्य स्थल पर भी हनुमान् एक पर्वत हिमालय से किष्किधा ले आते है (दे० अनु० ६५५)।

(३) हनुमान् की **द्वितीय यात्रा** के वर्णन का अपेक्षाकृत अधिक विकास हुआ है। इसके विषय मे जो सामग्री वाल्मीकि के तीनो पाठो मे मिलती है वह इस प्रकार है। **रावण की शक्ति** से लक्ष्मण को आहत देखकर राम विलाप करने लगे किन्तु सुषेण ने उनको आश्वासन दिया कि लक्ष्मण जीवित है। इसके अनन्तर सुषेण के परामर्श के अनुसार विशल्याकरणी ओषधि[2] ले आने के लिए हनुमान् को भेजा गया। हनुमान् पहले की भाँति समस्त ओषधि-पर्वत ले आये और सुषेण ने ओषधि पीस कर लक्ष्मण को सूघने को दिया (दे० अनु० ५६६)। प्रस्तुत प्रसग के वर्णन मे उदीच्य पाठो मे निम्नलिखित अतिरिक्त सामग्री मिलती है—कालनेमि और ग्राही का वृत्तान्त, हिमालय के गधर्वों की चुनौती तथा हनुमान् द्वारा उनका वध, ओषधि-पर्वत को वापस ले जाते समय[3]

---

१ दे० सर्ग ७३-७४। अध्यात्म रामायण (६, सर्ग ५) के अनुसार इन्द्रजित् ने राम तथा लक्ष्मण को छोडकर अन्य वानर-सैनिको को ब्रह्मास्त्र द्वारा पराजित किया था और राम ने वानर-सेना को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से हनुमान् को ओषधियाँ ले आने के लिये भेजा था। मलयालम अध्यात्म रामायण के अनुसार इसी यात्रा मे हनुमान् द्वारा कालनेमि का वध हुआ था।

२ **पउमचरिय** मे इस विशल्योषधि का मानवीकरण किया गया है। दे० अनु० ५६६।

३ सेरीराम के अनुसार हनुमान् ने समय के अभाव के कारण पर्वत को समुद्र मे फेक दिया था। **तोरवे रामायण** (६, २८) मे पर्वत अपने आप अतर्द्धान हो जाता है।

राक्षसो का आक्रमण तथा पराजय । भरत-हनुमान्-सवाद का प्रसग गौडीय पाठ मात्र मे मिलता है (दे० अनु० ५८८) ।

कालनेमि की कथा इस प्रकार है । हनुमान् को जाते देखकर रावण ने उनके मार्ग मे विघ्न डालने के लिए कालनेमि को भेज दिया । कालनेमि ने हिमालय जाकर तपस्वी का रूप धारण किया तथा गधमादन पर्वत के एक मायाश्रम मे हनुमान् का स्वागत किया । तपस्वी ने हनुमान् को एक सरोवर के पास भेजा जिसमे एक ग्राही निवास करती थी । ग्राही ने हनुमान् को निगलना चाहा किन्तु वह स्वय मार डाली गई, अनन्तर वह अप्सरा के रूप मे प्रकट होकर तथा अपना परिचय इस प्रकार देकर वैश्रवण-आलय लौट गई—"मै गधकाली[1] नामक अप्सरा हूँ, एक मुनि की अवज्ञा करने के कारण मुझे ग्राही बन जाने का शाप दिया गया था ।" इसके बाद हनुमान् ने आश्रम लौटकर कालनेमि का वध किया । उदीच्य पाठो की यह कथा बहुत सी परवर्ती राम-कथाओ मे पाई जाती है । उदाहरणार्थ—अध्यात्म रामायण (६, ६-७), रगनाथ रामायण (६, १२४), महानाटक (१३, ३२), आनन्द रामायण (१, ११, ४७), तोरवे रामायण (६, २८), माधवकदली रामायण (६, ४५), कृत्तिवास रामायण (६, ७३), बलरामदास रामायण, भावार्थ रामायण (६, ४५), रामचरितमानस, सेरीराम ।

अध्यात्म रामायण तथा इस पर आधारित रामचरितमानस आदि रामकथाओ मे कालेनेमि को रामभक्त के रूप मे चित्रित किया गया है । इन रचनाओ मे अप्सरा प्राय कपट-मुनि (कालनेमि) का रहस्य प्रकट करती है । अप्सरा के **शाप** के विषय मे मतभेद है, **वाल्मीकि रामायण** के उदीच्य पाठो के अनुसार उसने एक यात्रा के अवसर पर किसी मुनि को नही देखा था और इसी कारण अनजाने ही उसकी अवज्ञा की थी । **आनन्द रामायण** (१, ११, ५६) मे माना गया है कि अप्सरा ने मुनि का प्रेम-प्रस्ताव अस्वीकार किया था । **रगनाथ रामायण** (६, १२६) मे अप्सरा के शाप की कथा रावण से भी सम्बन्ध रखती है । धान्यमालिनी शाण्डिल्य नामक मुनि का प्रेम-प्रस्ताव स्वीकार कर उसके यहाँ चली आई थी । उस दिन रात को रावण उसे पर्वत के शिखर पर देखकर आसक्त हुआ तथा उसके साथ रमण करके अतिकाय (दे० अनु० ६५०) को उत्पन्न किया । धान्यमालिनी उस पुत्र को रावण को सौपकर मुनि के पास लौटी जिस पर मुनि ने उसे शाप दिया । **बलरामदास** के अनुसार दक्षकन्या गधबालिका ब्रह्मा के

---

१ अप्सरा के नई नाम मिलते हैं, गधकाली-गौडीय पाठ, कृत्तिवास रामायण, कधकाली-महानाटक (१३, ३२), गधबालिका-बलरामदास, विद्युन्माला-पश्चिमोत्तरीय पाठ (८१, ८३), विद्युन्मालिनी-भावार्थ रामायण, धान्यमाली-अध्यात्म रामायण, आनन्द रामायण, धान्यमालिनी-रगनाथ रामायण ।

शाप से ग्राही बन गई थी । **महानाटक** मे कालकाली को 'रजनिचरवरा' की उपाधि दी गई है (अंक १३, ३२) ।

गौडीय (८२, ५८) तथा पश्चिमोत्तरीय (८१, ३६) पाठो मे हनुमान् से अनुरोध किया जाता है कि वह सूर्योदय के पूर्व ही लौटे—**यावद्रात्रिर्न हीयते** । सूर्योदय के पूर्व ही हनुमान् के आगमन की आवश्यकता का परवर्ती रामकथाओ मे प्राय उल्लेख किया जाता है । **कृत्तिवास रामायण** (६, ७३) के अनुसार रावण के आदेशानुसार मध्यरात्रि मे ही सूर्योदय हुआ था किन्तु हनुमान् ने सूर्य को अपनी कॉख मे दबा लिया था । **भावार्थ रामायण** (६, ३३) मे सूर्य राम से भयभीत होकर हनुमान् के लका मे पहुँचने के पहले उदित होने का साहस नही करते है । **बलरामदास रामायण** के अनुसार किसी ब्राह्मणी ने अपने पातिव्रत्य के बल पर बहुत देर तक सूर्योदय का समय टाल दिया था ।

रामकियेन मे कुभकर्ण की शक्ति से (अध्याय २८), इन्द्रजित् के ब्रह्मास्त्र से (अध्याय ३०) तथा रावण की शक्ति से (अध्याय ३३) आहत लक्ष्मण की चिकित्सा के लिए हनुमान् के तीन बार ओषधि-पर्वत ले आने का वर्णन किया गया है ।

५८८ ओषधि-पर्वम के आनयन के अवसर पर **भरत से हनुमान् की भेंट** का प्राचीनतम वर्णन वाल्मीकि रामायण के गौडीय पाठ मे सुरक्षित है (६, ८२, ६०-१३८) । हिमालय की ओर जाते हुए हनुमान् को देखकर भरत को कौतूहल हुआ और उन्होने बाण मारकर हनुमान् को नीचे गिराना चाहा किन्तु हनुमान् ने अपना परिचय देकर अपनी यात्रा का उद्देश्य प्रकट किया । भरत के प्रश्न के उत्तर में हनुमान् ने वनवास से लेकर लक्ष्मण के आहत होने तक का सारा वृत्तान्त सुनाया तथा भरत को विजयी राम के शीघ्र प्रत्यावर्तन का आश्वासन देकर हिमालय की ओर प्रस्थान किया । महावीर चरित मे भरत हनुमान की इस भेट की उल्लेख है (७, ६) ।

परवर्ती रचनाओ मे प्रस्तुत प्रसग मे बहुधा एक स्वप्न का उल्लेख किया जाता है तथा यह भी प्राय माना गया है कि हिमालय से लका जाते समय हनुमान्-भरत की भेट हुई थी । **महानाटक** (१३, २१-३१) की कथा इस प्रकार है । सुमित्रा ने किसी रात को यह स्वप्न देखा कि एक सॉप मेरी बायी भुजा खा रहा है । उस अपशकुन की शाति के निमित्त तुरन्त यज्ञ का आयोजन हुआ । शातिमण्डप मे उपस्थित होकर भरत ने पर्वत को ले जाते हुए हनुमान् को आकाश मे देखकर उन्हे बाण से नीचे गिरा दिया था । 'हा राम लक्ष्मण' पुकार कर हनुमान मूर्च्छित हो गये तथा वसिष्ठ उनको पर्वत की ओषधियो द्वारा चेतना मे लाए । युद्ध का वृत्तान्त सुनाने के पश्चात् हनुमान् ने भरत की परीक्षा लेने के उद्देश्य से कहा—"मैं थक गया हूँ, आप ही यह पर्वत लका ले चले ।" यह सुनकर भरत ने पर्वत के साथ हनुमान को बाण पर बिठाकर धनुष-

सधान किया। भरत का पराक्रम देखकर हनुमान् को सन्तोष हुआ और बाण से उतर-कर उन्होने भरत के बाहुबल की प्रशसा की। तत्पश्चात् रुद्रावतार हनुमान् पर्वत को उठाकर चले गए और अर्द्धरात्रि मे ही लका के निकट पहुँच गए। **रगनाथ रामायण** (६, १२८) के अनुसार भरत ने स्वप्न मे देखा कि राम और लक्ष्मण पक के मध्य मे छटपटा रहे है (वाल्मीकि रामायण मे उनके एक अन्य स्वप्न का उल्लेख है, दे० २, ६६, १)। जागकर घर के बाहर निकलने पर उन्होने वहा भी कई अपशकुन देख लिए तथा ब्राह्मणो को बुलाकर हवन आदि के द्वारा शातिकर्म कराया। उसी समय हनुमान् आकाश से भरत को देखकर शका करने लगे कि यह तो राम नही है, किन्तु सीता और लक्ष्मण को राम कहा छोड सकते है, ऐसा सोचकर वह लका की ओर चल पडे। उधर भरत ने भी हनुमान् को देखकर उन्हे बाण से नीचे गिराने का निश्चय किया किन्तु आकाशवाणी ने उन्हे ऐसा करने से रोक दिया। **तोरवे रामायण** (६, ४७) मे कथा इस प्रकार है। भरत ने पिछली रात मे लक्ष्मण की मृत्यु सूचित करनेवाला स्वप्न देखा था और वह इस कुस्वप्न की शाति के लिए धर्मक्रिया कर ही रहे थे कि उन्होने आकाश मे हनुमान् को लका की ओर जाते देखा तथा उन्हे अपशकुन समझकर नीचे गिराना चाहा किंतु आकाशवाणी ने उन्हे ऐसा करने से रोका। रगनाथ रामायण की भाति हनुमान् ने भी भरत-शत्रुघ्न को देख लिया तथा वह शका करने लगे कि ये तो राम-लक्ष्मण नही हैं। **आनन्द रामायण** (१, ११, ६२-७०) मे माना गया है कि भरत ने बाण मार कर हनुमान् के हाथ से पर्वत गिरा दिया। हनुमान् ने भरत को देखकर उन्हे राम ही समझ लिया किन्तु जब भरत पुन बाण मारने के लिये उद्यत हुए तब उनका भ्रम दूर हुआ और उन्होने भरत को अपने परिचय के साथ-साथ युद्ध का भी हाल सुनाया। अन्त मे भरत ने बाण मारकर हनुमान् को पर्वत लौटा दिया और हनुमान उसे लका ले गए। बाद मे पर्वत को पुन अपने स्थान पर रखकर हनुमान् ने लक्ष्मण के जीवित होने का शुभ समाचार भरत को सुनाया। परवर्ती रामकथाओ मे महानाटक के अनुसार प्राय माना गया है कि भरत ने बाण मारकर हनुमान को नीचे गिराया था, उदाहरणार्थ—सूरसागर (५६४), बलरामदास रामायण, रामचरितमानस (६,५८), गीतावली (६,१०), काश्मीरी रामायण, साकेत।[१] **भावार्थ रामायण** (४,४६) के अनुसार भरत ने हनुमान को इन्द्र समझकर उन पर रामनामाकित बाण चलाया था किन्तु वह बाण रामभक्त हनुमान को आहत नही करना चाहता था। अत वह हनुमान

१ दे० सर्ग ११। साकेत के अनुसार सजीवनी ओषधि पहले ही से अयोध्या मे विद्यमान थी। इससे आहत हनुमान् की चिकित्सा हुई और इसी को हनुमान लका ले गए थे।

के पैरो को पकड कर उन्हे नीचे की ओर खीचने लगा । हनुमान ने बाण पर राम नाम देखकर समझा कि राम अयोध्या चले आए और वह भरत के पास जाकर भर्त्सना करने लगे कि आप ने अपने मित्रो को युद्ध मे क्यो छोड दिया है । कृत्तिवास रामायण (६,७५) मे कथा इस प्रकार है । भरत ने लका की ओर पर्वत ले जाते हुए हनुमान पर एक अस्सी लाख मन का लोहे का गेद फेक दिया, जिससे हनुमान आहत होकर भूमि पर गिर पडे । बाद मे वसिष्ठ ने मत्र पढकर हनुमान की व्यथा दूर कर दी । हनुमान ने युद्ध का समाचार सुनाया तथा भरत की बल-परीक्षा करने के लिए उनसे कहा कि मै अब पर्वत ले जाने मे असमर्थ हूँ, यदि आप उसे एक योजन तक ऊपर उठा सके तो काम चलेगा । इस पर भरत ने पर्वत और हनुमान को अपने बाण पर बिठाकर दोनो को शतयोजन की ऊँचाई तक पहुँचा दिया । **रामचरितमानस** आदि अनेक रचनाओ मे भरत हनुमान को बाण पर बिठाकर लका तक पहुँचाने का प्रस्ताव करते है किन्तु हनुमान इस प्रस्ताव को अस्वीकार करते है । **काश्मीरी रामायण** (न० ४५) के अनुसार भरत ने वास्तव मे ऐसा ही किया था । **बलरामदास रामायण** मे लिखा है कि भरत और हनुमान दोनो को बडी लज्जा हुई थी, भरत को इसलिए कि मैंने रामभक्त पर बाण चलाया और हनुमान को इसलिए कि मै भरत के बाण से मूर्च्छित होकर भूमि पर गिर गया हूँ । अत दोनो ने किसी भी मनुष्य से इस घटना का उल्लेख नही करने की शपथ खाई थी ।

छ । कुम्भकर्ण-वध

५८६ (१) दाक्षिणात्य पाठ मात्र मे कुभकर्ण युद्ध-काण्ड (सर्ग १२) के प्रारभ मे सीता को लौटाने का रावण से अनुरोध करता है । अन्य पाठो मे अथवा महाभारत के रामोपाख्यान मे कुभकर्ण के इस हस्तक्षेप का उल्लेख नही होता । दाक्षिणात्य पाठ की अन्तरग परीक्षा से भी स्पष्ट है कि यह प्रसग प्रक्षिप्त है क्योकि रावण के आदेश के अनुसार जगाये जाने पर कुभकर्ण सीताहरण, लकावरोध आदि घटनाओ से अनभिज्ञ है (दे० सर्ग ५१) ।

(२) कुभकर्ण की दीर्घकालीन **नींद** के कारण के विषय मे वाल्मीकि रामायण के युद्धकाण्ड और उत्तरकाड मे मतभेद है (दे० अनु० ६४६) ।

(३) कुभकर्ण की **पत्नी** का नाम वज्रज्वाला था (दे० रा० ७, १२, २३) । गौडीय पाठ (७, १२, २३) तथा रामायणमजरी के उत्तरकाण्ड मे उसका नाम विद्युज्ज्वाला है । युद्धकाण्ड (७५, ४६) मे कुभ-निकुभ उसके **दो पुत्रो** का उल्लेख है । निकुभ को रावण का मत्री भी माना गया है ।[1] कुभकर्ण के दो अन्य पुत्रो का भी उल्लेख मिलता

---

१ दे० रा० ५, ४६, ११ और ६, ८, १६ । एक अन्य निकुभ का वध युद्ध काण्ड के सर्ग ४३ मे वर्णित है ।

है, अर्थात् मूलकासुर और कुभगर्भ (दे० अनु० ६४१)।

(४) दाक्षिणात्य पाठ के अनुसार कुम्भकर्ण के **जागने** के विभिन्न प्रयत्नो का अतिरजित वर्णन किया गया है। अन्त मे १००० हाथी कुम्भकर्ण का शरीर कुचलकर जगाने मे सफलता प्राप्त करते है। उदीच्य पाठो के अनुसार हाथी भी असमर्थ ठहरे किन्तु अन्ततोगत्वा नाग-राक्षस-गन्धर्व कन्याओ के आभूषणो की झनकार, उनके सगीत और स्पर्श से कुम्भकर्ण जाग गया था (गौ० रा० ३७, ५५-६३, प० रा० ३६ ५४-६२)। परवर्ती रचनाओ मे कुम्भकर्ण के जागरण के वर्णन मे बहुधा अप्सराओ का उल्लेख किया गया है। भावार्थ रामायण (६, २०) मे घृताची, रभा मेनका, उर्वशी आदि आठ प्रधान अप्सराओ के बुलाये जाने का वर्णन किया गया है, उर्वशी ने नारा-यण से प्रार्थना की थी कि वह कुम्भकर्ण से नीद का प्रभाव दूर कर दे। सेरीराम मे चार दासियाँ कुम्भकर्ण की नाक मे प्रवेश कर बाल उखाडना ही चाहती है कि वे कुम्भकर्ण की छीक से बाहर फेक डाली जाती है। इस रचना मे कुम्भकर्ण पैरो के बाल उखाडे जाने पर जागता है।

(५) वाल्मीकि रामायण के सभी पाठ इसमे सहमत है कि राम ने कुम्भकर्ण का वध किया था। उदीच्य पाठो के अनुसार कुम्भकर्ण ने रावण से कहा था कि **नारद** ने किसी दिन मुझसे विष्णु के अवतार राम का रहस्य प्रकट किया था। इसलिए रावण को राम से सधि कर लेनी चाहिए (गौ० रा० ४०, ३०-५३, प० रा० ४१, ३३-५६)। उत्तर मे रावण ने कहा कि मै विष्णु के हाथ से मरकर परमगति प्राप्त करना चाहता हूँ—**निहतो गतुमिच्छामि तद्विष्णो परम पदम्**। यह प्रसग दाक्षिणात्य पाठ मे नही मिलता किन्तु वह अध्यात्म (६,७), आनन्द (१,११,१४२), रगनाथ (६, ७०), भावार्थ रामायण (६, २२) और रामचरितमानस (६, ६३) आदि रचनाओ मे पाया जाता है। इसके अतिरिक्त पश्चिमोत्तरी पाठ (४६, ८२-९१) के अनुसार कुम्भकर्ण ने रणभूमि मे विभीषण से मिलकर राम की शरण लेने के कारण उसकी प्रशसा की थी। वाल्मीकि रामायण के अन्य पाठो मे इसका उल्लेख नही मिलता है किन्तु यह प्रसग अध्यात्म (६, ८), आनन्द (१, ११, १५०), कब (६, १५), रगनाथ (६, ७९), भावार्थ रामायण (६, २५) और रामचरितमानस (६, ६४) मे वर्णित है।

(६) **वाल्मीकि रामायण** के अनुसार राम ने पहले कुम्भकर्ण की भुजाये, तब उसके पर और अन्त मे उसका सिर अपने बाणो से काट दिया था। कुम्भकर्ण का सिर सूर्योदयकालीन चन्द्रमा के समान आकाश मे दिखाई पडा और उसने पृथ्वी पर गिर कर अनेक भवनो को ढहाया था। **महानाटक** (अक ११) मे हनुमान कुम्भकर्ण के सिर पर ऐसा प्रहार करते है कि वह हिमालय पर जाकर गिरता है। अनन्तर हनुमान उसका

कबध पूँछ मे लपेटकर आकाश मे दूर तक फेक देते है। **कब रामायण** (६, १५) के अनुसार राम ने कुम्भकर्ण का सिर काटकर उसे समुद्र मे फेक दिया था। **रगनाथ रामायण** (६, ८०) मे वर्णन इस प्रकार है—"वह सिर नीचे नही गिरा, किन्तु वह लका मे बहुत सी ऊँची अट्टालिकाओ से टकराकर उन्हे चूर-चूर करके अत्यधिक ध्वनि करते हुए आगे निकल गया और समुद्र के विविध प्राणि-समूह को कुचलते हुए समुद्र मे गिरकर डूब गया।" **भावार्थ रामायण** (६, २८) के अनुसार कुम्भकर्ण का सिर कट जाने के बाद आगे बढने लगा और राम ने बाण मारकर उसे आकाश मे पहुँचा दिया। कुम्भकर्ण को एक वर मिला था कि जब तक शत्रु उसे पीठ न दिखावे उसका शरीर नही गिर सकता था। कुम्भकर्ण का कबध लका की ओर जा रहा था और विभीषण ने राम से निवेदन किया कि वह क्षणमात्र के लिये पीठ दिखावे। राम ने इस सुझाव को अस्वीकार कर दिया जिस पर हनुमान् ने अपनी पूँछ से राम की पीठ का स्पर्श किया। राम ने घूम कर देख लिया कि यह क्या है और उसी क्षण कुम्भकर्ण का कबध गिर गया और बहुत से राक्षस उसके नीचे दब कर मर गए। **सेरीराम** के अनुसार राम ने कुम्भकर्ण का सिर रावण के शिविर मे फेककर बहुत से राक्षसो का वध किया था।

(७) वाल्मीकि रामायण के दाक्षिणात्य पाठ मात्र मे लक्ष्मण-कुम्भकर्ण युद्ध का वर्णन किया गया है (६७, १००-११५)। सभवत इसके आधार पर अनेक परवर्ती रचनाओ मे माना गया है कि **लक्ष्मण** ने कुम्भकर्ण का वध किया है, उदाहरणार्थ—महाभारत का रामोपाख्यान (अध्याय २७१), स्कद पुराण का सेतुमाहात्म्य (अध्याय ४४), विर्होर रामकथा तथा रामकेर्त्ति (सर्ग ६)। दो विदेशी रामकथाओ मे कुम्भकर्ण द्वारा लक्ष्मण के आहत होने का विस्तृत वर्णन किया गया है। रामकेर्त्ति (सर्ग ६) के अनुसार लक्ष्मण की चिकित्सा के लिए ओषधियो के अतिरिक्त रावण के बेलन की भी जरूरत है। हनुमान् दोनो ले आते है। बेलन की खोज करते समय हनुमान् लका मे रावण तथा मदोदरी दोनो के बाल एक गाँठ मे बाधकर दीवाल पर लिख देते है कि मन्दोदरी जब अपने बाये हाथ से रावण पर थप्पड मारेगी तभी गाँठ खुल सकेगी।[1] **रामकियेन** (अध्याय २८) का वृत्तान्त इस प्रकार है—कुम्भकर्ण ने अपनी मोक्खशक्ति नामक भाले से लक्ष्मण को मूर्च्छित कर दिया था। उनकी चिकित्सा के लिए ओषधि तथा पाँच नदियो के जल की आवश्यकता थी, जो भरत के पास है। हनुमान् पहले हिमालय से ओषधि और इसके बाद अयोध्या से वह जल ले आये।

---

१ अन्य रचनाओ मे रावण के द्वारा लक्ष्मण के आहत होने पर हनुमान् के इस उत्पात का वर्णन किया गया है (दे० अनु० ५६६)।

(८) प्रस्तुत वृत्तान्त के वर्णन मे अनेक गौण परिवर्तन उल्लेखनीय है। पद्म-पुराण के पातालखण्ड (अध्याय ११२) तथा विर्होर रामकथा मे रावण-वध के पश्चात् ही कुभकर्ण की पराजय का वर्णन किया गया है। अध्यात्म रामायण (६, ८, ३१-५२) तथा इस पर आधारित रामकथाओ मे नारद कुभकर्ण-वध के बाद आकर राम की प्रशसा करते है। सेरीराम मे कुभकर्ण की मृत्यु के पश्चात् युद्ध चालीस दिन तक स्थगित कर दिया जाता है। **तोरवे रामायण** (६, २८) के अनुसार कुभकर्ण जीवरत्न पहनकर लडता है जिससे वह अजेय बना है। विभीषण के सुझाव पर राम उस जीवरत्न को बाण से काटकर कुभकर्ण का वध करते है। रामबाण उस जीवरत्न को राम के पास लाया और राम ने उसे विभीषण को प्रदान किया। **पउमचरिय** (पर्व ६१) मे कुभकर्ण राम द्वारा कैदी बनाया जाता है तथा युद्ध के अन्त मे मुक्त कर दिया जाता है।

(९) **रामकियेन** के वृत्तान्त मे अनेक नये तत्व आ गये है। इन्द्रजित् तथा रावण के यज्ञो के अनुकरण पर माना जाता है कि कुम्भकरण ने अपनी मोक्खशक्ति नामक भाले की शक्ति जगाने के उद्देश्य से **यज्ञ** का आयोजन किया था, हनुमान् और अगद ने इस यज्ञ को भग किया था। लक्ष्मण को आहत करने के अतिरिक्त कुम्भकर्ण ने अपना शरीर बढाकर वानर-सेना की ओर बहती हुई नदी की धारा को रोक दिया था जिससे प्यासे वानरो को बहुत कष्ट हुआ। अन्त मे हनुमान् ने कुम्भकर्ण के पास पहुँचकर उस पर पादप्रहार किया जिससे कुम्भकरण भाग गया। इस रचना मे कुम्भकर्ण की मुक्ति-प्राप्ति का भी उल्लेख मिलता है (अध्याय २८)।

ज। इन्द्रजित्-चरित

५६० वाल्मीकि रामायण मे इन्द्रजित् के छ युद्धो का वर्णन मिलता है। **प्रथम** युद्ध मे इन्द्रजित् ने राम-लक्ष्मण को नागपाश मे बाधा था (दे० अनु० ५८६)। द्वितीय तथा तृतीय युद्ध उस नागपाश वृत्तान्त का अनुकरण मात्र प्रतीत होता है। **द्वितीय** युद्ध के पूर्व इन्द्रजित् पावक को होम देकर ब्रह्मास्त्र प्राप्त कर लेता है तथा बाद मे अदृश्य बनकर वानर-सेनापतियो तथा राम-लक्ष्मण को आहत करता और विजयी के रूप मे लका लौटता है (दे० सर्ग ७३)। **तृतीय युद्ध** का वर्णन इससे अधिक भिन्न नही है—पावक को होम देने के पश्चात् इन्द्रजित् अपने रथ पर चढता है तथा अदृश्य बनकर राम-लक्ष्मण को आहत करता है (दे० सर्ग ८०)। इन तीनो युद्धो की सामान्य विशेषता यह है कि इन्द्रजित् अदृश्य रहता है। युद्ध मे अदृश्य रहने की इस वरप्राप्ति का उल्लेख वाल्मीकीय उत्तरकाड मे मिलता है। इसके अनुसार इन्द्रजित् ने अग्निष्टोम, अश्वमेध आदि सात यज्ञो का फल प्राप्त कर लिया था तथा कामग स्यन्दन, अक्षय तूणीर आदि के अतिरिक्त उसे युद्ध मे अदृश्य रहने का वरदान भी मिला था (दे० सर्ग २५)।

उत्तरकाण्ड के एक अन्य स्थल पर मेघनाद द्वारा इन्द्र की पराजय का वर्णन किया गया है। मेघनाद ने इन्द्र को पराजित करके उन्हे लका के कारावास मे रख दिया था (सर्ग २६)। बाद मे ब्रह्मा के नेतृत्व मे सभी देवता इन्द्र को मुक्त कर देने के उद्देश्य के लका चले आए। उन्होंने मेघनाद को इन्द्रजित् की उपाधि देने के अतिरिक्त एक वर भी प्रदान कर दिया। इन्द्रजित् ने यह वर माँग लिया कि युद्ध के पूर्व पावक को विधिवत् होम देने पर मेरे लिये अग्नि मे से एक अश्वयुक्त रथ उत्पन्न हो और जब तक मै उस पर रहूँ, मै अमर बना रहूँ (सर्ग ३०)।

इन्द्रजित्-चरित की शेष सामग्री का इस प्रकार विभाजन किया गया है—माया-रूपी सीता का वध और चतुर्थ युद्ध (अनु० ५६१), निकुभिला मे इन्द्रजित्-यज्ञ का विध्वस (अनु० ५६२), इन्द्रजित्-वध (अन्तिम दो युद्ध, अनु० ५६३), सुलोचना का वृत्तान्त (अनु० ५६४)। इन्द्रजित् की जन्मकथा विषयक सामग्री रावणचरित के अन्तर्गत रखी गई है (दे० अनु० ६५०)।

५६१ माया-सीता-वध का वृत्तान्त सभवत आदि-रामायण मे नही पाया जाता था क्योकि महाभारत के रामोपाख्यान मे इसका अभाव है।[1] गुणभद्र कृत उत्तरपुराण (६८, ६१२) तथा आनन्द रामायण (१, ११, २५०) मे रावण स्वय एक माया-सीता का वध करता है। आनन्द रामायण के अनुसार ब्रह्मा ने आकर माया-सीता का रहस्य प्रकट किया था—**कृत्रिमेय हता सीता। रामकेर्त्ति** (सर्ग ८) मे रावण सीता को अपने रथ पर बिठाकर रणभूमि मे आता है और राम इस डर से ब्रह्मास्त्र का प्रयोग नही कर पाते कि कही सीता का वध न हो। अन्य रामकथाओ मे प्राय वाल्मीकि रामायण के अनुसार माया-सीता का वध वर्णित है। इन्द्रजित् के इस **चतुर्थ युद्ध** का वृत्तान्त इस प्रकार है। इन्द्रजित् लका के पश्चिम द्वार से निकलकर हनुमान् तथा अन्य वानरो के सामने अपने रथ पर विद्यमान सीता का सिर काट लेता है।

---

१ यह असभव नही कहा जा सकता है कि माया-सीता वध के वृत्तान्त मे महाभारत के माया-वसुदेव की कथा का अनुकरण किया गया हो। शाल्व के साथ युद्ध करनेवाले कृष्ण के पास एक छद्मवेशी दूत ने आकर कहा कि द्वारका मे आपके पिता का वध हो चुका है, अब आपको द्वारका की रक्षा करनी चाहिये। इसके बाद कृष्ण ने देखा कि शाल्व के विमान से वसुदेव का मृत शरीर नीचे गिर रहा है। शाल्व की इस माया से प्रभावित होकर कृष्ण कुछ समय युद्ध न कर सके (दे० ३, २२)। अगले अध्याय मे इन्द्र-जित्-युद्ध का एक और सादृश्य पाया जाता है। शाल्व का विमान अदृश्य हो जाता है किन्तु कृष्ण शब्दवेधी वाणो से उसे पराजित करते है।

यह देखकर वानर भागने लगते है किन्तु हनुमान् का आह्वान सुनकर वे उनके नेतृत्व मे इन्द्रजित् का सामना करते है। कुछ समय तक युद्ध करने के बाद हनुमान् वानरो को वापस बुलाकर राम को सीता-वध का समाचार सुनाने जाते है और इन्द्रजित् निकुभिला मे प्रवेश कर यज्ञ की तैयारियाँ करने लगता है (सर्ग ८१-८२)। समाचार सुनकर राम विलाप करते है किन्तु विभीषण आश्वासन देता है कि रावण सीता का वध नही करेगा यह अवश्य कोई माया-सीता हुई होगी

अभिप्राय तु जानामि रावणस्य दुरात्मन ।
सीता प्रति महाबाहो न च घात करिष्यति ।।१०।।

× × ×

मायामयी महाबाहो ता विद्धि जनकात्मजाम् ।।१३।। (सर्ग ८४)

अनेक परवर्ती रामकथाओ मे माया-सीता-वध के पश्चात् सच्चाई का पता लगाने के लिये किसी को लका भेजा जाता है। **कम्ब रामायण** (६, २५) मे विभीषण मधुमक्खी का रूप धारण कर अशोकवन मे प्रवेश कर जाता है तथा राम के पास सीता के जीवित होने का समाचार ले आता है। **रगनाथ रामायण** (६, १०३) मे इससे मिलता जुलता वर्णन मिलता है, अन्तर यह है कि विभीषण लका जाने के लिए सूक्ष्म रूप धारण कर लेता है। **तोरवे रामायण** (६, ४१) मे विभीषण के परामर्श से हनुमान् को अशोकवन भेजा जाता है। बाद मे माया-सीता का शव विभीषण के स्पर्श-मात्र से अतर्द्धान हो जाता है। **सेरीराम** की कथा इस प्रकार है। रावण के आदेश के अनुसार इन्द्रजित् एक माया-सीता की सृष्टि करता है तथा बाद मे लका मे ही उसका वध करके इसका समाचार चारो ओर फैलाता है। यह सुनकर राम मूर्च्छित होकर भूमि पर गिर जाते है। विभीषण राम को चेतना मे लाकर परामर्श देता है कि उस समाचार पर तुरन्त विश्वास न किया जाय। तब हनुमान् पक्षी (एक अन्य पाठ मे मधु-मक्खी) का रूप धारण कर लका मे प्रवेश करते है तथा सीता के जीवित होने का समाचार लेकर लौटते है। **रामकियेन** (अध्याय ३०) मे प्रस्तुत वृत्तान्त को एक नया रूप दिया गया है। युद्ध से भाग जाने के कारण शुक्रसार नामक राक्षस को प्राणदण्ड की आज्ञा मिली थी। रावण ने उसे सीता का रूप धारण कर इन्द्रजित् के रथ पर चढने का आदेश दिया। रण-भूमि मे पहुँचकर इन्द्रजित् ने लक्ष्मण का सामना किया, लेकिन सीता को देखकर लक्ष्मण को बाण चलाने का साहस नही हुआ। इस पर इन्द्रजित् ने लक्ष्मण से कहा कि युद्ध का मूल कारण, सीता को ले जाओ और लका को छोड दो। सीता को भेज देने के लिए लक्ष्मण के कहने पर इन्द्रजित् ने कहा कि सीता को तुम्हारे पास ले आना मेरे गौरव के विरुद्ध है और उसने हँसकर माया-सीता का

सिर काटकर उसे लक्ष्मण की ओर फेक दिया। बाद मे विभीषण ने रहस्य का उद्घाटन किया।

बलरामदास रामायण के अनुसार भी सिहनाद की बहन सुकाति ने सीता का रूप धारण कर लिया और इद्रजित् ने उसका वध किया था।

५६२ वाल्मीकि रामायण के अनुसार विभीषण ने राम को सावधान किया था कि **निकुभिला** मे अपना **यज्ञ** सम्पन्न करने के पश्चात् इन्द्रजित् अजेय बन जायेगा, अत इस यज्ञ का विध्वस परमावश्यक है (सर्ग ८४)। विभीषण, हनुमान्, अगद आदि वानरो को साथ लेकर लक्ष्मण ने इन्द्रजित् की रक्षा करने वाली सेना पर आक्रमण किया। युद्ध का कोलाहल सुनकर इन्द्रजित् अपना यज्ञ अपूर्ण छोडकर (**कर्मणि अननुष्ठिते**) युद्ध के लिए उठ खडा हुआ (सर्ग ८५-८६)। परवर्ती रामकथाओ मे प्राय इससे मिलता-जुलता वर्णन पाया जाता है। **कम्ब रामायण** (६, २६) के अनुसार विभीषण ने मधुमक्खी के रूप मे लका मे प्रवेश कर इन्द्रजित्-यज्ञ का समाचार राम को दिया था। **सेरीराम** मे माना गया है कि इन्द्रजित् ने मृत राक्षसो को जिलाने के उद्देश्य से यज्ञ प्रारभ किया था। सीता-वध की सच्चाई का पता लगाते समय हनुमान् ने बहुत से भिक्षुओ तथा महर्षियो को एक मन्दिर की ओर जाते देखा तथा उनकी बातचीत से इस यज्ञ के विषय मे जानकारी प्राप्त कर ली थी। इसपर लक्ष्मण तथा हनुमान् के नेतृत्व मे वानर-सेना ने जाकर इन्द्रजित् की सेना परास्त की थी तथा मन्दिर मे से यज्ञ करनेवाले पुरोहितो को भगाकर यज्ञ का विध्वस किया था।

५६३ वाल्मीकि रामायण मे **इन्द्रजित्-वध** का वृत्तान्त इस प्रकार है। अपना यज्ञ सम्पूर्ण किये बिना इन्द्रजित् युद्ध के लिए उठ खडा हुआ और विभीषण को देखकर इन्द्रजित् ने उसकी निन्दा की (सर्ग ८६-सर्ग ८७)। अनन्तर लक्ष्मण और इन्द्रजित् ने देर तक द्वन्द्व-युद्ध कर एक दूसरे को आहत किया। इन्द्रजित् के इस **पचम युद्ध** के अन्त मे लक्ष्मण ने इसके सारथि को मार डाला और इन्द्रजित् पैदल ही लका लौटा। इसके बाद इन्द्रजित् एक नये रथ पर चढकर **अन्तिम** बार **युद्ध** करने आया, इस युद्ध मे लक्ष्मण ने सारथि को और विभीषण ने घोडो को मार डाला, अन्त मे लक्ष्मण ने ऐन्द्र शस्त्र से इन्द्रजित् का वध किया। बाद मे सुषेण ने लक्ष्मण, विभीषण आदि की चिकित्सा की। अपने पुत्र की मृत्यु का समाचार सुनकर रावण ने सीता का वध करना चाहा किन्तु सुपार्श्व[1] ने उसे ऐसा करने से रोका।

---

१ रावण के इस सकल्प का प्राय सभी रामकथाओ मे उल्लेख है किन्तु रोकने वाले के विषय मे मतैक्य नही है, महाभारत (३, २७३) तथा अग्नि पुराण (अध्याय १०) मे अविंध्य को, अभिनन्द कृत रामचरित (३८, ५) तथा

परवर्ती रामकथाओ मे इन्द्रजित्-वध के वृत्तान्त के निम्नलिखित परिवर्तन उल्लेखनीय है । **महानाटक** (१२, १६) के अनुसार लक्ष्मण ने इन्द्रजित् का कटा हुआ सिर रावण के हाथो मे फेक दिया था । **कब रामायण** (६, २७) के माना गया है कि इन्द्रजित् ने लक्ष्मण के साथ युद्ध करते समय समझ लिया था कि लक्ष्मण विष्णु के अशावतार है । अत उसने युद्ध छोडकर रावण से अनुरोध किया कि सीता को लौटाया जाय और राम से क्षमा-याचना की जाय । रावण ने नही माना और इन्द्रजित् रणभूमि लौटा । युद्ध के अन्त मे लक्ष्मण ने पहले इन्द्रजित् का बायाँ हाथ ओर बाद मे उसका सिर काट डाला । अगद ने इन्द्रजित् का सिर उठाकर उसे राम के चरणो मे रख दिया । **आनन्द रामायण** (१, ११, १९०-१९८) के अनुसार लक्ष्मण ने इन्द्रजित् का दाहिना हाथ बाण से काट-कर उसी के घर मे फेक दिया और इसी तरह उसका बाया हाथ भी काटकर रावण के निकट डाल दिया । अन्त मे लक्ष्मण ने उसके सिर को धड से अलग कर धरती पर गिरा दिया और हनुमान् ने उस सिर को उठाकर राम को दिखला दिया । **रामचन्द्रिका** (२८, ३४) मे महानाटक के अनुकरण पर माना गया है कि लक्ष्मण ने एक तीक्ष्ण बाण से इन्द्रजित् का सिर धड से अलग उडा दिया और वह सिर सध्या करनेवाले रावण की अजली मे जा गिरा ।

सारलादास के महाभारत (द्रोणपर्व) मे इन्द्रजित् के **मर्मस्थान** का उल्लेख है, विभीषण के परामर्श से लक्ष्मण ने इन्द्रजित् की नाभि मे स्थित अमृतलिंग पर बाण चलाया । बहुत सी रचनाओ मे यह माना गया है कि **१२ वर्ष तक के उपवास** के फल-स्वरूप लक्ष्मण इन्द्रजित् का वध करने मे समर्थ हुए ।[1] **पउमचरिय** के अनुसार इन्द्रजित् **को कैदी** बना लिया गया (पर्व ६१) तथा युद्ध के पश्चात् उसे मुक्त कर दिया गया (पर्व ७५) ।

कृत्तिवास (६, ६६) मे मन्दोदरी को, अभिषेक नाटक (५, १७) मे एक राक्षस को, कम्ब रामायण (६, २८) मे महोदर को, माधव कदलीकृत रामायण (६, ३७) मे अरविन्द को और बलरामदाम रामायण मे त्रिजटा को इसका श्रेय दिया गया है ।

१ दे० अनु० ४६१ । वाल्मीकि रामायण के अनुसार लक्ष्मण ने इन्द्रजित् के अतिरिक्त अतिकाय (सर्ग ७१) का भी वध किया, वह इन्द्रजित् द्वारा तीन बार (अनु० ५९०) और रावण की शक्ति द्वारा एक बार (अनु० ५९६) आहत किए गए । प्रक्षिप्त सर्ग ५९ मे रावण-लक्ष्मण के द्वन्द्व युद्ध का वर्णन मिलता है । दाक्षिणात्य पाठ मात्र मे लक्ष्मण-कुभकर्ण युद्ध का उल्लेख किया गया है (सर्ग ६७) ।

सेरीराम के वृत्तान्त मे कई नये तत्व पाये जाते हैं। अपनी पत्नी कोमाल देवी से प्रेमपूर्वक[1] विदा लेकर इन्द्रजित् १००० हरे रग के घोडो से युक्त रथ पर चढकर युद्ध करने जाता है और लक्ष्मण तथा हनुमान् का सामना करने के पश्चात् अन्त मे राम द्वारा मार डाला जाता है।[2] समाचार पाकर रावण रणभूमि मे आता है तथा इन्द्रजित् का रुड गोद मे लेकर इतना हृदयविदारक विलाप करता है कि राम तथा वानर-सैनिक भी रोने लगते है, (किन्तु इने गिने वानर रावण को दस मूखो से विलाप करते देखकर अपनी हँसी नही रोक पाते है)। बाद मे रावण स्वय इन्द्रजित् का मृत शरीर लका ले जाता है। कोमाल देवी अपने पति की चिता पर चढकर सती हो जाती है, इन्द्रजित् और कोमाल देवी का भस्म एक स्वर्ण पात्र मे सुरक्षित रखा जाता है। इसके बाद युद्ध चालीस दिन स्थगित रहता है।

५९४ सेरीराम मे **इन्द्रजित् की पत्नी** के सहगमन की कथा का आधार भारतीय है। वाल्मीकि रामायण मे इस प्रसग का निर्देश मात्र भी नही मिलता। अपने पुत्र के लिए विलाप करते समय रावण इन्द्रजित् की पत्नियो का उल्लेख मात्र करता है—**मातर मा च भार्याश्च क्व गतोऽसि विहाय न** (६, ९२, १३)।

सुलोचना की कथा का प्राचीनतम वर्णन तेलुगु **द्विपद रामायण** (६, १११-११३) मे मिलता है। बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् द्वारा प्रकाशित हिन्दी अनुवाद मे कथा इस प्रकार है। इन्द्रजित् के वध का समाचार सुनकर[3] सुलोचना मूर्च्छित होकर गिर पडी तथा सखियो की सेवा से चेतना पाकर विलाप करने लगी। इस विलाप मे वह प्रकट करती है कि मेरे पिता आदिशेष ने मुझे एक मणि सौपकर आश्वासन दिया था कि तुम युद्ध के लिए जाते समय अपने पति की इस मणि से आरती उतारोगी तो वह अजेय होगा। किन्तु इन्द्रजित् लक्ष्मण से युद्ध करने जाते समय अपनी पत्नी से नही मिला था।

सुलोचना रावण की अनुमति लेकर आकाशमार्ग से राम के पास चली आई तथा उसने शरणागत-वत्सल राम की स्तुति करके अपने पति के लिए जीवन-दान

---

१ सीता स्वयवर के प्रसग मे भी अपनी पत्नी के प्रति इन्द्रजित् के प्रेम का उल्लेख हुआ है (दे० अनु० ३९७)।

२ शेलाबेर पाठ के अनुसार राम ने इन्द्रजित् के तीनो सिर राक्षसो की सेना के बीच मे फेक दिये।

३ एक प्राचीन हस्तलिपि के अनुसार इन्द्रजित् की बायी भुजा आकाशमार्ग से सुलोचना के सामने आ गिरी और उसने अपनी तर्जनी से अपनी मृत्यु का समाचार लिख दिया। दे० अनुशीलन, वर्ष १२, पृ० १५।

माँगा। राम उसकी यह प्रार्थना सुनकर इन्द्रजित् को पुनर्जीवित करने की सोच रहे थे[1] किन्तु हनुमान् ने ब्रह्मा की मर्यादा की रक्षा करने का अनुरोध किया। इसपर राम ने सुलोचना को आश्वासन दिया कि तुम अगले ज म मे अपने पति के साथ सुखमय जीवन बिताने के पश्चात् वैकुण्ठ प्राप्त करोगी।

तब सुलोचना रणभूमि मे अपने मृत पति के पास पहुँची और उसने अपने सतीत्व की शपथ खाकर उसे जिलाया।[2] इन्द्रजित् आखे खोलकर तथा अपनी पत्नी को सान्त्वना देकर फिर मृत्यु के मौन मे विलीन हो गया। सुलोचना उसके शरीर के साथ लका लौटी तथा पति की चिता पर चढकर सती बन गई।

आनन्द रामायण (१, ११, २०५-२१७) की कथा इस प्रकार है। सुलोचना अपने पति की कटी हुई भुजा देखकर विलाप करने लगी। तब उस भुजा ने वाण लेकर अपने रक्त से लिखा—'शेष के हाथ मरकर मैंने मुक्ति पाई है। तुम राम के पास जाकर मेरा सिर माग लो और उसके साथ अग्नि मे प्रवेश कर मेरे पास आओ।" इसके अनुसार सुलोचना अपने पति का सिर मागने के लिए राम के पास आई। राम ने उससे कहा—यदि तुम चाहती हो तो मै तुम्हारे पति को जिला सकता हूँ। अग्नि मे प्रवेश करने का विचार छोड दो। सुलोचना ने लक्ष्मण के हाथ से मोक्षप्रद मरण दुर्लभ समझकर इस प्रस्ताव को अस्वीकार किया। सुलोचना ने सिर पाकर तथा लका से उसकी भुजाएँ लाकर अपने पति का समस्त शरीर मिला दिया और निकुभिका मे जाकर उसके साथ अग्नि मे प्रवेश किया। अन तर वह दिव्य देह धारण कर अपने पति के साथ वैकुण्ठ चली गई।

भावार्थ रामायण (६, ४१) के वृत्तान्त पर शिव-भक्ति का भी प्रभाव पडा है। अपने पति की भुजा को देखकर सुलोचना ने शिव की आराधना की थी और शिव ने

---

१ एक अन्य पाठ के अनुसार शेषावतार लक्ष्मण अपनी पुत्री सुलोचना को विधवा देखकर विलाप करने लगे थे तथा अ त मे उन्होने उसे वर माँगने को कहा। इसपर हनुमान् ने सरस्वती से प्रार्थना की कि वह सुलोचना की जिह्वा पर बैठकर उसे पति के पुनर्जीवन का वर माँगने से रोके। सरस्वती की प्रेरणा से सुलोचना ने अपने पति के शरीर के साथ सती हो जाने का वर माँग लिया। दे० श्री बालशौरि रेड्डी, तेलुगु भाषा मे राम साहित्य। मैथिलीशरण गुप्त अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ० ८०१।

२ एक अन्य पाठ के अनुसार सुलोचना ने प्रार्थना द्वारा अपने पति के शरीर के सब कटे हुए अगो को अपने पास बुलाया था। दे० बालशौरि रेड्डी, वही पृ० ८००।

इन्द्र की भुजा मे प्रवेश करने तथा युद्ध का समाचार लिखने का आदेश दिया। शेष कथा आनन्द रामायण से मिलती-जुलती है किन्तु सुलोचना की सखी शातिमती उसे सती बन जाने का परामर्श देती है।

सुलोचना के सहगमन की कथा अनेक अर्वाचीन रामकथाओ मे विस्तारपूर्वक वर्णित है, उदाहरणार्थ—जगत राम कृत बगाली रामायण, रामलिंगामृत (सर्ग ६), १८ वी शताब्दी का मागुणीकृत उडिया रसामृत रामायण, पाश्चात्य वृत्तान्त न० ८, रसिक बिहारी का रामरसायन (३, १६), विश्रामसागर (अध्याय २७), माइकेल मधुसूदन का मेघनाद-वध (सर्ग ६, इन्द्रजित् की पत्नी का नाम प्रमीला है)। जावा के **रामायण ककविन** के अनुसार इन्द्रजित् की सात पत्नियाँ उसके साथ ही युद्ध मे चली गयी थी तथा रणभूमि मे ही मारी गयी (सर्ग २३)।

भ। रावण-वध

५६५ खोतानी रामायण मे रावण का वध नही होता, राम द्वारा आहत होकर दशग्रीव राजकर देन की प्रतिज्ञा करता है जिससे युद्ध स्थगित किया जाता है। **जैन रामकथाओ, उन्मत्तराघव** (अनु० २४२) और **विर्होर रामकथा** मे लक्ष्मण ही रावण का वध करते है। शेप रामकथाओ मे राम द्वारा रावण-वध का वर्णन किया गया है। **वल्मीकि रामायण** का वृत्तान्त इस प्रकार है। महोदर, महापार्श्व और विरूपाक्ष के वध के अनन्तर रावण ने स्वय रणभूमि मे प्रवेश किया।[1] इस युद्ध मे उसने लक्ष्मण को अपनी शक्ति से आहत किया किन्तु राम द्वारा पराजित होकर वह भाग गया (दे० सर्ग ९९-१००)। बाद मे रावण एक नये रथ पर चढकर राम से युद्ध करने आया और इन्द्र ने राम के पास अपना रथ तथा अपने सारथि मातलि को भेज दिया।[2] द्वन्द्वयुद्ध फिर प्रारभ हुआ, इसमे अपने स्वामि को मूर्च्छित देखकर रावण का सारथि रथ को रणभूमि से दूर ले चला (सर्ग १०२-१०३)। चेतना प्राप्त कर रावण ने अपने सारथि को युद्ध

---

१ प्रक्षिप्त सर्ग ५६ (दे० अनु० ५६३) तथा सग ९५ मे भी रावण के युद्ध मे भाग लेने का उल्लेख किया गया है। कम्बरामायण मे रावण के तीन युद्धो का वणन किया गया है। वह लक्ष्मण को दो बार शूल से आहत करता है (पटल ३५)।

२ मातलि का प्रसग प्रक्षिप्त है क्योकि रावण के लिए विलाप करते समय उसकी पत्निया कहती है "जिसे देवता भी पराजित नही कर पाते है वह एक पैदल लडने वाले मनुष्य से मारा गया"—**अवध्यो देवताना यस्तथा दानवरक्षसाम्। हत सोऽय रणे शेते मानुषेण पदातिना** (११०, १५)।

मे लौटने का आदेश दिया और फिर राम का सामना करने आया।[1] राम-रावण के इस अन्तिम युद्ध के वर्णन मे इसका उल्लेख मिलता है कि रावण के सिर पुन-पुन उत्पन्न होते थे यहा तक कि राम ने रावण के एक सौ सिर काट दिए—**एवमेव शत छिन्न शिरसा तुल्यवचसाम्** (१०७,५७)। अन्त मे मातलि के परामर्श के अनुसार राम ने अगस्त्य द्वारा प्रदत्त (दे० अनु० ४६०) ब्रह्मास्त्र से रावण की छाती को विदीर्ण कर दिया जिससे रावण निष्प्राण होकर भूमि पर गिर पडा।[2] परवर्ती साहित्य मे रावण के इस अन्तिम युद्ध के वर्णन का जो परिवर्तन तथा परिवर्द्धन किया गया है उसका सिंहावलोकन नीचे दिया जा रहा है।

५९६ लक्ष्मण को रावण की **शक्ति** लगने का प्रसग महाभारत मे नही मिलता। **वाल्मीकि रामायण** के अनुसार विभीषण ने रावण-रथ के घोडो का वध किया था जिस पर रावण ने रथ से उतरकर एक शक्ति नामक बरछी को विभीषण की ओर फेक दिया किन्तु लक्ष्मण ने उस शक्ति को छिन्न-भिन्न कर दिया। इसके बाद लक्ष्मण ने रावण की एक दूसरी शक्ति से विभीषण को बचाया जिससे रावण ने अन्त मे मत्र द्वारा निर्मित अमोघा शक्ति (दे० ७, १२, २१) से लक्ष्मण की छाती को छेद दिया। राम ने इस शक्ति को निकाल कर तोड दिया तथा लक्ष्मण को हनुमान् आदि वानरो की रक्षा मे छोडकर रावण को रणभूमि से भागने के लिए वाध्य कर दिया (सर्ग १००)। तब लक्ष्मण के पास लौटकर राम विलाप करने लगे किन्तु सुषेण ने उन्हे लक्ष्मण के जीवित होने का आश्वासन दिया। अनन्तर हनुमान् हिमालय जाकर विशल्याकरणी ओषधि ले आये[3] और सुषेण ने ओषधि को पीसकर लक्ष्मण को सूघने के लिये दिया जिससे लक्ष्मण स्वस्थ हो गए (दे० सर्ग १०१)।

---

१ दाक्षिणात्य पाठ मात्र मे यहाँ परइसका उल्लेख किया गया है कि अगस्त्य ने राम के पास पहुँचकर उनको विजय प्रदान करनेवाले आदित्यहृदय नामक स्तोत्र सुनाया और राम ने इसका पाठ किया था (दे० सर्ग १०५)।

२ दे० सर्ग १०४-१०८। वाल्मीकि रामायण के अनुसार राम ने रावण के अतिरिक्त कुभकर्ण (सर्ग ६७), मकराक्ष (सर्ग ७९) तथा बहुत से अन्य राक्षसो (सर्ग ९३) का भी वध किया। उन्होने प्रथम तुमुल युद्ध मे भाग लिया (सर्ग ४४) तथा वे दो बार इन्द्रजित् द्वारा आहत किए गए थे (सर्ग ४५ और ७३)। सर्ग ५९ (राम द्वारा रावण की पराजय का वर्णन) प्रक्षिप्त है।

३ दे० अनु० ५८७-५८८। गौडीय पाठ (८२, ४९) मे केवल इसी ओषधि का उल्लेख है। अन्य पाठो मे विशल्याकरणी के अतिरिक्त सावर्ण्यकरणी, सजीवकरणी तथा सधानी की भी चर्चा है, दे० दा० रा० १०१, ३१, प० रा० ८१, ३२।

महानाटक (अक १३) मे हनुमान् पहले रावण की शक्ति रोक लेते है किन्तु रावण का अनुरोध मान कर ब्रह्मा नारद को भेज देते है कि वह किसी-न-किसी तरह से हनुमान् को रणभूमि से हटा दे। नारद ऐसा ही करते है और रावण लक्ष्मण को आहत करने मे समर्थ हो जाता है। **रामचन्द्रिका** (१३, ४०), पाश्चात्य-वृत्तान्त न० १३ आदि मे भी हनुमान् द्वारा शक्ति को रोकने की कथा मिलती है।

पउमचरिय (पव ६४-६५) मे विशल्यौषधि का मानवीकरण किया गया है। लक्ष्मण को शक्ति लगने के पश्चात् एक विद्याधर राम से कहता है कि द्रोणमेध की कन्या विशल्या के स्नानजल से ही लक्ष्मण की चिकित्सा हो सकती है। इसपर हनुमान्, भामण्डल तथा अगद अयोध्या जाकर भारत को सीता-हरण तथा युद्ध का समाचार सुनाते है तथा विशल्या के साथ लका लौट आते है। विशल्या की चिकित्सा से स्वास्थ्य लाभ होने पर लक्ष्मण उसके साथ विवाह भी करते है।

सेरीराम के अनुसार रावण के रथ मे १०० सिह तथा १००० अश्व जुते हुए थे। लक्ष्मण ने उसका सामना करना चाहा किन्तु रावण ने वाण मार कर लक्ष्मण को आहत कर दिया। लक्ष्मण को रणभूमि से हटा कर राम ने विभीषण के परामर्श[1] से हनुमान् को ओषधि ले आने के लिये भेज दिया और हनुमान् ने अजानी नामक ओषधि-पर्वत राम के पास पहुँचा दिया। तब विभीषण ने कहा कि औषध तैयार करने के लिये रावण के पलग के नीचे पडे हुए चौके की जरूरत है। हनुमान् को उसे ले आने के लिये भेजा जाता है। हनुमान् हरा भ्रमर बनकर रावण के महल मे प्रवेश कर जाते हैं और रावण तथा मन्दोदरी के बाल एक गाँठ मे बाँधकर उस चौके को ले जाते है। उसके सहारे विभीषण औषध तैयार करता है तथा लक्ष्मण को स्वास्थ्यलाभ प्रदान करता है। प्रात काल हनुमान् रावण को सबोधित कर कहते है कि जब मन्दोदरी तुम्हारे सिर पर प्रहार करेगी तभी तुम दोनो के बालो की गाँठ खुल सकती है और रावण मन्दोदरी को ऐसा करने देता है। एक स्त्री द्वारा मारे जाने के फलस्वरूप रावण अब अजेय नही रहा। शेलाबेर पाठ के अनुसार हनुमान् ने चीटी के रूप मे रावण के महल मे प्रवेश किया तथा रावण के पलग के चारो ओर फैले हुए साँप की पीठ पर गाँठ खुल जाने का उपाय लिख दिया था। सेरीराम के पातानी पाठ के अनुसार हनुमान् पिस्सू के रूप मे एक दासी की साडी पर बैठ कर रावण के महल के भीतर चले गये।

रामकियेन (अध्याय ३३) मे माना गया है कि हनुमान् द्वारा लाई हुई ओषधि तैयार करने के लिए निम्नलिखित वस्तुओ की आवश्यकता है—इन्द्र की धेनु का गोबर, कालनाग

---

१ रामचन्द्रिका (१७, ४०) के अनुसार भी विभीषण ने यही परामर्श दिया था।

का चौका और रावण का बेलन । हनुमान् तीनो ले आते है तथा सेरीराम के वृत्तान्त की भाँति रावण का बेलन ले जाते समय रावण-मन्दोदरी के बाल एक गाँठ मे बाध देते हैं । अन्य रचनाओ मे हनुमान् सीता की खोज करते समय (अनु० ५३६) अथवा कुभकर्ण द्वारा आहत लक्ष्मण की चिकित्सा के लिये रावण का बेलन ले जाते समय (अनु० ५८६, ७) इस प्रकार का उत्पात करते है ।

५६७ वाल्मीकि रामायण के पश्चिमोत्तरीय पाठ मे (दे० अनु० ५६०) इन्द्रजित्-वध के पश्चात् रावण **होम** करने जाता है । विभीषण यह जानकर राम को सावधान करता है कि इस यज्ञ को भग करने की अत्यत आवश्यकता है, नही तो रावण शिव के प्रसाद से अजेय हो जायेगा ।[1] हनुमान् के नेतृत्व मे वानर रावण के यज्ञस्थल पर पहुँचते है लेकिन वे उसका ध्यान भग करने मे असमर्थ है । तब अगद हनुमान् की आज्ञा से मन्दोदरी के केशो को खीचकर उसे रावण के पास ले आता है जिससे रावण उत्तेजित होकर यज्ञ को अपूर्ण छोड देता है और अगद पर आक्रमण करता है । यह प्रसग इन्द्र-जित्-यज्ञ-विध्वस (दे० अनु० ५६२) की पुनरावृत्ति मात्र प्रतीत होता है फिर भी यह असभव नही कहा जा सकता कि इसका आधार पउमचरिय मे वर्णित रावण की विद्या-साधना ही है ।

पउमचरिय (पर्व ६६-६८) की कथा इस प्रकार है । रावण बहुरूपिणी विद्या की सिद्धि के लिये शातिनाथ के मदिर मे साधना करने जाता है तथा मन्दोदरी लका के सभी नागरिको से आठ दिन तक अहिंसा का पालन करने का आवेदन करती है । विभीषण यह सुझाव देता है कि राम जाकर रावण को मन्दिर मे से निकालकर कैदी बना ले किन्तु राम यह प्रस्ताव अस्वीकार करते है । तब वानरो का एक दल ध्यानस्थ रावण को क्षुब्ध करने के उद्देश्य से लका मे प्रवेश करता है और शातिनाथ के मन्दिर मे निवास करने वाले देवताओ द्वारा नष्ट किया जाता है । इस के बाद अगद एक दूसरे दल को लेकर मन्दिर मे प्रवेश करता है । उसने रावण को बाँधा, उसके अन्त पुर की स्त्रियो का अपमान किया तथा अन्त मे मन्दोदरी को खीचकर रावण के सामने लाया किन्तु रावण विचलित नही हुआ और उसने बहुरूपिणी विद्या प्राप्त कर ली । गुणभद्रकृत **उत्तर पुराण** (६८, ५१६-५२६) के अनुसार रावण विद्याएँ सिद्ध करने के लिए आदित्यपाद नामक पर्वत पर साधना करने गया था । विभीषण के परामर्श के अनुसार राम और

---

१ जानकीहरण (१७, २) मे रावण की अग्नि-पूजा का उल्लेख मात्र है । अनेक रामकथाओ मे युद्ध से पहले राम की देवी-पूजा का वर्णन किया गया है, दे० अनु० ७८५ । रावण की देवी-पूजा की कथा का एक आधुनिक रूप आगे (अनु० ७४१) देख ले ।

लक्ष्मण एक विशाल सेना के साथ विमान पर आरूढ होकर लका के निकट पहुँच गए तथा अन्य विद्याधरो को पर्वत पर जाकर उपद्रव करने का आदेश दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि रावण अपनी साधना अपूर्ण छोडकर लका चला आया।

बहुत सी परवर्ती रामकथाओ मे पश्चिमोत्तरीय पाठ के अनुसार मन्दोदरी के केश-ग्रहण तथा रावण के यज्ञ-भग का वर्णन मिलता है। उदाहरणार्थ—कृत्यारावण(अक ६), खोतानी रामायण, द्विपद रामायण (६, १३३-१३५), अध्यात्म रामायण (६, १०), आनन्द रामायण (१, ११, २२६), पद्मपुराण (उत्तर खण्ड, अध्याय २६६), रामचरित मानस (६, ८५), तोरवे रामायण (६, ४८), भावार्थ रामायण (६, ५६-५७), राम-चन्द्रिका (प्रकरण १६), विश्वनाथ खूटिया कृत विचित्र रामायण, तत्त्वसग्रह रामायण (६, २७), नर्मदाकृत रामायण नो सार, काश्मीरी रामायण (न० ४८), सेरीराम, राम-केर्ति (सर्ग १०), रामकियेन, पाश्चात्य वृत्तान्त न० ३, आदि। सारलादास के उडिया महाभारत मे उस केशग्रहण को अगद के दूतकार्य के वर्णन के अतर्गत रखा गया है।

अनेक रामकथाओ मे इसका उल्लेख किया गया है कि रावण ने दैत्यगुरु शुक्राचार्य के परामर्श से अपना यज्ञ आरभ किया था, उदाहरणार्थ—रगनाथ रामायण, अध्यात्म रामायण, आनन्द रामायण, काश्मीरी रामायण, तत्त्वसग्रह रामायण। रगनाथ रामायण तथा तत्त्वसग्रह रामायण मे यह माना गया है कि सरमा ने वानरो को रावण के यज्ञस्थल का मार्ग दिखलाया था। **कृतिवास** का वृत्तान्त मौलिक प्रतीत होता है (दे० ६, १०३)। रावण ने शातिकर्म का आयोजन किया और इसके प्रारभ के चण्डी-पाठ के लिए वृह-स्पति को बुलाया। इसपर देवताओ ने पवन को राम के पास भेजकर चण्डीपाठ अशुद्ध करने का परामर्श दिया। विभीषण के सुझाव के अनुसार हनुमान् को भेजा गया। हनुमान् ने मक्खी का रूप धारण कर चण्डी-पाठ के दो अक्षर चाट कर मिटाए लेकिन वृहस्पति ने अभ्यासवश शुद्ध ही पढ कर सुनाया। तब हनुमान् अपने विक्रम रूप मे प्रकट हुए जिससे वृहस्पति डर गए और पाठ भग हो गया था। अनन्तर हनुमान् ने ग्रन्थ छीनकर प्रथम माहात्म्य के तीन श्लोक मिटाए, चण्डीपाठ इस प्रकार अशुद्ध देखकर महेश्वरी ने कैलास के लिए प्रस्थान किया। **तोरवे रामायण** के अनुसार रावण ने अपना यज्ञ अपूर्ण छोडकर अगद के शरीर के दो टुकडे कर दिये किन्तु वानर अगद को ले गए और सुषेण ने उसे जिलाया। विदेशी रामकथाओ मे भी रावण के असफल यज्ञ का उल्लेख मिलता है। **सेरीराम** के अनुसार रावण अपने यज्ञ के धूम्र से राम की सास रोकना चाहता था। **रामकेर्ति** (सर्ग १०) मे माना गया है कि रावण के पास विष था, वह विष रावण की प्रार्थना पूर्ण होते ही अजेय बनने वाला था। रावण मन्दोदरी के साथ किसी पर्वत पर चला गया था किन्तु हनुमान् ने मन्दोदरी के वस्त्र छीनकर रावण का ध्यान भग किया तथा विष का पात्र भी उलट दिया। **रामकियेन** (अध्याय ३१) के

अनुसार हनुमान् ने मन्दोदरी को रावण के पास ले जाकर उसका पहला यज्ञ भग किया था। बाद मे रावण ने अपनी कपिलबद नामक भाले की शक्ति जगाने के उद्देश्य से यज्ञ प्रारभ कर दिया किन्तु देवताओ ने वालि को उसके पास भेज दिया, जो राम के हाथ से मरकर देवता के रूप मे उत्पन्न हुआ था। वालि ने मेरु पर्वत को रावण के अग्निकुण्ड मे डालकर रावण को परास्त कर दिया (अध्याय ३३)। रामकियेन मे एक तीसरे यज्ञ का वर्णन है। मन्दोदरी ने उमा से सजीव-यज्ञ का रहस्य जान लिया था जिसके द्वारा अमृत प्राप्त होता है। हनुमान् रावण का रूप धारण कर मन्दोदरी के पास गये तथा उसे अपने बाहुपाश मे बद्ध करके उसका सतीत्व नष्ट किया जिससे उसका यज्ञ असफल हुआ (दे० अध्याय ३४)। इस रचना के एक अन्य स्थल पर हनुमान् तथा मन्दोदरी के रमण का भी वर्णन किया गया है (दे० अनु० ३२६)।

काश्मीरी रामायण के अनुसार (दे० न० ४७) इन्द्रजित् तथा कुभकर्ण के वध के अनन्तर रावण निराश होकर कैलास पर शिव की सहायता मागने गया था। शिव ने उसे मकेश्वर लिंग देकर आश्वासन दिया कि इस लिंग के लका मे स्थापित हो जाने पर राम की विजय हो ही नही सकती तथा रावण को सावधान किया कि इस लिंग को कही भी पृथ्वी पर नही रखना चाहिये। मार्ग मे रावण को लघुशका लगी और उसने मकेश्वर लिंग को नारद के हाथ मे थमा दिया जो वृद्ध ब्राह्मण के रूप मे आ पहुँचे थे। नारद लिंगको भूमि पर रख कर चले गये तथा रावण लौट कर लिग को उठाने मे असमथ हुआ।[1]

अगद-दूत-कार्य के वर्णन मे इसका उल्लेख किया गया है कि सेरीराम तथा रामचन्द्रिका के अनुसार रावण किन शर्तों पर सीता को लौटाने के लिए तैयार था (दे० अनु० ५८५)। अनेक रामकथाओ मे रावण के सन्धि-प्रस्तावो की चर्चा है। **पउमचरिय** (पर्व ६५) मे लक्ष्मण के शक्ति-भेद के पश्चात् रावण दूत भेज कर राम को अपना आधा राज्य तथा ३००० कन्याओ को प्रदान करने का प्रस्ताव करता है, वशर्ते कि राम भानुकर्ण, इन्द्रजित् आदि कैदियो को लौटाये और सीता को त्याग दे। किन्तु राम इस प्रस्ताव को अस्वीकार करते है। **महानाटक** (१४, १-२) के अनुसार रावण ने अपने दूत लोहिताक्ष के द्वारा राम से कहा था कि परशुराम से प्राप्त हरप्रसादपरशु के बदले मे मै सीता को लौटाने के लिए तैयार हूँ।[2] **राघवाभ्युदय** मे रावण के एक अन्य सधि-प्रस्ताव की चर्चा है (दे० अनु० २३६, ६)।

---

१ कर्मनासा नदी की उत्पत्ति की कथा उस घटना से सबध रखती है। दे० डब्ल्यू० क्रूक रेलिजन एड फॉल्कलॉर (१६२६), पृ० ५६। अन्य अवसरो पर भी रावण को इस प्रकार धोखा दिए जाने का वृत्तान्त मिलता है, दे० अनु० ६५०।

२ इस प्रस्ताव का उल्लेख रामचन्द्रिका (१६, १७) मे भी मिलता है।

रामकियेन मे युद्ध टालने के लिए रावण के दो अन्य प्रयत्नो का वर्णन किया गया है। सेतु-निर्माण के पूर्व रावण तपस्वी के रूप मे राम के पास आ पहुँचता है और युद्ध छोड देने के लिए उनसे अनुरोध करता है (दे० अ० २५)। इन्द्रजित्-वध के पश्चात् रावण अपने पितामह ब्रह्मा को बुला भेजता है तथा बाद मे सीता को भी। उनकी गवाही सुनकर ब्रह्मा सीता को लौटाने का आदेश देते है तथा रावण के अस्वीकार करने पर उसे राम के अस्त्र से मर जाने का शाप देते है (अध्याय ३२)।

पउमचरिय (पर्व ६९) तथा इस पर आधारित अन्य जैन रामकथाओ मे भी रावण के पश्चात्ताप का वर्णन किया गया है। बहुरूपा विद्या सिद्ध करने के पश्चात् रावण सीता से मिलने आया। सीता ने उसे ठुकराया तथा यह कहकर मूर्च्छित हो गई थी कि मैं तभी तक जीवित रहूँगी जब तक राम, लक्ष्मण और भामण्डल की मृत्यु का समाचार नही पाती। रावण सीता का पातिव्रत्य देखकर दयार्द्र हो गया और सोचने लगा कि मैंने उसका अपहरण करके पाप किया है। फिर यह समझ कर कि विना युद्ध किये सीता को लौटाने मे मेरा अपयश होगा रावण ने सकल्प किया कि मैं राम तथा लक्ष्मण को हराकर उन्हे सीता को सौप दूगा। रावण के चरित्र के इस उदात्तीकरण का प्रभाव अन्य रामकथाओ पर भी पडा। **तोरवे रामायण** के अनुसार रावण युद्ध के लिए प्रस्थान करने के पूर्व अपनी सारी सम्पत्ति दरिद्रो मे बाँट देता है, जेल के सभी कैदियो को रिहा करता है तथा यह आदेश निकालता है कि यदि मैं युद्ध मे मारा गया तो विश्वासपात्र विभीषण को गद्दी पर बैठाया जाय।[1]

५९८ रावण-वध के परवर्ती वृत्तान्तो मे बहुधा रावण के **ममस्थान** अथवा रावण की मृत्यु की किसी गुप्त युक्ति का उल्लेख है। **अध्यात्म रामायण** (६, ११, ५३) के अनुसार रावण के नाभि-प्रदेश मे अमृत रखा हुआ है, विभीषण से यह जानकर राम ने आग्नेयास्त्र से उस अमृत को सुखाया था। रावण के शरीर मे स्थित अमृत का उल्लेख बहुत सी अन्य रामकथाओ मे भी किया गया है, उदाहरणार्थ आनन्द रामायण (१, ११ २७८), रगनाथ रामायण (६, १४५), धर्म-खण्ड (अध्याय १३०), तत्वसग्रह रामायण (६, २९), रामचरितमानस (६, १०२), भावार्थ रामायण (६, ६३), नर्मदाकृत रामायण नो सार, पाश्चात्य वृत्तान्त न० ६, ८ और १०।

सेरीराम तथा **तत्वसग्रह रामायण** के अनुसार रावण ने जटायु से युद्ध करते समय धोखा देकर कहा था कि मेरा मर्मस्थान पैर का अँगूठा है (दे० अनु० ४७०)। **खोतानी** तथा **तिब्बती** रामायणो मे वही रावण का वास्तविक मर्मस्थान माना गया है। दक्षिण भारत के एक वृत्तान्त के अनुसार रावण का हँसने वाला सिर उसका

---

१ दे० मैथिलीशरण गुप्त अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ० ७५५।

मर्मस्थान है।[१] **सेरीराम** मे सीता हनुमान को बताती है कि रावण के दाहिने कान के नीचे जो छोटा सा सिर है उसमे रावण का जीव निवास करता है। पजाब मे रावण की गर्दन उसका मर्मस्थान मानी गयी है।[२]

कृत्तिवास रामायण (६, १०४) के अनुसार रावण ने तपस्या करने के पश्चात् ब्रह्मा से अमरत्व का वरदान माँगा था। ब्रह्मा ने उसे आश्वासन दिया कि तुम्हारे सिर और भुजाये कट जाने पर फिर उत्पन्न होगी तथा रावण को **ब्रह्मास्त्र** देकर कहा—इस ब्रह्मास्त्र से तुम्हारा मर्मस्थान छेदित हो जाने पर ही तुम मर सकोगे। रावण ने बाद मे यह ब्रह्मास्त्र मन्दोदरी की रक्षा मे छोड दिया। विभीषण ने इस रहस्य का उद्घाटन किया तथा हनुमान् ने राम की अनुमति से ब्राह्मण वेश मे मन्दोदरी के पास पहुँचकर कहा कि जब तक ब्रह्मास्त्र तुम्हारे पास है रावण नही मर सकता किन्तु मुझे आशका है कि विभीषण कही यह न जान ले कि तुमने उसे कहा छिपा लिया है। मन्दोदरी ने उत्तर दिया कि मैं बहुत ही सावधान हूँ, मैने उसे इस खभे मे छिपाकर रखा है। इसपर हनुमान् ने स्फटिक का खभा लाठी से तोड दिया तथा ब्रह्मास्त्र लेकर राम के पास लौटे। **सेरीराम** का वृत्तान्त कृत्तिवास रामायण की कथा से साम्य रखता है। सीता ने हनुमान् से कहा था कि मन्दोदरी के पास रावण का मायावी खग है, जिसकी पूजा मन्दोदरी किया करती है। हनुमान् ने सीता के परामर्श के अनुसार मन्दोदरी के पास जाकर रावण की मृत्यु का झूठा समाचार सुनाया, शोकसतप्त मन्दोदरी ने अपना सिर झुका लिया और उस क्षण से लाभ उठाकर हनुमान् ने रावण का खग चुरा लिया जिससे रावण शक्तिहीन हो गया था।

विर्होर रामकथा के अनुसार रावण का जीव उसके महल के भीतर एक मजूषा मे सुरक्षित था। हनुमान् और लक्ष्मण दोनो ने लका मे प्रवेश कर तथा उस मजूषा को खोलकर रावण का जीव मुक्त कर दिया था। **रामकियेन** (अध्याय ३५) की कथा इस प्रकार है—रावण का जीव गोपुत्र नामक रावण-गुरु के पास एक मजूषा मे बन्द था और हनुमान् ने अगद के साथ गोपुत्र के पास जाकर उस मजूषा को छल से प्राप्त कर लिया। **ब्रह्मचक्र** के अनुसार रावण ने लङ्कादहन के पश्चात् ही अपना हृदय किसी ऋषि के यहाँ सुरक्षित रखा था, हनुमान् ने रावण का रूप धारण कर उसे प्राप्त किया था तथा राम को दे दिया। सेरीराम के पातानी पाठ की तत्सबधी कथा इससे मिलती-जुलती है।

---

१ दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० १। अन्य रचनाओ मे रावण के चित्र मिलते हैं जिनमे दस साधारण सिरो के ऊपर गधे का एक सिर भी चित्रित किया गया है। दे० पा० वृ० ३ और ४।

२ दे० इ० ऐं० भाग २०, पृ० २८६।

पद्मपुराण (पातालखण्ड, अध्याय ११२, २०२-२२५) के अनुसार अतिकाय तथा महाकाय गुप्तचर के रूप मे राम की सेना मे प्रवेश कर पकडे गए थे, उन्होने शुक्र की इस भविष्यवाणी का उद्घाटन किया कि लङ्का द्वार पर जो लकडी का कीर्तिमुख है (**दारु पचवक्त्र**), उसके छिन्न-भिन्न हो जाने से रावण की मृत्यु अवश्यभावी है। राम ने वाण मार कर उस कीर्तिमुख को नष्ट कर दिया था।

महानाटक (१४,२६) के अनुसार राम ने विश्व का कल्याण दृष्टि मे रखकर रावण के वक्षस्थल पर वाण नही चलाया, राम जानते थे कि रावण के हृदय मे सीता का निवास था, सीता के हृदय मे राम तथा राम मे समस्त भुवनावली विद्यमान थी। **रामचरितमानस** (६, ९९) मे भी इसकी चर्चा की गई है, उस रचना मे त्रिजटा सीता को आश्वसान देती है कि सिरो के कट जाने पर रावण व्याकुल होकर तुमको भूल जायगा, तभी राम उसके हृदय मे वाण मार कर उसका वध करेगे।

रावण-वध के वर्णन मे अनेक गौण परिवर्तन किए गए है जिनका उल्लेख यहाँ आवश्यक है। **महाभारत** (३, २७४, ८) के अनुसार रावण ने अन्तिम युद्ध के समय राम तथा लक्ष्मण का रूप धारण करनेवाले बहुत से मायामय योद्धाओ को उत्पन्न किया था, रावण की इस माया का उल्लेख कुछ परवर्ती रामकथाओ मे भी मिलता है, उदाहरणार्थ रामचरितमानस (६, ८९)। **महाभारत** (३, २७४, ३१) मे माना गया है कि राम का ब्रह्मास्त्र रावण को इस प्रकार जला देता है कि राख भी शेष नही रही। बलरामदास रामायण मे राम रावणवध के समय अपना शरीर बढाकर कृतान्तक रूप धारण कर लेते है। **तत्वसग्रह रामायण** (६, ३१) के अनुसार राम ने रावण का वध करने के लिए परमेश्वर का रूप धारण कर लिया, **तोरवे रामायण** (६, ५१) मे भी माना गया है कि रावण ने अपने वध के पूर्व राम का विश्वरूप देखा था। उस रचना के अनुसार अगस्त्य ने युद्ध के समय ही राम को त्रिमूर्ति नामक वाण दिया और राम ने उसी वाण से रावण को मार डाला था।

५९९ वाल्मीकि रामायण के अनुसार विभीषण ने राम के अनुरोध से अपने भाई रावण का **दाह-सस्कार** विधिवत् सम्पन्न किया था (दे० ऊपर अनु० ५९६, २)। एकाध रामकथाओ मे **मन्दोदरी** रावण की चिता पर चढकर सती हो गई थी (दे० अनु० ५४४)। एक अन्य परम्परा के अनुसार रावण की **चिता** जलती रही। **आनन्द रामायण** (राज्यकाण्ड, सर्ग २०) मे तत्सबधी कथा इस प्रकार है। रावणवध के बहुत काल बाद तक अयोध्या मे रात को एक आवाज़ सुनाई दिया करती थी जिसका रहस्य वसिष्ठ ने यह कहकर प्रकट किया कि रावण ने जिस शरीर से बारम्बार ब्रह्महत्या की थी वह शरीर आज भी जल रहा है। हनुमान् प्रतिदिन लकडी के सौ भार (**प्रत्यह काष्ठभारशतम्**) उसकी चिता पर डाला करते है। इसका एक अन्य कारण यह है कि

रावण ने राम से एक ऐसा वर माँगा था जिससे लोग उसका स्मरण किया करे। राम ने उत्तर मे कहा था—तुम्हारा शरीर जलाने वाली आग की आवाज सप्तद्वीप के लोगो को सुनाई देती रहेगी।

कृत्तिवास रामायण (६, १०६) मे भी जलती चिता का उल्लेख है। रणभूमि मे मन्दोदरी को देखकर तथा उसे सीता समझकर राम ने उसे "सौभाग्यवती" होने का आशीर्वाद दिया। वास्तविकता ज्ञात होने पर राम ने कहा—"चिता सदैव प्रज्वलित रहेगी, इससे तुम्हारा सौभाग्य चिरस्थायी होगा।"

हिन्देशिया की रामकथाओ मे रावण के **जीवित रहने** का उल्लेख है। **सेरीराम** मे राम द्वारा पराजित तथा आहत रावण रणभूमि मे पडा रहता है। सीता की अग्नि-परीक्षा के बाद भरत और शत्रुघ्न लङ्का पहुँचते है तथा रावण को देखने की इच्छा प्रकट करते है। राम अपने भाइयो के साथ रावण से मिलने आते है तथा उसके साथ बातचीत भी करते है। यह प्रसग महाभारत का स्मरण दिलाता है जहाँ पाण्डव मरणासन्न भीष्म के दर्शन करने आते है। **हिकायत महाराज रावण मे** भी माना गया है कि रावण जीवित है और कल्प के अन्त मे पुन भगवान के शत्रु के रूप मे प्रकट होने वाला है।

अर्वाचीन रामकथाओ मे प्राय अध्यात्म रामायण के अनुसार रावण की **सायुज्य मुक्ति** का उल्लेख है, उदाहरणार्थ आनन्द (१, ११, २८३) और भावार्थ (६, ६३) रामायण। **अध्यात्म रामायण** (६, ११, ७८) मे रावण का जीव ज्योति का रूप धारण कर राम के शरीर मे प्रवेश करता है, देवताओ के आश्चर्य करने पर नारद उनको समझाते हैं कि रावण ने द्वेषभाव से निरन्तर हृदय मे राम का स्मरण किया था और इस कारण उसने मुक्ति प्राप्त की है। मुक्ति-प्राप्ति के उद्देश्य से ही रावण ने सीता-हरण किया था (दे० अनु० ४८८)।

पाश्चात्य वृत्तान्त न० १ के अनुसार राम रावण के नौ सिर तथा १८ भुजाये काटकर उसे इस शर्त पर जीवित रहने देना चाहते थे कि रावण सीता को लौटाये। इसपर रावण मन्दोदरी के पास गया और मन्दोदरी ने उसे राम के हाथ से मरकर मुक्ति प्राप्त करने का परामर्श दिया। स्कद पुराण (माहेश्वर खण्ड, अध्याय ८, १३३) मे रावण की शिव-सायुज्यमुक्ति का उल्लेख मिलता है।

ञ । अग्निपरीक्षा

६०० प्रचलित वाल्मीकि रामायण (सर्ग ११२-११३) मे अग्नि-परीक्षा की कथा इस प्रकार है। रावण-वध तथा विभीषण के अभिषेक के बाद राम ने हनुमान् द्वारा सीता को अपनी विजय का समाचार भेज दिया, हनुमान् सीता का यह

सन्देश लेकर लौटे—**द्रष्टुमिच्छामि भर्तार भक्तवत्सलम्** (११३, ४७)। अगले सर्ग मे राम का रुख अचानक बदलता है, वह विभीषण को आदेश देते है कि सीता को मेरे पास ले आओ—**दिव्यागरागा[1] वैदेहीं दिव्याभरणभूषिताम। इह सीता शिर स्नातामुपस्थापय मा चिरम्** ॥७॥ विभीषण से राम की यह आज्ञा सुनकर सीता कहती है—**अस्नात्वा द्रष्टमिच्छामि भर्तार राक्षसेश्वर** (११), किन्तु विभीषण राम की आज्ञा के पालन के लिये अनुरोध करता है। अत स्नान के पश्चात् ही सीता मूल्यवान् वस्त्र तथा आभूषण पहने शिविका पर चढकर राम से मिलने आती है। विभीषण ध्यानस्थ[2] राम के पास पहुँचकर सीता के आगमन का समाचार देता है। तब शिविका को पास लाने के लिए विभीषण के अनुचर वानरो की भीड हटाने लगे, इस पर राम क्रुद्ध होकर विभीषण को आदेश देते हे कि सीता सब वानरो के देखते पैदल ही मेरे पास आवे। राम की यह आज्ञा सुनकर लक्ष्मण, सुग्रीव तथा हनुमान् को बहुत दु ख हुआ (**बभुवुव्यथिता भृशम्**)। अनन्तर सीता अत्यन्त लज्जित होकर तथा विभीषण के पीछे-पीछे चलकर अपने पति के पास आई—**लज्जया त्ववलीयन्ती स्वेषु गात्रेषु मैथिली, विभीषणेनानुगता भर्तार साभ्यवर्तत** (११४, ३३)। सीता को अपने पास खडी हुई देखकर राम उनसे कहने लगे—मेने तो अपने शत्रु के अपमान का प्रतिकार किया है किन्तु मुझे तुम्हारे चरित्र पर सन्देह है। जिस स्त्री ने दूसरे के घर मे निवास किया है उसे कौन पुरुष ग्रहण कर सकता है। मुझे तुम्हारे प्रति कोई आकर्षण नही रहा, तुम जहाँ चाहो चली जाओ

---

१ 'दिव्यागरागा' अनसूया द्वारा सीता को प्रदत्त अगराग का स्मरण दिलाता है। यह प्रसग प्रक्षिप्त है (दे० अनु० ४३१) और सभवत सीता सावित्री की कथा पर आधारित है (दे० अनु० ८)। कालिदास ने भी इस अगराग का उल्लेख किया (दे० रघुवश १२, २७)। आश्चर्यचूडामणि मे माना गया है कि अनसूया सीता को यह वरदान देती है कि तुम अपने पति के सामने आते ही अपने आप पूर्णमडित हो जाओगी। रावण-वध के बाद जब सीता पालकी पर बैठी पहुँचती है, तो राम कहते है—**सर्वे पश्यन्तु जानक्या रूप चारित्रभूषणम** (७, १४)। किन्तु सीता को पूर्ण रूप से अलकृत देख कर वह उनके चरित्र पर सदेह करने लगते है और सीता कहती है कि अनुसूया का वरदान मेरे लिए शाप बन रहा है—**हा धिक अनसूयाया अनुग्रहोऽपि मे इदानीं शाप सवृत** ।

२ राम का उस समय ध्यानस्थ होना अस्वाभाविक तथा मूल रामायण की भाव-धारा के प्रतिकूल है।

प्राप्तचारित्रसन्देहा मम प्रतिमुखे स्थिता ।।१७।।
क पुमास्तु कुले जात स्त्रिय परगृहोषिताम् ।
तेजस्वी पुनरादद्यात सुहृल्लोभेन चेतसा ।।१६।।
नास्ति मे त्वय्यभिष्वगो यथेष्ट गम्यतामिति ।।२१।।
लक्ष्मणे वाथ भरते कुरु बुद्धि यथासुखम ।।२२।।
शत्रुघ्ने वाथ सुग्रीवे राक्षसे वा विभीषणे ।

× × ×

नहि त्वा रावणो दृष्टवा दिव्यरूपा मनोरमाम ।
मषयत्यचिर सीते स्वगृहे पर्यवस्थिताम् ।।२४।।

(सर्ग ११५)

राम के ये कठोर शब्द सुनकर सीता ने अपने सतीत्व की शपथ खाई तथा लक्ष्मण द्वारा चिता तैयार कराकर वे उसमे तुरन्त प्रवेश कर गई (सर्ग ११६)। अनन्तर देवता प्रकट हुए तथा सीता के पक्ष मे साक्ष्य देकर विष्णु के रूप मे राम की स्तुति करने लगे (सर्ग ११७)। अन्त मे अग्नि देवता ने सीता के साथ आग मे से निकलकर तथा उनके सतीत्व का साक्ष्य देकर सीता को ग्रहण करने का राम से अनुरोध किया। उत्तर मे राम ने कहा कि मुझे सीता के चरित्र के विषय मे सन्देह नही था किन्तु एक तो रावण के यहाँ रहने के बाद सीता को इस शुद्धि की आवश्यकता थी, दूसरे, यदि मै सीता को यो ही ग्रहण करता तो लोग मुझ पर कामात्मा होने का आक्षेप लगाते

अवश्य चापि लोकेषु सीता पावनमर्हति ।
दीर्घकालोषिता हीय रावणातःपुरे शुभा ।।१३।।
बालिशो बत कामात्मा रामो दशरथात्मज ।
इति वक्ष्यति मा लोको जानकीमविशोध्य हि ।।१४।।

(सर्ग ११८)

६०१ सीता की अग्निपरीक्षा का यह वर्णन वाल्मीकि रामायण मे प्रक्षिप्त है (दे० अनु० ५६५)। अत महाभारत मे सीता की अग्नि परीक्षा का अभाव स्वाभाविक ही है। **रामोपाख्यान** (अध्याय २७५) मे विभीषण तथा अविंध्य[1] सीता को राम के पास ले आते है, और राम सीता की शपथ तथा वायु, अग्नि, वरुण और ब्रह्मा के साक्ष्य से सन्तुष्ट होकर सीता को ग्रहण करते है तथा देवताओ से तीन वर प्राप्त

---

१ सूरसागर मे लक्ष्मण सीता को राम के पास ले जाता है। आश्चर्यचूडमणि मे सीता को ले आने का भार सुग्रीव को सौपा जाता है।

कर लेते है—(१) धर्म मे स्थिर बुद्धि, (२) शत्रुओ से अजेयता, (३) मृत वानरो का पुनर्जीवन ।

महाभारत के अतिरिक्त प्राचीन पुराणो मे भी अग्निपरीक्षा का निर्देश नही मिलता, उदाहरणार्थ हरिवश, विष्णु पुराण, वायु पुराण, भागवत पुराण, नृसिह पुराण । इसी तरह निम्नलिखित रचनाओ मे सीता की अग्निपरीक्षा का अभाव है—अनामक जातकम्, श्याम का राम जातक, खोतानी और तिब्बती रामायण, गुणभद्रकृत उत्तरपुराण ।

पउमचरिय (पर्व ७६) मे भी राम और सीता के पुर्नमिलन के समय देवताओ की पुष्पवृष्टि तथा सीता की निर्मलता के पक्ष मे उनके साक्ष्य के अतिरिक्त किसी भी परीक्षा का उल्लेख नही मिलता किन्तु इसका वर्णन एक अन्य अवसर पर रखा गया है। सीता-त्याग तथा सीता के पुत्रो द्वारा राम-सेना मे युद्ध के पश्चात् राम उन पुत्रो के साथ अयोध्या लौटे । वहा पहुँचकर सुग्रीव, हनुमान् आदि राम से अनुरोध करने लगे कि वह सीता को पुन ग्रहण कर ले । राम ने उस प्रस्ताव को स्वीकार किया बशर्ते कि सीता लोगो को अपने सतीत्व का प्रमाण दे । तब सुग्रीवादि सीता को अयोध्या ले आये और सीता ने कहा—मै तुला पर चढ सकती हूँ, आग मे प्रवेश कर सकती हूँ, लोहे की तपी हुई लम्बी छड धारण कर सकती हूँ अथवा मै उग्र विष भी पी सकती हूँ (दे० पर्व १०१, ३६) । राम ने अग्निपरीक्षा को ही उचित समझा और तीन सौ हाथ गहरा अग्निकुण्ड खोदने का आदेश दिया । आग प्रज्ज्वलित होने पर सीता ने अपने सतीत्व की शपथ खाकर उसमे प्रवेश किया । सीता के प्रवेश करते ही अग्निकुण्ड स्वच्छ जल से भर गया, जो धीरे-धीरे उमड कर सर्वत्र फैल गया और बढता गया । यह देखकर जनता सीता से प्रार्थना करने लगी और सीता ने जल छू कर उसे सीमित कर दिया । तब सबो ने बावडी के मध्य मे सहस्रदल कमल पर विराजमान सीता को देखा । राम ने पास जाकर सीता से क्षमा-याचना की तथा अपने साथ अयोध्या मे निवास करने का अनुरोध किया किन्तु सीता उस प्रस्ताव को ठुकराकर जैन दीक्षा लेने के उद्देश्य से चली गई (दे० पर्व १०१-१०२) । पद्मचरित (१०४, ७४-७६) तथा पउमचरिउ (५, ८३, ६) मे भी यह कथा मिलती है ।

कथासरित्सागर मे राम द्वारा सीता की परीक्षा का तो उल्लेख नही किया गया है, लेकिन त्याग के पश्चात् वाल्मीकि आश्रम मे पहुँचकर सीता की परीक्षा का निम्नलिखित वृत्तान्त मिलता है । आश्रम के अन्य ऋषि सीता के सतीत्व पर सन्देह करते है और अपने चले जाने का सकल्प वाल्मीकि से प्रकट करते है । यह सुनकर सीता स्वय कोई भी परीक्षा लेने का प्रस्ताव करती है । इसपर ऋषि टीटिभा की कथा सुनाते है, जिसके सतीत्व को प्रमाणित करने के लिए लोकपालो ने टीटिभ सरोवर का

निर्माण किया था। उस टींटिभ-सरोवर के तट पर जाकर सीता अपने सतीत्व की शपथ खाकर जल मे प्रवेश करती है। इस पर पृथ्वी देवी प्रकट होकर सीता को अपनी गोद मे ले लेती है, और सरोवर के उस पार पहुँचाती है (दे० ६, ५१)। यह देखकर ऋषि राम को शाप देना चाहते है, लेकिन सीता के अनुरोध पर ऐसा नही करते।

६०२ अन्य रचनाओ मे प्राय वाल्मीकि रामायण के अनुसार सीता की अग्नि परीक्षा का वर्णन किया गया है। एक महत्वपूर्ण अन्तर यह है कि अधिकाश मध्यकालीन रामायणो मे माया-सीता (दे० अनु० ५०४-५०६) अग्नि मे प्रवेश करती है और वास्तविक सीता उसमे प्रकट हो जाती है। **आनन्द रामायण** के अनुसार सीता अपने हरण के पूर्व तीन रूपो मे विभक्त हो गई थी, वह उस अवसर पर फिर एक हो जाती है (१, १२, ११)। **कृत्तिवास रामायण** (६, ११४) मे मन्दोदरी का शाप अग्निपरीक्षा का कारण माना गया है। मन्दोदरी ने राम के दर्शनो की आशा से आनन्दमग्न सीता को यह कहकर शाप दिया—तुम्हारा यह आनन्द अकस्मात् निरानन्द हो जाएगा। लङ्का की स्त्रियो ने भी उस अववर पर सीता को शाप दिया। इसकी कल्पना वाल्मीकि रामायण के उदीच्य पाठो मे उल्लिखित तारा-शाप पर आधारित है (दे० अनु० ७२६)।

रामायण मसीही मे मन्दोदरी सीता को राम के पास ले आती है और राम स्वय सीता को आग मे डालते है। **सेरीराम** मे हनुमान् चिता तैयार करते है, चिता की सारी लकडी जल जाने के बाद तक सीता निरापद खडी रहती है। **ब्रह्मचक्र** के अनुसार सीता ने राम का सन्देह देखकर आग जलाने का आदेश दिया। सीता के अग्नि मे प्रवेश करते ही अग्नि बुझ गई।

६०३ अन्य वृत्तान्तो मे सीता की निम्नलिखित परीक्षाओ का उल्लेख मिलता है—विषैले साँपो से भरे हुए घडे मे हाथ डालना, मस्त हाथियो के सामने फेका जाना, सिह और व्याघ्र के वन मे त्याग किया जाना, अत्यन्त तप्त लोहे पर चलना (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त ३ और १३)।

कृष्णदेव उपाध्याय द्वारा सम्पादित भोजपुरी ग्रामगीत (पृ० १३७) मे सीता की अन्य परीक्षाओ का भी वर्णन किया गया है। उस सग्रह के एक गीत के अनुसार सीता ने,

(१) अग्नि को हाथ मे लिया तब वह बिल्कुल ठडी हो गई।
(२) सूर्य को अपने हाथ मे उठा लिया और वह हाथ मे उठाते ही अस्त हो गया।
(३) सर्प को अपने हाथ मे लिया तब वह फन फैलाकर बैठ गया।
(४) गगा को हाथ मे लिया, तब गगा बिल्कुल सूख गईं।
(५) तुलसी को अपने हाथ मे लिया तब तुलसी जी बिल्कुल ही सूख गईं।

ट । वापसी यात्रा

६०४ प्रचलित वाल्मीकीय युद्धकाण्ड के अन्तिम सर्गों की सक्षिप्त कथावस्तु इस प्रकार है। अग्निपरीक्षा के पश्चात् राम विभीषण का आतिथ्य-सत्कार अस्वीकार कर उमसे अयोध्या की यात्रा का प्रबन्ध करने का निवेदन करते है। विभीषण पुष्पक प्रस्तुत करता है, राम की अनुमति पाकर सुग्रीव अपने वानरो के साथ तथा विभीषण अपने अमात्यो के साथ पुष्पक पर चढते है (सर्ग १२१-१२२)। अगले सर्ग मे राम सीता को सम्बोधित करके लङ्का से अयोध्या तक की समस्त यात्रा का वर्णन करते है। भरद्वाज-आश्रम मे पहुँचकर राम अयोध्या का समाचार प्राप्त कर लेते है तथा हनुमान् को गुह और भरत के पास भेज देते है (सर्ग १२४-१२५)। हनुमान से सक्षेप मे राम-चरित सुनकर भरत राम के आगमन के लिये अयोध्या सजाने का आदेश देते है। जनता भरत के साथ नदिग्राम मे राम का स्वागत करती है। भरत राम को राज्य-भार सौप देते है तथा राम का अभिषेक विधिवत् सम्पन्न किया जाता है (सर्ग १२६-१२८)।

६०५ **पउमचरिय** (पर्व ७७-७८) के अनुसार राम तथा लक्ष्मण ने रावणवध के बाद लका मे प्रवेश कर वहाँ के राजमहल मे ६ वर्ष बिताए। अन्त मे नारद ने राम के पास आकर पुत्र-वियोग के कारण शोकसन्तप्त अपराजिता की दयनीय दशा का वर्णन किया, इसके फलस्वरूप राम-लक्ष्मण ने साकेत की यात्रा करने का निश्चय किया। **सेरीराम** मे भी राम बहुत समय तक लका मे निवास करते है, जहाँ ससार भर के राजा आकर राम को सम्मान देने आते है। भरत, शत्रुघ्न तथा राम की बहन किकेवी देवी भी लका मे राम से मिलने आते है तथा वही विभीषण का किकेवी देवी के साथ विवाह सम्पन्न हो जाता है। बाद मे महरीसी कली आकर सीता के जन्म का रहस्य प्रकट करते है (दे० अनु० ४२८) और मन्दूदाकी अपनी पुत्री सीता को पहचान लेती है। एक वर्ष तक लका मे रहकर राम के सभी भाई विभीषण के साथ अयोध्या लौटते है। विभीषण अयोध्या से वापस आते समय एक रम्य पर्वत देखते है, और राम के सामने इसका गुणगान करते है। फलस्वरूप राम उस पर्वत पर दुर्यापुरी नामक नगर बनवा देते हैं और रावण के मत्री को लका मे छोडकर लका के चुने हुए लोगो के साथ अपनी इस नयी राजधानी को बसा लेते है। राम लक्ष्मण को युवराज, हनुमान् को सेनापति तथा विभीषण को वजीर नियुक्त कर तथा ससार भर से धन, कला अथवा विज्ञान से सम्पन्न लोगो को बुलाकर न्यायपूर्वक राज्य करने लगते है। **रामकियेन** (अ० ३८) के अनुसार राम ने प्रस्थान करने के पूर्व आशाकर्ण नामक राक्षस का वध किया तथा सेतु पार करने के पश्चात् हनुमान् ने रावण के पुत्र प्रलयकल्प को मार डाला। वह पाताल-वासिनी कला-अग्गी का पुत्र था, जो पाताल से निकलकर अपने पिता के वध का प्रतिकार करना चाहता था।

६०६ गुणभद्रकृत **उत्तरपुराण** (६८, ६५६) के अनुसार राम-लक्ष्मण की वापसी यात्रा दिग्विजय का रूप धारण कर लेती है, जिससे वे केवल ४० वर्ष बाद अपनी राजधानी पहुँच पाते है। शेष रामकथाओ मे प्राय वाल्मीकि रामायण के अनुसार ही अयोध्या की यात्रा का वर्णन किया गया है। इसके अनुसार सुग्रीव अपने वानरो के साथ तथा विभीषण अपने मन्त्रियो के साथ राम-सीता-लक्ष्मण से मिलकर अयोध्या की यात्रा करते है। दाक्षिणात्य पाठ मात्र (६,१२३, २३-३८) मे सीता के अनुरोध करने पर तारा आदि वानरिया भी पुष्पक पर चढकर राम की राजधानी जाती हैं। अध्यात्म रामायण (६, १४, ८), आनन्द रामायण (१, १२, ५६) आदि रचनाओ मे भी वानरियो की इस यात्रा का उल्लेख है। बालरामायण (अक १०) और रामायण ककविन (सर्ग २४) के अनुसार त्रिजटा ने सीता के साथ अयोध्या की यात्रा की थी। आनन्द रामायण (१, १२, ४४) मे कृतज्ञ सीता त्रिजटा और सरमा दोनो को अपने साथ अयोध्या ले जाती है।

वाल्मीकि रामायण की अतरग परीक्षा से स्पष्ट है कि आदि रामायण पुष्पक के विषय मे मौन था (दे० अनु० ५६६)। निम्नलिखित रचनाओ मे रामादि स्थल से ही अयोध्या लौट जाते है—महानाटक (१४, ६६), पाश्चात्य वृत्तान्त (न० २, ३ और ४), रामकियेन (अध्याय ३८), ब्रह्मचक्र, सयाली रामकथा (अनु० २७१)। सारलादास के उडिया महाभारत (सभापर्व) के अनुसार राम, सीता तथा लक्ष्मण के साथ, गिरि पवत के पास किला बना कर रहने लगे। वहाँ सीता के ऋतुपर्ण नामक पुत्र हुआ और वह उस किले का राजा बना।

६०७ बहुत सी रामकथाओ मे **सेतुभग** का उल्लेख है। खोतानी रामायण के अनुसार सेतु को पार करने के पश्चात् ही उसे नष्ट किया गया था जिससे राम-सेना का कोई भी योद्धा युद्ध छोडकर भाग न सके। सेतुभग प्राय रावण-वध के बाद अयोध्या की यात्रा के समय वर्णित है, उदाहरणार्थ—स्कन्दपुराण का सेतुमाहात्म्य (अध्याय ३०), रगनाथ रामायण (६, १६१), आनन्द रामायण (१, १२, ४८), तोरवे रामायण (६, ५४), कृत्तिवास रामायण (६, १२१), तत्वसग्रह रामायण (६, ३५), पाश्चात्य वृत्तान्त न० २, ३, ४, ६, अलबरूनी का भारत (अग्रेजी सस्करण १, ३०७)। स्कन्द पुराण के नागर खण्ड (अध्याय १०१) तथा पद्मपुराण के सृष्टि खण्ड (अध्याय ३५, १३५) मे रावण-वध के बहुत काल बाद राम की लङ्का-यात्रा के अवसर पर सेतुभग का वर्णन किया गया है। इस घटना मे कई कारणो का उल्लेख मिलता है। सेतुमाहात्म्य मे विभीषण लङ्का की सुरक्षा को दृष्टि मे रख कर राम से निवेदन करता है कि सेतु का भजन किया जाय। रगनाथ रामायण तथा तत्वसग्रहरामायण मे भी यही कारण दिया गया है। स्कन्द पुराण के नागर खण्ड तथा पद्म पुराण के सृष्टि खण्ड

मे विभीषण राम से कहते है—"जिज्ञासा से प्रेरित होकर मनुष्य लङ्का आयेगे और मेरी आज्ञा का तिरस्कार करके राक्षस उन्हे खा जायेगे ।" कृत्तिवास रामायण मे सागर स्वय निवेदन करता है कि मेरा बन्धन अब तोड दिया जाय । पाश्चात्य वृत्तान्त न० २ मे राम इसीलिये सेतु नष्ट करते है कि कोई भी राक्षस उनका पीछा न कर सके। पाश्चात्य वृत्तान्त न० ४ के अनुसार यह इसलिये हुआ कि कोई भी लङ्का का सोना न चुरा ले जाय ।

६०८ यथार्थवादी वाल्मीकि के अनुसार राम ने भरद्वाज-आश्रम मे पहुँचकर हनुमान् को इसलिये भरत के पास भेज दिया था कि वह राम के प्रति भरत के भावो की परीक्षा ले सके, क्योकि यह सर्वथा सभव था कि राज्य करते-करते भरत का मन बदल गया हो—**कस्य नावर्तयेन्मन** (१२५, १६) । यदि भरत वास्तव मे अपने लिए राज्य चाहते है तो राम उनका विरोध नही करना चाहेगे—**प्रशास्तु वसुधा सर्वामखिलाम्** (१२५, १७) । राम की यह आशका निर्मूल सिद्ध हुई, राम के आगमन का समाचार सुनकर भरत आनन्दित हुए ।

बलरामदास के रामायण मे इस अवसर पर **हनुमान् के गर्वनिवारण** की कथा मिलती है । राम के साथ भरद्वाज आश्रम मे पहुँचकर हनुमान् को यह सोचकर गर्व उत्पन्न हुआ था कि मै राम के लिये कितने महान कार्य कर चुका हूँ । राम ने यह जानकर हनुमान् को किसी बहाने आश्रम के पास के वन मे भेज दिया । उस वन मे अष्टेकि अथवा अष्टक नामक असुर (वैष्णवी माया के अवतार) ने हनुमान् को परास्त कर उन्हे तभी जाने दिया जब हनुमान् नम्रतापूर्वक राम का स्मरण करने लगे ।

६०६ राम-नाटको मे पहले-पहल रावण-वध के पश्चात् **राक्षसो के छल-कपट** का वर्णन किया गया है, जिससे भरत आत्महत्या का विचार करने लगे । **उदात्तराघव** (८वी श०) मे तीन छद्मवेशी राक्षसो का अयोध्या मे आगमन वर्णित है । पहला राक्षस वसिष्ठ के शिष्य का रूप धारण कर भरत के पास यह कहने आता है कि मैंने सुना है कि लक्ष्मण युद्ध मे मारे गये है । अनन्तर एक दूसरा राक्षस नारद के रूप मे आकर कहता है कि राम का भी देहान्त हुआ है और सीता अकेली ही अयोध्या आ गई है । अन्त मे एक राक्षसी सीता का रूप धारण कर भरत को अपने पति तथा देवर की मृत्यु का समाचार सुनाती है । यह सुनकर भरत सरयू मे अपना शरीर त्याग देने का सकल्प करते है किन्तु हनुमान् ठीक समय पर पहुँचकर उनको ऐसा करने से रोक लेते है । हनुमान् राक्षसो की माया का एक और उदाहरण देते है—एक राक्षस ने सुमन्त के रूप मे राम को भरत के मरणासन्न होने का समाचार दिया था (अक ६) । **जानकीपरिणय** मे छद्मवेशी शूर्पणखा अयोध्या मे राम-वध का मिथ्या समाचार फैलाती है (दे० अनु० २४४) । **उल्लाघराघव** मे रावण का कापरिक नामक गुप्तचर मुनि का रूप धारण कर भरत को

यह समाचार देता है कि राम-लक्ष्मण का वध करने के पश्चात् रावण पुष्पक पर चढकर अयोध्या पर आक्रमण करने वाला है। इसपर सेना को बुलाया जाता है तथा कौशल्या और सुमित्रा चिता पर चढने की तैयारियाँ करने लगती है। पुष्पक के आने पर भरत विभीषण पर बाण चलाना ही चाहते है किन्तु वशिष्ठ सब जानकर उनको रोक लेते है (अक ८)।

अनेक अन्य रामकथाओ के अनुसार भरत चौदह वर्ष की समाप्ति पर राम को न पाकर तथा उनको मृत समझकर **आत्महत्या** की तैयारियाँ करने लगे थे कि हनुमान् ने आकर उनको रोका था, उदाहरणार्थ आनन्द रामायण (१, १२, ६५), कम्ब रामायण (६, ३७), रगनाथ रामायण (६, १६३), भावार्थ रामायण (६, ७८)। रगनाथ रामायण मे गुह तथा शत्रुघ्न के आत्महत्या-विचार का भी उल्लेख है। **राम-कियेन** (अ० ३८) के अनुसार भरत और शत्रुघ्न दोनो चिता मे प्रवेश करने के लिए तैयार थे।

६१० युद्धकाण्ड के अन्तिम सर्ग मे वाल्मीकि ने सक्षेप मे अपने काव्य का निर्वहण प्रस्तुत किया है। भरत ने राम को राज्य लौटाते हुए कहा कि मै चोरो आदि के कारण दु सह राज्यभार सभालने मे असमर्थ हूँ

किशोरवदगुरु भार न वोढुमहमुत्सहे ॥३॥
वारिवेगेन महता भिन्न सेतुरिव क्षरन् ।
दुबन्धनमिद मन्ये राज्यच्छिद्रमसवृत्तम् ॥४॥

राम ने समारोह के साथ नगर मे प्रवेश किया तथा वसिष्ठ ने अगले दिन राम तथा सीता का राज्याभिषेक सम्पन्न किया। अनन्तर राम पहले ब्राह्मणो को तथा बाद मे विभीषण, सुग्रीवादि वानरो को दान देकर निष्कटक राज्य करने लगे। राम ने लक्ष्मण को युवराज बनाना चाहा किन्तु लक्ष्मण ने उस पद को अस्वीकार किया जिससे भरत युवराज बन गए। राम १०,००० वर्ष तक राज्य करते रहे और उन्होने अन्य यज्ञो के अतिरिक्त अपने पुत्रो के साथ दस बार अश्वमेध यज्ञ सम्पन्न किया था। **रामराज्य** के गुणगान तथा रामायण की फलश्रुति पर वाल्मीकिकृत आदिकाव्य समाप्त हो जाता है। उत्तरकाण्ड (सर्ग ३७-४०) मे रामाभिषेक के लिए आमत्रित राजाओ तथा सुग्रीव, विभीषण, हनुमान् आदि की विदा का पुन वर्णन किया गया है।

उत्तरकाण्ड के दो अन्य स्थलो पर रामराज्य की सुखशान्ति का विवरण दिया गया है—सर्ग ४१, १७-२२ और सर्ग ६६, १०-१३। महाभारत (द्रोणपर्व, दे० ऊपर अनु० ४४, शातिपर्व, २६, ४७-५२) तथा रघुवश (१४, २३-२४) मे इसका वर्णन मिलता है। परवर्ती रचनाओ मे प्रजा के धर्माचरण पर भी विशेष बल दिया जाता है,

दे० भागवत पुराण (९, १०, ५१-५५), पद्मपुराण (पातालखण्ड ४, ४६-५४ और ५, २३-५५), ब्रह्मपुराण (१२३, १४५-१५५)।

आनन्द रामायण (१, १२, ८४) के अनुसार राम भरत का आलिंगन करने के पश्चात् बहुत से रूप धारण कर एक ही समय सबो से मिले थे। प्राय समस्त राम-कथाओ मे वाल्मीकि के अनुसार ही **राम का अभिषेक** वर्णित है, किन्तु देवताओ की उपस्थिति को अधिक महत्व दिया गया है, उदाहरणार्थ अध्यात्म रामायण (६, १५, ५०), आनन्द रामायण (१, १२, ११५)। अभिषेक नाटक (अक ६, ३२) के अनुसार राम का अभिषेक लङ्का मे अग्निदेव द्वारा सम्पन्न हुआ था तथा प्रतिमा नाटक (अक ७, ५-९) के अनुसार जनस्थान मे, जहाँ भरत तथा शत्रुघ्न माताओ तथा एक विशाल सेना के साथ पहुँचे थे।

अध्यात्म रामायण (६, १६, २६) तथा आनन्द-रामायण (१, १२, १६९) के अनुसार राम ने लक्ष्मण को **युवराजपद** पर अभिषिक्त किया था। पउमचरिय (पव ८०-८५), गुणभद्रकृत उत्तरपुराण (६८, ६६३) आदि जैन रामकथाओ मे लक्ष्मण तथा राम दोनो का अभिषेक किया जाता है। पउमचरिय के अनुसार इस अभिषेक के पूर्व ही भरत विरक्त होकर जैन दीक्षा लेते हैं। बहुत सी मध्यकालीन रचनाओ मे विदा के अवसर पर हनुमान्[1] की राम भक्ति-विषयक सामग्री मिलती है जिसका निरूपण हनुमच्चरित के अन्तर्गत रखा गया है (दे० ७०६-७०७)। **बलरामदास रामायण** के अनुसार सीता ने रामाभिषेक के भोजन के अवसर पर अनेक रूप धारण कर, सब अतिथियो को परोसा था। रामचद्रिका (प्रकाश २५) मे अभिषेक के पूव वसिष्ठ द्वारा राम के वैराग्य का निवारण वर्णित है। पद्मपुराण (उत्तर खण्ड, २७०, ४२) मे राम ने अभिषेक के अवसर पर अतिथियो को अपना दिव्य रूप दिखलाया था।

रामकियेन (अध्याय ३८) के अनुसार राम अपने अभिषेक के पश्चात् भरत तथा शत्रुघ्न को युवराज पद पर नियुक्त करते है और लक्ष्मण, सुग्रीव, विभीषण, अगद, जम्बवान, गुह आदि सहयोगियो मे अपना विशाल राज्य बाँटते है। वह हनुमान के लिए एक नयी राजधानी का निर्माण करते है। समस्त राजा राम के अधीन रह कर शासन करते है और सर्वत्र शाति का साम्राज्य है।

ठ। नवीन सामग्री

६११ वाल्मीकि रामायण के बाद की रामकथाओ मे युद्धकाण्ड के कथानक मे

---

१ भावार्थ रामायण मे हनुमान् को उसी समय स्त्रीराज्य भेजा गया (दे० अनु० ६८७)।

सर्वथा नवीन सामग्री भी मिलती है जिसका यहाँ उल्लेख करना उचित होगा। **पउमचरिय** मे पहले-पहल युद्ध के पूर्व राक्षस-राक्षसियो तथा रावण-मन्दोदरी की शृगारपूर्ण चेष्टाओ का वर्णन किया गया है (दे० पर्व ५६, १३ २६ और पर्व ७०, ५१-६१)। सभवत पउमचरिय के अनुकरण पर अनेक अन्य महाकाव्यो मे युद्धकाण्ड के कथानक के अन्तर्गत **राक्षस-राक्षसियो का सभोग-शृगार** वर्णित है, उदाहरणार्थ सेतुबन्ध (सर्ग १०), भट्टिकाव्य (सर्ग ११), रामायण ककविन (सर्ग १२), जानकी-हरण (सर्ग २६), अभिनन्द कृत रामचरित (सर्ग १८), कम्ब-रामायण (६, २४), रामलिंगामृत (सर्ग ८)।

६१२ **भानुराज** की कथा अब तक केवल श्याम के **रामकियेन** (अध्याय २६) मे मिली है। समुद्र पार करने के पश्चात् रामसेना ने लङ्का के निकट पहुँचकर एक मनोहर माया-वन देखा था। रामसेना को आकर्षित करने तथा भूमि के नीचे खीच लेने के उद्देश्य से भानुराज ने यह मायावन अपने सिर पर धारण किया था। हनुमान् ने उसकी माया जानकर भूमि मे प्रवेश किया तथा उसे मार डाला।

६१३ **भस्मलोचन** की कथा कई रूपो मे प्रचलित है। यह हरिवश (२, ५७), विष्णुपुराण (५, २३) आदि के मुचुकुद वृत्तान्त से साम्य रखती है। **कृत्तिवास रामायण** (५, ४७) के अनुसार भस्मलोचन नामक राक्षस की दृष्टि जिस पर पडती थी वह उसी क्षण भस्मीभूत हो जाता था। इस कारण भस्मलोचन प्राय अपनी आँखो को चमडे के परदे से ढके रखता था। जब राम-सेना समुद्र पार कर लङ्का की ओर बढ रही थी तब रावण ने उसके विरुद्ध भस्मलोचन को भेज दिया। विभीषण के परामर्श से राम ने ब्रह्मास्त्र छोडकर भस्मलोचन के सामने असख्य दर्पण रख दिये थे जिन पर दृष्टि डालकर भस्मलोचन जल गया था। **सेरीराम** मे बीलावीस को रावण का पुत्र माना गया है। कुभकर्ण-वध के बाद रावण ने उसे पाताल से बुलाकर रामसेना को नष्ट करने का आदेश दिया। विभीषण से बीलावीस की विनाशक दृष्टि के विषय मे जानकर राम ने लोहे का एक विस्तृत दर्पण बनवाया और हनुमान् ने अपनी पूछ से इस दर्पण को बीलावीस के सामने रख दिया। उसमे अपना प्रतिबिंब देखकर बीलावीस भस्मीभूत हुआ।

रामकियेन (अध्याय ३१) मे कई **मायावी योद्धाओं** की चर्चा है। **सहस्सतेज** नामक राक्षस अपनी गदा के अग्रभाग से जिसकी ओर इशारा करता था, वह तत्काल मर जाता था।[1] हनुमान् अपने को वालि का दास कहकर सहस्सतेज का विश्वासपात्र बन जाते है,

---

१ यह गदा शिव द्वारा मधु को प्रदत्त शूल का स्मरण दिलाती है, जो मधु के प्रतिद्वन्द्वी को भस्मीभूत कर देता था (दे० वाल्मीकि रामायण ७, ६१, ६)। इस कथा का एक अन्य रूप भी रामकियेन मे मिलता है (दे० अनु० ६४८, ४)

वह उसकी गदा प्राप्त कर लेते है तथा सहस्मतेज के सहस्र सिर काटकर राम के पास लौटते है। अनन्तर साग आदित्य राम-सेना का सामना करने आता है। **साग आदित्य** के पास मायावी दपरग था, जिसपर उस दर्पण का प्रतिबिंबित प्रकाश पडता था वह तुरन्त मर जाता था। वह दर्पण ब्रह्मा की रक्षा मे था। यह जानकर कि रावरा ने साग आदित्य को बुलाया है अगद ने साग आदित्य के राज्यपाल का रूप धारण कर लिया तथा ब्रह्मा के पास जाकर उस दपरग को प्राप्त किया। इस प्रकार अपने दर्पण से वचित होकर साग आदित्य राम द्वारा मारा गया। रामकियेन के उसी अध्याय मे रावण के असफल यज्ञ के पश्चात् हनुमान् दो अन्य मायावी योद्धाओ का वध करते है। **सद्धासुर** युद्ध करते समय देवताओ के आयुध अपने पास बुला सकता था। यह जानकर हनुमान् ने वानरो को आदेश दिया कि वे बादलो मे छिपकर देवदाओ द्वारा सद्धासुर के लिये भेजे हुए आयुध छीन ले। तब हनुमान् ने सद्धासुर को युद्ध के लिये आह्वान किया। सद्धासुर ने देवताओ के आयुध बुलाये किन्तु बादलो मे छिपे वानरो ने सबको हथियाया जिससे हनुमान् उसे मार डालने मे समर्थ हुए। अनन्तर **विरुचबग** के युद्ध का वर्णन किया गया है, वह एक अदृश्य घोडे पर चढकर स्वय अदृश्य बन सकता था। राम ने उसका सामना किया तथा उसका अदृश्य घोडा मार डाला किन्तु विरुचबग एक माया-विरुचबग की सृष्टि कर स्वय आकाश नामक पर्वत की ओर भाग गया। वहाँ पर उसकी भेट एक वानरी से हुई जिसने उसे समुद्र की फेन मे छिप जाने का आदेश दिया। वह वानरी वास्तव मे एक शापित अप्सरा थी जो विरुचबग की खोज मे हनुमान की सहायता करने के पश्चात् ही अपने शाप से मुक्ति पा सकती थी। हनुमान् ने उसके साथ रमण किया तथा उसकी सहायता से विरुचबग का पता लगाकर उसका वध किया।

६१४ **महीरावरण** की कथा अपेक्षाकृत अधिक प्रचलित है। जैमिनी भारत के **मैरावणचरित** (दे० अनु० १८६) के अनुसार मैरावण रावण का सखा है। वह रावण को आश्वासन देता है कि मैं राम-लक्ष्मण को पाताल-लङ्का ले जाकर दुर्गा को बलि के रूप मे समर्पित करूँगा। विभीषण यह जानकर वानरो को सावधान करता है जिसपर हनुमान विशाल रूप धारण कर अपने शरीर से समस्त रामसेना की रक्षा करते है। मैरावण पहले दो गुप्तचरो को भेज देता है तथा बाद मे माया-विभीषण के रूप मे आकर वानरो को माया-चूर्ण से सुलाता है तथा राम-लक्ष्मण को एक पेटिका मे बन्द कर दोनो को पाताललङ्का के भद्रकालीगृह में रख देता है। बाद मे हनुमान सूक्ष्म रूप धारण कर पद्मनाल मार्ग से पाताल मे प्रवेश करते है। वहा वह बहुत देर तक द्वन्द्वयुद्ध करने पर भी द्वारपाल को परास्त करने मे असमर्थ है, अन्त मे पता चलता है कि यह द्वारपाल मत्स्यराज नामक उनका पुत्र है (दे० अनु० ६१५)। तब हनुमान् फिर सूक्ष्म रूप धारण कर मत्स्यराज की सहायता से पाताललङ्का मे प्रवेश करते है। बाद मे हनुमान् मैरावण

की बहिन दुर्दण्डी के जलपात्र मे छिपकर राजभवन के अन्दर जा पाते है। जब हनुमान् मैरावण को चुनौती देकर उसका वध नही कर पाते है तब दुदण्डी हनुमान् के लिए इस रहस्य का उद्घाटन करती हे कि मैरावण के प्राण राजधानी से ३० योजन की दूरी पर रहनेवाले सात भगो मे निवास करते है। हनुमान् जाकर उनका वध करत है तथा बाद मे मैरावण को परास्त कर दुदण्डी के पुत्र नील-मेघ को कैद से छुडाता हे। नील-मेघ मैरावण की पुत्री नीलकेशी से विवाह कर राजा बन जाता है तथा हनुमान् अब तक सोये हुए राम-लक्ष्मण को लङ्का ले जाते है।

आनन्द रामायण के अनुसार अश्विनीकुमार शापवश राक्षस-योनि प्राप्त कर ऐरावण-मैरावण के रूप मे प्रकट हुये और दोनो रावण के मित्र बन गए थे (दे० ७, सर्ग १४)। लङ्का-युद्ध के समय उनके हस्तक्षेप का वृत्तान्त उपर्युक्त मैरावण-चरित से निम्नलिखित बातो मे भिन्न है। ऐरावण तथा मैरावणदोनो आकाशमार्ग से हनुमान् की बढाई हुई पूछ के दुर्गम परिघ को पारकर निद्रामग्न राम तथा लक्ष्मण को ले जाते हे। हनुमान् अपने पुत्र मकरध्वज से यह जानकर कि राम-लक्ष्मण कामाक्षा-देवी के मन्दिर मे है सूक्ष्म रूप धारण कर उस मन्दिर मे प्रवेश करते है। वह देवी की वाणी का अनुकरण करके आदेश देते हैं कि राम तथा लक्ष्मण को जीवित ही मेरे सामने उपस्थित किया जाय। इस प्रकार मुक्ति पाकर राम-लक्ष्मण ऐरावण-मैरावण को एक सौ बार मार डालते है किन्तु दोनो पुन -पुन पुनर्जीवित हो जाते है। अन्त मे ऐरावण की भोगपत्नी हनुमान् को इस शर्त्त पर दोनो की मृत्यु का उपाय प्रकट करने के लिये तैयार है कि राम उसे पत्नीस्वरूप ग्रहण करे। हनुमान् यह प्रस्ताव स्वीकार करते हे बशर्ते कि उसका पलक राम के भार से न टूटे। तब वह कहती है कि ऐरावण-मरावण के शयनागार मे जो भ्रमर रहते है, वही अमृत लाकर दोनो को पुनर्जीवित करते है। हनुमान् एक भ्रमर को छोडकर सब को मार डालते है, वह भ्रमर हनुमान् के आदेश पर ऐरावण की भोगपत्नी के पलक की लकडी को भीतर से खाकर खोखला बना देता है। अन्त मे राम ऐरावण-मैरावण दोनो का वध करते है तथा ऐरावण की भोगपत्नी को आश्वासन देते है कि अगली बार कन्याकुमारी के रूप मे प्रकट होकर वह तीसरे जन्म मे द्वापर मे उनकी पत्नी बन सकेगी।[1] इसके बाद हनुमान् राम को तथा मकरध्वज लक्ष्मण को लङ्का पहुँचा देते है (दे० १, ११, ७३-१३०)।

---

१ आनन्द रामायण के अन्य स्थल (याजाकाण्ड, सर्ग ७) के अनुसार कन्या-कुमारी जाम्बन्ती के रूप मे प्रकट होगी। तत्वसग्रह रामायण (६, ६) मे भी इसकी ओर निर्देश किया गया है।

कृत्तिवास (६, ७६-८८) ने महीरावण की कथा का अपेक्षाकृत अधिक विस्तार से वर्णन किया है। इस वृत्तान्त की विशेषता यह है कि इसमे हनुमान् के पुत्र की चर्चा नही होती और महीरावण को रावण तथा मन्दोदरी का पुत्र माना गया है। महीरावण शक्रधनु नामक गधर्व था जो अष्टावक्र के शाप के कारण राक्षस बन गया था। रावण ने उसे निकषा के परामर्श से बुलाया था किन्तु विभीषण ने पक्षी के रूप मे दोनो की मत्रणा सुनकर राम को सावधान किया था जिससे हनुमान् पूछ बढाकर चारो ओर से लङ्का की रक्षा करते थे, इसके अतिरिक्त राम ने आकाश मे विष्णु-चक्र रख दिया तथा नल ने पाताल मे माया का विस्तार किया। महीरावण ने क्रमश दशरथ, कौशल्या तथा जनक के रूप मे आकर हनुमान् को धोखा देने का असफल प्रयत्न किया, अन्त मे वह विभीषण के रूप मे शिविर मे प्रवेश कर तथा मायाचूर्ण से राम-लक्ष्मण को निद्रामग्न करके दोनो को अपने भवन मे ले गया। पातालपुरी मे पहुँचकर हनुमान् ने किसी बूढी से जान लिया था कि राम-लक्ष्मण कहाँ है। अत उन्होने मक्खी के रूप मे महीरावण के महल मे जाकर राम-लक्ष्मण को प्रणाम किया तथा बाद मे महामाया मन्दिर मे देवी को राम का समाचार सुनाया। देवी ने राम-शिव की अभिन्नता का उल्लेख करके महीरावण के वध की युक्ति बताई। जब राम तथा लक्ष्मण देवी के सामने उपस्थित किये जायँगे, उनको महीरावण से कहना चाहिये कि हम साष्टाग प्रणाम करना नही जानते है, हमे दिखलाइये। महीरावण के प्रणाम करने पर उसे देवी की तलवार से मार डालना चाहिए। देवी के इस निर्देश के अनुसार हनुमान् ने महीरावण का वध किया। इसके बाद महीरावण की पत्नी युद्ध करने आई, हनुमान् ने उस पर पाद-प्रहार किया जिससे उसके गर्भ से चार सिर वाले अहिरावण का जन्म हुआ जो तुरन्त हनुमान् का सामना करने लगा तथा हनुमान् से मारा गया।

महीरावण का वृत्तान्त निम्नलिखित रचनाओ मे भी पाया जाना है—भावार्थ रामायण (६, ५१-५४), कन्नड मैरावण कालग, गुजराती नर्मकथा कोश (पृ० २२३), विक्रम नरेन्द्र कृत रामलीला, पाश्चात्य वृत्तान्त न० १३, काशीराम कृत बगाली दानपर्व। **रामलिगामृत** (सर्ग ८) के अनुसार अहिरावण तथा महीरावण राम लक्ष्मण को पाताल ले गये थे और हनुमान् ने अपने पुत्र मकरध्वज की सहायता से दोनो का वध किया। **पाश्चात्य वृत्तान्त** न० १ मे रावण स्वय राम-लक्ष्मण का हरण करता है। **बिर्होर रामकथा** के अनुसार कुभकर्ण राम-लक्ष्मण को ले जाकर उनको काली को समर्पित करना चाहता था किन्तु लक्ष्मण ने कुभकर्ण को मार डाला।

विदेशी वृत्तान्तो मे केवल राम को पाताल ले जाने की कथा मिलती है, उदाहरणार्थ सेरीराम, रामकियेन (अध्याय २७), रामजातक, पाश्चात्य वृत्तान्त न० ७ तथा

कम्बोडिया का एक प्राचीन चित्र ।[1] **सेरीराम** की कथा इस प्रकार है । रावण का पुत्र पाताल महरायन हनुमान् का रूप धारण कर वानर-सेना मे प्रवेश कर जाता है और राम को माया-लेप से निद्रामग्न कर उन्हे अपने भवन ले जाता है । बाद मे हनुमान राम की खोज मे पाताल जाकर एक राजकुमारी से भेट करते है जो अपने पुत्र के स्नान के लिये जल ले जानेवाली है । ज्योतिषियो ने बताया था कि वह पुत्र पाताल महारायन का उत्तराधिकारी बनेगा, अत महारायन ने उसे राम के साथ मार डालने का निश्चय किया है । हनुमान् उसके पुत्र को राजा बनाने की प्रतिज्ञा करते है और वह हनुमान् को छिपकली के रूप मे अपने जलपात्र मे छिपाकर किले के अन्दर ले जाती है । फाटक पर हनुमान् अपने पुत्र हनुमान तूगग से द्वन्द्वयुद्ध कर उसकी सहायता अस्वीकार करते है तथा पाताल महारायन को हराकर सोये हुये राम को लङ्का ले जाते है । राम तभी जागते है जब विभीषण उनके चेहरे पर से माया-लेप धो डालता है । अगले दिन राम रणभूमि मे ही पाताल महारायन का वध करते है । सेरीराम के शेलाबेर पाठ की कथा कही अधिक विस्तृत है । मेरावणचरित के अनुसार पाताल महारायन पहले दो सेनापतियो को भेज देता है, बाद मे वह कीट का रूप धारण कर हनुमान का शरीर पार कर जाता है तथा क्रमश सुग्रीव, जाम्बवान तथा विभीषण के वेश मे महल मे घुसने का असफल प्रयत्न करता है । रात के पिछले पहर वह राम को ले जाकर पद्मनाल के मार्ग से पाताल मे प्रवेश करता है । जिस राजकुमारी से हनुमान की भेट होती है वह अमीर अरब (अहिरावण ?) की बहन है । अमीर अरब रावण का मामा है जिसने अपने भानजे को कैद मे रख दिया है । हनुमान पक्षी का रूप धारण कर राजकुमारी के जलपात्र मे छिप जाते है तथा बाद मे अमीर अरब का वध कर उसके भानजे को राजा बनाते है ।

रामकियेन मे मैयरब को सहमालिवन (माल्यवान ? दे० वा० रा० ७, सर्ग ५) का पोता माना गया है, उसके गुरु सुमेघ ने उसका जीव मक्खी के रूप मे चित्रकूट पर्वत पर छिपा दिया था । वह मायाचूर्ण से वानरो को सुलाता है और राम को हनुमान् के मुँह से निकालकर पाताल ले जाता है । हनुमान् वहाँ जाकर पहले अपने पुत्र मच्छानु तथा बाद मे बिरक्वन नामक मैयरब की बहन से भेट करते है । बिरक्वन को आदेश मिला कि वह एक हण्डा जल से भर दे, उसमे उसका पुत्र उबाला जाने वाला है । बिरक्वन हनुमान् को पद्मतंतु के रूप मे अपने दुपट्टे मे छिपाकर राम के पास पहुँचाता है तथा मैयरब के वध की युक्ति भी बताता है । हनुमान् राम के साथ लका लौटने के पहले बिरक्वन के पुत्र वैयविक को राजा तथा मच्छानु को युवराज नियुक्त करते है ।

---

१ बुलेटिन एकोल फ्रासेस एक्स्ट्रेम ओरियन, भाग १२, पृ० ४७ ।

६१५ हनुमान् के पुत्र की उत्पत्ति के विषय मे भिन्न-भिन्न वृत्तान्त मिलते है। **जैमिनी भारत,** गुजराती **नर्मकथाकोश** आदि के अनुसार लकादहन के पश्चात् जब हनुमान् समुद्र मे नहाने गए थे, तब एक मछली (अथवा मकरी) ने उनका स्वेद पान कर लिया, जिसके कारण वह गर्भवती हो गई। **आनन्द रामायण** (१, ११, ८८) और **भावार्थ रामायण** (५, २०) के अनुसार उस अवसर पर हनुमान् का श्लेष्मा एक मकरी के द्वारा खाया गया था और फलस्वरूप उसे एक पुत्र मकरध्वज उत्पन्न हुआ। अन्य रामकथाओ के अनुसार लका की वापसी मे हनुमान् ने मकरी के साथ सभोग किया था (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० ७ और ८)।

सेरीराम मे माना गया है कि समुद्र-लङ्घन के समय हनुमान् का वीर्य गिर गया था और मछलियो की रानी उसे खाकर गर्भवती हो गई। सेरीराम के **पातानी पाठ** तथा **हिकायत महाराज रावण** मे सेतुबन्ध के समय मछलिया अपनी रानी की आज्ञा के अनुसार सेतु को नष्ट करने लगती है। इसपर हनुमान् उसके पास जाकर और सेतु को पुन बँधवाकर उससे पुत्र उत्पन्न करते है। **रामकियेन** (अध्याय २६) के अनुसार रावण ने अपनी पुत्री नागकन्या सुवर्णमच्छा को सेतु नष्ट करने के लिये भेज दिया और हनुमान् ने उससे मच्छानु नामक पुत्र उत्पन्न किया। इसी रचना (अक २५) मे विभीषण की पुत्री बेजकाया तथा हनुमान् के असुराफद नामक पुत्र का भी उल्लेख है।

अध्याय २०

उत्तरकाड

१—वाल्मीकि रामायण का उत्तरकाड

३१६ क । उत्तरकाड की कथावस्तु

(१) **रावण चरित** (सर्ग १-३६) (उत्तरकाड का यह भाग अगस्त्य द्वारा कथित है)।

वैश्रवण—विश्रवा-देववर्णिनी के पुत्र वैश्रवण का चतुर्थ लोकपाल तथा धनेश बनना और पुष्पक प्राप्त कर उनका लङ्का-निवास (सर्ग १-३)।

राक्षस-वश—प्रहेति तथा हेति के वश मे उत्पन्न राक्षसो का लङ्का निवास तथा विष्णु द्वारा पराजित होने पर उनका पाताल-प्रवेश (सर्ग ४-८)।

रावण का जन्म—विश्रावा कैकसी से दशग्रीव, कुभकर्ण, शूर्पणखा तथा विभीषण का जन्म। वैश्रवण से ईर्ष्या होने के कारण तीनो भाइयो की तपस्या तथा ब्रह्मा से वरप्राप्ति (सर्ग ९-१०)। रावण की आशका से वैश्रवण का लङ्का-त्याग तथा कैलास पर निवास, राक्षसो का लङ्का मे प्रवेश। मय-सुता मदोदरी से रावण का विवाह (सर्ग ११-१२)।

रावण की प्रथम विजय-यात्रा—वैश्रवण को पराजित कर रावण का पुष्पक को प्राप्त करना (सर्ग १३-१५)। रावण को नन्दि-शाप। रावण का कैलास को उठाना तथा शिव से 'रावण' नाम तथा चन्द्रहास खग को प्राप्त करना (सर्ग १६)। वेदवती का रावण को शाप देना (सर्ग १७)। रावण द्वारा अनेक राजाओ की पराजय तथा राजा अनारण्य का उसे शाप देना (सर्ग १८-१९)। नारद की प्रेरणा से रावण का यम पर आक्रमण तथा ब्रह्मा द्वारा यम से रावण की रक्षा (सर्ग २०-२२)। शूर्पणखा के पति विद्युज्जिह्व का रावण द्वारा वध और वरुण-पुत्रो की पराजय (सर्ग २३)। (पाच प्रक्षिप्त सर्ग बलि से रावण की भेट, सूर्य तथा चन्द्र-लोक की यात्रा और कपिल से भेट)।

रावण के अन्य युद्ध—रावण द्वारा अनेक कन्याओ और पत्नियो का हरण और शूर्पणखा को खर तथा दूषण के साथ दडकारण्य भेज देना। कुभनसी के द्वारा मधु की रक्षा। नलकूबर का शाप (सर्ग २४-२६)। मेघनाद द्वारा इन्द्रबधन तथा देवताओ की प्रार्थना से मुक्ति। देवताओ से मेघनाद की वरप्राप्ति—किसी भी युद्ध के पूर्व

यज्ञ कर लेने पर वह अजेय होगा (सर्ग २७-३०)। अर्जुन कार्त्तवीर्य तथा बालि द्वारा रावण की पराजय (सर्ग ३१-३४)।

हनुमत्कथा—हनुमान् की जन्म-कथा और चरित (सर्ग ३५-३६)।

(२) सीतात्याग (सर्ग ३७-८२)

अतिथियो का प्रस्थान—अभिषेक के दूसरे दिन राम का ऋषियो, राजाओ, वानरो तथा राक्षसो द्वारा अभिवादन (सर्ग ३७)।

(पॉच प्रक्षिप्त सग बालि और सुग्रीव की जन्म-कथा, रावण का मुक्ति प्राप्त करने के उद्देश्य से सीताहरण का निश्चय, श्वेतद्वीप मे स्त्रियो द्वारा रावण की पराजय)।

जनक, युधाजित् तथा प्रतार्दन का प्रस्थान। दो मास पश्चात् सुग्रीव, अगद, हनुमान्, विभीषण तथा वानरो, राक्षसो और ऋक्षो का प्रस्थान (सर्ग ३८-४०)। पुष्पक का प्रत्यागमन तथा राम द्वारा विदा (सर्ग ४१)।

सीतात्याग--आश्रमो को देखने जाने की सीता की दोहद। लोकापवाद के कारण वाल्मोकि आश्रम मे सीता को छोडने की राम की आज्ञा (सर्ग ४२-४५)। गगा के उस पार लक्ष्मण का सीता को त्याग का समाचार देना, सीता का विलाप (सर्ग ४६-४८)। वाल्मीकि का सीता को आश्रय देना (सर्ग ४९)। सुमत्र का लक्ष्मण को सीता त्याग का कारण बतलाना (सर्ग ५०-५२)।

नृग, निमि और ययाति की कथाएँ—राम द्वारा लक्ष्मण को नृग, निमि तथा ययाति की कथाओ का सुनाया जाना (सर्ग ५३-५९)।

(तीन प्रक्षिप्त सर्ग राम से न्याय मॉगने की श्वान की कथा, गृध्र तथा उलूक की कथा)।

शत्रुघ्न-चरित—भार्गव च्यवन के आग्रह से राम का लवण का वध करने के लिए शत्रुघ्न को भेजना (सर्ग ६०-६४)। शत्रुघ्न का वाल्मीकि-आश्रम मे रात्रि व्यतीत करना तथा उसी रात्रि मे कुश-लव का जन्म (सर्ग ६५-६६) शत्रुघ्न द्वारा लवण-वध और मधुपुरी का बसाया जाना। बारह वर्ष बाद राम के पास लौटते समय वाल्मीकि के आश्रम मे शत्रुघ्न का रामायण-गान सुनना। राम से मिलकर उनका अपने राज्य मे वापस जाना (सर्ग ६७-७२)।

शम्बूक-वध--ब्राह्मण-पुत्र की मृत्यु पर नारद का शूद्र की तपस्या को उसका कारण बताना। राम का दक्षिण जाकर शम्बूक-वध करना, अनन्तर अगस्त्य से दण्डक-अरण्य की कथा सुनना (सर्ग ७३-८२)।

(३) अश्वमेध (सर्ग ८३-१११)

अश्वमेध माहात्म्य—राजसूय-यज्ञ का भरत द्वारा विरोध। लक्ष्मण का अश्वमेध का प्रस्ताव तथा उसके माहात्म्य मे ब्रह्महत्या से अश्वमेध द्वारा इन्द्र की शुद्धि की कथा

सुनाना (सर्ग ८३-८६)। राम द्वारा इला के अश्वमेध से पुरुषत्व प्राप्त करने की कथा (सर्ग ८७-९०)।

अश्वमेध मे सीता का पृथ्वी-प्रवेश—नैमिष वन मे अश्वमेध के अवसर पर कुश-लव का सभा के सामने रामायण-गान करना (सर्ग ९१-९४)। कुश-लव को सीता-पुत्र जानकर राम का वाल्मीकि के पास सदेश भेजना और सभा के सम्मुख अपनी शुद्धि का साक्ष्य देने के लिए सीता से अनुरोध करना (सर्ग ९५)। सीता की शपथ, पृथ्वी का सीता को अपने साथ ले जाना, राम द्वारा सीता को लौटा देने का व्यथ अनुरोध (९६-९८)। कुश-लव द्वारा उत्तरकाड का गान, सभा-विसर्जन, माताओ की मृत्यु (सर्ग ९९)।

विजय यात्राएँ—भरत के पुत्रो (तक्ष-पुष्कल) का तक्षशिला तथा पुष्कलवती मे राज्य-स्थापन (सग १००-१०१)। लक्ष्मण के पुत्रो (अगद-चन्द्रकेतु) का अगदीप और चन्द्रकान्त मे राज्य-स्थापन।

लक्ष्मण-मृत्यु—काल का राम को अपना विष्णुरूप प्राप्त करने का स्मरण दिलाना। दुर्वासा के आग्रह से लक्ष्मण का राम तथा काल के पास जाना और इसके कारण लक्ष्मण का सरयू-प्रवेश (१०२-१०६)।

स्वर्गगमन—राम का कुश को कुशावती मे और लव को श्रावस्ती मे राज्य देना। अपने पुत्रो (सुबाहु और शत्रुघातिन्) को राज्य देकर शत्रुघ्न का अयोध्या आना। सुग्रीव और वानरो का आना। विभीषण और हनुमान् को अमरत्व का वरदान (१०७-१०८)। राम का अपने भाइयो के साथ विष्णुरूप मे तथा वानरो का अशानुसार देवताओ मे प्रवेश। नागरिको की स्वर्गप्राप्ति। फलश्रुति (सर्ग १०९-१११)।

ख। उत्तरकाड का विश्लेषण

तीनो पाठो में विभिन्नता

६१७ उत्तरकाड के तीन पाठो मे इतनी ही विभिन्नता पायी जाती है, कि दाक्षिणात्य पाठ मे भृगु द्वारा विष्णु को शाप सीतात्याग का कारण माना गया है (दे० अनु० ७२५)। इतनी कम विभिन्नता से पता चलता है कि उत्तरकाड की रचना अन्य काडो के बाद हुई है। इसका उल्लेख दूसरे अध्याय मे हो चुका है (दे० अनु० २२)।

दाक्षिणात्य पाठ के सस्करणो मे उत्तरकाड के २३वे सर्ग, ३७वे सर्ग तथा ५९वें सर्ग के पश्चात् क्रमश पॉच, पॉच तथा तीन प्रक्षिप्त सर्ग उद्धृत किए जाते है, जिनकी गणना अन्य सर्गो के साथ-साथ नही की गई है। इनकी अधिकाश सामग्री अन्य पाठो मे नही मिलती।

उत्तरकाड की उत्पत्ति

६१८ समस्त उत्तरकाड प्रक्षिप्त है। इसके प्रमाण आठवे अध्याय मे दिये

गये है (दे० अनु० ११५)। उत्तरकाड की सामग्री के विश्लेषण से स्पष्ट है कि इसकी रचना भिन्न-भिन्न कवियो द्वारा हुई है। प्रचलित **वाल्मीकि रामायण** मे दो ही विस्तृत अश ऐसे है, जिनमे अशुद्ध श्लोको का बाहुल्य पाया जाता है, अर्थात् विश्वामित्र की कथा (बालकाड, सर्ग ५७-६५) तथा रावण-चरित (उत्तरकाड, सर्ग १-३६)। अशुद्धियो का यह बाहुल्य इन दोनो वृत्तान्तो को प्रक्षेप सिद्ध करता है।[1]

रावणचरित के बाद राम के अभिषेक के लिए आये हुए अतिथियो की विदाई का पुन वर्णन किया गया है (सर्ग ३७-४०), इसका प्रथम वर्णन युद्धकाड के अत मे हुआ था। रावणचरित जैसे विस्तृत प्रक्षेप जोडने के पश्चात् आधिकारिक कथावस्तु से सबध स्थापित करने के लिए इसकी यहा पुनरावृत्ति की गई है। अत उत्तरकाड का मूल-रूप सीतात्याग के वर्णन से प्रारम्भ हुआ होगा (सर्ग ४२-५२)। शेष सामग्री से पौराणिक कथाओ को तथा शम्बूक-वध की कथा[2] को हटाने पर जो वृत्तान्त रह जाता है, वह उत्तरकाड का प्रारम्भिक रूप प्रतीत होता है, अर्थात् शत्रुघ्न-चरित तथा कुश-लव-जन्म, राम का अश्वमेध तथा कुश-लव द्वारा रामायण-गान, सीता का भूमि-प्रवेश, रामादि के पुत्रो की राज्यस्थापना, लक्ष्मण की मृत्यु तथा राम का स्वर्गारोहण।

२—उत्तरकाड का विकास

६१९ उत्तरकाड के प्रथम ३६ सर्गों मे रामायण की आधिकारिक कथा-वस्तु से भिन्न एक स्वतन्त्र कथानक का वर्णन किया गया है। तत्सबधी सामग्री दो अलग परिच्छेदो मे रखी गई है (दे० नीचे ३, रावण-चरित और ४, हनुमच्चरित)। सीता-त्याग तथा कुश-लव-चरित का विकास अपेक्षाकृत अधिक विस्तृत है। अत इन दोनो वृत्तान्तो का वर्णन अलग किया गया है (दे० परिच्छेद ५ और ६)। रामकथा की समाप्ति अनेक रूपो मे वर्णित है। इस महत्वपूर्ण विषय का विश्लेषण 'रामकथा का निर्वहण' नामक अतिम परिच्छेद मे किया जायेगा। प्रस्तुत परिच्छेद मे उत्तरकाड की शेष कथा-वस्तु से सम्बन्ध रखनेवाली गौण सामग्री का वर्णन करना है। उत्तरकाड की नृग, निमि आदि विषयक पौराणिक कथाओ का रामकथा से कोई सम्बन्ध नही है और इनका अर्वाचीन रामकथाओ मे प्राय अभाव है।

क। शत्रुघ्न-चरित

६२० वाल्मीकि रामायण के प्रामाणिक काडो मे शत्रुघ्न-विषयक सामग्री नगण्य है। सभव है कि इस अभाव की पूर्ति करने के उद्देश्य से उत्तरकाड के रचयिताओ

---

१ दे० एच० याकोबी, डस रामायण, पृ० २६।

२ शम्बूक-वध एक स्वतन्त्र कथा प्रतीत होती है, जो बाद मे जोड दी गई है।

ने शत्रुघ्न द्वारा लवण-वध तथा मधुपुरी की स्थापना का वर्णन किया है (सर्ग ६०-७२)। कथा इस प्रकार है। भार्गव च्यवन के नेतृत्व मे यमुनातट-निवासी तपस्वी किसी दिन राम के पास पहुँचकर लवण नामक राक्षस से रक्षा मागने लगे। लवण का पिता मधु धार्मिक था, उसने शिव से एक अजेय शूल प्राप्त कर लिया था और उसे यह वरदान मिला था कि जब तक यह शूल उसके पुत्र के हाथ मे रहेगा वह अवध्य होगा—**अवध्य सवभूताना शूलहस्तो भविष्यति** (६१, २४)। इस शूल के बल पर लवण अब तपस्वियो को सताया करता था। राम ने शत्रुघ्न का अभिषेक कर उनको लवण का वध करने तथा यमुना पर राजधानी बसाने का आदेश दिया। शत्रुघ्न ने एक विशाल सेना को मधुवन की ओर भेज दिया तथा बाद मे अकेले ही वाल्मीकि के आश्रम होकर मधुवन की यात्रा की। शत्रुघ्न ने वाल्मीकि के यहा एक रात बिताई, वाल्मीकि ने उन्हे सौदास की कथा सुनाई (अनु० ६२१-६२७) तथा उसी रात्रि मे कुश-लव का जन्म हुआ (दे० अनु० ७३६)। दूसरे दिन शत्रुघ्न ने पश्चिम के लिए प्रस्थान किया, उन्होने च्यवन से मिलकर लवण द्वारा मान्धाता-वध की कथा सुन ली तथा लवण का वध करने के पश्चात् वह मधुपुरी मे राज्य करने लगे। बारह वर्ष बीत जाने पर शत्रुघ्न ने राम से मिलने जाने का निश्चय किया। अयोध्या की यात्रा करते हुए वह फिर वाल्मीकि के यहाँ ठहरे तथा उन्होने इस अवसर पर रामचरित का गान सुन लिया।[1] अयोध्या पहुँचकर शत्रुघ्न ने राम के पास रहने की इच्छा प्रकट की किन्तु राम ने क्षत्रिय-धर्म का उल्लेख करके (**प्रजा हि परिपाल्या क्षत्रधर्मेण** ७२, १४) उन्हे केवल सात दिन तक अयोध्या में रहने की अनुमति दी।

उत्तरकाड मे दो अन्य अवसरो पर शत्रुघ्न का उल्लेख किया गया है। उन्होन राम के अश्वमेध मे भाग लिया (सर्ग ९१) तथा लक्ष्मण की मृत्यु के पश्चात् उन्होने अपने पुत्र सुबाहु को मधुरा मे तथा शत्रुघाती को वैदिश मे राज्यसिंहासन पर बैठाकर (सर्ग १०७-१०८) राम तथा भरत के साथ वैष्णव तेज मे प्रवेश किया (सर्ग ११०)।

ख। सौदास की कथा

६२१ वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाड के अनुसार वाल्मीकि ने शत्रुघ्न को सौदास की कथा सुनाई थी। इस कथा का विकास अत्यन्त रोचक है।[2] ऋग्वेद के

---

१ वाल्मीकि तथा शत्रुघ्न की इस द्वितीय भेट के वर्णन मे न तो सीता और न पुत्रो का उल्लेख है।

२ विस्तृत विश्लेषण के लिए प्रस्तुत लेखक का 'पुरुषाद सौदास' नामक निबंध देख ले। भारतीय साहित्य, आगरा, वर्ष ५, अक २, पृ० ७-२७।

अनुसार सुदास् नामक राजा के दो पुरोहित थे—विश्वामित्र तथा वसिष्ठ। उन दोनो पुरोहितो मे वैर उत्पन्न हुआ, वैदिक साहित्य के कई स्थलो पर (विश्वामित्र की प्रेरणा से) सौदासो द्वारा वसिष्ठ के पुत्र का वध तथा यज्ञ के प्रभाव से सौदासो पर वसिष्ठ की विजय उल्लिखित है, बृहद्देवता (अध्याय ६) मे यह माना गया है कि वसिष्ठ ने सुदास को राक्षस बन जाने का शाप दिया था। "सौदासा" का मूल अर्थ है सुदास के अनुचर किन्तु बाद मे सौदास का अर्थ सुदास का पुत्र माना गया और सुदास् के स्थान पर सौदास को शाप दिये जाने को कथा प्रचलित हुई। इस कथा पर बौद्ध ससार मे सुप्रसिद्ध सुतसोम नामक जातक का प्रभाव पडा, अत यहा पर सर्वप्रथम सुतसोम विषयक सामग्री का सिहावलोकन किया गया है (दे० अनु० ६२२)। ब्राह्मण धर्म के ग्रथो मे सौदास की कथा के दो रूप मिलते है—एक महाभारत का रूप, जिसमे वसिष्ठ दूसरो द्वारा अभिशप्त सौदास को मुक्त करते है (अनु० ६२३), दूसरा, रामायण का रूप, जिसके अनुसार वसिष्ठ ने सौदास को राक्षस बन जाने का शाप दिया था (अनु० ६२४)। दोनो मे समान रूप से यह तत्व विद्यमान है—नरमासाहार खिलाने के कारण सौदास को १२ वर्ष तक राक्षस बनना पडा। सौदासीय कथा के कई रूपान्तर भी मिलते है जिनके द्वारा राम का महत्व तथा उनकी दयालुता का प्रतिपादन किया गया है (अनु० ६२५)।

६२२ सुतसोम की कथा समस्त बौद्ध ससार मे व्याप्त है। पाली तथा सस्कृत साहित्य के अतिरिक्त इस नाटक के कई रूप चीनी अनुवादो मे सुरक्षित है। तिब्बत तथा हिन्देशिया मे भी सुतसोम की कथा पाई जाती है। यहाँ पर केवल पाली **महासुत सोम जातक** का साराश दिया जायगा। सुतसोस इन्द्रप्रस्थ के राजा कोरव्य का राजकुमार था जो तक्षशिला मे ब्रह्मदत्त के पुत्र कल्माषपाद का सहपाठी होने के बाद अपने पिता के स्थान पर राजा बन गया। कल्माषपाद भी वाराणसी का राजा बन गया। वह अपने पूर्वजन्म मे नरभक्षक यक्ष था, इस कारण वह नित्यप्रति मासाहार किया करता था। किसी दिन कुत्ते राजा का भोजन ले गये और रसोइये ने हाल मे मरे हुए मनुष्य की जाघ पकाकर परोस दी। राजा ने उस भोजन को पसन्द किया तथा रसोइये ने इसका रहस्य प्रकट किया। इस पर राजा ने प्रतिदिन नरमास तैयार करने का आदेश दिया। राजा ने पहले सब कैदियो को खाया, इसके बाद रसोइया नागरिको का वध करने लगा जिससे जनता मे खलबली मच गई। अन्त मे रसोइया रगे हाथो पकडा गया और उसने कहा कि राजा को नरमास की जरूरत है। तब राजा तथा रसोइये दोनो को निवासित किया गया। राजा वन मे मनुष्यो का वध किया करता था और रसोइया इनका मास भूनकर परोसता था। किसी दिन राजा अपने रसोइये को भी खा गया। एक बार ऐसा हुआ कि एक ब्राह्मण के अपहरण के कारण लोगो ने राजा का पीछा किया जिससे राजा के पैर मे चोट लगी। राजा ने एक वृक्ष-देवता से यह प्रतिज्ञा की—अच्छा होने पर मै

तुझे भारतवष भर के १०१ राजकुमारो को अर्पित करूँगा। सात दिन मे उसका घाव भर गया (इसका वास्तविक कारण यह था कि उसने इस अवधि भर मे अनशन किया था), इसे वनदेवी का वरदान समझकर वह अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए तैयार हो गया। अपने पूर्वजन्म के साथी यक्ष से मत्र पाकर वह शीघ्रगामी बन गया और उसने एक सौ राजाओ को कैद कर लिया। इसके बाद उसने वृक्षदेवता के आदेश से सुतसोम को भी पकड लिया। सुतसोम ने उस दिन जाते समय किसी ब्राह्मण को आश्वासन दिया था कि स्नान से लौटकर मै आपकी बात सुन लूगा, अत उसने नरभक्षक से निवेदन किया कि मुझे ब्राह्मण के प्रति अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करने का अवसर दिया जाय। नरभक्षक ने उसको ब्राह्मण के पास जाने की अनुमति दी। सुतसोम ब्राह्मण के पास जाकर, उनसे चार गाथाए सीखकर और बदले मे ब्राह्मण को चार हजार मुद्राये देकर, कल्माषपाद के पास लौटा। कल्माषपाद ये चार गाथाएँ सुनकर प्रसन्न हुआ और उसने सुतसोम को चार वर माँगने की अनुमति दी। सुतसोम ने निम्नलिखित चार वर उससे माँगे—(१) मै आपको एक सौ वर्ष तक जीवित देख सकू, (२) आप उन एक सौ राजकुमारो को न खाये, (३) आप उनको उनके राज्य मे वापस भेज दे, (४) आप नर-मास-भक्षण त्याग दे। तब दोनो मे देर तक वार्तालाप हुआ, इसके फलस्वरूप कल्माष-पाद ने अपनी आदत को छोडना स्वीकार कर लिया। सुतसोम के अनुरोध पर राजाओ ने कल्माषपाद के विरुद्ध कुछ नही करने की प्रतिज्ञा की, अन्त मे सुतसोम ने कल्माषपाद को उसका राज्य वापस दिला दिया। जिस स्थान पर नरभक्षक के हृदय का परिवर्तन हुआ, वहाँ कम्मासदम्म नामक नगर बस गया।

बौद्ध साहित्य की परवर्ती रचनाओ मे ब्रह्मदत्त के पुत्र मासाहारी कल्माषपाद को तथा सुदास के पुत्र सौदास को अभिन्न माना गया है और सौदास के मासाहारी बनने का कारण यही बताया गया है कि वह सिहनी की सन्तान है। कथा का यह रूप जातकमाला के सुतसोमजातक, लङ्कावतारसूत्र, सिहसौदास-मासभक्षनिवृत्ति के चीनी अनुवाद, भद्रकल्पावदान आदि मे सुरक्षित है। जैनी ग्रन्थो मे भी सिहसौदास की चर्चा है (दे० पउमचरिय २२, ७२-६५)। महाभारत के अश्वमेध पर्व (अध्याय ५६-५८) मे सत्यसघ उत्तक तथा सौदास के विषय मे जो कथा मिलती है उसपर बौद्ध सुत-सोम जातक की छाप स्पष्ट है।

६२३ महाभारत के आदिपर्व (अध्याय १६६-१६८) मे सौदास की कथा इस प्रकार है। राजा कल्माषपाद किसी दिन मृगया के समय वन मे वसिष्ठ के ज्येष्ठ पुत्र शक्ति से भेंट करते है। मार्ग देने के प्रश्न पर विवाद छिड जाने पर राजा शक्ति पर कोडे का प्रहार करते हैं, जिस पर शक्ति राजा को पुरुषाद बन जाने का शाप देते है। वसिष्ठ के वैरी विश्वामित्र छिपकर दोनो का विवाद सुन लेते हैं तथा वसिष्ठ का अनर्थ

चाहकर किंकर नामक राक्षस को आदेश देते है कि वह कल्माषपाद के शरीर मे प्रवेश करे।

बाद मे किसी दिन एक ब्राह्मण ने कल्माषपाद से मामिष भोजन माँगा। अपने रसोइये से यह जानकर कि मास अप्राप्य है राक्षस-ग्रस्त राजा ने ब्राह्मण को नर-मास खिलाने का आदेश दिया। रसोइये ने ऐसा ही किया, जिससे ब्राह्मण ने शक्ति के शाप का स्मरण दिलाकर राजा को पुरुषाद राक्षस बनने का पुन शाप दे दिया। राक्षस के ग्रहण तथा उपर्युक्त दो शापो के फलस्वरूप कल्माषपाद वास्तव मे नरभक्षक बन गया। उसने सर्वप्रथम शक्ति का भक्षण किया, अनन्तर विश्वामित्र के आदेश से किंकर राक्षस ने राजा को वसिष्ठ के सौ पुत्रो को खाने के लिये प्रेरित किया। अपने समस्त पुत्रो की हत्या का समाचार सुनकर वसिष्ठ ने आत्महत्या का अनेक प्रकार से असफल प्रयत्न किया। बहुत समय बाद वन मे कल्माषपाद मे वसिष्ठ की भेट हुई और वसिष्ठ ने अभिमन्त्रित जल द्वारा राजा को, जो १२ वर्ष राक्षस-ग्रस्त रह चुका था, मुक्त कर दिया। इसपर कल्माषपाद ने वसिष्ठ से निवेदन किया कि वह उसके लिए सतति उत्पन्न करे।[1] वसिष्ठ राजा के साथ अयोध्या आकर तथा रानी का गर्भाधान कराकर अपने आश्रम लौटे। बाद मे महिषी ने एक पुत्र प्रसव किया जिसका नाम इसलिए अश्मक रखा गया कि १२ वर्ष तक गर्भ धारण करने के पश्चात् माता ने 'अश्म' से अपना उदर खोल दिया था।

वैदिक साहित्य मे वसिष्ठ-विश्वामित्र का पारस्परिक बैर प्रसिद्ध है, महाभारत की उपर्युक्त कथा मे भी इस बैर को सोदास की कथा का आधार बना दिया गया है। वैदिक साहित्य तथा महाभारत की कथा का एक महत्त्वपूर्ण अन्तर यह है कि महाभारत के अनुसार वसिष्ठ शाप नही देते, उलटे वह कल्माषपाद को शाप से मुक्त करते है। अत कल्माषपाद के राक्षस बन जाने के तीन अन्य कारण दिये जाते है—(१) शक्ति का शाप, (२) विश्वामित्र की प्रेरणा से किंकर नामक राक्षस का आवेश, (३) नरमासाहार के कारण किसी ब्राह्मण का शाप। इस अन्तिम कारण मे सुतसोमजातक का प्रभाव देखा जा सकता है, सुतसोमजातक मे साधारण मास के अभाव मे राजा को नरमास परोसा जाता है जैसा कि यहाँ पर अन्य मास अप्राप्य होने पर ब्राह्मण को नरमास दिया जाता है।

बृहद्देवता मे माना गया है कि वसिष्ठ ने अपने सौ पुत्रो के वध के कारण सुदास को शाप दिया था किन्तु महाभारत मे सौदास शापग्रस्त हो जाने के पश्चात् ही वसिष्ठ

१ इस निवेदन का कारण अन्यत्र स्पष्ट किया गया है (दे० आदिपर्व, अध्याय १७३)।

के पुत्रो का भक्षण करता है जैसा कि सतसोमजातक मे कल्माषपाद, नरभक्षक बनने के बाद ही, १०१ राजाओ का वलिदान तैयार करता है। जातक मे बोधिसत्व सुतसोम नरभक्षक को उपदेश देकर व्यसन छोड देने के लिए प्रेरित करता है, जैसा कि महाभारत की कथा के अनुसार वसिष्ठ ने अभिमन्त्रित जल छिडककर कल्माषपाद को शाप-मुक्त किया था। इस प्रकार हम देखते हैं कि महाभारत की कथा पर सुतसोमजातक की गहरी छाप है।

कल्माषपाद नाम का वैदिक साहित्य मे सर्वथा अभाव है। यह नाम महासुत-सोमजातक (गाथा ४७२), महाभारत तथा रामायण के उत्तरकाण्ड तीनो मे समान रूप से मिलता है। इन रचनाओ मे से महासुतसोमजातक की गाथाएँ सब से प्राचीन है, अत अधिक सभव यही प्रतीत होता है कि कल्माषपाद का नाम बौद्ध साहित्य मे पहले-पहल प्रयुक्त हुआ था। महाभारत, रामायण तथा पुराणो मे सौदास, मित्रसह तथा कल्माषपाद तीनो नाम दिये गये है।[1] सुदास के पुत्र सौदास का निजी नाम मित्रसह था, बाद मे बौद्ध साहित्य के प्रभाव से उनको कल्माषपाद का नाम भी मिला होगा। हरिवश पुराण[2] मे इस पर बल दिया गया है कि सौदास दो नामो से विख्यात था —

सुदासस्य सुतस्त्वासीत् सौदासो नाम पार्थिव ।
ख्यात कल्माषपादो वै नाम्ना मित्रसहस्तथा ॥

भागवत पुराण (९, ९, १८) मे कहा गया है कि सौदास को कही मित्रसह तथा कही कल्माषाघ्रि के नाम से पुकारा जाता है

तत सुदासस्तत्पुत्रो मदयन्तीपतिर्नृप ।
आहुर्मित्रसह य वै कल्माषाघ्रिमुत क्वचित् ॥

---

१ रामायण के बालकाण्ड (७०, ४०) मे कल्माषपाद, अयोध्याकाण्ड के एक प्रक्षिप्त स्थल पर (११०, २९) कल्माषपाद तथा सौदास और उत्तरकाण्ड की कथा मे तीनो नाम आये है। दाक्षिणात्य पाठ मे (७, ६५, १० और १७) सौदास के पुत्र को वीर्यसह तथा मित्रसह कहा गया है किन्तु वह लिपिक की भूल होगी क्योकि रामायण के अन्य पाठो मे सौदास ही को मित्रसह का नाम दिया गया है (दे० गौडीय पाठ ७, ७१, ११, पश्चिमोत्त-रीय पाठ ७, ६८,१०)।

२ दे० १, १५, २१। यह श्लोक ब्रह्माण्ड पुराण (३, ६३, १७६), लिंग पुराण (पूर्वार्द्ध ६६, २७), वायु पुराण (२, २६, १७६) आदि मे भी मिलता है।

६२४ परवर्ती पुराणो तथा रामकथा-साहित्य मे महाभारत की कथा की अपेक्षा **रामायण की सौदासीय कथा** को प्रमाणिक माना गया है। इस कथा की विशेषता यह है कि इसमे विश्वामित्र का उल्लेख तक नही होता। सौदास की दुर्गति का कारण यह माना जाता है कि उसने मृगया के समय किसी राक्षस को मार डाला था तथा उस राक्षस के साथी के षड्यत्र के कारण उसने अनजान मे वसिष्ठ को नरमास परोसा था और फलस्वरूप वसिष्ठ का कोप-भाजन बन गया। रामायणी कथा की एक अन्य विशेषता यह है कि इसमे सौदास के दूसरे नाम **'कल्माषपाद'** की व्युत्पत्ति के विषय मे एक सर्वथा नवीन कथा मिलती है। रामायण का वृत्तान्त इस प्रकार है।

सोदास ने मृगया के समय व्याघ्र का रूप धारण करने वाले दो राक्षसो को देख कर उनमे से एक का वध किया।[1] प्रतिकार का सकल्प करके दूसरा राक्षस अत-र्द्धान हो गया। बाद मे सोदास ने वसिष्ट द्वारा अश्वमेध-यज्ञ का आयोजन किया। यज्ञ के अन्त मे उस राक्षस ने वसिष्ठ का रूप धारण कर सामिष भोजन मागा तथा राजा ने इसे तैयार करने का आदेश दिया। बाद मे राक्षस नरमास का भोजन हाथ मे लिए रसोइये के रूप मे राजा के सामने उपस्थित हुआ। राजा ने अपनी पत्नी मदयन्ती के साथ वसिष्ठ को यह भोजन परोस दिया। इसे सामिष जानकर वसिष्ठ ने राजा को यह शाप दिया—**भोजनमेतत्ते भविष्यति**। शाप सुनकर निर्दोष सौदास को क्रोध हुआ और वह हाथ मे जल लेकर वसिष्ठ को प्रतिशाप देने को उद्यत हो गया किन्तु मदयन्ती ने उसे रोक लिया। इस पर सौदास ने सह **'क्रोधमय, तेजोबलसमन्वित'** जल अपने ही पैरो पर छिडक लिया। फलस्वरूप उसके पैरो पर धब्बे पड गए और उस समय से सौदास कल्माषपाद के नाम से विख्यात हो गया। राक्षस के कपट के विषय मे सुनकर वसिष्ठ ने अपने शापके प्रभाव को १२ वर्ष तक ही सीमित कर दिया। अत कल्माषपाद ने १२ वर्ष तक शाप का दण्ड भोगने के बाद अन्त मे पुन अपना राज्य पाप्त कर लिया।

तीन पुराणो मे सूर्यवश के वर्णन के अन्तर्गत सौदासीय कथा रामायण के अनु-सार दी गई है, अर्थात् **विष्णु पुराण** (४,४,३८-५८), **भागवत पुराण** (६,६,२०-२५), **स्कद पुराण** (३, ३, २)। भागवत तथा स्कन्द पुराणो मे किसी यज्ञ की चर्चा नही होती, राक्षस रसोइये के रूप मे सोदास के घर मे निवास करता है तथा भोजन मे निमत्रित कुलगुरु वसिष्ठ के लिए नरमास तैयार करता है। स्कन्द पुराण के अनुसार कथा का निर्वहण इस प्रकार है—शाप समाप्त होने पर कल्माषपाद अपनी राज-

---

१ "राक्षसद्वय" (दे० ६५, ११)। भागवत पुराण, स्कन्द पुराण तथा भावार्थ रामायण के अनुसार दोनो मे भ्रातृत्व का सम्बन्ध था। कृत्तिवास ने उनको दम्पति माना है।

धानी लौटता हे तथा वसिष्ठ द्वारा सतति प्राप्त कर वह पुन वन के लिए प्रस्थान करता है, जहाँ मूर्त्तमती ब्रह्महत्या पिसाची के रूप मे उसे सताती रहती है। वर्षो तक विभिन्न तीर्थो का भ्रमण करने पर वह मुक्त नही हो पाता। अन्त मे गौतम के परामर्श के अनुसार वह गोकर्ण मे शिवलिंग-दर्शन के फलस्वरूप ब्रह्महत्या दोष से मुक्त हो जाता हे।

मराठी भावाथ रामायण (७,५९), कृत्तिवास रामायण (१,१९) आदि परवर्ती रचनाओ मे भी वाल्मीकि रामायण के वृत्तान्त को सौदास की कथा का आधार माना गया है।

कृत्तिवास (१,४३) ने सौदास की शापमुक्ति को नवीन रूप दिया है। इसके अनुसार वसिष्ठ ने कहा था कि ११ वर्ष तक राक्षस होने के बाद सौदास गगा-दर्शन द्वारा शाप-मुक्त होगा। इस अवधि के अन्त मे एक ब्रह्मदैत्य से सौदास की भेट हुई, दोनो छ महीने तक द्वन्द्व युद्ध करने के पश्चात् मित्र बन गये। वह ब्रह्मदैत्य शापवश दैत्य बन गया था और सौदास की भाति गगाजल द्वारा ही मुक्ति पाने वाला था। तब ऐसा सयोग हुआ कि किसी दिन भार्गव ऋषि सिर पर गगाजल का घडा लेकर दोनो के सामने से ही जा रहे थे। सौदास के अनुरोध पर ऋषि ने कुश से दोनो अभिशप्तो के शरीर पर गगाजल छिडककर उनको शाप-मुक्त कर दिया।

६२५ रामकथा-साहित्य मे सौदास की कथा के **तीन रूपान्तर** मिलते है। इनकी सामान्य विशेषता यह है कि कोई व्यक्ति अनजान मे मासाहार परोमने के कारण ब्राह्मण का शाप-भाजन बन जाता है तथा राम द्वारा मुक्त किया जाता है। अन्तिम दो कथाओ के अनुसार किसी शत्रु के षड्यन्त्र के कारण नरमाम परोसा गया था तथा तीसरी कथा मे यह माना गया है कि राजा प्रतापभानु ब्राह्मणो का कोपभाजन बनकर रामायण के प्रतिनायक राक्षस-रावण के रूप मे प्रकट हुआ था।

वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड मे सर्ग ५९ के अनन्तर तीसरे प्रक्षिप्त सर्ग मे निम्नलिखित कथा मिलती है। **गौतम** नामक ब्राह्मण ने किसी दिन राजा ब्रह्मदत्त के यहा जाकर भोजन माँगा। सयोगवश गौतम के आहार मे कुछ मास पड गया जिससे गौतम ने राजा को गीध बन जाने का शाप दिया। राजा के सविनय निवेदन करने पर गौतम ने कहा कि इक्ष्वाकुवश के यशस्वी राजा राम के स्पर्श से तुम मुक्त हो जाओगे। गौतम के शाप के कारण ब्रह्मदत्त गीध बन गया और राम का स्पर्श पाकर वह दिव्य-रूपधारी पुरुष के रूप मे परिणत हो गया।[1]

---

१ यह कथा किंचित परिवर्तन सहित पद्मपुराण के सृष्टिखण्ड (अध्याय ३४, ११८-१२६) मे मिलती है।

अध्यात्म रामायण (६, ५, ५-२४) तथा **आनन्द रामायण** (१, १०, २१५-२१६) मे रावण के गुप्तचर **शुक** के पूर्वजन्म के विषय मे निम्नलिखित कथा मिलती है। शुक नामक बनवासी ब्राह्मण देवताओ के हित मे लगे रहने के कारण राक्षसो का शत्रु बन गया था। एक दिन अगस्त्य मुनि उसके आश्रम पधारे, इस अवसर से लाभ उठाकर वज्रदष्ट्र नामक राक्षस ने अगस्त्य का रूप धारण कर लिया और सामिष भोजन के लिए शुक से आग्रह किया। अनन्तर वज्रदष्ट्र ने शुक की पत्नी को मूर्च्छित कर दिया और स्वय उसी का रूप धारण कर अगस्त्य को नरमास परोसा और बाद मे अन्तर्द्धान हो गया। इस पर अगस्त्य ने शुक को यह कहकर शाप दिया—"तुमने मुझे अभक्ष्य नरमास खाने को दिया, अत तुम नरभक्षी राक्षस बन जाओ।" शुक द्वारा इस शाप का कारण पूछे जाने पर मुनि ने राक्षस की करतूत को जान लिया। उनका शाप व्यर्थ तो नही हो सका, किन्तु अगस्त्य ने शुक को आश्वासन दिया कि तुम राक्षस के रूप मे रावण के सहायक बन जाओगे, राम के आगमन पर तुम रावण का दूत होकर राम के दर्शन पाओगे और शापमुक्त हो जाओगे। तब रावण के पास लौटकर तथा उसे तत्वज्ञान का उपदेश देकर परमपद प्राप्त करोगे। तदनुसार लकायुद्ध के समय शुक ने रावण-दूत बनकर राम के दर्शन पाये तथा रावण के पास लौटकर उसको सदुपदेश दिया। इसके अनन्तर वह फिर ब्राह्मण शरीर प्राप्त कर वन चला गया।[१]

गोस्वामी तुलसीदास ने **रामचरितमानस** के बालकाण्ड मे रामावतार-हेतु के रूप मे पाच कथाओ का वर्णन किया है। अन्तिम कथा इस प्रकार है—

"केकय देश का राजा सत्यकेतु अपने ज्येष्ठ पुत्र **प्रतापभानु** को राज्य देकर वन चला गया। प्रतापभानु अपने मन्त्री धर्मरुचि तथा अपने अनुज अरिमर्दन की सहायता से समस्त राजाओ को हराकर पृथ्वीमण्डल का एकमात्र राजा बन गया। किसी दिन मृगया के समय प्रतापभानु अपने साथियो से अलग होकर एक आश्रम मे पहुँचा जहाँ मुनि के छद्मवेश मे एक राजा रहता था जिसका देश प्रतापभानु ने छीन लिया था। कपट-मुनि ने राजा का आतिथ्य-सत्कार किया तथा उसे यह परामर्श दिया कि वह वर्ष भर नित्यप्रति एक लाख ब्राह्मणो के लिए भोजन का प्रबन्ध करे। मुनि ने राजा को आश्वासन दिया कि वह स्वय रसोइया बनकर अपने पुण्य के बल पर ब्राह्मणो को खिलायेगा और तीन दिन के बाद राजपुरोहित का रूप धारणकर राजा की सेवा मे उपस्थित होगा। मुनि का आश्वासन पाकर राजा निश्चिन्त होकर सोने लगा। अब कालकेतु नामक राक्षस कपटमुनि के पास आया। (कालकेतु ही शूकर के रूप मे राजा को भटकाकर कपटमुनि के पास ले गया था, उसके वैर का कारण यह था कि प्रताप-

---

१ रामचरितमानस मे इस कथा का निर्देश मात्र किया गया है, दे० ५, ५७।

भानु ने कालकेतु के एक सौ पुत्रो तथा दस भाइयो का वध किया था)। मुनि के आदेशानुसार राक्षस ने सोये हुए राजा को घर पहुँचा दिया और राजा के पुरोहित का हरण कर उसे किसी पहाडी गुफा मे रख दिया। तब वह पुरोहित के रूप मे राजधानी मे रहने लगा। तीन दिनो के बाद प्रतापभानु ने एक लाख ब्राह्मणो को भोजन का निमत्रण दिया और राक्षस ने भोजन मे ब्राह्मण का मास मिला दिया। राजा परोसने लगा था कि आकाशवाणी सुनाई पडी और उसमे सब ब्राह्मणो को घर जाने का परामर्श दिया गया क्योकि रसोई 'भूसुर मासू' की बनी थी। इस आकाशवाणी को सुनकर ब्राह्मणो ने प्रतापभानु को चार दिन मे मरकर परिवार सहित राक्षस बन जाने का शाप दे दिया। तदनन्तर पुन आकाशवाणी हुई कि राजा निर्दोष है। राजा ने रसोईघर मे जाकर देखा कि भोजन और रसोइया दोनो वहा से गायब है। उसने ब्राह्मणो की बहुत अनुनय-विनय की किन्तु उन्होने कहा कि ब्राह्मणो का शाप नही टल सकता।

कालकेतु पुरोहित को फिर राजमहल पहुँचाकर कपटमुनि के पास लौटा। तब मुनि ने प्रतापभानु के समस्त शत्रुओ को बुलाकर उसकी राजधानी पर आक्रमण किया। उस युद्ध मे प्रतापभानु अपनी सेना तथा परिवार सहित मारा गया। समय पाकर प्रतापभानु रावण के रूप मे प्रकट हुआ, अरिमर्दन कुभकर्ण हुआ तथा धर्मरुचि ने विभीषण का रूप धारण किया। राजा का शेष परिवार और परिचर लका के राक्षस बन गए।[1]

६२६ सौदास तथा सुतसोम की कथाएँ मूलत दो सर्वथा भिन्न तथा एक दूसरे से पूर्णरूपेण स्वतत्र वृत्तान्त है। महाभारत की सोदासीय कथा पर सुतसोम जातक के कथानक का प्रभाव सुस्पष्ट है (दे० अनु० ६२३), किन्तु रामायणीय कथा मे जो नरमासाहार-प्रदान वसिष्ठ के शाप का कारण माना गया है यह भी बौद्ध-साहित्य का प्रभाव प्रतीत होता है। महाभारत तथा रामायण की सौदासीय कथा मे तथा उस कथा के तीनो रूपान्तरो मे भी किसी ब्राह्मण का शाप सौदास की दुर्गति का कारण माना गया है। अत जहाँ बौद्ध सुतसोम जातक के विभिन्न रूपो का प्रधान उद्देश्य **मासाहार के कुपरिणाम** का प्रतिपादन है वहाँ सौदासीय कथा का लक्ष्य **ब्राह्मण-शाप का महत्व** दिखलाना है। सौदासीय कथा के तीन रूपान्तरो के नायक (ब्रह्मदत्त, शुक और रावण) राम के सम्पर्क से शापमुक्त हो जाते है। प्रतापभानु की कथा के अनुसार

१ दे० बालकाण्ड, दो० १५३-१७६। रामदास गौड का कहना है कि अगस्त्य रामायण तथा मजुल रामायण मे भानुप्रताप अरिमर्दन की कथा का वर्णन किया गया है (दे० हिन्दुत्व, पृ० १३७)। दोनो रामायण अप्राप्य है।

रावण वास्तव मे एक धर्मभीरु राजा था जिसने अपने शत्रु के षड्यंत्र से ब्राह्मणो का शापभाजन बनकर अपनी दयनीय दशा द्वारा भगवान को अवतार लेने के लिए बाध्य किया था । इस प्रकार हम देखते हैं कि एक दीर्घकालीन विकास के अन्त मे सौदास की कथा भक्त-वत्सल भगवान राम के गुणगान मे परिणत हो गई है ।

६२७ वाल्मीकि रामायण के दो अन्य स्थलो पर **नरमास-भक्षण** का उल्लेख है । **अरण्यकाण्ड** (११, ५५-५६) मे निम्नलिखित कथा मिलती है । इल्वल नामक असुर ब्राह्मण का रूप धारण कर ब्राह्मणो को श्राद्ध के लिए निमन्त्रण दिया करता था तथा उनको अपने भाई वातापि का मास खिलाया करता था । भोजन के अनन्तर वह यह कहकर अपने भाई को बुलाया करता था— **वातापे निष्क्रमस्व** । ये शब्द सुनकर वातापि ब्राह्मणो के शरीर से निकलकर उनका वध किया करता था । इस प्रकार सहस्रो ब्राह्मणो की हत्या हुई, अन्त मे अगस्त्य ने दोनो असुरो को मार डाला । **उत्तरकाण्ड** (सर्ग ७७-७८) मे श्वेत की कथा इस प्रकार है । विदर्भ के राजा श्वेत ने बिना भिक्षादान दिये तपस्या की थी जिससे ब्रह्मलोक प्राप्त करने के पश्चात् भी उसे पृथ्वी पर लौटकर अपने ही मृत शरीर से अपनी भूख शान्त करने का आदेश मिला । अगस्त्य ने श्वेत से एक आभूषण का दान स्वीकार कर उसे उस घृणित कार्य से मुक्त किया ।[1] जावा के **रामायण ककविन** के अनुसार शबरी का मुख मास-भक्षण के कारण काला पड गया तथा राम ने उसे शुद्ध किया था (दे० अनु० ४८१) ।

ग । शम्बूक-वध

६२८ शम्बूक-वध के वृत्तान्त के दो सर्वथा भिन्न रूप मिलते है। एक वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड पर निर्भर है और दूसरा जैन पउमचरिय के वृत्तान्त पर ।

(अ) उत्तरकाण्ड की कथा (सर्ग ७३-८२)

राम नारद से जान लेते है कि एक शूद्र की तपस्या ही किसी ब्राह्मणपुत्र की अकाल मृत्यु का कारण है, अत वह पुष्पक के सहारे उस शूद्र का पता लगाकर उसका वध करते है। उसी क्षण देवता प्रकट होकर राम की प्रशसा करते है और राम को वर प्रदान कर इसका स्पष्ट शब्दो मे उल्लेख करते है कि राम के काय से वह शूद्र स्वर्ग पर

---

१ पद्मपुराण (सृष्टिखण्ड ३३, ६०-१३२) तथा आनन्द रामायण (राज्य काण्ड १७, ५४-८५) मे भी श्वेत की कथा मिलती है । अद्भुत रामायण (सर्ग ६) मे श्वेत की कथा का परिवर्तित रूप पाया जाता है । भुवनेश नामक राजा उल्लू के रूप मे जन्म लेकर अपने शव को खाने के लिए बाध्य किया जाता है ।

अधिकार प्राप्त न कर सका—**स्वर्गभाङ नहि शूद्रोऽय त्वत्कृते रघुनन्दन** (७६, ८)। राम मृत ब्राह्मणपुत्र के पुनर्जीवन का वरदान माँग लेते है तथा अगस्त्य से मिलकर अयोध्या लौटते हे। अगस्त्य उस अवसर पर राम को श्वेत राजा (अनु० ६२७) तथा दण्डकारण्य (अनु० ४७२) की कथा सुनाते है।

पद्मपुराण के सृष्टिखण्ड (अध्याय ३२, ८६) तथा उत्तरखण्ड (अध्याय २३०, ४७) मे भी देवताओ के वरदान से द्विजपुत्र के पुनर्जीवित हो जाने का उल्लेख है।

'अप्राप्तयौवन' ब्राह्मणपुत्र की अवस्था के विषय मे दाक्षिणात्य पाठ मे लिखा है कि वह पाँच हजार वर्ष का था (पचसहस्रक ७,७३,५)। अन्य पाठो मे वह पाँच (गौ० रा० ७,७६,५) अथवा पद्रह (प० रा० ७,७६,५) का माना गया है। आनन्द रामायण (राज्यकाण्ड १०,५०) तथा पद्मपुराण (सृष्टिखण्ड ३२,३७ और उत्तरखण्ड २३०,७) मे भी पाच किन्तु दशावतारचरित (रामावतार छन्द २७८) मे आठ लिखा है।

६२६ महाभारत के एक श्लोक मे शम्बूक-वध का उल्लेख किया गया है जिसमे ब्राह्मण-पुत्र देवताओ के वरदान से नही किन्तु राम के धर्म से पुनर्जीवत माना गया है

श्रूयते शम्बुके शूद्रे हते ब्राह्मणदारक ।
जीवतो धर्ममासाध्य रामात्सत्यपराक्रमात ॥६२॥

(शातिपर्व, अध्याय १४६)

कालिदास के **रघुवश** तथा भवभूति के **उत्तररामचरित** के अनुसार शम्बूक वध के द्वारा ही ब्राह्मण-पुत्र पुनर्जीवन प्राप्त करता है।

रघुवश मे इसका स्पष्ट उल्लेख किया गया है कि राजा के द्वारा दड दिये जाने के कारण[1] वह शूद्र मुक्ति प्राप्त कर सका है

कृतदड स्वय राज्ञा लेभे शूद्र सता गतिम् ।
तपसा दुश्चरेणापि न स्वमार्गविलघिना ॥५३॥ (१५ वाँ सर्ग)

उत्तररामचरित के द्वितीय अक मे शम्बूक अपने वध के अनन्तर दिव्य पुरुष के रूप मे प्रकट होकर राम से कहता है कि मै आपके प्रसाद ही से शाश्वत पद प्राप्त करूँगा।

---

१ रामायण के एक प्रक्षिप्त सर्ग मे एक श्लोक पाया जाता है जिसमे राजा द्वारा दडितो की स्वर्ग-प्राप्ति का उल्लेख है।

राजभिर्धृतदण्डाश्च कृत्वा पापानि मानवा ।
निर्मला स्वर्गमायान्ति सन्त सुकृतिनो यथा ॥३१॥

(किष्किधाकाड, सर्ग १८)

यह श्लोक मनुस्मृति (८,३१८) मे भी मिलता है।

परवर्ती रामकथाओ मे भी देवताओ के वरदान का उल्लेख नही है। किन्तु राम द्वारा शम्बूकवध की क्रिया ही ब्राह्मणपुत्र के पुनर्जीवन तथा शम्बूक की स्वर्गप्राप्ति दोनो घटनाओ का कारण मानी गई है।[1]

६३० **आनन्द रामायण** (७,१०,५०-१२२) मे प्रस्तुत कथा का परिवर्द्धित रूप मिलता है। पचवर्षीय ब्राह्मण बालक के माता-पिता को प्रतिज्ञा दी गयी कि यदि उनका पुत्र पुनर्जीवित नही होगा तो बदले मे उनको कुश और लव मिल जायेगे। इस प्रतिज्ञा के बाद राम ने बहुत से लोगो के साथ पुष्पक पर चढकर अपने राज्य मे अधर्म का पता लगाना चाहा। इतने मे शृगवेरपुर की ओर से एक ब्राह्मण विधवा अपने पति के शव के साथ आ पहुँची। राम ने उसे जिलाने की प्रतिज्ञा की तथा प्रस्थान करने के पूर्व घोषित किया कि जब तक मै लौट न आऊँ कोई भी शव न जलाया जाय। तपस्या करने वाले शूद्र के पास पहुँच कर राम ने उसे वरदान दिया, शूद्र ने अपने उद्धार के अतिरिक्त अपनी जाति के लिए सद्गति मागा। राम ने राम-नाम का जप और कीर्त्तन शूद्रो की सद्गति का उपाय बताया। इस पर शूद्र ने उत्तर दिया कि कलियुग मे शूद्र लोग बडे मूर्ख होगे, सदा खेतीबारी के कामो मे व्यस्त रहकर उनको जप-कीत्तन आदि के लिए समय कहाँ मिलेगा। राम ने उत्तर दिया कि वे लोग एक-दूसरे मे मिलकर नमस्कार करते हुए राम-राम कहेगे और इसी से उनका उद्धार होगा और तुम भी आज मेरे हाथ मे मरकर बैकुण्ठ जाओगे। इतने मे आयोध्या मे पाँच शव और एकत्र हुए—एक क्षत्रिय, एक वैश्य, एक तेली, एक लोहार की पुत्र-वधू तथा एक चमार की लडकी। राम ने शूद्र का वध करके सबो को जिला दिया।

६३०अ कन्नड राष्ट्रकवि कुवेपु ने "**शूद्रतपस्वी**" (काव्यालय, मैसूर १९४४) मे इस कथानक का एक सर्वथा नवीन रूप प्रस्तुत किया है। कोई वृद्ध ब्राह्मण अपने पुत्र के साथ सयोग से एक शम्बूक नामक तपस्वी के आश्रम पहुँचता है। ब्राह्मण अपने पुत्र को तपस्वी को प्रणाम करने से रोकता हैं, जिसके फलस्वरूप पुत्र किसी सर्प के दश से मर जाता है। ब्राह्मण राम को शूद्र के आश्रम ले जाकर अनुरोध करता है कि उसका वध किया जाये। राम उस पर ब्रह्मास्त्र चलाते है किन्तु शूद्र को इससे कोई हानि नही होती। इस तरह राम को पता चलता है कि ब्राह्मण ही दोषी है। अत मे ब्राह्मण तपस्वी को प्रणाम करता है और उसी क्षण उसका पुत्र पुनर्जीवित हो जाता है।

---

१ उदाहरणार्थ अध्यात्म रामायण (७,४,२३) तथा आनन्द रामायण (राज्य काण्ड १०, ११५)। दे० डब्लू० प्रिंज, राम एण्ड शम्बूक, जर्मन जर्नल ऑव इन्डोलोजी एन्ड इरानिस्तिक, भाग ५, पृ० २४१।

(आ) पउमचरिय की कथा

६३१ **पउमचरिय** (पर्व ४३) के अनुसार खरदूषण, रावण का भाई न होकर, किसी अन्य विद्याधरवश का राजकुमार है, जिसने रावण की बहन चद्रनखा से विवाह किया हे। उन दोनो का पुत्र शम्बूक सूयहास नामक खग प्राप्त करने के उद्देश्य से साधना करता हे। १२ वष की तपस्या के पश्चात् खग प्रकट होता है। सयोग से लक्ष्मण, जो राम तथा सीता के साथ वन मे निवास करते है, वहा पहुँचते है। खग को देखकर वह उसे उठाते है और पास के बास को काटकर शम्बूक का सिर भी काट देते है। चद्रनखा अपने पुत्र से मिलने आया करती हे। उसे मरा हुआ देखकर वह विलाप करते-करते वन मे भटकती फिरती है और राम तथा लक्ष्मण के पास पहुँचती है। उन दोनो पर आसक्त होकर तथा दोनो से अस्वीकृत होकर वह अपने पति खर-दूषण तथा रावण को लक्ष्मण द्वारा शम्बूक-वध की सूचना देती है। इस प्रकार शम्बूक-वध राम-रावण-युद्ध तथा सीता-हरण का कारण वन गया है।

६३२ **पउमचरिय** का यह वृत्तान्त किंचित परिवर्तन सहित अनेक राम-कथाओ मे पाया जाता है। तेलुगु **रगनाथ रामायण मे** शूर्पणखा का पति विद्युज्जिह्व रावण के विरुद्ध विद्रोह करने के कारण रावण द्वारा मारा जाता है। बाद मे उसका पुत्र जम्बुमाली अथवा जम्बुकुमार अपनी माता शूपणखा से समस्त वृत्तान्त सुनकर रावण से प्रतिकार लेने के उद्देश्य से एक दिव्य खग की साधना करने जाता है। खग प्रकट होने पर लक्ष्मण उसे देखते है और बॉस की झाडी पर वह यह खग चलाकर सयोग से तपस्या करते हुए जम्बुकुमार का वध करते है (दे० अरण्यकाड, १०)। सारलादास कृत **महाभारत** मे लक्ष्मण द्वारा शूर्पणखा के पुत्र जपासुर का वध उल्लिखित है। एक अन्य उडिया रचना भुइया माधवदास कृत **विचित्र रामायण** मे भी इस पुत्र का नाम जपासुर है।

आनन्द रामायण मे भी शूर्पणखा के पुत्र साब राक्षस का उल्लेख है, जो ब्रह्मा से एक दिव्य खग प्राप्त कर उसी खग से लक्ष्मण द्वारा मारा जाता है (दे० १, ७, ४१-४३)। **भावाथ रामायण** (३, ८) की कथा आनन्द रामायण पर निर्भर है। कन्नड **तोरवे रामायण** मे प्रस्तुत वृत्तान्त का परिवर्तित रूप मिलता है। शम्बूक राक्षस इन्द्र-पद प्राप्त करने के लिए वन मे इतने काल से तपस्या कर रहा था कि एक वल्मीक उसके शरीर के चारो ओर बन गया था। इन्द्र और नारद व्याध के रूप मे लक्ष्मण के पास आकर उनको मृगया खेलने का निमत्रण देते हैं। लक्ष्मण के चले जाने के बाद इन्द्र एक वराह की सृष्टि करते है जो इन्द्र की प्रेरणा से शम्बूक के वल्मीक की ओर जाता है। लक्ष्मण उसे देखकर एक वाण से वराह तथा शम्बूक दोनो का वध करते है (दे० अरण्य-काड, सधि ३)।

दक्षिण भारत के एक वृत्तान्त के अनुसार शूर्पणखा का पुत्र किसी तपस्वी के आश्रम मे जाकर पेडो का फल खाने लगा। तपस्वी न उसे पेड बन जाने का शाप दिया। शूर्पणखा के बहुत विनय करने पर तपस्वी ने शाप इस प्रकार बदल दिया कि जब विष्णु राम के रूप मे आकर उस वृक्ष की एक शाखा काट लेगे तब शूर्पणखा का पुत्र मुक्ति प्राप्त करेगा (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० १६, भाग १३, पृ० १७२)।

जावा के **सेरतकाड** मे एक वाण द्वारा सुरपन्दकी के पुत्र के वध का उल्लेख मिलता हे। **सेरी राम** के अनुसार शूपणखा का पुत्र दर्सासीगा (दे० अनु० ४६३) अपनी तपस्या द्वारा चद्रवाली नामक खग प्राप्त करता है तथा सयोग से लक्ष्मण द्वारा मारा जाता है।

श्याम के **रामकियेन** (अध्याय १७) मे सेरी राम से मिलता जुलता वृत्तान्त मिलता हे। अन्तर यह ह कि सदा की भाति राम कियेन की कथा पर रामायण का प्रभाव अधिक स्पष्ट है। रावण की बहन का नाम सम्मनक्खा है, जिसका पति जिह्व तथा पुत्र कुनकश है। कुभकश ने गोदावरी के तट पर एक दिव्य खग की प्राप्ति के लिए साधना की थी जिस पर ब्रह्मा ने प्रसन्न होकर उस खग को कुभकश के सामने गिराया था। ब्रह्मा ने प्रकट होकर कुभकश को यह खग हाथ मे नही दिया इस कारण कुभकश ने उमे ~ही ग्रहण किया। बाद मे लक्ष्मण वहाँ आकर उसे उठाते है। यह देखकर कुभकश लक्ष्मण से युद्ध करने लगता है और मारा जाता है। इस घटना के पश्चात् ही रावण किसी दिन सयोग से जिह्व का वध कर डालता है। जिह्व-वध का वृत्तान्त सेरी-राम के अनुसार है (दे० अनु० ४६३)। **ब्रह्मचक्र** मे लक्ष्मण द्वारा शूर्पणखा की दो पुत्रियो के वध का वर्णन किया गया है (दे० अनु० ४६५)।

घ। राम का अश्वमेध

६३३ वाल्मीकीय युद्धकाण्ड के अन्तिम सर्ग के अनुसार राम ने दस बार **अश्वमेध-यज्ञ** का आयोजन किया था (दे० अनु० ६१०)। उत्तरकाण्ड (सर्ग ८३-६६) मे राम के प्रथम अश्वमेध का विस्तृत वर्णन मिलता है। राम ने पहले राजसूय सम्पन्न करना चाहा किन्तु भरत ने इसका विरोध किया। अश्वमेध-यज्ञ के द्वारा इन्द्र के ब्रह्म-हत्यादोष-निवारण तथा इल-इला की वर-प्राप्ति के वर्णन के बाद गोमती के तट पर नैमिष वन मे रामाश्वमेध के लिये यज्ञभूमि को तैयार किया गया तथा सुग्रीव, विभीषण, शत्रुघ्न आदि को निमत्रण दिया गया। इस यज्ञ के अवसर पर कुश और लव ने **रामायण का गान** किया (दे० अनु० ७३७) तथा सीता ने अपने सतीत्व की शपथ **खाकरकिया भूमि मे प्रवेश** (३५७ ० नुअ ०दे)। बाद मे राम ने और बहुत से यज्ञ

किये थे जिनके लिए एक काचनी सीता का निर्माण हुआ, क्योंकि राम ने सीता के भूमि-प्रवेश के पश्चात् अन्य विवाह नही किया

न सीताया परा भार्या वव्रे स रघुनन्दन ।।
यज्ञे यज्ञे च पत्न्यथ जानकी काचनीभवत् ।।७।।

(सर्ग ९९)

रघुवश (सर्ग १४, ८७) से लेकर परवर्ती रामकथाग्रो मे प्राय इस स्वर्णमयी सीता का उल्लेख है । **अग्नि पुराण** मे लिखा है कि राम ने अश्वमेध द्वारा अपनी ही आराधना की—**वासुदेव स्वमात्मानमश्वमेधैरथायजत्** (१०, ३३) । **आनन्द रामायण** के यागकाड के अनुसार राम ने सीता के रहते भी अश्वमेध का आयोजन किया था । इस रचना के जन्मकाड (सर्ग ४) मे इसका भी उल्लेख मिलता है कि राम ने सीता-त्याग के पश्चात् एक सौ अश्वमेध करने का सकल्प किया था । इसके अतिरिक्त **अध्यात्म रामायण** (७, ४, २७) तथा **आनन्द रामायण** (१, १३, २००) के अनुसार राम ने कोटि-कोटि शिवलिग स्थापित किए थे—**कोटिश स्थापयामास शिवलिंगानि सर्वश ।**

६३४ **वाल्मीकि रामायण** मे कही भी राम के **ब्रह्महत्या-दोष** का निर्देश नही मिलता, किन्तु पौराणिक साहित्य मे इसका उल्लेख किया गया है कि रावण-वध के कारण राम को ब्रह्महत्या का दोष लगा था और उसी दोष के प्रायश्चित्त-स्वरूप उन्होने अश्वमेध किया था ।

स्कन्द पुराण मे सभवत पहले पहल राम की ब्रह्महत्या का उल्लेख किया गया हो । सेतुमाहात्म्य के अनुसार ब्रह्महत्या से विमोक्ष प्राप्त करने के लिए कोटितीर्थ मे (अध्याय २७) तथा गधमादन मे (अध्याय ४४) राम ने शिवलिग की स्थापना की थी । ब्रह्मखण्ड मे राम वसिष्ठ से कहते है कि मेरे द्वारा बहुत से ब्रह्मराक्षसो की हत्या हुई है, इस पाप की शुद्धि के लिये कौन तीर्थ श्रेष्ठ माना जाता है

मया तु सीताहरणे निहता ब्रह्मराक्षसा ।
तत्पापस्य विशुद्ध्यर्थं वद तीर्थोत्तमोत्तमम् ।।२।।

इस पर वसिष्ठ धर्मारण्य का निर्देश करते है और राम वहाँ जाकर उस तीर्थ का जीर्णोद्धार करते है (दे० धर्मारण्यखण्ड, अध्याय ३१) ।

जैमिनीय अश्वमेध (अ० २९) मे इसका प्रथम उल्लेख किया गया है कि राम ने ब्रह्महत्या के प्रायश्चित्त-स्वरूप अश्वमेध करने का सकल्प किया था ।

पद्मपुराण के पातालखण्ड के अनुसार राम ने अपने को ब्रह्महत्या का दोषी मानकर वसिष्ठ से निवेदन किया कि वह उस पाप के प्रायश्चित्त का उपाय बता दे

और वसिष्ठ ने अश्वमेध के आयोजन का परामर्श दिया।[1] इस अश्वमेध के विस्तृत वर्णन के अतर्गत हनुमान् द्वारा शिव की तथा बाद मे इद्रादि देवताओ की पराजय का उल्लेख किया गया है (दे० अध्याय ४४)। **रामचन्द्रिका** (प्रकाश ३५) के अनुसार राम ने सीतात्याग के पाप के प्रायश्चित्त के लिए अश्वमेध किया था।

ड। नवीन सामग्री

राम की यात्राएँ

६३५ अर्वाचीन रामकथा-साहित्य मे राम के अभिषेक के पश्चात् उनकी अनेक यात्राओ का उल्लेख मिलता है। उनमे से **लका की यात्रा** सब से अधिक प्रसिद्ध है। **नृसिंहपुराण** (अध्याय २७) के अनुसार राम ने उस अवसर पर लका मे पुण्यारण्य की स्थापना की थी। **स्कन्दपुराण** के नागरखण्ड (अध्याय १०१) मे माना गया है कि राम ने लक्ष्मण की मृत्यु के पश्चात सुग्रीव को साथ लेकर लका की यात्रा की थी तथा विभीषण को देव-पूजा का उपदेश देकर सेतुप्रात मे तीन रामेश्वर स्थापित किए तथा विभीषण के अनुरोध पर सेतु नष्ट किया था। **पद्मपुराण** के सृष्टिखण्ड (अध्याय ३५) मे इस यात्रा का विस्तृत वर्णन किया गया है। सीता के भूमि-प्रवेश के बाद राम ने लक्ष्मण को अयोध्या का राज्यभार सौप दिया और वह भरत के साथ पुष्पक पर चढ कर पश्चिम म भरत के पुत्रो से तथा अनतर पूव मे लक्ष्मण के पुत्रो से मिले। बाद मे दोनो दक्षिण की ओर चले गये तथा सुग्रीव को साथ लेकर लका मे पहुँच गए। विभीषण ने राम को वामन की वैष्णवी मूर्ति प्रदान की तथा सेतुभग के लिए राम से निवेदन किया। राम न उस निवेदन को स्वीकार किया तथा शत्रुघ्न से मिलकर कान्यकुब्ज मे वामन की स्थापना की।

ऐसे वृत्तान्त भी मिलते है जिनमे राम विभीषण को सहायता देने के उद्देश्य से लका की यात्रा करते है। **नारद पुराण** (पूर्व खण्ड ७६, २६) मे इसका उल्लेखमात्र किया गया है कि राम ने द्रविड देश मे विभीषण को मुक्त किया था किन्तु **पद्म पुराण** के पातालखण्ड (अध्याय १००) मे तत्सम्बन्धी कथा इस प्रकार है। शकर किसी दिन शभु नामक ब्राह्मण के रूप मे अयोध्या आ गए थे कि राम को यह समाचार मिला कि द्रविडो ने विभीषण को कैदी बना लिया है। इसपर राम शभु के साथ दक्षिण जाकर

---

१ दे० अध्याय ८। शिवप्रतिष्ठा (अनु० ५८०) के प्रसग मे भी राम के ब्रह्म-हत्या दोष का उल्लेख है। स्कद पुराण (अवतीखण्ड, रेवा खण्ड अध्याय ८३) मे हनुमान् भी राक्षसो के वध के कारण ब्रह्महत्या-दोषी माने गए है। इस दोष के निवारणार्थ उन्होने नर्मदा तीर्थ पर बहुत वर्षो तक शिव की उपासना की।

श्रीरग के कारावास मे विभीषण से मिले । वहा पता चला कि विभीषण ने अनजान मे एक विप्र को पैरो से कुचलकर मार डाला था, इसके बाद विभीषण एक पग भी आगे नही बढ सका था किन्तु ब्राह्मणो से मारे जाने पर वह नही मर सका था । अब ब्राह्मण लोग राम से निवेदन करने लगे कि वह विभीषण का बध करे । राम ने विभीषण को अपना भक्त कहकर उसे छुडाया तथा विभीषण **'अज्ञान ब्रह्महत्या'** का उचित प्रायश्चित करके अपनी राजधानी लौटा । **आनन्द रामायण** के अनुसार राम तथा सीता न शतस्कध रावण तथा मूलकासुर द्वारा पराजित विभीषण की सहायता के लिए लका की यात्रा की थी ।[1]

६३६ **वाल्मीकि रामायण** मे भरत द्वारा गधर्व देश की **विजय-यात्रा** का वर्णन मिलता है (सर्ग १००-१०१) । इसके बाद लक्ष्मण के पुत्रो के लिए कारुपथ तथा मल्ल देश को भी वश मे कर लिया गया (सर्ग १०२), इस विजययात्रा का उल्लेख मात्र किया गया है । तिलक नामक टीका मे माना गया है कि लक्ष्मण ही के द्वारा राम ने उन देशो को अपने अधिकार मे किया था । **आनन्द रामायण** मे भी इन विजययात्राओ का वर्णन है—भरत गधर्वो को तथा लक्ष्मण मल्लो को परास्त करते है (राज्यकाण्ड, सर्ग ६) । इसके बाद राम स्वय पृथ्वी के समस्त राजाओ पर विजय प्राप्त करने के उद्देश्य से विमान पर चढकर भारत, जम्बूद्वीप, प्लक्षद्वीप आदि सात द्वीपो की विजय-यात्रा करते है (दे० राज्यकाण्ड, सर्ग ७-६) ।

आनन्द रामायण के 'देहद्वयकरण' नामक सर्ग (राज्यकाण्ड, सर्ग २१) मे निम्नलिखित कथा मिलती है । एक बार ऐसा सयोग हुआ कि **वाल्मीकि** और **विश्वामित्र** दोनो ने एक ही समय दूत भेजकर राम को अपने यज्ञ के लिए निमन्त्रण दिया । राम ने दोनो का निमन्त्रण स्वीकार किया तथा पुरवासियो को विभिन्न सवारियो पर बैठाकर अयोध्या से निकले । जहा विश्वामित्र और वाल्मीकि के मार्ग अलग थे, वहा से राम ने सबो के दो रूप बनाये और इस प्रकार वह एक ही समय दोनो मुनियो क यज्ञ मे उपस्थित हुए ।

---

१ दे० अनु० ६४०-६४१ । रामकियेन (अध्याय ३६) मे भी विभीषण दो बार सहायता माँगता है । प्रथम बार रावणसखा महागाल देवासुर ने लङ्का का अवरोध किया था और हनुमान् ने राम के आदेशानुसार वहा जाकर उसका वध किया। दूसरी बार रावण का पुत्र बैनासूरिवश विभीषण को कारावास मे रखकर स्वय लका का राजा बन गया । राम ने भरत तथा शत्रुघ्न के नेतृत्व मे अपनी सेना भेज दी, बैनासूरिवश तथा उसके सहायक मारे गये और विभीषण ने पुन लका का राज्य प्राप्त किया ।

आनन्द रामायण के विलासकाण्ड (सर्ग ५) मे राम-सीता की जलक्रीडा तथा जन्म काण्ड (सर्ग २) मे दोनो के वनविहार का वर्णन मिलता है। इस सामग्री पर कृष्ण-कथा का प्रभाव अत्यन्त स्पष्ट है, राम बहुत-सी स्त्रियो को आश्वासन देते है कि वे कृष्णावतार मे उनकी पत्नियाँ बन सकेगी (दे० अनु० ७८७)।

अन्यत्र भी राम की इन विलास-क्रीडाओ का वर्णन किया गया है, उदाहरणार्थ—रामलिंगामृत (सर्ग १३), तुलसीदास कृत गीतावली के उत्तरकाण्ड मे राम-हिंडोला, होलिकोत्सव, केशवदास की रामचन्द्रिका मे वाटिका-विहार (प्रकाश ३१) तथा जल-विहार (प्रकाश ३२)।

आनन्द रामायण (राज्यकाण्ड सर्ग ११-१२, मनोहरकाण्ड सर्ग १२) मे राम की मृगया तथा रामचन्द्रिका (प्रकाश २६) मे राम के चौगान का भी उल्लेख मिलता है।

सीता द्वारा रावण-वध

६३६ बहुत सी अर्वाचीन रामकथाओ मे सीता द्वारा **सहस्रस्कन्ध रावण** के वध का वर्णन मिलता है,[1] **अद्भुत रामायण** (दे० सर्ग १७-२७) की तत्सम्बन्धी विस्तृत कथा इस प्रकार है। सहस्रस्कध रावण विश्रवा तथा कैकसी का पुत्र है जो पुष्कर मे राज्य करता है। किसी दिन विश्वामित्र आदि मुनि अयोध्या आकर रावण-वध के कारण राम की प्रशसा करते है। इस पर सीता मुस्कराकर सहस्रस्कध रावण की कथा सुनाती है, जिसने इन्द्र आदि देवताओ को पुष्कर मे कारागार मे रख दिया है। यह सुनकर राम-सीता सेना के साथ पुष्कर जाते है। रावण वायव्य शर से समस्त सेना अयोध्या तक उडाता है तथा द्वन्द्व युद्ध मे राम का वध करता है। तब सीता देवी का महाविकट रूप धारण कर सहस्रस्कध रावण तथा उसके योद्धाओ का भी सिर काट कर नाचने लगती है, जिससे समस्त सृष्टि सकट मे पड जाती है (**ननर्त जानकी देवी घोरकाली महाबला २३, ६३**)। ब्रह्मा आदि देव आकर नृत्य समाप्त करने का सीता से अनुरोध करते है। सीता उनके अनुरोध को अस्वीकार करती है क्योकि राम मारे गये हैं। इस पर ब्रह्मा राम को पुनर्जीवित करते है और राम परमशक्ति के रूप मे सीता की स्तुति करके उनसे अनुरोध करते है कि वह अपना विकट रूप त्याग दे। तब सीता अपना साधारण रूप धारण कर लेती है और राम के साथ पुष्पक पर चढ कर अयोध्या लौटती है।

---

१ जैमिनी भारत के आश्रमपर्व मे इसके विषय मे जो कथा मिलती है, वह सहस्रमुखरावण-चरित्र के नाम से प्रचलित है। दे० मद्रास कैटालाग न० डी० २०६८।

बगाली रामकथा साहित्य मे सहस्रस्कध रावण के वध का वर्णन अद्भुत रामायण पर आधारित है (दे० अनु० २८६-२८७) ।

उडिया रामसाहित्य मे प्रस्तुत प्रसग के दो अन्य रूप मिलते है। **विलका रामायण** के पूर्व-खण्ड के अनुसार विलका लका के दक्षिण मे एक सो बीस योजन की दूरी पर स्थित थी । जब वहाँ के राजा सहस्रस्कध रावण ने राम, लक्ष्मण तथा हनुमान को परास्त किया था, तब सीता न मगला देवी से पुष्प-धनुष तथा पाच शर प्राप्त कर रणभूमि मे प्रवेश किया । उन्होने मनोहर रूप धारण कर पुष्प-धनुष के पाच शर रावण पर चलाये और राम ने कामातुर रावण के समस्त सिर काट दिये । **विलका-खण्ड** की कथा इस प्रकार है । दशस्कध रावण के वध तथा विभीषण के अभिषेक के बाद, पहले अगद को तथा बाद मे हनुमान को सहस्रस्कध रावण के पास सधि करने के उद्देश्य से विलका भेजा गया । सहस्रस्कन्ध रावण सधि का प्रस्ताव ठुकराकर युद्ध करने आया । उसने राम तथा लक्ष्मण को शक्ति-प्रहार द्वारा मूर्च्छित करके सीता का हरण करना चाहा किन्तु सीता के शरीर से एक गधर्व-सेना निकली जिसने रावण का वध किया ।

आगारिया नामक आदिवासी जाति मे (दे० अनु० २७७) सहस्रस्कध रावण के विषय मे निम्नलिखित कथा प्रचलित है । रावण-वध के बाद सीता ने राम से कहा कि पाताल मे एक सहस्रस्कध रावण निवास करता है । इस पर राम ने बाण मार कर उस रावण को आहत तो किया किन्तु उसने रामबाण को अपने पैर से निकालकर कहा— जिसने तुमको भेजा है उसी के पास जाकर उसे मार डालो । बाण के आघात से राम मूर्च्छित होकर भूमि पर गिर पडे । तब सीता ने राजा लोगुन्दी के पास जाकर उससे कोयले का एक पात्र माँग लिया और यह निवेदन किया कि आज्ञासुर तथा लोहासुर मेरे साथ भेज दिये जायँ । राजा की स्वीकृति प्राप्त होने पर सीता एक हाथ मे कोयले का पात्र तथा दूसरे मे तलवार लिये उन दोनो के साथ चल पडी । कोयले के धुएँ के कारण सीता का रग काला पड गया । उन्होने रावण के पास पहुँचकर उसके सिर काट डाले और आज्ञासुर-लोहासुर ने रावण का रक्त पी लिया ।[1]

---

१ ब्रजलोक साहित में प्रचलित एक कथा के अनुसार सीता ने पलका-निवासी सहस्रस्कध रावण का बध किया और इसके बाद कलकत्ते मे काली माई हो गयी । दे० भारतीय साहित्य वर्ष २, अक ३, पृ० ६४ । मौलाना दाऊद कृत चन्दायन (३५१, ५) मे उल्लिखित मुहावरा (लका छाडि पलका जाऊँ) जायसी की पदमावत (२०६, ३) मे भी मिलता है और आजकल तक बोलियो मे प्रचलित है । 'पलका' पाताल लका से विकसित हुआ होगा । कुतुवन कृत मिरगावती (१०५, ३) मे पलका का भी उल्लेख है ।

६४० **आनन्द रामायण** के राज्य काण्ड (सर्ग ४, ८०-८५) के अनुसार **शतशीर्ष रावण** श्रोण नदी के तट पर मायापुरी मे निवास करता था। कुभकर्ण का पोता निकु भ-पुत्र पौड्रक उससे सहायता मागने गया, दोनो ने मिलकर विभीषण को परास्त कर दिया और लका मे राज्य करने लगे। विभीषण सहायता के लिए राम के पास आया। राम सीता तथा विभीषण के साथ लका चले गये। राम युद्ध मे परास्त हुए किन्तु सीता ने शतशीर्ष रावण तथा पौड्रक दोनो का वध किया। अशोकवन मे रावण से सवाद करते समय सीता ने इस घटना के विषय मे भविष्यवाणी की थी (दे० १, ६, ६३)। **तत्त्वसग्रह रामायण** (७, १-२) मे निम्नलिखित कथा मिलती है। मुनि किसी दिन अयोध्या आकर राम से कहने लगे कि एक शतानन रावण रक्तविन्दु नामक असुर के साथ सप्त समुद्र के उस पार निवास करता है। सीता ने उस रावण का वध करने की इच्छा प्रकट की, राम ने उस प्रस्ताव को स्वीकार किया और सीता तथा हनुमान् को एक विशाल सेना के साथ पुष्पक पर भेज दिया। सीता ने युद्ध मे १८ भुजाओ वाला विकट रूप धारण कर शतानन रावण का वध किया। शतस्कध रावण के वध की कथा अन्यत्र भी पाई जाती है, उदाहरणार्थ—सीताविजय (मद्रास कैटालॉग, न० आर० १४८ और ६६४), शतमुखरावणचरित (वही न० आर० ६४७), अमृतराव ओक कृत मराठी शतमुखरावणवध, राममोहन वन्द्योपाध्याय कृत बगाली रामायण।

उडिया **विलका रामायण** के उत्तरखड का वर्ण्य-विषय है काली का रूप धारण करने वाली सीता द्वारा लक्षशीर्ष रावण का वध।

६४१ **आनन्द रामायण** (७, सर्ग ४-६) के अनुसार शतशीर्ष-रावण के वध के कुछ समय बाद विभीषण फिर राम की सहायता माँगने के लिए अयोध्या आया। अब की बार कुभकर्ण के **मूलकासुर** नामक पुत्र ने पाताल-निवासी राक्षसो की सहायता से छ महीने के घमासान युद्ध के बाद विभीषण को लका से निकाल दिया था। राम ने अपनी तथा सुग्रीव की सेना के साथ विमान पर चढकर लका के लिए प्रस्थान किया। लका मे सात दिन तक मूलकासुर के साथ युद्ध हुआ जिसमे हनुमान् ने पहले की भाँति द्रोणाचल ले आकर मृत बानरो को जिलाया। इसके बाद ब्रह्मा ने आकर राम से कहा कि एक तो मैंने मूलकासुर को यह वर दिया है कि वह किसी वीर के हाथ से नही मरेगा, दूसरे, किसी ऋषि ने उसको सीता के हाथ से मरने का शाप दिया। यह सुनकर राम ने गरुड को आदेश दिया कि वह सीता को ले आएँ। सीता ने लका पहुँचकर अपनी तामसी छाया को युद्ध के लिए प्रेरित किया। इतने मे वानर मूलकासुर का यज्ञ विध्वस करके लौटे। अब सीता की तामसी छाया ने चडी का रूप धारण

कर लिया तथा सात दिन तक युद्ध करने के पश्चात् मूलकासुर का वध किया। आनन्द रामायण (१,६,६४) मे सीता-रावण-सवाद के अन्तर्गत भी इस घटना का उल्लेख मिलता है। **भावार्थ रामायण** (७, अध्याय ७०-७२) के अनुसार कैकेयी ने मूलकासुर की माता को परामश दिया कि वह अपने पुत्र को तपस्या तथा प्रतिकार के लिए प्रेरित करे। वर-प्राप्ति के बाद मूलकासुर ने विभीषण को लका से निकाल दिया तथा सीता ने पुरुष का रूप धारण कर उसको मार डाला। **रामलिगामृत** (सर्ग १५) मे भी सीता द्वारा कुभकर्ण के पुत्र **कुभगभ** के वध का उल्लेख किया गया है।

३ रावण-चरित

६४२ उत्तरकाण्ड के प्रारम्भ मे जो विस्तृत रावण-चरित पाया जाता हे उसे प्रक्षिप्त उत्तरकाण्ड का एक नया प्रक्षेप मानना चाहिए (दे० अनु० ६१८)। प्रस्तुत निबन्ध के सातवे अध्याय मे यह भी दिखलाया गया है कि रामचरित से अलग रावण के विषय मे प्राचीन स्वतन्त्र काव्य का कही भी निर्देश नही मिलता (दे० अनु० १०२)। वैदिक साहित्य मे रावण, कुबेर, विश्रवा, वैश्रवण आदि का सकेत नही किया गया है। पाली जातकट्ठवण्णना मे वेस्सवण (यक्खो के राजा) का बहुत से स्थलो पर उल्लेख किया गया है, रावण का कही भी नही। महाभारत मे रावण का उल्लेख केवल राम-कथा के प्रसग मे आया है, किन्तु धनेश, कुबेर, वैश्रवण आदि का उल्लेख स्वतन्त्र रूप से असख्य स्थलो पर किया गया है। इससे यह अनुमान दृढ हो जाता है कि वैश्रवण अथवा कुबेर रावण-कथा से पूर्व ही प्रसिद्ध हो चुके थे। बाद मे ही रावण के साथ उनका सम्बन्ध स्थापित किया गया है। मूल रामायण के अनुसार रावण प्रसिद्ध नही था। राम जब जटायु से यह सुनते हे कि रावण ने सीता का अपहरण किया है, तो पूछते है कि उस राक्षस का पराक्रम और रूप कौन सा है ? वह क्या करता है ? कहा रहता है ?—

कथवीर्य कथरूप किकर्मा स च राक्षस।
क्व चास्य भवन तात ब्रूहि मे परिपृच्छत ॥७॥

(अरण्यकाण्ड, सर्ग ६८)

सस्कृत हस्तलिपियो की सूचियो मे रावण के नाम बहुत सी अर्वाचीन रचनाओ का उल्लेख मिलता है, उदाहरणार्थ—अर्कप्रकाश (वैद्य), कुमार-तन्त्र (वैद्य), इन्द्रजाल (उड्डीश), प्राकृतकामधेनु, प्राकृतलकेश्वर, ऋग्वेद-भाष्य, रावणभेट (यजुर्वेद) आदि। बलरामदास रामायण मे माना गया है कि रावण ने वैदिक मन्त्रो का सम्पादन करके वेदो की एक नई शाखा चलाई।

६४३ रावण-चरित भिन्न-भिन्न रामकथाओ मे विभिन्न स्थलो पर रखा गया है। **वाल्मीकि रामायण** के अनुसार राक्षसो के वध के कारण राम की प्रशसा करने के लिए तपस्वी रामाभिषेक के पश्चात् अयोध्या आये और उसी अवसर पर अगस्त्य ने राक्षस-वश का इतिहास सुनाया था। तदनुसार बहुत-सी रामकथाओ मे रावण की कथा उत्तरकाण्ड के अन्तर्गत मिलती है। **महाभारत मे** रावणचरित का सक्षिप्त वर्णन रामोपाख्यान के प्रारम्भ मे रखा गया है। **जैन पउमचरिय** राक्षस तथा वानरवश के इतिहास से प्रारम्भ होता है तथा निम्नलिखित रामकथाओ मे भी रावण-चरित का कुछ वर्णन भूमिका मे ही किया गया है—तिब्बती तथा खोतानी रामायण, हिन्देशिया के सेरीराम तथा सेरत काण्ड, श्याम के रामकियेन तथा रामजातक।

काश्मीरी रामायण मे प्रस्तुत सामग्री सुदरकाण्ड के अन्तर्गत रखी गई है। लका मे सीता की खोज करते हुए हनुमान् नारद से मिलते है और नारद हनुमान् को लका की सृष्टि तथा रावणवश की कथा सुनाते है।

दक्षिण भारत के एक वृत्तान्त के अनुसार अगस्त्य ने सीताहरण के पूर्व वनवासी राम से रावणचरित का वर्णन किया था (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० १)।

क। वशावली

६४४ वाल्मीकि के प्रामाणिक काण्ड राक्षसवश के इतिहास के विषय मे मौन हैं। शूर्पणखा रावण की बहन और कुभकर्ण तथा विभीषण उसके दो भाइयो के अतिरिक्त एक तीसरे भाई खर का भी उल्लेख है, जिसका सेनापति दूषण था[1]। दाक्षिणात्य पाठ मे रावण की माता का नाम कैकसी है, अन्य पाठो के अनुसार निकषा उसका नाम था (गौ० रा० ५, ७६, प० रा० ५, ७५), भागवत पुराण (७,१,४३) मे केशिनी तथा उडिया राम-साहित्य मे नउकेशी का उल्लेख है।

युद्धकाण्ड मे रावण को क्षत्रिय की उपाधि दी गई है (द० ६, १०६, १६) किन्तु रामकथा के विकास के साथ-साथ रावण का भी महत्व बढने लगा था जिससे उत्तरकाण्ड के रचना-काल के समय तक रावण को **ब्रह्मा का वशज** माना गया है। उत्तरकाण्ड मे राक्षसवश की उत्पति तथा रावण की वशावली की कथा इस प्रकार है।

प्रजापति ने जल की सृष्टि करने के पश्चात् कुछ प्राणियो की सृष्टि की (**सत्वान-सृजत्**, ४, ६) तथा उनको जल की रक्षा करने का आदेश दिया। इनमे से कुछ ने उत्तर दिया—**रक्षाम**, दूसरो ने कहा—**यक्षाम** (४, १२)। अत ब्रह्मा ने पहले वर्ग को **राक्षस** तथा दूसरे वर्ग को **यक्ष** का नाम दिया। राक्षसो के दो नेता थे—हेति और

---

१ शूर्पणखा-रावण का खर दूषण के साथ जो सबध था, इस पर ऊपर (अनु० ४६३) विचार हो चुका है।

प्रहेति। हेति के पुत्र विद्युत्केश से सुकेश उत्पन्न हुआ (सर्ग ४)। सुकेश के तीन पुत्र उत्पन्न हुए—माल्यवान्, सुमाली और माली। तीनो ने तपस्या करके ब्रह्मा से अमरत्व का वरदान प्राप्त कर लिया तथा विश्वकर्मा ने उनके लिए त्रिकूट पर लका का निर्माण किया।[1] तब तीनो भाई देवताओ तथा तपस्वियो को सताने लगे, विष्णु ने माली का बध करके राक्षसो को परास्त कर दिया और वे सुमाली के नेतृत्व मे लका छोडकर रसातल चले गये (सर्ग ५-८)। कुछ समय बाद सुमाली किसी दिन अपनी पुत्री कैकसी के साथ पृथ्वी पर भ्रमण करने निकला। सुमाली ने विश्रवा के पुत्र

---

१ लका के वर्णन मे **स्वर्णप्राकारसवीता**' तथा '**हेमतोरणसवृता**' के विशेषणो का प्रयोग हुआ है (दे० ७, ५, २५)। इसके आधार पर स्वर्णलका विषयक कथाओ की उत्पत्ति हुई होगी। **आनन्द रामायण** (१, ६, २३३-२७६) की तत्सम्बन्धी कथा इस प्रकार है। विष्णु की कृपा से किसी दिन एक गज और एक ग्राह अपने-अपने शरीर छोडकर मुक्त हुए, विष्णु ने गरुड को उनके शरीर खाने की अनुमति दी। गरुड ने एक गृध्र का भी वध किया तथा गज-ग्राह-गृध्र के शव उठाकर क्षीरसागर के एक स्वर्ण वृक्ष की शाखा पर बैठ गया। शाखा टूट गई और गरुड उसे उठाकर लका ले गया। वहा पहुँचकर उसने तीन का शव खा लिया, गज-ग्राह-गृध्र की हड्डियो से वहाँ तीन शिखर बन गए जिससे त्रिकूट नाम चल पडा। गरुड उन शिखरो पर स्वर्ण शाखा रखकर चले गए। यह शाखा पाषाण के समान बन गई, राक्षस उसे न पहचान सके थे किन्तु लकादहन के समय वह द्रवित होकर गिर गयी और इससे लका की भूमि स्वर्णमयी बन गई। वाल्मीकि रामायण (३, ३५, २७-३२), कथा-सरित्सागर (द्वितीय लबक की चतुथ तरग १४१-१४४), कृत्तिवास रामायण (७, ८) तथा काश्मीरी रामायण (सुन्दर काण्ड न० २९) के तत्सबधी वृतान्त इससे अधिक भिन्न नही है। उन कथाओ मे गरुड प्राय हाथी और कच्छप का भक्षण करता है। महाभारतीय कथा (आदि पर्व, २५-२६) मे लका की ओर निर्देश नही मिलता। **रगनाथ रामायण** (६, १८) मे माना गया है कि वायु ने किसी समय हेमाद्रि के शिखर को उडा दिया था और वह समुद्र मे गिरकर त्रिकूट के नाम से विख्यात हुआ, सारलादास के महाभारत (वनपर्व) मे हेमाद्रि के स्थान पर मेरु का उल्लेख है। **भागवत पुराण** (८, २) मे गज-मोक्ष की कथा के अतर्गत क्षीरसागर मे स्थित त्रिकूट नामक पर्वत का उल्लेख तो किया गया है किन्तु इसमे लका का निर्देश नही मिलता।

वैश्रवण को (दे० अनु० ६४६) पुष्पक पर विराजमान देखकर अपनी पुत्री को विश्रवा[1] के पास भेज देने का निश्चय किया। अपने पिता के आदेशानुसार कैकसी विश्रवा के यहाँ चली गई। विश्रवा उस समय अग्निहोत्र कर रहे थे, उन्होंने कैकसी को पत्नी के रूप मे स्वीकार करके कहा कि तुम इस दारुण वेला मे (**दारुणाया तु वेलायम** ९, २२) आई हो, इसलिए तुम्हारे पुत्र क्रूरकर्मा राक्षस होगे। कैकसी के अनुनय करने पर विश्रवा ने उसे आश्वासन दिया कि उनका अन्तिम पुत्र धर्मात्मा होगा (दे० अनु० ५६६)। अत कैकसी ने क्रमश **दशग्रीव**, **कुम्भकर्ण**, **शूर्पणखा तथा विभीषण** को जन्म दिया। दशग्रीव तथा कुम्भकर्ण शीघ्र ही लोगो को सताने लगे (**लोकोद्वेगकरौ**) किन्तु धर्मात्मा विभीषण वेदो के अध्ययन मे अपना समय लगाकर नियताहार तथा जितेंद्रिय था (सर्ग ९)।

६४५ महाभारत के **रामोपाख्यान** (अध्याय २५९) मे पुलस्त्य वैश्रवण के पिता बन जाने के बाद स्वय विश्रवा का रूप धारण कर लेता है तथा **विभिन्न पत्नियो** से रावणादि को उत्पन्न करता है—पुष्पोत्कटा से रावण तथा कुभकर्ण को, मालिनी से विभीषण को तथा राका से खर तथा शूर्पणखा को।[2] **कूम पुराण** (पूव विभाग, अ० १९) के अनुसार विश्रवा ने देववर्णिनी से वैश्रवण को, कैकसी से रावण, कुभकर्ण शूर्पणखा तथा विभीषण को, पुष्पोत्कटा से महोदर, प्रहस्त, महापार्श्व, खर तथा कुभीनसी[3] को, राका से त्रिशिरा, दूषण तथा विद्युज्जिह्व को उत्पन्न किया था।

१ ब्रह्मा के पुत्र पुलस्त्य ने तृणविन्दु की पुत्री से विश्रवा को उत्पन्न किया था (दे० सर्ग २)।

२ तुलसीदास ने भी विभीषण को रावण की विमाता की सन्तान माना है—भयउ बिमात्र बधु लघु तासू। नाम विभीषण (रामचरितमानस १, १७६, ४)।

३ वाल्मीकि रामायण के एक प्रक्षिप्त अश मे (युद्धकाड, सर्ग ६९-७०) महापार्श्व और महोदर दोनो रावण के भाई माने गए है। उत्तर काड (सर्ग ५)के अनुसार महापार्श्व कैकसी का भाई तथा रावण का मामा था, अन्यत्र वह रावण का मत्री मात्र माना जाता है (सुन्दकाड सर्ग ४९, युद्धकाड, सर्ग १३ और ९८)। युद्धकाड के अनेक स्थलो पर **महोदर** की चर्चा है किन्तु रावण के साथ किसी रिश्ते का निर्देश नही मिलता (दे० सर्ग ६४, ६५ और ९७)। उत्तरकाड मे महोदर को पहले सुमाली का सचिव (सर्ग ११) तथा बाद मे रावण का सचिव (सर्ग १४ और २३) कहा गया है। वाल्मीकि रामायण मे दो **कुभीनसी** नामक राक्षसियो का उल्लेख है। पहली कुभीनसी सुमाली-केतुमती की पुत्री तथा कैकसी की बहन है (७, ५, ४०), दूसरी माल्यवान्

सौरपुराण (अ० ३०) की वशावली कूर्म पुराण के अनुसार है, अन्तर यह है कि इसमे पुष्पोत्कटा के पुत्र खर का उल्लेख नही मिलता। क्षेमेन्द्र कृत **दशावतारचरित** मे रावणादि को विश्रवा तथा पुष्पोत्कटा की सन्तान माना गया है। **आनन्द रामायण** (१, १३ २४) मे विश्रवा तथा कैकसी के तीन पुत्रो और तीन पुत्रियो का उल्लेख है—रावण, कुभकर्ण, क्रौची, शूर्पणखा, कुभनसी तथा विभीषण। **काश्मीरी रामायण** (सुन्दर काण्ड, न० ३०) मे रावण, खर, शूर्पणखा, कुभकर्ण, विभीषण तथा वैश्रवण ये सब सहोदर भाई-बहन माने जाते है। **अद्भुत रामायण** (दे० अनु० ६३६) के अनुसार सहस्रस्कध रावण भी विश्रवा तथा कैकसी का पुत्र था।

इतनी विभिन्नता से स्पष्ट है कि प्राचीन काल से ही कोई एक प्रामाणिक राक्षस वशावली प्रचलित नही है।

६४६ जैन तथा विदेशी रामकथाओ मे रावण की वशावली और अधिक भिन्न है। **पउमचरिय** के अनुसार सुकेश के तीन पुत्र है—माली, सुमाली और माल्यवान्। सुमाली का पुत्र रत्नस्रवा अपनी पत्नी केकसी से क्रमश दशमुख, भानुकर्ण, चन्द्रणखा तथा विभीषण को उत्पन्न करता है (पव ७)। वैश्रवण को यक्षपुर के राजा विश्वसेन तथा केकसी की बहन कौशिकी का पुत्र माना जाता है।

गुणभद्र के **उत्तरपुराण** मे रावण के पूर्वजो की नामावली इस प्रकार है—महस्त्रग्रीव, शतग्रीव, पचासद्ग्रीव, पुलस्त्य और रावण। सघदास की **वसुदेवहिण्डि** मे क्रम इस प्रकार है—बलि, सहस्रग्रीव, पञ्चशतग्रीव, शतग्रीव, पञ्चासद्ग्रीव, विशतिग्रोव। विशतिग्रीव की चार पत्नियाँ है—देववर्णिनी, वक्रा, कैकेयी तथा पुष्पकूट। कैकेयी (यह कैकसी ही होगी) से रावण, कुम्भकर्ण, विभीषण, त्रिजटा तथा शूर्पणखा जन्म लेते है।

सेरीराम के अनुसार ब्रह्मराज नामक इन्द्रपुर का राजा ब्रह्मा का वशज था, उसके एक पुत्र का नाम चित्रबहा (विश्रवा) था। चित्रबहा ने दतिआ कूम्रच नामक राक्षस को परास्त कर उसकी पुत्री रक्षपन्दो से विवाह किया, रक्षपन्दी से दशस्कन्ध रावण का जन्म हुआ। रावण दुराचार के कारण निर्वासित होकर लका पहुँच गया, इसके बाद ही कुम्भकर्ण, बिनुसनम (विभीषण) और सूर पन्दाकि (शूर्पणखा) उत्पन्न हुए।[1] **सेरत काण्ड** मे चित्रबहा एक पत्नी इन्द्रतनी से रावण को उत्पन्न करता है

की नतिनी तथा विश्ववसी-अनला की पुत्री है (७, २५, २३)। मधु ने अनला की पुत्री कुभीनसी का हरण करके उससे लवण को उत्पन्न किया (७, ६१, १७)।

१ राफल्स की हस्तलिपि के अनुसार उनकी जन्मकथा इस प्रकार है। लका मे पहुँचने के बाद रावण ने अपने साथियो के हाथ से अपने माता-पिता के

तथा दूसरी पत्नी सुकेशी से अम्बकर्ण (कुम्भकर्ण), सर्पणखा (शूर्पणखा) तथा विभीषण को। इस वृत्तान्त मे कुम्भकर्ण तथा शूर्पणखा यमल है। श्याम के **रामकियेन** मे (अध्याय ३) चतुरबक्त्र के पुत्र लस्तियेन (पुलस्त्य) की पाँच पत्नियो का उल्लेख किया गया है—(१) श्री सुनन्दा, कुबेर की माता, (२) चित्रमाली, देवनासुर की माता, (३) सुवर्णमाला, अशधाता की माता, (४) वरप्रभा, मारण की माता, (५) रजता जो दशकठ, कम्भकरण, विभेक (विभीषण), दूषण, खर और सम्मक्खा (शूर्पणखा) की माता है।

६४७ **रामजातक** मे दशरथ तथा वैश्रवण का एकीकरण किया गया है तथा रावण को दशरथ का भतीजा माना गया है (दे० अनु० ३३६)। **पालकपालाम** के अनुसार ब्रह्मा ही दशरथ की देवरानी के गर्भ मे प्रवेश करते है और हाथ मे धनुष तथा तलवार लिये जन्म लेकर रावण कहलाते है। **ब्रह्मचक्र** मे रावण की जन्मकथा इस प्रकार है। लका के महाराज की पुत्री विवाह करना अस्वीकार करती है और किसी ऋषि के यहाँ वन मे साधना करने जाती है। किसी दिन ब्रह्मा उसके पास आकर कहते है कि तुम तीन पुत्रो की माँ बनने वाली हो तथा उसकी नाभि तीन बार हाथ से छूकर चले जाते हैं। बाद मे वह ब्रह्मचक्र (रावण), कुम्भकरण तथा विभीषण को जन्म देती है, तीनो ब्रह्मा की सन्तान माने जाते हे। बाद मे ब्रह्मा से वर पाकर रावण पृथ्वी पर का सबसे बडा योद्धा बनना चाहता है, कुम्भकर्ण नीद चुनता है और विभीषण प्रज्ञा तथा धार्मिकता माग लेता है। ब्रह्मा ने रावण को आश्वासन दिया कि तुम बुद्ध तथा वानरो को छोडकर सबो पर विजय प्राप्त कर सकोगे।

६४८ वाल्मीकि रामायण अथवा महाभारत मे रावण-कुम्भकरण के **पूर्वजन्म** अथवा शाप के कारण उनकी राक्षस-योनि-प्राप्ति का कही भी उल्लेख नही मिलता। अर्वाचीन रामकथाओ मे इसके विषय मे सबसे व्यापक वृत्तान्त यह है कि विष्णु के द्वारपाल जय-विजय शापवश तीन बार क्रमश हिरण्यकशिपु-हिरण्याक्ष, रावण-कुम्भकरण तथा शिशुपाल-दन्तवक्त्र के रूप मे पृथ्वी पर प्रकट हुए। रावण-कुम्भकर्ण के अगले जन्म के विषय मे एक अर्वाचीन वृत्तान्त आगे (अनु० ७४१) देख ले।

(१) **हिरण्यकशिपु** विषयक प्राचीनतम कथाएँ जय-विजय के सम्बन्ध मे मौन है। **महाभारत** के **आदिपर्व** (६१, ५) मे दिति-पुत्र हिरण्यकशिपु का उल्लेख है, जो

पास तीन कमल भेजकर उनको यह सन्देश दिया कि इन फूलो को खाने से दो पुत्र तथा एक पुत्री उत्पन्न होगे। जन्म के बाद ही उनको लङ्का भेजना चाहिए नही तो उनके माता-पिता मर जाएँगे। चित्रबहा तथा उसकी पत्नी ने अपनी सन्तान को लङ्का नही पहुँचा दिया जिससे दोनो मर गये।

शिशुपाल के रूप मे जन्म लेता है। वह नृसिंह द्वारा नही मारा जाता है, इसका पुत्र प्रह्लाद विष्णु-भक्त नही होता तथा इसके भाई हिरण्याक्ष का निर्देश मात्र भी नही मिलता। **शातिपर्व** (३२६, ७३) मे नृसिह द्वारा हिरण्यकशिपु का वध तथा वाराह द्वारा हिरण्याक्ष का वध उल्लिखित है किन्तु दोनो मे किसी सम्बन्ध का उल्लेख नही है। **हरिवश** के प्रथम पर्व (अध्याय ४१) मे दैत्यराज हिरण्यकशिपु की कथा इस प्रकार है। वह ११५०० वर्ष तक तपस्या करके ब्रह्मा से देव-असुर-गन्धर्वादि द्वारा अवध्यता का वर प्राप्त कर लेने के पश्चात् अत्याचार करने लगा जिससे विष्णु ने नृसिंह का रूप धारण कर उसका वध किया। द्वितीय पर्व के अनेक स्थलो पर (अर्थात् अध्याय २२, ४८ और ७१ मे) नृसिंह द्वारा हिरण्यकशिपु के वध तथा वाराह द्वारा हिरण्याक्ष के वध का उल्लेख है। अन्तिम पर्व (अ० ३६, ३२) मे हिरण्यकशिपु तथा हिरण्याक्ष दोनो दिति के पुत्र माने गये है। हिरण्यकशिपु की वरप्राप्ति तथा अत्याचार की कथा दुहराई गई है तथा प्रह्लाद के विषय मे कहा गया है कि उसने नृसिह का दिव्य रूप देखकर अपने पिता को सावधान किया था (अध्याय ४३)। हरिवश मे कही भी हिरण्यकशिपु तथा रावण के किसी सबध का उल्लेख नही होता। **विष्णु पुराण** (१, अध्याय १७ २०) मे पहले-पहल हिरण्यकशिपु तथा उसके विष्णुभक्त पुत्र प्रह्लाद के सघर्ष की कथा मिलती है। इसके अतिरिक्त यह भी माना जाता है कि हिरण्यकशिपु ने पहले रावण के रूप मे तथा इसके बाद शिशुपाल के रूप मे जन्म लिया था।[1]

(२) **भागवत पुराण** प्राचीनतम रचना है जिसमे विष्णु के द्वारपालो तथा हिरण्यकशिपु-हिरण्याक्ष का सबध उल्लिखित है। कथा इस प्रकार है (दे० ३, अध्याय १५-१६)। ब्रह्मा के चार पुत्र सनकादि किसी दिन वैकुठ मे विष्णु से मिलने आए किन्तु **जय-विजय** द्वारपालो ने उनको प्रवेश करने से रोका। इसपर सनकादि ने जय-विजय को असुर-योनि प्राप्त करने का शाप दिया। विष्णु ने इस शाप को स्वीकार करते हुए जय-विजय से कहा कि एक बार जब मै योगनिद्रा मे मग्न था तुम दोनो ने लक्ष्मी को अन्दर जाने से रोक दिया जिससे उन्होने तुमको शाप दिया था। अब दैत्य-योनि मे जन्म लेकर क्रोध-भाव से मेरा ध्यान करो। इसमे तुम विप्र-तिरस्कारजनित पाप से मुक्त होकर फिर मेरे पास लौटोगे। फलस्वरूप जय-विजय दिति के पुत्र हिरण्यकशिपु-हिरण्याक्ष बन गए। भागवत पुराण के एक अन्य स्थल पर (दे० ७, १, ३५-४६) सनकादि के शाप के कारण जय-विजय के तीन बार अर्थात् हिरण्यकशिपु-हिरण्याक्ष,

---

१ दे० ४, अध्याय १५। सेरीराम के राफल्स हस्तलिपि के अनुसार रावण अपने पूर्वजन्म मे सीरचक कहलाता था। सीरचक हिरण्यकशिपु का विकृत रूप है।

रावण-कुभकण तथा शिशुपाल-दतवक्त्र के रूप मे जन्म लेने का उल्लेख किया गया है। ब्रह्मवैवर्त्त पुराण (कृष्णजन्मखण्ड ५६, ४६-४६), पद्मपुराण (उत्तरखण्ड २६६, ४), तत्वसग्रह रामायण (१, १०-११) मे भी इस कथा का निर्देश मिलता है। सारलादास के उडिया चडीपुराण के अनुसार मनु ने जय-विजय को यह शाप दिया था।

(३) भागवत पुराण के उपर्युक्त वृत्तान्त मे **लक्ष्मी** के शाप का उल्लेख है। **बलरामदास** (युद्धकाण्ड) की तत्सबधी कथा इस प्रकार है। किसी अवसर पर चण्ड और प्रचण्ड नामक नारायण के द्वारपालो ने लक्ष्मी को नारायण की सभा मे प्रवेश करने से रोका जिसपर लक्ष्मी ने क्रुद्ध होकर दोनो को राक्षस बन जाने का शाप दिया। नारायण ने उनको सान्त्वना देते हुए कहा कि तुम दोनो राक्षस बनकर पृथ्वी को जीत लोगे जिससे जय-विजय के नाम से तुम प्रसिद्ध हो जाओगे। लक्ष्मी ने शाप देकर तुम्हारे साथ जो अन्याय किया है इसके कारण वह सीता के रूप मे जन्म लेगी।

अनेक रचनाओ के अनुसार **वृन्दा** (दे० अनु० ३७२) ने जय-विजय को राक्षस बन जाने का शाप दिया था। **आनन्द रामायण** (७, १४, १-२७) मे यह शाप **अश्विनीकुमारो** द्वारा दिया जाता है। इस रचना के अनुसार विष्णु ने जय-विजय से कहा था कि यदि तुम लोग मेरी भक्ति का विरोध करोगे तो शीघ्र ही तुम्हारी मुक्ति हो पाएगी। यदि भक्ति-भाव अपनाओगे तो सात बार जन्म लेना पडेगा। **रामलिंगामृत** (सर्ग १) मे जय-विजय के प्रति **भृगु** के शाप का उल्लेख है जिसके फलस्वरूप वे रावण-कुभकर्ण बन गए। **बलरामदास** (युद्धकाण्ड) **दुर्वासा** के शाप की कथा का वर्णन करते है। दुर्वासा नारायण से उस समय भेट करने आए थे जब वह एकान्त मे लक्ष्मी के साथ थे। द्वारपालो ने उनको भीतर जाने से रोका तथा अन्त मे हठ करने वाले दुर्वासा को गले से पकडकर निकाल दिया। दुर्वासा ने उनको १०० बार तक जन्म लेने का शाप दिया, बाद मे नारायण ने इस शाप को तीन बार तक सीमित कर दिया।

(४) जय-विजय के अतिरिक्त रावण-कुभकर्ण अनेक अन्य प्राणियो के अवतार माने गए है। **शिवमहापुराण** के अनुसार **दो शिवगण** नारद के शाप से रावण कुभ-कर्ण बन गए (दे० अनु० ३७३)। **वह्निपुराण** (पृ० १७१) मे यह माना गया है कि **मधु-कैटभ**[1] शापवश पहले हिरण्यकशिपु-हिरण्याक्ष तथा बाद मे रावण-कुभकर्ण के रूप मे प्रकट हुए। रामचरितमानस मे रावण के पूर्वजन्म के विषय मे दो अन्य

१ महाभारत (३, १९४, ३०) तथा हरिवश (१, ४१, २५, ३, १३, २८) मे विष्णु द्वारा मधु-कैटभ के वध की कथा मिलती है किन्तु उन रचनाओ मे इनका रावण कुभकर्ण के साथ कोई सबध निर्दिष्ट नही है।

वृत्तान्त भी मिलते है, एक के अनुसार **जलधर** ने रावण के रूप मे जन्म लिया (दे० अनु० ३७२) तथा दूसरे वृत्तान्त के अनुसार रावण-कुभकर्ण-विभीषण क्रमश **प्रताप-भानु-अरिमदन-धर्मरुचि के** अवतार है (दे० अनु० ६२५)। **रामकियेन** (अध्याय ४) के अनुसार **नन्दक** ने रावण के रूप मे जन्म लिया था। नदक कैलास-पर्वत-निवासी ईश्वर के गणो मे से एक था, उसने ईश्वर से यह वरदान प्राप्त किया था कि जिसकी ओर मै इशारा करूँ वह मर जाय। इस वर से अनुचित लाभ उठाकर नन्दक ने बहुत से देवताओ का वध किया। अन्त मे नारायण अप्सरा का रूप धारण कर नन्दक को नृत्य सिखलाने लगे, जिसमे नदक उगली से अपने शरीर की ओर इशारा करके मर गया और दशग्रीव के रूप मे प्रकट हुआ। **रामजातक** (पृ० ६) की कथा इससे अधिक भिन्न नही है।

(५) **पउमचरिय** की वेदवती विषयक कथा के अनुसार रावण अपने पूर्वजन्म मे एक **श्रीकान्त** नामक सेठ था जो अनेक जन्मो मे लक्ष्मण द्वारा मारा जाता है (दे० अनु० ४१०)। गुणभद्र के **उत्तरपुराण** (६८,७२८) के अनुसार रावण पूर्वजन्म मे सारसमुच्च देश मे **नरदेव** नामक राजा था। बौद्ध साहित्य मे उसे देवदत्त से अभिन्न माना गया है (दे० अनु० ३२७)।

(६) दीन कृष्णदास के उडिया **रसविनोद** के अनुसार निराकर ब्रह्म ने सनातन ब्रह्मा को एक लाख बार रावण के रूप मे जन्म लेने का अभिशाप दिया था। जावा के सेरत काण्डो मे माना गया है कि रावण वास्तव मे **वातुगुनुग** का अवतार है। दशमुख, कस आदि के रूप मे वातुगुनुग विष्णु के अवतार का प्रतिद्वन्द्वी बन जाता है। वातुगुनुग की कथा सभवत हिरण्यकशिपु के वृत्तान्त पर आधारित है क्योकि हिरण्यकशिपु भी तीन भिन्न जन्मो मे विष्णु के अवतार द्वारा मारा जाता है।

ख। तपश्चर्या और वरप्राप्ति

६४६ वाल्मीकि रामायण के अनुसार विश्रवा ने कैकसी को अपनाने के पूर्व भरद्वाज की पुत्री देववर्णिनी से वैश्रवण को उत्पन्न किया था। वैश्रवण ने तपस्या करके ब्रह्मा स चतुथ लोकपाल (धनेश) का पद तथा पुष्पक भी प्राप्त किया था। विश्रवा ने उसे लका मे निवास करने का परामर्श दिया क्योकि राक्षस विष्णु के डर से लका छोडकर रसातल चले गये थे (सर्ग ३)। वैश्रवण किसी दिन पुष्पक पर चढकर अपने पिता विश्रवा से मिलने आये, कैकसी ने दशग्रीव का ध्यान उसकी ओर आकर्षित करके कहा कि तुम भी अपने भाई के समान बन जाओ। अत दशग्रीव अपनी माता की प्रेरणा से अपने भाइयो के साथ गोकर्ण मे तपस्या करने लगा (सर्ग ६)। तीनो भाई १०००० वर्ष तक घोर तप करते रहे। दशग्रीव प्रति सहस्र वर्ष के अन्त

मे अपना एक सिर अग्नि मे समर्पित करता था, वह अपना दसवा सिर भी काटने वाला ही था कि ब्रह्मा सन्तुष्ट होकर वर देने के उद्देश्य से प्रकट हुए। **रावण** ने पहले अपने लिए अमरत्व माँगा किंतु ब्रह्मा के अस्वीकार करने पर उसने यह वर माग लिया कि मैं सुपर्ण-नाग-यक्ष-दैत्य-दानव-राक्षस तथा देवताओ द्वारा अवध्य[1] हो जाऊँ। इसके अतिरिक्त ब्रह्मा ने उसके नव शीष लोटाये तथा उसे कामरूपी होन का वर प्रदान किया। **विभीषण** ने धार्मिकता का वर माँग लिया और ब्रह्मा ने उसे अमरत्व भी दे दिया। **कुभकर्ण** ने सरस्वती की प्रेरणा से निद्रा ही माग ली—**स्वप्तु वर्षाण्यनेकानि देव देव ममेप्सितम्** (१०,४५)। वर प्राप्त करने के पश्चात् दशग्रीव ने सुमाली के अनुरोध पर प्रहस्त को वैश्रवण के पास भेजकर राक्षसवश के लिए लका की माग की। अपने पिता का परामर्श स्वीकार कर वैश्रवण कैलास[2] पर निवास करने चले गये और दशग्रीव ने राक्षसो के साथ लका को अपने अधिकार मे ले लिया (सग ११)। इसके बाद कु भकर्ण रावण से एक भवन बनवा कर उसमे सहस्रो वर्षो तक बिना जागे सोता रहा—**बहून्यब्द सहस्राणि शयानो न च बुद्धयते** (१३, ७)। कु भकरण की नीद के विषय मे वाल्मीकीय युद्धकाण्ड (सर्ग ६१) मे माना गया है कि ब्रह्मा ने कु भकरण के अत्याचार के कारण उस यह शाप दिया कि वह छ महीनो तक सोकर एक ही दिन जग सकेगा और उस दिन भूखा होकर पृथ्वी पर विचरते हुए बहुत से लोगो को खा जायेगा। **महाभारत** (३, २५९, २८) के अनुसार कु भकरण की नीद वरदान का परिणाम तो है किन्तु कुम्भकरण ने सरस्वती की प्रेरणा स नही वरन् अपनी ही तामसी बुद्धि[3] के कारण यह वर माँग लिया—**स वव्रे महती निद्रा तमसा ग्रस्तचेतन**। **आनद रामायण** (१, १३, ५५) मे वाल्मीकीय युद्धकाण्ड और उत्तरकाण्ड की कथाओ का समन्वय किया गया है—सरस्वती से मोहित होकर कु भकरण ने छ महीनो तक सोकर भोजन के लिए एक दिन जागने का वर माग लिया। **कृत्तिवास रामायण** (७,११) के अनुसार ब्रह्मा ने रावण से यह कहकर वरदान दिया था कि वानर और नर को छोडकर कोई भी तुम्हारा वध नही कर पायेगा, सिर कट जाने पर भी तुम नही मरोगे और तुम्हारे कटे हुए सिर फिर जुड जाएँगे। कुम्भकर्ण ने सरस्वती की प्रेरणा

---

१ युद्धकाण्ड (१९, ९) तथा बालकाण्ड (१५, १३) मे भी ब्रह्मा के इस वरदान का उल्लेख है।

२ शिव तथा वैश्रवण के सख्य का वर्णन उत्तर काण्ड के १३ वे सर्ग मे मिलता है।

३ सेरीराम मे यह माना गया है कि कुम्भकर्ण स्वभाव से ही निद्राव्यसनी और पेटू था।

से निरन्तर सोते रहने का वर माँग लिया किन्तु रावरण ने ब्रह्मा के पास जाकर आपत्ति की थी। तब ब्रह्मा ने कुम्भकरण को छ महीनो की निद्रा तथा एक दिन का जागरण प्रदान कर कहा कि उस दिन कुंभकर्ण का बल और भक्षण दोनो अद्भुत होंगे किन्तु यदि उसे कच्ची नीद से जगाया जायेगा तो वह निश्चय ही मर जायगा।

प्राचीनकाल से ही रावरण को **शिवभक्त** माना गया है (दे० अनु० ६५३), इस कारण से अनेक रचनाओ मे वरप्राप्ति के वृत्तान्त मे शिव ही ब्रह्मा का स्थान लेते है। **रघुवश** (सर्ग १०) तथा **दशावतारचरित** के अनुसार रावरण ने शिव को अपने नौ सिर समर्पित किये थे किन्तु ब्रह्मा ने वर प्रदान किया था। **स्कदपुराण** के महेश्वरखण्ड (अ० ८), **पद्मपुराण** के उत्तरखण्ड (अ० २६९), पाश्चात्य वृत्तान्त न० ३ आदि मे शिव ही रावरण और उसके भाइयो का वरदान देते है। पद्मपुराण मे केवल रावरण-कुम्भकर्ण की तपस्या की चर्चा है (दे० उत्तरखण्ड २६९, २०-२४)।

पाश्चात्य वृत्तान्त न० ४ के अनुसार भी रावरण ने महादेव से राज्य वैभव प्राप्त कर लिया था। रावरण नित्य प्रति महादेव की पूजा करते हुए उन्हे १०० फूल अर्पित किया करता था। किसी दिन ईश्वर ने एक फूल चुराकर रावरण से पूछा—मुझे आज क्यो केवल ९९ फूल मिल रहे है? रावरण अपनी आँख निकाल कर उसे महादेव को अर्पित करने ही वाला था कि महादेव ने रोककर वरदान दिया। इस प्रकार रावरण का समस्त पृथ्वी पर अधिकार प्राप्त हुआ। इसके बाद ही रावरण लका मे राज्य करने लगा।[1]

पउमचरिय (पर्व ७) के अनुसार रावणादि अपने मौसेरे भाई का विभव देखकर विद्याएँ सिद्ध करने के लिए साधना करने लगे थे। रावरण ने पचपन, भानुकर्ण ने पाच और विभीषरण ने चार विद्याओ को सिद्ध कर लिया। तीनो ने आकाशगामिनी प्राप्त कर ली थी। इस वृत्तान्त मे किसी वरदान का उल्लेख नही है।

सेरीराम मे रावरण की ही तपस्या का वर्णन किया गया है। अपने निर्वासन के बाद सिहलद्वीप मे पहुँचकर रावरण ने बारह वर्ष तक तपस्या की थी। अन्त मे अल्लाह ने नबी आदम का निवेदन स्वीकार कर रावरण को चार लोको मे अर्थात् स्वर्ग, पृथ्वी, पाताल तथा महासागर मे राज्य स्थापित करने का अधिकार दिया बशर्ते कि रावरण निष्पाप होकर न्यायपूर्वक शासन करे। **रामकियेन** (अ० ६) मे रावरण की अवध्यता की कथा इस प्रकार है। रावरण ने अपने गुरु के परामर्श से एक ऐसा यज्ञ सम्पन्न किया

१ राम की देवी पूजा के वृतान्त मे भी आख समर्पित करने का उल्लेख है (दे० आगे अनु० ७८५)। इस प्रसग का मूल रूप महिम्न स्त्रोत्र (छन्द १९) मे सुरक्षित है।

था जिसके फलस्वरूप वह जीवित रहते हुए अपना जीव अपने शरीर से अलग करने मे समर्थ हुआ। अत रावण अपना जीव गुरु की रक्षा मे छोडकर अत्याचार करने लगा।

ग। विवाह और सतति

६५० (१) **वाल्मीकि रामायण** के उत्तरकाण्ड (सर्ग १२) मे **रावण-मन्दोदरी** के विवाह का वृत्तान्त इस प्रकार है। रावण ने किसी दिन मृगया के समय दिति के पुत्र मय को देखा जो अपनी पुत्री मन्दोदरी के साथ वन मे टहल रहा था। रावण द्वारा परिचय पूछे जाने पर मय ने अपनी कथा सुनाई (दे० अनु० ५२६) तथा रावण का परिचय प्राप्त करने के पश्चात् उसके सामने मन्दोदरी के साथ विवाह करने का प्रस्ताव रखा। रावण ने इस प्रस्ताव को स्वीकार किया, मय ने उस अवसर पर रावण को अमोघ शक्ति भी दे दी जिससे वह बाद मे लक्ष्मण को आहत करने वाला था।

(२) **आनन्द रामायण** (१, ६, ३३-५७) मे रावण-मन्दोदरी के विवाह के विषय मे एक सर्वथा भिन्न कथा मिलती है। इसके अनुसार रावण ने अपने गायन द्वारा **शिव** को प्रसन्न करके उनसे **दो वर** माग लिए अर्थात् अपनी माता कैकसी के लिए आत्मलिंग तथा अपने लिए पार्वती को। शिव ने रावण को सावधान किया कि इस लिंग को मार्ग मे कही भी पृथ्वी पर रख देने स वह वही अटल हो जायगा। इसके बाद रावण लिग तथा पार्वती को लेकर चला गया। पार्वती ने अपनी विपत्ति मे विष्णु का स्मरण किया। विष्णु ने अपने अग के चन्दन से सुन्दरी मन्दोदरी की सृष्टि करके उसे मय के घर मे रख दिया, तब वह ब्राह्मण का रूप धारण कर मार्ग मे रावण से मिले तथा उन्होने रावण से कहा कि शिव ने धोखा देकर वास्तविक पार्वती को पाताल मे मय के यहाँ छिपाया है। यह सुनकर रावण ने शिव के पास जाकर वास्तविक पार्वती को लौटाया और पाताल जाने को उद्यत हुआ। रास्ते मे लघुशका करने की इच्छा से उसने आत्मलिंग उस ब्राह्मण (विष्णु) के हाथ मे दे दिया। देर हो जाने पर विष्णु आत्मलिंग गोकर्ण मे भूमि पर रख कर अतर्द्धान हो गये। रावण आकर आत्मलिंग उठाने मे असमर्थ हुआ तब उसने मय के घर जाकर विष्णु द्वारा निर्मित मन्दोदरी को प्राप्त किया।[1] **भावार्थ रामायण** (५, ६) का वृत्तान्त उपर्युक्त कथा पर आधारित है। आनन्द रामायण के एक अन्य स्थल (१, १३, २६-४४) के अनुसार

१ काश्मीरी रामायण (युद्धकाण्ड, न० ४७) मे भी रावण के शिवलिंग खो बैठने की कथा मिलती है। गोकर्ण के स्थान पर अन्य तीर्थों का भी उल्लेख मिलता है। बिहार मे प्रस्तुत कथा का घटनास्थल वैद्यनाथ मदिर (देवघर) माना जाता है।

रावण ने अपने शरीर से वीणा बनाकर शिव क आदर मे गायन किया था। शिव ने आत्मलिंग तथा पार्वती के अतिरिक्त रावण को उस अवसर पर दस सिर भी प्रदान किए थे।

दक्षिण भारत के एक वृत्तान्त मे प्रस्तुत कथा का एक अन्य रूप मिलता है। विष्णु के स्थान पर नारद रावण के पास जाकर कहते है कि वास्तविक पार्वती एक तालाब मे छिपी हुई है। इस पर रावण मन्दोदरी को तालाब से निकाल कर उसे लका ले जाता है। उस वृत्तात के अनुसार मन्दोदरी वास्तव मे एक मण्डूक है, जिसने नारी का रूप धारण किया था।[1]

रंगनाथ रामायण के उत्तरकाण्ड मे मन्दोदरी की उत्पत्ति विषयक निम्नलिखित कथा मिलती है। पार्वती ने किसी दिन स्नान करने के बाद अपने शरीर के चन्दन से एक पुतली बनायी और शिव ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर पुतली मे प्राण डाले। वह उसका सौन्दर्य देखकर आस त हो गये, किन्तु पार्वती के आग्रह पर उन्होंने उसे मडूक मे बदल दिया और कहा कि जब मय सन्तति के लिए तपस्या करेगा, तो मै उसे फिर कन्या का रूप देकर मय को प्रदान करूँगा। बाद मे मय ने उसका विवाह रावण के साथ कराया।[2] दीनकृष्णदास (१८ वी श०) के उडिया **धर्मपुराण** (अध्याय ५) मे कथा इस प्रकार है। मदर और उदर नामक मुनि ब्रह्मा के पुत्र थे, जो किसी आश्रम मे रहते थे। वे अपनी गाय दूहते समय पृथ्वी को कुछ नही देते थे। धरणी ने क्रुद्ध हो कर अपने पुत्र मणिनाग को भेजा और उसने, जब मुनि स्नान करने गये, उनके दूध मे विष डाला। काठवेग जाति की एक मडूकी उसी आश्रम मे रहती थी और वह मुनियो की जान बचाने के लिए दूध मे कूद कर मर गयी। मुनियो ने लौट कर तथा दूध मे मडूकी पडी देखकर उसे कन्या बनने का शाप (!) दिया और उसका नाम वेगवती रखा। बाद मे उन्होने वालि से उसके विवाह का प्रबन्ध किया और बालि ने विवाह से पहले ही मुनियो की अनुपस्थिति मे आश्रम मे आकर उसके साथ रमण किया। जिससे वह गर्भवती हो गयी। रावण ने भी कन्या को माँगा किन्तु मुनियो ने उसे समझाया कि वालि के साथ उसका विवाह निश्चित हो गया है। विवाह के दिन रावण

---

१ दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० १, अध्याय ४। पार्वती के स्थान पर मन्दोदरी को प्राप्त करने की उपर्युक्त कथा अन्यत्र भी पायी जाती है। दे० पाश्चात्य वृत्तान्त १६, पृ० २६१ तथा पी० थोमस, एपिक्स एन्ड लेजेण्ड्स ऑव इण्डिया पृ० ५२।

२ दे० चावलि सूर्यनारायण मूर्ति हिन्दी और तेलुगु मध्यकालीन राम-साहित्यो का तुलनात्मक अध्ययन पृ० २१७।

वालि का रूप धारण कर कन्या को ले गया और वालि बाद मे पहुँचकर और रावण का छल-कपट सुन कर उसकी खोज मे निकला। भेट होने पर वालि ने कन्या को छीनना चाहा और खीचतान मे कन्या दो टुकडे हो गयी जिससे अगद (अगच्छेद से उत्पन्न) का जन्म हुआ। इतने मे देवता पहुँचे। यम ने कन्या को फिर एक कर दिया और पवन ने उसमे प्रवेश कर उसे पुनर्जीवित किया। उसका नाम मदोदरी (मद अर्थात् बुराई से प्राप्त) रखा गया और वह रावण की पत्नी हो गयी। इन कथाओ से स्पष्ट है कि दक्षिण-पूर्व एशिया मे प्रचलित मदोदरी की उत्पत्ति विषयक कथाओ का आधार भारतीय ही है।

सेरीराम के **पातानी पाठ** के अनुसार महासिकु की दत्तक पुत्री मदुदकी मडूक से उत्पन्न हुई थी। श्री अचप अपनी चाची मुतुगिरि पर आसक्त था, महासिकु ने श्री अचप को धोका देकर मुतुगिरि के स्थान पर मदुदकी को दे दिया तथा श्री अचप को सुलतान महाराज वन की उपाधि भी प्रदान की।

रामकियेन (अध्याय ५) मे मदोदरी की कथा का एक अन्य रूप मिलता है। किसी मडूक ने चार ऋषियो का जीवन बचाया था और पुरस्कार-स्वरूप ऋषियो ने उसे मडो नामक एक अत्यन्त सुन्दर युवती मे बदलकर उसे ईश्वर को समर्पित किया। ईश्वर ने उसे उमा को दिया। बाद मे ईश्वर के दिए हुए वर के बल पर रावण ने उमा को प्राप्त किया (दे० अनु० ६५३)। तब नारायण ने माली का रूप धारणकर रावण के सामने एक वृक्ष उलटे ढग से रोपने का प्रयत्न किया। रावण उसकी मूर्खता की टिप्पणी करने लगा, जिस पर नारायण ने कहा कि जिसने मडो को छोडकर उमा को चुन लिया वह मुझसे अधिक मूर्ख है। यह सुनकर रावण ईश्वर के पास गया और उसने उमा को लौटाकर मण्डो को ले लिया।

हिन्देशिया की रामकथाओ मे रावण दशरथ के पास जाकर वास्तविक मन्दोदरी के स्थान पर जादू द्वारा निर्मित एक अन्य मन्दोदरी को ले जाता है (दे० ऊपर अनु० ४२८)। यह कथा उपर्युक्त वृत्तान्त का विकृत रूप मात्र प्रतीत होती है।

(३) मन्दोदरी के अतिरिक्त वाल्मीकि रामायण मे रावण की केवल एक और पत्नी अर्थात् **धान्यमालिनी** का नाम दिया गया है, सुन्दरकाण्ड (सर्ग २२) और युद्धकाण्ड (सर्ग ७१) मे धान्यमालिनी (अतिकाय की माता) का उल्लेख है। रगनाथ ने उसका सबध कालनेमि वृत्तान्त की ग्राही से स्थापित किया है (दे० अनु० ५८७)। वाल्मीकि रामायण के अनेक स्थलो पर रावण की बहुसख्यक पत्नियो की चर्चा की गई है जिनमे देव-गधर्व-नागादि कन्याये भी सम्मिलित थी (दे० सुन्दरकाण्ड, सर्ग १०-११, १८ और २२, युद्धकाण्ड, सर्ग ११०, उत्तरकाण्ड, सर्ग २२)। कृत्तिवास (६, ५६) के अनुसार देवकन्याओ की सख्या १४,००० थी।

पउमचरिय (पर्व १०) मे वालि-सुग्रीव की बहन **श्रीप्रभा** के साथ रावण के विवाह का वर्णन मिलता है। इस रचना मे उसकी ६००० विद्याधरवंशीय पत्नियों का उल्लेख है (पर्व ८)। बलरामदास रावण की साढे तीन करोड स्त्रियों की चर्चा करते है। मंदोदरी के अतिरिक्त उडिया साहित्य मे शुभ्रकेशी (बलरामदास), इन्दुमती तथा कांतिमाला (उपेंद्र भज) नामक पत्नियों का उल्लेख है। **सेरीराम** के अनुसार रावण ने चार लोको मे राज्य का अधिकार प्राप्त कर स्वर्गलोक मे **नील उताम** (तिलोत्तमा) से, पाताल मे **परतीवि** (पृथ्वी) देवी से, तथा महासागर मे **गंगा महादेवी** से विवाह किया। बाद मे उसने लंका का निर्माण किया और दशरथ की पटरानी **मन्दोदरी** को भी प्राप्त किया (दे० अनु० ४२८)। **राम-कियेन** (अ० ५) मे दशकंठ की पाताल-निवासिनी पत्नी का नाम **कला अग्गी** है।

(४) रावण के पुत्रो मे से **इन्द्रजित** सर्वाधिक प्रसिद्ध है। वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड (सर्ग १२) के अनुसार मन्दोदरी के पहलौठे पुत्र ने जन्म लेने के पश्चात् ही मेघगंभीर नाद किया था जिससे उसके पिता ने उसका नाम मेघनाद ही रखा था। इन्द्र के परास्त करने के कारण ब्रह्मा ने उसे इन्द्रजित् की उपाधि प्रदान की (सर्ग ३०)। **सेरीराम** के अनुसार रावण ने स्वर्गलोक की नील उताम से इन्द्रजित् को उत्पन्न किया था, इस रचना मे इन्द्रजित् को उत्पन्न किया था, इस रचना मे इन्द्रजित् के तीन शीर्ष होते है। जावा के **सेरतकाण्ड** के अनुसार विभीषण ने मेघनाद की सृष्टि की थी (दे० अनु० ४१५)। इन्द्रजित-विषयक शेष सामग्री का विश्लेषण युद्धकाण्ड के अन्तर्गत हो चुका है (दे० अनु० ५६०-५६४)।

(५) वाल्मीकि रामायण मे रावण के अन्य पुत्रो का भी उल्लेख मिलता है। **अक्ष** (सुन्दरकाण्ड, सर्ग ४७) तथा **अतिकाय** (युद्धकाण्ड, सर्ग ७१) के अतिरिक्त युद्धकाड के एक प्रक्षिप्त अंश (सर्ग ६९-७०) मे रावण के चार पुत्रो अर्थात् अतिकाय, **त्रिशिरा, नरान्तक** तथा **वेदान्तक** के वध का वर्णन किया गया है।[1]

परवर्ती भारतीय साहित्य मे रावण की संतति के रूप मे **सीता** (अनु० ४१२-४१७), महानाद और **सिंहनाद** (बालरामायण, अनु० ५७६), **वीरबाहू** (कृत्तिवास रामायण ६, ५४) तथा **महीरावण** (कृत्तिवास ६, ७६) का उल्लेख मिलता है। पउमचरिय (पर्व ६५) मे **इन्द्रजीत** तथा **मेघवाहन** नामक रावण के दो पुत्रो की चर्चा है।

---

१ एक त्रिशिरा नामक राक्षस के वध का उल्लेख आरण्यकाण्ड (सर्ग २७) मे भी मिलता है। नरांतक को अन्यत्र (युद्धकाण्ड, सर्ग ५७-५८) प्रहस्त का सचिव माना गया है।

सेरीराम मे इन्द्रजित् के अतिरिक्त बीलाबीस (दे० अनु० ६१३) **पातालमहा-रायन** (परतीवि देवो के पुत्र) तथा गगामहासूरा (गगा महादेवी के पुत्र) को भी रावण की सन्तान माना गया हे। पाताल महानारायण भारतीय साहित्य का महिरावण है (दे० अनु० ६१४), गगामहासूरा अपने पिता के आदेशानुसार सेतु को नष्ट करने का प्रयत्न करता है (दे० अनु० ५७८)। सेरीराम के शेलाबेर पाठ मे तूरीकाय (अतिकाय), तूरीसिरह (त्रिशिरा), नारनन्ताक (नरातक) तथा देवा-नताक (देवातक) की भी चर्चा की गई हे। राम कियेन मे रावण की पाताल-वासिनी पत्नी के पुत्र का नाम **प्रलयकल्प** है (दे० अनु० ६०५)। इसके अतिरिक्त मन्दोदरी ने रावण-वध के बाद रावण के एक और पुत्र को जन्म दिया, इसका नाम **बैनासूरिवश** रखा गया और इसने विभीषण के विरुद्ध विद्रोह किया (दे० अनु० ६३५, पाद-टिप्पणी)।

रामकियेन मे रावण की नाग-कन्या **सुवणमच्छा** (दे० अनु० ५७८) के अतिरिक्त उसके दो और पुत्रो की कथा मिलती है, इसके अनुसार रावण ने हाथी का रूप धारण कर एक हथिनी से किरिधर तथा किरिवन नामक दो पुत्रो को उत्पन्न किया था, जिनका मुख हाथी के समान था। प्राचीन रामकथाओ मे रावण की सतति के विषय मे किसी निश्चित सख्या का उल्लेख नही होता। बलरामदास (युद्ध काण्ड, पृ० ६२) रावण के ७२ पुत्रो तथा १३०० पौत्रो की चरचा करते है, महानाद ही बच गया और उसने अपने पिता की अत्येष्टि सम्पन्न की। हिन्दी पाठक इस पक्ति से परिचित होगे—एक लाख पूत सवा लाख नाती, ता रावन घर दिया न बाती।

घ। विवाहोत्तर चरित

६५१ वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड (सर्ग ६) के अनुसार रावण वर-प्राप्ति के पहले से ही लोगो को सताया करता था,[1] बाद मे भी उसके **अत्याचार** का बारबार उल्लेख किया गया है। लका पर अधिकार प्राप्त करने के पश्चात् वह देव-ऋषि-यक्ष-गधर्वों का वध करके उनके उद्यानो को नष्ट करने लगा। यह सुनकर वैश्रवण ने दूत भेजकर रावण को सदुपदेश दिया तथा उसे सावधान किया कि देवता उसके विरुद्ध समुद्योग कर रहे है। रावण ने अपनी तलवार से उस दूत का वध किया तथा वैश्रवण पर आक्रमण करने के उद्देश्य से अपने मत्रियो के साथ कैलास की यात्रा

---

१ हिन्देशिया का रामकथाओ के अनुसार रावण को अत्याचार के कारण निर्वासित किया गया, दे० अनु० ६४६।

की। वहाँ पहुँचकर उसने पहले यक्ष-सेना को तितर-बितर कर दिया, बाद मे उसने **वैश्रवण** को द्वन्द्वयुद्ध मे परास्त किया तथा उससे पुष्पक प्राप्त कर लका लौटा।[1]

बाद मे रावण ने वेदवती (दे० अनु० ४१०) तथा रम्भा (दे० अनु० ६५४) के साथ भी अत्याचार किया। इसके अतिरिक्त उसने बहुत सी अविवाहित अथवा विवाहित सुन्दर स्त्रियो का हरण किया जिससे उसके अन्त पुर मे सैकडो राज-ऋषि-देव-नाग-दानव-राक्षस-दैत्य-असुर-यक्ष-गधर्व कन्याये निवास करती थी (सर्ग २४)।

६५२ रावण की **विजय-यात्राओ** के वर्णन का परवर्ती साहित्य मे कोई विशेष विकास नही हुआ है। वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड के अनुसार रावण ने अपनी एक **विजय-यात्रा** मे (सर्ग १८-२३) निम्नलिखित राजाओ को पराजय स्वीकार करने के लिए वाध्य किया—मरुत, दुष्यन्त, सुरथ, गाधि, पुरूरवा और अनरण्य। इसके बाद रावण ने नारद के परामर्श से **यमलोक** पर आक्रमण किया। अपनी सेना रावण द्वारा पराजित देखकर यम ने रावण का वध करना चाहा किन्तु वह ब्रह्मा का अनुरोध स्वीकार कर अन्तर्धान हो गए और रावण अपने को विजयी मानकर यमलोक से निकल गया। अनन्तर रावण ने **वरुणालय** मे नागो के राजा वासुकि को परास्त किया, दैत्यो के साथ सधि कर ली, अश्मनगर मे अपने बहनोई विद्युज्जिह्व का वध किया तथा वरुण की सेना हराकर लका लौटा।

रावण की एक **अन्य विजय-यात्रा** (सर्ग २५-३०) का वर्णन इस प्रकार है। रावण की अनुपस्थिति मे मधु ने कुभीनसी का अपहरण किया था। यह सुनकर रावण ने एक विशाल सेना के साथ मधुपुर के लिए प्रस्थान किया। कुभीनसी ने मधुपुर मे रावण का स्वागत करके अपने पति के लिए अभयदान की याचना की। रावण कुभीनसी की प्रार्थना अस्वीकार न कर सका, अत वह मधु के यहाँ एक रात बिताकर अगले दिन **कैलास** की ओर अग्रसर हुआ। वहाँ पहुँचकर वह रभा के साथ व्यभिचार करने के कारण नलकूबर का शाप-भाजन बन गया। इसके बाद रावण ने कैलास पार कर **इन्द्रलोक** मे प्रवेश किया। वहा राक्षसो तथा देवताओ का घोर युद्ध हुआ, जिसमे सुमाली मारा गया। तब मेघनाद ने जयत को परास्त कर दिया तथा इन्द्र को कैद कर उन्हे लका ले आया। अन्त मे ब्रह्मा ने मेघनाद को वरदान तथा इन्द्रजित् की उपाधि देकर इन्द्र को छुडाया (दे० अनु० ५६०)। हेमचद्र के जैन रामायण (२, ५७८-६६३) मे रावण स्वय इन्द्र को परास्त करता है।

---

१ दे० सर्ग १३-१५। पुष्पक के विषय मे अनु० ६४६ और ५६६ देख ले। सेरत काण्ड के अनुसार वित्मनरज नामक वैश्रवण का पुत्र रावण का वाहन बन जाता है (दे० अनु० ३२२)।

उपर्युक्त सामग्री के अतिरिक्त उत्तराकाण्ड के सर्ग २३ के पश्चात् के प्रक्षिप्त सर्गों मे रावण की सूर्यलोक तथा चन्द्रलोक की विजययात्रा का भी वर्णन किया गया (सर्ग २-४)। सूर्य-लोक की यात्रा का गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठ मे उल्लेख नही है।

पउमचरिय मे भी रावण द्वारा सहस्रकिरण, नलकूबर, इन्द्र, वरुण आदि की पराजय वर्णित है किन्तु इस रचना मे यम, इन्द्र, वरुण आदि देवता न होकर साधारण राजा माने गये है। इन्द्र की पराजय का वर्णन अहल्या-चरित के अन्तर्गत हो चुके है (दे० अनु० ३४४)।

६५३ अनेक रचनाओ के अनुसार रावण ने ब्रह्मा के स्थान पर शिव से ही वरदान प्राप्त किया था (दे० अनु० ६४६), वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड मे **शिव-रावण-संबध** के विषय मे निम्नलिखित सामग्री पाई जाती है। वैश्रवण को पराजित करने के बाद जब रावण पुष्पक पर चढकर कैलास के ऊपर जा रहा था तो पुष्पक अचानक रुक गया। रावण पुष्पक से पृथ्वी पर उतरा तथा नन्दि का उपहास करके उसने कैलास पर्वत को ऊपर उठाया।[1] पर्वत हिलने लगा किन्तु महादेव ने अपने पादागुष्ठ से पर्वत को दबाया जिससे रावण की भुजाये कैलास के नीचे जकड गई और वह क्रोध तथा पीडा से चिल्ला उठा। तब अपने मंत्रियो का परामर्श स्वीकार कर रावण विविध स्तोत्रो द्वारा महादेव का गुणगान करने लगा और एक सहस्र वर्ष तक विलाप करता रहा। अन्त मे महादेव प्रसन्न हुए, उन्होने दशग्रीव की भुजाये मुक्त कर उसका नाम रावण ही रखा क्योकि उसने पर्वत से आक्रान्त होकर भीषण चीत्कार (**राव सुदारुण**) किया था।[2] दाक्षिणात्य पाठ मात्र के अनुसार शिव ने उस अवसर पर रावण को चन्द्रहास नामक खग प्रदान किया था (सर्ग १६)। उत्तरकाण्ड मे अन्यत्र रावण द्वारा शिवलिंग की पूजा का वर्णन मिलता है तथा इसका भी उल्लेख मिलता है कि रावण सदा ही एक सुवर्ण लिंग अपने साथ रखा करता था (सर्ग ३१)।

पउमचरिय मे जो कथा मिलती है उसमे वालि शिव का स्थान लेता है। (अनु० ६५५, २)। चन्द्रहास के विषय मे लिखा है कि रावण ने उस खग से अपनी

---

१ ब्रह्मपुराण (अ० १४३) के अनुसार रावण कैलास को लका ले जाना चाहता था।

२ रामायण मे रावण का अर्थ 'रुलाने वाला' है—दे० लोकरावण (३, ३३, १) और शत्रुरावण (३, ५६, २६)। रावण के नामो के विषय मे ऊपर देखें—दशमुख (अनु० ६०), दशग्रीव (अनु० ११२), आदिवासी गोत्र रावना (अनु० ११०)।

भुजा काटकर और उसकी शिराओ से वीणा का तार बनाकर जिन की स्तुति की थी। यह देखकर धरणेंद्र मुनि ने रावण को अमोघ-विजया शक्ति का वरदान दिया (पर्व ६)। अन्य रचनाओ के अनुसार रावण ने अपने गायन द्वारा शिव को प्रसन्न कर उनसे पार्वती को प्राप्त किया था (दे० अनु० ६५०)। पाश्चात्य वृत्तान्तो न० ६ और १० के अनुसार शिव ने रावण को अपनी उगलियो से दबा लिया था, इसपर रावण ने एक सिर तथा एक भुजा को मुक्त कर दिया तथा उस सिर से वीणा बनाकर शिव को अपने गायन से प्रसन्न कर दिया। इस प्रकार रावण को त्रिलोक पर अधिकार मिल गया था। **रामकियेन** के अनुसार एक देवता ने किसी दिन कैलास पर एक छिपकली पर इतना प्रबल प्रहार किया था कि पर्वत एक ओर झुक गया। देवता कैलास को सीधा करने मे असमर्थ निकले, तब ईश्वर ने रावण को बुलाया जिसने कैलास उठाकर उसे पूर्ववत् सीधा कर दिया। वर पाकर रावण ने उमा को माग लिया (दे० अनु० ६५०)।

परवर्ती रचनाओ मे रावण की शिव-भक्ति विषयक बहुत ही सामग्री मिलती है। **ब्रह्मपुराण** (अध्याय १४३) के अनुसार ब्रह्मा ने रावण को एक अष्टोत्तरशतशिव-नाम मत्र प्रदान किया था। रावण द्वारा रचित बहुत से शिव- स्तोत्रो का भी उल्लेख मिलता है।[1] शिव-पार्वती-कलह के प्रसग मे रावण की शिवभक्ति पर विशेष बल दिया गया है (दे० अनु० ५८४)। लकादेवी की कथा का ऐसा रूप भी मिलता है जिसमे देवी लकेश्वरी मानी जाती है (दे० अनु० ५३७)।

६५४ वाल्मीकि रामायण के प्रामाणिक सर्गो मे कही भी रावण के प्रति किसी **शाप** का उल्लेख नही होता। युद्धकाण्ड (सर्ग ६४, ३५) के अनुसार महादेव ने देवताओ को आश्वासन दिया था कि एक स्त्री के कारण रावण का नाश होगा—**उत्पत्स्यति हितार्थं वो नारी रक्ष क्षयावहा**। परवर्ती साहित्य मे रावण को प्रदत्त शापो के विषय मे पर्याप्त सामग्री मिलती है।

(१) महाभारत के रामोपाख्यान मे दो बार **नलकूबर** के शाप का उल्लेख किया गया है। सुन्दरकाण्ड के कथानक के अन्तर्गत त्रिजटा सीता से कहती है कि रभा के कारण अभिशप्त रावण किसी अनिच्छुक नारी का कुछ भी बिगाड नही सकता (३, २६४, ५६)। रावण-बध के बाद जब राम को सीता के विषय मे सन्देह हो रहा है और देवता प्रकट हो जाते है तब ब्रह्मा कहते है कि मैंने नलकूबर के शाप के द्वारा सीता की रक्षा का प्रबन्ध कर लिया था। नलकूबर का शाप यह था कि उसे न चाहनेवाली पराई स्त्री का सेवन करने पर रावण के शरीर[2] के सैकडो टुकडे हो जायँगे—

---

१ दे० मद्रास कैटालॉग न० १०६१३, ११९४१-११९४४ और ७६१।

२ अनेक हस्तलिपियो मे देह के स्थान पर मूर्धा पाठ मिलता है।

यदि ह्यकामामासेवेत् स्त्रियमन्यामपि ध्रुव शतधास्य फलेद्‌हृ (३, २७५, ३३)। वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड (सर्ग २६) मे नलकूबर के इस शाप की कथा का विस्तार के साथ वर्णन किया गया है। इन्द्रलोक की यात्रा के समय रावण ने कैलास-पर्वत पर रात बिताई। उस रात्रि मे वह रभा को देखकर उस पर आसक्त हुआ। रभा ने अपना परिचय देते हुए कहा कि मै आपकी पुत्रवधू हूँ। मै आपके भाई वैश्रवण के पुत्र नलकूबर की पत्नी हूँ। रावण ने उत्तर दिया कि अप्सराओ के कोई पति होता ही नही (**पतिरप्सरसा नास्ति**) और उसने रभा के साथ बलात्कार किया। बाद मे नलकूबर ने अपनी पत्नी के मुँह से सब सुनकर रावण को यह शाप दिया कि न चाहने-वाली स्त्री के साथ रमण करने से उसके मस्तक के सात टुकडे हो जायँगे—**यदा ह्यकामा कामार्तो धर्षयिष्यति योषितम ॥५५॥ मूर्धा तु सप्तधा तस्य शकलीभविता तदा।**

पउमचरिय (पर्व १२) मे प्रस्तुत वृत्तान्त को एक सर्वथा नवीन रूप दिया गया है। इसके अनुसार रावण ने नलकूबर की पत्नी उपरभा का प्रेम-प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया था और बाद मे उसने अनन्तवीर्य का धर्मोपदेश सुनकर विरक्त परनारी के साथ रमण न करने का व्रत लिया था।[1]

(२) वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड (सर्ग १६) मे **नन्दि-शाप** की कथा इस प्रकार है। पुष्पक के रुक जाने के बाद रावण कैलास-पर्वत के सामने पृथ्वी पर उतरा और नदि का वानर-मुख देखकर उसका उपहास करने लगा। तब नदि ने उसे यह शाप दिया कि तुम्हारे कुल के नाश के लिए मेरे समान रूप और बल से सम्पन्न वानर उत्पन्न होगे—**तस्मान्मद्वीर्यसयुक्ता मद्रूपसमतेजस। उत्पत्स्यन्ति वधाथ हि कुलस्य तव वानरा** (१६, १७)। दाक्षिणात्य पाठ के लकादहन के वर्णन के अन्तर्गत नदि-शाप का जो उल्लेख मिलता है वह अन्य पाठो के समानान्तर स्थल पर विद्यमान नही है।

सेरी राम मे नन्दिशाप का एक परिवर्तित रूप मिलता है। जटायु के पिता, कीसूब्रीसू (कश्यप) नामक मुनि ने किसी अवसर पर रावण का सत्कार नही किया था। रावण ने क्रोध मे आकर उनसे पूछा कि तुम मनुष्य हो अथवा बन्दर हो। तब मुनि ने उसे यह शाप दिया—तुम मनुष्यो और वानरो द्वारा मार डाले जाओगे।

(३) **वेदवती** के शाप का प्राचीनतम वृत्तान्त वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड मे सुरक्षित है (दे० अनु० ४१०)।

---

१. इसका कारण यह है कि पउमचरिय मे रावण को धर्मभीरु जैनी के रूप मे चित्रित किया गया है (अनु० ६०)।

(४) वाल्मीकीय उत्तरकाण्ड (सर्ग १६) के अनुसार अयोध्या के राजा **अनरण्य** द्वन्द्व-युद्ध मे रावण द्वारा मारा गया गया था। उसने प्राण छोडते समय रावण को यह शाप दिया कि इक्ष्वाकुकुल मे उत्पन्न राम द्वारा तुम्हारा वध किया जायगा—**उत्पत्स्यते कुले ह्यस्मिन्निक्ष्वाकूणा महात्मनाम। रामो दाशरथिर्नाम यस्ते प्राणान्हरिष्यति** (१६, ३०)।

(५) **पुजिकस्थला** के कारण रावण के प्रति ब्रह्मा के शाप का उल्लेख वाल्मीकि रामायण के दाक्षिणात्य पाठ मात्र मे मिलता है। युद्ध-काण्ड के प्रारभ मे (सर्ग १३) रावण की द्वितीय सभा के अन्तर्गत जब महापार्श्व ने सीता के साथ बलप्रयोग करने का परामर्श दिया तब रावण ने स्वीकार किया कि मैने बहुत समय पहले पुजिकस्थला नामक अप्सरा के साथ उसकी इच्छा के विरुद्ध रमण किया था, ब्रह्मा ने पुजिकस्थला से सारा हाल जानकर मुझे यह शाप दिया कि पुन किसी नारी के साथ बलात्कार करने पर तुम्हारे मस्तक के सैकडो टुकडे हो जायँगे—**अद्यप्रभृति यामन्या बलान्नारी गमिष्यसि। तदा ते शतधा मूर्धा फलिष्यति न सशय** (१३, १४)।

(६) इसके अतिरिक्त वाल्मीकि रामायण के दाक्षिणात्य[1] पाठ के एक प्रक्षिप्त स्थल पर (६, ६०, ८-१२) निम्नलिखित लोगो द्वारा रावण को शाप दिए जाने का उल्लेख किया गया है—**अनरण्य, वेदवती, उमा, नदीश्वर, रभा, वरुणकन्यका** (पुजिकस्थला)। उमा को छोडकर सबो का उल्लेख ऊपर हो चुका है। रामायण-तिलक मे माना गया है कि जब रावण ने कैलास को ऊपर उठाया (**कैलासशिखर-चालनवेलायाम्**) तब उमा ने यह शाप दिया था कि स्त्री के कारण रावण की मृत्यु होगी—**रावणस्य स्त्रीनिमित्त मरणम्।** उत्तरकाण्ड के वृत्तान्त मे शाप का उल्लेख नही है, इतना ही कहा गया है कि उस समय उमा ने काँपते हुए महेश्वर का आलिगन किया था—**चचाल पार्वती चापि तदाश्लिष्टा महेश्वरम्** (७, १६, २६)।

६५५ वाल्मीकीय उत्तरकाण्ड के रावणचरित मे उसकी अनेक **पराजयो** का भी वर्णन किया गया है। उनमे से वालि द्वारा रावण की पराजय का अपेक्षाकृत अधिक विकास हुआ है।

(१) **महाभारत** मे परशुराम द्वारा कार्त्तवीर्य के वध का उल्लेख है (दे० अनु० ३४६)। **हरिवश पुराण** (१, अध्याय ३३) मे **अर्जुन कार्त्तवीर्य** की कथा इस प्रकार है। उसने तप द्वारा एक सहस्र भुजाये तथा अन्य वर पाकर समस्त पृथ्वी को जीत लिया था। नर्मदा तथा समुद्र मे उसकी जलक्रीडा के वर्णन के बाद ही इसका

---

१ समानान्तर स्थल पर गौडीय पाठ (६, ३७, ८) नदिशाप मात्र का उल्लेख करता है किन्तु पश्चिमोत्तरीय पाठ मे किसी शाप का निर्देश नही मिलता।

उल्लेख मिलता है कि कार्त्तवीर्य ने सेनासहित रावण को परास्त कर उसे अपनी राजधानी माहिष्मती मे कैद कर लिया था किन्तु पुलस्त्य की प्रार्थना से उसे मुक्त किया था। अन्त मे परशुराम द्वारा कार्त्तवीर्य के वध का वर्णन किया गया है।

रामायण के **उत्तरकाण्ड** (सर्ग ३१-३३) मे कार्त्तवीर्य द्वारा रावण की पराजय का अपेक्षाकृत अधिक विस्तार के साथ वर्णन किया गया है। रावण किसी दिन माहिष्मती के पास पहुँच कर तथा अर्जुन की अनुपस्थिति के विषय मे सुनकर विन्ध्य की पर्वतश्रेणी की ओर चल दिया। नर्मदा के पास पुष्पक से उतर कर रावण नदी मे स्नान करने के बाद उसके तट पर शिव की पूजा करने लगा। उसी समय अर्जुन कार्त्तवीर्य अपने अन्त पुर के साथ नर्मदा मे जलक्रीडा कर रहा था, उसने अपनी सहस्र भुजाओ से नर्मदा की धारा रोक दी जिससे नदी विपरीत दिशा मे बहकर रावण द्वारा चढाए हुए फूल ले गई। कारण का पता लगवा कर रावण अर्जुन से लडने आया किन्तु वह द्वन्द्वयुद्ध मे पराजित होकर अर्जुन द्वारा माहिष्मती के कारावास मे रखा गया। बाद मे अर्जुन ने पुलस्त्य के अनुरोध पर रावण को छुडा कर उसके साथ "**अहिंसक सख्यम**" कर लिया।

विमलसूरि ने नलकूबर-शाप की कथा की भाति प्रस्तुत वृत्तान्त मे भी आमूल परिवर्तन कर दिया है। पउमचरिय (पर्व १०) के अनुसार महेश्वर के राजा सहस्रकिरण किसी समय अपनी सहस्र पत्नियो के साथ नदी मे जलक्रीडा करने गये और इस प्रकार उसने रावण का ध्यान भङ्ग किया था जो स्नान के बाद जिन मूर्त्तियो की उपासना कर रहा था। रावण द्वारा परास्त किये जाने पर सहस्रकिरण ने सन्यास लिया।

(२) **उत्तरकाण्ड** (सर्ग ३४) मे **वालि द्वारा** रावण की पराजय का वर्णन इस प्रकार है।[१] कार्त्तवीर्य के कारावास से मुक्त होकर रावण फिर योग्य प्रतिद्वन्दियो की खोज मे पृथ्वी पर भ्रमण करने लगा। किष्किधा पहुचकर उसने सुन लिया कि वालि दक्षिण समुद्र के तट पर सध्या कर रहा है। इस पर रावण पुष्पक पर चढकर वालि के पास आया। वालि रावण को अपनी काख मे दबा कर आकाश-मार्ग से क्रमश पश्चिम, उत्तर तथा पूर्व सागर गया और इस प्रकार अपनी सध्या समाप्त कर किष्किन्धा लौटा। तभी उसने रावण को मुक्त कर दिया, रावण ने वालि के पराक्रम की प्रशसा करने के बाद इसके साथ सख्य करने की इच्छा प्रकट की। वालि ने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया और रावण महीने भर अपने नये मित्र वालि के यहा रहा। परवर्ती रचनाओ मे रावण की मानहानि को कही और बढा दिया गया है। **आनन्द रामायण** (१,

१ गौडीय पाठ मात्र मे इस प्रसग को किष्किन्धाकाण्ड (सर्ग १०) के अन्तर्गत रखा गया है।

१३, १००) के अनुमार रावण को अङ्गद के पालने के नीचे बाधकर रखा गया था जिामे वह "अङ्गदमूत्रस्य धाराधौतानन" बन गया। **सेरीराम** मे निम्नलिखित कथा मिलती है। रावण पुष्पक पर चढकर मन्दूदाकी के साथ स्वर्गलोक-निवासी इन्द्रजित् से मिलने गया। वालि ने पुष्पक अपने राज्य के ऊपर जाते हुए देखकर रावण पर आक्रमण किया तथा मन्दूदाकी को छीनकर रावण को पुष्पक के साथ समुद्र मे फक दिया। वालि ने अपनी राजधानी मे पहुँच कर मन्दूदाकी से विवाह कर लिया। कुछ समय के बाद उसने हनुमान् को आदेश दिया कि वह गर्भवती मन्दूदाकी की सेवा के लिए २४ राज-कुमारियो को ले आये। इतने मे रावण ने वालि के गुरु (नील चक्र) के पास जाकर मन्दूदाकी के हरण का ममाचार कह सुनाया। गुरु ने रावण को आश्वासन दिया कि उसे मन्दूदाकी वापस मिल जायगी बशते कि वह तपस्वियो के आश्रम नष्ट न करे। तब वालि के गुरु, रावण के साथ, वालि के यहाँ आये। गुरु का निवेदन सुनकर वालि ने आपत्ति की कि मन्दूदाकी गर्भवती है। इस पर गुरु ने मन्दूदाकी का गर्भ निकाल कर उसे किसी बकरी के शरीर मे रख दिया और रावण मन्दूदाकी के साथ अपने भवन चला गया। तब गुरु ने हनुमान् को इन्द्र पवाम नामक पर्वत से फूल ले आने का आदेश दिया। हनुमान् समस्त पर्वत ले आये और उस पर से गुरु के शिष्यो ने आवश्यक फूल चुन लिये। अनन्तर गुरु ने मन्त्रो की सहायता से इन फूलो से एक मण्डूक की और इसके बाद मण्डूक से एक सुन्दर स्त्री की सृष्टि की। गुरु ने उसका नाम देवी बरमा कोमाल रख दिया तथा उसे वालि की पत्नी के रूप मे प्रदान किया। बकरी से जो पुत्र उत्पन्न हुआ, उसका नाम श्री अग्गाद रखा गया, बाद मे देवी बरमा कोमाल ने अनूल नामक पुत्र को जन्म दिया। अन्त मे हनुमान् तथा वालि दोनो वन मे अलग-अलग स्थान पर तपस्या करने चले गये।[1] सेरी राम के **पातानी पाठ** के अनुसार मन्दुदकी के हरण के बाद महाराज वन भी वालि के भवन मे कैदी के रूप मे रखा जाता है। महासिकुल के अनुरोध पर वालि ने दोनो को मुक्त कर दिया। इस कथा मे भी अग्गाद एक बकरी से जन्म लेता हे। **रामकियेन** के अनुसार रावण ने मन्डी को लेकर लङ्का की ओर प्रस्थान किया था और वालि ने रास्ते मे रावण को पराजित करके मडो का हरण किया। बाद मे वालि ने गुरु का निवेदन स्वीकार कर मडो को लौटाया (अध्याय ४)। जब अगद की अवस्था १० वर्ष की थी, तो रावण ने उसे मार डालने का निश्चय किया क्योकि अङ्गद मन्डो के अपमान का स्मरण दिलाता है।

१ तपस्या का उल्लेख पउमचरिय का प्रभाव माना जा सकता है। इस कथा का आधार भारतीय हे। दे० ऊपर (अनु० ६५०) उडिया धर्मपुराण की कथा।

रावण छिपकर किष्किन्धा आया किन्तु सैनिकों ने उसे पकड लिया। तब वालि ने रावण को द्वन्द्वयुद्ध मे परास्त कर दिया, उसने रावण को कैदी के रूप मे अपने पास रक्खा। रावण सात दिन तक किष्किन्धा मे अपमान सहकर लका लौटा (अध्याय ८)। इस रचना मे वालि द्वारा रावण की एक अन्य पराजय भी वर्णित है (दे० अनु० ५६७)।

पउमचरिय (पर्व ८) के अनुसार दशमुख ने किसी दिन दूत भेजकर वालि को आदेश दिया कि वह आकर प्रणाम करे। वालि ने उत्तर दिया कि मेरा मस्तक जिन-वरेंद्र को छोडकर और किसी के सामने नही झुकता। इस पर दशानन आक्रमण की तैयारियाँ करने लगा। वालि ने सोचा कि मै न तो राक्षसराजा के सामने झुक सकता और न जीवो का नाश करने वाला युद्ध कर सकता हूँ, अत उसने सुग्रीव को राजा बनाकर दीक्षा ले ली। बाद मे दशानन का विमान किसी अवसर पर तपोवन वालि के प्रभाव से अष्टापद पर्वत (कैलास) के ऊपर रुक गया। रावण उतरा तथा पर्वत को उठाकर उसे ले जाने लगा। वालि ने यह देख कर कि जीवो को कष्ट हो रहा है पैर के अगूठे से शिखर को दबाया जिससे दशानन पर्वत के नीचे कुचलकर चिल्लाने लगा,उस समय से उसका नाम रावण पड गया। अन्त मे वालि ने अपना अगूठा खीच कर रावण को छुडाया और रावण ने वालि को प्रणाम कर उसकी स्तुति की।

(३) वाल्मीकि रामायण के एक प्रक्षेप (उत्तरकाण्ड के सर्ग २३ के बाद प्रथम प्रक्षिप्त सर्ग) के अनुसार रावण ने यमलोक से निकलने के बाद अश्मनगर पहुँचकर एक भवन मे प्रवेश किया जहाँ **बलि** कैदी था। बलि ने रावण को बता दिया कि भवन के द्वार पर जिस श्याम पुरुष से रावण की भेट हुई, वही विष्णु है। यह सुनकर रावण लडने के लिए उद्यत हुआ किन्तु ब्रह्मा को प्रसन्न करने के लिए विष्णु अंतर्द्धान हो गए। दाक्षिणात्य पाठ मात्र मे इस वृत्तान्त के अन्तर्गत रावण की पराजय का वर्णन किया गया है। इसके अनुसार **बलि** ने अपने यहाँ पडा हुआ चक्र दिखाकर रावण से कहा कि उसे उठाकर मेरे पास आओ। रावण पहले उसे हिलाने मे असमर्थ हुआ, अन्त मे उसने सारी शक्ति लगाकर उसे ऊपर उठाया किन्तु वह तुरन्त मुर्च्छा खाकर गिर गया। तब बलि ने प्रकट किया कि वह चक्र वास्तव मे मेरे किसी पूर्वज का कुण्डल है। **आनन्द रामायण** (१, १३, १०७-११५) मे इस कथा को एक नवीन रूप दिया गया है। इसके अनुसार रावण ने घर मे प्रवेश कर बलि को पत्नी के साथ चौसर खेलता देखा था। बलि के हाथ से एक पासा गिर गया और बलि ने रावण को उसे उठा लाने का आदेश दिया। रावण अपने बीसो हाथो से प्रयत्न करने पर भी पासा उठाने मे असमर्थ रहा। तब एक दासी ने झट पासा उठाकर राजा को दे दिया।

रावण के चले जाने पर बलि के परिचरो ने उसे पकड लिया और उसे घोडो की लीद उठा-उठा कर बाहर फेकने का काम दिया। कुछ समय बाद रावण ने द्वार पर स्थित विष्णु से नगर से निकलने की प्रार्थना की। विष्णु ने उसे पैर के अगूठे से आकाश मे उछाल दिया और रावण लका की ओर चल दिया। **भावार्थ रामायण** (७, २७) का वृत्तान्त स्पष्टतया आनन्द रामायण पर आधारित है।

(४) **कपिल** तथा **विष्णु** द्वारा रावण की पराजय की निम्नलिखित कथा का कोई विकास नही हुआ है। रावण ने किसी दिन पश्चिम सागर के तट पर भीषणाकार कपिल को देखकर उसके साथ युद्ध करने की इच्छा प्रकट की। कपिल ने रावण पर प्रहार कर उसे भूमि पर गिरा दिया और पाताल मे प्रवेश किया। रावण ने उसका पीछा किया किन्तु पाताल मे कपिल के समान तीन कोटि पुरुषो को देखकर वह शीघ्रता से उस स्थान से निकल गया। एक अन्य स्थल पर रावण ने शयन करने वाले विष्णु को तथा उनके पास बैठने वाली लक्ष्मी को देख लिया। रावण ने लक्ष्मी को पकडने के लिए हाथ बढाना चाहा किन्तु विष्णु सब जानकर अचानक जोर से हँसने लगे जिससे रावण भूमि पर गिर पडा। तब विष्णु ने रावण को अभयदान दिया तथा परिचय पूछे जाने पर रावण को अपना विराट् रूप दिखलाया (सर्ग २३ के पश्चात् पचम प्रक्षिप्त सर्ग)।

(५) रावण की एक अन्य पराजय की कथा दाक्षिणात्य पाठ मात्र मे मिलती है (दे० उत्तर काण्ड, सर्ग ३७ के बाद ५वा प्रक्षिप्त सर्ग)। रावण किसी दिन नारद के परामर्श के अनुसार **श्वेतद्वीप** चला आया। वहाँ की युवतियो ने रावण को लीला-पूर्वक एक दूसरे के पास फेक दिया—**हस्ताद्धस्त स च क्षिप्तो भ्राम्यते भ्रमलालस** (श्लोक ३६)। अन्त मे भयातुर रावण सागर के मध्य मे गिर गया। **आनन्द रामायण** (१, १३, १३५) के अनुसार श्वेत द्वीप की एक स्त्री ने रावण को परलका तक फेक दिया और वह अपनी बहन कौचा के शौचकूपक मे जा गिरा। भविष्य पुराण मे **हनुमान्** द्वारा रावण की पराजय का वर्णन किया गया है (दे० अनु० ६६८)।

४—हनुमच्चरित

६५६ उत्तरकाण्ड मे रावणचरित के अनन्तर हनुमान् के जन्म तथा बालचरित का दो सर्गो मे वर्णन किया गया है, अत यहा पर हनुमच्चरित विषयक सामग्री का निरूपण तथा आवश्यकतानुसार उसके विकास का दिग्दर्शन करना अपेक्षित है।

हनुमान् की अत्यन्त लोकप्रियता को ध्यान मे रखकर अनेक विद्वानो ने यह अनुमान किया है कि हनुमत्कथा रामायण के पूर्व ही प्रचलित थी, इस मत का विश्लेषण

तथा खण्डन हो चुका है (अनु० १०१, १०३)। प्रस्तुत हनुमच्चरित के अन्त मे इस लोकप्रियता के वास्तविक कारण पर प्रकाश डाला जाएगा (अनु० ७१०)।

वाल्मीकीय रामायण की आधिकारिक कथावस्तु मे हनुमान् का स्थान अपेक्षाकृत महत्वपूर्ण है। वे राम-लक्ष्मण को सुग्रीव के पास ले जाते है, वर्षाऋतु के पश्चात् सुग्रीव को राम के प्रति उसके कर्त्तव्य का स्मरण दिलाते है, राम की अगूठी लेकर सीता की खोज मे अन्य वानरो के साथ दक्षिण की ओर प्रस्थान करते है, समुद्र लाघकर लका मे सीता का पता लगाते है तथा उनका सन्देश लेकर राम के पास लौटते है। वास्तव मे हनुमान् ही सुन्दरकाण्ड के नायक है। वे युद्ध मे भी एक प्रमुख भाग लेते है (अनु० ५८७) तथा रावण-वध के पश्चात् वे ही सीता के पास और बाद मे भरत के पास राम-विजय का शुभ-सदेश ले जाते है। हनुमान् के दो अन्य कृत्य अत्यधिक प्रसिद्ध हैं, अर्थात् लकादहन तथा औषधि-पर्वत का आनयन, दोनो को समीचीन कारणो से बाद के प्रक्षेप मानना चाहिए (दे० ऊपर अनु० ५३० और ५६४)।

प्रचलित वाल्मीकि रामायण के विभिन्न पाठो के प्रक्षेपो मे अथवा परवर्ती रामकथाओ मे हनुमान् के विषय मे जो सामग्री रामायणीय कथावस्तु से सीधा सम्बन्ध रखती है, उसका निरूपण यथास्थान किया गया है।[1]

६५७ वाल्मीकिकृत आदिकाव्य मे हनुमान् की जन्मकथा का तो अभाव रहा होगा, किन्तु प्रचलित रामायण इसका साक्ष्य है कि आगे चलकर रामायण के कुशीलवो ने इस अभाव की प्रचुर मात्रा मे पूर्ति की है, बाद मे भी इस कथा का विकास होता रहा। अत 'हनुमान् की जन्मकथा तथा बालचरित' नामक प्रथम परिच्छेद मे यह दिखलाया जाता है कि किस प्रकार हनुमान् को क्रमश १) वायुपुत्र, (२) आजनेय, (३) रुद्रावतार, (४) राम का पुत्र तथा (५) विष्णु का अशावतार माना गया है।

द्वितीय परिच्छेद मे हनुमान् के चरित्र-चित्रण का विकास प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाएगा। इसमे राम-कथा से सीधा सम्बन्ध रखने वाली सामग्री के अतिरिक्त हनुमद्विषयक सभी अन्य अर्वाचीन कथाओ का भी ध्यान रखा जाएगा। हनुमान् के निम्नलिखित गुणो का क्रमश अध्ययन होगा—(१) पराक्रम, (२) बुद्धिमत्ता, (३) चिरजीवत्व, (४) ब्रह्मचय, (५) रामभक्ति, (६) देवत्व।

इसके पूर्व यहा पर जैनी रामकथाओ के हनुमच्चरित की कुछ विशेषताओ का उल्लेख आवश्यक है। **पउमचरिय** के अनुसार हनुमान् को रावण तथा सुग्रीव दोनो

१ निम्नलिखित अनुच्छेद विशेष रूप से द्रष्टव्य है—३८२, ५१२, ५२५, ५३१-५३६, ५४१, ५४२, ५४८-५५५, ५७६-५८१, ५८७-५८८, ६०४, ६०५, ६०८, ६१४, ६१५, ६३४, ६५५, ७४६, ७५७।

का रिश्तेदार माना गया है। रावण ने अपनी बहन चन्द्रनखा की पुत्री अनगकुसुमा का तथा सुग्रीव ने अपनी पुत्री पद्मरागा का हनुमान् के साथ विवाह सम्पन्न किया था (अनु० ६६६)। युद्ध के बाद राम ने हनुमान् को राजा बनाकर उन्हे श्रीपर्वत के शिखर पर स्थित श्रीपुर प्रदान किया।[1] अन्त मे हनुमान् ने दीक्षा लेकर निर्वाण प्राप्त किया[2]। गुणभद्र के **उत्तरपुराण** (६८, ७२०) मे भी हनुमान् की इस सिद्धि का उल्लेख है।

क। जन्मकथा तथा बालचरित

६५८ हनुमच्चरित की सबसे बडी विशेषता उनकी जन्मकथा के विविध रूपो का बाहुल्य है। रामायणीय कथा जिसके अनुसार हनुमान् अजनी के पुत्र है निर्विवाद रूप से सर्वाधिक प्रचलित है किन्तु इसकी प्रामाणिकता सदिग्ध है। अत प्रस्तुत परिच्छेद मे सर्वप्रथम रामायणीय जन्मकथा की प्राचीनता पर विचार किया गया है, अनन्तर हनुमान् की विभिन्न जन्मकथाओ का क्रमिक विकास प्रस्तुत किया जायेगा।

हनुमान् के अवतारत्व के विषय मे **अध्यात्म रामायण** (४, ७, १६-२१) मे माना गया है कि हनुमान् अगद आदि पूर्वकाल मे तपस्या द्वारा नारायण की आराधना करके उनके पार्षद बन गए थे और अब उनकी मायाशक्ति के प्रभाव से बानर के रूप मे उत्पन्न हो गए है। दीनकृष्णदास कृत उडिया **रसविनोद** (रचनाकाल १७०० ई० के लगभग) के अनुसार ब्रह्मा, विष्णु और सदाशिव तीनो ने मिलकर हनुमान् का रूप धारण कर लिया था।

पउमचरिय (पव १७) के अनुसार हनुमान् के तीन पूर्वजन्मो का उल्लेख है, उसके अनुसार वह हनुमान् बन जाने के पूर्व क्रमश दमयत, सिहचद्र तथा राजकुमार सिहवाहन के रूप मे प्रकट हुए थे।

---

१. दे० पर्व ८५। सेरीराम के अनुसार हनुमान् ने बीरूहशा पुर्वा का राज्य अस्वीकार करते हुए राम के पास रहने का निवेदन किया था। रामकियेन (अ० ३८) मे इसका वर्णन मिलता है कि राम ने विष्णुकर्मा द्वारा नवपुरी का नगर बनवाकर उसे हनुमान् को प्रदान किया था।

२. दे० पर्व १०८। रामकियेन (अ० ३६) मे भी हनुमान् के तपस्वी बन जाने का उल्लेख है। अध्यात्म रामायण (७, १६, १५) के अनुसार हनुमान् कल्पान्त मे सायुज्य मुक्ति प्राप्त करेगे। अच्युतानन्दकृत उडिया हरिवश के अनुसार हनुमान ने कृष्णावतार के समय राधा के पति के रूप मे जन्म लिया। नीचे ६६१ मे श्री हनुमान के आगामी जन्म की चर्चा है।

(अ) वायुपुत्र

६५६ प्रचलित वाल्मीकि रायायण मे हनुमान् की जो जन्मकथा मिलती है उसकी प्राचीनता तथा प्रामाणिकता के विरुद्ध दो तक प्रस्तुत किए जा सकते है। एक तो वाल्मीकि रामायण मे केसरी अथवा अजना के उल्लेखो की कमी, दूसरा, हनुमान् की उपाधि 'वायुपुत्र' का निरन्तर प्रयोग।

हनुमान् को जन्मकथा के बाहर प्रचलित वाल्मीकि रामायण मे केवल एक ही स्थल है जहा तीनो पाठो मे **केसरी** का हनुमान् के पिता के रूप मे उल्लेख हुआ है,[1] और यह स्थल स्पष्टतया प्रक्षिप्त है। सीता-हनुमान्-सवाद मे हनुमान् सीता से कहते है—**अह सुग्रीवसचिवो हनुमान् नाम वानर** (५, ३४, ३८)। अगले सर्ग मे वह पुन अपना परिचय देते हुए कहते है कि मै केसरी की पत्नी से उत्पन्न हनुमान् हूँ

माल्यवान्नाम वैदेहि गिरीणामुत्तमो गिरि ॥ ७६ ॥
ततो गच्छति गोकर्ण पर्वत केसरी हरि ।
× × ×
यस्याह हरिण क्षेत्रे जातो वातेन मथिलि ।
हनुमानिति विख्यातो लोके स्वेनैव कर्मणा ॥ ८१ ॥ (सग ३५)

प्रचलित रामायण मे केसरी का नाम मात्र भी बहुत कम मिलता है। हनुमान की जन्मकथा तथा उपर्युक्त प्रक्षिप्त उद्धरण के अतिरिक्त उनका नाम किष्किन्धा अथवा सुन्दरकाण्ड मे कही भी नही आया है। इस अभाव की अर्थपूर्णता स्पष्ट है जब इसका ध्यान रखा जाता है कि उन काण्डो मे चार बार मुख्य वानरो की लम्बी सूचिया दी गई है (दे० किष्किधा के सर्ग ४, ५० और ६५ और सुन्दरकाण्ड का सर्ग ३)। प्रामाणिक काण्डो मे से युद्धकाण्ड मे सबसे अधिक मात्रा मे प्रक्षिप्त सामग्री पाई जाती है (दे० ऊपर अनु० ५६१-५६६), उस काण्ड के एक स्थल पर केसरी को वानरमुख्य की उपाधि मिल गई है—**मुख्यो वानरमुख्याना केसरी नाम यूथप** (दे० २७, ३८)। फिर भी इस उद्धरण के अतिरिक्त समस्त युद्धकाण्ड मे केसरी का नाम केवल तीन बार आया है—दो बार अन्य नामो के साथ उनके नाम का उल्लेख मात्र मिलता है (दे० ४, ३३ और ७३, ५६) और एक अ य स्थल पर यह कहा गया है कि केसरी तथा सपाति

---

१ दाक्षिणात्य तथा गौडीय पाठ का एक पूरा सर्ग पश्चिमोत्तरीय पाठ मे नही मिलता, इसमे वानर-सेना के आगमन का वर्णन किया गया है। दाक्षिणात्य पाठ के उस सर्ग मे केसरी का उल्लेख इस प्रकार है—पिता हनुमत श्रीमान्केसरी (दे० ४, ३६, १८), गौडीय पाठ भिन्न है—पितामहसुत श्रीमान्केसरी (४, ३६, २६)।

न घोर युद्ध किया था—**युद्ध केसरिणा सख्ये घोर सम्पातिना कृतम** (दे० ४८, २६)। यह ध्यान देने योग्य है कि किष्किन्धा तथा सुन्दरकाण्ड की भाँति युद्धकाण्ड मे भी मुख्य वानरो की बहुत सी लम्बी सूचिया मिलती है, जिनमे केसरी का नाम नही है, उदा० सर्ग ३, २६, ३०, ३१, ४२, ४३ और ४७। युद्धकाण्ड के अन्त मे भरत द्वारा अयोध्या मे वानरो का स्वागत वर्णित है, इस प्रसङ्ग मे हनुमान के अतिरिक्त तेरह वानरो के नाम आये है किन्तु केसरी का कही भी उल्लेख नही हुआ है (दे० १२७, ४२ आदि)। दाक्षिणात्य पाठ के बालकाण्ड मे भी वानरो की उत्पत्ति के प्रसङ्ग मे बारह नाम उल्लिखित हुए है (दे० सर्ग १७), वालि और तार को छोडकर सब नाम युद्धकाण्ड के अन्त मे भी आए है। ये ही प्रमुख माने जा सकते है किन्तु केसरी उनमे नही है।

उत्तरकाण्ड के निरीक्षण से भी वही निष्कर्ष निकलता है। हनुमान् की जन्म-कथा (सर्ग ३५-३६) को छोडकर उत्तरकाण्ड का केवल एक ही स्थल है जहाँ तीनो पाठ केसरी का नाम लेते है, दान-वितरण के प्रसङ्ग मे केसरी का अन्य वानरो के साथ उल्लेख हुआ है।[1] स्वर्गारोहण के वर्णन मे कही भी केसरी का नाम नही आया है (दे० सर्ग १०८)। इन सब बातो को ध्यान मे रखकर स्पष्ट हो जाता है कि प्रारम्भ मे केसरी का मुख्य वानर के रूप मे चित्रण नही हुआ था, अधिक सभव यही प्रतीत होता है कि आदि रामायण मे इसका उल्लेख तक नही किया गया था। महाभारत के रामोपाख्यान मे केसरी का कही भी उल्लेख नही मिलता, इससे भी हमारे निष्कर्ष की पुष्टि होती है।[2]

अजना का नाम प्रचलित वाल्मीकि रामायण मे हनुमान् की जन्मकथा के बाहर केवल एक ही बार आया है (६, ७४, १८), किन्तु जिस सर्ग मे अजना का यह उल्लेख मिलता है, वह निश्चित रूप से प्रक्षिप्त है (दे० अनु० ५६४)। महाभारत मे अजना का नाम एक बार भी नही पाया जाता है।

प्रस्तुत विश्लेषण के आधार पर अनुमान किया जा सकता है कि आदि रामायण मे केसरी अथवा अजना का कही भी उल्लेख नही हुआ था। हनुमान् की जन्मकथा

१. दे० ३९, २०। अगले सर्ग मे वानरो की विदा का वर्णन किया गया है, इस प्रसङ्ग मे गौडीय और पश्चिमोत्तरीय पाठ तथा दक्षिण के सस्करण (दे० गोविन्द पाठ) केसरी का उल्लेख नही करते, अत बम्बई सस्करण मे जो उल्लेख मिलता है (दे० ४०, ७) उसे परवर्ती प्रक्षेप मानना चाहिए।

२ महाभारत के एक ही स्थल पर केसरी का नाम मिलता है, हनुमान्-भीम-सवाद के अन्तर्गत हनुमान् को केसरी की पत्नी से उत्पन्न माना जाता है (दे० ३, १४७, २४)।

की प्राचीनता के विरुद्ध जो दूसरा तर्क है वह कहीं और महत्वपूर्ण है। यह तर्क प्रचलित रामायण मे प्रयुक्त हनुमान् की उपाधियो पर आधारित है।

६६० वाल्मीकि रामायण मे हनुमान् को प्राय **वायुपुत्र** अथवा इसके पर्यायवाची शब्द की उपाधि दी जाती है। महाभारत मे भी हनुमान् को पाँच बार **मारुतात्मज**, तीन बार **पवनात्मज**, दो बार **अनिलात्मज**, एक बार **वायुपुत्र** तथा एक बार **वायुतनय** कहा गया है। किन्तु केसरीपुत्र अथवा अजनापुत्र इस प्रकार का विशेषण कहीं मिलता हीं नहो। अत यह अनुमान सहज ही मन मे उत्पन्न होता है कि सभवत हनुमान पहले वायुपुत्र के नाम से विख्यात थे, बाद मे ही केसरी-अजना के पुत्र के रूप मे। रामायण मे हनुमान् के निम्नलिखित नाम सर्वाधिक प्रयुक्त हुए हैं—**मारुतात्मज, मारुति, पवनात्मज, वायुपुत्र, वायुसूनु, वायुसुत,** और **अनिलात्मज**। इनके अतिरिक्त **वातात्मज, मारुत, पवनसुत, अनिलसुत,** ये नाम भी कई बार आए है। कुछ अन्य नाम केवल एक ही बार प्रयुक्त हुए, अर्थात **वायुनन्दन** (५, ५७, १०), **वायुसभव** (५, ३५, ८८), **पवनसभव** (५, १५, ५४), **मारुतनन्दन** (५, १८, २०), **वासवदूतसूनु** (६, ७४, ५८), **गधवहात्मज** (एकही सर्ग मे दो बार, अर्थात् ६, ७४, ६६ और ७३)।

हनुमान् की उत्पत्ति-विषयक उपाधियो का यह बाहुल्य दृष्टि मे रखकर तथा इसमे केसरी अथवा अजना के उल्लेख का अभाव देखकर उपयुक्त अनुमान सुदृढ धारणा मे परिणत हो जाता है कि वाल्मीकि रामायण के कुशीलव बहुत समय तक हनुमान् को वायुपुत्र ही मानते थे, और उस कथा से अनभिज्ञ थे, जिसके अनुसार हनुमान् केसरी की पत्नी अजना की सन्तान है। दाक्षिणात्य पाठ के बालकाण्ड मे जहा देवताओ द्वारा अप्सराओ, गर्धवियो और वानरियो से वानरो तथा ऋक्षो की उत्पत्ति का वर्णन किया गया है, वहाँ भी मारुत को ही हनुमान् का पिता माना गया है (दे० सर्ग० १७, १६)।

६६१ बाद मे **आजनेय** (दे० महानाटक १४, ६४), **अजनीसुत** आदि नाम भी प्रचलित होने लगे, उत्तरकाण्ड की जन्मकथा मे अजनीसुत मिलता ही है किन्तु ध्यान देने योग्य है कि यह केवल दाक्षिणात्य पाठ मे पाया जाता है, गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठो के समानान्तर स्थलो पर इसका अभाव इस नाम को प्रक्षेप सिद्ध कर देता है।

उद्धरण इस प्रकार है

तथा केसरिणा त्वेष वायुना सोऽञ्जनीसुत ॥३१॥
प्रतिषिद्धोऽपि मर्यादा लघयत्येव वानर । (दा० रा०, सर्ग ३६)

यदा केसरिणा ह्येष वायुना ऽञ्जनया तथा ।
प्रतिषिद्धोऽपि मर्यादा लघयत्येष वानर ॥२१॥(प० रा०, सर्ग० ३६)
यदा केसरिणा त्वेष वायुना स्वजनै सह ।
प्रतिषिद्धोऽपि मर्यादा लघ्यत्येष वानर ॥७॥ (गौ० रा०, सर्ग० ४०)

६६२ **'वायुपुत्र'** नाम की उत्पत्ति के विषय मे निम्नलिखित कल्पना निराधार नही कही जा सकती है । रामायण की रचना के पहले ही 'वायुपुत्र' शब्द एक निश्चित अर्थ मे प्रचलित था । 'सुमग्गा' जातक मे एक 'वायुस्स पुत्त' अर्थात् विद्याधर की कथा मिलती है जिसमे न तो हनुमान् का उल्लेख है और न किसी अन्य वानर का । यह विद्याधर ऐन्द्रजालिक है और 'वायुस्स पुत्त' का अर्थ अन्यत्र भी विद्याधर अथवा जादूगर है, महाभारत मे भी 'वातिक' (दे० ३, २४३, ३) इससे मिलता-जुलता अर्थ रखता है । रामायण मे हनुमान् समुद्र लाँघते है, सीता का पता लगाते है और अन्य वानरो की अपेक्षा बुद्धिमान तथा कायकुशल माने जाते है । अद्भुत रस से परिपूर्ण उनके उस चरित्र-चित्रण का ध्यान रखकर उनको 'वायुपुत्र' (अर्थात् विद्याधर, ऐन्द्रजालिक) की उपाधि मिल गई होगी ।[1] बाद मे 'वायुपुत्र' नाम के आधार पर प्रचलित जन्मकथा विकसित हुई होगी, इसके अनुसार वायु ने किसी शाप-भ्रष्टा अप्सरा से हनुमान् को उत्पन्न किया है ।

(आ) आजनेय

६६३ हनुमान् की जन्मकथा दाक्षिणात्य पाठ मे (तथा अन्य पाठो के समानान्तर स्थलो पर) तीन बार मिलती है—प्रथम बार किष्किन्धाकाण्ड मे जहाँ जाम्बवान् अन्य कपियो को समुद्र लाघने मे असमथ समझकर हनुमान् की कथा तथा उनके सामर्थ्य का वर्णन करता है, दूसरी बार, युद्धकाण्ड के एक प्रक्षेप मे, जिसमे गुप्तचरो को दुबारा राम की सेना का निरीक्षण करने भेजा जाता है (दे० अनु० ५६२), तीसरी बार अपेक्षाकृत अर्वाचीन उत्तरकाण्ड मे । गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठो मे जाम्बवान् के भाषण के बाद हनुमान् स्वय अपने पिता केसरी के एक वरदान का उल्लेख करते हुए अपनी ही जन्मकथा का पुन विवरण करते है । इन चार जन्मकथाओ का कालक्रम निर्धारित करना असभव है, फिर भी किष्किधाकाण्ड की कथा सबमे प्राचीन प्रतीत होती है, अत सर्वप्रथम इसका निरूपण करना उचित होगा ।

---

१. दे० जर्मन ओरियेटल जर्नल, भाग ६३, पृ० ८६ । विनय-पत्रिका मे तुलसी दास भी हनुमान् को 'काव्य कौतुक कलाकोटि सिंधो' कहकर पुकारते है (दे० २८, ५) ।

६६४ प्रचलित रामायण के **किष्किन्धाकाण्ड** (सर्ग ६६) के अनुसार हनुमान् की जन्मकथा इस प्रकार है। पुंजिकस्थला नामक अप्सरा को शापवश[1] वानर-योनि प्राप्त हुई थी। वह कुंजर (पश्चिमोत्तरीय पाठ मे विरज) की पुत्री अंजना के रूप मे प्रकट होकर केसरी की पत्नी बन गई। कामरूपिणी होने के कारण उसने किसी दिन रूपयौवनसम्पन्न मानव शरीर धारण कर लिया। मारुत ने उसे इस रूप मे देखा तथा उस पर आसक्त होकर उसका आलिंगन किया। अंजना के आपत्ति करने पर मारुत ने उसको एक वीर्यवान बुद्धिसम्पन्न पुत्र को उत्पन्न करने का वरदान दिया, जिसकी गति वायु के समान होगी

> **मनसाऽस्मि गतो यत्त्वा परिष्वज्य यशस्विनि ।**
> **वीर्यवान बुद्धिसम्पन्नस्तव पुत्रो भविष्यति ।।१८।।**
> **महासत्त्वो महातेजा महाबलपराक्रम ।**
> **लघने प्लवने चैव भविष्यति मया सम ।।१६।।**

इस वरदान के फलस्वरूप अंजना गर्भवती हुई और उसने एक गुफा में हनुमान् को जन्म दिया। उदयमान् सूर्य को देखकर तथा उसे फल समझकर शिशु उसे पकडने के लिए आकाश मे कूद पडा। इन्द्र[2] ने उसे वज्र से मारा तथा पर्वत के शिखर पर गिरने के कारण शिशु की बाई ठोडी (हनु) टूट गई। इससे उसका नाम हनुमान् पडा

> **तदा शैलाग्रशिखरे वामो हनुरभज्यत।**
> **ततोऽभिनामधेय ते हनुमानिति कीर्तितम ।।२४।।**

अपने पुत्र की यह दशा देखकर वायु ने क्रोध मे आकर अपनी गति बन्द कर दी (**न ववौ वै प्रभजन**), जिससे समस्त प्राणी अत्यन्त व्याकुल हुए और देवता आकर

---

१ ब्रह्मपुराण मे इन्द्र के शाप का उल्लेख है (दे० ८४, १४)। तेलुगु द्विपद रामायण (४, २२) के अनुसार अग्नि ने यह शाप दिया था। कृत्तिवासीय रामायण मे विश्वामित्र का शाप उल्लिखित है जिसके फलस्वरूप हनुमान् की नानी वानरी बन गई थी। एक लोककथा के अनुसार पुंजिकस्थला के बहुत अनुनय-विनय करने पर उसे कामरूपिणी होने का वरदान मिला था। दाक्षिणात्य पाठ के दो स्थलो पर कहा गया है कि रावण को पुंजिकस्थला के कारण शाप दिया गया था (दे० अनु० ६५४)।

२ पश्चिमोत्तरीय पाठ मे यहा पर राहु का भी उल्लेख है। यह प्रसग उत्तर-काण्ड से लिया गया है। (दे० आगे अनु० ६६६)।

वायु को मनाने लगे । ब्रह्मा ने हनुमान् को 'अशस्त्र-वध्यता' का तथा इन्द्र ने इच्छानुसार मरण (**स्वच्छन्दतश्च मरणम्**) का वरदान दिया ।[1]

अगले सर्ग मे भी जाम्बवान् हनुमान को फिर **'वीरकेसरिण पुत्र'** कहकर सबोधित करता है (दे० ६७, ३१) ।

६६५ **युद्धकाण्ड** की सक्षिप्त हनुमत्कथा एक विस्तृत प्रक्षेप मे आई है । उसमे हनुमान को केसरी का **ज्येष्ठ पुत्र** बताया गया है । इसके बाद हनुमान के सूय की ओर लपकने की कथा मिलती हे और कहा गया है कि वज्र से आहत होकर शिशु **'भास्करोदय'** नामक पर्वत पर गिर गया था । (दे० ६, २८, १०-१५) ।

६६६ **उत्तरकाण्ड** (सर्ग ३५-३६) मे हनुमान् की जन्मकथा तथा बालचरित का प्रसग इस प्रकार है । राम ने अगस्त्य से रावणचरित सुनने के पश्चात् पूछा था—'हनुमान् इतने शक्तिशाली होते हुए भी वालि के विरुद्ध सुग्रीव की सहायता करने मे असमर्थ थे, मेरा तो विचार यह है कि हनुमान् अपना बल जानते ही नही थे ।" इस पर अगस्त्य ने इसका रहस्य खोलकर उत्तर दिया कि मुनियो के शाप के फलस्वरूप—**"न वेत्ता हि बल सर्वबली सन् ।"** अनन्तर अगस्त्य ने हनुमान् की पूरी कथा सुनाई । यह कथा किष्किन्धाकाण्ड के वृत्तान्त से बहुत-कुछ मिलती-जुलती है, किन्तु इसमे इसका उल्लेख नही किया गया है कि अजना वास्तव मे एक शापग्रस्ता अप्सरा थी । केसरी सुमेरु पर्वत के राजा है, वायु उसकी पत्नी अजना से हनुमान् को उत्पन्न करते है । प्रसव के बाद ही अजना फल बटोरने के उद्देश्य से वन चली जाती है । माता की अनुपस्थिति मे भूख से व्याकुल होकर तथा सूर्य को फल समझकर शिशु बालसूर्य पकडने के लिए आकाश मे कूद पडता है । सूर्य उसे बच्चा समझकर तथा उसका भावी कार्य-कलाप जानकर उसको नही जलाते है । सयोग से राहु उसी दिन सुर्य को ग्रहण करना चाहता था, जब वह सूय के पास पहुँचा और हनुमान् ने उसका स्पर्श किया तब राहु भयभीत होकर इन्द्र के यहाँ दौडा तथा शिकायत करने लगा—"आपने भूख मिटाने के लिए मुझे चद्र और सूर्य को प्रदान किया है, अब आपने किसी दूसरे को सूय क्यो दे दिया है । आज मैंने एक अन्य राहु को सूर्य को पकडते देखा ।" यह सुनकर इन्द्र हाथी पर सवार होकर सूर्य की ओर चल दिए । राहु पहले ही सूर्य के समीप पहुँचा, हनुमान् उसे एक दूसरा फल समझकर उसकी ओर कूद पडे, जिस पर राहु इन्द्र की दुहाई देने लगा, इन्द्र उसी समय आ पहुँचे कि हनुमान् ऐरावत को एक बडा फल समझ कर उस

१ पश्चिमोत्तरीय पाठ मे इन्द्र के वरदान का उल्लेख नही है । गौडीय पाठ मे कोई भी वरदान उल्लिखित नही है तथा वायु के न चलने का प्रसग भी नही है ।

पर टूट पडे और इन्द्र ने हनुमान् को वज्र से मार गिराया। वायु ने अपने आहत पुत्र को उठाकर किसी गुफा मे प्रवेश किया तथा वर्षों तक सब प्राणियो को "निरुच्छ्वास" करते रहे। अन्त मे देवता, असुर, मनुष्य, गधर्व सब मिलकर ब्रह्मा की शरण मे आ पहुँचे, ब्रह्मा उनके उस कष्ट का रहस्य प्रकट कर सबो को साथ लिए वायु के पास गए (सर्ग० ३५)।

ब्रह्मा ने सबसे पहले हनुमान् को स्पर्शमात्र द्वारा पुनर्जीवित किया। अनन्तर उन्होने देवताओ से निवेदन किया कि इस शिशु के भावी महान् कार्यो को ध्यान मे रखकर वे उसे विभिन्न वर प्रदान करे। दवताओ ने इन्द्र की प्रार्थना स्वीकार की (दे० आगे अनु० ६६४)।

सब के चले जाने के पश्चात् वायु ने अजना को अपना पुत्र को सौप दिया। बढने पर शिशु महर्षियो के आश्रमो मे निर्भय होकर विचरने लगा तथा केसरी आदि की मनाही पर ध्यान न देकर अनेक प्रकार से उत्पात मचाने लगा

स्रुग्भण्डान्यग्निहोत्राणि वल्कलाना च सचयान्।
भग्नविच्छिन्नविध्वस्तान सशान्ताना करोत्ययम ॥ २६ ॥

अन्ततोगत्वा महर्षियो ने हनुमान् को शाप दिया कि तुमको दीर्घकाल तक अपने बल का ज्ञान नही होगा।[1] हनुमान् बचपन से ही सुग्रीव के अन्तरग सखा थे किन्तु अपने बल का ज्ञान न रहने के कारण वे वालि के विरुद्ध सुग्रीव की सहायता नही कर सके।

कथा के अन्त मे दीघ छन्दो मे इसका वर्णन किया गया है कि हनुमान् ने सूर्य की सहायता से व्याकरण का अध्ययन किया (दे० आगे अनु० ६८६)।

६६७ जाम्बवान् से अपनी जन्मकथा सुन लेने के पश्चात् हनुमान् विशाल रूप धारण कर तथा समुद्रलघन के लिए उद्यत होकर अपन ही बल का गुणगान करने लगते है। यहा तक रामायण के तीनो पाठ सहमत है, किन्तु पश्चिमोत्तरीय तथा गौडीय पाठो के अनुसार हनुमान् ने उस अवसर पर अपनी जन्मकथा का पुन विवरण करके अपने पिता केसरी के एक वरदान का भी उल्लेख किया है। पश्चिम

१ दाक्षिणात्य पाठ (३६, ३४) के अनुसार शाप के अनन्तर मुनियो ने यह और जोड दिया—**यदा ते स्मायते कीर्त्तिस्तदा ते वधते बलम। रामकियेन** (अ० ७) के अनुसार हनुमान् एक दिन उमा के उद्यान मे उत्पात मचाने लगा था और उमा ने उसे यह शाप दिया कि तुम्हारा आधा बल लुप्त हो जाय। हनुमान् के विनय करने पर उमा ने कहा कि नारायणावतार राम के स्पर्श से तुम्हारा शरीर अपना पूर्व बल प्राप्त कर सकेगा।

समुद्र के तट पर प्रभासतीर्थ मे एक महागज[1] ऋषियो को तग किया करता था। केसरी ने उसका वध किया तथा वरदान प्राप्त कर वायु के समान वीर्यवान्, कामरूपी[2] तथा अव्यय पुत्र मागा। शेष जन्मकथा जाम्बवान् की कथा के सदृश है, किन्तु इसमे पुंजिक-स्थला का उल्लेख नही है तथा जिस पर्वत के शिखर पर अजना मारुत से देखी गई उसका नाम मलय बताया गया है। इस कथा मे हनुमान् के बालचरित का वर्णन नही मिलता (दे० गौ० रा० ५, ३, ७-३४, प० रा० ४, सर्ग ५८)।

६६८ हनुमान् की उपर्युक्त जन्मकथा तथा बालचरित प्राय सभी अर्वाचीन रामकथाओ मे न्यूनाधिक परिवर्तन सहित विद्यमान है। वह कथा स्वतत्र रूप से भी पुराणो मे मिलती है, वहाँ इसका उद्देश्य प्राय किसी तीर्थ अथवा इष्टदेव का गुणगान है।

ब्रह्मपुराण (अध्याय ८४) मे हनुमान् की जन्मकथा पैशाचतीर्थ के माहात्म्य-वर्णन मे आई है। कथा इस प्रकार है—अजनपर्वत के शिखर पर केसरी निवास करता था। उसकी दोनो पत्नियाँ वास्तव मे अप्सराएँ थी, जो इन्द्र के शाप से पृथ्वी पर प्रकट हुई। एक का नाम था अजना, और उसका मुख वानरो का सा था, दूसरी का नाम अद्रिका था और उसका मुख मार्जारो जैसा था। किसी दिन केसरी की अनुपस्थिति मे दोनो ने अगस्त्य का अच्छा आतिथ्य-सत्कार किया तथा यह वरदान माँग लिया— **"पुत्रौ देहि मुनीश्वर सर्वेभ्यो बलिनौ श्रेष्ठौ सर्वलोकोपकारकौ"**। अगस्त्य के चले जाने के बाद वायु तथा निर्ऋति अजना तथा अद्रिका को देखकर उन पर आसक्त हो गए तथा उनके साथ रमण किया।[3] फलस्वरूप अजना-वायु से हनुमान् उत्पन्न हुए और अद्रिका-निर्ऋति से अद्रि पिशाचो का राजा। बाद मे अद्रि अजना को गौतमी नदी के किसी तीर्थस्थान पर ले गया और वहाँ वह स्नान करके शापमुक्त हो गई उस तीर्थ का नाम अजनम् अथवा पैशाचम् रखा गया। हनुमान् अद्रिका को एक दूसरी जगह ले गए जहाँ वह भी शाप मुक्त हो गई, उस तीर्थ का नाम मार्जार, हनुमन्त अथवा वृषाकपि रखा गया। **आनन्द रामायण** (१, १३, १५८-१६१) मे भी इस कथा का अत्यन्त सक्षिप्त रूप मिलता है।

---

१ बगीय पाठ मे इसका नाम धवल है, पश्चिमोत्तरीय पाठ मे शखशवल।

२ प्रचलित वाल्मीकि रामायण तथा महाभारत मे सभी वानर और राक्षस कामरूपी तथा आकाशगामी माने जाते हैं। जैनी रामकथाओ के विद्याधर भी इन गुणो से सम्पन्न है।

३ बलरामदास रामायण (उत्तरकाण्ड) मे भी पवन तथा अजना के रमण करने का उल्लेख है।

स्कन्द पुराण शैवो का ग्रन्थ है, अत वहा शिशु हनुमान् के स्वास्थ्यलाभ का श्रेय शिव को दिया गया है। हनुमत्केश्वर माहात्म्य नामक अध्याय मे लिखा है कि पवन ने पहले शिव की आराधना की थी तथा इसके बाद अपने पुत्र को शिवलिंग-स्पर्श द्वारा स्वस्थ बना दिया था। इस कारण से उस लिंग का नाम हनुमत्केश्वर रखा गया। अनन्तर देवताओ के आगमन तथा उनके वरदानो का वर्णन किया गया है (दे० अवती-खण्ड, चतुरशीतिलिंगमाहात्म्य, अध्याय ७६)।

भविष्य पुराण (प्रतिसर्गपर्व, चतुथ खण्ड, अध्याय १३, ३७-४५) के अनुसार वज्र से मारे जाने पर भी हनुमान् ने सूर्य को हाथ से नही जाने दिया। सूय का आर्त्त-वचन सुनकर रावण आ पहुँचा तथा हनुमान् की पूँछ खीचने लगा। इसपर हनुमान् ने सूर्य को छोड दिया तथा एक वर्ष तक रावण के साथ मल्लयुद्ध करते रहे। अन्त मे रावण की हार हुई और हनुमान् उस पर प्रहार करने लगे। तब विश्रवा ऋषि न आकर रुद्रावतार हनुमान् को सन्तुष्ट किया और उन्होने रावण को छोड दिया। **आनद रामायण** (१, १३, १६४-१६८) तथा **भावार्थ रामायण** (७, ३५) के अनुसार वायु अपने पुत्र को सूर्य की ओर बढते हुए देख कर उसे प्रचण्ड ताप से बचाने के लिए दौडे। किन्तु वह उसे रोकने मे असमर्थ होकर समीर द्वारा उसे ठडा करने लगे। सूर्य के पास पहुँचकर तथा राहु को मूर्य निगलते देखकर हनुमान् ने अपनी पूँछ के प्रहार से राहु को अचेत कर दिया। तब केतु राहु की सहायता करने आया, किन्तु हनुमान् ने दोनो को परास्त कर दिया। अन्त मे राहु और केतु ने इन्द्र की शरण ली। **माधव कदली** के सुन्दरकाण्ड (अध्याय ३) के अनुसार हनुमान् सूर्य के तेज के कारण पर्वत-शिखर पर गिर गया, जिससे उसकी हनु टूट गई।

सेरीराम मे तत्सबधी कथा इस प्रकार है। वन मे फल खोजते समय हनुमान् उदीयमान सूर्य को लाल फल समझकर उसकी ओर कूद पडा जिससे वह जल कर मरा और उसकी हड्डियाँ समुद्र मे गिर गई। बाद मे मछलियो ने इन हड्डियो को एकत्र कर लिया और सूर्य न अजना के पितामह का अनुरोध स्वीकार कर हनुमान् को जिलाया और उनको युद्ध-माया के अनेक मत्र प्रदान दिए। **ब्रह्मचक्र** के अनुसार किसी ऋषि ने तपस्या का जीवन त्याग कर जादू से एक कन्या की सृष्टि की और उससे दो पुत्रियो को उत्पन्न किया था। एक पुत्री वानरी के रूप मे प्रकट हुई, उसने पवन नामक वानर-राजा के साथ विवाह करके हनुमान् को जन्म दिया।

६६६ जैनी रामायणो की जन्मकथा रामायण पर आधारित होते हुए भी इससे बहुत भिन्न है। **पउमचरिय** (पर्व १५-१८) के अनुसार आदित्यपुर के राजकुमार पवनजय (अथवा वायुकुमार) ने महेन्द्रपुर की राजकुमारी अजना कुमारी से विवाह

किया था, विवाह के पूर्व ही पवनजय ने अजना कुमारी की सखी के मुँह से अपनी निन्दा सुन रखी थी, इसलिए वह २२ वर्ष तक अपनी पत्नी के प्रति उदासीन रहा। तब वह रावण की ओर से वरुण के विरुद्ध युद्ध करने गया, किसी सध्या को अजना के प्रति उसका अनुराग जाग्रत हुआ जिससे वह आदित्यपुर लौटा और छिपकर अपनी पत्नी से मिला। उसने उसी रात को पुन युद्ध के लिए प्रस्थान किया। इस गुप्त मिलन के फलस्वरूप अजना कुमारी गर्भवती हुई, पति की अनुपस्थिति मे गर्भ होने के कारण अजना कुमारी को अपनी सखी वसन्तमाला के साथ ससुराल तथा मायके दोनो से निकाल दिया गया। इस निष्कासन का परोक्ष कारण यह माना गया है कि पूर्वजन्म मे उसने एक सपत्नी की जिन-प्रतिमा उठाकर घर के बाहर रख दी थी। उसने एक गुफा मे पुत्र को जन्म दिया। बाद मे अजना का मामा प्रतिसूर्यक उसे पुत्रसहित हनुरुहपुर ले गया। हनुरुहपुर की ओर जाते समय बालक अपनी माता की गोद से उछलकर पर्वत की शिला पर जा गिरा। विमान से उतरकर अजना ने देखा कि बालक के गिरने से पहाड चूर्ण-चूर्ण हो गया है, इससे उसका नाम श्रीशैल रखा गया। युद्ध से लौटकर पवनजय ने अपनी पत्नी के सतीत्व का साक्ष्य दिया और अजनाकुमारी पुत्रसहित अपनी ससुराल लौटी, हनुरुहपुर मे रहने के कारण बालक का हनुमान् नाम प्रचलित होने लगा।[1] गुणभद्र के **उत्तरपुराण** (पर्व ६८, २७५-२८०) के अनुसार विद्युत्कान्त नगर के राजा प्रभजन ने अपनी पत्नी से अमिततेज नामक पुत्र उत्पन्न किया। अमिततेज ने किसी दिन विजयार्थ पर्वत पर दाहिना पैर रखकर बाएँ पैर से सूर्य पर प्रहार किया, अनन्तर त्रसरेणु जैसा अपना छोटा-सा शरीर बना लिया जिससे उसका अणुमान नाम चल पडा।

(इ) रुद्रावतार

६७० अनेक शैव पुराणो मे तथा बहुत सी अर्वाचीन रचनाओ मे हनुमान् को शिव का अवतार माना गया है। प्रारभ मे उनके **रुद्रावतार** अथवा रुद्राश होने का उल्लेख मात्र मिलता है किन्तु परवर्ती रचनाओ मे इसके विषय मे विभिन्न कथाओ की कल्पना कर ली गई है। **स्कदपुराण** की अधिकाश सामग्री आठवी शताब्दी के बाद की है, उस पुराण के अवन्तीखण्ड (चतुरशीतिलिंगमाहात्म्य, अ० ७६) तथा रेवाखण्ड (अ० ८४) मे हनुमान् को रुद्राश कहा गया है। **महाभागवत पुराण** (अ० ३७) के अनुसार, जिस समय विष्णु रावण के नाश के लिए अवतार लेने की प्रतिज्ञा करते है, उस समय शिव ने विष्णु से कहा था कि मैं वायु का पुत्र बनकर वानर के रूप मे

---

१ हस्तिमल्लकृत अजनापवनजय मे प्रस्तुत कथा को एक किंचित् भिन्न रूप दिया गया है। (दे० अनु० २३६)।

तुम्हारी सहायता करूँगा—**अहं वानररूपेणसंभूय पवनात्मज साहाय्यं ते करिष्यामि।** **बृहद्धर्म पुराण** (अ० १८) की रामकथा महाभागवत पुराण की रामकथा से बहुत भिन्न नही है, इसमे भी शिव की इस प्रतिज्ञा का उल्लेख है। **नारद पुराण** (पूर्वखण्ड, अ० ७६) और **ब्रह्मवैवर्त्त पुराण** (कृष्णजन्मखण्ड, अध्याय ६२, ६२) मे हनुमान् को शिव के अंश से उत्पन्न माना गया है—**रुद्रकलोदभव**। **महानाटक** (६, २७) मे रावण यह देखकर कि रुद्रावतार हनुमान् द्वारा लका जलाई जा रही है, कहता है—"मैने अपने दस सिर चढाकर दस रुद्रो को प्रसन्न किया था, यह हनुमान् ग्यराहवे रुद्र के अवतार है। **कम्ब रामायण** (५, १३) तथा **तत्त्वसंग्रह रामायण** (७, २) मे रुद्रावतार के रूप मे हनुमान् का उल्लेख किया गया है। **कृत्तिवासीय रामायण** (६, १२६) के अनुसार सीता रामाभिषेक के बाद हनुमान् को अन्न परोसती थी। हनुमान् को भोजन से तृप्त करने मे अपने को असमर्थ पाकर वह आश्चयचकित हुई तथा ध्यान लगाकर समझ गई कि हनुमान् शिव के अवतार है। शिव की वन्दना करके ही वह हनुमान् को तृप्त करने मे समर्थ हुई। आनन्द रामायण (१, ११), तुलसीकृत दोहावली (१४२ ३), विनयपत्रिका, हनुमान् बाहुक, राममोहन वन्ध्योपाध्याय कृत रामायण आदि रचनाओ मे भी हनुमान् के रुद्रावतार होने का उल्लेख है।

६७१ भविष्य पुराण (प्रतिसग पर्व, चतुथखड अध्याय १३, ३१-३६) मे भी हनुमान् की जन्मकथा को एक ऐसा रूप दिया गया है कि केसरी ही हनुमान् के पिता बन जाते है किन्तु साथ-साथ रुद्र तथा वायु दोनो भी हनुमान् की उत्पत्ति मे सहायक है। रावण से त्रस्त होकर देवताओ ने ग्यारह वर्ष तक शिव की पूजा करन के बाद यह वरदान प्राप्त किया था कि शिव रावण का विरोध करने के उद्देश्य से अवतार लेगे। शिव ने इस प्रकार अवतार लिया। अजना गौतम की पुत्री थी, शिव ने रौद्र तेज के रूप मे उसके पति केसरी के मुख मे प्रवेश किया। इसके फलस्वरूप केसरी ने स्मरातुर होकर अपनी पत्नी के साथ सभोग किया। इतने मे वायु ने भी केसरी के शरीर मे प्रविष्ट होकर अजना के साथ रमण किया। दम्पति के बारह वर्ष तक सभोग करने के बाद अजना गर्भवती हुई तथा उसने एक 'वानरानन' पुत्र को जन्म दिया। अपने पुत्र को कुरूप देखकर अजना ने उसे पर्वत पर से नीचे फेक दिया।

नवलकिशोर प्रेस से प्रकाशित **शिवपुराण** (शतरुद्र खण्ड, अध्याय ३६-४२) मे जो विस्तृत हनुमच्चरित मिलता है वह भविष्य पुराण का स्मरण दिलाता है। इसके अनुसार प्रभजन ने केसरी की पत्नी अजनी से रुद्रांशावतार हनुमान् को उत्पन्न किया था। अजनी ने अपने पुत्र का वानर मुख देखकर उसे जन्म के पश्चात् ही पर्वत के शिखर से नीचे गिरा दिया जिससे भूकम्प हुआ।

६७२ भविष्य पुराण की उपर्युक्त कथा मे अजना गौतम की पुत्री मानी जाती है। वास्तव मे हनुमान् की बहुत सी जन्मकथाओ के अनुसार **गौतम-पुत्री अजना** शिव के वरदान से हनुमान् की माता बन गई थी। इन जन्मकथाओ के विकास की रूप-रेखा इस प्रकार है। **कथासरित्सागर** पर आधारित अनेक कथाओ मे गौतम अपनी पुत्री को गर्भवती बन जाने का शाप देते है क्योकि उसने अपनी माता अहल्या का व्यभिचार प्रकट नही किया था (दे० अनु० ३४७)। एक **गुजराती दन्तकथा** के अनुसार अजना अपने पिता का शाप सुन कर शिव से वरदान प्राप्त करने के उद्देश्य से तपस्या करने लगी। शिव की आज्ञा से नारद ने अजनी के कान मे मत्र कह दिया जिसके प्रभाव से उसने हनुमान् को जन्म दिया। उसका पुत्र इसलिए वानर के रूप मे प्रकट हुआ कि अजनी मत्र ग्रहण करते समय कैशी नामक वानर की ओर देख रही थी।[1] श्याम के **रामकियेन** मे अजनी का नाम स्वाहा है। वह अपने पिता गौतम से अपनी माता का व्यभिचार प्रकट करती है, जिसपर उसकी माता उसे पुत्र प्रसव करने तक एक पैर पर खडा रहने का शाप देती है। शिव स्वाहा की दयनीय दशा पर तरस खाते है और अपनी शक्ति तथा अपने अस्त्रो की शक्ति के साथ वायु को स्वाहा के पास भेजकर उन्हे स्वाहा के मुँह मे रखने का आदेश देते है। फलस्वरूप तीन महीने के बाद हनुमान् स्वाहा के मुँह से वानर के रूप मे निकलते है। **धर्मखण्ड** (अ० १८) तथा सारलादास के **उडिया महाभारत** के आदि-पर्व (पृ० ६०) के अनुसार भी हनुमान् शिव के अवतार तथा गौतम की पुत्री अजनी की सन्तान है।

६७३ **शिवमहापुराण** की शतरुद्रसहिता (अ० २०) के अनुसार विष्णु को **मोहिनी** के रूप मे देखकर शिव का वीर्यपतन हुआ था। सप्तर्षियो ने उस वीर्य को गौतम की पुत्री अजना के कान मे रख दिया था और बाद मे अजना ने हनुमान् को जन्म दिया। इस वृत्तान्त से मिलती-जुलती कथाएँ अन्यत्र भी पाई जाती है।[2]

---

१ ई० एटहोवेन-फॉक्लोर आव गुजरात, इ० ए० भाग ४०, सप्लेमेट, पृ० ५४।

२ उदाहरणार्थ--एशियाटिक रिसर्चस्, भाग ११, पृ० १४१, इडियन एटिक्वरी, भाग ११, पृ० २२६, डब्लू० क्रूक, ट्राइब्स एण्ड कास्ट्स, भाग १, पृ० २६६, एच० ए० रोस, ए ग्लॉसरी ऑव दी ट्राइब्स एण्ड कास्ट्स, भाग २, पृ० ३६१, सेरीराम की स्फल्स पाण्डुलिपि (बुलटिन स्कूल ऑफ ओरियेटल स्टडीस, भाग २६, पृ० ५३४)। बैगा-भूमिया जाति की एक दन्त-कथा के अनुसार भगवान ने पार्वती का रूप धारण कर महादेव को मोहित कर दिया। इस कथा मे सप्तर्षियो के स्थान पर भीमसेन का उल्लेख है जिसने महादेव का तेज करिअन्दनी के कान मे रख दिया और उस करि-अन्दनी से हनुमान् का जन्म हुआ (दे० अनु० २७६)।

६७४ उडिया साहित्य मे हनुमान् की जन्मकथा मे **पार्वती** का भी उल्लेख किया गया है। सारलादास के **महाभारत** (वनपर्व) के अनुसार अहल्या ने अपनी पुत्री को यह शाप दिया था—तुम्हारा लडका बन्दर ही होगा (दे० अनु० ५१४)। इस कारण से अजना ने विवाह करना अस्वीकार कर दिया और तपस्या का जीवन अपनाया। उसके शरीर के चारो ओर वल्मीक वन जाने के बाद पवन देवता गौतम के अनुरोध पर सप्ताह मे एक बार अजना को भोजन देने लगे। उधर शिव और पावती अपने विवाह के पश्चात् वन मे विभिन्न पशुओ का रूप धारण कर क्रीडा करते थे, इस प्रकार उन्होने ब्रह्मा का वाहन तथा जाम्बवान् को उत्पन्न किया। अन्त मे वानर-वानरी के रूप मे रमण करते समय पार्वती शिव का तेज सहन न कर सकी। तेज पृथ्वी पर गिर गया और उससे विभिन्न धातुएँ उत्पन्न हुई। शिव ने तेज का थोडा सा अश पवन को दिया, पवन ने उसे अजना को प्रदान किया और वह हनुमान की माता बन गई। अर्जुनदासकृत **रामविभा** (सर्ग ४) मे जो हनुमत्कथा मिलती है वह सारलादास के महाभारत पर आधारित है। अन्तर यह है कि यहाँ अहल्या अजना को अधी बन जाने का भी शाप देती है, अजना प्रतिदिन पवन का स्मरण करती है और वह उसे भोजन दिया करते है। १६वी शताब्दी के प्रारभ मे दक्षिण भारत मे निम्नलिखित कथा प्रचलित थी—किसी दिन ईश्वर और परमेश्वरी ने अपने नृत्य मे देवताओ को निमत्रित किया था। अतिथि आने लगे थे कि परमेश्वरी ने दो वानरो को क्रीडा करते हुए देखा और ईश्वर से वानर-वानरी के रूप मे क्रीडा करने की प्रार्थना की। ईश्वर ने इसे स्वीकार किया और दोनो वन की ओर सिधारे। देर हो जाने पर देवताओ ने वायु को दोनो की खोज मे भेज दिया। इतने मे ईश्वर-परमेश्वरी ने फिर अपना प्राकृतिक रूप धारण कर लिया था। क्रीडा के फलस्वरूप परमेश्वरी का गर्भाधान हुआ, एक वानर को जन्म देने की आशका से उन्होने वायु से निवेदन किया कि वह भ्रूण को निकाल कर किसी अन्य स्त्री को प्रदान करे। इसपर वायु ने वह भ्रूण अजना के गर्भ मे पहुँचाया, जिससे उसने बाद मे एक वानर को प्रसव किया। (पाश्चात्य वृत्तान्त न० १, पृ० ४२-४४)। पाश्चात्य वृत्तान्त न० ३ और ४ मे वही कथा मिलती है।

रामब्रह्मानन्दकृत **तत्वसग्रह रामायण** (४, १२) मे इस कथा का सक्षिप्त रूप मिलता है, किन्तु उसमे शिव और पार्वती के वानर-वानरी का रूप धारण करने का उल्लेख नही है। कालिका पुराण (अध्याय ४८-५२) मे इस वृत्तान्त का पूर्व रूप सुर-क्षित है। उसके अनुसार पार्वती ने भृगी तथा महाकाल नामक शिवगणो को वानरमुख मनुष्य के रूप मे जन्म लेने का शाप दिया। उन दोनो का अनुरोध स्वीकार कर शिव

और पार्वती ससार मे उतर कर चद्रशेखर तथा तारावती के रूप मे जन्म लेते है और वेताल तथा भैरव नामक दो वानरमुखी पुत्रो को उत्पन्न करते है।

(ई) राम के पुत्र

६७५ हिन्देशिया मे जो हनुमान् की जन्मकथा प्रचलित है, वह प्रधानतया दो भारतीय वृत्तान्तो के मिश्रण से उत्पन्न हुई है, अर्थात् गौतम की पुत्री अजनी की कथा (दे० ऊपर अनु० ६७२) तथा शिव-पार्वती के वानर-वानरी के रूप मे हनुमान को उत्पन्न करने की कथा (दे० अनु० ६७४)। इस अतिम वृत्तान्त मे शिव-पार्वती के स्थान पर राम-सीता का उल्लेख हुआ है, जिसके फलस्वरूप वहाँ की सभी अर्वाचीन रामकथाओ मे हनुमान् को राम का पुत्र माना गया है।

हिकायत **सेरीराम** के अनुसार गौतम ऋषि ने अपनी पुत्री अजनी को १०० वर्ष तक मुह बाये एव सूई की नोक पर, समुद्र के बीच खडी रहने का शाप दिया (दे० ऊपर अनु० ५१४)। अपने वनवास के समय राम, लक्ष्मण और सीता किसी दिन एक स्थल पर पहुँचे जहाँ दो सरोवर थे। एक ऋषि ने लक्ष्मण से कहा था कि स्वच्छ जल वाले सरोवर मे नहाने वाले मनुष्य पशु-रूप धारण कर लेते है और पकिल जल वाले सरोवर मे नहाने पर पुन मनुष्य बन जाते है। लक्ष्मण का कहना न मानकर राम और सीता पहले सरोवर मे प्रवेश कर उसमे से वानर-वानरी के रूप मे निकले और वृक्षो पर क्रीडा करने लगे जिसके फलस्वरूप सीता गर्भवती हो गई। बडी कठिनाई से दोनो को फँसाकर लक्ष्मण ने उन्हे दूसरे सरोवर मे डुबा दिया जिससे वे पुन मनुष्य का रूप प्राप्त कर सके। अनन्तर राम ने सीता का भ्रूण निकाल दिया और वायु ने उसे सुई की नोक पर खडी हुई अजनी के मुँह मे रख दिया। बाद मे अजनी ने कुण्डलो से अलकृत हनुमान् को जन्म दिया (अनु० ५१२)।

इस कथा मे राम-सीता दोनो मिलकर हनुमान् को उत्पन्न करते है। '**सेरीराम**' के एक दूसरे पाठ के अनुसार सीता हनुमान् की माता नही है। तपस्या करती हुई अजनी को देखकर राम अनुरक्त हो जाते है और वीर्यपतन होने पर अपने वीर्य को पत्ते मे लपेट कर वायु के द्वारा अजनी के मुँह मे रखवाते है। श्याम के **रामजातक** मे राम सीता की खोज करते समय एक फल खाते है जिससे वह तीन वर्ष तक वानर ही बन जाते है। फायेगसी (अजनी) ने भी वह फल खाया था। दोनो वानर-वानरी के रूप मे हनुमान् को उत्पन्न करते है।

(उ) विष्णु के अशावतार

६७६ अनेक अर्वाचीन रामकथाओ से ऐसी ध्वनि निकलती है कि हनुमान् विष्णु के अशावतार है, यद्यपि इसका कही भी सुस्पष्ट उल्लेख नही होता।

आनन्द रामायण (१,१,१०४-१०७) मे एक **सुवचला** नामक अप्सरा की कथा मिलती है। नृत्य-दोष के कारण ब्रह्मा ने उसे गृध्री बन जाने का शाप दिया था तथा उसे यह भी वरदान दिया था कि कैकयी का पायस अजनिपर्वत पर फेकने पर वह फिर अप्सरा बन जाएगी। समय आने पर गृध्री ने कैकेयी के हाथ से पायस छीन लिया तथा उसे अजनी पर्वत पर फेक कर तथा अपना निज स्वरूप प्राप्त कर फिर स्वर्ग चली गई।[१] उसी रचना के अन्य स्थल के अनुसार केसरी की पत्नी अजनी ने गृध्री के मुख से गिरा हुआ पायस तो खाया किन्तु बाद मे उसने वायु के साथ भी रमण किया था (दे० ऊपर अनु० ६६८)।

६७७ मराठी **भावार्थ रामायण** पर आनन्द रामायण की गहरी छाप है। इसमे उपर्युक्त कथा का किंचित् परिवर्तित एव विकसित रूप मिलता है। सुवचसा नामक अप्सरा शापवश गृध्री बन गयी थी। उसने कैकेयी के हाथ मे पायस छीन लिया तथा उसे खाकर वानरी मे बदल गई। वानरी के रूप मे वह अजनी, गौतम की पुत्री तथा केसरी की पत्नी बन गयी। पायस खाने के फलस्वरूप उसने हनुमान् को जन्म दिया (दे० बालकाण्ड, अध्याय २ तथा किष्किन्धा काण्ड, अध्याय १ और १०)।

६७८ गुजरात की एक दन्तकथा के अनुसार भी गृध्री ने पायस को अजनी के हाथ मे गिराया था।[२] एक अन्य कथा मे अजनी नामक ब्राह्मणी शिव से सतति का वरदान प्राप्त कर तथा उनके आदेशानुसार चील द्वारा गिराया हुआ पायस खाकर गर्भवती हुई और हनुमान की माता बन गई। इस कथा के अनुसार मारुत नामक पवन के एक दूत ने पायस की रक्षा की तथा उसे अजनी के हाथ पर गिरने मे सहायता की थी, इसलिए अजनी के पुत्र का नाम मारुती रखा गया था।[३]

(ऊ) उपसहार

६७९ प्रस्तुत परिच्छेद से स्पष्ट है कि शताब्दियो से चली आती हुई हनुमान् की जन्मकथा विभिन्न रूप धारण करती रही। फिर भी इन कथाओ की उत्पत्ति और विकास की रूपरेखा अस्पष्ट नही है।

प्रारभ मे हनुमान् के चरित्र की विशेषताओ को दृष्टि मे रखकर उन्हे वायुपुत्र (अर्थात् ऐंद्रजालिक अथवा विद्याधर) की उपाधि से विभूषित किया गया।

---

१ सी० कोलमैन के ग्रन्थ (पृ० ५८) मे इस कथा का सकेत मिलता है—दे० दि मिथालॉजी ऑव दि हिन्दूस (लन्दन १८३२)

२ दे० ओर० ई० एण्टहोवेन, इ० ए०, भाग ४०, सप्लेमेंट, पृ० ५४।

३ दे० ई० मूर, दि हिन्दू पैंथियान, पृ० ३१६। पी० थोमस की 'लेजेड्स ऑव इण्डिया (पृ० ८०) मे इससे मिलती-जुलती कथा पाई जाती है।

प्रचलित रामायण की कथा 'वायुपुत्र' नाम पर ही आधारित है, इसके अनुसार हनुमान् वास्तव मे वायु देवता के पुत्र है और केसरी की पत्नी अजना से जन्म लेते है। हनुमान् की यह जन्मकथा सबसे प्राचीन है, सब से व्यापक है तथा अन्य जन्मकथाओ का मूलस्रोत भी है। जैन रामायणो मे जो जन्मकथा विद्यमान है, वह स्पष्टतया रामायणीय कथा पर निर्भर है।

सभवत आठवी शताब्दी और निश्चित रूप से दसवी शताब्दी से लेकर हनुमान् शिव के अवतार माने जाने लगे। हनुमान् की जन्मकथा का यह विकास स्वाभाविक प्रतीत होता है। रामायण की आधिकारिक कथावस्तु मे शिव के लिए कोई स्थान नही था। रामकथा की बढती हुई लोकप्रियता को देखकर शैव इसकी अवहेलना न कर सके, अत उन्होने सुन्दरकाण्ड के नायक हनुमान् को रुद्रावतार मान लिया। इस वर्ग की जन्मकथाओ का प्रारभिक रूप रामायणीय वृत्तान्त से सीधा सबध रखता है, किन्तु आगे चलकर रुद्रावतार हनुमान् की अन्य जन्मकथाओ की कल्पना कर ली गई है। हनुमान् की जन्मकथाएँ जो दशरथ-यज्ञ के पायस से सम्बन्ध रखती है अर्वाचीन है और कम प्रचलित है। विदेश मे ही हनुमान् को राम का पुत्र माना गया है।

इन समस्त कथाओ मे हनुमान् की माता अजना (अजनी) ही है और एकाध वृत्तान्त को छोडकर वायु भी उनकी उत्पत्ति मे सहायक माने जाते है। अत यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि हनुमान् की कोई ऐसी जन्मकथा नही मिलती जो रामायणीय कथा से अलग, स्वतत्र रूप से उत्पन्न हुई हो।

ख। चरित्र-चित्रण का विकास

६८० हनुमान् की जन्मकथा की तरह उनके चरित्र-चित्रण का विकास भी अत्यन्त रोचक है। वह वानर-गोत्रीय आदिवासी थे (दे० ऊपर अनु० ११०), किन्तु आगे चलकर उन्हे रामकथा के अन्य आदिवासियो के साथ वानर भी माना गया है। प्रचलित रामायण मे हनुमान् के वानरत्व-विषयक विशेषणो का बाहुल्य देखकर प्रतीत होता है कि वाल्मीकि के समय के पूर्व ही यह धारणा मान्यता प्राप्त करने लगी थी।

६८१ वाल्मीकि ने आदि रामायण मे हनुमान् को सुग्रीव[1] के पराक्रमी तथा बुद्धिमान मत्री के रूप मे प्रस्तुत किया था। फलस्वरूप बाद के राम-साहित्य मे भी हनुमान् के पराक्रम तथा बुद्धिमत्ता को सर्वाधिक महत्व दिया गया है। **महाभारत** के आरण्यक पर्व मे भीम हनुमान् का इस प्रकार परिचय देते है

---

१ उत्तरकाण्ड के अनुसार हनुमान् के गुरु सूर्य ने दक्षिणा के रूप मे हनुमान् से निवेदन किया कि वह उनके पुत्र सुग्रीव की सहायता करे (दे० अनु० ६८६)।

भ्राता मम गुणश्लाघ्यो बुद्धिसत्वबलान्वित ।
रामायणेऽतिविख्यात शूरो वानरपुगव ॥११॥ (अध्याय १४७)

प्रचलित रामायण मे कई स्थलो पर हनुमान् की प्रशसा की गई है तथा प्राय उनकी **वीरता** तथा **प्रज्ञा** पर विशेष बल दिया गया है ।[1] प्रस्तुत परिच्छेद मे सर्वप्रथम हनुमान् के इन दो गुणो से सबध रखने वाली सामग्री का विश्लेषण किया जायगा ।

परवर्ती साहित्य मे हनुमान् के **चिरजीवत्व**, **ब्रह्मचर्य** तथा **रामभक्ति** का प्राय उल्लेख मिलता है । अत हनुमान् की उन विशेषताम्रो के क्रमिक विकास का निरूपण अपेक्षित है ।

अन्त मे हनुमान् के चरित्र-चित्रण के विकास की चरम सीमा, अर्थात् उनके **देवत्व** पर विचार किया जायगा ।

(अ) पराक्रम

६८२ प्रारभ से ही बल तथा पराक्रम हनुमान् की प्रमुख विशेषता मानी जाती थी । इसका प्रमाण हमे प्रचलित रामायण मे मिलता है जहा उनको प्राय कोई पराक्रम-सूचक विशेषण दिया जाता है, सर्वाधिक प्रयुक्त विशेषण ये है—वीर, वीयवान, महाबल, महातेजा, महाबाहु, महावेग, भीमविक्रम, अरिन्दम । इनके अतिरिक्त हनुमान् के लिए निम्नलिखित विशेषणो का भी प्रयोग हुआ है—बलवान्, बली, अति-बल, अतिमहाबल, बलवीर्यसवृत, महासत्त्व, सत्त्वसम्पन्न, सत्त्वान्, समर्थ, दुधर्ष, गतश्रम, जितश्रम, अपरिश्रान्त, वज्रसहनन, महाभुज, सुमहाबाहु, महाकाय, भीम, महोत्कट, भीमकर्मा, दुर्निवारण, तेजस्वी, सुमहातेजा, अमितौजसा, वेगवान्, अतिवेग, वेगसम्पन्न, मारुततुल्यवेग, तरस्वी, मारुतवेगविक्रम, मनोजव, आशुचर, घनतुल्यनि स्वन, मेघस्वनमहास्वन, घननादनि स्वन, महावीर, महावीर्य, महोत्साह, विक्रान्त, चण्डविक्रम, अमितविक्रम, उत्तमविक्रम, विक्रम, पितृतुल्यविक्रम, वायुविक्रम, पितृतुल्यपराक्रम, मारुतविक्रम, गरुडानिलविक्रम, धीरपराक्रम, चण्डऽपराक्रम, रणचण्ड-विक्रम, मन सतापविक्रम, परन्तप, अरिमर्दन, अरिसूदन, शत्रुकर्षण, परवीरघ्न, परवीरहन्ता, शत्रुविनाशन, शत्रुसैन्याना निहन्ता, शत्रुपराजयोचित ।

---

१ उदाहरणार्थ बालकाण्ड (सर्ग १७) का यह उद्धरण

मारुतस्यौरस श्रीमान् हनुमान्नाम वानर ।
वज्रसहननोपेतो वैनतेयसमो जवे ॥१६॥
सर्ववानरमुख्येषु बुद्धिमान् बालवानपि ।

सुग्रीव (५, ६३), सीता (६, ११३ और १२८) और अगस्त्य (७, ३५) सभी हनुमान् के पराक्रम तथा प्रज्ञा का विशेष रूप से गुणगान करते है ।

इस विस्तृत शब्दावली को ध्यान मे रखकर हमे आश्चर्य नही होगा कि हनुमद्विषयक परवर्ती कथाओ मे से अधिकाश कथाएँ उनके पराक्रम से ही सम्बन्ध रखती है। **आनन्द रामायण** (८, ७, १२३) मे माना गया है कि सभी वीर हनुमान् के अवतार ही है—**ये ये वीरास्त्वत्र भूम्या वायुपुत्राशरूपिण** ।

६८३ रामायण की आधिकारिक कथावस्तु मे हनुमान् के महत्त्वपूर्ण कार्यों का सिंहावलोकन ऊपर हो चुका है (अनु० ६५६)। यहा पर इनकी वीरता के वर्णन मे बढती हुई अतिशयोक्ति तथा अलौकिकता की ओर पाठक का ध्यान आकर्षित करना उचित होगा। उनके समुद्रलघन की कथा सभवत किसी आश्चर्यजनक तथा असाधारण लघन के आधार पर उत्पन्न हुई है (दे० ऊपर अनु० ११२)। लङ्का-दहन, ओषधि-पर्वत का आनयन, जन्म के बाद ही सूर्य तक लाँघना, ये सब वृत्तान्त प्रचलित रामायण मे प्रक्षिप्त है। परवर्ती रामकथाओ मे भी बहुत से नये वृत्तान्त हनुमान् की वीरता पर बल देते है। उनमे जो वृत्तान्त रामकथा से सीधा सम्बन्ध रखते है, उनका यथास्थान निरूपण हो चुका है। इनके अतिरिक्त भीम, अर्जुन तथा गरुड से हनुमान् की मुठभेड के वृत्तान्त विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

६८४ महाभारत मे **हनुमान्-भीम-सवाद** का प्राचीनतम रूप सुरक्षित है। इस प्रसङ्ग मे हनुमान् की विद्वत्ता के अतिरिक्त उनके बल का विशेष ध्यान रखा गया है। हिमालय के मार्ग मे सोये हुए हनुमान को जगा कर भीम उनसे हट जान का निवेदन करते हैं। हनुमान् उत्तर मे कहते है—कृपया मेरी पूछ हटाकर निकल जाइए। यह सुनकर भीम अपने बाये हाथ से पूछ उठाने उगे। किन्तु उसे हिलाने मे असमर्थ होकर उन्होने दोनो हाथ लगाए, फिर भी पूछ टस से मस नही हुई। अन्त मे भीम ने अपनी हार मानकर क्षमा माँगी और हनुमान् ने अपना परिचय दिया तथा भीम का अनुरोध स्वीकार कर उनको समुद्रलघन के समय का अपना रूप भी दिखलाया। इसके बाद उन्होंने भीम को चार युगो तथा चार वर्णो का धर्म सिखलाया तथा महाभारत के भावी युद्ध मे सहायता करने का आश्वासन दिया (दे० आरण्यक-पर्व, अध्याय १४७-१५०)।

६८५ हनुमान् द्वारा **अर्जुन** के गर्व-निवारण के विषय मे अनेक कथाएँ प्रचलित हैं। **आनन्द रामायण** के मनोहरकाण्ड के 'हनुमता शरसेतुभङ्ग' नामक १८वे अध्याय मे निम्नलिखित वृत्तान्त मिलता है। विष्णुदास ने रामदास से पूछ लिया कि अर्जुन का **'कपिध्वज'** नाम क्यो रखा गया। इस पर रामदास उत्तर देते है कि द्वापर के अन्त मे अर्जुन किसी दिन रामेश्वर के पास धनुष्कोटितीर्थ पर हनुमान् से भेट होने पर कहने लगे—"सेतु-निर्माण मे व्यर्थ परिश्रम हुआ। शरसेतु क्यो नही बना था?" हनुमान् ने कहा—"मुझ जैसे कपियो के भार से सेतु समुद्र मे डूब जाता।" अर्जुन

ने उत्तर दिया—"मै अभी शरसेतु बना देता हूँ । यदि वह आपके भार से जलमग्न हुआ तो मै अग्नि मे प्रवेश करूँगा ।" हनुमान् न अपनी ओर से यह प्रतिज्ञा की—"यदि मेरे अगूठे के भार से सेतु नही नष्ट हुआ, तो मै आपकी ध्वजा पर बैठकर आपकी सहायता किया करूँगा ।" इस पर अर्जुन ने समुद्र पर 'शतयोजनविस्तीर्ण' शरसेतु बना दिया तथा हनुमान् ने अपने अँगूठे से उसको समुद्र मे मग्न कर दिया । यह देखकर अर्जुन चिता तैयार करने लगे कि कृष्ण बटु के रूप मे वहाँ पहुँचे । सारा हाल सुनकर बटु ने कहा—"साक्षी के अभाव मे आप दोनो का कार्य व्यर्थ हुआ । मेरे सामने ही अपना सामर्थ्य दिखाइये ।" अबकी बार कृष्ण ने सेतु के नीचे अपना चक्र रख दिया जिससे हनुमान् कुछ न कर सके । वे तुरन्त ही समझ गये कि बटु भगवान ही है । इस पर बटु ने कृष्ण का रूप धारण कर हनुमान् का आलिंगन किया । तब भगवान् ने सेतु भी जल मे डुबाकर अर्जुन का गर्व दूर किया । उस समय से हनुमान् अर्जुन की ध्वजा पर विराजमान है (दे० अनु० ७१३) ।

प्रस्तुत कथा का एक दूसरा रूप **तत्वसग्रह रामायण** (७, ४) मे मिलता है । इसके अनुसार अर्जुन ने एक बार कृष्ण से कहा—"मै तो समुद्र पर शर-सेतु बना सकता हूँ, राम ने वानरो द्वारा सेतु क्यो बनवाया था ?" कृष्ण ने उत्तर दिया कि यह महा-काय वानरो के कारण हुआ, जो उस पुल पर समुद्र पार करने वाले थे । इस पर अर्जुन ने गर्व मे कहा—मेरा शरसेतु कोई भी बोझ सहन कर सकता है । तब कृष्ण ने अर्जुन द्वारा सेतु बनवाकर हनुमान् को बुलाया । यह सेतु हनुमान् के चढते ही टूटने लगा किन्तु भगवान ने वाराह का रूप धारण कर उसे सभाला । इसके बाद हनुमान् ने कृष्ण का अनुरोध स्वीकार कर प्रतिज्ञा की कि मै महाभारत के युद्ध के अवसर पर अर्जुन के झण्डे पर विराजमान रहूँगा । **सारलादास** के महाभारत (मध्य पर्व) मे भी उपर्युक्त कथा पाई जाती है, गोस्वामी तुलसीदास ने बाहुक (छन्द ७) मे इसकी ओर सकेत किया है । बलरामदासकृत उडिया **'कणदान'** काव्य की कथा 'आनन्द रामायण' के वृत्तान्त से मिलती-जुलती है । पद्मवन मे हनुमान् तथा अर्जुन की भेंट हो जाने पर दोनो अपनी-अपनी महिमा का वर्णन करने लगते है । हनुमान् से सेतु का उल्लेख सुनकर अर्जुन ने तीस योजन का शरसेतु बना दिया । सेतु को हनुमान् के विश्वरूप का भार सहन करने मे असमर्थ देखकर अर्जुन ने भगवान् का स्मरण किया तथा भगवान् ने रोहू बनकर शरसेतु को नीचे से सभाल लिया और बाद मे हनुमान् तथा अर्जुन का मेल कराया ।

महाभारत के युद्ध के अवसर पर अर्जुन के गर्वनिवारण की प्राचीनतम कथा **सारलादासकृत महाभारत** के कर्णपर्व मे सुरक्षित है । कर्ण के साथ युद्ध करते समय अर्जुन को गर्व हुआ कि कर्ण के बाण मारने पर मेरा रथ थोडा सा ही हट जाता है किन्तु

मेरे वाण से कर्ण का रथ चौगुनी दूर तक पीछे हट जाता है । किन्तु कृष्ण ने यह कहकर कर्ण की ही प्रशसा की कि कर्ण का रथ हल्का है, और यह रथ मेरु मन्दर की तरह भारी है, इसपर सभी देवता विद्यमान है और हनुमान् झडे पर विराजमान है, फिर भी कर्ण इसे अपने वाणो से पीछे हटा देता है । परवर्ती कथाओ मे हनुमान् कृष्ण का सकेत पाकर रथ से अलग हो गये जिससे कर्ण के वाण मारने पर अर्जुन का रथ दूर तक हट गया था ।

६८६ **गरुड** के गर्वनिवारण की कथाएँ अपेक्षाकृत अर्वाचीन प्रतीत होती है । फिर भी कृत्तिवास (दे० अनु० ५८६) तथा तुलसीदास ने (दे० विनयपत्रिका २८, ३) इसकी ओर सकेत किया है । गरुड के साथ-साथ प्राय सुदर्शन चक्र तथा सत्यभामा के गर्वनिवारण का भी वर्णन मिलता है । इसके विषय मे सबसे प्रचलित कथा इस प्रकार है ।

"कृष्णावतार के समय भगवान् ने हनुमान् को बुलाकर उनको द्वारका के पास किसी उपवन मे निवास करने का निमत्रण दिया था । किसी दिन कृष्ण ने सत्यभामा, सुदर्शन तथा गरुड तीनो का गर्व दूर करना चाहा । उन्होने गरुड से कहा—अमुक वन मे रहनेवाले बन्दर को पकड लाओ । गरुड हनुमान् के पास पहुँचे और हनुमान् ने उन्हे ६०,००० योजन पर समुद्र मे फेक दिया । बाद मे कृष्ण ने गरुड को पुन भेज दिया कि वह हनुमान् को द्वारका के राजभवन मे पधारने का निमत्रण दे दे । इतने मे वह स्वय धनुर्धारी राम बन गए तथा सत्यभामा को सीता का रूप धारण करने को कहा । सुदर्शन से उन्होने कहा—'सावधान रहो, कोई भी प्रवेश करने न पावे ।' हनुमान् गरुड से बहुत पहले द्वारका पहुँच गए तथा उन्होने सुदर्शनचक्र को मुँह मे डालकर राजभवन मे प्रवेश किया । उन्होंने रामरूपी कृष्ण के सामने नतमस्तक होकर तुरन्त पहचान लिया कि सत्यभामा सीता नही है, जिससे सत्यभामा को हार माननी पडी । उसी अवसर पर कृष्ण ने हनुमान् को अपना द्वारपाल नियुक्त किया ।"

बगाल मे एक अन्य कथा प्रचलित है । दाशरथि राय (१८०६ ई०-१८५७ ई०) की पचाली के 'सत्यभामा, सुदर्शनचक्र ओ गरुडेर दर्पचूर्ण' नामक अध्याय के अनुसार कृष्ण ने किसी अवसर पर गरुड को हिमालय से एक नील कमल ले आने का आदेश दिया । गरुड हिमालय सिधारे, जहा उनका और हनुमान् का युद्ध हुआ । हनुमान् ने गरुड को काँख मे दबाकर एक नील कमल के साथ द्वारका के लिए प्रस्थान किया । सुदर्शन ने हनुमान् को महल के द्वार पर रोकने का प्रयास किया किन्तु हनुमान् के शरीर का एक बाल भी काटने मे असमर्थ होकर उन्होने अपनी हार स्वीकार कर ली । इतने मे कृष्ण ने यह देखकर कि हनुमान् भीतर आ रहे है, राम का रूप धारण कर

लिया तथा सत्यभामा को सीता का रूप धारण करने को कहा। सत्यभामा सीता का रूप बनाने मे असमर्थ हुई , रुक्मिणी को सीता का भाग लेना पडा और सत्भामा की सखिया उसकी हँसी उडाने लगी। हनुमान् ने 'राम' के चरणो पर नील कमल रखकर गरुड को अपनी काँख से निकलने दिया। इससे मिलती-जुलती कथाएँ अन्यत्र भी पाई जाती है (दे० ई० मूर, वही, पृ० २१८)।

६८७ हनुमान् के पराक्रम के विषय मे अन्य सामग्री का अभाव नही है। **पउमचरिय** (पर्व १६) के अनुसार हनुमान् ने रावण के साथ वरुण के विरुद्ध युद्ध करते हुए वरुण के सौ पुत्रो को कैद कर लिया। इस रचना के अन्य स्थाल पर (पर्व ५०) इसका वणन किया गया है कि किस प्रकार हनुमान् ने अपने दादा महेन्द्र को सेना सहित परास्त किया था। **स्कदपुराण** (ब्राह्मखण्ड, धर्मारण्य, अध्याय ३६ ३८) मे हनुमान् के प्रभाव से धर्मारण्य के निवासियो की सुख-शाति तथा हनुमान् द्वारा कुभीपाल की पराजय से वहाँ के ब्राह्मणो की सुरक्षा का वर्णन किया गया है। **आनन्दरामायण** के राज्यकाण्ड (सर्ग १८) के अनुसार राम ने ब्राह्मणो को रामनाथपुर का राज्य प्रदान किया तथा हनुमान् को उनकी सहायता के लिए नियुक्त किया। बाद मे हनुमान् ने देवालय की पाषाण-मूर्ति से प्रकट होकर एक दुष्ट राजा को शूली पर चढाया और इस प्रकार रामनाथपुर की रक्षा की थी। मनोहर काण्ड (सर्ग १२२) मे स्त्रीराज्य की कथा मिलती है। एक रामभक्त ब्राह्मण की सहायता के लिए प्रकट होकर हनुमान् ने अपने गर्जन से सब पुरुषो को मार डाला जिससे उस देश का नाम स्त्रीराज्य रखा गया। **भावार्थ रामायण** (७, १) मे भी राम द्वारा हनुमान् को स्त्रीराज्य भेजे जाने का वृत्तान्त मिलता है।

अपेक्षाकृत अर्वाचीन रचनाओ मे[1] वीरमाता अजना के विषय मे माना जाता है कि उसने अपने दूध की धारा से एक पर्वत-श्रेणी को बहा दिया था। जनता मे प्रचलित दन्तकथा के अनुसार लका से अयोध्या जाते समय पुष्पक अजना के यहाँ उतरा था, उस अवसर पर अजना ने लक्ष्मण का सन्देह दूर करने के लिए इस कार्य के द्वारा हनुमान् के पराक्रम का प्रमाण दिया।

बगाल मे मनसा देवी की कथा अत्यन्त लोकप्रिय है, इसमे भी हनुमान् की वीरता का वर्णन किया गया है। मनसा देवी हनुमान् की सहायता से ही चाँद सौदागर का मधुकर नामक जहाज डुबाने मे समर्थ हुई।[2]

---

१ दे० सी० कोलमैन, दि मिथोलॉजी ऑव दि हिन्दूस (लन्दन १८३२) पृ० ५८।

२ दे० डी० सी० सेन, हिस्टरी ऑव दि बगाली लैंग्वेज एण्ड लिटरेचर (कलकत्ता १६११), पृ० २५२।

(आ) **बुद्धिमत्ता**—

६८८ आदिकवि वाल्मीकि ने हनुमान् को पराक्रमी योद्धा के अतिरिक्त सुग्रीव के बुद्धिमान मत्री के रूप मे चित्रित किया था। फिर भी आदि रामामरण मे सस्कृत तथा प्राकृत की जानकारी के अतिरिक्त हनुमान् के ज्ञान के विषय मे कोई विशेष विवरण नही दिया गया था। बाद मे वह बुद्धिमान् मत्री विद्वान् तथा शास्त्रज्ञ भी माने जाने लगे।

प्रचलित रामायण मे हनुमान् के मत्रित्व विषयक निम्नलिखित विशेषणो का प्रयोग मिलता है—सचिवोत्तम, मत्रिसत्तम, सुग्रीवसचिव, पिगाधिपमत्री, कपिराज-हितकर, प्लवगाधिपमत्रिसत्तम, पिगाधिपति का आमात्य।

प्रज्ञा-सूचक विशेषणो मे से **मतिमान्** तथा **महामति** का सर्वाधिक प्रयोग हुआ, इनके अतिरिक्त ये भी आये है —प्राज्ञ, महाप्राज्ञ, सुमहाप्राज्ञ, मेधावी, बुद्धिमता वरिष्ठ, धीमान्, तत्त्ववित्, साधुबुद्धि, अचित्यबुद्धि, वाक्यज्ञ, वाक्यकोविद, वाक्यविशारद, वाक्य-विदा श्रेष्ठ, प्रियवादी, कार्यविदा वर। हनुमान् के सस्कृत तथा प्राकृत दोनो भाषाओ पर अधिकार का उल्लेख सुन्दरकाड मे किया गया है। अशोकवन मे सीता को देखकर वह इसलिये सस्कृत नही बोलने का निर्णय करते है कि सीता उनको कही रावण न समझे

वाच चोदाहरिष्यामि मानुषीमिह सस्कृताम् ॥१७॥
यदि वाच प्रदास्यामि द्विजातिरिव सस्कृताम् ।
रावण मन्यमाना मा सीता भीता भविष्यति ॥१८॥
अवश्यमेव वक्तव्य मानुष वाक्यमर्थवत् ।

(सुन्दरकाड, सर्ग ३०)

६८९ सस्कृत तथा प्राकृत की इस जानकारी का निर्देश आदि रामायण मे मिलता था अथवा नही, इसका निर्णय करना असभव है, किन्तु हनुमान् की विभिन्न शास्त्रो मे पहुँच का उल्लेख मूल-रामायण मे नही रहा होगा। हनुमान् की जन्मकथा मे उनको **'सर्वशास्त्रविदा वर'** की उपाधि दी गई है (दे० ४, ६६, २), परन्तु ऊपर के विश्लेषण से यह जन्मकथा बाद का प्रक्षेप सिद्ध हुई है। एक अन्य स्थल पर भी उनको एक बार और **'सवशास्त्रविशारद'** (दे० ४, ५४, ५) कहा गया है, इसके अतिरिक्त प्रचलित रामायण के किष्किधाकाड मे उनके विषय मे लिखाहै—**निश्चितार्थोऽथतत्त्वज्ञ कालधर्म-विशेषवित** (४, २९, ६) और **'विदिता सर्वलोकास्ते'** (४, ४४, ४)। अधिक सभव है कि ये उद्धरण बाद के प्रक्षेप हो।

उत्तरकाण्ड के रचनाकाल मे यह माना जाने लगा था कि हनुमान् ने सूर्य की सहायता से व्याकरण का अध्ययन किया था और सूर्य ने दक्षिणास्वरूप हनुमान् से यह

प्रतिज्ञा कराई कि मै सुग्रीव की सहायता करूँगा। दाक्षिणात्य पाठ मात्र मे उनके द्वारा पठित व्याकरण-विषयक ग्रन्थो का उल्लेख है अर्थात सूत्र (अष्टाध्यायी), वृत्ति (सूत्रवृत्ति), अर्थपद (वार्तिक), महाथ (महाभाष्य)। उसी छन्द मे शास्त्र, वेशारद तथा छन्दगति मे हनुमान् को अद्वितीय पहुँच का उल्लेख भी केवल दाक्षिणात्य पाठ मे मिलता है (दे० ३६, ४५)। गोविन्ददास के पाठ मे हनुमान् को नवव्याकरणवेत्ता कहा गया है।

महाभारत का आरण्यक पर्व उत्तरकाण्ड के रचनाकाल मे लिखा गया होगा। इसमे भी हनुमान्-भीम-सवाद मे हनुमान् को शास्त्रज्ञ के रूप मे प्रस्तुत किया गया है, वह भीम को चार युगो (अध्याय १४८) तथा चार वर्णों (अध्याय १४६) का धर्म सिखलाते है।

दाक्षिणात्य पाठ मात्र मे राम-लक्ष्मण से हनुमान् की प्रथम भेट के अवसर पर हनुमान् के विषय मे तीन वेदो तथा व्याकरण का ज्ञान उल्लिखित है। अन्य पाठो मे इस उल्लेख का अभाव सिद्ध करता है कि यह अश बाद का प्रक्षेप है। उद्धरण निम्न-लिखित है

> **नानृग्वेदविनीतस्य नायजुर्वेदधारिण ।**
> **नासामवेदविदुष शक्यमेव विभाषितुम ॥२८॥**
> **नून व्याकरण कृत्स्नमनेन बहुधा श्रुतम् ।**
> **बहुव्याहरताऽनेन न किंचिदपशब्दितम ॥२९॥**

(किष्किन्धाकाण्ड, सर्ग ३)

६६० इस प्रकार हम देखते है कि प्राचीनकाल से ही रामायण के कुशीलव हनुमान् का ज्ञान-भण्डार बढाते रहे है। परवर्ती साहित्य मे हनुमान् की विद्वत्ता का बहुधा उल्लेख मिलता है। दाक्षिणात्य उत्तरकाड मे हनुमान् को छन्द शास्त्र का विशेषज्ञ कहा गया है। सम्भवत इसी कारण से उनको महानाटक (हनुमन्नाटक) की रचना का श्रेय दिया गया है। उस नाटक के अन्त मे लिखा है कि हनुमान् ने वाल्मीकि के अनुरोध से अपनी रचना को शिला पर लिखकर समुद्र मे फेक दिया था तथा राजा भोज ने उसे निकलवाकर दामोदर मिश्र द्वारा इसका सम्पादन कराया था (दे० महानाटक, अक १४, ९४-६)। इसके सम्बन्ध मे कई कथाये प्रचलित है। एक वृत्तान्त के अनुसार वाल्मीकि ने राम से कहा—"हनुमान् के नाटक के रहते मेरे रामायण का आदर नही होगा। हनुमान् तो प्रत्यक्षदर्शी है, मुझे केवल ध्यान मे ही आपकी कथा का परिचय मिला। इसपर राम ने हनुमान् से कहकर महानाटक समुद्र मे फेकवा दिया। एक अन्य कथा मे वाल्मीकि तथा हनुमान् के वाद-विवाद का वर्णन है। वाल्मीकि ने रामायण मे लिखा है कि रावण के बाणो से आहत होकर राम के शरीर पर रक्त के कण दिखाई

देने लगे। हनुमान ने कहा कि मैंने तो यह कभी नही देखा था। दोनो राम के पास आये और राम ने वाल्मीकि का कथन ठीक ही माना था। उस पर हनुमान् ने अप्रसन्न होकर अपने नखो से शिला पर लिखी हुई अपनी रचना समुद्र मे फेक दी।

६६१ तुलसी ने **विनयपत्रिका** (२३, ८) मे हनुमान् को '**वेदवेदान्तविद**' की उपाधि दी है। वास्तव मे कई रचनाओ मे हनुमान् दार्शनिक विषयो[1] की जिज्ञासा प्रकट करते है तथा राम से तत्सबधी शिक्षा ग्रहण करते है। **अध्यात्म रामायण** (१, १, ३२-५२) के अनुसार सीता और इसके अनन्तर राम ने भी हनुमान् को रामतत्व का रहस्य प्रकट किया था। **मुक्तिकोपनिषद्** तथा **रामगीता** (दे० अनु १४८) मे हनुमान् को दर्शन-विषयक शिक्षा दी जाने की कथा मिलती है। **अदभुत रामायण** (सर्ग १०-१५) मे राम हनुमान् को अपना विष्णु रूप दिखाकर उनको भगवद्गीता के अनुकरण पर साख्ययोग, भक्तियोग आदि समझाते है।

अपेक्षाकृत अर्वाचीन रचनाओ मे हनुमान को रामभक्ति के आचार्य के रूप मे प्रस्तुत किया गया है। **रामरहस्योपनिषद्** मे वह सनकादि मुनियो को रामोपासना की पद्धति सिखलाते है। रसिक सम्प्रदाय मे हनुमान् को माधुर्य भक्ति का प्रवर्त्तक अथवा आचार्य माना गया है, **हनुमत्सहिता** मे हनुमान् राम की प्रधान सखी चारुशीला का रूप धारण कर अगस्त्य को भक्ति की शिक्षा देते हैं और **शिवसहिता** हनुमान्-अगस्त्य-सवाद के रूप मे लिखा गया है। हनुमान को अन्य साम्प्रदायिक रामायणो का भी वक्ता माना गया है (दे० अनु० २०१ और २०२)।

६६२ श्री दिनेशचन्द्र सेन का कहना है (दे० दि बगाली रामायण्स पृ० ५१) कि बगाल मे हनुमान् को **ज्योतिषी** तथा **सगीतज्ञ** भी माना गया है। महाभारत के हनुमान्-भीम-सवाद के अनुसार हनुमान् गधर्वों तथा अप्सराओ द्वारा रामायण का गान नित्य ही सुनते है। सभवत उस वृत्तान्त के आधार पर सगीत मे उनकी निपुणता का विश्वास उत्पन्न हुआ है। तुलसीदास ने भी विनयपत्रिका मे हनुमान् को 'गान-गुनगरवगर्वजेता' (दे० २६, ४), 'सामगायक' (२८, ५), 'सामगाताग्रनी' (२७, ३) आदि कहकर पुकारा है।

(इ) चिरजीवत्व—

६६३ अर्वाचीन राम साहित्य मे हनुमान् को बहुत से वरदान प्राप्त होने का उल्लेख है। उनमे से उनका चिरजीवत्व सबसे प्राचीन प्रतीत होता है हनुमान् के इस चिरजीवत्व की उत्पत्ति सभवत उनकी कीर्ति से सम्बन्ध रखती है। रामायण मे उनको

---

१ इसके आधार पर सभवत यह विश्वास उत्पन्न हुआ कि मध्वाचार्य हनुमान् के अवतार है।

महायशा, कीर्त्तिमान्, यशस्वी आदि कहा गया है तथा भीम भी अपने भाई का परिचय देते हुए कहते है कि हनुमान रामायण मे अति विख्यात है (दे० महाभारत ३, १४७, ११)। महाभारत का **रामोपाख्यान** रामायण के किसी प्राचीन रूप पर निर्भर है, उसमे राम अथवा देवताओ द्वारा हनुमान् को प्रदत्त किसी भी वरदान का उल्लेख नही है। युद्ध के अ त मे सीता हनुमान् से कहती है कि राम की कीर्त्ति के समान तुम भी जीवित रहोगे, अर्थात् तुम्हारी भी कीर्त्ति अमर होगी—**रामकीर्त्या सम पुत्र जीवित ते भविष्यति**।[1] बहुत सभव है कि इस उक्ति के आधार पर हनुमान् के विषय मे यह माना जाने लगा कि वह वास्तव मे जीवित रहकर हिमालय पर निवास करते है। इस विश्वास का प्राचीनतम उल्लेख हनुमान्-भीम-सवाद मे सुरक्षित है। इस सवाद मे हनुमान् कहते है कि मैने राम से यह वरदान माँग लिया है कि जब तक रामकथा पृथ्वी पर प्रचलित रहेगी, तब तक मैं जीवित रह सकू

यावद्रामकथा वीर भवेल्लोकेषु शत्रुहन्
तावज्जीवेयमित्येव तथास्त्विति च सोऽब्रवीत् ॥

(महाभारत ३, १४७, ३७)

तदन्तर हनुमान् भीम को बताते है कि इस स्थान पर गधर्व तथा अप्सराये रामचरित गाकर मुझे आनदित करते रहते है।

रामायण के उत्तरकाण्ड मे राम द्वारा हनुमान् को वर-प्रदान का दो बार उल्लेख हुआ है। यह ध्यान देने योग्य है कि वहा पर भी रामकथा का प्रचलन ही हनुमान् की अमरता का आधार माना गया है। स्वर्गारोहण के पूर्व राम यह कहकर हनुमान को चिरजीवत्व प्रदान करते है

मत्कथ प्रचरिष्यति यावल्लोके हरीश्वर।
तावद्रामस्व सुप्रीतो मद्वाक्यमनुपालयन् ॥३०॥ (सर्ग १०८)

प्रस्तुत प्रसग का सबसे विस्तृत रूप उत्तरकाण्ड के ४०वे सर्ग मे मिलता है। महाभारत मे हनुमान् ने कहा था कि हिमालय के जिस स्थान पर वह रहते थे, वहाँ गधर्वादि रामचरित गाया करते थे, अब रामचरित का यह गान वरदान का रूप धारण

---

१ दे० ३, २७५, ४३। इस सबध मे नीति का यह वाक्य भी द्रष्टव्य है—स जीवति यशो यस्य कीर्तिर्यस्य स जीवति। अयशो कीर्त्तिसयुक्तो जीवन्नपि मृतोपम ॥ रामशेखर वसु के अनुसार हनुमान् ने इसीलिए अमरत्व का वरदान माँगा कि वह चिरकाल तक पितरो के पिण्डोदक का विधान कर सके। दे० परशुराम की चुनी हुई कहानियाँ। साहित्य अकादेमी (१९६०), पृ० ९७१।

कर लेता है। अभिषेक के बाद अयोध्या से विदा लेते समय हनुमान् ने राम से तीन वर माँगे थे, अर्थात् अनन्य रामभक्ति, चिरजीवत्व तथा रामकथा-श्रवण

स्नेहो मे परमो राजस्त्वयि तिष्ठतु नित्यदा।
भक्तिश्च नियता वीर भावो नान्यत्र गच्छतु ॥१६॥
यावद्रामकथा वीर चरिष्यति महीतले।
तावच्छरीरे वत्स्यन्तु प्राणा मम न सशय ॥१७॥
यच्चैतच्चरित दिव्य कथा ते रघुनन्दन।
तन्मयाप्सरसो राम श्रावयेयुर्नरर्षभ ॥१८॥

६९४ हनुमान की जन्मकथा मे देवताओ द्वारा उनको अनेक वर दिये जाने का वर्णन किया गया है। आदि रामायण मे इस जन्मकथा का अभाव था और इसीलिए वाल्मीकि रामायण के प्रामाणिक काण्डो मे हनुमान् के इन वरो का उल्लेख नही किया गया है, अपवादस्वरूप प्रक्षिप्त लकादहन (अनु० ५३०) के अन्तर्गत उन वरदानो का सकेत मिलता है (दे० ५, ४८, ४० ४३, ५, ५०, १६)।

हनुमान् की जन्मकथा का प्राचीनतम रूप सभवत किष्किन्धाकाण्ड मे मिलता है। बगीय पाठ मे इस प्रसग मे किसी भी वरदान का उल्लेख नही होता, पश्चिमोत्तरीय पाठ मे ब्रह्मा हनुमान् को **'अशस्त्रवध्यता'** प्रदान करते हे तथा दाक्षिणात्य पाठ (४, ६६, २६) मे ब्रह्मा के इस वरदान के अतिरिक्त इन्द्र का भी उल्लेख है जो हनुमान् को **'इच्छानुसार मरण'** का वर देते है। उत्तरकाण्ड की जन्मकथा मे इन्द्र, ब्रह्मा, वरुण, यम, कुबेर, शिव तथा विश्वकर्मा सभी हनुमान् को अपने-अपने अस्त्रो द्वारा अवध्यता प्रदान करते है, इसके अतिरिक्त हनुमान को सूर्य से सूर्यतेज का शताश तथा शास्त्र के अध्ययन मे सहायता, यम से अरोगत्व, कुबेर से अविषाद, विश्वकर्मा से चिरजीवत्व तथा ब्रह्मा से कामरूपत्व दिया जाता है (दे० ७, ३६, १२-४०)। इस प्रकार हम देखते हैं कि हनुमान् को प्राप्त वरो की सख्या बढती जाती रही। ध्यान देने योग्य है कि ये वरदान प्राय हनुमान् के चिरजीवत्व ही से सबध रखते है। गौडीय तथा पश्चिम-उत्तरीय पाठ मे जो अतिरिक्त जन्मकथा मिलती हे उसमे भी केसरी के कामरूपी तथा अव्यय पुत्र का उल्लेख किया गया है (दे० ऊपर अनु० ६६७)।

६९५ परवर्ती रामकथाओ मे हनुमान् के उन वरो के वर्णन मे कोई विशेष विकास परिलक्षित नही होता किन्तु प्राय उनकी रामभक्ति पर बल दिया गया है। उदाहरणार्थ भविष्य पुराण तथा आनन्द रामायण मे ब्रह्मा ही हनुमान् को रामभक्ति का वरदान देते है (दे० आगे अनु० ७०४)। इसके अतिरिक्त भावी हनुमत्पूजा के विषय मे भी हनुमान् को प्रदत्त वरो की कथा स्कन्द पुराण तथा आनन्द रामायण मे मिलती है (दे० आगे अनु० ७०८)।

ऊपर इसका उल्लेख हुआ है कि हनुमान् का चिरजीवत्व रामकथा के प्रचलित रहने पर निभर है, सभवत इसी कारण से यह विश्वास उत्पन्न हुआ है कि जहाँ कही रामकथा का पाठ हो रहा है, वहाँ हनुमान् अदृश्य रूप से विद्यमान है। इस विश्वास का प्राचीनतम उल्लेख आनन्द रामायण तथा कृत्तिवासीय रामायण मे मिलता है (दे० आगे अनु० ७२३)।

(ई) ब्रह्मचर्य

६६६ महीरावण-वध की कथा मे हनुमान् के एक पुत्र का भी प्राय उल्लेख होता है। लकादहन के बाद समुद्र मे स्नान करते हुए हनुमान् का स्वेद अथवा श्लेष्मा निगलकर एक मत्स्या गभवती हुई और इस प्रकार हनुमान् को एक पुत्र उत्पन्न हुआ था (दे० अनु० ६१५)। **मैरावणचरितम्** (अ० १०) के अनुसार उस पुत्र का नाम मत्स्यराज है, वह हनुमान् को अपना परिचय देते हुए कहता है—**तिमिंगला हि मन्माता पिता च हनुमान्**। इसपर हनुमान् यह कहकर आपत्ति करते है—**हनुमान् ब्रह्मचारीति विख्यात भुवनेष्वपि**।

हनुमान् के इस ब्रह्मचर्य का प्राचीनतम उल्लेख **स्कन्द पुराण** (अवन्ती खण्ड, रेवाखण्ड, अ० ८३) मे मिलता है, हनुमतेश्वरतीर्थमाहात्म्य नामक अध्याय मे कहा गया है कि वहा का शिवलिंग हनुमान् के ब्रह्मचर्य के प्रभाव से तथा ईश्वर के प्रसाद से कामप्रद है

आत्मयोगबलेनैव ब्रह्मचर्यप्रभावत।
ईश्वरस्य प्रसादेन लिंग कामप्रद हि तत् ॥३३॥

पद्मपुराण (पातालखण्ड, अ० ४५) के रामाश्वमेध-वृत्तान्त मे हनुमान् अपने आजीवन ब्रह्मचर्य के बल पर शत्रुघ्न को पुनर्जीवित करते है

यद्यह ब्रह्मचर्यं च जन्मपयन्तमुद्यत।
पालयामि तदा वीर शत्रुघ्नो जीवतु क्षणात् ॥२१॥

(पातालखण्ड, अध्याय ४५)

६६७ परवर्ती साहित्य मे हनुमान् के ब्रह्मचर्य का प्राय ध्यान रखा जाता है। **लागूलोपनिषद** (दे० अप्रकाशिता उपनिषद, अडयार, पृ० २१३) तथा **आनन्द रामायण** (मनोहर काण्ड, सर्ग १३) मे हनुमान् को कुमार ब्रह्मचारी की उपाधि दी गई है, **श्री हनुमत्सहस्रनामस्तोत्रम्** मे भी ब्रह्मचारी, जितेन्द्रिय आदि नाम आये है। तुलसीदास ने हनुमान् को 'मनमथमथन ऊर्धरेता' कहकर पुकारा है (दे० विनयपत्रिका २६, ३)। इस सम्बन्ध मे उनके प्राकृतिक कौपीन का भी उल्लेख मिलता है। सारलादास के **उड़िया महाभारत** के वनपर्व मे जो जन्म-कथा मिलती है (दे० अनु० ६७४) उसके अनुसार हनुमान् ने अपनी माता से कहा था कि जब तक मुझे वज्रकौपीन न मिले मै जन्म नही

लूगा। पवन ने इसका समाचार शिव को कह सुनाया और शिव ने अजना को खिलाने के लिए कपडे दिये। इसके फलस्वरूप हनुमान् ने कौपीन पहनकर जन्म लिया। अजुादासकृत **रामविभा** मे इससे मिलती-जुलती कथा पाई जाती है। **भावार्थ रामायण** (७, ३५ और ४, १०) के अनुसार भी हनुमान् कौपीन पहनकर उत्पन्न हुए थे। अन्य रचनाओ मे प्राय हनुमान् के कौपीन का उल्लेख है, **पद्मपुराण** (पाताल खण्ड ११२, १३५) मे हनुमान् को '**सुदृढबद्धमौजीकौपीन**' और **श्रीमारुतिस्तवराज** (वेकटश्वर प्रेस) मे **मलमल्लकी** (कौपीनधारी) की उपाधि दी गई है। इस कौपीन के विषय मे निम्नलिखित दन्तकथा प्रचलित है। हनुमान् ने किसी ऋषि के पास कौपीनमात्र छोड कर उनका सर्वस्व लूट लिया था। ऋषि ने उनको यह कहकर शाप दिया—तुम्हारे पास भी कौपीन के अतिरिक्त कुछ नही रहेगा, तुम कभी भी दूसरे कपडे नही पहन सकोगे।[1]

६६८ हिन्देशिया तथा श्याम की रामकथाओ की एक सामान्य विशेषता यह है कि उनमे हनुमान् की प्रेमलीलाओ का कई अवसरो पर वर्णन किया गया है। सेतुबन्ध के समय मछलियो की रानी, रावण की नागकन्या तथा बेजकाया के साथ हनुमान् की क्रीडा का उल्लेख हो चुका है (दे० अनु० ५७८-५७६)। इसके अतिरिक्त **रामकियेन** मे स्वयप्रभा (अनु० ५२६), एक अप्सरा-वानरी (अनु० ६१३) तथा मन्दोदरी (अनु० ५६७) के साथ हनुमान् के रमण का वर्णन किया गया है। **सेरीराम** के अनुसार हनुमान् ने लव की द्वितीय पत्नी (विभीषण तथा कीकवी देवी की पुत्री) के साथ भी व्यभिचार किया था।

६६६ इन विदेशी कथाओ का मूलस्रोत भारतीय ही है। **पउमचरिय** (१६, ४२) मे हनुमान् की एक सहस्र पत्नियो का उल्लेख किया गया है, जिनमे से वरुण की कन्या सत्यवती, चन्द्रनखा की पुत्री अनगकुसुमा, नलनदिनी, हरिमालिनी तथा सुग्रीव की पुत्री पद्मरागा प्रधान है। इस रचना के एक अन्य स्थल पर हनुमान् तथा लकासुन्दरी की प्रेम-क्रीडा का वर्णन किया गया है (अनु० ५३६)। स्वयभूदेव के **पउमचरिउ** (२२, १२, १०) मे हनुमान् की पत्नियो की सख्या ८००० तक बढा दी गई है। पाश्चात्य वृत्तान्त न० ७ और ८ के अनुसार हनुमान् ने लकादहन के पश्चात् समुद्र मे नहाकर मकरी के साथ सभोग किया था (अनु० ६१५)।

वाल्मीकि रामायण (६, १२५, ४४) मे भी इसका उल्लेख मिलता है कि हनुमान् ने विजयी राम के प्रत्यागमन का शुभ समाचार सुनकर भरत ने उनको दस हजार गायो तथा एक सौ गाँवो के अतिरिक्त १६ कन्याओ को भी पत्नीस्वरूप प्रदान किया था— **शुभाचारा भार्या कन्यास्तु षोडश।**

---

१ दे० मैकॉलिफ, दि सीख रेलिजन, भाग ६, पृ० ८२ टि०।

७०० हनुमान् की अन्य विशेषताओ की भाति उनके ब्रह्मचर्य का मूलस्रोत वाल्मीकि रामायण को माना जा सकता है । रावण के अन्त पुर मे प्रविष्ट होकर तथा वहा की सुप्त अर्धनग्न ललनाओ को निहारकर उनके सुव्यवस्थित मन मे कोई विकार नही उत्पन्न हुआ था, इसका रामायण मे स्पष्ट शब्दो मे उल्लेख है

काम दृष्टा मया सर्वा विश्वस्ता रावणस्त्रिय ।
न तु मे मनसा किंचिद्वैकृत्यमुपपद्यते ।।४१।।
मनो हि मे सुव्यवस्थितम ।।४२।।

(सुन्दरकाण्ड, सर्ग ११)

इसके अतिरिक्त वाल्मीकि रामायण मे हनुमान् के सयम तथा धार्मिकता की ओर बहुधा सकेत किया गया है तथा उनको महात्मा, महामन , सस्कारसम्पन्न, सुवर्त्मना, कृतात्मा आदि विशेषणो से विभूषित किया गया है । रावण के अन्त पुर मे प्रवेश करने पर उनको पापशका होती है—**जगाम महती शका धर्मसाध्वसशकित** (दे० ५, ११, ३७) । सीता के साथ बातचीत करने के कारण वह भी अपने को दोषी मानते है— **एष दोषो महान्हि स्यात्मम सीताभिभाषणे** (दे० ५, ३०, ३६) । अत बहुत सम्भव है कि वाल्मीकि रामायण मे जो पापशकालु तथा सयमी हनुमान् का चित्र प्रस्तुत किया गया है, उसी के आधार पर उनके ब्रह्मचर्य की कल्पना उत्पन्न हुई ।

(उ) रामभक्ति

७०१ रामभक्ति का भाव समस्त मध्यकालीन रामसाहित्य मे व्याप्त है । अत यह स्वाभाविक ही था कि आदि रामायण के उत्साही एव विश्वस्त राम-सेवक हनुमान् को उस साहित्य मे आदर्श रामभक्त के रूप मे प्रस्तुत किया जाय । **शिवमहापुराण** की शतरुद्र सहिता (अ० २०) मे हनुमान् को भक्तवर के अतिरिक्त रामभक्ति के प्रवर्त्तक होन का श्रेय दिया गया है

स्थापयामास भूलोके रामभक्ति कपीश्वर ।
स्वय भक्तवरो भूत्वा सीतारामसुखप्रद ।।३६।।

बहुत सी रचनाओ मे हनुमान् को रामभक्ति का आचार्य माना गया है, रसिक सम्प्रदाय उनको अपना प्रवर्त्तक मानता है (अनु० ६६१) ।

हनुमान् की रामभक्ति का प्राचीनतम उल्लेख वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड (सर्ग ४०) मे मिलता है, जहाँ हनुमान द्वारा राम से तीन वरदान प्राप्त करने का वर्णन किया गया है, किन्तु राम से वरप्राप्ति की कथा के प्रारभिक रूप मे रामभक्ति का उल्लेख नही है (अनु० ६६३) । इसी तरह देवताओ से हनुमान् की वरप्राप्ति का प्राचीनतम वृत्तान्त रामभक्ति के विषय मे मौन है (अनु० ६६४), किन्तु परवर्ती साहित्य मे उस अवसर पर प्राय रामभक्ति की भी चर्चा है (अनु० ७०४) ।

७०२ परवर्ती साहित्य मे हनुमान् को प्रदत्त वरदानो मे से उनकी रामभक्ति को सर्वाधिक महत्त्व दिया गया है, यहाँ तक कि उनके चिरजीवत्व का प्रयोजन रामभक्ति ही बन जाता है। **तत्त्वसग्रह रामायण** (७, १५) मे स्वर्गारोहण के अवसर पर राम हनुमान् को यह कहकर आशीर्वाद देते है—तुम सदा जीते रहो और रामभक्ति बनाये रखो। **अध्यात्म रामायण** के युद्धकाण्ड के अनुसार रामाभिषेक के पश्चात् हनुमान् ने यह वरदान माँग लिया कि मैं राम-नाम का निरन्तर स्मरण करते हुए सशरीर जीवित रह सकू, हनुमान् का निवेदन कोमल भक्ति-भाव से ओत-प्रोत है

त्वन्नाम स्मरतो राम न तृप्यति मनो मम ॥१२॥
अतस्त्वन्नाम सतत स्मरन्स्थास्यामि भूतले ।
यावत्स्थास्यति ते नाम लोके तावत्कलेवरम् ॥१३॥
मम तिष्ठतु राजेन्द्र वरोऽय मेऽभिकाक्षित । (सर्ग १६)

आनन्द रामायण, भावार्थ रामायण (६, ८१) आदि रचनाओ मे हनुमान् के इस निवेदन का भी उल्लेख है कि जहाँ कही भी रामचरित का वर्णन हो रहा हो मै वहाँ उपस्थित रह सकू। आनन्द रामायण (१, १२, १४३) का उद्धरण इस प्रकार है

यत्र तत्र कथा लोके प्रचरिष्यति ते शुभा ।
तत्र तत्र गतिर्मेऽस्तु श्रवणार्थं सदैव हि ॥१४३॥
(सार काण्ड, सर्ग १२)

७०३ **तत्त्वसग्रह रामायण** (५, ११) का निम्नलिखित प्रसग आनन्द रामायण पर आधारित प्रतीत होता है, जब हनुमान् सीता का पता लगा कर राम के पास लौटे तब राम ने उनको हृदय से लगाकर यह आशीर्वाद दिया—जहा कही मेरे नाम का उच्चारण होगा वहाँ तुम भी उपस्थित रहोगे। अततोगत्वा तुम चतुरानन ब्रह्मा बनकर ससार की सृष्टि करोगे और तदन्तर मुझमे मिल जाओगे। तुम वास्तव मे शिव हो जो काशी मे आने वालो को मेरा मत्र प्रदान करते हो। **कृत्तिवासीय रामायण** (६, १२७) मे राम के अभिषेक के अवसर पर सीता हनुमान् को चिरजीवत्व का वरदान देने के पश्चात् उनसे कहती है कि जहाँ कही राम-नाम का प्रसग हो तुम वही जाकर उपस्थित रहो।

७०४ परवर्ती साहित्य मे हनुमान् की जन्मकथा के अन्तर्गत रामभक्ति का प्राय उल्लेख होता है। **आनन्द रामायण** (१, १३, १७६-१७७) की जन्मकथा के अनुसार ब्रह्मा हनुमान् को यह वरदान देते है—तुम अमर और अबाधगति होगे, तुम हरि के भक्त बन जाओगे तथा विष्णु की सहायता करोगे। **भविष्य पुराण** मे भी ब्रह्मा के इस वर-दान का उल्लेख है। जन्म के बाद माता द्वारा परित्यक्त हनुमान् ने रावण को पराजित किया था (दे० ऊपर अनु० ६६८) और अनन्तर तपस्या करने लगे थे। इस तपस्या से

प्रसन्न होकर ब्रह्मा ने उनसे कहा कि त्रेतायुग मे राम प्रकट होगे, तुम उनकी भक्ति प्राप्त कर पूर्णकाम बन जाओगे—**तस्य भक्ति च सम्प्राप्य कृतकृत्यो भविष्यसि** (दे० प्रतिसर्गपर्व, चतुर्थ खड, अध्याय १३, ४६-४७)।

७०५ उपर्युक्त कथाओ के अतिरिक्त हनुमान् की रामभक्ति के विषय मे और भी बहुत सी सामग्री मिलती है। **भागवत पुराण** (५, १६, १-५) मे इसका उल्लेख किया गया है कि हनुमान् हिमालय के किंपुरुषवर्ष मे अन्य किन्नरो के साथ अविचल भक्ति-भाव से राम की उपासना करते रहते है। उनकी रामभक्ति की उत्पत्ति के विषय मे बगाल की रामकथाओ मे (दे० अनु० ५१२) निम्नलिखित वृत्तात पाया जाता है—लक्ष्मण शिव की वाटिका मे फल तोडने गये, वहाँ के द्वारपाल हनुमान् थे, लक्ष्मण उनसे युद्ध करने लगे। बाद मे शिव और राम भी आ पहुँचे और इन दोनो का भी युद्ध हुआ। अन्त मे शिव अपने द्वारपाल हनुमान् को राम के हाथ सोपते है, उस समय से लेकर हनुमान् शिव को छोडकर राम-भक्त बन गए। पाश्चात्य वृत्तान्त न० १३ मे भी इससे मिलती-जुलती कथा मिलती है। **स्कन्द पुराण** के कई स्थलो पर हनुमान् द्वारा शिवलिंग की स्थापना का उल्लेख मिलता है (दे० अनु० ५८०)। हनुमान् की शिवभक्ति के विषय मे पद्मपुराण (पाताल खण्ड ११०, १७०-१८१) मे एक अन्य घटना का वर्णन किया गया है। इस सम्बन्ध मे राम-शिव की अभिन्नता (अनु० ३६२) तथा हनुमान् का रुद्रावतारत्व (अनु० ६७०) भी विचारणीय है।

७०६ **वाल्मीकीय रामायण** (६, १२८, ७८-७९) के अनुसार रामाभिषेक के अवसर पर सीता ने, राम से जो माला मिली थी, उसे हनुमान् को प्रदान किया। हनुमान् की रामभक्ति सिद्ध करने के उद्देश्य से इस घटना को अर्वाचीन राम-साहित्य मे एक नवीन रूप दिया गया है। **कृत्तिवास रामायण** (६, १२८) के अनुसार हनुमान् ने माला हाथ मे लेकर उसे ध्यान से देखा और तदनन्तर वह उसकी बहुमूल्य मणियाँ तोड कर खाने लगे। अपने व्यवहार का कारण पूछे जाने पर उन्होने कहा कि इस माला मे राम-नाम अकित नही है, इसीलिये मेरी दृष्टि मे इसका कोई मूल्य नही है। इस पर लक्ष्मण ने पूछा कि तुम अपना शरीर क्यो नही छोड देते हो। यह सुनकर हनुमान् ने अपने नखो से छाती फाड कर दिखलाया कि उनकी हड्डियो पर राम का नाम लिखा है।[1] **भावार्थ रामायण** (६, ८७) मे प्रस्तुत कथा का एक अन्य रूप मिलता है। माला ग्रहण करने के बाद हनुमान् ने विचार किया कि इस माला के कारण मेरे हृदय मे

---

१ भक्तमाल (२३) और रघुराजसिंह कृत रामरसिकावली मे भी यही कथा मिलती है। एक अन्य दन्तकथा के अनुसार हनुमान् ने अपना हृदय दिखलाया जहाँ सीता-लक्ष्मणादि सहित भगवान् विराजमान थे।

अहकार उत्पन्न हो सकता है अत उन्होने दातो से मणियाँ फोडकर कहा—हम वानरो को भोजन छोडकर और कुछ नहीं चाहिए। **सेरीराम** मे हनुमान् के घमण्ड के उदाहरण के रूप मे प्रस्तुत वृत्तान्त का वर्णन किया गया है। विजय के बाद राम ने हनुमान् को एक बहुमूल्य रत्नो की माला प्रदान की थी किन्तु हनुमान् ने उमे चबा कर नष्ट किया था। लक्ष्मण के आपत्ति करने पर हनुमान् ने कहा कि मै राम का ईमानदार तथा बुद्धिमान सेवक उन रत्नो से कही अधिक मूल्यवान् हूँ।

७०७ **वाल्मीकि रामायण** के उत्तरकाड (सर्ग ३९) मे इसका उल्लेख किया गया है कि रामाभिषेक के पश्चात् वानर सैनिक एक महीने तक अयोध्या मे मधु-मासादि का सेवन करते रहे, और वह महीना रामभक्ति मे लीन रहने के कारण उनको मुहूर्त्त मात्र प्रतीत हुआ

ते पिबन्त सुगधीनि मधूनि मधुपिगला ।
मासानि च सुमृष्टानि मूलानि च फलानि च ।।२६।।
एव तेषा निवसता मास साग्रो ययौ तदा ।
मुहूर्त्तमिव ते सर्वे रामभक्त्या च मेनिरे ।।२७।।

परवर्ती साहित्य मे उस प्रसग के वर्णन मे हनुमान् की रामभक्ति का विशेष ध्यान रखा गया है। **आनन्द रामायण** (१, १२, १५२-१५६) के अनुसार हनुमान् ने स्वय राम का उच्छिष्ट खाया तथा दूसरे वानरो को खिलाया। **रङ्गनाथ रामायण** (६, १६८), **तोरवे रामायण** (६, ५५) तथा **भावार्थ रामायण** (६, ८८) मे इससे मिलती-जुलती कथाएँ पाई जाती है। **सेरीराम** के अनुसार हनुमान् ने सीता की खोज करने के पूर्व राम के साथ एक ही पत्तल मे भोजन किया था (दे० अनु० ५२४)। **कृत्तिवासीय रामायण** मे गरुड के आगमन की कथा मे हनुमान् की अनन्य रामभक्ति का वर्णन किया गया है (अनु० ५८६)।

(ऊ) देवत्व

७०८ अब हनुमान् की अन्तिम विशेषता अर्थात् उनके देवत्व की उत्पत्ति और विकास का निरूपण करना है। सभवत आठवी शताब्दी से लेकर हनुमान् रुद्र के अवतार माने जाने लगे। इसके फलस्वरूप उनके प्रति भक्तिभाव जाग्रत हुआ और धीरे-धीरे विकसित होने लगा। शैव ग्रन्थो मे इस विकास के लक्षणो का प्रथम दर्शन स्वाभाविक है। **स्कन्द पुराण** (अवन्ती खण्ड, रेवा खण्ड) मे शिव हनुमान् को आशीर्वाद देकर कहते है कि तुम्हारे नाम कल्याणकारी होते है—**उपकाराय लोकाना नामानि तव मारुते** (८३, २९)। उस स्थल पर हनुमान् के बारह नाम उद्धृत हैं, इससे पता चलता है कि रेवाखण्ड के रचनाकाल मे हनुमान् के नामो का जप प्रचलित होने लगा था।

परवर्ती साहित्य के अनुशीलन से प्रतीत होता है कि १०वी तथा १५वी शताब्दी[1] के बीच हनुमद्भक्ति का पूर्ण विकास हुआ है। १५वी शताब्दी के बाद साहित्य मे उनकी मूर्ति की पूजा का स्पष्ट उल्लेख है तथा उनके कवच, मत्र, स्तोत्र आदि भी मिलते है। **आनन्द रामायण** (१, १२) के अनुसार सीता ने हनुमान् को आशीर्वाद देते हुए कहा कि गॉव-गॉव मे विघ्नशाति के उद्देश्य से तुम्हारी मूर्ति की पूजा की जायगी

ग्रामारामपत्तनेषु व्रजखेटकसद्मसु।
वनदुर्गपर्वतेषु सर्वदेवालयेषु च ।।१४७।।
नदीषु क्षेत्रतीर्थेषु जलाशयपुरेषु च।
वाटिकोपवनाश्वत्थवटवृन्दावनादिषु ।।१४८।।
त्वन्मूर्तिं पूजयिष्यति मानवा विघ्नशांतये।
भूतप्रेतपिशाचाद्या नश्यति स्मरणात्तव ।।१४६।।

इस उद्धरण मे विघ्नशाति तथा भूत-प्रेतो का नाश हनुमत्पूजा का उद्देश्य कहा गया है। हनुमत्पूजा-सबधी साहित्य मे इसी उद्देश्य का प्राय उल्लेख मिलता है। वास्तव मे पन्द्रहवी शताब्दी से लेकर हनुमान् का **सकटमोचन** रूप सब से लोकप्रिय है। **आनन्द रामायण** के मनोहर काण्ड (सर्ग १३) मे राम द्वारा विभीषण को प्रदत्त एक हनुमत्कवच उद्धृत है जिसमे भूतो तथा ज्वरो की ही चर्चा है। उसी काण्ड के एक अन्य स्थल (सर्ग १६) पर गरुड राम को कपिपूजन का विधान समझाते हे तथा यह भी कहते है कि यह पूजा महामारी के अवसर पर करनी चाहिए—**जनमारे समुत्पन्ने ग्रामे**। आनन्द रामायण के राज्यकाण्ड (५, ५) मे सीता की हनुमत्पूजा का भी वर्णन किया गया है—**गोमेयाजनेय सा कुड्या कृत्वार्च्य जानकी। अकरोत्प्रत्यह पुच्छवृद्धि स्वागुलिमात्रत** ।

लागूलोपनिषद हनुमान् के मत्रो का सग्रह हे जिसमे एकादशरुद्रावतार, श्री-रामसेवक, कुमारब्रह्मचारी हनुमान् को भूत प्रेत पिशाचो का उच्चाटक, समस्त ज्वरो का विनाशक तथा सर्वशूलो का उन्मूलक माना गया है। उन शूलो मे से एक बॉझपन है, जिसे दूर करने के लिए हनुमान् की पूजा होती हे, अत **श्रीहनुमत्सहस्रनामस्तोत्र** मे उनको गर्भदोषघ्न तथा पुत्रपौत्रद का नाम भी दिया गया है। तुलसीदास ने अपनी

---

१ हनुमत्पूजा ठीक किस शताब्दी मे प्रारम्भ हुई मै नही कह सकता। १६वी शताब्दी के पूर्व ही उनकी मूर्तियो तथा मदिरो के अस्तित्व के प्रमाण मिलते है (दे० तुलसीकृत बाहुक २१, २६, ३४) किन्तु विष्णुधर्मोत्तर पुराण तथा वृहत्सहिता के 'प्रतिमालक्षण' नामक खण्ड मे हनुमान् का निर्देश नही मिलता।

विनयपत्रिका (३०, २) मे हनुमान् के सकटमोचन रूप को बहुत महत्त्व दिया है— **"सकटसोच विमोचनी मूरती"** ।

७०६ अर्वाचीन साहित्य मे हनुमान् की महिमा और बढ गई है और उनको पाप-मोचक, मुक्तिदायक भगवान् की उपाधि मिल गई है । **श्रीमारुतिस्तव** मे हनुमान् को **पापतापसुसमापनतापर** (दे० ६) कहा गया हे तथा **श्रीहनुमत्सहस्रनाम स्तोत्र** (वेकटेश्वर प्रेस) मे उनको परम्परागत विशेषणो (अर्थात् १ महावीर २ सर्वविद्या-विशारद, वेदवेदागपारग ३ चिरजीव ४ जितेंद्रिय, ब्रह्मचारी ५ रामसेवक,रामभक्ति-विधायक ६ रुद्र, महेश्वर) तथा सकटमोचन—सूचक नामो (आरोग्यकर्त्ता, पिचाशग्रह-घातक, अपस्मारहर) के अतिरिक्त ये भी नाम दिए जाते है–ससारभयनाशक, शरणागत-वत्सल, भगवान्, जगन्नाथ, जगदीश, अनादि, परब्रह्म । फिर भी इस शब्दावली को अधिक महत्त्व नही दिया जाना चाहिए, पूजा की दृष्टि से हनुमान का सकटमोचन रूप प्रधान ही है, भूतो, बीमारियो तथा बॉझपन से छुटकारा पाने के लिए उनकी अधिकतर शरण ली जाती है । इसके अतिरिक्त हनुमान् मन्दिरो के द्वारपाल तथा गाँवो के सरक्षक के रूप मे प्रसिद्ध है । गुजरात मे उनका वृक्षो मे निवास माना जाता है ।[1]

७१० अन्त मे हनुमत्पूजा के कारणो पर विचार करना है । हनुमान् को रुद्र-अवतार माने जाने के फलस्वरूप उनके प्रति श्रद्धा का जाग्रत होना स्वभाविक ही था, किन्तु दसवी तथा पन्द्रहवी शताब्दी के बीच मे हनुमद्भक्ति का पूर्ण विकास आश्चर्य-जनक ही है और उनकी सकटमोचन के रूप मे जो आजकल तक व्यापक रूप से पूजा प्रचलित है इसका मुख्य आधार रामायण मे चित्रित (राक्षसो का वध, औषधि पर्वत का आनयन आदि) उनका चरित्र नही हो सकता है । इसका वास्तविक कारण यह है कि हनुमान् का सबन्ध यक्षपूजा से स्थापित किया गया है । अत्यन्त प्राचीनकाल से गॉव-गॉव मे यक्षो की पूजा चली आ रही है—वे रक्षक देवता (जातक ५४५), द्वारपाल, सतान देने वाले तथा वृक्षो मे निवास करने वाले (जातक ३०७ और ५०६) माने जाते थे ।[2] यक्ष तथा वीर पर्यायवाची ही है । उधर महावीर हनुमान् की ख्याति रामायण की लोकप्रियता के द्वारा शताब्दियो से चली आ रही थी । अत अन्य यक्षो अर्थात् वीरो के साथ महावीर हनुमान् की पूजा भी होने लगी ।[3] इस अत्यन्त प्राचीन पूजा-

---

१ दे० एणटहोवन, इ० ए० भाग ४०, सप्लेमेट, पृ० ८५ । हिन्दी साहित्य की हनुमद्भक्ति विषयक सामग्री पाठक अनु० ३०० मे देख ले ।

२ दे० आनन्द कुमार स्वामी, यक्षस् (वाशिगटन १९२८-१९३१) ।

३ वीरपूजा के साथ सम्बद्ध हो जाने के पूर्व ही हनुमान् की पूजा होने लगी थी । स्कन्द पुराण मे हनुमान् के १२ नामो की सूची इस प्रकार है—

पद्धति से सबध हो जाने पर हनुमान् की लोकप्रियता बहुत ही बढ गई और उस समय तक जिस उद्देश्य से और जिस रूप मे यक्षो की पूजा होती रही अब उसी उद्देश्य और उसी रूप मे महावीर हनुमान् की भी पूजा होने लगी। हनुमान् के सकटमोचन तथा द्वारपाल वाला रूप वीरपूजा से सबध रखता है। प्राचीन वीरपूजा तथा हनुमत्पूजा के उद्देश्यो मे जो सादृश्य है वह उपर्युक्त विकास की वास्तविकता को प्रमाणित करता है। डॉक्टर वासुदेवशरण अग्रवाल ने इसका एक और प्रमाण उपस्थित किया है। उन्होने दिखलाया है कि आजकल तक हनुमान् की पूजा के दो रूप प्रचलित है—एक वीरपूजा जिसमे कोई मूर्त्ति नही होती और जो यक्षपूजा से सम्बन्ध रखती है तथा एक दूसरा रूप जिसमे वानर की मूर्त्ति है और जो रामकथा पर निर्भर है।[1]

(ऋ) उपसहार

७११ ऊपर के निरूपण से स्पष्ट है कि किस प्रकार रामकथा की लोकप्रियता के साथ-साथ हनुमान् का भी महत्व शताब्दियो तक बढता रहा और फलस्वरूप उनके चरित्रचित्रण मे अतिशयोक्ति तथा अलौकिकता की मात्रा मे उत्तरोत्तर वृद्धि होती रही फिर भी यह विकास अत्यन्त स्वाभाविक और आनुक्रमिक ही प्रतीत होता है।

रामायण मे हनुमान् अपने सखाओ की अपेक्षा पराक्रमी तथा बुद्धमान अवश्य हैं, किन्तु वह निश्चित रूप से अन्य वानरो मे से एक है। अत यह मानना तर्कसगत है कि हनुमान्[2] रामकथा के अन्य वानरो के समान वानर-गोत्रीय आदिवासी ही थे।

हनुमान्, अजनीसुत, वायुपुत्र, महाबल, रामेष्ट, फाल्गुनगोत्र, पिगाक्ष, अमितविक्रम, उदधिक्रमणश्रेष्ठ, दशग्रीवस्य दर्पहा, लक्ष्मणप्राणदाता, सीताशोकनिवर्त्तन (दे० अवती खण्ड, रेवाखण्ड अ० ८३)। इसमे से एक भी नाम यक्षपूजा से सम्बन्ध नही रखता। ये १२ नाम आनन्द रामायण (मनोहरकाण्ड १३, ८-९) मे दुहराये गये है। स्कद पुराण के एक अन्य स्थल पर (ब्राह्मखण्ड, धर्मारण्य, अध्याय ३७) हनुमान् की स्तुति मे १६ विशेषण मिलते है, उनमे से एक ही अर्थात् सर्वव्याधिहर हनुमान् के सकटमोचन रूप से सम्बन्ध रखता है।

१ दे० वीर बरह्म, जनपद, खड १, अक ३, पृ० ६४-३।

२ उनके नाम एक द्राविड शब्द 'आण्-मति' (नर-कपि) का सस्कृत रूपान्तर प्रतीत होता है (दे० अनु० १०३)। उस नाम पर अनेक कथाये आधारित है। सबसे प्रचलित कथा के अनुसार इन्द्र ने इसीलिए उनका नाम हनुमान् रखा था कि पर्वत के शिखर पर गिरने पर उनकी ठोडी (हनु) टूट गई थी। पउमचरिय के अनुसार अजनाकुमारी ने पुत्रसहित हनुरुहपुर नामक

आदिवासी गोत्रो के रहस्य के अज्ञान के कारण, नाम के आधार पर ही सबो को वास्तविक वानर समझ लेना अस्वाभाविक नही कहा जा सकता है।

हनुमान् के चरित्र की विशेषताओ को ध्यान मे रखकर उनको वाल्मीकि के समय के पूर्व ही 'वायुपुत्र' (विद्याधर) की उपाधि मिली होगी (दे० ऊपर अनु० ६६२)। वाल्मीकि के बाद ही अवतारवाद की भावना को रामायण मे स्थान मिल सका, उसके फलस्वरूप हनुमान् को अन्य वानरो के साथ देवताओ की सन्तान माना गया है। उनका वायुपुत्र नाम पहले ही से विख्यात था, अत उनको वास्तव मे वायु का आत्मज माना गया है और तत्सबधी विभिन्न जन्मकथाएँ प्रचलित होने लगी (दे० ऊपर अनु० ६६३-६६६)।

ऊपर यह दिखलाया गया है कि हनुमान् की वीरता, बुद्धिमत्ता, चिरजीवत्व, ब्रह्मचर्य तथा रामभक्ति, इन विशेषताओ का सूत्रपात प्रचलित रामायण मे विद्यमान तत्त्वो से माना जा सकता है। आठवी शताब्दी से लेकर वह बहुधा रुद्रावतार माने जाने लगे। उनकी जन्मकथा के इस विकास के कारणो तथा उसकी स्वाभाविकता पर ऊपर विचार हो चुका है (दे० अनु० ६७६)। बाद मे महावीर हनुमान् का सबध अत्यन्त प्राचीन यक्षपूजा (वीरपूजा) के साथ जोडा गया और इस कारण उनकी लोकप्रियता तथा उनकी पूजा की व्यापकता और बढ गई।

डॉ० याकोबी का कहना है कि हनुमान् की असाधारण लोकप्रियता का आधार रामायण मे अकित उनका चरित्र-चित्रण मात्र नही हो सकता। वास्तव मे उनकी यह आश्चर्यजनक लोकप्रियता शताब्दियो तक बढते हुए विकास का परिणाम है। वाल्मीकि रामायण के अनुसार हनुमान् ने प्रथम बार राम-लक्ष्मण से मिलकर दोनो को अपने कन्धे पर चढाकर मलय पर्वत के शिखर पर सुग्रीव के पास पहुँचा दिया था (दे० ४, ४, ३४)। रामकथा-साहित्य का अनुशीलन करने पर डॉ० याकोबी के मत के विपरीत मन मे यह विचार अनायास उत्पन्न होता है कि रामकथा ने ही हनुमान् को अमरत्व के शिखर पर पहुँचा दिया है और आजकल राम की अपेक्षा रामसेवक हनुमान् की पूजा कही अधिक व्यापक रूप से हो रही है।

७१२ हनुमच्चरित के विकास के अध्ययन से दो निष्कर्ष निकाले जा सकते है। हनुमान् के विषय मे जो विस्तृत सामग्री परवर्ती रामकथाओ मे मिलती है, वह

एक नगर मे शरण पाई थी जिससे उनका पुत्र हनुमान् के नाम से विख्यात है (दे० ऊपर अनु० ६६६)। गुणभद्र के उत्तरपुराण के अनुसार प्रभजन का पुत्र अपना शरीर 'अणु' सा छोटा बना सकता था और इसीलिए उसका नाम 'अणुमान' ही रखा गया था (दे० पर्व ६८, २८०)।

वाल्मीकि रामायण मे निहित तत्त्वो का स्वाभाविक विकास प्रतीत होती है। अत वाल्मीकि के पूर्व रामकथा से स्वतत्र हनुमद्विषयक गाथाओ की कल्पना (दे० ऊपर अनु० १०३) निराधार ही नही अनावश्यक भी है। दूसरे, उस सामग्री के विश्लेषण से स्पष्ट है कि हनुमान् का महत्त्व बढता ही जा रहा था। अत हनुमान् वास्तव मे किसी प्राचीन देवता[1] से अभिन्न हैं, यह कल्पना उपलव्ध सामग्री से प्रतिकूल ही है। हनुमान् के चरित्र-चित्रण मे शताब्दियो तक अतिशयोक्ति का प्रयोग होता रहा, किन्तु आठवी शताब्दी मे ही उनको पहले पहल देवत्व की उपाधि से विभूषित किया गया है।

७१३ अर्जुन के गर्वनिवारण (अनु० ६८५) की कथाओ के निरूपण मे इसका उल्लेख हुआ है कि हनुमान् उनकी ध्वजा पर विराजमान है। महाभारत से पता चलता है कि प्राय सब योद्धाओ के झण्डो पर पशुओ के चित्र अकित थे, उदाहरणार्थ दुर्योधन की ध्वजा पर नाग (६, १७, २५), भीमसेन की ध्वजा पर केसरी (६, ६१, ७०), घटोत्कच के झडे पर गृध्र (७, १५०, १५), वृषसेन के झडे पर मयूर (७, ८०, १६)। इसी तरह जयद्रथ को वराहध्वज (७, १२१, ११), अश्वत्थामा को सिहलागूलकेतन (६, १७, २१), कृष्ण को गरुडध्वज (७, ५७, २), प्रद्युम्न को मकरध्वज (७, ८६, २५) या मकरकेतु (३, १६, ११) कहा गया है। डब्लू हॉप्किस[2] की धारणा है कि इन चित्रो का प्रयोजन पूजा न होकर प्रोत्साहन तथा अलकरण मात्र ही था।

महाभारत के प्रामाणिक सस्करण के अध्ययन से ज्ञात होता है कि यद्यपि अर्जुन की ध्वजा पर अन्य पशु भी अकित थे (दे० २, २२, २३) किन्तु उनमे से कपि ही प्रमुख था। अत अर्जुन को प्राय कपिराजकेतु (दे० ६, ५६, २६), वानरध्वज (६, ११२, ११४), वानरप्रवरध्वज (७, १७, २१), कपिप्रवरकेतन (७, २६, १५) कपिकेतन (८, ६३, ७८) आदि कहा गया है। द्रोणपर्व (अध्याय ६४) के अनुसार अर्जुन ने रणभूमि मे प्रवेश करते समय शख बजाया, उसी समय अर्जुन की ध्वजा पर विराजमान भूतगणो के साथ कपि ने मुँह बाकर शत्रुओ को भयभीत करते हुए बडे जोर से गर्जना की

तत कपिर्महानाद सह भूतैर्ध्वजालयैं ।
अकरोत् व्यादितास्याश्च भीषयस्तव सैनिकान् ॥२५॥

उद्योग पर्व (अ० ५५) मे अर्जुन की ध्वजा के विषय मे कहा गया है कि विश्वकर्मा, ब्रह्मा और इन्द्र ने मिलकर इसमे छोटी-बडी अनेक प्रकार की बहुमूल्य एव दिव्य मूर्तियो का निर्माण किया है

---

१ वर्षा के कोई अधिष्ठाता देवता अथवा इन्द्र (दे० अनु० ६५) अथवा एक प्राचीन अनार्य देवता वृषाकपि (दे० अनु० १०३)।

२ दे० एपिक मिथोलॉजी, पृष्ठ ७३।

ध्वजे हि तस्मिन्रूपाणि चक्रुस्ते देवमायया ।
महाधनानि दिव्यानि महान्ति च लघूनि च ।।८।।

प्रामाणिक सस्करण मे इस स्थल पर हनुमान् का उल्लेख नही है, प्रचलित पाठ मे यहाँ पर एक प्रक्षिप्त श्लोक मिलता है जिसमे लिखा है कि भीम के अनुरोध पर हनुमान् भी इस ध्वजा पर युद्ध के समय विराजमान होगे ।[1]

हनुमान् की कीर्त्ति तथा लोकप्रियता के कारण यह अतिवार्य ही था कि अर्जुन की ध्वजा के कपि के साथ उनका सम्बन्ध स्थापित किया जाय । इस अभिन्नता की ओर हनुमान्-भीम-सवाद मे प्रथम बार निर्देश किया गया है । यद्यपि जिस श्लोक मे यह सकेत मिलता है वह महाभारत की सब हस्तलिपियो मे विद्यमान नही है (दे० ३, १५०, १५ पादटिप्पणी के पाठान्तर) । परवर्ती साहित्य मे यह अभिन्नता सर्वमान्य ही है ।

५—सीता-त्याग

७१४ प्रस्तुत परिच्छेद मे सीतात्याग के विकास की रूपरेखा अकित करने का प्रयत्न किया जायगा । प्रथम उन रचनाओ का उल्लेख होगा जिनमे सीतात्याग का अभाव है । तत्पश्चात् साहित्य मे उनके आगमन के कालक्रमानुसार सीतात्याग के भिन्न-भिन्न कारणो का निरूपण किया जायगा । अत मे इस वृत्तान्त की चरम सीमा का वर्णन होगा, जिसके अनुसार रामचरित्र का आदर्श सुरक्षित रखने के उद्देश्य से सीता-त्याग अवास्तविक माना गया है ।

निम्नलिखित तालिका से प्रस्तुत वृत्तान्त के विकास के भिन्न-भिन्न सोपान स्पष्ट होगे

क सीतात्याग का अभाव

(१) आदिरामायण, महाभारत, प्राचीन पुराण—हरिवश, वायु पुराण, विष्णु पुराण और नृसिह पुराण ।

(२) अनामक जातक, गुणभद्रकृत उत्तरपुराण ।

---

१ दे० पूना सस्करण, पादटिप्पणी । सारलादासकृत उडिया महाभारत (उद्योगपर्व) के अनुसार कृष्ण ने भीम को हनुमान् के पास भेज दिया था । हनुमान् ने उत्तर दिया कि मै राम को छोडकर किसी को नही जानता, मेरे कौपीन का तागा कृष्ण के पास ले जाओ । भीम उसे छूकर मूर्च्छित हो गए । बाद मे भीम यह तागा कृष्ण के पास ले गए, कृष्ण ने उसे देखकर हनुमान् का ध्यान किया और हनुमान् आकर अर्जुन के रथ पर बैठ गए ।

ख सीतात्याग के भिन्न-भिन्न कारण

(अ) लोकापवाद

(१) वाल्मीकि रामायण का उत्तरकाड, रघुवश, उत्तररामचरित, कुन्दमाला,

(२) पउमचरिय, पद्मचरित ।

(आ) धोबी की कथा

(१) कथासरित्सागर, भागवत पुराण ।

(२) जैमिनीय अश्वमेध, पद्मपुराण आदि ।

(३) तिब्बती रामायण ।

(इ) रावण का चित्र

(१) उपदेशपद, कहावली, हेमचद्रकृत जैन रामायण

(२) कृत्तिवास और चद्रावती के बगाली रामायण, सेरीराम, काश्मीरी रामायण, लोकगीत, रामायण मसीही, गुजराती रामायणसार, सेरत काण्ड, हिकायत महाराज रावण, आनन्द रामायण ।

(३) सिहलद्वीप की रामकथा, कम्बोदिया की रामकेर्ति, श्याम का रामकियेन, रामजातक, ब्रह्मचक्र ।

(ई) परोक्ष कारण

(१) भृगु का शाप—वाल्मीकि रामायण

(२) तारा का शाप—वाल्मीकि रामायण

(३) शुक्र का शाप—पद्मपुराण

(४) लक्ष्मण का अपमान, लोमश का शाप, सुदर्शन मुनि की निन्दा

(५) वाल्मीकि को प्रदत्त वरदान

ग अवास्तविक सीतात्याग

(१) गीतावली (२) अध्यात्म रामायण (३) मधुराचार्य (४) आनन्द रामायण

क सीतात्याग का अभाव

७१५ विशेषज्ञो की सर्वसम्पति के अनुसार प्रचलित वाल्मीकि रामायण का उत्तरकाड प्रक्षिप्त माना जाता है, अत वाल्मीकिकृत **आदिरामायण** मे रामकथा राम के अभिषेक तथा उनके सुखद राज्य के सक्षिप्त वर्णन पर समाप्त होती थी और इसमे सीतात्याग का उल्लेख नही था (दे० ऊपर अनु० ११५)। इस निर्णय की पुष्टि **महाभारत** से प्राप्त होती है जिसमे सीतात्याग की ओर कही भी निर्देश नही किया गया है, विस्तृत रामोपाख्यान मे भी नही जो रामायण के किसी प्राचीन रूप पर निर्भर है। प्राचीन पुराणो मे जहाँ रामकथा मिलती है, सीतात्याग का सकेत मात्र भी नही किया गया है,

उदाहरणार्थ—**हरिवंश** (१, अध्याय ४१), **वायुपुराण** (अध्याय ८८), **विष्णुपुराण** (४, ४) तथा **नृसिंह पुराण** (अध्याय ४७-५२)।

७१६ बौद्ध **अनामक जातकम्** का अनुवाद २५१ ई० मे चीनी भाषा मे हुआ था। इसमे तो सीता-त्याग का वर्णन नही किया गया है, फिर भी अयोध्या लौटने के बाद सीता के विषय मे लोकापवाद का उल्लेख मिलता है। सम्भव है लोकापवाद के कारण सीतात्याग के वृत्तान्त का पूर्व रूप **अनामक जातकम्** की निम्नलिखित कथा मे सुरक्षित हो।

'राजा ने रानी से कहा—पति से अलग दूसरे के घर मे निवास करने के कारण स्त्री के चरित्र पर सदेह किया जाता है। तुम्हे स्वीकार करने मे परम्परा के अनुसार कहा तक औचित्य है।

रानी ने उत्तर दिया—मैं एक नीच की गुफा मे थी, किन्तु फिर भी मै उसमे पकज की तरह रही थी। यदि मुझ मे सतीत्व हो तो पृथ्वी फट जाय।

पृथ्वी फट गई और रानी ने कहा—मेरा सतीत्व प्रमाणित हुआ। इसके बाद राजा और रानी सुखपूर्वक राज्य करने लगे और सब वर्ण अपने-अपने धर्म का पालन करते रहे।'

गुणभद्रकृत **उत्तरपुराण** मे लका से अयोध्या लौटने के बाद सीता के आठ पुत्र उत्पन्न होते है और सीतात्याग की ओर कही भी निर्देश नही किया गया है।

ख. सीतात्याग के भिन्न-भिन्न कारण

७१७ रामकथा के अधिकाश लेखको ने प्रचलित **वाल्मीकि रामायण** के उत्तरकाड के अनुकरण पर सीतात्याग का वर्णन किया है। परित्याग के विभिन्न कारणो के अनुसार ये वृत्तान्त तीन वर्गों मे विभक्त किये जा सकते है।

(अ) लोकापवाद.

उत्तरकाड (सर्ग ४२-५२) की कथा इस प्रकार है। गर्भवती सीता[1] किसी दिन राम के सामने तपोवन देखने की इच्छा प्रकट करती है। उनको अगले दिन भेज देने की प्रतिज्ञा करके राम अपने मित्रो के साथ बैठकर परिहास की कहानियाँ सुनते है—**कथा बहुविधा पहिाससमन्विता** (४६, ३)। सयोगवश राम भद्र से पूछते है—'मेरे,

---

१ सेरीराम के अनुसार राम के बहुत समय तक कोई सतति नही थी। अन्त मे उन्होने महरीसी कली के पास दूतो को भेज कर सहायता माँगी, ऋषि ने दो 'बा-ज़हर' नामक पत्थर (दे० अनु० ३५४) भेज दिए—एक राम के लिए और एक सीता के लिए। इसके फलस्वरूप सीता गर्भवती हुई।

सीता तथा भरत आदि के विषय मे लोग क्या कहते है।' तब भद्र सीता के कारण हो रहे लोकापवाद और जनता के आचरण पर पडने वाले उसके कुप्रभाव का उल्लेख करता है। लोग कहते है—'हमको भी अपनी स्त्रियो का ऐसा आचरण सहना होगा'

अस्माकमपि दारेषु सहनीय भविष्यति।
यथा ही कुरुते राजा प्रजास्तमनुवर्तते ॥१६॥ (सर्ग ४३)

यह सुनकर राम लक्ष्मण को बुलाते है और सीता को गगा के उस पार छोड आने का आदेश देते है। तपोवन दिखलाने के बहाने लक्ष्मण सीता को रथ पर ले जाते है और वाल्मीकि के आश्रम के समीप छोड देते है। इस आश्रम मे सीता की परीक्षा की एक कथा का ऊपर उल्लेख किया गया है (दे० अनु० ६०१)।

वाल्मीकीय कथा कालिदास के **रघुवश** (सर्ग १४) मे भी मिलती हे, अन्तर यह है कि इसमे भद्र मित्र न होकर गुप्तचर बताया गया है। **उत्तररामचरित, कुन्दमाला, दशावतारचरित** आदि प्राचीन रचनाओ मे इस प्रकार का वर्णन किया गया है। **उत्तररामचरित** (अक १) मे गुप्तचर का नाम दुर्मुख है। **अध्यात्म रामायण** (७, ४, ४७) तथा **आनन्द रामायण** (५, ३, २१) मे इसका नाम विजय माना गया है।

छलित राम के अनुसार दो छद्मवेशी राक्षस राम को सीता के विरुद्ध उकसाते है (दे० अनु० २३६) तथा असमिया **लवकुशर युद्ध** मे राम के एक स्वप्न की चर्चा है (दे० अनु० २८४)।

७१८ विमलसूरिकृत **पउमचरिय** (पर्व ६२-६४) मे सीतात्याग का विस्तृत तथा किंचित परिवर्द्धित वर्णन किया गया है।

राम स्वय गर्भवती सीता को वन मे विभिन्न चैत्यालय दिखला रहे थे कि राजधानी के नागरिक उनके पास आये और अभयदान पाकर उन्होने अपने आने का कारण बताया। पहले वे साधारण जनता के दुष्ट स्वभाव का वर्णन करते है, जिनके निम्नलिखित अवगुण होते है—पावमोहियमई (पापमोहितमति), परदोसग्गहणरउ (परदोषग्रहणरत), सहाववको (स्वभाव-कुटिल), सठसीलो (शठशील)। और ऐसी जनता मे सीता के अपवाद[1] को छोड कर किसी और बात की चर्चा नही होती। नागरिको का यह भाषण सुनकर राम ने लक्ष्मण के साथ परामर्श किया किन्तु लक्ष्मण ने सीतात्याग का विरोध किया। राम को सीता पर सन्देह हुआ, अत उन्होने अपने सेनापति कृतान्तवदन को बुलाकर आदेश दिया कि जिन-मन्दिर दिखलाने के बहाने सीता को गगा के पार भया-

---

१ पउमचरिय (८०, १६) मे लका से लौट आने के समय भी जनता के अपवाद की चर्चा की गई है।

नक (निमानुष) वन मे छोड दो। सेनापति ने ऐसा ही किया। सयोग से पुडरीकपुर के राजा वज्रजघ ने उस वन मे सीता का विलाप सुन लिया। वह सीता को अपने भवन ले आया और उसके यहाँ सीता के दो पुत्रो का जन्म हुआ।

रविषेण के **पद्मचरित**(पर्व ९६) मे सीता को ग्रहण करने के दुष्परिणाम के वर्णन मे परिवर्द्धन किया गया है। समस्त प्रजा मर्यादा-रहित बताई जाती है। स्त्रियो का हरण हुआ करता है और बाद मे वे पुन अपने-अपने घर लौट कर स्वीकृत की जाती है

प्रजाधुनाखिला जाता मर्यादारहितात्मिकता ॥४०॥
स्वभावादेव लोकोऽय महाकुटिलमानस ।
प्रकट प्राप्य दृष्टान्त न किंचित्तस्य दुष्करम् ॥४२॥

हेमचन्द्रकृत **योगशास्त्र** मे सीतात्याग के पश्चात् की एक घटना का वर्णन किया गया है। इसके अनुसार राम अपनी पत्नी की खोज मे वन गए थे किन्तु सीता का कही भी पता नही चल सका। राम ने सोचा कि सीता किसी हिंस्र पशु द्वारा मारी गई है, अत उन्होने घर लौटकर सीता के श्राद्ध का आयोजन किया।

(आ) धोबी का वृत्तान्त

७१९ सीतात्याग की कथाओ का एक दूसरा वर्ग मिलता है जिसमे लोकापवाद का एक विशेष उदाहरण प्रस्तुत किया गया है। एक पुरुष (बाद मे यह धोबी कहा जाता है) अपनी पत्नी को, जो घर से निकली थी, वापस लेने से इनकार करते हुए, कहता है—मैं राम की तरह नही हूँ जिन्होने दीर्घकाल नक दूसरे के घर मे रहने के पश्चात् सीता को ग्रहण किया।

इस वृत्तान्त का सर्वप्रथम वर्णन सम्भवत आजकल अप्राप्य गुणाढ्यकृत **बृहत्कथा** मे विद्यमान था और अब सोमदेवकृत **कथासरित्सागर** (९, १, ६६) मे सुरक्षित है। कथा इस प्रकार है—'एक दिन अपने नगर मे गुप्तवेश मे घूमते हुए राजा ने देखा कि एक पुरुष अपनी स्त्री को हाथ से पकड़ कर अपने घर से निकाल रहा है और यह दोष दे रहा है कि तू दूसरे के घर गई थी। इसपर वह स्त्री कहती है—राम ने सीता को राक्षस के घर रहने पर भी नही छोडा, यह मेरा पति राम से बढकर है, क्योकि यह मुझे बधु के गृह जाने पर ही अपने घर से निकाल रहा है। यह सुनकर राम को बहुत दु ख हुआ और उन्होने लोकापवाद के भय से गर्भवती सीता को वन मे छोड दिया'।

भागवत पुराण (९, ११) मे जो वृत्तान्त मिलता है वह **कथासरित्सागर** की उपर्युक्त कथा से बहुत कुछ मिलता-जुलता है।

७२०. जैमिनीय अश्वमेध (अध्याय २६) तथा **पद्मपुराण** (४, ५५) की सीतात्याग विषयक कथाओ का मूलस्रोत एक ही प्रतीत होता है, क्योकि दोनो मे

शाब्दिक समानता के अतिरिक्त एक नया तत्त्व मिलता है—जिस पुरुषो ने अपनी पत्नी को निकाला वह धोबी[1] कहा जाता हे ।

आगे चलकर धोबी की यह कथा व्यापक हो गई है। **तमिल रामायण** का उत्तरकाड (७, ७), **आनन्द रामायण** (५, ३, २८ ३०), नर्मदकृत गुजराती **रामायणसार**, **रामचरितमानस** के प्रक्षिप्त लवकुशकाड आदि मे इसका वर्णन किया गया है ।[2]

७२१ **तिब्बती रामायण** का वृत्तान्त कथासरित्सागर तथा भागवत पुराण की कथा से विकसित प्रतीत होता है । उसमे जनश्रुति का प्रभाव भी स्पष्ट दिखाई पडता है । राम किसी पुरुष[3] को अपनी व्यभिचारिणी पत्नी से झगडा करते सुनते है । पति कहता है—'तुम अन्य स्त्रियो की तरह नही हो' । इस पर पत्नी उत्तर देती है—'तुम स्त्रियो के विषय मे क्या जानते हो । सीता को देख लो, एक लाख वर्ष तक वह दशग्रीव के साथ रही, फिर भी राम ने उसे ग्रहण कर लिया' ।

यह सुनकर राम को सीता के विषय मे सदेह उन्पन्न होता है और वह छिपकर उस स्त्री से मिलते है । स्त्रियो का स्वभाव समझाते हुए वह राम से यो कहती है—

---

१ एक आदिवासी कथा के अनुसार वह कुम्हार था । दे० वी० एलविन, बोडो हाइलैडर (१६५० ई०), पृ० ६३ ।

२ पाश्चात्य वृत्तान्त न० ६, ७, ८ तथा १३ और लोकगीतो मे भी धोबी की कथा का निर्देश मिलता है। दे० दुर्गाप्रसाद सिंह द्वारा सग्रहीत भोजपुरी लोकगीत, पृ० ११० । पाश्चात्य वृत्तान्त न १८ के अनुसार राम धोबी के शब्द सुनने के बाद सीता को महल ही मे त्यागकर साधू बन जाते है और दुनिया भर घूमते-फिरते है (भाग ३, पृ० १४) । धोबी के पूर्वजन्म (अनु० ७२७) के अतिरिक्त उसके अगले जन्म का भी ध्यान रखा गया है। आनन्द रामायण (६, ५, ३४) के अनुसार इस धोबी को अन्य अयोध्यावासियो के साथ स्वर्गारोहण करने की अनुमति नही मिली । वह पुन जन्म लेकर कस का धोबी बन गया तथा कृष्ण के द्वारा मारा गया । पाश्चात्य वृत्तान्त न० १४ के अनुसार राम लक्ष्मण को बुलाकर सीता को ले जाने तथा मार डालने का आदेश देते है । लक्ष्मण अपने वाण पर किसी वृक्ष का लाल रग चढाकर राम को विश्वास दिलाते है कि सीता का वध हुआ है । इस कथा मे सीता वसिष्ठ के यहाँ ठहरती हैं (दे० पृ० ६१६) ।

३ डॉ० एफ० डब्लू० थोस का अनुमान है कि यह सभवत एक लिच्छवी रजक है ।

'ज्वर-पीडित मनुष्य जिस प्रकार शीतल सरिता का निरन्तर स्मरण करता है, ऐसे ही काम-पीडिता स्त्री रूपवान् पुरुष का निरन्तर स्मरण करती रहती है। जब तक उसे कोई देखता अथवा सुनता हो वह निंदनीय आचरण नही करती, लेकिन एकान्त मे, बधन से मुक्त होकर वह परपुरुष के साथ भी अपनी काम-पीडा शान्त कर लेती है।'

यह सुनकर राम के मन मे शका सुदृढ हो जाती है। वह घर जाकर सीता को कही भी चले जाने की आज्ञा देते है और सीता अपने दो पुत्रो के साथ किसी आश्रम के लिए प्रस्थान करती है।

(इ) रावण का चित्र

७२२ पउमचरिय के अनुसार राम को सीता के चरित्र पर सदेह हुआ (अनु० ७१८)। परवर्ती साहित्य मे राम के इस सदेह को अधिक युक्तिसगत बना देने के लिए एक सर्वथा नवीन तत्त्व की कल्पना कर ली गई है, अर्थात सीता के पास **रावण का चित्र**। रावण-चित्र की कथा जनसाधारण के मनोविज्ञान के अनुकूल होने के कारण अत्यन्त लोकप्रिय बनी। गुजरात से बगाल तक, और कश्मीर से सिहलद्वीप तक समस्त भारतवर्ष मे फैलकर वह हिन्देशिया, कम्बोडिया और श्याम मे पाई जाती है।

रावण-चित्र का प्राचीनतम उल्लेख जैन-साहित्य मे मिलता है। हरिभद्र सूरि (८ वी श० ई०) के **उपदेशपद** की एक सग्रह गाथा (न० १४) मे सीता द्वारा रावण के चरणो का चित्र बनाने का सकेत मात्र किया गया है। उपदेशपद के टीकाकार मुनिचन्द्रसूरि (१२वी श० ई०) लिखते है कि सीता ने अपनी ईर्ष्यालु सपत्नी की प्रेरणा से रावण के चरणो का चित्र बना लिया था, सपत्नी ने राम को यह चित्र दिखाया और राम ने सीता को त्याग दिया। भद्रेश्वर की **कहावली**[1] मे रावण-चित्र के विषय मे निम्नलिखित कथा मिलती है। सीता के गर्भवती बन जाने के पश्चात् उनकी सपत्नियो की ईर्ष्या बहुत ही बढ गई। उनके अनुरोध पर सीता ने रावण के चरणो का चित्र बनाया, इसपर सपत्नियो ने राम के पास जाकर सीता पर यह अभियोग लगाया कि वह रावण का स्मरण किया करती है और उन्होने प्रमाण के रूप मे रावण का वह चित्र दिखाया। राम ने उनके इस अभियोग पर अधिक ध्यान नही दिया जिससे सपत्नियो ने रावण चित्र-की कथा दासियो द्वारा जनता मे फैला दी। वसन्त के आगमन पर सीता ने देवपूजा करने की दोहद प्रकट की। बाद मे राम गुप्त वेश धारण कर नगर के उद्यान मे टहलने गए और वहाँ उन्होने लका-निवास के पश्चात् सीता को ग्रहण करने के कारण अपनी निन्दा सुन ली। राम किंकर्त्तव्यविमूढ होकर घर लौटे। तब उन्होने लक्ष्मण, सुग्रीव, विभीषण, हनुमान् आदि को बुलाकर गुप्तचरो को आज्ञा दी कि तुम

---

१ दे० ज० ऑ० इ० (बडौदा), भाग २, पृ० ३३६।

लोगो ने जो कुछ सुना है उसका निस्सकोच विवरण दो। गुप्तचरो ने लोकापवाद की चर्चा की। यह सुनकर लक्ष्मण को अत्यन्त क्रोध हुआ किन्तु राम ने गुप्तचरो का समर्थन करते हुए अपने अनुभव का भी वर्णन किया। लक्ष्मण ने सीता का पक्ष लिया किन्तु राम ने कृतान्तवदन को आदेश दिया कि वह तीर्थयात्रा के बहाने सीता को ले जाकर वन मे छोड दे। सीता को छोडकर कृतान्तवदन के लौटने के बाद राम ने लक्ष्मण और अन्य विद्याधरो के साथ विमान पर चढकर वन मे सीता की खोज की और उन्हे कही न देखकर समझ लिया कि वह किसी हिंस्र पशु की शिकार बन गई हैं।

हेमचन्द्र के **जैनरामायण** मे वही कथा किंचित परिवर्तित रूप मे पाई जाती है—सीता के गर्भवती हो जाने के बाद उनकी तीन सपत्नियाँ उनसे पहले से अधिक ईर्ष्या करने लगी। इन तीनो के अनुरोध से विवश होकर सीता ने यह कह कर कि मैने रावण की ओर कभी दृष्टिपात नही किया, रावण के चरणो का चित्र बना दिया। तदुपरान्त सपत्नियो ने राम को वह चित्र दिखलाया और उसका समाचार दासियो द्वारा जनता मे फैला दिया।[1] इसके थोडे समय बाद नागरिको ने राम के पास आकर सीता के विषय मे लोकापवाद की चर्चा की। उसी रात को राम गुप्त वेश धारण कर नगर मे घूमने गए और उन्होने सीता के कारण अपनी निन्दा सुन ली। फलस्वरूप उन्होने अगले दिन सीता को वन मे छोड देने का आदेश दिया।

७२३ **कृत्तिवास रामायण** (७, ४४-४५) मे सीतात्याग के तीन कारणो का सम्मिलित वृत्तान्त इस प्रकार है। भद्र से लोकापवाद की चर्चा सुनकर राम सरोवर मे नहाने चले गए। रास्ते मे उन्होने किसी धोबी के मुँह से अपनी निन्दा सुन ली तथा घर पहुँच कर सीता द्वारा अंकित रावण का चित्र देख लिया। सीता की सखियो ने जिज्ञासा से प्रेरित होकर सीता से रावण का चित्र खीचने का अनुरोध किया था। सीता ने फर्श पर रावण का चित्र बना दिया था और बाद मे थकित होकर वह उस चित्र के पास सो गई थी। राम के आगमन पर सखियाँ चली गई, रावण का चित्र देखकर राम का सन्देह और दृढ हो गया और वह सीता को त्याग देने का सकल्प करके चले गए। चन्द्रावली कृत रामायणगाथा मे सीता कैकेयी की पुत्री कुकुआ के बहकावे मे आकर रावण का चित्र खीचती है। **सेरीराम** के अनुसार कीकवी देवी भरत-शत्रुघ्न की सहोदरी है। सीता ने किसी दिन कीकवी देवी का अनुरोध स्वीकार कर एक पखे पर रावण का चित्र खीच दिया। बाद मे कीकवो देवी ने उस चित्र को सोती हुई सीता की छाती पर

---

१ देवविजयगणि (१५९६ ई०) के जैनरामायण मे स्त्रियाँ राम से कहती है कि सीता रावण के चरणो की पूजा करती है—स्वामिन् एषा सीता रावणे मोहिता रावणाह्री भूमौ लिखित्वा पुष्पादिभि पूजयति।

रख दिया तथा सीता पर यह अभियोग लगाया कि सो जाने के पूर्व उन्होने उस चित्र का चुम्बन भी कर लिया था। राम ने कीकवी देवी पर विश्वास कर सीता को अपने घर से निकाल दिया और सीता परिचरो के साथ महरीसी कली के यहाँ चली गई। प्रस्थान करने के पूर्व सीता ने परमात्मा से प्रार्थना की कि मेरे सतीत्व के प्रमाण स्वरूप कीकवी देवी गूगी बन जाए तथा सभी पक्षी मौन रहे। परमात्मा ने इस प्रार्थना को सुन लिया जिससे कीकवी देवी १२ वर्ष तक गूगी ही बनी रही।

काश्मीरी रामायरण मे राम की एक सहोदरी बहन का उल्लेख किया गया है। लोकगीतो मे भी सीता की ननद उनसे रावरण का चित्र खिचवाती है।[1] **रामायरण मसीही** के अनुसार राम की बहन ने सीता से दशमुख का चित्र खिचवाकर राम से कहा था कि सीता रात-दिन इस चित्र की पूजा करती है। इस कारण राम को सीता पर सन्देह हुआ और उन्होने जनता के मत का पता लगाने के लिए लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न को भेज दिया। उन्होने लौटकर राम को धोबी का प्रसग सुनाया। इसपर राम ने सीता को त्याग दिया। नर्मदकृत गुजराती **रामायरणसार** के अनुसार राम सीता को रावरण का चित्र खीचते हुए और अपनी दासी से रावरण का वर्णन करते हुए सुनते है। नीलाम्बरदास कृत ठिका रामायरण मे भी रावरण-चित्र के कारण सीता-त्याग का वर्णन मिलता है।

जावा के **सेरतकाण्ड** मे कैकेयी स्वय सीता के पखे पर रावरण का चित्र खीचती है और सोती हुई सीता के पलग पर रख देती है। **आनन्द रामायरण** (जन्मकाण्ड, सर्ग ३) मे भी कैकेयी सीता से रावरण का चित्र खीचने की प्रार्थना करती है। 'मैंने केवल उसके दाहिने पैर का अँगूठा देखा है' यह कहकर सीता दीवाल पर अँगूठे का ही चित्र अकित करती है। बाद मे कैकेयी उस पर रावरण का पूरा चित्र बनाती है और राम को बुलाकर स्त्री-चरित्र की आलोचना करते हुए कहती है

यत्र यत्र मनोलग्न स्मर्यते हृदि तत्सदा।
स्त्रियाश्चरित्र को वेत्ति शिवाद्या मोहिता स्त्रिया ।।४६।।

---

१ दे० सत्येद्र, ब्रज लोकसाहित्य का अध्ययन (पृ० १३७)। भारतीय साहित्य (आगरा), वर्ष २, अक ३, पृ० ७६। दुर्गाशकर प्रसाद सिह भोजपुरी लोकगीत, पृ० २७। कृष्णदेव उपाध्याय भोजपुरी ग्रामगीत, पृ० ५६। रामनरेश त्रिपाठी, लोकगीतो मे रामकथा, मैथिलीशरण गुप्त अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ० ६६१। रामदास गौड कृत हिन्दुत्व (पृ० १४१) मे कहा गया है कि सुवर्चस रामायरण मे रावरण के चित्र के कारण शान्ता की चुगली, शान्ता के प्रति सीता का शाप, उसकी पक्षीयोनि की प्राप्ति आदि विषय पाये जाते है।

यह सुनकर राम कैकेयी को विश्वास दिलाते है कि लक्ष्मरण कल सीता को वन मे छोड देगे और उसकी दाहिनी बाहु को काटकर अयोध्या ले आयेगे क्योकि उसी से सीता ने रावरण का चित्र बनाया होगा।

लक्ष्मरण ने सीता को वाल्मीकि आश्रम के निकट जगल मे छोड दिया तथा उनकी भुजा काटने के विषय मे राम के आदेश का उल्लघन करने के कारण आत्महत्या का विचार किया। इसपर विश्वकर्मा ने प्रकट होकर तथा लक्ष्मरण से सारा वृत्तान्त सुनकर सीता का हाथ बनाकर उन्हे दे दिया।

हिन्देशिया के **सेरीराम** तथा **सेरत काण्ड का** उल्लेख ऊपर हो चुका है। वहाँ के **हिकायत महाराज रावरण** मे रावरण के चित्र के वृत्तान्त का एक किंचित परिवर्तित रूप मिलता है। रावरणवध के बाद राम को लका मे रहते हुए सात महीने हो गए है। रावरण की एक पुत्री के पास उसके प्रिय पिता का एक चित्र है जिसे वह सोती हुई सीता की छाती पर रख देती है। सीता नीद मे इस चित्र का चुम्बन कर रही है, उसी समय राम उनके पास आते है और उस दृश्य को देखकर क्रोध से सीता को कोडो से मारते है, उनके बाल काटते है और लक्ष्मरण को बुलाकर सीता को मार डालने और प्रमारण स्वरूप उनका हृदय ले आने का आदेश देते है। लक्ष्मरण सीता के साथ चले जाते हे। वह सीता को नैहर भेज देते हे और एक बकरी मारकर राम को विश्वास दिलाते हे कि सीता को मारा गया है। स्पष्ट है कि प्रस्तुत वृत्तान्त का इतना उग्र रूप केवल वहाँ सभव है जहाँ रामचरित्र का आदर्श क्षीरण हो गया है।[1]

७२४ रावरण-चित्र सम्बन्धी कथाओ का एक अन्तिम रूप मिलता है, जिसमे अलौकिकता आ गई है। **सिंहलद्वीप** की रामकथा मे उमा सीता के यहाँ आकर उनसे केले के पत्ते पर रावरण का चित्र खिंचवाती है। राम के अचानक दोनो के पास आने पर सीता इस चित्र को पलग के नीचे फेक देती है। राम उस पलग पर बैठ जाते है और पलग काँपने लगता है। काररण का पता लगाकर राम अत्यन्त क्रुद्ध हो जाते है और अपने भाई को सीता की हत्या करने की आज्ञा देते है। वन मे अपना खग किसी पशु के रक्त से रगकर लक्ष्मरण वापस आते है और राम को विश्वास दिलाते है कि सीता मर गई है।

रामकेर्त्ति (सर्ग ७५) मे अतुलय नामक राक्षसी, रावरण की कुटुम्बिनी, सीता की एक सखी का रूप धाररण कर उनसे रावरण का चित्र खिंचवाती है और इस चित्र मे प्रवेश कर जाती है, फलस्वरूप सीता प्रयत्न करने पर भी इस चित्र को नही मिटा पाती और

---

१ गोविन्द रामायरण तथा पाश्चात्य वृत्तान्त न० १३ मे रामकथा के निर्वहरण के प्रसग मे रावरण के चित्र का उल्लेख किया गया है, दे० अनु० ७५३।

निराश होकर इसे पलग के नीचे छिपा देती है। बाद मे राम के इस पर लेट जाने पर उनको तीव्र ज्वर उत्पन्न होता है। जब चित्र का पता चलता है, राम लक्ष्मण को आदेश देते है कि वह वन मे सीता को मार डाले और परिणामस्वरूप उसका कलेजा ले आवे। जब लक्ष्मण वन मे सीता पर खग चलाते है, तब वह खग सीता के गले मे पुष्पो की माला के रूप मे परिणत हो जाता है। सीता लक्ष्मण को वह माला देती है और वह फिर खग बन जाती है। तब इन्द्र मृग का रूप धारण कर लक्ष्मण के सामने मर जाते है। लक्ष्मण उसका कलेजा निकाल कर राम को लाकर देते है। लक्ष्मण के चले जाने के बाद इन्द्र भैस का रूप धारण कर सीता को वाल्मीकि के आश्रम ले जाते है। रामजातक तथा रामकियेन मे रामकेर्ति की उपर्युक्त कथा से मिलता-जुलता वृत्तान्त पाया जाता है। **रामकियेन** (अ० ४०) के अनुसार अदुल नामक शूर्पणखा की पुत्री सीता से रावण का चित्र खिचवाती है और बाद मे इसी चित्र मे प्रवेश करती है, जिससे सीता उसे मिटा देने मे असमर्थ हो जाती है। **ब्रह्मचक्र** की कथा मे शूर्पणखा स्वय छद्मवेश मे सीता के पास आती है।[1]

(ई) परोक्ष कारण

७२५ रामायण के उत्तरकाण्ड (सर्ग ५१) मे सीतात्याग का परोक्ष कारण भी उल्लिखित है। सीतात्याग के पश्चात् लक्ष्मण को सान्त्वना देते हुए सुमत्र दुर्वासा-दशरथ-सवाद उद्धृत करता है। दुर्वासा ने दशरथ से कहा था कि विष्णु ने भृगु-पत्नी की हत्या की थी फलस्वरूप **भृगु** ने विष्णु को **शाप** दिया था कि तुमको भी मनुष्य बनकर पत्नी-वियोग का दुख भोगना पडेगा

तस्मात्त्व मानुषे लोके जनिष्यसि जनार्दन ॥१४॥
तत्र पत्नीवियोग त्व प्राप्स्यसे बहुवार्षिकम्।

सीतात्याग के इस परोक्ष कारण का उल्लेख रामायण के गौडीय तथा पश्चिम-उत्तरीय पाठो मे नही मिलता। भृगुशाप अथवा भृगु-पत्नी-वध का उल्लेख न तो वैदिक साहित्य मे पाया जाता है और न महाभारत मे। वाल्मीकि रामायण के बालकाण्ड मे ताडकावध के अवसर पर भृगु-पत्नी की ओर निर्देश किया गया है, किन्तु वहाँ किसी

---

१ पाश्चात्य वृत्तान्त न० ३ के अनुसार सीता ने एक तख्ते पर रावण की छाया का चित्र खीच लिया था। पा० वृ० न० ५ मे यह भी कहा गया है कि जब राम उस तख्ते पर बैठ गए, वह तख्ता कापने लगा था। राजस्थान के एक प्रसिद्ध लोकगीत मे कौशिल्या-सीता (सास-वधू) का झगडा वनवास का कारण बताया गया है। दे० मैथिलीशरण गुप्त अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ० ८२७।

शाप का सकेत नही है। पौराणिक साहित्य मे भृगु-शाप विष्णु के अवतार धारण कर लेने का कारण बताया गया है (दे० ऊपर अनु० ३७०)।

७२६ वाल्मीकि रामायण के उदीच्य पाठो (गौ० रा० ४, २०, प० रा० ४, १६) मे तारा का शाप सीता-त्याग का परोक्ष कारण माना गया है। वालि-वध के बाद तारा ने राम से कहा था कि मेरे शाप के कारण तुमको सीता की सगति कम समय तक प्राप्त हो सकेगी

अचिरेण तु कालेन त्वया वाणैरुपार्जिता।
न सीता मम शापेन चिर त्वयि भविष्यति ।।१५।।
आत्मन शौचमाधार्य पतिव्रतगुणा सती।
याच्यमाना त्वया सीता पुनर्यास्यति भूतलम ।।१६।। (गौ० रा०)

तारा-शाप का उल्लेख निम्नलिखित रचनाओ मे भी मिलता है—रामायण मजरी (४, १६०), माधव कदली कृत असमिया रामायण (४, १६), कृत्तिवास रामायण (४, १३), बलरामदास रामायण, भावार्थ रामायण (४, ७), विलका रामायण।

७२७ **पद्म पुराण** (पाताल खण्ड, अ० ५७) मे सीतात्याग के एक अन्य परोक्ष कारण का वर्णन मिलता है। किसी दिन अविवाहित सीता उद्यान मे शुको के एक जोडे से रामकथा सुनती है। इस कथा को विस्तार से सुनने की इच्छा से प्रेरित होकर वह दोनो पक्षियो को फँसाती है। वे दोनो वाल्मीकि आश्रम मे रहकर सीखे हुए रामायण का गान करते है। कथा समाप्त होने पर सीता अपना परिचय देकर उनसे कहती है कि जब तक राम मुझे ले जाने नही आते, मै तुम दोनो को यहाँ बन्द कर रख लूँगी। पक्षी विनयपूर्वक मुक्त होने की प्रार्थना करते है, विशेषकर इसलिये कि शुकी गर्भवती है। सीता केवल नरपक्षी को मुक्त कर देती है। बाद मे शुकी यह शाप देकर पिंजडे मे मर जाती है

यथा त्व पतिना सार्धं वियोजयसि मामित ।
तथा त्वमपि रामेण विमुक्ता भव गर्भिणी ।।५८।।

अपनी मादा की मृत्यु के विषय मे जानकर शुक ने सकल्प किया कि मै राम के नगर मे जन्म लेकर सीता के वियोग का कारण बन जाऊँगा—**मद्वाक्याद्दियमुद्विग्ना वियोगेन सुदु खिता**। तब वह गगा मे डूब मरा और रजक के रूप मे अयोध्या मे प्रकट हुआ और उस रजक की निन्दा के कारण राम ने सीता का त्याग किया।[1]

---

१ 'हिन्दुत्व' (पृ० १४१) मे कहा गया है कि सौर्य्य गमायण मे निम्नलिखित विषयो का वर्णन किया गया है—शुक-चरित, शुक के रजक होने के कारण, उसके द्वारा जानकी निस्सारण।

७२८ **पउमचरिय** (पर्व १०३) के अनुसार सीता ने अपने पूर्वजन्म मे मुनि सुदर्शन की निन्दा की थी और इसके फलस्वरूप वह स्वय लोकापवाद की शिकार बनी (दे० अनु० ४१०)। **भावार्थ रामायण** (७, ४८) मे सीता अपने निर्वासन के विषय मे कहती है कि मैने वन मे लक्ष्मण पर आक्षेप किया था। बगाल मे निम्नलिखित कथा प्रचलित है—सीता के बचपन के समय लोमश ऋषि जनक के राजभवन मे आये थे। ऋषि ने सीता को स्नेह से अपनी गोद मे रख लिया किन्तु लोमश के रूखे बालो के कारण सुकुमार सीता की त्वचा से रक्त बहने लगा। ऋषि को बहुत क्रोध हुआ और उन्होने सीता को वन मे कष्ट भोगने का शाप दिया।

७२९ **तत्त्वसग्रह रामायण** (७, ६) मे सीतात्याग के कारण के विषय मे वाल्मीकि को प्रदत्त वरदान की कथा मिलती है। वाल्मीकि किसी समय क्षीरसागर के तट पर तपस्या करने गये थे। क्षीरसागर की लहरो के कारण वाल्मीकि को कष्ट हुआ। उन्होने कहा—लक्ष्मी के जन्मदाता होने के कारण क्षीरसागर अभिमानी है, मैं भी तपस्या द्वारा लक्ष्मी के पिता बनने का वरदान प्राप्त करूँगा। तब वाल्मीकि गगा के तीर पर तपश्चर्या करने लगे। लक्ष्मी प्रकट हुई और वाल्मीकि का निवेदन सुनकर उन्होने कहा: त्रेतायुग मे विष्णु दशरथ के यहा जन्म लेगे, उस समय मै पृथ्वी से प्रकट होकर जनक की पुत्री बन जाऊँगी। अन्त मे लोकापवाद से लाभ उठाकर मैं पुत्री की तरह तुम्हारे आश्रम मे शरण लेने आऊँगी।

ग अवास्तविक सीता-त्याग

७३० रामचरित्र का आदर्श सुरक्षित रखने के उद्देश्य से अनेक अर्वाचीन राम-कथाओ मे सीतात्याग के वृत्तान्त को एक अन्य रूप देकर उसे अवास्तविक बनाने का प्रयास किया गया है।

तुलसीकृत **गीतावली** मे राम की आज्ञानुसार लक्ष्मण सीता को वन मे न छोडकर उनको वाल्मीकि के हाथो मे सौप देते है। इस वृत्तान्त मे त्याग का कारण इस प्रकार है—दशरथ अपनी आयु के पूर्ण होने के पहले स्वर्गवासी हो गये थे और राम को उनकी शेष आयु मिली थी। परन्तु सीना के साथ पिना की आयु भोगना अनुचित समझकर राम ने अपनी आयु के समाप्त होने पर सीता का निर्वासन किया (दे० ७, २५ आदि)।

७३१ **अध्यात्म रामायण** (७, २) मे भी सीतात्याग वास्तविक नही कहा जा सकता है। इसके अनुसार देवताओ ने सीता के पास आकर कहा—'यदि तुम पहले बैकुठ चली जाओ तो श्री रघुनाथ भी वहाँ आकर हमे सनाथ करेंगे।' सीता से देवताओ की प्रार्थना सुनकर राम ने कहा—"मैं यह सब जानता हूँ। मैं लोकापवाद के बहाने तुम्हे त्याग दूँगा। वाल्मीकि के आश्रम मे तुम्हारे दो पुत्र होगे। बाद मे तुम मेरे पास आकर

लोगो को विश्वास दिलाने के लिए शपथ करोगी और पृथ्वी मे प्रवेश करके बैकुठ चलोगी।"

७३२ रसिक सम्प्रदाय के मधुराचार्य ने सीताहरण की भाति सीतात्याग को भी अवास्तविक माना है (दे० अनु० १५०)।

७३३ **आनन्द रामायण** (५, सर्ग २-३) के सीतात्याग का वृत्तान्त मिश्रित है। इसमे अन्य पूर्वोक्त तीन प्रसिद्ध कारणो के साथ-साथ एक नवीन कारण का भी उल्लेख हुआ है, अर्थात् गर्भवती सीता के प्रति राम की कामपीडा। किन्तु इस वृत्तान्त की सबसे बडी विशेषता यह है कि इसमे वास्तविक सीता का त्याग नही होता। कथा इस प्रकार है

'गर्भवती सीता के सीमन्तोन्नयन के लिए जनक और उनकी पत्नी सुमेधा दोनो अयोध्या आकर वहा कुछ काल तक रह जाते है। किसी दिन दोनो को बुलाकर राम अपनी कामपीडा समझाते हुए कहते है—सीता को अपने समीप न देखकर मै विरह के कारण विह्वल हो जाता हूँ और इस समय काम-पीडित होकर उनके पास रहना अनुचित है

आत्मान विह्वल दृष्ट्वा सीतासान्निध्यमाश्रये ।।३५।।
अधुना जानकीं दृष्ट्वा कामो मेऽतीव बाधते ।
पचमासोर्ध्वंत सग गर्हयन्ति मुनीश्वरा ।।३६।।

यदि मै सीता को मिथिला भेज दू तो मैं भी अवश्य मिथिला आ जाऊँगा। अत एकमात्र उपाय यह है कि मै लोकापवाद और धोबी के कथन के कारण सीता को वाल्मीकि के आश्रम मे त्याग दू। आप भी सीता के साथ वाल्मीकि के यहाँ निवास कीजिए।'

तदन्तर जनक मिथिला मे एक मत्री को नियुक्त करके अपनी पत्नी और एकाध परिजनो के साथ वाल्मीकि के आश्रम मे जाते है। बाद मे राम परिस्थिति को समझकर सीता से कहते है—'तुम पाँच वर्ष तक वाल्मीकि के यहाँ रहोगी, तुम्हारे दो पुत्र उत्पन्न होगे और अत मे तुम यहाँ आकर जनता को विश्वास दिलाने के लिए शपथ करोगी और पृथ्वी देवी स सतीत्व का प्रमाण पाओगी। हरण के समय की भाँति तुम सत्व-गुण से मेरे साथ रहोगी और अन्य दो गुणो से समन्वित होकर चली जाओगी।'

इस पर सीता रजस्तमोमयी स्वकीय छाया बनाकर अपने सत्वगुण से अदृश्य रूप से राम के वामाग मे निवास करने लगती है

रजस्तमोमयीं स्वीया छाया निर्माय सादरम् ।।१७।।
श्रीराघवस्य वामागे सत्त्वरूपा लय ययौ । (सर्ग ३)

तत्पश्चात् राम विजय नामक मित्र से लोकापवाद और धोबी की कथा सुनते है। इतने मे सीता कैकेयी के अनुरोध से रावण के अगूठे का चित्र खीच लेती है, जैसे ऊपर इसका वर्णन हुआ हे। अगले दिन सीता लक्ष्मण के साथ वाल्मीकि आश्रम की ओर प्रस्थान करती है।

उपसहार

७३४ सीतात्याग की उपर्युक्त कथाओ मे बहुत अन्तर पाया जाता है। फिर भी इस वृत्तान्त के विकास की रूपरेखा स्पष्ट है। इस त्याग के तीन बहुत व्यापक कारण माने गये है और उन तीनो कारणो मे क्रमिक विकास देखा जा सकता है। सामान्य लोकापवाद के बाद इसका एक विशेष उदाहरण (धोबी की कथा) प्रस्तुत किया गया है। अनेक रचनाओ मे सीता-चरित्र पर राम के सदेह का उल्लेख है। इस शका को युक्तिसगत बना देने के लिए रावण के चित्र की कथा की कल्पना कर ली गई है। चित्र की कथा का उद्गम तो भारतवर्ष मे हुआ, लेकिन इसका उग्र रूप विदेश मे मिलता है। कालक्रम के अनुसार भी उपर्युक्त विकास की पुष्टि होती है।

जिस प्रकार अर्वाचीन रामकथा-साहित्य मे माना गया है कि सीता की एक छाया मात्र का हरण हुआ था, उसी प्रकार सीतात्याग के विकास की परिणति यह है कि सीता की रजस्तमोमयी छाया मात्र का परित्याग हुआ था।

६—कुश-लव-चरित्र

क कुश-लव-चरित्र का विकास

७३५ प्राचीनतम रामकथाओ मे कुश-लव सम्बन्धी सामग्री का नितान्त अभाव था, वाल्मीकीय युद्धकाड के अत मे राम के १०,००० वर्ष के राज्यकाल और उनके पुत्रो तथा भाइयो के साथ बहुत से यज्ञ करने का उल्लेख किया गया है[1] किन्तु कुश-लव का सकेत मात्र भी नही पाया जाता है। वाल्मीकि रामायण के प्रामाणिक काडो (२-६) मे कही भी कुश-लव का निर्देश नही किया गया है।

महाभारत की चारो रामकथाओ मे तथा **हरिवश**, **ब्रह्मपुराण** और **नृसिह पुराण** मे भी लव-कुश का उल्लेख नही हुआ है, रामोपाख्यान को छोडकर इन रचनाओ मे राम की मृत्यु स्पष्ट शब्दो मे उल्लिखित है।

---

१ **ईजे बहुविधैर्यज्ञै ससुतबान्धव** (१२८, ६७)। गोविदराज के पाठ तथा दक्षिण के सस्करणो मे राम के पुत्रो का उल्लेख नही मिलता, उद्धरण इस प्रकार है—**ससुहृज्ज्ञातिबान्धवै**।

७३६ बालकाड के चोथे सर्ग मे **कुशीलवौ भ्रातरौ राजपुत्रौ** की कथा का प्रथम रूप मिलता है। राम के अयोध्या लौटने के पश्चात् वाल्मीकि ने समस्त रामचरित के विषय मे काव्यरचना की थी और उसे दो **कुशीलव** राजपुत्रो को सिखाया था। बाद मे ये दोनो जाकर सभाओ मे रामायण का गान करने लगे (**ऋषीणा च द्विजातीना साधूना च समागमे**)। किसी दिन राम ने दोनो को अयोध्या के राजमार्ग मे देखा और महल ले जाकर भरत आदि भाइयो के साथ रामायण का गान सुना।

इस सर्ग मे कही भी कुश तथा लव का अलग उल्लेख नही है, केवल दो भाइयो का वर्णन है जो राजपुत्र तथा कुशीलव अर्थात् गायक है। रामायण के तीनो पाठो मे तो ये दोनो राम के पुत्र माने गए है, लेकिन जिस श्लोक मे इसका उल्लेख किया गया है, वह तीनो पाठो मे भिन्न है। अत ऐसा प्रतीत होता है कि यह तथ्य बाद मे स्वतन्त्र रूप से तीनो पाठो मे जोड दिया गया है। उपर्युक्त वृत्तान्त के उत्तरार्द्ध मे, जहाँ राम दोनो का गान सुनते है कही भी इसका निर्देश नही किया गया है कि ये उनके पुत्र है। इससे यह अनुमान दृढ हो जाता है कि पहले इन दोनो 'कुशीलवौ' तथा राम के पिता-पुत्र सबध का उल्लेख नही किया गया था।[1]

७३७ उत्तरकाड मे सीता के वाल्मीकि के आश्रम मे दो पुत्रो को जन्म देने का वर्णन मिलता है, जिनका नाम वाल्मीकि ने कुश और लव रखा था (दे० सर्ग ६६)। बाद मे दोनो वाल्मीकि के शिष्य बन जाते है और राम के अश्वमेध के अवसर पर रामायण का गान करते है। तत्पश्चात् राम दोनो का परिचय प्राप्त कर सीता को बुला भेजते है। सीता के भूमि-प्रवेश के बाद कुश-लव रामायण का उत्तरकाड भी सुनाते है (दे० सर्ग ६३-६६)। रामायण के अन्त मे ऐसा उल्लेख है कि कुश को कोशल देश तथा राजधानी कुशवती दी जाती है और लव को उत्तर कोशल तथा श्रावस्ती प्राप्त होती है (दे० सर्ग १०७-१०८)।

७३८ रघुवश (१६, ३८) के अनुसार कुश ने अयोध्या का जीर्णोद्धार किया था यद्यपि रामायण (सर्ग १११) मे इसका श्रेय ऋषभ को दिया गया है।

बाद की रामकथाओ मे कुश तथा लव के विवाहो का भी वर्णन मिलता है। **रघुवश** (सग १६) तथा सध्याकरनदिकृत **रामचरित** (सर्ग ४) मे कुश तथा कुमुद्वती के विवाह का उल्लेख मिलता है। **आनन्द रामायण** के विवाहकाड मे दोनो के कई विवाहो का वर्णन किया गया है, इस काण्ड के अन्त मे राम के २००० पौत्रो तथा

---

१ डॉ० ए० वेबर का मत है कि गायको ने अपने नाम "कुशीलव" की व्युत्पत्ति (कु-शील) को छिपाने के उद्देश्य से उपर्युक्त कथा की कल्पना की है। दे० आन दि रामायण, पृ० ६६।

२४ पौत्रियो का उल्लेख है (दे० ६,१८)। **सेरीराम** के अनुसार लव ने इन्द्रजित की पुत्री तथा इसके बाद विभीषण की पुत्री से विवाह किया, कुश ने रावण के पुत्र गगा महासुर की पुत्री से विवाह करके लका का राज्य स्वीकार किया। कुशलव के विषय मे जो नवीन सामग्री व्यापक रूप से प्रचलित है वह उनकी जन्मकथा तथा उनके युद्ध से सबध रखती है। इसका निरूपण अगले दो परिच्छेदो मे किया जाएगा।

कुश-लव की जन्मकथा

(अ) यमल कुश-लव

७३९ कुश-लव की जन्मकथा का प्राचीनतम रूप वाल्मीकि रामायण के उत्तर काण्ड मे प्रस्तुत है। राम द्वारा परित्यक्त किए जाने के पश्चात् सीता वाल्मीकि के आश्रम मे शरण पाकर वहा दो यमल पुत्रो को जन्म देती है (सर्ग ६६)।

वाल्मीकि ने कुश से अग्रज के निर्मार्जन करने की आज्ञा दी थी तथा अनुज को लव[1] से, जिससे उनका नाम क्रमश कुश और लव रखा गया था

यस्तयो पूर्वजो जात स कुशैर्मन्त्रसत्कृतै ।
निर्मार्जनीयस्तु तदा कुश इत्यस्य नाम तत् ॥७॥
यश्चावरो भवेत्ताभ्या लवेन सुसमाहित ।
निर्मार्जनीयो वृद्धाभिलवेति च स नामत ॥८॥

७४० उत्तरकाड की उपर्युक्त कथा सबसे प्रामाणिक मानी गई है। इसका वर्णन अधिकाश रामकथाओ मे मिलता है। जैन **पउमचरिय** के अनुसार राजा वज्रजघ परित्यक्त सीता को बन मे देखकर उनको अपने महल ले गया, जहाँ सीता ने लवण तथा अकुश को जन्म दिया। हेमचन्द्र के **जैन रामायण** मे दोनो का नाम अनगलवण तथा मदनाकुश माना गया है।

७४१ **भवभूति के उत्तररामचरित** मे कुश-लव के जन्म का किंचित परिवर्तित रूप मिलता है। लक्ष्मण के चले जाने के बाद परित्यक्त सीता बन मे प्रसवपीडा का अनुभव करने लगी। उस पीडा से निराश होकर वह आत्महत्या के विचार से गगा मे कूद

---

१ टीकाकारो के अनुसार काटे हुए कुश का अग्रभाग कुश है तथा उसका अधोभाग लव। रघुवश (सर्ग १५) मे लिखा है

स तौ कुशलवोन्मृष्टगर्भक्लेदौ तदाख्यया।
कवि कुशलवावेव चकार किल नामत ॥३२॥

रघुवश के टीकाकारो ने लव का अर्थ गोपुच्छलोम बताया है। बलरामदास ने माना है कि राम ने सीतात्याग के पूर्व ही अपने भावी पुत्र का नाम इसीलिए 'कुश' रखा कि वह कुशलपूर्वक जन्म लेने वाला था।

पडी । जल ही मे उन्होने दो पुत्रो को जन्म दिया । तदुपरान्त पृथ्वी तथा गगा देविया सीता को पुत्रो के साथ रसातल ले गई । बाद मे कुछ बडे होने पर गगा न दोनो पुत्रो को शिक्षा के लिए वाल्मीकि के हाथो सौप दिया । इस वर्णन के अनुसार कुश तथा लव अपने माता-पिता के विषय मे कुछ नही जानते है ।अतिम अक मे वाल्मीकि की आज्ञा से सीता प्रकट होकर राम के साथ अयोध्या लोटती है । रगनाथ रामायण के उत्तर-काण्ड के अनुसार सीता ने अगस्त्य द्वारा राम को प्रदत्त दो बाणो का चूर्ण बनाकर खाया और इस प्रकार गर्भवती हो गयी ।[1] कन्नड राष्ट्र कवि कुवेपु की कल्पना और विचित्र है । रावण ने अपने वध से पहले काली की पूजा की और दो वर प्राप्त किए । एक तो राम पर विजय और दूसरा, सीता का प्रेम । ये वर उसके अगले जन्म मे पूरे हो गये, वह कु भकर्ण के साथ लव और कुश के रूप मे उत्पन्न हुआ । दे० रामायण दर्शनम् (काव्यालय, मेसूर) ।

७४२ गुणभद्रकृत **उत्तरपुराण** मे सीता के विजयराम आदि आठ पुत्रो का उल्लेख किया गया है, जिनमे से कनिष्ठ अजितजय युवराज पद पर नियुक्त किया जाता है । इस कथा मे सीतात्याग का निर्देश नही है ।[2] सारलादास के महाभारत मे सीता के एक ऋतुपर्ण नामक पुत्र की कथा का उल्लेख ऊपर (अनु० ६०६) हो चुका है ।

(आ) वाल्मीकि द्वारा कुश की सृष्टि ।

७४३ **तिब्बती रामायण** प्राचीनतम रचना है जिसमे वाल्मीकि द्वारा कुश की सृष्टि का वृत्तान्त सुरक्षित है । **कथासरित्सागर** का तत्सम्बन्धी वृत्तान्त इस प्रकार है । सीता ने वाल्मीकि के आश्रम मे एक पुत्र को जन्म दिया था, जिसका नाम वाल्मीकि ने लव रखा । एक दिन सीता लव को लेकर नदी मे स्नान करने गई । कुछ देर बाद वाल्मीकि कुटी मे लौटे । यह जानकर कि सीता स्नान करते समय लव को झोपडी मे छोड दिया करती है, वाल्मीकि को भय हुआ कि कोई हिंस्र पशु बालक को उठा न ले गया हो । इस पर उन्होने तपोबल द्वारा 'कुश' घास से एक बालक की सृष्टि की । लौटने पर सीता ने उस बालक को पुत्रवत् ग्रहण किया । इस प्रकार सीता के लव तथा कुश दो पुत्र हो गए । (दे० ६, १, ८३-६३) ।

---

१ दे० चावलि सूर्यनारायण मूर्ति, हिन्दी और तेलुगु के मध्यकालीन राम साहित्यो का तुलनत्मक अध्ययन, पृ० २२१ ।

२ जावा के सेरत काड तथा पाश्चात्य वृत्तान्त न० १३ मे सीता के केवल एक पुत्र का उल्लेख किया गया है । ये वृत्तान्त कुश-लव की जन्मकथा के द्वितीय वर्ग से सम्बन्ध रखते है, जिसमे सीता केवल एक पुत्र को जन्म देती है ।

कुश के जन्म का यह वृत्तान्त **काश्मीरी रामायण** (न० ६६), रामायण मसीही, गोविन्द रामायण (पृ० २०६) और पाश्चात्य वृत्तांतो (न० ८ और १७) मे भी मिलता है। **काश्मीरी रामायण** मे लव का जन्म भी अपने ढङ्ग का हे। दशरथ राम को स्वप्न मे दर्शन देकर सन्तान न होने के कारण उनकी भर्त्सना करते है। इस पर राम वसिष्ठ से परामर्श करने के बाद अश्वमेध यज्ञ करते है, जिसके अन्त मे सीता को प्रसाद दिया जाता है। फलस्वरूप सीता गर्भवती हुई और बाद मे उन्होने वाल्मीकि के आश्रम मे लव को जन्म दिया।

तिब्बती रामायण मे लव-कुश के जन्म का वर्णन सीतात्याग के पूर्व किया गया है। राम किसी विद्रोही सामन्त से युद्ध करने गए थे। बहुत समय बीत जाने पर सीता ने उनकी खोज मे निकलकर मार्ग मे अपने पुत्र लव को ऋषियो की रक्षा मे छोड दिया किन्तु लव छिपकर अपनी माता के पीछे चला गया। तब ऋषियो ने कुश से एक नये बालक की सृष्टि की, लोटने के बाद सीता ने उसे भी ग्रहण कर लिया।

७४४ उपर्युक्त कथा का एक ऐसा रुप भी मिलता है, जिसम सीता अपने पुत्र को वाल्मीकि की रक्षा मे छोडकर जाती है किन्तु मार्ग मं वानरियो का उपदेश सुनकर लौट आती हे और वाल्मीकि से बिना कुछ कहे अपने पुत्र को अपने साथ ले जाती है। **आनन्द रामायण** (५, ४, ६२-६८) मे सीता ने मार्ग मे एक वानरी को पाच बालक ढोते हुए देखकर अपने पुत्र का स्मरण किया। इस पर वह लौटी और वाल्मीकि से कुछ कहे बिना अपने पुत्र को साथ लेकर स्नान करने गई। रामकेर्त्ति (सर्ग ७५) तथा रामकियेन मे भी वानरियो से सीता के मिलने का वृत्तान्त दिया गया है। **रामकियेन** (अध्याय ४१) मे सीता वानरियो को अपने बच्चो के साथ-साथ एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष पर कूदते हुए देखती है और बच्चो की समुचित रक्षा न करने के कारण उनकी भर्त्सना करती है। इस पर वानरियो ने उत्तर दिया कि तुम अपने पुत्र को ध्यानमग्न ऋषि के पास छोडकर हमसे कही अधिक असावधान हो। यह सुनकर सीता अपने पुत्र को ले आने के लिए लौट पडती है। एक अन्य वृत्तान्त के अनुसार सुग्रीव की सेना के वानर वन मे सीता की सेवा करते थे तथा उनके पुत्र को टहलाने के लिए ले जाया करते थे। किसी दिन सीता अपने पुत्र के साथ नदी तट पर सो गई, इतने मे एक वानरी उनके पुत्र को टहलाने के लिए ले गई। बाद मे सीता के दुख से द्रवित होकर वाल्मीकि ने एक बालक की सृष्टि की (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० ७)। इन सब कथाओ मे तथा **राम जातक** और **ब्रह्मचक्र** मे भी वाल्मीकि एक दूसरे बालक की सृष्टि करते है। **रामकेर्त्ति** (सर्ग ७६) तथा **रामकियेन** (अ० ४१) के अनुसार वाल्मीकि ने सीता के बालक का चित्र बना लिया था तथा उसमे जीवन लाने के लिए धर्मक्रिया कर रहे थे कि सीता अपने बालक के साथ लौटी। वाल्मीकि धर्मक्रिया को अपूर्ण छोड देना

चाहते थे किन्तु सीता ने अपने बालक के एक सखा के लिए उनसे अनुरोध किया, तब वाल्मीकि ने सीता के इस निवेदन को पूर्ण कर दिया।

७४५ हिन्देशिया के **सेरीराम** तथा **हिकायत महाराज रावण** मे महरीसी कली बालक के साथ नहाने जाते हे। बालक छिपकर अपनी माता के पास लोट जाता है और महरीसी कली उसे मृत समझकर एक दूसरे बालक की सृष्टि करते है। **सिंहली रामकथा** के अनुसार वाल्मीकि ने सीता के पुत्र को न देखकर तालाब के एक कमल से एक दूसरे बालक को बनाया। बाद मे सीता को विश्वास नही हुआ और उन्होने वाल्मीक से एक तीसरे बालक की सृष्टि करने का अनुरोध किया। वाल्मीकि ने पहले इनकार किया। अन्त मे सीता ने जब यह प्रतिज्ञा की कि मैं अपनी उँगली से तीसरे बालक को दूध पिलाऊँगी तब वाल्मीकि ने कुश से एक तीसरे बालक की सृष्टि कर दी।

ग। कुश-लव-युद्ध

७४६ वाल्मीकि रामायण मे राम के अश्वमेध की यज्ञभूमि म कुश-लव रामायण का गान करते है और इस तरह राम अपने पुत्रो का परिचय प्राप्त करते हे। बहुत सी रामकथाओ मे कुश-लव क राम की सेना तथा राम से भी युद्ध करने का वर्णन किया गया है। उस युद्ध के भिन्न-भिन्न कारण बताए जाते हे, किन्तु सब से प्रचलित कारण यह है कि कुश-लव ने राम के अश्वमेध के घोडे को बाध लिया था।

विमलसूरि का **पउमचरिय** (पर्व ९७-१००) प्राचीनतम सुरक्षित रचना है जिसमे सीता के पुत्रो के युद्ध का वर्णन किया गया है। उसके अनुसार लवण तथा अकुश अपनी माता के साथ पु डरीकपुर के राजा वज्रजघ के यहा रहते ह और सिद्धार्थ से शिक्षा पाते है। उनके विवाह तथा दिग्विजय के पश्चात् नारद उनके पास आकर उनसे उनकी माता के परित्याग की कथा सुनाते है। इसपर राम तथा लक्ष्मण स प्रतिकार लेने के उद्देश्य से दोनो सेना लेकर अयोध्या पर आक्रमण करते है। लवण राम से युद्ध करते है तथा अकुश लक्ष्मण से। युद्ध के अनिश्चित होने पर सिद्धार्थ और नारद लवण तथा अकुश के जन्म का रहस्य राम-लक्ष्मण से प्रकट करते है। इसपर राम अपन पुत्रो से मिलकर दोनो को अपने पास रखते है। बाद मे सीता की अग्निपरीक्षा का वर्णन मिलता है(दे० अनु० ६०१)। रविषेणकृत **पद्मचरित** (पर्व १०२) मे हनुमान् पुत्रो का पक्ष लेकर राम के विरुद्ध लडते है।

कुश-लव-युद्ध का यह रूप केवल जैन सहित्य मे ही मिलता है। **रामलिगामृत** (सर्ग १४) मे नारद राम के पास जाकर कुश-लव के पराक्रम का वर्णन करते है, जिसस राम सेना लेकर दोनो के पास पहुँचते है। नारद का उल्लेख पउमचरिय का प्रभाव सूचित करता है।

७४७ **कथासरित्सागर** (९, १, ६५-११२) मे उस युद्ध का वर्णन इस प्रकार है। कुश तथा लव किसी दिन वाल्मीकि द्वारा पूजित शिवलिंग से खेलते है। प्रायश्चित्त के लिए वाल्मीकि लव को कुबेर के सरोवर से स्वर्ण कमल तथा उनकी वाटिका से मदार फल ले आने और उनसे लिंगपूजा करने की आज्ञा देते है। लक्ष्मण उस समय राम के पुरुषमेध के लिए शुभलक्षणसपन्न पुरुष की खोज कर रहे थे। उन्होने लव को कुबेर के यहा से लौटते देखा और उसे कारागार मे बन्द कर दिया। इस पर वाल्मीकि ने कुश को अयोध्या भेज दिया। वाल्मीकि के दिव्य अस्त्रो से कुश ने लक्ष्मण को और इसके बाद राम को भी पराजित किया। इसके बाद राम ने अपने पुत्रो का परिचय प्राप्त कर दोनो को अपने साथ रखा तथा सीता को भी वाल्मीकि के आश्रम से बुला भेजा।

आनन्द रामायण (जन्म काण्ड, सर्ग ६-८) का वृत्तान्त उपर्युक्त कथा से प्रभावित प्रतीत होता है, यद्यपि इसमे भवभूति के अनुसार रामाश्वमेध के घोडे का भी उल्लेख किया गया है। वाल्मीकि के आश्रम मे अपने पुत्रो के साथ रहने वाली सीता नो दिन तक सयोगकरणव्रत करना चाहती है। इस व्रत के लिए अयोध्या के सरोवर के स्वर्ण कमलो की आवश्यकता है। पचवर्षीय लव उन्हे प्रतिदिन छिपकर ले आता है। आठवे दिन वह चौदह पहरेदारो को परास्त करके उनसे कहता है कि मै वाल्मीकि के आज्ञानुसार ये कमल ले जाता हूँ। नवे दिन लव १००० रक्षको का पराजित करता है और सीता अपना व्रत पूरा करने मे समर्थ होती है। तदुपरान्त राम वाल्मीकि को अपने वीर शिष्य के साथ अश्वमेध के लिए निमन्त्रण भेज देते है। वाल्मीकि सीता तथा लव-कुश के साथ जाकर यज्ञभूमि के दो कोस की दूरी पर डेरा डालते है। इतने मे यज्ञाश्व वहाँ पहुँचता है और लव उसे बाध कर राम की समस्त सेना को हरा देता है। बाद मे लक्ष्मण लव को पराजित कर उसे ले जाते है। लव को मुक्त करने के लिए कुश जाकर लक्ष्मण को हराता है और देर तक राम से युद्ध करता है, इस युद्ध मे किसी की भी जीत नही होती। जब राम वाल्मीकि से पूछते है कि ये दोनो कौन है, तो वाल्मीकि उत्तर देते है कि कल यह रहस्य खुलेगा। दूसरे दिन कुश तथा लव आनन्द रामायण का जन्मकाण्ड गाकर अपना परिचय देते है। इस पर सीता को भी बुलाया जाता है और सतीत्व का साक्ष्य देने के पश्चात् वह राम तथा कुश-लव के साथ अयोध्या मे निवास करने लगती है। **भावार्थ रामायण** (७, ६६-६९) का वृत्तान्त आनन्द रामायण पर आधारित है।

७४८ भवभूति का **उत्तररामचरित** प्राचीनतम रचना है जिसमे राम के यज्ञाश्व के कारण सीता के पुत्रो के युद्ध का उल्लेख किया गया है। सम्भव है कि उपर्युक्त कथासरित्सागर की कथा अधिक प्राचीन हो और भवभूति ने उसके तथा उत्तरकाण्ड के वृत्तान्तो का समन्वय करने का प्रयत्न किया हो।

उत्तररामचरित (अङ्क ५-६) मे लव पहले यज्ञाश्व की रक्षा करने वाली राम सेना से यथा बाद मे लक्ष्मण के पुत्र चन्द्रकेतु से युद्ध करता है। राम पहुँचकर लव-चन्द्रकेतु का युद्ध रोकते है और लव तथा कुश से मिलकर उनका परिचय प्राप्त करते है। अन्त मे वह सीता को पुन ग्रहण करते है।

७४९ परवर्ती रचनाओ मे कुश-लव-युद्ध का विस्तृत तथा परिवर्द्धित वर्णन किया गया है। **जैमिनीय अश्वमेध** (अ० २९-३६) मे इस प्रकार का प्राचीनतम वृत्तान्त मिलता है। लव राम के यज्ञाश्व को बाधकर तथा बहुत से सैनिको का वध करके शत्रुघ्न द्वारा पराजित किया जाता है। इस पर कुश शत्रुघ्न को पराजित करता है। बाद मे कुश-लव लक्ष्मण, हनुमान् तथा भरत पर विजय प्राप्त करते है तथा अन्त मे राम को भी आहत करते है। तदनन्तर वाल्मीकि राम की समस्त सेना को अमृत जल से पुनर्जीवित करते है। **पद्मपुराण** (पाताल खण्ड अ० ६०-६४) का वृत्तान्त इससे मिलता-जुलता है किन्तु राम-लक्ष्मण-भरत युद्ध के लिए नही आते है और सीता अपने सतीत्व की शपथ खाकर राम-सेना को पुनर्जीवित करती है।

निम्नलिखित रचनाओ मे राम के यज्ञाश्व को लेकर कुश-लव-युद्ध का गौण-परिवर्तनो के साथ वर्णन किया गया है—छलित राम (दे० अनु० २३६), कृत्तिवास रामायण (७, ५७-६५), राम-चन्द्रिका (प्रकाश ३५-३९), गोविन्द रामायण, रामायण मसीही, नर्मद कृत गुजराती रामायण सार, काश्मीरी रामायण (७१-७७), पाश्चात्य वृत्तान्त न० ७, ८ तथा १४।

७५० **रामकेर्ति** (सर्ग ७६-७९) तथा **रामकियेन** (अध्याय ४२) मे लव-कुश-युद्ध की कथा इस प्रकार है। दस वर्ष की अवस्था मे सीता के पुत्रो ने वाल्मीकि से धनुर्विद्या की शिक्षा पाई,[1] किसी दिन उन्होने अपने बाणो से एक विशाल वृक्ष नष्ट किया जिससे अयोध्या मे भूकम्प हुआ। ज्योषियो ने कहा कि यह भूकम्प एक महान राजा की धनुर्विद्या का परिणाम है। उस राजा का पता लगाने के उद्देश्य से एक अश्व छोड दिया गया (इसका शरीर श्वेत था, चेहरा काला तथा मुँह लाल) और हनुमान् भरत तथा शत्रुघ्न ने उसका अनुसरण किया। सीता के पुत्रो ने अश्व को अपने अधिकार मे किया तथा हनुमान् को हराकर उसके हाथ बाँध लिए तथा उसके चेहरे पर गोदना गोदकर लिख दिया कि उस वानर का स्वामी ही उसके हाथ खोलने मे समर्थ होगा। भरत और शत्रुघ्न ने गाँठ खोलने का असफल प्रयत्न किया जिससे हनुमान् को अयोध्या जाकर राम की शरण लेनी पडी। बाद मे हनुमान् लौटे और सीता के पुत्र

१ रामकेर्ति मे सीता के पुत्र रामलक्ष्मण और जपलक्ष्मण कहलाते है, रामकियेन मे मकुत और लव नाम दिये गये है। श्याम के रामजातक तथा ब्रह्मचक मे भी कुश-लव-युद्ध का वर्णन किया गया है।

को कैदी बनाकर अयोध्या ले गये किन्तु जयलक्ष्मण अपनी माता से एक मायामय अँगूठी पाकर अपने भाई को छुडाने चला गया। अयोध्या मे पहुँचकर जयलक्ष्मण ने छद्मवेशी रम्भा की सहायता से उस अगूठी को रामलक्ष्मण के पास पहुँचा दिया। अगूठी के प्रभाव से उसके बन्धन छूट गए। बाद मे राम ने वन मे उन बालको का सामना किया किन्तु युद्ध अनिश्चित रहा। अन्त मे रामलक्ष्मण के बाण ने पुष्पमाला बनकर अपने को राम के प्रति समर्पित किया। तब राम ने यह कह कर ब्रह्मास्त्र चलाया—यदि ये बालक पराये है तो ब्रह्मास्त्र उनको नष्ट करे, यदि ये सम्बन्धी है तो ब्रह्मास्त्र बालको के लिए मिष्ठान्न मे बदल जाय, और वह मिष्टान्न बन गया। इस प्रकार उनको अपने सम्बन्धी जानकर तथा लक्ष्मण से सीतात्याग की वास्तविक कथा सुनकर राम सीता के पास चले गये और उन्होने सीता से क्षमा-याचना की। सीता ने राम की भर्त्सना करते हुए अयोध्या लौटना अस्वीकार किया किन्तु उन्होने दोनो बालको को राम के साथ जाने दिया।

७५१ अनेक विदेशी रामकथाओ मे कुश-लव-युद्ध के प्रसङ्ग मे राम के यज्ञाश्व का उल्लेख नही मिलता। एक **पाश्चात्य वृत्तान्त** (न०६) के अनुसार राम के पुत्रो ने अपने पिता के विरुद्ध विद्रोह किया किन्तु राम ने दोनो को परास्त कर दिया, एक पुत्र रणभूमि मे मर गया तथा दूसरा राम का उत्तराधिकारी बना। **सिंहली राम-कथा** के अनुसार राम ने किसी दिन सीता के पुत्रो से भेट की थी। बालको ने उनको प्रणाम नही किया जिससे राम ने उन पर बाण चलाया। अपना बाण बालको को आहत करने मे असमर्थ पाकर राम को जिज्ञासा हुई और इस प्रकार उनके जन्म का रहस्य प्रकट हुआ। **सेरीराम** की तत्सम्बन्धी कथा इस प्रकार है। सीता के पुत्रो ने किसी दिन मृगया खेलते समय एक हिरण का वध किया जिसे राम ने पहले ही बाण से आहत किया था। लक्ष्मण उस आहत हरिण का पीछा करते हुए बालको के पास पहुँचे, हरिण को लेकर झगडा हुआ और बालक लक्ष्मण को बाधकर महरीसी कली के यहाँ ले गये। बाद मे राम ने लक्ष्मण की खोज मे महरीसी कली के पास पहुँचकर अपने पुत्रो का परिचय प्राप्त किया। जावा के **सेरत काण्ड** के अनुसार सीता के पुत्र बुतलव ने विभीषण की सेवा करने वाले दो राक्षसो के साथ झगडा किया, उन्होने विभीषण के पास जाकर शिकायत की जिससे युद्ध छिड गया और उसमे बुतलव ने विभीषण और लक्ष्मण को कैदी कर लिया।

७—रामकथा का निर्वहण

क। प्राचीन सुखात रामकथा

७५२ प्रस्तुत निबन्ध के कई स्थलो पर इसका उल्लेख किया गया है कि

वाल्मीकिकृत **आदि-रामायण** राम के अभिषेक तथा उनके ऐश्वयशाली राज्य के संक्षिप्त वर्णन पर समाप्त होता था। सीतात्याग के विकास के निरूपण मे उन प्राचीन रचनाओ की नामावली दी गई है, जिनमे न तो सीतात्याग और न सीता के भूमिप्रवेश की ओर सकेत किया गया है। अत राम द्वारा रावण की पराजय तथा सीता की पुन प्राप्ति उन समस्त रामकथाओ का अन्तिम वर्ण्य विषय है (दे० अनु० ७१५)। अनामकम् जातकम् (और सम्भवत गुणाढ्यकृत बृहत्कथा) मे भी रामकथा सुखान्त है।

गुणभद्रकृत **उत्तरपुराण** की रामकथा मे भी सीतात्याग का उल्लेख नही है, लेकिन कथा का निर्वहण जैन परम्परा के अनुकूल है जिसमे नारायण के मर जाने पर बलदेव जैन दीक्षा लेते है। अत लक्ष्मण की मृत्यु के पश्चात् राम विरक्त होकर दीक्षा लेते हैं तथा मोक्ष प्राप्त करते है। सीता भी राम की अन्य पत्नियो के साथ आर्यिका बनकर अच्युत स्वर्ग प्राप्त कर लेती है।

ख। दुखान्त रामकथा

७५२ वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाड की रामकथा दुखात है। लोकापवाद के कारण अपनी निर्दोष पत्नी को त्याग देने के पश्चात् राम अश्वमेध के अवसर पर अपने पुत्रो को देखकर सीता को भी बुला भेजते है। वाल्मीकि सीता के साथ सभा मे पहुँच कर सीता के सतीत्व का साक्ष्य देते है। तदनन्तर राम जनता को विश्वास दिलाने के उद्देश्य से सीता से अनुरोध करते है कि वह अपने सतीत्व का प्रमाण दे। इस पर सीता शपथ खाती है

यथाह राघवादन्य मनसापि न चिंतये।
तथा मे माधवी देवी विवर दातुमर्हति ॥१४॥
मनसा कर्मणा वाचा यथा राम समर्चये।
तथा मे माधवी देवी विवर दातुमर्हति ॥१५॥
यथैतत्सत्यमुक्त मे वेद्मि रामात्पर न च।
तथा मे माधवी देवी विवर दातुमर्हति ॥१६॥ (सर्ग ९७)

पृथ्वी देवी एक दिव्य सिंहासन पर बैठी हुई भूमि मे प्रकट हो जाती है और सीता को अपनी शरण मे लेकर पुन भूमि मे प्रवेश करती है। राम विलाप करते है तथा पृथ्वी देवी से सीता को लौटा देने का अनुरोध करते हुए समस्त पृथ्वी को प्लावित करने की भी धमकी देते है। अत मे ब्रह्मा स्वर्ग मे पुर्नमिलन का आश्वासन देकर राम को सान्त्वना प्रदान करते है।

सीता का **भूमिप्रवेश** उत्तरकाण्ड के निर्वहण का प्रथम सोपान कहा जा सकता है। द्वितीय सोपान राम द्वारा **लक्ष्मण-त्याग** पर समाप्त हो जाता है। सीता के अत-

र्द्धान हो जाने के बहुत काल बाद क्रमश कौशल्या, सुमित्रा तथा कैकेयी का देहान्त हुआ (सर्ग ९९)। अनन्तर भरत तथा लक्ष्मण के पुत्रो को राज्य दिलाने के उद्देश्य से अनेक विजय-यात्राओ का उल्लेख मिलता है (सर्ग १००-१०२)। तब लक्ष्मण के त्याग का इस प्रकार वर्णन किया गया है—काल तपस्वी के रूप मे राम के पास आकर एकान्त मे ही उनके साथ बातचीत करना चाहते है और राम से यह प्रतिज्ञा कराते है कि जो कोई हम दोनो को देखे अथवा सुने वह राम द्वारा वध किया जाय—**य शृणोति निरीक्षेद्वा स वध्यो भविता तव** (१०३, १२)। राम लक्ष्मण को समझाकर द्वार पर खडा रहने का आदेश देते है। एकान्त पाकर काल राम को ब्रह्मा का यह सन्देश देते है कि रामावतार का समय समाप्त हो रहा है। इतने मे दुर्वासा लक्ष्मण के पास आ पहुँचते है और राम-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न और उनकी सन्तति को शाप देने की धमकी देकर तुरन्त ही राम से मिलने के लिए अनुरोध करते है। लक्ष्मण वश के नाश की अपेक्षा अपना ही मरण श्रेष्ठ समझकर राम के पास अन्दर जाते है—**एकस्य मरणमेऽस्तु मा भूत्सर्वविनाशनम्** (१०५, ९)। बाद मे राम अपनी प्रतिज्ञा के वशीभूत होकर लक्ष्मण का परित्याग करते है

विसर्जये त्वा सौमित्रे मा भूद् धर्मविपर्यय ।
त्यागो वधो वा विहित साधूनां ह्युभय समम ।। १३ ।। सर्ग १०७)

इस पर लक्ष्मण सरयू के तट पर जाते है और कृताजलि होकर अपना श्वास रोक लेते हे। इन्द्र लक्ष्मण को सशरीर स्वर्ग ले जाते है, देवता विष्णु का चतुर्थाश पाकर प्रसन्न है और लक्ष्मण की पूजा करते है (सर्ग १०६-१०६)

निर्वहण का अन्तिम सोपान राम का **स्वर्गारोहण** है। लक्ष्मण के वियोग के कारण दु खी होकर राम ने भरत को राज्य सौपने और स्वय वन जाने की इच्छा प्रकट की किंतु भरत तथा अयोध्या की प्रजा ने राम के साथ जाने की अनुमति माँग ली। तब राम ने अपने पुत्रो को कुशावती तथा श्रावस्ती मे राजसिंहासन पर बिठाकर शत्रुघ्न को बुला भेजा। अयोध्या के दूतो से यह जानकर कि राम और भरत प्रजा के साथ स्वर्गगमन की तैयारियां कर रहे है शत्रुघ्न ने अपने पुत्रो को राज्य सौपकर अयोध्या के लिए प्रस्थान किया। राम ने शत्रुघ्न को अपने साथ जाने की अनुमति प्रदान की। इतने मे सुग्रीव और विभीषण के नेतृत्व मे वानर, ऋक्ष और राक्षस भी पहुँचे।

राम ने सबो को अपने साथ जाने को कहा किन्तु विभीषण, हनुमान्, जाम्बवान्, मैंद, द्विविद को कलियुग के अन्त तक जीवित रहने का आदेश दिया। दूसरे दिन प्रात राम सबो के साथ सरयू के तीर पर पहुँचे, ब्रह्मा ने प्रकट होकर राम से निवेदन किया कि वह अपने भाइयो के साथ अपने विष्णुरूप मे प्रवेश करे। राम ने ऐसा ही

किया तथा ब्रह्मा ने विष्णु के अनुरोध को स्वीकार कर राम की प्रजा को 'सन्तानक' लोको मे स्थान दिलाया। सबो ने सरयू मे अपना शरीर त्याग कर स्वर्गलोक के लिए प्रस्थान किया (सर्ग १०७-११०)।

रामकथा का उपर्युक्त निर्वहण रघुवश, अध्यात्म रामायण आदि अधिकाश रामकथाओ मे पाया जाता है यहाँ पर केवल उन रचनाओ का उल्लेख होगा जिनमे सीता के भूमि-प्रवेश की कथा मे कोई विशेष परिवर्तन किया गया है।

(१) अनेक रचनाओ के अनुसार सीता **वाल्मीकि-आश्रम** के निकट ही भूमि मे विलीन हो गई थी। **भागवत पुराण** (६, ११, १५-१६) की सक्षिप्त रामकथा मे लिखा है कि पति द्वारा निर्वासित सीता ने अपने पुत्रो को वाल्मीकि के हाथो मे सौपकर राम के चरणो का ध्यान करती हुई भूमि मे प्रवेश किया, राम यह समाचार सुनकर अत्यन्त दू खी हुए। **रामायण मसीही** के अनुसार वाल्मीकि ने लव-कुश-युद्ध के पश्चात् राम को सचेत कर दिया। इसके बाद राम ने सीता की झोपडी के पास जाकर नम्रतापूर्वक क्षमायाचना की। वाल्मीकि का अनुरोध स्वीकार कर सीता झोपडी मे से निकली। किन्तु यह सुनकर कि राम पुन परीक्षा चाहते है, सीता वही शपथ खाकर भूमि मे विलीन हो गई।[1]

(२) अन्य रचनाये सीता के भूमि-प्रवेश के प्रसग मे रावण के चित्र का उल्लेख करती है। **गोविन्द रामायण** (पृ०२३६) के अनुसार सीता ने किसी दिन स्त्रियो का अनुरोध मानकर एक दिवार पर रावण का चित्र बना दिया। राम को सीता पर सदेह हुआ जिससे सीता विरक्त हुई और अपने सतीत्व की शपथ खाकर पृथ्वी मे लीन हो गई। उत्तर भारतकी एक रामकथा (पाश्चात्य वृतान्त न० १३) के अनुसार राम ने सीता को निर्वासित करने के बाद उनको अपने गुणसपन्न एकमात्र पुत्र के कारण पुन ग्रहण किया था। किन्तु सीता ने बाद मे महल की स्त्रियो के कहने से रावण के १० सिरो और २० बाहुओ की चर्चा करते हुए दीवार पर उसका चित्र भी बनाया। राम ने चित्र देखकर सीता के सतीत्व पर सन्देह किया और क्रुद्ध सीता ने शपथ खाकर भूमि प्रवेश किया।

---

१ लोकसाहित्य मे भी इस प्रकार का वर्णन मिलता हे। दे० रामनरेश त्रिपाठी, लोकगीतो मे राम-कथा (मैथिली शरणगुप्त, अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ०६६१), डा० सत्येन्द्र, ब्रजलोक साहित्य मे राम-कथा (भारतीय साहित्य, आगरा, वर्ष २ अक ३, पृ०६४)। अन्य लोकगीतो मे सीता राम का निवेदन ठुकराकर अयोध्या लौट जाना अस्वीकर करती है (दे० इन्दुप्रकाश पाण्डेय, अवधी लोकगीत और परम्परा (इलाहाबाद १९५८) पृ० २२६।

(३) **भावार्थ रामायण** (७,७३) मे सीता के भूमि-प्रवेश की कथा इस प्रकार है। कुश-लव-युद्ध के बाद सीता अपने पुत्रो के साथ अयोध्या लौट कर राजमहल मे रहने लगी थी। कैकेयी ने किसी दिन समस्त राजसभा के सामने सीता के सतीत्व पर सन्देह प्रकट किया। इसपर सीता ने पृथ्वी देवी से प्रार्थना की और वह प्रकट होकर सीता को अपने साथ ले गई।

(४) भुइआ माधवदास के **विचित्र रामायण** मे प्रस्तुत प्रसग को एक अन्य रूप दिया गया है। सीता ने कुश और लव को भीख माँगने भेज दिया। रास्ते मे झगडा हुआ और दोनो अलग हो गये। लव ने अयोध्या जाकर राम के सामने रामायण का गान किया और वह चावल लेकर सीता के पास लौटा। बाद मे दोनो ने जाकर राम के सामने सीता-त्याग तथा अपने जन्म की कथा सुनाई। इसपर राम ने सीता को बुलाया, सीता तो चली आई किन्तु अपने सतीत्व की शपथ खाकर पाताल मे प्रवेश कर गई।

(५) **पउमचरिय** के निर्वहण मे उत्तरकाण्ड के तीन सोपानो को एक नया रूप दिया गया है। सीता ने कुश-लव-युद्ध के पश्चात् अयोध्या लौटकर अग्नि-परीक्षा द्वारा अपने सतीत्व का प्रमाण दिया (अनु० ६०१)। तब राम ने अनुरोध किया कि वह उनके साथ अयोध्या मे निवास करे किन्तु सीता ने हाथ मे अपने सिर के बाल काटकर जैन दीक्षा लेने का सकल्प प्रकट किया। इसपर राम मूर्च्छित होकर भूमि पर गिर पड और सीता ने सर्वगुप्त नामक मुनि के पास जाकर दीक्षा ग्रहण कर ली। बाद मे राम चेतना पाकर सीता की खोज मे निकले किन्तु सकलभूषण मुनि से यह आश्वासन सुनकर कि तुम किसी दिन केवलज्ञान प्राप्त कर लोगे राम अयोध्या लौटे (पर्व १०२)। लक्ष्मण की मृत्यु की कथा इस प्रकार है—रत्नचूल और मणिचूल नामक देवताओ ने राम-लक्ष्मण के प्रेम की परीक्षा लेने के उद्देश्य से लक्ष्मण को राम की मृत्यु का मिथ्या समाचार सुना दिया जिससे तत्काल लक्ष्मण का देहान्त हुआ। राम के पुत्र लवण और अकुश लक्ष्मण की मृत्यु के कारण विरक्त होकर तपस्या करने चले गए। लक्ष्मण की अत्येष्टि के पश्चात् राम लवण के पुत्र अगरुह को राज्य सौपकर तपस्वी के रूप मे भ्रमण करने लगे। राम किसी दिन कोटिशिला के स्थान पर पहुँचे। वहाँ उन्होने सीता द्वारा उत्पन्न प्रलोभनो को ठुकराया जिससे उनको केवलज्ञान उत्पन्न हुआ। उन्होने १७००० वर्ष तक जीवित रह कर अन्त मे निर्वाण प्राप्त किया।[1]

---

१ दे० पर्व ११०-११८। अन्तिम पर्व मे इसका भी उल्लेख हुआ कि सीता आगे चलकर चक्रवर्ती राजा के रूप मे उत्पन्न होगी और अनेक जन्मो के बाद निर्वाण प्राप्त कर सकेगी। लक्ष्मण तथा रावण भी कई बार जन्म लेकर निर्वाण प्राप्त करेगे।

ब्रह्म पुराण (अ० १५४) के अनुसार अंगद और हनुमान् राम के अश्वमेध के अवसर पर अयोध्या पहुँचकर तथा सीता-त्याग का वृत्तान्त सुनकर गोदावरी की ओर प्रस्थान करते हे। इसपर राम भी सीता का स्मरण करते हुए अयोध्यावासियो के साथ गोदावरी के तट पर तपस्या करने जाते है। राम की तपस्या का उल्लेख पउमचरिय का प्रभाव प्रतीत होता है।

ग। अर्वाचीन सुखात रामकथा।

७५४ अधिकाश रामकथाओ मे सीतात्याग के साथ सीता के भूमिप्रवेश की कथा का भी वरान किया गया है, जिससे रामकथा प्राय दु खान्त रह गई हे। फिर भी बहुत सी रामकथाओ को स तात्याग के रहते हुए भी सुखात बना दिया गया है।

भवभूति ने **उत्तररामचरित** के अतिम सम्मेलन नामक अक मे राम-सीता के सम्मिलन का विस्तृत वरान किया हे। इसके अनुसार वाल्मीकि ने राम तथा अयोध्या-वासियो को अपने एक नाटक का अभिनय देखने का निमत्रण दिया था। उस नाटक का वर्ण्य-विषय त्याग के पश्चात् सीता का चरित तथा उनके दो पुत्रो का जन्म हे। उस करुणात्मक कथा का अभिनय देखकर समस्त सभा सीता के सतीत्व पर विश्वास करती है और राम अपने पुत्रो तथा सीता के साथ अयोध्या लोट जाते है। क्षेमेद्रकृत **बृहत्कथामजरी** मे भी एक अत्यन्त सक्षिप्त रामचरित पाया जाता है जिसका निवहरण सुखान्त है।

पुत्रौ कुशलवाभिख्यौ उक्तौ वाल्मीकिना स्वय।
तौ प्राप्य रामो दयिता विशुद्धामानिनाय ताम्॥

७५५ **कुन्दमाला** के अन्तिम अक मे सीता अपनी निर्दोषता की शपथ खाकर पृथ्वी से प्राथना करती है कि वह प्रकट होकर साक्ष्य देने की कृपा करे। इसपर पृथ्वी देवी प्रकट होती है और सीता के सतीत्व का साक्ष्य देकर लुप्त हो जाती है। तदुपरान्त राम सीता और पुत्रो के साथ अयोध्या लौटते हे।

आनन्द रामायण के जन्म काण्ड (८, ६१-७३) मे वाल्मीकीय उत्तरकाड के वृत्तान्त को किंचित बदलकर उसे सुखान्त बना दिया गया है। जब पृथ्वी देवी सीता के साथ भूमि मे प्रवेश कर रही थी, राम ने असफल विनय करने के पश्चात् धनुष पर वाण रखकर समस्त सृष्टि का सहार करना प्रारम्भ किया। यह देखकर भयभीत पृथ्वी देवी ने सीता को लौटा दिया। पूर्णकाण्ड (सर्ग ४-६) मे कथा का निर्वहरण इस प्रकार है—सोमवशी राजाओ के आक्रमण तथा उनके साथ सधि के वरान के पश्चात् ब्रह्मा ने हस्तिनापुर मे ही राम के पास आकर वैकुण्ठ

पधारने का निवेदन किया और राम ने उत्तर दिया कि मै कल ही सीता तथा अपने भाइयो के साथ बैकुण्ड जाऊँगा। राम ने कुश को एक विशाल सेना के साथ राजधानी भेज दिया, मथरा और धोबी को स्वर्ग जाने की अनुमति नही मिली, अत इन दोनो को भी कुश के साथ लौट जाना पडा।[1] विभीषण, जाम्बवान् तथा हनुमान् को पृथ्वी पर रहने का आदेश मिला। दूसरे दिन राम विष्णु भगवान् के रूप मे परिणत हुए, सीता लक्ष्मी मे, लक्ष्मण शेष भगवान् मे, भरत और शत्रुघ्न शख और चक्र मे। वानर देवताओ के शरीर मे प्रविष्ट हुए और अयोध्यावासी अपना शरीर त्याग कर दिव्य देहधारियो के रूप मे स्वर्गगामी विमानो पर सुशोभित होने लगे।

७५६ **कथासरित्सागर** (९, १, ११२), **जैमिनीय अश्वमेध** (अध्याय ३६), **पद्मपुराण** (पातालखण्ड, अध्याय ६७), **रामचन्द्रिका** (प्रकाश ३६), **रामलिंगामृत** (सर्ग १४), **रामजातक, ब्रह्मचक्र, सिंहली रामकथा** तथा एक पाश्चात्य वृत्तान्त (न० १७) मे कुशलव के युद्ध के अवसर पर सीता राम से मिलकर उनके साथ अयोध्या लौट जाती है। इन रामकथाओ मे सीता के पुन सतीत्व का प्रमाण देने का प्राय उल्लेख नही किया गया है।

तिब्बती रामायण के अनुसार हनुमान् अन्य वानरो के साथ अयोध्या आने का निमत्रण पाकर राम से मिलते है। सीता-त्याग का वृत्तान्त सुनकर वह वर्णन करते है कि किस परिस्थिति मे उन्होने सीता को लका मे देखा था। हनुमान् का प्रणाम स्वीकार करके राम सीता को बुला भेजते है, जिसपर सीता अपने पुत्रो के साथ लौटती है।

सेरीराम मे राम-सीता-सम्मिलन का इस प्रकार वर्णन किया गया है। सीता की सत्यक्रिया के फलस्वरूप किकवी देवी तथा सब जानवरो को बारह वर्ष तक गूगा देखकर राम को विश्वास हुआ कि सीता निर्दोष है (दे० अनु० ७२३)। अत वह सीता को अयोध्या ले आने के लिए महरीसी कली के यहा चले आए। महरीसी कली ने राम का अभिप्राय जानकर राम-सीता के १४ दिवसीय विवाहोत्सव का आयोजन किया जिसके अन्त मे सीता अपने पुत्रो के साथ राम की राजधानी लौटी। वहा काकवी देवी ने क्षमा-याचना की जिससे उसका तथा सब जानवरो का गूगापन समाप्त हो गया। अपने पुत्रो के विवाह के बाद राम ने किसी तपस्वी के पास 'अयोध्या पूरी नगार' नामक एक छोटी-सी नगरी बनवाकर अपनी राजधानी 'दूर्या पूरी नगार' लव को सौप दिया और वह लक्ष्मण, सीता तथा हनुमान् के साथ अयोध्या मे तपस्वी का जीवन बिताने लगे। वहा ४० वर्ष तक तपश्चर्या करने के पश्चात् राम सीता के

---

१ उन दोनो के विषय मे इसका भी उल्लेख है कि वे कृष्णावतार के समय कस के रजक और पूतना के रूप मे प्रकट होगे।

साथ परलोक सिधारे । **सेरतकाण्ड** मे भी सीता-त्याग के बाद राम-सीता-सम्मिलन का वर्णन किया गया है । अपने पुत्र बुतलव को उत्तराधिकारी बनाकर राम ने सीता, लक्ष्मण और विभीषण के साथ तपोमय जीवन अपनाया । अन्त मे अनल वानर ने अपने को अग्नि मे बदल दिया, राम, सीता, लक्ष्मण, विभीषण, सुग्रीव, अगद आदि उसमे प्रवेश कर जल गए । इस प्रकार राम और सीता पुन स्वर्गवासी विष्णु और श्री बन गए ।

७५७ तीन रामकथाओ मे सीता के भूमिप्रवेश के पश्चात् भी सीताचरित का चित्रण किया गया है । रघुनाथ महत के **अदभुत रामायण** मे तत्सबधी कथा इस प्रकार है । पाताल-प्रवेश के बाद सीता को अपने पुत्रो को देखने की इच्छा हुई और उन्होंने वासुकि को उन्हे ले आने के लिए भेज दिया । वासुकि ब्राह्मण का वेश धारण कर तथा बालको को अस्त्र-विद्या सिखलाने का बहाना देकर उनको सीता के पास ले गए । बाद मे राम ने उन्हे वापस ले आने के लिए हनुमान् को भेज दिया । हनुमान् ने स्त्री का रूप धारण कर पाताल मे प्रवेश किया और अपने को रत्नमजरिणी नामक सीता की सखी कह कर सीता के पास आने का प्रयास किया । सीता ने नागो को आदेश दिया कि वह उस स्त्री को पकड ले आए । तब हनुमान् ने वानर का रूप धारण कर नागो को परास्त कर दिया और सीता से मिलकर लव-कुश को राम के पास भेजने का निवेदन किया । सीता सहमत हुई, वह स्वय सिंहासन पर विराजमान पृथ्वी मे से राम के सामने प्रकट हुई और उन्होने राम के हाथो लव-कुश को समर्पित कर दिया । सीता यह प्रतिज्ञा करती हुई अतर्द्धान हो गई कि मै प्रतिदिन नित्यक्रिया के पश्चात् आपकी सेवा मे उपस्थित हो जाऊँगी ।

रामकेर्ति (सर्ग ७९-८०) तथा **रामकियेन** (अ० ४३-४५) का निर्वहण इस प्रकार है । कुश-लव-युद्ध के बाद सीता ने दोनो को राम के हाथ सौपकर स्वय अयोध्या लौटना अस्वीकार कर दिया । बाद मे राम ने अपने पुत्रो को सीता के पास भेजकर उनसे लौटने का अनुरोध किया किन्तु सीता ने यह सन्देश भेज दिया कि मै राम की अन्त्येष्टि के लिए ही अयोध्या जाऊँगी । तब राम ने हनुमान् द्वारा अपनी मृत्यु का मिथ्या समाचार सीता के पास भेज दिया । सीता लौटकर राम के मृत शरीर के पास विलाप करने लगी । राम एक परदे की ओट से कुछ देर तक उनका विलाप सुनकर सीता के पास आए और उनको सान्त्वना देने लगे । राम को जीवित देखकर सीता को क्रोध हुआ और वह राम की भर्त्सना करने के बाद नागराज विरुण की शरण लेकर पृथ्वी मे प्रवेश कर गई । बाद मे हनुमान् ने पाताल जा कर सीता से लौटने का अनुरोध किया किन्तु सीता ने दृढ़तापूर्वक उनका निवेदन अस्वीकार कर दिया । तब

राम विभीषण[1] को बुलाकर उनके परामर्श के अनुसार एक वर्ष तक वन मे राक्षसो का वध करने के बाद अयोध्या लौटे। उस समय देवताओ की सभा मे इन्द्र ने राम के विरह का वर्णन किया और ईश्वर ने राम तथा सीता दोनो को कैलास आने का निमत्रण दिया। वहाँ राम ने नम्रतापूर्वक सीता से क्षमायाचना की तथा ईश्वर ने सीता से राम के पास लौटने का अनुरोध किया। अन्त मे सीता ईश्वर का अनुरोध मानकर अपने पति के साथ अयोध्या लौट गई।

१ रामकीर्ति की अपूर्ण हस्तलिपियो मे राम के विभीषण को बुला भेजने के उल्लेख के बाद और कुछ सामग्री नही मिलती।

अध्याय २५

उपसंहार

७५८ निबन्ध के प्रथम तथा तृतीय भागो मे क्रमश प्राचीन तथा अर्वाचीन रामकथा-साहित्य का निरूपण किया गया हे। द्वितीय भाग मे रामकथा की उत्पत्ति तथा प्रारम्भिक विकास की रूपरेखा अङ्कित की गई है और चतुर्थ भाग मे रामकथा के विभिन्न प्रसङ्गो का क्रमिक विकास दिखलाया गया हे। प्रथम और विशेष कर तृतीय भाग की सामग्री स रामकथा की अद्वितीय व्यापकता प्रमाणित होती हे । इस व्यापक प्रसार के साथ-साथ कथानक मे परिवर्द्धन तथा परिवर्तन भी होते रहे हे जिसके फल-स्वरूप विविध रामकथाओ की उत्पत्ति हुई है जो एक दूसरी से सवर्था भिन्न प्रतीत होती है। किन्तु इन विभिन्न रामकथाओ की मौलिक एकता ही हमारे अध्ययन का सम्भवत सबसे महत्वपूर्ण निष्कर्ष हे। अत प्रस्तुत उपसहार मे पहले रामकथा की व्यापकता और तदनन्तर समस्त रामकथाओ की मौलिक एकता पर विचार किया जाएगा। विभिन्न रामकथाओ मे जो मुख्य परिवर्तन तथा परिवर्द्धन किए गए है उनकी सामान्य विशेषताओ का तीसरे परिच्छेद मे निरूपण किया जाएगा। अवतारवाद तथा राम-भक्ति के अतिरिक्त रामकथा के विकास पर कुछ अन्य बहिरग तत्वो का भी प्रभाव पडा है, इनका चौथे परिच्छेद मे वर्णन किया जाएगा। अन्तिम परिच्छेद मे रामकथा के समस्त विकास की रूपरेखा प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया जायगा।

१—रामकथा की व्यापकता

७५९ आदि-कवि वाल्मीकि के पूर्व की रामकथा विषयक गाथाओ तथा आख्यान-काव्य की लोकप्रियता तथा व्यापकता निर्धारित करना असम्भव हे। **बौद्ध तिपिटक** मे जो एकाध रामकथा सम्बन्धी गाथाएँ मिलती है और सम्भवत **महाभारत** के द्रोण तथा शातिपर्व मे जो सक्षिप्त रामकथा पाई जाती है, वह उन प्राचीन गाथाओ पर समाश्रित है (दे० अनु० १३०, ४४, ४५)। इस सामग्री की अल्पता का ध्यान रखकर यह अनुमान दृढ हो जाता है कि जिस दिन वाल्मीकि ने इस प्राचीन गाथा-साहित्य को एक ही कथासूत्र मे ग्रथित कर **आदिरामायण** की सृष्टि की थी, उसी दिन से रामकथा की दिग्विजय प्रारम्भ हुई। प्रचलित वाल्मीकि रामायण के बालकाण्ड तथा

उत्तरकाण्ड मे इसका प्रभाण मिलता है कि काव्योपजीवी कुशीलव समस्त देश मे जाकर चारो ओर आदिकाव्य का प्रचार करते थे। वाल्मीकि ने अपने शिष्यो को रामायण सिखलाकर उसे राजाओ, ऋषियों तथा, जनसाधारण को सुनाने का आदेश दिया था।

इस प्रकार रामकथा की लोकप्रियना तथा व्यापकता दिनो दिन बढती जा रही थी। महाभारत के **रामोपाख्यान** मे, जो स्पष्टतया आदि-रामायण पर निर्भर है, इस व्यापक प्रचार का निर्देश मिलता है। **हरिवश** (विष्णुपव, अध्याय ६३) से पता चलता है कि रामायण के कथानक को लेकर प्राचीन काल मे नाटको का अभिनय भी हुआ करता था। ये नाटक अप्राप्य है किंतु हरिवश के इस उद्धरण से रामकथा की उत्तरोत्तर बढती हुई लोकप्रियता स्पष्ट है। रामावतार की भावना भी धीरे-धीरे दृढ होती गई (दे० अनु० १४३) और बौद्धो तथा जैनियो ने भी रामकथा को अपनाना प्रारम्भ कर दिया। बौद्धो ने ईसवी सन् के कई शताब्दियो पहले राम को बोधिसत्व मानकर रामकथा को अपने जातक-साहित्य मे स्थान दिया था। आगे चलकर बौद्धो मे रामकथा की लोकप्रियता घटने लगी, अर्वाचीन बौद्ध साहित्य मे रामकथा का उल्लेख नही मिलता (दे० अनु० ५४)।

बौद्धो की अपेक्षा जैनियो न बाद मे रामकथा को अपनाया, लेकिन जैन साहित्य मे इसकी लोकप्रियता शताब्दियो तक बनी रही जिसके फलस्वरूप जैन कथा-ग्रथो मे एक अत्यन्त विस्तृत रामकथा-साहित्य पाया जाता है। इसमे राम, लक्ष्मण तथा रावण केवल जैन-धर्मावलबी ही नही माने जाते प्रत्युत उन्हे जैनियो के त्रिषष्टि महापुरुषो मे भी स्थान दिया गया है (दे० अनु ५५)। इस प्रकार रामकथा भारतीय सस्कृति मे इतने व्यापक रूप से फैल गई कि राम को उस समय के तीन प्रचलित धर्मों मे एक निश्चित स्थान प्राप्त हुआ—ब्राह्मण धर्म मे विष्णु के अवतार, बौद्ध धर्म मे बोधिसत्त्व तथा जैन धर्म मे आठवे बलदेव के रूप मे। आगे चलकर सस्कृत धार्मिक साहित्य मे, सस्कृत ललित साहित्य की प्रत्येक शाखा मे, अन्य भारतीय भाषाओ के साहित्य मे और भारत के निकटवर्ती देशो के साहित्य मे भी रामकथा एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर सकी है। इस अत्यन्त विस्तृत रामकथा-साहित्य से रामकथा की व्यापकता तथा लोकप्रियता का अनुमान किया जा सकता है। वास्तव मे उस समय समस्त भारतीय सस्कृति इतनी राममय बन गई थी कि इन विभिन्न रामकथाओ की वशावली निर्धारित करना नितान्त असम्भव हो गया है। अत निबध के तृतीय भाग मे रामकथा-विषयक सामग्री का भाषा तथा साहित्य के विविध रूपो के अनुसार वर्गीकरण किया गया है।

७६० सस्कृत धार्मिक साहित्य मे रामकथा का स्थान अपेक्षाकृत कम व्यापक है। कारण यह है कि एक तो वैदिक साहित्य के निर्माणकाल मे रामकथा प्रचलित नही थी। दूसरे, रामभक्ति की उत्पत्ति के पूर्व जनसाधारण के धार्मिक जीवन मे रामकथा के

लिए विशेष स्थान नही था। वैदिक साहित्य मे रामकथा का नितान्त अभाव है (दे० अनु २०)। हरिवश तथा प्राचीनतम महापुराणो मे विष्णु के अन्य अवतारो के साथ-साथ राम का नाम भी लिया गया है और इसमे जो सक्षिप्त रामकथा मिलती है वह आदिरामायण पर समाश्रित प्रतीत होती है (दे० अनु० १५१-१५६)। बाद के महापुराणो तथा उपपुराणो मे रामकथा विषयक सामग्री बढने लगी, विशेष कर **स्कदपुराण, पद्मपुराण तथा महाभागवत पुराण** मे (दे० अनु० १६१, १६२, १६६)। राम-भक्ति के पल्लवित होने के पश्चात् असख्य साम्प्रदायिक रामायण तथा सहिताएँ प्रचलित होने लगी जिनमे से **अध्यात्म रामायण, अद्भुत रामायण, आनन्द रामायण, तत्वसग्रहरामायण** और विभिन्न कालनिर्णय रामायण विशेष रूप से उल्लेखनीय है (दे० अनु० १७५-१७६)।

७६१ सस्कृत ललित साहित्य के स्वर्ण-काल मे प्राय समस्त कवियो ने राम-कथा को लेकर अमर रचनाओ की सृष्टि की है। निम्नलिखित महाकाव्य तथा नाटक उल्लेखनीय है—**रघुवश, रावणवह, भट्टिकाव्य, महावीरचरित, उत्तरामचरित, जानकीहरण, कुन्दमाला, अनर्घराघव, बालरामायण, महानाटक**। बाद मे सस्कृत साहित्य बहुत कुछ निर्जीव कृत्रिमता की शृखलाओ मे बँध गया, किंतु रामकथा विषयक श्लेष-काव्य, विलोमकाव्य, चित्रकाव्य, शृगारिक खडकाव्य आदि इस बात का प्रमाण देते है कि रामकथा की लोकप्रियता अक्षुण्ण रही। पद्रहवी शताब्दी के पश्चात् के बहुत से रामकथा सबधी महाकाव्यो तथा नाटको का उल्लेख मिलता है किंतु यह सामग्री अधिकाश अप्रकाशित है।

७६२ आधुनिक भारतीय भाषाओ के साहित्य मे रामकथा की व्यापकता अद्वितीय है। इन सब भाषाओ का सर्वप्रथम महाकाव्य प्राय कोई रामायण है तथा बाद की बहुत सी रचनाओ की कथा-वस्तु भी रामकथा से सबध रखती है। इसके अतिरिक्त इन भाषाओ का सबसे लोकप्रिय काव्य-ग्रथ प्राय कोई रामायण ही है। निबध के बारहवे अध्याय मे इस विस्तृत साहित्य का किंचित् निरूपण किया गया है। यहाँ पर केवल मुख्य रचनाओ के नाम दिए जाते है—कबनकृत **तमिल रामायण** (१२वी श० ई०), तेलुगु **द्विपद रामायण** (१३ वी श० ई०), मलयालम **रामचरितम्** (१४वी श० ई०), कन्नड **तोरवे रामायण** (१६ वी श० ई०), असमिया **माधवकदली रामायण** (१४वी श० ई०), बगाली **कृत्तिवास रामायण** (१५ वी श० ई०), हिन्दी **रामचरितमानस** (१६ वी श० ई०), उडिया **बलरामदास रामायण** (१६ वी श० ई०) और मराठी **भावार्थ रामायण** (१६ वी श० ई०)।

'७६३ भारतीय साहित्य मे रामकथा की व्यापकता की अपेक्षा विदेश मे उसकी लोकप्रियता एक प्रकार से और आश्चर्यजनक है। बौद्धो ने पहले पहल विदेश मे

रामकथा का प्रचार किया था। **अनामक जातकम्** तथा **दशरथ कथानम्** का क्रमश तीसरी तथा पाचवी श० ई० मे चीनी भाषा मे अनुवाद हुआ था। इसके बाद रामकथा की एक अन्य धारा उत्तर की ओर फैलने लगी थी। इसका प्रमाण नवी श० ई० **तिब्बती** तथा **खोतानी रामायणो** मे मिलता है जिनकी कथावस्तु ब्राह्मण रामकथा पर आधारित है, यद्यपि **खोतानी रामायण** पर बौद्ध प्रभाव भी स्पष्ट दिखाई पडता है। दोनो रचनाएँ एक दूसरे से बहुत कुछ मिलती-जुलती है और इनका गुणभद्रकृत **उत्तरपुराण** तथा **काश्मीरी रामायण** से सम्बन्ध असदिग्ध है (दे० अनु० ३११-३१२)।

हिंदेशिया तथा हिंदचीन मे वाल्मीकि रामायण प्राचीन काल से ज्ञात है। चम्पा राज्य के सातवी श० ई० के एक शिलालेख मे वाल्मीकि द्वारा श्लोकोत्पत्ति का उल्लेख मिलता है (दे० अनु० ३२३) तथा जावा के नवी शताब्दी के एक शिव-मदिर मे रामायण की समस्त घटनाएँ भित्ति-चित्रो मे अकित की गयी है (दे० अनु० ३१७)। उस प्राचीन काल का कोई साहित्य सुरक्षित न रह सका किंतु बाद मे जावा तथा मलय मे एक विस्तृत रामकथा-साहित्य की रचना हुई है। इसमे रामकथा के दो भिन्न रूप मिलते है—(१) जावा के १०वी श० ई० के **रामायण ककविन** का रूप जिसका प्रधान आधार भट्टिकाव्य है (दे० अनु० ३१४), (२) अर्वाचीन **सेरी राम** का रूप जो वाल्मीकीय कथा से बहुत भिन्न है (दे० अनु० ३२०)। फिर भी सेरीराम की आधिकारिक कथा-वस्तु मे कोई महत्त्वपूर्ण परिवर्तन अथवा परि-वर्द्धन नही मिलता जो भारत की रामकथाओ मे न मिलता हो। वाल्मीकि रामायण से भिन्न सामग्री भारत के पूर्व क्षेत्रो के राम-साहित्य मे प्राय विद्यमान है। रामकथा का यह अर्वाचीन रूप हिंदेशिया मे अधिक लोकप्रिय है और इसके आधार पर आधुनिकतम समय तक रामकथा विषयक नाटको का अभिनय होता रहा। सेरीराम हिंदचीन, स्याम तथा बर्मा मे प्रचलित रामकथाओ का मुख्य आधार है। फिर भी कबोदिया की **रामकेर्ति** तथा श्याम के **रामकियेन** की एक विशेषता यह है कि इन दोनो मे वाल्मीकि रामायण तथा सेरीराम का अनेक स्थलो पर समन्वय करने का प्रयत्न किया गया है (दे० अनु० ३२४-३२५)। १८वी शताब्दी ई० मे बर्मा के एक राजा ने श्याम की राजधानी अयुतिया को नष्ट कर बहुत से कैदियो को अपने साथ ले लिया था जो बर्मा मे स्याम के राम-नाटक का अभिनय करने लगे। इस तरह स्याम की रामकथा बर्मा मे फैल गई जिसके फलस्वरूप राम-नाटक वहाँ आज तक बहुत लोकप्रिय हैं (दे० अनु० ३२६)।

७६४ प्रस्तुत सिंहावलोकन की सामग्री से स्पष्ट है कि रामकथा न केवल भार-तीय वरन् एशियाई सस्कृति का भी एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व बन गई है। रामकथा की

इस व्यापकता तथा लोकप्रियता का श्रेय **वाल्मीकिकृत रामायण** को है। यह अगले परिच्छेद से और स्पष्ट होगा। अत यह नि सकोच कहा जा सकता है कि विश्व-साहित्य के इतिहास मे शायद ही किसी ऐसे कवि का प्रादुर्भाव हुआ हो जिसने भारत के आदि कवि के समान इतने व्यापक रूप से परवर्ती साहित्य को प्रभावित किया हो।

२—विभिन्न रामकथाओ की मौलिक एकता

७६५ निबध के द्वितीय भाग मे रामकथा के मूलस्रोत के विषय मे विविध मतो का विश्लेषण किया गया है। रामकथा का मूलरूप बौद्ध **दशरथ-जातक** के गद्य मे सुरक्षित है, इस जातक मे सीता-हरण तथा युद्ध-वर्णन का अभाव हे अत इन दोनो का आधार सभवत होमर के काव्य मे ढूढना चाहिए, यह डॉ० वेबर का विचार है। श्री दिनेशचद्र सेन की धारणा है कि वाल्मीकि ने पहले पहल (दशरथ, रावण तथा हनुमान सबधी) तीन नितान्त स्वतत्र वृत्तान्त मिलाकर रामकथा की सृष्टि की है। डॉ० याकोबी के अनुसार रामायण की कथावस्तु के स्पष्टया दो स्वतत्र भाग है—प्रथम भाग अयोध्या से सम्बन्ध रखता है और ऐतिहासिक घटनाओ पर निर्भर है, द्वितीय भाग की आधिकारिक कथावस्तु (सीताहरण तथा रावणवध) का मूलरूप वैदिक साहित्य मे विद्यमान है। सीता, राम तथा रावण का व्यक्तित्व क्रमश वैदिक सीता (कृषि की अधिष्ठात्री देवी), इन्द्र तथा वृत्रासुर से विकसित हुआ है। सीताहरण का मूलस्रोत पणियो द्वारा गायो का अपहरण है तथा रावणवध वृत्रासुर-वध का विकसित रूप मात्र है।

उपर्युक्त मतो की सामान्य विशेषता यह है कि रामकथा का मूलस्रोत निर्धारित करने के लिए दो अथवा तीन स्वतत्र वृत्तान्तो की कल्पना की जाती है। दशरथ-जातक के विषय मे डॉ० वेबर का मत ही इस प्रवृत्ति का मूल कारण प्रतीत होता है। **दशरथ-जातक** की रामकथा वाल्मीकि के शताब्दियो बाद सिहलद्वीप मे मौखिक परम्परा क आधार पर लिखी गई है (दे० ऊपर अनु० ६६)। इस बौद्ध वृत्तान्त के विश्लेषण से स्पष्ट है कि यह ब्राह्मण रामकथा का विकृत रूप है (दे० अनु० ८०-८१)। रामकथा के पूर्व रावण अथवा हनुमान् के विषय मे स्वतत्र आख्यान-काव्य प्रचलित था, दिनेशचन्द्र सेन के इस मत के लिए कोई भी आधार नही मिलता (दे० अनु० १०२-१०३)। अन्तरङ्ग समीक्षा के आधार पर रामायण के (एक ऐतिहासिक तथा एक अलौकिक) दो स्वतन्त्र भाग मानना आवश्यक है क्योकि दूसरे भाग की घटनाओ का मूलरूप वैदिक साहित्य मे सुरक्षित है इसके लिए कोई प्रमाण नही दिया जाता है (दे० अनु० ६६) और इस भाग की प्रधान कथावस्तु (स्त्रीहरण तथा इसके कारण युद्ध) असाधारण तथा अलौकिक नही कही जा सकती है (दे० अनु० १०४)। राम के

निर्वासन की भाँति सीताहरण तथा रावणवध अर्थात् रामकथा की समस्त आधिकारिक कथावस्तु का ऐतिहासिक आधार मानना अधिक स्वाभाविक प्रतीत होता है (दे० अनु० १०५)। अत रामकथा के दो अथवा तीन स्वतन्त्र भागो की कल्पना का कही भी समीचीन आधार नही मिलता। इस तरह रामकथा विषयक आख्यान-काव्य का एक ही मूल-स्रोत रह जाता है अर्थात् एक ऐतिहासिक घटना। इस प्राचीन आख्यान-काव्य के आधार पर वाल्मीकि ने रामायण की रचना की है (दे० अनु० १३०)।

७६६ **बौद्ध तिपिटक** की एकाध गाथाएँ और सम्भवत **महाभारत** के द्रोण तथा शान्तिपर्व की अत्यन्त सक्षिप्त रामकथाएँ वाल्मीकि के पूर्व के रामकथा-सम्बन्धी आख्यान-काव्य पर निर्भर है। बौद्ध रामकथाओ के केवल पाली अथवा चीनी भाषाओ मे सुरक्षित रहने के कारण इनका रामकथा के विकास पर कोई प्रभाव नही पड सका। इनका मूलस्रोत ब्राह्मण रामकथा ही है, किन्तु एक तो वे अत्यन्त सक्षिप्त है, दूसरे ये गद्य मे लिखी है, इससे इन पर वाल्मीकि रामायण की छाप स्पष्ट नही है। इनका आधार प्राचीन आख्यान-काव्य हो सकता है। शेष प्राचीन रामकथा साहित्य रामायण पर समाश्रित है। महाभारत का रामोपाख्यान वाल्मीकिकृत आदिरामायण पर निर्भर है (दे० अनु० ४८)। जैन रामकथा मे न केवल मिथ्या ब्राह्मण रामकथा का उल्लेख है (दे० अनु० ५७) वरन् इनके कथानक के निरीक्षण से स्पष्ट है कि जैन कवि वाल्मीकि रामायण से भली भाँति परिचित थे तथा उन्होने इसकी कथावस्तु के कई प्रसङ्गो को जान बूझकर बदलकर एक नया रूप दिया है। उदाहरणार्थ—वज्रमुख की कन्या लका-देवी का वृत्तान्त (दे० अनु० ५३६), नल के द्वारा समुद्र, सेतु तथा सुबेल नामक राजाओ की पराजय (दे० अनु० ५७३), द्रोणमेघ की कन्या विशल्या द्वारा लक्ष्मण की चिकित्सा होने का प्रसङ्ग (दे० अनु० ५९६)। सस्कृत तथा आधुनिक भारतीय भाषाओ के साहित्य पर वाल्मीकि के प्रभाव के विषय मे किसी सन्देह का अवकाश नही रह जाता। विदेशी रामकथा साहित्य का मूल-स्रोत भी वाल्मीकीय रामकथा ही है किंतु इस पर वाल्मीकि के बाद भारत मे विकसित रामकथा का सीधा प्रभाव पडा है अत इन विदेशी रामकथाओ मे वाल्मीकि से पर्याप्त विभिन्नता पाई जाती है। इन रचनाओ के विश्लेषण से स्पष्ट हो गया है कि उनमे कोई ऐसा महत्त्वपूर्ण परिवर्तन नही किया गया है, जिसका सूत्रपात भारतीय साहित्य मे विद्यमान न हो।

७६७ अत्यन्त विस्तृत भारतीय तथा विदेशी रामकथा साहित्य मे कही-कही परस्पर विरोधी बाते मिलती हैं। इस विरोध का साम्प्रदायिक साहित्य मे इस प्रकार समन्वय किया गया है कि विभिन्न कल्पो मे कोटि-कोटि रामावतार प्रकट हुए हैं और इन असख्य अवतारो के कारण राम-चरित मे विभिन्नता आ गई है

पुन पुन कल्पभेदाज्जाता श्रीराघवस्य च ।
अवतारा कोटिशोऽत्र तेषु भेद क्वचित्क्वचित् ।। २६ ।।
(आनन्द रामायण, पूर्ण काण्ड, सर्ग ७)

इसके अतिरिक्त वाल्मीकि को इन विभिन्न रामकथाओ का रचयिता कहा गया है। **मत्स्यपुराण** (५३, १०), **अद्भुत रामायण** (सर्ग १), **आनन्द रामायण** (**यात्रा** काण्ड, सर्ग २, राज्य काण्ड, सर्ग १), **पद्मपुराण** (४, १, २४) आदि मे एक वाल्मीकिकृत **शतकोटिश्लोक रामायण** का उल्लेख मिलता है, जिसके विभाजन से **विभिन्न रामायणो** की उत्पत्ति मानी गई है। इस प्रकार साम्प्रदायिक साहित्य मे रामकथाओ का मूलस्रोत एक ही शतकोटिश्लोक रामायण माना गया है[1] किन्तु विभिन्न अवतारो के कारण रामकथाओ मे मौलिक भेद स्वीकार किया गया है। कई आधुनिक समालोचको की भी यह धारणा है कि प्राचीन काल से अनेक सर्वथा स्वतत्र रामकथाएँ प्रचलित थी। किन्तु एक ओर इस प्रकार की रामकथाओ के अस्तित्व के **बहिरग** प्रमाण नही दिए जा सकते है, दूसरी ओर **अतरग** प्रमाण भी नही मिलते क्योकि प्रस्तुत निवध मे जो अत्यन्त विस्तृत रामकथा साहित्य की समस्त विभिन्नताओ का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है उससे स्पष्ट है कि वाल्मीकिकृत रामायण के तत्वो को लेकर ही इनका धीरे-धीरे क्रमिक विकास हुआ है। अत **वाल्मीकिकृत रामायण** ही समस्त प्रचलित रामकथा साहित्य का मूलस्रोत प्रमाणित होता है।

७६८. रामायण के **प्रामाणिक काण्डों** (अर्थात् अयोध्याकाण्ड से लेकर युद्धकाण्ड तक) के कथानक पर आदिकवि की छाप इतनी स्पष्ट है तथा इनमे आधिकारिक कथावस्तु की गति इस प्रकार अबाध रूप से आगे बढ रही है कि बाद की रामकथाओ मे इन काण्डो के कथानक का अपेक्षाकृत कम विकास हुआ है। अर्वाचीन रामकथा साहित्य मे वास्तविक सीता के स्थान पर एक माया-सीता का हरण वर्णित है, किन्तु इस महत्वपूर्ण परिवर्तन का कारण स्पष्टतया आदर्शवाद तथा भक्ति-भावना है। इसके अतिरिक्त माया-सीता के इस वृत्तान्त का क्रमिक विकास देखकर किसी स्वतन्त्र रामकथा की कल्पना नितान्त निर्मूल सिद्ध हो जाती है (दे० अनु० ५०१-५०८)।

रामायण के **प्रक्षिप्त काण्डो** (अर्थात् बालकाण्ड तथा उत्तरकाण्ड) की कथावस्तु की अर्वाचीन रामकथाओ मे अवश्य बहुत कुछ विभिन्नता पाई जाती है, विशेषकर सीताजन्म, हनुमान् की जन्मकथा, सीतात्याग, कुशलव-चरित तथा रामकथा के निर्वहण मे। किन्तु इन प्रसगो से सम्बन्ध रखने वाली सामग्री के अध्ययन से यह धारणा दृढ हो जाती है कि वाल्मीकीय कथा से ही उनका क्रमिक विकास हुआ है।

१ विष्णुपुराण (३, ४, १) मे वैदिक मत्रो की सख्या 'शतसहस्र' मानी गई है तथा मत्स्यपुराण (५३, १०) मे 'शतकोटिप्रविस्तर' पौराणिक साहित्य की चर्चा है।

७६९ **सीताजन्म**-विषयक अनेक प्रकार की सर्वथा विभिन्न कथाएँ प्रचलित हो गई है। जनक, रावण और दशरथ, तीनो सीता के पिता माने गये हैं। विभिन्न रामकथाओ की प्राचीनता का ध्यान न रखने के कारण अनेक विद्वानो ने इस समस्या को सुलझाने के लिए बहुत चिंत्य मत प्रस्तुत किए है। इनके अनुसार सीता पहले दशरथ की पुत्री, इसके बाद रावण की पुत्री मानी गई है, और अन्त मे अयोनिजा सीता की कल्पना की गई है।

दशरथ-जातक के अनुसार सीता दशरथ की औरस पुत्री तथा राम-लक्ष्मण की सहोदरी बहन है। इस जातक की समस्या का पूरा विश्लेषण प्रस्तुत निबन्ध के छठे अध्याय मे किया गया है। इससे स्पष्ट हुआ है कि दशरथ-जातक की रामकथा न केवल ब्राह्मण रामकथा का विकृत रूप है, वरन् उसका रचनाकाल वाल्मीकि के बहुत सी शताब्दियो बाद माना जाना चाहिए। सीता की जन्म-कथाओ का एक अन्य वग मिलता है जिसमे सीता या तो रावणात्मजा मानी गई है या जनक को प्राप्त होने के पूर्व इनका किसी न किसी तरह लका से सबध स्थापित किया गया है। इन जन्म-कथाओ पर रामायण के उत्तरकाण्ड मे वर्णित वेदवती के वृत्तान्त की गहरी छाप प्राय स्पष्ट दिखलाई पडती है। इसके अतिरिक्त ये सभी जन्म-कथाएँ रामायण मे वर्णित भूमिजा सीता के अलौकिक जन्म-वृत्तान्त को स्वीकार करती है अत यह सिद्ध होता है कि वाल्मीकि रामायण की सामग्री से ही सीता की विभिन्न जन्म-कथाओ का क्रमिक विकास हुआ है (दे० अनु० ४०५-४२८)।

७७० **हनुमान्** के जन्म के विषय मे भी अनेक कथाएँ प्रचलित है जो सर्वथा भिन्न प्रतीत होती है, किन्तु इनका क्रमिक विकास अस्पष्ट नही है। हनुमान् की जन्म-कथा का प्राचीनतम तथा सबसे व्यापक रूप **वाल्मीकि रामायण** मे सुरक्षित है, इसके अनुसार वह वायु तथा अजना के पुत्र हैं। सम्भवत आठवी शताब्दी और निश्चित रूप से दसवी शताब्दी से लेकर हनुमान शिव के अवतार माने जाने लगे। इस कथा की उत्पत्ति अत्यन्त स्वाभाविक प्रतीत होती है। रामायण की आधिकारिक कथा-वस्तु मे शिव के लिए कोई स्थान नही था। रामकथा की लोकप्रियता को देखकर शैव इसकी अवहेलना न कर सके, अत उन्होंने हनुमान को शिव का अवतार मान लिया। हनुमान की इस जन्मकथा का प्रारभिक रूप रामायण के वृत्तान्त से सीधा सबध रखता है, लेकिन आगे चलकर शिव से हनुमान के उत्पन्न होने की अन्य कथाओ की भी कल्पना कर ली गई है।

इन समस्त जन्म-कथाओ मे हनुमान की माता अजना (अजनी) हैं और एकाध कथाओ को छोडकर वायु उनकी उत्पत्ति मे सहायक माने जाते है (दे० अनु० ६६३-६७९)। अत हम निश्चयपूर्वक कह सकते है कि हनुमान की कोई ऐसी

जन्मकथा नही मिलती जो वाल्मीकि रामायण की कथा से अलग, स्वतन्त्र रूप से विकसित हुई हो।

७७१ सीतात्याग की कथाओ मे पर्याप्त विभिन्नता पाई जाती है, किन्तु इनके विकास की रूपरेखा इतनी स्पष्ट है कि इनके लिए स्वतन्त्र रामकथाओ का आश्रय लेना नितान्त अनावश्यक है। इस त्याग के तीन व्यापक कारण माने गए हैं। सामान्य लोकापवाद के बाद इसका एक विशेष उदाहरण (धोबी की कथा) प्रस्तुत किया गया है। बाद की अनेक रामकथाओ मे जनसाधारण के मनोविज्ञान के अनुकूल एक नई कथा की कल्पना कर ली गई है, अर्थात् सीता के पास रावण का चित्र। सीताहरण के अतिम रूप मे केवल एक माया-सीता का हरण होता है, इसी तरह सीतात्याग की कथा की परिणति भी यह है कि सात्विकी सीता अदृश्य रूप से राम के वामाग मे निवास करती है और कवल इनकी रजस्तमोमयी छाया का परित्याग होता है (दे० अनु० ७१४-७३४)।

७७२ कुश-लव-चरित तथा रामकथा के निर्वहण मे जो विभिन्नता पाई जाती है वह भी स्वाभाविक विकास का परिणाम मानी जा सकती है। 'कुश' शब्द के कारण ही वाल्मीकि द्वारा कुश घास से कुश की सृष्टि की कथा उत्पन्न हुई होगी (दे० अनु० ७४३-७४५)। वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड के अनुसार कुश-लव वाल्मीकि के साथ राम के अश्वमेध की यज्ञभूमि मे पहुँचकर रामायण का गान करते है। इनके वहाँ पहुँचने का कोई विशेष कारण नही बताया जा सकता है। बाद की रामकथाओ मे कुश-लव की वीरता दिखलाने के उद्देश्य से रामाश्वमेध के पूर्व राम-सेना से इनके युद्ध का वर्णन किया गया है (दे० अनु० ७४६-७५१)।

वाल्मीकिकृत आदि रामायण राम के अभिषेक तथा उनके ऐश्वर्यशाली राज्य के वर्णन पर समाप्त होता था। इस सुखात कथावस्तु मे आगे चल कर उत्तरकाण्ड जोड दिया गया जिससे प्रचलित वाल्मीकि रामायण दु खात हो गया। इसका स्वाभाविक परिणाम यह हुआ कि बाद की कई रामकथाओ को पुन सुखात बना देने का प्रयत्न किया गया है (दे० अनु० ७५२-७५७)।

अत अत्यन्त विस्तृत रामकथा-साहित्य मे जो वैभिन्न्य आ गया है वह वाल्मीकिकृत रामायण के विकास तथा उसके कथानक पर विभिन्न प्रभावो का परिणाम माना जा सकता है। वाल्मीकि रामायण से स्वतन्त्र, प्राचीन काल से जन-साधारण मे प्रचलित, सर्वथा भिन्न कथाओ का अस्तित्व मानने की कोई आवश्यकता नही प्रतीत होती है।

३—प्रक्षिप्त सामग्री की सामान्य विशेषताएँ

७७३. निबन्ध के द्वितीय भाग मे प्रचलित वाल्मीकि रामायण के मुख्य प्रक्षेपो

का उल्लेख तथा उनकी सामान्य विशेषताओ का वर्गीकरण किया गया है (दे० अनु० १३८) ।

निम्नलिखित **प्रक्षेप** विशेष रूप से उल्लेखनीय है—समस्त बालकाण्ड और उत्तर-काण्ड, रामावतार विषयक सामग्री, कनकमृग का वृत्तान्त, वानरो के प्रेषण के पूर्व का दिग्वर्णन, लङ्का दहन, हनुमान् की हिमालय-यात्रा, सीता की अग्निपरीक्षा, पुष्पक मे अयोध्या की वापसी यात्रा । प्रामाणिक काण्डो के मुख्य प्रक्षेपो का यथास्थान निरूपण किया गया है (अनु० ४३१, ४५७, ५११, ५३० और ५६१-५६६) । प्रत्येक काण्ड के विश्लेषण मे वाल्मीकि रामायण के तीन पाठो की विभिन्नता का भी ध्यान रखा गया है क्योकि इससे भी प्रक्षेपो का पता चलता है (अनु० ३३२, ४३०, ४५६, ५१०, ५२६ और ५५७-५६०) ।

७७४ प्रबन्ध के चतुर्थ भाग मे रामकथा के विभिन्न प्रसङ्गो तथा उपकथाओ के विकास का निरूपण किया गया है । प्रचलित वाल्मीकि रामायण के दृष्टिकोण से मुख्य **परिवर्तन** तथा **परिवर्धन** निम्नलिखित है । **बालकाण्ड** के कथानक मे—अहल्या-उद्धार का विकास (अनु० ३४४-३४८), अवतारवाद का विकास (अनु० ३५६-३६५), राम का बालचरित तथा उस पर कृष्ण की बाललीला का प्रभाव (अनु० ३७५-३८६), सीता-स्वयवर का नवीन रूप जिसके अनुसार राम अन्य राजाओ की और बाद मे रावण की उपस्थिति मे धनुष चढाते है (अनु० ३६४-३६६), राम-सीता के पूर्वानुराग का वर्णन (अनु० ४०३), सीता-जन्म विषयक कथाओ का बाहुल्य (अनु० ४०५-४२८) । **अयोध्या-काण्ड** से **युद्धकाण्ड** तक के कथानक मे—माया-सीता का हरण (अनु० ५०१-५०८), वालि-सुग्रीव की जन्मकथा (अनु० ५१३-५१४), महीरावण का वृत्तान्त (अनु० ६१४) । **उत्तरकाण्ड** के कथानक मे—सौदास की कथा (अनु० ६२१-६२६), शम्बूक-वध (अनु० ६२८-६३२), सीता द्वारा सहस्रस्कन्ध रावण का वध (अनु० ६३६), **रावण-चरित** (अनु० ६४२-६५५), हनुमान् की जन्म-कथा तथा उनके चरित्र-चित्रण का विकास (अनु० ६५६-७१३), सीतात्याग की कथा का क्रमिक विकास (अनु० ७१४-७३४), कुश-लव-चरित (अनु० ७३५-७५१), रामकथा के निर्वहण के विभिन्न रूप (अनु० ७५२-७५७)।

७७५ प्रचलित **वाल्मीकि रामायण** के प्रामाणिक काण्डो मे जो प्रक्षेप किये गये है, वे (कनकमृग की कथा, लङ्कादहन तथा अग्नि-परीक्षा को छोड कर) अधि-काश पुनरुक्ति मात्र है । बाद की रामकथाओ मे भी माया-सीता-हरण को छोडकर इस सामग्री मे कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन नही मिलता । इसका कारण यह है कि प्रामा-णिक काण्डो की सुव्यवस्थित कथावस्तु पर वाल्मीकि की प्रतिभा की गहरी छाप थी । **बालकाण्ड** तथा **उत्तरकाण्ड** के कथानक का अत्यधिक विकास हुआ है क्योकि इन प्रक्षिप्त काण्डो की प्रारम्भ से ही कोई विशेष एकता नही थी ।

७७६ अतिशयोक्ति का अभाव[1], सन्तुलन तथा स्वाभाविकता वाल्मीकिकृत **आदिरामायण** के विशेष गुण है किन्तु नवीन सामग्री मे **कृत्रिमता, अद्भुत रस** की प्रधानता तथा **अलौकिक घटनाओ** का बाहुल्य पाया जाता है। उदाहरणार्थ (१) प्रक्षिप्त **बालकाण्ड** मे दशरथ-यज्ञ, पौराणिक कथाएँ, भूमिजा सीता की जन्म-कथा तथा परशुराम-तेजोभङ्ग, (२) **प्रामाणिक काण्डो** मे ये प्रक्षेप—काक, जयन्त तथा कनक-मृग के वृत्तान्त, लकादेवी से हनुमान् का युद्ध, लङ्कादहन, हनुमान् की हिमालय-यात्राएँ, राम के माया-शीर्ष का वृत्तान्त, सीता की अग्नि-परीक्षा, पुष्पक मे अयोध्या की वापसी-यात्रा, (३) प्रक्षिप्त **उत्तरकाण्ड** मे रावण की विजय-यात्राएँ, हनुमान् तथा वालि-सुग्रीव की जन्म कथाएँ, शम्बूकवध, सीता का भूमि-प्रवेश। यहाँ तक कि उत्तरकाण्ड को अलौकिक कथाओ का सग्रह कहा जा सकता है।

परवर्ती रामकथाओ मे भी वही प्रवृत्ति परिलक्षित होती है। उदाहरणार्थ—रामजन्म के अवसर पर अलौकिक घटनाएँ (अनु० ३७५), राम का अपना दिव्य रूप प्रकट करना (अनु० ३७५, ३७६, ६६१, ३५१, ५१२, ५६८, ३८१), पद्म, रक्त, अग्नि, फल अथवा वृक्ष से सीता की उत्पत्ति (अनु० ४१८-४२५), वालि-सुग्रीव (अनु० ५१३-५१४) तथा हनुमान् की विविध जन्म-कथाएँ (अनु० ६६८, ६७०, ६७४, ६७८), राक्षसो का रामकथा के अन्य पात्रो का रूप धारण करना (४५२, ४६४, ४६६, ६०६), शूर्पणखा (अनु० ४६३) अथवा रावण (अनु० ४६७) का कनकमृग बन जाना, सरस्वती का हस्तक्षेप (अनु० ४५२, ४५४, ५६४ टि०, ६४६), मायासीता का हरण (अनु० ५०४-५०७) तथा अवास्तविक सीता-त्याग (अनु० ७३०-७३३), वाल्मीकि द्वारा कुश की सृष्टि (अनु० ७४३-७४५), सीता द्वारा सहस्रस्कन्ध रावण आदि का वध (अनु० ६३६-६४१), लक्ष्मण का १४ वर्ष तक उपवास और जागरण (अनु० ४६१), भानुराज, भस्मलोचन आदि का युद्ध (अनु० ६१२-६१३), महीरावण का वृत्तान्त (अनु०६१४), हनुमान् की वीरता विषयक कथाएँ (अनु० ६८४-६८७), हनुमान् के जन्मजात आभूषणो का वृत्तान्त (अनु० ५१२), जटायु (अनु० ४७०), रावण (अनु० ५६८) और इन्द्रजित् (अनु० ५६३) के मर्मस्थानो की कल्पना।[2]

---

१ पात्रो की आयु विषयक अतिशयोक्तिया प्राय बालकाण्ड तथा उत्तरकाण्ड मे ही मिलती हैं। अयोध्याकाण्ड के दाक्षिणात्य पाठ मे दशरथ को अनेक वर्षसाहस्र' (सर्ग २, २१) कहा गया है किन्तु अन्य पाठो के समानान्तर स्थलो पर 'अनेकवर्षशतिक' (गौ० रा० २, १, २५) अथवा गतश्च सुमहान् कालो वृद्धस्चासि' (प० रा० २, ३, ४२) पाठ मिलता है।

२ यह सूची सुगमता से बढाई जा सकती है। निम्नलिखित अनुच्छेदो की सामग्री मे अलौकिकता अधिक स्पष्ट है—३३७, ३८१, ४४७, ४७५, ४७६, ५००, ५०२, ५७३-५७६, ५६४, ५६६, ६५०, ७२४।

७७७ अवतारवाद एव भक्ति के विकास के कारण रामकथाओ मे अलौकिकता की मात्रा बहुत ही बढ गई है। राम को मुक्तिदाता के रूप मे चित्रित करने के उद्देश्य से विभिन्न पात्रो के उद्धार का अथवा उनके शाप की अवधि के अन्त का सम्बन्ध राम से (अथवा राम-दूतो से) स्थापित किया गया है। इस प्रकार निम्नलिखित **पात्रो की मुक्ति** का उल्लेख किया गया है—अहल्या (३४८), ब्रह्मराक्षस वात्था (३८०), मृगया मे मारे पशु (३८३), गुह (३८४), ताटका (३८६), जटायु (४७१), विराध (४५८), कबन्ध (४७३), मारीच (४६६), शबरी (४७८), वालि (५२०), स्वयप्रभा (५२६), सम्पाति (५२७), शुक और गौतम (६२५), लङ्कादेवी (५३५), ग्राही (५८७), कुम्भ-कर्ण (५८६), इन्द्रजित् और सुलोचना (५६४), रावण (५६६), रावण का पुत्र वीरवाहु तथा विभीषण का पुत्र तरणीसेन (अनु० २८५,३), हनुमान् (६६६ टि०), शम्बूक (६२६, ६३०)।

७७८ नवीन सामग्री की एक अन्य विशेषता यह है कि इसमे कथा-वस्तु की मुख्य घटनाओ का **कारण-निर्देश** करने का प्रयत्न किया गया है। रामावतार (अनु० ३६६-३७३), राम-वनवास (अनु० ४३३), सीताहरण (अनु० ४८६), रावण-वध (अनु० ४१०-४२५) और सीतात्याग (अनु० ७२५-७२६) के परोक्ष कारणो के विषय मे विभिन्न शापो और वरो की कल्पना कर ली गई है। प्राय सभी मुख्य पात्रो को वर अथवा शाप दिये जाने की कथाएँ मिलती ही है, उदाहरणार्थ विष्णु (३७०-३७३), राम (४४६, ४६६ ७२६), लक्ष्मी (३७३), सीता (७२७-७२८, ४८६), दशरथ (४३३), कैकेयी (४४७-४४६, ४५१), रावण (६५४), कुम्भकर्ण (६४६), हनुमान् (६६६, ६६३-६६५), अहल्या (३४६), नल (५७५), सौदास (६२४)। पात्रो के पूर्वजन्म की कथाएँ भी कारण-निर्देश विषयक सामग्री के अन्तर्गत रखी जा सकती है, जैसे निम्नलिखित पात्रो के पूर्वजन्म से सम्बन्ध रखने वाले वृत्तान्त राम-लक्ष्मण (अनु० ३६३), सीता (४१०), रावण-कुम्भकर्ण (६४८), दशरथ-कौशल्या (३६७-३६६), काक भुशुण्डी (३८१), गुह (३८४), मन्थरा (४५४), शुक (६२५), अन्धमुनि (४३३), जटायु (४७२) तथा शबरी (४८१)।

७७६ विश्व भर के कथा-साहित्य मे पात्रो के नामो पर आधारित विविध वृत्तात मिलते है जिनमे **नाम का कारण-निर्देश** किया जाता है (एटिमोलोजिकल लेजे-न्दस)। नाम पहले ही प्रसिद्ध हो जाता है, कथा की कल्पना बाद मे की जाती है। अत वास्तव मे कथा नाम का कारण नही होती, प्रत्युत नाम ही कथा का कारण होता है। सीता की विभिन्न जन्म-कथाओ मे इस प्रवृत्ति के अनेक उदाहरण मिलते है। 'सीता' शब्द का अर्थ है लागल-पद्धति, भूमिजा सीता के अलौकिक जन्म की कथा इस अर्थ पर आधारित प्रतीत होती है (दे० अनु० ४०८)। 'सीताफल' के आधार पर एक कथा

की कल्पना की गई है जिसके अनुसार सीता एक फल से उत्पन्न हुई थी (दे० अनु० ४२३)। अवतारवाद के विकास मे लक्ष्मी सीता के रूप मे अवतरित मानी गई है, अत पद्मा (लक्ष्मी का एक नाम) के कारण पद्मजा सीता की कथा उत्पन्न हुई है (दे० अनु० ४१६)। जेन साहित्य के अनुसार जनक की पुत्री मै गुणरूपी धान्य (गुणसस्य) का बाहुल्य था, अत भूमि की समानता होने के कारण उसका नाम सीता रखा गया—**भूमिसाम्येन सीता** (पद्म-चरित २६, १६६)। प्रचलित वाल्मीकि रामायण के प्रक्षेपो मे निम्नलिखित नामो का कारण-निर्देश मिलता है—हनुमान् (अनु० ६६४), रावण (अनु० ६५३), राक्षस और यक्ष (अनु० ६४४), मेघनाद और इन्द्रजित् (अनु० ६५०), कुश-लव (अनु० ७३६), वालि-सुग्रीव (अनु० ५१३), कल्माषपाद (अनु० ६२४), दण्ड (अनु० ४७२), सरमा (अनु० ५४६), अहल्या (७, ३०, २२), क्षुप (गोविन्द पाठ ७, ७६, ४२), निमि (७, ५७, १४), मिथि (६, ५७, १६), विश्रवा (७, २, ३१), वेदवती (७, १७, ६), सगर (१, ७०, ३७), सुर और असुर (१, ४५, ३६-३७)।

परवर्ती रामकथा साहित्य मे भी नामो की व्युत्पत्ति पर आधारित अनेक कथाएँ मिलती है, उदाहरणार्थ हनुमान् (अनु० ६६६ और ७११), वाल्मीकि (अनु० ३२), वेदवती (अनु० ४१०), कुश (अनु० ७४३) तथा पउमचरिय मे रावण (७, ६३), विराधित (६, २२) और भामण्डल (२६, ८७) के नामो का कारण-निर्देश।

७८० **तीर्थों** का माहात्म्य दिखलाने के उद्देश्य से उनका सम्बन्ध रामकथा के प्रधान पात्रो के साथ स्थापित किया गया है। राम की तीर्थयात्राओ के अतिरिक्त (अनु० १७८, ३८५, ४३५, ६३७) रामकथा-साहित्य मे गोकर्ण, श्रीरङ्गम् (अनु० ६३५) आदि तीर्थों के विषय मे अनेक वृत्तान्त मिलते है।

रावण ने अपने भाइयो के साथ **गोकर्ण** मे तपस्या की थी (अनु० ६४६) तथा महादेव से आत्मलिङ्ग प्राप्त कर उसे गोकर्ण मे पृथ्वी पर रखकर खो दिया था (अनु० ६५०)।

वाल्मीकि रामायण के दाक्षिणात्य पाठ के अनुसार राम ने विभीषण को उपदेश देकर कहा कि इक्ष्वाकुकुल के देवता जगन्नाथ की आराधना करो—**आराधय जगन्नाथमिक्ष्वाकुकुलदैवतम्** (७, १०८, २७)। परवर्ती साहित्य मे माना गया है कि राम ने विभीषण को रङ्गनाथ की मूर्त्ति प्रदान की थी और विभीषण ने उसे **श्रीरङ्गम** मे छोड दिया था[1]।

वाराहपुराण (अनु० १५७) तथा आनन्द रामायण (७, ३, ४२-४५) के अनुसार रावण ने इन्द्र को पराजित कर उनके यहाँ से **वाराहमूर्त्ति को** ले जाकर उसे लका

१. दे० पद्मपुराण (६, २७१, ६४), तत्वसग्रह रामायण (७, १४), पाश्चात्य वृत्तान्त न० २, रामलिंगामृत सर्ग १६।

मे स्थापित किया था। विभीषण ने उसे राम को प्रदान किया तथा राम ने उसे **मथुरा** मे स्थापित करने के लिए शत्रुघ्न को दे दिया। ब्रह्मपुराण (अनु० १५६) के अनुसार रावण ने अमरावती से **वासुदेवप्रतिमा** की चोरी की थी, राम ने उसे अयोध्या ले जाकर अपने स्वर्गारोहण के पूर्व समुद्र को अर्पित किया था। कृष्णावतार के समय सागर ने उसे निकाल कर पुरुषोत्तमक्षेत्र मे स्थापित किया था।

पद्मपुराण मे **वामन** की मूर्त्ति के विषय मे लिखा है कि राम ने उसे विभीषण से प्राप्त कर कान्यकुब्ज मे स्थापित किया था (अनु० ६३५)।

७८१ आदि रामायण के **वक्ता** वाल्मीकि ही है किन्तु प्रचलित बालकाण्ड के प्रथम सर्ग के अनुसार नारद ने वाल्मीकि को रामकथा का सक्षिप्त वर्णन सुनाया था और इसके आधार पर वाल्मीकि ने रामायण की रचना की थी। बाद की रामकथाएँ प्राय सवाद के रूप मे प्रस्तुत की गई है। महात्मा बुद्ध जातको के वक्ता है (अनु० ५१), रामोपाख्यान मार्कण्डेय द्वारा युधिष्ठिर को सुनाया गया था (अनु० ४७) और जैन पउमचरिय भी **सेणिय-गोयम**-सवाद के रूप मे दिया गया है (अनु० ६०)। इसी तरह साम्प्रदायिक सस्कृत रामायण तथा अन्य भारतीय भाषाओ के राम-काव्य प्राय सवाद तथा उपसवाद के रूप मे मिलते हैं। उदाहरणार्थ—योगवासिष्ठ, अध्यात्म रामायण, अद्भुत रामायण, आनन्द रामायण, सत्योपाख्यान, 'हिन्दुत्व' मे उल्लिखित रामायण (अनु० १६२-२१०), काश्मीरी रामायण, रामचरितमानस, रगनाथ रामा,-यण, बलरामदास रामायण।

४—विविध प्रभाव

क जैनी रामकथाओ का प्रभाव

७८२ जैनी रामकथाओ का आधार स्पष्टतया प्रचलित वाल्मीकि रामायण है किन्तु जैनी कवियो ने ब्राह्मण रामकथा को अपना कर उसमे बहुत से परिवर्तन किए है। इनमे से कई परिवर्तन आगे चलकर अन्य रामकथाओ मे भी आ गए है। **पउम-चरिय** के निम्नलिखित वृत्तान्त अर्वाचीन रामकथाओ मे व्यापक रूप से पाए जाते है।

—सीतास्वयवर के अवसर पर अन्य राजाओ की उपस्थिति मे राम द्वारा धनु-भंग (अनु० ३६४)।
—कैकेयी का पश्चात्ताप (अनु० ४५२, ४५३)।
—लङ्का मे विभीषण से हनुमान् की भेट (अनु० ५३८)।
—लक्ष्मण द्वारा शूर्पणखा के पुत्र का वध (अनु० ६३१)।
—युद्ध के पूर्व राक्षस-राक्षसियो के सभोग-शृगार का वर्णन (अनु० ६११)।
—राम-सेना से कुश-लव का युद्ध (अनु० ७४६)।

इसके अतिरिक्त **वसुदेवहिण्डि** प्रचीनतम रचना है जिसमे सीता रावण की पुत्री मानी गई है (अनु० ४१२) और उपदेशपद मे पहले पहल सीतात्याग के वृत्तात मे रावण के चित्र का उल्लेख किया गया है (अनु० ७२२)।

ख शैव प्रभाव

७८३ वाल्मीकि रामायण के युद्धकाण्ड मे राम द्वारा शिव-प्रतिष्ठा का जो निर्देश किया गया है वह केवल दाक्षिणात्य पाठ मे मिलता है और इसलिए प्रक्षिप्त माना जाता है। उत्तरकाड मे रावण के शिव-भक्त होने का उल्लेख है (अनु० ६५३) किंतु यह उल्लेख भी प्रक्षिप्त प्रतीत होता है क्योकि रावण तथा उसके भाइयो की तपस्या के अन्त मे ब्रह्मा उनको वरदान प्रदान करते है (अनु० ६४६)। अत अधिक सभव यह है कि रामायण मे पहले शिव का कोई उल्लेख नही था, उत्तरकाण्ड के अतिम रूप से रामकथा के विकास पर शैव प्रभाव पडने लगा था। बाद मे यह प्रभाव विशेष रूप से निम्नलिखित प्रसगो मे स्पष्ट दिखाई देने लगा—ब्रह्मा के स्थान पर शिव से ही रावण की वर-प्राप्ति (अनु० ६४६), राम द्वारा सेतु पर शिव-प्रतिष्ठा (अनु० ५८०), शिव का हनुमान् के रूप मे अवतरित होना (अनु० ६७०)।

प्राय समस्त परवर्ती रामकथाओ मे रावण की **शिवभक्ति** का उल्लेख किया गया है (अनु० ६५३ और ५८४)। बहुत से अन्य पात्रो का शैव होने अथवा शिवलिंग की पूजा करने का भी निर्देश किया गया है, उदाहरणार्थ – अहल्या (अनु० ३४८), परशुराम (अनु० ३५०), दशरथ (अनु० २१५), विभीषण (रामायण ककबिन, सर्ग १२)।

७८४ सेतु पर शिवप्रतिष्ठा के अतिरिक्त **राम** की **शिवभक्ति** के विषय मे पर्याप्त सामग्री मिलती है। **शिवमहापुराण** के अनुसार विष्णु ने शिव की आज्ञा से अवतार लिया था (अनु० १६७)। **पद्मपुराण** (पातालखड, अ० ११३) तथा **सत्योपाख्यान** (उत्तरार्द्ध, अ० १६) मे राम शिव से शिव-भक्ति का वरदान माँगते है। कई रचनाओ मे राम की वर्षाकालीन शिवपूजा का वर्णन किया गया है (अनु० ५२३)। **पद्मपुराण** के अनुसार राम ने शिव की सहायता से समुद्र पार किया था (अनु० ५७३)। **रामलिंगामृत** (सर्ग ६ और १०) मे रावण का कहना है कि शिव की पूजा करने के फलस्वरूप राम विजय प्राप्त करने मे समर्थ हुए। **आनन्द रामायण** तथा अनेक अन्य रामकथाओ मे राम तथा शिव की अभिन्नता का भी प्रतिपादन किया गया है (अनु० ३६२)। **रामलिंगामृत** (सर्ग १०) के अनुसार राम ने युद्ध के पूर्व अपना शिवरूप प्रकट किया था तथा **सौरपुराण** (अध्याय ३०) मे कहा गया है कि राम ने शंकर के प्रसाद से अपना विष्णुपद पुन प्राप्त किया था।

ग शाक्त प्रभाव

७८५ शैव प्रभाव की अपेक्षा रामकथा पर शाक्त प्रभाव कम प्राचीन और कम व्यापक है। इसके विषय मे निम्नलिखित प्रसग उल्लेखनीय है—(१) सीता-पार्वती की अभिन्नता (अनु० ३६५), (२) लकादेवी-वृत्तान्त का शाक्त रूप (अनु० ५३७), (३) सीता द्वारा रावण तथा अन्य राक्षसो का वध (अनु० ६३६-६४१), (४) राम की विजय के लिए देवी की पूजा।

महाभागवत पुराण (अध्याय ४४, ४६, ४७), **बृहद्धर्म पुराण** (अध्याय २२) तथा **कालिका पुराण** (अध्याय ६२) मे राम की विजय के लिए ब्रह्मा द्वारा देवी की पूजा का वर्णन किया गया है। अन्यत्र राम द्वारा देवी-पूजा का उल्लेख मिलता है। **देवी-भागवत पुराण** मे प्रस्रवण-गिरि पर राम की वर्षाकालीन देवी-पूजा का वर्णन पाया जाता है (अनु० ५२३)। **महाभागवत** पुराण (अध्याय ३६, ४४, ४७ और ४८) मे युद्ध के पूर्व राम द्वारा देवी की पूजा का उल्लेख है। **कृत्तिवास रामायण** (६, ६२-१०२) मे राम की देवी-पूजा का विस्तृत वर्णन किया गया है। इस पूजा के लिए १०८ नील कमलो की आवश्यकता थी, देवी ने इनमे से एक को चुरा लिया था। इसके स्थान पर राम अपनी आँख समर्पित करने के लिए उद्यत हुए जिससे देवी ने प्रसन्न होकर राम को विजय का आश्वासन दिया।[1] रसिक सम्प्रदाय (अनु० १५०) के राम-साहित्य पर भी शाक्त प्रभाव पडा है।

घ कृष्ण कथा का प्रभाव

७८६ रामकथा के विकास मे दो अत्यन्त महत्वपूर्ण तत्व (अवतारवाद और भक्ति) आ गए जिनके कारण कथा का समस्त वातावरण धीरे-धीरे बदलता गया। कृष्णावतार तथा कृष्ण-भक्ति के अनुकरण पर ही इन दोनो तत्त्वो का रामकथा मे प्रवेश हुआ है।

अवतारवाद का सूत्रपात वैदिक साहित्य मे हुआ था, कि तु उस साहित्य मे न तो अवतारवाद मे विष्णु का प्राधान्य है और न अवतारो की कोई विशेष पूजा का निर्देश है। कृष्णावतार के कारण अवतारवाद की भावना विष्णु मे ही केंद्रीभूत होने

---

१ दे० निरालाकृत 'राम की शक्तिपूजा'। इस प्रसग का प्राचीनतम रूप महिम्न स्तोत्र (छन्द १६) मे मिलता है। इसके अनुसार हरि शिव को एक सहस्र कमल अर्पित करता था और एक कम पडने पर हरि ने अपना 'नेत्र कमल' निकाल कर शिव को चढाया था। रावण को भी इस प्रसग का नायक बना दिया गया है (अनु० ६४६)। **मेघनादवध** (सर्ग ५) मे लक्ष्मण द्वारा देवी-पूजा का वर्णन है।

लगी तथा जनता की धार्मिक चेतना मे इसका महत्त्व बढने लगा। बाद मे राम भी कृष्ण की भाँति विष्णु के अवतार माने जाने लगे (अनु० १४३)। अवतारवाद की तरह भक्तिमार्ग कृष्ण को लेकर विकसित तथा पल्लवित हुआ। बहुत बाद मे **रामभक्ति** का आविर्भाव हुआ और जिन रचनाओ मे इसका प्रारम्भिक शास्त्रीय प्रतिपादन किया गया वे प्राय कृष्ण-भक्ति-विषयक भक्तिशास्त्रो, सहिताओ तथा उपनिषदो के आधार पर लिखी गई है (अनु० १४६-१४८)। कृष्ण-भक्ति-सम्प्रदायो के अनुकरण पर ही रसिक सम्प्रदाय की उत्पत्ति हुई है (अनु० १५०)।

७८७ कृष्ण-भक्ति के इस सामान्य प्रभाव के अतिरिक्त रामायण की कथावस्तु पर **कृष्णचरित** का अनेक प्रकार से प्रत्यक्ष प्रभाव भी पडा है। राम की **बाललीला** के वर्णन मे बहुत से कवियो ने कृष्ण की बाललीला का सुस्पष्ट अनुकरण किया है (अनु० ३७५, ३७६, ३७६, ३८०)। राम के **विहार** के चित्रण पर भी कृष्ण-चरित का प्रभाव पडा है (अनु० ३५३ और ६३८)। कुछ रचनाओ मे कृष्णलीला का अनु-करण और बढा दिया गया है और राम की **रासलीला** तक का वर्णन किया गया है (अनु० १५०, ३८७ और ४४०)। उडिया नृसिहपुराण (१८ वी श० ई०) मे भी विवाह के पूर्व सरयू-तट पर राम की रासलीला का वर्णन किया गया है (दे० तृतीय रत्नाकर)। राम के मुरलीधर-रूप की कथा (अनु० ५८६) और अयोध्या मे आगमन के अवसर पर राम के बहुत से रूप धारण करने के वृत्तान्त (अनु० ६१०) पर भी कृष्ण-कथा का प्रभाव माना जा सकता है।

रामकथा के बहुत से पात्रो का सम्बन्ध **कृष्णचरित के पात्रो** से स्थापित किया गया है। राम तथा कृष्ण की अभिन्नता के अतिरिक्त सीता-सुभद्रा तथा लक्ष्मण-बलभद्र की अभिन्नता का भी प्रतिपादन किया गया है (अनु० ३६२)। सीता के विषय मे माना गया है कि वह कृष्णावतार मे कृष्ण की पत्नी (रुक्मिणी) बनकर दस पुत्र तथा एक पुत्री उत्पन्न करेगी (दे० आनन्द रामायण ७, १६, १३८)। इसके अतिरिक्त निम्नलिखित पात्रो की अभिन्नता का उल्लेख मिलता है—मन्थरा और पूतना (अनु० ७५५ टि०), शूर्पणखा और कुब्जा (अनु० ४६६), वालि और भील (अनु० ५२०), अयोध्या का धोबी तथा कस का धोबी (अनु० ७५५ टि०), जाम्बवान् और जाम्बवती का पिता (तत्त्वसग्रह रामायण ७, १५ तथा बलरामदास रामायण), वानर और गोप (आनन्द रामायण ६, ५, ४२)। अनेक रचनाओ मे इसका उल्लेख मिलता है कि राम ने दण्डक-अरण्यवासी कामातुर ऋषियो को आश्वासन दिया था कि वे कृष्णावतार के समय गोपियाँ बनेंगे, उदाहरणार्थ पद्मपुराण का उत्तरखण्ड (२७२, १६६-१६७), बलराम-दास रामायण, गर्गसहिता (गोलोक खण्ड, अध्याय ४ और माधुर्य खण्ड, अध्याय २), कृष्णोपनिषद् (रामचन्द्रस्य कृष्णावतार प्रतिज्ञा), श्रीहरिभक्तिरसामृतसिन्धु (पूर्व भाग

२, ८४)। गर्ग सहिता (गोलोक खण्ड, अध्याय ४ तथा माधुर्य खण्ड, अध्याय ३-७) के अनुसार राम ने मिथिला, कोसल देश तथा अयोध्या की स्त्रियो को गोपियाँ अथवा कृष्ण की पत्नियाँ बन जाने का आश्वासन दिया था। सत्योपाख्यान (पूर्वार्द्ध, अध्याय ३०) मे रत्नालका तथा उसके पति को अगले जन्म मे यशोदा और नन्द के रूप मे जन्म लेने का वरदान मिलता है। उडीसा की रामकथाओ मे नन्द के विषय मे माना जाता है कि वह अपने पूर्वजन्म मे दशरथ (सारलादास कृत महाभारत, वनपर्व) अथवा एक गोपाल था जिसने सीता की खोज करने वाले भूखे राम-लक्ष्मण को दूध देने से यह वरदान प्राप्त किया था कि राम-लक्ष्मण उसके अगले जन्म मे उसके पुत्र बन जाएँगे।[1] आनन्द रामायण के अनुसार राम ने नागकन्या, गुणवती विधवा, पिंगला वेश्या तथा सुगुणा दासी को आश्वासन दिया कि वे क्रमश जाम्बवती (अनु० ६१४), सत्यभामा (४,८,४३), कुब्जा (४,८, ५७) तथा राधा (७,२१,३८) के रूप मे प्रकट होगी। इसके अतिरिक्त राम ने बहुत सी अन्य स्त्रियो को भी गोपी अथवा कृष्णपत्नी बन जाने का वरदान दिया था, उदाहरणार्थ —देवकन्याएँ (६,७,४८), १०० कामपीडित स्त्रिया (७,४,४५-४७), चार ब्राह्मण कन्याएँ (राज्यकाण्ड, सर्ग ११), १६००० क्षत्रिय और वैश्य कन्याएँ (राज्यकाण्ड, सर्ग १२), यमुना (७, १२, ११७)। आनन्द रामायण (४, ७, २१) मे यह भी माना गया है कि एकपत्नीव्रत का पालन करने के कारण कृष्णावतार मे राम की बहुत सी पत्नियाँ होगी तथा इसका भी उल्लेख किया गया है कि ब्राह्मणो को सोलह (४, ७, २६) अथवा एक सौ (५,४,५१) सुवर्ण मूर्त्तियाँ प्रदान करने के पुरस्कार-स्वरूप राम को कृष्णावतार मे १६००० पत्नियाँ मिलेगी। गर्गसहिता (माधुर्यखड, अध्याय ८) के अनुसार रामाश्वमेध की स्वर्ण सीताएँ भी गोपियो के रूप मे प्रकट हुई।

५— विकास का सिंहावलोकन

७८८ इक्ष्वाकु-वश के सूतो द्वारा जिस रामकथा-सबधी **आख्यान-काव्य** की सृष्टि प्रारभ हुई थी, वह चौथी शताब्दी ई० पू० के अत तक पर्याप्त मात्रा मे प्रचलित हो चुका था (दे० अनु० १३१)। तब वाल्मीकि ने उस स्फुट आख्यान-काव्य के आधार पर रामकथा विषयक एक विस्तृत प्रबध-काव्य की रचना की। इस वाल्मीकिकृत **आदिरामायण** मे अयोध्याकाड से लेकर युद्धकाड तक की कथावस्तु

---

१ दे० बलरामदास का आरण्यकाण्ड। सारलादास के महाभारत (सभापर्व और वनपर्व) मे इस कथा का पूर्वरूप सुरक्षित है—एक नेत्रहीन गोपाल ने वनवासी राम को दूध पिलाया और पुरस्कार-स्वरूप राम ने उसे चगा कर दिया। सारलादास ने दोनो कथाओ के अन्य पात्रो को भी अभिन्न माना है (दे० अनु० २६२)।

का वर्णन था (दे० अनु० ११५-११६), बौद्ध अभिधर्ममहाविभाषा के अनुसार इसका विस्तार केवल १२००० श्लोक था (दे० अनु० ७६)। आजकल **वाल्मीकि रामायण** के तीन पाठ प्रचलित है—दाक्षिणात्य, गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय। यद्यपि इन तीनो पाठो मे कथानक के दृष्टिकोण से बहुत अन्तर नही है, किन्तु जो श्लोक तीनो पाठो मे पाए जाते है वे एक तिहाई से भी कम है, इसके अतिरिक्त इनका पाठ भी पूर्णतया एक नही है (दे० अनु० २२-२६)। इसका कारण यह है कि प्रारम्भ मे वाल्मीकिकृत **आदि-रामायण** का कोई प्रामाणिक लिखित रूप नही मिलता था। वह कई शताब्दियो तक मौखिक रूप से ही प्रचलित था जिससे उसका पाठ स्थिर न रह सका। काव्योपजीवी कुशीलव अपने श्रोताओ की रुचि का ध्यान रखकर लोकप्रिय अश बढाते रहे। इस प्रकार आदिरामायण का कलेवर बीच के प्रक्षेपो के कारण बढने लगा। इसके अति-रिक्त, राम कौन थे ? सीता कौन थी ? इनका जन्म तथा विवाह कब और किस प्रकार हुआ ? रावण कौन था ? रावण-वध के बाद राम-सीता का जीवन कैसे बीता ? उन्हे कितनी सन्तान उत्पन्न हुई ? आदि, ये अत्यन्त स्वाभाविक प्रश्न थे। **बालकांड** तथा **उत्तरकाड** के प्रारम्भिक रूपो की रचना जनता की उपर्युक्त जिज्ञासा को सन्तुष्ट करने के लिए ही हुई है। अत **विकास का प्रथम सोपान** यह है कि राम-कथा की कथावस्तु **रामायण** (राम+अयन अर्थात् राम का पर्यटन) न रहकर पूर्ण रामचरित के रूप मे विकसित हुई। उस समय तक रामायण नर-काव्य ही रहा और राम आदर्श क्षत्रिय के रूप मे भारतीय जन-साधारण के सामने प्रस्तुत किए गए थे। इसका आभास भगवद्गीता के उस स्थल से मिलता है जहाँ कृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि शस्त्र धारण करने वालो मे मै राम हूँ—**राम शस्त्रभृतामहम्** (दे० १०, ३१)।

७८६ भागवतो के इष्टदेव वासुदेव कृष्ण सम्भवत तीसरी शताब्दी ई० पू० से विष्णु के अवतार माने जाने लगे थे, जिससे अवतारवाद की भावना को बहुत प्रोत्साहन मिला था (दे० अनु० १४२)। दूसरी ओर रामायण की लोकप्रियता के साथ-साथ राम का महत्व भी बढने लगा था, उनकी वीरता के वर्णन मे अलौकिकता भी आ गई थी। इस प्रवृत्ति की स्वाभाविक परिणति यह हुई कि कृष्ण की भाँति राम भी सभवत पहली शताब्दी ई० पू० से विष्णु के अवतार के रूप मे स्वीकृत होने लगे (दे० अनु० १४३)। फलस्वरूप प्रचलित वाल्मीकि रामायण के कई स्थलो पर रामा-वतार विषयक प्रक्षिप्त सामग्री का समावेश हो गया है। इसके अतिरिक्त बालकाड तथा उत्तरकाड मे बहुत सी पौराणिक कथाएँ भी जोड दी गई हैं जिनमे ब्राह्मणो का प्रभाव स्पष्ट दिखलाई पड़ता है, विशेषकर ऋष्यश्रृग तथा विश्वामित्र के वृत्तान्तो और शम्बूक-वध, रामाश्वमेध आदि प्रसङ्गो मे (दे० अनु० १३४)। किन्तु उस समय का सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन यह हुआ कि राम विष्णु के अवतार माने जाने लगे। अत

रामकथा के **विकास का द्वितीय सोपान** है—रामकथा का आदर्श क्षत्रिय राम का चरित्र मात्र न रहकर विष्णु की अवतार-लीला के रूप मे परिणत हो जाना। बौद्ध तथा जैन साहित्य को छोडकर रामकथा का यह स्वरूप सर्वत्र स्वीकृत हुआ।

फिर भी ध्यान देने योग्य बात यह है कि रामकथा के विकास के इस द्वितीय सोपान मे जनसाधारण की धार्मिक चेतना मे न तो राम के लिए कोई विशेष स्थान था और न राम के प्रति भक्ति का आविर्भाव हुआ था। राम की भाँति उनके भाई भी विष्णु के अशावतार माने जाते थे, यद्यपि प्रधान नायक होने के कारण राम को अधिक महत्व दिया जाता था। अत एक ओर उस समय के धार्मिक साहित्य मे रामकथा का स्थान अपेक्षाकृत गौण है, दूसरी ओर तत्कालीन ललित साहित्य मे इसकी व्यापकता तथा लोकप्रियता अद्वितीय है (दे० अनु० ७६०-७६१)।

अवतारवाद के कारण कथावस्तु मे अलौकिकता की मात्रा अवश्य धीरे-धीरे बढने लगी, फिर भी रामकथा का मुख्य दृष्टिकोण धार्मिक न बनकर शताब्दियो तक साहित्यिक ही रहा। यह सस्कृत ललित साहित्य के स्वर्ण-काल के महाकाव्यो तथा नाटको से स्पष्ट है। राम-भक्ति के आविर्भाव के पूर्व रामकथा का यह साहित्यिक रूप विदेश मे फैल गया और उस पर बाद मे रामभक्ति का प्रभाव नही पडा, इसीलिए समस्त विदेशी रामकथा साहित्य मे रामभक्ति का प्राय अभाव है।

प्रचलित वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाड मे राम-सीता के विहार का उल्लेख किया गया है। आगे चलकर इस प्रकार के शृगारिक वर्णनो को अधिक स्थान दिया गया है (दे० अनु० ६३८)। वास्तव मे शृगार-रस की बढती हुई व्यापकता विकास के द्वितीय सोपान के रामकथा-साहित्य की विशेषता है। तत्सम्बन्धी निम्नलिखित प्रसङ्ग अपेक्षाकृत अधिक व्यापक है—युद्ध के पूर्व राक्षसो की केलि (अनु० ६११), राम-सीता का पूर्वानुराग (अनु० ४०३) तथा सम्भोगवर्णन (अनु० ३५३)। जानकीहरण, कम्बन-रामायण तथा चक्र कवि कृत जानकीपरिणय मे दशरथ की क्रीडाओ का भी विस्तृत वर्णन किया गया है और बालरामायण की कथावस्तु का मुख्य दृष्टिकोण रावण का विरह है। इसके अतिरिक्त गीतगोविन्द तथा मेघदूत के अनुकरण पर भी रामकथा-विषयक शृगारिक खडकाव्य की रचना की गई है (दे० अनु० २४६-२५०)।

७६० भारतीय भक्तिमार्ग का बीजारोपण वैदिक साहित्य मे ही हो चुका था किन्तु वह शताब्दियो के पश्चात् ही भागवत धर्म मे पल्लवित हो सका। भागवतो के इष्टदेव वासुदेव कृष्ण विष्णु के अवतार माने जाने लगे जिसके फलस्वरूप भक्ति-भावना इन्ही विष्णु-वासुदेव-कृष्ण मे केन्द्रीभूत होकर उत्तरोत्तर विकसित होने लगी। बाद मे राम भी विष्णु के अवतार माने गये, किन्तु अवतार के रूप मे राम के स्वीकृत हो जाने के शताब्दियो बाद **रामभक्ति** का आविर्भाव हुआ। प्रौढ रामभक्ति के प्राचीन-

तम उद्‌गारो के दर्शन तमिल आल्वारो की रचनाओ मे मिलते है। इसके बाद १२वी शताब्दी मे रामानुज-सम्प्रदाय के अन्तर्गत राम-भक्ति तथा रामोपासना-विषयक संहिताओ तथा उपनिषदो की रचना प्रारम्भ हुई। आगे चलकर रामानन्द तथा रामावत सम्प्रदाय द्वारा राम-भक्ति जनसाधारण की धार्मिक चेतना का केन्द्र बन गई। उस समय बहुत से साम्प्रदायिक रामायणो की रचना हुई, जिनमे **अध्यात्म रामायण** निर्विवाद रूप से सबसे महत्वपूर्ण है (दे० अनु० १४६-१४६)। १४वी शताब्दी से समस्त भारतीय रामकथा-साहित्य भक्ति-भाव से ओत-प्रोत होता गया और इसका समस्त वातावरण बदल गया। राम विष्णु के अशावतार न रह कर **परब्रह्म के पूर्णावतार** माने जाने लगे, रामायण की आधिकारिक कथावस्तु अर्थात् सीताहरण तथा रावण-वध को एक नया रूप दिया गया और कथानक के अन्य गौण प्रसङ्गो का दृष्टिकोण भी बदलने लगा।

वाल्मीकि रामायण, हरिवश, विष्णुपुराण, वायुपुराण आदि क अनुसार राम, भरत आदि चारो भाई विष्णु के एक-एक चतुर्थाश से समन्वित है। भक्ति-भाव के पल्लवित होने के पश्चात् राम परब्रह्म के पूर्णावतार माने जाने लगे और लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्न क्रमश शेष, शख तथा सुदर्शन के अवतार (दे० अनु० ३६१)। प्राचीन महापुराणो मे सीता तथा लक्ष्मी की अभिन्नता का निर्देश नही मिलता है। आगे चल कर लक्ष्मी सीता के रूप मे अवतरित मानी गई है, किन्तु राम-भक्ति के प्रादुर्भाव के पश्चात् सीता परमशक्ति अथवा मूलप्रकृति के रूप मे स्वीकृत होने लगी (अनु० ३६४)।

भक्ति भाव के कारण रामकथा की आधिकारिक कथावस्तु म भी महत्वपूर्ण परिवर्तन होने लगे। सीता राक्षस रावण के वश हुई थी, यह विचार भक्तो को असह्य और असम्भव सा प्रतीत होने लगा। अत उपास्य देवी की मर्य्यादा की रक्षा के लिए भक्ति-भाव ने सीता की एक छाया मात्र का हरण स्वीकार किया (दे० अनु० ५०४-५०८)। इसी तरह सीतात्याग को भी अवास्तविक बना दिया गया है (दे० अनु०-७३०-७३३)। मूल रामकथा मे रावण ने कामवासना से प्रेरित होकर सीता का हरण किया था और दण्डस्वरूप राम द्वारा पराजित होकर मारा गया था। रामकथा के विकास के द्वितीय सोपान मे भी दुष्ट राक्षस रावण का नाश ही रामावतार का मुख्य उद्देश्य है। भक्ति के पल्लवित होने के साथ ऐसी भावना भी उत्पन्न हुई कि कृष्ण अथवा राम का स्मरण मात्र मुक्ति प्रदान करता है चाहे वह वैर भाव से ही क्यो न हो। इसके अतिरिक्त जो कोई कृष्ण अथवा राम द्वारा मारा जाता है वह परम पद प्राप्त कर लेता है। अत यह माना गया कि रावण ने मोक्ष पाने के उद्देश्य से सीता का अपहरण किया था तथा राम के हाथ से मर कर सायुज्य मुक्ति प्राप्त की थी (दे०

अनु० ४८८) । इसी तरह बहुत से अन्य पात्रो की मुक्ति का उल्लेख किया गया है (दे० अनु० ७७७) ।

ऊपर इसका उल्लेख हुआ है कि रामकथा का मुख्य दृष्टिकोण शताब्दियो तक साहित्यिक ही रहा था । प्रस्तुत निरूपण से स्पष्ट है कि १४वी शताब्दी से इसका समस्त वातावरण धार्मिक हो गया है और राम-भक्ति के प्रादुर्भाव के बाद रामकथा की सम्पूर्ण कथावस्तु एक नवीन दृष्टिकोण से प्रस्तुत की गई है । यह रामकथा के विकास का **तृतीय सोपान** है जहा पहुँचकर रामकथा विष्णु की अवतार-लीला मात्र न रहकर भक्त-वत्सल भगवान् राम के गुण-कीर्तन मे परिणत हो जाती है ।

७६१ इस प्रकार रामकथा अनेक रूप धारण करते हुए शनै शनै सम्पूर्ण भारतीय सस्कृति मे व्याप्त हो गई है । उसकी अद्वितीय लोकप्रियता निरन्तर अक्षुण्ण ही नही वरन् शताब्दियो तक बढती रही है । कारण स्पष्ट है—मानव हृदय को आकर्षित करने की जो शक्ति रामकथा मे विद्यमान है वह अन्यत्र दुर्लभ है । इसके अतिरिक्त वाल्मीकि रामायण मे **कला तथा आदर्श** का जो समन्वय मिलता है उससे आदर्शप्रिय भारतीय जनता प्रभावित हुए बिना न रह सकी ।

भारतीय साहित्य मे रामकथा के इस आदर्शवाद का बहुधा उल्लेख किया गया है । **जैमिनीय अश्वमेध** (३६, ४४) मे रामचरित स्वच्छ मनोवृत्ति प्रदान करने वाला माना गया है—**रामचरित सन्मनोवृत्तिप्रदम् । बृहद्धर्म-पुराण** (२६, १) मे कहा गया है कि रामकथा मे वर्णाश्रम के अनुसार सबो के कर्त्तव्य का स्पष्टीकरण किया जाता है—**सर्वे धर्म्मा समुद्दिष्टा वर्णाश्रमविभागत** । मम्मट ने माना है कि कवियो को यह उपदेश देना चाहिए कि राम ही अनुकरणीय है, रावण नही—**रामादिवद्वर्त्तितव्य न रावणादिवत्** (काव्यप्रकाश १, २) । **पद्मपुराण** के पातालखड (अध्याय ६६) के अनुसार रामचरित मे पतिव्रत्य, भ्रातृस्नेह, गुरुभक्ति, स्वामिसेवा आदि साक्षात् आदर्श प्रस्तुत है

> **यस्मिन्धर्मविधि साक्षात्पातिव्रत्य तु यत्स्थितम् ।**
> **भ्रातृस्नेहो महान्यत्र गुरुभक्तिस्तथैव च ॥१२८॥**
> **स्वामिसेवकयोर्यत्र नीतिर्मूर्त्तिमती किल ।**
> **अधर्मकरशास्तिर्वै यत्र साक्षाद्रघूद्वहात् ॥१२६ ॥**

लोकसग्रह का भाव एक प्रकार से रामकथा का सर्वस्व है, जिससे समस्त कवि प्रभावित हुए हैं । अत्यन्त विस्तृत रामकथा-साहित्य मे कथावस्तु का पर्याप्त मात्रा मे परिवर्द्धन तथा परिवर्तन हुआ है, किन्तु सीता का पातिव्रत्य, राम का आज्ञापालन, भरत तथा लक्ष्मण का भ्रातृप्रेम, दशरथ की सत्यसधता, कौशल्या का वात्सल्य आदि ये आदर्श समस्त रामकथाओ मे विद्यमान हैं । जनसाधारण पर इन जीते जागते आदर्शों के

कल्याणकारी प्रभाव की जितनी प्रशसा की जाय थोडी है ।[1] फलस्वरूप काव्य की कथावस्तु मात्र न रहकर, रामकथा आदर्श जीवन का दपण सिद्ध हुई, जिसे भारतीय प्रतिभा शताब्दियो तक परिष्कृत करती चली आ रही है । रामकथा के विकास पर इस आदर्शवाद की भावना का गहरा प्रभाव पडा है । उदाहरणार्थ, वाल्मीकि कृत रामायण मे कैकेयी की कुटिलता का स्पष्ट शब्दों मे उल्लेख किया गया है । आगे चलकर कैकेयी को निर्दोष ठहराने के लिए अनेक उपायो का सहारा लिया गया है (दे० अनु० ४५१ ५५३) । वालिवध को न्यायसगत सिद्ध करने का रामायण के दो प्रक्षिप्त सर्गों मे प्रयत्न किया गया है । आगे चलकर राम के दोषनिवारण के लिए महावीरचरित, अनर्घराघव आदि नाटको मे वालिवध को एक नया रूप दिया गया है । इसके अनुसार वालि राम को ललकारता है तथा राम से द्वन्द्वयुद्ध मे ही मारा जाता है (दे० अनु० ५२२) । राम-भक्ति के प्रादुर्भाव के पश्चात् रामकथा का समस्त वातावरण बदल दिया गया तथा विभिन्न पात्रो की उग्रता तथा कुटिलता राम-भक्ति मे लीन कर दी गई है । यहाँ तक कि आदि रामायण का दुष्ट राक्षस रावण भी पतितपावन राम के प्रभाव से पवित्र हो जाता है ।[2] इस प्रकार भारत की समस्त आदश-भावनाएँ रामकथा मे, विशेष-कर मर्यादापुरुषोत्तम राम तथा पतिव्रता सीता के चरित्रचित्रण मे केन्द्रीभूत हो गई है। फलस्वरूप रामकथा भारतीय सस्कृति के आदर्शवाद का उज्ज्वलतम प्रतीक बन गई है।

॥ इति ॥

---

१ दे० रामचरितमानस मे अनुसूया का यह कहना—"सुनु सीता तव नाम सुमिरि नारि पतिव्रत करहिं" (अरण्यकाण्ड, सो० ५) ।

२ "कल्याण" (दे० सितम्बर १९३८, पृ० ९३९) मे म० म० गगानाथ झा ने एक छद उद्धृत किया था, जिसमे रावण कुम्भकर्ण से कहता है कि सीता को विचलित करने के उद्देश्य से मैंने तो राम का रूप धारण किया था, किन्तु ऐसा करने पर मन मे पापबुद्धि नही रह जाती

अह्नाय प्रतिबुध्यता किमभवद्रामागना ह्याहृता ।
भुक्ता नैव कुतो यतो न भजते रामात्पर जानकी ।।
राम किल भवान् यत. सुरुचिर तालीदलश्यामल ।
रामाक भजतो ममापि कलुषो भावो न सजायते ।।

इससे मिलते-जुलते एक अन्य छद के लिए, दे० कल्याण, जुलाई १९३८, पृ० १५८३ ।

परिशिष्ट

क—रामकथा-साहित्य की तालिका

(मोटे टाइप मे छपी रचनाओ का समस्त कथानक रामकथा से सबध रखता है)

काल	१ संस्कृत ललित साहित्य	२ संस्कृत धार्मिक साहित्य
६०० ई० पू०	रामकथा-विषयक आख्यान-काव्य	
४००-३०० ई० पू०		
३०० ई० पू०	वाल्मीकि रामायण (२-६)	
१०० ई० पू०- १०० ई०	प्रचलित बालकाण्ड रामोपाख्यान	
२००-३०० ई०	प्रचलित उत्तरकाण्ड	
३००-४०० ई०	प्रतिमा नाटक (?) अभिषेक नाटक (?)	विष्णु पुराण ब्रह्माण्ड पुराण
४००-५०० ई०	रघुवंश कुन्दमाला (?)	हरिवंश पुराण वायु पुराण नृसिंह पुराण
५००-७०० ई०	रावणवह भट्टिकाव्य	मत्स्य पुराण कूर्म पुराण भागवत पुराण विष्णुधर्मोत्तर पुराण
७००-८०० ई०	महावीरचरित उत्तररामचरित उदात्तराघव	

३ आधुनिक भारतीय भाषाएँ	४ बौद्ध और जैन साहित्य	५ विदेशी साहित्य	काल
			६०० ई० पू०
	दशरथ-जातक की गाथाए		४००-३०० ई० पू०
			३०० ई० पू०
	अनामकम् जातकम्		१०० ई० पू०-१०० ई०
			१००-३०० ई०
	पउमचरिय दशरथकथानम		३००-४०० ई०
	दशरथजातक का गद्य वसुदेवहिण्डि		४००-५०० ई०
	पद्मचरित (रविषेण)		५००-७०० ई०
	पउमचरिउ (स्वयम्भूदेव)		७००-८०० ई०

काल	१ संस्कृत ललित साहित्य	२ संस्कृत धार्मिक साहित्य
८००-९०० ई०	**जानकीहरण** **रामचरित** (अभिनन्द) **कुन्दमाला** (?)	अग्नि पुराण स्कंद पुराण वाराह पुराण
९००-१००० ई०	**अनर्घराघव** **बालरामायण** **आश्चर्यचूडामणि** (?)	नारदीय महापुराण गरुड पुराण ब्रह्म पुराण लिंग पुराण
१०००-११०० ई०	**महानाटक** **रामायणमंजरी** दशावतारचरित कथासरित्सागर **चम्पूरामायण**	महाभागवत पुराण देवीभागवत पुराण सौर पुराण कालिका पुराण
११००-१२०० ई०	**प्रसन्नराघव** **रामचरित** (सध्याकरनदि) **राघव-पाण्डवीय**	पद्मपुराण का पातालखड बृहद्धम पुराण जैमिनीय अश्वमेध योगवासिष्ठ रामायण
१२००-१३०० ई०	**उल्लाघराघव** **मैथिली-कल्याण** **दूतागद** **हससदेश**	**मैरावणचरित** अगस्त्य सहिता रामतापनीय उपनिषद्
१३००-१४०० ई०	**उदारराघव** **उन्मत्तराघव** (भास्कर भट्ट)	**अध्यात्म रामायण** **अदभुत रामायण** शिवमहापुराण **सहस्रमुखरावणचरित**

३ आधुनिक भारतीय भाषाएँ	४ बौद्ध और जैन साहित्य	५ विदेशी साहित्य	काल
	उत्तरपुराण (गुणभद्र) **रामलक्खणचरिय**	**तिब्बती रामायण** **खोतानी रामायण**	८००-९०० ई०
	महापुराण (पुष्पदत) त्रिषष्टिशलाका महापुरुष पुराण (चामुण्डराय)	**रामायण ककविन** (जावा)	९००-१००० ई०
	पपरामायण (कन्नड) कहावली (भद्रेश्वर)		१०००-११०० ई०
तमिल **कब रामायण**	**जैन रामायण** (हेमचद्र) योगशास्त्र (हेमचद्र)		११००-१२०० ई०
तेलुगु **निर्वचनोत्तर रामायण** **रगनाथ रामायण** **उत्तररामायण**	**अजनापवनाजय** जीवनसबोधन (कन्नड)		१२००-१३०० ई०
तेलुगु **भास्कर रामायण** मलयालम् **रामचरितम्** **रामकथप्पाटट्ु** असमिया **माधवकदली रा०** **लवकुशर युद्ध** गुजराती **राम लीला ना पदो**	पुण्याश्रवकथाकोष पुण्याश्रवकथासार (कन्नड)		१३००-१४०० ई०

काल	१ संस्कृत ललित साहित्य	२ संस्कृत धार्मिक साहित्य
१४००- १५०० ई०	रामाभ्युदय उन्मत्तराघव (विरूपाक्ष) रघुनाथचरित	आनन्द रामायण पद्मपुराण का उत्तरकाण्ड धर्मखण्ड वह्निपुराण
१५००- १६०० ई०	राघव-नैषधीय रामकृष्णविलोम काव्य	ब्रह्मवैवर्त्त पुराण तत्वसंग्रह रामायण अग्निवेश रामायण सत्योपाख्यान भुशुण्डी रामायण महारामायण हनुमत्संहिता बृहत्कोशलखण्ड

३. आधुनिक भारतीय भाषाएँ	जैन साहित्य	विदेशी साहित्य	काल
बगाली कृत्तिवास रामायण		सिंहली रामकथा	
उडिय—महाभारत (सारलादास)			१४००-१५०० ई०
मलयालम—कण्णश्श रामायण	रामदेव पुराण		
गुजराती—रामविवाह		मलय—	
रामबालचरित	बलभद्र पुराण	सेरीराम	
सीताहरण			
तेलुगु-मोल्ल रामायण			१५००-१६०० ई०
कन्नड—तोरवे रामायण			
मैरावण कालग			
मलयालम— अध्यात्म रामायण			
मराठी-भावार्थ रामायण	रामचरित	जावा—	
सीतास्वयवर (२)	(पद्मदेवविजयगणि)	रामकेलिग	
असमिया-गीतिरामायण		सेरतकाण्ड	
रामविजय नाटक			
श्रीरामकीर्त्तन			
उत्तरकाण्ड, बालकाण्ड			
उडिया—बलरामदास रा०	रामचरित		
रामविभा	(सोमसेन)	कम्बोडिया—	
ठिका रामायण		रामकेर्ति	
हिन्दी—सूरसागर			
भरत मिलाप	पुण्यचद्रोदय पुराण		
रामजन्म, अगदपैज		स्याम—	
रामचरितमानस	रामविजय चरित	रामकियेन	
तुलसीदास की अन्य रचनाएँ		रामजातक	
गुजराती-रावणमदोदरी-सवाद,	रामायण		
सीताहनुमानसवाद	(कुमुदेन्दु)		
लवकुशाख्यान			

काल	१ संस्कृत ललित साहित्य	२ संस्कृत धार्मिक साहित्य
१६००–१७०० ई०	**रामलिगामृत** **राघवोल्लास** **रामरहस्य** **जानकीपरिणय** –चक्रकवि –रामभद्र दीक्षित **अद्भुतदर्पण** **रामकथा** (वासुदेव) **राघवपाण्डवयादवीय** **यादवराघवीय**	

३ आधुनिक भारतीय भाषाएं	४ जैन साहित्य	५ विदेशी साहित्य	काल
तेलुगु—द्विपद रामायण (कट्टवरद)			१६००-१७०० ई०
मराठी—सीतास्वयंवर (४)			
लघु रामायण		पाश्चात्य वृत्तान्त	
संक्षेप रामायण			
हिन्दी-रामचन्द्रिका			
अवध विलास			
गोविंद रामायण			
असमिया—गणकचरित			
कथारामायण			
बंगाली—अद्भुताश्चर्य रा०			
रामायणगाथा		फारसी—रामायण मसीही	
अद्भुत रामायण			
अध्यात्म रामायण			
उड़िया-रघुनाथ विलास			
टीकारामायण			
अध्यात्म रामायण			
गुजराती—रणयज्ञ,			
सीता विरह			

ख-सहायक ग्रंथ

१ प्राचीन ग्रन्थ

—वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषदे, कल्पसूत्र, महाभारत, पुराण, उपपुराण।

—वाल्मीकि रामायण। ओरियेटल इस्टिट्यूट बडौदा (१६६०) अपूर्ण।

(१) दाक्षिणात्य पाठ। गुजराती प्रिंटिंग प्रेस (बम्बई)।

(२) गौडीय पाठ। गोरेसिया (पैरिस) तथा कलकत्ता सस्कृत सीरिज के सस्करण।

(३) पश्चिमोत्तरीय पाठ। दयानन्द महाविद्यालय (लाहौर)।

—रामकथा-विषयक महाकाव्य, नाटक, खण्डकाव्य, विविध रामायण, दे० अनुक्रमणिका।

२ भारतीय भाषाओ के आधुनिक ग्रथ और लेख

मै० गु० अ०—राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त अभिनन्दन-ग्रथ। कलकत्ता, १६५६।

अगरचन्द नाहटा। राजस्थानी भाषा मे रामकथा सम्बन्धी ग्रथ। मै० गु० अ०, पृ० ८४०-८४३।

अमरपाल सिंह। तुलसीपूर्व रामसाहित्य। रचना प्रकाशन। इलाहाबाद, १६६८।

इन्द्रप्रकाश पाण्डेय। अवधी लोकगीत और परम्परा। इलाहाबाद, १६५८।

उदयशकर शास्त्री। ईश्वरदास या सूरजदास। नागरी प्रचारिणी पत्रिका। वर्ष ६१, अङ्क १, पृ० ७१-८०।

उपेन्द्र चन्द्र लेखारु। असमिया रामायण साहित्य। गौहाटी (१६४८)।

कामिल बुल्के। पुरुषाद सौदास। भारतीय साहित्य (आगरा)। वर्ष ५, अक २, पृ० ८-२७।

—वाल्मीकि रामायण के तीन पाठ। नागरी प्रचारिणी पत्रिका, वर्ष ५८, अक १-२, पृ० १-३५।

कृष्णदेव उपाध्याय। भोजपुरी ग्रामगीत। प्रयाग, स २०००।

क्षेमकरणदास द्विवेदी। अथर्ववेद भाष्य। प्रयाग, स १६८२।

गोपाल लाल वर्मा। सथाली लोकगीतो मे श्रीराम। सारग (दिल्ली), ७ फर-वरी १६६०, पृ० ४३-४५।

चन्द्रभान। वैदिक साहित्य मे रामकथा का बीज। नागरी प्रचारिणी पत्रिका। वर्ष ५५, पृ० ३०१-३०५।

चावलि सूर्यनारायण मूर्त्ति। सती सुलोचना एक क्षेपक कथा। हिन्दी अनु-शीलन। वर्ष १२, पृ० १३-१६।

—ऊर्मिला की नीद । वही , वर्ष ११, अङ्क २, पृ० ३७।
—हिन्दी और तेलुगु के मध्यकालीन राम-साहित्यो का तुलनात्मक अध्ययन । हिन्दी साहित्य भण्डार, लखनऊ, १९६६ ।
जयदेव शर्मा । अथर्ववेदसहिता । अजमेर, स १९८५ ।
दुर्गाशकर प्रसाद सिह । भोजपुरी लोकगीत । प्रयाग, स० २००१ ।
देवीप्रसन्न पट्टनायक । उडिया मे राम-साहित्य । मै० गु० अ०, पृ० ७७०-७७७ ।
धीरेन्द्र वर्मा । अहल्या-उद्धार की कथा । विचारधारा (इलाहाबाद, स० २००१), पृ० २९-३४ ।
—हिन्दी साहित्य, द्वितीय खण्ड । भारतीय हिन्दी परिषद् । प्रयाग, १९५९ ।
नरसिंहाचार्य आर० । कर्णाटक कवि चरिते ।
नाथूराम प्रेमी । जेन साहित्य और इतिहास । बम्बई सन् १९४१ ।
नायडू, सु० शकर राजू । कम्बर और तुलसी । मद्रास, सन् १९५६ ।
पणिक्कर आर० एन० । भाषा-साहित्य-चरित्रम् ।
प्रह्लाद चन्द्रशेखर दीवान जी । गुजरात मे रामायण । 'कल्याण' का रामायणाक, पृ० ३९८ ।
बदरीनारायण श्रीवास्तव । रामानन्द सम्प्रदाय । प्रयाग, सन् १९५७ ।
बलदेवप्रसाद मिश्र । तुलसीदर्शन । प्रयाग, सन् १९४२ ।
बालशौरि रेड्डी । तेलुगु भाषा मे रामसाहित्य । मै० गु० अ०, पृ० ८०१ ।
बेनीप्रसाद । हिन्दुस्तान की पुरानी सभ्यता । प्रयाग, सन् १९३१ ।
भगवती प्रसाद सिंह । रामभक्ति मे रसिक सप्रदाय । बलरामपुर, स० २०१४ ।
भागवत द्विवेदी । भक्त शबरी । रामवन, स० १९९२ ।
भास्कर मिश्र । देवगढ और इलोरा के रामायण सबन्धी दृश्य । मैथिली शरण अभिनन्दन ग्रथ । पृ० ८०६ ।
भुवनेश्वरनाथ मिश्र 'माधव' । रामभक्ति-साहित्य मे मधुर उपासना । पटना, सन् १९५७ ।
मजलाल मजूमदार । शामलाजी मन्दिर मे रामायण से सम्बन्धित दृश्य । मैथिली शरण अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ० ८१४ ।
मनोहर शर्मा । राजस्थानी लोकगीतो मे उत्तररामचरित । मै० गु० अ०, पृ० ८२७ ।
महाराष्ट्रीय । श्रीरामायण समालोचना । पूना, सन् १९२७ ।
माताप्रसाद गुप्त । तुलसीदास । प्रयाग, सन् १९४२ ।

राघवप्रसाद पाण्डेय । तुलसीदासकालीन राववोल्लास काव्य । मै० गु० अ०, पृ० ७०२-७०८ ।
राम इकबाल सिह राकेश । मेथिली लोकगीत । प्रयाग, स० १९९९ ।
रामकुमार वर्मा । हिन्दी साहित्य का समालोचनात्मक इतिहास । प्रयाग, सन् १९३८ ।
रामचन्द्र अग्रवाल । उत्तर भारत की मूर्तिकला मे रामकथा । राजस्थान भारती (बीकानेर) भाग ११, अङ्क १, पृ० ५१ ।
—राजस्थान के शिलालेखो व मूर्तिकला मे रामकथा की अभिव्यक्ति । मैथिली शरण गुप्त अभिनन्दन ग्रन्थ । पृ० ८५५ ।
रामगोविन्द द्विवेदी । ऋग्वेद सहिता । सुलतानगज, स० १९९२ ।
रामचद्र शुक्ल । हिन्दी साहित्य का इतिहास । काशी, स० १९९९ ।
रामदास गौड । हिन्दुत्व । काशी, स० १९९५ ।
रामनरेश त्रिपाठी । ग्रामगीत । इलाहाबाद, स० १९८६ ।
—लोकगीतो मे रामकथा । मै० गु० अ०, पृ० ६६१ ।
रामसिह तोमर । प्राकृत और अपभ्र श साहित्य । हिन्दी परिषद्, प्रयाग, १९६४ ।
राय कृष्णदास । राम-वनवास का भूगोल । नागरी प्रचारिणी पत्रिका, भाग ५४ अङ्क १ और ३ ।
—आर्ष रामायण का आमुख । वही, भाग ६७, अङ्क ३ ।
—ऋष्यमूक-किष्किधा की भौगोलिक अवस्थिति । वही, भाग ५२, अङ्क ४ ।
—वाल्मीकिकृत आदिरामायण । भारती (बनारस), अङ्क ६, पृ० १०५-१३१ ।
लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय । ईस्ट इण्डिया कम्पनी-कालीन रामकाव्य । मै० गु० अ०, पृ० ८२१-८२६ ।
वासुदेवशरण अग्रवाल । वीर बरह्म । जनपद (काशी), खण्ड १, अङ्क ३, पृ० ६४-७३ ।
विपिनविहारी त्रिवेदी । पृथ्वीराजरासो मे रामकथा । मै० गु०अ०, पृ० ६७७ ।
विष्णुकान्त शास्त्री । असमिया मे राम-साहित्य । मै० गु० अ०, पृ० ८३१ ।
शभुप्रसाद बहुगुणा । शबरी-मङ्गल । रामवन, सन् १९५० ।
शातनु विहारी द्विवेदी । भक्तराज हनुमान् । गोरखपुर, स० १९९५ ।
शाति आकडियाकर । मध्यकालीन गुजराती साहित्य का तिथिक्रम । साहित्य (पटना), अङ्क १, पृ० ५२-५७ ।

शिवनन्दन सहाय । श्री गोस्वामी तुलसीदास । पटना, सन् १ १६
सत्यदेव चतुर्वेदी । अमितवेग । जौनपुर, १९५८ ।
सत्येन्द्र डॉ० । ब्रजलोक-साहित्य मे रामकथा । भारतीय साहित्य (आगरा), वर्ष २ (जुलाई १९५७), अङ्क ३, पृ० ६५-९४ ।
सातवलेकर । श्रीरामायण महाकाव्य का बालकाण्ड । सन् १९४३ ।
सुदर्शन सिंह । श्री हनुमान्-चरित । रामवन ।
हजारीप्रसाद द्विवेदी । प्राचीन भारत के कलात्मक विनोद । बम्बई, सन् १९५२ ।
हरदेव बाहरी । लालवेग की उत्पत्ति । जनपद (काशी), भाग १, अङ्क ३, पृ० १९-२१ ।
हरिवश कोछड । अपभ्र श साहित्य । दिल्ली, स० २०१३ ।
हिरण्मय । कन्नड साहित्य मे रामकथा-परम्परा । मै० गु० अ०, पृ० ७५१ ।
हृदयनारायण सिंह । क्या उत्तरकाण्ड वाल्मीकि-रचित है ? नागरी प्रचारिणी पत्रिका । भाग १७, पृ० २५९-२८९ ।

३ विदेशी भाषाओं के ग्रन्थ और लेख

Abbreviations

ABORI Annals of the Bhandarkar Oriental Research Institute
BEFEO Bulletin de l'Ecole Francaise d'Extreme Orient
BSOS Bulletin of the School of Oriental Studies.
IA Indian Antiquary
IHQ Indian Historical Quarterly
JAOS Journal of the American Oriental Society
JRAS Journal of the Royal Asiatic Society
JOI Journal of the Oriental Institute (Baroda)
JOR Journal of Oriental Research (Madras)
ZDMG Zeitschrift der Deutschen Morgenlaendischen Gesellschaft

ABIDI A S H The Story of Ramayan in Indo Persian Literature Indo-Iranica (Calcutta) Vol XVII (1964), pp 17 29

AGRAWAL, V S The Panchavaktra or Kirtimukha Motif. Purāna (Vārānasi) Vol 2, pp 97 106

AIYAR, B V KĀMESHVAR Solar Signs in Indian Literature Quarterly Journal of the Mythic Society Vol 12, p 73 ff

ALSDORF, L Eine neue Version der verlorenen Brhatkathā 19th Intern Congr of Orientalists pp 344 349

ANANDCOOMAR SWAMI Yaksas 2 vol Washington 1928 1931

ATTAGARA Of King KEO

BAILEY, H W The Rāmastory in Khotanese JOAS Vol 59, pp 460-468

— On Rāmāyana and Rāma in Khotanese BSOS Vol 10, pp 365 ff, 559 ff

BALDAEUS, PH Afgoderey der Oost-Indische Heydenen Ed Dr A J De Jong The Hague 1917

BARNETT, L D Alphabetical Guide to Sinhalese Folklore from Ballad Sources IA Suppl Vol 44 ff

BARRETT, E C G Further Light on Sir R Windstedt's 'undescribed Malay versions of the Ramayan' BSOS Vol XXVI, Part 3 (1963), pp 531-543

BARTH, A Bulletin des Religious de l'Inde Paris 1894

BARUA, B K Assamese Literatnre Bombay 1941

— Śankaradeva his poetical works Aspects of Early Assamese Literature Gauhati University 1959 pp 65 125

BAUMGARTNER, A Das Rāmāyana und die Rāma-Literatur der Inder Freiburg 1894

BELVALKAR, S K Uttararāmacarita Harvard Oriental Series Vol 21 Cambridge Mass 1915

BHANDARKAR, R G Vaisnavism, saivism and minor religious systems Strassburg 1913

BHATT, G K The Fire Ordeal of Sita—an interpolation in the Vālmīki Rāmāyana JOI Vol 5, p 292

BHATTACHARYA, S P The Emergence of an Adhyātma Sastra or the Birth of the Yogavāśistha Rāmāyana IHQ Vol 24, pp 201 212

BHATTACHARYA, H Nārāyanas, Pratinārāyanas and Balabhadras The Jain Antiquary Vol 8, p 8 ff

BLOOMFIELD, M The Kaucika Sutra of the Atharva-Veda JAOS Vol 14 (1890), p 1 ff

BOULAYE LE GOUZ, Fr de La Reyze en Opteekeningh Amsterdam 1660

BUEHLER, G Alberuni's India IA Vol 19 (1890), p 381 ff

BULCKE, C The Genesis of the Vālmīki Rāmāyana Recensions JOI Vol 5, pp 66 94

— About Vālmīki, JOI Vol VIII, pp 121 131

BURLINGAME, E. W Buddhist Legends Harvard Oriental Series Vol 28 30 Cambridge Mass 1921

CALAND, W Twee oude Fransche Verhandelingen over het Hindoeisme (Relation des Erreurs, La Gentilité du Bengale) Amsterdam 1923

— Drie oude Portugeesche Verhandelingen over het Hindoeisme Amsterdam 1915

CHAKRAVARTI, A Buddhistic and Jain versions of the Story of Rāma The Jaina Gazette Vol 22 (1926), p 117 ff

CHAKRAVARTI, CHINTAHARAN Tradition about Vānaras and Rāksasas IHQ Vol I (1925) p 779 ff

CHARPENTIER, J Studien ueber die Indische Erzaehlungsliteratur ZDMG Vol 62 (1908), p 725 ff

— Zur Geschichte des Cariyapitaka Wiener Zeitschrift fuer die Kunde des Morgenlandes Vol 24 (1910), p 397 ff

CHATTERJI, S K Krishna Dvaipāyana Vyāsa and Krishna Vāsudeva Journ As Soc Beng Vol, 16 (1950), pp 73-87

CHATTOPADHYAYA, K C The Visākapi hymn Allahabad University Studies Vol I (1925), pp 97 156

CHATTOPADHYAYA, S The Problem of sāntā's Parentage Our Heritage (Calcutta) Vol 2 (1954), pp 353 374

— sāntā's Parentage IHQ Vol 33, pp 146-151

CHAUDHURY, H RAY Early History of the Vaisnava Sect, Calcutta 1920

CHENCHIAH, A A History of Telugu Literature Heritage of India Series Calcutta s a

COEDES, G, Les etats Hindouises d'Indochine et d'Indo nesie Paris 1948

COLEMAN, C The Mythology of the Hindus London 1932

CONNOR, J P The Rāmāyana in Burma Jonrn of Burma Research Society Vol 15 (1915), p 80 ff

COWELL, E B The Buddhacarita of Aśvaghoṣa Oxford 1893

— The Jātaka Vol I VI —Cambridge 1895 1907

COYAJEE, J C Cults and Legends of Ancient Iran and China Bombay 1936,

CROOKE, W Tribes and Castes of N W Provinces and Oudh Calcutta 1896

— The Popular Religion and Folklore of Northern India Westminster 1896

DALTON, E T. Descriptive Ethnology of Bengal Calcutta 1872

DAPPER, O Asia Amsterdam 1676

DARMESTETER, J Etudes Iraniennes Paris 1888

— Le Zend Avesta Paris 1893

DAS A C Rigvedic India Calcutta 1927

DASGUPTA, S N History of Indian Philosophy Vol 2 Calcutta 1932

DATT, K K Kundamālā, Sanskrit College Calcutta 1964

DE, S K History of Sanskrit Kāvya Literature Calcutta 1948

— On Kundamālā ABORI, Vol 16, p 158

— The Problem of the Mahānātaka IHQ Vol 7 p 537 ff

DEHON, P Religion and Customs of the Oraons Memoirs of the As Soc of Bengal Vol I, p 130 ff

DEUSSEN, P Sechzig Upanisads des Veda Leipzig 1897

DEYDIER, H The Rāmāyana in Laos JOR Vol 22, p 64 ff

— Les Origines et la Naissance de Rāvana dans le Rāmāyana Laotien BEFEO Vol 44, p 141 ff

DHANI, PRINCE The Rāma Jātaka A Lao version of the Story of Rāma The Journal of the Siam Society Vol 36, p 1 ff

DIVANJI, P C Influence of the Rāmāyana on the Gujarati literature JOI Vol 4 (1954), pp 46 57

DUBOIS, J A Hindu Manners, Customs and Ceremonies Oxford 1906

DUSSAUD, R Les decouvertes de Ras Shamra Paris 1941

— Les Religions de Babylone et d'Assyrie Paris 1945

DUTT, R, C A History of Civilisation in Ancient India Calcutta 1899

ELWIN, V The Bondo Highlander 1950

— Myths of the N E Frontier of India Shillong 1958

ENTHOVEN, R E Folklore of Gujarāt IA Vol 40 Supple.

ESTELLER, A Die Aelteste Version des Mahānātaka Leipzig 1936

FARIA Y SOUZA, M de Asia Portuguesa 3 Vol Lisbon 1666 1675

FAUSBOLL, V The Jātaka I—VII London 1877 1897

FENICIO, J S Livro da Seita Ed J Charpentier Upsala 1933

FINOT, LOOIS Recherches sur la literature lastienne BEFEO Vol XVIII, Fok 5, pp 1 128

FOUCHER, A The influence of Indian Art on Cambodia and Java Sir Asutosh Mookerjee Silver Jubilee Vol III Or Pt I, p 1 ff

FRANCISCO, JOAN R The Rāma Story in the Post-Muslim Malay literature of South East Asia The Sarawah Museum Journal Vol X (Nos 19-20) ff 468 485

FUCHS, S The Gond and Bhumia of Eastern Mandla Bombay 1960

FUEHRER-HAIMENDORF, C von The Reddis of the Bison Hills London 1945

GHOSH, MANMOHAN On the Source of the old Javanese Rāmāyana Kakavın Journ of Greater India Society Vol 3 p 113 ff

GLASENAPP, H von Der Jaınısmus Berlın 1925

— Zweı Phılosophısche Rāmāyanas Wıesbaden 1951

GODAKUMBURA, C E The Rāmāyana A versıon of Rāma's story from Ceylon JRAS 1946, p 14 ff

GONCALVES, D Hıstorıa do Malavar Ed J WICKI, S J Munster 1955

GORE, N. A A Bıblıography of the Rāmāyana Poona 1943

GRASSMANN, H Rıgveda Leıpzıg 1876

GRIERSON, G A The Kāshmırī Rāmāyana Bıbl Ind Calcutta 1930

— Glean ngs from the Bhakta-Māla JRAS 1910, pp 269 306

— Sīta's Parentage ıb 1921, p 422 ff

— The Bengalı Rāmāyanas (D C Sen) A Revıew ıb 1922, p 135 ff

— Indıan Epıc Poetry IA Vol 23, p 52 ff

— On the Adbhuta Rāmāyana BSOS Vol 4, pp 11 ff

— Sītā Forlorn A specımen of the Kāshmīrī Rāmāyana ıb Vol 5, p 285 ff

— Bhaktımārga Encycl of Relıgıon and Ethıcs

GRIFFITHS, W G The Kol Trıbe of Central Indıa Calcutta 1946

GURNER C W Aśvaghosa and the Rāmāyana Journ and Proceedıngs of the As Soc of Bengal Vol 23 pp 347- 367

HAZRA, R C Puranıc Records on Hındu Rıtes and Customs Dacca 1940

— Studıes ın the Upapurānas Vol I and II Calcutta 1958 and 1963

— Some mınor Purānas ABORI Vol 19, p 69 ff

— The Upa Purānas ıb Vol 21, p 38 ff

— The Varāha-Purāna ıb Vol 18, pp, 321-337

— The Apocryphal Brahma Purān Indıan Culture Vol 2, p 237 ff

— The Brhannāradīya and the Nāradıya Puraān, ıb Vol 3, p 477 ff

HAZRA, R C The Padma Purāna ıb Vol. 4, p 73 ff
— Dıscovery of the genuıne Āgneya Purāna JOI Vol 5, pp 411-416
— The Problem relatıng to the Sıvapurāna. Our Herıtage (Calcutta) Vol 1, p 65 ff
— The Bhāgavata Purāna New Indıan Antıquary Vol 1, p 522 ff
— The Saura Purana ıb Vol 6, p 103 ff
— The Smrtı Chapters ın the Purānas IHQ Vol 11, p 120
— Our present Agnı-Purāna ıb Vol 12, p 683 ff
— The Mahābhāgavata Purāna ıb Vol 28 (1952), pp 17-28
— The Brhaddharma Purāna The Journ of the Unıv of Gauhatı Vol 6, p 245 ff
— The Devī-Bhāgavata JOR Vol 21, pp 49 79

HERTEL, J Kleıne Mıtteılungen ZDMG, Vol 60 (1906), p 399 ff

HIRALAL Dr The Sıtuatıon of Lankā Ganganatha Jha Comm Volume pp 151-163 Poona 1937

HIVALE, SHAMRAO The Pardhans of the Upper Narbada Valley Bombay 1947

HOFFMANN, J Encyclopaedıa Mundaııca Vol. VIII Patna 1933

HOOYKAAS, C The Old Javanese Rāmāyana Amsterdam 1958

HOPKINS, E, W The Great Epıc of Indıa New York 1902
— • Epıc Mythology Strassburg 1915
— The Orıgınal Rāmāyana JAOS Vol 46 (1926) pp. 202 219
— Pragathıkanı ıb Vol 17 pp 23 92
— Allusıons to the Rāma-story ın the Mahābhārata ıb Vol 50 (1930) pp 85-103

HUBER, E La Legende du Rāmāyana en Annam BEFEO Vol 5 p 168 ff
— Etudes de Lıtteratıure bouddhıque ıb 1904, p 698 ff

IBBETSON, D A Story of Vālmīkı IA Vol 24 p 240

IYER, K B Yama-Pwe or the Rāmāyana Play ın Burma. Trıvenı (Bangalore) Vol 14, pp 239 245

IYER, L K Ananthakrishna The Cochin Tribes and Castes 2 Vol Madras 1909 1912
JACOBI, H Das Rāmāyana Bonn 1893
— War das Epos und die profane Literatur Indiens ursprueenglich in Prākrit abgefasst ZDMG Vol 48 (1894), pp 407 417
— Ein Beitrag zur Rāmāyana Kritik ib Vol 51 (1897), p 605 ff
— Brahmanism Encycl of Religion and Ethics Vol II
— Incarnation ib Vol VII
JOHNSTON, E H Buddhacarita Calcutta 1935
JUYNBOLL Dutch translation of Rāmāyana Kakawin, Cantos 7-26 Dutch Oriental Journal Vol 78 94
KANE, P V History of the Dharmaśāstra Vol I—II Poona 1930 1941
— The Two Epics, ABORI, Vol 47, pp 11 58
KANGA, E M F The Age of Yasts A Volume of Eastern and Indian Studies (Bombay 1932), pp 134 140
KARPELES, S The Influence of Indian Civilisation in Further India Indian Art and Letters Vol I pp 30 39
KARPELES, S Un episode du Rāmāyana Siamois Etudes Asiatiques, Paris 1925 p 315 ff
KATS, J The Rāmāyana in Indonesia BSOS Vol IX (1926 28), pp 279 285
KEITH, A B The Age of the Rāmāyana, JRAS 1915, pp 218 228
— Indian Epic Poetry, IA Vol 23, p 52 ff
— Sanskrit Literature Oxford 1928
— Sanskrit Drama Oxford 1924
KERN, H Manual of Buddhism Strassburg 1896
— Dutch Translation of Rāmāyana Kakawin Cantos I—VI Dutch Oriental Journ of Vol 73
KIBE, M V Rāvana's Lankā located in Central India IHQ Vol 4 (1928), pp 693-702
KINGKEO ATTAGARA The Rāmāyana Epic in Thailand und S E Asia Journal of the Assam Research Society (Gauhati) Vol XV (1963) pp 3-21
KIRFEL, W Rāmāyana Bālakānda und Purāna Die Welt des Orients 1947 pp 113-128
KRISHNADAS, RAI Ikshvāku Genealogy in the Purānas Purāna (Vārānasi) Vol 2, pp 128-150

KULKARNI, V M The Rāmāyana Version of Sanghadāsa as found ın the Vasudevahındı JOI Vol 2, pp 128 138

— The Rāmāyana of Bhadreśvara as found ın hıs Kahāvalī ıb pp 332-338

LAFONT, P B P'a Lak P'a Lam Ecole France, d'Extreme Orıent 1957

— P'ommachak Ecole France d'Extr Orıent 1957

LALOU, M L Hıstorıe de Rāma en Tıbetaın Journ Asıatıque 1936, p 560 ff

LASSEN, C Indısche Altheıthumskunde 2nd Ed Vol II Leıpzıg 1874

— On Weber's Dıssertatıon on the Rāmāyana IA Vol 3, pp 102 103

LEKHARU, U C Assamese Versıons of the Rāmāyana Aspects of Early Assamese Lıterature Gauhatı Unıversıty 1959 pp 219 229

LESNY, V Ueber das Purāna artıge Gepraege des Bālakānda ZDMG Vol 67 pp 497 500

LETTRES EDIFIANTES Vol 13 Parıs 1718

LEVI, S Le Theatre Indıen Parıs 1890

— Sanskrıt Texts from Bālı Baroda 1933

— Pour l'hıstoıre du Rāmāyana Journ Asıatıque 1918, pp 1 160

— La legende de Rāma dans un avadan chınoıs Album Kern, p 279 ff

LUDWIG, A Deı Rıgveda I VI Prag 1876 1888

— Ueber das Rāmāyana Prag 1894

LUEDERS, H Dıe Jātakas and dıe Epık ZDMG Vol 58 (1904), p 687 ff

— Dıe Vıdyādharas ın der Buddhıstıschen Lıteratur und Kunst ıb Vol 93 (1939) p 89 ff

— Dıe Sage von Rsyaśrnga Nachrıchten v d koenıgl, Gesellschaft der Wıssensch zu Goettıngen Phıl Hıst Klasse 1897, pp 87-135

MACAULIFFE, M A The Sıkh Relıgıon Oxford 1909

MACDONELL, A A Sanskrıt Lıterature London 1928

MACDONELL-KEITH Vedıc Index London 1912

MAHALINGAM, T V A Rāmāyana Panel at Conjeevaram. JOR Vol 28, pp 68 ff

MAJUMDAR, R C The Classıcal Age Bombay 1954

MANUCCI, N Storıa do Mogor Engl Transl London 1907-1908

MAXWELL, W E Sri Rama JRAS Straits Branch Vol 17 1886, p 85 ff and Vol 55, pp 1-24

MENON, C A Ezuttacchan and his age University of Madras 1940

MITRA, S C The Munda Legend about Sītā and Sitali Journ of the Department of Letters Calcutta Vol 4, pp 303 304

MOJUMDAR, A K The Rāmāyana A Criticism IA Vol 31, pp 351-353

MONIER WILLIAMS, M Indian Epic Poetry London 1863

— Indian Wisdom London 1893

— Brahmanism and Hinduism London 1891

MOOR, E The Hindu Pantheon London 1910

MORET, A Histoire de l'Orient Paris 1936

MUIR, J Original Sanskrit Texts Vol 4 (2nd Ed) London 1873

MURTHY, T S KRISHNA A Detailed Study of thi Uttarakānda of the Rāmāyana of Vālmīke Thesis University of Mysore 1966 Unpublished

NAIK, T B Rāmkathā among the Primitive Tribes of India Bulletin of the Tribal Research Institute Chhind wara (Madhya Pradesh) Vol. I Nos. 2 and 3

NARASIMHACAR, D L The Jaina Rāmāyanas IHQ Vol 15 (1939), pp 574-594

NEGELEIN, J von Eine epische Idee im Veda Wiener Zeitschrift fuer die Kunde des Morgenlandes Vol 16 p 226 ff

NEOG, M Assamese Literature before Sankaradeva Aspects of Farly Assamese Literature (Gauhati 1959), pp 17 64

NIEBUHR, C Voyage en Arabie et en d'autres pays circon voisins 2 Vol Amsterdam 1776-1780

NORMAN, H C Commentary on Dhammapada 5 Vol. Pali Text Society London 1906 1915

OLDENBERG, H Die Religion des Veda Berlin 1894

— Jātakastudien Nachrichten v d Koenigl Gesellschaft der Wissensch zu Goettingen Phil-Hist Klasse 1918, p 456 ff

— Das Mahābhārata Goettingen 1922.

OVERBECK, H Hikāyat Mahārāja Rāvana JRAS, Malayan Branch Vol 11 (1933), part two pp 111-132

PARGIETER, F E. Vrsakapi and Hanumant. JRAS. 1911, p 803 ff , 1913, p 397 ff

PICKFORD, J Mahāvīra Carıta London 1871
PILLAI, M S Purnalıngam Tamıl Lıterature Tınnevelly 1929
PILLAI, S VAIYAPURI Hıstory of Tamıl Language and Lıterature Madras 1956
POLIER, M E de Mpthologıe des Hındous 2 Vol Parıs 1809
PRINTZ, W Rāma und sambūka Zeıtschrıft fuer Indologıe und Iranıstık Vol 5, p 241 ff
— Helen und Sıta Beıtrage zur Lıteraturwıssens chaft und Geıstesgeschıchte Indıens Festgabe Jacobı Bonn 1926, pp 103-123
PRZYLUSKI, J Epıc Studies IHQ Vol 15, pp 289 299.
PURI, SWAMI SATYANANDA Rāma-Kīrtı (Rāmakıen) Bırla Orıental Series Bangkok 1940
PUSALKER, A D Twenty-five years of Epıc and Purānıc Studies Progress of Indıc Studıes (Poona 1942), pp 101-151
— Geneology of the Solar Dynasty ın the Purānas and the Rāmāyana Purāna (Vārānasī), Vol IV, No 1, pp 24 33
— Bhāsa A Study Delhı 1968
RAGHAVAN, V The Tattvasangraharāmāyana of Rāma brahmānanda Annals of Orıental Research (Madras) 1953, pp 1 55
— Some old lost Rāma Plays Annamalaı 1961
— Date of Yogavāsıstha JOR Vol 13, pp 100 128
— Musıc ın the Adbhuta Rāmāyana Journ Musıc Academy Vol 16, p 66 ff
RAGHUVIR Dr The Rāmāyana ın Chına Lahore 1938
RAMADAS G Aborıgınal Names ın the Rāmāyana Journ of the Bıhar and Orıssa Research Instıtute Vol 11 (1925) pp 41-53
— The Aborıgınal Trıbes ın the Rāmāyana Man ın Indıa (Ranchı) Vol 5, pp 28 55
RAMASWAMI SASTRI, K S Studıes ın Rāmāyana Baroda 1944
RAO, N VENKATA Srı Ramayanamu by Kattavaradaraju Crıtıcally edıted wıth Introductıon and Notes Madras 1950
RAO, T A GOPINATH Hıstory of the Srı Vaıshnavas Madras 1914
RAVENSHAW, E C The Avatārs of Vıshnoo An abstract translatıon from the Padma Pooran Journ of the As Soc of Bengal 1842, pp 1112-1130

REAMKER Text and French Summary Introduction by S Karpeles Fasc 1-10 and 75 80 Phnom-Penh 1937

RHYS DAVIDS, W Buddhist India London 1903

RICE, E P Kanarese Literature Calcutta 1921

ROGERIUS, A De open Deure tot het verborgen Heyden dom Ed W Caland The Hague 1915

ROORDA VAN EYSINGA, P P Geschiedenis van Sri Rama Amsterdam 1843

ROSE, H A A Glossary of the Tribes and Castes of the Punjab and the North West Frontier Province 3 Vol Lahore 1919

ROY, S C The Birhors Ranchi 1925

— The Oraons of Chotanagpur Ranchi 1925

ROY, SUNIL CHANDRA The Author of the Rāmābhudaya IHQ Vol 30, pp 371-381

RUBEN, W Studien zur Text Geschichte des Rāmāyana Stuttgart 1936

— Eisenschmiede und Daemonen in Indien Leiden 1939

— Ueber die Religion der vorarische staemme Indiens Berlin 1952

RUSSELL, R V The Tribes and Castes of the Central Provinces of India London 1916

SAHOO, K C Rāmkathā in Sārladās Mahābhārata Journ of Historical Research (Ranchi) Vol 1, No 2, p 56, ff

— Oriya Rāma Literature (1450-1800) Thesis, Ranchi University 1965 (unpublished)

— Literature and social life in Mediaeval Orissa Pustak Sadan, Ranchi 1971

SANDESARA, B J The Ullāgharāghava Proceedings All India Oriental Conference 16th Session, Lucknow 1955 Vol, 2, pp 105 112

SANKALIYA, H D Kundamālā and Uttrararāmacarita JOI (Baroda) Vol 15, pp 322 334

SARKAR, H B Indian Influences on the Literature of Java and Bali Calcutta 1934

SASTRI, K A NĪLAKĀNTHA The Rāmāyana in Greater India JOR Vol 6 (1932), p 117 ff

SASTRI, K, S RAMASWAMI Studies in Rāmāyana JOR Baroda 1944

SASTRI T R VENKATARAMA The Rāmāyana JOR Vol 18, pp 157-169

SCHLEGEL, W Date of the Rāmāyana ZDMG Vol 3, p 379

SCHRADER, F O Introduction to the Pancarātra and the Ahırbudhnya Samhıtā Madras 1916

SCHWEISGUTH, P Etude sur la Lıtterature Sıamoıse Parıs 1951

SEN, D C The Bengalı Rāmāyanas Calcutta 1920

— History of Bengalı Language and Lıterature Calcutta 1921

SEN, NILMADHAV The Fıre Ordeal of Sītā—a later ınterpolatıon ın the Rāmāyana JOI Vol 8, pp 201 206

SHAH, U P Vrsakapı ın Rgveda JOI Vol 8, pp 41-70

SHARMA RAM A lıttle known Persıan versıon of the Rāmāyana Islamıc culture, Vol 8, pp 673-678

SHASTRI, M Narayana On the Indıan Epıcs IA Vol 29, pp 8 27

SHASTRI, Raghuvar Mıtthulal The authorshıp of the Adhyātma Rāmāyana Journ G N Jha Research Instıtute Vol 1, pp 215 39

SHELLABEAR Hıkāyat Srı Rāma JRAS Straıts Branch Nos 70 and 71

SMITH, H Sutta-Nıpāta Commentary Palı Text Socıety London 1916

SONNERAT, M Voyage aux Indes Orıentales et a la Chıne I-II Parıs 1872

SORENSEN, S Index to the names of the Mahābhārata London 1904

SRIKANTHIA, B M Tragıc Rāvana Mysore Unıversıty Magazıne Vol VII

STUTTERHEIM, W Rāma-Legenden und Rāma Relıefs ın Indonesıan Muenchen 1924

SUKTHANKAR, B M The Rāma-Epısode (Rāmopākhyāna) and the Rāmāyana Kane Comm Volume Poona 1941, pp 422 88

The Nala Epısode and the Rāmāyana A Volume of Eastern and Indıan Studıes Bombay 1939, pp 294 303

The Bhrgus and the Mahābārata ABORI Vol 18, pp 1-76

ŚŪZUKI, D T Studies in the Lankāvatāra Sūtra London 1930

TAVARNIER, J B Travels in India Oxford Un Press 1925

TELANG, K T Was Rāmāyana copied from Homer. Bombay 1873

TEMPLE, R C A Popular Legend about Vālmīki IA. Vol 27, p 112

— A Punjab Legend IA Vol 11, pp 281-91.

— The Legends of the Punjab Bombay 1884

THOMAS, F W A Rāmāyana Story in Tibetan from Chinese Turkestan Indian Studies (Lanman Comm Vol) 1929 pp 193-212

THOMAS, P Epics, Myths and Legends of India Bombay s a

UNGNAD, A A Babylonian Assyrian Dictionary

UTGIKAR, N B The Story of the Daśaratha Jātaka and of the Rāmāyana JRAS Cent Suppl 1914, pp 203 221

VAIDYA C V The Riddle of the Rāmayana Bombay 1906

VANDIER, J La Religion egyptienne Paris 1944

VARADĀCĀRI, K. C Sri Kulaśekhara's Philosophy of Devotion Journ Sri Venkateśvara Oriental Institute Vol 3, pp 1 22

VENKATARATNAM, M Rāma, the greatest Pharaoh of Egypt Rajamahendri 1934

VENKATARĀMA SĀSTRI, T R The Rāmāyana JOR Vol 18, pp 157-169

VIGNĀNĀNANDA. The Srimaddevī Bhāgavatam Sacred Books of the Hindus Vol 26

VIGOUROUX, F Dictionaire de la Bible Paris 1895

VINCENZO MARIA DI CATERINA DA SIENA, P F Viaggio all Indie Orientali, Roma 1672

VYAS, S N The Civilisation of the Rākṣasas in the Rāmāyana JOI Vol 4, p 1 ff

WARD, W A View of the History, Literature and Religion of the Hindoos 3 vol London 1877

WATANABE, K The oldest Record of the Rāmāyana in a Chinese Buddhist Writing JRAS 1907, pp 99 ff

WEBER, A Ueber das Rāmāyana Abhandlungen der koenigl Akademie der Wissensch zu Berlin 1870, pp 180 English Transl by D C Boyd Bombay 1873

— Zwei Vedische Texte ueber Omina und Portenta ib 1858, p 368 ff

— Die Rāma-Tāpanīya Upanisad ib 1864, p 279 ff,

— History of Indian Literature London 1890

— Episches in Vedischen Ritual Sitzungsberichte der Berliner Akademie 1861

— Rāmāyana und Vedica ib 1891, p 818 ff

— Die Pāli-Legende von der Entstehung des Sakya- und Koliya geschlechtes Indische Studien Vol 5 (Berlin 1862), p 412 ff

WHEELER, J T History of India Vol II London 1869

WHITNEY, W D Atharvaveda Samhitā Harvard Oriental Series Vol 7 8 Cambridge Mass 1905

WILSON, H H Rigveda Samhitā London 1854

WINSTEDT, R O A Patani Version of the Rāmāyana. Royal Batavian Society Feestbundel Batavia 1929

— An undescribed Malay Version of the Rāmāyana JRAS 1944, pp 62 73

— The Malay Version of the Rāmāyana B C Law Vol Pt II, 1 ff

WINTERNITZ, M A History of Indian Literature 2 vol Calcutta 1927

— Jātaka Gāthās and Jātaka Commentary IHQ Vol 4, p 1 ff

WOOLNER, A C Introduction to Prākrit 1939

— The Date of the Kundamālā ABORI Vol 15, p 236 ff

ZIEGENBALG, B Genealogy of South Indian Gods English Transl Madras 1869

ZIESENISS, A Die Rāma-Sage bei den Malaien Hamburg 1928

ग—अनुक्रमणिका

(ग्रथ, लेखक, विषय)

सूचना (१) अक अनुच्छेदो के द्योतक है।

(२) रचनाओ के नाम **मोटे टाइप** मे छपे है।

(३) वाल्मीकि, वाल्मीकिकृत रामायण तथा पाश्चात्य भाषाओ के ग्रथो को छोडकर अन्य **लेखको** तथा **रचनाओ** के सभी उल्लेख निर्दिष्ट है किंतु अनुक्रमणिका मे उल्लिखित अनुच्छेदो मे यदि किसी रचना के परिचय के अतर्गत अन्य अनुच्छेदो का निर्देश किया गया है तो उन्हे अनुक्रमणिका मे नही **दुहराया गया है।**

(४) नितात गौण पात्रो को छोडकर अन्य **पात्रो** से सबध रखने वाली सामग्री उनके नामो के साथ निर्दिष्ट है। कथा-वस्तु के कुछ **प्रसगो** का अलग उल्लेख किया गया है, अर्थात् अधमुनिपुत्रवध, काकवृत्तात, कनकमृग, दिक्-वर्णन, अभिज्ञान, लकादहन, मधुवन-ध्वस, वानर-सेना का अभियान, सेतु-निर्माण, गिलहरी, सेतुभग, शवप्रतिष्ठा, गुप्तचर, मायाशीर्ष, सुवेल, नागपाश, सधि-प्रस्ताव, अग्निपरीक्षा।

(५) अन्य द्रष्टव्य विषय—रामकथा, रामायण, आख्यान-काव्य, लोकगीत, अवतारवाद, भक्ति, दोषनिवारण, कामरूपत्व, कामगामिता, मायावी पात्र, पूर्व जन्म, आगामी जन्म, वरप्राप्ति, शापभाजन, स्वप्न, आकाशवाणी, सत्यक्रिया, भविष्यद्वाणी, यज्ञ, तपस्या, वैराग्य, आत्महत्याविचार, ब्रह्महत्यादोष, गवनिवारण, अप्सराएँ, वानर, राक्षस, यक्ष, अगराग, धनुष, पुष्पक, मर्मस्थान, समुद्रमथन, नरमासभक्षण, लका, दण्डकारण्य, द्रुमकुल्य पचाप्सर-सरोवर, कर्मनासा, तीर्थ।

(६) सकेत-चिह्न रा० = रामायण, पा० वृ० = पाश्चात्य वृतान्त, उप० = उपनिषद्।

लकादहन १३८, ५३०, ५५१-५५२

हिन्दी परिषद् प्रकाशन के कतिपय अन्य ग्रन्थ

१ **तुलसीदास** डॉ० माताप्रसाद गुप्त, चतुर्थ स०, मूल्य १६ रु० ।

२ **कवित्त रत्नाकर** स० प० उमाशंकर शुक्ल, छठा स०, मूल्य १० रु० ।

३ **सूरदास** डॉ० ब्रजेश्वर वर्मा, तृतीय स०, मूल्य १२ रु०, सूर से सम्बन्धित उपलब्ध सामग्रियो का वैज्ञानिक विश्लेषण ।

४ **आधुनिक हिन्दी साहित्य** (१८५० १९००) डा० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, चतुर्थ स०, मूल्य १५ रु०, आधुनिक हिन्दी साहित्य का प्रथम वैज्ञानिक अध्ययन ।

५ **आधुनिक हिन्दी साहित्य का विकास** (१९००-१९२५ ई०) डा० श्रीकृष्ण लाल, तृतीय स०, मूल्य १२ रु० ।

६ **बीसलदेव रास** स० डॉ० माताप्रसाद गुप्त व अगरचन्द नाहटा, मूल्य ७ ५० ।

७ **हिन्दी साहित्य (१९२६ १९४७ ई०)** डा० भोलानाथ, तृ० स०, मूल्य १८ रु० ।

८ **गुजराती और ब्रजभाषा कृष्णकाव्य का तुलनात्मक अध्ययन** डा० जगदीश गुप्त, प्रथम स०, मूल्य १२ रु०, भारतीय सस्कृति तथा साहित्य के विद्यार्थियो के लिए अत्यन्त उपयोगी तथा ज्ञानवर्द्धक ।

९ **कबीर-ग्रन्थावली** स० कर्ता डा० पारसनाथ तिवारी, द्वितीय स (प्रेस मे), कबीर की वाणी का भूमिका, टीका टिप्पणी सहित प्रामाणिक सम्पादन ।

१० **रामानन्द सम्प्रदाय तथा हिन्दी साहित्य पर उसका प्रभाव** डा० बदरी नारायण श्रीवास्तव, प्रथम स०, मूल्य १२ रु० ।

११ **आधुनिक हिन्दी काव्य शिल्प** (१९००- १९५० ई०), डॉ मोहन अवस्थी, मूल्य १२ रु०, आधुनिक हिन्दी कविता के शिल्प पक्ष का सर्वाङ्गीण विवेचन ।

१२ **प्राकृत अपभ्रंश साहित्य और उसका हिन्दी साहित्य पर प्रभाव** डॉ० राम सिंह तोमर, मूल्य १२ रु० ।

१३ **हिन्दी काव्य मे प्रतीकवाद का विकास** डॉ० वीरेन्द्र सिंह, मूल्य १६ रु० ।

१४ **हिन्दी कोश साहित्य** डॉ० अचलानन्द जखमोला, मूल्य १८ रु , हिन्दी साहित्य में कोश रचना के उद्भव तथा विकास का तुलनात्मक अध्ययन ।

---

१ प्रयाग विश्वविद्यालय के विद्यार्थियो, को, जो हिन्दी परिषद् के सदस्य हैं, सभी पुस्तको पर २०% कमीशन मिलेगा ।

२ पुस्तक विक्रेताओ के लिए अतिरिक्त कमीशन की व्यवस्था है जिसकी जानकारी कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है।

पुस्तकें मिलने का पता | **हिन्दी परिषद् प्रकाशन**
हिन्दी विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय